विषय	पृ०
चांदीके वर्कों के गुण	६८
रूपेकी द्रुति	,,
अशुद्ध रूपेके अवगुण	,,
अशुद्ध दोषोंकी शांति	,,
ताम्रकी उत्पत्ति	
ताम्र के भेद	६८
म्लेच्छ ताम्रके लक्षण	,,
नेपाल ताम्रके लक्षण	६९
ताम्रको सदोषत्व	,,
ताम्रके दोष	,,
ताम्रशोधन	,,
ताम्र मारण की विधि	७०
सोमनाथी तांबेकी विधि	,,
ताम्र भस्म की परीक्षा	७१
पारद संस्कारकेविनाताम्रकेदोष	,,
ताम्र मारणकी सुगम रीति	,,
ताम्र वांति आदि नाशकपुट	,,
ताम्र के गुण	७२
ताम्र भक्षण के अनुपान	,,
ताम्र देनेकी युक्ति	,,
कैंचुए और मोरके पखोंसे ताम्र निकालने की विधि	,,
भूनाग सत्वके गुण	७३
तुत्थ (नीलाथोथे) से ताम्र निकालना	,,
विषहर मुद्रिका के गुण	,,
विषहर मुद्रिकाके जल अभिमन्त्रित करने का मंत्र	,,
ताम्रद्रुति	,,
ताम्रजनित दोषोंकी शांति	७४
वंग	
वंग के भेद	७४
खुरकऔरमिश्रकवंगकेलक्षण	,,
वंग शोधन	,,
वंग मारण विधि	,,
वंग की धातु वेधीभस्म	७५
वंग भस्मके गुण	७६
वंग के अनुपान	७६
अशुद्ध वंगके दोष	७७
वंग विकार की शांति	,,
जस्त	
जस्ते की शुद्धि	७८
जस्त का मारण	,,
जस्त भस्म की मात्रा	७९
सामान्य गुण	७९
जस्त के अनुपान	,,
सदोष जस्त के अवगुण	,,
तथा इसकी शांति	८०
नाग	
नाग (शीशे) की उत्पत्ति	,,
नागके दोष	,,
नाग की परीक्षा	,,
नाग शोधन	,,
नाग मारण	,,
नागकी हरित भस्म	८१
पीली भस्म	,,
लाल भस्म	,,
नाग भस्मके अनुपान	८२
अशुद्ध नाग के दोष	,,
नाग दोषोंकी शांति	८३
लोह	
लोह की उत्पत्ति	८३
लोह के भेद	,,
कांत लोहकी परीक्षा	८४
लोहका शोधन	८६
शुद्ध लोहकी परीक्षा	८७
लोह जारणमें परिणाम औरमंत्र	
विना पारदके लोह भस्मकरण	८
निषेध	,,
फौलाद की भस्म	८७
पुटोंके गुण	८९
स्वर्णादि जारणमें अग्निपुट कथन	९०
लोह भस्म के गुण	,,
तथा अनुपान	,,
लोह भस्म सेवनमें अपथ्य	९१
अमृती करण	९२
लोह भक्षणका मंत्र	,,
लोहपाक	,,
पुट देनेकी अवधि	,,
लोह भस्मकी परीक्षा	,,
लोह द्रावणकी विधि	९३
अशुद्ध लोह के अवगुण	९३
अशुद्धलोहविकारोंकीशांति	९३
मंडूर	
कीट संज्ञा	९४
मंडूर वा कीटी के लक्षण	,,
कीटी ग्रहण	,,
उत्तम मध्यम और अधम कीटी	,,
मंडूर बनाने की विधि	,,
हंस मंडूर की विधि	,,
मिश्रक धातु (कांसा, पीतल, भर्त)	
कांसा	९५
उत्तम कांसे के लक्षण	,,
पीतल	,,
पीतल के भेद	,,
परीक्षा	९६
उत्तम पीतल के लक्षण	,,
अधम पीतलके लक्षण	,,
कांसे पीतल की शुद्धि	,,
मारणकी विधि	,,
कांसे पीतलकी वेधी भस्म	९७
पीतल भस्मके गुण	९७
कांस्य भस्मके गुण	,,

विषय	पृ०
कांसे पीतल के दोष	९७
भर्तके लक्षण और उसकी उत्पत्ति	
पंच लोह का शोधन	,,
पंच रसका मारण	,,
वृत्तलोहोंका शोधन मारण	,,
मित्र पंचक	९८
अपक्क धातु जारण	,,
सर्व धातुओंकी भस्मका वर्ण	,,
भस्म खाने का प्रमाण	,,
धातु से धातु मारण	९९
सप्तधातु द्रावण	,,
सप्तधातुओं के अवगुण	,,
इस ग्रंथानुसार धातु मारणसे वैद्यकी प्रशंसा	१००

उत्तर भाग

विषय	पृ०
सप्त उपधातु प्रकरण	१००
प्रकारांतर	,,
सुवर्णादि धातु के अभावसे ग्राह्य पदार्थ	,,
उप धातुओं का शोधन मारण	१०१

स्वर्णमाक्षिक

विषय	पृ०
माक्षिकोत्पत्ति	१०१
मारण योग्य स्वर्ण माक्षिकके लक्षण	१०२
अशोधित माक्षिकके अवगुण	,,
सुवर्ण माक्षिक का शोधन	,,
प्रकारांतरसे शुद्धि	१०४
मृतमाक्षिक के गुण	१०६
स्वर्णमाक्षिकका सत्व निकालना	
शीशा संयुक्त माक्षिकको पृथक् करना	,,
माक्षिक सत्वका स्वरूप	,,
माक्षिक भक्षणकी विधि	१०७
,, सत्वका द्रावण	,,
सुवर्ण माक्षिकका अनुपान	१०७
अपक्व माक्षिकके दोष	,,
माक्षिक दोषों की शांति	,,

रौप्यमाक्षिक

विषय	पृ०
रौप्य माक्षिककी उत्पत्ति	१०७
,, शोधन	१०८
,, मारण	,,
रौप्य माक्षिकके गुण	,,

विमला

विषय	पृ०
विमला माक्षिक के भेद	,,
विमलाकी शुद्धि	१०९
विमला मारणकी विधि	,,
विमला का सत्वपातन	११०
विमला शोधनकी दूसरी विधि	,,
सत्व भक्षण की विधि	,,
भस्मके गुण और अनुपान	१११
विमला विकार की शांति	,,

तुत्थ

विषय	पृ०
तुत्थ(नीलाथोथे)कीउत्पत्ति	१११
सस्यक शुद्धि	११२
मारण	,,
सत्व निकालना	,,
विनाअग्निकेसत्वनिकालना	११३
मोरपंख से तांबा निकालना	,,
कैंचुएसेताम्र निकालना	११४
विपहरण मुद्रिका (अंगूठी)	,,
तुत्थ सत्व मारणकी विधि	११५
तुत्थ सत्वभस्मके गुण	,,
,, विकारों की शांति	,,

चपल ११५

विषय	पृ०
चपल का स्वरूप	११६
नागसंभव चपलके लक्षण	,,
चपल शोधन	,,
,, मारण	,,
चपलका सत्व निकालना	११७
चपल के गुण	११७

कंकुष्ठ [मुरदासंग]

विषय	पृ०
नलिकाकंकुष्ठके लक्षण	११७
रेणुका	,,
वाग्भट के मतसे संज्ञा	,,
कंकुष्ठकी शुद्धि	११८
मुरदाशंख के गुण	,,
कंकुष्ठमे पथ्य	,,

रस [खपरिया]

विषय	पृ०
रसकके भेद	११८
खपरिया का शोधन	११९
अग्निस्थायी करने की विधि	,,
सत्व की दूसरी विधि	१२०
तीसरी विधि	,,
रसक का सत्वपातन	१२०
अग्नि स्थायी करनेकी दूसरीविधि टोडरानन्दसे	१२१
खपरियाके गुण	,,
खपरियाके अनुपान	१२२
अशुद्ध खपरिया के दोष	,,
रसक खपरियाके विकारोंकीशांति	

सिंदूर

विषय	पृ०
सिंदूरकी उत्पत्ति	१२२
सिंदूर के नाम और गुण	,,
औषधि योग्य सिंदूर	,,
सिंदूरका शोधन	१२३
सिंदूरके गुण	,,

उपरस १२३

विषय	पृ०
उपरस	१२३
अभ्रक की उत्पत्ति	१२४
उत्पत्तिके भेद कथन	,,
अभ्रककी जाति	,,
चार वर्णपरत्वकार्य	,,
कृष्णाभ्रकके भेद	,,

विषय	पृ०
पिनाक	१२४
दर्दुर	१२५
नाग	,,
वज्राभ्रक	,,
दिशापरत्व अभ्रक	,,
भूमिलक्षण	,,
मारणार्थ अभ्रक लेनेकी विधि	,,
अशुद्ध अभ्रक मारणके दोष	१२६
अभ्रक शोधन	,
धान्याभ्रक करण विधि	,,
अभ्रक मारण विधि	,
१० पुटकी भस्म	१२८
६० पुटी भस्म	,
४१ पुटी भस्म	,,
सफेद अभ्रककी भस्म	१३०
सहस्र पुटी भस्म	१३२
कार्यपरत्व पुट सख्या	१३३
भावना और पुटोंका निर्णय	१३४
अभ्रकमृत भस्मकी परीक्षा	,,
अमृती करण	,,
मृताभ्रकके गुण	,,
अभ्रक भस्म के अनुपान	१३५
अभ्रक सत्वकी विधि	१३६
सत्वकणोंको एकत्रकरना	१३७
अभ्रक सत्वकी भावा विधि	,,
अभ्रक सत्व का शोधन	,,
अभ्रक सत्व का मारण	१३८
सत्व का मृदु (नरम)करना	,,
अनेक द्रुतियोंकामिलापक	१४१
द्रुतियों को दुर्घटत्व कथन	,,
अभ्रककी वेधी क्रिया	,,
अभ्रक से पुट देनेके गुण	१४२
अभ्रककल्प	,,
अभ्रक सेवन में अपथ्य	१४३
अपक्व अभ्रक भक्षण के दोष	,,
उस दोषकी शांति	,,

विषय	पृ०
हरिताल	
हरिताल के भेद	१४३
पिंडताल	१४४
पत्रताल	,,
गोदंति	,,
वकदाली	,,
मारणयोग्यहरितालकेलक्षण	,,
हरिताल के गुण	,,
अशुद्ध हरिताल के दोष	,,
नाम भेद कथन	१४५
हरिताल शोधन	,,
हरिताल मारण	१४६
भस्म परीक्षा	१५६
भस्म के गुण	,,
हरिताल के अनुपान	,,
हरिताल सत्वकी विधि	१५७
सत्वके गुण और अनुपान	१५८
हरिताल की योजना	,,
अशुद्ध हरिताल के दोष	,,
अशुद्ध दोषों की शांति	१५६
तथाहरिताल भक्षणमेंपथ्यापथ्य	
अंजन (सुरमा)	
अंजन के नाम	१५६
अंजन के भेद	,,
सौवीरांजन	१६०
रसांजन	,,
स्रोतांजन	,,
पुष्पांजन	,,
नीलांजन	,,
अंजन शुद्धि	,,
अंजनसेसत्वनिकालनेकी विधि	१६१
हीराकसीस	
हीराकसीस के भेद	१६२
शोधन	,

विषय	पृ०
हीराकसीस सेवन	१६२
हीराकसीस के गुण	१६३
हीराकसीस का सत्वपातन	,,
गैरिक (गेरू)	
गैरिक शोधन	१६३
गेरूके गुण	,,
पारेमें मिलाप करना	१६४
उपरस	
उपरसों का शोधन	,
हिंगुल बनाने की क्रिया	,,
हिंगुलके भेद	१६५
त्रिविध हिंगुलके न्यारे २ भेद	,,
हिंगुल शोधन	,,
हिंगुल मारण	,,
दूसरी विधि	१६६
मतांतर से शोधन	,,
हिंगुलपाक	,,
हिंगुलमारणकीचतुर्थ विधि	१६७
हिंगुल के अनुपान और गुण	,,
दरद (हिंगुल) के गुण	,,
अशुद्ध हिंगुल के दोष	१६८
अशुद्ध हिंगुलके दोषोंकी शांति	,,
टंकण (सुहागा)	
सुहागे के भेद	,,
सुहागेकी शुद्धि	,,
सुहागे के गुण	,,
अशुद्ध सुहागे के दोष	१६६
तुरटी (फिटकरी)	
फिटकरीके भेद	१६६
फिटकरी का शोधन	,,
सत्वपातन	,,
फिटकरी के गुण	१७०
मनसिल	
मनसिलकी निरुक्ति	१७०
मनसिल के भेद	,,

विषय	पृ,
मनसिलकी शुद्धि	१७१
मनसिलमारणकीभाषाविधि	,,
सत्वपातन	
मनसिलके गुण	,,
अशुद्ध मनसिल के दोष	१७२
मनसिल दोषो की शांति	,,
शंख	
शखके भेद	१७२
शखशोधन	,,
शखके गुण	,,
खड़िया	
खड़िया के भेद	१७२
,, के गुण	१७३
कौडी	
कौड़ियों के भेद	१७३
शोधन	,,
मारण	,,
गुण	१७४
सीप	
मोतीकी सीप	१७४
जलसीप	,,
दोनो सीपोका शोधन	,,
गुण	,,
छोटेशख (घोघा)	,,
शोधन	,,
सिकता (बालू)	,,
बालूसे लोहरज का ग्रहण	१७५
प्रथम खडकी समाप्ति	
शिलाजीत	
शिलाजीतकी उत्पत्ति	१७५
शिलाजीत केभेद	,,
काचनशिलाजीत	,,
रौप्यशिलाजीत	१७६
ताम्रशिलाजीत	,,
नागशिलाजीत	,,

विषय	पृ.
सीसक शिलाजीत	१७६
लोह शिलाजीत	,,
मतातर	,,
शिलाजीत की परीक्षा	१७७
द्विविध शिलाजीत	१७८
वर्णभेद से गुणभेद	,,
शिलाजीत शोधन	,,
शुद्धकी भावना	१८०
शुद्ध की परीक्षा	,,
शिलाजीत के गुण	,,
पथ्यापथ्य	१८१
शिलाजीत की भस्म	,,
शिलाजीत का सत्व	,,
दूसरा शिलाजीत	,,
इसके गुण	१८२
अशुद्ध शिलाजीत सेवनके दोष	,,
शिलाजीत के विकारोकी शाति	,,
साधारण रसा:	
साधारण रसो के नाम	
तथा शोधन	१८२
कपिल्ल	
कपिल्लके गुण	,,
गौरीपाषाण (संखिया)	,,
जोड़ा बनाना	१८३
नौसादर	
नौसादर की उत्पत्ति	१८३
अग्निजार	१८४
अग्निजारके गुण	,,
समुद्रफेन	
समुद्रफेनकी शुद्धि	१८४
बोल	,,
लालबोलके लक्षण	,,
कालेबोल के गुण	,,
गूगल	१८५

विषय	पृ०
गूगलकाशोधनऔर गुण	१८५
रसकपूर	
रसकपूर की विधि	१८६
रसकपूरके अनुपान	,,
रत्न	
रत्नोपरत्नोकी उत्पत्ति	१८६
नाम	१८७
रत्नभेद	,,
मणिरसः	१८८
सर्व रत्न शोधनकीआवश्यकता	,,
रत्न शोधन	१८८
हीरादि रत्नोंके मारणमें दोष	,,
हीराबिना और रत्नोंका मारण	,,
रत्नोपरत्न के गुण	,,
हीरा	
हीराकी उत्पत्ति	१८९
दूसरा क्रम	,,
अज्ञानसे रत्नका मोल कहनेमे दोष	,,
दोष रत्न परीक्षा	,,
हीराकी चार जाति	१९०
धारण का पृथक् २ फल	,,
जाति भेदसे गुण	,,
पुरुष सज्ञक हीरा के लक्षण	
स्त्री और नपुसक सज्ञक हीराके लक्षण	,,
वज्रोके गुण दोष	,,
बिंदुके भेद	,,
रेखाओके भेद	१९२
शुभहीरा के लक्षण	,,
छाया के भेद	,,
तोल और मोल	,,
मौल्य	१९३
हीरा की परीक्षा का प्रकारातर	,,
अशुद्ध हीरा के दोष	१९४

विषय पृ.

हीराशोधन १६४

हीरामारण

ब्राह्मण जातीयहीरेकामारण१६६
क्षत्री जातीय हीरेका मारण ,,
वैश्य जातीय हीरेका मारण ,,
शूद्र जातीय हीरेका मारण ,,
सब प्रकार के हीरों का मारण
हीरादि रत्नो का मारण ,,
हीराकी भस्म गुटिका १९७
हीराकी भस्म सेवनकी विधि,,
षड्गुणरस ,,
हीरा भस्म के गुण ,,
हीरा भस्मके अनुपान १९८
हीराका मृदुकरण ,,
हीराकी द्रुति ,,
अशुद्ध हीरा के दोष ,,
हीराके विकारों की शांति१९८

मूंगा

मूंगाकी उत्पत्ति १९८
मूंगाके लक्षण ,,
अशुद्ध मूंगाके लक्षण १९९
मूंगाके गुण ,,

मोती

मोतीकी उत्पत्ति १९९
गज मौक्तिक ,,
वाराह मौक्तिक ,,
वेणु मौक्तिक ,,
मत्स्यज मौक्तिक ,,
दर्दुर मौक्तिक ,,
शंख मौक्तिक २००
सर्पज मौक्तिक ,,
सीपज मौक्तिक ,,
लक्षण ,,
मोती परीक्षा ,,

विषय पृ०

शुभ मौक्तिक ,,
मोती का शोधन २०१
मणिमुक्ता प्रवाल शोधन ,,
मुक्ता प्रवाल मारण ,,
मोतीकी भस्मके गुण ,,
मोतीकी द्रुति ,,

पन्ना

पन्ना को परीक्षा २०२
अशुभपन्ना के लक्षण २०२
पन्नाका शोधन प्रकार ,,
गुण ,,
दूसरे गुण ,,

वैदूर्य

वैदूर्य मणिके लक्षण २०२
दोष ,,
अन्य लक्षण २०२
गुण ,,

गोमेद

अशुद्ध गोमेदके लक्षण २०२
गुण ,,
माणिक्य (माणिक) ,,
माणिकके लक्षण ,,
अशुभ ,,
गुण ,,

हरिनील

उत्तमनील २०३
नीलके वर्ण भेद २०४
परीक्षा ,,
उत्तमनील ,,
अधम नील ,,
नीलके गुण ,,

पुखराज

पुखराज लक्षण २०४
अधम पुखराज २०४
पुखराजके गुण २०५
बाजूबंद आदि मे रखनेका क्रम ,,
नवग्रहदान ,,
पंचरत्न ,,
सर्वरत्न शोधन तथा मारण ,,

उपरत्न

उपरत्नो का वर्णन २०५
वैक्रातकी उत्पत्ति २०६
मतांतर ,,
वैक्रात ग्रहण विधि २०७
तथा शोधन मारण ,,
वैक्रात के अनुपान २०८
भस्म के गुण ,,
सत्वपातन ,,
सर्व रत्नोका शोधन मारण२०९
रसोपरस ,,
सूर्यकांत ,,
सूर्यकांत के गुण ,,

चंद्रकांत

चंद्रकांत के गुण २१०
राजावर्त २१०
राजावर्त्त का शोधन ,,
राजावर्त्त के गुण ,,
राजावर्त्तका मारण ,,
राजावर्त्त का सत्वपातन ,,
फिरोजा २११

स्फटिक

स्फटिक के लक्षण २११
सब रत्नोके लक्षण ,,
सत्वपातनार्थसामान्यशोधन२१२
सत्वपातन ,,
सत्व पडने की परीक्षा ,,
सत्व नम्र करनेकी विधि ,,

विषय	पृ.
प्रकारांतर	२१२
नम्रसत्व खाने और पारेमें	,,
मिलानेका प्रमाण	,,
सत्वपातनमें अग्नि के लक्षण	,,
शुद्ध सत्व की परीक्षा	,,
घारिया बनाने का प्रमाण	,,
सत्व और द्रुतिके गुण	,,
मूष बनानेका क्रम	,,
विषकी उत्पत्ति	२१३
विषके भेद	,,
उक्तविषोंके भेद	,,
लक्ष	२१४
वर्ज्य विष	,,
लक्षणांतर	२१५
परीक्षा	,,
विषके वर्ण	२१६
कार्यपरत्वग्राह्यविष	,,
ग्राह्ययोग्य विष	,,
शोधन प्रकार	,,
विष मारण	२१७
विषके गुण	,,
गुणांतर	,
विष सेवन प्रकार	,,
विषकी मात्रा का प्रमाण	२१८
विषके अनुपान	,,
विष भक्षणके अधिकारी	२२२
विष सेवन में पथ्य	,,
मात्राअधिकभक्षणकीपरीक्षा	२२३
विष उतारने की विधि	,,
अधिक विषका उपचार	२२३
विष सेवन में कुपथ्य	,,
घृतरहित विषसेवनके उपद्रव	,,
उपविष	
उपविषों के नाम	२२३
उपविष शोधन	२२४

विषय	पृ०
आक	२२४
कलियारी	,,
गुंजा	,,
कनेर	,,
कुचला	,,
जैपाल (जमालगोटा)	,,
जमालगोटे का शोधन	२२५
जामालगोटेके गुण	,,
धतूरा	,,
धतूरे के गुण	,,
अफीम	,,
अफीमके गुण	,,
भांग और भाग के गुण	२२६
थूहर	,,
संखिया (सोमल)	,,
विषविकारो की शांति	,,
वच्छनाग (सींगियाविष) कीशांति	२२७
भिलाएके विषकी शांति	,,
भांगके विषकी शांति	,,
गुंजा)घूंघची) के विषकी शांति	,,
कनेरके विष की शांति	,,
थूहरके विषकी शांति	,,
जैपाल के विकारो की शांति	,,
लोहाष्टक	,,
षट्लवण	,,
क्षारत्रय	२२८
मधुरत्रय	,,
वमावर्ग	,,
मूत्रवर्ग	,,
महिषपंचक	,,
अम्लवर्ग	,,
अम्लपंचक	,,
पंचमृत्तिका	,,
विषवर्ग	,,

विषय	पृ०
उपविषवर्ग	२२८
दुग्धवर्ग	२२९
विट् (विष्ठा) वर्ग	,,
रक्तवर्ग	,,
श्वेतवर्ग	,,
कृष्णवर्ग	,,
द्रावणगण	,,
रसोंकी तोल	,,
पुटोंकी संज्ञा और रीति	२३०
महापुट	,,
गजपुट	,,
वराहपुट	,,
कुक्कुटपुट	२३१
कपोतपुट	,,
गोवरपुट	,,
कुंभपुट	,,
भांडपुट	,,
वालुकापुट	,,
भूधरपुट	,,
लावकपुट	,,
यंत्राध्यायः	
यंत्र शब्द की निरुक्ति	२३१
कच्चीयंत्र	२३२
दोलायंत्र	,,
गर्भयंत्र	,,
हंसपाकयंत्र	२३३
विद्याधरयंत्र	,,
लवणयंत्र	,,
डमरुयंत्र	२३४
सोमानलयंत्र	,,
ऊर्ध्वनलिकायंत्र	,,
वालुकायंत्र	,,
भूधरयंत्र	२३५
पातालयंत्र	,,
दीपिकायंत्र	,,

विषय	पृ०
तेजोयत्र	२३५
कच्छपयत्र	२३६
जारणायंत्र	,,
तुलायत्र	,,
जलयंत्र	२३७
धूपयत्र	२३७
स्थाली यन्त्र	२३८
गारीयत्र	,,
कोष्ठीयत्र	,,
कोष्टीयंत्र दूसरा	२३९
वज्रमूषा	,,
पुटयत्र	,,
चक्रयंत्र	
पालिकायत्र	२४०
इष्टिकायत्र	,,
कोष्टिका यत्र	,,
वकयत्र	,,
नाडिकायंत्र	,,
वारुणीयत्र	२४१
दूसरा प्रकार	,,
तिर्यक्पातनयत्र	,,
कदुकयत्र	,,
वल्लभीयत्र	,
अर्द्धचन्द्र खरल	२४२
तप्तखल्व	,,
वर्तुलखल्व	,,
उत्तर खड ज्वराधिकार:	
महा मृत्यु जय रस	२४२
नवज्वरे लघुमृत्यु जयोरस	२४३
अपरो मृत्यु जयो रस	२४४
चतुर्थ ,, ,,	,,
त्रैलोक्य डम्बर रस	,,
ज्वर गजहरी रस	,,
तरुण ज्वरे धूम्रकेतु रस	२४५
,, इभसिंह रस:	,,
नव ज्वरे उदक मञ्जरीरस	,,
दीपिका रस:	,,
भैरव रस:	२४६
कफ ज्वरे रस पर्पट	,,
द्वितीय उदक मञ्जरी रस:	२४७
विनोद विद्याधर रस:	,,
महा ज्वराङ्कुश रस:	२४७
ज्वरघ्नी गुटिका	,
लीलावती वटी	२४८
नवज्वर हरी रस:	,,
नवज्वर हरी वटी	,,
विद्याधर रस	,,
विश्वताप हरण रस:	,,
अन्यमतेन विश्व नामातर	२४९
पुनः पाठान्तर	,,
नवज्वराङ्कुश	,,
गद मुरारी रस:	,,
ज्वर मुरारी रस	,,
त्रिपुर भैरव रस	,,
प्रचड रस	२५०
नवज्वर रिपु रस	,,
पर्ण खडेश्वर रस	,,
स्वच्छन्द भैरव रस:	,,
द्वितीय स्वच्छन्द भैरव रस	,,
रक्त गिरी रस:	,,
सर्व ज्वर भेदक मजरी	२५१
द्विभुजो रस	,,
प्राणेश्वर रस:	,,
ज्वराङ्कुश	२५२
हुताशन रस	,,
रोम भेद रस:	,,
सवश्वर रस	,,
कल्पतरु रस	२५३
हिंगुलेश्वर रस:	२५३
रवि सुन्दर रस:	,,
शीत भञ्जरी रस	२५४
दूसरा शीत भञ्जीर रस:	,,
मृत जीवन रस	,,
पित्त ज्वरे क्षीर मारो रस	२५५
कफ ज्वराधिकार:	
कफ कुठार रस	२५५
ताम्र भस्म योग	,,
सर्वज्वरे नस्यम्	,,
पर्पटी रस	,
वात पित्त ज्वरे ज्वालामुखी रस	२५६
चन्द्र शेखर रस:	,,
सूर्य शेखर रस	,,
वटिका	२५७
नवचन्द्र रस:	,,
ज्वरान्तक रस.	,,
सन्निपातानल रस.	,,
भस्मेश्वरो रस	२५८
स्वच्छन्द भैरवो रस	,
सधिकारी रस	,,
मृत संजीवन रस	,,
भैरवी गुटिका	२५९
त्रिगुणाख्यो रस	,,
सन्निपात गजाङ्कुश रस	२६०
प्राणेश्वरो रस	,,
सर्वाङ्ग सुन्दर रस	,,
रक्तमारेश्वर रस	२६१
सूचिकाभरणो रस	,,
वृहत् सौभाग्य वटी	,,
लघु ,, ,,	२६२
सन्निपातान्तक	,,
आनन्द भैरवी गुटिका	,,

ओ३म्

श्रीशंवन्दे

श्रीनिकुञ्जविहारिणेनमः

अथ बृहद्रसराजसुन्दर प्रारम्भः

मङ्गलाचरणम्

प्रणम्य राधापतिपादपंकजं गुरो प्रसादाद्रसराजसुन्दरम्।
मधोर्वने माथुरनन्दनोऽहम् कुर्वे मुदे वैद्यविदां मनीषिणाम्॥ १ ॥

अर्थ—(नित्य निकुंजविहारी) राधापति (श्रीकृष्ण) के चरणारविंद को प्रणाम कर श्रीगुरुदेवकी प्रसन्नतासे मधुपुरी निवासी माथुरनन्दन मैं (दत्तराम) उत्तम वैद्योंकी प्रसन्नताके अथ रसराजसुन्दर ग्रंथको रचता हूं।

यं जग्ध्वा दितिनन्दना ह्यमरतामाप्तावनेनन्दने। मोदन्तेऽघवनानियस्यपतनान्नश्यन्ति रोगामृगाः॥ यं दृष्ट्वा विरते शरीर शरणे मुंचन्ति प्राणान्त्वरं। तं शैवं शिवदं शशांकधवलं वन्दे परं पारदम्॥२॥

अर्थ—जिस पारे को भक्षण कर दितिनन्दन (देवता) अजर अमर हो नन्दनवन में क्रीड़ा करते हैं, और जिसके पतनसे पापोंके बन नष्ट होते हैं, तथा जिस पारेके दर्शन से रोगरूप मृग नष्ट होते हैं, ऐसे चन्द्रसम उज्ज्वल शैव[1] कल्याणकारी पारदको हम वन्दना करते हैं।

ग्रन्थकी श्रेष्ठता.

अनेकरसशास्त्रेषु संहितास्वागमेषुच।
यदुक्त वाग्भटे तत्रे सुश्रुते वैद्यसागरे॥
अन्यैश्च बहुभिः सिद्धैर्य्यदुक्तंचविलोक्यतत्
तत्र यद्यदसाध्य स्याद्यद्दुर्लभमौषधं।
तत्तत्सर्वं परित्यज्य सारभूतं समुद्धृतम्॥४॥

अर्थ—अनेक रसशास्त्र संहिता और तन्त्रके ग्रंथोंमे तथा वाग्भट तंत्र, सुश्रुत, वैद्यसागर ग्रन्थमे, तथा जो अन्य बहुतसे सिद्धोने कहे हैं उन सबोको देख तथा उन उक्त ग्रन्थोंमे जो जो असाध्य कर्म है और जो जो औषधि दुर्लभ हैं उनको त्यागकर शेष सारांश मैंने इस ग्रन्थमें लिखा है।

---

१ पहले सर्वदेवतागण रोगी रहते थे जबसे पारदका भक्षण करा तभीसेअजर-अमर हुए'रसेश्वर मतवाले पारद को ही साक्षात् ईश्वर मानते हैं। शिव से उत्पन्न हुआ है, इस लिये इसे शैव कहा है।

क्वचिच्छास्त्रे क्रिया नास्ति क्रमसंख्या न च क्वचित्। मात्रायुक्तिः क्वचिन्नास्ति सम्प्रदायो न चक्वचित्॥ ५ ॥ तेन सिद्धिर्न तत्रास्ति रसे वाथ रसायने। वैद्ये वादे प्रयोगे च तस्माद्यत्नो मया कृतः ॥६॥ यद्यद्गुरुमुखाद्ज्ञातं स्वानुभूतं च यन्मया। तत्तल्लोकहितार्थाय प्रकटी क्रियतेऽधुना ॥७॥

अर्थ—किसी शास्त्र में क्रिया नहीं है किसी मे क्रमसंख्या नहीं हैं, किसी में मात्रा की युक्ति नहीं, कहीं कहीं रस बनाने की सम्प्रदा नही हैं, अतएव उन शास्त्रोक्त रस बनाने की विधि और और रसायन विधि एव वैद्यवाद मे और प्रयोग मे सिद्धि नहीं है . अतएव इस (रसराज सुन्दर) ग्रथ के बनाने का मैंने यत्न किया है। इसमें जो जो विधि मैंने गुरु के मुख से सुनी हैं, और जो जो विधि मेरे अनुभव से आई हैं उनको लोकहितार्थ में प्रगट करता हूँ।

गुरु सेवा के विना कर्म करना निषेध.

गुरुसेवां विनाकर्म यः कुर्य्यान्मूढचेतनः।
तद्यातिनिष्फलत्त्वंहिस्वप्नलब्धंयथाधनम् ॥८॥
विद्याग्रहीतुमिच्छन्तिचौर्य्यछद्मबलादिना।
नतेपासिध्यते किंचिन्मणिमन्त्रौषधादिकम् ॥९॥

अर्थ—गुरु सेवा के विना जो मूढबुद्धि (पुरुष) रस तैलादि बनाना आदि कर्म करता है, वह निष्फल जाता है। जैसे स्वप्न मे प्राप्त हुआ धन। जो पुरुष चोरी कपट बलात्कार आदि कर्मों से विद्याग्रहण करने की इच्छा करता है। उसको प्रथम तो विद्या आने की नहीं. यदि आभी गई तो वह मणिमन्त्र और औषधादि कर्म कोई उसको सिद्ध नहीं होता। अतएव उचित है कि गुरुसेवा पूर्वक विद्या ग्रहण करे।

विद्या आने के त्रिविध कारण.

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा।
अथवाविद्ययाविद्याचतुर्थं नैवकारणम् ॥१०॥

अर्थ—विद्या आने के तीन हेतु हैं, प्रथम गुरु सेवा करना। दूसरा पुष्कल धन देना। तीसरा हेतु विद्या आने का यहहै कि यदि आप कुछ उत्तम विद्या पढ़ा होवे उसको पढ़ाकर उसके पलटे मे दूसरे से अपेक्षित विद्या पढे, ये तीन-कारण विद्या आने के हैं। इसके सिवाय चौथा कारण नहीं।

सद्गुरु के लक्षण.

मंत्रसिद्धो महावीरो निश्चलः शिववत्सलः।
देवीभक्तःसदा धीरोदेवतायागतत्परः ॥११॥
सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः कुशलो रस कर्मणि।
एतल्लक्षणसंयुक्तोरसविद्यागुरुर्भवेत् ॥१२॥

अर्थ—जिसे मत्र सिद्ध हो, महावीर, निश्चल, शिवप्रिय, देवी का भक्त और सदैव धीर, देवता के पूजन करने में तत्पर, सकल शास्त्रों के अर्थ और उनके भाव को जानने वाला, पारद मारणादि रसकर्मों में कुशल, इतने लक्षणों करके सपन्न रसविद्या पढ़ाने का आचार्य्य होता है।

उत्तम शिष्य के लक्षण.

शिष्यो निजगुरुर्भक्तःसत्यवक्ता बहुश्रुत.।
निरालस्य स्वधर्मज्ञोदेव्याराधनतत्परः ॥१३॥

अर्थ—अपने गुरु का भक्त, सत्य बोलने वाला, बहुश्रुत, आलस्य रहित, अपने धर्म्म का ज्ञाता तथा देवी के आराधनमें तत्पर ऐसा शिष्य होवे।

पारदप्रशंसा.

हरति सकलरोगान् मूर्च्छितो यो नराणाम्
वितरति किलबद्धः खेचरत्व जवेन ॥
सकलसुरमुनीन्द्रैर्वन्दितःशम्भुबीजम् ॥
सजयति भवसिन्धोःपारदःपारदोऽयम् ॥१४॥

अर्थ—जो मूर्च्छित मनुष्यों के सकल रोगों का हरण करता है, और बद्ध हुआ वेग करके आकाश में विचरने की शक्ति वितरण करता है। तथा सकल सुर मुनियों करके वन्दित, शिव बीज ससार सागर से पार करने वाला ऐसा

यह पारा[1] सर्वोत्कर्ष रस ज्ञान के बिना चिकित्सा को निष्फलत्व करके वर्त्तो ।

योनवेत्ति कृपाराशिं रस हरिहरात्मकम् ।
वृथा चिकित्सां कुरुतेसवैद्योहास्यतांव्रजेत् ॥
शुष्केन्धनमहाराशिं यथा दहति पावकः ।
तद्वद्दहतिसूतोऽयंरोगान्दोषत्रयोद्भवान् ॥१५॥

अर्थ—जो कृपासागर हरिहरात्मक पारे को नहीं जानता वो वृथा चिकित्सा करता है, और उसकी हसी होती है ! जैसे सूखे इंधन के समूह को अग्नि भस्म करती है, उसी प्रकार तीनों दोषो से होनेवाले रोगो को पारा दहन करता है ।

रसका विलक्षणत्व

मोहयेद्य.परान्बद्धो जीवयेद्य मृत:परान् ।
मूर्च्छितो बोधयेदन्यान् तंसूतंकोनसेवते ।१६।

अर्थ—जो स्वय बद्ध होकर औरों को मोहित करे, और स्वय मृत होकर औरो को जिलावे, और स्वयं मूर्च्छित होकर औरों की बोध अर्थात् जगाता है. ऐसे पारद को कौन नहीं सेवन करे ? ।

रसोपासना का फल

आयुर्द्रविणमारोग्यं वन्हिर्मेधामहद्बलम् ।
रुपयौवनलावण्यं रसोपासनया भवेत् ॥१७॥

अर्थ—आयु, द्रव्य, आरोग्यता, जठराग्नि, बुद्धि, अतिशय बल, तथा रूप, यौवन और लावण्यता ये सब रसोपासना [अर्थात् पारद भक्षण] से होते हैं ।

रसकी त्रिविध गति

मारयेज्जारितं सूतं गंधकेनैव मूर्च्छयेत् ॥
बद्धःस्याद्द्रुति सत्वाभ्यां रसस्यैवंत्रिधागति.

अर्थ—षड्गुण गधक जारित पारेका मारण करे, और गंधक करके मूर्च्छित करे, तथा द्रुति और सत्व करके पारे का बद्ध करना, ऐसे रस की त्रिविध गति है ।

रस को प्राधान्यत्व

अल्पमात्रोपयोगित्वादरुचेरप्रसंगतः ।
क्षिप्रमारोग्यदायित्वादौषधेभ्योऽधिकोरसः

अर्थ—अल्पमात्रा [अर्थात् थोडासाही] उपयोगी होने से और अरुचि के अप्रसंग से [अर्थात् इसके खाने से अरुचि भी नहीं होती] तथा तत्काल आरोग्यदायी है, अतएव संपूर्ण औषधियो से रस को आधिक्यता अर्थात् श्रेष्ठता है [इस जगह औषधियो से ही श्रेष्ठता नहीं है किन्तु इस पारद को योगसाधनत्व तथा बहुवीर्य्यकारी एवं मुक्तिप्रद होने से संपूर्ण वस्तु मात्र से श्रेष्ठता है]

रसयोग से होनेवाले गुण

अचिराज्जायते देवि शरीरमजरामरम् ।
मनसश्च समाधानं रसयोगादवाप्यते ॥२०॥
सत्वं च लभते देवि विज्ञानं ज्ञानपूर्वकम् ।
सत्वंमंत्राश्च सिद्धयंति योऽश्नातिमृतसूतकम्
यावन्नशक्तिपातस्तु नायावत्पाशकृन्तनम् ।
तावत्तस्यकुतोबुद्धिर्जायते भस्मसूतके ॥२२॥
यावन्न हरबीजन्तु भक्षयेत्पारदं रसम् ।ता-
तावत्तस्यकुतोमुक्ति.कुत:पिंडस्यधारणम् ।२३।
स्वदेहे खेचरत्वं च शिवत्वं येन लभ्यते ।

अर्थ—हे देवि, इस पारद के भक्षण से शीघ्र देह अजर अमर हो मनका समाधान होता है, सत्व और विज्ञान पूर्वक ज्ञान की प्राप्ति होती है, जो मनुष्य मृत पारे को भक्षण करता है, वह सत्व (पुर्षार्थ) और मत्रो की सिद्धि को प्राप्त होता है, जबतक शक्तिपात और फासो का

---

१ श्रीमान्सूतनृपोददाति विलसल्लक्ष्मींवपु:शाश्वतम् । स्वानाप्रीतिकरीमचंचलमनोमातेवपुंसायथा ।
ह्यन्योनास्तिशरीरनाशकगदप्रध्वसकारीततः ।
कार्य्यं नित्यमहोत्सवै.प्रथमतःसूताद्वपु:साधनम् ॥१॥
साक्षादक्षयदायकोभुविनृणां पंचत्वमुच्चैः कुतो ।
मूर्च्छा मूर्च्छितविग्रहो गदवता हन्त्युचकैप्राणिनाम् ।
चंद्रप्राप्यसुरासुरेन्द्रचरितां ता तागतिप्रापयेत् ।
सोऽयपातु परोपकारचतुरः श्रीसूतराजो जगत् ।२।

कटना नहीं होता तब तक इस प्राणी की पारद-भस्म के भक्षण में कब बुद्धि होती है। जबतक यह प्राणी शिवबीज (पारद) को भक्षण नहीं करता तब तक इसकी रोगों से मुक्ति और देह का धारण कहा है। जिस पारद के भक्षण से यह प्राणी अपनी देह से ही खेचरत्व और शिवत्व को प्राप्त होता है।

दोषहीनो रसोब्रह्मामूर्च्छितस्तु जनार्दनः
मारितोरुद्ररूपोस्यातबद्धः साक्षात्सदाशिवः

अर्थ - दोषहीन पारा ब्रह्मा मूर्च्छित जनार्दन और मृतपारा रुद्र और बद्ध पारा साक्षात् सदाशिव का स्वरूप है।

साध्येषु भेषजं सर्वमीरितं तत्ववेदिना। असाध्येष्वपिदातव्योरसोऽतःश्रेष्ठउच्यते ।२६।
हतोहन्तिजराव्याधिंमूर्च्छितोव्याधिघातक
बद्धःखेचरतांधत्तेकोऽन्यः सूतात्कृपाकर।२७।

अर्थ—आयुर्वेद तत्ववेत्ता वैद्यों ने साध्य रोगमें सपूर्ण औषधी कहीं हैं परन्तु असाध्यारोगो मे कोई औषधी नहीं कही किंतु यह पारद असाध्यारोगो मे देना कहा है अतएव पारे को श्रेष्ठत्व है। मृतपारा बुढ़ापे और रोगो को दूर करता है, मूर्च्छित व्याधिका नाशक और बद्धपारा आकाश मे गमन करने की शक्ति देता है। कहो पारे से अन्य कौन ऐसा कृपाकारक है ? ।

केदारादीनि लिंगानिपृथिव्या यानिकानिचित्
तानिदृष्ट्वातुयत्पुण्यं तत्पुण्यं रसदर्शनात्॥

अर्थ—केदार से आदिले पृथ्वी पर जितने शिवलिंग है उनके दर्शन से जो पुण्य होता है, वही पारद के दर्शन से होता है।

चन्दनाऽगरुकपूरकुंकुमान्तर्गतोरस।मूर्च्छितः शिवपूजासाशिवसानिध्यसिद्धये ॥२६॥
भक्षणात्परमेशानि हन्तिपापत्रयं रसः ।
दुर्लभंब्रह्मविष्ण्वाद्यैःप्राप्यतेपरमंपदम्॥३०॥
हृद्योगकर्णिकान्तस्थंरसेन्द्र परमेश्वरि । स्मरन्विमुच्यतेपापैःसद्योजन्मान्तरार्जितैः॥३१॥

अर्थ—मूर्च्छित रसको चन्दन, अगर, कपूर और केशर के अन्तर्गत स्थापन करना शिवपूजा कहलाती है, यह शिव के समीप पहुंचाने वाली है, पारे का भक्षण करना तीन जन्मों के पापों का नाश करता है। जो स्थान ब्रह्मा, विष्णु और शिव को दुर्लभ उस पद को पारद का भक्षण करने वाला पाता है, जो मनुष्य अपने हृदयकमल में पारद स्थित का ध्यान करता है वह मनुष्य तत्काल अपने अनेक जन्मान्तर के संचित पापों से छूट जाता है।

स्वयंभूलिंगसाहस्रैर्यत्फलं सम्यगर्चनात् ।
तत्फलं कोटिगुणितंरसलिंगार्चनाद्भवेत् ॥३२॥
रसविद्यापराविद्यात्रैलोक्येऽपिच दुर्लभा।
भुक्तिमुक्तिकरीयस्मात्तस्मायत्नेन गोपयेत् ।३३।

अर्थ—जो पुण्य हजार शिवलिंग के पूजन से होता है, उससे करोड़ गुना फल पारद लिंगके पूजनसे होता है। रसविद्या पराविद्या कहलाती है, त्रिलोकी मे दुर्लभ है, तथा भोग मोक्ष की दाता है, अतएव इसको यत्न से रक्षण करे।

शताश्वमेधेनकृतेनपुण्यंगोकोटिभिः स्वर्णसहस्रदानात्। नृणां भवेत्सूतकदर्शनेनयत्सर्वतीर्थेषुकृताभिषेकात् ॥ ३४ ॥

अर्थ—जो पुण्य १०० अश्वमेध यज्ञ करने, से तथा करोड़ गोदान करनेसे, और १००० तोले सुवर्णदान करने से, तथा सब तीर्थों में अभिषेक करने से जो पुण्य होता है, वो पुण्य पारद के दर्शन मात्र से होता है।

सुरगुरुगोद्विजहिंसापापकलापोद्भवं किलासाध्यम्। चित्रंतदपि च शमयतियस्तस्मात्कः पवित्रतरः॥ ३५ ॥

अर्थ—देव, गुरु, गौ, ब्राह्मण के वध से, तथा अनेक पापो के करने से प्रगट, जो कुष्टभगंदरादि दुष्टरोग, उनको यह पारद शमन करता है, कहो इससे पवित्र और कौन होवेगा ? ।

पारद के नाम.

रसेन्द्रःपारद.सूतःसूतराजश्चसूतकः। शिवतेजो रस. सप्त नामान्येवं रसस्य तु ॥ ३६ ॥

शिवबीजो रसः सूतः पारदश्च रसेन्द्रकः। एतानि शिवनामानि तथान्यानि यथा-शिवे ॥ ३७ ॥

अर्थ—रसेन्द्र, पारद, सूत, सूतराज, सूतक, शिवतेज, और रस ये सात नाम पारद के हैं। शिवबीज, रस, पारद, रसेन्द्रक इत्यादि पारे के नाम हैं और शिवसबंधी नाम भी सब पारद के जानने, जैसे शिव शकर आदि।

पारद की उत्पत्ति.

शैलेऽस्मिन्शिवयोः प्रीत्यापरस्परजिगीषया। सम्प्रवृत्ते च सभोगे त्रिलोकीक्षोभकारिणी ॥ ३८ ॥ विनिवारयतुं वन्हिः सभोगं प्रेषितः सुरैः। काक्षमाणैस्तयो पुत्रं तारकासुर-मारक ॥ ३९ ॥ कपोतरूपिणंप्राप्तं हिम-वत्कंदरेऽनलम्। अपांक्तिभावसंक्षुब्ध स्मर-लीलावलोकिनम् ॥ ४० ॥ तद्दृष्ट्वालज्जितः शम्भुर्विरत. सुरतात्तदा। प्रच्युतश्चरमो-धातुर्गृहीत शूलपाणिना ॥ ४१ ॥ प्रक्षिप्तो वदने वन्हेर्गंगायामपि सोपतत्। वह्निः क्षिप्तस्तयासोऽपि परिदंदह्यमानया ॥ ४२ ॥ संजातास्तन्मलाधानाद्धातवः सिद्धिहेतवः। यावदग्निमुखाद्रेतोन्यपतद्भूरिसारतः ॥४३॥ शतयोजननिम्नांस्तान्कृत्वाकूपास्तु पंच च। तदाप्रभृति कूपस्थं तद्रेत पंचधाभवत् ॥ ४४॥

पारद की उत्पत्ति.

एक समय हिमालय पर्वत मे प्रीति के साथ परस्पर जीतने की इच्छा करके त्रिलोकी का क्षोभकर्त्ता सभोग करने को जिस समय श्री शिव और पार्वती प्रवृत्त हुए, उस सभोग के छुडाने को और तारकासुर के मारनेवाले पुत्र की उनसे उत्पत्ति की इच्छा करके देवताओ ने अग्नि-देव को भेजा, अग्निदेव कपोतपक्षी (कबूतर) का रूप धारण कर हिमालय की कदरा मे प्राप्त हुआ। अपंक्ति स्थान में काम क्रीडा देखने वाले अग्नि को आया देख लज्जित हो शिव सुरतसे निवृत्त हुए, अर्थात् उस सभोग को त्यागते हुए उस समय जो वीर्य्य स्खलित हुआ उसको शिव जी ने अग्नि के मुख में डाला, अग्नि ने गगा में और गगा ने उसको पृथ्वी पर फेंक दिया, उस शिववीर्य्य के मल से सिद्धि के कारण सुवर्णादि धातु उत्पन्न हुई। अत्यन्त बोझे के कारण जितना वीर्य्य अग्नि के मुख से निकल गया वही पारेके स्वरूप से पृथ्वी मे विख्यात हुआ, उसको १०० योजन यानी (४०० कोस) के गहरे पाच कुओं में स्थापन करते हुए, उसी काल से वह कूपस्थ शिववीर्य पांच प्रकार का हुआ।

पँचविधपारद.

रसोरसेन्द्रः सूतश्चपारदोमिश्रकस्तथा। इतिपचविधोजातः क्षेत्रभेदेन शंभुजः ॥ ४५ ॥

अर्थ—रस, रसेन्द्र, सूत, पारद और मि-श्रक इस प्रकार क्षेत्रभेद से पांच प्रकार का पारा हुआ।

रससंज्ञक पारद के गुण.

रसोरक्तोविनिर्मुक्त. सर्वदोषै.रसायन. ॥ संजातास्त्रिदशास्तेननिरुजोनिर्जरामराः॥४६॥

अर्थ—रससंज्ञक पारा लालरग का होता है और यह स्वय शुद्ध और सर्व दोषरहित होता है, तथा रसायन है। इसका सेवन करने से देवता रोगरहित अजर अमर हुए हैं।

रसेन्द्रसंज्ञक पारद के लक्षण.

रसेन्द्रोदोषनिर्मुक्तः श्यावोरूक्षोऽतिचंचलः। रसायनैरऽभवंस्तेननागमृत्युजरोज्झताः ॥४७॥ देवैर्नागैश्चतौकूपौ पूरितौमृद्भिरश्म-भि. तदाप्रभृतिलोकानांतौजातावतिदुर्लभौ ॥ ४८ ॥

अर्थ--रसेन्द्रसज्ञक पारा, कालेरग का रूक्ष और अति चचल तथा सर्वदोष रहित होता है, इसके सेवन से वासुकी तक्षकादि नाग मृत्यु और वृद्धावस्था रहित हुए हैं। इन रस-सज्ञक और रसेन्द्र सज्ञक पारो के कुओं को देवता और नागो ने मिट्टी और पत्थरों से आट (ढक) दिये हैं, तभी से उक्त दोनो जाति के

पारे इस मनुष्य लोक में मनुष्यों को अति दुर्लभ हुए हैं।

सूतसंज्ञक पारद.

ईषत्पीतश्च रूक्षांगो दोषयुक्तश्च सूतकः।
दशाष्टसंस्कृतैः सिद्धो देहलोहं करोति सः ॥४९॥

अर्थ—सूतसंज्ञक पारा कुछ पीला रूखा और दोष मिला होता है, यह अष्टादश १८ संस्कार करने से सिद्ध होता है, और सेवन कर्त्ता मनुष्य के देह को लोहे के समान करता है।

पारद संज्ञक.

अथान्यकूपजः कोऽपि सचलः श्वेतवर्णवान्।
पारदो विविधैर्योगैः सर्वरोगहरः स हि ॥५०॥

अर्थ—तथा चतुर्थ कुए का जो पारद संज्ञक पारा है वह सफेद वर्णवाला चंचल है, यह पारा अनेक प्रकार के योगों करके सर्व रोगों को हरण करता है।

मिश्रकपारद.

मयूरचन्द्रिकाछायः सरसो मिश्रको मतः।
सोऽप्यष्टादशसंस्कारयुक्तश्चातीव सिद्धिदः ॥

अर्थ—जिस पारे में मोर की चन्द्रिका के सदृश अनेक प्रकार के चित्र विचित्र रंग हों उसको मिश्रसंज्ञक पारा कहते हैं, यह भी अष्टादश संस्कार करने से अत्यन्त सिद्धि को देता है।

त्रय सूतादय सूतः सर्वसिद्धिकरा अपि।
निजकर्मविनिर्माणे शक्तिमन्तोऽतिमात्रया ॥
एतां रससमुत्पत्तिं यो जानाति स धार्मिकः।
आयुरारोग्यसंतान रससिद्धिं च विन्दति ॥५३॥

अर्थ—पाच प्रकार के सूतादि पारो में, तीन प्रकार के पारे (सूतक, पारद और मिश्रक) अपने २ कर्मद्वारा संस्कृत, अत्यन्त शक्तिसंपन्न और सर्व सिद्धिकारी जानने, इस रस (पारद) की उत्पत्ति को जो जाने वह धार्मिक है तथा आयु, आरोग्य, संतान और रससिद्धि की प्राप्ति हो।

रसादि शब्दों की निरुक्ति.

रसनात्सर्वधातूनां रस इत्यभिधीयते।
जरारुङ्मृत्युनाशाय रस्यते वा रसो मतः ॥५४॥
रसोपरसराजत्वाद्रसेन्द्र इति कीर्तितः।
देहलोहमयीं सिद्धिं सूते सूतस्ततः स्मृतः ॥५५॥
रोगपंकाब्धिमग्नानां पारदानाच्च पारदः।
सर्वधातुगतं तेजो मिश्रितं यत्र तिष्ठति ॥५६॥
तस्मात्स मिश्रकः प्रोक्तो नानारूपफलप्रदः ॥

अर्थ—रसादि शब्दों की निरुक्ति। सर्व धातुओं के रसन अर्थात् भक्षण करने से इस पारे को रस ऐसा कहते हैं, अथवा जरारोग और मृत्यु के नाशनार्थ इसको भक्षण करते हैं, इस कारण इसको रस कहते हैं। तथा रस और उपरसों का राजा होने से इसको रसेन्द्र कहते हैं, एवं देह को लोहे के समान करता है, अतएव इसको सूत कहते हैं। रोगरूप कीचड़ के समुद्र में डूबे हुए मनुष्यों को पार लगाने से इसको पारद कहते हैं, और सम्पूर्ण धातुमात्र का मिश्रित तेज इस पारे में रहता है, अतएव इसको मिश्रक कहा है। यह अनेक प्रकार का फलदाता है।

एवंभूतस्य सूतस्य मर्त्यमृत्युगदच्छिदः।
प्रभावान्मानुषा जाता देवतुल्यबलायुषः ॥
तान्दृष्ट्वाभ्यर्थितो रुद्रः शक्रेणातदनन्तरम् ॥५८
दोषैश्च कंचुकाभिश्च रसराजो नियोजितः ॥
तदाप्रभृति सूतोऽसौ नैव सिद्ध्यत्यसंस्कृतः ॥५९

अर्थ—इस प्रकार मनुष्य की मृत्यु और रोगों के नाशकर्त्ता पारे के प्रभाव से मनुष्य-देवताओं के तुल्य बली और दीर्घायु वाले हुए ऐसे बलिष्ठ पुरुषों को देख इन्द्र ने शिवजी से प्रार्थना की कि हे नाथ! इस पारद के प्रभाव से सर्व मनुष्य देवताओं के समान हो जायगे फिर देवताओं को कौन पूछेगा? इन्द्र की इस वाणी को सुन श्रीशिवजी ने उस पारे को दोषयुक्त कंचुकी (काँचली) युक्त कर दिया, तभी से यह पारा बिना संस्कार के सिद्ध नहीं होता, (अतएव

पारद की सिद्धि करने वाले मनुष्य को शास्त्रोक्त शुद्धी अवश्य कर्त्तव्य है) ।

प्रत्यक्षेणप्रमाणेन यो न जानाति सूतकम् ।
अदृष्टविग्रहदेव कथंज्ञास्यति चिन्मयम् ॥६०॥

अर्थ—जो मनुष्य प्रत्यक्षप्रमाण से पारद को नहीं जाने वह अदृष्ट विग्रहवान् परमात्मा चिन्मय को किस प्रकार जानेगा ? अर्थात् जो पारे को जानता है वही परब्रह्म को जानेगा ।

रस संख्या.

एकएवरसोज्ञेयो बहुधोपरसाःस्मृताः ॥

अर्थ—रस जो पारा है वह एक है और रस, उपरस, अभ्रकादि उपरस अनेक हैं ।

पारद की श्रेष्टत्व

काष्ठौषध्योनागेनागोवंगेथवंगमपिशुल्वे ।६१।
शुल्वेतारेतारं कनकेकनकचलीयतेसूते ॥
अमृतत्वंहिभजते
हरमूर्त्तौयोगिनोयथालीना ॥६२॥
तद्वत्कवलितगगने रसराजेहेमलोहाद्याः ।
परमात्मनीवसततंभवतिलयोयत्र सर्वसत्वानाम् ॥ ६३ ॥ एकोऽसौरसराजः शरीर मजरामरंकुरुते । स्थिरदेहाभ्यासवशात्प्राप्यज्ञानगुणाष्टकोपेतम् ॥ ६४ ॥ प्राप्नोतिब्रह्मपदं न पुनर्वनवासदुःखेन ।

अर्थ—काष्टौषधि शीशे में, सीसा वग मे, बग तांबेमे, तांबा चादी मे, चादी सोने मे, और सोना पारे मे लीन हो जाय है, जैसे-योगी श्री शिव की मूर्त्ति में लीन होतेहैं, उसी प्रकार अभ्रकभक्षित पारे मे लोहादिधातु लीन होती हैं, जैसे परमात्मा में सर्व प्राणीमात्र लय होते हैं, उसी प्रकार सब सत्व पारे मे लीन होते हैं। एक ही रसराज (पारा) देह का अजर अमर करता है। जब इस प्राणी का देह स्थिर होता है तब इसको अष्टगुणसम्पन्न ज्ञान की प्राप्ति होती है, उस ज्ञान से ब्रह्मपद को प्राप्त होता है, किन्तु वनवास से ब्रह्मपद कि प्राप्ति नहीं हो सक्ती, तात्पर्य्य यह है कि पारद भक्षण से ही मोक्ष होती है, वन में तपश्चरण से मोक्ष नहीं होती ।

पारदग्रहणोपाय

कन्यांस्वरूपांप्रथमर्त्तुयुक्तांस्नातांसुवस्त्राभरणादिजुष्टाम् । जवाश्वरूढांसुनिरीक्षमाणां दृष्ट्वारसःकूपगतोऽतिशीघ्रम् ॥६६॥ प्रयात्यधस्तादुपरिप्रचंडकामीवकान्ताकरकर्षणार्थम् । धावत्यसौपृष्ठगतोहितस्याःपूरोहिनद्याइवयोजनैकम् ॥६७॥ प्रत्यायातिततः कूपंवेगतः शिवसंभव । मार्गनिर्मितगर्तेषुस्थितं गृह्णन्तिपारदम् ।

अर्थ—प्रथमऋतुवती स्वरूपवान कन्या स्नान वस्त्र और आभूषणों से शृंगार कर वेगवान घोडे पर बैठकर जहा पारे का कुआं है उसके ऊपर खड़ी होती है, उस कन्या को देख पारा कुए मे से उमग अतिशीघ्रता से उस कन्या के आलिगन करने को दौडता है, जैसे प्रचडकामी पुरुष अपनी प्यारी स्त्री के पकडने को चलता है, उस समय वह कन्या घोड़ेको दौड़ाती है उसके पीछे चार कोस पर्य्यन्त वह पारा दौडता है, जैसे नदी का वेग दौडता है, जब वह कन्या उसकी हद्द से बाहर निकल जाती है तब पारा फिर उसी वेग से कुए मे चला जाता है। उस समय मार्ग में जो खोदे हुए गड्ढे हैं उनमें जो पारा रह जाता है उसको वहाके मनुष्य लेकर देशविदेशो मे बेचते हैं इस प्रकार यह पारा[1] आता है।

यावत्सूतंनशुद्धं नचमृतमथनोमूर्च्छितंगंधबद्ध नोवज्रंमारितंस्यान्नचगगनवधोनोपधातुश्चशुद्धः ॥ स्वर्णाद्यसर्वलोहविषमपिनमृतंतैलपाकोनजातस्तावद्वैद्यःकसिद्धोभवतिवसुभुजांमण्डलेश्लाघ्ययोग्य ॥ ६६ ॥

---

१ यह पारद की उत्पत्ति और ग्रहण आदि कथा केवल मुग्ध मनुष्यो के प्रसन्न करने को लिखी गई है।

अर्थ—जब तक पारा न शुद्ध हुआ, और न मरा तथा विषमे मूर्च्छित और गंधबद्ध न हुआ, एवं जबतक हीरे की भस्म न करी, और अभ्रक जारण नहीं करा गया तथा उपधातुओंकी शुद्धि न हुई एवं स्वर्णादि अष्टलोह और विषनहीं मरे, तथा तैलपाक न हुआ तबतक वैद्य कहीं सिद्ध हो सक्ता है? या राजा के देश में श्लाघा के योग्य होता है। कदाचित नहीं होता किन्तु जो उक्त कर्मों को जानता है वही सिद्ध और श्लाघा के योग्य होता है।

इति श्रीमाथुर कृष्णलालतनय दत्तरामकृते बृहद्रसराजसुन्दरे पारदोत्पत्तिर्नाम प्रथमोऽध्यायः

पारद के संस्कार

अधुनारसराजस्य संस्कारान्संप्रचक्ष्महे
येनयेनहिचाचल्यदुर्ग्रहत्वंचनश्यति ॥ १ ॥

अर्थ—अब हम रसराज (पारे) के सस्कारों को कहते हैं जिन २ संस्कारों के करने से पारे की चचंलता और दुर्ग्रहत्व नष्ट हो।

सदोषपारा जारणनिषेध.

सदोषोभस्मितोयेनयोजितोयोगकर्मणि ।
सभिषक्पततेनरकेयावच्चन्द्रदिवाकरौ॥ २ ॥

अर्थ—जिस वैद्य ने सदोषपारे का जारण किया और उस सदोष पारे को औषधादि योगों में योजना किया अर्थात मिलाया वह वैद्य जबतक सूर्य्यचन्द्र हैं तावत्काल पर्य्यंत नर्कों मे वास करता है।

शुद्ध पारे के लक्षण.

अन्त.सुनीलोबहिरुज्ज्वलो यो मध्याह्नसूर्य्यप्रतिमप्रकाश । शस्तोऽथधूम्रःपरिपाण्डुरश्च चित्रो न योज्यो रसकर्म्मसिद्धौ ॥ ३ ॥

अर्थ—जिस में भीतर नीलापन झलके, और ऊपर से उज्ज्वल होवे, तथा मध्याह्न सूर्य के समान प्रकाश हो, वह पारा उत्तम है, इसे रसकर्म में लेना चाहिये। और धूम्र के रंग का पीला और चित्रविचित्र रंग का हो उसको रसकर्म सिद्धि में लेना उचित नहीं है।

पारे की जाति

जैसे कि सफेद पारा ब्राह्मण जाति है, इसे कल्पविषय में लेना। लाल रंग का पारा क्षत्रिय है, यह गुटका बनाने में श्रेष्ठ है। पीलेरंग का पारा वैश्य जाति है. यह धातुक्रिया में प्रशंसनीय है। और कालेरंग का पारा शूद्र जाति है, अतएव इसको इतरकर्म (कलई करने आदि) में लेना चाहिये।

नागोवङ्गोमलोवह्निश्चाचल्यंचविषंगिरिः ।
असह्याग्निर्महादोषानिसर्गा पारदेस्थिताः ॥

अर्थ—सीसा, रांग मल, अग्नि, चचलता, विष, गिरि दोष और अग्नि का न सहना ये आठ महान् दोष पारे में स्वभाव से ही स्थित हैं।

व्रणंकुष्ठंतथाजाड्यंदाहंवीर्यस्यनाशनम् ।
मरणंजडतास्फोटकुर्वन्त्येतेक्रमात्रणाम् ॥५॥
तस्माद्रसस्यसशुद्धिविदध्याद्भिषजांवरः ॥
शुद्धोयममृतंसाक्षाद्दोषयुक्तोरसोविषम् ॥६॥
दोषहीनो यदा मृतस्तदा मृत्युजरापह. ॥

अर्थ—उक्त दोष क्रम से व्रणादि रोगों को करते हैं जैसे पारा सीसे के दोष से व्रण उत्पन्न करे रांग के दोष से कोढ, मल के दोष से जड़ता, वन्हिदोष से दाह, चचलता से वीर्य-नाश, विषदोष से मरण, गिरिदोष से जड़ता, और अग्नि (असहन) दोष से स्फोट (फोड़ा) रोग को करता है, अतएव उत्तम वैद्य को पारद की शुद्धि अवश्य कर्त्तव्य है। शुद्धरस अमृत के तुल्य और दोषयुक्त रस (पारा) विष के तुल्य है यदि पारा दोष हीन होवे तो मृत्यु और बुढ़ेपने का नाशक है।

सप्तकंचुक.

पर्पटीपाटलीभेदी द्रावीमलकरी तथा ।
अंधकारीतथाध्वांक्षीविज्ञेयाःसप्तकंचुकाः

अर्थ—अब पारे की सात कॉचली कहते हैं-जैसे पर्पटी, पाटली, भेदी, द्रावी, मलकरी, अंधकारी और ध्वांक्षी ये पारे की सात कांचली है ।

त्रिविधदोष.

विषवन्हिमलाश्चेतिदोषामुख्यतमास्त्रयः ।
रसेमरणसतापमूर्च्छानांहेतवःक्रमात् ॥११॥
यौगिकौनागवंगौद्वौतौजाड्याध्मानकारकौ ।
औपाधिकापुनश्चान्ये कीर्तिता सप्तकंचुकाः
भूमिजागिरिजावार्जाद्वे चद्वे नागवंगजे ।
द्वादशैतेरसेदोषाःप्रोक्ता रसविशारदैः ॥१२॥

कोई आचार्य पारद में विष वन्हि और मल इन तीन दोषो को मुख्य मानते है, तहा विष से मरण, वन्हि से सताप, और मल-दोष से मूर्च्छा होती है । एव नागदोष और वग-दोष ये दो दोष योगिक हैं-ये क्रम से जडता और अफारे को करते हैं । उसी प्रकार सात काचली जो हैं वो औपाधिक दोष, है, और भूमिज दोष, गिरिदोष तथा जल दोष मिल के ३ और नाग, बग मिलके दो और ७ काचली के ये सब मिलके १२ दोष पारे मे रसशास्त्रज्ञो ने कहे हैं ।

प्रत्येक के दोष.

भूमिजःकुरुतेकुष्ठं गिरिजोजाड्यमेवच ।
वारिजोवातसंघातंदोषाढ्यं नागवंगयोः ॥
अतोदोषनिवृत्त्यर्थंरसःशोध्यःप्रयत्नतः ॥१३॥

भूमिजन्य दोष कुष्ट करता है, गिरिजन्य दोष जडता, जलजन्य दोष बादी के रोग, और नागवग अनेक प्रकार के अवगुण करते है अत-एव दोष निवृत्ति के अर्थ यत्नपूर्वक रसका शोधन करना चाहिये ।

तस्माद्दोषनिवृत्त्यर्थं सहायैर्निपुणैर्भिषक् ।
सर्वोपकरमादाय रसकर्मसमारभेत् ॥१४॥

इसी से दोष निवृत्ति के अर्थ, चतुर मनुष्यो की सहायता के साथ और सपूर्ण रस बनाने की सामग्री लेकर वैद्य रसकर्म प्रारभ करे ।

शुद्धि के भेद.

व्याधौ रसायनेचैव द्विविधासाप्रकीर्त्तिता ।
याशुद्धिःकथिता व्याधौ सानेष्टाहिरसायने ।
रसायनेतुयाशुद्धिःसाव्याधावपिकीर्त्तिता ॥१५

रसकी शुद्धि । रस को शुद्धि दो प्रकार की है । एक रोगके अर्थ, और दूसरी रसायनके अर्थ, जो शुद्धि रोगों के लिये है, वो रसायन मे नही करनी और जो रसायन मे कही है, वह रोग मे भी करै ।

रसशाला के लक्षण

अत्यन्तोपवनेरम्ये, चतुर्द्वारोपशोभिते ।
रसशालाप्रकर्त्तव्या सुविस्तीर्णामनोरमा ॥१६
सम्यग्वातायनोपेतादिव्यचित्रैर्विचित्रिता ॥

परम रमणीय उपवन मे चार द्वारो से शोभित तथा सुन्दर विस्तीर्ण और मनोहर, जिसमे चारो तरफ से उत्तम पवन आती हो ऐसी रसशाला बनानी चाहिये ।

रसाशालाप्रकुर्वीत सर्वबाधाविवर्जिताम् ॥१७
सर्वौषधमयेदेशे रम्यकूपसमन्विते ॥१८
नानोपकरणोपेतां प्राकारेणसुशोभिताम् ।
शालायाःपूर्वदिग्भागेस्थापयेद्रसभैरवम् ॥१९
वन्हिकर्मणिचाग्नेयेयाम्येपाषाणकर्मणि ।
नैर्ऋतेशस्त्रकर्माणि वारुणेक्षालनादिकम् ॥२०
शोषणवायुकोणेच वेधकर्म्मोत्तरेतथा ।
स्थापनसिद्धवस्तूना प्रकुर्य्यादीशकोणके ॥२१

किसी प्रकार की बाधा न हो, तथा सर्व प्रकार की औषधि विद्यमान हो और जहा रम-णीक कुआ होवे, तहा रसशाला बनानी चाहिये। जिस शाला मे रस बनाने के अनेक यन्त्रादि उप-करणविद्यमान हो, और जिसके चारो तरफ पर-कोटा खिचा हो,उस रसशालाके पूर्वमें रसभैरव की स्थापना करै, और अग्निकोण मे अग्निकर्म अर्थात् भट्टी चूल्हे आदि बनावे, दक्षिणदिशा मे

पापाणकर्म (शिल, लोटा, खरल आदि को) स्थापन करे, नैऋतकोण मे शस्त्रकम करें, पश्चिम में जल से प्रक्षालनादिकर्म करें, वायव्यकोण मे रस का सुखाना आदि कर्म करें, उत्तर दिशा मे रस वेधनादि कर्म करे, और ईशानकोण में सिद्ध वस्तुओं का स्थापन करना चाहिये।

पारद का शोधन

अथात:सम्प्रवक्ष्यामि पारदस्यविशोधनम्।
रसोग्राह्य:शुभेकाले पलानांशतमात्रकम्॥२२॥
पंचाशतपंचविंशद्वा दशपचैकमेववा।
पलादूनोनकर्त्तव्यारससंस्कारउत्तमः ॥२३॥
वहुप्रयाससाध्यत्वात्फलस्वल्पयतोभवेत् ॥

शुभकाल में १०० पल, अथवा ५० पल, वा २५ वा १० वा ५ अथवा १ पल पारा लेवे १ पल से न्यून पारे का संस्कार न करें, क्योंकि इसमें परिश्रम अधिक और फल थोडा मिलता है।

मतान्तरम्.

शतपंचाशतत्वापि पंचविंशद्दशैवच ॥२४॥
पचैकवा पलचैव पलार्द्ध कर्षमेववा।
कर्षादूननकर्त्तव्यरससंस्कारमुत्तमम् ॥२५॥
प्रयोगेपुचसर्वेपु यथालाभंप्रकल्पयेत्।

१०० पल, वा ५० पल, वा १० पल, वा ५, अथवा १ पल, वा आधा पल, अथवा १ कर्ष पारा लें, १ कर्ष से कम पारे का संस्कार न करें, और बाकी के रसप्रयोगों मे जैसा लिखा होवे उतना ही लेवे।

संपूज्यश्रीगुरु कन्यां बटुकचगणाधिप।
योगिनीक्षेत्रपालाश्च चतुर्द्धावलिपूर्वकम् ॥
ततोरहस्येनिलये सुमुहूर्तेविधोर्वले।
सुदिने शुभनक्षत्रे रसशोधनमाचरेत्।
अघोरेणचमंत्रेणरसप्रक्षाल्यपूज्यच ॥२८॥

चतुर्द्धा वलि पूर्वक श्रीगुरु, कन्या, बटुक, गणपति, योगिनी और क्षेत्रपाल का पूजन करने के अनन्तर एकान्त स्थान में शुभनक्षत्र मे रस शोधन का आरंभ करें, तथा अघोरमंत्र से रस को प्रक्षालन और पूजन करना चाहिये।

रक्षामंत्र.

अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्य. ।
सर्वत:सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेरुद्ररूपेभ्य ॥२६॥

यह अघोर मंत्र श्रीशिवजी का है।

पारद के संस्कार.

अष्टादशैवसंस्कार ऊनविंशतिका:क्वचित्।
संप्रोक्तारसराजस्य वसुसंख्या क्वचिन्मता ।

पारद के संस्कार जैसे कि-कहीं पारद के १८ संस्कार कहे हैं कहीं १६ संस्कार और किसी आचार्य ने ८ ही संस्कार माने हैं उनको आगे कहते हैं।

पारद के अष्टादश संस्कार.

स्यात्स्वेदनंतदनु मर्दनमूर्च्छनं च स्यादुत्थितिः पतनरोध [बोध] नियामनानि। संदीपनं गगनभक्षणमानमत्र सचारणंतदनुगर्भगतिर्द्रुतिश्च ॥ ३१ ॥ वाह्यद्रुति.सूतकजारणा स्याद्ग्रासस्तथासारणकर्मपश्चात् सक्रामणवेधविधि शरीरयोगस्तथाष्टादशधात्र क्रम ॥

१ स्वेदन, २ मर्दन, ३ मूर्च्छन, ४ उत्थापन ५ पातन, ६ रोधन [अथवा बोधन], ७ नियमन, ८ संदीपन, ९ गगनभक्षण, १० संचारण, ११ गर्भगति, १२ गर्भद्रुति, १३ वाह्यद्रुति, १४ सूतकजारण, १५ ग्रास, १६ मारणकर्म, १७ सक्रामण, १८ शरीर मे वेधविधि योग यह पारद के १८ संस्कार हैं।

अष्टसंस्कार.

स्वेदोमर्दनमूर्च्छनोत्थितिरत पातोऽपिभेदान्वितो। रोध. संयमनप्रदीपनमितिरप्राष्टधासस्कृतिः ॥ अस्यासर्वरसोपयोगिक

तयात्वन्यानविन्यस्यते ।ग्रन्थेऽस्मिन्प्रकृतोपयोगविरहाद्विस्तारभीत्याथवा (इतिरसपद्धतौ)

रसपद्धति वाला १ स्वेदन, २ मर्दन, ३ मूर्च्छन, ४ उत्थापन, ५ पातन, ६ रोधन, ७ सयमन, ८ प्रदीपन, ये पारे के आठ संस्कार हैं, यही आठ प्रकार के सस्कार सर्व रसोपयोगी होने से और सस्कार नहीं कहे, अथवा प्रकृतोपयोगी न होने से अथवा ग्रन्थविस्तार भय के कारण नहीं कहे ।

वृद्धवाग्भटे.

इत्यष्टौसूतसस्काराः समाद्रव्येरसायने ।
शेषाद्रव्योपयोगित्वान्नतेवैद्योपयोगिकाः ॥

वृद्ध भाग्भट लिखता है कि ये आठ ही संस्कार द्रव्य मे और रसायन विधि मे समान है बाकी दस सस्कार जो हैं सो द्रव्योपयोगी[१] हैं किन्तु वैद्य के उपयोगी नहीं है अतएव त्याज्य है ।

अथोनविंशति कर्माणि.

स्वेदनमर्दनमूर्च्छनउत्थापनपातनबोधननियमनसदीपनअनुवासनगगनादिग्रासप्रमाणचारणगर्भद्रुतियोगजारणरजनसारणक्रामणवेधनभक्षणाख्या.ऊनविंशतिसस्कारा सूतसिद्धिदाभवन्तिदीपनान्ता अष्टौसस्कारावादेहसिद्धिदाभवति ॥

१ स्वेदन, २ मर्दन, ३ मूर्च्छन, ४ उत्थापन, ५ पातन, ६ बोधन, ७ नियमन, दीपन, ८ अनुवासन, ९ गगनादि ग्रास प्रमाण, १० चारण, ११ गर्भद्रुति, १२ वाह्यद्रुति, १३ योग, १४ जारण, १५ रजन, १६ सारण, १७ क्रामण, १८ वेधन, १९ भक्षणाख्य, ये पारे के १९ सस्कार सिद्धि दायक हैं। अथवा दीपनान्त संस्कार देह के सिद्धि दाता हैं ।

पारद के भेद.

पारे की आरोटक, मूर्च्छित, वद्ध, और मृत ये चार ही अवस्था हैं। तहा आरोकट उसे कहते है जो दीपानन्तादि आठ सस्कारो से शुद्ध हुआ हो और चचल हो। अथवा दीपनान्तादि सस्कार न हुए हो केवल शिगरफसे ही निकाला हुआ हो उसे भी आरोटक कहते है । और यही षड्गुण गधक जारणादि और चन्द्रोदय आदि निर्मित्त पारे को मूर्च्छित कहते हैं, जो अग्नि में न उडे उसे वद्ध कहते हैं। एव जिस पारे की भस्म हो जावे उसको मृतपारा कहते हैं। ये चारों सस्कार आठ सस्कारों के अन्तर्गत है अतएव अब उन आठ सस्कारो को क्रम से कहते हैं ।

अथ स्वेदनसंस्कार.

नानाधान्यैर्यथाप्राप्तैस्तुषवर्जजलान्वितै. ।
मृद्भांडपूरितरक्षेद्यावदम्लत्वमाप्नुयात् ॥
तन्मध्येघनवाग्मुडो विष्णुक्रान्तापुनर्नवा ।
मीनाक्षीचैव सर्प्पाक्षीसहदेवी शतावरी ॥
त्रिफलागिरिकर्णीच हसपादीचचित्रकः ।
समूलकाण्डंपिष्ट्वातुयथालाभंविनिक्षिपेत्॥
पूर्वाम्लभांडमध्येतुधान्यम्लकमिदंभवेत् ॥
स्वेदनादिपुसर्वत्र रसराजस्ययोजयेत् ॥
अत्यम्लमारनालच तदभावेप्रयोजयेत् ।

एक मिट्टी का घडा लेवे उसमे अनेक प्रकार के धान तुषरहितो को भरे फिर उसमे मुखपर्य्यन्त जल भर ढककर एकान्त में रख देवे जबतक पानी खट्टा न हो तबलक उसकी रक्षा करै, फिर इस घडे मे इन औषधियों को और डाले नागरमोथा, ब्राह्मी, गोरखमुंडी, सफेद कोयल, साठ, मछेकी, सरफोका, सहदेई, शतावर, त्रिफला, नीले फूलकी कोयल ,हंसपदी और चित्रक ये प्रत्येक डाली पत्ते जड जो २ मिलें सबको लेकर पोसे और उक्त धान्य के घडे मे डाल देवे तो धान्याम्ल सिद्ध होवे, जहां पारे का स्वेदन सस्कार करना हो तहा इसधान्याम्ल को लेना चाहिये । यदि यह धान्याम्लक जहां न मिले तो उस जगह अत्यन्त खट्टी कांजी लेना चाहिये ।

[१] सुवर्णादि बनानेके उपयोगी औषधोपयोगी नहीं।

खरल.

खल्वोलोहमय. श्रेष्ठस्तस्माच्छ्रेष्ठश्चसारजः ।
कान्तलोहमयस्तस्मान्मर्दकश्चतथाविधः ॥
अभावेलोहखल्वस्यस्निग्धःपाषाणजःशुभः ।
तादृशस्वच्छमसृणमर्दकेनसमन्वितं ॥

पारद संस्कार के वास्ते लोह का खरल उत्तम है, और लोह के खरल से सारका उत्तम है, एव सार लोहे के खरल से कान्तलोह का खरल उत्तम कहा है । और जिस लोह का खरल होवे उसी का घोटने का मूसला होना चाहिए, यदि लोह का खरल न मिले तो उसके अभाव मे चिकने पत्थर का खरल शुभ है । और चिकना मूसला भी होवे ।

खरल का विस्तार.

खल्वयोग्याशिला
नीलाश्यामास्नि-
ग्धादृढागुरु । षोड-
शांगुलकोत्सेधान-
वांगुलकविस्तरा ।
चतुर्विंशांगुला-
दीर्घा घर्षणीद्वाद-
शांगुला

खरल यत्र

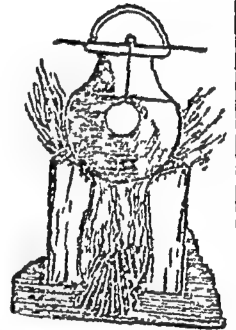


खरल योग्य शिलनीली (अर्थात् स्याह-मूपा पत्थर) चिकना, दृढ और भारी लेना उचित है, उस पत्थर का खरल १६ अगुल ऊंचा ६ अगुल चौडा २४ अगुल लवा बनावे । और घोटने की मुसली १२ अगुल होनी चाहिये । आजकल के वैद्य पीतल वा सगमर्मर तथा चीनी आदि के भी खरल बनाते हैं ।

त्र्यूषणंलवणराजीमूलक त्रिफलार्द्रकम् ।
महाबलनागबलामेघनाद पुनर्नवा । मेषशृङ्गी
चित्रकचनवसारसमंसमं । रसस्यषोडशांशेन
सर्वंयुञ्ज्यात्पृथक्पृथक् ॥ एतत्समस्त व्यस्तं
वापर्वाम्लेनैवपेषयेत ॥ ४६ ॥ प्रलिपेत्तेन
कल्केनवस्त्रमंगुलमात्रकम् ॥ तन्मध्येनिक्षिपे-
त्सर्वंबध्वा तुत्रिदिनं पचेत् ॥ दोलायन्त्रेऽ-
म्लसंयुक्ते जायते स्वेदितो रसः ॥ ४७ ॥

त्र्यूषण (सोंठ, मिरच, पीपल) नैन, राई, मूली का रस, त्रिफला, अदरक, महाबला, नागबला, चौलाई सांठ, मेढासिंगी, चित्रक और नौसादर इनको प्रत्येक पारे का सोल्हवां भाग लेवे, और इन सवको पृथक् पृथक् वा एकत्र पीस पूर्वोक्त धान्यम्लक के साथ पीसे, फिर इनको एक अगुल के स्वच्छ गाढे कपडे मे लेपकर धूप में सुखायलेवे, फिर उस कपडे में पारे को बाध दोलायत्र द्वारा धान्याम्ल मे औटाने से स्वेदन संस्कार होता है ।

अथवा



त्र्यूषणंलवणासूर्योचित्र-
कार्द्रकमूलकम् । पिष्ट्वा
ततो मुहुःस्वेद्य.कांजिकेन
दिनत्रयं ॥४८॥

कोई कहता है कि त्रिकुटा, नोन, राई, चित्रक, अदरक, मूली का रस, इन सब को पीस पूर्वोक्त विधि से बार बार तीन दिन स्वेदन संस्कार करें ।

अन्यसिद्धमतम्

दिनव्योपवरावह्निःकन्याकल्केपुकांजिके
रसंचतुर्गणवस्त्रेबध्वादोलाकृतपचेत् ॥४६॥

त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रक और घी गुवार का कल्क और कांजी में पारे को चौलड कपडे मे बाध दोलायत्र की विधि से पचावे, तो स्वेदन संस्कार होवे ।

रसस्याषोडशांशेनद्रव्ययुञ्ज्यात्पृथक्पृथक् ।
द्रव्येष्वनुक्तमानेषु मतमोनमिदबुधैः ॥ ५० ॥

त्रिदिनस्वेदयेद्धर्मे दिनमेकनिरंतरम् ।
स्वेदयेद्रसराजं तु नातितीक्ष्णेनवह्निना ॥५१॥

जितना पारा लेवे उसका सोलहवां भाग प्रत्येक औषधि पृथक् २ लेवे, जहा स्वेदनादि सस्कार मे औषधियो का परिमाण न कहा हो तहा इस प्रमाण से चाहिये । फिर उस पारे को उक्त काजी आदि मे डाल के तीन दिन धूप मे रखकर स्वेदन करें, फिर दोलायत्र की विधि से मध्यमाग्नि करके पारे का स्वेदन सस्कार करै ।

[अथवा पारे के खडत्त्व दूर करने को स्वेदन सस्कार इस प्रकार करै, प्रथम पारे को दोलड कपडे मे बाधे फिर एक हाडी मे जल भागरा, लोनिया, गोमा, जलपीपल, इन चारो का रस भरके उसमे पारे की पोटली लटका देवे फिर हाडी को चूल्हे पर चढाकर चार प्रहर की दीपक अग्नि देवे, तदन्तर पारद के मुख करने को और पक्ष दूर करने को मर्दन सस्कार करे]

द्वितीयमर्दनसंस्कार

गृहधूमेष्टिकाचूर्ण तथादधिगुडान्वितम् ।
लवणासुरिसयुक्त क्षिप्त्वासूतविमर्दयेत् ॥५२
षोडशांशन्तुतद्द्रव्यंसूतमानान्नियोजयेत् ।
सूतक्षिप्त्वासमतेन दिनानित्रीणिमर्दयेत् ॥५३
जीर्णाभ्रकतथावीजजीर्णसूतंतथैवच ।
नैर्मल्यार्थं हिसूतस्य खल्वेधृत्वातुमर्दयेत् ॥५४
गृह्णातिनिर्मलोरागान् ग्रासेग्रासेविमर्दित. ।
मर्दनाख्यहियत्कर्म तत्सूतेगुणकृद्भवेत् ॥५५

घर का धुँआ (धूमसा) ईंटका चूर्ण (कुकुआ) दही, गुड, नौन, और राई इन सबको खरल मे डाल इनसे पारे को मर्दन करे । अब कहते हैं कि इस मर्दनसस्कार मे जो द्रव्य डालना लिखा है वह प्रत्येक औषधि पारे का सोलहवा भाग डालना चाहिये जैसे पारा चार रुपये भर होतो प्रत्येक औषधि चार २ आने भर डालनी चाहिये फिर उनके साथ उस पारे को तीन दिन खरल करे, जिस पारे मे जीर्णाभ्रक अथवा बीज (सोना, चादी आदि) जीर्ण किया हो ऐसे जीर्ण पारे को निर्मल करने के अर्थ खरल मे डाल कर मर्दन करना चाहिये जैसे २ पारे को ग्रास देवे तैसे २ पारे को मर्दन करे, तौ वह निर्मल पारा उत्तम रंग को ग्रहण करता है । जितना पारे का मर्दन संस्कार किया जावे उतना ही अधिक गुण-वाला होता है अतएव मर्दन सस्कार अवश्य करै ।

अथान्यसिद्धमतम्

रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाभस्मचूर्णकैः ।
जबीरद्रवसयुक्तं मुहुर्मर्द्योदिनत्रयम् ॥५६॥
दिनैकंवापिसूत:स्यान्मर्दनान्निर्मल.परम् ।
ऊर्ध्वपातनयंत्रेण गृह्णीयाच्च पुन पुन ॥
पटसारणतोवापि क्षालनादारनालत. ॥५७॥

लाल ईंट का कुकुआ, हल्दी का चूर्ण, धूंआ, ऊन[1] की भस्म, चूना इनमे पारा मिला-कर जभीरी के रस से तीन दिन खरल करै, अथवा एक ही दिन खरल करने से शुद्ध हो, फिर इस पारे को ऊर्ध्वपातन यत्र द्वारा उडा-कर निकाल लेवे, अथवा वस्त्र से छान लेवे, अथवा कांजी से धोवे तो पारा शुद्ध होवे ।

तृतीयमूर्च्छनसंस्कार

गृहकन्यामलहन्त्री त्रिफलावह्निनाशिनी ।
चित्रमूलविषहन्ति तस्मादेभि प्रयत्नत. ॥५८
मिश्रितसूतकंद्रव्यै: सप्तवाराणि मूर्च्छयेत् ।
इत्थसमूर्च्छित:सूतोदोषशून्य प्रजायते ॥५९॥

घीगुवार के रस मे घोटने से पारे का मल दूर होवे, त्रिफला के काढे मे घोटने से पारे का अग्निदोष दूर होता है, और चीते के काढे मे घोटने से विष दोष दूर होता है, अतएव उक्तद्रव्यो से यत्नपूर्वक पारा घोटना चाहिये । जो पारा अन्यद्रव्य मिश्रित है उसको सातवार मूर्च्छन करे इस प्रकार मूर्छित पारा दोष शून्य होता है ।

---

१ ऊन और भस्म(राख) लेना ऐसा किसी का मत है ।

पलत्रयचित्रकसर्षपाणा कुमा-
रिकन्यावृहतीकषायै.॥
दिनत्रयमर्दितसूतकस्तुविमुच्च-
ते पचमलादिदोषै. ॥ ६० ॥

चीते की छाल, सरसों, घीगुवार और कटेरी इनको तीन २ पल ले काढाकर तीन दिन पारे को मर्दन करै तो पारे के पचमलादि दोष दूर होवे ।

विशालाकोलचूर्णेन
वगदोष विमुचति ॥
राजवृक्षोमलंहन्ति
पावकोहन्तिपावक ॥ ६१ ॥
चाचल्यकृष्णधत्तूर
स्त्रिफलाविषनाशिनी ॥
कटुत्रयगिरिंहन्ति
असह्याग्निंत्रिकटक ॥ ६२ ॥
प्रतिदोपपलांशेन
तत्रसूतसकांजिकम् ॥
सुवस्त्रगालितखल्वे
सूतक्षिप्ताविमर्दयेत् ॥ ६३ ॥
उद्धृत्यचारनालेन
मृद्भाण्डेक्षालयेत्सुधी ॥
सर्वदोषविनिर्मुक्त
सर्वकंचुकवर्जित ॥
जायतेशुद्धसूतोऽय-
योजयेद्रसकर्मसु ॥ ६४ ॥

इन्द्रायन के फल के चूर्ण मे और अकोल के चूर्ण मे पारे को घोटने से पारा वग दोप को त्यागता है, अमल तास पारेके मल को हरण करता हैं, चीते की छाल का काढा पारे का अग्निदोप नाश करता है। काले धतूरे के रस मे घोटने से चाचल्यता दोष दूर होवे, त्रिफला का काढा विपदोप को दूर करे। त्रिकुटा का काढा गिरिदोष अर्थात् पर्वत के दोष जो पारे में हों एव गोखरू के काढे से पारे को घोटने से असह्याग्नि दोप दूर होता है। प्रति दोष दूर करने को पारे का सोलहवा भाग औषधी डाले और काजी डाल दो २ दिन घोटे, फिर वस्त्र से छान लेवे, फिर निकाल कांजी से मिट्टी के पात्र मे धोवे तो पारा सर्व दोष और सातो कांचलियो करके रहित हो शुद्ध होवे। इस पारे को सम्पूर्ण रस कर्मों मे डालना चाहिये ।

अथ कंचुकी हरणम्.

कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपै
कृतैः कषायैर्वृहतीविमिश्रै ।
फलत्रिकेनापि विमर्दितो रसो
दिनत्रयं सप्तमलैर्विमुच्यते ॥६५॥

घीगुवार का रस, चित्रक, लाल सरसो, कटेरी, और त्रिफला इनको पृथक् २ काढे मे अथवा सबका काढा कर एक साथ तीन दिन मर्दन करने से पारा सप्तकचुकी दोष निर्मुक्त होता है ।

चतुर्थ उत्थापन संस्कार.

ततउत्थापयेत्सूतमातपे
निम्बुकादितम ॥
उत्थापनावशिष्टतु
चूर्णपातनयत्रके ।
धृत्वाग्नावूर्ध्वभाडाप्तसं-
ग्रहेत्पारदंभिपक् ॥ ६६ ॥

इस प्रकार मूर्च्छन सस्कार करके फिर पारे का उत्थापन सस्कार करै, पारे मे नींबू का रस डाल कर घोटे जब सूख जावे तब पारे को निकाल लेवे, यदि रस के चूर्ण मे पारा मिल जावे, उसका पातन यत्र द्वारा अर्थात् डमरु यत्र मे चढाकर उपर लगे हुए पारे को निकाल लेवे, इसको उत्थापन सस्कार कहते हैं।

पंचमपातनसंस्कार.

तच्चत्रिविध ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्पातनम् ।
असमद्भिरेकात्सशुद्धो रस
पात्यस्तत परम् ॥

उद्धृतःकांजिकक्काथात्पू-
तिदोषनिवृत्तये ।
ताम्रेणपिष्टिकांकृत्वापा-
तयेदूर्ध्वभाजने ॥ ६८ ॥
वंगनागौपरित्यज्य
शुद्धोभवतिसूतकः ।
शुल्वेनपातयेत्पिष्टिं
त्रिधोर्ध्वसप्तधात्वधः ॥ ६९ ॥

अब पचम पातन संस्कार कहते हैं, पातन तीन प्रकार का है, जैसे-ऊर्ध्वपातन, अध पातन, और तिर्यक्पातन तहां उत्थापन सस्कार में पारद को लेकर पातन सस्कार इस प्रकार करे, कांजी के क्वाथ से पारद को निकाल कर उस पारे की दुर्गंधि दूर करने को तांबे के पात्र में पारे की पिष्टी भर के ऊपर के पात्र में उसको पातन करै तो पारा वंगदोष और नाग दोष करके शुद्ध होवे। तांबे के पात्रद्वारा पारे की पिष्टी को पातन करे, तहा तीन बार ऊर्ध्व पातन करे और सात बार अध पातन करना चाहिये।

अथोर्ध्वपातनम्.

भागस्त्रयो रसस्यार्क ।
भागमेकविमर्दयेत ।
जबीरद्रवयोगेन यावदा-
याति पिंडताम् ॥ ७० ॥
तत्पिंडतलभांडस्थमूर्ध्व-
भांडे जलंक्षिपेत् ।
कृत्वालवालकेनापि ततः
सूतं समुद्धरेत् ॥
ऊर्ध्वपातनमित्युक्तंभिषग्भि
सूतसाधने ॥ ७१ ॥

पारा ३ भाग, ताम्रचूरा १ भाग, दोनो को जभीरी के रस से जब तक गोला न बधे तब तक घोटे, फिर उस पारे के गोले को नीचे के पात्र मे रख ऊपर के पात्र पर आलवाल (थांवला) सा बना जल भर देवे, और नीचे अग्नि देवे फिर उस ऊपर की हाडी मे चिपटे हुए पारे को निकाल लेवे इस क्रिया को उर्ध्व पातन कहते हैं, ग्रंथान्तर मे इस ऊर्ध्व पातन यत्र को विद्याधर यंत्र कहते हैं।

कोई कहता है कि पारे को ओगा और लो नामक्खी के साथ घीगुवार के रस मे घोटे और पूर्वोक्त विधि से ऊर्ध्वपातन करै।

अथाधःपातनम्.

त्रिफलाशिग्रुशिखिर्वा
लवणासुरसंयुतैः ।
नष्टपिष्टंरसंकृत्वा
लेपयेदूर्ध्वभांडके ॥ ७२ ॥
ऊर्ध्वभांडोदरं लिप्त्वा
चाधोभांडेजलंक्षिपेत्।
सविलेपद्वयोः कृत्वा
तंयत्रंभुविपूरयेत् ॥ ७३ ॥
उपरिष्टात्पुटेदत्तेजले-
पततिपारदः ।
अध.पातनमित्युक्तं सिद्धाद्यैः
सूतकर्मणि ॥ ७४ ॥

त्रिफला, सहजने की छाल, ओगा, सफेद सरसो, इनमे पारे को खरल कर पिट्ठी कर उस पिट्ठी को ऊपर के पात्र मे लेपकर नीचे के पात्र मे जल भर देवे दोनो का मुख मूद सधि लेपकर वदकर देवे, फिर उस यत्र को पृथ्वी मे गाड देवे ऊपर के पात्र की पैंदी मे कुक्कुटपुट देवे तो उस पुट के प्रभाव से पारा उडकर नीचे के जल पात्र मे प्रवेश करे, इस क्रिया को अधःपातन कहते है।

कोई आचार्य्य छाछियागधक और पारा दोनो की समानले कौंछ के बीज सहजने के बीज ओंगा, सेंधानमक, सफेद सरसो, इनको मिला कर जबीरी के रस से १ दिन घोटे, फिर इस पिट्ठी को ऊपर के पात्र मे लेकर पूर्वोक्त विधि से पारा निकाल ले। इसे भी अधःपातन कहते हैं।

तिर्यक्पातनम्.

घटेरसंविनिक्षिप्यस-
जलं घटमन्यकम् ॥
तिर्यङ्मुखद्वयोःकृत्वातन्मु-
खरोधयेत्सुधी. ॥७५॥
रसाधोज्वालयेदग्निं
यावत्सतोजलंविशेत ।
तिर्यक्पातनमित्युक्तं सि-
द्धैर्नागार्जुनादिभिः ॥७६॥
मिश्रितौ चेन्नागवंगौ
रसेविक्रयहेतुना ॥
ताभ्यां स्यात्कृत्रिमोदोपस्त-
न्मुक्तिः पातनात्रयात् ॥७७॥
एवंसुसंस्कृत सूतः
पातनावधियत्नत ।
सर्वदोषविनिर्मुक्तो
जायते नात्रसंशयः ॥ ७८ ॥

एक बड़ा घड़ा लेवे उसमे पारा भरे और उसी प्रकार का दूसरा पात्र ले उसमे जल भर देवे फिर कुछ तिरछे रखकर दोनो के मुखमिला बन्द कर दे औरपारे वाले पात्रके नीचे अग्नि जलावे उस अग्निके लगने से पारा उडकर दूसरे पात्र मे जावेगा इसको 'तिर्यक्पातन' कहते है। थालीयंत्र, डमरूयंत्र, और तिर्यक पातन यंत्रों का स्वरूप इस बृहद्रसराजसुन्दर के मध्यखड के अन्त मे है।

कोई आचार्य्य पातन सस्कार के अनन्तर फिर स्वेदन करना कहते हैं।

छठा बोधन संस्कार

एवं कदर्थित. सूत खडत्वमधिगच्छति ।
तन्मुक्तयेऽस्यक्रियतेबोधनंकथ्यते हि तत् ॥७९

इस प्रकार सस्कृत पारा खडत्त्व कहिये नपुसकता को प्राप्त होता है अतएव उस नपुसकत्व के दूर करने के लिये अब हम छठा बोधन सस्कार कहते हैं।

विश्वामित्रकपालेवाकाचकुप्यामथापिवा ।
सृष्टयंबुजविनिक्षिप्यतत्रतन्मज्जनावधि ॥८०
पूरयेत्त्रिदिनंभूम्यांराजहस्तप्रमाणतः ।
अनेनसूतराजोऽयंषंढभावंविमुंचति ॥८१॥

नरेली अथवा काच की शीशी मे पारा डाल के उसमें सेंधा नमक का पानी भर देवे कि जिससे वह पारा डूब जावे, कोई सृष्टय-बुज के कहने से स्त्री का रज और मूत्र ग्रहण करते हैं, अर्थात सोलह वर्ष की स्त्री जिसे कालनी[२] कहते हैं उसके आर्त्तव से पारे को डुबो देवे, फिर उसको बन्द कर सवा हाथ का गड्ढा खोदके गाड़देवे, इस प्रकार तीन दिन गड़ा रहने देवे इस प्रकार करने से पारे का नपुसकत्व दूर होता है।

सप्तम नियमन संस्कार

सर्पाक्षीचिंचिकावध्या
भृंगाऽङ्कनकाबुभिः ।
दिनंसंस्वेदितःसूतो-
नियमात्स्थिरता व्रजेत् ॥ ८२ ॥

सरफोका (वा नागढी,) इमली, वाफ ककोडा, भागरा, नागरमोथा, और धतूरा इन सबके रस मे १ दिन स्वेदन करने से पारा स्थिर होता है।

मतान्तरम्

उत्तराशाभव स्थूलोरक्तसैंधवलोष्टकः ।
तद्गर्भेरंध्रकंकृत्वासूतंतत्रविनिक्षिपेत ॥८३॥
ततस्तुचणकक्षारंदत्त्वाचोपरिनिम्बूक ।
रसक्षिप्तंग्राथदातव्यताद्दृग्सैंधवखोटकम्॥८४

१ सूतेजलविनिक्षिप्येति पाठातरम्।

२ यस्यास्तुकुंचिताः केशा श्यामायाऽब्ज-लोचना। सुरूपातरुणीभिन्ना विस्तीर्णजघनाशुभा। सकीर्णहृदयापीनस्तनभारेण नम्रता। चुंबनालिं-गनस्पर्शकोमलामृदुभाषिणी। अश्वत्थपत्रसदृश योनिदेशेसुशोभिता। कृष्णपक्षे पुष्पवती सा नारी कालनी स्मृता।

गर्त्तं कृत्वाधरागर्भेदत्वासैंधवसयुतं ।
धूलिमष्टांगुलंदत्वाकारिषंदिनसप्तकम् ॥८५॥
वह्निंप्रज्ज्वाल्यतद्ग्राह्यं क्षालयेत्कांजिकेनतु ।
अयंनियमनोनामसंस्कारोगदितो बुधै ।
अभावेचणकक्षारादर्पयेन्नवसादरम् ॥८६॥

उत्तरकी दिशामे अर्थात् पंजाब मे लाल रग का सैंधव पाषाण होता है, उस पत्थर के बीच मे छेद कर पारा भर दे और पारे के ऊपर चनाखार भरके नींबू का रस भर देवे, फिर उसी सैंधव पाषाण के टुकड़े मे उसका मुख बन्द करै और पृथ्वी में गडढा खोद पारे वाले पत्थर को रख अठारह अंगुल ऊँची मिट्टी से दाब देवे, फिर उसके ऊपर सात दिन अग्नि जलाकर उस पारे को निकाल ले, और काजी से धो डाले, इस क्रिया को नियमन सस्कार कहते हैं। यदि नियमन सस्कारमें चनाखार न मिले तो नौसादर डाले अथवा सज्जीखार डाले इस प्रकार भास्कराचार्य ने कहा है।

अष्टम दीपनसंस्कार

काशीसंपचलवणराजिकामरिचानिच ।
भूशिग्रु बीजमेकत्रटंकणेनसमन्वितम् ॥८७॥
आलोड्यकाजिकेदोला
यंत्रेपाच्योत्रिभिर्दिनैः ।
दीपन जायते सम्यक्
सूतराजस्यचोत्तमम् ॥८८॥

अर्थ—कसीस, पाचो नमक, राई, मिरच, सहजने के बीज, और सुहागा सबको काजी मे मिलावे, फिर काजी मे पारे को दोलायन्त्र की विधि से तीन दिन पचावे तो पारद मे दीपन संस्कार होवे।

अथवा पारे को चीते के रस मे और काजी मे दोलायन्त्र की विधि से पचावे तो रसराज का परमोत्तम दीपन होवे।

अथ अनुवासन संस्कार

दीपितरसराजन्तुजबीररससंयुत ।
दिनैकंधारयेद्घर्मेंमृत्पात्रे वाशिलोद्भवे ॥८६॥

अर्थ—दीपित पारे को १ दिन जबीरी के रस मे डाल के मिट्टी या पत्थर के बरतन में भर के धूप मे रखे यह अनुवासन सस्कार है।

अनुवासनान्त नौ सस्कारो को करके जो शुद्ध पारा है वह अष्टमाश शेष रहता है।

स्वेदनादिनवकर्मसंस्कृत
सप्तकंचुकविवर्जितोभवेत् ।
अष्टमांशमवशिष्यते तदा
शुद्धसूतइति कथ्यते तदा ॥६०॥

अर्थ—स्वेदनादि नौ सस्कारो से पारा सातो कांचलियो करके वर्जित होता है और अष्टमाश शेष रहता है अर्थात् पारे मे सात भाग कंचुकी है जब शुद्ध होता है तब कंचुकी के सात भाग चले जाते हैं केवल आठवां भाग पारद मात्र का रहता है उसे शुद्ध पारा कहते हैं।

अथवाहिंगुलात्सूतग्राह्येत्तन्निगद्यते ।
जंवीरनिंबुनीरेणमर्दितोहिंगुलोदिनम् ॥६१॥
ऊर्ध्वपातनयंत्रेणग्राह्यःस्यान्निर्मलोरस ।
कंचुकैर्नागवंगाद्यैर्निर्मुक्तोरसकर्मणि ।
विनाकर्माष्टकेनैवसूतोऽयंसर्वकर्मकृत् ॥६२॥

अर्थ—अथवा हिंगलु से पारा निकाले उसे निकालने की विधि कहते हैं, हींगलू की डली को खरल मे पीस जंबीरी या नींबू के रस से एक दिन खरल कर फिर ऊर्ध्वपातन यत्र अर्थात् डमरू यत्र द्वारा उडाय लेवे तो यह पारा कंचुकी और नागवंग आदि दोष रहित और निर्मल होता है यह पारा बिना अष्ट सस्कार शुद्ध होता है। इसे सपूर्ण कर्मों में ग्रहण करना चाहिये।

निम्बूरसैर्निम्बपत्ररसैर्वायाममात्रकम् ।
पिष्ट्वादरदमूर्ध्वञ्चपातयेत्सूतयुक्तित ॥६३
ततःशुद्धतरतस्मान्नीत्वाकार्येप्रयोजयेत् ॥६४॥

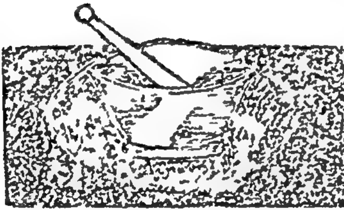
अर्थ—शिगरफ की डली को नीबू के या नींब के पत्तो के रस मे १ प्रहर घोटे, फिर डमरू यत्र मे भर दो प्रहर की अग्नि देकर पारे को

उडा लेवे तो पारा सप्त कंचुकी और सर्व दोष रहित हो। इसे सर्व योगो में डालना चाहिये।

तप्तखल्व द्वारा शुद्धी

भूगर्त्तेजशकृत्तुपानलपुटैः
सस्थापितेलोहजे ।
खल्वेजंभलकांजिकेनवलिना
सार्द्ध दशांशेन स ॥
समर्द्य परिपातयन्त्रविधिना
निष्कासित. सप्तधा।
शुद्ध पारदकर्मठैर्निगदितो
वैद्यै रवैद्य तरै ॥९५॥

तप्तखल्वम्



अर्थ—पृथ्वी में गढा खोदे उसमे बकरी की मेंगनी और भूसा भरके अग्नि जलावे, उसके ऊपर लोह का खर्ल रख पारे का दशांश गंधक लेवे, इसको जभीरी के रस और कांजीमे घोटे इस प्रकार सात बार पारे को खरल करे और उडा लेवे। इसेपारे के कर्मकर्त्ताओ ने शुद्ध पारा कहा है।

एकेनलशुनेनापिशुद्धोभवतिपारद ।
तप्तखल्वेमासमेकपिष्टोलवणसंयुतः ॥ ९६ ॥

एक लहसन के ही रस में पारे को घोटने से शुद्ध होता है। इसको एक महीने तप्त खल्व में नमक डाल कर उक्त रस मे घोटना चाहिये।

शोधितस्यमुखकरण पक्षछेदनं

विपोपविपकैर्मर्द्यः प्रत्येकं दिनसप्तक।
तेनास्यजायतेवन्हिपक्षछेदंमुखंतथा ॥९७॥

शुद्ध पारे को विष उपविषो से पृथक् २ सात २ दिन घोटे तो पारे के क्षुधा प्रगट हो तथा पक्षछेद (पंख कटे) हो और मुख हो।

नवविष

कालकूटोवत्सनाभः शृंगिकश्चप्रदीपनः।
हालाहलोब्रह्मपुत्रोहारिद्र सक्तुकस्तथा।
सौराष्ट्रिकइतिप्रोक्ताविषभेदाअमीनव ॥९८॥

कालकूट, वत्सनाभ, शृंगिक, प्रदीपन, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, हारिद्रक, सक्तुक और सौराष्ट्रक, यह विष के नौ भेद कहे हैं। इन प्रत्येक विषो मे सात २ दिन घोट के डमरू यन्त्र मे पारे को उडाय लेवे।

उपविष

अर्कसेहुडधत्तूरलांगलीकरवीरका ।
गुंजाहिफेनावित्येताः सप्तोपविषजातयः ॥
एतैर्विमर्दितसूतश्छिन्नपक्षश्चजायते ॥
मुखचजायतेतस्य धातूंश्चग्रसतेत्वरं ॥१००॥

आक, थूहर, धतूरा, कलहारी, कनेर, घूंघची और अफीम ये सात उप विष की जाति हैं, इन विष और उपविषो में सात २ बार घोटने से पारे के पख दूर होवें, और मुख होवे। तथा शीघ्र सुवर्णादि धातुओं को ग्रसे, परन्तु नो विषो का मिलना कठिन है इससे केवल सिंगियाविष और सातों उपविषों मे सात २ दिन घोट के दो प्रहर की आंच दे उडाय लेवे, परन्तु यह भी अवश्य स्मरण रहे कि दो प्रहर मे सब पारा न उडे तो फिर अग्नि देकर शेष पारे को उडावे, और पारा उडते समय ऊपर की हांडी पर शीतल जल का पुचारा देता रहे कि जिससे उडा हुआ पारा जमता जावे।

सास्योरसःस्यात्पटुशिग्रुतुत्थै.
सराजिकै सोपणकैस्त्रिरात्र ॥
पिष्टस्तत स्विन्नतनु सुवर्ण मुखान-
यंखादतिसर्वधातून् ॥ १०१ ॥

अर्थ—सैंधानमक, सहजने के बीजों का चूरा, नीलाथोथा, राई, पीपल, अथवा त्रिकुटा इन सब औषधियो मे तीन दिन खरल करे, फिर इस पारे का स्वेदन सस्कार करे, तो पारा

सुवर्णादि संपूर्ण धातुओं को भक्षण करे।

अथ[1] षड्बिन्दुकीटैश्चरसोमर्द्य त्रिवासरम्
लवणाम्लैर्मुखंतस्यजायतेधातुघस्मरम् ।१०२।

अर्थ—अथवा षडविन्दु कीट (छःबूंट के कीड़े) के रस से नोन और खटाई डाल के घोटे तो पारे के मुख हो तथा सुवर्णादि धातुओ को शीघ्र भक्षण करे छःबूँद का कीडा काला २ होता है और इसके ऊपर पीले रंग की छःबूँद होती है इसका काटा हुआ मनुष्य मर जाता है]।

अथवात्रिकुटाक्षारौराजीलवणपंचकम्।
रसोनोनवसारश्चशिग्रुश्चैकत्रचूर्णितैः ॥१०३
समांशैः पारदादेतैर्जंबीरेणद्रवेणच ॥
निंबुतोयैःकांजिकैर्वासोष्णेखल्वेविमर्दयेत् ॥
अहोरात्रत्रयेणस्याद्रसेधातुकरंमुखम् ॥१०४॥

अर्थ—अथवा त्रिकुटा, सज्जीखार, जवाखार, राई, पाचो नोन, लहसन, नोसादर, और सहँजना भी सब को पारे के समान लेकर जभीरी के रस से या नींबू के रस अथवा कांजी से तप्त दिन रात खरल करे तो पारे के धातु का ग्रसने वाला मुख होवे।

उक्तौषधिरसैर्वस्त्रे दोलायंत्रेविपाचयेत्।
अवशिष्टरसैः पश्चान्मर्दयेत्पाचयेदपि ॥१०५॥
मर्दनाख्यंहियत्कर्मतत्सूतेगुणकृद्भवेत्।
पुनर्विमर्दयेत्तस्माच्चतुर्दशदिन्यान्यमुम् ॥१०६
इत्थपातनयानपुंसकममुंयत्नेनरुद्धांबरे।
सिंधुत्र्यूषणमूलकार्द्रहुत
भुग्राज्यादिकल्कान्विते।
भांडेकांजिकपूरितेदृढतरे-
भव्येशुभे वासरे ॥
दोलायंत्रविधानवित्त्रिदिव-
संमंदाग्निनास्वेदयेत् ॥ १०७ ॥
स्वेदनदीपनतोऽसौग्रासार्थे जायतेसुत.।
दीपितमेनसूतंजबीराम्लेनधारयेद्धर्मे ॥१०८॥
दिनमनुवासनमेवंनवमंसंस्कारमिच्छंति।

पारे को पूर्वोक्त औषधि (जलभांगरा, लोनियां, गोमां और जल पीपल) के रसो मे फिर मर्दनाख्य सस्कार करे, इस प्रकार उक्त चारो औषधियो के रस मे १४ दिन खरल करे, इसका कारण यह है कि बहुत मर्दन करने से पारे मे विशेष गुण बढता है, फिर १४ दिन उपरान्त पूर्वोक्त उत्थापन संस्कार करे, पीछे पारद का खंडत्व दूर करने को दूसरी बार इस प्रकार स्वेदन सस्कार करे। सैधानमक, सोठ, मिरच, पीपल, मूली के बीज, अदरक, चीता और राई इन सब औषधियों को छदाम २ भर लेवे और उसको कांजी मे पीस कर किसी स्वच्छ कपडे मे चार प्रहर पर्यन्त खूब लेप करे, अर्थात् जब लेप सूख जावे तब फिर लेप करे, फिर उस कपडे की चार तह कर उसमे पारा बाध कर हांडी मे दोलायन्त्र कर के लटकाय देवे, फिर उस हांडी मे १५ सेर कांजी भर के तीन दिन धीमी आच से स्वेदन सस्कार करे, स्वेदन सस्कार से पारे में दीपन सस्कार होता हैं, और दीपन सस्कार से पारा भूखा हो कर धातु खाने को समर्थ होता है, तथा पारे का षंडत्व कहिये निर्बलता दूर हो और बली होता है। फिर इसको वस्त्र से निकाल इस प्रकार अनुवासन सस्कार करे कि एक हांडी मे पारा डाल उसमें कागजी नींबू का रस डाले एक दिन धूप मे रख देवे पीछे निकाल लेवे यह अनुवासन संस्कार है।

सहस्रनिंबूफलतोयघृष्टोरसो-
भवेद्वन्हिसमप्रभावः ॥ १०९ ॥

हजार नींबू के रस मे पारे को घोटने से पारा शुद्ध और भूखा होता है, अथवा पारे को क्षार वर्ग से और अम्लवर्ग से घोटने से पारे के मुख और क्षुधा प्रगट होवे, सो ग्रन्थान्तर मे लिखा भी है। यथा

ततःखल्वेनतप्तेनअम्लेनोत्थापयेद्रसम्।
क्षाराःमुखकरा. सर्वेसर्वेअम्लाप्रबोधका ॥११०

१ अथवाबिन्दुलीकीटैरित्यपिपाठः।

अर्थ—पारे को तप्तखल्व मे अम्लवर्ग के रस में डाल उत्थापन सस्कार करे क्योकि सब क्षार मुख के कर्त्ता हैं, और सब अम्ल बोधक हैं।

अथाम्लवर्ग.

अम्लवेत[1], जंभीरी[2], नींबू[3], बिजौरा, लोनियां, चनाखार, इमली, बेर, अनारदाना, अंबष्टा, तांतडीक[4], नारगी, रसपत्री, करोंदा' चूका[5] इन से आदि ले और भी जो खट्टी औषधिया हैं उनको अम्लवर्ग कहते हैं। और जिन पर अक है इनको अम्लपचक कहते हैं, परन्तु सब खटाइयों मे चनाखार और अम्लवेत की खटाई श्रेष्ठ है।

क्षार वर्ग

पलासक्षार, मोखावृक्षकाक्षार, जवाखार, सज्जीखार, तिलकाखार, सुहागा, ये क्षारवर्ग है। इनमें सुहागे को त्याग क्षारपंचक कहाते हैं और जवाखार, सज्जीखार, सुहागा ये क्षारत्रय कहाते हैं।

तथाच.

क्षाराम्लैलवणैर्मूत्रविषैरुपविषैस्तथा।
दिव्यौषधिसमूहेनमर्दयेद्दिवसत्रयम्।
पारदस्यकलांशेनभेषजेनप्रमर्द्दयेत् ॥१११॥

अर्थ—क्षारवर्ग, अम्लवर्ग, लवणवर्ग, मूत्रवर्ग विषवर्ग, उपविषवर्ग और ६४ दिव्य औषधि प्रत्येक पारे के सोलहवें भाग लेवे इन प्रत्येक में तीन २ दिन घोटे तो पारा शुद्ध होवे, और बहुत से वैद्योंने पारद को दुग्धवर्ग, मूत्रवर्ग, तैलवर्ग, वसावर्ग कृष्णवर्ग, शुक्लवर्ग क्रामकवर्ग, पीतवर्ग, मृत्तिका वर्ग, इनमें घोटना लिखा है सो हमने ग्रंथ विस्तार क भय से और पारद के सिद्धि करने वालों अति परिश्रम बचाने के लिये नहीं लिखे, अब पारे का मूर्छा प्रकार लिखते हैं। प्रगट हो कि मूर्च्छा प्रकार दो प्रकार का है एक गंधक के योग से, दूसरा गंधक रहित अर्थात् औषधियों से, यह औषधियो के द्वारा मूर्च्छा का वर्णन कर चुके हैं (विषोपविषकैर्मर्द्य. इत्यादि) अब गन्धक के सयोग से होने वाले चंद्रोदय आदि को लिखते हैं।

चन्द्रदोय की प्रथम विधि.

ततस्तस्माद्विनिष्कास्य-
पारदंतोलयेद्भिषक्।
तत्तुल्यगंधकंदत्त्वाकुर्य्या-
त्कज्जलिकांद्वयो.॥
द्रोणांबुकणयोर्नीरैर्मर्दयेच्चदिनद्वयम।
संशोष्यवालुकायंत्रे-
यामानष्टौततःपचेत्।
मदमग्निततः कुर्य्या-
दाद्ये यामचतुष्टये।
ततोद्वितीयेयत्नेनती-
व्रमग्निप्रयोजयेत्।
ततःकूप्यांसमुद्धृत्य-
पारदस्यास्यचक्रिकां।
तत्पृष्ठलग्नंगंधचदूरी-
कृत्यविचक्षणे.।
पुनस्तयोरसैरेनंमर्दये-
देकवासरम्।
चतुर्य्यामपचेदग्नौ तेन-
जीर्य्यतिगंधकः॥

अर्थ—पूर्वोक्त प्रकार से पारे को शुद्ध कर चुके तब तोले यदि पारा १६ पैसे भर होवे तो शोधी हुई आमलासार गन्धक १६ पैसे भर लेवे [गधक शुद्ध करने की क्रिया आगे गधक प्रकरण में लिखे गे] इन दोनो को खरल में डाल कजली करे, इसमें जलपीपल जिसको पूरब के वैद्य गङ्गतिरिया कहते हैं, और मध्यदेश वाले पनसगा कहते हैं और गुमा इन दोनों के रस मे उस कजली को दो दिन घोटे, जब सूख जाय तब सेर भर की आतसी शीशी पर कपडमिट्टी

करसुखा लेवे और इस कज्जली को उसमे भर एक सुन्दर हांडी में रखे, हांडी के नीचे पैसे से ड्योढ़ा छेद कर और छेद के गिर्द गोली मिट्टी लगावे, जिससे हांडी की बारू न निकले और छेद के नीचे एक लम्बी ठीकरी के दोनों बगल के छेद खुले रहें उसके ऊपर सीसी धरे और हांडी को मुख पर्य्यंत बालू (रेत) मे भर देवे, परन्तु शीशी की गर्दन बालू से बाहर रहे फिर चूल्हे पर चढ़ाकर दो लकडी की आच ४ प्रहर मद और ४ प्रहर तेज देवे, जब स्वाग शीतल हो जाय तब शीशी को फोडकर पारे की चादी को निकाल लेवे, उसमे जो गन्धक की राख लगी होवे उसको छूरी से छुडाय डाले और उस चादी को खरल मे डालकर पीसे, पीछे गूंमा और जल पिप्पली के रस मे १ दिन घोटे जब सूख जाय तब पूर्वोक्त प्रकार से शीशी मे भरकर बालू का यन्त्र मे ४ प्रहर की मन्दाग्नि देवे, जिससे अवशिष्ट गन्धक जल जाय तदनंतर गन्धक के जलने की इस प्रकार परीक्षा करे.

अथ गंधकजीर्ण की परीक्षा.

याममेकंपरित्यज्य
यामेषुत्रिपुबुद्धिमान् ।
प्रतियामार्द्धककूप्यां-
क्षित्वादीर्धतृणदृढ ।
गन्धस्यतेनकर्त्तव्योजीर्णा-
जीर्णस्यनिर्णय. ।
जीर्णेगन्धेविदग्धस्याद-
जीर्णेगन्धकान्वितम् ॥

अर्थ—अग्नि देय तब पहिले प्रहर परीक्षा न करे, दूसरे, प्रहर से लेकर तीसरे प्रहर तक परीक्षा करे, दूसरे प्रहर की जब चारघडी बीत जाय तब कड़ी और लबी एक सींक शीशी में डाले, जो सींक जली निकले तो जाने कि गन्धक जल गयी, तब शीशी को अग्नि से उतार लेवे नहीं तो सब गन्धक चल जायगी, और पारा गन्धक जल जाने पर उड़ जाता है, गन्धक के आश्रय से ही पारा अग्नि पर ठहरता है, और जो पिघली गन्धक सयुक्त सीक निकले तो जाने कि गन्धक जीर्ण नहीं हुआ, तब फिर निर्भय होकर आच देवे, जब तक गन्धक जीर्ण न होवे, तीसरे प्रहर की चारघडी उपरान्त फिर परीक्षा करे, तथा चौथे प्रहर की चारघडी उपरान्त परीक्षा करे, जल गन्धक जल जावे तब आंच पर से उतार शीशी को फोडकर पारे की चांदी को निकाल लेवे, और चांदी में जो गन्धक की राख लगी हो उसे छुरी से छुडाकर साफ कर लेवे ।

जीर्णे गधंरसंज्ञात्वा तोल-
येत्कुशलोभिषक् ।
ततोगधचतुर्थांशदत्त्वा-
सूतंविमर्दयेम् ।
पूर्वोक्तयोरसैर्मर्द्य चतुर्या-
मचपाचयेत ।
स्वांगशीतलमुत्तार्य-
विषंकर्षमितक्षिपेत् ।
दृढंविमर्दयेत्सूततयो-
रेवरसैर्दिनम् ।
मदाग्निनापचेत्पश्चाच्च-
तुर्याममतद्रितः ।
निर्मुक्तगधकस्तर्हि-
जायतेऽसौरसेश्वरः ।
तेतुलितसूतेनतुल्य-
मानोयदाभवेत् ।
दासिद्ध.परिज्ञेयो-
रसश्चंद्रोदयोवधै ॥

अर्थ— फिर इस चादी को तोल कर देखे कि पहिली की बराबर है या कम यह विचार कर इसमे पारे का चतुर्थांश, यानी ४ पैसा भर शुद्ध गन्धक डाले, फिर दोनो को कजली कर गोमा और जल पिप्पली के रस से एक दिन घोटे, फिर सुखाय आतिशी शीशी मे भर वालूका यंत्र में ४ प्रहर की मदा अग्नि देवे, जिससे दो पैसा भर गन्धक जल जाय । एक प्रहर तेज

आंच देने से पैसा भर गन्धक जलती है और इतने ही समय से मंदाग्नि से धेले भर जलती है, यह सिद्धान्त है। इस हिसाब से ४ प्रहर की मद आच से दो पैसे भर गन्धक जलती है, जब दो पैसे भर गन्धक जल जाय तब शीशी को फोडकर चांदी निकाले और गन्धक की राख को छुरी से दूर करे, फिर खरल मे डाल धेलाभर शुद्ध सिंगिया विष डाले, [सिंगिया विष का शोधन विष प्रकर्ण से लिखे गे,] फिर इसमे गन्धक न डाले, एक दिन गोमा और जल पिप्पली के रस मे घोट कर पूर्वोक्त प्रकार वालुका यन्त्र मे ४ प्रहर की आंच देवे, आंच देने के निमित्त बबूल की लकडी चार अथवा पांच अ गुल मोटी और हाथ भर लम्बी लेना उचित है, ऐसे आच देने से अवशिष्ट गन्धक जल जाय, और विष डालने से चादी, गन्धक की राख छोड कर वैठती है, छुरी से खुरचने की अपेक्षा नहीं रहती फिर चादी तोलने से पहली की बराबर हो तो जाने की चन्द्रोदय सिद्ध हो गया, और जो तोल मे अधिक हो तो फिर गूम और जलपिप्पली के रसमे एक दिन घोट कर चार प्रहर की दीपक अग्नि देवे, अधिक आच देने से पारा उडजाता है ऐसा कई वार हो चुका है, इसलिये मन्दी आच देवे, अथवा ४ पैसे भर सोधा सीसा पिघला कर १६ पैसे भर पारे में मिलाकर शीतल करलेवे तव १६ पैसाभर गधक मिलाकर पूर्वोक्त प्रकार से आरंभ करे, तो तेज आच से भी पारा न उडे, इस वात को कोई वैद्य नहीं जानता कल्याण भट्ट कहते हैं कि मैंने यह किया है इसलिये सब वैद्यो के वास्ते लिख दिया है। चन्द्रोदय को पीसकर पक्की शीशी मे रख छोडे। इति चन्द्रोदय की पहली विधि समाप्त।

अथ गुणाः

सद्योजीर्णविपाचनोऽग्निजननो
विड्वधतृट् वांतिनुत्।
मूत्रस्रावमपाकरोति मदन
प्रोव्दोधकर्त्तारतो॥
मूर्च्छांहन्तिसहिक्कपुमधुयुतो
वलय प्रभादाढ्य कृत्।
शैत्य स्वेदहरः प्रमेह
मथनश्चन्द्रोदयाख्योरसः॥
कासेश्वासेफिर गाख्ये-
रोगेचपरमोहित. ।
अपिवैद्यशतैस्त्यक्ता
मरुचिंचनियच्छति।

चन्द्रोदय और लौंग दोनो एक-एक तोला ले मिलाकर खरल मे एक घडी घोटे, फिर इसकी दो रत्ती की पुडिया बाधे, रोगी को एक पुडिया खाने को देवे तो अजीर्ण शीघ्र नष्ट हो, और भूख बढे, बद्धकोष्ठ दूर हो, तृषा और वमन को दूर करे,-तथा- मूत्रस्रावक को शमन करें, कामदेव को बढावे, और मूर्च्छा,हिचकी दूर होवे; बल और कान्ति बढावे, प्रसूत अथवा सन्निपात से शीतल हुई देह को और चलते हुए पसीनो को दूर करे, प्रमेह, खाँसी, श्वास और फिरंग वात को दूर कर, ज्वर दूर होने के बाद जो अरुचि रहती है कि जिसके अठारह दिन रहने से रोगी मर जाता है, तो असाध्य अरुचि इस चन्द्रोदय के खाने से दूर होती है।

चन्द्रोदय की दूसरी विधि.

पलद्वयंसुवर्णस्यसूत-
स्याष्टौ च मर्दयेत्।
एकीभूतेचगंधस्यपल-
षोडशकक्षिपेत्।
शोणकार्पासकुसुमैः
कन्याभिर्मर्दयेत्पृथक्।
काचकूप्यांचसरुध्य-
वालुकायत्रगत्र्यहम्।
पचेत्द्धिोरस सस्याच्छ्रे-
ष्ठश्चन्द्रोदयाभिध।

अर्थ—सोने के वर्क ४ पैसेभर, शुद्धपारा १६ पैसे भर, दोनो को मिलाकर घोटे, जबमिल जायं तब सुधा हुआ गन्धक ३२ पैसे भर डाल कर नादनवन रुई के फूल के रस के साथ एक दिन घोटे, एक दिन घी-गुवार के रस मे घोटे, फिर सुखाकर शीशी मे भर लेवे, और शीशी पर सात कपरमिट्टी करे, फिर पूर्वोक्त प्रकार वालुकायन्त्र मे रखकर चार २ अगुल मोटी बवूल की दो लकडियो की अठारह प्रहर आंच देवे, जब चार प्रहर बाकी रहें, तब शीशी का मुख गुड और चूने से बन्द कर देवे, जब शीतल हो जावे तब उतार शीशी को तोडे और ऊपर की लालरग की कटोरी निकाल लेवे, यह चन्द्रोदय सर्वोत्तम है।

अथ खाने की विधि.

जातीफलंसकर्पूरं
लवगमरिचानिचं ।
पृथग्रससमानिस्युः
कस्तूरीरसदिग्लवा ।
मासोस्यभक्ष्यःपर्णेन-
जरारोगविनाशनः ।
सुप्रभातेतदाभ्यासा-
द्विपंचविपवारिच ।
सर्वेप्रशममायाति-
शीघ्रमेवनसशयः ।
केचिच्चतुगुणान्याहु.
कर्पूरादीनितद्रसात् ।

चन्द्रोदय, जायफल, भीमसेनी कपूर, लौंग, कालीमिरच, प्रत्येक १ रत्ती कस्तूरी पौने तीन चावल, इनको साथ मिलाकर खाने से बहुत गुण करे, बालो की सफेदी बुढापे मे देह की सिकुडन इनको दूर करे, अजीर्ण का शीघ्र नाश करे, भूख बढावे, विष मन्त्र के रोगो को शाति करे तथा विषैल पानी के पीने से जो रोग होवे उन को दूर करे।

चन्द्रोदय की तीसरी विधि.

रसंशुद्धतरंवद्ध स्थापये-
त्खल्वशोभने ।
आनयेद्गंधकपीत
महादिव्यंमनोहरम् ।
गोदुग्धेनतुसशुद्धं
समभागंप्रकल्पयेत् ।
गधार्धन्तुशिलांरक्ता-
तालकचैवतत्सम ।
सूर्य्यावर्त्तरसैर्दिव्यै
र्मर्दयेच्चदिनत्रयम् ।
छायाशुष्केतुसंयाते
तीक्ष्णतैलेनभावयेत् ।
उक्तभावेतुसंदत्ते-
शोषयेद्यत्नपूर्वकम् ।
काचकुप्याकृतंतच्च
वालुकेनहठाग्निना ।
एकादशदिनान्येव
पाचयेत्परमरसं ।
स्वांगशीतलमुत्तार्य
लोहखल्वेच निःक्षिपेत् ।
पुनर्गंधत्रयंप्रोक्तोभावे-
नभावितमतम् ।
मर्दयेत्पूर्ववत्सम्यक्पुनः
शीशींनिधापयेत् ।
पुनर्विपाचयेत्सम्यगेका-
दशद्दिनान्यमु ।
पाचितरसराजतु
स्वागशीतलमुद्धरेत् ।
पुनर्विमर्दयेदेन
पूर्वोक्तेनरसेनहि ।
अवशिष्टस्यगधस्य-
पाकार्थंतुपुनःपचेत् ।
ससिद्धेरसराजेतु-
जायतेसिद्धिसाधनम् ।

पूर्वोक्त रीति से शुद्ध और बद्ध पारा लेवे,

और पारे की बराबर गो के दूध से शुद्ध की हुई गंधक (आमलासार) लेवे, और गंधक से आधा मैनसिल का सत्व अग्निस्थाई लेवे, और इतना ही हरिताल का सत्व अग्निस्थाई लेवे, प्रथम पारे गंधक की कजली करे, फिर इस कजली मे दोनो सत्व डाल हुरहुर के रस से तीन दिन घोटे, जब सूख जाय तब एक बडी आतिशी शीशी में भर कर शीशी को वालुका यन्त्र मे रखे, और हाडी के नीचे छेद न करे। और सोलह दिन तेज आंच देवे, जब शीतल हो तब शीशी को फोड़ कर पारे की चादी निकाल ले। और चादी की राख छुरी से दूर करे, फिर और गंधक न डाले और हुरहुर के रस मे दो दिन घोटे, फिर दूसरी शीशी मे भर वालु का यन्त्र मे हाडी के नीचे छेद कर चार प्रहर की आंच देवे, परन्तु मंद आच दे, जिसमे अवशिष्ट गंधक जलजाय, पीछे शीशी फोड कर चादी निकाल लेवे, फिर पीठ की राख छुरी से दूर करे फिर चांदी और छ पैसे भर शुद्ध गंधक को खरल मे डाल हुरहुर के रस में तीन दिन घोट शीशी में भर वालुकायन्त्र मे हाडी के नीचे छेद कर चार प्रहर की मन्दाग्नि देकर उडा लेवे, फिर शीशी को फोड चादी निकाल लेवे, और पीठ की राखदूर कर धेले भर विष डाल हुरहुर के रस मे तीन दिन घोटे, एक दिन राई के तेल मे घोटे फिर हुलहुल के रस से तीन दिन घोटे। फिर शीशी मे भरहाडी के नीचे छेद कर वालुका यंत्रमे चार प्रहर की मन्दाग्नि देवे जिससे अवशिष्ट गंधक जल जाय, फिर चांदी को निकाल उसकी राखको छुरी से दूर करे, फिर छ पैसे भर गंधक डाल कर हुलहुल के रस से तीन दिन घोटे, और एक दिन राई के तेल मे घोटे, फिर हुलहुल के रस मे तीन दिन घोटे और शीशी मे भरकर चार प्रहर की मन्दाग्नि वालुका यन्त्र में देवे। फिर शीशी मे से चादी को निकाल कर छुरी से उसकी पीठ की राखको छुडा डाले और धेला भर विषका चूर्ण इसमे डालकर हुलहुल के रस से तीन दिन घोटे, और एक दिन राई के तेल मे घोटे पश्चात हुलहुल के रस मे तीन दिन घोटे फिर शीशी में भरकर चार प्रहर की मंदाग्नि देवे, जिसमे अवशिष्ट गंधक जलजाय तदनन्तर शीशी को फोड चांदी निकाल लेवे, और उसकी पीठ की राख को छुरी से दूर कर खरल मे डाल पीस लेवे, पश्चात् दो बार छ २ पैसा भर गंधक डाल हुलहुल के रस में घोटे और हर दफे धेले २ भर विष डालकर उडावे और पूर्व रीति से अवशिष्ट गंधक को जारण करता जाय तो चन्द्रोदय परम दुर्लभ बनकर तैयार होवे, और सर्व कामना पूर्ण करे।

अन्य भक्षण प्रकारः

शुद्धशुल्वेप्रदातव्यःसहस्रांशेनवेधयेत्।
सुवर्णंजायतेशुद्धं यथाजांबूनदोद्भवम्॥
तिलमात्रप्रयोगेणतांबूलेनमहेश्वरि।
जायतेप्रबलाबुद्धिर्बलभीमसमंभवेत्॥
सप्तरात्रप्रयोगेण जायतेनात्रसंशय।
अनेनक्रममार्गेण भक्ष्योयसुभगैर्नरैः॥

शुद्ध तांबे में हजारवां अंश इसको डाले तो दिव्य सुवर्ण हो जाय, एक रत्ती लौंग के चूर्ण के साथ पान में तिलमात्र रोज खाने से सात दिन में बुद्धि को तीव्र करे, और भीमसेन के समान बल करे भूख बढ़ावे, रुधिर विकार को और सर्व रोगमात्रो को यथा योग्य अनुपान के साथ देने से दूर करे। इस क्रम से सुभग मनुष्यों को यह खाना चाहिये।

चतुर्थी विधिः

अथवा पारा और गंधक दोनों को सोलह २ पैसे भर लेकर दोनों की कजली करे और इसमें डेढ़ पैसे भर विष का चूर्ण डाले और पूर्वोक्त प्रकार से शीशी मे भर हाडी मे रक्खे और बालू भर देवे पश्चात् ६ पहर तेज आंच देवे, फिर मंद करे और शीशी का मुंह खुला रहने दे जिससे

उसके मुख से आग बराबर निकलती रहे। इस प्रकार चार घडी पर्य्यंत कर पीछे शीशीका मुख चूने और गुड से बंदकर तीन प्रहर आच देवे, इस प्रकार नौ प्रहर आच दे, लकडियों को अलग करे और अंगारे रहने देवे जब स्वांगशीतल हो जाय तब शीशी को निकाल पानी मे भिगो कर उसकी कपरमिट्टी को अलग करे, और शीशी को फोडकर उसके ऊपर जो १६ पैसे भर का लाल रग का कटोरा निकले, उसको निकाल लेवे, परन्तु शीशी के भीतर जो एक अगुल मोटा पारे का कटोरा निकले उसको ग्रहण करे, और गंधक को न लेवे। और इस पारे के कटोरे को खरल मे डाल सूखी बारीक पीस किसी उत्तम पात्र में भर लेवे और इसको २ रत्ती बिना लौंग के खाय तो डकारें आवें. भूंख लगे कोष्ठ को शुद्ध करे, यह क्रिया सब से सुगम है अन्य प्रकार की क्रियाओं मे आच देने मे खतरा है क्योकि और प्रकार की आच देने मे कभी पारा ठहरता है। और कभी उडजाता है। इस चन्द्रोदय से आच देने के लिये चार या पांच अगुल मोटी बबूल की लकडियां चाहिये, पारे को किसी औषधि के रस में घोटे, परन्तु आंच इसी प्रकार देवै तो मूर्ख से भी चन्द्रोदय सिद्ध हो और उडे नहीं और प्रथम चन्द्रोदय की विधि से जो आंच देना कहा है वह चतुर वैद्यो से बनता है—अन्य से नहीं बने।

पंचमविधिः

अथवा प्रथम सिंगरफ के पारे को अमलतास, चीता, ढ`रा और घीगुवार प्रत्येक केरस मे दो २ दिन घोटे, और प्रत्येक समय पारे को डमरूयत्र में डालकर उडा लेवे, फिर विष और उपविषों में दो २ दिन घोट के उडा लेवे. तिस के पीछे सिगरफ का पारा २० पैसे भर लेवे और उसमें १० पैसे भर सैंधे नमक की बुकनी डाल दो प्रहर नीबू के रस मे घोटे फिर काजी के पानी से दो प्रहर घोटे उपरान्त उस पारे को सैंधे नमक से जुदा कर लेवे, और इसमे २० पैसे भर अफीम मिलाकर तीन दिन धतूरे के रसमे खरल करे. रात्रि को न घोटे, जब सूखजाय तब शीशी पर सुलेमानी मुद्राकर और उसके मुख पर कपरमिट्टी कर सुखावे, और वालुका यंत्र में बराबर १२ प्रहर की आच देवे इस प्रकार तीन शीशी फेरे, पीछे शीशी के पारे को निकाल लेवे, तदनन्तर आठ पैसे भर गधक ज्वार के चून मे मिलाकर छोटी २ गोलियां बाध मुरगे को खिलावे, और उसको एक ही स्थान पर बन्द रहने देवे और उसकी बीटको इकट्ठा करता रहे फिर उस बीट को धूप मे सुखाकर पाताल यन्त्र द्वारा उसका तेल निकाल लेवे, इस तेल मे पूर्वोक्त शीशी के पारे को ३ दिन घोटे, रात्री को न घोटे, जब गाढा हो जावे तब पूर्वोक्त सुलेमानी मुद्रा की हुई शीशी में डाल के मुख बद कर वालुका यंत्र मे बराबर १२ प्रहर की अग्नि देवे, जब स्वाग शीतल हो जाय तब शीशी से सिद्ध चन्द्रोदय को निकाल लेवे, यह चन्द्रोदय अत्यंत गुणदायक है, और विशेष करके जो विडकुसाद (हथरस) आदि से दोष होता है, उस पर अतीव गुण दायक है।

षष्ठविधिः

अथवा प्रथम पारे को विषोपविष मे शुद्ध कर ५ पैसे भर लेवे संखिया (सु मिलखार) ५ पैसे भर, नौसादर पैसे भर, सब को एकत्र कर आक के दूध मे ८ प्रहर खरल करे, फिर डमरूयत्र मे डाल दो प्रहर की अग्नि देकर उडालेवे, फिर उसमे पारे की प्रथम तोल की बराबर छिले हुए जमालगोटे डालकर दन्ती (दातन के रस से ७ दिन घोट कर डमरूयत्र डालकर उडा लेवे, फिर उक्त पारे मे दो पैसे भर सु मिलखार और डेढ पैसे भर नौसादर डाल के दोनो को दो प्रहर घोटे पीछे शीशी मे भर नौसादर से मुख बन्द करदे। फिर हांडी के नीचे छेदकर ४ अगुल वालूडाल उसके ऊपर शीशी धरे फिर हाडी के मुख

पर्यन्त वालूभर शीशी पर सात कपरमिट्टी करे, फिर इसको बराबर १६ प्रहर की अग्नि देवे, जब स्वांगशीतल हो जाय तब शीशी को निकाल लेवे, तो यह चन्द्रोदय सिद्ध होवे। इसमें से १ रत्ती नित्य खाय तो भूख बहुत बढावे, बादी और रुधिर विकारों को दूर करे, परन्तु किसी २ सद्वैद्य की यह आज्ञा है कि समल की क्रिया का बना हुआ पारा कदाचित् न खाना चाहिये, क्योंकि यह आखों को नुकसान करता है, देह को फुलाता है, देह बिगड़ जाता है, फोड़ा पैदा करता है, कंठ की आवाजको बिगाड़ता है, और गला ऐसा रुक जाता है, कि पानी तक नहीं उतरता, अतएव समल की क्रिया त्याज्य है। इसी प्रकार प्राणनाथ ने भाषा में चन्द्रोदय की ७ क्रिया और भी लिखी हैं, परन्तु केवल उनमें घुटाई और शीशी-उतारना ही विशेष हैं और कुछ विशेष नहीं, अतएव हमने उनको त्याग दिया है

इति चन्द्रोदय की छटी विधि समाप्त.

अथ क्षेत्री करणम्-

प्रथमंमारयेदभ्रं
शास्त्रोक्तंसुपरीक्षितम्।
पश्चात्तयोजयेद्देहे
सूतकंतदनंतरम् ॥
अक्षेत्रीकरणात्सूतो-
ऽमृतंचापिविषंभवेत् ।
तस्मादभ्र रसस्यादौ
क्षेत्रीकरणमिच्छति ।
सेवनीयप्रयत्नेन
मासयुग्मनिरंतरम् ।
गुंजाद्वयंसमारभ्य
यावन्माषद्वयंभवेत् ।
क्षेत्रमेवंभवेद्देहे-
सूतवीर्यप्रसाधकम् ।
अक्षेत्रे योजितःसूतो-
न प्ररोहेत्कदाचन ।
निद्रालस्यंशिरोदाहो
ध्वांगभंगोऽरुचिस्तथः
नामायांजायतेशूल-
स्त्वन्यथायोजितेरसे ।

जो मनुष्य मृतपारे को मात्रा खावे वह प्रथम शास्त्रोक्त रीति से मृत अभ्रक को खाय पश्चात् पारे को खाय, क्योंकि बिना क्षेत्री करण के पारा अमृततुल्य गुण के देने वाला भी विष के समान औगुन करता है, इसलिये प्रथम दो महीने तक दो दो रत्ती से प्रारंभ करे और दो मासे तक क्रम से मात्रा की वृद्धि करे इस प्रकार अभ्रक नित्य इलायची के संग खाय तब क्षेत्र (देह) पारा खाने योग्य होवे, बिना क्षेत्रीकरण के पारा कदापि फलदायक नहीं होता, उलटा निद्रा आलस्य, मस्तक में जलन, छटफटन अरुचि, नेत्रों के आगे अंधेरा आना, नाक के भीतर पीड़ा इन रोगों को प्रकट करता है।

अब कहते हैं कि रससिंदूर भी मूर्च्छित पारे का भेद है इस लिये चन्द्रोदय कहने के अनन्तर रससिंदूर बनाने की विधि लिखते हैं।

रससिंदूर की पहिली विधि.

सूतंपचपलस्वदौपरहितंतत्तुल्यभागोबलि-
र्द्वौटकौनवसादरस्यतुवरीकर्षश्चसमर्दितः।
कुप्याकाचभुविस्थितश्चसिकतायंत्रे त्रिभिर्वा
सरैः पक्वोवह्निभिरुद्भवत्यरुणाभ सिंदूर
नामारसः॥

शुद्धपारा, शुद्धगंधक, प्रत्येक ५ पल नौसादर ८ मासे, फिटकरी १ तोले इन सब को घोटे आतीशी शीशी पर कपर मिट्टी दे भर देवे, और तीन दिन वालुकायन्त्र में मंद, मध्य और तेज अग्नि देवे तो लाल रंग का रस सिंदूर तयार होवे।

अथ रससिंदूर की दूसरी विधि.

द्विगुण गंधक,

रसभागोभवेदेको गन्धकोद्विगुणोमतः।
खल्वकज्जलिसकाशकाचकुप्यांक्षिपेत्सुधी

खर्प्परे वालुकापूर्णे स्थापयेत्तत्रकूपिकाम्।
इष्टिकांचमुखेदत्त्वा कृत्वाकर्पटमृत्तिकाम्॥
सप्तविंशतियामैश्च सितांकूपींविपाचयेत्।
पश्चादूर्ध्वंसमायातं रसंज्ञात्वाविचक्षणः॥
हंसपादसमंवर्णं निष्पन्नंरसमादिशेत्।
गुंजायुग्मंप्रदातव्यंसितादुग्धानुपानतः॥
प्रमेहेश्वासकासेच पंढेक्षीणेऽल्पवीर्यके।
हरगौरीरसोदेयः सर्वरोगप्रशांतये॥

शुद्ध पारे से दुगनी शुद्ध गंधक लेकर दोनों की खरल में कजली करके, आतिशी शीशी मे भर के उस पर सात कपर मिट्टी कर, सुखाय वालुका यंत्र में रख उस के मुंह को ईंटके टुकडे से बंद कर उसके नीचे २७ प्रहर की अग्नि देवे, तदनन्तर पारे को ऊपर आया जान कर उतार लेवे, इसका रंग लाल हो जाता है, इसको निकाल कर अच्छे पात्र मे रख छोडे, पीछे इस मे से २ रत्ती की मात्रा दूध और मिश्री के संयोग से देवे तो इन रोगों को दूर करे-प्रमेह, श्वास, खांसी नपुंसकता, क्षीणवीर्य और यह हर गौरी रस सब रोग मात्रों को दूर करता है।

रससिंदूर की तीसरी विधि.

षड्गुण गंधक

हिंगुलोत्थरसंभागंषड्-
भागं शुद्धगंधकम्।
खल्वमध्येविनिक्षिप्य
कुमारीरसमर्द्दितम्॥
काचकुप्यांविनिक्षिप्य
वालुकायंत्रगंपचेत्।
पाचयेत्सप्तरात्राणि
सिंदूरंभवतिध्रुवम्।
वल्लमात्रंप्रयुंजीत
मधुनालेहयेत्परम्।
स्तंभनंदेडवृद्धिंच वीर्य्य-
वृद्धिंबलान्विताम्॥
करोतितेज.पुष्टिंच
महामत्तगजेन्द्रवत्॥
पढत्वंवंध्यरोगचनाश-
येत्सर्वरोगजित्॥
दिनमेकंशतस्त्रीभीरम-
तेतृप्तिवीर्य्यवान्।
निरंतरमनोल्लास-
रतिप्रेम्णासनातनः।
शतानिपचषटकच रोगा-
णांनाशयेद्ध्रुवम्।
नाम्ना षड्गुणगन्धोऽयंवि-
श्वामित्रेणनिर्मितः।

हिगुल से निकला पारा १ भाग और गधक ६ भाग, दोनो को खरल मे डाल कजली करे। फिर ग्वारपाठे का रस डाल मर्दन करे, फिर सुखा कर कांच की शीशी में भर वालुकायत्र मे पचावे सात दिनरात बराबर अग्नि देवे, जब शीतल हो जाय तब शीशी को फोड लाल रग का सिदूर निकाल लेवे, इस रस सिदूर को ३ रत्ती शहद के संग खाय तो स्तभन करे, लिग और वीर्य्य को वढावे, वल, तेज और पुष्टता को बढा कर महा मतवाले हाथी के समान वलवान करे, नपुसकत्व, वंध्यापना, इत्यादि सर्व रोगो को दूर करके इसका खानेवाला एक दिन मे सौ स्त्रियो को भोगे, और उनको आनन्द देवे यह पाच सौ छप्पन रोगो का नाशक है, यह षड्गुणगन्धक नाम रस सिदूर विश्वामित्र ऋषि ने लोक के कल्याणार्थ निर्माण किया।

रससिंदूरानुपानम्.

वातेसक्षौद्रपिप्पल्यपि-
चक्रफरुजित्र्यूषणं।
साग्निचूर्णं पित्तेशैलासितेन्दु-
व्रणवतिवचरा।
गुग्गुलश्चारुबद्धः।
चातु र्जातिनपुष्टोहरनयन।
फला शाल्मलीपुष्पवृत्तं।
किंवाक्रान्ता।

ललाटाभरणरसपते:-
स्याढनूपानमेतत् ।

पीपल शहद के साथ वात रोग मे, सोठ, मिरच पीपल के और चीते के चूर्ण के साथ कफ रोग मे, शिलाजीत मिश्री और कपूर के साथ पित्त रोग मे, त्रिफला और गूगल के साथ व्रण रोग मे, चातुर्जात के साथ पुष्टि मे अथवा त्रिफला और सेमर के मूसला के साथ पुष्टि को देवे यह रस सिंदूर के अनुपान कहे हैं।

पारद की काली भस्म.

धान्याभ्रकंरसंतुल्यं-
मारयेन्मारकद्रवैः ।
दिनैकंतेनकल्केनवस्त्रं-
लिप्त्वातुवांतकाम् ।
विलिप्यतैलैर्वर्त्तिता-
मेरंडोत्थै. पुनःपुनः ।
प्रज्वाल्य च तदाभांडे-
गृहीयात्पतितंयत् ।
कृष्णभंस्मभवेत्तच्च-
पुनर्मर्द्यं नियामकैः ।
दिनैकंपातयेद्यंत्रे-
कन्दुकाख्येनसंशयः ।
मृतःसूतोभवेत्सत्यं-
तत्तद्रोगेपुयोजयेत् ।

पारद के तुल्य धान्याभ्रक लेके उस को मारकवर्ग से एक दिन मारण करे (मारकवर्ग आगे कहेंगे) फिर उसके रस से एक कपडे को लीप धूप में सुखा कर वत्ती बनावे, उस मे उस कजली को पूर्व ही रख दे। और उसको अडी के तेल मे भिगोकर जलावे और उसके नीचे एक पात्र रक्खे, उस वत्तीद्वारा जो पारा उस मे टपके उसे लेले वह कृष्णभस्म होगी फिर नियामक द्रव्यो से उस पारे और अभ्रक को खरल करे, फिर एक दिन कंदुक (डमरू) यंत्र मे पातन करे तो पारा मर कर कृष्णभस्म होवे, यह पृथक् २ अनुपान से सर्व रोगो को नाश करता है।

पारद की पीली भस्म.

भूधात्रीहस्तिशुण्डीभ्यां-
रसगंधंचमर्दयेत् ।
काचकुप्यांचतुर्यामं-
पक्व.पीतोभवेद्रसः ।

यदि पारे की पीली भस्म करने की इच्छा होवे तो पारद और गधक की कजली को भुई आंवरा और हथशुण्डी के रस से घोटे वालुका-यंत्र मे चार प्रहर की अग्नि देवे, तो पारे की पीलेरंग का नाल उतरे।

द्वितीय कृष्ण भस्म.

सूतंगंधकसंयुक्तं-
कुमारीरसमर्दितम् ।
कृष्णवर्णभवेद्रस-
देवानामपिदुर्लभम् ॥

यदि पारे की श्यामभस्म उतारने की इच्छा हो, तो पारे और गंधक की कजली को घीगुवार के रस से घोटे चार प्रहर की आंच देवे तो काले रंग की भस्म उतरे।

नील भस्म.

वाराहकन्दसंयुक्त-
रसकेनसमन्वितम् ।
नीलवर्णभवेद्रस-
वलीपलितनाशनम् ।

जो चाहे, कि पारे की भस्म नीली उतरे तो पारे और गधक की कजली मे बराबर की मिश्री डालकर वाराहीकन्द के रस से घोटे फिर पूर्वोक्त विधि से वालुकायत्र में चार प्रहर की अग्नि देवे, तो चन्द्रोदय की नाल नीले रग की उतरे, यह वृद्धावस्था को दूर करती है?

श्वेतंपीततथारक्तं-
कृष्णाचेतिचतुर्विधम्।
लक्षणभस्मसूतानां
श्रेष्ठस्यादुत्तरोत्तरम्।

पारे की भस्म सफेद, पीली, लाल और काली ऐसे ऐसे चार प्रकार की है। इस में उत्तरोत्तर भस्म श्रेष्ठ हैं अर्थात् सफेद से पीली, पीली से लाल, लाल से काली इत्यादि।

द्विविध भस्म का वर्णन.

सूतभस्मद्विधाज्ञेयमूर्ध्वगंतलगंतथा।

पारे की भस्म दो प्रकार की होती हैं एक तो ऊर्ध्वग जो ऊपर शीशी की नाल मे लगती है, दूसरी शीशी की पैंदी मे बैठ जाती है।

सर्वांगसुन्दरोरसः

मर्दयेद्रसगन्धौच
हस्तिशुण्डीद्रवैर्दृढम्।
भूधात्रिकारसैर्वापि
यावद्दिनसप्तकम् ॥
विघृष्यवालुकायंत्रे-
मूषायांसन्निवेशयेत्।
दिनमेकंददेदग्निं
मन्दमन्दनिशावधि ॥
एवनिष्पद्यतेपीतः-
शीत सूतस्तुगृह्यते।
पर्णखंडेनतद्गुञ्जा
भक्षयेच्छ्रूयतांमम ॥
क्षुद्बोधंकुरुतेपूर्व-
दराणिविनाशयेत्।
मुज्वराणांनाशनः श्रेष्ठ-
स्तद्वत्श्रीसुखकारकः।
हृदयोत्साहजनन.
सुरूपतनयप्रदः।
बलप्रदः सदादेहे
जरानाशनतत्परः ॥
अँगभँगादिकंदोष
सर्वनाशयतिक्षणात्।
एतस्मान्नापरः सूतो-
रसात्सर्वांगसुन्दरात् ॥

(पीतभस्मेतिचन्द्रिकाकारः ॥)

पारे-गंधक को हथशुण्डी और भूंय आमले के रस से सात २ दिन घोटे, फिर इस पारे की पीठी को एक मूषा मे भर के बालुकायत्र मे स्थापन कर एक दिन रात्रि मदाग्नि देवे तो पारे की पीली भस्म होवे, इस मे से १ रत्ती पान के टुकडे में रख के खाय तो क्षुधा करे, उदर रोगों को दूर करे, ज्वरों के नाश करने में श्रेष्ठ है, सुख करे, हृदय में उत्साह बढावे, सुरूपवान् पुत्र देवे, बल को बढावे, बुढ़ापे को दूर करे अगभगादि सर्व दोषो का नाश करे, इस पारे से श्रेष्ठ अन्य पारद नहीं है। इसको सर्वांगसुन्दर रस कहते हैं। रसचन्द्रिका वाला इसको पीतभस्म कहता है।

रसकपूर का वर्णन.

जो वैद्य चन्द्रोदय को नहीं जानते वह इस रस को संग्रह कहते हैं, सद्वैद्य इस रस को सग्रह नहीं करते, कुवैद्यो को ठगने के निमित्त वह इसे पारद भस्म बतलाते हैं, रस कपूर नहीं कहते, क्योंकि उनका भेद खुल जाय। और वे इस क्रिया को किसी को नहीं बतलाते। कोष्ठबद्ध जलंधर और जुल्लाब मे चमत्कार दिखलाने के लिये इसको देते हैं। बहुधा चेटक दिखलाने के लिये गुजराती वैद्य इस को रखते हैं।

गधक योग के विना पारे की मुर्छा दो प्रकार से होती है एक रस कपूर, दूसरी इन्म से अलग। यहा पहिले रस कपूर की विधि लिखते हैं।

रस कपूर की पहिली विधि.

शुद्धसूतसमंकुर्यात्-
प्रत्येकगैरिकंसुधीः।
इष्टिकांखटिकांतद्वत्-
स्फटिकासिंधुजन्मच।
बल्मीकक्षारलवणां-
भांडजनमृत्तिकाम् ॥

सर्वाण्येतानिसंचूर्ण्य-
वाससाचापिशोधयेत्।
एभिश्चूर्णैर्युतंसूतं-
स्थालीमध्येपरिक्षिपेत्।
तस्यांस्थाल्यांमुखेस्थाली-
मपरांधारयेत्समाम्।
सर्वाङ्गकुण्ठितमृदा-
मुद्रयेदुभयोर्मुखम्।
संशोष्यमुद्रयेद्भूयोभूयः
संशोष्यमुद्रयेत्।
सम्यग्विशोष्यमुद्रान्ते-
स्थालीचुल्यांविधारयेत्।
अग्निनिरंतरंदद्याद्या-
वह्निचतुष्टयम्।
अंगारोपरितद्यंत्र-
रक्षेद्यत्नादहर्निशम्।
शनैरुद्घाटयेद्यंत्रमूर्द्ध-
वस्थालीगतंरसम्
कर्पूरवत्सुविमलेगृह्णी-
याद्गुणवत्तरम्।

शिगरफ का निकाला पारा, गेरु, पुरानी ईंट का चूर्ण, सफेद खरिया, सफेद बिनाभुनी फिटकरी सेंधानमक, बबई की मांटी, खारी नमक, काविस, अर्थात् जिससें कुम्हार वर्तन रंगते हैं प्रत्येक दो दो पैसेभर, इन सब को अलग २ पीस कपडछन कर पृथक २ पारे के साथ मिलाकर दो २ प्रहर घोटे, पीछे नीचे की हांडी पर चार कपडमिट्टी कर इसमे पारे को भरकर दूसरी हांडी से मुख वद कर डमरुयन्त्र बनावे, फिर दोनो हाडियो के मुखपर चार कपडमट्टी करे, और तीन दिन सुखावे, पश्चात् चार लकडियो की ३२ प्रहर प्रचड अग्नि देवे, इसके बाद चार प्रहर अंगारो पर रक्खे जब स्वागशीतल हो जाय तब उतार कर टेढा रक्खे, और टेढा ही खोलकर ऊपर की हाडी में जो कपूर के समान पारा लगा है उसको निकाल लेवे।

सचदेवकुसुमचन्दन-
कस्तूरीकुंकुमैर्युक्तः।
भुक्तोहरतिफिरंगव्याधि-
मोपद्रवांघोराम्॥
विंदतिवह्निदीप्ति-
पुष्टिंवीर्यंबलविपुलम्।
रमयतिरमणीशतकंरस-
कर्पूरस्यसेवकःसततम्

लौंग, सफेद चन्दन प्रत्येक २ मासे, कस्तूरी २ रत्ती और केशर ४ रत्ती मिलाकर इसे खावे तो गरमी की बीमारी उपद्रवों समेत दूर होवे, अग्नि प्रबल होवे, देहपुष्ट होवे, अपार वीर्य हो अनेक स्त्रियों के रमण करने की सामर्थ होवे, यह गुण रसकपूर के आजमाये हुए हैं।

अन्य रस कपूर के गुण.

इसकी मात्रा बलवान् को १ रत्ती और निर्बल को आधी रत्ती देने मे आठवार रद्द और काली पीली और लाल रंग की आंव के दस्त होते हैं, इनके होने से बल नहीं घटता, किंचित् गरमी होती हैं, इसलिये ठंडी ऋतु मे इसका खाना उचित है, सात दिन खाने से वातरोग दूर होता है, लेकिन रोग दूर होने पर भी इसको १ महीने खाय, वह रुधिर विकार को भी दूर करती है इसके खाने वाले को चाहिये कि वह दही भात का भोजन किया करे और घी न खावे एवं वात रोगी थोडा सैंधा नमक खाय.

रसकपूर की दूसरी विधि

पिष्ट पांशुपटुप्रगाढ-
ममलंवज्राम्बुनाचैकतः
सूतंधातुयुतखटीकवलि-
तंतत्संपुटेरोधयेत्॥
अन्तःस्थंलवणस्यतस्यचत-
लेप्रज्वाल्यवह्निंहठात्।
घस्त्रंग्राह्यमथेन्दुकुन्दधव-
लंभस्मोपरिस्थंशनैः॥

पारे को खारी नमक और थूहर के दूध के साथ घोटे, पश्चात् लोहे के पात्र में रख खडिया की डली से उसका मुह बंद कर संपुट करे पीछे नोन के पात्र मे उसको रखकर एक दिन नीचे आग जलावे, फिर ऊपर की हडिया मे जो सफेद भस्म-जिसे रसकपूर कहते हैं उसको युक्ति से निकाल ले इसी का रसमंजरी वाला रसकपूर और रसचन्द्रिका वाला सफेद भस्म और कोई सुधानिधि रस कहता है।

मतान्तरसे रसकपूरके गुणों का वर्णन।

तद्वल्लद्वितयलवंगस-
हितंप्रातःप्रभुक्तंनृणा-
मूर्द्धवरेचयतिद्वियामम-
सक्कदेयंजलंशीतलम् ।
एतद्धंतिचवत्सरावधिविषंपा-
ण्मासिकंमासिकम् ।
शैलोत्थंगरलंमृगेन्द्रकुटि-
लोद्भूतचतात्कालिकम्॥

जो मनुष्य लौंग के साथ रसकपूर को ६ रत्ती खाय उसे चार घडी पीछे दस्त हो, उसके ऊपर शीतल जल पीवे तो एक वर्ष के और छ. महीने के विष रोगों को दूर करे, तथा मूलविष सर्पविष, सिंहनखविष, और तत्काल के विष को भी दूर करे। इतिमूर्च्छाप्रकरणम् तृतीयोऽध्याय समाप्तम्

चतुर्थोऽध्यायः।

पारदबंधनम्

पारद बधन के दो प्रकार है, सबीज और निर्बीज। जो अभ्रक, सोना, चादी, ताबा और लोह के संयोग से बद्ध होवे वह सबीज, और जो दिव्य औषधियों के सबध से बद्ध हो उसे निर्बीज जानना; किन्तु बन्धन खोट जलौकादिभेद से अनेक प्रकार का है, तिन मे मुख्य २५ बधनो के नाम और उनके लक्षण लिखते हैं।

पंचविंशतिसंख्यकान्रसवधान्प्रचक्ष्महे।
येनयेनहिचांचल्यंदुर्ग्रहत्वंचनश्यति।
प्रोक्तानिरसराजस्यवन्धनानिचवार्त्तिकै।
हठोरोटौतदाभास. क्रियाहीनश्चपिष्टिकः।
क्षारःखोटश्चपोटश्चकल्कवन्धश्चकज्जलिः
सजीवश्चैवनिर्जीवोनिर्वीजश्चसवीजकः।
शृङ्खलाद्रुतिबन्धौचवालकश्चकुमारक.।
तरुणश्चतथावृद्धो-
मूर्त्तिवद्धस्तथापर: ।
जलवद्धोऽग्निवद्धश्च-
सुसस्कृतकृताभिध: ।
महावधाभिधश्चेति-
पंचविंशतिरीरिता. ।
केचिद्वदंतिषड्विंशं-
जलौकावधसंज्ञकम् ।
सतावन्नेष्यतेदेहे-
स्त्रीणाद्रावेप्रशस्यते ।

अब रसबन्धन के २५ प्रकारो को कहते हैं, जिनसे पारद की चंचलता और दुर्ग्रहत्व दूर होता है। जैसे-१ हठ, २ आरोट, ३ आभास, ४ क्रियाहीन, ५ पिष्टिक, ६ क्षार ७ खोटक, ८ पोट, ९ कल्कबन्ध, १० कज्जलि, ११ सजीव, १२ निर्जीव १३ निर्बीज, १४ सबीज, १५ शृंखलाबन्ध, १६ द्रुतिबन्ध, १७ बालक, १८ कुमारक, १९ तरुण, २० वृद्ध, २१ मूर्तिवद्ध, २२ जलबद्ध, २३ अग्निबद्ध, २४ सुसंस्कृत २५ महाबन्ध, और कोई आचार्य जलौकाबन्ध छब्बीसवा कहते हैं। यह देह के वर्त्तने मे त्याज्य है, परन्तु स्त्री द्रावण मे ग्राह्य है।

हठरस.

हठोरस.सविद्येयो
सम्यक्शुद्धिविवर्जित. ।
संसेवितोनृणांकुर्य्यान्
मृ१त्युंव्याधिसमुद्भतम्।

१ मृत्यु वा व्याधिमुद्भतम्।

यथार्थ शुद्धिहीन रस को हठरस कहते हैं, यह सेवन करने से मनुष्य को अनेक व्याधि और मृत्यु करता है ।

आरोटरस.

सुशोधितोरसःसम्य-
गारोटइतिकथ्यते ।
संक्षेत्रीकरणेश्रेष्ठः
शनैर्व्याधिविनाशनः ।

यथार्थ शोधित रस को आरोट कहते हैं चत्रीकरण मे श्रेष्ठ है । और धीरे २ रोगो को नष्ट करता है ।

आभासरस.

पुटितोऽधोरसोयातियोगं-
मुक्त्वास्वभावताम् ।
भावितोरसमूलाद्यै-
राभासोगुणवैकृते ।

जो पुटित रस योग को त्याग अपने स्वभाव को प्राप्त हो, और नीचे को जाय, तथा जिसमें रस मूलादि की भावना दी गई होउसको आभास रस कहते हैं ।

क्रियाहीन.

अशोधितस्तुलोहाद्यैः
साधितोयोरसोत्तम ।
क्रियाहीन.सविज्ञेयो-
विक्रियांयात्यपथ्यतः ॥

जो विना शोभा रस, सुवर्ण चादी आदि से साधित है, उसको क्रियाहीन कहते हैं। यह कुपथ्य करने से देह मे विकार को प्राप्त करता है।

पिष्टिकाबंध.

तीव्रातपेगाढतरावमर्दा-
त्पिष्टीभवेत्सानवनीत रूपा ।
ख्यात ससूत.किलपिष्टिबद्धः
सदीपन.पाचनकृद्विशेषात् ॥

पारे को तीव्रतर धूप मे रगडकर घोटने से जिसकी मक्खन के समान पिंडी होजावे उस पारे को पिष्ठिबद्ध पारा कहते हैं, इसको दीपन पाचन कर्ता जानना।

क्षारबद्ध.

शंखशुक्तिवराटाद्यैर्यो-
ऽसौसंसाधितोरसः ।
क्षारबद्धःपरंदीप्ति
पुष्टिकृच्छूलनाशनः ।

जिस पारद को शख, सीप, कौडी आदि के क्षार से संशोधन किया है, उसको क्षारबद्ध जानना । यह केवल अग्नि को दीप्त करे पुष्टि करे और शूल का नाश करे ।

खोटबद्ध.

बद्धोयःखोटतांयातोध्मा-
तोध्मातःक्षयंव्रजेत् ।
खोटबद्धःसविज्ञेयः
शीघ्र सर्वगदापहः ॥

जो बद्ध पारा चलने फिरने से रहित हो जावे और धमाते २ क्षीण होवे उसको खोटबद्ध कहते हैं । वह शीघ्र सब रोगों का नाश करे ।

पोट (पर्पटी) बद्ध.

द्रुतिकज्जलिकामोचा-
पत्रकेचिपिटीकृता ।
सपोटःपर्पटीसैव-
बालाद्यखिलरोगनुत्॥

जिस पारद की कजली की द्रुति केला के पत्र में पतली और चपटी हो जावे, उसको पोट बद्ध वा पर्पटी कहते हैं यह बालकादिको के सर्व रोग नाश करती है ।

कल्कबद्ध.

स्वेदाद्यैःसाधित.सूतः
पकत्वंसमुपागतः ।
कल्कबद्धःसविज्ञेयो-
योगोक्तफलदायकः ॥

जो पारा स्वेदन मर्दनादि संस्कारो से कीच के समान होजावे उसको कल्कवद्ध कहते हैं, यह योगोक्त फलको देता है।

कज्जलीबद्ध.

कज्जलीरसगंधोत्था-
सुश्लक्ष्णाकज्जलोपमा।
तत्तद्योगेनसयुक्ता-
कज्जलीबंधउच्यते ।

पारे और गधक की सुन्दर कज्जल के समान कजली होजावे वह अपने पृथक् २ योगो कर के सयुक्त कज्जलीबन्द्ध कहाता है।

सजीवपारद.

भस्मीकृतोजीवतिवह्नियोगाद्रस.
सजीवः सखलुप्रदिष्ट'।
संसेवितोऽसौनकरोतिभस्म-
कार्य्यं जवाद्व्याधिविनाशनंच॥

जो पारा भस्म हुआ भी अग्नि के योग से फिर जीवित हो जावे, उसको सजीव पारद कहते हैं इसका सेवन पारे की भस्म के जो गुण हैं उनको नहीं करता और शीघ्र रोग नाश भी नहीं करे।

निर्जीव.

जीर्णाभ्रकोवापरिजीर्णगन्धो-
भस्मीकृतश्चाखिललोहमौली।
निर्जीवनामाहिसभस्मभूतो
नि शेषरोगान्विनिहन्तिवेगात्॥

जो अभ्रक या गधक के साथ भस्म करा है, वह पारा सब लोहो मे श्रेष्ठ है, उस पारे की भस्म को निर्जीव कहते है यह सर्व रोगो को वेग से दूर करे।

निर्वीज.

रसस्यपादांशसुवर्णजीर्णः
पिष्टीकृतोगंधकयोगतश्च
तुल्यांशगधैःपुटितःक्रमेण-
निर्वीज नामासकलामयघ्नः॥

जिस पारद मे चतुर्थांश सुवर्ण जीर्ण हुआ हो और जो गधक के योग से पिष्टी रूप किया गया हो तथा तुल्य भाग गन्धक करके क्रम से संपुटित हो उसको निर्वीजनामा सर्व रोग नाशक कहते हैं।

सवीज.

पिष्टीकृतैरभ्रकसत्त्वहेमता-
रार्ककान्तःपरिजारितोयः।
हतःस्वतःषड्गुणगधकेन
सवीज बद्धोविपुलप्रभावः॥

अभ्रकसत्व सुवर्ण, चादी, ताम्र और लोह इनकी पिष्टी करके जारित तथा षड्गुण गधक करके जो हत हो उस विपुल प्रभाव वाले पारद को सबीजबद्ध कहते हैं।

शृङ्खलाबद्ध.

वज्रादिनिहत.सूतोहतः
सूतसमोपरः ।
शृङ्खलाबद्धसूतस्तुदेह-
लोहविधायक .

जो वज्रादि करके मारित हो तथा समगधक करके मारित हो उस पारे को शृङ्खलाबद्ध कहते हैं, यह देह को लोह के समान करता है।

द्रुतिबद्ध.

युक्तो[1]ऽपिबाह्यद्रुतिभिश्चसूतो-
बद्धंगतोवाभ सितस्वरूप'।
सराजिकापादमितोनिहन्ति
दुःसाध्यरोगान् द्रुतिबद्धनामा।

जो बाह्य द्रुतियो करके युक्त होकर भी उत्तम रूप से बद्ध हुआ हो या भस्म हुआ हो उसकी राई की चौथाई मात्रा भक्षण करने से दु.साध्य रोग दूर होते है इसे द्रुतिबद्ध पारा कहते है।

१ चित्रप्रभावावेगन व्याधिजानातिशकरः।

बालबद्ध.

समाभ्रजीर्ण शिवजस्तुबालःसंमे-
वितोयोगयुतोजवेन।
रसायनोभाविगदापहश्चसोप-
द्रवारिष्टगदान्निहन्ति।

जिस पारद मे समान अभ्रक जीर्ण हुआ होवे उसको बालबद्ध कहते हैं इस का योग के साथ सेवन करने से शीघ्र उपद्रव और अरिष्टयुक्त रोगो का नाश होता है तथा होने वाली व्याधियों का नाश करे और रसायन है।

कुमारबद्ध.

हरोद्भवोयोद्विगुणाभ्र-
जीर्ण.सस्यात्कुमारो।
मिततडुलोऽसौ। त्रिःसप्तरात्रात्खलुपापरोग
संघातघातीचरसायनंच।

जिस पारद मे द्विगुण अभ्रक जीर्ण हुई हो उसको कुमारबद्ध कहते है इसको १ चावल की बराबर नित्य सेवन करने से २१ दिवस में सर्व पाप और रोगो के समूह का नाश होवे और रसायन है।

तरुणबद्ध.

चतुर्गुणव्योमकृताशनोमौ
रसायनाग्र्यस्तरुणाभिधान।
ससप्तरात्रात्सकलामयघ्नो
रसायनोवीर्यबलप्रदाता।

जिस पारद मे चतुर्गुण अभ्रक जारण की गयी हो, वह रसायनो का अग्रवर्ती तरुणाभिध पारा कहाता है इसका सात रात्रि सेवन करने से सर्व रोग नाश होते हैं यह वीर्य और बल को बढ़ाता हैं और रसायन है।

वृद्धबद्ध.

यात्राभ्रक षड्गुणतोहिजीर्ण प्राप्ता-
ग्निसख्य सहिवृद्धनामा।
देहेचलोहेचनियोजनीय.
शिवादृतेकोऽस्यगुणान्प्रवक्ति।

जिस पारे मे षट्गुण अभ्रक जारण हो चुका हो वह अग्नि का सगा अर्थात् उसे अग्नि में भस्म किया है वृद्धबद्ध नामा पारद है इसको देह मे और ताम्रादि लोहो में योजना करना इस के गुण सिवाय शिव के कौन कह सकता है?

मूर्तिबंध.

योदिव्यमूलिकाभिश्च-
कृतोत्यग्निसहोरसः।
विनाभ्रजारणात्सस्या-
न्मूर्तिबंधोमहारसः॥
योजितःसर्वरोगेषु-
निरौपम्यफलप्रदः॥

जो पारा विना अभ्रक जारण केवल दिव्यौषधियों के रस से बद्ध किया हो और अग्नि सहने वाला हो गया हो। उस महारस को मूर्तिबध कहते हैं, इस को सर्व रोगों में देवे, यह निरुपम फल को देता है।

प्रसंगप्राप्त ६४ दिव्यौषधियों के नाम

सोमवल्ली १, जलपद्मिनी २, अजगरी ३, गोन्मी ४, त्रिजटा ५, ईश्वरी ६, भूतकेशी ७, कृष्णवल्ली ८, रुद्रवती ९, सर्वरा १०, वाराहीकद ११, अश्वत्थपत्री १२, अम्लपत्री १३, चकोरनासा १४, अशोकनाम्नी १५, पुन्नागपत्रिका १६, नागनी १७, चेत्री १८, सवरी १९, देवीलता २०, वज्रवली २१ चित्रक २२, कालपर्णी २३, नीलोत्पली २४, रजनी २५, पलाशतिलका २६, सिंहिका २७, गोष्ठागी २८, खदिरपत्री २९, तृणज्योति ३०, रक्तवल्ली ३१, ब्रह्मदडी ३२, मधुतृष्णा ३३, पद्मकन्दा ३४, हेमदंडी ३५, विजया ३६, अजया ३७, जया ३८, नली ३९, श्रीनाम्नी ४०, कीटभारी ४१, तुम्बिका ४२, कटुतुम्बी ४३, मयूरशिखा ४४, हेमलता ४५, आसुरी ४६ सप्तपर्णी ४७, गोमारी ४८, पतिक्षीरा ४९, व्याघ्र-

पादलता ५०, धनुर्बल्ली ५१ त्रिशूली ५२, त्रिदंडी ५३. शृंगी ५४ वज्रनाबमल्ली ५५ महावल्ली ५६, रक्त कंदवती ५७, बिल्वडला ५८, रोहणी ५९, विल्वातकी ६० गोरोचना ६१, कदपत्रिका ६२, विशल्या ६३, और ६४, कदक्षीरा।

जलबद्ध.

शिलातोयमुखैस्तो-
यैर्बद्धोऽसौजलबद्धकः।
सजरारोगमृत्युघ्नः
कल्पोक्तफलदायकः॥

पारा शिलातोय (शिलोदक, घृतोदक, विषोदक, तैलोदक अमृतोदक कर्त्तरी, तक्षोदक, चन्द्रोदक) इत्यादि जलो के योग से बद्ध हुआ हो उसको अग्निबद्ध कहते हैं, यह वृद्धावस्थादि रोगो को और मृत्यु को दूर कर कल्पोक्त फल देता है।

अग्निबद्ध

केवलोलोहयुक्तोवाध्मात
स्याद्गुटिकाकृति.
अक्षीणश्चाग्निवद्धोऽ
सौखेचरत्वादिकृत्महि

जो पारा केवल लोह के मिलाने से और अग्नि मे धमाने से गुटिका के आकार हो जावे और क्षीण न हुआ हो उसको अग्निबद्ध पारा कहते हैं यह खेचरत्वादि सिद्धि को देता है।

बद्धाभिधानरस.

हेम्नावारजतेनवांसह-
यदिध्मातोव्रजत्येकता
मक्षीणोनिचितोगुरुश्च-
गुटिकाकारोतिदीर्घो
ज्वल'। चूर्णत्वंपटुवत्प्र-
यातिनिहतोघृष्टो
नमुंचेन्मलं निर्गंधोद्रवतिक्षणा-
त्सहिमतोबद्धाभिधानोरसः॥

महाबद्ध पारद के लक्षण कहते हैं जो सुवर्ण अथवा चादी आदि के साथ गलाने से गलकर एक हो जावे, क्षीण न हो और न बिखरे, तथा भारी और गुटिका के आकार अति, दीर्घ उज्ज्वल हो, तथा पीसने से नोन के समान चूरा हो जावे, मीडने से कलौंछ देवे, गधरहित हो अग्नि पर तत्काल पतला हो जावे उसको बद्धाभिधान पारा कहते हैं।

अन्य मतान्तर

पोटःखोटोजलौकाच-
भस्मचापिचतुर्थकम्।
वधश्चतुर्विधाज्ञेयः
सूतस्यभिषगुत्तमैः॥

कोई आचार्य कहता है कि पोट, खोट, जलौका और भस्म ये बद्ध पारद के चार भेद है

पूर्वोक्तचारप्रकारकेबद्धपारदोंकेलक्षण

पोटःपर्पटिकावंधः
पिष्टीवंधस्तुखोटकः।
जलौकापक्कवंधःस्या-
द्भस्मभस्मनिसंभवेत्।

गधक पारद की पर्पटी को पोटबद्ध कहते हैं पिष्टीबध को खोटक कहते है और पक्कबध को जलौकाबद्ध कहते हैं, एव भस्म के समान पारद को भस्मबद्ध कहते हैं।

रस भस्म के द्विविधभेद.

सूतभस्मद्विधाज्ञे-
यमूर्ध्वगतलभस्मच।
ऊर्ध्वसिंदूरकपूर-
रसादन्यदधोगतम्

पारे की भस्म दो प्रकार की होती है एक ऊर्ध्वगत, सरी अधोगत, तहा रससिंदूर और रसकपूर आदि ऊर्ध्वगत है और इन से अतिरिक्त अधोगत भस्म कहाती है।

तलभस्मविधि

गधकंनवसारंच-
शुद्धसूतसमत्रयम्।

यामैकंचूर्णयेत्खल्वेका-
चकुप्यांविनिःक्षिपेत् ।
रुद्ध्वाद्वादशयामा-
न्तवालुकायंत्रगपचेत् ।
स्फोटयेत्स्वांगशीतं-
तत्तदूर्ध्वगंधकंक्षिपेत् ।
तलभस्मरसोयोगवा-
हीस्यात्सर्वरोगहृत् ।

गंधक, नौसादर, शुद्धपारा प्रत्येक आठ ३ पैसेभर लेवे और सब को एक प्रहर कज्जली करे पश्चात् शीशी में भर वालुका यंत्र में १२ प्रहर की आंच देवे जब स्वांगशीतल हो जाय तब उतार लेवे, फिर शीशी को फोड़कर जो पारे की भस्म नीचे बैठी हो उसको निकाल लेवे। ऊपर की गंधक को दूर करे । यह योगवाही और सब रोग हरे है ।

अब जानना चाहिये कि वध के वास्ते शुद्ध पारा लेना उचित है, वह शिंगरफ का निकाला विना संस्कार के ही शुद्ध होता है परन्तु कोई आचार्य कहते हैं कि शिंगरफ के निकाले हुए पारे का भी पूर्वोक्त स्वेदन मर्दन उत्थापनादि संस्कार करना चाहिये ।

यथोक्तंपुरंदररहस्ये

रसगंधकसंभूतं-
हिंगुलप्रोच्यतेवुधैः ।
तस्मात्सूतं चयद्ग्राह्य
शोध्यतमपिसूतवत् ।

पारा और गंधक मिलाने से शिंगरफ बनता है इस लिए शिंगरफ से जो पारा लेवे उसका भी पारे के समान शोधन करे ।

पीछे इस पारे में औषधान्तर से पहिले मुख उत्पन्न करे क्योंकि मुख होने से पारा सोना, चांदी, अभ्रक सत्त्व, तांबा, लोहा इत्यादि को खा जाता है सुवर्णादिक की वाह्यद्रुति करना कष्टसाध्य है, और सुवर्णादिक को पारे में मिलाकर सकल औषधियों से द्रव करना सो अंतर्द्रुति कहाती है, यह जब हो सकता है, कि प्रथम मुखकर पारे को भूखा करे कि जिससे सुवर्णादि को खाय और पचावे, पारा हेमादिक को खाकर पचावे, तब यह पारा भूखा होवे, पारे में मुख न करे, और भूखा विस्तार बड़ा है। यह हो भी नहीं सकता, इससे मुख और भूखा करने के निमित्त सुगम उपाय कहते हैं ।

विषोपविषकंसंयुः प्रत्येकंदिनसप्तकम् ।
मुखंचजायतेसूते वलंवह्निश्चवर्द्धते ।

सेर भर पारे में आधपाव विषचूर्ण डालकर सात दिन आक के दूध में घोट कर पूर्वोक्त डमरू यंत्र में उड़ाय लेवे, ऐसे ही धतूरा, कलयारी, कनेर, अफीम और घुंघची इन प्रत्येक के काढ़े अथवा रस में सात २ दिन घोट कर उड़ाय लेवें तो पारे के मुख और भूख होवे, और कोई २ वैद्य पारे में मुख करने के निमित्त पारे को वांस की नली में भर कर एक हांडी में गो मूत्र भर उसमें उस नली को लटका देते हैं और २१ दिन तक आंच देते हैं। जैसे २ गोमूत्र जले वैसे वैसे ही और भी डालता जाय तब पारे के मुख और भूख उत्पन्न होती है। पारे के भूखा करने के लिये षड्गुण गंधक जारण कहते हैं, तब भूखा होता है।

पारदमारणे नियम ।

गुरुशास्त्रंपरित्यज्य-
विनाजारितगंधकात् ।
मारयेद्योरसंमूढःतंशपेत्परमेश्वरः ॥

गुरु शास्त्र को त्याग जो दुर्बुद्धि विना गंधक जारण के पारद का मारण करता है । उसको श्री शिवजी शाप देते हैं, तहां गंधक जारण वहिर्धूम और अंतर्धूम के भेद से दो प्रकार का है ।

गंधकजारण की आवश्यकता

रसगुणवलिजारणंविनायखलु-
रुजाहरणक्षमोरसेन्द्रः ।

नजलदकलधौतपाकहीनः सप्रशतिर-
सायनतामिनिप्रतिज्ञा।

बिना षड्गुण गंधक जारण के पारा रोग हरण को समर्थ नहीं होता, और जब तक अभ्रक तथा सुवर्ण जारण न किया जावे तब तक पारा रसायन योग्य नहीं होता इसी प्रतीज्ञा है।

गंधकजारण के भेद।

जीर्णेशतगुणेगंधेशतवेधीभवेद्रस. ॥
सहस्रगुणितेजीर्णेसहस्रांशेनवेधयेत् ।
एवत्प्रकारस्तुतत्र वद्रष्टव्यः, प्राधान्यषड्गु-
णस्यसर्वसंमतम् ॥

अर्थ—शतगुण गंधक जीर्ण होने से, पारा शतवेधी अर्थात् एक भाग पारा, ताम्र आदि के सौ भागों को वेधे; इसी प्रकार सहस्रगुणित गंधक जीर्ण होने से सहस्रांशको वेधे, यह प्रकार रजनादि संस्कारों मे देखना, मुख्य षड्-गुण गंधक जारणही सर्व संमत है।

गंधकजारणका फल.

तुल्येतुगंधकेजीर्णेशुद्धाच्छतगुणोरसः ।
द्विगुणेगंधकेजीर्णेसर्वथासर्वकुष्टहा ॥
त्रिगुणेगंधकेजीर्णेसर्वव्याधिविनाशनः ॥
चतुर्गुणेतत्रजीर्णे वलीपलितनाशनः ॥
गन्धेपंचगुणेजीर्णेक्षयरोगहरोरसः ॥
षड्गुणेगंधकेजीर्णेसर्वरोगहरोभवेत् ।

पारद के बराबर गंधक जारण करने से शुद्ध पारे से सौगुना अधिक फलदाता होता है, द्विगुण गंधक जारणसे सर्व कुष्टों को दूर करे, त्रिगुण जारण से सर्व व्याधियों को, चौगुना जारण से वलीपलित को पाचगुनी जारण से क्षयरोग को, और छःगुनी जारण करने से जो पारा बनता है वह सर्व रोगो को नाश करता है।

अंतधूर्मविपाचितषड-
गुणगन्धेनरजित सूत.
सभयेत्सहस्रवेधीतारेताम्रभुजगेच।

अंतधूर्म विपाचित षड्गुण गंधक करके जित जो पारा है वह चांदी, तांबा और सीसा से सहस्र वेधीहोता है।

विपिनौषधिपाक-
सिद्धमेतद्घृततैलाद्य-
पिदुर्निवारवीर्यम्।
किमयंपुनरीश्वराङ्गजन्माघन
जाम्बूनन्दचन्द्रभानुजीर्णः।

वन की जडी बूटी आदि के पाक से सिद्ध घृत तैलादिक भी दुर्निवार वीर्य हो जाते हैं, फिर ईश्वर से उत्पन्न पारा यदि इसमें अभ्रक, सुवर्ण ताम्र और चांदी जीर्ण हो गई होवे तो फिर क्या कहना है?

अजारयंतःपविहेमगंधवां-
छन्तिसूतात्फलमप्युदारम्।
क्षेत्रादयुप्तादपिसस्यजातंक्ष-
पीवलास्तेभिषजश्चमंदाः ।

जो बिना हीरा, सुवर्ण, और गंधक जारण के पारद से उदार फल की इच्छा करते हैं तथा बिना जोते बोए खेत से फल की इच्छा करते हैं? ऐसे किसान और वैद्य दोनो मंद बुद्धि हैं।

घनरहितबीजजारणसं-
प्राप्तफलादिसिद्धिकृतकृत्याः।
कृपणाःप्राप्यसमुद्रं-
वराटिकालाभसंतुष्टाः ।

जो वैद्य बिना अभ्रक जारण के केवल बीज जारण की सिद्धि से कृतकृत्य है, उन्हे ऐसे जानना कि, जैसे कृपण पुरुषों को समुद्र के किनारे कौडी मिल जाने से वे उसको सर्वोत्तम लाभ जानकर प्रसन्न होते है।

अभ्रकजारणमादौगर्भ-
द्रुतिजारणंचहेम्नोन्ते
योजानातिनवैद्यो-
वृथैवसोऽर्थक्षयकुरुते ॥

प्रथम अभ्रक जारण करे, तदन्तर सुवर्ण जारण, तत्पश्चात् गर्भद्रुति करना, इस कर्म को जो वैद्य नहीं जानता, वह अपना धन व्यर्थ खर्च करता है।

हेम्निजार्णेसहस्रै-
कगुणसंघप्रदायकः ।
वज्रादिजीर्णसूतस्यगुणा-
न्वेत्तिशिवःस्वयम् ।

पारद सुवर्ण जारण से, हजार गुण करता है, और जिस पारद में हीरा आदि का जारण किया गया है, उसके गुण तो साक्षात् श्री शिवजी ही जानते हैं।

सर्वपापेक्षयेजा-
तेप्राप्यतेरसजारणा ।
तत्प्राप्तौप्राप्तमेवस्या-
द्विज्ञानंमुक्तिलक्षणम् ॥

जब इस प्राणी के, सर्व पाप क्षीण होते हैं, तब यह रसजारण को प्राप्त होता है, इस रसजारण की प्राप्ति से मुक्ति लक्षण विज्ञान की प्राप्ति होती है।

यावद्दिनानि देवेशि !
वह्निस्थोधार्यंतेरसः
तावद्वर्षसहस्राणि
शिवलोके महीयते ॥
दिनमेकरसेन्द्रस्य-
योददातिहुताशनम् ।
द्रवन्तितस्यपापानि
कुर्वन्नपिनलिप्यते ॥

हे देवेशि ! जितने दिन यह प्राणी पारद को अग्नि में रखता है, उतने ही सहस्र वर्ष पर्यंत यह जाके शिव लोक में विहार करता है, जो प्राणी १ दिन पारद को अग्नि देता है, उसके सम्पूर्ण पाप द्रवीभूत हो जाते हैं, और फिर किये हुए पापों से लिप्त नहीं होता।

अथ षड्गुणगंधकजारणम्

इष्टिकायांसुपक्वायां-
मूषांतंचतुरङ्गलाम् ।
कृत्वाकाचेनसंलिप्तां-
तस्यांतत्पिष्टिकांक्षिपेत् ।
निंबुद्रावोद्भवोगधो-
देयोमूर्द्ध्निद्विकार्षिकः ॥
मुखंसंरुध्यशुष्के-
चदद्यात्लावपुटंततः ।
गौरीयंत्रमिदंख्यातं-
मूर्च्छितेगंधजारणे ॥

आठ अंगुल मोटी पंजावे की ईंट में काच फिरा कर चार अंगुल का गड्ढा कर उसमें पारे की पिट्ठी भर पारे की बराबर यानी पैसेभर गंधक कागजी नीबू में घोटकर पारे के ऊपर रक्खे और गढ्ढे को ईंट के टुकडे से वंदकर कपड मिट्टी करे, पश्चात् ६ जंगली उपलों की आंच देवे जब शीतल हो तब फिर इसी प्रकार आंच दे, इसी प्रकार गंधक डाले और जब तक षडगुण गंधक जले तब तक इसी प्रकार करता जाय यह गौरीयंत्र मूर्च्छना और जारण में काम आता है। तहां पारे की पीठी ऐसे बनावे —

पिष्टीकरण.

एक हाथ का उत्तम कपडा ले, उसको सात बार धतूरे के रस में भिगोकर सुखावे, पीछे उस पर मक्खन चुपडकर, मैनसिल, हरताल, गंधक, रिता हुआ शीशा प्रत्येक धेला २ भर ले। बारीक पीस उस कपडे पर बिछा कर बत्ती बनावे और एक थाली मे घी चुपड उसमे उस बती को जला कर उलटी लटका देवे, उसमें से जो तेल टपके उसमें पैसे भर पारे को खूब घोटे, जब पारा मिलकर पिट्ठी हो जाय, तब जारण करे।

हांडीयंत्र की विधि

एक हांडी में १६ पैसे भर पारा डाल आंच

पर रक्खे जब गरम हो जाय तब तोला भर गंधक हंसपदी के रस में घुटी हुई डाले, इसी प्रकार पड्गुण गंधक जले तब तक डाले।

भूधर यंत्र की विधि

आरोटकसजगन्धकचूर्णं-
तुल्यंनिरुद्धमूषायाम्
भुविगर्त्तायाभूषांतात्क्षिप्त्वा-
ष्टांगुलाधस्तात्
आपूर्य्यवालुकाभिस्तगत्त-
भूसमीकृत्याप्रज्वा
ल्योपरिवह्नित्रिदिन-
मूषांसमुद्धृत्य ॥
जीर्णंतुगंधकेस्मिन्नमुनस्तु-
क्षेप्यो ऽनयारीत्या।

आठ पैसे भर शुद्ध पारा लेकर उसको लोहे की घड़िया में रक्खे, और इसमें आठ पैसे भर शुद्ध गंधक डाल लोहे के पात्र से मुख बंद कर ऊपर मिट्टी कर जमीन मे आठ आंगुल लम्बा इतना ही चौड़ा गहरा गड्ढा खोद कर रक्खे, और ऊपर मिट्टी इकसार कर दे, परचात् उसके ऊपर तीन दिन अग्नि जलावे, और चौथे दिन घड़िया को निकाले, तब वह गंधक जीर्ण होवे। फिर इतनी ही गधक डालकर जारण करे, इस प्रकार पड्गुण गंधक जलाये, अथवा वज्रमूषा में पड्गुण गंधक जारण करे।

वज्रमूषा की विधि

६ टंक कोयले, स्याह मिट्टी, कपड़ा, कीट्टी प्रत्येक एक एक टक, सब को कूट पीस छानकर दो मूषा बनावे, इसको वज्र मूषा कहते हैं, अब जानना चाहिये कि, कोई वैद्य गधक जारण के अनन्तर पहले अभ्रक जारण करता है, और कोई सोना जारण करता है ये दोनों प्रकार अच्छे हैं, बिना गधक जलाये और बिना बीज अर्थात् सोना चादी, अभ्रक इनके जलाये जो पारे को मारता है वह बड़ा पातकी है।

तत्र प्रमाणम्

अजीर्णंतु अबीजंतुसूतकं यस्तुघातयेत्।
ब्रह्महासदुराचारीब्रह्मद्रोहीमहेश्वरि ॥

जो मनुष्य अजीर्ण और अजीव पारे को जारण करे, वह हे पार्वती! ब्रह्म हत्यारा खोटे आचरणों वाला ब्रह्मद्रोही है।

तथा च रससिंधौ

देव्यारजोभवेद्गधोधातुः
शुक्रतथाभ्रकम्।
आलिंगनेसमर्थौ द्वौप्रियत्वा-
च्छिवरेतसः ॥
आश्लेषादेतयोः सूतोनवे-
त्तिमृत्युजंभयम्।
शिवशक्तिसमायोगात्
प्राप्यतेपरमंपदम्।
यथास्यजारणाब्रह्ल्यस्तथा-
स्याद्गुणदोरसः।

देवी के रज से गधक प्रकटी, और उसी का शुक्रधातु अभ्रक है, इससे अभ्रक और गधक दोनों पारे को परम प्रिय है, इनके सयोग से पारा मौत का डर नही मानता, शिव शक्ति के योग से उत्कृष्ट स्थान मिले है। जैसे २ पारे की जारणादिक क्रिया अधिक होवे तैसे २ अधिक गुणदाता होता है।

गंधकजीर्णगुणाः

समेगधेतुरोगाघ्नोद्विगुणे-
राजयक्ष्मजित्।
जीर्णेतुत्रिगुणेगधेका-
मिनीदर्पनाशनः ॥
चतुर्गुणेतुतेजस्वीसर्व-
शास्त्रविशारदः।
भवेत्पंचगुणे सिद्धः
षड्गुणे मृत्युजिद्भवेत्।

पारे के समान गधक जारण करने से रोग दूर करे, द्विगुण गधक जारण करने से क्षयी रोग को जीते, तथा त्रिगुण जारण से स्त्रियों का अभिमान दूर करे, तथा चतुर्गुण जारण से तेज देवे और वुद्धि वढावे, तथा पाचगुनी जारण करने से सिद्ध होवे, और छःगुनी गधक जारण से मृत्युनाशक अन्य गुणा भी होता है ।

तस्माच्छतगुणोव्योमसत्वेजीर्णेतुतत्समे
ताप्यखपर्रतालादिसत्त्वेजीर्णेगुणावह. ॥
हेम्निजीर्णेसहस्रेकगुणसंवप्रदायकः ।
वज्रादिजीर्णेसूतस्यगुणान्वेत्तिशिवः ॥

पारे मे षड्गुण गंधक जारण करने के पिछाडी अभ्रक सत्व की समान मात्रा से जीर्ण किया हुआ पारद सौगुना अधिक गुणकारक है, और सोना मक्खी, खपरिया, हरिताल इत्यादि सत्वजारण से गुणदायक होता है, तथा सुवर्ण जीर्ण करने से हजार गुणो का दाता होवे, और हीरकादि जीर्ण पारे के गुण आप श्री शिवजी ही जानते हैं ।

अव कहते हैं कि वीज अर्थात् सोना चादी, अभ्रक, इनका जारण दो प्रकार से होता है, एक विडयोग से दूसरा विना विड के इन दोनो मे विड योग से जो वीज जीर्ण है. सो प्रधान उपाय है अव वीज के जारण निमित्त विड कहते हैं ।

मूलकार्द्रकचित्राणांक्षारै-
गोमूत्रगालितै ।
गंधक शतशोभाव्योविडो-
यंजारणेमतः ॥

मूली, अदरक, चीता प्रत्येक एक मन लेकर सुखा लेवे, पीछे जला कर इनकी राख को गोमूत्र मे भिगो देवे और पाच दिन वाद चार तह कपड़े मे गोमूत्र को छान लेवे और उसमें सवा सेर गधक आमलासार को घोटे सौसे अधिक भावना देवे जव गाढ़ा हो तव सुखाकर रख छोडे इसी को विड कहते हैं, इसके योग से पारा अभ्रकसत्व आदि को खा जाता है यद्यपि विड अनेक हैं परन्तु ग्रन्थ विस्तार के भय से नहीं लिखते यह विड पारे के भीतर सोना चांदी अभ्रक का सत्व पारा होवे उसको पानी कर देता है और पारे को वहुत भूखा करता है जब पारा भूखा हुआ तव अभ्रक सत्वादि द्रवी भूतो को खा जाता है इसका यह सिद्धान्त हैं कि अभ्रक सत्वादि जो पारे के बाहर हैं तिनको यह विड द्रव नहीं करे. पत्तीरे के बाहर उनका द्रवभाव ईश्वर के अनुग्रह से होता है यद्यपि उनके द्रव करने का उपाय शास्त्र मे लिखा है परन्तु वह हो नहीं सकता ।

वीज जारण प्रकार

केवलाभ्रकसत्वंहिनग्र-
सत्येवपारदः ।
तस्माल्लोहान्तरोपे-
संयुक्तवाधातुसत्वकः ॥
अभ्रकजारयेत्सिद्ध्यै-
केवलेनतुसिद्ध्यति ।

प्रथम पारे में उसका अष्टमांश विड डाले यानी पारा ८ टाक हो तो एक टांक विड डाले और जंभीरी के रस मे १ दिन घोटे पश्चात् चौसठवां हिस्सा यानी चार रत्ती अभ्रकसत्व डाले फिर जभीरी के रस मे १ दिन घोटे परन्तु यह याद रहे कि प्रथम अभ्रक सत्व को तव जम्भीरी के रस से घोटे जव पहले अपने हाथो से मोर का पित्ता और सरसों का तेल मल लेवे अथवा सोना मक्खी सत्व और शहद मिलाकर मल ले पीछे सोना मक्खी सत्व अभ्रकसत्व के समान यानी ४ रत्ती ले एक गोला कर तत्पश्चात् जवाखार दोनो को धेला २ भर पीस कर नींवू के रस और गो मूत्र मे खूब घोटे जव गाढा हो तव चार तह कपडे पर लेप करे और जब सूख जाय तव इससे उस गोले को रक्खे अथवा भोज

पत्र पर लेपकर उसमें गोल को रक्खे और सूत से बांधकर दोलायन्त्र की भांति एक हांडी में सेंधा नमक, जवाखार, कांजी, कागजी नींबू का रस और गो मूत्र डाल कर तीन दिन स्वेदन करे। जानना चाहिये कि अभ्रकसत्व जब सोना, मक्खी के सत्व में मिलें तब पारद अभ्रक सत्व को भली भांति ग्रसे और दोनों सत्व न मिले तो नहीं ग्रसे इसीसे अभ्रक सत्व की बराबर सोना मक्खी का सत्व मिलावे पीछे जारण करे जब इस प्रकार स्वेदन कर चुके तब उस गोले को निकाल लेवे फिर इस गोले को कांजी के पानी से धोकर इसमें से पारा निकाल लेवे और कपड़े में डालकर खूब मले परन्तु ऐसे मले कि पारा घटने न पावे जब मलते मलते निर्मल हो जाय तब चार तह कपड़ मे डाल कर निचोड़ लेवे, पीछे पारे को तोले, जो जानिये कि केवल पारा रह गया है अभ्रकसत्व बाकी नहीं रहा तो जानना कि पारा अभ्रकसत्व को खा गया और पारा तोलने मे अधिक होवे तो जानना कि पारे में अभ्रकजीर्ण नहीं हुआ, जब अभ्रक सत्व पारे में जीर्ण हो जाय तब पारा दण्डधारी अथवा जीवधारी होवे, तब उस पारे को भोज-पत्र में बांधकर दोलायंत्र की भांति एक हाडी में लटकाय कांजी का पानी भरे और पाव भर सेंधा नमक डाल तीन दिन स्वेदन करे तब पारे का अजीर्ण दूर होवे अथवा डमरूयंत्र मे पारे को उड़ा लेवे तब पारे का अजीर्ण दूर होय।

ग्रंथान्तरसे प्रमाण

अजीर्णेपातयेत्पिडंस्वेदयेन्मर्द्दयेत्तथा।
रसस्याम्लस्ययोगेनजीर्णेग्रासंतुदापयेत॥

पारे के अजीर्ण मे पतन, स्वेदन और खटाई के योग से मर्दन सस्कार करे, जब अजीर्ण हो जाय तब ग्रास दे, इसी प्रकार पारे को अभ्रक के चार, ग्रास और दे, इसी भांति दोलायत्र मे स्वेदन करे और इसी प्रकार प्रक्षालन करे और पिंड करे, इसी प्रकार अजीर्ण-जीर्ण की परीक्षा करे, कई २ वैद्य कच्छप यंत्र से पारे मे दूने अभ्रक सत्त्वादिक को डालकर जलाते हैं, और जो शेष रहता है उसको साक्षात् भट्टी की अग्नि में जलाकर राख करते है और पूर्वोक्त गोले को पक्की घड़िया मे रख गोले के ऊपर नीचे बिड़ दे इस घड़िया को नींबू के रस से भर देवे और घड़िया का मुख बन्द कर भट्टी में धौंकते है, और पारे को द्विगुण सत्वादिक कच्छपयन्त्र में जलाते हैं तब पारे के उड़ने का भय नहीं रहता, उससे साक्षात् अग्नि के संयोग से बाकी द्विगुण से अधिक सत्वादिक जलावे तो कुछ चिन्ता नहीं अथवा अभ्रक सत्वादिक कच्छप यन्त्र मे न जलावे तो सुगम प्रकार यह है कि, पृथ्वी में गोबर रखकर उसमे छ अंगुल गहरी पक्की घड़िया रख उसमें गोले को रक्खे उसके ऊपर नीचे बिड धरके जंभीरी के रस से आधी घड़िया को भर दे और मुख बन्द कर ऊपर अंगारो का भरा खिपड़ा रक्खे जब तक सत्व न पिघले, पश्चात् पारे को निकाल कर तोले जो पारा वजन मे बराबर हो तो फिर इसी प्रकार सत्व को डालकर अग्नि दे, जब पारे का दूना सत्व जल जाय, तब साक्षात् अग्नि संयोग से त्रिगुण चतुर्गुण, पंचगुण, षड्गुण, सत्वादिक जारण करे, हर बार पारे का षोडशांश सत्वादिक डाले और जलावे तिसके उपरान्त बाह्यद्रुति के योग से अभ्रक सत्व को पारे मे जलावे, यद्यपि शास्त्र मे बाह्यद्रुति के प्रकार और हैं उसको में लिखता हूं (इसको कोई वैद्य नहीं जानता) एक दिन मूली के रस मे सफेद अभ्रक को भिगोकर कम्बल की थैली में भरे, यदि अभ्रक सेर भर हो तो इसमें पाव भर धान की भूसी मिलाकर तीन दिन एक परात मे भिगोवे चौथे दिन उसी परात मे उस थैली को मलै, ऐसा करने से अभ्रक के छोटे २ टुकड़े होकर पानी मे आवें, तब पानी को निकाल डाले, पानी के भीतर जो धान्याभ्रक

है उसको ले, और उसके बराबर साबुन मिलाकर एक खरल में घोटे, पश्चात् कडाही में डाल साबुन का तेजाब दो सेर डाले, तीनो को मंदाग्निी से जलावे, जब आध सेर तेजाब बाकी रहे तब उतार ले, और फिर इन्समें ३६ टांक शहत, १७ टाक छोटी मछली, ३६ टांक खरगोश का गोश्त, ६ टांक खाड, ३६ टांक गुण, १८ छटाक गूगल, १८ टाक अंडी का चोवा इन सब को कूट पीसकर मिलावे, और ३ गोले कर सुखावे, पश्चात् तीनो को अंगीठी में रख नीचे ऊपर कोयला दे थकनाल धोकनी से धोके, तो अभ्रक का सत्वज्वार की सदृश निकाले उसमे पूर्वोक्त मसाला डालकर खरगोश मारकर डाले, फिर सब को घोटकर गोला बनावे, फिर पूर्वोक्त रीति से दूसरे रोग के समान अभ्रक सत्व निकाल लेवे, तीसरे बार का निकाला हुआ सत्व सर्वदा पतला रहता है जमता नहीं, इसको बाह्यद्रुति कहते हैं, यह पारे के सम्बन्ध बिना द्रवभूत है।

लोहस्य द्रवीकरणम्.

पहले फोलाद मे शहद, सुहागा और मखिया को डाल एक बड़ी घरिया मे पिघलने पर्यन्त घोटे, पीछे शीतल कर २४ टाक लेवे, और इसका आठवा हिस्सा नमक डालकर कागजी नीबू के रस मे घोटे, जब सूख जाय तब गरम पानी से धो डाले, जब पानी शीतल हो तभी निकाल डाले, पश्चात् ३ टाक नौसादर डाल नींबू के रस मे घोटे, पीछे गोला बनाकर शीशे के प्याले में रक्खे, दो प्रहर सुखाकर पीछे २ टाक नौसादर डाल कागजी नींबू के रस में घोटे, और गोला बनाकर उसी प्याले मे तीन प्रहर सुखाकर पीस डाले, और नौसादर तथा शिंगरफ तीन २ टाक डालकर नींबू के रस में घोटे, जब सूख जाय तब उसी प्याले मे रख खट्टे अनार के रस से प्याले को भर देवे नित्य खट्टे अनार का रस थोडा २ डाला करे एक महीने तक लोहा रस में डूबा रहे ऐसे एक महीने तक करे तो लोहा पारे की तरह पतला होकर रहा आवे, इति लोहस्य वाह्यद्रुतिः। पश्चात् अभ्रकसत्व द्रवीभूत और लोहद्रवी भूत दोनों को तीन २ टाक मिलाकर घोटे, और ३ टाक शुद्ध पारा मिलाकर घोटे, जब भली भाति मिल जाय तब एक घरिया मे भरकर खूब धोंके तो पारा बद्ध हो जावे, यह काम मिथ्या नहीं है इसी से पारा बद्ध होता है, और सोना चांदी होता है इससे संदेह नहीं और जो लोहे एवं गंधक दोनों द्रवीभूतो को पारे में मिलावे जिसमे अभ्रकसत्व जारण किया है तो अति उत्तम हैं इसको सेर भर राग में एक टाक डाले वो एक टांक रांग एक सेर तावे में डाले सो एक टांग तावा सेर भर कांसे में डाले फिर एक टाक सेर भर शीशे में डाले तो चांदी होवे और एक तोला तांबे में डाले तो सुवर्ण होवे इस पारे का नाम सिद्ध सूत है।

बद्धपारद के लक्षण

हेम्नावारजतेनवासहिपरो
ध्मातोव्रजत्येकतामक्षी-
णोनिचलोगुरुश्चगुटिका-
कारोतिदीर्घोज्वलः।
चूर्णत्वंपटुवत्प्रयाति-
निहितोघृष्टेनमुंचेन्मलम्।
निर्गंधोद्रवतिक्षणात्सहि-
मतोवद्धाभिधानोरसः॥

जो सुवर्ण चादी के संग मिलाने से एक हो जाय—छीजे नहीं निश्चल और भारी हो गुटका के आकार या लंबा हो स्वच्छ और पीसने से नोन के समान चूर्ण हो जाय घिसने से कालोंछ न दे गंध रहित शीघ्र ही द्रव जाय उसे बद्धरस जानना। यह बद्धसूत के लक्षण हैं।

बद्ध परद की परीक्षा

रसेनबद्धतायातस्त्रोटय-
त्येवनिश्चितम्।

घनांलोहमयींस्थूलांस्पर्श-
मात्रेणलीलया ॥
मृतमुत्थापयेन्मर्त्यंचक्षुषोः-
क्षेपमात्रतः ।
निर्हंतिसकलान्रोगान्घ्रातः
शीघ्रंनसंशयः ॥

पैरों की बड़ी भारी लोहे की बेड़ी भी इसके स्पर्श मात्र से टूट जायँ, और इसको घिसकर मुर्दे की आंख में लगावे तो जी उठे, और इसके सूंघने से ही सब रोग दूर होवें। अब सिद्धरस गुटिका का प्रकार लिखते हैं।

खगेश्वरी गुटिका

तुत्थकंमूषयाकृत्वा
स्थापयेन्मध्यपारदम् ।
अर्कसेहुंडधत्तूर—
रसद्रोणंचपूरयेत् ॥
सप्ताहमौषधैर्भाव्य सिंह-
नेत्र्याघनप्रिया ।
पश्चात्तदम्लयोगेन-
गोलकंशुकसन्निभम् ॥
धत्तूरविषतैलेनज्यो-
तिष्मत्यास्तथैवच ।
गुंजाचलांगलोचैव
भल्लातांकोलकौतथा ॥
एतेषांतैलयोगेन-
गुटिकाविषमध्यगाम् ।
दोलायन्त्रे पचेदेवं
चतुःषाष्टदिनानिच ।
प्रत्येकमौषधीतैले
राक्षसीगुटिकोत्तमा ॥

नीलाथोथा आध सेर लेकर सिद्ध पारे के आधा नीचे और आधा ऊपर रक्खे, और आक, धतूरा, थूहर इन तीनो का रस चार २ सेर लेकर प्रथम कड़ाही में पूर्वोक्त रीति से पारे को रख ऊपर से सब रस को डाल तेज आंच दे, जब रस गाढ़ा हो जाय तब कड़ाही को उतार कर पारे को पानी से खूब धो डाले जब पारा गाढ़ा हो तब खरल में डाल ७ दिन सिंहनेत्री के रस में घोटे और ७ दिन घनप्रिया के रस में घोटे पीछे कागजीनीबू केरस से घोटे पीछे एक विष की बड़ी और मोटी गाठ लेकर उसमें एक गढेला इतना बड़ा खोदे जिसमें पात्र भर पारा समा-जावे, तब उसमें पारा भर कर विष के टुकड़े से मुख बन्द करे, और इस विषकी गांठ को कच्चे सूत में लपेट कर दोलायंत्र करके विष को धतूरे के तेल में रखे, परन्तु विष की गाठ कड़ाही के पैंदे से दो अंगुल ऊंची रहे ६४ दिन पर्य्यंत इसके नीचे मंदाग्नि जलावे जैसे २ तेल घटे तैसे २ डालता जाय इसी प्रकार मालकागनी घुंघची, करियारी, भिलावां और अकोल इन प्रत्येक के तेल में चौसठ २ दिन पचावे, तो राक्षसी पारा हो अर्थात् बहुत भूखा होवे इति।

स्वर्णादिद्रवलोहानिभक्षयेन्नात्रसंशयः ।
तारमध्येयदाक्षिप्तस्वर्णंभवतिनिश्चितम् ॥
वंगमध्येयदाक्षिप्तंरजतंजायतेध्रुवम् ।
मुखेक्षिप्तमदृश्यंचनानाकौतुककारकम् ॥
खेचरीजायतेसिद्धिर्मनःपवनवेगकृत् ।
जरामृत्युंहरेद्रोगं विषंस्थावरजंगमम् ॥
नानयासदृशंकापि त्रिपुलोकेविश्रुतम् ।
नाम्नाखगेश्वरीनामगुटिकासिद्धिसाधनम् ॥

यह पारा सुवर्णादि पतली धातुओं के खाने को समर्थ हो, चादी में डालने से सुवर्ण हो, और रांग को चादी करे, मुख में रखने से अदृश्य होवे, आकाश मे विचरने वाला हो, एक क्षण में हजार कोस पहुँचे, बुढापा मृत्यु और विष का नाश करे, इसकी बराबर दूसरी गुटिका नही है। इति खगेश्वरी गुटिका समाप्ता।

ब्रह्मांड गुटिका

नागवल्लीदलद्रावैःसप्ताहंसिद्धपारदम् ।
मर्दयेत्तप्तखल्वेन कांजिकैःक्षालयेत्ततः ॥

तगर्भेविषकदस्यक्षिप्येन्निष्कचतुष्टयम् ।
विषेणतन्मुखंरुध्वा स्थूलवाराहमांसजे ॥
पिंडवर्गेनिरुद्धथाथ मुखसूत्रेणवधयेत् ।
सन्ध्याकालेवलिंदत्वा कुक्कुटंसदिरायुतम् ॥
ततश्चुल्लथालोहपात्रं तैलेधत्तूररसम्भवे ।
विपचेत्तुततःपश्चात्पिण्डरान्मन्दवह्निना ।
संध्यामारभ्ययत्नेनयावत्सूर्योदयोभवेत् ।
विषमुष्टिपलचैकं गुंजाविजययोरपि ॥
तैलजातीफलस्यापि
वीरतालस्यचोत्तमम् ।
पाचयेत्पूर्वयोगेन
चान्यथानैवसिध्यति ॥
ततउद्धृत्यगुटिकां
क्षीरमध्येविनिःक्षिपेत् ।
तत्क्षीरंशोषयेत्क्षिप्र-
मेतत्प्रत्ययकारकम् ॥
दृष्ट्वातांधारयेद्वक्रे
वीर्यस्तंभकरीनृणाम् ॥
क्षीरंपीत्वारमेद्रामां
कामाकुलकलायुताम् ।
ब्रह्मांडगुटिकाख्याता
शोषयन्तीमहोदधिम् ॥

सिद्ध पारद को नागरवेल पान के रस से सात दिन तप्तखल्व में खरल करे, फिर उसको काजी से धोवे। विष के रस से ७ दिन घोटके कांजी के पानी से धोवे, फिर ४ टांक पारे को विष की डली के भीतर भरके उसका मुख विष की डली से बन्द कर देवे, फिर उस विष की डली को पुष्ट सूअर के मास मे रख कर गोला बनावे, और इस गोले का मुख सूत से लपेट कर बन्द कर देवे, फिर सायंकाल में भैरव और काली को मुर्गे और शराब की बलिदान देकर एक बड़े भारी लोहे के पात्र को चूल्हे पर चढाय उसमे साठ पैंसे भर काले धतूरे का तेल छोड देवे, और उसमें पूर्वोक्त मास के गोले को छोड देवे, फिर मन्दाग्नि से सायकाल से लेकर प्रात.काल तक औंटावे फिर निकाल कर दो पैसे भर कुचला के तेल में औंटावे इसी प्रकार घूंघची, भांग, जायफल, वीरताल, इन प्रत्येक का रस दो २ पैसे भर लेकर पृथक २ औंटावे पीछे पारे को निकाल कर दूध में डाले तो यह क्षणमात्र में उस दूध को सुखा देवे, तब जाने कि गुटका सिद्ध होगया फिर इस गुटके को दूध पीकर मुख में राखे तो सैकडो स्त्रियों को भोगे, जब गुटके को मूंह से निकाले तब स्खलित हो, यह ब्रह्मांड गुटिका समुद्र के समान वीर्य को पोषण करती है।

इति पारदस्यबन्धनप्रकरणम्

अथ पंचमोऽध्यायः

अथ मारणप्रकरणम्

कृष्णधत्तूरतैलेनसूतोमर्द्योनियामकैः ।
दिनैकंतंपचेद्यंत्रे कच्छपाख्येनसंशयः ॥
मृतः सूतोभवेत्सद्यो सर्वयोगेषुयोजयेत् ।

एक पैसे भर सिद्ध पारे में काले धतूरे का रस डालकर १ दिन घोटे, और एक दिन नियामक औषधियो के रस मे घोटे, पश्चात् गोला बना कच्छप यंत्र में रख आच दे तो पारा निस्सन्देह मरे, इस क्रिया से सबीज और निर्बीज पारा मरता है।

नियामक औषधि

वन्दाल का रस, सफेद आक का दूध, कबूतर की बीठ, गीली हसपदी का रस, इद्रायन के फल का रस, ये नियामक औषधि हैं।

पारा मारने की दूसरी विधि

व्यालस्यगरलेसूतं
मर्दयेत्सप्तवासरान् ।
शंभुनालंकृतेयत्रे
तन्मध्येतद्रसंक्षिपेत् ॥

वन्हिप्रज्ज्वालयेद्-
गाढदद्याद्ध्वंहिमंजलम् ।
यामद्वादशकंचैव
सुसिद्धोजायतेरसः ॥
शुल्वेगुंजार्द्धकं देयं
गुंजेकंपर्वतेष्वपि ।
देहलोहेभवेत्सिद्धिः
कामयेत्कामिनीशतम् ॥
तिलमात्रं प्रदातव्यं
सर्वरोगनियच्छति ।
सेवनाज्जायतेसिद्धि-
रायुर्वृद्धिश्चरंतनी ॥

सांप के जहर में पारे को सात दिन घोटे, पीछे श्री महादेवजी के कहे जलयंत्र में भर कर १२ प्रहर की अग्नि देवे और यन्त्र के ऊपर शीतल जल भरे जिससे ऊपर ठण्डा रहे ऐसा करने से रस (पारा) सिद्ध होता है। इसको तांबे में आध रत्ती डालने से तांबे को वेधे, और यही १ रत्ती पर्वत को वेधने के लिये समर्थ है, इस रस में देह और सुवर्ण की सिद्ध होवे इसका खाने वाला पुरुष सौ स्त्रियों से भोग करे, इसकी तिल की बराबर मात्रा सर्व रोगों को नाश कर आयु को बढ़ावे ।

तथा तीसरी विधि

शुद्धं सूतंसमंसिंधुं
सोमलंचतदर्द्धकम् ।
सोमलार्द्धं विषंक्षिप्त्वा
हिंगुस्फटिकगैरिकम् ॥
सामुद्रलवणंचैव
सर्वतुल्यंविनिक्षिपेत् ।
कांजिकेनपुटंदद्या-
त्पुटित्वाचेन्द्रवारुणीम् ॥
स्थाल्यामुथपापनकृत्वा
अग्नियामाष्टकंददेत ।
स्वांगशीतसमुद्धृत्य
भस्मसूतोर्द्धपातनम् ॥
योजयेत्सर्वरोगेषु
कुर्याद्बहुतरंक्षुधाम् ।
पुष्टिंदंवर्द्धतेकामः
योजयेद्रक्तिकाद्वयम् ॥

शुद्ध पारा, सेंधानमक समभाग, संखिया अर्द्ध भाग, बच्छनागविष चतुर्थांश, हींग, फिटकरी, गेरू, सामुद्रनोन, इनको समान भाग लेकर कांजी का पुट देवे, पीछे इन्द्रायन का पुट देकर डमरू यन्त्र में रख, आठ प्रहर की आंच दे, स्वांग शीतल होने पर उपर की हांडी की जमी हुई पारे की भस्म को निकाल लेवे, और सर्व रोगों में योजना करे, यह भस्म क्षुधा पुष्टि और कामदेव को बढ़ावे, इसकी मात्रा दो रत्ती की है।

चौथी विधि

पचाग्निबर्वरालिंगी
द्रवेद्यस्तत्रयरसम् ।
मर्दित.पिष्टितोभस्म
स्वर्णवर्णंप्रजायते ॥

पारे को चित्रक के रस में और वनतुलसी तथा शिवलिंगी के रसों में तीन २ दिन खरल करे तथा इन्हीं रसो के पुट देने से पारे की सुवर्ण के समान भस्म होवे ।

पाँचवीं विधि

कोरंटकाम्बुसंयोगा-
दातपे मर्दयेद्रसम् ।
मृयतेसौततः सूतः
सर्वकर्माणिसाधयेत् ॥

पारे को पीयाबास के रस मे मर्दन कर धूप मे रखे तो पारा मरे और सर्व कार्य सिद्ध करे ।

छठी विधि

भुजगवल्लीनीरेण
मर्दयेत्पारदंदृढम ॥
कर्कटीकंदमूषायां
संपुटस्थ पुटेद्गजे ॥
भस्मतद्योगवाहीस्या-
त्सर्वकर्मसुयोजयेत् ॥

पारे को नागर बेल के रस में दो प्रहर खरल कर ककडी मे भर संपुट कर गजपुट में फूक देवे, तो पारे की योगवाही भस्म होवे इस को सर्व कर्मों मे मिलावे।

सातवीं विधि

काष्ठोदुम्बरिकादुग्धैः
रसंकिंचिद्विमर्दयेत् ।
तद्दुग्धैःभृष्टहिंगोश्च
मूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ॥
क्षिप्त्वातत्संपुटेसूतं
तत्रमुद्राप्रकल्पयेत् ।
धृत्वातद्गोलकंप्राज्ञो
मृन्मूषासंपुटेऽधिके ॥
पचेद्गजपुटेतेन
सूतको याति भस्मताम ।

पारे को कठूमर के रस में खरल करे कठूमर के रस से भुनी हुई हींग के दो मूषा बनाकर उनके बीच में रख उसके ऊपर मुद्रा कर उस गोले को चतुर वैद्य संपुट मे रख गजपुट मे पचावे, तो पारा भस्म होवे।

आठवीं विधि

वटक्षीरेणमूताभ्रौ-
मर्दयेत्प्रहरद्वयम् ।
पाचयेत्तेनकाष्ठेन
भस्मीभवतितद्रसः ॥

पारे और अभ्रक को दो प्रहर बड के दूध में खरल करे, पीछे कडाही मे चढा कर बड़ को लकड़ी से चलाता रहे तो पारा भस्म होवे।

नवम विधि

कटुतुम्ब्युद्भवेकन्दे
गर्भेनारीपयःप्लुत ।
सप्तधाम्रियतेसूतः
स्वेदितोगोमयाग्निना ॥

पारे को स्त्री के दूध मे खरल कर कडवी तूम्बी मे रख अग्नि देवे, इस प्रकार सात बार उपलों के संपुट मे पारा भस्म होवे।

दशम विधि

अपामार्गस्यबीजानि
तथैरडंचचूर्णयेत ।
तच्चूर्णं पारदंदेय
मूषायामधरोत्तरम् ।
रुध्वालघुपुटैः पश्चाच्च-
तुर्भिर्भस्मतांव्रजेत् ॥

औंगा और अरंडी, दोनो के बीजों को पीस कर चूर्ण करे, और एक मूषा बनाय उक्त चूर्ण को आधा नीचे की मूषा मे रख पारा रखे फिरे आधे चूर्ण को पारे के ऊपर रखकर दूसरे मूषा से बंद कर चार हलके पुट देने से पारे की भस्म होवे।

वज्रमूषाकरण

द्वौभागौतुपदग्धस्य
चैकावल्मीकमृत्तिका ।
लोहकिट्टस्यभागैकं
श्वेतपाषाणभागिकम् ॥
नरकेशंसमंपंच छागी-
क्षीरेणपेषयेत् ।
याममात्र दृढपश्चा-
त्तेनमूषाप्रकल्पयेत् ॥
शोषयित्वातुसंलिप्य
तत्कल्कैःसन्निरोधयेत् ।
वज्रमूषेयमाख्यातासम्यक्-
पारदसाधिका ॥

तूलेस की राख से दो भाग, वमई की मिट्टी १ भाग, लोहे को राख १ भाग, सफेद खड़िया का चूरा १ भाग, इनके बराबर मनुष्य के बाल कतरे इन पांचों को एक प्रहर बकरी के दूध में खरल करे फिर इसकी मूषा बनाकर धूप में सुखा लेवे दोनों मूषाओं के मुख मिलाय उसी उक्त कल्क से लेप देकर बंद कर देवे, तो यह पारद सिद्ध करने वाली वज्रमूषा बने ।

मदनमुद्रा

औदुम्बरार्कवटदुग्ध-
पलंपलंच लाक्षापलंपल
चतुष्टयचुम्बकस्य ।
संमर्द्य सम्यगलसीफल
तैलयोगाच्छ्रीपारदस्य
मरणमदनाख्यमुद्रा ॥

गूलर, आक, बड़ तीनों का दूध दो २ पैसा भर, पीपल की राख २ पैसा भर, चुम्बक पत्थर का चूर्ण ८ पैसा भर, इन सब को अलसी के तेल में घोटे तो यह मैनमुद्रा सिद्ध होवे इससे जो संध लेप करे तो वह लेप दृढ होवे, कितना ही गरम पानी हो परन्तु, यह मुद्रा नहीं चुए और इसी मुद्रा के प्रभाव से जल यन्त्र के द्वारा गधक का तेल निकलता है ।

मृतपारद के लक्षण

अतेजश्चागुरु शुभ्रोलोह-
हाचचलोरसः ।
यदानोवर्त्तयेन्द्वन्हौनोर्ध्व-
गच्छेत्तदामृतः ।

मरा पारा—तेज रहित, हलका, शुभ्र लोह के मारने वाला, अचचल और अग्नि में पलटे न उड़े उसको मृतपारद जानना ।

रस सेवा फल

बुद्धिस्मृतिप्रभाकान्तिवलश्च वरसस्तथा ।
वर्द्धतेसर्वएवैतेरससेवाविधौनृणान् ।

पारद भक्षण[1] से मनुष्य की बुद्धि, स्मृति, प्रभा, कान्ति, बल, और संपूर्ण बढ़ते हैं ।

पारद की मात्रा

वल्लमेकंनरेऽश्वेनुगद्याणैकंगजेद्वयम् ।
सर्वरोगविनाशार्थं भिषकमूतप्रयोजयेत् ।

मनुष्य को मूर्च्छित या मृत पारद की मात्रा दो रत्ती की है, घोड़े को एक गद्याणक (३२ रत्ती) हाथी को दो गद्याणक पारा सर्व रोग नाश करने के अर्थ वैद्य देवे ।

घनसत्वंकान्तकांचन
शंकरतीक्ष्णादि सत्व जीर्णस्य ।
सूतस्यगुंजवुध्यामाष-
कमात्रंपरामात्रा ।

जिस पारद में अभ्रकसत्व जारण हुआ हो उसकी १ रत्ती की मात्रा है, कान्त लोह जारित पारद की दो रत्ती, सुवर्णजारित की ३ रत्ती, चाँदी जारित की ४ रत्ती, तीक्ष्ण जारित की ५ रत्ती, मात्रा कही है, और बड़ी मात्रा १ मासे की है, जो मनुष्य एक पल तीक्ष्ण जारित पारद को भक्षण करे उसकी लक्षवर्ष की आयु होवे, इसी प्रकार सुवर्ण जारित पारद भक्षण से भी लक्षायु होवे ।

पारद भस्म गुणाः

यावन्नहरवीजंतु भक्षयेत्पारदमृतं ।
तावत्तस्यकुतोमुक्तिर्भोगाद्रोगाद्भवादपि ॥

जब तक यह मनुष्य शिव का बीज (पारद) मरा हुआ भक्षण नहीं करे तब तक क्या इसकी भोग रोग और संसार से मुक्ति होगी ? अर्थात् नहीं होगी ।

तथाच

मूर्च्छातोगदहृत्तथैवखगति
धत्ते विवद्धोर्थदः ।

---

१ प्रातरेव पुरुतो विरेचनं तद्दिनोपवसनं विधायच तत्परे हनिच पथ्यसेवन तत्परे हनिरसेन्द्र सेवनम् ।

स्याद्भस्मामयवार्धकादि-
हरणदृक्पुष्टिकांतिप्रद ।
वृष्यंमृत्युविनाशनवल-
करंकान्ताजनानददं ।
शार्दूलातुलसत्वकृच्चभुवि-
जान्रोगानुसारीस्फुटं ॥

मूर्च्छित पारा रोगी के रोग को दूर करे, तथा आकाश मार्ग में चलने वाला करे, वद्ध पारा धन दे, मृत पारा तरुणता, दृष्टि, पुष्टता और कान्ति को दे और वृष्य है, मृत्यु का नाशक, वलकर्त्ता, स्त्रियों को आनद दाता, सिंह के समान पराक्रम करने वाला, पृथ्वी के सब रोगो को दूर करने वाला है।

एकोदोषोहिसूद्मोस्ति
भक्षितोभरमसूतके ।
त्रिसप्ताहाद्वरारोहे-
कामान्धोजायतेनरः ॥
नारीसंगाद्विनादेवी
अजीर्णंतस्यजायते ।
मैथुनाच्चलितेशुक्रे-
जायतेप्राणसंशयम् ॥

श्री शिवजी कहते हैं कि, हे वरारोहे! इस पारद भक्षण मे एक वडा भारी दोष है कि प्राणी पारद का भक्षण करते हो २१ दिन में कामान्ध हो जाता है हे देवी ? विना स्त्री सग किये तो पारे का अजीर्ण होता है और यदि मैथुन करे तो वीर्य स्खलित होते ही इस प्राणी के प्राण वचने का संशय हो जाता है।

जीर्ण शमनोपाय

युवत्याजलपनंकार्यं
तावतन्मैथुनंत्यजेत् ।
लघुतांशेफसोज्ञात्वा
पश्चाद्गच्छन्सुखीभवेत् ।

अतएव जब तक पारद जीर्ण न हो तब तक स्त्रियों से वार्त्तालाप करता रहे तथा उनके अंग स्पर्शादिक करता रहे पारद भक्षणके पूर्व लिग लघु होता है और पश्चात दीर्घ हो जाता है अत एव पारद जीर्ण होने के पश्चात जो स्त्री सग करता है वो सुखी होता है।

पारद भस्म के अनुपात

पिप्पलीमरिचैःशुंठी-
भार्गीमधुनासह ।
कामश्वासप्रशमनो-
शूलस्यचविनाशनः ॥
हरिद्राशर्करासार्द्धं-
रुधिरस्यविकारनुत ।
भृंगपर्णत्रिफलावासा-
कामलापाण्डुरोगजित् ॥
शिलाजतुतथैलाच
शितोपलसमन्वित. ।
मूत्रकृच्छ्रेप्रशस्तोय
सत्यनागार्ज्जुनोदितं ॥
लवंगंकुसुमपत्री
हिंगुलअकलंकरा ।
पिप्पलीविजयाचैव-
समान्येतानिकारयेत् ॥
कर्पूरादहिफेनानि
नागाद्भागार्द्धकंक्षिपेत् ।
सर्वमेकत्रसंमर्द्य
धातुवृद्धौप्रदापयेत् ॥
सौवर्चललवंगंच
भूनिंबंचहरीतकी ।
अस्यानुपानयोगेन
सर्वज्वरविनाशन. ॥
तथारेचकरःप्रोक्तः
सौवर्चलफलत्रिकम् ।
लवंगं कुसुमचैव
दरदेनचसंयुतं ।
तांवूलेनसमंभक्ष्यं-
धातु वृद्धिकरंपरं ।

विदारीचूर्णयोगेन
धातुवृद्धिकरोमतः ॥
विजयादीप्यसंयुक्तो
वमनस्यविकारनुत् ।
सौवर्चलंहरिद्राच
विजयादीप्यकंतथा ॥
अनेनोदरपीडांच
सद्योत्पन्नाविनाशयेत् ।
चतुर्वल्लीपलाशस्य
बीजंचद्विगुणंगुडः ।
अस्यानुपानयोगेन
कृमिदोषविनाशनः ।
अहिफेनलवगंच
दरदंविजयातथा ।
अस्यानुपानतःसद्यः
सर्वातीसारनाशनः ।
सौवर्चलेनदीप्येन
अग्निमांद्यहरंपरः ।
क्षुद्बोधजनकश्चैव
सिद्धनागेश्वरोदितम् ।
गुडुचीसत्वयोगेन
सर्वपुष्टिकरःस्मृतः ।

पारे की भस्म पीपल, मरिच, सोंठ, भारगी इनका चूर्ण और सहत के संग खाने से खासी, श्वास और शूल रोग को नाश करे। हल्दी और खाड के साथ रुधिर विकार को। त्रिफला, त्रिकुटा और अडूसे के संग कामेच्छा और पाडु रोग को। शिलाजीत, इलायची और खाड के साथ मूत्रकृच्छ्र को। लोग, केशर, तालीसपत्र, हिंगुल, अकरकरा, पीपल, समान ले तथा कपूर, अफीम, आधा भाग ले, नागेश्वर १ भाग इनके चूर्ण के साथ धातुवृद्धि करे। सेंधानोन, लोंग, चिरायता, हरड इनके चूर्ण के साथ सर्वज्वरो को दूर करे। सेंधानोन, त्रिफला, लोग, केशर और शिंगरफ के साथ खाने से दस्तावर जानना। पारे के साथ धातु को बढ़ावे। तथा विदारी चूर्ण के साथ खाने से भी धातु को बढावे। भांग और अजवायन के साथ वमन को दूर करे। सैंधा नमक, हल्दी, भांग, अजवायन इनकेसाथ खाने से उदर पीडा दूर करे। चतुर्वल्ली, पलास के बीज इनसे दूना गुड़ मिलाकर खाय तो कृमिरोग दूर हो। अफीम, लोग, शिगरफ, भांग इनके साथ खाने से अतीसार को दूर करे। सेंधा-नोन अजवायन के साथ मन्दाग्नि दूर हो, और क्षुधा बढ़े। गिलोयसत्व के संयोग के खाने से पुष्टि करे।

तथा च

पित्तेशर्करयामलेनसहसा
वातेचकृष्णासमं ।
दद्यात्श्लेष्मणिशृंगवेरसहितं
जंबीरनीरेज्वरं ॥
रक्तोत्थेमधुनाप्रवाहरुधिरे
स्यान्मेघनादोदके ।
दद्याच्चाथकृतातिसारविकृतौ
रोगारिसंज्ञोरसं ॥

पारे की भस्म पित्तरोग मे खाड और आमले के चूर्णयुक्त दे, बादी मे पीपल के साथ, कफ रोग मे अदरक के साथ, ज्वर मे नींबू के रस मे रुधिरविकारो मे सहत के संग। रुधिरस्राव, प्रवाहिका, अतीसार, इनमे चौलाई के रस मे पारे की भस्म देनी चाहिये।

पारद भक्षण काल

प्रभातेभक्षयेत्सूत
पथ्ययामद्वयाधिके।
नोल्लंघयेत्त्रियामंतु
मध्यान्हेनैवभोजयेत् ।
ताम्बूलान्तर्गतेसूते
विड्बन्धोनैवजायते ॥
सकणाममृतभुक्त्वा
मलबन्धंहरेन्निशि ।

पारे की भस्म तथा चन्द्रोदय अथवा रस कपूर इनको प्रातःकाल भक्षण करे, और दो प्रहर पीछे पथ्य ले, परन्तु तीन प्रहर न बीतने पावें, इस पारद भस्म को पान के साथ खाने से मलबन्ध नहीं हो, अथवा विष और पीपल के संग रात्रि में खाय तो मलबन्ध न होवे।

पारदेपथ्यानि

हितंमुद्गान्नदुग्धाज
शाल्यन्नानिपुरातनः।
शाकेपुनर्नवादेवि
मेघनादंचवास्तुक ॥
सैंधवनागरमुस्ता
मूलकानिचभक्षयेत्।
कुंकुमागुरुलेपंच
तथाकर्पूरभक्षणम् ॥
गोधूमजीर्णशाल्यन्न
गव्यंक्षीरंघृतंदधि।
हंसोदकंमुद्गयूषो
रसेन्द्रेचहितंविदुः ॥
अभ्यंगगालितंक्षौमै-
स्तैलैर्नारायणादिभिः।
अवलाशीततोयंच
मस्तकोपरिषेचयेत् ॥
तृष्णायांनारिकेलाम्बु
मुद्गयूषंसशर्करम्।
द्राक्षादाडिमखर्जूरं
कदलीनांफलंभजेत् ॥

मुद्गान्न, बकरी का दूध; चावल, और शाक (साठ, चौलाई, बथुआ,) सेंधानोन, सोंठ, मोथा, मूली, केशर, और अगर का लेप, कपूर भक्षण, गेहूँ, पुराने चावल, घी, दूध, दही मक्खन, हंसोदक[1] मूंग का यूप, उबटना, सुगधमाला, शालदुशाला, नारायणादि तैल, सुंदर स्त्री, मस्तक को शीतल पानी से सींचना प्यास लगने पर खांड मिलाकर नारियल का पानी या मूंग का यूप, विलायती दाख, अनार, छुहारे, केला की गहर, ये चीजें पारद भक्षण करनेवाले को हितकारी हैं।

पारद भक्षणमें वर्ज्य पदार्थ

अतियानंचासनंच
अतिनिद्रातिजागरं।
स्त्रीणामतिप्रसंगंच
ध्यानंचापिविवर्जयेत् ॥
अतिहर्षंचातिकोपं
चातिदुःखमतिस्पृहं ॥
शुष्कवादंजलक्रीडा
मतिचिंताविवर्जयेत।
कुष्माडंकर्कटीचैव
कारवेल्लंकलिंगकम् ॥
कुसुंभिकाचकर्कोटी
कदलीकाकमाचिका।
ककाराष्टकमेतद्धि
वर्जयेद्रसभक्षकः ॥
कुलत्थानतसीतैलं
तिलान्माषान्मसूरकान्।
कपोतान्कांजिकचैव
तक्रभक्तंचवर्जयेत् ॥
कट्वम्लतीक्ष्णलवणं
पित्तलंपीतकंचयत्।
वदरंनारिकेलच
सहकारंसुवर्चलम् ॥
वार्त्ताकराजिकाचैव
वातलानिविवर्जयेत्।
निंदास्त्रीदेवतानांच
पापाचरणवैत्यजेत् ॥

डोलना, भोजन, निद्रा, जागना, स्त्रियों से रमण, स्त्रियों का स्मरण, हर्ष, क्रोध, इच्छा,

---

१ तप्ततप्तांशु किरणैःशीतंशीतांशुरश्मिभिः। समंतादप्यहोरात्रमगस्त्योदयनिर्विषं। शुचिहंसोदक नाम निर्मल मलजिज्जलं। नाभिष्यन्दि नवारूक्षं पानादिष्वमृतोपमम् ॥

इनको अत्यन्त न करे, थोथा झगड़ा, जलक्रीड़ा अत्यन्त चिन्ता। पेठा, ककड़ी, करेला, तरबूज, कुसुंभ, ककोटी, कदली, (केला) काकमाची, (मकोय) यह ककाराष्टक है, कुलथी, अलसी का तेल, तेल, उड़द, मसूर, कबूतर का मांस, कांजी, दहीभात, कड़वी, खट्टी, तीखी, नोन की वस्तु, पित्तकारक, पीले पदार्थ, बेर, नारियल, आम, हुरहुर, बैंगन, राई, और वातकारक वस्तु स्त्री, और, देवताओं की निंदा, तथा पाप करना, इन बातों को पारे का भक्षण कर्त्ता मनुष्य त्याग दे।

जीर्णरसके होने से उत्पन्न रोग

एवचैवमहान्व्याधी
रसेजीर्णेतुभक्षयेत्।
कर्पैकस्वर्जिकाक्षारं
कारवल्लिरसेप्लुतं॥
सौवर्चलसमोपेतं
रसेजीर्णेपिवेद्बुधः।

रस जीर्ण होने पर महान् रोग उत्पन्न होते हैं। उनके दूर करने के अर्थ सज्जीखार, करेले के रस को हुरहुर के रससंयुक्त भक्षण करे।

रसपाक के लक्षण

अनुलोमगतिर्वायु
स्वस्थतासुमनस्कता॥
क्षुत्तृष्णेन्द्रियवैमल्यं
रसपाकस्यलक्षणम्॥

अच्छे प्रकार पवन चलना, चित्त में स्वस्थता मनप्रसन्न, क्षुधा, तृषा का यथार्थ लगना, सब इन्द्रिया अपने-अपने कर्मों मे प्रवृत होये रस-पाक अर्थात् पारे के पचने के लक्षण हैं।

अशुद्धपारद भक्षणके दोष

संस्कारहीन'खलुसूतराजो
यः सेवतेतस्यकरोतिबाधां।
देहस्यनाशोविदधातिनूनं
कुष्ठादिरोगाञ्जनयेन्नराणाम्॥

जो अशुद्ध पारद का सेवन करते हैं, उनके अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, और मरण तथा कोढ आदि अनेक व्याधि प्रगट होवें।

विकारायदिजायते-
पारदान्मलसंयुतात्।
गंधकंसेवयेद्धीमान्-
पाचितंविधिपूर्वकम्॥

अशुद्ध पारा खाने से यदि विकार उत्पन्न होवे तो विधिपूर्वक शुद्ध की हुई गंधक पान के साथ दो महीने तक सेवन करे। अथवा दाख, पेठे के टुकड़े, तुलसी, सौंफ, लोंग, तज, नाग-केशर, इनके बराबर गंधक मिलाकर इसका दो प्रहर तक मर्दन कराकर शीतल जल से स्नान करे, इस प्रकार तीन दिन करने से पारद का विकार शान्ति हो, अथवा करेले की जड़ उबाल कर पीवे, या नागरबेल, भांगरा, तुलसी इनका रस और बकरी का दूध प्रत्येक सेर २ भर लेकर सब को मिला दो प्रहर सर्व देह मे मालिश करे पश्चात् शीतल जल से स्नान करे, ऐसा तीन दिन करने से पारे का अवगुण दूर होवे।

रसकपूर के अवगुण

सेवितोऽविधिनाकुष्ठं-
संधिवातंकफाधिकं।
रसकपूरकंकुर्यात्तस्मा-
द्यत्नेनसेवयेत्॥

जो विधि हीन रसकपूर सेवन करे तो कुष्ठ संधिशोथ, कफ और वात को प्रगट करे, इसलिए यत्न पूर्वक सेवन करना उचित है।

अथास्य शांति

महिषीशकृतोनीरं-
धान्यकंवाशितायुत।
पिवेन्नीरेणमुक्तस्या-
द्रसकपूरजैर्गदैः॥

भैंस के गोबर का पानी, अथवा धनियां और

खांड पानी मे पिये तो रसकपूर का विकार शान्ति होवे।

रस० अवगुण तथा विकार शान्ति

रससिंदूरमशुद्धाद्र-
साद्धिजातपारदवद्रोगान ।
कुर्य्याद्धे त्तच्छांत्यै
घृतमरिचरज.पिवेत्सप्तदिनं ।

अशुद्ध पारे से जो रससिंदूर रसकपूर अथवा चन्द्रोदय बना है वह पारे की तरह विकार करता है, उसकी शान्ति के निमित्त कालीमिरच घृत मिलाकर सात दिन पीवे।

इति श्री माथुरदत्तरामनिर्मित बृहद्रसराजसुन्दरे पारदप्रकरणम् समाप्तम्

अथ गधक प्रकरणम्

तहॉ प्रथम गंधक की उत्पत्ति लिखते हैं

पहिले समुद्र के समीप सर्व रत्न विभूषित श्वेतद्वीप में सखियों के संग क्रीडा करने वाली श्री पार्वतीजी के रजोदर्शन हुआ, कि जिससे सब वस्त्र लाल रग के हो गये, तब उनको त्याग दूसरे नवीन वस्त्रो को धारण कर, और सग की सखियो के साथ कैलाश मे आकर प्राप्त हुई, जिन वस्त्रो को समुद्र के किनारे त्याग किये थे वे लहरो के द्वारा समुद्र के बीच मे पहुंच गये, ऐसे श्री पार्वती जी के रजोदर्शन का रुधिर क्षीर सागर मे प्रवेश हुआ, फिर वहीरज जब देव और दैत्यों ने समुद्र मथन किया तब अमृत के साथ गधक रूप से प्रगट हुआ, और अपनी गध के प्रभाव से सब देव-दानवो को प्रसन्न किया तब देवताओ ने कहा कि यह गधक पारे के बधन और जारण निमित्त प्रगटी है जो गुण पारे मे हैं, वही इसमे हैं ऐसे देवताओं के कहने से यह गंधक नाम से पृथ्वी मे विख्यात हुई।

गंधक के नाम

गंधकोगंधपाषाण:
शुकपुच्छ:सुगंधक: ।
सौगंधिक.शुल्वरिपु:
पामारिर्नवनीतक: ॥

गधक, गधपाषाण, शुकपुच्छ, सुगन्धक, सौगन्धिक, शुल्वरिपु, पामारि, और नवनीतक, ये गंधक के संस्कृत नाम हैं।

शोधित के गुण

शुद्धोगंधोहरेद्रोगान्कुष्ठ-
मृत्युज्वरादिकान ।
अग्निकारीमहानुष्णो-
वीर्य्यवृद्धिकरोतिहि ॥

शुद्ध गंधक-कुष्ठ, मृत्यु, ज्वरादि रोगो को हरण करती है, जठराग्नि को बढावे, अत्यन्त गरम है, और वीर्यवृद्धि को करे।

गुणान्तर

गंधश्चातिरसायन:
सुमधुर' पाकेकटूष्णान्वित: ।
कण्डूकुष्ठविसर्पदद्रुदलन:
दीप्तानल: पाचन: ॥
आमोन्मन्मथशोधनो-
विषहर' सूतेद्रवीर्यप्रद: ।
गौरीपुष्पभवस्तथा-
कृमिहर:स्वर्णाधिकवीर्यकृत ।

गधक अत्यन्त रसायन है, मधुर है, पाक में कटु और गरम है, खुजली, कुष्ठ और विसर्प को दूर करे, अग्नि को करे, दीप्त और पाचन है, आम को मथनकर शोधन करे, विष को हरे, पारे के वीर्य को बढ़ावे, और कृमिरोग को हरण करे तथा सुवर्ण से अधिक गुण करे है ।

सचापित्रिविधोदेवि-
शुकचंचुनिभोवरः ।
मध्यमःपीतवर्णःस्याच्छु-
क्लवर्णोऽधम प्रिये ॥

वह गधक तीन प्रकार का है, तोता की चोंच के समान लाल उत्तम, पीली मध्यम, और सफेद गन्धक अधम है ।

अथान्तरे गंधक लक्षणम्

चतुर्धागंधकोज्ञेयोवर्णैः-
श्वेतादिभिखलु ।
श्वेतोऽत्रखटिकाप्रोक्तो-
लेपनेलोहमारणे ॥
तथाचामलसारःस्याद्यो-
भवेत्पीतवर्णवान् ।
शुकपिच्छ सएवस्या-
च्छ्रेष्ठोरसरमायने ॥
रक्तश्चशुकतुण्डाख्यो-
धातुवादेविधौवरः ।
दुर्ल्लभःकृष्णवर्णश्च-
सजरामृत्युनाशनः ॥

श्वेत आदि वर्णों से गंधक चार प्रकार की है, श्वेत जिसे खडिया कहते हैं—वह घरो के पोतने तथा लोह मारण मे लेनी उचित है, और पीले रग वाली को आमलासार जानना, वही तोते के पाख के तथा हरे रग की होती है उसे रस और रसायन में लेनी योग्य है, और तोते की चोंच के समान लाल को धातुवाद की विधि में लेना चाहिये । और जरा, मृत्यु को दूर करने वाली काले रंग की गधक दुर्ल्लभ है ।

तथाच

गधकंद्विविधंप्रोक्त-
लोणीयचाम्लसारकं ।
योग्यचैवाम्लसारं-
हिरसमार्गेगुणात्मकम् ॥

गंधक दो प्रकार की है, एक लोणियां, दूसरा आमलासार तिस में आमलासार पारे के कर्म करने में प्रशस्त कही है ।

गंधक शोधन विधि

पयःस्विन्नोघटीमात्रं-
वारिधौतोहिगंधकः ।
गव्याज्यविद्रुतोवस्त्र-
गालितःशुद्धिमिच्छति ।
एवसंशोधितःसोयं-
पाषाणानंवरेत्यजेत् ।
घृतेविषंतुपाकारं-
स्वयंपिंडत्वमेवच ॥
इतिशुद्धोहिगधस्तु
नापथ्येविकृतिंव्रजेत् ।

एक हांडी मे सेर भर दूध भर एक वस्त्र से उसका मुंह बांध दे, और आमलासार गन्धक १६ तोले को पीस कर घी में गलावे, जब गल जाय तब वस्त्र पर डाल दे तो गन्धक उस कपडे में से टपक कर दूध मे जम जायगी और ककड़ वगैरह कपडे मे रह जायँगे और गन्धक का विष घी में रह जायगा पीछे उस गन्धक को निकाल पानी से धो सुखा कर रख छोडे, ऐसे शुद्ध की हुई गंधक अपथ्य से भी विगाड नहीं करे ।

तथा दूसरा प्रकार

गंधको द्राविते भृङ्ग-
रसेक्षिप्तोविशुद्धयति ।
तद्रसेसप्तधाभिन्नो-
गधकःपरिशुध्यति ॥
अथवाकांजिकेतद्वत्
शुध्यतेपूर्ववत्पुटात् ।

गधक को घी मे गलाकर सातबार पूर्वोक्त प्रकार भांगरे के रस मे डालने से शुद्ध होता है, अथवा एक पात्र मे कांजी भर उसका मुंह कपडे से बांध उस कपडे पर घी के समान गंधक के

छोटे २ टुकड़े करके बिछा देवे, उसके ऊपर लोहे का तवा रख सूत्र आंच जलावे तवे के गरम होने से गंधक पिघलकर कांजी में गिर जाय तव निकालकर पानी से धो रख छोड़े और वक्त पर काम में लावे।

शुद्धगंधकसैं तैलाकृष्टि

अर्कक्षीरैस्नुहीक्षीरैर्वस्त्रं-
लेप्यंतुसप्तधा ।
गधकंनवनीतेनपिष्ट्वा-
वस्त्रंविलेपयेत् ।
तद्वर्त्तिज्वलितांदण्डे-
धृताकार्यात्वधोमुखीं ॥
तैलंपतेदधोभांडे
ग्राह्यंयोगेपुयोजयेत् ।

गज भर कपड़े को सातवार आक के दूध में भिगो २ कर सुखावे इसी प्रकार सातवार थूहर के दूध मे भिगो भिगो कर सुखावे, पीछे इतनी शोधी हुई गधक ले कि जिस का उस कपड़े पर लेप हो जाय, उस गधक को मक्खन में खरलकर जौ के प्रमाण उस कपडे पर लेपकर वत्ती वनाय लोहे के चीमटे से पकड़ एक सिरे से जलावे और जिधर से जलावे उधर से नीचे को लटकादे और उसके नीचे एक पात्र रखे उसमें जो वत्ती से टपक कर तेल गिरे उसको ४ रत्ती पान के साथ खाने से देह पुष्ट हो श्वास, कास, और बन्ध कोष्ट को दूर करे।

तथा दूसरी विधि

आदित्यास्तेचपयसि
दद्यादूगंधकजरजः ।
तज्जातदधिजंसर्पि
र्गंधतैलंनियच्छति ॥
गंधतैलंगलत्कुष्टं-
हंतिलेपाच्चभक्षणात् ।

गन्धक का चूर्ण संध्या को दूध मे डाल दही जमा देवे, जव जम जाय तव मथकर मक्खन निकाल घृत करे इसी को गन्धक तैल कहते हैं इसके खाने से और लगाने से गलितकुष्ट दूर होवे।

गंधक की दुर्गंध हरण

विचूर्ण्यगन्धकक्षीरे
घनीभावावधिपचेत् ।
ततःभृङ्ग्यावर्तरसं
पुनर्दत्वापचेच्छनैः ॥
पश्चात्प्रपातयेत्प्राज्ञो-
जलेत्रिफलसंभवे ।
जहातिगधकोगधं
निर्जनास्तीहसंशयः ॥

गन्धक का चूर्ण दूध मे जव तक पचावे तव तक गाढ़ा हो, तदनन्तर काले भांगरे के रस में मंदाग्नि से पचावे इसके वाद त्रिफला के काढे में पतली कर औटावे तो गन्धक की दुर्गंधि निस्संदेह जाती रहे।

गन्धक का अनुपान

इत्थंविशुद्धस्त्रिफलाज्य-
भृङ्गमध्वान्वितः शाण
मितोवलीढः ।
गृध्राक्षितुल्यकुरुतेक्षियुग्मं
करोतिरोगोज्झितदीर्घमायुः ॥
शुद्धंगधनिष्कमात्रंसदुग्धे-
सेव्यंमासंशौर्यवीर्यप्रवृद्धौ ।
पण्मासात्स्यात्सर्वरोग-
प्रणाशोदिव्यांदृष्टि
दीर्घमायुःस्वरूपम् ॥

चार मासे शुद्ध गन्धक, त्रिफला, घृत, भांगरे का रस, इनके साथ खाने से गीध की-सी दूर दृष्टिहोवे, रोग रहित दीर्घायु हो, तथा निष्कमात्र गन्धक दूध के साथ एक महीना पर्यन्त खाने से शूरपना और वीर्य की वृद्धि होवे, इस प्रकार छः महीना खाने से सव रोग दूर होवें,

और दिव्य दृष्टि तथा आयुष्य की बढवारहो।

मोचाफलेनत्वग्दोषं-
चित्रकेनमहाबलं ।
आढरूपकषायेनक्षय-
कासान्जयेद्भृशं ॥
मंदानलत्वंजयति-
त्रिफलाक्काथसयुतः ।
ऊर्ध्वगान्सकलान्रोगान्-
हन्तिशीघ्रं सुगन्धकः ।

गन्धक मोचाफल के संग खाने से त्वचा के दोषों को दूर करे, त्रिफला के साथ बलदायक, अडूसे के काढे के साथ खांसी और स्वास को दूर करे, त्रिफला के काढे के साथ मंदाग्नि का नाश करे और देह के ऊर्ध्व भाग के रोगो का नाश करे।

गंधक कल्क

चूर्णीकृत्यपलानिपच-
नितरांगंधाश्मनोयत्न
तस्तच्चूर्णं त्रिगुणं तु-
मार्कवरसेछायाविशुष्कंकृतं
पश्चाच्चूर्णमथाभयामधु-
घृतंप्रत्येकमेषांपलं ॥
वृद्धोयौवनमेतिमासयुगलं-
खादन्नरःप्रत्यहं ।
योगंधाश्मविचूर्णितं-
पिवतियस्तैलेनकर्षोमितं
अभ्यन्सोष्णजलाव-
शेचनरतःकालेयथाप्रत्यहं ।
सप्ताहात्त्रितयान्नि-
हतिसव्रणपामादिसर्वारुजो ।
नित्याभ्यासवशाद्विनष्ट-
सकलःक्लेशोपतापःपुमान् ॥

पांचपल गधक को भांगरे के रस मे पीस छाया में सुखावे, पीछे छोटी हरड मिलाकर दो २ तोले शहद और घृत के साथ नित्य दो महीने पर्यंत खावे तो बुड्ढा भी जवान हो जावे और तेल के साथ दशमाशे नित्य खावे और गरम जल से स्नान करे तो सात अथवा तीन दिन मे खाज आदि सब रोग दूर होवें, और नित्य सेवन करे तो सपूर्ण क्लेश, उपताप का नाश होवे।

दूसरा प्रकार

योवाप्युग्रमतिःसुचूर्णित-
मिदंगंधाश्मकृष्णासमं ।
पथ्यातुल्यमपिप्रपूजित-
गुरुभूतेशपूजारतः ॥
आहारादिपुयंत्रणादि-
रहितःस्यात्पुष्टिवीर्याधिकः ।
प्रोत्फुल्लाम्बुजनेत्रयुग्म
विलसच्चामीकराभासुरः ॥

गंधक चूर्ण पीपल और समान भाग हरडो में मिलाकर खाने से क्षुधा, पुष्टि, और वीर्य को बढावे, और नेत्र तथा देह की कान्ति दिव्य होवे।

गंधक रसायन

शुद्धोवलिर्गोपयसावि
भाव्यततश्चतुर्जातगुडूचिकाभिः ।
पथ्याक्षधात्र्यौषधभृङ्ग-
राजैर्भाव्योष्टवारंपृथगार्द्रकेण ॥
सिद्धे सितांयोजयतुल्य-
भागांरसायनंगंधक
सञ्ज्ञितंस्यात् ।
धातुक्षयंमेहगणाग्नि-
मांद्यं शूलंतथाकोष्ठ
गतांश्चरोगान् ॥
कुष्ठान्यथाष्टादशरोग-
संख्यान्निवार
यत्येवचराजयोग्य ॥

कर्षोन्मितंसेवितमेति
मर्त्योवीर्यंचपुष्टिं
बलवान्प्रदीप्तं ।
वमनरेचनंपूर्वंशुद्धं-
चैवसमाहरेत् ॥
जांगलानितुमांसानि-
छागलानिप्रयोजयेत् ॥

शुद्ध गंधक को गोदुग्ध, चातुर्जात, गिलोय, हरड, बहेडा, और आंवला सोठ, भागरा इन प्रत्येक की आठ २ भावना देवे, और आठ ही भावना अदरक के रस की देवे, पीछे गंधक के समान चीनी मिलावे, यह गंधक रसायन है, इस की तोले भर से कम मात्रा देनी चाहिये यह धातुक्षय, संपूर्ण प्रमेह, अग्निमांद्य, शूल, उदर-विकार, सर्व कुष्ठो को नाश करे, तथा बल, वीर्य और पुष्टि को देवे, इसका खाने वाला पुरुष प्रथम वमन विरेचन से देह को शुद्ध करले और पथ्य में जंगली जीवों का मांस तथा बकरा का मांस खावे ।

गंधकद्रुति

कलांशंव्योपसंयुक्तं
शुद्धगंधंविमर्दयेत् ।
अरत्निमात्रेवस्त्रे-
तद्विप्रकीर्यविवर्जयेत् ॥
सूत्रेणवेष्टयित्वाच
यामंतैलेनिमज्जयेत् ।
धृत्वासंदशतोवर्तिमध्ये
प्रज्ज्वालयेच्चतां ॥
द्रुतोनिपतितोगंधो-
निर्दोषःकाचभाजने ।
तांद्रुतिंप्रक्षिपेत्पात्रे
नागवल्यास्त्रिबिंदुकान् ॥
वलेनप्रमितशुद्धं-
सूतेन्द्रंचविमर्दयेत् ।
कासश्वासचशूलानि-
गृह्णीयादपिदुर्धरं ॥
आमंविशोषयत्याशु-
लघुत्वंप्रकरोतिचं[1] ।

गधक का सोलहवां भाग त्रिकुटा मिलाकर खरल करे, पश्चात् सवा हाथ के कपडे के टुकडे पर इसको फैलाकर वत्ती बनावे और डोरे मे लपेट कर पहर भर तिलके तेल में भिगोवे पीछे एक तरफ से चिमूटा से पकड दूसरी तरफ से जलावे और वत्ती के नीचे काच का कटोरा रख दे उसमें जो तेल टप के उस गंधक की द्रुति में उसी के समान पारा घोट के कजली करे इसके खाने से खांसी, श्वास, शूल ये असाध्य भी दूर होवें, तथा कुष्ठ आम के रोग नाश होवें तथा देह को हलका करे ।

गंधक लेप

शंपाकमूलस्वरसैः-
संघृष्टोगंधकोत्तमः ।
लिप्तोदेहेध्रुवखर्जु-
कुष्ठपामादिमर्दनः ॥

गंधक को अमलतास के रस में घोटकर देह में मालिश करे तो कोढ, खाज और पामा को दूर करे ।

[1] वातारि तैल संयुक्त त्रिफला गुग्गुलेनतु । गंधकं रससंयुक्त जराव्याधिविनाशनम् ॥ मास-मात्र प्रयोगेण शृणुवक्ष्यामि तद्गुणान् । अर्शो भगदरश्चैव तथा श्लेष्मा समुद्भवाः ॥ नश्यति व्याधय सर्वा मासेनैकेन गंधकात् । षण्मासस्य प्रयोगेण देवतुल्यो भवेन्नर ॥ हंसवर्णाश्चयेकेशा वलिश्चैव प्रलंबिनी । चला दंता मददृष्टिः बल-शुक्रादि संक्षय ॥ निर्जित्य यौवनयाति भ्रमरा इव-मूर्द्धजा । दिव्यदृष्टिर्महाप्राणो वराहइववर्णयो ॥ चक्षुपातादयं तुल्यौ ऽसौवलेनवलविक्रमः । दृढदंतो वृद्धकायो द्वितीय इवशंकर ॥ तस्यमूत्रपुरीषेण शुल्वभवति काचनं । इति अधिकपाठ. ॥

गंधककी धातुवेधक कजली

पीतेचगंधकेसूतं
रक्तचित्ररसैंध्रुवम् ।
वज्रीक्षीरेणसंपिष्टंवं-
गस्तंभकरंपरम् ॥

पीला गंधक और पारे की कजली लाल चित्रक तथा थूहर के दूध में घोटने से यह बंग को स्तभंन करे अर्थात् चाँदी करदे ।

गंधकेनहतंशुल्वं-
दरदेनसमंकुरु ।
मातुलुंगरसेपिष्ट्वा-
त्रिपुटान्मृयतेफणी ॥
सिंदूराभभवेन्नागंताम्रं-
भवतिकांचनम् ।

गन्धक से तांबा मारे, उस तांबे की बराबर हिंगुल मिलाय बिजौरे के रस में खरल करे, पीछे सीसे के पत्रों पर लेप कर पुट देवे इस प्रकार तीन पुट देने से सिंदूर के समान भस्म होवे इस को तांबे में डाले तो सुवर्ण होवे ।

अशुद्ध गन्धक दोष

अशुद्धगंधंकुरुतेचकुष्ठं-
तापभ्रमंपित्तरुजांतथैव ।
रूपंसुखंवीर्यबलंनिहन्ति
तस्माद्विशुद्धोविनियोजनीयः ॥

अशुद्ध गन्धक कोढ़, ज्वर, भ्रम, पित्त के रोग और रूप तथा सुख, वीर्य, बल, इनका नाश करे इसलिये औषधियों में शुद्ध गन्धक डाले अशुद्ध कभी न डाले ।

गन्धक भक्षण में त्याज्य वस्तु

लवणाम्लानिशाकानि
द्विदलानितथैवच ।
स्त्रियश्चारोहणंपानं
पदाचैतानिवर्जयेत् ॥

गंधक खाने वाला मनुष्य नमकीन, पदार्थ खट्टे पदार्थ और साग, दोदलका अन्न, अरहर आदि, स्त्रीगमन, घोड़ा आदिकी सवारी, पैरों से चलना, और पित्तकारक वस्तुओं को त्याग दे ।

गंधक विकार की शांति

विकारोयदिजायेत-
गंधकाच्चेत्तदापिबेत् ।
गोघृतेनान्वितंक्षीरं-
सुखीस्यात्सचमानुषः ॥

जो गंधक खाने से विकार होवे तो गौ का घृत मिलाकर दूध पीवे तो मनुष्य सुखी होवे[1] ।

इति श्री बृहद्रसराजसुन्दरे गंधकप्रकरणम्

अष्टलोहों के नाम तथा सप्तधातु

सुवर्णंरजतंताम्रं-
त्रपुशीशकमायसं ।
षडैतानिचलोहानि-
कृत्रिमौकांस्यपित्तलौ ॥

सोना, चांदी, तांबा, लोहा, रांगा सीसा ये छः लोहे श्रेष्ठ हैं और काँसा पीतल ये दो कृत्रिम अर्थात् बने हुए लोहे हैं, पित्तल के बिना पूर्वोक्त सात धातु कहलाती हैं ।

१—गंधकं तुल्यमरिचं षड्गुणस्त्रिफलान्वितः । शम्याक मूलजरसैर्मर्दितोऽखिलरोगहा । द्विनिष्क प्रमितोगंधः पीततैलेनशोधित । पश्चान्मरिच तैलाभ्यामपामार्गजलेनच । पेषयित्वाबलि सर्वदेहेलिप्तः प्रयत्नतः घर्मेतिष्ठेत्ततोरोगीमध्यान्हे तक्रभक्तकम् । भुंजीत- रात्रौसेवेत वन्हिं प्रात समुत्थितःमहिषीछगणैर्देह संलिप्यस्नानमाचरेत् । शीतोदकेन पामादि खर्जूकुष्ठ प्रशाम्यति ।

सुवर्ण की उत्पत्ति

पुरानिजाश्रमस्थानां-
सप्तर्षीणांजितात्मनाम् ।
पत्नीविलोक्यलावण्य-
लक्ष्मींसंपन्नयौवना ॥
कंदर्पदर्पविध्वस्त-
चेतसोजातवेदसः ।
पतितयद्धरापृष्ठेरेत-
स्तद्धेमतामगात् ॥

पहले अपने आश्रम मे स्थित जितात्मा सप्त ऋषियो की परमोत्तम पत्नी के यौवन सम्पत्ति को देख अग्निदेव काम पीड़ित हो वीर्य को त्यागता हुआ, यही वीर्य सुवर्ण के नाम से विख्यात हुआ।

सुवर्ण के नाम

स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक तपनीय, गांगेय, कलधौत, कांचन, चामीकर, शतकुम्भ, कार्त्तस्वर, जाम्बूनद, जातरूप, महारजत, ये सुवर्ण के संस्कृत नाम हैं।

सुवर्ण के भेद

प्राकृतंसहजंवन्हे-
सभूतखनिसंभवम् ।
रसेन्द्रवेधसजातं-
स्वर्णंपचविधंस्मृत ॥

प्राकृत १ सहज २ वन्हिसभूत ३ खानेसे प्रगट ४ पारेके वेध से उत्पन्न ५ ऐसे सुवर्ण ५ प्रकारका है। अब कहते हैं कि रजोगुणसे प्रगट जिसने संपूर्ण ब्रह्मांडको आच्छादित कर रक्खा ऐसा देवताओं को दुर्लभ प्राकृत सुवर्ण कहलाता है, और जो ब्रह्मा के जन्मके संग प्रगट हुआ वो सुवर्ण सहज, अग्नि ने जो शिवका दुःसह तेज पानकर फिर परित्याग किया उससे प्रगट सुवर्ण वन्हिसभव ये तीनों सुवर्ण दिव्य हैं, धारणमात्र से ही शरीरको अजर अमर करते हैं, और जो खान से प्रगट हो वह खनिज सुवर्ण कहलाता है, और जो पारेके वेध यानी रसायनसे बने उसे वेधज सुवर्ण जानना।

सौख्यंवीर्यंबलंहन्ति-
रोगवर्गंकरोतिच ।
अशुद्धंनामृतस्वर्णं-
तस्माच्छुद्धंचमारयेत् ॥[*]

अशोधित सुवर्ण सुख बल और वीर्यको हरण करे और देह में अनेक रोग प्रगट करे, इस से अशुद्ध सुवर्णका जारण वर्जित है।

अथ शोधनम्

तैलेतक्रेगवांमूत्रे
कांजिकेच कुलत्थके ।
त्रिधा-त्रिधाविशुद्धिःस्यात्
स्वर्णादिनांसमासतः ॥

तोलेभर सुवर्ण के कंटकवेधी ८ पत्र करे इसी रीति से चांदी, तांबे के पत्र करे, फिर इन को मीठे तेल, मठा, गोमूत्र, कांजी, कुलथी के काढे इन प्रत्येक में पत्रों को गरम कर तीन २ वार बुझावे तो सोना, चांदी और तांबा शुद्ध होवें। और रांगा, जस्त, और शीशे को अलग२ गलाकर पूर्वोक्त तैलादिक में बुझावे-तो ये तीनो भी शुद्ध होवें, और लोहे के टुकडे गरम कर तीन २ वार बुझावे तो लोहा शुद्ध हो, ये सब धातुओ का शोधन संक्षेप से कहा है।

तत्रयद्भक्षणार्हंस्याद्धेमं तल्लक्षणं शृणु। दाहेरक्तं सितंछेदे निकसे कुंकुमप्रभम् ॥ तारशुल्वोज्झितंस्निग्धं मृदुहेम गुरूत्तमम । श्वेताग कठिन-रूक्षंविवर्णसमलं दलि ॥ दाहेछेदे सितश्वेत कषेत्क घुचतत्यजेत् । कृत्रिमचाभिवति सिद्ध सूतस्य योगितः ॥ मेरुसानुस्तजम्बू फलाम्भोयोगत.परं । दिव्यौषाधिमणिस्पर्शादन्यद्भवतिकाचन ॥ एवंनानाविधान्यत्र जायतेकाचनानिवै ।

सुवर्ण शोधन

हेमंपंचदशंशुद्धं
सूक्ष्मपत्राणिकारयेत् ।
शोधयेत्कांजिकेनैव
पश्चाद्वानिम्बुकैर्द्रवैः ॥
तक्रेणशोधयेद्धेम
दुग्धेपंचपुनःपुनः ।
शोधयेत्सर्वमौषध्यैः
क्षालयेदुदकैर्पृथक् ॥

उत्तम सोने के पत्र करके कांजी, नींबू के रस, मठा, और दूध मे तपा २ कर बारबार बुझावे, अथवा सर्व औषधियों के काढ़े में तपा तपा कर बुझावे, पीछे स्वच्छ पानी से धोवे तो सुवर्ण शुद्ध होवे। अथवा हर किसी धातु के पत्र कर गेरू, सज्जीखार, विडनोन, नौसादर इनको आक के दूध, ग्वारपाठे के रस, घूंघची के रस में खरल कर पूर्वोक्त पत्रों पर लेप करे और अग्नि में तपावे तो शुद्ध होवे। अथवा सपूर्ण धातुओं के पत्रों को तपाकर तैल वर्ग मे दस बार बुझावे इसी प्रकार तक्रवर्ग मे, कांजी में, मूत्रवर्ग में, क्षारवर्ग मे, अम्लवर्ग में, पुष्पवर्ग में, रक्तवर्ग में, फलवर्ग के रस मे, दुग्धवर्ग मे, रंग-में, पत्रों को तपा कर १२० बार बुझावे, तो धातु जो दूसरी कृत्रिम धातु मिली होती है वो जल-जायं और यह धातु स्वच्छ गगाजल के समान निर्मल हो जाय ये सम्पूर्ण वर्ग इस ग्रन्थ के मध्य खंड में लिखे हैं।

प्रश्न- क्योंजी बहुत से मनुष्य कहते हैं कि धातु का मारना जड़ी बूटी से उत्तम है, क्यों कि जड़ी से मरी हुई धातु कच्ची नहीं रहती इसमें आपकी क्या अनुमति है ?

उत्तर—सुनो हमारे प्यारे मित्र ! यह बात सर्वथा झूंठी है क्या हमारे प्राचीन सद्वैद्य जड़ी बूटियो को नहीं जानते थे उन्होंने यह श्लोक क्यों लिखा।

लोहानांमारणंश्रेष्ठं
सर्वत्ररसभस्मना ।
मध्यमंमूलिकाभिश्च
अधमंगंधकादिभिः ॥

अर्थात् लोह कहिये सोना, चांदी, तांबा, नाग, कासा, वंग, लोहा, पीतल, इत्यादि अष्ट लोहों का मारना पारे के संयोग से श्रेष्ठ है, जड़ी बूंटी से मध्यम और गंधकादि से मारना अधम है इससे जड़ी बूटियों की फुकी धातु हमारी समझ मे उत्तम नहीं।

यथा

चपलेनविनालोहं
यः करोतिपुमानिह ।
उदरेतस्यकीटानि
जायतेनात्रसशयः ॥

अर्थात् पारे के बिना जो लोह मारा गया है उसके खाने से पेट में कीड़े पड जाते हैं, इसीसे मनुष्यो को ठगने वाले वैरागी संजोगड़ा आदि पामरों से बचने के लिए हमने यहां लिख दिया है अर्थात् इन लोंगो की फुकी औषधि मनुष्यको खाना और विश्वास करना उचित नहीं, और ये भी सोचना चाहिए कि क्या हमारे ऋषिगण मूर्ख थे जिन्होने सुगम क्रियाओ को छोड़ कठिन क्रिया लिखी।

सुवर्ण मारण की पहली विधि

पारावतमलैर्लिपेद
थवाकुक्कुटोद्भवैः ।
हेमपत्राणितेषांच
प्रदद्यादधरोत्तरम् ॥

सुवर्ण शोधनम् ॥ मृतिकामातुलुंगाद्यैः पञ्चवासरभाविता । सभस्मलवणोहेम शोधयेत्पुट-पाकतः ॥ अन्यच्च सुवर्णमुत्तमंवन्हौ विद्रुतंनि-क्षिपेत्त्रिशः । काचनारिद्रवेशुद्धं काचन जायते भृशम् ॥

गंधचूर्णंसमदत्वा
शरावयुगसंपुटे।
प्रदद्यात्कुक्कुटपुटं
पंचभिर्गोमयोत्पलैः॥
एवंनवपुटंदद्याद्-
शमंचमहापुटं।
त्रिशद्वनोत्पलैर्देयं
जायतेहेमभस्मकम्॥
सुवर्णंचभवेत्स्वादु
तिक्तंस्निग्धंहिमंगुरु।
बुद्धिविद्यास्मृतिकरं
विषहारिरसायनम्॥

सोने के पत्रों पर कबूतर या मुर्ग की बीट का लेप कर समान गन्धक का चूर्ण बुरकता जाय और एक पर दूसरा रखता जाय पीछे मिट्टी के शराव संपुट में गन्धक बिछा कर उसमें पत्रों को रख बाकी गन्धक का चूर्ण उन पत्रों पर बिछाय दूसरे शराव से मुख बन्द कर कपर मिट्टी दे नौ कुक्कुट पुट देवे।

कुक्कुट पुट के लक्षण

वितस्तिमात्रगर्त्तेयत्
पुटंयतेतत्तुकौक्कुटं।

बालिश्तभर लंबा इतना ही चौडा और ऊंचा गढेला खोद आधे में दो तीन उपलों के टुकड़ों की आग दे इसे कुक्कुटपुट कहते हैं। ऐसे नौ पुट देने के बाद दसवा महापुट देवे तो सोने की भस्म हो, इसके गुण मधुर, तीखी, स्निग्ध शीतल और भारी है। यह रस बुद्धि विद्या और स्मरण को बढाता है और विषबाधाओं को दूर करता रसायन है।

तथा दूसरी विधि

सौवीरमजनंपिष्ट्वा
मार्कवस्वरसैर्दृढं।
जातरूपस्यपत्राणि
शरावेसंपुटेपुटेन॥
गजाख्येनपुटेनैव
सुवर्णंयातिभस्मताम्।

काले सुर्मे की डली जलभांगरे के रस में घोटकर सोने के पत्रों पर लेप कर शरावसंपुट में रख गज पुट की आंच दे तो एक ही आंच में सुवर्ण की शुद्ध भस्म होवे।

तथा तीसरी विधि

सूतस्यद्विगुणंगंध-
म्लेनकृतकज्जलिं।
द्वयोसमीकृतंस्वर्ण-
सम्यगम्लेनमर्दयेत्॥
शरावसंपुटांतस्थ-
मधऊर्द्ध्वंचसैंधवम्।
अष्टयामाद्भवेद्भस्म-
सर्वयोगेपुयोजयेत्॥

शुद्धपारा १ टंक, शुद्ध गंधक १ टंक दोनों की कजली कर कागजी नींबू के रस में घडीभर घोटे,पीछे इसमें २ टंक शुद्ध सोनेके वर्क घोटे एक घडी पर्य्यंत जब काढा हो तब टिकडी बनाकर धूप में सुखावे, फिर एक शराव में नोन बिछाकर उस टिकडी को रखे और फिर ऊपर से ऐसा नोन बिछावे कि जिसमें वह टिकडी न दीखे, पीछे इसका मुख दूसरे शराव के मुख से मिलाकर कपर मिट्टी कर सुखाले, और फिर गजपुट की आंच दे तो आठ प्रहर में सुवर्ण की भस्म होवे, इसी प्रकार चांदी और तांबे की भस्म होवे, परन्तु तांबे को कजली में पारा गंधक की कजली मिलाकर नींबू के रस में पहर भर घोटे फिर टिकिया करे, बहुत देर तक तांबे को खटाई में घोटने से जी नहीं मचलाता।

तथा चौथी विधि

शुद्धहेमंश्लक्ष्णपत्रीकृतंत-
द्वारंवार सूतगंधानुलिप्तम्।
तीव्रेवन्हौकांचनारेहलिन्या-
ज्वालामुख्यासंपुटेभस्मकुर्यात्॥

शुद्ध सोने के पत्रों पर बारबार गंधक और पारे की कजली को लेप करे, फिर उन पत्रों को कचनार, करियारी, और ज्वाला मुखी इन तीनों की लुगदी मे रख शराव संपुट में रखे और सात कपर मिट्टी कर बारंबार गजपुट की अग्नि देवे तो सोना भस्म हो ।

तथा पांचवी विधि

माक्षिकंनागचूर्णंच-
पिष्टमर्करसेनच ।
हेमपत्र पुटेनैवम्रियते-
क्षणमात्रतः ॥

सुवर्ण के कटकवेधी पत्रकर शुद्ध सोना मक्खी और सीसे के चूर्ण को आक के दूध में खरल करे और उक्त पत्रोंपर लेपकर मूषा में रख फूंक देवे तो सुवर्ण की भस्म होवे ।

तथा छठी विधि

सुशुद्धंपारदंदत्वा-
कुर्याद्यत्नेनपिष्टिकां ।
दत्वोर्द्धाधोनागचूर्णं-
पुटेनम्रियतेध्रुवम् ॥

सोने के पत्रों से दूना शुद्ध पारा ले दोनों को खरल कर पीठी करे, फिर इस पीठी के ऊपर नीचे सीसे का चूर्ण रख गजपुट मे फूंक देवे तो सुवर्ण की भस्म होवे ।

तथा सातवीं विधि

रसस्यभस्मनावाथ-
रसेनालिप्यवैदलं ।
हिंगुर्हिंगुलसिंदूरशिला-
साम्येनमेलयेत् ॥
संमर्द्य कांचनद्रावैर्दिन-
कृत्वाथगोलकम ।
तद्भाण्डस्यतलंदत्वा-
भस्मनापूरयेद्दृढम् ॥
अग्निंप्रज्ज्वालयेद्गाढं-
द्विनिशंस्वांगशीतलम् ।
उद्धृत्यसावशेषंचेत्पु-
नर्देयंपुटद्वयम् ॥
अनेनविधिनास्वर्णं-
निरुत्थंजायतेमृतिम् ।

पारे की भस्म अथवा पारे से सुवर्ण के कंटक वेधी पत्रों को लपेट कर फिर हींग, हिंगलू सिंदूर, और मनसिल बराबर ले १ दिन कचनाल के रस में खरल कर गोला बनावे उसको पात्र के भीतर रख खूब दाबकर राख भर देवे और चूल्हे पर चढाय दो रात्रि बराबर अग्नि दे और स्वांग शीतल होने पर उतार लेवे यदि कुछ कच्चा रह जाय तो फिर दो पुट देकर अग्नि दे इस प्रकार सुवर्ण निरुत्थभस्म होता है ।

तथा आठवीं विधि

कांचनारिप्रकारेण-
लांगलीहन्तिकांचनम् ।
ज्वालामुखीतथाहन्या-
त्तथाहन्तिमनःशिलाः ॥

जिस प्रकार कचनाल का पुट देने से सुवर्ण भस्म होता है उसी प्रकार कलयारी के रसका पुट देने से भस्म होता है, और उसी प्रकार ज्वाला-मुखी तथा मनसिल के संपुट से भी सुवर्ण की भस्म होती है ।

तथा नवम विधि

शिलासिंदूरयोश्चूर्णं-
समयोरर्कदुग्धतः ।
सप्तधाभावयित्वा-
तुशोषयेच्चपुनःपुनः ॥
ततस्तुगलितेहेम्नि-
कल्कोऽयंदीयतेसमः ।
पुनर्धमेदतितरांयथा-
कल्कोविलीयते ॥
एवंवारत्रयंदद्यात्कल्क-
हेममृतिर्भवेत् ॥

मनसिल और सिंदूर दोनो का समान चूर्ण लेकर आक के दूध की ७ भावना देवे, और सुखाता जाय, फिर सुवर्ण को गलाकर उक्त चूर्ण थोडा २ बुरकाता जाय, फिर धमावे कि जिससे सुवर्ण का पानी सूख जावे इस प्रकार तीन बार करने से सुवर्ण कल्क की भस्म होवे ।

मृत सुवर्ण के गुण

स्वर्णंविधत्तेहरनेच-
रोगानकरोतिसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वं
शुक्रस्यवृद्धिंबलतेजपुष्टिंक्रिया
सुशक्तिंचकरोतिहेमः ॥

सुवर्ण भस्म खाने से उत्तम कान्ति हो रोगों का नाश करे, सुख दे, इन्द्रियों को बलवान करे, शुक्र, बल और तेज को बढावे, काम करने की शक्ति दे, इतने गुण हैं ।

सुवर्ण भस्म के गुण

स्वर्णंस्वर्णसमानरूप-
जनकंसर्वक्षयोन्मूलकृत् ।
बल्यंवृष्यमनुष्णवीर्यम
सकृत्तुष्टिद्धंनंवृहणं ॥
निःशेषामयसर्वसंहृति-
करस्तेजस्करंशुक्रकृत् ।
नेत्ररोगजराहरंनवसुधा-
पानोपमप्राणिनाम् ।

सुवर्ण की भस्म खाने से सुवर्ण के समान देह का रंग हो, क्षय रोग दूर हो, बल करे, वृष्य है, शीतल है, वीर्य और भूख को बढावे, वृंहण है, अखिल रोग हर्ता तेज और शुक्र को बढावे, नेत्र रोग और बुढापे को दूर करे, यह प्राणियो को अमृत के समान गुणदायक है ।

तथाऽन्यगुण

स्वर्णंशीतपवित्रंक्षयवमि-
कसनश्वासमेहास्र ।
पित्तंक्षीणत्वक्ष्वेडक्षताम्प्रदर-
गदहृत्स्वादुतिक्तंकषाय ॥
वृष्यमेधाग्निकान्ति-
प्रदमधुरसकं ।
कार्श्यहानित्रिदोषोन्मा-
दापस्मारशूलज्वरज
यवपुषोवृंहणंनेत्रपथ्यम् ॥

सुवर्ण भस्म—शीतल और पवित्र है, तथा क्षय, वमन, खासी, श्वास, प्रमेह, रक्तपित्त, क्षीणता, विष, घाव, रुधिर विकार और प्रदर का नाश करे, स्वादिष्ट है, चरपरा, कसेला, वृष्य, बुद्धि, अग्नि और कान्ति का देने वाला खांड के समान मीठा, और कृशता, त्रिदोष, उन्माद, मृगी, शूल और ज्वर का नाश करे तथा देह को पुष्ट करे, नेत्रों को परमहित है ।

केवल सुवर्ण के गुण

सर्वौषधिप्रयोगेण-
व्याधयोनगतायदा ।
कर्मभिपचभिश्चापि-
सुवर्णंतेप्रयोजयेत् ।
शिलाजतुप्रयोगात्त-
ताप्यसूतकयोरतथा ।
रसायनानामन्येषां-
प्रयोगाद्धेमउत्तमः ॥

जिस मनुष्य की सर्व औषधियो के द्वारा व्याधि निवृत्त न हुई हो, अथवा वमनादि पच-कर्मों से भी रोग नष्ट न हुए हो, उसको सुवर्ण खिलावे एव शिलाजीत, चांदी, पारा अथवा और जो रसायन के प्रयोग हैं उन सब से सुवर्ण का प्रयोग उत्तम है ।

अपक्वहेमसंघृष्ट-
शिलायाजलयोगतः ।
द्रवरूपतुतत्पेयमधु
नागुणदायक ॥
यद्वाचवरखाख्यंतु-
स्वर्णपत्रंविचूर्णितम् ।

मधुनासंगृहीतंच-
सद्योहंतिविषादिकं ।

शुद्ध सोने को पानी से पत्थरपर घिस शहद के संग पीने से गुण दायक होता है अथवा उत्तम सोने के वर्क चूर्णकर शहद के सग खाय तो तत्काल विषादिक नाश होवे ।

सोने के वर्कों के गुण

सिद्धंस्वर्णदलंसमस्त-
विषहृच्छूलाम्लपित्तापहं ।
हृद्यंपुष्टिकरंक्षयव्रणहरं-
कायाग्निमांद्यंजयेत् ।
हिक्कानाहनिरंतरंकफहरं-
भ्रूणाहितंसर्वदा ।
तत्तद्रोगहरानुपानस-
हितंसर्वामयध्वंसनम् ॥

सोने के वर्क सपूर्ण विष, शूल और अम्लपित्त को नाश करे, हृदय को हित कारक, पुष्टिकारक, क्षय, घाव, मदाग्नि, हिचकी, आनाह वात, बढा हुआ कफ, इनको दूर करें, और सर्वदा गर्भ के बालक को हित, और सर्वरोग मात्रों को अपने २ अनुपान के साथ दूर करे ।

सुवर्ण भस्मानुपान

मत्स्यपित्तस्ययोगेन-
स्वर्णतत्कालदाहजित् ।
भृंगयोगाच्चतद्वृष्य-
दुग्धयोगाद्बलप्रदं ॥
पुनर्नवायुतनेत्र्यघृत-
योगाद्रसायनम् ।
स्मृत्यादिकृद्वचायोगा-
त्कान्तिकृत्कुंकुमेनच ।
राजयक्ष्माचपयसानि-
र्विष्याचविषंहरेत् ॥
शुंठीलवगमरिचैस्त्रि-
दोपोन्मादहारकं ॥

सुवर्ण की भस्म मछली के पित्त के सग खाने से तत्काल दाह को जीते, भांगरे के रस के साथ स्त्री प्रसग में हित है, दूध के साथ बल बढ़ावे, पुनर्नवा (सांठ) के साथ नेत्रों को हित करे, घृत संयुक्त बुढापे और व्याधि का नाश करे, वच के साथ बुद्धि को बढ़ावे, केशर के साथ कान्ति कारक, दूध सै क्षय को हरे, निर्विषी के साथ विषरोगों को, और सौठ, लौंग, कालीमिर्चों के साथ त्रिदोष, उन्माद को दूर करे ।

मध्वामलकचूर्णंतु-
सुवर्णंचेतितत्त्रयं ।
प्राश्यारिष्टगृहीतोपि-
मुच्यतेप्राणसंकटात् ॥
शंखपुष्पावयार्थंचवि-
दार्य्यांचप्रजार्थकः ।

सोने की भस्म आमले के चूर्ण और शहद के साथ खाने से प्राण संकट से छूटे, कोई कहता है कि 'ग्रहणीं प्रवलांहरेत्, अर्थात् पूर्व औषधियों के सं॰ प्रबल संग्रहणी को नाश करे, शंखाहूली के साथ आयुष्य को बढ़ावे, और विदारी कंद संयुक्त पुत्र देने वाली है।

सुवर्ण भक्षण और पथ्य

दुग्धंवैशर्करोपेतं-
स्निग्धमन्नंचपेशलम् ।
वलीपलितनाशायस्व-
र्णपथ्यानिदापयेत् ॥

दूध, खाड संयुक्त, चिकना तथा स्निग्ध अन्न, वलीपलित नाश करने को सुवर्ण खाने वाले के लिये पथ्य देवे ।

सुवर्ण भक्षण में अपथ्य

ककारसहितंचान्नं-
व्यंजनतुकपूर्वकम् ।
ककारपूर्वमासानिस्वर्ण-
भुग्दूरतस्त्यजेत् ॥

जिन अन्न, व्यंजन, और मांसों के पूर्व में ककार हो (जैसे करेला, ककडी) उनको सुवर्ण खानेवाला मनुष्य त्याग दे।

सोने की द्रुति

चूर्णसुरेन्द्रगोपानां-
देवदालीफलद्रवैः।
भावितंसदृशंभस्म-
करोतिजलवद्द्रुतिम् ॥

पारे और बीर बहुटी के चूर्ण को विदाली फल के रस से घोट सुवर्ण के चूर्ण मे भावना दे तो सुवर्ण पानी के समान द्रव्य हो जाय।

मंडूकास्थिवसाटंक-
हयलालेन्द्रगोपकैः।
प्रतिवापेनकनकं-
सुचिरंतिष्ठतिद्रवम् ॥

मेंडक की हड्डी; और वसा, सुहागा घोडे के मुख की लार, बीरबहूटी, इनको समान लेकर इनमें सोने को गलाकर डालने से सोना पानी के समान बहुत दिन तक रहे।

अशुद्ध सुवर्ण के दोष

बलंचवीर्यंहरतेनराणांरोग-
व्रजान्पोषयतीहकाये।
असौख्यकार्यंचसदैवहे-
माऽपक्वंसदोषंमरणंकरोति ॥

सुवर्ण की अशुद्ध भस्म बल और वीर्य को नाश करे, तथा देह में रोगो का समुदाय प्रकट करे और दुख तथा मरण करे।

अथ तद्दोषशान्ति

अभयासितयायुक्तां-
त्रिदिनंनृभिरंगने।
हेमदोषहरीख्याता-
सत्यंसत्यंनसंशयः ॥

हरड और खांड तीन दिन तक खाने से अशुद्ध सोने के खाने से जो विकार हुए हों वो सब शांति होवें।

इति श्री बृहद्रसराजसुन्दरे सुवर्ण प्रकरणम् समाप्तम्

अथ रौप्य प्रकरण प्रारम्भः

चांदी की उत्पत्ति

एक समय त्रिपुर वध के निमित्त श्रीशिवजी ने अति क्रोध किया उस समय उनके एक नेत्र से उल्का पैदा हुआ, और दूसरे से वीरभद्रगण प्रकट हुआ तथा तीसरे नेत्र से जो आसू की विन्दु गिरी वो रूपा (चांदी) हुआ वह अनेक प्रकार की पृथ्वी मे स्थित है।

रौप्य के भेद

सहजंखनिसंजातं-
कृत्रिमंचत्रिधामतं।
रजतंपूर्वपूर्वंहिस्व-
गुणैरुत्तरोत्तरम् ॥
कैलासाद्यद्रिसंभूतं-
सहजंरतंभवेत्।
तत्स्पृष्टंहिसकृद्व्याधि-
नाशनदेहिनांभवेत् ॥
हिमाचलादिकूटेषु-
तद्रूप्यजायतोहितत्।
खनिजकथ्यतेतज्ज्ञैः
परमंहिरसायनम् ॥
श्रीरामपादुकान्यस्तं-
वगंयद्रूप्यतांगतम्।
तस्माद्रूप्यमित्युक्तं-
कृत्रिमंसर्वरोगनुत्।
कृत्रिमंचापिभवति-
वगादेसूतयोगतः ॥

वह रौप्य (चादी) १ सहज २ खनिज

और ३ कृत्रिम के भेद से ३ प्रकार का है क्रम पूर्वक एक से दूसरे में विशेष गुण हैं, जो रूपा कैलाश से प्रगटा है वह सहज कहाता है, इस के स्पर्शमात्र से ही सकल रोगो का नाश होता है। और जो हिमालय आदि पर्वतो से प्रगट हुआ हो वह खनिज कहाता है। और श्रीराम पादुका के नीचे जो रांगा रौप्यता को प्राप्त हुआ वह कृत्रिम कहलाता है। कोई २ कहते हैं कि जो पारे और वंग अर्थात रांग के सयोग से बना हो उसे कृत्रिम चांदी कहते हैं।

त्रिविधंपरिकीर्तितंचरूप्यं-
खनिजंवंगजवेधजंतथैव।
अवलोक्यरमोदधिश्चग्रंथात्-
सकलैर्वैद्यवरैर्विशारदैश्च ॥

चांदी ३ प्रकार की है, खनिज, वंगज, और वेधज यह रस के अनेक ग्रंथ अवलोकन कर वैद्यों ने कहा है।

रौप्य परीक्षा

उभेवंगजेनैवग्राह्ये चरूप्येय-
तौनैवशुभ्रत्वमेवमृदुत्वं।
अतोग्राह्यमेकंखनीजचरूप्यंयतः
श्वेतवर्णचकौमल्ययुक्तं ॥

तीन प्रकार की जो चादी हैं, उनमें वगज और वेधन को त्याग देवे, क्यो कि इनमे सफेदी और मृदुता नहीं है-इसलिये खान से जो प्रगट सफेद और कोमल चांदी को ग्रहण करे।

घनंस्वच्छमृदुस्निग्ध-
दाहेछेदेसितगुरु।
शखाभमसृणस्फोट-
रहितरजतशुभम् ॥

जो चादी दृढ, स्वच्छ, नरम, चिकनी, तपाने तथा तोडने मे सफेद और भारी हो, तथा शख के समान शुद्ध हो और घनकी चोट से न फूटे उसे मारण के अर्थ लेना चाहिये।

अशुद्ध चांदी के लक्षण

दाहेरक्तंचपीतंच-
कृष्णरूक्षस्फुटलघु।
स्थूलांगंकर्कशांगंच-
रजतंत्याज्यमष्टधा ॥

तपाने से लाल और पीली हो, तथा काली रूखी और घनकी चोट से टुकडे २ हो जाय, तथा वजन में हलकी और देखने मे स्थूल हो, तथा कर्कश हो, ऐसी आठ प्रकार की चादी मारण मे त्याज्य है।

आयुःशुक्रंबलंहंतिता-
पविड्वंधकृद्रुजं।
अशुद्धंनमृतंतारंशुद्धं-
मार्यमतोबुधैः ॥

आयु, वीर्य, और बल को हरे, तथा अफरा आदि अनेक रोगो को करे इसी से अशोधित रूपामारण पंडितो ने वर्जित कहा है।

रौप्यशुद्धि

पत्रीकृतंतुरजतसं-
तप्तजातवेदसि।
निर्वापितमगस्त्यस्य-
रसेवारत्रयंशुचि ॥

चादी के पतले २ पत्र कर अग्नि मे तपाय अगस्त पत्र के रस मे तीन बार बुझाने से चांदी शुद्ध होती है।

रौप्यशुद्धंसमादायनाग-
मुख्यतुशोधयेत्।
शुद्धेतारेपुनस्तस्यसूक्ष्म-
पत्राणिकारयेत् ॥
तानिर्चिंचिणिद्राक्षाभि-
शोधयेच्चपृथक्पृथक्।

उत्तम चादी मे सीसा देकर शोधे पीछे उसके कंटक वेधी पतले पत्रकराय इमली और दाख के रस मे अलग २ शोधे तो चादी को उत्तम प्रकार की शुद्धि हो।

रूपामारणकी पहिली विधि

भागैकंतालकंमर्द्य-
यामसम्लेनकेनचित् ।
तेनभागत्रयतारं-
पत्राणिपरिलेपयेत् ॥
धृत्वामूषापुटेरुध्वा-
पुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः ।
समुधृत्यपुनस्तालदत्वा-
रुध्वापुटेपचेत् ॥
एवंचतुर्दशपुटैस्तार-
भस्मप्रजायते ।

तोलेभर हरताल को कागजी नींबूके रसों में एक प्रहर घोटे जब गाढी होजाय तब तीन तोला चांदी के वर्क अंगूठे की नखकी बराबर छोटे २ लेकर उन पर लेप करे और शराव सपुट कर ३० जगली उपलों की आच दे इस प्रकार चौदह आंच देने से रूपा (चांदी) को भस्म करे, पीछे सब योगों मे दे विशेष कर सुवर्ण पर्पटी में मिलावे तो सुवर्ण पर्पटी गुण करे ।

दूसरीविधि

कनकमाक्षिकसूक्ष्म-
विचूर्णकंस्थविरस्नुक्-
पयसासहमर्दितं ।
रजतपत्रवराणिविलेपयेत्
कथिततालकवत्परिपाचयेत् ॥

सोनामक्खीका बारीक चूर्ण पुरानी थूहर के दूध से घोटे जब गाढा होजाय तब चादी के पत्रोंपर लेप कर माटी के संपुट में पूर्वोक्त प्रकार १६ पुट देवे तो रूपे की भस्म हो ।

तीसरी विधि

सिद्धवंगवलिनाचतालक-
तारपत्रसुविशेषलेपितं ।
इन्द्रदण्डपुटपिण्डपाचितं-
तारयोगपुटयोगसिद्धिदम् ॥

वग भस्म, गंधक, हरतार तीनोंको एकत्र कर खरलमे घोटे, पीछे इस कजलीका चांदी के पत्रों पर लेप कर कलयारीके फलों की लुगदी कूटकर करे और उस में इन पत्रों को रख कपर मिट्टी कर गजपुट में आंच दे तो रुपा भस्म हो।

बहुत से मनुष्य गजभर लंबा और इतनाही चौडा तथा ऊंचा गजपुट वतलाते हैं सो यह मिथ्या है इस लिये प्रमाण लिखते हैं ।

गजपुटके लक्षण

घनचौरसकेसार्द्ध-
हस्तेचैवतुगर्त्तके
पूर्ववद्दीयतेचाग्नि-
तत्पुटंगजसंज्ञकं ।
माहिपंवेतिसंज्ञेयं
सूरिभिःसमुदाहृतं ।

डेढ २ हाथ लबा, चौडा और गहरा हो उसको आधा उपलोंसे भर औषधका सपुट रख आधेको फिर उपलोंसे भरकर अग्नि देना इसको गजपुट वा माहिषपुट, कहते हैं ।

चतुर्थ विधि

गधपारदयोरैक्यं-
किंचिद्गंधंचघर्पयेत् ।
द्राक्षायांचैवसयुक्तं-
तानिपत्राणिलेपयेत् ॥
तक्रपत्रविनिक्षिप्य-
लेपयेद्वस्त्रमृत्तिकां ।
प्रक्षिप्यपुटगर्त्तेच-
ज्वालयेद्गृहछाणकैः ।
स्वांगशीतलमुद्धृत्य-
खल्वेतन्मर्दयेद्बहुः ।
पंचामृतपुटंदेयंवस्त्र-
पूतंचकारयेत् ॥
वल्लार्द्धं भक्षयेत्प्रातः
पूजयेत्सर्वदेवता ।
पूजयेद्भेषजान्देवान्-
भव्येभाण्डेनिधापयेत् ॥

गंधक, पारा और बंग इनकी कजली कर दाख के रसमें घोटे, पीछे इसका चांदी के पात्रों पर लेपकर शराव संपुट में रख ऊपर मिट्टी करे और गजपुट में फूंक देवे। जब शीतल हो जाय तब संपुट से निकाल खरल में चूर्ण करे पीछे इसमें पंचामृत (सोंठ, मूसली, गिलोय, सितावर, गोखरू) का पुट दे, तदनन्तर वस्त्र में छान कर उत्तम शीशी में रख छोड़े और एक रत्ती प्रातःकाल खाया करे।

पांचवीं विधि

शुकप्रियोपीतकपत्रकल्के-
चतुर्गुणेतारकमेवरुन्धा।
सरावकेकसंपुटकेपुटेच्च-
त्रीभि.पुटैरेववराहसंज्ञैः ॥५॥

चार तोले अनार और हरताल के पत्र लेकर पीसे इनकी लुगदी में तोले भर शुद्ध चांदी के कंटक वेधी पत्र कर शराव संपुट में रख ऊपर मिट्टी करे, पीछे वाराह पुट में फूंके इस प्रकार ३ बार में रूपा भस्म हो।

अरत्निमात्रेगर्त्ते-
यद्दीयतेपूर्ववत्पुटम्।
करीषाग्नौतुतत्प्रोक्तं
पुटंवाराहसञ्ज्ञिकम् ॥

अरत्निमात्र यानी बालिश्त भर का गढा खोद कर उपलों से भर गजपुट के अनुसार पुट देने को वैद्य लोग वाराहपुट कहते हैं। परन्तु पूर्वोक्त रूपे की विधि में हाथ भर का गढा खोद कर अग्नि देवे।

रूपे की भस्म के गुण

तारंचतारयतिरोग-
समुद्रपारं।
देहस्यसौख्यदमिदं-
पलितंनिहंति ॥
हन्तीहरोगविपदोष-
मलंप्रसह्यवृष्यंपुन
र्नवकरंकुरुतेचिरायुः ॥

रोग समुद्रसे पार लगाने वाला रूपा देह का सुखदाता, वलीपलित और विष दोष का नाशक तथा वृष्य तरुणावस्था का देने वाला और आयुष्य को दे ऐसा है।

रूपे के अनुपान

भस्मीभूतंरजतममलं-
तत्समंव्योमभानुः।
सर्वैस्तुल्यंत्रिकटुरसवर-
सारमाज्येनयुक्तं ॥
लीढंप्रातःक्षपयतिनृणां-
यक्ष्मपांडूदरार्शः।
श्वासान् कासान्तिमिर-
नयनयोःपित्तरोगानशेषान् ॥

रूपे की भस्म के समान अभ्रक, ताम्र, और इनके समान त्रिकुटा का चूर्ण मिलाय प्रातःकाल खावे तो क्षय, पीलिया, उदर, बवासीर, श्वास खांसी, तिमिर और पित्त रोगों का नाश करे।

सितयाहंतिदाहाद्यं-
वातपित्तंफलत्रिकात्।
त्रिपुगध्याप्रमेहादि-
गुल्मेक्षारसमन्वितं ॥
कासेकफेश्ररूपस्य-
रसेत्रिकटुकान्विते ॥
भार्ङ्गीविश्वयुतंश्वासे-
क्षयजित्सशिलाजतु ॥
क्षीणेमासरसेदेयं-
दुग्ध वाललनोत्तमे।
यकृत्प्लीहहरंप्रोक्तं-
वरापिप्पलिसंयुतं ॥
पुनर्नवायुतशोफे-
पाण्डौमण्डूरसंयुतम्।
वलीपलितहंकांति-
कृत्करंघृत संयुतम् ॥

मिशरी के संग, दाह से, वातपित्त जनित रोगों में त्रिफला के संग, तज पत्रज और इला

यची के सग प्रमेह में, गोला से क्षारयुक्त, कफ, खासी से त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) के चूर्ण के साथ, श्वास में अडूसे के रस के साथ क्षय में भारंगी और सोंठ के साथ देवे, और क्षय शिलाजीत के साथ देवे, क्षीणता मे मांस के यूष तथा दूध सयुक्त, यकृत प्लीहा में त्रिफला और पीपल के साथ, शोथ मे पुनर्नवा के साथ, पीलिया मे मडूरयुक्त, वली पलित में घृत के साथ देने से इनको दूर करे, तथा भूख और कान्ति को बढावे।

चांदी के वर्कों के गुण

सिद्धंरौप्यदलंकाये-
करोतिविविधान्गुणान्।
मेहघ्नंशीतलंवृष्यंवलं-
वीर्यंविवर्द्धयेत्॥

सिद्ध रूपे के दल अर्थात् वर्क देह में अनेक गुण करें, तथा प्रमेह को दूर करें, शीतल और वृष्य हैं, वल वीर्य को बढावें।

रूपे की द्रुति

शतधानरमूत्रेण-
भावयेद्देवदालिकाम्।
तच्चूर्णंवापमापेणद्रुतिः
स्यात्स्वर्णतारयोः॥

देव दाली के चूर्ण मे १०० भावना मनुष्य के मूत्र की देकर रूप में डाले तो रूपा पानी हो जाय।

अशुद्ध रूपेके अवगुण

अशुद्धंरजतकुर्यात्-
पाण्डुकण्डुंगलग्रहान्।
विवंधंवीर्यनाशचवल-
हानिशिरोरुजाम्॥

अशुद्ध रूपे की भस्म पाण्डुरोग, खुजली, गलग्रह, मलवध, वीर्यनाश, वलहानि और मस्तक शूल उत्पन्न करे।

अशुद्ध दोष शान्ति

शर्करामधुसंयुक्तं-
सेवयेद्योदिनत्रयम्।
अपक्वरौप्यदोषेण-
विमुक्तसुखमश्नुते॥

मिश्री और महत तीन दिन खाने से रौप्य विकार मिट जाता है।

इति श्री दत्तराम माथुर निर्मित वृहद्रसराज सुन्दरे रौप्य प्रकरणम् समाप्तम्

अथ ताम्र प्रकरणम्

तत्रादौ ताम्रोत्पत्ति लिख्यते

र¹वेर्यत्कान्तिदंतेजः
पतितंधरणीतले।
तस्मात्ताम्रसमुत्पन्न-
मिदमाहुःपुराविदः॥

सूर्य्य का कान्ति देने वाला तेज पृथ्वी पर पडने से तांवा प्रगट हुआ।

ताम्र के भेद

म्लेच्छंनैपालकचेति-
द्विविधंताम्रमीरितं।
तांवा दो प्रकार का है १ म्लेच्छ और दूसरा नैपाल।

म्लेच्छ ताम्र के लक्षण

कृष्णंरूक्षमतिस्तब्धं-
श्वेतंचापिघनासहं।
क्षालितंचपुन.कृष्णमेतन्-
म्लेच्छस्यलक्षणम्।

---

¹ वीर्यंयत्कार्त्तिकेयस्य इतिपाठान्तरम्। शुक्र यत्कार्तिकेयस्य पतितंधरणीतले। तस्मादेतत्स-मुत्पन्नं ताम्रमाहुपुराविदः॥

लोहनागयुतंशुल्वं-
दुष्टंमृत्यौत्यजेद्बुधः ॥

जो तांबा-काला, सूखा, कडा, सफेद, घनकी चोट के योग्य न हो, धोने से फिर कालौंच ले आवे वे सबब म्लेच्छताम्र के हैं और लोहे सीसे से मिला हुआ दुष्ट तावा मारने में त्याज्य है।

नेपाल ताम्र के लक्षण

जपाकुसुमसंकाशं-
स्निग्धमृदुघनक्षमं ।
लोहनागोज्झितंताम्रं-
नेपालंमृत्यवेशुभम् ॥

जो तावा चिकना और रंग में जपा (दुपहरिया) फूल के समान हो, घनकी चोट के योग्य हो जिसमें लोहे सीसे का मेल न हो वह मारने में श्रेष्ठ है।

सदोषत्वमाह

नविषविषमित्या-
हुस्ताम्रंतुविषमुच्यते ।
एकोदोषोविषेसम्यक्-
ताम्रेत्वष्टौप्रकीर्तिता ॥

पंडित विष को विष नहीं कहते, किन्तु ताम्र को ही विष कहते हैं, क्योंकि विष में एक दोष है और ताम्र मे आठदोष हैं।

ताम्र दोषाः

अतःपरंताम्रसमाश्रिता-
श्चदोषांश्चवदयेबहुधाविलोक्य ।
वांतिर्भ्रांतिःसंक्लमस्ता-
पशूलेकंडुत्वंवैरेचतावीर्यहंतृ ॥
अष्टौदोषाःकीर्तितास्ता-
म्रमध्येतेषांसर्वंशोधनं
शोधन कीर्त्तयिष्ये ॥

१ वांति, २ भ्रांति, ३ ग्लानि, ४ दाह, ५ खुजली, ६ दस्त, ७ वीर्य नाश, ८ शूल ये आठ दोष तावे मे रहते है, इसलिये तावे का शोधन कहता हूं सो सुनो।

ताम्र शोधन

तक्रंतैलधेनुमूत्रंचवांति-
भ्रांतिहन्यात्कांजिकंकौलथाभः ।
वज्रीदुग्धंधेनुदुग्धंक्ल-
मंचतापंहन्यात्तितिणीनिंबुतोयं ॥
शूलंहन्यात्कन्यकाशीर्षितोयं-
हन्याद्दुग्धंगोघृतकण्डुताच ।
रेचहन्यात्सौरणंमस्तुतोयं-
क्षौद्रद्राक्षावीर्यहन्तृत्वमाशु ॥
तप्तानितप्तानिच-
पत्रकाणिताम्रस्य ।
सूक्ष्माणिविशोधयेद्वासप्तैव-
वारांश्चपृथक्पृथक् -
वैततःपरंशुद्धतराणिनूनम् ॥

छाछ तेल वा गोमूत्र का शोधा हुआ तांबा वमन दूर करता है, और कांजी तथा कुलथी के काढे में भ्रांति नाशक, थूहर के दूध और गौके दूधमें ग्लानि नाशक, इमली वा नींबू के रसमे संताप नाशक, ग्वारपट्ठे और नारियल के रस मे शूल नाशक, दूध और गो घृतमे खुजली नाशक और जिमी कंद तथा दही के जल मे दस्त नाशक, शहद तथा दाख के रसमे शोधा भया वीर्य दोष को दूर करता है। इन कही हुई औषधियो में तावे के छोटे और पतले पत्र आगमे तपा २ कर सात २ बार बुझावे तावा उत्तम शुद्ध होवे। अथवा-तेल मठा मे तावे की विशेष शुद्धि होती है, अथवा थूहर आक इनके दूध और नोन को मिलाकर खरलकर इस कल्क को तावे के पत्रो पर लेप करे और अग्नि मे तपाय २ पीछे ३ वार निर्गुंडी के रस मे बुझावे। अथवा थूहर और आक के दूध मे बुझाने से ताम्र बहुत शुद्ध उत्तम हो, अथवा तावे के पत्र गोमूत्र मे इमली और नोन डाल कर तेज आंच में एक प्रहर तक पचाने से उत्तम-शुद्ध होवे।

कृष्णरूक्षमतिस्तब्ध श्वेतचापि घनासहं
लोहनागयुतं चापि नशुद्ध ताम्रमुच्यते ।

ताम्र मारण की प्रथम विधि

पलानिपंचशुद्धानि-
ताम्रपत्राणिबुद्धिमान् ।
गृहीत्वायोजयेत्तत्र-
तदर्द्धं शुद्धपारदम् ॥
मर्दयेन्निंबुकद्रावैस्त्रिदि-
नान्युभयंभिपक ।
ताम्रपत्रैःसमंशुद्धं-
गंधकंतत्रनिक्षिपेत् ॥
मर्दयित्वाघटीयुग्मंकाच-
कुप्यांनिधापयेत् ।
यामानष्टौपचेदग्नौस्वांग-
शीतलमुद्धरेत् ॥
एपतामेश्वरोहन्यात्कुष्ठा-
दीनखिलान्गदान् ।
धातुपुष्टिकरश्चैवसूति-
कारोगनाशनः ॥

१० पैसेभर अंगूठेके नखकी बरावर छोटे और पतले शुद्ध तांबेके पत्र और ५ पैसे भर शिंगरफका निकाला पारा दोनो को कागजी नींबू के रस में पहर भर घोटे, फिर दूसरे दिन रस को निकाल डाले, इस प्रकार तीन दिन नींबू के रस में घोटे और प्रतिदिन रस को निकाल डाले, चौथे दिन पारे संयुक्त तांबे के पत्रों को धो डाले, पारे के संवन्ध से जो तांबे के पत्र सफेद हुए हैं उनको खरल में डाल १० पैसे भर शुद्ध गंधक डाल दोनो को दोवडी पर्य्यंत बिना रस के घोटे, पीछे एक शीशी में भर मुख बंद कर वालुका यंत्र में ८ प्रहर की आंच देवे [बहुत से वैद्य शीशी का मुख खुला रखते हैं और यह याद रहे कि जिस हांडी में शीशी धरे उस के पैंदे में पैसे के बराबर छेद कर उस के गिर्द मिट्टी लगाकर शीशी बैठाल वालू से भरे] ऐसा करने से ताम्रेश्वर बनकर तयार हो, जब शीतल हो तब शीशी को फोड़कर नीचे जो तांबा हो उसे निकाल ले, और शीशी के ऊपर जो सिंदूर हो उसे जुदा निकाले, इस एक रत्ती रस को लोंग चूरे के साथ खाने से श्वास दूर हो, धातु पुष्ट हो कोढ से आदि ले सब रोगों का नाश करे प्रसूत दूर हो, यह रस गरम है ऐसा तांवा सब योगों में मिलाना चाहिये ।

तिलपर्णिरसैस्ताम्र-
पत्राणिपरिलेपयेत् ।
शुभ्रवर्णाभवेद्भस्मनात्र-
कार्य्याविचारणा ॥

तिलपर्णी के रसका तांबे के पत्रों पर लेप कर गजपुट में फूंक दे तो तांबे की सफेद भस्म हो, यह भस्म उत्तम है ।

तांबे की तीसरी विधि

शुद्धार्कपत्रंचरसार्द्धलिप्तं-
द्विभागगंधान्वितदुग्धिकांबु ।
स्मृतंततोभस्मपुटैर्दिनैं-
कंतदाशुमृत्युंसमुपैतिताम्रम् ॥

अर्द्ध भाग पारा, २ भाग गंधक दोनो को दुद्धी के रस में खरल कर तांबे के एक भाग शुद्ध पत्रों पर लेप करे और गजपुट में फूंक देवे तो तांवा मरे ।

सोमनाथी तांबे की विधि

सूताद्द्विगुणितंताम्रं-
पत्रंकन्यारसामृतम् ।
पिष्टातुल्येनवलिना-
भांडमध्येविनिक्षिपेत् ॥
छिन्नंशरावकेणैतत्त-
दूर्ध्वंलवणंक्षिपेत् ।
मुखेशरावकंदत्वा-
वन्हियामचतुष्टयं ।
ज्वालयेदवचूर्ण्ये-
तद्वल्लमात्रंप्रयोजयेत् ।
पिप्पलीमधुनाशाकं-
सर्वरोगेपुयोजयेत् ॥

श्वासकेसंक्षयंपांडु-
मग्निमांद्यमरोचकम् ।
गुल्मप्लीहयकृन्मूर्च्छा-
शूलपक्तयुर्ध्वमुद्धतं ॥
दोपत्रयसमुद्भूता-
नामयान्जयतिध्रुवम् ॥
रोगानुपानसहितं-
जयेद्धातुगतंज्वरम् ॥
रसेरसायनेचैवयोजये-
द्युक्तमात्रया ।
सोमनाथाभिधंताम्रं-
पुराप्रोक्तंचिकित्सकैः ॥

पारे से दूने शुद्ध तावे के पत्र लेवे दोनों को ग्वारपट्टे के रस में घोटे पीछे दूनी गन्धक मिला कर फिर घोटे, पश्चात् एक सरवे में नमक बिछाय इस पीठी को रख ऊपर से फिर नोन बिछावे और दूसरे सरवे से मुख बदकर गजपुट में ४ प्रहर की अग्नि देवे, तदनन्तर स्वांग शीतल होने पर इसको निकाल कर बारीक पीस शीशी में रख छोड़े, काम पड़ने पर ३ रत्ती तावें की भस्म-पीपल और शहद के साथ देवे तो रोग मात्र का नाश करे, और श्वास, खासी, क्षय, पीलिया, मन्दाग्नि, अरुचि, गोला, ताप तिल्ली, मूर्च्छा, परिणाम शूल तथा त्रिदोषज रोग, और धातुगत रोगों को अनुपान के साथ शीघ्र नाश करे, रस और रसायन में अपनी युक्ति से मात्रा कल्पना करे, यह सोमनाथ नाम ताम्र पुराने वैद्यों ने कहा है ।

दूसरी विधि

पारा १ भाग, गधक १ भाग, हरताल चौथाई भाग-मनसिल अष्टमांश, इन सबको खरल में घोटकर बारीक कजली करे और तावे के पतले पत्रों पर लेप कर ४ प्रहर वालुका यत्र में पचावे और स्वांग शीतल होने पर निकाल लेवे ।

गुण—इस ताम्र भस्म को प्रत्येक रोग पर ६ रत्ती नित्य अनुपान के साथ खाय तो सर्व रोग नाश करे और परिणामशूल, उदर शूल, पांडु, ज्वर, गोला, तापतिल्ली, क्षय, मंदाग्नि, श्वास, खांसी, और ग्रहणी, इन रोगो का नाश करे, यह सोमनाथीताम्र है ।

ताम्र भस्म की परीक्षा

बर्हिकंठच्छविनिभं-
ताम्रंभवतिकेवलं ।
पिष्टंचूर्णत्वमायाति-
सरसंचेत्सचंद्रकम् ॥

जिस तावे का मोर की सी गर्दन का सा रंग हो और पीसने में सहज चूर्ण हो जाय और पारे के संयोग से चमकने लगे उसे उत्तम जानना ।

रसेंद्रेणविनाताम्रंयः-
करोतिपुमानिह ।
उदरेतस्यकीटानि-
जायंतेनात्रसंशयः ॥

जो मनुष्य बिना पारे ताम्र की भस्म करे तो इस भस्म के खाने से पेट में कृमि रोगप्रगट होता है ।

ताम्र मारण की सुगम रीति

रसगंधकयोःकृत्वा-
कज्जलीमद्धंजांतथा ।
पत्रंलिपेत्कंटवेध्यं-
म्रियतेताम्रमातपे ॥

तावे से आधे पारे गधक की कजली कर तावे के कटक वेधी पत्रो पर लेप कर धूप मे रखे तो तांबा भस्म होजाय ।

अम्लपिष्टंमृतंताम्रं-
सूरणस्थंवहिर्मृदा ।
पुटेत्पंचामृतैर्वापित्रिधा-
वांत्यादिनाशनः ॥

तावे की भस्म को अम्लवर्ग मे घोट जिमी कंद में रख इसी के टुकडे से मूंह बंद करे, पश्चात्

गजपुट में रखके फूंक दे, इसी प्रकार तीन पुट पंचामृत (सोंठ, मूसली, गिलोय, शतावर, गोखरू) के देने से तांबे के वांति भ्रांति आदि सब दोष दूर होवें और अमृत के सामान गुण करे।

अथ ताम्र गुणा

कुष्ठप्लीहज्वरकफमरुच्छ्वा-
सकासार्त्तिशोफस्त
न्द्राशूलोदरकृमिवमीं
पांडुमोहातिसारान्।
अर्शोगुल्मक्षयभ्रमशिरो-
व्याधिमेहादिहि
क्वाःशुद्ध शुल्वंहरति-
सततंवन्हिवृद्धिकरोति।

शुद्ध रीति से भस्म किया ताम्र कोढ़, ज्वर, कफ, वादी, श्वास, खासी तंद्रा शूल, उदर, कृमिरोग, वांति, पांडु, मोह, अतिसार, बवासीर, गोला, क्षय, भ्रम, मस्तकव्याधि, और प्रमेह का नाश करे, अग्नि को बढ़ावे।

ताम्र भक्षण के अनुपान

शाल्मलीरससयुक्तं-
घृतमाक्षिकसयुतं।
रक्तिकंताम्रभस्मंतुपण्मा-
संनित्यमभ्यसेत्॥
दुग्धखंडचानुपानप्रद-
द्यात्सान्यभोग्यंत्याज्यमम्लेनयुक्तं।
वीर्यं पुष्टिदीपनदेहाढ्यं दि-
व्यादृष्टिजायतेकामरूपं॥

तांबे की भस्म सेमर के रस सयुक्त १ रत्ती नित्य शहद और घृत मिलाकर छः महीने पर्यंत खाय और इस पर मिश्री मिला दूध पीवे तथा घृत मिला दिव्य मिष्ठ पदार्थ भोजन करे, खटा न खाय तो पुष्टता, अग्नि दीपन, वीर्य की दृढता, देह पुष्ट, दिव्य दृष्टि और काम के समान सुन्दर रूप हो।

पूर्वेषामतमालोक्य-
भिषगाधुनिकैर्बुधैः।
स्वबुध्यादापयेत्ताम्रं-
रोगनाशनवस्तुभिः॥

पूर्व वैद्यों की सम्मति को देख और आधुनिक चतुर वैद्यों की सम्मति लेकर वैद्य अपनी बुद्धि के अनुसार रोग नाशक वस्तुओं के साथ ताम्रभस्म रोगी को देवे।

केंचुआ और मोर पंख से ताम्र निकालने की विधि

वर्षासुवृष्टिसक्लिन्ने-
भूगर्भेसभवंतिहि।
जंतवःकृमिरूपायेते-
भूनागइतिस्मृता॥
चतुर्विधास्तुभूनागा-
स्वर्णादिखनिसभवाः।
स्वर्णादिभूमिसभूता-
दुर्ल्लभास्तेप्रकीर्त्तिताः॥
ताम्रभूमिभवाःप्रायः-
सुलभागुणवत्तराः॥

वर्षा में जमीन गीली होने से जो कृमिरुप जानवर पैदा हो उन्हें केंचुआ कहते हैं वो पृथ्वी के भेद से चार प्रकार के हैं तिन में सुवर्ण की खान से प्रगट दुर्ल्लभ है, विशेष कर के तांबे की धरती के प्रगट भूनाग मनुष्यों को मिलते हैं और ये गुण वाले हैं।

ताम्रभूभवभूनागानष्ट-
पिष्टसमेत्यतान्।
गुडगुग्गुललाक्षोर्णा-
मत्स्यपिण्याकटंकणै॥
दृढमेतांश्चसंयोज्यमर्द-
यित्वाधमेत्सुखम्।
मुंचंतिताम्रवत्सत्वंत-
द्वत्पक्षोपिबर्हिणाम्॥

तांबे की पृथ्वी से प्रगट भूनाग (केंचूओ)

को लेकर उनमें गुड, गूगल, बाल, ऊन, छोटी मछली खल, और सुहागे को मिलाकर घोटे, पीछे बंकनाल में रख कर धोके तो तांबे के समान सत्व निकले । इसी प्रकार मोर पखो से भी तांबा निकला है।

भूनाग सत्व के गुण

भूनागसत्वंशिशिरं-
सर्वकुष्ठव्रणापहम् ।
तद्युक्तंजलपानेन-
स्थावरंजंगमंविषम् ॥
विषंनश्यतिसूतोत्रगतः
सूतेग्निसंदृढां ।
एवंमयूरपिच्छोत्थसत्व-
स्यापिगुणासमताः ॥

केंचुए का सत्व शीतल तथा सर्व कुष्ठ, व्रण, स्थावर जंगम विष, विष, इनका नाश करे, और पारे के साथ योग करने से पारा अग्नि स्थाई हो ऐसे ही मोर पंख के निकले सत्व के गुण हैं ।

अथ तुत्थताम्र

तुत्थस्यटंकणंपादं-
चूर्णयन्मधुसर्पिषा ।
तुत्थेनमिश्रितंध्मातं-
कोष्टीयंत्रे दृढाग्निना ।
धामितंद्रवतेसत्वंकीर-
तुण्डसमप्रभम् ।

लीला थोते का चतुर्थांश सुहागा मिलावे फिर शहद और घृत मिलाकर घोटे पीछे कोष्टि यन्त्र में तीन अग्नि से धमावे तो लाल रंग का सत्व निकले । अथवा लीला थोते को एक दिन कजा के तेल में घोटे उसमें चतुर्थांश सुहागा मिलाय तुला यंत्र में रख कर फूंके । अथवा । मनुष्य के काले बाल मिलाकर फूंके तो लाल रंग का ताम्र निकले, ऐसे ही भूनाग (केन्चुए) का सत्व निकलता है तथा मोरपंखों से निकलता है इन तीनो सत्वो की रविवार के दिन अंगूठी बनावे और इस अंगूठी को पानी से, धोकर पीवे तो तत्काल विष दूर हो, और जिस स्त्री के बालक हुआ चाहे वो पीवे तो तत्काल प्रसूता हो, यत्न पूर्वक देने से शूल, ग्रह बाधा, त्रिदोष पीडा, और भूत बाधा, नाश होवे, व्रण भर दे, नेत्रो में डाले तो हित करे, ऐसे भालुकी ने कहा है ।

मंत्र

रामवत्सोमसेनानी-
मुद्रितेतितथाक्षर ।
हिमालयोत्तरेपार्श्वे-
स्वकर्णश्चमरुद्रुमः ॥
तत्रशूलसमुत्पन्नं-
तत्रैवविलयंगतः ॥

पूर्व कहे पानी को मंत्रित करने का यह मंत्र है ।

ताम्र की द्रुति

लवणक्षारमूत्राणि-
क्षाराश्चौषधसंभवाः ।
एषांक्षारसमस्तेषां-
औषधीकंदसंभवाः ॥
येचान्येद्रावकंकल्क-
फलत्रयकटुत्रयं ।
कुलत्थकाथतोयंच
सर्वंमृद्वग्निनापचेत् ।
गालयेद्वस्त्रयोगेन-
पुनःपाकचकारयेत् ।
तेनैवभावयेच्चैवशुद्धं-
शुल्वस्यचूर्णकम् ॥
एकविंशतिवारांश्च-
भावयित्वाविशोषयेत् ।
लादिमध्येतुभूगर्भे-
धान्यराशौचभास्करे ॥

सप्ताहंधारयेत्तु
दोलायांचैवस्वेदयेत्।
एकविंशद्दिनेजाते-
शुल्वस्येवद्रुतिर्भवेत् ॥
साद्रुतिसर्वतोत्कृष्टा-
रसरूपाचनिर्मला।

सब नोंन, सब मूतों के क्षार, सब औषधियों के क्षार, कंदों के क्षार, और जो द्राव करने वाली वस्तु हैं, त्रिफला, त्रिकुटा इन सब को कुलथी के काढे में मदाग्नि से पचावे, पीछे वस्त्र में छान फिर पक्व करे, जब गाढा हो जावे तब शुद्ध तावे के चूर्ण में भावना देवे, ऐसे २१ पुट देकर सुखा लेवे पीछे लीद में, पृथ्वी में, धान की राशि में, धूप में सात २ दिन रख कर पूर्वोक्त दोला यंत्र में स्वेदन करे, ऐसे २१ दिन करने से तावे की पारे के समान निर्मल द्रुति हो।

ताम्र जनित दोष की शान्ति

मुनिव्रीहीसितापान-
धान्याकंवासितासहः।
ताम्रदोषमशेषंवै-
पिबन्हन्त्याह्निन्त्रयैः ॥

सामखिया वा धनिये को खांड के साथ मिलाकर जल से पीवे तो तावे का सपूर्ण दोष दूर हो जावे।

इति श्रीमाथुरदत्तराम निर्मित वृहद्रसराज सुन्दरे ताम्र प्रकरणं समाप्तम्।

अथ वंग प्रकरण प्रारम्भः

खुरकंमिश्रकंचेतिद्वि-
विधंवंगमुच्यते।
खुरकंचगुणै श्रेष्ठमिश्र-
कंनरसेहितम् ॥

वंग दो प्रकार का है एक खुरक और दूसरा मिश्रक इनमें खुरक श्रेष्ठ है।

खुरक के लक्षण

धवलंमृदुलंस्निग्धं-
द्रुतद्रावंसगौरवम्।
निःशब्दखुरवंगस्या-
न्मिश्रकश्यामशुभ्रकम् ॥

जो रागा सफेद, नरम, चिकना, जल्द पिघलने वाला, भारी, शब्द रहित हो उसे खुरक वंग कहते हैं, और मिश्रवर्ण अथवा काला हो उसे मिश्रक कहते हैं।

अथवंगशोधनं

त्रपूमूत्रवर्गेम्लवर्गेवहूनाजले-
क्षारतोयेचवज्रार्कवर्गे।
ततःक्षालयित्वाकदं-
वस्यनीरेशुभंक्षालये
त्तप्तकंसप्तवारान् ॥

रांग को तपाकर मूत्रवर्ग, अम्लवर्ग, सब क्षारों के पानी, थूहर के दूध, आकके दूध, प्रत्येक में सात २ बार वुझावे, पीछे गरम को सातवार कदंब के पानी से धोवे तो रांगा शुद्ध हो।

द्रावयित्वानिशायुक्तं-
क्षिप्तं निर्गुंडिकारसे।
विशुध्यतित्रिवारेण-
खुरवंगंनसंशयः ॥

रागको पिघलाकर हलदी के चूर्ण मिले निर्गुंडी के रस में तीनवार वुझावे तो खुरक वंग शुद्ध होवे।

वंगमारण को पहिली विधि

मृत्पात्रे द्रावितेवंगे-
क्षिपेत्तत्रसुवर्चिकाम्।
घर्षयेल्लोहदार्व्यातु-
यावत्तस्मातनूनपात्।

निसृत्यप्रदहेत्सर्वं-
स्वांगशीतलमुद्धरेत् ।
सुवर्चिकापनोदार्थं-
सलिलैःक्षालयेन्मुहुः ॥
ततोतिनिर्मलंग्राह्यं-
वंगभस्मभिषग्वरैः ।

आध पाव शुद्ध रांग को एक बड़े ठिकड़े मे पिघला कर दो पैसे भर कच्चा शोरा डाले और लोहे की कलछी से चलाता जाय जब कीच-सा गाढ़ा हो जाय तब फिर दो पैसे भर शोरा डाल कर रगड़े, जब फिर कीच-सा हो जाय तब और दो पैसे भर शोरा डाल कर रगड़े, इस प्रकार छः बार डाले, छहों बार कीच सा हो जाये तब न डाले जब ठीकरे में अग्नि जल कर शान्ति हो जाय तब उतार छुरी से सब राग को खुरचले और पीसकर एक प्याले में भर पानी से प्याले को भरदे और उस भस्म को पानी में मलकर थोड़ी देर रहने दे जब रांग नीचे बैठ जाय तब पानी को निकाल डाले इस प्रकार तीन बार धोवे जब शोरे की राख दूर हो जाय और राग मात्र की सफेद भस्म रह जाय उसे सुखाकर रख छोड़े जिस योग में चाहे उसमें मिलावे ।

दूसरी विधि

अथभस्मसमंतालं-
क्षिप्त्वाम्लेनविमर्दयेत् ।
ततोगजपुटोपक्त्वा-
पुनरम्लेनमर्दयेत् ।
तालेनदशमांशेन-
याममेकतत.पुटेत् ।
एवंदशपुटै पक्त वंगं-
भवतिमारितम् ॥

शोरेका मारा राग जो पहली विधि मे कह आये हैं उसकी जितनी भस्म हो उतनी ही शुद्ध हरताल डाले और कागजी नींबू के रस में एक प्रहर घोटे, पीछे शराव सपुट मे रख गजपुट मे फूंक दे फिर राग की दशांश हरताल डाल कर नींबू के रस मे पहर भर घोटे और गजपुट मे फूंके, ऐसे दस आंच देने से रांग निरुत्थ भस्म हो अर्थात् मित्र पंचक से भी न जीवे, मित्र पंचक आगे लिखेंगे ।

वंग की धातु वेधी भस्म तीसरी

श्वेताभ्रंश्वेतकाचंच-
विषसैंधवटंकणम् ।
स्नुहिक्षीरेदिनंमद्यं-
तेनवंगस्यपत्रकम् ।
लेप्यंपादांशकैःकल्कै-
र्चांधमूपागतंधमेत् ।
द्रावेयातेततोवंग-
पूर्वतैलेचढालयेत् ॥
वार्यादिलेपमेकत्र-
सप्तवाराणिकारयेत् ।
पुत्रजीवोत्थतैलेच-
ढालयेत्सप्तवारकम् ॥
तद्वंगजायतेतारंशंख-
कुन्देन्दुसन्निभम् ।

सफेद अभ्रक, सफेद काच, विष, सेंधानोन, सुहागा इन सब को थूहर के दूध मे घोटकर रांग के पतले २ पत्रो पर चतुर्थांश लेप करे, अन्ध मूषा मे रख कर फूंके जब बंग पतला हो तब पूर्वोक्त औषधियों के निकाले हुए तेल मे बुझावे पीछे नेत्रबाला आदि रूखडियो का लेपकर सात बार फूंके, पुत्रजीवी (जीयापोता) के तेल मे सात २ बार बुझावे तो बंग शंख-कुन्द पुष्प व चन्द्रमा के समान सफेद चांदी हो जाय ।

चौथी विधि

वंगेधर्षणकालएवभिषज-
क्षिप्त्वायवानीरजो ।
प्रत्येप्यक्रमश.शिलाजतु-
तथाभस्माप्यपामार्गज ।
क्षिप्त्वानिंबदलान्य-
रुष्कपिशितैर्भाडेतुचिंचात्वचो ।

भूयात्संस्तरसंस्थितानि-
पुरतःकुर्वन्तिभस्मान्यपि ॥

रांग को कडाई में गलाय तिस मे क्षण २ में अजवायन का चूरा थोडा २, अथवा शिलाजीत वा ओंगे की भस्म, वा नीम के पत्ते व मिलावे का चूर्ण वा इमली का चूर्ण डालता जाय, ये प्रत्येक वंग के मारक पदार्थ हैं, अर्थात् इन हर एक से वग की भस्म होती है।

पांचवीं विधि

वंगभस्मसमंकान्तं-
व्योमभस्मंचतत्समं ।
मर्दयेत्कनकांभोभि-
र्निंबपत्ररसैरपि ॥
दाडिमस्यमयूरस्य-
रसेनचपृथक्पृथक् ।
भूपालावर्त्तभस्माथ-
विनिक्षिप्तंसमांशकम् ॥
गोमूत्रकशिलाधातु-
जलैःसम्यग्विमर्दयेत् ।
ततोगुग्गुलतोयेनमर्द-
यित्वादिनाष्टकम् ॥
विशोष्यपरिचूर्ण्याथ-
समभागेनयोजयेत् ।
घृष्टंवव्वूलंनिर्यासेना-
कुलीवीजचूर्णकैः ।
ततःक्षिपेत्करंडान्त-
र्विधायपटगालितं ।
गोतकेपिष्ठरजनी-
सारेणसहयापयेत ॥

वंग की भस्म के समान कान्ति लोह की भस्म ले, और उतनी ही अभ्रक की भस्म मिला कर धतूरे के पत्ते, नीम के पत्ते, अनार के पत्ते और ओंगा इन प्रत्येक के रसमें अलग २ मर्दन करे पश्चात् राजावर्त्त मणि की भस्म समान मिलाय गोमूत्र और शिलाजीत के पानी में घोटे, इसी प्रकार ८ दिन गूगल के पानी में घोटे, पीछे सुखाकर पीस डाले और बबूल का गोंद और निरमिली के बीजों को पीस कर मिलावे पीछे कपर छान कर शुद्ध पात्र में भर रख छोडे और हलदी मिली गौ की छाछ के साथ इस व ग को १२ रत्ती पिलावे।

चतुर्भिर्वल्लकैस्तुल्यं-
रम्यंवंगंरसायनम् ।
निश्चितंतेननश्यंति-
मेहाविंशतिभेदकाः ॥
शालयोमुद्गसूपंच-
नवनीतंतिलोद्भवं ।
पटोलंतिक्ततुण्डीरंतक्रं-
पथ्यायशस्यते ॥

इस रीति से यह वंग भस्म रसायन है यह २० प्रकार के प्रमेहों को निश्चय दूर करे, चावल, मूंग की दाल, मक्खन, तेल के पदार्थ परवल, कंदूरी, और छाछ, ये इसके पथ्य हैं।

तालकंकर्कटास्थीनि-
शंखशुक्तीवराटिका ।
सिंधुकर्पूरसंयुक्तं-
मारयेद्वंगपर्वतम् ॥

हरताल, कैकडे की हड्डी, शंख, सीप, कौडी, नोंन, और कपूर, ये औषधी वंग पर्वत समान को भस्म करती हैं।

वग भस्म के गुण

वल्यदीपनपाचनरुचि-
करप्रज्ञाकरंशीतलं ।
सौंदर्यैकविवर्द्धनंहृत-
रुजनीरोगताकारकं ॥
धातुस्थैर्यकरंक्षयक्षय-
करं सर्वप्रमेहापहं ।
वगभक्षयतोनरस्यन-
भवेत्स्वप्नेपिशुक्रक्षयः ॥

शुद्ध रीति से भस्म किया वंग बल कारक,

दीपन, पाचन, रुचिकर्त्ता, बुद्धि बढ़ाने वाला, शीतल, कांतिकर, बुढापे को दूर करे, निरोग करे, धातु को स्थिर करे, क्षय और प्रमेह मात्र को दूर करे, वंग खाने वाले मनुष्य के स्वप्न में भी वीर्य स्खलित नहीं होवे।

वंग के अनुपान

कर्पूरसार्द्धं मुखगंधनाशं-
जातीफलैःपुष्टिकरंनराणां।
तुलसीपत्रसयुक्तंप्रमेहं-
नाशयेद्ध्रुवम्॥
घृतेनपांडुरोगंच-
टंकणैर्गुल्मनाशनम्॥

वंग भस्म कपूर के साथ खाने से मुख की दुर्गंधि का नाश करे, जायफल के संग पुष्टता, तुलसी पत्र संयुक्त प्रमेहों का नाश, घृत के साथ पांडुरोग, और सुहागे के साथ गुल्म रोग का नाश करे।

हरिद्रारक्तपित्तघ्नी-
मधुनाबलवृद्धिकृत्।
खंडयासहपित्तघ्नं-
नागवल्याचबंधनम्॥
पिप्पल्याचाग्निमांद्य-
त्वंनिशयाचोर्ध्वश्वासहृत्।
चंपकस्वरसेनैवदुर्गंधि-
नाशयेद्ध्रुवम्॥
निम्बकस्वरसेनाढ्य-
देहेदहनशांतये।
कस्तूरीवगसंयुक्तं-
भक्षणाद्वीर्यरोधकृत्॥
खदिरक्वाथयोगेन
चर्मरोगान्जयेदसौ।
पूगीफलस्यसार्द्धंना-
जीर्णंनाशयतेक्षणात्।
नवनीतसमायुक्तमस्थि-
जीर्णंनवंभवेत्॥

हलदी के संग रक्त पित्त को शांति करे, शहद के साथ बल बढावे, मिश्री के साथ पित्त शांति करे, पान के संग जकड़ी हुई देह को खोले, पीपल के साथ अग्निमंद को, हलदी संयुक्त ऊर्ध्व श्वास को, चंपा के साथ दुर्गंधि को, नींबू के रस संयुक्त दाह को, कस्तूरी के संग वीर्य का स्तंभन करे, खैर के काढे के संग चर्म रोग, सुपारी के साथ अजीर्ण को, दूर करे और मक्खन के साथ पुरानी हड्डियों को नवीन करे।

दुग्धसार्द्धंभवेत्तुष्टि-
र्विजयास्तंभनंभवेत्।
लशुनैर्वातजांपीडां-
नाशयेन्नात्रसंशयः॥
समुद्रफलसंयोगान्नि-
र्गुंड्यासहभक्षणात्।
कुष्ठंनाशयतेक्षिप्रं-
सिंहनादेमृगाइव॥
आघाटजटिकायोगा-
त्त्वंडत्वंनाशयेद्ध्रुवं।
देवपुष्पस्यसंयोगे-
समुद्रफलयोगतः॥
नागपत्ररसैर्लेप्याल्लिंग-
वृद्धिप्रजायते।
गोरोचनलवगेन-
तिलकोमोहनंभवेत्॥
एरंडजटिकायोगेघर्ष-
यित्वाचवगकम्।
लेपयेच्चललाटेच-
तेनशीर्षगदंजयेत्॥

दूध के साथ तुष्टि, भांगरे के साथ स्तभंन, लहसन के साथ वात पीडा का नाश, समुद्र फल और संभालू के साथ कुष्ठ नाश, चिर चटा की जड़ के साथ नपुंसकता, लौंग और समुद्र फल मिले पान के रस के साथ लिंग पर लेप

करने से लिंग वृद्धि करे, गोरोचन और लौंग के साथ तिलक मोहन करता है, अरण्ड की जड के साथ वंग को घिसकर लगाना मस्तक पीडा को दूर करता है।

कौब्जेऽपामार्गमूलेन-
प्लीहेटंकणसंयुतं ।
रसोनतैलयुङ्नस्य-
मपस्मारनिपूदनम् ॥
पुत्राप्त्यैरासभीक्षीरै
स्तक्राढ्य वातगुल्मनुत् ।
यवानिकायुतंवाते
वाजिगंधायुतंतुवा ॥
जलोदरेत्वजाक्षीर
संयुतंगुणकृद्भवेत् ।
जातीफलाश्वगंधाभ्यां
कटिपीडानिवारणं ॥

कुवड़ेपन दूर करने को औंगा की जड़ के साथ, लहसन के रस के तेल मे मिलाय नस्य देना मृगी रोग मे तापतिल्ली मे सुहागे के साथ पुत्रोत्पत्ति के निमित्त गधी के दूध मे, छाछ के साथ वायगोला में, अजवाइन के संग वा असगध के साथ वादी में, जलधर में वकरी के दूध के सग, कमरपीडा में जायफल और असगन्ध के साथ देनी चाहिये।

अशुद्ध वंग के दोष

पाकेनहीनःखलुवगकोसौ
कुष्ठानिगुल्मानिमहातिरोगान् ॥
पांडुप्रमेहारुचिवातशोणितं
बलापहारंकुरुतेनराणाम् ॥

कच्ची वंग भस्म–कोढ, गोला, घोरव्याधि पाडुरोग, प्रमेह, अरुचि, और वातरक्त को उत्पन्न करे, तथा वल का नाश करे।

वंगविकार शांति

मेषशृंगीसितायुक्तां
यः सेवते दिनत्रय ।
वंगदोपविमुक्तोसौ
सुखंजीवतिमानवः ॥

जो मनुष्य मेढासिगी को मिश्री के साथ तीन दिन खाय तो वगविकार शांति होवे।

इति श्री वगप्रकरणं सम्पूर्णम् ।

अथ जसद प्रकरणम्

खर्परंद्विविधप्रोक्तं
जसदशवकंतथा ।
रसोपिजसदप्रोक्तं
खर्परचगुणात्मकम् ॥

खपरिया दो प्रकार का है, एक जसद (जस्त) दूसरा शवक ये जस्ता भी खपरिया का भेद है, परन्तु इनमे खपरिया गुणयुक्त है।

जस्त शुद्धि

जसदंगालयेत्पूर्वं
दुग्धमध्येतुढालयेत् ।
एकविंशतिवारांश्च
खर्परंशुद्धिमिष्यते ॥

जस्त का शोधन और मारण वग के समान जानना, परन्तु तो भी इसका मारण विशेष कहता हू। जस्त को २१ वार गला २ कर दूध में वुझावे तो शुद्ध होवे।

अथ मारणम्

जसदंलोहजेपात्रे
द्रावयित्वापुनर्धमेत्।
अत्यंततप्ते निंवस्य
पत्रमेकविनिक्षिपेत् ॥
घर्षणाल्लोहदडेन
वह्निरुत्तिष्ठतिध्रुवम् ।
यथायथाभवेत्घृष्टिः
भस्मीभावस्तथातथा ॥
भस्मीभूतंपृथक्कृत्य
घर्षयेत्तत्पुनःपुनः ।
नेत्रयोगेपुसर्वेपु
भस्मीभूतमिदशुभम् ॥

लोहे के बडे और गहरे कलछे में ६ पैसेभर जस्ता डाल भट्टी में रख खूब धोंके, गरम होने पर दो तीन नीम के पत्र डाल लोहे के मूसल से रगडे, रगडने से आग निकलती है जिससे जस्ते की धान की खील की तरह सफेद भस्म हो जाती है, उस भस्म को अलग निकाल कर फिर रगडे और घोटे, इसी प्रकार जब तक सब भस्म न हो जाय तब तक घोटे, ऐसा करने से जस्ते की भस्म हो, यह भस्म केवल अंजन के काम की है, खाने के काम की नहीं यह खाने से बादी करती है, इसको १ रत्ती पीसकर नेत्रों मे आंजे तो नेत्र के सब रोगों को दूर करे। अथवा भस्म १० पैसे भर और काली मिरच का चूर्ण पैसेभर, दो पैसे भर मक्खन, तीनों को एक महीने पर्यंत कागजी नींबू के रस से घोट आध २ रत्ती की गोलियां बनावे, और एक गोली को बूंद भर बासे पानी में घिस कर प्रातःकाल नेत्रों मे लगावे तो धुंध को दूर करे।

दूसरी विधि

जसदस्यचतुर्थांशं
पारदंगंधकंप्रिये।
मर्दयेत्खल्वकेसम्यक्
कन्यानिम्बुरसैःपृथक्॥
लेपयेत्तेनपत्राणिगजाह्वे पाचयेत्पुटे।
एकमेवपुटेनैवभस्मसाज्जसदंभवेत्॥

जस्त के पत्रो का चतुर्थांश पारा,और गंधक मिला कर ग्वार पाठे के रस में खरल कर नींबू के रस में खरल करे, पश्चात् पत्रो पर लेप कर शरावसपुट में रख गज पुट में फूक दे तो एक ही पुट में जस्त की भस्म हो।

गुंजाद्वयतुजसदस्सर्व
रोगान्व्यपोहति।

दो रत्ती जस्त की भस्म सब रोगो को नाश करती है।

सामान्य गुणाः

जसदंतुवरंतिक्तं
शीतलंकफपित्तहृत्।
चक्षुष्यंपरमंमेहं
पांडुश्वासंचनाशयेत्॥

जस्त की भस्म-कसैली, कडवी, शीतल, कफ, पित्त, प्रमेह, पीलिया और श्वास कास नाश करे, नेत्रों को परमहित है।

जस्त के अनुपान

पुराणेगोघृतेनैत्र्यं
ताम्बूलेनप्रमेहजित्।
अग्निमन्थेनाग्निकरं
त्रिसुगन्धैस्त्रिदोषनुत्।

जस्ते की भस्म पुराना गोघृत सें नेत्रों को हित करे पान के साथ प्रमेह का नाश करे,अरणी के साथ अग्नि बढावे, त्रिसुगंध के साथ खाने से सन्निपात को दूर करे।

सतंदुलहिमैर्हन्ति
खजूरैमायुजंज्वरम्।
यवानिकालवंगाभ्यां
युतंशीतज्वरंजयेत्॥

पित्तज्वर में चावल के हिम और खजूर के साथ, और शीतज्वर मे लोंग तथा अजवायन के साथ खाय।

खजूरतण्डुलहिमैरक्ता-
तीसारनाशकृत्।
शर्कराजाजिसंयुक्तम
तिसारंवमिंजयेत्॥

खजूर और चावल के हिम के साथ रक्ता-तिसार का नाश करे, जीरे और मिश्री के साथ वांति और अतिसार नष्ट होवें।

सदोषजस्त के दोष

अपक्वंजसदरोगान्
प्रमेहाजीर्णमारुतान्।

वमिंभ्रमिंकरोत्येन
शोधयेन्नागवत्ततः ॥

कच्चा जस्त, प्रमेह, अजीर्ण, सरदी वमन, भ्रम, इतने रोग प्रगट करता है, अतएव इसको नाग के समान शोधन करे।

अथास्य शांति

वालाभयासितायुक्तां
सेवयेद्योदिनत्रयं।
जसदस्यविकारोस्य
नाशमायातिनान्यथा ॥

छोटी हरड और मिश्री तीन दिन सेवन करने से जस्त विकार शान्ति होवें।

इति श्री बृहद्रसराजसुन्दरे जसदप्रकरणं समाप्तम्

अथ नाग प्रकरणं लिख्यते

उत्पत्ति

दृष्ट्वाभोगीसुतांरम्यां
वासुकिस्तुमुमोचयत्।
वीर्यंजातस्ततोनागः
सर्वरोगापहोनृणाम् ॥

पहिले वासुकी नाग भोगी नाग की सुन्दर कन्या को देखकर वीर्य परित्याग करता हुआ इसी से सर्व रोग नाशक सीसा प्रगट हुआ।

नागंचद्विविधंप्रोक्तं
कुमारंसमलंतथा।
कुमारंरसमार्गेषु
योजनीयंगुणाधिकम ॥

वह सीसा दो प्रकार का है कुमार और शमल तिनमें कुमार रस क्रिया मे योजना करने में उत्तम है।

नाग की परीक्षा

द्रुतौयातेमहाभारं
छेदेकृष्णंसमुज्ज्वलं।
पूतिगंधिर्वहिःकृष्णं
शुद्धंशीशमतोन्यथा ॥

जो पतला करने से भारी, तथा तोडने में अन्दर से काला वा उज्ज्वल निकले और वास आती हो, बाहर से काला दीखे, ऐसे सीसे को शुद्ध जानना इससे व्यतिरिक्त अशुद्ध हैं।

नागशोधनम्

फलत्रिककषायेवा-
कुमारीरसेवाकरिवर
सलिलेवागालयेत्सप्तवारं।
खदिरदहनतप्तंलोह-
पात्रेस्थितसत्तदनु-
सपदिनागोजायतेशुद्धभावः ॥

लोह पात्र में खैर की लकडी से सीसे को गलाकर त्रिफला के काढे, ग्वार पट्ठे के रस, और हाथी के मूत्र में सात २ वार बुझावे तो सीसा शुद्ध हो, अथवा अग्नि मे पिघलाय छेददार हाडी मे आक का दूध भर उसमें तीनवार बुझावे तो सीसा शुद्ध हो।

नागमारणम्

त्रिभिःकुंभिपुटैर्नागो-
वासारसविमर्दितः।
सशिलोभस्मतामेति-
तद्रज.सर्वमेहनुत् ॥

सीसा वा मनसिल का चूर्ण अडूसे के रस मे खरलकर गजपुट में फूंक दे ऐसे तीन पुट में सीसे की उत्तम भस्म हो।

दूसरी विधि

भागैकमहिफेनस्यनाग-
भागचतुष्टयम्।
घर्षणान्निंबकाष्ठेनमंद-
वन्हिप्रदानतः ॥
नागभूतिर्भवेच्छ्वेता-
वीर्यदाढर्यकरीमताः।

सीसे की चौथाई अफीम ले दोनो को खिपरे में डाल कर अग्नि देवे और नींबू की लकड़ी से चलाता जाय तो सीसे की सफेद भस्म हो और खाने से वीर्य को बढ़ावे ।

तीसरी विधि

कुडवंनागपत्राणां
कुनटयास्यात्पलार्द्धकम् ।
तंदुलीयरसैर्यामं-
यामंवासारसैस्तथा ॥
संमर्द्य चक्रिकांकृत्वा-
घर्मेसंशोष्यतापुनः ।
शरावसंपुटेकृत्वा-
पचेद्वन्योपलैर्भिषक् ॥
एवसप्तपुटैन गोभस्मी
भवतिनिश्चितम् ।
द्विगुंजोयंध्र वंह्न्या-
त्प्रमेहानखिलान्गदान् ॥

८ पैसे भर सीसे के-चने की दाल के समान छोटे २ वर्क बनावे, उनमें पैसे भर मनसिल डाल चौलाई के रस में एक प्रहर घोटे और पीछे एक प्रहर अडूसे के रस मे घोट कर धूप में सुखादे, पश्चात् शराव सपुट मे रख जंगली उपलों की २० आंच दे, इसी प्रकार मैनसिल बार २ डाल और घोट २ कर सात आंच और दे तो सीसा भस्म हो, दो या चार रत्ती भस्म बड़ी इलायची के चूर्ण और शहद के साथ खाय तो प्रमेह और मूत्रस्राव आदि सर्व रोग नाश होवे ।

नाग की हरित भस्म

खर्परेनिहितंनागं-
रविमूलेनघर्षयेत् ।
यामत्रिकैर्भवेद्भस्म-
हरिद्वर्णमदुषणम् ॥

खीपरे में शीशा डाल चूल्हे पर चढाय अग्नि दे और आक की जड से रगडता जाय तो ३ प्रहर में सीसे की हरे रंग की भस्म होवे ।

तथा पीली भस्म

शिलागंधककर्पूरं-
कुंकुमंमर्द्दयेत्समम् ।
जंवीरस्यद्रवैर्याम-
तत्समंनागपत्रकम् ॥
लिप्त्वालिप्त्वापुटेपाच्य-
यावत्षष्टिपुटंभवेत् ।
तनागंविद्युदाभास-
जायतेनात्रसंशयः ॥

मनसिल, गंधक, कपूर, और केशर को जंभीरी के रस में घोट सीसे के कटक वेधी पत्रों पर लेप कर गजपुट में फूंक दे इस प्रकार ६० पुट देने से शीशे की बिजली अर्थात् सोने के समान पीली भस्म होवे ।

तथा लाल भस्म

कुमारीपादघातेन-
तत्क्षणान्म्रियतेफणी ।
पुटेनशतकेनापि-
सिंदूरंकेवलंभवेत् ॥
तारेताम्रे तथावंगेशत-
वेधीभवेद्ध्रुवम् ।

सीसे को पिघलाकर ग्वारपट्ठे के मूसले से रगडे तो तत्क्षण सीसा भस्म होवे, और ग्वार पट्ठे के रस मे सीसे के पत्र खरल कर गजपुट से फूंके ऐसे १०० पुट देने से सिंदूर के समान भस्म हो, इसको चादी वा तांबे मे गलाकर डाले तो इसका शतांश भाग वेध कर सुवर्ण करे ।

सातवीं विधि

तांबूलीरससंपिष्ट-
शिलालेपात्पुनःपुनः ।
द्वात्रिंशद्भिःपुटैर्नागे-
निरुत्थोयातिभस्मता ॥

पान के रस मे मैनसिल घोटकर सीसे के

ककट वेधी पत्रों पर लेप कर शरावसपुट मे रख कर फूंक दे इस प्रकार ३२ पुट देने से सीसे की निरुत्थभस्म होवे ।

आठवीं विधि

भूनागागस्तिपत्राणि-
पिष्ट्वापात्रंविलेपयेत् ।
वासापामार्गतत्क्षारं-
तत्रनागयुतंक्षिपेत् ॥
गुरूक्तितश्चतुर्थांशं-
वासादर्व्याविघट्टयेत् ।
यामैकेनभवेद्भस्मततो-
वासारसान्वितम् ॥
मर्दयेत्संपुटेनैकं-
नागसिंदूरकंशुभम् ।

केंचुए और अगस्त वृक्ष के पत्ते पीस एक पात्र में लेप करे, उसमें सीसा भर चूल्हे पर चढ़ावे, जब सीसा पिघल जाय तब अडूसा और ओंगा का क्षार सीसे का चतुर्थांश ले थोड़ा २ डालकर अडूसे की मोटी लकड़ी से रगड़ता जाय तो सीसा एक प्रहर में भस्म हो, फिर अडू से के रस मे खरल कर गजपुट में फूके तो सीसे की लाल भस्म होवे ।

नवम विधि

पलद्वयंमृतंनागं-
हिंगुलचपलद्वयम् ।
शिलाकर्षमिताग्राह्या-
सर्वतुल्यंहिगंधकम् ॥
निंबुनीरेणसंमर्द्य-
ततोगजपुटेपचेत् ।
तदानागेश्वरोयंस्या-
न्नागराजसुतोपमः ॥

शुद्ध सीसे की भस्म ८ तोला, हिंगुल ८ तोला, मनसिल तोले भर, गधक १७ तोला, सब को नींबू के रस में खरल कर गजपुट की आंच देवे तो यह नागेश्वर रस तयार हो ।

नाग भस्म के गुण

क्षयपवनविकारेगुल्म-
पांड्वामयेपुभ्रमकृमि
कफशूलेमेहकासामयेषु ।
ग्रहणिगुदगदेवै-
नष्टवन्होप्रशस्तः
शुभविविकृतनागः कामपुष्टिंददाति ॥

सीसे की भस्म क्षय, बादी गोला, पीलिया भ्रम, कृमि, कफरोग, शूल, प्रमेह, खांसी, सग्रहणी, बवासीर आदि गुदा के रोग, और मदाग्नि का नाश करे, कामदेव को बढ़ावे ।

नाग के अनुपान

मृतंनागंसितायुक्तं-
मायुंवायुंशिरोऽन्यथां ।
नेत्ररोगंशुक्रदोषं-
प्रलापंदाहकंजयेत् ॥
प्रददातिरुचिंकामं-
वर्द्धयेत्पथ्यसेविनः ।
स्वबुद्ध्याकल्पयेद्धी-
माननुपानंगदेपुच ॥

शीशे की भस्म मिशरी के साथ खाने से वात, पित्त, मस्तक रोग, नेत्ररोग शुक्रदोष, प्रलाप और दाह को दूर करे, अन्न में रुचि और पथ्य-सेवी के कामदेव की वृद्धि करे, चतुर मनुष्य सब रोगों मे अपनी बुद्धि से अनुपान कल्पना करे ।

अशुद्ध नाग दोष

कुष्ठानिगुल्मारुचिपाण्डु-
रोगान्क्षयकफंरक्तविकारकृच्छ्रं ।
ज्वराश्मरीशूलभगंद-
राद्यंनागत्वपक्वंकुरुतेनराणां ।

अशुद्ध सीसे की भस्म कुष्ठ, गुल्म, अरुचि पाडु, क्षय, कफरोग, रक्तविकार, मूत्र कृच्छ्र, ज्वर, पथरी, शूल, भगंदर, इन रोगों को प्रगट करे ।

नागदोष शांति

हेमंहरीतकींसेवेत्-
सितायुक्तंदिनत्रयम् ।
अपक्वनागदोषेण-
विमुक्तःसुखमेधते ॥

सुवर्ण भस्म और हरड खांड के साथ ३ दिन खाने से अपक्व नाग दोष से निस्संदेह शांति होवें।

इति श्री बृहद्रसराज सुन्दरे नागप्रकरणं समाप्तम्

अथ लोहप्रकरणं तत्रादौ उत्पत्ति

पहले देव और दैत्यों ने मिलकर समुद्र मंथन किया उसमें देवताओं का जीवन अमृत प्रगट हुआ उसे जब देवताओं ने पान किया तो बहुत सूक्ष्म बिन्दु उड़कर पृथ्वी में गिरे उनको श्री शिवजी ने पत्थर रूप लोहा बनाकर पर्वतों में छुपा दिया, इस प्रकार पापसे रोग पीडित मनुष्योंके लिये यह लोहा पैदा हुआ।

लोह भेद

मुण्डस्तीक्ष्णंतथाकांतं-
भेदास्तेषांत्रयोदश.[1] ।

लोहा तीन प्रकार का है यथा मुण्ड, तीक्ष्ण कांत इन तीनों के १३ भेद हैं।

यथा

मृदुकुण्डचकांडारं-
त्रिविधमुंडमुच्यते ।

मुण्ड लोहे के तीन भेद हैं यथा मृदु, कुड कांडार।

खरसारंचहोत्तालं-
तारवट्टंविडंतथा ।
काललोहंगजाख्यंच-
षड्विधंतीक्ष्णमुच्यते ॥

तीक्ष्ण (फौलाद) लोहा ६ प्रकार का है, यथा खरसार, होत्ताल, तारवट्ट, विड, काललोह, और गजाख्य ।

कांतलोहंचतुर्द्धोक्तं-
रोमकंभ्रामकंतथा ।
चुंबकद्रावकंचेव-
गुणास्तस्योत्तरोत्तराः ॥

कान्तलोह ४ प्रकार का है—यथा रोमक, भ्रामक, चुम्बक और द्रावक इनमें उत्तरोत्तर अधिक गुण हैं ।

पंचमंतुक्वचित्प्रोक्तं-
कर्पणंचरसाणवे ।
यद्यदाकरसंभूतं-
तत्तद्देशजरोगनुत् ॥

कहीं २ पंचम कर्पण नाम का लोहा कहा है, यह जिस देश की खान से प्रगट हो उसी देश के रोगो को दूर करे ।

खरसार के लक्षण

जो नेत्रबाला के पुष्प के रंग के समान हो वह सार वा खरसार कहाता है, वह स्थूल और लघु के भेद से दो प्रकार का है, एक औड् यानी उडिया देश का, दूसरा कलिंगज। जो थूहर के पत्ते समान हो और जिसमें छेद हों, सो औड्र और जो तोता के पिंचरे के वर्ण समान तथा नरम हो वह कलिंगज कहलाता है अर्थात् कलिंग देश में पैदा होता है ।

गजवल्लीतिविख्याता-
सर्वलोहस्यमातराः ।
स्थूललध्वगभेदेन-
तत्स्याद्दृत्रादिसंभवः ॥

सब लोहो की माता गजवेलि नाम विख्यात स्थूल और लघु के भेद से दो प्रकार की है, यह

---

१ तत्रोत्पत्तिमाह पुरालोमिलदैत्यस्यनिहतस्य-सुरैर्युधि ।
उत्पन्नानि शरीरेभ्यो लोहानिविविधानिच ।

वज्र के लोह से प्रकट है, वह वज्र लोहा दश प्रकार का है।

असितंकाललोहाख्यौ-
रक्तंलोहितवज्रकौ।
मायूरवज्रकंचान्यदन्य
त्तित्तिरवज्रकम्॥
रोहिणीवज्रकचान्यदन्य-
द्वाशुकवज्रकम्।
एवंदशविधवज्रं-
गुणवानुत्तरोत्तरम्[1]॥

असित, काल, लोह, रक्त, लोहित, वज्रक, मयूरवज्र, तित्तिरवज्रक, रोहिणीवज्र, शुकवज्र, ये गोरख संहिता के मत से दस प्रकार का वज्र संज्ञक लोहा है इन में क्रम से एक से दूसरा अधिक गुणवाला है।

पांड्य लोह के लक्षण

जो घिसने से गोल होजाय और जिस में सुवर्ण की-सी रेखा प्रतीत हों उसे पांड्यलोहा कहते हैं वह सफेद और स्याह के भेद से दो प्रकार का है।

कान्त लोह के भेद

एकास्यद्विमुखास्यच-
वेदास्यंशंखचक्रिक।
सर्वतोमुखमित्येव-
मुत्तमाधमकान्तकम्॥
भेदानालक्षणंयच्च-
नत्रमूस्तानिगौरवात्।

पहले जो चुंबक और भ्रामक कांत लोह के भेद कहे हैं उसी के एकमुख, द्विमुख, चतुर्मुख शंखचक्रिक और सर्वतोमुख, ये छः भेद हैं और ये उत्तम मध्यम और कनिष्ट से अनेक भेद हैं, परन्तु हमने ग्रन्थ विस्तार के भय से मुख्य २ लिखे हैं सब नहीं लिखे।

मुंडंतुवर्त्तुलंभूमौ-
पर्वतेपुचदृश्यते।
गजवल्यादितीक्ष्णं-
स्यात्कांतंचुंबकसंभवं॥
मुण्डात्कटाहपत्रादि-
जायतेतीक्ष्णलोहतः।
खड्गादिशस्त्रभेदास्यु-
कांतलोहंतुदुर्लभम्॥

मुंड लोहा पृथ्वी वा पर्वतो में वर्त्तुल रूप से मिलता है और तीक्ष्ण लोहा गज वेलि आदि से प्रकट होता है, कांति लोह चुंबक पत्थर से।

मुंड लोह से कढ़ाई तवा आदि वस्तु बनते हैं, तीक्ष्ण लोह के तलवार आदि शस्त्र बनाते हैं, और कांतलोह दुर्लभ है।

किट्टादशगुणं मुंडं-
मुंडात्सारंचतुर्गुणं।
सारादौड्रंद्विगुणितं-
कालिंगंचततोष्टधा॥
तस्माद्भद्रंदशगुणं-
भद्राद्वज्रंसहस्रधा।
वज्रात्षष्टिगुणंपाड्यं-
कांतिजंशतधाततः॥
सर्वलोहोत्तमंयस्मा-
त्तस्मात्कोटिगुणमतं।
यल्लोहेयद्गुणंप्रोक्त-
तत्किट्टमपितद्गुणं॥

कीट से दश गुण मुंड, मुंड से दश गुण सार, सारसै द्विगुणविशेष उडिया देश का लोह, इससे आठ गुणा कलिंग देशीय लोह जिससै सौगुण विशेष भद्र संज्ञक लोह, भद्र से हजार गुण विशेष वज्र लोह, वज्र से साठ गुण विशेष पांड्य लोह, और पाड्य से सौगुण विशेष कांति लोह में गुण कहते हैं, जितने गुण जिस लोह मे है उतने ही गुण उसकी कीट मे जानने।

१. पत्रनदृश्यते लौहेतीक्ष्णं लोहतदुत्तमम्।
कांतादिखलुभेदानि ज्ञातव्यानि विशेषतः।

कांतिलक्षगुणं प्रोचु-
रसकर्मविशारदाः ।
स्फटिकोऽर्थंकोटिगुणं-
विद्युत्संभूतदुर्लभम् ॥

काल लोह में लक्ष, और स्फटिक के लोह में करोड़ गुण हैं, तथा बिजली से पैदा लोह पृथ्वी पर दुर्लभ है, अब प्रथम कहे लोहो के गुण भाषा में पृथक् पृथक् लिखते हैं।

मृदु लक्षण

जो शीघ्र पतला होजाय और घन की चोट से न फूटे, चिकना और नरम हो तो मृदु लोह, कहलाता है ये उत्तम है।

कुण्ड लक्षण

घन की चोट से कठिनता से टूटे सो कुंढ लोह मध्यम है ।

कांडार लक्षण

जो घन की चोट से शीघ्र टूट कर अन्दर से काला निकले उस मुंढ को कांडार लोह का भेद कहते हैं।

तीक्ष्ण के छः भेदों के पृथक २ लक्षण तिनमें प्रथम खर के लक्षण

कठिन और तोड़ने मे अन्दर टेढ़ी रेखा पारे की-सी मालूम हों और बोझा रखने से न नवे उसे खर लोह कहते हैं ।

सार लक्षण

जो पृथ्वी से प्रगट पीला और कुटिल रेखा सयुक्त तोढने मे अति कठिन हो उसे सार लोह कहते हैं।

होत्ताल लक्षण

जो काला और पीला कुटिल रेखा संयुक्त तोडने मे अति कठिन हो उसे होत्ताल लोह कहते हैं।

तार लक्षण

जो वज्र के समान प्रकाशित, सूक्ष्म रेखा सयुक्त काला और भारी हो उसको तार लोह कहते हैं।

काल लक्षण

जो काला और नीला, चिकना और भारी घन की चोट से न टूटे उसे काल लोह कहते हैं।

कांत लोह की परीक्षा

पात्रे यस्मिन्प्रसरतिजले-
तैलबिंदुर्नलिप्तो ।
हिंगुर्गंधविसृजति-
निजतिक्ततांनिंबकल्कः ॥
पाच्यंदुग्धंभवतिशिखरा-
कारतानैतिभूमौ ।
कांतंलोहंतदिदंमुदितं-
लक्षणोक्तंतथान्यत् ॥

कांति लोह के पात्र मे पानी भरकर तेल की बूंद डाले तो फैले नहीं, और हींग रखने से हींग की वास न आवे, नीम का कल्क रखने से मीठा हो जाय, दूध औटाने से उफने नहीं किंतु पर्वत के समान ऊंचा हो जाय, उसे कांत लोह कहते हैं । अब कात लोह के भ्रामकादि भेदो को अलग २ लिखते हैं तहा प्रथम ।

भ्रामक के लक्षण

भ्रामयेल्लोहजातिंतु-
तत्कान्तंभ्रामकमतम् ।
चुंबयेच्चुम्बककांतं-
कर्षयेत्कर्षकंतथा ॥
साक्षाद्यद्द्रावयेल्लोह-
तत्कांतद्रावकंभवेत् ।
तद्रोमकांतस्फुटिताद्यतो-
रोमोद्गमोभवेत् ॥

जो लोह की जाति मात्र को भ्रमावे उस

कांत को भ्रामक कहते हैं, और जो अन्य लोह को चुम्बन कर लेवे उसे, चुंवक कहते हैं, और जो आकर्षण करे, उसे कर्षक, तथा नरम करदे, उसे द्रावक, और जो तोडने से रुएं से मालूम दे, उसे रोमक नाम कांत लोह जानना।

पीतंरक्तंतथाकृष्णं-
त्रिवर्णंस्यात्पृथक्पृथक्।
क्रमेणदेवतास्तत्र-
ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः॥

कांत लोह का पीला, काला और लाल रंग हैं, उनके क्रम से ब्रह्मा, विष्णु और शिव देवता जानने, इसमें पीला स्पर्शवेधी और काला रसायन सयोग में लेने लायक, तथा लाल वर्ण वाले कांति लोह को पारे के बंधन में लेना चाहिये, और भ्रामक अधम है चुम्बक मध्य, और कर्षक उत्तम, तथा द्रावक उत्तमोत्तम है।

कांताभावेतीक्ष्णलोहंच
ग्राह्यंतल्लोहवैसंमृदुत्वंविधत्ते।
मुंडंत्याज्यंसर्वथानैवग्राह्यं-
यस्मान्मुंडेभूरिदोपावदंति॥

कांत लोह के अभाव में तीक्ष्ण लोह लेना चाहिये, वह उत्तम और नरम होता है और मुंड लोह को कदाचित् ग्रहण न करे, क्योंकि इसमें बहुत दोष रहते हैं।

अशुद्धन्तुमृतंलोह-
मायुहारिरुजाकरम्।
कुष्ठांगमर्दहृत्पीडांदद्या-
त्तस्मात्सुशोधयेत्॥

विना शुद्धि के मारा लोहा आयुष्य-को घटावे, तथा रोग, कोढ, अंगो का टूटना, हृदय पीडा को करे इस वास्ते लोह को शुद्ध करे।

लोह शोधनम्

गुरुताद्दढताक्लेदी-
कश्मलीदाहकारकः।
अश्मदोपःसुदुर्गंधो-
सप्तदोपाथसस्यच॥

भारीपना, दृढता, क्लेद, कश्मल, दाह कर, गिरि दोष और दुर्गंध ये सात दोष लोह में स्थित हैं।

तथा दूसरा प्रकार

गरलंक्रमवांतिवीर्यहाऽति-
दोषाप्रवदंतिशोधकाः।
अथशोधनभावकान्पुटा-
न्विधिनैकेनवदंतिशूरयः।
शशरक्तेनसंलिप्तं-
चिंचार्कपयसायसं।
दलंहुतानेध्मातंसिक्ते-
त्रैफलवारिणा॥
एवंत्रिशःकृतेलोहं-
शुद्धिमाप्नोत्यसंशयम्।

लोहे में विष, क्लम, वमन और वीर्य नाश दोष रहते हैं— इसलिये लोह शोधन कहता हूँ, लोहे पर शशे के रुधिर का लेप कर अग्नि में तपाय त्रिफलाके काढेमे बुझावे, इस प्रकार तीन पुट देकर इमली और आक के दूध का अलग २ लेपकर तपा २ कर तीन २ वार त्रिफला के काढे में बुझावे तो कान्तादि लोह शुद्ध होवें।

तीसरा प्रकार

सर्वलोहानितप्तानि-
कदलीमूलवारिणा।
सप्तधाभिर्निषिक्तानि-
शुद्धिमायात्यथोत्तमम्।

सब लोहो को तपा २ कर केला की जड के रस में सात बार बुझावें तो शुद्ध होवें। यह सुगमरीति है।

शुद्धिमायातितीक्ष्णंच-
मुंडंनिर्गुंडिसेचनात्।

इतराणिचलोहानि-
सर्वाण्युलूकविष्टया ॥

सम्हालू के रस में तीक्ष्ण और मुण्ड लोह बुझाने से शुद्ध होते हैं, और बाकी, उल्लू की बीठ के रस में लोह शुद्ध होते हैं।

समुद्रलवणोपेत-
तप्तं निर्वापितंखलु ।
त्रिफलाकथितेनूनं-
गिरिदोषभयस्त्यजेत् ॥

लोह को तपाय २ समुद्र नोन संयुक्त त्रिफला के काढ़े में बुझाने से लोह में जो पर्वत दोष रहता है वह दूर हो।

शुद्ध लोह की परीक्षा

नविस्फुलिंगानचबुद्बुद्बु - ।
दायदायदानचैपांपटलंनशब्दः ।
मूषागतंरत्नसमंस्थिरंच
तदाविशुद्धं भवदन्तिलोहम् ॥

जिसमें चिनगारी न निकलें, पानी में बुझाने से बबूला न निकलें, तथा पर्त न हो मूषा में रखने से रत्न के समान स्थित रहे, उसे शुद्ध लोह कहते हैं।

सम्यगौषधकल्पानां-
लोहकल्पप्रशस्यते ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन-
लोहमादौविमारयेत् ॥

सब औषधियों के कल्प में लोह कल्प श्रेष्ठ है, इसलिये प्रथम लोह का मारण करे।

नातःपचेत्पंचपलादर्वा-
गूर्ध्वं त्रयोदशात ।
आदौमंत्रस्ततःकर्म-
कर्त्तव्यंमत्रमुच्यते ॥

लोहे को पांच पल से कम और तेरह पल से जियादा न फूंके, प्रथम मत्र को पढ़ पीछे मारण आदि कर्म करे मंत्र यह है ओ३म् अमृतोद्भवाय स्वाहा।

नरसेनविनालोहंन-
लोहंचाभ्रकंविना ।
एकत्वेनशरीरस्यबंधो-
भवतिदेहिनाम् ॥
पारदेनविनालोहंयः
करोतिपुमानिह ।
उदरेतस्यकीटानि-
जायंतेनात्रसंशयः ।

पारे अथवा अभ्रक बिना लोह और शरीर की एकता नहीं हो, और देह में लोहा ठहरे नहीं इस लिये लोह में पारद वा अभ्रक का संस्कार करे । जो वैद्य पारे के बिना लोह की भस्म करते हैं, वह भस्म रोगी के पेट में कृमि पैदा करती है, इसमें संशय नहीं है।

फौलाद की भस्म

शुद्धं लोहभवंचूर्णं-
पातालगरुडीरसैः ।
मर्दयित्वापुटेद्वन्हौ-
दद्यादेवंपुटत्रयम् ॥
पुटत्रयंकुमार्याश्च-
कुठारछिन्नकारसैः ।
पुटषट्कंततोदद्या-
देवंतीक्ष्णमृतिर्भवेत् ॥

फौलाद के चूर्ण को पाताल गरुडी (छिलहिंटा) के रस में खरल कर, शराव संपुट में रख कर ऊपर मिट्टी करे, और आरने कंडों के तीन पुट दे, इसी प्रकार ग्वारपट्ठे के रस मे घोट कर ३ पुट दे और हड़संकरी के रस मे घोटकर ६ बार गजपुट में फूंके तो तीक्ष्ण फौलाद लोह भस्म होवे।

दूसरी विधि.

द्वादशांशेनदरदं तीक्ष्ण-
चूर्णस्यमेलयेत् ।

कन्यानीरेणसंमर्द्य
यामयुग्मंतुतत्पुनः ॥
शरावसपुटेकृत्वा-
पुटेद्गजपुटेनवैः ।
सप्तधैवंकृतंलोहं-
रजोवारितरंभवेत ॥

फौलाद के चूर्ण का बारहवा हिस्सा हिंगुल मिला कर ग्वारपट्ठे के रस मे दो प्रहर खरल करे, परचात् शराव संपुट मे रख कपर मिट्टी कर गजपुट में फूंक दे, ऐसे सात पुट देने से लोह की भस्म पानी पर तैरने लगे।

तीसरी विधि

शुद्धंसूतंद्विधागंध-
खल्वेकृत्वाथकज्जलीं ।
द्वयोःसमंलोहचूर्णं-
मर्द्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥
यामद्वयात्समुधृत्य-
तद्गोलंताम्रपात्रके ।
आच्छाद्यैरंडपत्रैश्च-
यामार्द्धेत्युष्णताभवेत् ॥
धान्यराशौन्यसेत्पश्चात्-
त्रिदिनान्तेसमुद्धरेत् ।
संपेष्यगालयेद्वस्त्रे-
सत्यंवारितरंभवेत् ॥
कांततीक्ष्णतथामुंड-
निरुत्थजायतेध्रुवं ।

पारा १ भाग, और गंधक २ भाग, दोनों की खरल में कजली करे, फिर दोनों की बरावर लोह चूर्ण ले ग्वारपट्ठे के रस से दो प्रहर घोट गोला बनावे और तावे के पात्र मे अड के पत्तो से ढक दो प्रहर धूप में रखे, पश्चात् धान की राशि में तीन दिन गाडे, चौथे दिन निकाल पीस कर एक वस्त्र में छान ले तो यह सार पानी पर तैरने लगे इसी रीति से कान्त, तीक्ष्ण, और मुंड तीनों लोहो की निरुत्थ भस्म होती है, इसे सुवर्ण पर्पटी मे डालते है, और योगराज योग मे डालते हैं नवायस चूर्ण मे डालते हैं, तब यह औषधि गुण करती है, और खामी दूर करने को लोह रसायन के साथ देते हैं।

चतुर्थ विधि

लोहचूर्णपल॰॰ल्वं-
सोरकस्यपलंतथा ।
अश्वगंधापलंचापि-
सर्वमेकत्रमर्द्दयेत् ॥
कुमार्याद्विदिनंपश्चा-
द्गोलकञ्चसुपत्रकैः ।
सवेष्ट्यचमृदालिप्त्वा-
पुटेद्गजपुटेनच ॥
स्वांगशीतसमुद्धृत्य-
सिंदूराभमयोरजः ।
मृतंवारितरमाद्यं-
सर्वकार्यकरंपरम् ॥

लोहा चूर्ण, शोरा और अश्वगंध प्रत्येक चार २ तोला मिलाकर १ दिन ग्वारपट्ठे के रस में खरल करे और गोला बनाय अड के पत्तों में रख ७ कपर मिट्टी कर गजपुट में फूंक दे, फिर स्वाग शीतल होने पर निकाले इसका रग सिंदूर के समान हो और पानी में तैरे यह सब कार्यो मे उत्तम है।

लोह की सर्वोत्कृष्ट भस्म

आदौलोहविचूर्णितंतदनु-
गोतोयेस्यभाव्यदिने ।
रात्रौचैवपुटाश्चविंशति-
मिताकूर्माख्ययंत्रेशुभे ॥
एववैत्रिफलाजलस्य-
कथिताभावाश्चपष्टीपुटा ।
कन्यायारसभावनाश्च-
कथिताचाष्टौचवैद्य पुटाः ॥
वज्रार्कोहलिनींगुदीद्विर-
जनोगुंजातुरगीघना ।

निर्गुंडीगरुडीकुठेरकनकं-
वन्हिश्चमत्स्यालता ॥
हेमीहंसपदीतथामृतलता-
भृंगेन्द्रवृत्तेदिने ।
रात्रौतद्रसकौपृथक्पृथग-
हौसप्तैवभावाःपुटाः ॥
राजीतक्रयुतंसुखल्वकतले-
पिष्टादिनैकंदृढं ।
भावाश्चैवपुटाश्चसप्त-
कथितासर्वैश्चवैद्याधिपैः ॥
पश्चाल्पाःकथिताभवादिन-
दिनेनित्यंपुनःसूरभिः ।
रात्रौसप्तपुटाश्चसन्निगदि-
तायंत्रेचकूर्माभिधैः ।
पश्चाद्भावपुटाश्चपच-
सततंपंचामृतानांपुन ।
स्तश्चूर्णंचदशांशक सुदरद-
मुत्काथ्यनारीपये ॥
गोदुग्धयदिवात्रयोपि-
सततपिष्टाचभावाःपुटेत् ।
पश्चादर्द्ध सुपारदेनशुचि
नागंधेनकन्यारसैः ॥
तच्चूर्णंपरिमर्द्दयेद्दृढ
तरंसंपाचयेत्संपुटे ।
पश्चात्केवलकन्यकाशुचि-
रहैर्भस्मत्रिशःपाचयेत् ॥
पश्चात्कज्जलिसिन्नि
भजलतरंशुद्धंचलोहंभवे ।
देवंप्रोक्तवलाजलै
परिहततल्लोहमुक्त शुभम् ॥

शुद्ध लोहे के चूर्ण को दिन मे गोमूत्र में खरल कर रात्रि को गजपुट मे फूक दे, इस प्रकार कच्छप यत्र मे २० पुट देवे, इसी प्रकार त्रिफला के रस की भावना दे २ कर ६० बार गजपुट में फूके, पीछे ग्वारपट्ठे के ८ गजपुट दे, तथा थूहर, आक, कलयारी, गोदी, हलदी, दारुहलदी चिरमिठी, असगंध, नागरमोथा, निर्गुंडी, पातालगरुडी, वनतुलसी, धतूरा, चित्रक, कुटकी, कांगनी, मछेछी, सोनजुही, हंसपदी, गिलोय, भांगरा और कूडा प्रत्येक के क्वाथ वा रस मे दिन को खरल करे, रात्रि को गजपुट मे फूके, इस प्रकार सात २ दिन करे, इसी तरह राई और छाछकी सात २ भावना देवे, पीछे पंचामृत की भावना देकर पांच बार गजपुट मे फूंके पीछे इस लोह का दसवां भाग शिगरफ डाल स्त्री के दूध में खरल करे, पश्चात् गोदुग्ध की तीन भावना देकर तीन बार गज पुट मे फूके, पीछे लोह का अर्द्ध भाग पारा और इतनी ही गंधक तीनों को मिला कर ग्वारपट्ठे के रस मे खूब घोटे, फिर शराव सपुट मे रख गजपुट मे, फूंक दे, फिर निकाल केवल कुमारी (ग्वारपट्ठे) के रसकी ३ भावना देकर गजपुट से फूंके तो लोहे की भस्म कज्जल के समान पानी में तैरने योग्य शुद्ध होवे, इस मे वला के रस का पुट और देवे तो उत्तम सर्वोत्कृष्ट भस्म होवे ।

छठी विधि

तीक्ष्णस्यचूर्णंससितंसगंधं-
रसेनसंमर्द्य भृशंकुमार्याः ।
पाकीकृतंकास्यपुटांतरस्थ-
सूर्य्यातपेमृत्युमुपैतियुक्तम् ॥

फौलाद लोह चूर्ण, पारा और गंधक तीनो को घी ग्वार के रस में घोट कासे के पात्र मे सूर्य की धूप मे रख दे तो लोह की भस्म होवे ।

पुट के गुण

लोहानामपुनर्भावो-
यथोक्तगुणकारिता ।
सलिलेतरणं वापिपुट-
नादेवजायते ॥

लोहो का फिर न जीना, यथार्थ गुण का करना, तथा पानी मे तैरना ये सब पुट देने से हाते हैं ।

पुटनात्स्याल्लघुत्वच-
शीघ्रव्याप्तिश्चदीपनं ।
जारितादपिसूतेन्द्राल्लो-
हानामधिकागुणा ॥

हलकापन तथा शीघ्र देह मे फैलना, और जठराग्नि को प्रबल करना, ये सब गुण पुट देने से होते हैं, लोह भस्म में पारद भस्म सें विशेष गुण हैं, अब कई एक धातुओ मे जो २ पुट देने चाहियें वह लिखते हैं।

स्वर्णरौप्यवधेज्ञेयंपुटं-
कुक्कुटकाभिधम्।
ताम्रे काष्ठादिजोवन्हि-
र्लोहेगजपुटानिच ॥

सोने, और चांदो मे कुक्कुट पुट, तथा ताम्र में काष्ठादिक अग्नि, और लोह में गजपुट की अग्नि देना चाहिये।

रसादिद्रवपाकानां-
प्रमाणंज्ञानजपुटम् ।
नेष्टोन्यूनाधिकः पाकः-
सुपाकहितमौषध ॥

पारे से आदि ले सब धातु मात्र के पाक मे जितने पुट लिखे हैं,उतने ही देने कम या जियादा न देने चाहिये क्योंकि औषधि यथार्थ पकी हित कारी होती हैं।

लोह भस्म के गुण

लोहमृतकज्जलसंनिभतु-
मु क्तेसदायोरसराजयुक्तं ।
नतस्यदेहेभवंतिरोगा-
मृतोपिकाम.पुनरेतिधाम.॥

लोह भस्म रगत में काजल के समान पारद युक्त सेवन करने वाले की देह से रोग कभी उत्पन्न नहीं हो, और गया काम देव फिर पैदा हो।

आयु प्रदातावलवीर्यकर्त्ता-
रोगस्यहर्त्तामदनस्यकर्त्ता ।
अयःसमानंनहिंकिंचिदन्य-
द्रसायनंश्रेष्ठतमवदंति ॥

आयुष्य, बल और वीर्य को बढावे, रोगो का नाश करे, काम पैदा करे, ऐसी लोह भस्म के समान दूसरी श्रेष्ठ रसायन नहीं है, यह वैद्य कहते हैं।

लोह भस्म के अनुपान

शूलेहिंगुघृतान्वितो-
मधुयुतोकृष्णापुराणज्वरे।
वातेसाज्यरसोनकः-
श्वसनकेक्षौद्रान्वितत्र्यूषणं।
गांशीतेव्याललताद्लं-
समरिचंमेहेवरासोपला
दोषाणांत्रितयेनुपान-
मुदितंसक्षौद्रमार्द्रोदकम् ।
घृतेनवातकेदेयं-
मधुनापित्तकेज्वरे ॥
श्लेष्मपित्तेचाद्रकेण-
निगुंडथाशीतवातके ।
शुंठीवातेसितापित्ते-
कफे कृष्णात्रिजातके ॥
संधिरोगेवरारोहे-
प्रोक्तलोहानुपानकम्।

शूल में हींग और घृत के साथ, जीर्ण ज्वर में शहद और पीपल के साथ, वात मे लहसन और घृत के साथ, श्वास मे सोंठ मिरच, पीपल और शहदके साथ,शीतमें मिरच और पानके साथ, प्रमेह मे त्रिफला और खांड के साथ, त्रिदोष में शहद और अदरक के रस मे, वात ज्वर मे घृत से, पित्त ज्वर में शहद से, कफ ज्वर मे अदरक के रस से, और ८० प्रकार के वात में सम्हालू के रस से वात में सोठ के साथ, पित्त मे मिश्री के सग, कफ में पीपल के सग, संधि रोग में दालचीनी, इलायची, तमाल पत्र, इनके साथ लोह की भस्म खानी चाहिये।

वल्लंवल्लार्द्धमानंच-
यथायोगेनयोजयेत ।
त्रिफलाल्लोहचूर्णंच-
वलीपलितनाशनम् ॥
कज्जलीमधुकृष्णाभ्यां
श्लेष्मरोगनिवारणम् ।
खडयासचतुर्ज्जातं-
रक्तपित्तनिवारण ॥
पुनर्नवात्वगाक्षीरै-
र्बलवृद्धिकरंपर ।
पुनर्नवारसेनैव-
पांडुरोगनिसूदनम ॥
हरिद्रालोहचूर्ण च-
पिप्पल्यामधुनासह ॥
विंशतिचप्रमेहाणां-
नाशयेन्नात्रसंशयः ।

लोह भस्म ३ या १॥ रत्ती रोगोक्त अनुपान के साथ दे, वलीपलित नाश के अर्थ त्रिफला के साथ देवे, कफरोग मे पारे गंधक की कजली, पीपल और शहद के साथ रक्त पित्त मे मिश्री और चतुर्जात के साथ, बल वृद्धि के लिये पुनर्नवा और गो दुग्ध के साथ, पांडुरोग मे पुनर्नवा के रस मे, और २० प्रकार के प्रमेहो मे हलदी, पीपल और शहद के साथ लोह भस्म देनी चाहिये।

शिलाजतुसमायुक्त-
मूत्रकृच्छ्रनिवारणं ।
वासकःपिप्पलीद्राक्षा-
लोहचमधुनासह ॥
गुटिकांभक्षयेत्प्रातः
पचकासनिवारण ।
ताम्बूलेनसमायुक्त-
भक्षयेत्लोहमुत्तमम् ॥
अग्निदीप्तकरंवृष्यं-
देहकातिविवर्द्धनम् ।
त्रिफलामधुसंयुक्तं-
सर्वरोगेषुयोजयेत् ॥
पथ्यासितालोहभस्म-
यथोक्तंगुणदभवेत् ।
विमत्रबहुनोक्तेन-
देहलोहकरंपर ॥
येगुणामृतरूप्यस्यते-
गुणाःकान्तभस्मनः ।
कांताभावेप्रदातव्यं-
रूप्यमित्याहभैरवः ॥

मूत्रकृच्छ्र में शिलाजीत के संग, पांच प्रकार की खांसी मे अडूसा, पीपल, दाख और लोह भस्म की गोली बनाकर शहद के संग खावे, मदाग्नि मे पान के साथ, देह की कांति को बढ़ावे और वृष्य है, त्रिफला और शहद के साथ सब रोगो को नाश करे, छोटी हरड और मिश्री के साथ पूर्वोक्त गुण करे, बहुत कहना कुछ जरूर नही यह देह को लोहे के समान करती है, और जो अमृत गुण करता है वही कांत लोह करता है, जब कान्ति लोह की भस्म न मिले तब रूपे की भस्म देनी चाहिये।

लोह सेवन में अपथ्य

कुष्माडतिलतेलच-
मापान्नराजिकातथा ।
मद्यमम्लरसचैव-
त्यजेल्लोहस्यसेवकः ॥

पेठा, तिल, तेल, उडद, राई, मदिरा, खट्टे पदार्थ, इन वस्तुओ को लोह का सेवन करने वाला त्याग दे ।

मत्यस्यजीवकवार्ता-
कंमाषंचकारवेल्लक ।
व्यायामतीक्ष्णमद्यंच-
तैलाम्लदूरतरत्यजेत् ॥

मछली, जीवक का साग, बेगन, उडद, करेले, डडकसरत, लाल मिरच आदि तीखे

पदार्थ, मद्य, तेल, खटाई, इन पदार्थों को लोह भस्म सेवन करने वाला त्याग देवे।

अमृती करण.

तोयाष्टभागशेषेण-
त्रिफलापलपंचकं।
घृतक्वाथस्यतुल्यं-
स्याद्घृततुल्यंमृतायसं॥
पाचयेत्ताम्रपात्रे च-
लोहदार्व्याविचालयेत्॥
योगवाहंमयाख्यातं-
मृतलोहंमहारसम्।
इत्थंकांतस्यतीक्ष्णस्य-
मुंडस्यापिह्ययंविधि॥

५ पल त्रिफले मे अठगुना जल डालकर काढा बनावे, जव अठवा हिस्सा जल रहे तव छानकर इसकी वरावर गोघृत और इतनी ही लोह भस्म दोनो को ताम्र पात्र में पकावे, और लोहे की कलछी से चलाता जाय, जव जल और घृत जल जाय केवल लोह की भस्म मात्र रह जाय, तव उतारे यह मैंने योगों में देने योग्य लोह भस्म की विधि कही है, इसी रीति से कांति तीक्ष्ण और मुंड की विधि जाननी चाहिये।

भक्षण का मन्त्र

ओ३म् अमृतेन्द्र भक्षयामिनमः स्वाहा

लोहपाक

लोहपाकस्त्रिधाप्रोक्तो-
मृदुमध्यखरस्तथा।
पंकशुष्करसौपूर्वौ-
वालुकासदृश. खरः॥

मृदु मध्य और खर के भेद से लोहपाक तीन प्रकार का है, तहा कीच के समान मृदु और जिसका रस सूख गया वह मध्यम और वालू रेत सा खर है।

तावल्लोहंपुटेद्वैद्यो
यावच्चूर्णिकृतोजले।
निस्तरंगोलघुस्तोये-
समुत्तरतिहंसवत्॥

लोहा जव तक जल मे हंस के समान न तैरे तव तक पुट देता रहे।

तावत्तु मर्दयेल्लोहं
यावत्कज्जलसन्निभं।
करोतिनिहितंनेत्रे-
नैवपीडामनागपि॥

लोहे को जव तक पीसे कि तव तक काजल के समान न हो और नेत्रो में लगाने से पीडा न करे।

यथायथाप्रदीयंतेपुटास्तुवहुचायसे।
तथातथाविवर्द्धंते-
गुणाशतसहस्रशः॥

लोह मे जितने जियादा पुट लगें, उतने ही विशेष गुण बढ़ते जाते हैं।

लोह भस्म की परीक्षा

सर्वमेवमृतंलोहं-
ध्मातव्यमित्रपंचकैः।
यदेवंस्यान्निरुत्थतु-
सेव्यंवारितरंहितत्॥

अष्ट लोहों की भस्म मे मित्र पंचक मिला कर अग्नि में धमाने से जो नहीं जीवे, तथा पानी में जो तैरे उसका सेवन करना चाहिये।

मध्वाज्येमृतलोहंच-
रूप्यंसंपुटगेक्षिपेत्।
रुध्वाध्मातचसंग्राह्यं-
रूप्यवैपूर्वमानकम्॥
तदालोहंमृतंविद्या-
दन्यथामारयेत्पुनः।

शहद, घृत, लोह भस्म और चांदी को एकत्र कर सपुट मे धमाने से चांदी ज्यो की त्यो रहे तो जानना लोह की भस्म हो गई, और

जो चादी बढ़ जाय तो फिर लोह की भस्म करे ।

लोह का द्रावण

देवदाल्यारसैर्भाव्य-
गंधकंदिनसप्तकम् ।
तेनप्रवापमात्रेण-
लोहास्तिष्ठतिसूतवत् ॥

देवदाली के फल के रस में ७ दिन गंधक को भिगोकर चूर्ण करे, उसको तपाये हुए लोह में डाले तो लोहा पारे के समान पतला होकर रह जायगा ।

तीक्ष्णमारणयोगेन-
कांतमारणमिष्यते ।
शुद्धिश्चतादृशीज्ञेया-
सेवनंतुतथैवहि ॥

जिस प्रकार तीक्ष्ण (फौलाद) का मारण कहा है उसी प्रकार कांत लोह का मारण जानो और शुद्धि तथा सेवन की विधि भी उसी प्रकार जाननी ।

अशुद्ध लोह के अपगुण

अल्पौषधस्तोकपुटै-
र्हीनगंधकपारदैः ।
अपक्वलोहजचूर्ण-
मायुः क्षयकरंपरम् ॥

जिस लोह में लिखे अन्दाज से थोडी औषधि पडी हों और थोडे पुट दिये गये हो और जिसमें पारा गंधक थोडे पडे हों ऐसी लोह की कच्ची भस्म आयुष्य का नाश करती है ।

पंढत्वकुष्ठामयमृत्युदं-
भवेतहृद्रोगशूलौकुरुतेश्मरींच ।
नानारुजानाचतथाप्रकोपं-
करोतिहृल्लासमशुद्धलोहम् ॥

नपु सकता, कुष्ठ, मृत्यु, हृद्रोग, शूल, पथरी और नाना प्रकार के रोग, खाली रद ये और कच्चा लोह करता है ।

लोह विकार शांति

मुनिरसपिष्टविडंगं
मुनिरसलीढंचिरस्थितंवर्मे ।
द्रावयतिलोहदोषान्-
वन्हिर्नवनीतपिंडमिव ॥

यदि लोहा खाने से देह में विकार मालूम हों तो अगस्त वृक्ष के रस मे वायविडग पीसकर उसी रस में मिलाय के खाय, पीछे बहुत देर तक धूप मे बैठे तो लोह के दोषों को यह दवा पतला कर निकाल दे जैसे अग्नि माक्खन को पिघलाय देती है ।

आरग्वधस्यमज्जाया-
रेचनंकीटशांतये ।
भवेदप्यतिसारश्चपीत्वा-
दुग्धंतुतान्जयेत् ॥
यदिलोहविकारेण-
उदरेशूलसंभवः ।
तदाभ्रकंविडंगंतु-
विडंगरससंयुतं ॥
पिवेद्वाखंडमधुना-
एलाचूर्णं दिनत्रयम् ।
सेवयेदितिशेषः ॥

लोह खाने से जो पेट मे कृमि पड़ गए हो तो पहले अमलतास का गूदा खावे जिससे सब कृमि दस्तद्वारा निकल जावें, पश्चात् दूध पीये और जो लोह विकार से पेट मे दरद होता हो तो अभ्रकभस्म और वायविडग का चूर्ण वाय विडग के रस के साथ पीवे, अथवा खांड और शहद के सग इलायची का चूर्ण तीन दिन खाय ।

इति श्री वृहद्रसराज सुन्दरे लोहप्रकरणं समाप्तम्

अथ मंडूर प्रकरणं लिख्यते

धमायमानमयोवन्हौ-
परित्यजतियन्मलं ।
सकिट्टसंज्ञालभते-
तदनेकविधंसतम् ॥

अग्नि में लोहा तपाने से जो मैल निकलता है उसे कीटी कहते हैं, वह अनेक प्रकार की है। अथवा। लोहा तपाने से जो मैल निकलता है उसको मंडूर कहते हैं ।

मंडूर वा कीटी के लक्षण

ईषच्छविगुरुस्निग्धं-
मुंडकिट्टं जगुर्बुधाः ।
भिन्नांजनाभयत्किट्टं-
विशेषाद्गुरुनिर्व्रणं ॥
निःकोटरंचविज्ञेयं-
तीक्ष्णकिट्टमनीषीभिः ।
पिंगंरूक्ष गुरुतरतद्-
धंमवकोटरम् ॥
छिन्नेचरजतच्छायं
स्यात्किट्टंस्थितकातज ।

जिस कीट मे अल्प रग, भारी और चिकनी हो उसे मुंड लोह की कीटी-जाननी । और जो काजल के समान काली हो भारी और व्रण रहित तथा छिद्र न हो उसे तीक्ष्ण (फौलाद) की जाननी । तथा पीली, रूक्ष, भारी और जिसमे वृक्ष की सी खोतर न हो फोडने से चांदी कीसी झलक दे उसे कांत लोह की कीटी जानना ।

कीटी ग्रहण

अकोटरगुरुस्निग्ध-
दृढशतसमाधिक ।
चिरोत्थितजनस्थाने-
संस्थितकिट्टमाहरेत् ॥

छिद्र रहित, भारी, चिकनी, दृढ सौ वर्ष से भी अधिक दिन की निकाली हुई ऐसी जन स्थान (पुरानी बस्ती) की कीटी लेनी उचित है।

शतोत्थमुत्तमंकिट्टं-
मध्यचाशीतिवार्षिकम् ।
अधमंषष्टिवार्षीयततो-
हीनविषोपमम् ॥

सौ वर्ष की कीटी उत्तम होती है, अस्सी वर्ष की मध्यम, और साठ वर्ष की अधम जाननी इससे कम वर्षों की विष के समान जाननी ।

मंडूर बनाने की विधि

अक्षांगारैर्धमेत्किट्टं-
लोहजंतद्गवांजलैः ।
सेचयेत्तप्ततप्तं-
तत्सप्तवारंपुनःपुनः ॥
चूर्णयित्वाततःक्वाथै-
र्द्विगुणैस्त्रिफलाभवैः ।
आलोड्यभर्जयेद्वन्हौ-
मंडूरंजायतेवरम् ॥

बहेडे की लकडी के कोले कर उनमे पुरानी कीट को खूब धमावे, लाल होने पर गोमूत्र मे बुझावे, ऐसे सातवार कर चूर्ण करे फिर इससे दूना त्रिफला का काढा एक हडिया मे भरे उसमे पिसी हुई कीट को डाल उसका मुह अच्छी तरह बन्दकर कपर मिट्टी कर आरने कडे के गजपुट मे फूंक दे, जब स्वत शीतल हो जाय तब उसको हाडी से निकाल ले तो कीटी का शुद्ध मडूर होवे यह मंडूर उत्तम है ।

हंसमण्डूर की विधि

मंडूरंमर्दयेत्श्लक्ष्णं-
गोमूत्रेऽष्टगुणे पचेत् ।
त्र्यूषणत्रिफलामुस्ता-
विडंगचव्यचित्रकैः ॥
दार्वीग्रन्थीदेवदारू-
तुल्यतुल्यविचूर्णयेत् ।

एतन्मंडूरतुल्यंच-
पाकान्तेमिश्रयेत्ततः ॥
भक्षयेत्कर्षमात्रंतु-
जीर्णान्तेतक्रभोजनम् ।
पाण्डूशोफंहलीम्च-
उरूस्तभंचकामलाम् ॥
अर्शांसिहतिनोचित्रं-
हंसमंडूरकाहुह्वयम् ।

पहले मंडूर को त्रिफला के काढे मे खूब घोटे, पीछे अठगुने गोमूत्र में पूर्वोक्त रीति से फू के, पीछे इन औषधियो को मिलावे सोठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, मोथा, वाय विडग, चव्य, चित्रक, दारु हलदी, पीपलामूल, देवदारू फिर सवा तोले नित्य खाय, पचनेपर इसके ऊपर छाछ पीवे तो पाडु, सूजन हलीमक, पैरोंका रहजाना, कामला, बवासीर, इन रोगों को यह हंसमडूर नाश करे, इसमें आश्चर्य नहीं है।

इति मंडूरप्रकरणं समाप्तम्

मिश्रधातुकांसा पित्तल और भर्त्त

अष्टभागेनताम्रेणद्वि-
भागंकुटिलंयुतम् ।
एकत्रद्रावितंतस्या-
त्कांस्यतद्भोजनेशुभ ॥

८ भाग तांबा और २ भाग राग दोनो को मिला तायकर ढालने से कासा बनता है, इसके पात्र भोजन करने के लिये उत्तम होते है।

ताम्रंत्रपुजमाख्यातं-
कास्यघोषचकसकं ।
उपधातुर्भवेत्कांस्यं-
द्वयोस्तरणिरगयो. ॥

तावे और रांग से कांसा बनता है, इसे घोष और कसक भी कहते हैं यह तांवे और रांग की उपधातु है।

कांस्य के भेद

कांस्यंचद्विविधंप्रोक्तं-
पुष्पतैलकभेदतः ।
पुष्पश्वेततमंतत्रतैलकं-
तुकफप्रदम् ॥
एतयोप्रथमंश्रेष्ठं-
सुसेव्यंरोगशांतये ।

फूल और तैलकके भेदसे कांसा दो प्रकार का है, प्रथम श्रेष्ठ और दूसरा कफ प्रगट करता है, फूल कांसा सफेद होता है, इसे रोग शांत के लिये सेवन करे।

उत्तम कांसे के लक्षण

श्वेतंदीप्तंमृदुर्ज्योतिः
शब्दाढ्यंस्निग्धनिर्मलं ।
घनांगसहसूत्रांगंकांस्य-
मुत्तममीरितम् ॥

श्वेत, प्रकाशमान, नरम, उज्ज्वल, शब्दकरनेवाला, चिकना, निर्मल, घन की चोट सहने वाला, और लकीरदार कांसा उत्तम होता है।

पीतल

रीतिर्हिचोपधातुः
स्यात्ताम्रस्यजसदस्यच ।
पित्तलस्यगुणाज्ञेयाः
स्वयोनिसदृशोबुधैः ॥

पीतल, ताम्र और जस्त की उप धातु जाननी इसमे ताम्र और जस्ते के से गुण हैं।

पीतल के भेद

रीतिकाद्विविधाप्रोक्ता-
तत्राद्याराजरीतिका ।
काकतुंडीद्वितीयासात-
योराद्यागुणाधिका ॥

पीतल, राजरीति और काकतुडी के भेद से दो प्रकार की है, । उनमें पहिली (राजरीति मे) विशेष गुण हैं।

परीक्षा

संतप्ताकांजिकेक्षिप्ताताम्रा-
स्याद्राजरीतिका ।
काकतुंडीतुकृष्णास्या-
न्नासौसेव्याहिरीतिका ॥

पीतल को तपा कर काजी में बुझाने से तावे का सा रंग निकले उसे राजरीति कहते हैं, और काली होजाय उसे काकतुंडी कहते हैं इसका सेवन वर्जित हैं ।

उत्तम पीतल के लक्षण

गुर्वीमृद्वीचपीताभासा-
रांगीताडनक्षमा ।
सुस्निग्धामसृणांगीच-
रीतिरेतादृशीशुभा ॥

भारी, नरम, पीली, कठोर, घन की चोट सहने वाली, चिकनी और समान गुलगुली पीतल मारण कर्म में शुभ है ।

अधम

पांडुपीताखरारूक्षावर्व-
रीताडनेऽक्षमा ।
पूतिगंधातथालघ्वी-
रीतिर्नेष्टारसादिषु ॥

किंचित् पीत, खरदरी, रूखी, भृष्ठ, चोट लगने से टूट जाय, दुर्गंधिवाली और हलकी पीतल त्याज्य हैं ।

कांस्य पित्तल शुद्धि

त्रिक्षारंपंचलवणंसप्त-
धाम्लेनभावयेत् ।
रीतिकाशुद्धपत्राणितेन-
कल्केनलेपयेत् ॥
रुध्वागजपुटेपक्वाशुद्धि-
मायातिनान्यथा ॥

सज्जीखार, जवाखार, सुहागा और पाचों नोन इनको खटाई की सात २ भावना देकर पीतल के पत्रो पर लेप करे और गजपुट में फूंके तो पीतल शुद्ध हो, अथवा मशाल् के रस में छोटी हरड का चूरण डालकर उसमें पीतल के पत्रों में बुझावे अथवा अम्लवर्ग में औटावे वा तेल, छाछ, गोमूत्र, कांजी, कुलथी, इन प्रत्येक के काढों में सात २ वार पीतल और कांसे के पत्रो को गरम कर २ बुझावे तो शुद्ध होवें ।

गोमूत्रेणपचेद्यामंकास्य-
पत्राणिबुद्धिमान् ।
दृढाग्निनाविशुध्यंति-
पक्वान्यम्लद्रवेणिवा ॥

कांसे के पत्रों को पहर भर गोमूत्र वा अम्ल वर्ग में औटावे तो शुद्ध होवें ।

मारण की प्रथम विधि

म्रियतेनात्रसंदेहो-
गंधतालात्पुटेनच ।

कासे वा पीतल के समान गधक और हरताल लेकर आक के दूध में घोट पत्रो पर लेप करे, और शराव सपुट में वदकर गजपुट से फूंक दे तो मरें लेकिन दो २ पुट देवे ।

दूसरी विधि

अर्कक्षीरंवटक्षीरंनिर्गु-
डीक्षीरकातथा ।
ताम्ररीतिध्वनिवधेत्स-
मगंधकयोगतः ॥

तावे, पीतल और कांसे के मारने के वास्ते समान गंधक लेकर आक, वड, सम्हालू के दूध में घोट पत्रों पर लेप कर गजपुट में फूंकने से भस्म होवे ।

तीसरी विधि

कांस्यकंराजरीतिंचता-
म्रवच्छोधयेद्भिषक् ।
ताम्रवन्मारणंचापि-
तयोर्ज्ञेयंभिषग्वरैः ॥

कासे और पीतल का तांबे के समान शोधन और मारण जानना, यह श्रेष्ठ वैद्य कहते है।

कांस्य पीतल की वेधी भस्म

आरंतारंसमंकृत्वामृत-
वंगंनियोजयेत् ।
एषाराजव्रतीविद्या-
पितापुत्रंनकथ्यते ॥

पीतल और चादी दोनो को समान लेकर गलावे, पश्चात् वंग भस्म डाले तो चादी हो, यह चांदी बनाने की विधि पिता पुत्र से नहीं कहता ।

पीतल भस्म के गुण

सकलमेहमरुद्रुदजांकुरं-
ग्रहणिकाकफपांडुभवंतथा ।
श्वसनकामलशूलभवारुजं
हरतिभस्मतदाकरसभवम् ॥

पीतल की भस्म संपूर्ण प्रमेह, बादी, बवासीर, सग्रहणी, कफ, पाडुरोग, श्वास, खासी, कामला और शूलका नाश करे ।

कांस्य भस्म गुण

कांस्यंकषायंतिक्तोष्णं-
लेखनंविशदंसरम् ।
गुरुनेत्रहिमंरूक्षकफ-
पित्तहरपरम ॥

कासे की भस्म—कसैली, कडवो, गरम, लेखन, स्वच्छ, सर, भारी, नेत्रो को हित, रूखो, कफ और पित्त की नाशक होती है ।

कांस्य पीतल के दोष

विविधरोगचययुक्तेभ्रमं-
गुदरुजह्यतिगेहरुजागणं ।
विविधतापकमातनुतेतनाव-
मृतमारकमाशुहिमृत्युदम् ॥

कच्ची पीतल-अनेक प्रकार के रोग, भ्रम, बवासीर, प्रमेह, अनेक प्रकार के ताप उत्पन्न करे, यथार्थ जिसकी भस्म न हुई हो ऐसी पीतल तत्काल प्राणनाश करती है ।

भर्त्तलक्षणोत्पत्ति

कांस्यंरीतिस्तथा-
ताम्रंनागवंगचपंचमं ।
एकत्रद्रावितैरेतैः
पंचलोहप्रजायते ॥

कांसा, पीतल, तांबा, सीसा और वग पांचो धातुओ को रसरूप कर एकत्र ढालने को (पंच धातु) अर्थात् भर्त्त कहते है, इसी को पंचरस भी कहते हैं ।

पंचलोह का शोधन

आदौतैलादिकेशोध्यं-
पश्चात्तत्तंचमूत्रके ।
निषिक्तंशुद्धिमायाति-
पचलोहंनसंशयः ॥

भर्त्त के पत्रो को तपाय प्रथम मूत्र वर्ग मे और पीछे तेल मे बुझावे तो पंचलोह की शुद्धि होवे ।

पंचरस का मारण

अर्कक्षीरेणसंपिष्ट-
गधकताललेपितम् ।
पचकुंभीपुटेभर्त्त-
म्रियतेयोगवाहकम् ॥

गधक और हरताल बराबर ले दोनों को आक के दूध मे खरल करे, पीछे भर्त्त के पत्रो पर लेप कर शराव सपुट मे रख कपरमिट्टी करे, पश्चात् पाच गज पुट देवे तो भर्त्त की भस्म होवे ।

वृत्त लोह का शोधन मारण

कांस्यकरीतिलोहाढि-
जाततद्वृत्तलोहकम् ॥

कासे, पीतल और लोहे के मिलाने से वृत्त लोह बनता है, इसका मारण और शोधन भर्त्त की तरह करे ।

मित्र पंचक

घृतमधुगुग्गुलगुञ्जाटंकण-
मेतत्तुपंचकंमित्रं ।
जीवयतिसप्तधातू-
नगाराग्नौतुधमनेन ॥

घृत, शहद, गूगल, घूघची और सुहागा इनको मित्रपचक कहते हैं, धातुकी कच्ची या पक्की की परीक्षा करनी हो तो उस धातु की भस्म मे पाचो वस्तु मिलाय घरिया में रख बकनाल की धौंकनी से धोके तो कच्ची धातु जी उठती है ।

निरुत्थी करण

गंधकचोत्थितंभस्म-
तुल्यंखल्वेविमर्दयेत् ।
दिनैककन्यकाद्रावे-
रुध्वागजपुटेपचेत् ॥
इत्येवंसर्वलोहानां-
कर्त्तव्यतुनिरुत्थितम् ।

जो मित्र पंचक से जी उठे उसमें समान गन्धक डालकर १ दिन घी गुवार के रस में खूब घोटे पीछे सपुट मे रख कपरमिट्टी कर गज पुट में फूंके तो निरुत्थ भस्म हो । इस रीति से सर्व लोह सोन, चादी आदि की निरुत्थ भस्म करनी चाहिये ।

अपक्क धातुजारण

हयनखगजदंतं
माहिष शृंगमूलं ।
अजनखशशक वै
मेषशृंगप्रयुक्तं ॥
मधुघृतगुडजातं
टंकणभेदतैल ।
सितिपटुसमकांगं
सर्वलोहंमृतित्वम् ॥

घोडे के नख, हाथी दांत, भैंस के सींग की जड़, बकरी और ससा के नख, मेंढे का सींग, शहद, घृत, गुड़, घूंघची, सुहागा तेल और गोंद को समान लेकर इनमें कच्ची धातु को गोट आंच देवे तो समस्त लोहमात्र मरे ।

सब धातुओं की भस्म का वर्ण

स्वर्णकपोतकंठाभमार-
मेवंसदाभवेत ।
शुल्वमयूरकंठाभं-
तारवंगौसमोज्वलौ ॥
कृष्णसर्पनिभंनाग-
तीक्ष्णकज्जलसन्निभ ।
तदाशुद्धं विजानीया-
द्वांतिभ्रांतिविवर्जितम् ॥

कदाचित कोई अशुद्ध भस्म लेआवे उसके जानने को भस्मो के वर्ण कहते हैं-सोने, तथा पीतल की भस्म, कबूतर के कंठ या पिंडुकियों के कठ के समान होती हैं, और तांबे की भस्म का मोरकंठ के समान नीलारंग होता है, चादी तथा वंग की भस्म सफेद होती है, सीसे का काले सर्प के समान होती हैं, लोह भस्म काजल के समान काली होती है, इन सब धातुओ की ऐसी भस्म हो तो जनना कि शुद्ध है, ऐसा भस्मो में वांति भ्राति नहीं होती, और रगो की अशुद्ध जाननी चाहिये ।

भस्म खाने का प्रमाण

सेवनस्यप्रमाणंतुकथयिष्या-
मिसांप्रतम् ।
वल्लार्द्धं कनकंहिसुप्रकथित-
रूप्यंचशुल्वंतथा ॥
तीक्ष्णंवंगभुजंगमारनिचयो-
वल्लार्द्धं वल्लोन्मित. ।
तत्तुल्याशुभपिप्पलीनिगदि-
तान्नौद्रंचकर्षोन्मितं ॥
सेव्यसंपरिहृत्यग्रीष्म-
शरदौताम्रंसुसेव्यंनरैः ॥

भस्म खाने का प्रमाण यह है-सोने, चांदी और तांबे की १॥ रत्ती, तथा लोह वग नाग और पीतल इनकी ४ रत्ती, जिस भस्म को खाय उसकी बराबर पीपल और शहद मिलाकर सदैव सेवन करे, परन्तु ताम्र भस्म को ग्रीष्म और शरद ऋतु मे न खाय ।

धातु से धातु मारण

तालेनवंगंदरदेनतीक्ष्णंनागेन-
हेमशिलयाचनागं ।
शुल्वंतथागधवरेणनित्यं-
तारचमाक्षीकवरेणहन्यात् ॥

हरिताल से वग शिंगरफ से लोह, सीसे से सोना, मनसिल से सीसा, गधक से तांबा और सोना मक्खी से रूपा मारना चाहिये। धातु से मरी धातु उत्तम होती है ।

सप्त धातु द्रावण

पीतमंडूकगर्भेतुचूर्णितं-
टंकणंक्षिपेत् ।
रुध्वाभांडेक्षिपेद्भूमौ-
त्रिसप्ताहात्समुद्धरेत् ॥
तत्समस्तंविचूर्ण्याथ-
द्रुतेलोहेप्रवापयेत् ।
तिष्ठतिरसरूपाणिसर्वं-
लोहानिनान्यथा ॥

पीले मेंढक के पेट में सुहागे का चूर्ण भर एक पात्र मे रख, मुख बन्द कर कपरमिट्टी दे जमीन मे गाड दे २१ दिन बाद निकाल चूर्ण कर रख छोडे और अष्ट लोहो मे किसी एक लोह को गलाय उसमें डाले तो वह लोह पानी के समान पतले होकर रह जाय ।

दूसरी विधि

तीक्ष्यचूर्णंतुसप्ताहं-
पक्वाधात्रीफलद्रवैः ।
लोलितभावयेद्घर्मे-
क्षीरकंदद्रवै.पुनः ॥
सप्ताहभावितंसम्यक्-
स्रावसंपुटकेततः ।
धमितंद्रवतांयांतिचिर-
तिष्ठंतिसूतवत् ॥

लोह चूर्ण को ७ दिन आमले के रस मे भिगो कर धूप मे रखे तदनंतर क्षीर कद मे ७ दिन भिगो कर धूप मे रखे पीछे मूषा मे रखकर अग्नि में धमावे तो लोह बहुत दिन पर्यन्त पानीसा रहे ।

सप्त धातुओं के अपगुण

स्वर्णंसम्यगशोधितश्रम-
करस्वेदावहदुःसहं ।
रौप्यंजाठरजाड्यमांद्य-
जननंताम्रवमिभ्रांतिदं ॥
नागचपुत्रचांगदोषमथो
गुल्मादिदोषप्रदम् ।
तीक्ष्णशूलकरंतुकान्तमुदि-
तंकार्श्यामयस्फोटदं ॥
अशुद्धौहितौस्याद्यदिमुंड-
तीक्ष्णौक्षुधापह्नौगौरवगुल्मदायकौ ।
कातायसक्लेदकतापकारकं
रीत्यौचसमोहनक्लेशदायके ॥

कमशुधा सोना श्रम स्वेद और दुःख कारक होता है । अशुद्ध रूपा पेट जकड मदाग्नि करे । अशुद्ध तांबा वमन और भ्रांति करे । सीसा और रांगा अशुद्ध देह बिगाडे, गोला आदि रोगोको करें । अशुद्ध फौलाद शूल पैदा करे । अशुद्ध कात कृशता का रोग और विस्फोटक पैदा करे । मुंड तथा तीक्ष्णलोह अशुद्ध हो तो शरीर को अहित करे, क्षुधानाश, जड़ता और गोला को करें अशुद्ध कांतलोह क्लेद और ताप करे । पीतल और कासे अशुद्ध हो तो मोह और दुःख कारक जानने चाहिये ।

इतिकथितपथेयोमारयेदष्टलोहम् ।
प्रकृतिपुरुषभेदंदेशकालौविदित्वा ॥

उपचरतिरुजार्त्तंधर्ममूर्तिर्यशोर्थी ।
मभवतिनृपगेहेदेववत्पूजनीयः ॥

जो पुरुष इस प्रकार देश, काल, प्रकृति और मनुष्यों के भेद जानकर अष्टलोह मारण करता है, और रोगी मनुष्य को देता है उसको धन, धर्म और यश की प्राप्ति होती हैं और राजमान्य होता है।

श्रीमान्माथुरवंशभूषणमणिः
श्रीघासिरामोद्विजः ।
जातस्तस्यसुतास्त्रयसमभवन्-
श्रीरामहर्य्याख्यकाः ॥
सोमान्ताहरिचन्द्रसूनुर-
भवच्छ्रीकृष्णलालाभिधः ।
मान्यस्सर्वजनैस्तदुद्भ-
वद्यहश्रीदत्तरामस्सुधिः ।

श्रीमान्माथुरवंश भूषण मे मणि के सदृश श्रीघासीराम विप्रवर्य प्रगट हुए, तिनके परम धार्मिक गुणवान् श्रीचन्द्र, रामचन्द्र, हरिश्चन्द्र तीन पुत्र प्रगट हुए उनमें श्रीहरिश्चन्द्रजी के सर्वमान्य श्रीयुत् कन्हैयालाल हुए तिनका पुत्र मैं दत्तराम हूँ।

त्रिशुद्धमार्त्तंडगुणाङ्क-
भूसतेमेश्रीविक्रमस्योजन्मोत्सवे भृगौ ।
श्रीदत्तरामेणमयाद्यखड.
समापितः श्रीबृहद्रसराजसुन्दरः ॥

प्रथमभागस्येतिशेष.

श्रीमन्महाराजाधिराज विक्रमादित्य के सवत्सर १९३९ कात्तिकवदी ३० भृगुवार को यह बृहद्रसराजसुन्दर के प्रथमखडका पूर्वार्द्ध मुझ दत्तरामने समाप्त किया।

समाप्तम्

अथ सप्तोपधातु प्रकरणम्

तत्रादौ सप्तोपधातु

माक्षिकतुत्थकाभ्रौचनी-
लांजनशिलालका ।
रसकश्चेतिविज्ञेया-
एतेसप्तोपधातवः ॥
विमलायाऽष्टमंचात्र-
केचिद्रसविदोविदुः ।

सोनामक्खी, नीलाथोथा, सुरमा, मनसिल हरताल, खपरिया ये सात उपधातु हैं, कोई रूपा माखी आठवीं उपधातु कहते हैं। यह मत रसार्णव का है।

अन्यच्च

सुवर्णमाक्षिकंतद्वत्ता-
रमाक्षिकमेवच ।
तुत्थकास्यंचरितिश्च-
सिंदूरं चशिलाजतु ॥
एतेसप्तसमाख्याता-
विद्वद्भिरुपधातव. ।

सुवर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, नीलाथोथा, कास्य, पित्तल, सिंदूर, शिलाजीत, ये सात उपधातु पण्डितों ने कहीं हैं।

तथाचग्रन्थान्तरे

स्वर्णजंस्वर्णमाक्षीकं-
तारजतारमाक्षिकं ।
तुत्थताम्रभवज्ञेयं-
कंकुष्ठ वगसंभवम् ॥
रसकोजसदाज्जातो-
नागाच्छिंदूरसंभवः ॥
लोहाज्जातंलोहकिट्ट-
मेतासप्तोपधातव. ॥

सुवर्ण से सोना मक्खी प्रगटी है, रूपे (चादी) से रूपामक्खी; तांबे से नीलाथोथा, वग से ककुष्ठ जस्त से खपरिया, सीसे से सिंदूर, और लोहे से लोहकीट प्रगट हुई है। यह मत हमको मन्तव्य है।

सुवर्णादि धातु के अभावों में ग्राह्य पदार्थ

अभावेमुख्यधातुना-
प्रयोज्जास्तूपधातवः ।

कुर्वन्तितद्गुणालोके-
बहुयत्नेनशोधिता ॥

मुख्य सुवर्णादि धातुओ के न मिलने से उप धातुओ को काम मे लाना चाहिये, वह उपधातु बहुयत्न से शोधित धातु के से गुण करती है

अन्यच्च

स्वर्णाभावेमृतंताप्यं-
ततोपिस्वर्णगैरिकम् ।
रूप्यादीनामलाभेतु-
प्रक्षिपेद्विमलादिकम् ॥

स्वर्ण के अभाव में सोनामक्खी लेनी चाहिये,और सोनामक्खी के अभाव में सोना-गेरू लेना चाहिये, और रूप्यादि के अभाव में रूपामक्खी आदि डाले।

उपधातुओं का शोधन

त्रिकटूवर्वेवरार्केच-
भावयेद्द्विभावना ।
कर्त्तव्याश्चोपधातूना-
पूर्वं दोषापनुत्तये ॥

संपूर्ण उपधातुओं को त्रिकुटा (सोठ, मिरच, पीपल) के अर्क और त्रिफला (हरड बहेडा, आवला) के रस की बारह बारह भावना देने से शुद्धि होवे।

उपधातुओं का संशोधन मारण

पादांशसैंधवदत्वातू-
पधातूनविमर्दयेत ।
दशधाचाम्लवर्गेण-
कटाहेलोहरंभवे ॥
घर्षयेल्लोहदंडेन-
प्रत्येकंचमुहूर्त्तकम् ।
यथासिंदूरवर्णत्वं-
धातूनांदशमारणं ।

उपधातुओं का चतुर्थांश सेंधानिमक डालकर मर्दन करे, तथा लोह की कडाही में दश भावना अम्लवर्ग की देवे, और लोहे के मूसलेसे घोटता जाय, प्रत्येक औषधिको दो २ घड़ी घोटे इस प्रकार की क्रिया से दस धातुओ की भस्म सेंदूर के समान स्वरूपवान हो जाती है।

अथ स्वर्णमाक्षिक प्रकरणम्

माक्षिकोत्पत्ति

कृष्णस्तुभारतंकृत्वा-
योगनिद्रामुपागतः ।
तस्यपादतलंविद्धं-
व्याधेनमृगशंकया ।
येतत्रपतिताभूमौ-
क्षताद्रुधिरबिंदवः ।
स्तेननिंबफलाकाराजा-
तामाक्षिकगोलकाः ॥

कृष्ण भगवान् भारत युद्ध के अंत मे योग निद्रा को प्राप्त हुए, उस समय किसी वधिकने मृग की शंका से प्रभू का चरणार्विंद बाण से वेधा उस समय जो रुधिर चरण के क्षत (घाव) से पृथ्वी मे गिरा उस से निबोली के आकार की माक्षिक उपधातु प्रगट हुई।

तथाच

सुवर्णशैलप्रभवो-
विष्णुनाकांचनोरसः।
ताप्यंकिरातचीनेषु-
यवनेपुचनिर्मितः ।
ताप्यंसूर्य्यांशुसंतप्तो-
माधवेमासिदृश्यते ।
मधुरःकांचनाभासः
साम्लोरजतसन्निभः ।
किंचित्कषायमधुरः
शीतःपाकोकटुर्लघुः ।
तत्सेवनाज्जराव्याधि-
विपैर्नपरिभूयते ।

सुवर्ण के पर्वत से उत्पन्न सुवर्ण का रस विष्णु भगवान् ने तापो किरात देश, चीन की

वलायत, और यवन देशो मे निर्माण किया, वही तापी देश मे होने वाला जो ताप्यमाक्षिक है सो सुर्य्य की किरण से तप्त होकर वैशाख महीने मे दिखलाई देता है, उसकी सुवर्ण कीसी कांति होती है,और स्वाद मे मीठा ये सुवर्ण माक्षिक के गुण हैं। और रूपामाखी चांदी के समान और खट्टी होती है तथा दोनों कुछ कषैली, मधुर शीतल, कटु और हलकी हैं, इन दोनो के खाने से बुढ़ापा जाय और इनके विष से मनुष्य पीडित नही होता।

तथाच

स्वर्णमाक्षिकमाख्यातं-
तापीजंमधुमाक्षिकं ।
ताप्यमाक्षिकधातुश्च-
माक्षिकंचैवतन्मतम् ॥
किंचित्सुवर्णसाहित्यात्-
स्वर्णमाक्षिकमीरितं ।
उपधातुःसुवर्णस्यकिंचित्-
स्वर्णगुणैःसमम् ॥

तापी नदी के किनारे जो स्वर्णमाक्षिक होती है, उसको मधुमाक्षिक कहते हैं, वो सुवर्ण के समान दिखलाई देती है इसी से उसे सुवर्णमाक्षिक कहते हैं। और ताप्यमाक्षिक भी कहते हैं, ये सब माक्षिक ही कहलाते हैं, ये सुवर्ण की उपधातु हैं इसीसे किंचित् सुवर्ण के से गुण हैं।

नकेवलस्वर्णगुणा-
वर्त्तंतेस्वर्णमाक्षिके ।
द्रव्यान्तरस्यसंसर्गात्
सत्यन्येपिगुणायतः ॥
किंतुतस्यानुकल्पत्वात्
केचिदूनागुणा स्मृता. ॥
तथापिकांचनाभावे
दीयतेस्वर्णमाक्षिकं ।
तपतीतीरजानस्त्या-
दित्येवनद्भिनीयक ।

कान्यकुब्जोद्भवंताप्य
विज्ञेयस्वर्णवर्णकं ॥
तपतीतीरगतत्तु
पंचवर्णमुदाहृतम् ॥

परन्तु स्वर्ण माक्षिक में केवल सुवर्ण के ही समान गुण नहीं हैं, किंतु द्रव्यांतर के संयोग से और भी अनेक गुण हैं, परन्तु सुवर्ण के अनुकल्प होने से कुछ गुण न्यून हैं, तथापि सुवर्ण के अभाव मे इसको देते हैं, यह तपती नदी के तीर होता है। और दूसरा कान्यकुब्ज अर्थात् कन्याकुमारी के पास होता है, वह सोने के वर्ण के समान होता है। और तापी के किनारे का पंचवर्ण होता है।

द्वयोर्माक्षिकयोर्लक्षणम्

माक्षिकोद्विविधोहेम-
माक्षिकस्तारमाक्षिकः ।
तत्राद्यंमाक्षिकंकान्य-
कुब्जोत्थस्वर्णसन्निभं ॥
तपतीतीरसंभूतं-
पंचवर्णंसुवर्णवत् ।

माक्षिक दो प्रकार का है यथा सुवर्णमाक्षिक और तारमाक्षिक इनमे स्वर्ण माक्षिक कान्यकुब्ज मे होता है, और सुवर्ण के समान होता है, तथा तपती नदी के किनारे पैदा होने वाला सुवर्ण माक्षिक पाच वर्ण का और सोने के समान होता है।

तथाच

स्वर्णाभंस्वर्णमाक्षिक-
निःकोणंगुरुतायुतम् ।
कालिमांविकरेत्तत्तु-
करेघृष्टेनसंशयः ॥

सुवर्ण के समान स्वर्णमाक्षिक होता है, उसमें कोने नहीं होवे, तथा भारी और हाथ पर घिसने मे कलोंच देता है।

मारण योग्य लक्षण

स्वर्णवर्णं गुरुस्निग्धमी-
पन्नीलच्छविच्छट।
कृपेकनकवद्धृष्ट-
तद्धितहेमसाक्षिकम् ॥
पाषाणबहुलप्रोक्त-
स्ताराख्योऽसौगुणाऽल्पकः।

सुवर्ण का सा वर्ण, भारी, चिकना किंचित् नीलछवि, कसौटी पर घिसने से सोने की सी झलक देवे, उसको हेम माक्षिक जानना, और जिसमे बहुत से पत्थर के टुकड़े हो उसे अल्प गुण वाला रौप्यमाक्षिक जानना।

अन्यच्च

माक्षिकोद्विधस्तत्र-
पीत.शुक्लोविभागतः।
चतुर्द्धाकरसंस्थान-
विज्ञेयक्षेत्रभेदतः ॥
कदंबगोलकाकारं-
मुक्तशुक्तिपुटसन्निभम्।
तथांगुलीयकाकार-
भस्मकर्त्तरिकासमम् ॥
तारमाक्षीकविमला
सुपीतश्चसुलोहितः।
सुवर्णमाक्षिकतेषु-
प्रवरंसप्तवर्णकम् ॥
तद्वद्रजतवर्णं च-
हीनाःशुक्तिपुटादयः।
गुणतश्चसुवर्णेन-
प्रवर परिकीर्त्तितः ॥

पीले और सफेद के भेद से माक्षिक दो प्रकार का है, वही आकर (खान) के भेद से और क्षेत्र भेद से चार प्रकार का है, एक कंदब के फूल के समान गोल, दूसरा मोती की सीप के समान तीसरा अंगूठी के आकार और चौथा भस्म और कतरनीके समान होता है इनके चार नाम हैं यथा सुवर्ण माक्षिक, विमल, सुपीत और सुलोहित इन चारो मे सुवर्ण माक्षिक सातवर्ण का श्रेष्ठ है, और चांदी के वर्ण समान शुक्ति पुटादि (सीप के सदृश) अधम है गुण मे तथा सुवर्ण से पैदा होने के कारण सुवर्ण माक्षिक उत्तम है।

अशोधित माक्षिक के अपगुण

अशुद्धंमाक्षिकंकुर्य्या-
दान्ध्यंकुष्ठंक्षयंकृमीन्।
शोधनीयंप्रयत्नेनतस्मा-
त्कनकमाक्षिकम् ॥

अशोधित माक्षिक अन्धपना, कुष्ठी, क्षय और कृमि इत्यादि रोगो को करता है, इस कारण अवश्य शोधन करना चाहिये।

तथाच

मंदानलत्ववलहानिग्रं-
विष्टंभतांनेत्रगदान्सकुष्ठान्।
करोतिमालांव्रणपूर्वकंच-
शुध्यादिहीनखलुमाक्षिकंच ॥

मन्दाग्नि, बलहानि, अफरा, नेत्ररोग, कुष्ठ, कंठमाला, और व्रण इन रोगो को अशोधित माक्षिक करता है, इसलिये शुद्धि अवश्य करनी चाहिये।

सुवर्ण माक्षिक शोधनं

कांजिकेनिंबुगोमूत्रे-
जयन्त्याःस्वरसेभिषक्।
सुवर्णमाक्षिकंचैव-
तारमाक्षिकमेवच ॥
वध्वागाढांवरेसम्यक्
दोलायंत्रेत्र्यहपचेत्।
शुध्यतेनात्रसंदेहः
सर्वयोगेषुयोजयेत्।

सोना मक्खी या रूपा मक्खी को वस्त्र मे बाध एक हाडी मे दोला यन्त्र के समान लट

काय देवे, और उस हांडी मे गोमूत्र, नींबू का रस, काजी, अरणीका रस, चारो को सेर २ ले मिलाकर भर देवे, और पोटली को उसके बीच मे अधर लटकाय दे और उसके नीचे तीन दिन दीपकाग्नि बालकर स्वेदन करे तो दोनों माक्षिक शुद्ध होवें ।

तैलेनैरंडजेनादौ-
यामभात्रं विमर्दयेत् ।
सच्छिद्रेसंपुटेधृत्वा-
पचेत्त्रिंशद्वनोपलैः ॥

तदनन्तर बारीक पीसकर थोड़ासा अरण्डीका तेल डाल प्रहर भर घोट टिकडी बनाय शराव सपुट में रखे ऊपर के ढक्कन मे छोटा सा छिद्र करदे पीछे १ सेर आरने उपलों की आंच दे और स्वाग शीतल होने पर निकाल नीचे लिखे रसों में घोटे ।

देवदालीह सपदी-
वटार्कं चस्नुहीपयः ।
पुनर्मर्द्यं पुनःपाच्यं-
भूधरेचत्रिधात्रिधा ॥
म्रियतेनात्रसंदेह-
मस्त्यगुरुवचोयथा ।

इस पदी के रस की ७ भावना दे, फिर टिकडी बांध शराव संपुट में रख दो सेर उपलों की आंच दे, अथवा भूधर यत्र मे रख आच दे इसी प्रकार देवदाली (बदाल) के रसकी ७ भावना देवे, और बडकी जटाओं की ७ भावना देकर आच देवे, तथा आक के दूध की सात भावना देकर आच देवे, तो सुवर्ण माक्षिक की निस्सदेह भस्म होवे, यद्यपि मूल मे तीन २ भावना लिखी हैं परन्तु सात २ देनी चाहिये ये वृद्धवैद्यों की सम्मति है । इस सुवर्ण माक्षिक से अपची, गढमाला, सूजन, मिरगी, श्वास, खासी क्षय ये रोग नाश होवें, योगराज योग में इस प्रकार फुंक स्वर्णमाक्षिक को वैद्य डालते हैं, तब वो गुण करता है । भूधर यंत्र के लक्षण आगे यत्राध्याय में लिखेंगे ।

प्रकारान्तरेण शुद्धि

एरण्डतैललुंगाम्बु-
सिद्धं शुध्यतिमाक्षिकं ।
सिद्धं वाकदलीकंद-
तोयेनघटिकाद्वयं ॥
तप्तं क्षिप्तं वराकाथे-
शुद्धिमायातिमाक्षिकं ।

सुवर्णमाक्षिक को अरण्डी के तेल मातुलुंग (बिजौरानींबू) के रस अथवा केला के कन्द के रस में दो घड़ी पाचन करे तो शुद्ध होवे, अथवा सुवर्ण माक्षिक को तपाकर त्रिफला के काढ़े में बुझावे तो शुद्ध होवे ।

तथा तीसरी विधि

माक्षिकस्यत्रयोभागाः
भागैकंसैंधवस्यच ।
मातुलुंगद्रवैर्वाथ-
जम्बीरोत्थद्रवै.पचेत् ॥
चालयेल्लोहजेपात्रे-
यावत्पात्रं सलोहितम् ।
भवेत्ततस्तुसंशुद्धि-
स्वर्णमाक्षिकमृच्छति ॥

३ पैसा भर स्वर्णमाक्षिक और पैसा भर सेंधानिमक दोनों को पीसकर कढाही मे डाल चूल्हे पर चढाय नीचे तेज आंच दे और कडाही मे बिजौरे अथवा जभीरी का रस डालता जाय और कलछी से चलाता जाय, जब स्वर्णमाक्षिक और कढाही दोनों का लाल रंग हो जाय तब सुवर्ण माक्षिक को शुद्ध हुआ जानना ।

तथा चौथी विधि

अगस्तिपत्रनिर्यासे
शिग्रुमूलंसुपेषितं ।
तन्मध्येपुटितशुद्धं निम्बु-
जाम्लेनपाचितं ॥

माक्षिक को अगस्तिया के पत्तों के रस और सहजने की जड़ के रस में घोट कर गज पुट की आंच दे, तदनंतर नींबू की खटाई के रस में घोटे तो सोनामक्खी शुद्ध होवे।

अथमारणं

पिष्ट्वाकुलित्थस्यकषायकेण-
तक्रेणवाजस्यहिमूत्रकेण।
संचालयेद्वैघ्यपति.क्रमात्तन्मृतिं-
व्रजेत्सुंदरिहेममाक्षिकं।

सोनामक्खी को कुलथी के काढ़े, छाछ और बकरी के मूत्र में क्रम पूर्वक कड़ाही को चूल्हे पर चढ़ा कर कलछी से घोटे तो सोना मक्खी की भस्म होवे।

तीसरी विधि

मातुलुंगाम्बुगंधाभ्यां-
पिष्टंमूषोदरेस्थितं।
पंचक्रोडपुटैर्दग्धं-
म्रियतेमाक्षिकंखलु॥
एरण्डस्नेहगव्याज्यै-
र्मातुलुंगरसेनच।
खर्परस्थंदृढंपक्वं-
जायतेधातुसन्निभं॥
एवमृतरसेयोज्यं
रसायनविधावपि।

सोनामक्खी को बिजौरे और गंधक संयुक्त घोट कर पांचबार वाराहपुट[1] देवे तो मरे, इस प्रकार मरे माक्षिक को एक बड़े खपरे में चूल्हे पर चढ़ाय अंडी के तेल, बिजौरे के रस और घृत इनमें घोटने से धातु के समान हो जाय, इसको रसायन विधि में देना चाहिये।

चौथी विधि

माक्षिकस्यचतुर्थांश-
गंधदत्वाविमर्दयेत्।
उरुबूकस्यतैलेन-
ततः कार्य्यासुचक्रिका॥
शरावसंपुटेकृत्वा-
पुटेद्गजपुटेनच।
धान्यस्यतुषमूर्ध्वाऽधो-
दत्वाशीतंसमुद्धरेत्॥
सिंदूराभंभवेद्भस्म-
माक्षिकस्यनसंशयः।

सोनामक्खी की चतुर्थांश गंधक डालकर दोनो को खरल करे, तदनंतर अंडीका तेल डाल कर टिकिया बनाय शराव संपुट में रख गजपुट में फूंक दे, जब शीतल होजाय तब निकाल ले, इसकी सिंदूर के समान लालभस्म होवे, यह भस्म उत्तम है, यह टोडरानंद में लिखा है।

पांचवीं विधि

तैलेतक्रेगवांमूत्रे-
आरनालेकुलत्थके।
शोधयेत्त्रिफलाक्वाथे-
माक्षिकंवन्हितापितं॥
ततःपरंपुटंदेयं-
कुमारीरसमर्दितम्।
कृत्वासुचक्रिकांशुष्कां-
कुक्कुटाख्येपुटेपचेत्।
सप्तविंशतिसंख्यास्ति-
ततः स्यादमृतोपमम्॥

तेल, छाछ, गोमूत्र, कांजी, कुलथी का काढा, त्रिफला का काढा इनमें सोनामक्खी को तपा २ कर बुझावे, तो शुद्ध होवे। तदनंतर घीगुवार के रस में घोट कर टिकिया बनाय सुखा कर कुक्कुट पुट में २७ आंच दे तो अमृत के समान भस्म होवे, कुक्कुट पुट की विधि सुवर्ण के प्रकरण में लिख आये हैं।

छटी विधि

किमत्रचित्रंकदलीरसेन-
सुपाचितंसूरणकंदसंपुटे
वातारितैलेनपुटेनताप्य-
पुटेनदग्धवरपुष्टिमेति॥

[1] वराह पुट के लक्षण आगे लिखेंगे।

सुवर्ण माक्षिक का चूर्णकर खिपड़े में नींबू के रस सहित डाल नीचे अग्नि जलावे, और लोहे की कलछी से चलाता जाय, इस प्रकार दो प्रहर करने से लाल रंग हो जाय तब उतार शीतल कर ३ वल्ल (वल्ल ३ रत्ती का होता है) शहद और पीपल के साथ सेवन करने से बल को बढावे, और पांडुरोग, कामला, वातपित्त हलीमक इन रोगो को दूर करे।

मृतमाक्षिक के गुण

स्यान्माक्षिकस्तिक्तसुदीपनः
कटुर्दुर्नामकुष्ठामयभूतनाशनः।
पाण्डुप्रमेहक्षयनाशनोलघुः
सत्वमृतंतस्यसुवर्णवद्गुणैः॥

सुवर्ण माक्षिक तीखा है, अग्नि को दीपन करे, कडवा है, ववासीर, कोढ़, भूत, पांडुरोग, प्रमेह और क्षय का नाश करे। हलका और इसका मृतसत्व सुवर्ण के समान गुण करे।

तथाच

सुवर्णमाक्षिकंस्वादु-
तिक्तंवृष्यरसायनं।
चक्षुष्यवांतिहृत्कंठ्यं-
पाडुमेहविषोदरम्॥
अर्श शोफविषकण्डू-
त्रिदोषमपिनाशयेत्।

सुवर्ण माक्षिक, स्वादिष्ट, कडवा, वृष्य और रसायन है। नेत्र रोग, वमन, कंठ रोग, पीलिया, प्रमेह, ववासीर, सूजन, उदर रोग, खुजली, और त्रिदोषज रोगों का नाश करे।

स्वर्णमाक्षिक का सत्व निकालना

त्रिशांशंनागसंयुक्तं-
क्षारैरम्लैश्चवर्तितं।
ध्मातंप्रकटमूषाया-
सत्वंमुंचतिमाक्षिकं॥

माक्षिक का तीसरा हिस्सा सीसा मिलाकर क्षारगण और अम्लवर्ग संयुक्त को मूषा में रख वकनाल धोकनी से धोंके तो माक्षिक सत्व छोडता है।

सीसा संयुक्तमाक्षिक का पृथक् करना

सप्तवारंपरिद्राव्यं-
क्षिप्तंनिर्गुण्डिकारसे।
माक्षीकसत्वसंमिश्रं यं-
नागंनश्यतिनिश्चितम्॥

सीसा मिले सुवर्ण माक्षिक सत्व को सात बार तपा २ कर निर्गुंडी के रस से बुझाने से माक्षिक सत्व में सीसे को नष्ट करदे।

दूसरी विधि

क्षौद्रगंधर्वतैलाभ्यां-
गोमूत्रेणघृतेनच।
कदलीकंदसारेण-
भावितंमाक्षिकंमुहुः॥
मूषायांमुंचतिध्मातं-
सत्वंशुल्वनिभंमृदु।

शहद और अंडी के तेल वा गोमूत्र और घृत तथा कदली कंद के रस की बारंबार भावना देकर माक्षिक को मूषा मे रख बंक नाल से धोके तो तांबे के समान वर्ण का नरम सत्व निकले।

तीसरी विधि माक्षिक सत्व का स्वरूप

गुंजाबीजसमच्छाय-
द्रुतंद्रावंचशीतलम्।
ताप्यसत्वविशुद्धं-
तद्देहलोहकरम्परम्॥

घूंघची के समान लालवर्ण होवे, और द्रुति तथा द्राव सीसेके समान नरम हो, वह माक्षिक सत्व शुद्ध जानना, यह देहको लोहके समान करता है।

तथा भक्षण विधि.

माक्षीकसत्वेनरसस्यपिष्टीं
कृत्वाविलीनेचवलिंनिधाय ।
संमिश्रयसंमर्द्य चखल्वमध्ये ।
निक्षिप्यसत्वद्रुतिमभ्रकस्य ॥
विधायगोलंलवणाख्ययन्त्रे
पचेद्दिनार्द्धं मृदुवन्हिनाच ।
स्वतःसुशीतेपरिचूर्ण्य
सम्यकवल्लोन्मितं
व्योषविडंगयुक्तं
संसेवितक्षौद्रयुतनिहन्ति
जरांसरोगंत्वल्पमृत्युमेव ।
दुःसाध्यरोगानपिसप्तवासरै
र्नतेनतुल्योस्तिसुधारसोपि॥

माक्षिक सत्वमे पारा डालकर पिष्टी करे, जब पारा मिल जाय तब गंधक डालकर खरलमे घोटे, तदनंतर इसमे अभ्रकसत्व डाले और घोटकर मिलावे पश्चात् एक हाडी मे नमक भर गोले को रख ऊपर और नमक भर भट्टी पर चढाय दो प्रहर की मंदाग्नि देवे, जब स्वांग शीतल हो जाय तब हाडी से निकाल कर खूब बारीक पीसे, और ३ रत्ती के अंदाज सोठ, मिरच, पीपल, बायविडग और शहद के साथ मिलाकर भक्षण करे तो बुढापा और रोग, अल्पमृत्यु तथा असाध्य रोगो को सात दिन मे दूर करे । इसके समान अमृत भी नहीं है । इसमे जो पारा और गधक डाले जायं वह शुद्ध होवे, यह प्रयोग हमारा परीक्षा किया हुआ है । अभ्रक द्रुति के प्रतिनिधि मे अभ्रक सत्व डालना चाहिये । यह रहस्य वार्त्ता हमने मनुष्यो के उपकारार्थं लिखी है ।

माक्षिक सत्वद्रावण

एरण्डोत्थेनतैलेन-
गुंजाक्षौद्रंचटकणं ।
मर्दितंतस्यवापेन-
सत्वमाक्षिकजंद्रवेत् ॥

अरण्डी का तेल, घूंघची गुड, शहद और सुहागा इनको पीसकर डालने से माक्षिक सत्व द्रवरूप हो जाय ।

स्वर्णमाक्षिकानुपान

अनुपानंवराव्योष-
वेल्ल साज्यंहिमाक्षिकम् ॥

त्रिफला, त्रिकुटा (सोठ, मिरच, पीपला) काली मिरच, मक्खन, और शहद ये सुवर्ण माक्षिक के अनुपान हैं अर्थात् इनके साथ देना चाहिये ।

अपक्व माक्षिक के दोष

अपक्वमाक्षिकेणाशु-
देहेसंक्रमतेरुजा ।
तद्दोषविनिवृत्यर्थ-
मनुपानब्रवीम्यहम् ॥

कच्चे सुवर्ण माक्षिक के खाने से देह मे अनेक रोग प्रगट होते हैं उनकी शान्ति के निमित्त अनुपान कहता हू ।

माक्षिक दोष शान्ति

कुलत्थस्यकषायेण-
माक्षीकविकृतिंजयेत् ।
दाडिमरसस्त्वचोवापि
प्रोक्ताविकृतिनाशिनी ।

कुलथी के काढे से अथवा अनार के काढे से माक्षिक का विकार शांत होवे ।

इति श्री सुवर्ण माक्षिकप्रकरणं समाप्तम्

रौप्य माक्षिक प्रकरण प्रारम्भः

तारमाक्षिकोत्पत्ति

तारमाक्षिकमन्यत्तु-
भवेतद्रजतोपमम् ।

किंचिद्रजतसाहित्या-
त्तारमाक्षिकमीरितं ॥१॥
अनुकल्पतयातस्य-
ततोहीनगुणा.स्मृता ॥
नकेवलंरौप्यगुणा-
वर्त्ततेतारमाक्षिके ॥२॥
द्रव्यांतरस्यसंसर्गा-
सत्यन्येपिगुणायतः ।

रौप्यमाक्षिक स्वर्ण माक्षिक का दूसरा भेद है, यह चांदी के समान होता है, और इसमे चादी का मेल होने से तारमाक्षिक कहलाता है, चांदी के अभाव मे दिया जाता है, इससे इसमें चान्दी की अपेक्षा कुछ न्यून गुण हैं, इसमें रौप्य (चादी) के ही केवल गुण नहीं हैं किन्तु अन्य द्रव्यो का सयोग होने से और भी वहुत गुण हैं।

अथास्य शोधनम्

कर्कोटीमेषशृंग्युत्थै
र्द्रवैर्जंवीरजैर्दिनं ॥३॥
भावयेदातपेतीव्रे-
विमलाशुध्यतिध्रुवं ॥

रूपामखी को ककोडा, मेढासिगो, जभीरी प्रत्येक के रस में सात २ वार धूप मे खरल रखकर घोटे तो शुद्ध होवे।

अथ मारणम्

कुलत्थस्यकषायेण
घृष्ट्वातैलेनवापुटेत्।
तैलेनवाजमूत्रेण-
म्रियतेतारमाक्षिकम् ।

शुद्ध रौप्यमाक्षिक को कुलथी के काढे मे १ दिन घोटे, इसी प्रकार तिल के तेल और वकरी के मूत्र में एक २ दिन घोटकर शराव सपुट में रख गजपुट की आच दे तो रौप्य माक्षिक भस्म होवे।

तथाच

स्वर्णमाक्षिकवद्ज्ञेयं
तारमाक्षिकमारण ।
विमलायागुणा.किंचिन्-
न्यूनाः कनकमाक्षिकात् ॥

रूपामक्खी का शोधन, मारण, सत्वपातनादि कर्म सुवर्णमाक्षिक के समान जानने, रौप्य-माक्षिक में सुवर्ण माक्षिक की अपेक्षा कुछ न्यून गुण हैं।

रौप्य माक्षिक के गुण

माक्षिकोरजतहाटकप्रभः
शोधितोतिगुणदःसुसेवितः
मेहकुष्ठकृमिशोफपांडुताप
स्मृतिंहरतिसोऽश्मरींजयेत् ॥

रौप्यमाक्षिक रूपे के समान और सोने के समान तेजस्वी होता है, यह शुद्ध किया हुआ अत्यन्त गुणदायक है, इसके सेवन से प्रमेह, कोढ, कृमि, सूजन, पीलिया, अपस्मार, तथा पथरी आदि रोग दूर होते हैं।

अथ विमला माक्षिक भेदः

तापीजद्विविधंवदन्ति-
विमला माक्षीकभेदादिह ।
त्रेधावातुसुवर्णकांस्यरज-
तच्छायानुकारादिदम् ॥
तिस्रोप्यस्त्रयुताश्चतुस्त्रि
फलिकावृत्तास्वनामश्रियो ।
मध्येतुत्रिफलाम्बुशुध्यति
दिनंवासाजशृंगीरसे ॥
स्विन्नाजभरसेपिताल
वलिनावस्वंशक्रेनाम्भसा ।
जम्भस्यैवपरिप्लुतादश
पुटैर्जीवन्नयोगानुगा. ॥

ताप्यमाक्षिक, विमला और माक्षिक के भेद से दो प्रकार का है, इन दोनो भेदों से प्रथम जो

तापिज है उसके तीन भेद हैं, यथा एक सुवर्ण सदृश सुवर्ण विमला, दूसरा कांस्य विमला तीसरा रौप्य विमला, इन तीनों मे सुवर्ण कांसी तथा रूपे की झलक होने से उसी २ धातु के नाम से कहे हैं। इन तीनो के लक्षण चपटे, त्रिकोण, चौकोण, और गोल क्रम से अपने २ शोभायुक्त होते हैं, इनमें कांस्य विमला श्रेष्ठ है, इनकी शुद्धि त्रिफला के काढे तथा अडूसे, मैंढासिंगी [कोई मेढ़ा सिंगी की जगह भागरा कहते हैं] इनके रस में तथा जंभीरी नींबू के रस में पूर्वोक्त तीनो विमलाओं का चूर्णकर वस्त्र मे बांध दोला यंत्र कर लटका देवे, तदनंतर शुद्ध हरताल, शुद्ध गधक, इनको विमला का अष्टमांश डाल जभीरी नींबू के रस मे खरल करे, पीछे गजपुट की आच दे इस प्रकार दश पुटों में विमला की भस्म होवे, इस भस्म को उक्त प्रयोगों मे देना चाहिये, यह सर्व रोगों को दूर करे।

विमला के भेद

विमलस्त्रिविधःप्रोक्तो-
हेमाद्यस्तारपूर्वकः।
तृतीयःकांस्यविमलः
तत्तत्कान्त्यसलक्ष्यते ॥
वर्तुल.कोणसंयुक्त
स्निग्धश्चफलकान्वितः।
मरुत्पित्तहरोवृष्यो-
विमलोतिरसायन. ॥
पूर्वोहेमक्रियासूक्तो-
द्वितीयोरूप्यकृन्मतः।
तृतीयोभेपजेतेपु-
पूर्वपूर्वोगुणोत्तरः।

विमला-सुवर्ण और रौप्य के भेद से दो प्रकार का है, कांस्यविमला तीसरा है, ये सुवर्ण आदि की काति से जाने जाते हैं, ये गोल कोण-युक्त, चिकने और भालदार होते हैं, तथा वादी, पित्त को हरण करता वृष्य हैं, रसायन है, सुवर्ण विमला सुवर्ण के कार्य में कहा है। दूसरा रौप्य माक्षिक चादी के कर्म मे कहा है। तीसरा कांस्य माक्षिक औषधि के कार्य मे कहा है। इनमें क्रम से एक से दूसरे मे विशेष गुण हैं।

तथाच

माक्षिकोद्विविधादिमः
कनकरुक्दुर्वर्णवर्णोऽपरं।
कांस्यश्रीकमुशंतिकेचन-
परंसर्वेपिपूर्वत्विषः॥
निःकोणागुरवःकिरंति-
निभृतघृष्ट्वाकरेकालिमां।

माक्षिक दो प्रकार का है तिनमें प्रथम सुवर्ण माक्षिक, दूसरा दुर्वर्ण अर्थात् रौप्य माक्षिक और कोई आचार्य तीसरा कांस्य माक्षिक कहते हैं तीनों माक्षिक विमल कान्ति वाले होते हैं। विमलाओं का स्वरूप कहते हैं-कोण रहित, भारी, तथा हाथ पर घिसने से कालौंच देते हैं।

शुद्धिमाह

स्विन्नास्तेरुवुतैललुंग-
सलिलैर्यामेनशुध्यंतिच।

इन तीनों को १ प्रहर अडी के तेल मे पचावे, अथवा बिजौरे के रस मे घोटे तो शुद्ध होवे

पक्वावाघटिकाद्वयेन-
कदलीकर्कोटिकाकंदयोः।

अथवा केला की जड के रस वा ककोडा के रस मे दो घड़ी पर्यंत औटाने से विमला की शुद्धि होवे।

रुध्वाकूर्मपुटैस्त्रिभिःपटुतरं-
लुंगाम्बुगंधप्लुताः
स्युर्भस्मानिजघन्यमध्य-
सुभगास्तेव्युत्क्रमेणोदिता॥
वृष्याःपाण्डुपटीयसो-
वलकरायोगोपयोगाःपुनः।

इस प्रकार के शुद्ध विमला के चूर्ण मे बिजौरे का रस और गंधक डालकर घोटे, पश्चात् शराव संपुट में रख कूर्मयंत्र (कच्छयन्त्र) मे ३ आच देवे तो स्वर्ण माक्षिक-कांस्य माक्षिक और रौप्य माक्षिक की भस्म होवे । कास्य रौप्य, सुवर्ण तीनो क्रम से अधम मध्य और उत्तम कहे है, इनकी भस्म-वृष्य (शुक्र बढ़ाने वाली) पांडुरोग को दूर करे, बल कारक, और योग के साथ अनेक गुण करे । कूर्म यत्र आगे मध्यखंड मे कहैंगे ।

विमला शोधन की दूसरी विधि

आढरूषजलेस्विन्नो-
विमलोविमलोभवेत् ।

अडूसे के जल में औटाने से विमला शुद्ध होती है ।

तीसरी विधि

जंम्बीरस्वरसेस्विन्नो-
मेषशृंगीरसेऽथवा ।
आयातिशुद्धिविमलो-
धातवश्चतथापरे ॥

जंभीरी के रस अथवा मेढासिगी के रस मे विमला शुद्ध होती है, तथा और धातुभी शुद्ध होती हैं ।

मारण की तीसरी विधि

गन्धाश्मकुचाम्लैश्च-
म्रियतेदशभिःपुटैः

गंधक और वढल के रस की दशपुट देने से तीनो प्रकार की विमला शुद्ध हो ।

विमला का सत्वपातन

सटकलकुचद्रावै-
र्मेषशृंग्याश्चभस्मना ॥
पिष्टोमूपोदरेलिप्त-
सशोष्यचनिरुध्यच ।
षट्प्रस्थकोकिलैर्ध्मातो-
विमलःसीससन्निभः ॥
सत्वंमुंचतितद्युक्तो-
रसःस्यात्सरसायनः ।

सुहागा, वढल का रस, मेढासिगी और विमला की भस्म, चारो को एकत्र घोट मूष मे रख ल्हेस दे, पश्चात् छःप्रस्त (छ.सेर) पक्के कोयलो मे रख वकनाल धोकनी से धौंके तो विमला का सफेद सत्व निकले, इस रस को रसायन मे देना चाहिये ।

तथा दूसरी विधि

विमलंशिग्रुतोयेन-
कांक्षीकासीसटंकणं ।
वज्रकंदसमायुक्तं-
भावितंकदलीरसै ॥
मोक्षकक्षारसयुक्तं-
ध्मापितंमूकमूषग ।
सत्वंचंद्राऽर्कसंकाशं-
पततेनात्रसशयः ॥

विमला को सहजने के रस, फिटकरी, कसीस, सुहागा और वज्रकंद के रस मे मिलाकर घोटे, तदनतर केला के रस की भावना दे फिर मोक्षक (मोखावृक्ष) का खार मिलाय मूषा मे रख अग्नि मे धोके तो चद्र सूर्य के समान प्रकाश वाला सत्व निकले ।

सत्व भक्षण विधि

तत्सत्वंसूतसंयुक्तं-
पिष्टिंकृत्वासुमर्दितं ।
विलीनेगंधकेक्षिप्त्वा-
जारयेत्रींत्रगुणालकम् ॥
शिलांपचगुणाचापि-
वालुकायत्रकेखलु ।
तारभस्मदशांशेन-
तावद्वैक्रांतकंमृतम् ॥

सर्वमेकत्रसचूर्ण्य-
पटेनपरिगाल्यच ।
निक्षिप्यकूपिकामध्ये-
परिपूर्य्यप्रयत्नतः ॥

निकाले हुए सत्व मे शुद्ध पारा मिला कर पिट्ठी करे, जब सत्व मिलजाय तब शुद्ध गंधक डाले, फिर दूनी हरिताल डाल कर जारण करे, और पांचगुना मनसिल जारण करे, इन सबको वालुकायंत्र में जारण करना चाहिये, जब इस प्रकार विमला की भस्म सिद्ध होजाय तब उसका दशांश रूपरस और इतनोही वैक्रांतमणि की भस्म डाले, इन सबको मिलाय चूर्णकर कपरछन करे, और किसी चीनी या शीशे के पात्र में रख छोडे ।

भस्म के गुण

लीढोव्योमवरान्वितो-
विमलकोयुक्तोघृतैःसेवितो ।
हन्यादुर्भगकृज्जरां-
श्वयथुकपांडुप्रमेहारुचीः ॥
मूलार्त्तिंगृहणींचशूल-
मतुलंयक्ष्मामयंकामला।
सर्वान्पित्तमरुद्भवान्किमप
रैर्योगैरशेपामयान् ॥

विमला की भस्म-अभ्रक त्रिफला (हरड, बहेडा, आवला) तथा गौंके मक्खन के साथ खाने से स्वरूप विगाडने वाला जरा (बुढापा) सूजन पांडुरोग, प्रमेह, अरुचि, बवासीर, सग्रहणी, घोरशूल, क्षय, कमलवायु, और सपुर्ण पित्त तथा वात रोगो को अलग २ अनुपानो के साथ दूर करे ।

तथानुपान

विषव्योपवराज्येनविमल सेवितोयदि ।
भगदरादिकान्रोगान्नृणांगच्छंतिदुस्तरा. ॥

विमला को सिंगियाविष, सोठ मिरच पीपल, हरड, बहेडा, आंवला और, घृत इनके साथ सेवन करने से मनुष्यों के भगंदरादि असाध्य रोग दूर होवें ।

विमला विकार की शांति

विकारोयदिजायेतविमलायानिपेवणात् ।
शर्करासहिताभक्षयामेषशृंगीदिनत्रयम् ॥

अपक विमला के खाने से यदि विकार प्रगट हो तो मिश्री के साथ मेढासिंगी का चूर्ण ३ दिन खाना चाहिये ।

अथ तुत्थ (नीलाथोथा) प्रकरणम्

नीलेथोथे की उत्पत्ति

पीत्वाहालाहलंवांतं-
पीतामृतगरुत्मता ।
विषेणाऽमृतयुक्तेन-
गिरौमरकताह्वये ॥
तद्वांतंहिघनीभूतं-
संजातंसस्यकंखलु ।
एकधासस्यकस्तुत्थः
शिखिकंठसमाकृतिः ॥
तुत्थस्यैवभवेद्भेदः
खर्परंतद्गुणंभवेत् ।
शिखिकंठसदृक्छाय-
भाराढ्यमतिशस्यते ॥
द्रव्यंविषयुतंयत्-
द्रव्याधिकगुणंभवेत् ॥
हालाहलंसुधायुक्त-
सुधाधिकगुणंतथा ।
सस्यकतुत्थकचैव-
नामभेदप्रकीर्तितम् ।

प्रथम गरुडने हलाहल विषको पान किया जब चित्त घबडाया तब अमृत पिया पश्चात् अमृत और विष सयुक्त मर्कत (अन्ने) के पर्वत पर वमन (रद) की वही वमन दृढ होकर सस्यक नाम से प्रसिद्ध हुआ, इस सस्यक का दूसरा भेद तुत्थ (नीलाथोथा) है, इनका रग

मोर की गर्दन के समान होता है, और तुत्थ का दूसरा भेद खपरिया है, इनमे मोर की गर्दन के समान रंगवाला और भारी तुत्थक होता है, यह विषयुक्त होने से विष के समान, और अमृत युक्त होने से अमृत के समान गुण करते हैं, जो वस्तु अधिक हो उसी के समान गुण करें सस्यक और तुत्थक यह केवल नाम भेद है वास्तव में दोनो एक ही हैं।

सस्यक शुद्धि

सस्यकंशुद्धिमाप्नोति-
रक्तवर्गेणभावितं ।
स्नेहवर्गेणसंसिक्तं
सप्तवारमदूषितम् ॥

रक्त वर्ग की भावना देकर ७ वार स्नेह वर्ग में औटाने से तुत्थ शुद्ध होवे। परन्तु प्रत्येक वार रक्त वर्ग की भावना देकर स्नेह वर्ग मे औटावे तो शुद्ध हो रक्त वर्ग, और स्नेह वर्ग दोनों मध्य खंड में कहेंगे।

तथा दूसरा प्रकार

दोलायंत्रेणसुस्विन्नं-
सस्यकंप्रहरत्रयम्।
गोमहिष्याजमूत्रेषु-
शुद्ध्यतेयंचखर्परम् ॥

गौ, भैंसा, और बकरा तीनों के मूत्र में दोलायन्त्र द्वारा सस्यक को स्वेदन करने से शुद्ध होवे।

तीसरी विधि

ओतोविष्टासमंतुत्थं
सक्षौद्रटकणान्वितम्।
त्रिविधंपुटितशुद्धं-
वांतिभ्रांतिविवर्जितम् ॥
अम्लवर्गेणलुलितं-
स्नेहसिक्तंहितुत्थकं ।
दोलायांवाजिगोमूत्रे,
दिनपक्वंविशुध्यति ॥

मोर चूत के समान बिल्ली की विष्टा ले, उसमें शहद और सुहागा डाल खरल करे, पश्चात् शराव संपुट में रख कपर मिट्टी कर फूंके इस प्रकार ३ वार करने से नीलाथोथा वमन और भ्रांति रहित शुद्ध हो, अथवा नीलेथोथे को अम्लवर्ग मे खरल कर स्नेहवर्ग मे स्वेदन करे, अथवा घोडे के मूत मे दोलायन्त्र द्वारा पकाने से नीलाथोथा शुद्ध हो। अथवा गोमूत्र मे औटाने से शुद्ध हो।

चौथी विधि

विष्टयामर्दयेत्तुत्थ-
मार्जारककपोतयोः ।
दशांशंटंकणंदत्वा-
पचेन्मृदुपुटेततः ॥
पुटेद्घ्नापुटक्षौद्र-
देयंतुत्थविशुद्धये ।

बिल्ली और कबूतर की बीठ में नीलाथोथा खरल कर नीलेथोथे का दशांश सुहागा डाल शराव संपुट मे रख कपर मिट्टी कर आरने उपलों की हलकी आंच देवे, पश्चात् निकाल दही का पुट देकर अग्नि देवे इसी प्रकार शहद का पुट दे तो नीलाथोथा शुद्ध होवे।

अथ मारण

लकुचद्रावगंधाश्म-
टंकणेनसमन्वितम् ।
अधमूषागतंद्वित्री-
कुक्कुटैर्मृत्युमाप्नुयात् ॥

गंधक, सुहागा और नीलाथोथा तीनो को कठल के रस मे खरल कर अन्धमूषा मे रख कर फूंके, इस प्रकार दो तीन कुक्कुट पुटो मे नीलाथोथे की भस्म हो।

सत्व निकालना

सस्यकस्यतुचूर्णंतु-
पादसौभाग्यसंयुत ।

करंजतैलमध्यस्थं-
दिनमेकंनिधापयेत् ॥
अंधमूषासुमध्यस्थं-
ध्मापयेत्कोकिलत्रयं ।
इन्द्रगोपाकृतिंचैव-
सत्वंपततिशोभनम् ॥

सस्यक (नीलाथोथे) के चूर्ण में चतुर्थांश सुहागा मिलाय १ दिन कजा के तेल में भिगोवे, पश्चात् अन्ध मूष में रख पक्के कोयलो में बंक नाल से धोंके तो इन्द्र गोप (वीरबहूटी) के समान लाल सत्व निकले ।

दूसरी विधि

निम्बुद्रवाल्पटंकाभ्यां-
मूषामध्येनिरुध्यच ।
ताम्ररूपंपरिध्मातं-
सत्वंमुंचतिसस्यकम् ॥

नींबू के रस में नीलाथोथे और सुहागे को मिलाकर मूषयंत्र में रख भट्टी में बकनाल से धोंकने से ताम्र समान सत्व निकले ।

तीसरी विधि

गुग्गुलष्टंकणंलाक्षा-
स्वर्जिसर्जिजरसंपट्टुः ।
ऊर्णागुंजाक्षुद्रमीन-
मस्थीनिशशकस्यच ॥
गुंजामध्वाज्यसंयुक्तं-
पिण्याकंचअजापयै ।
तुत्थस्यचदशांशेन-
प्रक्षिप्तंवटिकीकृतम् ॥
ध्मातंचअन्धमूषायां-
सत्वपततिशोभनम् ।

गूगल, सुहागा, लाख, राल, सज्जी, नमक, ऊन, घूंघची, छोटी मछली, ससे की हड्डी, शहद, घृत, खल (तेल निकालने के बाद जो बचे) और बकरी का दूध इन सब को तुत्थ का दशांश ले तुत्थ में मिलाकर गोला बनाय मूषा में रख अग्नि मे बंकनाल से धोके तो उत्तम सत्व निकले ।

बिना अग्नितुत्थकासत्वनिकालना

अथवातुत्थकंचूर्णं-
निंबुनीरेविनिक्षिपेत्
धारयेल्लोहपात्रेच-
यावत्सप्तदिनानिवै: ॥
लोहपात्रात्समुद्धृत्य-
सत्वंग्राह्यंसुशोभनं ।
सिद्धयोगमिदंख्यात-
हुताशनपुटंबिना ॥

तुत्थ (नीलाथोथे) को लोह पात्र मे चूर्ण कर उसमे नीबू का रस भरकर सातदिन रक्खा रहने दे, आठवें दिन तुत्थका सत्व पात्र की पैंदी मे बैठ जाय उसे लेना चाहिये । यह सिद्धयोग बिना अग्नि के सत्व निकालना कहा है । भूनाग सत्व के प्रकरण मे मोर पंख से तांबा निकालने की विधि कह आये हैं, इसे ताम्र प्रकरण मे देखना चाहिये तथापि यहां मोर पंख से ताम्र निकालने की विधि स्पष्ट कहते हैं ।

मोर पंख से ताम्र निकालना

मयूरपक्षमादाय-
ज्वालयेदाज्यसर्पिषा ।
खलगुग्गुलमीनोर्णा-
टंकणसर्जिकामधु ॥
गुंजापिप्पललाक्षाच-
घृतचैकत्रकारयेत् ।
धमेत्तदधमूषाया-
नागताम्रंप्रजायते ॥

मोर पख की राख घृत मिलाकर करे, उसमे खल, गूगल, छोटी मछली, ऊन, सुहागा, राल, शहद, गुंजा (घूंघची) पीपल की लाख और घृत सब को मिलाय अन्धमूषा मे रख बकनाल से धोके तो मोरपंख से तांबा निकले इसे नाग ताम्र कहते हैं ।

भूनागसत्व निकालने का प्रकारांतर

भूभुजंगसमादाय-
चतुप्रस्थसमन्वितम् ।
प्रक्षाल्यरजनीतोयैः
शीतलैश्चजलैरपि ॥
उपोषितमयूरंच-
शूरंवाचरणायुधम् ।
क्रमेणचारयित्वाथ-
तद्विष्टांसमुपाहरेत् ॥
क्षाराम्लैसहसपेष्य-
विशोष्यचखरातपे ।
ततःखरखरकेक्षिप्त्वा-
भर्जयित्वामर्षिचरेत् ॥
मर्षिद्रावणवर्गेण-
संयुक्त सुप्रमर्द्दितं ।
निरुध्यकोष्टिकामध्ये-
प्रधमेत्घटिकाद्वयम् ॥
शीतलीभूतमूषायां-
खोटमाहृत्यपेषयेत् ।
प्रक्षाल्यरचकान्शुद्धान्-
ममादायप्रयत्नतः ॥

४ सेर केंचुओं को हलदी के पानी से धोकर पश्चात् शीतल जल से धोवे, फिर भूंखे मोर वा भूंखे मुर्ग को खिलावे, जब वह बीठ करें उसे इकट्ठी कर उसमें खार और खटाई मिलाकर पीस डाले, फिर तेज धूप मे सुखाकर चालनी में भूने जब-तक कोयलाके समान काले होवें, पश्चात् द्रावण वर्ग मे मिलाय के मर्दन करे, और मूषा में रख दो घडी पर्य्यंत वकनाल से धोंके, फिर स्वाग शीतल होने पर निकाल कर खंगड को पीसे और जल से शुद्ध कर उसमें से ताम्रे के रवाओ को युक्ति से निकाल लेवे ।

विषहरण मुद्रिका (अंगूठी)

तुल्यसत्वंनागताम्रं-
हेमचैवसमांशकम् ।
मुद्रिकेयंविधातव्या-
शूलघ्नीतत्क्षणाद्भवेत् ।
चराचरविषंभूतं-
डाकिनिदृग्गतंजयेत् ।
कनिष्ठकांधार्यमाणे-
विषघ्नीसर्वदाभवेत् ॥
रामवत्सोमसेनानी-
मुद्रितेयंतदाक्षरैः ।
हिमालयोत्तरेतीरे-
अश्वकर्णोमहाद्रुमः ॥
तत्रशूलंसमुत्पन्नं-
तत्रैवनिधनंगतः ।
मंत्रेणानेनमुद्रांबु-
निपीतंसप्तमंत्रितम् ॥
सद्यःशूलहरंप्रोक्तं-
सत्यंभालुकिभाषितं ।
अनयामुद्रयातप्तं-
तैलमग्नौसुनिश्चितम् ॥
लेपितहतिवेगेन-
शूलंयत्रकचिद्भवेत् ।
सद्यःसूतिकरंनार्याः
सद्योनेत्ररूजापह ॥

नीलाथोथे का सत्व, नागताम्र (केंचुए का तांमा) इनकी वरावर सोना डालकर अगूठी वनाना चाहिये, यह अगूठी तत्काल स्थावर और जगम विषों तथा भूतवाधा और डाकिनी का विष इनको दूर करे,उसको दाहने हाथ की छोटी अगूली में नित्य पहरना चाहिये, रामवत्सोम सेनानी इस मंत्र से जल को सात वार मन्त्रित कर उस मे अंगूठी को धोकर पिलाने से शीघ्र शूल (दर्द) का नाश करे, यह भालुकी महात्मा ने कहा है । इस अंगूठी को तेल मे डाल कर अग्नि पर ओटावे,फिर इस तेल को दर्द की जगह लगावे तो दर्द उसी समय नष्ट होवे, प्रसव पीडिता इसके धुले जलको पीवे तो तत्काल प्रसूती होवे, और नेत्र रोगी के नेत्र अच्छे होवें ।

अथ तुत्थसत्वमारण

पाषाणभेदीमत्स्याक्षीद्रवैः
द्विगुणगंधकम् ।
सत्वस्यलेपयेत्पिष्टं-
रुध्वागजपुटेपचेत् ॥
समांशेनपुनर्गंधं-
दत्वाद्रावैश्चालोडयेत् ।
एवंसप्तपुटैःपक्व-
सत्वभस्मंभवेद्ध्रुवम् ॥

पाषाण भेद और मछेछी के रस मे सत्व से दूनी गंधक लेकर खरल करे, पीछे उस पिट्ठी में सत्व का लेपन कर गजपुट में फूंके, फिर सत्व के समान गंधक डाल मछेछी और पाषाण भेद के रस में खरल कर गजपुट में फूंके, इस प्रकार सात वार मे सत्व की भस्म निश्चय होवे ।

दूसरी विधि

सत्वस्यद्विगुणंसूतं-
गधंदेयंचतुर्गुणं ।
जंबीराम्लेनतत्सर्वं-
मर्दयेत्प्रहरत्रयम् ॥
आदौमूषान्तरेक्षिप्त्वा-
धत्तूरस्यतुपत्रकम् ।
आछाद्यधूर्त्तपत्रैश्च-
रुध्वागजपुटेपचेत् ॥
स्वांगशीतंतुसंचूर्ण्य-
मृतंभवतिनिश्चितम् ।
एवंसप्तविधंकृत्वा-
निरुत्थंचमृतभवेत् ॥

सत्व से दूना पारा और चौगुनी गधक डाल कर जबीरी के नीबू के रस मे ३ प्रहर मर्दन कर पीछे मूषा में रख धतूरे के पत्तों से आच्छादित कर गजपुट में फूंक दे, जब स्वांग शीतल होजाय तब चूर्ण करे, इस प्रकार सात बार करने से निरुत्थ भस्म होवे।

तुत्थसत्व भस्म के गुण

निश्शेषदोषविषहृद्गुदशूलमूल-
कुष्टाम्लपैत्तिकविबंधहरंपरंच ।
रासायनंवमनरेचककरं
गरघ्नंचित्रापहंगदितमत्रमयूरतुत्थम् ।

सकल दोषोको, विष गुदा का शूल, बवासीर, कोढ़, अम्लपित्त, और अफराको दूर करे, रसायन है, वमन और रेचन करे, चित्रकुष्ठ को हरे, ये गुण नीलेथोथे के कहे हैं ।

तुत्थ विकार शांति

जंम्बीररसमादाय-
यःपिबेच्चदिनत्रय ।
तस्यतुत्थकशांतिस्यात्त-
द्वलाजेनवारिणा ॥

जंबीरी का रस पीने से तुत्थक विकार शांति होवें, अथवा धान की खीलों का पानी पीने से शांति होवें ।

इतिश्री वृहद्रसराजसुंदरे तुत्थप्रकरणम्

चपल

यत्रजातौनागवंगौ-
चपलस्तत्रजायते ।
गौरश्चेतारुणकृष्णश्च-
पलस्तुचतुर्विधः ।
हेमाभश्चैवताराभो-
विशेषाद्रसबन्धक. ।
शेषौतुमध्यौलाक्षाव-
च्छीघ्रद्रावीतुनिष्फलौ ॥
बंगवद्द्रवतेवन्हौ-
चपलस्तेनकीर्त्तितः ।
चीयतेनापिवन्हिस्थः
सत्वरूपोमहाबल. ।
ईदृशश्चपलौवास्या-
द्वादीनांवादसिद्धये ॥

जिस स्थान से सीसा और रांग प्रगट होता

है उसी से चपल (शीशे का भेद) प्रगट होता है वह गौर, सफेद, लाल और काले के भेद से चार प्रकार का है। इनमें सोने और रूपे के समान जो चपल हैं उनको पारद के बन्धन कर्त्ता जानने, और बाकी लाख के समान शीघ्र अग्नि में पतले हो जाते हैं उन्हें निष्फल जानना, वंग (रांग) के समान अग्नि पर पतले होने से इनको चपल कहते हैं (अब कार्य्य मे ग्रहण योग्य में लक्षण कहते हैं) जो अग्नि में फूंकने से नष्ट नहीं होता, सत्वरूप, महाबली ऐसा चपल धातुवाद की सिद्धि के अर्थ लेना चाहिये।

चपल का स्वरूप

चपलस्फटिकच्छायः
षड्स्स्निग्धकोगुरुः।
महारसेपुकैश्चिद्धि
चपल-परिकीर्त्तितः।
अयंतूपरसःकैश्चि-
त्पठितोन्यैरसेपुच ।

चपल-स्फटिक मणि के समान स्वच्छ, छः कोने वाला चिकना और भारी होता है, कोई आचार्य इसको महारसों में गणना करते हैं और कोई उपरसों मे कहते हैं।

नाग संभव चपल के लक्षण

त्रिंशतपलमितंनागं-
भानुदुग्धेनमर्दितम् ।
विलिप्यपुटेत्तावद्या-
वत्कर्पावशेपितम् ॥
नतत्पुटसहस्रेण-
क्षयमाप्नोतिसर्वथा।
चपलोयसमुद्दिष्टो-
वार्त्तिकैर्नागसम्भवः॥
तत्पृष्टहस्तसस्पृष्ट
केवलोवध्यतेरसः ।

३० पल सीसा आक के दूध में खरल कर सपुट मे रख फूकदे जब तक १ कर्ष बाकी रहे तबतक ऐसा करता रहे, यह १ कर्ष बचा हुआ सीसा हजार पुटो में भी नष्ट नहीं होवें, यह नाग संभव चपल कहाता है, इसको हथेली पर रख पारे के साथ मर्दन करे तो पारा बद्ध (कायम) हो जाता है।

चपल शोधनम्

विषोपविषधान्याम्लै-
र्मर्दितश्चपलस्तथा ।
जंवीरकर्कोटकशृंगवेरैर्वि-
भावनाभिश्चपलस्यशुद्धिः ॥

विष, उपविष और कांजी में खरल करने से तथा जबीरी नींबू, ककोडा और अदरख के रस की भावना देने से चपल शुद्ध होवे।

चपल मारण

मारयेत्पुटपाकेन-
चपलोगिरिमस्तके ।
ताम्रवन्मारणंचापि-
चपलस्यप्रशस्यते ॥

त्रायमाण अथवा मौलसिरी के पुट पाक से चपल की भस्म होवे, अथवा ताम्र के समान चपल का मारण करे।

दूसरी विधि

शैलंसुचूर्णयित्वातु-
धान्याम्लोपविषैर्विषैः ।
पिंडंवध्वातुविधिव-
त्पातयेच्चपलंतथा ॥

शिलाजीत का चूर्णकर उसमें चपल को डाल विष और उपविष से गोला बांध संपुट कर फूंके तो चपल मरे।

चपल का सत्व निकालना

सत्वमंभ्रवद्ग्राह्य-
सूतबंधकरपरम् ।

चपल का सत्व अभ्रक सत्व की विधि से निकालना चाहिये, चपल का सत्व पारे का बाधने वाला है ।

चपल का गुण

गुल्मामशूलशोषेषु-
प्रमेहेषुज्वरेषुच ।
प्रदरेषुप्रयोक्तव्यः
चपलस्त्वमृतोपमः ॥
चपलोलेखनःस्निग्धो-
देहलोहकरोमतः ॥
रसराजसहायस्या-
त्तिक्तोष्णोमधुरोमतः॥
त्रिदोषघ्नोतिवृष्यश्च-
रसवधविधायकः ।

गोला, आमवात, शूल, शोष, प्रमेह, ज्वर, और प्रदर रोग इनमें इन अमृतोपम चपल को देना चाहिये चपल लेखन और चिकना है, देह को लोह के समान कठोर करे, पारे का सहायक है, तिक्त, गरम और मीठा है, त्रिदोष को दूर करे, अत्यत वृष्य (शुक्र पैदा करने वाला) है, पारे को बांधने वाला है ।

कंकुष्ठ (मुरदाशंख)

हिमवत्पादशिखरे-
कंकुष्ठमुपजायते ।
तत्रैकंनलिकाख्यंच-
तदन्यद्रेणुकंमतम् ॥

हिमालय पर्वत की शिखरो मे मुरदा शख प्रगट होता है, वह दो प्रकार का है एक नलिकाख्य, दूसरा रेणुक ।

नलिका के लक्षण

पीतप्रभंगुरुस्निग्ध-
कंकुष्ठशिलयासमं ।
मृद्वतीवशलाकाभं-
सछिद्रंनलिकाभिधं ॥

पीला,[1] भारी, चिकना, शिला के समान, अत्यंत नम्र, सलाका के सदृश जिसमे छिद्र हो उसै नलिक कंकुष्ठ कहते हैं यह श्रेष्ठ है ।

रेणुका कंकुष्ठ के लक्षण

रेणुकाख्यंतुकंकुष्ठं-
श्यामंपीतरजोन्वितं ।
त्यक्तसत्वलघुप्रायः
पूर्वस्माद्धीनसत्वकं ॥

रेणुका ककुष्ठ काला, पीला, धूल से लिहसा, सत्व रहित और हलका होता है, यह पहले की अपेक्षा हीन गुण वाला है ।

कंकुष्ठ के नाम

कंकुष्ठंकाककुष्ठंच-
वरांगंकोलवालुकं ।
उपधातुस्तुवंगस्य-
इतिभालुकिभाषितम् ॥

ककुष्ठ, काककुष्ठ, वरांग, कोलवालुक, ये मुरदाशंख के नाम हैं, ये वंग की उपधातु है, यह भालुकी आचार्य ने कहा है ।

वाग्भटस्तु

सद्योजातस्यकरिणः
शकृत्कंकुष्ठमुच्यते ।
यद्वासद्यःप्रसूतस्य-
वाजिबालस्यविट्स्मृतं ॥
नालंवावाजिबालस्ये-
त्येवंनानाविधमतं ।
आप्तवाक्यात्प्रमाण-
तुसर्वेषांवचनजगुः ॥

वाग्भट ग्रथकर्त्ता कहता है कि सद्यजात हाथी का विष्टा कंकुष्ठ है अथवा सद्यजाए घोडे के बच्चे की विष्ठा है, अथवा घोडे के बच्चे का नाल है, ऐसे अनेक प्रकार के मत हैं आप्त वाक्य प्रमाण होने से सब के वचन कहै हैं ।

कंकुष्ठ की शुद्धि

कंकुष्ठंशुद्धतांयाति-
त्रेधाशुठ्यंबुभावितं ।

सोंठके जल में तीन वार भिजोने से कंकुष्ठ की शुद्धि होवे ।

रसेरसायनेश्रेष्ठं
निःसत्वंबहुवैकृतं ।
सत्वोत्कर्षोस्यनप्रोक्तो-
यस्मात्सत्वमयंहितत् ॥

शुद्ध किया मुरदाशंख रस और रसायन में श्रेष्ठ है, और जो सत्व रहित है सो बहुत विकार करता है,इसका सत्व निकालना नहीं कहा क्योंकि यह स्वयं सत्वरूप है ।

मुरदाशंख के गुण

कंकुष्ठंतिक्तकटुकं-
वीर्योष्णंचातिरेचन ।
नाशयेदाममातिश्च-
रेचयेत्क्षणमात्रतः ॥
व्रणोदावर्त्तशूलार्त्ति-
गुल्मप्लीहगुदार्त्तिनुत् ।
कंकुष्ठंनाशेयच्छीघ्रं-
कठोदरजलोदरं ॥

कंकुष्ठ-तीखा, कड़वा, वीर्य्य के रोगों को दूर कर्त्ता, अत्यंत रेचन, आमवात नाशक, क्षण-मात्र मे दस्त लावे, व्रण, उदावर्त्त, शूल, गोला तापतिल्ली, बवासीर, कठोदर और जलोदर को मुरदाशख शीघ्र नाश करे ।

कंकुष्ठपथ्यम्

भजेदेनविरेकार्थं-
ग्राह्यंतुयवमात्रया ।
वर्बुराकुलिकाकाथ-
जीरकसौभाग्यटंकणं ॥
कंकुष्ठंविषनाशाय-
भूयोभूयोपिबेन्नरः ।

विरेचन के अर्थ इसको जौ के समान ग्रहण करे, और बबूल, मेढासिगी, जीरा, सिंदूर और सुहागे के साथ मुरदाशंख को विष नाशनार्थ वारंवार सेवन करे ।

रसक (खपरिया)

रसकोद्विविधप्रोक्तोदर्दुरः
कारवेल्लकः ।
सदलोदर्दुरःप्रोक्तः
निर्दलःकारवेल्लकः ॥
सत्वपातेशुभःपूर्वो -
द्वितीयश्चौषधाधिपु ।

रसक दो प्रकार का है, दर्दुर और कारवे-ल्लक, इनमे दलदार दर्दुर और दलरहित कार-वेल्लक होता है, इनमें भी सत्व पातन मे पहिला शुभ है, और औषधादिक मे दूसरा लेना ।

पीतकृष्णस्तथारक्तः
क्वचित्संदृश्यतेभुविः ।
नागार्जुनेनसंदिष्टौ-
रसकश्चकलंवुकौ ॥

पीला, काला और लाल खपरिया किसी २ पृथ्वी में दीखता है नागार्जुन आचार्य्य ने इसके रसक और कलंबुक दो भेद कहे हैं ।

रसदर्पणेतु

मृत्पाषाणगुडैस्तुल्य-
स्त्रिविधोरसकोमतः ।
पीतस्तुमृत्तिकाकारः
श्रेष्ठस्यात्सतुपत्तलः ॥
गुडाभोमध्यम.स्थूलो.
पाषाणाभःकनिष्ठकः ।

मिट्टी, पत्थर और गुड के सदृश होने से खपरिया तीन प्रकार की मिट्टी के आकार पीली और पत्रवान श्रेष्ठ है गुड के समान मध्यम और पत्थर के समान स्थूल अधम है ।

रसपद्धतौ

रसकतुत्थभेदःस्या-
त्खर्परंचापितत्स्मृतम् ।

येगुणास्तुत्थकेप्रोक्ता-
स्तेगुणारसकेस्मृताः ॥

रसक तुत्थ का भेद है, इसे खर्पर भी कहते हैं, जो गुण तुत्थ में हैं वही रसक (खपरिया) में हैं।

अथास्य शोधनम्

कटुकालाबुनिर्यासे-
रालोड्यरसकंपचेत्।
शुद्धंदोषविनिर्मुक्तं-
पीतवर्णंतुजायते ॥

कड़वीतूंबी के रस में खपरिया को मिलाकर औटाने से दोष रहित शुद्ध पीले वर्ण की होती है।

द्वितीय प्रकार

पुंसांचमूत्रेरसकास्यचूर्णं-
गोमूत्रकेसत्वपचेद्दिनानि ।
एवोहिदोलावरयंत्रशुद्धः
संयोजनीयःसकलेतुकार्य्ये ।

खपरिया को मनुष्य के मूत्र वा गोमूत्र में डोलायंत्र द्वारा पचाने से शुद्ध होवे इसको सर्व कार्यों में योजना करे।

तीसरा प्रकार

खर्परःपरिसंतप्तः
सप्तवारनिमज्जितः।
बीजपूररसस्यांत-
र्निर्मलत्वंसमश्नुते ॥

खपरिया को तपा २ कर सातबार बिजौरे के रस में बुझाने से शुद्ध होता है।

चौथा प्रकार

नृमूत्रेवाश्वमूत्रेवा-
तक्रेवाकांजिकेऽथवा।
वृंताकमूषिकामध्ये-
निरुध्यगुटिकाकृतिः ॥
ध्माताध्मातासमाकृष्य-
ढालयित्वाशिलातले।
प्रताप्यमज्जितंसम्यक्-
खर्परःपरिशुद्ध्यति ॥

खपरिया को मनुष्य वा घोडे के मूत्र मे अथवा छाछ तथा कांजी मे पीस गोला बनाय मूषा में रख कपर मिट्टी कर अग्नि में फूंके पीछे निकाल पत्थर पर पीस तपाय फिर मूत्रादि में डुबोवे इस प्रकार बहुत देर तक करने से खपरिया शुद्ध होवे।

रसश्चरसकश्चोभयो-
येनाग्निसहनौकृतौ।
देहलोहमयीसिद्धि-
र्दायीतस्यनसंशयः ॥

जिस पुरुष ने रस (पारा) रसक (खपरिया) ये दोनों अग्निस्थायी कर लिए, उसकी देह लोह के समान हो जाती है यह निस्सन्देह सिद्धि दायी है।

अस्थिरोग्निगतोत्यर्थं-
दह्यतेक्षणमात्रतः ।
तस्यस्थैर्यकरंद्रव्यं-
नान्यदस्तीतिभूतले ॥

अग्नि में स्थिर न रहना, क्षणमात्र में फुक जाना, ये खपरिया के धर्म हैं । इसको अग्नि स्थायी करने वाली औषधि पृथ्वी पर नहीं है, यह टोडरानंद ने लिखा है,।

अग्नि स्थायी करने की विधि

शुद्धंकिंचुलजंसत्वं-
तद्रसैर्वापिमर्दितम्।
स्थैर्यंभजेत्सरसको-
नान्यै.कोटिशतैरपि ॥

केंचुए के ताबे के बुरादे को केंचुए के रस मे घोटे इसके साथ खपरिया को अग्नि मे रखे तो खपरिया अग्निस्थायी होवे, और करोड उपायों से भी अग्निस्थायी नहीं होवे, यह भी टोडरानद लिखा है।

दूसरी विधि

हरिद्रात्रिफलाराल-
सिंधुधूमैःसटंकणैः ।
भल्लातयुक्तैःपादांशैः
साम्लैःसंमर्द्य खर्परम् ॥
लिप्तंवृंताकमूषाया-
शोषयित्वानिरुध्यच ।
मूषामुखोपरिन्यस्य-
खर्परंप्रधमेत्तत. ।
खर्परेप्रहृतेज्वाला-
सानीलाभासितायदि ।
तदासंदंशतोमूषा-
नीत्वाकृत्वाह्यधोमुखीं ॥
शनैरास्फालयेद्भूमौ
यथानालंनभज्यते ।
वंगाभंपतितंसत्वं-
समादायनियोजयेत् ॥
एवंद्वित्रीचतुर्वारैः
सर्वसत्वंविनिःसरेत् ॥

हलदी, हरड, बहेडा, आंवला, राल सेंधा नोन, मनसिल, सुहागा, और भिलावे, इनको खपरिया की चतुर्थांग ले सब को नींबू के रस मे घोट पिट्ठी को वृंताक मूषा (बैंगन के आकार मूषा) में रख मूषा को सुखाय वद कर अग्नि में रख वकनालसैं धोंके, जव खपरिया से सफेद नीली ज्वाला निकलें तव मूषा को सहज संडासीसे पकड पृथ्वी पर इस प्रकार उडेले कि जिसमे सत्व की नाली न टूटे, तो वग के समान सत्व निक्ले इस प्रकार दो तीन या चार वार मे सब सत्व निकाल कर कार्य मे लावे।

तीसरी विधि

यद्वाजलयुतांस्थालीं-
निखनेत्कोष्ठिकोदरे ।
सच्छिद्रंतन्मुखेमल्ल -
तन्मुखेऽधोमुखींक्षिपेत् ॥
मूषोपरिशिखित्रांश्च-
प्रक्षिप्यप्रधमेद्दृढं ।
पतितंस्थालिकानीरे-
सत्वमादाययोजयेत् ॥

अथवा जलयुक्त थाली को कोष्टिका के भीतर रख उस मे जो छेद हो उसे मल्ल (मुख मूंदने के मसाले,) से वद कर मूषा का मुख नीचे कीतरफ रखे, पीछे उस स्थाली के ऊपर अग्नि रख खूब धोके तो मूषा मे से सत्व टपक २ कर उस थाली के जल मे गिरे, उसे कार्य्य में लावे ।

रसक मारण

लाक्षागुडासुरीपथ्या-
हरिद्रासर्जटंकणैः
सम्यक्‌तच्चूर्णयतत्पक्कं-
गोदुग्धेनघृतेनच ॥
सत्वंगाकृतिर्ग्राह्यं-
रसकस्यमनोहरम् ।

लाख, गुड, राई, हरड, हल्दी, राल सुहागा इन सब औषधियो को पीस खपरिया मिलाय और गोदुग्ध और घृत का संपुट दे अग्नि में रख कर फूंके तो वंग के समान सुन्दर सत्व निकले ।

तत्सत्वंतालकोपेतं-
निक्षिप्यखलुखर्परे ।
मर्दयेल्लोहदंडेन-
भस्मीभवतिनिश्चितम् ॥

उस खपरिया के सत्व में हरिताल का मिलाय खोपरे मे रख लोहे के मूसले से घोटे तो भस्म होवे ।

तथा दूसरी विधि

खर्परंपारदेनैव-
चूर्णयित्वादिनंपचेत् ।
वालुकायंत्रमध्यस्थं-
शोभनंभस्मजायते ॥

खपरिया को पारे के साथ घोट वालुका यंत्र मे एक दिन पचावे तो सुन्दर भस्म होवे ।

तीसरी विधि

खर्प्पर पत्रकंकृत्वा-
लवणांतर्गतंपचेत् ।
जायतेशोभनभस्म-
सर्वरोगापहंस्मृतम् ॥

खपरिया के पत्रकर नोन के बीच रख अग्नि देवे तो शुद्ध भस्म होवे, और सब रोगो को हरण करे ।

चौथी विधि

हंसपदी, बडाल, बड का दूध, आक का दूध थूहर का दूध, प्रत्येक दूध मे खपरिया को पृथक् २ तीन २ आंच दे- तो भस्म हो । परन्तु प्रत्येक दूध में घोट सुखाय टिकडी बाध शराब संपुट मे रख आंच देनी चाहिये ।

अग्निस्थायी करने की दूसरी विधि टोडरानंद से

कन्यकादलमादाय-
तद्दलंकारयेद्द्विधा ।
एकस्मिनतद्दलेधृत्वा-
खर्परमापवत्कृतम ॥
द्वितीयमपरंदत्वो-
परिष्ठात्कन्यकादल ।
द्वितीयमपरंचास्ते-
यद्द्विधाकृतवस्तुतत् ॥
निरुध्यतेदलंतत्तु-
खरमूत्रस्यमध्यगं ।
क्रियतेस्वेदतेताव-
द्यावन्मूत्रक्षयोभवेत् ।
एवंदिनत्रयंशोध्य
क्रियते दलस्यच ।
त्रिवारंक्रियतेप्येव
तद्दलेखर्परस्यच ।
अर्कक्षीरेजायतेनून-
मग्निस्थायीचखर्परः ।
यदिवन्हौविनिक्षिप्तः
खर्परोधूमवान्भवेत् ॥
तदापुनर्दलेदेयः
खर्परोदृढतांव्रजेत् ।
क्षारिकालवणेपश्चात्-
खर्परःपाच्यतेपुनः ॥
दिनद्वयभवेदेवं-
पातःखर्परकस्यच ।
पुनरग्नौपरीक्षेत-
खर्परोदृढमुत्तमः ॥
यदिधूमोद्गमोभूया-
त्खर्परःपाच्यतेतदा ।
पुनरादीयतेतत्र-
भूनागतनुजद्रवः ॥
भावयेत्पुटयेत्सप्त-
भावनाभिश्चखर्परः ।

ग्वारपट्ठे को लेकर उसकी दो फाक कर एक में खपरिया के छोटे २ टुकड़े कर रखे और दूसरे से ढक बांध दे और गधी के मूत्र मे मूत्र सूखने पर्य्यंत स्वेदन करे, ऐसे ३ दिन स्वेदन कर घीग्वार के पट्ठो से निकाल नवीन घीग्वार के पट्ठो मे उसी प्रकार रख स्वेदन करे, ऐसे ३ बार यानी ९ दिन स्वेदन करने से क्लेशरहित अग्नि मे ठहरने वाला खपरिया होवे, उसको अग्नि मे रखकर परीक्षा करे, अगर धूंआ न निकले तो जाने कि शुद्ध हो गया । जो धूंआ निकले तो फिर घीग्वार के पट्ठो मे रख स्वेदन करे तो खपरिया दृढ हो । तदनतर खारीनोन मे दो दिन पचावे, तो खपरिया मरे, इस प्रकार करके फिर अग्नि पर रखे जो धूंआ निकले तो फिर पचावे, ७ भावना केंचुएके अर्क की दे तो खपरिया निश्चय अग्निस्थायी और दृढ होवे ।

खपरिया के गुण

त्रिदोषजित्पित्तकफातिसार-
क्षयज्वरघ्नोरसकोतिरूक्षः ।

नेत्रामयानांप्ररोतिनाशं-
स्याद्रंजकःकामलनाशनश्च ॥

त्रिदोषको जीते, पित्त, कफ, अतिसार, क्षय और ज्वर का नाश करे, अत्यन्त रूक्ष है, नेत्र विकारोंका नाश करे, देह मे रंग पैदा करे और कामला रोग को दूर करे ।

खर्परानुपान

तद्भस्मसमृतकांतेन-
समेनसहयोजयेत् ।
अष्टगुंजामितंचूर्णं-
त्रिफलाक्वाथसंयुतं ॥
कांतपात्रस्थितंरात्रौ-
तिलजप्रतिवापकं ।
निषेवितंनिहन्त्याशु-
मधुमेहमपिध्रुवम् ॥
पित्तक्षयंचपांडुंच-
श्वयथुंगुल्ममेवच ।
रक्तगुल्मंचनारीणां-
प्रदरंसोमरोगकं ॥
योनिरोगानशेषांश्च-
विषमांश्चज्वरानपि ।
रजशूलचंश्वासंच-
हिध्मिनांचविशेषतः ॥

खपरिया की भस्म के समान कात लोहकी भस्म डाले, और दोनो को मिलाय ८ गुंजाके प्रमाण त्रिफलाके काढ़े और तिलके तेल में मिलाय रात्रिभर कांतलोहके पात्र में रख छोडे इसका सेवन मधु प्रमेह को दूर करे, पित्तरोग, क्षय, पीलिया, सूजन, वायगोला, रक्तगुल्म, स्त्रियो के प्रदररोग, सोमरोग, सपूर्ण योनिरोग, विषमज्वर, रजशूल, श्वास, हिचकी इन रोगो को यह खपरियाकी भस्म दूर करे, इस प्रकार शोधित खपरिया मालती वसत मे डालते हैं ।

अशोधित खर्पर के दोष

अशुद्धः खर्परः कुर्या-
द्वांतिभ्रांतिविशेषतः ।
तस्माच्छोध्यः प्रयत्नेन-
यावद्वांतिविवर्जितः ॥

अशुद्ध खपरिया वाति और भ्राति करती है, इसमे यत्नपूर्वक शोधना चाहिये जबतक वाति विवर्जित होवे ।

रसक विकार शांति

रसक निषेवणतोयदिरोगाः
प्रादुर्भवंतिमनुजानां
तेनाशमाप्नुवंति-
पीतगोमूत्रसप्ताहात् ॥

यदि खपरिया के खाने से मनुष्यों के विकार होवें तो सात दिन गोमूत्र पीने से नाश होवें ।

अथ सिंदूरप्रकरणम्

सिंदूरोत्पत्ति

महागिरिषुचाल्पीय-
पाषाणांतरस्थितोरसः ।
शुष्कश्शोणः सनिर्दिष्टो-
गिरिसिंदूरसंज्ञया ॥

हिमालयादि बड़े २ पर्वतों के छोटे २ पत्थर के टुकडों मे रहा जो पारा वह सूर्य की किरणो से सूखकर लाल होगया उसे सिंदूर कहते हैं ।

तथा नाम और गुण

सिंदूरंरक्तरेणुश्च-
नागगर्भंचसीसकं ।
सीसोपधातुः सिंदूर-
गुणैस्तत्सीसवन्मतं ॥
संयोगजप्रभावेणतस्या-
प्यन्येगुणाः स्मृता. ।

सिंदूर, रक्तरेणु, नागगर्भ, और सीसक ये सीसेके नाम हैं यह सिंदूर-सीसेका उपधातु है, और गुणो में सीसेके समान है लेकिन सयोग प्रभाव से और भी गुण कहे हैं ।

औषध योग्य सिंदूर

सुरंगोग्निसहः सूक्ष्म-
स्निग्धः स्वच्छोगुरुर्मृदुः ।

सुवर्णकरज.शुद्धः-
सिंदूरोमंगलप्रदः ॥

उत्तम रंगदार, अग्नि सहनेवाला, सूक्ष्म, चिकना, स्वच्छ, भारी, नरम और सुवर्ण-रजत-खान का, शुद्ध ऐसा मंगल देने वाला है।

शोधन

दुग्धाम्लयोगगतस्तस्य-
विशुद्धिर्गदितावुधैः।

दूध और खटाई के योग से पंडितो ने सिंदूर की शुद्धि कही है।

दूसरी विधि

सिंदूरंनिंबुकद्रावैः-
पिष्ट्वाघर्मेविशोषयेत्।
ततस्तंदुलतोयेन-
यथाभूतंविशुद्धयति।

सिंदूर को नींबू के रस मे घोटकर धूप मे सुखावे पीछे चावलों के पानी से घोटकर धूप में सुखावे तो शुद्ध होवे।

सिंदूर के गुण

सिंदूरमुष्णविसर्प-
कुष्ठकडूविषापह।
भग्नसंधानजननं-
व्रणशोधनरोपणम् ॥

सिंदूर गरम है, तथा विसर्प, कुष्ठ खुजली और विषका नाशकरे, हड्डियों को जोडे, व्रणको शुद्ध करे और भरे।

सिंदूरमारणंतद्व-
त्सत्वपातंतथैवच।
भक्षणस्यप्रयोगोपि-
नदृष्टकुत्रचिन्मया ॥

सिंदूर का मारण, सत्वपातन और खाने की विधि हमने कहीं लिखी नहीं देखी इस कारण नहीं लिखीं।

तथाच

सिंदूरस्यप्रयोगोहि-
नदृष्ठःकुत्रचित्पृथक्
तस्माद्युक्तस्थलेयोज्य-
मुपदेशःगुरोरिति ॥

सिंदूर का प्रयोग किसी ग्रंथ मे नहीं लिखा देखा, इससे जहां योग्य हो उस जगह मल्हम और लेपादिको में योजना करना यह गुरु उपदेश है।

ग्रंथान्तरे

गिरिसिंदूरकंयत्त-
गिरौपाषाणजंभवेत्।
किंचिद्धिंगुलतुल्यं-
तद्रसवधेहितंविदुः ॥
धातुवादेपितत्पूज्यं
नेत्ररोगघ्नमीरितम् ॥

गिरिसिंदूर पहाडों के पत्थरों से पैदा होता है इसमें कुछ गुण हिंगुल के समान हैं, यह रस-बन्धन में भी लेना चाहिये, और यह नेत्र रोगों को दूर करता है।

लोह की उपधातु जो कीटी है उसके शोधन, मारण और गुण पीछे कीटी प्रकरण में लिख आये है।

अथोपरस प्रकरण प्रारंभः

द्विधासूतोत्रिधागंधो-
ष्टधाखंतालमष्टधा।
भिन्नांजनंचकासीसं-
गैरिकंत्रिरसाइमे ॥

दो प्रकारका पारा, तीन प्रकार की अभ्रक, आठही प्रकार की हरताल, तथा सुरमा, कसीस और तीन प्रकार के गेरू ये रस हैं। परन्तु ये रस नहीं है उपरस हैं क्योंकि पूर्व पारेके प्रकरण में लिख आये हैं।

एकएवरसोज्ञेयः-
बहुधोपरसाःस्मृताः ।

अर्थात् रस जो पारा है वह एक ही है और उपरस बहुत से हैं। इसी से गधक, अभ्रकादि की उपरस संज्ञा है, इनमें पारे और गधक का प्रकरण लिख चुके हैं, अब क्रम से अभ्रकादिकों को लिखते हैं।

तत्रादौ अभ्रक प्रकरणम्

तस्योत्पत्ति

पुरावधायवृत्रस्य-
वज्रिणावज्रमुद्धृतं ।
विस्फुलिंगास्ततस्तस्य-
गगनेपरिसर्पत ॥
तेनिपेतुर्घनध्वाना-
श्शिखरेषुमहीभृतां ।
तेभ्यएवसमुत्पन्नं-
तत्तद्गिरिषुचाभ्रकं ॥
तद्वज्रवज्रजातत्वाद-
भ्रमभ्ररवोद्भवात् ।
गगनात्पतितयस्मा-
द्गगनचततोमतम् ॥

पहले वृत्रासुर दैत्य के मारने को इन्द्र ने वज्र उठाया, उससे अग्नि की चिनगारी निकल कर सब आकाश में फैल गई, वे मेघ के समान शब्द करती हुई पर्वतो पर गिरीं, उनसे उन पर्वतों में अभ्रक उत्पन्न हुई, इसी से इसको वज्र कहते हैं। और अभ्र से जो प्रगटी इसी से इसकी अभ्र सज्ञा है, और गगन (आकाश) से गिरी इसीलिये इसको गगन कहते हैं।

तथा उत्पत्ति

कदाचिद्गिरिजादे
विहरंदृष्ट्वामनोहरं ।
मुमोचयत्तदावीर्य -
तज्जातशुभ्रमभ्रकम् ॥

एक समय महादेव जी के सुन्दर स्वरूप को देख श्रीपार्वतीजी का वीर्य स्खलित हुआ, उसी से यह अभ्रक प्रगट हुआ।

तथाभ्रकजातयः

ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रभेदा-
त्तत्स्याच्चतुर्विधं ।
क्रमेणैवासितंरक्तं-
पीतकृष्णंचवर्णतः ॥

ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र के भेद से अभ्रक चार प्रकार की है। उन चारों के क्रम से सफेद लाल, पीत, और काले वर्ण हैं।

चारोंवर्ण परत्वकार्य

प्रशस्यतेसितंतारे-
रक्तंतत्ररसायने ।
पीतहेम्निकृष्णंतु-
गदेशुद्धतयापिच ॥

चांदी के कर्म्म मे सफेद अभ्रक लेनी रसायन कर्म में लाल सुवर्ण कर्म में पीली और काली अभ्रक औषध कर्म में तथा स्वस्थ देह धारियो को लेनी चाहिये।

कृष्णाभ्रक के भेद

पिनाकंदर्दुरंनागं-
वज्रंचेतिचतुर्विधम् ।
कृष्णाभ्रकथितप्राज्ञै-
स्तेषांलक्षणमुच्यते ॥

पिनाक, दर्दुर, नाग, और वज्र ये चार भेद काली अभ्रक के पण्डितों ने कहे हैं। इनके लक्षण कहते हैं।

पिनाक अभ्रक के लक्षण

मुञ्चत्यग्नौविनिक्षिप्तं-
पिनाकंदलसंचयं ।
अज्ञानाद्भक्षणंतस्य-
महाकुष्ठप्रदायकम् ॥

पिनाक अभ्रक अग्नि में डालने से दल सचय अर्थात् पत्तों को छोड़ती है यह अज्ञान वश होकर खाने से महाकुष्ठ करती है।

दर्दुर के लक्षण

दर्दुरंत्वग्निनिक्षिप्तं-
कुरुतेदर्दुरध्वनिं ।
गोलकान्बहुशःकृत्वा-
तस्मान्मृत्युप्रदायकम् ।

दर्दुर अभ्रक अग्नि में डालने से मेंढक की सी ध्वनि करे, तथा पेट मे गोले का रोग प्रगट करे इसके भक्षण से मृत्यु होवे ।

नाग के लक्षण

नागंतुनागवद्वन्हौ
फुत्कारंपरिमुंचति ।
तद्भक्षितमवश्यंतु
विदधातिभगदरं ॥

नाग अभ्रक अग्नि मे डालने से साप के समान फुंकार मारे, इसके खाने से भगंदर रोग अवश्य होवे ।

वज्राभ्रकके लक्षण

वज्रंतुवज्रवत्तिष्ठेन्न-
चाग्नौविकृतिंव्रजेत् ।
सर्वाभ्रेषुवरंवज्रं-
व्याधिवार्धिक्यमृत्युजित् ॥

वज्राभ्रक अग्नि मे डालने से वज्र के समान जैसी की तैसी रह जाय, विकार को प्राप्त न होवे यह सब में श्रेष्ठ है व्याधि बुढ़ापा तथा मृत्यु को दूर करती है ।

तथा दूसरे लक्षण

यदंजननिभंक्षिप्तं-
नवन्हौविकृतिंव्रजेत् ।
वज्रसंज्ञं हितंयोज्य-
मभ्रंसर्वत्रनेतरम् ॥

जो अभ्रक काला तथा अग्नि मे तपाने से विकार को प्राप्त न हो, वह वज्राभ्रक है, यह सर्वत्र हितकारक और योग्य है, दूसरे प्रकार का अच्छा नहीं होता ।

दिशापरत्व अभ्रक

अभ्रमुत्तरशैलोत्थं-
बहुसत्वंगुणोत्तरं ॥
दक्षिणाद्रिभवंस्वल्प-
सत्वमल्पगुणोत्तरं ॥

उत्तर के पर्वतों से प्रगट अभ्रक में सत्व बहुत होता है, और गुण भी बहुत हैं तथा दक्षिण के पर्वतों से प्रगटी हुई मे सत्व और गुण कम होते हैं ।

भूमि लक्षण

अभ्रंगृहेतस्यथलंभिषग्भि-
स्तद्खानयित्वापुरुषप्रमाणं ।
तद्गारवत्सत्वफलप्रदंस्या-
त्गुणाधिकंस्वल्पगुणंततोन्यत् ॥

अभ्रक लेनी होतो उसकी खान को पुरुष के समान गहरी खोदे, जब कीच के समान निकले तब लेवे, यह बहुत सत्व तथा अधिक गुणदाता है, इससे दूसरी हीनगुण जाननी ।

मारणार्थ अभ्रकलेना

गजहस्तादधस्ताद्य-
त्तत्स्थितंभारवत्तरं ।
खननेऽभ्रंहितंग्राह्यं-
मारणार्थंगुणाधिकं ॥

आठ हाथ नीचो जो भारवान अभ्रक है उसे खोद कर मारणार्थ लेनी चाहिये, यह गुणों मे श्रेष्ठ है ।

तथापि कृष्णवर्णाभ-
कोटिकोटिगुणाधिकं ।
स्निग्धंपृथुदलंवर्णं-
संयुक्तंभारतोधिकम् ॥
सुखनिर्मोच्यपत्रंच-
तदभ्रंशस्तमीरितम् ।

कृष्णाभ्रक में करोडो गुण हैं (इसके लक्षण जो चिकनी और मोटे दल की हो तथा सुन्दर

घर्षायुक्त बहुत भारी और जिसके पत्र सहज में अलग हो जाय वह अभ्रक श्रेष्ठ है।

अशोधिता मारणे दोषमाह

पीडांविधत्तेविविधान्नराणां-
कुष्टं क्षयंपांडुगदंचशोफं ।
हृत्पार्श्वपीडांचकरोत्यशुद्ध-
मभ्रंहितद्वद्गुरुवन्हिहृत्स्यात् ॥

मनुष्यों को अनेक प्रकार की पीडा करे। तथा कोढ, क्षय, पीलिया, सूजन, हृदय और पसवाडो में पीडा करे। भारी है, जठराग्नि को मंद करने वाली ये अपगुण अशोधित्त अभ्रक करती है।

अभ्रक शोधनम्

वज्राभ्रकंवन्हितप्तं-
निःक्षिपेत्सप्तसप्तधा ।
गोदुग्धेत्रिफलाक्वाथे-
कांजिकेसुरभीजले ॥
शुद्धिमायातिमलतः
प्रक्षिप्तंवात्रिधात्रिधा ।

वज्राभ्रक को तपा २ कर गोदुग्ध, त्रिफला के काढे, कांजी, और गोमूत्र में सात २ बार अथवा तीन २ बार बुझावे तो शुद्ध होवे।

दूसरा प्रकार

अथवाबदरीक्वाथेध्मात-
मभ्रंविनिःक्षिपेत् ।
मर्दितंपाणिनाशुष्कं-
धान्याभ्रादतिरिच्यते ॥

अभ्रक को तपा २ कर वार २ बेर के काढे में बुझावे, पीछे सुखाकर हाथों से मर्दन करे तो धान्याभ्रक से भी उत्तम होवे।

तीसरी विधि

आदौसुतापितकृत्वा
गगनसप्तधाक्षिपेत् ।
निर्गुंडीस्वरसेसम्यक्-
गिरिदोषप्रशांतये ॥

प्रथम अभ्रक को तपा २ कर सात बार सभालु के रस में बुझावे तो अभ्रक का गिरि (पर्वत) का दोष शान्ति होवे।

धान्याभ्रक करण विधि

चूर्णाभ्रंशालिसंयुक्तं-
बध्वाकंबलकेस्थं ।
त्रिरात्रंकांजिकेथाप्यं-
तत्क्लिन्नंमर्दयेद्दृढं ॥
तन्नीरेगत्रयत्नेन-
यावत्सर्वंस्रवेत्ततः ।
कंबलाद्गलितंश्लक्ष्णं-
मारणादौप्रशस्यते ॥

अभ्रक चूर्ण और धान का तुष दोनों को कंबल में ढीला बांधकर तीन रात कांजी में भिगो कर गीले ही को उस जल से खूब मर्दन करे इस प्रकार कंबल से अभ्रक के रवा निकल कर सब पानी में आजावें। इसको धान्याभ्रक कहते हैं। यह मारण कर्म में प्रशंसा योग्य है।

दूसरी विधि

चूर्णाभ्रशालिसंयुक्तं-
वस्त्रेबद्धंहिकांजिके ।
निर्यातंमर्दनाद्यंत-
द्धान्याभ्रमितिकथ्येत ॥

अभ्रक के टुकडों में धान को मिलाय कपडे में बांध कांजी में भिगोय मींड डाले उस मींडने से जो पानीमें महीन अभ्रक निकले उसे धान्याभ्रक कहते हैं, यह रसवाग्भट के वार्त्तिकाध्याय में लिखा है।

मारण

अंगारोपरिविन्यस्तं-
ध्मातमेवद्लीकृतं ।
निक्षिपेत्कांजिकेकृष्ण-
मभ्रकवन्हिसन्निभ ॥
ततोस्यकांजिकस्थस्य-
चिरंघर्मेविधारयेत् ।

पेषणंचविधातव्यं-
पौनपुण्येनपंडितैः ॥
चाङ्गेरीस्वांगनिर्यासै-
रप्येवविधिमाचरेत् ।
तण्डुलीयकमूलस्य-
रसेनापिततःपरम् ॥
ततोस्मिन्खदिरांगारैं-
र्नीतेनीतेग्निवर्णता ।
क्षिपेत्पुनःपुनःक्षीरे-
यथानिश्चंद्रिकंभवेत् ।

काली अभ्रक को अंगारो पर तपा २ कर जुदे २ वर्क कर कांजी में भिगोकर पात्र को धूप में रख दे, पीछे निकाल बारबार बुद्धिमान वैद्य पीसे,पीछे चूका के रस में भिगोकर पीसे,तदनन्तर चौलाई की जड़ के रस में भिगोकर पीसे (परन्तु यह याद रहे कि रसमें भिगोकर दो तीन दिन धूप में रखकर पीसा जाय) पश्चात् टिकिया बांधकर सुखाय बार २ खैर के कोयलों में तपा २ कर दूध में बुझावे जबतक निश्चचन्द्र न हो यह मारण की साधारण विधि कही है ।

मारण की दूसरी विधि

धान्याभ्रं गुडतुल्यंच-
श्रेष्ठंक्षीरेणमर्द्दितं ।
कुर्य्यात्सुचक्रिकांशुष्कां-
सम्यग्गजपुटेपचेत् ॥
ततोधत्तूरपत्तूर-
कुमारीशशिवाटिका ।
प्रत्येकंस्वरसेनैव-
पुटादाशुमृतिंव्रजेत् ॥

धान्यभ्रक के समान गुड लेकर गोदुग्ध में घोटे, पीछे टिकिया बनाकर धूप मे सुखाले, और गजपुट में रख कर फूंक दे पश्चात् निकाल धतूरे के पत्तों के साथ घोट गजपुट में फूंके,इसी प्रकार जल पीपल, ग्वारपाठे और शशिवाटिका (कमोदनी) के रस की भावना दे तो अभ्रक शीघ्र निश्चद्र भस्म होवे ।

तथा तीसरी विधि

केनाप्यस्यतृणस्यापि-
रसेनापिप्रमर्दितम् ।
पुटितंदशधाभस्मं-
निश्चद्रंजायतेध्रुवम् ॥

केना (कुना) तृण के रस में धान्याभ्रक घोट कर दशपुट देवे तो निश्चंद्र (चमक-रहित) भस्म निश्चय होवे । यह रससिंधु में लिखा है ।

चौथी विधि

धान्याभ्रकस्यभागैकं-
भागार्द्ध टंकणस्यच ।
पिष्ट्वातदंधमूषायां-
रुध्वातीव्राग्निनापचेत् ।
विचूर्ण्ययोजयेद्योगे-
भेषजानामसंशयः ।

धान्याभ्रक १ भाग, सुहागा आधा भाग, दोनों को पीस अधमूषा मे रख बद कर तीव्र अग्नि देवे, जब स्वांगशीतल होजाय तब निकाल पीस कर औषधियो के योग में दे ।

पांचवीं विधि

कृत्वाधान्याभ्रकंतच्चा-
शोधयित्वाविमर्दयेत् ॥
चेष्टयेदर्कपत्रैश्च-
सम्यक्गजपुटेक्षिपेत् ।
पुनर्मर्द्य पुनःपाच्यं-
सप्तवारान्पुनःपुनः ॥
ततोवटजटाक्वाथै-
स्तद्वद्देयंपुटत्रयं ।
म्रियतेनात्रसंदेहः
प्रयोज्यःसर्वकर्मसु ॥

प्रथम धान्याभ्रक कर ककरौंदे के रस मे १ दिन खरल करे पश्चात् दो २ पैसे भर की

टिकियां बांध धूप से सुखा लेवे, और टिकियो के ऊपर नीचे आक के पत्ते रख एक ठीकरे में दो सेर उपलो की आच दे इस पूर्वोक्त क्रिया को १४ बार करे (इसी प्रकार गोमूत्रमे एक २ दिन घोट कर आच दे एसे ७ आंच दे, इसी प्रकार ७ आंच त्रिफला के रस में घोट कर दे और ७ आंच आक के दूध मे घोट कर दे) और ३ आंच वटकी जटाओं के रस मे घोट कर दे और विशेष लाल किया चाहे तो ७ आच दे तदनतर इसी रस में घोट कर गजपुट मे फूंके तो अभ्रक की निश्चंद्र लालभस्म होवे, इसको दो रत्ती इलायची के साथ दे।

छठी विधि

धान्याभ्रकस्यभागौद्वौ-
भागैकंशुद्धगंधकम्।
वटक्षीरेणसंमर्द्य-
अंधमूषांनिरोधयेत्॥
पचेद्गजपुटेनैव
वारमेकंमृतोभवेत्।

धान्याभ्रक २ भाग, शुद्ध गधक १ भाग, दोनों को वड के दूध मे घोट अंधमूषा सपुट में रख गज पुट की आच दे तो एक ही आंच से अभ्रक भस्म होवे। यह एकपुटी भस्म है।

सातवीं दशपुटी भस्म

धान्याभ्रं कासमर्दस्य-
रसेनपरिमर्दितं।
पुटितंदशवारेण-
म्रियतेनात्रसंशयः॥
तद्वन्मुस्तारसेनापि-
तदुलीयरसेनच।

धान्याभ्रक को कसौंदी के रस मे घोट २ कर दस आंच देवे, तो अभ्रक निस्सदेह मरे। इसी प्रकार नागरमोथा के रस वा चौलाई के रस में घोट कर दश पुट देने से भी अभ्रक-भस्म हो।

आठवीं साठ पुटी भस्म

पीतामलकसौभाग्य-
पिष्टंचक्रीकृताभ्रक।
पुटितंषष्टिवाराणि-
सिंदूराभप्रजायते॥
क्षयाद्यखिलरोगघ्नं-
भवेद्द्रोगापनुत्तये।

धान्याभ्रक में हरिताल आवले का रस और सुहागा मिला कर घोटे, पीछे टिकरी बना कर अग्नि दे, इस प्रकार ६० अग्नि देने से सिंदूर के समान लालभस्म होवे। यह भस्म क्षयादिक सकल रोगो को नाश करे।

नवीं ४१ पुटी भस्म

धान्याभ्रकंसमादाय-
मुस्ताक्वाथैर्दिनत्रयं॥
तद्वत्पुनर्नवानीरै
कासमर्दरसैस्तथा॥
नागवल्लीदलरसैः
सूर्यक्षारैःपृथक्पृथक्।
दिनेदिनेमर्दयित्वा-
क्वाथैर्वटजटोद्भवै॥
दत्वापुटत्रयपश्चात्-
त्रिपुटैःस्नुकूजटाजलै।
त्रिगोक्षुरकषायेण-
त्रिपुटेद्वानरीजलैः॥
मोचाकंदरसै पाच्य-
त्रिवारंकोकिलाक्षकैः।
रसैःपुटेत्ततोधेनु-
क्षीरैरष्टपुटेन्मुहुः॥
दध्नाघृतेनमधुना-
स्वच्छयासितयातया।
एकमेकपुट दद्याद्-
भ्रमेवंमृतिर्भवेत्॥
सर्वरोगहरंव्योम-
जायतेयोगवाहकम्।

कामिनीमददर्पघ्नं-
शस्तंमरणनाशनम् ॥
वृष्यमायुष्करंभुक्तं-
प्रजावृद्धिकरंपरम् ।

धान्याभ्रक को ३ दिन मोथा के काढे में मर्दन करे, फिर पुनर्नवा (साठ) के रस, कसोदी के रस, पान के रस, शोरा, इन प्रत्येक में तीन २ पुट दे। तदनन्तर बडकी जटा के रस के तीन पुटदे, और थूहर के दूध, गोखरू के काढे, कौंच के रस, मोचाकंद (कदलीकद) के रस, तालमखाने के रस वा काले गन्ने के रस प्रत्येक में तीन २ पुट देकर गोदुग्ध के आठपुट दे, तदनतर दही, मक्खन, शहद, सफेद चीनी, प्रत्येक का एक २ पुट दे (प्रथम १ दिन जिस औषधि में घोटे उसको रात्रि मे आच दे और प्रातःकाल निकाल कर उसी मे घोटे यदि जिस औषधि का एक ही पुट लिखा है उसे १ दिन घोटकर रात्रि में अग्नि देकर दूसरे दिन दूसरी औषधि मे घोटे, यह पुट देने की प्रणाली है) इस प्रकार इन सब औषधियों का पुट देने से अभ्रक की दिव्य भस्म होवे । यह सब रोगो को दूर करने वाली है, योगो में डालने योग्य है, स्त्रियो के मद को हरण करे, मृत्यु को जीते, वीर्य बढावे, आयु बढावे इसके खाने से सतान की वृद्धि होवे।

मारण की दशम विधि

पुनर्नवांकुमारींच-
चपलावानरींतथा ।
मुशलींचेक्षुवल्लींच-
तथातामलकीरसैः ॥
प्रत्येकैकेनपुटयेत्-
सप्तवारंपुनः पुनः ।
अर्कसेहुंडदुग्धेन-
प्रदेयासप्तभावना ॥
एवंसम्रियतेवज्रं-
सर्वरोगहरंपरम् ।

सांठ, घीगुवार, पीपल, कोच, मूसली, ईख और भूयआंवले के रसों की सात २ पुट देवे, पश्चात् आक और थूहर के दूध की सात २ भावना दे, प्रत्येक भावना पर अग्नि में फूंकता जाय तो अभ्रकभस्म सर्व रोग हरण कर्त्ता बने।

मारण की ग्यारहवीं विधि
२० पुटी भस्म

वटमूलत्वचःक्वाथै-
स्तांबूलीपत्रसारतः ।
वासामत्स्याक्षिकाभ्यांवा-
मीनाख्यासकठिल्लया ॥
पयसावटवृक्षस्य-
मर्दितंपुटितंघनं ।
भवेद्विंशतिवारेण-
सिंदूरसदृशंघनम् ॥

बडकी जड की छाल के काढे, पान के रस, अडूसा, मछेछी सफेदकनेर, लालपुनर्नवा (साठ) बड के दूध, इन प्रत्येक औषधियों मे पुट देकर अग्नि दे इस प्रकार २० पुट देने से सिंदूर के समान लालभस्म होवे।

बारहवीं विधि

दुग्धत्रयंकुमार्यम्बु-
गंगापुत्रंनृमूत्रकं ।
वटांकुरमजारक्त-
मेभिरभ्रंसुमर्दितं ॥
शतधापुटितंभस्म-
जायतेपद्मरागवत् ।

बड, थूहर और आक का दूध घी गुआर का रस, नागरमोथा, बैल का मूत्र, बड की जटाओ का रस, बकरी का रुधिर, इन प्रत्येक मे काले धान्याभ्रक को घोट १०० पुट देने से अभ्रक की पुखराजमणि के समान सफेद भस्म होवे।

[illegible]

[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ।
धर्मेतशोष्यविभिन्ना-
नतोगजपुटेपचेत ।
पुनःशुक्तांवरेणैव-
मर्द नेदेक्यामरे ॥
वन्योत्पले पचेदेवं
कुर्याद्वारत्रमनत ।
भस्मीभूतमिदम्यादे-
द्गुञ्जामात्रं निरंतर ॥
अधोपिदिव्यदृष्टि स्या-
त्तीव्रोवन्हिश्चजायते ।
वातपित्तकफातकान-
तथैवरुधिरामयान ॥
प्रमेहान्नाशयेत्सर्वा
नात्रकार्याविचारणा ।
अतीवपुष्टजनको-
व्रणतृट्नाशनपर ॥
कुष्ठप्लीहोदरग्रंथि-
कृमिश्वेडविनाशनम ।

[illegible]

तेरहवीं विधि

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥
गोजिह्वानलिर्लीविदारि-
[illegible] ।
[illegible]
रस [illegible] ॥
रात्रौसपरिपाचयेद्-
गजपुटेमन्नं ववारान्पृथक् ।

न्यग्रोधस्यजटारसस्य-
सततंकेशेशतोयस्यच ॥
भावाश्चैवपुटाश्चविंशति-
मिताघृष्ट्वाकपित्थस्यवै ।
चिंचिण्याफलकोद्भवैश्च
सलिलेश्रीमत्पुटेनांचितैः ॥
पश्चान्निंबुरसेनधेनुपय-
सासंमिश्र्यगौडस्यच ।
दध्नाखण्डघृतस्यरम्य-
मधुनावारांश्चपंचादश ॥
पश्चाच्चंद्रिकयोर्मिवर्जित-
मथाभ्रं वैसुशुद्धं भवे-
द्रक्तं रम्यतरंसुसेव्यमव-
नीशानांगणैस्सर्वदा ।

शुद्ध वज्राभ्रक को थूहर के दूध, श्राक के दूध, गोमूत्र, ब्राह्मी, रुद्रवंती, खरैटी, श्रडूसा, चित्रक, सेमल के रस, नागरबेल, हरड, बहेडा, श्रांवला, पेठे का रस, चमेली, गोखरू, अनार के पत्ते, संखाहूली, मेदा गिलोय, बनतुलसी, दाख, मूली, राखसी (एकांगीमुरा), तुलसी, गोरख मुण्डी, इन्द्रायन, मदा (धाय के फूल) गोभी का रस, विदारीकन्द, काकड़ासिंगी, वच, जटामांसी, सोंफ श्रौर जमाल गोटा, इनके रस तथा काढे में यथा संभव भावना देकर गोला कर सुखा लेवे। उस पर ७ कपर मिट्टी कर गजपुट मे फूंकदे, श्रौर शीतल होने पर निकाल के फिर पूर्वोक्त रसों में घोटे श्रौर गजपुट में फूंके इस प्रकार ७ श्रांच देवे, पीछे बड़ की जटाश्रो के रस श्रौर भांगरे के रस मे भावना देकर गजपुट मे फूंके, ऐसे इन दोनों के सात सात पुट देवे, पीछे कैथके रस, इमली के रस की, तथा कोदो के काढे की पुट देकर गज पुट देवे, तदनतर नींबू के रस, गोदुग्ध, गुड, दही, खाँड, घृत श्रौर शहद इन सबके १५ पुट दे, ऐसा करने से श्रभ्रक की निरचंद्र शुद्ध श्रौर लाल तथा सुन्दर राजाश्रों के खाने योग्य भस्म होवे। इसमें ऊपर लिखी श्रौषधियो के प्रत्येक के दिन में पुट दे श्रौर रात को श्रग्नि मे फूंके ।

चौदहवीं विधि

शुद्धधान्याभ्रकंमुस्तं-
शुंठीषड्भागयोजितं ।
मर्दयेत्कांजिकेनैव-
दिनंचित्रकजैरसैः ॥
ततोगजपुटंदद्यात्त
स्मादुद्धृत्यमर्दयेत् ।
त्रिफलावारिणातद्व
त्पुटेदेवंपुटैस्त्रिभिः ॥
बलागोमूत्रमुसली-
तुलसीसूरणद्रवैः ।
मर्दितपुटितंवन्हौ-
त्रिस्त्रिवेल्लंव्रजेन्मृतिं ॥

शुद्ध धान्याभ्रक का छटा भाग नागरमोथा तथा सोंठ का चूर्ण धान्याभ्रक मे मिलाय १ दिन काजी मे खरल करे, श्रौर गजपुट मे सपुटकर फूंक दे। पीछे निकाल १ दिन चित्रक के रस मे घोट कर कपरमिट्टी कर श्रारने उपलों के गजपुट में फूंके, शीतल होने पर निकाल त्रिफलाके काढे मे नित्य खरलकर गजपुट में फूंके, इस प्रकार तीन गजपुट दे, पीछे बला के रस वा काढेकी, गोमूत्र, मूसली के काढे,तुलसी के पत्तो के रस श्रौर जमीकन्द का रस इन पाचों को पृथक् २ अभ्रक मे डालकर खरल करे प्रत्येक रस के तीन तीन गजपुट दे इस प्रकार श्रग्नि देने से अभ्रक की दिव्य भस्म होवे ।

पंद्रहवीं श्ररुण भस्मकी विधि

नागबलाभद्रमुस्ता-
दुग्धंतुवटकस्यच ।
यद्वावटजटातोयै-
र्हरिद्रावारिणापुटेत् ॥
मंजिष्ठाकाथतोयेन.
सर्वैरेभिर्यथाक्रमं ।
पुटितंभावनायोगा-
द्दरमेतत्पुटेन्मुहु ॥

जायतेह्यरुणंचाति-
भस्मवज्राभ्रकोद्भवम् ।

शुद्ध वज्राभ्रक को नागवला, नागरमोथा, बडका दूध, अथवा बडकी जटाओं का रस हलदी का पानी, मजीठका काढा, इन सबकी क्रम से भावना दे और प्रत्येक भावना का उत्तम पुट दे। तो दिव्य लाल भस्म हो।

सोलहवीं विधि

ततोधान्याभ्रकंकृत्वा-
पिष्ट्वामत्स्याक्षिकारसैः ।
चक्रीकृत्वाविशोष्याथ-
पुटंदत्वाभ्रकेतथा ॥
देयंपुटंहिषड्वारं-
पुनर्नवारसैःसह: ।
कलांशंटंकणेनापि-
संमर्द्य चक्रिकाकृतं ॥
ऊर्द्ध्वभागेपुटेत्तद्वत्-
सप्तवार प्रयत्नत: ।
एववासारसेनापि-
तंडुलीयरसेनच ॥
प्रपुटेत्सप्तवाराणि-
पूर्वप्रोक्तविधानतः ।
एततसिद्धंवनसर्वं-
योगेषुविनियोजयेत् ॥

धान्याभ्रक को मछेछी के रस में खरल कर टिकिया बनाय धूप में सूखाय शरावसपुट में रख गजपुट में फूंकदे, तदनंतर पुनर्नवा (साठ) के रस की छःपुट देकर अभ्रकका सोलहवाँ हिस्सा सुहागा डाल खरलकर टिकिया बनावे, और गढेला खोद नीचे टिकिया रख ऊपर अग्नि जलावे ऐसे ७ पुटदे, इसी प्रकार अडूसे और चौलाई के रसों की सात २ भावना देवे और गजपुट की अग्नि दे तो यह अभ्रक-सिद्ध होवे इसे सब योगों में डाले।

सत्रहवीं विधि सहस्रपुटी भस्म

वज्राभ्रककुट्टयितुसुखल्वे
गोदुग्धतप्तेनचसिंचनीयं
तल्लोहपात्रेमृदुरग्निपक्व-
घृतेनकिंचिच्च विलोलयित्वा ॥
शाळीविमिश्रेणसुवस्त्रमध्ये-
वध्वाद्दढपोटलिकांभपात्रे ।
विघृष्यतोयातरसंस्थितंते-
धान्याभ्रकंशुद्धभवेच्चपश्चात् ॥
खल्वेसुरम्येद्दढघर्षयित्वा-
जलं चतु षष्टिवनस्पतीनां ।
सूर्यातपेशोष्यदिनांतकाले-
वनोत्पलानांपुटमाचरेच्च ॥
एवविविधमारितमभ्रकंच-
वनस्पतीनाक्रमएवमुक्तं ।

वज्राभ्रक को खरल में डालकर कूटे, पीछे अग्नि में तपाय गोदुग्ध में बुझाय लोहपात्र में घृत डाल उसमें इस अभ्रक को डाल मंदाग्नि से पचावे, पीछे धान से आधी अभ्रक ले दोनों को कम्बल या गाढ़ीगजी की थैली में रख भिगोदे पीछे एक बडे पात्र में (कठोरी-परात आदि) में उस अभ्रक को डाल थैलो को खूब ममले दो प्रहर पीछे जब सब अभ्रक निकलकर पानी में आजाय तब पानी को नितार अभ्रक को निकाल ले यह धान्याभ्रक शुद्ध होवे। पीछे इसे खरल में डाल ६४ औषधियों के रस में दिन में घोट सूर्य की धूप में सुखाय रात को अरने उपलों की आग में फूंके इस प्रकार अभ्रक को मारे, अब औषधियों का क्रम लिखते हैं।

औषधियों के नाम

दुग्धंरवेर्वैवटदुग्धवज्रि-
कुमारिकानामनिलारीतिक्ता ।
मुस्तागुडूचीविजयात्रिकंट-
वर्ताकिनीपर्णिद्वयंचगुल्मं ॥

सिद्धार्थकोवैखरमंजरीणां-
वटप्ररोह्अजशोणितच ।
विल्वाग्निमंथोग्निसतिंदुकाना-
हरीतकीपाटलिकासमूहैः ॥
गोमूत्रधात्रीकलिमभकुभी-
तालीसपत्रंचसतालमूली ।
वृषाश्वगंधामुनिभृंगराज-
रंभाजलंसार्द्रसुसप्तपर्णम् ॥
धत्तूरलोध्रंचसदेवदारु-
वृंदासदूर्वाद्वयकासमर्दैः ।
मरीचकंदाडिमकाकमाची-
सशखपुष्पीनतनागवल्ली ॥
पुनर्नवामंडूकपर्णिकाच-
इंद्रावणीभारंगिचदेवदाली ।
कपित्थलिंगीकटुकिंशुकानां-
कोपातकीमूषकपर्ण्यनंता ॥
मीनाच्छिकाकारवितैलपर्णी-
कुंभीतथार्द्राचशतावरीणां ॥

आक, बड और थूहर इनका दूध, घीगुवार का रस, अंडीकी जडकारस कुटकी, मोथा, गिलोय भांग, गोखरू, कटेरी, शालिपर्णी, पृष्टपर्णी, सफेदसरसों, खरमंजरी, बड़की जटा, बकरे का रुधिर, बेल, अरणी, चित्रक, तेंदू, हरड, पाढल की जड, गोमूत्र, आँवले, बहेड़ा, जलकुंभी, तालीसपत्र, मूसली, अडूसा, असगध अगस्तिया का रस, भांगरा, केलेका रस, सतोना धतूरा, लोध, देवदारू, तुलसी, दोनों दूब, कसोंदी, मिरच, अनारदाने का रस, काकमाची (मकोय) शखपुष्पी, बालछड, पान का रस, साठ, मडूकपर्णी (ब्राह्मी) इंद्रायण, भारगी, देवदाली, कैथ, शिवलिंगी, कटुवल्ली, ढाककारस, तोरई मूषकपर्णी, जवासा, मछेछी, कलोजी, तैलपर्णी (कोई ये औषधि विशेष कहते हैं पंचागुलकारस, टुटक, गुड, सुहागा, मालती, सप्तपर्णी (सतवन) नागबला, अतिबला, महाबला, शतावर, कौंचकीजडका रस, गाजर, गर्जन, प्याज, लहसन, उटगण, अमरवेल, हिलमोचिका, दुद्धि, पातालगरुड़ी, जटामांसी, दूध, दही, घृत, शहद खाड, धाय और पालकिका ।

एभिश्चतोयैः स्थितखल्वमध्ये-
विघर्षयेच्छुष्कभवंतथैव ।
वनोत्पलानांपुटमग्निशीत-
पुन.पुनः खल्वतलेविघर्षेत् ॥
एभिक्रियांषोडशवारमेकं-
वल्लीजलानापुटमारभेच्च ।
निश्चंद्रगोपारुणरंगतुल्यं-
भस्मंसुधादिव्यरसायनंच ॥
नानानुपानैरजरामरंच-
शरीरिणांसेव्यमिदंवरिष्टं ।
गुणैःसहस्रावधिसेवकानां-
समस्तरोगारिरसप्रसिद्धं ॥

अभ्रक को खरल मे डाल इन औषधियों के रस मे घोटे, जब सूख जाय तब आरने उपलों की आग मे फूंक दे फिर आग मे से निकाल कर घोटे और अग्नि दे इस प्रकार प्रत्येक औषधि के १६ पुट देने चाहियें, जो औषधि रस योग्य हो उसका रस डाले, और क्वाथ योग्य के क्वाथ का पुट दे, तो यह अभ्रक निश्चंद्र, (चमक रहित) लालभस्म हो यह अमृत के तुल्य दिव्य रसायन है, अनेक अनुपानो के संयोग से देह को अजर अमर करती है इसलिये मनुष्य को इस श्रेष्ठ भस्म का सेवन करना चाहिये । सेवन करने वाले को हजारो गुण करे यह समस्त रोगों की शत्रु प्रसिद्ध है ।

कार्य्यपरत्वपुट संख्या

दशादिस्तुशतांतःस्या-
त्पुटोवैव्याधिनाशने ।
शतादिस्तुसहस्रांत-
पुटोदेयोरसायने ॥

दश से लेकर सौपर्यंत रोगोंके नाशार्थ पुट

देने चाहियें, और सौ से लेकर हजार तक रसायन के निमित्त पुट कहे हैं।

भावना और पुट का निर्णय

सहस्रपुटपक्षेतु-
भावनापुटनंभवेत्।
मर्दनंतुतथानस्या-
दितिवैद्यवराजगुः॥

हजार पुटो मे तो रस की भावना मात्र ही पुट कहा है, उसमें मर्दन न करे, ऐसे श्रेष्ठ वैद्य कहते हैं, परतु शतपुटी से मर्दन अवश्य करे।

मृत भस्म की परीक्षा

निश्चंद्रंचसुसूक्ष्मंच-
लोचनांजनसन्निभं।
तदामृतमितिप्रोक्तम-
भ्रकंचान्यथामृतम्॥

चमक रहित, बहुत बारीक, काजल के समान, जो अभ्रक की भस्म है उसै शुद्ध जाननी अन्यथा कच्ची जाननी।

तथाच

मृतंनिश्चंद्रतांयातं-
मरणंचामृतोपमं।
सचन्द्रंविषवद्ज्ञेयं-
मृत्युकृत्तद्बहुरोगकृत्॥

जिस अभ्रक की भस्म निश्चंद्र हो वह अमृत के तुल्य है,और चमकदार हो तो विष के समान प्राणहर्त्ता और अनेक रोग कर्त्ता जाननी।

अमृती करणं

त्रिफलात्वक्कषायस्य-
पलान्यादायषोडश.।
गोघृतस्यपलान्यष्टौ-
मृताभ्रस्यपलान्दश॥
एकीकृतेलोहपात्रे-
विपचेन्मृदुवन्हिना।
वेजीर्णेसमादाय-
योगवाहेप्रयोजयेत्॥
अन्येषामपिधातूना-
ममृतीकरणंह्ययं।

त्रिफला का काढा १६ पल, गोघृत ८ पल, मृत अभ्रक १० पल, इनको एकत्र कर लोह की कडाही मे मन्दाग्नि से पचावे जब जल और घी जल जायँ केवल अभ्रक मात्र बाकी रहे तब उतार शीतल कर रख छोडे और योगो में देवे, यह अभ्रक का अमृती करण कहा है इसी प्रकार आर भी धातुओ का अमृतीकरण जानना कोई आचार्य केवल घृत मे ही अमृतीकरण करना लिखते हैं।

यथा

तुल्यंघृतमृताभ्रेण-
लोहपात्रेविपाचयेत्।
घृतंजीर्णेततश्चूर्णं-
सर्वकार्येपुयोजयेत्॥

अभ्रक की भस्म के समान गोघृत लेकर लोहे की कडाही मे चढाय उसमें अभ्रक को पचावे, जब घृत जलकर अभ्रक मात्र रहजाय तब उतार सब कामो मे दे।

मृताभ्रक के गुण

रोगान्हत्वादृढवलचयं-
वीर्यवृद्धिंविधत्ते।
तारुण्याढ्यंरमयतिशत-
योषितांनित्यमेव॥
दीर्घायुष्मान्जनयतिसुतान्-
सिंहतुल्यप्रभावान्।
मृत्योर्भित्तिंहरतिसततं-
सेव्यमानमृताभ्रम्॥

रोगो को जीत, दृढ वलसमूह और वीर्य को वढावे, तरुणता करे, सौ स्त्रियों से नित्य भोग करने की सामर्थ्य हो, दीर्घायु और सिंह के समान पराक्रमी पुत्रो को पैदा करे, निरंतर मृताभ्रक का सेवन मौत के भय को भी दूर करे।

अन्यच्च

गौरीतेजपरमममृतं-
वातपित्तक्षयघ्नं ।
प्रज्ञावोधिप्रशमितजरं
वृष्यमायुष्यमग्र्यं ॥
वल्यंस्निग्धंरुचिदमकफं-
दीपनंशीतवीर्यं ।
तत्तद्योगैःसकलगदहृ-
द्व्योमसूतेन्द्रवीजम् ॥

श्रीपार्वती जी का तेज अर्थात् अभ्रक अत्यन्त अमृत है, वात पित्त और क्षय का नाश करे, बुद्धि बढ़ावे, बुढ़ापे को दूर करे, वृष्य वीर्य कर्त्ता) है आयु को बढावे, बलकर्त्ता, चिकना है, रुचिकर्त्ता, कफनाशक, दीपन और शीतवीर्य है, पृथक् २ योगों के साथ सकल रोगों को दूर करे और पारद को बाधने वाला है ।

वयस्तंभकारीजरामृत्युहारी-
बलारोग्यधारी
महाकुष्ठहारीमृतंत्वभ्रक
सर्वरोगेषुयोज्य ।
सदासूतराजस्यवीर्येणतुल्य-
देहदार्ढ्यस्यसिध्यर्थं ।
त्रिगुंजंभक्षयेत्घननातःपरतर
किंचिज्जरा मृत्युविनाशनम् ॥

आयुष्य का स्तभन करे, बुढापे और मृत्यु को हरे, बल और आरोग्यता को करे, महाकुष्ठ को दूर करे, मरी अभ्रक सब रोगों में देनी चाहिये, क्योकि इसमे सदैव पारे के समान गुण हैं, देह की दृढता के अर्थ ३ रत्ती खानी चाहिये, इसके सिवाय बुढापे और मृत्यु की- हर्त्ता दूसरी औषधि नहीं है।

अन्यच्च

मृताभ्रककामवलप्रदच-
विषमकृच्छ्रश्वासभगदराख्य ।
मेहभ्रमंपित्तकफंचकासं-
क्षयंनिहन्त्येवयथानुपानात् ॥

मृताभ्रक कामदेव और बल को बढावे-विष बाढी, श्वास, भगदर, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, खासी, और क्षय, इन रोगो को अनुपान के साथ सेवन से दूर करे ।

अनुपान

शुद्धाभ्रंननुवल्लकद्वयमितं-
कृष्णामधुभ्यांयुतं ।
मेहश्वासविषचकुष्ठ-
मतुलंवातंचपित्तंकफम् ॥
कासक्षीणक्षतक्षयंग्रहणिका-
पाडुंभ्रमंकामलां ।
गुल्माद्यंचतथानुपान-
विधिनामृत्युंचजेजीयते॥

शुद्ध अभ्रक की भस्म १ रत्ती से लेकर दो वल्ल (६ रत्ती) पर्यंत-पीपल और शहद के साथ खाने से प्रमेह, श्वास, विष, कुष्ठ, वात, पित्त, कफ, खांसी क्षीणता, क्षय, व्रण, संग्रहणी, पाडु-रोग, भ्रम, कामला और गोला का नाश करे, और अनुपान के साथ खाने से मृत्यु को भी जीते ।

दूसरा प्रकार

अभ्रकंचनिशायुक्तं-
पिप्पलीमधुनासह ।
विंशतिंचप्रमेहाणां-
नाशयेन्नात्रसंशयः ॥
अभ्रकंहेमसयुक्त-
क्षयरोगविनाशनं ।
रौप्यहेमाभ्रकंचैव-
धातुवृद्धिकरंहरं ॥
गोक्षीरशर्करायुक्तं-
पित्तरोगविनाशन ॥
शैलजांपिप्पलीचूर्णं-
माक्षिकैसर्वमेहहृत् ।

अभयागुडसयुक्तं-
वातरक्तंनियच्छति ॥
स्वर्णयुक्तंक्षयंहति-
धातुवृद्धिंकरोतिच ।
रक्तपित्तंनिहत्याशु-
एलाशर्करयासह ।

अभ्रकभस्म प्रातःकाल हलदी पीपल और शहद के साथ खाने से २० प्रकार के प्रमेहों को दूर करे। सोने के वर्कों के साथ क्षय को, चांदी सोना और अभ्रक तीनों की भस्म मिला कर खाने से धातु को बढ़ावे। मिश्री मिले गोदुग्ध के साथ पित्तरोगों को, शिलाजीत, पीपल, सुवर्णमाक्षिक की भस्म इनके साथ सर्व प्रमेहों को, हरड़ और गुड के साथ वातरक्त को, सोने के वर्कों के साथ क्षय रोग को और धातु को बढ़ावे, छोटी इलायची और मिश्री के साथ रक्तपित्त को दूर करे।

सिताऽमृतासत्वयुतं
मेहनाशयतेध्रुवम् ।
वरामधुघृतैःशाकं
शुक्रकृच्चक्षुरोगहृत् ॥
एलागोक्षुरभूधात्री
शर्करासहितं तथा ।
गोदुग्धेनयुतंहति
मूत्रकृच्छ्रंप्रमेहकं ॥
त्रिपुगधवराव्योप
शर्करानागकेशरं ।
माक्षिकेणनिहन्त्याशु
पांडुरोगक्षयंज्वरम् ॥

मिश्री और गिलोयसत्व के साथ प्रमेह को दूर करे। त्रिफला, शहद और घृत के साथ शुक्र को बढ़ावे, और नेत्र रोगों को दूर करे। इलायची, गोखरू, भूयआंवला, मिश्री और गोदुग्ध के साथ अभ्रक मूत्रकृच्छ्र और प्रमेह को दुर करे। तज, पत्रज, इलायची, हरड, बहेडा, आंवला, सोंठ, मिरच, पीपल, मिश्री और नागकेसर के चूर्ण के साथ शहद मिलाकर अभ्रक लेवे तो पांडुरोग, क्षय और ज्वर को दूर करे।

तथा च

वेलंव्योपसमन्वितघृतयुतं
वल्लोन्मितंसेवितं ।
दिव्याभ्रंक्षयपांडुसंग्रहणिका
शूलंचकुष्ठामयम् ॥
सर्वंश्वासगदंप्रमेहमरुचिं
कासामयंदुर्द्धरं ।
मदाग्निजठरव्यथांपरिहरे-
च्छोपामयान्निश्चितं ॥

वायविडंग, सोंठ, मिरच, पीपल और गोघृत के साथ ३ रत्ती अभ्रक की भस्म खाय तो क्षय, पांडुरोग, संग्रहणी, शूल, कोढ़, सब प्रकार के श्वासरोग, प्रमेह, अरुचि, खांसी, मन्दाग्नि, उदररोग, शोषरोग, ये सब निश्चय दूर होवें।

अभ्रक सत्व विधि

ऊर्णासर्जरसंचैव
क्षुद्रमीनसमन्वितं ।
एतत्सर्वंतुसंचूर्ण्य
छागदुग्धेनपिंडिका ॥
कृताध्माताखरांगारैः
सर्वसत्वान्निपातयेत् ।

ऊन, राल, छोटी मछली, सब को पीस अभ्रक की भस्म मिलाय बकरी के दूध से छोटी २ गोलियां बनाकर भट्टी में रखे और बंकनाल से धोंके तो सत्व निकले इस प्रकार सर्व सत्व निकाले।

तथा दूसरी विधि

चूर्णीकृतंगगनपत्रमथारनाले
धृत्वादिनैकमवरस्थितसूरणांच ।
भाव्यंरसैस्तदनुमूलरसैःकदल्याः
पादांशटंकणयुतंसफरीसमिश्रं ॥

पिंडीकृतंतुवहुधामहिषीमलेन
संशोष्यकोष्ठगतमाशुधमेन्महाग्नौ ।
सत्वंपतत्यतिरसायनजारणार्थं
योग्यंभवेत्सकलरोगचयंनिहति ॥

अभ्रक चूर्ण को १ दिन कांजी तथा १ दिन जमीकंद के रस में भिजोय दे, तदनन्तर केला कन्द के रस मे भावना देकर चतुर्थांश सुहागा और छोटी मछली मिलाय छोटी-छोटी गोलियां बनावे, धूप मे सुखाकर कोष्टिका मे रख बकनाल धोंकनी से महाग्नि देवे तो सत्व निकले। यह अत्यन्त रसायन है, जारणयोग्य तथा सब रोगो को दूर करे।

वैद्यनाथस्तु

गुडःपुरस्तथालाक्षा
पिण्याकंटंकणंतथा ।
ऊर्णासर्जरसश्चैव
क्षुद्रमीनसमन्वितम् ॥
एतत्सर्वं तुसंचूर्ण्य
छागदुग्धेनपिंडिकाः ।
कृत्वाध्माता खरांगारे
सत्वमुंचतिनिश्चितम् ॥
पाषाणमृत्तिकादीनां
व्योमसत्वस्यकाकथा ।

वैद्यनाथ कहता है कि गुड, गुग्गुल, लाख, खल, सुहागा, ऊन, राल, छोटी मछली, इन सबको पीस अभ्रक मिलाय बकरी के दूध मे पिंडी बांध धूप मे सुखाय घरिया मे रख बंकनाल धोंकनी से धोके तो सत्व निकल कर नीचे बैठ जाय, यह क्रिया पत्थर और मिट्टी तक का सत्व निकाल देती है, अभ्रक सत्व निकालना तो कितनी बड़ी बात है?

सत्व का एकत्र करना

कणशोयद्भवेत्सत्व
मूषायांप्रणिधापयेत् ।
मित्रपंचकयुक्त्मात
मेकीभवतिघोपवत ॥

अभ्रक सत्व के कणो को एकत्र कर उनमे मित्रपंचक मिलाय मूषा मे रख तीव्राग्नि देने से सब सत्व के रवा मिलकर कासे के समान होजाय।

अभ्रक सत्व की भाषा विधि

१० सेर मृताभ्रक को ७ दिन केला के रस में घोटे, तथा ७ दिन जमीकन्द के रस में घोटे, तथा ७ दिन मोथा के क्वाथ की भावना दे, पीछे धूप मे सुखाय ढाई सेर सुहागा फुलाकर डाले तथा आगे लिखी औषधियों को डाले, चिरमिठी, गूगल, लाख, ऊन, सज्जी, राल, छोटी मछली, जवाखार, खल, जमीकन्द, केंचुआ, हरड बहेड़ा, आंवला, चित्रक, क्षीरकद, धतूरे के बीज, कलहारी, पाढ, बलबीज, गधक, मोम, गोखरू, सैंधा नोन, संचर नोन, विडनोन, सामरनोन, गहद, सावला, ससे की हड्डी, कबूतर की बीठ, सोठ, पीपल, मिरच, गोखरू, सरसो, तेलजीवन भैंस का दूध, दही, घृत, मूत्र, ये सब १ भाग सबको कूट पीस कर तीन २ टक की टिकरी बांधे, फिर सुखाय कोष्ठीयन्त्र में रख नीचे पक्के कोयलो की अग्नि दे बकनाल धोंकनी से धोंके तो नरम सत्व निकल नीचे बैठ जाय, उसको निकाल खंगर को तोड चुबक से सत्व को निकाल लेवे, फिर पूर्वोक्त मसाला डालकर धोंके ऐसा तीन वार करने से सब सत्व निकल आवे, यह सोने के समान लाल निकले, कदाचित् मरी-अभ्रक न मिले तो धान्याभ्रक का ही सत्व निकाले, परतु यह सत्व कांसे के समान निकलेगा।

अभ्रक सत्व शोधन

अथसत्वकणांस्तास्तु
क्वाथयित्वाऽम्लकांजिकै. ।
शोधनीयंगुणोपेतं
मूषामध्येनिरुध्य च ॥
सम्यक्पक्वसमाहृत्य
द्विवारंप्रधमेत्ततः ।

इतिशुद्धं भवेत्सत्वं
योज्यरसरसायने ॥

अभ्रक सत्व के कणों को मोथा के काढे, अम्लवर्ग, और कांजी से शोध कर मूषा में रख कपरमिट्टी दे अग्नि देवे, पश्चात् निकाल पूर्वोक्त औषधियों से रख फिर अग्नि देवे तो अभ्रक सत्व शुद्ध होकर पारे का बधन करे और रसायन के योग्य हो।

अभ्रक सत्व मारण

सूततुल्यंव्योमसत्व
तयोस्तुल्यंचगंधकं।
कुमारीस्वरसैर्मद्यं
यंत्रेसैकतकेपचेत्।
द्विनद्वयांतेसंग्राह्यं
भक्षयेन्मासमात्रकम्।
क्षयंशोषंतथाकांस
प्रमेहचापिदुष्करम् ॥
पांडुरोगचकार्श्यंच
जयेच्छीघ्रंनसंशयः।

पारा और अभ्रकसत्व दोनों एक २ भाग, दोनो के समान गंधक ले सबको घीग्वार के रस मे घोट दो दिन वालुकायंत्र मे अग्नि दे तो अभ्रक सत्व मरे, पश्चात शीतल कर रख छोडे, इसका १ महीना सेवन करे तो क्षय, शोष खासी, असाध्य प्रमेह, पांडुरोग, कृशता, इनको शीघ्र नाश करे, यह काकचडेश्वर ग्रन्थ मे लिखा है।

तथा दूसरी विधि

सत्वस्यगोलकंध्मातं-
सस्यासंयुक्तकांजिकैः।
निर्वाप्यतत्क्षणेनैव-
कुट्टयेल्लोहपारया ॥
संप्रताप्यघनस्थूलकणान्-
क्षिप्त्वाथकांजिके।
तत्क्षणेनसमाहृत्य-
कुट्टयित्वारजश्चरेत् ॥
गोघृतेनचतच्चूर्णं-
भर्जयेत्पूर्ववत्त्रिधा।
धात्रीफलरसैनस्तद्व-
द्धात्रीपत्ररसेनवा ॥
भर्जनेभर्जनेकार्यं-
शिलापट्टेचपेषणं।
ततःपुनर्नवावासा-
रसैःकांजिकमिश्रितैः ॥
प्रपुटेद्दशवाराणि-
दशवाराणिगंधकै।
एवंसंशोधितंव्योम-
सत्वंसर्वगुणोत्तरम् ॥
यथेष्टंविनियोक्तव्यं-
जारणेचरसायने।

अभ्रकसत्व के पिंड को तपा २ कर धानयुक्त कांजी में बुझावे, पीछे निकाल लोहे के खरल में लोहे के भारी मूसल से कूटे, उसमे जो बड़े २ टुकडे रहें उनको अग्नि में तपाय उसी धानयुक्त कांजी में बुझावे और कांजी मे से जल्दी निकाल कूटकर रेत के समान करे, पीछे उस चूर्ण को गोघृत मे भूंन पूर्वोक्त रीति से कांजी में भिगोवे, तीन वार भूंने इसी प्रकार आँवलों के रस मे तीन बार भूने, और आँवलो के पत्तो के रस में भूँने, परन्तु जब २ भूंने तब तब एक बडी शिलपर पीसता जाय, तदनंतर पुनर्नवा (साठ) और अडूसा तथा कांजी इन सबको मिलाकर दशपुट दे, इसी प्रकार गधक के दशपुट दे यह शोधित अभ्रकसत्व सर्वगुणयुक्त होवे, इसको स्वेच्छापूर्वक पारे के जारण में और रसायन मे योजना करे।

सत्वस्य मृदु करण

मधुतैलवसाऽऽज्येषु-
द्रावितंपरिभावितं।
मृदुस्याद्दशवारेण-
सत्वलोहादिकंखरं ॥

शहद, तेल, चर्वी, घृत इनमें सत्व को गला

गला कर दश २ बार बुझाने से सत्व और लोहादि कठोरधातु मृदु (नरम) होवें।

पट्टचूर्णंविधायाथ-
गोघृतेनपरिप्लुतम्।
भर्जयेत्सप्तवाराणि-
चुल्लीसंस्थितखर्परे॥
अग्निवर्णंभवेद्यावद्-
द्वारंवारविचूर्णयेत्।
तृणांक्षिप्त्वादहेद्याव-
त्तावद्वाभर्जनंचरेत्॥
ततःसगंधकंपिष्ट्वा-
वटमूलकषायतः।
पुटेद्विंशतिवाराणि-
वाराहेणपुटेनच॥
पुनर्विंशतिवाराणि-
त्रिफलोत्थकषायतः।
त्रिफलामुंडिकाभृंगं-
पत्रपथ्योत्तभृंगकैः॥
भावयित्वाप्रयोक्तव्य-
सर्वरोगेषुमात्रया।
सत्वाभ्रादपरंकिंचि-
न्निर्विकारंगुणाधिकं॥
एवंचेच्छतवाराणि-
पुटपाकेनसाधितं।
गुणवज्जायतेत्यर्थं-
परपाचनदीपनं॥
क्षुधांकरोतिचात्यर्थ-
गुंजार्द्धमितिसेवया।
तत्तद्रोगहरैर्योगै-
सर्वरोगहरंपरं॥

पूर्वोक्त मृतसत्व को शिलापर चूर्णकर गोघृत में मिलाय सात बार कढ़ाही में भूने, जब अग्नि के समान लाल हो जाय तब निकालकर पीसे, फिर गोघृत मिलाकर भूने, जब लाल हो जाय और तिनका लगाते ही जल उठे तब तक भूने इस प्रकार सात बार भूनकर गंधक मिलाय बड़ की जड़ के काढ़े में घोट वाराहपुट में रख फूंक दे इस प्रकार २० वाराहपुट दे, ऐसे ही २० पुट त्रिफलाके काढ़े के देकर त्रिफला, गोरखमुंडी, भांगरे के पत्ते, अडूसा और मूलीके रसो की भावना दे तो दिव्य भस्म होवे यह अभ्रकसत्व की भस्म निर्विकार और गुणों में अधिक है, इसका १०० बार पुटपाक की विधि से साधन करे, तो अत्यन्त गुणवान हो, यह अत्यन्त पाचन; दीपन और क्षुधाकारक है, इसे आधरत्ती सेवन करनी चाहिये, यह अनेकरोगहर्त्ता योगो के साथ खाने से सब रोगों को दूर करे, सत्वकी भस्म के अनुपान अभ्रक के तुल्य जानने चाहियें।

द्रुति [पारे के समान] करना

द्रुतयोनैवनिर्दिष्टा-
शास्त्रेदृष्टावापिचेद्ध्रुवं।
विनाशंभोप्रसादेन-
नसिध्यंतिकदाचन्॥

यद्यपि द्रुति शास्त्रों में लिखी है, परंतु हमने किसी को करते नही देखा, क्योंकि द्रुति बिना श्रीशिवजी की प्रसन्नता के सिद्ध नहीं होती यह बात इस प्रकार है तो भी शास्त्र मे लिखी है और किसी को प्रारब्धवश तथा श्री सदा शिव जी की भक्ति से सिद्ध हो जाती है इसलिये हम यहां लिखते हैं।

अभ्रक द्रुति का प्रथम प्रकार

अगस्त्यपत्रनिर्यासै-
र्मर्दितंधान्यकाभ्रकम्।
शूरणोदरमध्येतु-
निक्षिप्तंलेपितंमृदा॥
गोष्टभूमिंखनित्वातु-
हस्तमात्रंहिपूरितम्।
मासान्निसारितंतत्तु-
जायतेपारदोपमम्॥

अगस्तिया के पत्तो के रस मे धान्याभ्रक को

घोटकर जमीकंद को पोलाकर उसमे भर दे, जमीकन्द के टुकड़ो से ही उसका मूंह बन्द करे ऊपर कपर मिट्टी कर घोडा बधने की जगह हाथ भर थोडी जमीन खोद के गाडदे, एक महीने बाद निकाले तो अभ्रक की पारे के समान पतली द्रुति होवे ।

तथा दूसरी विधि

स्वरसेनवज्रवल्याःपिष्टं-
सौवर्चलान्वितगगन ।
पक्वं शरावसंस्थ-
बहुवारभवतिरसरूप ॥

धान्याभ्रक को वज्रवल्ली से सचरनोन मिला कर पीसे पश्चात् शराव सपुट मे रख अग्नि मे पचावे, इस प्रकार बहुवार करने से पारे के समान द्रुति होवे ।

तीसरी विधि

निजरसपरिभावितनाकचुकि-
कटोरथचूर्णपरिवापात् ॥
द्रुतिमास्तेऽभ्रकसत्व-
तथैवसर्वाणिलोहानि ॥

कुचुकी शाक के चूर्ण को इसी के रस की भावना देकर अभ्रक सत्व मे डाले तो उसकी द्रुति हो तथा सर्वलोह की द्रुति हो ।

चौथी विधि

शुद्धकृष्णाऽभ्रपत्राणि-
पीलूतैलेनलेपयत ।
घर्मेशोष्याणिसप्ताह-
लिप्त्वालिप्त्वापुनःपुनः ॥
मर्दितचाम्लवर्गेण-
तद्वत्शोष्याणिचाथवै ।
स्नुह्यर्कार्जुनवन्हीना-
कटुतुम्बामसमाहरेत ॥
क्षारक्षारत्रयंच-
तदष्टकचूर्णितसमं ।
वज्रकंदंक्षीरकंदं-
बृहतीकंटकारिका ॥
वनवृंताकमेतेषां-
द्रवैर्भाव्यदिनत्रयं ।
अनेनक्षारकल्केन-
पूर्वपत्राणिलेपयेत् ॥
आतपेकांस्यपात्रेच-
स्थालीलेप्यंपुनःपुनः ।
एवंदिनत्रयंकुर्याद्-
द्रुतिर्भवतिनिर्मला ॥

काले शुद्ध अभ्रक के पत्रो पर पीलू के तेल का लेप कर धूप मे सुखावे इस प्रकार बार २ सात दिन तक पूर्वोक्त तेल का लेप कर २ धूप मे सुखावे, पीछे अम्लवर्ग (अम्लवर्ग पारद के प्रकरण मे पहले लिख आये हैं,) घोटे, और उसी प्रकार सुखावे, तदनन्तर थूहर आक, अर्जुना, चित्रक, कडवीतूम्बी, इनके खार तथा सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, इन आठो का चूर्णकर पीछे वज्रकंद, क्षीरकंद, बडीकटेरी, वन का बैंगन, इनके रस मे पूर्वोक्त क्षार मिलाकर घोटे पीछे इस पिट्टी को अभ्रक कर के पत्रो पर लेप करे, कासे की थाली मे रखदे, जब लेप सूखे तब फिर लेप करे, इस प्रकार तीन दिन करने से पारे के समान अभ्रक की निर्मल द्रुति होवे ।

पांचवां प्रकार

कर्कोटीफलचूर्णंतु-
मित्रपचकसंयुत ।
एतत्तुल्यचधान्याभ्र-
मम्लैर्मर्द्यदिनावधिः ॥
अथमूषागतंध्मात-
तद्द्रुतिर्भवतिध्रुवम् ।

ककोडा के फल के चूर्ण को मित्र पचक (घृत, शहद, गुग्गुल, घूघची, गुड) इनमे धान्यअभ्रक को मिलाय अम्ल वर्ग मे १ दिन खरल करे, फिर मूषा मे रख के भट्टी में बंकनाल धोकनी सें धोके तो अभ्रक की द्रुति होय ।

छठी विधि

धान्याभ्रकंचगोमांसं-
अभ्रपादचसैंधवं ।
स्नुह्यर्कपयसाद्रावै-
र्मुनिजैर्मर्दयेत्त्र्यहम् ॥
तद्गोलंकदलीकंदे-
क्षिप्तवावाह्यमृदालिपेत् ।
करीषाग्नौत्र्यहंपाच्यं-
द्रुतिर्भवतिनिर्मला ॥

धान्याभ्रक, गौकामांस, अभ्रक का चतुर्थांश सैंधानमक, इनको थूहर, आक इनके दूध तथा अगस्तिया के रस मे तीन दिन घोट कर गोला बनाय केला के, कद रख में, ऊपर मिट्टी देकर आरने उपलो की ३ दिन आंच देवे तो निर्मल द्रुति होवे ।

सातवां प्रकार

अभ्रकनरतैलेन-
भावितचसुचूर्णितं ।
गोपेन्द्रलेपितामूषा-
धमनाद्द्रुतिमाप्नुयात् ॥

अभ्रक को राम कपूर के तेल की भावना देकर चूर्ण करे, और मूषा मे रख मूषा को गोपेंद्र (वीरबहुटी) के रुधिर से लेप कर अग्नि मे धमन करने से अभ्रक की द्रुति होवे ।

आठवां प्रकार

श्वेताभ्रकंचसंचूर्ण्य-
गोमूत्रेणतुभावयेत् ।
कदलीफलसंयुक्तं-
भावयेत्तद्विचक्षणः ॥
धमेत्तदंधमूषाया-
त्रिवारंचपुनःपुनः ।
द्रुतिर्भवतितद्वज्रं-
नात्रकार्याविचारणा ॥
अनेनैवप्रकारेण-
कुर्याद्द्रुतिसुशोभना ।

श्वेत अभ्रक का चूर्ण कर गोमूत्र की भावना देकर केले के कंद की भावना दे, तदनन्तर अन्धमूषा मे रख दो तीन बार खूब धोके तो अभ्रक की द्रुति होवे, इस प्रकार उत्तम द्रुति करनी चाहिये ।

अनेक द्रुतिमेलापन

कृष्णागरुनाभिशिलैरसो-
नसितरामठैरिमाद्रुतयः ।
सोष्णेमिलंतिमर्द्याः
श्रीकुसुमपलाशवीजरसैः ॥

कालीअगर, कस्तूरी, मनसिल, सफेद लहसन और हीग इन औषधियो को सब धातुओ की द्रुतियो को एकत्र कर उनमे डाल कर घोटे पीछे धूप वा अग्नि की गरमी मे रख लोग और ढाक के बीजों के रसमे घोटे तो सब द्रुति मिला कर एक होजाय ।

भाग्यबिनाभ्रद्रुतयो-
जायतेनकदापिहि ।
बिनाशंभोःप्रसादेन-
नसिध्यंतिकदाचन ॥
तथापिशास्त्ररूढत्वा-
त्कदाचित्भाग्ययोगतः ।

अभ्रक द्रावण भाग्योदय तथा श्री शिवजी की प्रसन्नता बिना कभी सिद्ध नहीं होती, परन्तु शास्त्र मे कदाचित् भाग्य योग से सिद्ध हो इसलिये कही है ।

अभ्रक वेधी क्रिया

श्वेताभ्रंश्वेतकांचंच-
विषसैंधवटकणं ।
स्नुहीक्षीरैर्दिनमर्द्यं-
तेनवगस्यपत्रकम् ॥
लेप्यंपादांशकल्केन-
चाधमूषागतधमेत् ।
यावद्द्रावयतेवंगं-
पूर्वतैलेचढालयेत् ॥

वार्यादिलेपसेकंच-
सप्तवाराणिकारयेत् ।
पुत्रजीवोत्थतैलेन-
ढालयेत्सप्तवारक ॥
तद्वंगंजायतेतारं-
शंखकुन्देन्दुसन्निभं ।

सफेद अभ्रक, सफेदकांच, सिंगियाविष, सेंधानोन, और सुहागा इनको एक दिन थूहर के दूध में घोट, रांग के पत्रो पर लेपकर अन्धमूषा मे रख धोंकनी से धोंके जब जाने कि रांग गलने लगा तब पहले तेल मे ढाल दे, फिर पूर्वोक्त लेप कर आंच में तपाय पुत्र जीव (जीया पोता) के तेल से ढाले इस प्रकार सात बार में वह वग शंख कुन्द और चन्द्रमा के समान सफेद हो जाय ।

दूसरा प्रकार

पीताभ्रंगंधकंसूतं-
रक्तपुष्पंचतुर्थकम् ।
वज्रीक्षीरेणसंयुक्तं-
वंगतारायतेक्षणात ॥

हरताल, अभ्रक, गधक, पारा, तथा रक्त पुष्प, इनका चूर्ण कर थूहर के दूध में घोटे पीछे रांग को गला कर उसमें ढाले तो रांग की चांदी हो ।

अभ्रक में पुट देने के गुण

अभ्रस्त्वष्टादशपुटा-
द्वातहाद्विगुणेनच ।
पित्तघ्नस्त्रिगुणेनैव-
कफहामेहशोफहा ॥
अम्लपित्तामवातादि-
रोगेस्याद्गजकेशरी ।
अभ्रंशतपुटादूर्द्ध्वं-
वीजसंज्ञांध्रुवंलभेत् ॥
वीर्यौजःकांतिमूलश्च-
सवीजोदेहधारकः ।

अठारह पुट को अभ्रक वात नाशक, छत्तीस की पित्त नाशक, और ५४ की कफ प्रमेह और सूजन का नाश करे, तथा अम्ल पित्त और आमवातादि हाथी रूप रोगों के मारने को सिंहरूप है । १०० पुट के उपरांत अभ्रक बीज संज्ञा को प्राप्त होती है, अर्थात अभ्रक वीर्य पराक्रम कांति का कारण है, तथा देह को धारण करता है यह वीरस्वामी का मत है ।

अभ्रक कल्प

निश्चंद्रमभ्रकंभस्म-
धात्र्यांव्योषविडंगकं ।
निष्कैकंभक्षयेत्प्रातो-
वर्षमेकंनिरंतरं ॥
द्वितीयेतुपुनर्वर्षे-
भक्षयेद्गुटिकाद्वयम ।
एवंसंवत्सरेणैव-
गुटिकेकांप्रवर्द्धयेत् ।
त्रिवर्षस्यप्रयोगोऽयम-
भ्रकस्यप्रकीर्त्तितः ।
अनेनक्रमयोगेन-
व्योमःशतपलंनरः ॥
अद्याद्भवेन्नसदेहो-
वज्रकायोमहाबलः ।
मासत्रयेणरक्ताक्षं-
क्षयकासंसुदारुणं ॥
पंचकासांश्चहृद्रुल्म-
ग्रहण्यार्शोभगंदर ।
आमवाततथाशोषं-
पांडुरोगसुदारुण ॥
मृत्युकल्पंमहाव्याधिं-
वातपित्तकफोद्भवं ।
हन्त्यष्टादशकुष्ठानि-
नृणापथ्याशिनांध्रुव ॥
अत्रगुटिकायाप्रमाणं-
नोक्तंतदर्थंसंशयोनकर्त्तव्यः ।

किन्तुचिकित्सकवरै-
स्वबुध्याकल्पनीयं ।
सूपशाकादिषुलवण-
प्रक्षेपवत्इतिवृद्धाः ॥

निश्चन्द्र यानी चमक रहित अभ्रककी भस्म आँवले, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, इन सबको समान भाग लेकर पीसे और चार २ माशे की गोलियां बनावे, १ गोली नित्य १ वर्ष पर्यंत खाय, दूसरे वर्ष दो गोली प्रतिदिन खाय, इस प्रकार प्रतिवर्ष एक २ गोली बढ़ावे, यह अभ्रक का तीन वर्ष का प्रयोग है, इस क्रम से १०० पल अभ्रक खाय तो वज्र के समान दृढ़ देह हो जाय, तीन महीने के प्रयोग से महावलवान् और लाल नेत्र हो जायं, और क्षय पाच प्रकार की उग्र खांसी, हृदय रोग गोला, संग्रहणी, बवासीर, भगंदर, आमवात, शोष (सूखना) पांडुरोग, मृत्यु के समान महा व्याधि, वात, पित्त और कफ से प्रगट अठारह कोढ, ये सब पथ्य से रहने वाले मनुष्य के दूर होवे। इसमें गोली का प्रमाण नहीं लिखा उसका संशय नहीं करना किन्तु बुद्धिमान वैद्य गोली के प्रमाण को बुद्धि से कल्पना करे, जैसे रसोई के शाकादिको में नोन डालने की कल्पना करते हैं यह वृद्धों का मत है।

अभ्रक सेवन में अपथ्य

क्षाराम्लांद्विदलचैव-
कर्कटीकारवेल्लकम् ।
वृन्ताकचकरीरंच-
तैलचाभ्रे विवर्जयेत् ॥

खट्टा, खारा, दोदल का अन्न (मूंग, चना मसूरादि) ककडी, करेला बैंगन, करील का शाक (ककाराष्टक) और तेल को अभ्रक खाने वाला त्याग दे।

अपक्क भक्षणे दोषाः

चन्द्रिकादियुतमभ्रकंहठा-
ज्जीवितंचझटितिप्रणाशयेत् ।
व्याघ्ररोमइवचोदरस्थितं-
वातनोवितनुतेगदान्बहून् ॥

यदि अभ्रक चमकदार हो तो तत्काल प्राण हरे, जैसे बघेरे का रोम पेट में रहने से अनेक रोग देह मे करता है।

तच्छांति

उमाफलंवनेपिष्ट्वा-
सेवयेत्त्रोदिनत्रयम् ।
अशुद्धाभ्रकदोषेण-
विमुक्तसुखमेधते ॥

३ दिन आमले को जल में पीसकर पीवे तो अशुद्ध अभ्रक के दोषों से रहित हो सुख भोगे।

इति श्री बृहद्रसराज सुन्दरे ग्रन्थेअभ्रक प्रकरणम् समाप्तम्

अथ हरिताल प्रकरणः प्रारम्भः

संध्यायांनारसिंहेना-
हिरण्यकशिपुर्हतः ।
तच्छर्दितमभूतास्तत्-
कक्षालेखनाश्रितः ॥

पहले नरसिंह भगवान् ने सायं काल मे हिरण्यकशिपु दैत्य को मारा उसकी छर्दि से हरताल प्रगट हुई यह उसकी कांख में रहती थी।

हरिताल के भेद

हरितालंद्विधाप्रोक्तं-
पत्राख्यपिंडसंज्ञितं ।
तयोराद्यंगुणैःश्रेष्ठं-
ततोहीनगुणंपरम् ।

हरिताल पत्राख्य और पिंडसंज्ञक दो प्रकार की है, इनमे पत्राख्य यानी तबकिया हरिताल उत्तम गुणवाली है, और दूसरी हीन गुण है।

मतान्तरम्

हरितालचतुर्धोक्तं-
पिंडाख्यपत्रसंज्ञिकम् ।

गोदंतवकदालंच-
क्रमाद्गुणकरपरम् ॥

हरिताल (पिंडाख्य, पत्रसंज्ञक, गोदंती, और वकदाल) चार प्रकार की हैं क्रमपूर्वक एक से दूसरी अधिक गुणवाली हैं।

पिंडताल के लक्षण

निष्पत्रं पिंडसदृशं-
स्वल्पसत्त्वंतथालघु ।
स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्प-
गुणंतत्पिंडतालकं ॥

पत्र रहित गोले के समान थोडे सत्व वाली हलकी, स्त्रियों के पुष्प की नाशक, थोडे गुण वाली पिंडसंज्ञक हरिताल कहाती हैं।

पत्रताल के लक्षण

स्वर्णवर्णं गुरुस्निग्ध-
तनुपत्रं चभासुरम् ।
पत्राख्यतालकंविद्या-
द्गुणाढ्यं तद्रसायन ॥

सुवर्णका सा वर्ण, भारी, चिकनी, अभ्रक केसे पर्तों वाली, पत्राख्य (तबकिया) हरिताल कहाती है यह गुण करके युक्त और रसायन है।

गोदंतीहरिताल

दीर्घखडंमतिस्निग्धं-
गोदंताकृतिकंगुरु ।
नीलरेखान्वितमध्ये-
पीतगोदंततालकं ॥

लम्बे २ टुकडे हों, अत्यंत चिकनी, गौ के दांत के समान और भारी हो, तथा जिसके बीच मे नीली तथा पीली रेखा हो उसे गोदंती हरिताल कहते हैं। आज कल पसारी लोग सफेद सेलखडी के समान छोटे २ टुकडो को गोदंती हरिताल बताते हैं, और मूर्ख वैद्य उसे गोदंती के बदले में ले जाते हैं।

वकदाली हरिताल

अतिस्निग्धंहिमप्राख्यं-
सपत्रंगुरुतायुतं ।
तत्तालंवकदालंस्या-
द्दिद्रकुष्ठहरंत्विदम ॥

अत्यन्त चिकनी, बर्फ के समान, पत्र युक्त, भारी, ऐसी हरिताल वकदाल संज्ञक जाननी यह कुष्ठको हरण करती है।

मारणयोग्य हरिताल

पिंडतालंमृतौत्याज्यं-
पत्रालंमृत्युवेहितम् ।
गोदंतंतुगलत्कुष्ठे-
श्वेतंकुष्ठेऽतिमंविदुः ॥

पिंडताल मारण कर्म मे त्याज कही है। और तबकिया श्रेष्ठ है, गोदंती गलत्कुष्ठ मे और सफेद कुष्ठ मे वकदाल हरिताल ग्रहण करनी चाहिये।

हरिताल के गुण

हरितालकटुस्निग्ध-
कषायोष्णहरेद्विषं ।
कडुकुष्ठार्शरोगास्रक्क-
फपित्तमरुद्व्रणान् ॥

हरिताल कडवी, चिकनी, कसैली, और गरम है। विष को दूर करे, फोढ़, बवासीर, रुधिर विकार, (कफ, पित्त, वादी) से प्रगट तथा फोडा ये सब दूर हो ये गुण शुद्ध हरिताल के हैं।

अशुद्ध हरिताल के गुण

अशुद्धतालमायुघ्नं-
कफमारुतमेहकृत् ।
तापस्फोटागसंकोचान्-
कुरुतेऽतःप्रशोधयेत् ॥

अशुद्धहरिताल आयुका नाशकरे, कफ वात और प्रमेहको प्रकटकरे, तथा ज्वर, हडकल,

अंगसंगकोच, इनरोगोको करे। इसलिये हरिताल को अवश्य शोधे।

नाम भेद कथन

हरितालीतिविख्याता-
त्रिपुलोकेपुविश्रुता।
शृणुतस्यापरंनाम-
हसराजइतिश्रुतम्॥
तयासंभक्षितस्ताल:-
सुधारूप:प्रजायते।

हरिताली नाम से त्रिलोकी में विख्यात कि जिसका दूसरा नाम हंसराज विख्यात है, इसके साथ हरताल खाने से चन्द्रमा के समान रूप करे।

हरिताल शोधन

कूष्मांडत्रियतयेस्विन्नं-
तालंशुध्यतिनान्यथा।

पेठे (कुम्हड़े) के ऊपर चार अंगुली की टांकी देकर उसमें हरिताल को कपड़े मे बांधकर रखदे, और उसी टांकी से बंद करदे, फिर एक खिपरे मे नीचे के भाग की तरफ से रख नीचे चार प्रहर की आंच दे जिससे सब पेठा गल जाय जब चार अगुल बाकी रहे तब हरिताल की पोटली निकाल ले इसी प्रकार दूसरे और तीसरे पेठे मे पचावे, पीछे पोटली निकाल शुद्ध पानी से धो डाले तो हरिताल शुद्ध होवे।

तथा दूसरी विधि

तालकंकणश कृत्वा-
वस्त्रापोटलिकांतत:।
दोलायंत्रेणयामैकं
सचूर्णेकांजिकेपचेत्॥
यामैकदोलयातद्वत्-
कूष्मांडकरसेतत:।
तिलतैलेपचेद्यामं-
यामंचत्रैफलेजले॥
दोलायत्रेचतुर्यामं-
पक्वंशुद्ध्यतितालक।

हरिताल के छोटे २ टुकडे कर पोटली में बांध काजी मे दोलायंत्र द्वारा १ प्रहर पचावे, इसी प्रकार १ प्रहर पेठे के रस में पचावे, और १ प्रहर तिल के तेल मे, १ प्रहर त्रिफला के काढे मे, ऐसे चारों वस्तुओ मे चार प्रहर पचाने से हरिताल की शुद्धि होवे।

तीसरी विधि

स्विन्नकुष्माण्डतोये-
वातिलक्षारजलेपिवा।
तोयेवाचूर्णसंयुक्तो-
दोलायंत्रेणशुध्यति॥

हरिताल को पेठे के पानी वा तेल तथा क्षारगण के पानी अथवा चूने के जल से दोलायन्त्र द्वारा औटाने से शुद्ध होवे।

चौथी विधि

शोधयेत्पर्यायुक्त्या
एतत्पत्रीकृतंशुभम्।
वस्त्रेणपोटलींबध्वा
कांजिकेशोधयेत्र्यहम्॥
कूष्माण्डरसमध्येतु
त्र्यहदुग्धेनशोधयेत्।
वटदुग्धेत्र्यहंशोध्यं
तालकंशुद्धिमाप्नुयात्॥

हरिताल के न्यारे २ पत्र कर उनकी पोटली कर ३ दिन काजी से पचावे, पीछे पेठे के रस, दूध, वड के दूध इनमे तीन २ दिन पचावे, तो हरिताल शुद्ध होवे।

पांचवीं विधि

तालकं कणश:कृत्वा
दशांशेनचटंकणं।
जंवीरोत्थद्रवै:क्षाल्यं
कांजिकै क्षालयेत्पुन:।
स्वेद्यंवाशाल्मलीतोये
तालकंशुद्धिमाप्नुयात्॥

हरिताल के टुकडें कर उनका दशवां हिस्सा सुहागा मिलाय जबीरी के रस मे औटावे, फिर

कांजी में औटावे और सेमल के रस में औटावे तो हरिताल शुद्ध हो।

शुद्ध हरिताल के गुण

शोधितंहरितालंतु
कांतिवीर्यविवर्द्धनं।
कुष्ठादिपापरोगघ्नं
जरामृत्युहरंपरं ॥

शुद्ध हरिताल-कांति और वीर्य को बढावे, कुष्ठादि पापरोगों को दूर करे, बुढ़ापे और मृत्यु का हरण करे।

हरिताल मारणं

पत्राख्यंतालकंशुद्धं
पौनर्नवरसेनतु।
खल्वेविमर्दयेदेकं
दिनंपश्चाद्विशोषयेत् ॥
संशोष्यगोलकंकृत्वा
चक्राकारमथापिवा।
ततःपुनर्नवाक्षारै
स्थाल्याअर्द्धप्रपूरयेत् ॥
तत्रतद्गोलकंधृत्वा
पुनस्तेनैवपूरयेत्।
आकण्ठंपठरंतस्य
पिधायरोधयेन्मुखं ॥
स्थालींचुल्ल्यांसमारोप्य
क्रमाद्वह्निविवर्द्धयेत्।
एवंतुम्रियतेताल
मात्रास्यैकवरक्तिका ॥
अनुपानान्यनेकानि
यथायोग्यंप्रयोजयेत् ॥

शुद्ध वर्कदिया हरिताल को पुनर्नवा (साठ) के रस में घोट उसकी मुलायम गोला या टिकिया बनावे, फिर साठ के खार से आधी हंडिया भर उसपर बीच में टिकियाओं को रख ऊपर से इसी खार को हंडिया में भरकर भर दे, और ऊपर [illegible] पर [illegible] से बंद करदे और [illegible] दे, इस प्रकार हरिताल की सफेद भस्म होवे, इसकी मात्रा १ रत्ती की है अनेक अनुपानों के साथ यथायोग्य रोगों में देवे।

तथा दूसरी विधि

स्वर्णपत्रंशुद्धतालं
पलानांदशसंज्ञकम्।
कौमारीद्रवप्रस्थेन
मर्दयेत्तालकंशुभं ॥
निंबुप्रस्थरसेचैव
वाणपुंखरसैःपुनः।
प्रस्थंवज्रीरसेनैव
मर्कपिंगपतिपृथक् ॥
मर्दयेच्चदृढंखल्वे
यावद्भवतिगोलकं।
गोलकंशोषयेत्पश्चात्
धर्मेसप्तदिनानिवै ॥
पलाशभस्ममृद्भाण्डे
क्षिप्तोपरिचगोलकं।
दत्त्वोपरिपुनर्भस्म
भांडवक्त्रंनिरुंधयेत् ॥
चूल्ल्यामारोपयेद्यत्ना-
त्पावकज्वालयेत्क्रमात् ॥
मंदमध्यहठाग्नीना
यामानाचद्विपष्टिकं ॥
स्वांगशीतलमादाय
शुभ्रंतालंमृतंध्रुवम्।
तंदुलंतंदुलार्द्धंवा
नागवल्लीदलैर्लिहेत् ॥

दश पल सोने के पत्रों के समान शुद्ध हरिताल को १ सेर घीग्वार के रस में घोट १ सेर नींबू के रस में घोटे, सेर वाणपुंख (सरफोका) के रस में, सेर थूहर के दूध में, और १ सेर आक के दूध में गोला बंधने पर्यन्त घोटे, पश्चात् गोले को ७ दिन धूप में रख कर सुखावे, फिर एक बड़े पात्र में ढाक की भस्म भर उसमें गोले को रख फिर ऊपर तक उसी भस्म को भर मुख

को ढक दे, और यत्नपूर्वक चूल्हे पर चढ़ाय बासठ प्रहर क्रम से मंद मध्य और तेज आंच उसके नीचे जलावे, फिर शीतल होने पर उतार ले यह हरिताल की सुन्दर भस्म होवे इसे एक अथवा आधे चावल भर नागरपान के साथ खाय तो उग्ररोग दूर होवे ।

अष्टादशानिकुष्ठानि
ज्वरमष्टविधंहरेत् ।
पथ्यंमकुष्टचणार्क
लवणस्नेहवर्जितम् ॥

अठारह कुष्ठ, आठ प्रकार के ज्वर इनको दूर करे, इस पर मोठ, चना, बिना तेल, गुड और लवण के खाय ।

तीसरी विधि

तालंविचूर्णयेत्सूक्ष्मं
मर्द्यं नागार्जुनीद्रवैः ।
सहदेव्याबलायाथ
मर्दयेद्दिवसद्वयम् ॥
तत्तालरोटकंकृत्वा
ततच्छायांविशोषयेत् ।
हंडिकायंत्रमध्यस्थं
पलाशभस्मकोपरि ॥
पाच्यंचवालुकायन्त्रे
विहितंचंडवह्निना ।
स्वागशीतंसमुद्धृत्य
सर्वरोगेषुयोजयेत् ॥

हरिताल का सूक्ष्म चूर्ण कर दुद्धी, सहदेई और बला (खिरेटी) इनके रसो मे दो दिन खरल करे, पीछे उस हरिताल की रोटी सी बनाय छाया मे सुखा लेवे, फिर एक हांडी मे ढाक की राख भर उसके बीच में रोटी को रख वालुकायन्त्र में पचावे, तीव्र अग्नि दे, जब स्वांगशीतल हो जाय तब उतार कर सब रोगो में देवे ।

चौथी विधि

पलमेवंशुद्धतालं
कुमारीरसमर्दितं ।
शरावसंपुटेक्षिप्त्वा
यामान्द्वादशकंपचेत् ॥
स्वांगशीतंसमादाय
तालकंचमृतंभवेत् ।
गलत्कुष्ठहरेच्चैव
तालकंचनसंशयः ॥

१ पल शुद्ध हरिताल में घीग्वार का रस डाल कर खूब घोटे, पीछे टिकिया बनाय धूप मे सुखाय शरावसपुट मे रख १२ प्रहर की आंच दे और स्वागशीतल होने पर निकाले तो हरिताल की भस्म होवे, यह निस्सन्देह गलित्कुष्ठ को दूर करे ।

पांचवीं विधि

वंदालींतालमादाय
निर्मलखल्वमध्यगं ।
दिनसप्तकपर्य्यन्तं
कुमारीद्रवमर्दितं ॥
काचकुप्यांविनिक्षिप्य
मुखमुद्राटयेत्ततः ।
विरच्यवालुकायन्त्रं
वन्हिंदद्याच्छनै शनैः ॥
ततोधूमोस्यनीलाभः
पीतवर्णस्तुसर्वथा ।
मुखमार्गेततःप्राज्ञो
न्यसेल्लोहशलाकिकां ॥
तस्यतालस्यमध्येसा
भ्राम्यतेचक्षणांक्षणं ।
आकृष्यनीयतेरुद्री
सशलाकाविलोक्यते ॥
नीलंपीतयदाकिंचित्
स्वेदरूपंजलभवेत् ।

दिनैकमपरंस्वेद्यं
दद्याद्वापिदिनद्वयम् ॥
जलरूपंयदास्वेदो
दृश्यतेतालकस्यवै ।
शीतलक्रियतेतत्र
स्वागशीतंयथाभवेत् ॥
खजूरखोटिकाकारं
तालसत्वमहोज्वलं ।
गुरुरूपदृढंप्राप्य
करस्पर्शेचसौख्यदम् ॥

शुद्धवकदाली हरिताल को खरल मे ७ दिन ग्वारपठ्ठे के रस में घोटे, पीछे सुखाकर आतिशी शीशी में भरे, और शीशी का मुख खुला रहने दे, पीछे वालुकायन्त्र मे रख मन्दाग्नि दे जब शीशी के मुख से धुआ निकले तब चतुरवैद्य शीशो मे लोहे की सलाई डाल उसे चारो ओर घुमाय हरिताल से बाहर निकाले यदि वह सलाई गीली और रंग नीला या पीला हो तो एक या दो दिन और स्वेदन करे, परन्तु बार २ परीक्षा करता रहे जब स्वेद जल के समान स्वच्छ हो जाय तब शीतल कर उतार ले, यह छुहारे की गुठली के समान उज्वल सत्व होता है । भारी और दृढ तथा छूने से सुखदाता होता है ।

टंकमात्र विचूर्ण्याथ-
प्रदद्यात्कुष्ठिनोपर. ।
क्षुद्बोधोजायतेत्यर्थ-
मत्यर्थंशुभगवपुः ॥
अत्यर्थंपच्यतेभुक्त
मत्यथसुखमाप्नुयात् ।
अरुणोदुंवरकुष्ठ
मृक्षजिह्वंकपालकं ॥
काकणंपुंडरीकच
दद्रुकुष्ठंसुदुस्तरं ।
तथाचर्मदलंहन्या
द्विसर्पंचापिककर्शं ।
सिध्मंविचर्चिकांपामां
श्वेतकुष्ठंचनाशयेत् ॥
गरंदूषीविषंहन्या
न्मासमात्रोपसेवनात् ॥

इसमें से ४ माशे हरताल पीस कर कोढी को देवे तो अत्यत भूख लगे, और सुन्दर देह होवे, अत्यत क्षुधा और सुख वढे, अरुण कोढ, उदुंवर, ऋक्षजिह्व, कपाल, काकन, पुंडरीक, दाद, चर्मदल, कठोरविसर्प, सिध्म, विचर्चिका, खाज, सफेद कोढ, दूषीविष इन सबको १ महीना सेवन करने से नाश करे, । परन्तु याद रहे कि ४ माशे को ही क्रम से १ महीना खाय इकट्ठी न खा जाय, यह विधि राजराजेश्वर चिंतामणी से लिखी है ।

छठी विधि

सूक्ष्मंविचूर्णशुचितालकस्य
सभावयेद्विंशतिवासरांश्च ।
अश्वत्थतोयैःशुचिखल्वमध्ये
घृष्ट्वाविदध्यात्दृढगोलकोपि ॥
अश्वत्थभूत्याधंघृतेचभांडे
न्यसेत्ततोगोलकएवमंदं ।
संपूर्णभूत्याथशरावकेयं
निरुध्यमुंचेच्चगजाह्वयांते ॥
सहस्रवन्योत्पलसयुतेवै
मृतिंव्रजेद्यामचतुष्ठयेन ।
निर्धूममेनयदिलोहतप्तं
मुंचेत्सुशुद्धंशुभशुक्लवर्णं ॥

शुद्ध हरिताल को २१ दिन पीपल के रस मे खरल कर गोला बनाय धूप में सुखा लेवे, फिर एक बडी हडिया ले आधी मे पीपर की राख भर गोला रख वाकी को उसी राख से भर दे, और खोपरे से मुख बदकर ७ कपर मिट्टी करे, गजपुट हजार उपलो की आंच दे तो ४ प्रहर मे शुद्धभस्म होवे (इसकी परीक्षा इस प्रकार करे) एक लोहे की गरम सलाग पर डाले यदि

धूंआ न दे और सफेद हो जाय तो शुद्ध जाने।

सातवीं विधि

एकोविभागोशुचितालचूर्णं
भागद्वयंसुन्दरधूमसारं।
मध्येविभूतिशुभतालकचूर्ण-
मेतत्तस्योपरि:परिददेच्चसुधूमसार:।
प्रपूरयेद्भूमिकयाथभांडे
शरावकेणैवततोनिरुंध्यात्।
विमुच्यचूल्ह्यांचहिरण्यरेतां
दहेत्तुयोयोमचतुष्टयच।
एतै:प्रकारैर्मृतिमेवतालं-
निधूंममेवंकिलशुक्लवर्णम्॥

शुद्ध हरिताल १ भाग में दो भाग धूमसा मिलाकर एक मटके मे इमली वा पीपल की राख भर उस के बीच में रखे, उस के ऊपर उसी राख को कंठतक भर देवे, और मुख पारीसे ढक कर कपर मिट्टी कर चूल्हे पर चढ़ावे ४ महर की अग्नि दे तो हरिताल की निधूंम और सफेद भस्म होवे।

आठवीं विधि

शुद्धंतालचूर्णयित्वा-
कन्याकूष्माडजैर्द्रवै:।
दत्वात्रिभावितंशुष्कं-
गोलकृत्वानिधापयेत्॥
हंडिकायांपटुक्षारै:
पूर्णयेच्चषडंगुलं।
क्षारेणाच्छाद्यचपुन-
र्लोहपात्रेनिधापयेत॥
पुन:क्षारतुचाकंठं-
पूरयित्वाक्रमाग्निना।
द्वात्रिंशत्प्रहरंपाच्यं-
भस्मस्याच्चूर्णसन्निभं॥
ससितंतंदुलोन्मानं-
वातरक्तज्वरप्रणुत्।

शुद्ध हरिताल को ग्वारपट्टे और पेठे के रस मे खरल करे, पीछे दही की तीन भावना देकर सुखा लेवे, तदनंतर एक बडी हांडी मे नोन और खार छः २ अंगुल बिछाय उसके बीच में गोले को रखे और ऊपर से खार भरकर बंद करे, और हांडी को चूल्हे पर चढाय क्रम से मंद मध्य तेज आंच ३२ प्रहर देवे तो हरिताल को चूने के समान सफेद भस्म होवे इसमें से १ चावल की बराबर देवे तो वात रक्त दूर होवे।

नवीं विधि

जंबीरद्रवमध्येतु-
प्रक्षाल्यंनटमंडनं।
दशांशटंकणंदत्वा-
खडश:परिमेलयेत्
चतुर्गुणेगाढपटे-
निवध्यप्रहरद्वयं।
दोलायंत्रेणसुस्वेद्य-
प्रदीपप्रमितेनले॥
चूर्णतोयेकांजिकेच-
कूष्मांडंनिवतैलके।
त्रिफलाम्बुतत:पश्चात्-
क्षालयित्वाम्लवारिणा॥
तत:पलाशमूलत्वक्-
परिपिष्टंप्रशोषयेत्।
महिषीमूत्रसंपिष्टं-
पुनस्तपरिशोपयेत्॥
तद्गोलकंशरावाभ्यां-
संपुटीकृत्ययत्नत:।
खातेगजपुटेकृत्वा-
स्वांगशीतंसमुद्धरेत्।
अजादुग्धे:पुन:पिष्ट्वा-
शोषयेद्गोलकीकृत॥
आकंठंभस्मपलाशं-
हडिकायांविनिक्षिपेत्।
सम्यक्चूर्णस्यकुडवं-
दत्वातत्रविचक्षणै:॥

स्थापयेद्दोलकंतत्र-
पुनश्चचूर्णस्यभस्मच ।
यथाधूमोवहिर्याति-
तथातांचविमुद्रयेत् ॥
द्वात्रिंशत्प्रहराग्निंच-
चूल्ह्यांभक्तवदर्पयेत ।
स्वांगशीतंसमुधृत्य-
सचूर्णनटमंडन ॥
हिमकुन्देन्दुसंकाशं-
निर्धूमकृष्णवर्त्मना ।

हरिताल अथवा मनसिल को जंबीरी के रस से प्रचालन करे (धोवे) पीछे हरिताल के छोटे-छोटे टुकडे कर हरताल का दशांश सुहागा डाल चार तह के कपडे मे वांध दोलायंत्र द्वारा चूने के पानी, कांजी, पेठे के रस, नीम के तेल वा रस त्रिफला के काढे, प्रत्येक मे दो २ प्रहर औटावे। तदनंतर नींबू के रस, ढाक की जड की छाल, भैंस के मूत्र मे घोट कर गोला बनावे और शराव सपुट में रख कपर मिट्टी कर गजपुट मे फूंके, स्वतः शीतल होने पर निकाल बकरी के दूध में घोटे और सुखाकर गोला बनावे, पश्चात् एक मटके मे ढाक की राख भरकर उसके बीच में गोले को रख बाकी खाली को पूर्वोक्त राख से खूब भर मुख बंद कर देवे, यानी मुख को ढकना देकर चूने और गुड से सधियों को वंद करे, अथवा ढाक की भस्म और चूने के बीच मे गोले को रख कर मुख वंद करे जिससे उसका धुआं वाहर न निकले, फिर ३२ प्रहर की अग्नि देवे और जहां से धुआं निकले वहीं ढाक की राख और चूने से वंद करे, स्वांग शीतल होने पर सावधानी से हरिताल को निकाल ले यह भस्म वर्फ, चन्द्रमा, कुंद के फूल के समान निर्धूम और सफेद होवे।

अथ गुण।

रक्तिकास्यप्रदातव्याः
पुराणगुडयोगतः ।
पथ्यंचचणकस्योक्तं-
रोटिकापष्टिकोदनं ॥
निर्ल्लोणकंचनिष्पन्नं-
खादयेदेकविंशतिः ।
दिनानिनिर्वातगतः
सर्वव्यापारवर्जितः ॥
गलत्कुष्ठंपुंडरीकं-
श्वित्रंकापालिकंतथा ।
औदुंवरंरक्तजिह्वं-
काकणस्फोटमेवच ॥
वातस्तुपाडूरोगच-
दद्रुपामाविचर्चिका ।
विसर्पमर्द्धशीर्षंच-
विपादिंचभगंदरम् ॥
सर्वंयथाक्रमहंति-
सेवितंहरितालकं ।
अन्यानपिव्रणान्सर्वा-
नधकारामिवांशुमान् ॥

१ रत्ती हरिताल पुराने गुड के साथ खाय और पथ्य में चना की रोटी सांठी चावल तथा और पदार्थ सब अलौने खाय और २१ दिन तक सव कामो को छोडकर पथ्य से रहे तो सर्वरोग रहित हो जाय । गलित्कुष्ठ, पुडरीक, सफेद कोढ, कापालिक, औदुंबर, रक्तजिह्व, काकण, फोडा, पाडुरोग, दाद, छाजन, खाज, विसर्प, अर्द्धा गवात, तथा ८० प्रकार की वात, विपादिका और भगन्दर को हरिताल यथा क्रम सेवन करने से नाश करे, और भी व्रणादि रोगो का नाश करे, जैसे सूर्य्योदय अन्धकार का नाश करता है।

दशवीं विधि

एतच्चतालकशुद्ध -
कर्षैकमृतलोहकम् ।
किंचिद्धेमंतथारूप्यं-
सर्वमेकत्ररोधयेत् ॥

काचकूप्यांमृदालिप्त्वा-
सप्तवारान्भुहुर्मुहुः ।
तालकंकांचकुप्यांतः
प्रदद्देत् प्रयत्नतः ॥
वज्रमुद्रांमुखेकृत्वा-
किंवामधुरवन्हिना ।
संस्थाप्यवालुकायंत्रे-
पचेद्यामचतुष्टयं ॥
स्वांगशीतलमुद्धृत्य-
पूजयेच्चेष्टदेवतां ।
खल्वेविचूर्णयेत्पूतं-
रसभांडेनिधापयेत् ॥

शुद्ध हरिताल और लोह भस्म दोनो एक २ तोला, थोडा सोना, थोडी चांदी, सब को एकत्र कर कांच की शीशी मे भर सात कपरमिट्टी करे, और वालुकायंत्र मे रखकर शीशी पर वज्रमुद्रा कर मधुर अग्नि से चार प्रहर पचावे, स्वांगशीतल होने पर उतार लेवे, और हरिताल को निकाल खरल मे डाल घोट डाले और किसी उत्तम शीशी मे रखदे, तदनन्तर इष्टदेव का पूजन कर रोगी को दे ।

ग्यारहवीं विधि

विमलपत्रकतालसुखंडशः
कृततदोत्तरवस्त्रविवेष्टयेत् ।
धृतमथोत्तरपात्रघटोदरे
जलरसेस्थिरदोलकयाशुभैः ।
प्रहरयुग्मकृशानुक्रममादिभिः
स्वतनुशीतलस्वेद्यपुन ।
स्ततःमहिषिमूत्रकमेणकुमारिका
सघनचूर्णरसेशरपुंखिका ।
सजलनिंबुसुपकरसेपुनः
सुदृढकोकिलपक्वद्रवेततः ।
इदमिहकृतस्वेद्यप्रयत्नतो
भवतिशुद्धमिदंनटमंडनम् ।

तबकिया हरिताल के जुदे २ पत्र लेकर एक अच्छे वस्त्र मे बांध पोटली को नेत्रवाला के रस में दोलायंत्र द्वारा दो प्रहर पचावे, शीतल होने पर निकाल भैंस के मूत्र, घीग्वार के रस, नागरमोथा के काढे, रसफोका के रस, नींबू के रस, और ईख के रस इन प्रत्येक मे दोलायंत्र द्वारा औटावे तो हरिताल शुद्ध होवे ।

अथ मारण

कूष्मांडतोयेनदिनंविमर्द्य
निंबूरसेगोभिरसेतथैव ।
सनाकछिक्कादिकुलत्थितोयै
र्धत्तूरजचार्द्रकभृंगराजं ॥
नागार्जुनीवासहदेविकांच
सब्रह्मदण्डीद्रवकिंशुकानां ।
एरंडमूलंलशुनंपलांडु
सुवर्णवल्लीरसकाकमाचीं ॥
गोपालिकांवज्रिपयोर्कदुग्धं
खल्वेविमर्द्य दिनमेकविंशत् ।
पृथक्पृथक्मासचतुर्दशांते
चक्राकृतिवर्त्तुलरोटिकाभं ॥
अश्वत्थभूत्त्यामृदुहंडिकाया-
मधोर्ध्वमध्यस्थिततालकंच ।
सुपूर्णपात्रं दृढभस्मसस्था-
मुखेशरावंमृतकर्पटंच ।
दद्याच्चचूल्ह्योपरिरक्षिणीय-
मग्निक्रमेणापि दिनानिचाष्टौ ॥
शिवस्यपूजाद्विजभोजनंच
निष्कासयेद्युतिमान्शुभ्रतालः ।
कुन्देन्दुशंखादिप्रभासमानं
तालंभवेद्वामृततुल्यसिद्धं ॥
सुवर्णरौप्यादिकरंडमध्ये
रक्षेत्ततोतालकभस्मयुक्त्या ।

शुद्ध हरिताल को १ दिन पेठे के रस में घोट नींबू, गोभी, नकछिकनी, कुलथी, धतूरा, अदरक, भांगरा, दुद्धी, सहदेई, ब्रह्मदंडी, ढाक, अरण्ड की जड़, लहसन, प्याज, माल कांगनी, मकोय, कंचरिया, थूहर, आक इनके रस और दूधों में यथा संभव २१ दिन घोटे, इस प्रकार

जब चौदह महीने बीत जांय तब रोटी के समान चंदियां बनावे, तदनन्तर एक मिट्टी के बडे पात्र में पीपल की राख भर टिकिया रख ऊपर से फिर दवा कर राख भरदे, और मुख पर ढकनादे कपर मिट्टी कर चूल्हे पर चढावे, और नीचे क्रम से मद मध्य तेज आच आठ दिन देकर नवें दिन श्रीशिवजी का पूजन कर ब्राह्मण भोजन कराय बड़ी सावधानी से हरिताल को निकाले, यह हरिताल कुंद के फूल चन्द्रमा तथा शख के समान श्वेत और अमृत के तुल्य सिद्ध होवे, इसे सोने वा चादी के पात्र मे यत्न से रखे।

अथ गुण

मात्राततस्तदुलकप्रमाणं
रोगानुसारैरनुपानमध्ये ।
द्विकालपथ्यं लवणाम्लतीक्ष्णं
वर्ज्यं ततोवालतैलपक्वं ।
त्रिःसप्तवारंह्यथमंडलंवा
गुणैमृतोतालकधूम्रहीनं ।
कुष्टानिचाष्टादशवातरक्तं
ससन्निपातंचभगदराणि ।
अपस्मृतिर्वातव्रणांश्चसर्वे
फिरंगरोगादिकश्लीपदानि ॥
सर्वोपदंशप्रभृतिश्चशोफा
सूतिर्गदाश्वासमनेकवातं ।
कासादिदुष्टानपिपीनसाना
मर्शादयोग्रा ग्रहणीविकारं ॥
मेदोऽर्वुदगृध्रसिगडमाला
कट्यामवातादिकमग्निमाद्यं ।
मूत्रादिकृच्छ्रादिकमेहजाल
शोफंश्चसर्वं.क्षयराजयक्ष्मा ।
सर्वेकफश्चापिचपित्तरोग-
वातेतथाव्याधिज्वरादिकानां ॥
सवालसूर्य्योदयमंधकार
नाशयथासेवितलालभस्मः ।
सुवर्णवर्कांतिकरोतिकाम
रामाग्ततानांविलसेन्मनुष्य ।

इस हरिताल को १ चावल के अनुमान यथा योग्य अनुपान के साथ दोनों समय यानी प्रातः काल और सायंकाल में देवे इसका खाने वाला नमकीन, खट्टा चर्परा वादी, तेलका पका इत्यादि पदार्थों को त्याग दे। इस धुआं रहित हरिताल को २१ या ४० दिन सेवन करे तो ये रोग दूर होवें, अठारह प्रकार के कोढ, वातरक्त, सन्निपात, भगंदर, विस्मरण (भूलका रोग), मृगी, संपूर्ण व्रणरोग, फिरंगरोग, श्लीपद, उपदशप्रभृति रोग, सूजन प्रसूत, श्वास, वादी के अनेक रोग, खांसी पीनस, बवासीर, सग्रहणी, मेदरोग, अर्वुद, गृध्रसी, प्रमेह, गंडमाला, कमर के रोग, आमवात, मंदाग्नि, मूत्रकृच्छ्र, शोपरोग, क्षय, राजयक्ष्मा, सब कफ के रोग, वात रोग, पित्तरोग, बुढापे से आदि ले सब रोग नष्ट होवें। जैसे सूर्य्योदय से अन्धकार जाता रहता है। इस प्रकार हरिताल सेवन से सब रोग मिट जाते हैं। देह की सुवर्ण के समान काति हो और १०० स्त्रियो से रमण करने की शक्ति देती है।

तेरहवीं विधि

शुद्धं तालं समादाय-
द्रोणपुष्पीरसैर्भिषक् ।
दिनानिसप्तकमर्द्य -
यंत्रे विद्याधरेक्षिपेत् ।
यामानष्टौपचेद्यग्नौ-
स्वांगशीतलमुद्धरेत् ।
ऊर्द्ध पात्रं गतंसत्त्वं-
ग्रहीत्त्वामर्दयेत्पुनः ॥
त्रिदिनतद्रसैरेव-
ततोयंत्रे पुन.पचेत् ।
तदधोज्वालयेदग्नि-
मष्टयाममतंद्रितः ।
एवंपुन.पुन कुर्य्या-
द्यावत्सत्त्वंस्थिरंभवेत् ॥

स्थैर्यंसत्त्वस्यनियत-
जायतेसप्तमेहनि ।
अष्टमेर्कस्यदुग्धेन-
मर्दयेत्त्वेकवासर ।
यामानष्टौपचेदग्नौ-
कुर्य्यादेवंत्रिवारकं ॥
गलितकुष्ठं तथाशोथं-
वातरक्तसमुद्भव ।
वातरक्तेपुसर्वेपु-
योऽयगु जाद्वयोन्मित ॥
चोवचीनीभवचूर्णं-
गृहीत्वाटकमात्रकम् ।
गु जामात्रेणतालेन-
मिश्रितैर्मधुनालिहेत ॥
तस्यनश्यतिमूलेन
फिरंगाख्योमहागद. ।
व्रणाश्शुष्यतिसर्वेवै
फिरंगोत्थानसशय. ॥
शीघ्रंश्लेष्मामयंहन्या-
दनलचविवर्द्धयेत् ॥

शुद्ध हरिताल को खरल मे डाल ७ दिन गोमा के रस मे घोटे, जब गाढ़ा हो जाय तब दो २ पैसे भर की टिकिया बाधे और धूप मे सुखा कर डमरू यन्त्र मे ८ प्रहर को आच दे, जब शीतल हो जाये तब ऊपर की हाडी मे से छुरी से सत्व को खुरच ले । तदनन्तर उस सत्व को ३ दिन गोमा के रस में घोट टिकरी बनाय धूप मे सुखाय फिर डमरूयन्त्र में आठ प्रहर की आच देकर उडा लेवे, इस प्रकार ७ आच देने से हरिताल अग्निस्थाई होवे । आठवें दिन आक के दूध मे घोट टिकियाबाध धूप मे सुखाय डमरू यन्त्र मे ८ प्रहर खूब आच दे इस प्रकार ३ आंच देने से हरिताल सिद्ध होवे । इसकी मात्रा दो रत्ती की है, वातरक्त से जिसकी उंगलिये गिरती हो वह इससे थम जावें वातरक्त की सूजन और चकते दूर होवें, गांठ दूर हो, ४ माशे नाक की पपडी दूर होवे । चोब चीनी के चूर्ण और शहद के साथ १ रत्ती खाय तो (फिरंगवात) गरमी दूर हो और फिरग रोग से लिग मे जो घाव हो जाते हैं, वह इससे सूख जाते है, कफ रोग दूर होवे दूनी भूख लगे ।

चौदहवीं विधि

शुद्ध हरिताल को ७ दिन कागजी नीबू के रस मे घोटे । ग्वार पट्ठे, गोमा, गंगतिरिया, इनके रसो मे सात २ दिन घोट कर पैसे २ भर की टिकिया बनावे और धूप मे सुखाय डमरूयत्र मे ८ प्रहर की आच दे, शीतल होने पर ऊपर की हांडी का लगा हुआ हरिताल का सत्व उसे छुरी से खुरच ले, पश्चात् आक के दूध मे घोट टिकिया बनाय धूप मे सुखायडमरूयत्र मे ८ प्रहर का आच दे उडाय लेवे, इस प्रकार आक के दूध मे घोट २ कर २२ आच दे, जब अग्नि स्थायी हो जाय तब इसकी भस्म करे, सो लिखते है । पूर्वोक्त टिकरी को एक हाडी मे ढाक की भस्म के बीच में रख उसके ऊपर और ढाक की राख दबाकर भर देवे, पीछे मुख बन्द कर २४ प्रहर अग्नि देवे, तो उस टिकरी का काला रंग निकले । फिर आक के दूध मे १ दिन घोट टिकिया बनाय धूप मे सुखाय उसी प्रकार हाडी मे १२ प्रहर की आच दे, तदनन्तर उस टिकरी को सरवासपुट मे रख दो सेर आरने उपलो की आच दे, शीतल होने पर निकाल लेवे । दो रत्ती खाने से रुधिर विकार दूर होवे, धातु पुष्ट होवे, ये दोनो क्रिया श्री पूज्यपाद कल्याण भट्ट की अनुभूत है । इसमे कुछ दोष नही है, इसके खाने से कुछ फसाद नहीं होता ।

पंदरहवीं विधि

पैसे भर तबकिया हरिताल को जल पीपल के रसमे घोट टिकिया बनाय धूप मे सुखाय डमरू यन्त्र मे रख १२ प्रहर की तेज अग्नि दे तो हरिताल सिद्ध होवे । इसमे से १ रत्ती हरिताल दो मासे चोब चीनी के साथ खाय तो फिरंग-

धान,घाव और गांठ सहित दूर हो, तथा वात रक्त की गांठ और सूजन दूर होवे, परन्तु इस क्रिया से खाने में यह दोष है कि उंगलियो का कफ सूख जाता है। कफ सूखने के सबब कफ हैं उंगली नवती नहीं कहीं २ ऐसा भी हुआ। सर्वत्र ऐसा नहीं होता।

सोलहवीं विधि

गोमूत्रेभावयेत्तालं
दिनैकसेरमात्रकम् ।
स्फोटयित्त्वाप्रमाणेन-
तंदुलस्यनचाधिकं ॥
चुल्हिकायांनिवेश्याथ-
कांजिकतत्रदीयते ।
वस्त्रेणाच्छाद्ययत्नेन
पर्णंचूर्णेनलिप्यते ॥
तस्योर्द्ध्वंदीयतेताल-
चूर्णंतालोपरिक्षिपेत् ।
उपरिष्टात्पुनर्लिप्त्वा-
तेनचूर्णेनतालकं ।
पालिकांतूपरिप्राज्ञः
पुनःदत्त्वामृदार्पितां ।
रुध्वायाममथोवह्नि-
कुर्याच्चुल्यासमततः ॥
पुनस्तेनप्रकारेण
द्विवेलांतालकंतथा ।
कदलीफलदंडस्य-
द्रवेणपरिमर्दयेत् ॥
याममेकपुनस्ताल
शोषयित्त्वाचतत्तथा ।
पुनर्यामंपुनर्याम-
मेववेलात्रयबुध. ॥
कुर्यान्मर्दनशोषंच-
तदुलीयरसेनन ।
गन्दूर्वारसैस्तद्व-
त्तथापुष्पफलद्रवैः ॥

सर्वंतिक्ताकाकमांची-
रसैस्तद्वत्प्रमर्दयेत् ।
सैहुण्डपयसादग्धादूगु-
डसौभाग्यपीतिका ॥
पादकृत्त्वाकाचकुंभे-
क्षिपेद्यंत्रेथसैकते ।
यामद्वादशपर्यंत-
मग्निकुर्यादहर्न्निशं ॥
कदलीफलादिकंकर्म-
यत्कृतंविद्यतेपुरा ।
तथैवचपुनःकुर्यात्-
षड्यामंवह्निदीपकं ॥
पुनस्तदेवतत्कर्म-
द्वियामंवन्हिदीपनं ।
एवतालकसत्त्वंस्याद-
धस्तिष्ठतिनिश्चित ॥
खोटिकाभंगुरुतरं-
सोज्ज्वलंतारसन्निभं ।
वह्निसंयोगतोनैव-
समुड्डीयप्रयातितत् ॥

सेर भर तवकिया हरिताल को गोमूत्र में १ दिन भिगोकर दूसरे दिन चांवल के से टुकडे कर एक लम्बे चौडे कपडे पर चूने का लेप कर उस में हरिताल को रख ऊपर से चूना बिछाय पोटली बांधे, एक हांटी मे कांजी भर दोलायंत्र की विधि से उसमें पोटली को लटकाय हण्डिया के मुख को परिया से ढक कपर मिट्टी कर चूल्हे पर चढ़ाय १ प्रहर उसके नीचे अग्नि जलावे, कांजी सूखने पर उतार लेवे इस प्रकार दो वार कांजी में स्वेदन कर १ प्रहर केले की जड के रस में घोट और सुखाकर फिर उसी रस मे घोटे ऐसे तीन वार करने के पश्चात् चौलाई कटवी तूंबी और पुष्प फल के रसमें तीन २ वार घोट कर सुखावे, पीछे कुटकी और मकोय के रसों में घोटे और सुखावे, थूहर के दूध, गुड के जल, सुहागा और हलदी इनमें हरिताल को खरल करे

पश्चात् आतिशी शीशी मे भर वालुका यन्त्र मे १२ प्रहर की आंच दे, पीछे केले की जड आदि के रसमे पूर्व रीत्यानुसार मर्दन करे, और छः प्रहर मदाग्नि से पचावे, फिर पूर्वोक्त रीति से मर्दन कर दो प्रहर अग्नि दे इस प्रकार निश्चय हरिताल का सत्व अग्नि स्थायी होवे। खांड के समान, भारी, उज्ज्वल, चांदी के समान हो और यह अग्नि के सयोग से नहीं उडता है।

सत्रहवीं विधि

सेर भर शुद्ध हरिताल को ४ प्रहर घीग्वार के रस मे खरल करे, जब गाढ़ा हो जाय तब चंदिया बनाकर धूप मे सुखावे, एक हण्डिया मे ढाक की राख भर अभ्रक के टूक बिछाय उस चंदिया को रख भोडल के पत्रों से ढक पूर्वोक्त राख को मुखपर्यंत भरदे और ढकने से हांडिया का मुख बन्दकर कपर मिट्टी करे और सुखाकर१२ प्रहर की आंच दे, और स्वांग शीतल होने पर खोल ऊपर लगे सत्व को हडिया से खुरच ले इसी प्रकार गोमा, संखाहूली, थूहर, आक, बड, गेंदा की पत्ती, भैंस का दूध, आवले की पत्ती, नाग दोन, कुकुरभांगरा, मोरशिखा, विषखपरा, जल पीपल, काला धतूरा, अम, खेल, ओगा, सहजना, चिरमिठी, नकछिकनी, सहदेई, लिगिया विष का काढा, राई का रस, पथरसगा, गोभी, प्याज, नीबू, कुहाडा, हुलहुल, सरफोका, दुद्धी, अदरक, सोनजुही, लहसन, कँगही, बला, चीता सफेद आक, इन औषधियो मे जिनका काढ़ा लिखा है उनके काढ़े मे और बाकियो मे दूध निकले उन उनके दूध मे और रस निकले उनके रस मे एक २ दिन घोट टिकिया बांध डमरूयन्त्र मे उडाय लेवे, तो हरिताल का सत्व अमृत के समान बने। राई के समान मात्रा सेवन करने से महाकुष्ठादि असाध्य रोग ४२ दिन मे निश्चय दूर होवे, भूख अत्यन्त बढ़े, बहुत स्त्रियो से गमन करने की शक्ति होवे, ७ दिन सेवन करने से सपूर्ण वीर्यरोग नष्ट होवे। भगंदर, बवासीर, राजरोग, क्षय, उपदेश, फिरगवात इत्यादि सकल दुष्टरोग ऐसे नाश होवे जैसे पवन के वेग से बादलो के समूह। परन्तु यह याद रहे कि प्रथम वसन आदि पच संस्कार करे तब हरिताल को खाय, इसके खाने से कुछ फसाद नही होता। यह प्रयोग अनुभूत है इसकी वैद्य रक्षा करे।

अठारहवीं धातुवेधी भस्म की विधि

रुदन्याहरितालंच
रसेनसहमर्दयेत्।
ताम्रपत्रपलेपेन
दिव्यंभवतिकांचनम्॥

शुद्ध हरिताल को रुदन्ती (रुद्रवन्ती) के रस में खरल कर तावे के पत्रो पर लेप कर अग्नि मे फूके तो सुवर्ण होवे।

उन्नीसवीं विधि

तालताप्यंदरदकुनटी
सूतकंसार्द्धभागं।
खल्वेकृत्वात्रिदिनमार्थ
तकाकमाचीद्रवेण॥
तेनालेप्यंरविशशिदलं
खर्परेवह्नितुल्यम्॥
शुल्यातीतभवतिकनकं
संवलंपाथिकानानाम्॥

हरिताल, रूपामक्खी, हिगुल, मनसिल, पारा इनको पत्रो से ड्योढ़ा २ भाग लेकर ३ दिन मकोय के रस में खरल करे, पीछे एक भाग तावा या राग लेकर पत्र कराय उन पर इसका लेप करे और खोपडे मे आच देवे तो उत्तम सोना हो जाय परन्तु यह मार्गस्थो (परदेशियों) को उपयोगी होता है।

बीसवीं विधि

तालतुल्यांशिलांपिष्ट्वा
देवदाल्याद्रवैर्दिनम्॥

द्रावैरीश्वरलिंग्याश्च
दिनमेकंविमर्दयेत् ॥
नागंवगरसंतुल्यं
चूर्णितंपलपंचकम् ।
पूर्वकल्केनसयुक्तं
समालोड्यघृतंपुटेत् ॥
एवंपुन:पुन:पाच्य
पूर्वंकल्केनसयुतम् ॥
भवेत्षष्टिपुटेशीघ्र
वङ्गस्तभकरंपरम् ॥
शतभागेनदातव्यं
वेधंतारेकरोत्ययम् ।

शुद्ध हरिताल और मनसिल दोनो को बराबर लेकर १ दिन देवदाली के रस मे खरल करे तदनन्तर एक दिन शिवलिंगी के रस से खरल कर पीछे सीसा, वंग तथा पारा इनको एकत्र कर खरल करे फिर २० तोले इस चूर्ण को पूर्व कल्क के साथ घोट कर अग्नि मे फूंक दे इस प्रकार ६० पुट देने से यह भस्म उत्कृष्ट रीति से वंग का स्तम्भन करे । यह रूपे के रस में मिलाने से शतांश वेध करे ।

हरताल भस्म की परीक्षा

तालंमृततदाज्ञेयं
वन्हिस्थधूमवर्जितम् ।
सधूमनंमृतप्राहु
वृद्धवैद्यइतिस्थिति: ॥
यंपरीक्षावृद्धाना
मुखेभ्य संश्रुतामया ।
(पद्येननिबद्धापरंरस
शास्त्रेकुत्रापिनदृष्टा ।
भवतुसत्येयंनह्यमूला
प्रसिद्धिरितिन्यायात् ॥

हरिताल की भस्म अग्नि मे डालने से धुआ न देवे तो शुद्ध जाननी । यदि धुआ दे तो कच्ची जाननी । यह वृद्ध वैद्यो का वाक्य है यह परीक्षा हमने वृद्ध वैद्यो के मुख से सुनी है परन्तु प्राचीन बडे वैद्यो के पद्यबंध श्लोक किसी शास्त्र में नही देखे तथापि यह बात सत्य है क्योंकि (नह्यमूला प्रसिद्ध:) अर्थात् बिना मूल के प्रसिद्धि नहीं होती । इससे यह वार्ता सत्य ही है ।

हरिताल भस्म के गुण

अशीतिवातान्कफपित्तरोगान्
कुष्ठचमेहंचदागुमर्थांश्च ।
निहंतिगुंजाद्धमितंतुतालं
पड्वल्लखण्डेनसमंचयुक्तम् ॥

आधी रत्ती हरिताल भस्म को छः वलमिश्री के साथखाने से ८० प्रकार की वायु कफ पित्त, कुष्ठ प्रमेह और बवासीर का नाश करे ।

हरिताल के अनुपान

एवतन्म्रियतेतालं
मात्रातस्यैवरक्तिका ।
अनुपानान्यनेकानि-
यथायोग्यंप्रयोजयेत् ॥
गुडूच्यादिकपायेण-
गदानेतान्व्यपोहति ।
सोपद्रववातरक्तं-
कुष्ठान्यष्टादशापिच ॥

१ रत्ती हरिताल भस्म को यथा योग्य अनुपान के साथ देवे, गिलोय के काढे के संग खाय तो उपद्रव सहित वातरक्त दूर होवे अठारह प्रकार के कोढ़ नाश होवे ।

अन्यमतान्तर

सर्वरक्तविकारेषु-
देयमाम्रहरिद्रया ।
सुहालाहलजीराभ्या-
मपस्मारहरंपरम् ॥
समुद्रफलयोगेन-
जलोदरविनाशनम् ।
देवदालीरसैर्युक्त-
शगगदरहरंपरम् ॥

फिरंगदोषजंरोगं-
जातहंतिसुदुस्तरम् ।
मंजिष्ठादिकषायेण-
कुष्ठान्यष्टादशाञ्जयेत् ॥
त्रिफलाशर्करायुक्तं-
पाण्डुरोगंजयत्यसौ ।
शुंठीचूर्णयुतहन्या-
दामवातंसुदुर्जयम् ।
सौवर्णभस्मयोगेन-
रक्तपित्तविकारनुत ।
तंदुलीयरसैःसाकं-
ज्वरमष्टविधंजयेत् ॥
एवसर्वेपुरोगेपुरोगेपु-
स्वबुद्धयाकल्पयेद्भिषक् ।

सब रुधिर विकारो मे आमिया हलदी के साथ देवे, विष और जीरे के साथ अपस्मार (मृगी) को दूर करे, समुद्र फल के साथ जलधर विकारों में देवें, भगदर मे देवदाली के रस में फिरंगवात में भी इसी के साथ देवे, मजिष्ठादि काढे के साथ १८ प्रकार के कोढो को दूर करे। त्रिफला और मिश्री के साथ पांडु रोग मे देवे, आमवात में सोठ के चूर्ण युत देवे, सुवर्ण की भस्म के साथ रक्तपित्त विकार दूर होवे। चोलाई के रस के साथ ८ प्रकार के ज्वर दूर हो, इस प्रकार सब रोगो में वैद्य अपनी बुद्धि क अनुमार अनुपान कल्पना करे।

हरिताल सत्व की विधि

'जयपालवीजवातारि-
वीजमिश्रचतालकम् ॥
कूपीस्थवालुकायंत्रे
सत्वमुचतियामत' ।

हरिताल भस्म वा शुद्ध हरिताल आधा सेर जमालगोटे की जड आधा पाव अडी के बीज आधा पाव तीनो को मिलाकर १ प्रहर घोटे, पीछे आतिशी शीशी मे भर वालुका यत्र द्वारा पहर भर तेज आच देवे, तो हरिताल का सत्व निकाल कर शीशी के मुख से आ लगे उसे खुरच ले।

दूसरी विधि

शुद्धचूर्णस्यपादांश-
मर्दयेन्नवसादरम् ॥
चूर्णाद्विगुणतोयेन-
तत्तोयेनिर्मलंपचेत ।
शनैर्लवणपाकेणया-
वत्तुलवणंभवेत् ॥
अथतत्तालकशुद्धं-
पारदंटंकणैर्युतम् ॥
टंकणार्द्धेनतच्चूर्ण-
मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥
शरपुंखाद्रवैरेव-
शुद्धंतत्कूपिकोदरे ।
पचेद्यामाष्टक-
यावत्सत्त्वरूपेणतिष्ठति ॥

विना वुझा चूना १ सेर, नौसादर पाव सेर, दोनो को २ सेर पानी से पकावे, जब गाढे होकर खार के समान हो जाय तब निकाल कर आधा सेर हरिताल एक छटाक सुहागा और पैसे भर खार लेकर तीनो को घी गुवार और सरफोंका के रसो मे दो २ प्रहर खरल करे, पीछे शीशी मे भर वालुका यत्र मे ८ प्रहर आच देवे तो निस्सदेह सत्व निकले।

तीसरी विधि

लाक्षाराजितिलाब्धुशिग्रं-
टकणलवणगुडम् ।
तालकार्द्धेनसमिश्य-
छिद्रमूषांनिरोधयेत् ॥
पुटेत्पातालयंत्रेण-
सत्त्वपततिनिश्चिलम ॥

लाख, राई, तिल, सहजने की छाल, सुहागा, नोन, गुड, इन सब पदार्थों को हरिताल के आधे भाग, और हरिताल १ भाग लेकर खरल मे घोट सछिद्र मूषा मे डाल उसे बद कर पाताल यत्र मे पुट देवे तो निश्चय सत्त्व निकले।

चौथी विधि

पलैकंतालकंशुद्धं-
तत्समटंकणभवेत् ।
मर्दयेन्मेषिकाक्षीरैः-
कूष्मांडद्रवजैःपुनः ॥
कन्यार्निबुकनीरेण-
वज्रार्कपयसातथा ।
वातारितैलसंयुक्त-
मर्दयेत्सकृदेवतु ॥
वटकान्कारयेत्पश्चान्-
मध्वाज्येनसमन्वितान् ।
काचकुप्यांविनिःक्षिप्य-
लेपयेन्मृत्स्नकर्पटैः ॥
वालुकायन्त्रगंकुर्या-
त्पचेद्दिनचतुष्टयम् ।
सत्त्वंकुलिशसंकाश-
मूर्ध्वेतिष्ठतिनान्यथा ।

शुद्ध हरिताल और सुहागा एक एक पल, दोनो को भेड के दूध पेठे के रस, ग्वारपाठे के रस, नींबू के रस, थूहर के दूध, आक के दूध, अरण्डी के तेल, प्रत्येक मे एक २ दिन घोटे, पीछे शहद और घृत डालकर गोला बनावे, पश्चात् आतिशी शीशमि मे रख कपर मिट्टी कर वालुका यंत्र मे ४ दिन की आंच देवे तो शीशी के मुख पर हीरे के समान सत्व लग उसे निकाल लेवे ।

पांचवीं विधि

कुलित्थक्वाथटंकण-
माहिषघृतमधुयुक्त ।
हरितालशुद्ध दद्या-
दाज्येनभावितम् ॥
हंडिकायांक्षिप्त्वाउपरिच-
लग्नंच्छिद्रपालिकांद-
त्वामधिलेपकृत्त्वा-
क्रमेणवन्हियामचतुष्टय ॥
दद्यात्यावन्नलिकातो
वाधूमोगच्छतिततः ।
पाण्डुरधूमैर्दृष्टे अग्निपूर्ण-
कुर्यात्पश्चादग्नि ॥
स्थितिस्थालीमुत्तार्यसत्त्वंग्राह्यम् ।

हरिताल को सुहागे, भैंस के घृत, शहद, कुलथी के काढे इनकी भावना दे हण्डिया में डाल उस पर सछिद्र ढकना ढाक सधियो को लेप कर बद कर, और उस छेद में एक लम्बी नली लगाय हण्डिया को चूल्हे पर रक्खे ४ प्रहर अग्नि दे, जब नली में होकर पीला धुआ निकलै तब अग्नि को वंदकर हण्डिया को उतार शीतल कर ऊपर की हंडिया मे जो सत्व है उसे निकाल लेवे ।

सत्व के गुण और अनुपान

वातरक्तोतदुःसाध्ये-
सततंदुलोन्मितम् ।
दद्याच्चणकवद्भक्ष्यं-
पथ्यार्थंघृतसयुतम् ॥
द्विसप्तदिवसैःकांति-
र्जायतेरोर्विजिता ।

हरिताल सत्व दुसाध्य वातरक्तमे चावल-भर देवे, पथ्य मे चना की रोटी तथा घृत देवे, तो १४ दिन मे रोग वर्जित कांति युक्त होवे ।

हरिताल की योजना

श्वासेकासेक्षयेकुष्ठे-
पित्तेचवातशोणिते ॥
दद्रुपामाव्रणेवाते-
तालकंचप्रदापयेत् ।

श्वास, खांसी, खई, कुष्ठ, पित्त, वात रक्त, दाद, खाज, वादी व्रण इन रोगो मे हरिताल देनी चाहिये ।

अशुद्ध हरिताल के दोष

अशुद्धतालंखलुपीतवर्णं
सधूमकवातचयचपित्तं ।

पगुत्वकुष्ठंतनुतेचतेनदेह-
स्यनाशप्रकरोतिसद्यः।

कच्ची हरिताल का पीला वर्ण अग्नि पर रखने से धुंआं दे, इसको खाने से वातापित्त के रोग पगादन और कोढ़ उत्पन्न होवे तथा तत्काल देह का नाश करे।

अशुद्ध की शांति

अजाजीशर्करायुक्तां-
सेवतेयोदिनत्रयम्।
विकृतितालजह्निया-
यथादारिद्र्यमुद्यमः॥

जीरा और मिश्री मिलाकर ३ दिन सेवन करने से हरिताल के विकार नष्ट होवे, जैसे उद्योग से दरिद्र।

अन्य प्रमाणांतर

यवासकरसेश्चैव-
कूष्मांडस्वरसैस्तथा।
राजहंसरसेनापि
विकृतितालजांजयेत।

जवा से वा पेठे का रस पीने से हरिताल के विकार शांत होवे, और हन्सराज रूखडो के रस से भी हरिताल के विकार दूर होवे।

हरिताल के पथ्याऽपथ्य

एतद्भपजसंसेवी-
लवणाम्लौविवर्जयेत्।
तथाकटुरसवन्हि-
मातपंदुस्तरत्यजेत्।
लवणय:परित्युक्त-
नशक्नोतिकथंचन।
सतुसैंधवम् नीयान्-
मधुरोपिरसोहितः॥

हरिताल सेवन कर्त्ता को नोन के और खट्टे पदार्थ वर्जित हैं। तथा कटु रस अग्नि से तापना, और धूप में रहने को त्याग दे, यदि नोन न छोड सके तो सेंधा नोन मदाखाय और मीठा रस खाय।

इति श्रीमाथुरदत्तराम पाठक प्रणीते वृहद्रसराज सुन्दरे हरिताल प्रकरणम् समाप्तम्

अथ सप्तविंशोऽध्यायः

अथांजनप्रकरणम्

अंजन के नाम

अंजनंयामुनंवापि
कापोताजनमित्यपि।

अंजन (सुरमा) दो प्रकार का है, एक यामुन, दूसरा कापोतांजन कहलाता है।

अन्य भेद

स्रोतोऽञ्जनतुद्विविध
श्वेतकृष्णविभेदत।
तत्रस्रोतोऽञ्जनंरूक्षं
सौवीरंश्वेतमीरितम्॥

सुरमा सफेद और काले के भेद से दो प्रकार का है, इनमे काला स्रोतोजन रूक्ष है, और सफेद सौवीराजन कहाता है।

अन्य मतान्तर

सौवीरमंजनप्रोक्तं
रसांजनमत परम्।
स्रोतोऽञ्जनंतदन्यच्च
पुष्पांजनमतःपरम्॥
नीलाजनंतथाप्रोक्तं
स्वरूपमिहवर्ण्यते।

सौवीराजन, रसाजन, स्रोतोजन, पुष्पाजन, नीलांजन, ये अञ्जन (सुरमा) के पाच भेद हैं। यह रसदर्पण मे लिखे हैं। अब इनके स्वरूप कहते हैं।

सौवीरांजन के लक्षण

सौवीरमंजनधूम्रं
रक्तपित्तहरहिमम्।
विषनेत्रामयहर
व्रणशोधनरोपणम्॥

सौवीराजन धुंए क-रोग को, रक्तपित्त को दूर करे, शीतल, विषरोग और नेत्ररोग को दूर करे। व्रण को शुद्ध करे, और रोपण करे।

रसांजन के लक्षण

पीतचन्दननिर्यासं
रसाजनमितीरितम्।
तत्काथजयाभवति
पीताभवक्त्ररोगनुत्॥
श्वासहिक्काहरंवर्ण्यं
वातपित्तास्रनाशनम्।
नेत्र्यसिध्माविषच्छ-
र्दिकफपित्तास्रकोपनुत्॥

पीले चन्दन का गोद रसाजन होता है, अथवा पीले चन्दन के काढ़े से बनता है। यह पीत होता है। यह मुखरोग, श्वास, हिचकी को दूर करे। देह का वर्ण स्वच्छ करे, वात, पित्त, रुधिरविकार, नेत्ररोग, सिध्म, विष, वमन, कफ, और पित्त को हरण करे।

स्रोतांजन के लक्षण

वल्मीकशिखराकारं
भिन्नमञ्जनसन्निभम्।
घृष्टतुगैरिकाकार-
मेतत्स्रोतोजनस्मृतम्॥
रसाञ्जनतरुभव
स्रोतोजननदीभवम्।

जो सर्प की बाबी के शिखर के समान तथा काजल के समान काला हो और घिसने से गेरू के समान दीखे ये स्रोतोजन के लक्षण हैं। रसाजन वृक्ष से प्रकट होता है, और स्रोतोजन नदी से।

पुष्पांजन के लक्षण

पुष्पाजनंसितस्निग्धं
हिमंनत्रामयापहम्॥

पुष्पाजन सफेद, चिकना और शीतल होता है और नेत्र के सब रोगों को दूर करने वाला है।

नीलांजन के लक्षण

नीलाजनंपरं नेत्र्य
छर्दिहिक्कानिवारणम्।
रसायनंसुवर्णघ्न
लोहमार्दवकारकम्॥

नीलाजन नेत्रों को परम हित है, वमन और हिचकी का नाशक है, रसाय है सुवर्ण का भस्म कर्ता और लोहे को नम्र करे।

अन्य लक्षण

नीलांजननीलवर्णं
स्निग्धंगुरुतरंस्मृतम्।

नीलांजन का नीला वर्ण होता है, और चिकना तथा भारी होता है।

अंजन शुद्धि

अजनान्याशुशुध्यन्ति
भृंगराजनिजद्रवैः॥

सब अञ्जनों की शुद्धि भांगरे के स्वरस से खरल करने से होती है।

दूसरा प्रकार

त्रिफलावारिणाशोध्यं
तद्द्वयंशुद्धिमृच्छति।
भृंगराजरसेवापि
स्रोत.सौवीरकशुचि॥

स्रोतोजन और सौवीराजन को त्रिफला के काढ़े या भांगरे के रस में औटाने से शुद्ध हो।

तीसरा प्रकार

गोशकृद्रसमूत्रेषु
घृतक्षौद्रवसासु च।

भावितंबहुशस्तच्च
शुद्धिमायातिह्यंजनम् ॥

गोबर का रस, गोमूत्र, घृत, शहद और वसा (चर्बी) इनकी बहुत बार भावना देने से अंजन सुरमा सिद्ध होवे ।

चौथा प्रकार

सर्वांजनचूर्णयित्वा
जंबीरद्रवभावितम् ।
दिनैकमातपेशुष्कं
भवेत्कार्येषुयोजयेत् ॥

सब अंजनों का चूर्ण कर १ दिन जबीरी के रस में भावना देकर धूप मे सुखा ले तो शुद्ध होवे, इनकी सब कार्यों में योजना करे ।

पांचवां प्रकार

सूर्यावर्त्तादियोगेषु
शुद्धयत्याशुरसांजनम् ।
सर्वेचह्यंजनादेवि
तूर्णं बध्नन्तिसूतकम् ॥

सूर्यावर्त (काला भागरा अथवा हुलहुल के रस मे अंजन खरल करने से शुद्ध होता है । हे देवि ! सर्व अंजन पारे के वर्द्धक हैं ।

रसांजनोत्पत्ति

दार्वीकाथमजाक्षीरे
पादपक्वंयथाघनम् ।
तदारसांजनंख्यात
नेत्रयो.परमंहितम् ॥

दारु हलदी के काढे को बकरी के दूध मे मिला कर औटावे और गाढा होने पर उतार ले, इसी को रसांजन कहते हैं । यह नेत्रो को परम हितकारक है ।

कुलत्थांजन के गुण

कुलत्थिकातुचक्षुष्या
कषायाकटुकाहिमा ।
विषविस्फोटकंडूनां
व्रणार्तेश्चनिबर्हणा ॥

कुलत्थिकांजन नेत्रो को हितकर्ता, कसेला, कडवा, और शीतल है, यह विष विस्फोटक, खुजली और व्रण का नाश करे ।

कुलत्थोदकूप्रसादश्च
चक्षुष्यश्चकुलत्थकः ।
कुकुणालिनिहंताच
कुंभकारिमलापह. ॥

कुलत्थाजन दृष्टि को उत्तम करे, नेत्रो को हितकर्ता, तथा कुकुण रोग (बालकों के जो हो जाता है) कुंभक और मल का नाशक है ।

नीलांजन की शुद्धि

नीलाजनंचूर्णयित्वा
जबीरद्रवभावितम् ।
दिनैकमातपेशुद्धं
भवेत्कार्येषुयोजयेत् ॥
एवगैरिककासीस
टंकणानिवराटिका ।
शंखस्तोरीचकंकुष्ठं
शुद्धिमायान्तिनिश्चितम् ॥

सुरमे के चूर्ण को १ दिन जबीरी के रस में खरल कर धूप मे सुखा दे तो सुरमा शुद्ध होवे, इसे रोगादिकों मे योजना करे, इसी प्रकार गेरू, कसीस, सुहागा, कौडी, शंख, मनसिल, और मुरदासंग की शुद्धि होती है ।

अंजन सत्व निकालने की विधि

मनोह्लासत्ववत्सत्व
मंजनानांसमाहरेत् ।
राजावर्त्तकवत्सत्व
ग्राह्यंस्रोतोंजनादिकम् ॥

मनसिल के सत्व के समान सब अंजनो का सत्व निकाले, अथवा राजावर्तमणि के सत्व के समान निकाले, मनसिल और राजावर्त के सत्व की इनके सत्व प्रकरण मे विधि कहेगे ।

अष्टविंशोध्यायः

हीराकसीस

कासीसत्रिविधप्रोक्तं
सितश्यामचपीतकम् ।
पीतचपुष्पकासीस
नगरीयोभवेन्मृदु. ॥
तैजिकंकालमेघाभ
नीलस्यान्मुक्तकालिकम् ॥
श्यामपीतंभवेच्चान्य
दुत्तमाऽधममध्यमम् ॥

हीराकसीस सफेद, काली और पीली तीन प्रकार की है, पीत पुष्पकसीस कहाती है। यह श्रेष्ठ नहीं है, नरम और काली मेघ के समान तैजिक कहाती है और नीली मुक्त कालिक कहाती है, काली पीली मिली हुई एक अन्य होती है यह कहे हुए क्रम से उत्तम, मध्यम और अधम होती है।

अन्य मतान्तर

कासीसंवालुकाद्येकं
पुष्पपूर्वमथापरम् ।
क्षाराम्लंगुरुधूमंच
सोष्णवीर्यंविषापहम् ॥
वालुकापुष्पकासीस
चित्रघ्नकेशरंजनम् ।

हीराकसीस वालुक और पुष्पवालुक, दो प्रकार की है, वह खारी, खट्टी, भारी, धुंए के रंग और गरम है। वीर्य और विष की नाशक तथा चित्र कुष्ठ को दूर करे और बालों को रंगती है।

हीराकसीस का शोधन

सकृद्भृंगाम्बुनास्विन्नं-
कासीसनिर्मलंभवेत् ।
अथवाभावयेद्धर्मे-
दिनंजंबीरवारिणा ।

हीरा कसीस को एक बार भांगरे के रस में पचावे, अथवा एक दिन जंभीरी के रस की भावना देकर धूप में सुखावे तो शुद्ध होवे।

दूसरी विधि

कासीसंचूर्णयित्वाथ-
जंबीरद्रवभावितम् ।
दिनैकमातपेशुष्कं
सर्वकार्येपुयोजयेत् ॥

कासीस को १ दिन जंभीरी के रस की भावना देकर धूप में सुखावे तो शुद्ध होवे, इसे सर्व कार्यों में देवे।

तीसरी विधि

कासीसंशुद्धिमाप्नोति
पित्तैश्चरजसास्त्रियः ।
अथवानिंबुनीरेण
शुद्धिर्भवतिनिश्चितम् ॥

हीराकसीस बकरे आदि के पित्ते या स्त्रियों के रज के रुधिर से शुद्ध होवे, अथवा नींबू के रस की भावना देने से शुद्ध होवे।

हीराकसीस की सेवन विधि

बलिनाहतकासीसं-
कांतकासीसमारितम् ।
उभयंसमभागंहि-
त्रिफलाःवेल्लसंयुतम् ॥
निष्कमात्रेधृतेक्षौद्रे-
प्लुतंशाणमितंददेत् ।
सेवितंहंतिवेगेनश्वित्र-
पांडुक्षयामयान् ॥
गुल्मप्लीहगदंशूलं-
मूत्ररोगमशेषतः ।
नाशयेन्नात्रसन्देहो
योगोऽयंपरिकीर्तितः ॥
रसायनविधानेन
सेवितंवत्सरावधि ।

आमसंशोषणे श्रेष्ठ
मंदाग्निपरिदीपनम् ॥
वलितं पलितैः सार्द्धं-
विनाशयति निश्चितम् ।
जयतेसर्वरोगांश्च
तृणंवह्निर्हुतंयथा ॥

गंधक से मरा कसोस और मरा कांत कासीस दोनों बराबर त्रिफला और कालीमिरच, ले, इनमें घृत और शहद चार २ माशे मिलाकर ४ माशे नित्य रसायन विधि से १ वर्ष पर्यंत सेवन करने से चित्रकुष्ठ पाण्डु रोग, क्षय, गोला, प्लीहा, शूल, और मूत्र के सर्व रोग दूर हो और आमवात को शोषण करें, मंदाग्नि को दीपन करे जिससे गुजलट और सफेद बाल हो जांय ऐसे बुढ़ापे को दूर करे, और सर्व रोगो को नष्ट करे जैसे तृण को अग्नि भस्म कर देती है ।

कसीस के गुण

पुष्पाद्रिकासीसमतिप्रशस्तं
सोष्णंकषायाम्लमतीवनेत्र्यम् ।
विषानिलश्लेष्महरंव्रणघ्नं
श्वित्रक्षयघ्नंकचरंजनंच ।
पित्तापस्मारशमन-
रसवद्गुणकारकम् ।
वातश्लेष्महरंकेश्यं-
नेत्रकंडूविषप्रणुत्
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्र-
नाशनंपरिकीर्तितम् ॥

हीराकसीस अतिप्रशस्त, गरम, कसैला, खट्टा, नेत्रों को हितकारक, विष, वादी, कफ, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, और क्षय को दूर करे, बालों को रंग देवे, पित्त और मृगी को दूर करे, पारे के समान गुण करे, खुजली, मूत्रकृच्छ्र और पथरी को दूर करे ।

सत्वपातन

तुवरीसत्त्ववत्सत्त्वं-
कसीसस्यसमाहरेत् ।

हीराकसीस का सत्व फिटकरी के समान निकालना चाहिये सो आगे लिखेंगे ।

एकोनत्रिंशोऽध्यायः

अथ गैरिक (गेरू) प्रकरणम्

गैरिकंद्विविधंप्रोक्तं
पाषाणंस्वर्णगैरिकम् ।
पाषाणगैरिकंप्रोक्तं-
कठिनंताम्रवर्णकम् ।
अत्यन्तशोणितस्निग्धं-
मसृणस्वर्णगैरिकम् ।
परैस्त्रितयमप्युक्तं-
पाषाणाख्यंतुगैरिकम् ॥

गेरू, पाषाणगैरिक और स्वर्णगैरिक के भेद से दो प्रकार का है । कठिन और तांबे के रंग के समान पाषाणगैरिक कहाता है, और जो अत्यन्त लाल चिकना तथा स्वच्छ हो उसे स्वर्ण गैरिक कहते हैं कोई स्वर्णगैरिक, रक्तगैरिक और पाषाण गैरिक, के भेद से इसे तीन प्रकार का कहते है ।

गेरू का शोधन

गैरिकंतुगवांदुग्धै-
र्घर्षितं शुद्धिमृच्छति ।
अथवाकिंचिदाज्येन-
भृष्टंशुद्धं प्रजायते ॥
गैरिकंसत्वरूपंहि-
नन्दिनापरिकीर्तितम् ।

गेरू गौ के दूध मे खरल करने से शुद्ध होता है, अथवा थोडा घृत मिलाकर भूनने से शुद्ध होता है । गेरू का सत्व इसलिये नहीं कहा है कि वह स्वयँ सत्व रूप है । यह नन्दी आचार्य ने कहा है ।

गेरू के गुण

स्वादुस्निग्धंहिमंनेत्र्यं-
कषायंरक्तपित्तनुत् ।

हिध्मावमिविषघ्नंच-
रक्तघ्नस्वर्णगैरिकम् ।
पाषाणगैरिकंचान्यत्-
पूर्वस्मादल्पकगुणैः ।

गेरू स्वादिष्ट, चिकना और शीतल है, नेत्रो को परम हितकारक और कसैला है, रक्तपित्त, हिचकी, वमन, विष, और संपूर्ण रुधिर विकारों को दूर करे, यह स्वर्णगैरिक के गुण हैं, और पाषाणगैरिक में स्वर्णगैरिक से थोड़े गुण हैं।

कैश्च्युक्तं पचेत्पंच-
क्षाराम्लैःस्निग्धगैरिकम् ।
उपतिष्ठतिसूतेन्द्र
एकत्त्वंगुणवत्तरम् ॥

कोई कहता है कि स्वर्ण गैरिक को पंचक्षार और अम्लवर्ग मे पचाकर पारे मे मिलाने से मिल जाता है। किसी आचार्य के मत मे पारद गंधक, हरिताल और अभ्रकादि महारस हैं।

त्रिंशोऽध्यायः

अथ उपरस

पारदाद्धरदोजातष्टं-
कणगन्धकात्तथा ।
स्फटिकाभ्रकतोजाता-
हरितालान्मनःशिला ॥
अञ्जनाच्छुक्तिशंखाद्या
कासीस शंखमदर. ।
गैरिकान्मृत्तिकाजाता-
तस्माढुपरसाइमे ॥

पारे से हिंगुल, गंधक से सुहागा, अभ्रक से फिटकरी, हरिताल से मनसिल, सुरमा से सीप, शंख कसीस और समुद्रफेन तथा गेरू से मृत्तिका प्रकट हुई है, इसी से ये सब उपरस हैं।

उपरसों का शोधन

त्रिक्षारेलवणेदंम्स-
म्लवर्गेत्रिधापचेत् ।
एवंह्युपरसाःशुद्धा
जायतेदोषवर्जिताः ॥
रसाभावेप्रदातव्या-
स्तस्यैवोपरसाइमे ।
सेवितावहुकालेच-
सर्वेविदधतेगुणान् ॥

सब उपरसो को जवाखार, सज्जीखार और सुहागा नोन और अम्लवर्ग इन हरेक मे तीन २ बार पचावे तो शुद्ध होवे। इनको रसोके अभाव मे देना चाहिये । ये वहुत दिनो से गुणकारक होते हैं।

हिंगुल वनाने की विधि

अशुद्धंपारदभाग-
चतुर्भागंतुगंधकम् ।
उभौक्षिप्त्वालोहपात्रे-
क्षणंमृद्वग्निनापचेत् ॥
कृत्वाथखडशःसम्यक्-
काचकुप्यांनिरुध्यच ।
वस्त्रमृत्तिकयासम्य-
क्काचकूपींप्रलेपयेत् ॥
सर्वतोंगुलिमानेन-
च्छायाशुष्कंतुकारयेत ॥
वालुकायन्त्रगर्भेतु-
दिनमृद्वग्निनापचेत् ॥
क्रमवृद्धयग्निनापश्चात्-
पचेद्दिवसपंचकम् ।
सप्ताहंतुसमुद्धृत्य-
हिंगुलःस्यान्मनोहरः ।

विना शोधा पारा १ भाग, गंधक ४ भाग दोनो को लोह पात्र मे डाल मंदाग्नि देवे, और जब दोनो एक हो जाय तो शीतल होने पर जो डेला वध गया है उसके टुकड़े कर आतिशी शीशी मे भर और उसपर अंगुल भर मोटा कपर मिट्टी करे, तथा सुखाकर वालुकायंत्र से १ दिन मंदाग्नि से पचावे, फिर क्रम से मन्द, मध्य और

तेज आंच मे पांच दिन पचावे, पीछे सातवें दिन निकाले तो सुन्दर हिंगुल (शिंगरफ) बने।

हिंगुल के भेद

दरदस्त्रिविधःप्रोक्तो-
चमारःशुकतुण्डकः।
हंसपादस्तृतीयःस्याद्-
गुणवानुत्तरोत्तरम् ॥

हिंगुल चमार, शुकतुण्ड और हसपादके भेद से ३ प्रकार का हैं, इनमें क्रम से एक से दूसरे अधिक गुण हैं।

तीनों के पृथक २ लक्षण

चमार.शुकवर्णे स्यात्
सपीतःशुकतुण्डक.।
जपाकुसुमसंकाशो-
हंसपादोमहोत्तमः॥
श्वेतरेखाप्रवालाभो-
हंसपाकइतिस्मृत'।

चमार नामक हिंगलू शुक (लोध) के वर्ण का होता है, शुकतुण्ड पीले रग का तथा जया (दुपहरिया के) फूल के समान लाल, और अति उत्तम हम पाद हींगलू होता हैं, कोई सफेद रेखा युक्त मूंगा के समान रगवाले को हसपाक कहते हैं।

हिंगुल का शोधन

सप्तधाचार्द्रकद्रावै-
र्लकुचस्यांवुनापिवा।
हिंगुलोभावित शुष्को-
निर्दोषोजायतेखलु ॥

हिंगलू मे अदरक और वडहल के रसो की सात २ भावना देकर सुखावे तो शिंगरफ निश्चय दोषरहित होवे।

दूसरी विधि

मेषीक्षीरेणदरद-
मम्लवर्गैश्चभावितम्।
सप्तवारंप्रयत्नेन-
शुद्धिमायातिनिश्चितम् ॥

हींगलू भेड के दूध और अम्लवर्ग की सात २ भावना देने से शुद्ध होता हैं।

हिंगुल मारणम्

चणकाभानिखंडानि-
दरदस्यतुकारयेत्।
शीशजेचायसेपात्रे-
स्थाप्यंतच्चधमेद्दृढम् ॥
जातायामुष्णतायां-
वैततोद्रव्याणिसचयेत्।
द्रव्यतुल्यद्रवद्रव्य-
मेषास्याद्वह्निभावना ॥
मेषीक्षीरेणदशधा-
दशधाक्षीपिजाकजैः।
क्षीरवर्गेणदशधा-
विरेकार्वैश्चपंचधा ॥
पंचधादुग्धवर्गेण-
अंतरास्तस्यभावना.।
अयशतार्कदरदो-
नानारोगविनाशक. ॥
क्षुद्बोधकुरुतेनित्य-
योगवाहीनिगद्यते ॥

हिंगलू की डली के चने के वरावर टुकडे २ कर शीशे के वा लोह के पात्र मे अग्नि पर गरम करे, जब पात्र लाल हो जाय तब हिंगुल के समान भेड का दूध डाल कर जलावे, इस प्रकार दशवार जारण करे, इसी प्रकार दशवार आक के दूध मे जारण करे, और क्षीरवर्ग मे दशवार, पीलू के रस मे पाचवार और दुग्ध वर्ग मे पाचवार, ऐसे वरावर भावना दे तो हिंगलू तयार हो, यह शतार्क हिंगलु अनेक रोगो का नाश करे क्षुधा को वढ़ावे, इसे योगवाही कहा है।

दूसरी विधि

वल्लमात्र तालपिष्ट-
शरावेस्थापयेत्ततः ।
तस्मिन्कर्षसमंदेय-
शकलदरदस्यच ॥
पूरयेदाद्रकरसं-
द्विगुणतत्रबुद्धिमान् ।
पुष्पाणिशाणमात्राणि
परितःस्थापयेत्ततः ॥
शरावसंपुटेदत्त्वा-
चुल्यांमध्याग्निनापचेत् ।
घटिकात्रयपर्यंत-
ततउत्तार्यपेषयेत् ॥
तांबूलेगुंजमात्रंतु-
देयंपुष्टिकरंपरम् ।
पांडुक्षयेचशूलेच-
सर्वरोगेपुयोजयेत् ॥

हरिताल १ वल्ल (३ रत्ती) को पीस शराव से रख उसमे १ तोले हिंगलू के टुकडे डाले, पीछे दो तोले अदरक का रस डालकर सुखावे, फिर पुष्प (लोंग) चार माशे डाल शराव सपुट मे रख चूल्हे पर चढ़ाय ३ घडी मध्यम अग्नि से पचावे, पीछे उतार पीसकर १ रत्ती पान के रस के साथ खाय तो बहुत पुष्टता करे पांडु रोग, क्षय शूल और सब रोगो मे देवे ।

मतान्तर से शोधन विधि

जयत्या स्वरसे मूत्रे-
कांजिकेनिंबुनीरके ।
दोलायंत्रे त्र्यहपाच्य-
दरदादिविशुध्यति ॥

हिंगुल और आदि शब्दसे हरिताल, खपरिया स्वर्ण माक्षिक, रूपामाक्षिक, मनसिल, अभ्रक, नीलाथोथा, सुहागा, सुरमा, विष, शिलाजीत, शख, गूगल ककुष्ट, इनमे से जिसे शुद्ध करना हो उसे एक कपडे मे बाध दोलायत्र की रीति से जयती के रस में ३ दिन, गोमूत्र से, ३ दिन, एव काजी और नींबू के रस से तीन २ दिन स्वेदन करे, तो हिंगलू और पूर्वोक्त रसकादि शुद्ध होवे, इसी रीति से डली का शिंगरफ शुद्ध होवे, भेड़ के दूध मे शुद्ध शिंगरफ पिस जाती है, बहुत सी जगह पिसा शिंगरफ काम मे नहीं आता डली ही काम में आती हैं इसी से यह शोधन उत्तम है ।

हिंगुल पाक विधि

हिंगुलद्विपलशुद्धं
बध्वावस्त्रेचतुर्गुणे ।
षट्पलकदरीमूल
सम्यक्सक्कुटच बुद्धिमान् ॥
ततस्तस्मिन्परिक्षिप्य-
गोलमेकंकल्पप्रयेत् ।
एरंडपत्रैराच्छाद्य
मृदासंलेपयेद्दृढम् ॥
पचेत्तद्गोलकविद्वा-
नुपलैर्दशभिस्तत. ।
एवंसम्यक्प्रकारेण
पुटान्येकोत्तरशतम् ॥
दत्त्वाप्रतिदिनखादे-
ल्लवगस्यानुपानतः ।
गुंजामात्रंगुणैस्तुल्यं
प्रागुक्तस्यरसस्यच ।

तदनतर दो दो पैसे भर की १२ डली शिगरफ की ले, चार तह कपडे की थैली बनाय उसमे रक्खे, और एक डोरे से बाध पाव सेर कदरी (प्याज) की लुगदीकर बीच मे थैली के रख गोली बनाय अरण्ड के पत्तों से लपेट मिट्टी लगावे, और धूप मे सुखाये, पाच ऊपर और पाच नीचे, ऐसे १० ऊपलो की आच दे, बीचमें गोला को न रक्खे, ऊपर एक अंगारा रक्खे, जब शीतल हो जाय तब गोला को निकाल लेय, इस प्रकार १०१ आच दे, हर बार पाव २ भर कदरी की लुगदी कर थैली को

बीच मे रख अड के पत्ते लपेट दो अ गुल मोटी मिट्टीचढ़ाय दश उपलो की आच दे,परन्तु उपले न तो मोटे और न पतले होवें, इस प्रकार परि पक्व शिगरफ चन्द्रोदय से अधिक है, काम और क्षुधा को बढाने वाला है । इसमे से १ तोला शिंगरफ १ तोला लौग के साथ पीस कर दो रत्ती की मात्रा करे, और प्रातः काल खाय तो पूर्वोक्त चन्द्रोदय केसे गुण करे ।

चौथी विधि

४ पैसे भर सिगरफ की डली को ७ दिन हस पदी के रस मे घोटे, और बंदाल का रस, बड़ की जटाओ का रस, आक का दूध और थूहर का दूध इनमें सात सात दिन घोटकर पैसे २ भर की टिकिया बनाय धूप मे सुखाय शराब सपुट में रख सेर भर उपलो मे फूके तो यह हिंगुल एक ही आच से भस्म खायहो जाय । इसे दो रत्ती लौग के चूर्ण के साथ खाय तो भूख बहुत बढे और देह पुष्ट होवे । कदरी नाम प्याज का है ।

हिंगुल के अनुपान और गुण

तंहिंगुलसुतनुखडपटेदृढेन-
कचूकमध्यगतयुक्तिमतानिवेद्य ।
पश्चात्पलांडुदृढकदगतोन्तर
स्थःमृत्स्नाविलेप्यरविशोष्यदिनांतयामे ॥
दत्त्वावनोत्पलदशकमर्माग्निदग्ध
तंशीतलद्वितयचैवदिनेतथैव ।
एवविधै.शतपुटैश्चपुटांतकाले
वृंताकमेवफलमध्यगततथाच ।
देयानितानिसदृशशतधाक्रमेण
वृंदावनीफलभवांतरमध्यभागे ।
देयंचतच्छतपुटक्रमएषउक्तः
पक्वाम्रवेतसफलोदरवैक्रमेण ॥
गुंजाभिताद्धमितयेकसहिपर्णखंडं
भक्ष्यनरोश्वसनकासज्वरादिकानाम् ।
हन्याद्यथामृगपतिःकरिणोवकाम
रामासुवश्यकरदिव्यशरीरकारि ।
मेधास्मृतिंवितनुतेसुरसाथनच
देयोनुपानेत्रिसुगधिसात्म्य ।
युक्त्याविचार्यबल
मग्निविवर्द्धनाय ।

हिंगुल को पतले और मजबूत कपडे मे बाधे, पीछे उस पोटली को चूकाकी लुगदी मे गोली बनाय प्याज के बीच में रख कपर मिट्टी कर धूप मे सुखाय सायंकाल को १० आरने उपलो की आंच देवे इस प्रकार कादा के १०० पुट देकर १०० पुट बैगन मे रख कर देवे, तदनतर १०० पुट इन्द्रायन मे देवे, इसी प्रकार पके अमलवेत के सौ पुट देवे, तो हिंगुल दिव्य होवे, इसको नागरबेल पान के साथ आधी रत्ती खाय तो श्वास, खांसी, ज्वरादि रोग नष्ट होवें, जैसे सिंह हाथियो का नाश कर उसी प्रकार यह रोगों का नाश करता है, स्त्रियो को परम प्रिय हो, दिव्य देह करे, मेधा और स्मरण शक्ति को बढावे तथा यह रसायन है, त्रिसुगध के साथ सेवन करने से बल और अग्नि को बढावे, बाकी अनुपान वैद्य अपनी बुद्धि के अनुसार कल्पना करे ।

दरद के गुण

तिक्तंकषायकटुहिंगुलस्या
न्नेत्रामयघ्नकफपित्तहारि ।
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्च
प्लीहामधातौचगदनिहति ।

हिंगुल कडवा, कसेला और तीखा है, नेत्र रोग, कफ, पित्त, हृल्लास (सूखी खासी), कोढ कामला तापतिल्ली और आमवात को नाश करे ।

तिक्तोष्णंहिंगुलंदिव्यं-
रसगधसमुद्भवम् ॥
मेहकुष्ठहरंरुच्यबल्यं-
मेधाग्निवर्द्धनम् ॥
हिंगुलःसर्वदोषघ्नो
दीपनोऽतिरसायनः ।

सर्वरोगहरोधृष्यो
जारणेलोहमारणे ॥
एतस्मादादहृतःसूतो-
जीर्णगंधसमोगुणौ. ।

पारे और गधकसे उत्पन्न हिंगुल. दिव्य और कटु हैं, सर्व दोषो का नाशकर्ता, अग्नि को दीपन करे, रसायन है। सर्व रोगो का हर्ता, वीर्य को बढाने, लोह के जारण तथा मारण मे शुभ है, इसके निकले हुए पारे के गुण षट्गुण गंधक जारण किये हुये पारे के समान हैं, हिंगुल से पारा निकालने की विधि पारद प्रकरणमे लिख आये हैं।

अशुद्ध हिंगुल के अपगुण

अशुद्धोदरदःकुर्या-
त्कुष्ठक्लैव्यक्लमभ्रमम ।
मोहचशोधयेत्तस्मात्सिद्ध-
वैद्यस्तुहिंगुलम् ॥

अशुद्ध हिंगुल, कोढ़, नपुंसकत्व, क्लेम, भ्रम और मोह को करता है। इससे सिद्ध वैद्य हिंगुल का यथा योग्य शोधन करे।

अस्य शांतिः।

उत्पद्यतेयदाव्याधि-
र्दरदस्यनिषेवणात् ।
तदासूतकवत्सर्वा
कुर्याद्वैद्यप्रतिक्रियाः॥

यदि अशुद्ध हिंगुल सेवन से रोग प्रकट हो तो पारे की विधि समान शान्ति करना चाहिये।

इति हिंगुल प्रकरण

टंकण (सुहागा)

टकणस्त्रिविध प्रोक्त-
स्फाटिकाभोगुडप्रभ. ।
तृतीयःपाण्डुर.प्रोक्तः
शृणुतस्यगुणागुणाम् ।
पर्यायःपांडुरस्यापि-
नीलकंठइतिश्रुतः ।
उत्तमोनीलकंठश्च-
स्फाटिकाभश्चमध्यमः ।
गुडाभश्चाधमःप्रोक्तो
रसशास्त्रविशारदैः ।

सुहागा ३ प्रकार का है, एक फिटकरी के समान, दूसरा गुड़ के समान,तीसरा पीला होता है, इसके गुणागुण कहते हैं, पीले सोहागे को नील कठ भी कहते हैं यह नीलकठ उत्तम होता है, फिटकरी के समान मध्यम और गुड के समान अधम होता है। ऐसे रसज्ञाता वैद्य कहते हैं।

सुहागे की शुद्धि

जंवीरजरसेनैव
अहोरात्रं विभावयेत् ।
टंकणं शुद्धिमायाति
नात्रकार्याविचारणा ॥

सुहागा एक दिन रात जंमीरी के रस की भावना देने से शुद्ध होवे।

दूसरी विधि

टकणःशुद्ध्यतिह्याशु-
गोमयेनावृत.प्रिये ॥

सुहागा गोवर में रखने से शुद्ध होवे।

तथागुण

टंकणोद्रावणीभेदी
विषहारीज्वरापह. ।
गुल्मामशूलशमनो
वातश्लेष्महरं परः ॥
तथैववह्निकृत्स्वर्ण-
रूप्ययोश्शोधनंपरः ।

सुहागा, दव अर्थात् जलरूप कर्ता, भेदी, विषरोग, ज्वर, गोला, आमवात, शूल, वात और कफ का नाशक है। जठराग्नि को बढावे सुवर्ण और चांदी को शुद्ध करता है।

अशुद्ध सुहागे के दोष

अशुद्धष्टंकणोवांति-
भ्रांतिकारीप्रयोजित. ।
अतस्तंशोधयेद्वह्नौ
भवेदुत्फुल्लितःशुचिः ॥

अशुद्ध सुहागा-वाति (वमन) और भ्राति (भौर) करता है, इसलिये इसे अग्नि पर रख फुलावे तो शुद्ध हो।

तुवरी (फिटकरी)

सौराष्ट्रभूमिसंभूता
मृत्स्नासातुवरीमता ।
वस्त्रे पुलिप्यतेयासौ
मंजिष्ठारसबंधनी ॥
स्फटिकाछिल्लिकाचेति-
द्विविधापरिकीर्तिता ।
ईषत्पीतागुरुं स्निग्धा
पैत्तिकाविषनाशिनी ॥
निर्भराशुभ्रवर्णाच-
स्निग्धासाम्लापरामता ।
सफुल्लातुवरीप्रोक्ता-
लेपात्ताम्रेचरंगदा ।
सौराष्ट्रीचामृताकांक्षी-
स्फटिकामृत्तिकामता ।
आढकीतुवरीधन्या-
मृत्स्नामृत्सुरमृत्तिका ॥
व्रणकुष्ठहरासर्वा-
कुष्ठघ्नीचविशेषत. ।
दुकूलेपुचसर्वेपु
लेपनाद्रजनीभवेत् ॥
उत्तमालिप्यतेयासौ-
मंजिष्ठारगवर्धिनी ॥

*सारोष्ट देश की पृथ्वी मे एक प्रकार की मिट्टी होती है उसे तुवरी (फिटकरी) कहते हैं। इसका कपडे पर लेप करने से मंजीठ के रंग के समान लाल धब्बा पड़ जाता है, यह पारे को बांधने वाली है, इसके स्फटिका और छिल्लिका दो भेद हैं, इनमे स्फटिका अर्थात् गोपीचन्दन किंचित पीला, भारी, चिकना होता है। पित्त और विष के विकारो को दूर करता है, दूसरी भारी, सफेद, चिकनी और खट्टी होती है। इसे फुल्लतुवरी भी कहते हैं इसका लेप करने से तावे के समान रंग हो जाता है। इसके नाम सौराष्ट्री, अमृता, कांक्षी, स्फटिका, आढकी, तुवरी, धन्या, मृत्स्ना और सुरमृत्ति का हैं। ये सब गोपीचदन, व्रण,और कोढ को हरें परन्तु विशेष कर कोढ को दूर करते हैं। और सब प्रकार के वस्त्रो पर लेप करने से अपना रंग लाते हैं, परन्तु उत्तम गोपीचन्दन वही कहाता है जो सफेद वस्त्र पर मंजीठ के समान रंग देवे।

*अहमदाबाद काठियावार के समीप देशो को सौराष्ट्र देश और भाषा मे सोरठ देश कहते है।

फिटकरी का शोधन

तुवरीकांजिकेक्षिप्ता-
त्रिदिनाच्छुद्धिमृच्छति ।

फिटकरी ३ दिन कांजी से भिगोने से शुद्ध होती हैं।

तथा

स्फटिकानिर्मलाश्वेता-
श्रेष्ठास्याच्छोधनकचित् ।
नदृष्टशास्त्रतोलोके-
वह्नावुत्फुल्लयातहि ॥

फिटकरी निर्मल तथा श्वेत उत्तम होती है, उसका शोधन किसी शास्त्र मे नही लिखा, परन्तु लोक से मनुष्य इसे आग मे फुलाकर शुद्ध करते हैं।

तथा सत्वपातन

क्षाराम्लमर्दिताध्माता-
सत्त्वंमुंचतिनिश्चितम् ।

फिटकरी का क्षारवर्ग तथा अम्लवर्ग मे घोटकर भट्टी मे रख बकनाल धोकनी से धोकने

से सत्त्व निकलता है। किसी के मत से फिटकरी के दो भेद हैं, तुवरी और सौराष्ट्री इनमें तुवरी के भेद कह चुके, अब सौराष्ट्री के गुण कहते हैं।

सुसैंधवसमानाच-
कषायास्फटिकामता ॥
व्रणोरःक्षतशूलघ्नी-
स्फटिकासूतघातनी ॥
सौराष्ट्रिकावच्छोधनं-
कारयेद्रसचिंतकः ॥

सैंधवनोन के समान और कषैली फिटकरी कहाती है, यह व्रण, उरःक्षत और शूल को तत्क्षण दूर करे, पारे का मारण करे, इसका शोधन पूर्वोक्त रीति से करे।

तथा गुण

कांक्षीकषायाकटुकाम्लकंठ्या
केश्याव्रणघ्नीविषनाशनीच।
चित्रापहानेत्रहितात्रिदोष
शान्तिप्रदापारदरंजनीच ॥

फिटकरी कसैली, तीखी, खट्टी, कंठ और केशों को हित है,व्रण को अच्छा करे; विष को हरण करे, चित्र कोढ को दूर करे, नेत्रो को हित है, सन्निपात को शान्ति करे और पारे को रंगती है।

सत्त्व की दूसरी विधि

गोपित्तेनशतवारान्-
सौराष्ट्रींभावयेततः।
अग्मिस्वापातयेत्सत्त्वं-
क्रामणंचातिगुह्यकम् ॥

फिटकरी को गौ के पित्त की १०० भावना देकर सुखाय भट्टी में रख वंकनाल धोकनी से धोके तो सत्त्व निकले यह बात गुह्य है।

मनशिल

तालकस्यैवभेदोस्ति-
मनोह्वाप्रोच्यतजनैः।
तालकस्त्वतिपीतः
स्याद्भवेद्रक्तामनःशिला ॥

मनसिल हरिताल का ही भेद है, हरताल बहुत पीली होती है और मनसिल लाल वर्ण की होती है।

मनशिलकी निरुक्ति

मदायतनसंभूता-
वनोह्वातेनकीर्तिता।
सापीवरीहेमवर्णा-
मनोह्वाविविधामता ॥

श्री महादेव जी पार्वती जी से कहते हैं कि यह मनसिल हमारे घर (हिमालय) में उत्पन्न हुई इसी से इसे मनोह्वा कहते हैं, और जो सुवर्ण सदृश हो उसे पीवरी कहते हैं, यह अनेक प्रकार की है।

अन्य भेद

मनःशिलात्रिधाप्रोक्ता-
श्यामांगीकरवीरिका।
द्विखंडाख्याचतासांतु
लक्षणानिनिबोधमे।
श्यामारक्ताचगौराच
भाराढ्याश्यामिकामता ॥
तेजस्विनीचनिगौरा
ताम्राभाकरवीरिका।
चूर्णभूतातुरक्तांगी
सभाराखडपूर्विका ॥
त्रिविधासुचश्रेष्ठा
स्यात्करवीरामनःशिला।

मनसिल तीन प्रकार की है। श्यामागी, २ करवीरिका, ३ द्विखडा। इनके तीनों के लक्षण मुझसे सुनो। वह वर्ण मे श्याम लाल और क्रम से गौर है। जो भारी होती है उसे श्यामिका कहते हैं, और जो तेजयुक्त काली ताम्र के समान हो उसे करवीरिका, और चूर्ण के समान बारीक, लाल वर्ण की तथा भारी को द्विखंडा कहते हैं, इनमें करवीरिका उत्तम है।

अशुद्ध मनसिल के दोष

अश्मरीमूत्रकृच्छ्राणि
अशुद्धाकुरुतेशिला ।
मंदाग्निंमलबधंच
कुरुतेतेनशोधयेत् ॥

अशुद्ध मनसिल पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मंदाग्नि और मलबध रोग करे, इससे इसका शोधन करना चाहिये ।

शुद्धि

जयन्तिकाद्रवैर्दोला
यत्रेशुद्धामन.शिला ।

मनसिल को भांगरे, हलदी और अदरक के रसों मे दोलायन्त्र द्वारा पाचन करने से शुद्ध होवे ।

दूसरी विधि

अगस्तपत्रतोयेन
भावितासप्तवारकम् ।
शृंगवेररसैर्वापि
शुध्यतिमनःशिला ॥

मनसिल को अगस्तिया के पत्तों के रस अथवा अदरख के रस की सात भावना देवे तो शुद्ध होवे ।

तीसरी विधि

शृंगागस्त्यजयंती
नामाद्र‍्रकस्यरसेषुच ।
दोलायन्त्रेणसंस्विन्ना
विशुध्यतिमनःशिला ॥

मनसिल को भागरा, अगस्तिया, हलदी और अदरख के रस मे दोलायन्त्र द्वारा पाचन करने से शुद्ध होवे ।

चौथी विधि

पचेत्त्र्यहमजामूत्रै
र्दोलायन्त्रेमन.शिलाम् ।
भावयेत्सप्तधापित्तै
रजायाःशुद्धिमृच्छति ॥

दोलायन्त्र में मनसिल को बकरी के मूत्र में ३ दिन औटावे, तदनन्तर खरल मे डाल बकरी के पित्त की भावना देने से मनसिल शुद्ध होवे ।

मनसिल मारण की भाषा विधि

हसपदी, बन्दाल, बड, आक, थूहर, प्रत्येक के दूध मे मनसिल को एक २ दिन घोट कर अग्नि देता जाय और सात आंच डमरू यन्त्र में टिकिया बांध कर चार २ प्रहर की देवे तो मनसिल मरे ।

सत्वपातन

तालवच्चशिलासत्वं
ग्राह्यंतैरेवचौषधैः ।

जिस प्रकार हरिताल का सत्व निकाला जाता है, उसी प्रकार और उन्ही औषधियो से मनसिल का सत्व निकालना चाहिये ।

सत्वपातन की दूसरी विधि

नागांशंगुलंग्राह्यं
लोहकिट्टंचसर्पिषा ।
मर्दयित्वांधमूषायां
ध्मानात्सत्वविमुंचति ॥

मनसिल आठवा भाग गूगल, उसमे लोहे की किटी और घृत मिला कर घोटे पश्चात् अंध मूषा मे रख बङ्कनाल धोकनी से धोके तो मनसिल सत्व छोडे ।

गुण

मनःशिलागुरुर्वर्ण्या
सरोष्णालेखनीकटु ।
तिक्तास्निग्धाविषश्वास
कासभूतविषास्रनुत् ॥

मनसिल भारी, वर्णकारक, सर, ऊष्ण, लेखनी, तीखी, कडवी, और चिकनी है, विष के विकार, श्वास, खासी भूतबाधा और रुधिर विकारों को नाश करे ।

तथा च

मन.शिलासर्वरसायनाख्या
तिक्ताकटूष्णाकफवातहंत्री ।
सत्वात्मिकाभूतविषाग्निमांद्य
कड्डूंचकासक्षयहारिणीच ॥

मनसिल सर्वरसायन है, कडवी, तीखी और गरम है, कफ वात को दूर करे, सत्ववाली है, भूत, विषदोष, मंदाग्नि, खुजली, खासी, और क्षय को दूर करे ।

अशोधित शिला के दोष

मन:शिलामदबलंकरोति
जंतून्ध्रुवंशोधनमतरेण ।
मलस्यबन्धंकिलमूत्ररोगं
सशर्करंकृच्छ्रगदंचकुर्यात् ॥

अशुद्ध मनसिल बल नाश करे, मलबन्ध, मूत्ररोग, शर्करा, कृच्छ्रोग, और कृमि रोग उत्पन्न करे ।

शांति

गोक्षीरंमाक्षिकयुत
पिवेद्यस्तुदिनत्रयम् ।
कुनटीतस्यदेहेच
विकारंनकरोतिहि ॥

गौ के दूध में तीन दिन शहद मिला कर पीने से मनसिल देह मे विकार नही करे ।

शंख

द्विधासदक्षिणावर्ति
र्वामावर्ति:शुभेतर' ।
दक्षिणावर्तिशखस्तु
पुण्ययायोगादवाप्यते ॥
यद्गृहेतिष्ठतिसवै
सलक्ष्म्याभाजनभवेत् ।
दक्षिणावर्त्तशखस्तु
त्रिदोषघ्न:शुचिर्निधि ॥
ग्रहालक्ष्मिक्षयक्ष्वेड
क्षामताक्षितयक्षमी ।

शख दक्षिणावर्त और वामावर्त दो प्रकार का है, जिसमे दक्षिणावर्त पुण्ययोग से मिलता है, जिसके घर मे दक्षिणावर्त शंख रहता है उसके अटूट लक्ष्मीवास करती है, यह त्रिदोषनाशक, पवित्र तथा नौ निधो मे एक निधि है । और ग्रह तथा अलक्ष्मी की पीडा, क्षय, विष, कृशता तथा नेत्र रोगो के दूर करने को समर्थ है ।

शंखश्चविमल:श्रेष्ठ
चंद्रकांतिसमप्रभ ।
अशुद्धोगुणदोनैव
शुद्धश्चसगुणप्रद. ॥

जो शख सफेद चन्द्रकांति के समान हो वह उत्तम है, और अशुद्ध गुणकारक नहीं है, शुद्ध किया हुआ गुण करता है ।

शोधन

अम्लैश्चकांजिकैश्चैव
दोलास्विन्न:सशुध्यति ।

शख को अम्लवर्ग और कांजी मे दोलायन्त्र द्वारा पचावे तो शुद्ध होवे ।

गुण

शंख'क्षारोहिमोग्राही
ग्रहणीरेचननाशन: ॥
नेत्रपुष्पहरोवर्ण्य-
स्तारुण्यपिटिकाप्रणुत् ।

शख खारी, शीतल, ग्राहक तथा वर्ण को सुधारने वाला है । सगहणी और दस्तो को बन्द करे । नेत्र के फूले और जवानी के मुहासो को दूर करे ।

खड़िया

खठीगौरखटीचेति
द्विधाद्यामलिनास्मृता ।
मृदुपाणसदृशी
खटीश्राधिकागुरु: ॥

खटी और गौरखटी के भेद से खडिया दो प्रकार की है, इनमे खडिया कुछ काली होती है

और गौरखडिया नरम पत्थर के समान बहुत सफेद और भारी होती है, यह उत्तम है।

गुण

खटीदाहास्त्रनुच्छीता
मधुराविषशोषजित्।
कफघ्नीनेत्रयो पथ्या
लेखनीबालकोचिता ॥
तद्वतपाषाणखटिका
व्रणपित्तास्रजिद्धिमा।
लेपाद्येतद्गुणाप्रोक्ता
भक्षितामृत्तिकासमा ॥

खडिया दाह और रुधिर विकारो को दूर करे, शीतल और मधुर है, विष और शोष को दूर कर कफ का नाश करे। नेत्रो को पथ्य लेखन और बालको को हितकारक है। पाषाण खडिया भी तद्वत् है। व्रण, पित्त तथा रुधिर विकारो को नाश करे और शीतल है। ये गुण लेप करने से करती है और खाने मे मिट्टी के समान अवगुण करती है।

कौड़ी

वराटिकात्रिधाप्रोक्ता
श्वेतशोणातथापरा।
पीताचतीक्ष्णाचक्षुष्या
श्वेताशोणाहिमाव्रणा ॥
अतिबिंदुभिरश्वेते
लांछितारेखयाथवा।
बालग्रहहरानाना
कौतुकेपुचपूजिता ॥
पीतागुल्मयुतापृष्ठे
रसयोगेषुयोजयेत।
सार्द्धनिष्कप्रमाणासौ
श्रेष्ठायोगेपुयोजयेत् ॥
निष्कप्रमाणमध्या-
साहीनापादोननिष्किका।

कौढी सफेद, लाल और पीली ३ प्रकार की है, इसमे सफेद तीक्ष्ण और नेत्रो को हितकारक है, लाल शीतल तथा व्रण को हित है, जिस पर कालोंची लिये बिंदु और रेखा हो वह बाल ग्रहनाशक तथा अनेक कौतुको मे उपयोगी है और जो पीली हो जिसकी पीठ पर गाठ हो उसे रस योग में देना चाहिये, जो वजन में ६ माशे हो वह उत्तम है, चार माशे की मध्यम तथा तीन माशे की कौढी अधम है।

दूसरा प्रकार

पीताभाग्रंथिलापृष्ठे-
दीर्घवृत्तावराटिका।
रसवैद्यैर्विनिर्दिष्टा
सावरावरसञ्ज्ञिका ॥
सार्द्धनिष्कभाराश्रेष्ठा-
दंतैर्द्वादशभिर्युता।
रसेरसायनेयोज्या
निष्कभाराचमध्यमा ॥
पादोननिष्कभाराच
कनिष्ठापरिकीर्तिता।

जो पीली और पिछाडी के भाग मे गांठदार लंबी और गोल हो उस कौडी को रसज्ञाता वैद्यो ने श्रेष्ठ कहा है, इनके वर और अवर दो भेद हैं, जो कौडी ६ माशे की १२ दांत युक्त हो वह श्रेष्ठ है उसे रस रसायन मे योजना करे ४ माशे की मध्यम और ३ माशे की कनिष्ठा जाननी।

शोधन

वराटाकांजिकेस्विन्ना-
यामाच्छुद्धिमवाप्नुयात्।

कौडियां-कांजी मे एक प्रहर औटाने से शुद्ध होती हैं।

मारण

अंगाराग्नौस्थिताध्माता-
सम्यक्प्रोत्फुल्लितायदा ॥
स्वांगशीतामृतासातु-
पिष्ट्वासम्यक्प्रयोजयेत्।

कौडी को अंगारो पर रख कर जब अच्छी तरह फूल जाय तब अग्नि पर से उठाय शीतल कर पीसे और सब कार्यों में योजना करे।

गुण

कपर्दिकाहिमानेत्र-
हितास्फोटक्षयापहा।
कर्णस्रवाग्निमांद्यघ्नी-
पित्तासृक्कफनाशिनी॥
परिणामादिशूलघ्नी-
वृष्यातीसारनाशिनी।
नेत्र्यासंग्रहणीहंति
कटूष्णादीपनीमता।
पाचनीवातकफहा
श्रेष्ठासूतस्यजारण।
तदन्येतुवराटास्युगु-
रवःश्लेष्मपित्तदाः।

कौडी शीतल और नेत्रो को हित है, फोडा क्षय, कर्णस्राव, मंदाग्नि, पित्त कफ, और परिणामशूल का नाश करे और वृष्यहै,अतिसार सग्रहणी का शमन करे। कटु, गरम, दीपन और पाचन है। वात कफ की नाशक, पारे जारण में उत्तम है। इन तीन प्रकार की कौड़ियों के सिवाय एक बडे २ कडूडे होते हैं वह भारी और कफ पित्त कर्त्ता होते हैं।

मोती की सीप

मुक्ताशुक्तिःकटुस्निग्धा-
श्वासहृद्रोगहारिणी।
शूलप्रथमनीरुच्या
मधुरादीपनीपरा॥

मोती की सीप कटु और चिकनी है श्वास शूल, हृद्रोग, इनका नाश करे, रुचिकारी, मीठी और दीपनी है।

जलसीप

जलशुक्तिःकटुस्निग्धा-
दीपनीगुल्मशूलनुत।
विषदोपहरीरुच्या
पाचनीवलदायिनी॥

जल की सीप-कडवी, चिकनी, दीपन रुचि कर्त्ता, पाचन और बलदायक है। यह गोला, शूल और विष दोष को दूर करे।

सीपों का शोधन

शोधनंशखवत्तस्या-
मृतिःप्रोक्ताकपर्दिवत।

दोनो प्रकार की सीपो का शोधन शख के समान और मारण कौडी के समान है।

गुण

शुक्तिश्चशिशिरापित्त-
रक्तज्वरविनाशिनी।

सीप शीतल है पित्त रुधिरविकार तथा ज्वर का नाश करे।

छोटे शंख (घोंघा)

शंबुकाशीतलानेत्र-
रुजास्फोटविनाशनो।
शीतज्वरहरीतीक्ष्णा-
ग्राहिदीपनपाचनी॥

छोटे शंख शीतल हैं, फोड़ों को दूर करें, शीत ज्वर का नाश करे, तीक्ष्ण, ग्राही, दीपन तथा नेत्ररोग हर्त्ता हैं।

शोधन

शखवच्छोधनंकुर्याद्या-
संशुध्यतिशबुका।
शुक्तिवद्भस्वकंकुर्यात्स-
र्वयोगेपुयोजयेत्॥

छोटेशंखों का शोधन बडो की तरह करे और सीप के समान भस्म करे सब योगो से देवे।

सिकता (वालू)

वालुका सिकताप्रोक्ता-
शर्करारेतजापिच।
वालुकामधुराशीता-
संताप श्रमनाशिनी।

सेकप्रयोगतश्चैव-
शाखाशैत्यानिलापहा।
तद्वच्चलेखनीप्रोक्ता-
व्रणोरःक्षतनाशिनी ।

रेत को बालु, सिकता, बालुका शर्करा और रेतजा भी कहते हैं। यह मधुर और शीतल है, संताप और श्रम को सेकने से दूर करे, तथा हाथ पावों को शीतलता और वादी को भी सेकने से दूर करे, यह लेखनी है तथा व्रण और उरःक्षत का नाश करे ।

बालू से लोहरज ग्रहण का प्रकार

शर्कराभ्यश्चुंबकेन-
केचिद्गृह्णंत्ययोरजः।
सुकरत्विदमाख्यातं-
तत्तुसंशोध्यमारयेत्।

कोई मनुष्य चुंबुक पत्थर के द्वारा बालू मे से लोहे के कण निकालते हैं यह बात सीधी है इसका शोधन मारण करे ।

समाप्तोऽयंप्रथमखंड

अथ मध्यम खंड प्रारम्भः

शिलाजीत की उत्पत्ति

महार्णवांभोमृतमंथनोत्थः
स्वेदोगिरेर्योविगलत्ततःप्राक्
समंदरस्यामतमंथनाच्चसोमे-
नसंपर्कमियायदिव्यम्।
ब्रह्माणमिंद्रप्रतिपूज्यसम्यग्-
हितायपुंसांप्रददौनगेभ्यः।
सोमोऽमृतकल्पगुणंतुभूमौ-
शिलाजतुस्यादितिनिर्विचिंत्य ।
हितप्रजानासुखदनिदाघेन-
गात्स्रवंकद्भास्करतापनाच्च ।
प्रभावतश्चोत्कटमारभावांत्-
संसृज्यतेयेनचधातुनातत् ।
तदात्मकंतेप्रवदंतितज्ज्ञास्तस्मात्
परीक्षते अनंतवीर्यम् ।

अमृत निकालने के लिये जब देव और दैत्यो ने मंदराचचल पर्वत को समुद्र मे डाल कर मथा, उस समय उस पर्वत मे स्वेद (पसीना) प्रकट हुआ वह समुद्रमे गिरा फिर वही समुद्र मथने से चन्द्रमा के सदृश प्रकट हुआ, उस सब देवगणों ने ब्रह्मा और इन्द्रका पूजन कर मनुष्यों के कल्याणार्थ उसे सब पर्वतो को दिया, अर्थात् यह सोम (शिलाजीत) अमृत कल्प के समान गुण कारक पृथ्वी में शिलाजीत नाम से प्रकट हुआ, प्रजा का हित और सुखदाता शिलाजीत ग्रीष्म (गरमी) में सूर्य का धूप में तप्त होकर पर्वतो से बहता है। धातुओं से स्रवने के कारण इसमे भारी गुण है, इसे तदात्मक अर्थात् तत्तद्धातुरूपात्मक कहते हैं इस कारण इसकी परीक्षा करे क्यो कि यह अनन्त वीर्य वाला है ।

ग्राह्य शिलाजीत

सुवर्णरूप्यत्रपुसीसताम्रलोहा
त्खने नैवमतःशिलाजः।
समुद्भवंचास्यवदंतिवैद्याः
सर्वोत्तमंविंध्यनगोद्भवच ।

सोना, चादी, रांग, सीसा, तांबा, और लोहे से शिलाजीत की उत्पत्ति है यह वैद्य कहते हैं सब से उत्तम विध्याचल पर्वत से प्रकट शिलाजीत होता है ।

कांचन शिलाजीत के लक्षण

मधुरंचसतिक्तंच-
जपापुष्पनिभंचयत्।
स्निग्धंघनगैरिकाभं-
सुशीतंकाचनास्त्रुतम्॥

मीठा, कडवा, जपा (गुडहर) के फूल के समान लाल, चिकना गाढा, गेरू के समान और शीतल सुवर्ण से प्रकटा शिलाजीत है ।

रौप्यशिलाजीत के लक्षण

रौप्याकरादिन्दुमृणालवर्णं
सक्षारकट्वम्लरसंविदाहि ।
हेमामजीर्णज्वरपांडुशोष
प्लीहाढ्यवातशमयेद्धिसद्यः ।

चांदी की खान से प्रकट शिलाजीत का वर्ण चन्द्रमा और कमल की नाल के समान स्वच्छ तथा सफेद होता है, यह खारी, तीखा खट्टा तथा विदाही है। प्रमेह, अजीर्ण, ज्वर, पांडु रोग, शोष, तापतिल्ली और बादी का शीघ्र नाश करे।

ताम्र शिलाजीत के लक्षण

मयूरकंठोपमंचाषपक्षवर्णं
सतिक्तंकटुचापितास्रम् ।
तिक्तंह्यनुष्णंचसुलेखनंच
मेहाम्लपित्तज्वरशोपहारि ॥

मोर के कंठ या पपैया के पखो के समान जिसका वर्ण हो और जो कडुवा तीखा, अनुष्ण तथा लेखन है वह प्रमेह, अम्लपित्त, ज्वर और शोष का हर्ता ताम्र शिलाजीत है।

वंग शिलाजीत के लक्षण

किंचित्सतिक्तंकटुसांद्र
मृत्स्नंत्रपुप्रसूतत्रपुवर्णंगंधम् ।
शोथप्रमेहज्वरशोषहारि
शीताम्लपित्तविनिहंतिसद्य. ॥

कुछ कडवा, तीखा, सान्द्र जिसमे मिट्टी हो वग के समान वर्ण और जो गंधवाला होता है वह सूजन, प्रमेह ज्वर, शोष, शीत और अम्लपित्त का नाशक रोगो से प्रकट शिलाजीत होता है।

सीसक शिलाजीत के लक्षण

नागात्सतिक्तंमृदुचोष्णवीर्य-
वर्णादतःस्यात्कुसुमेनतुल्यम् ।
रसेनतत्स्यात्कटुकप्रधानं-
वर्णोजतेजःप्रबलददाति ।

शीशे का शिलाजीत तीखा, नम्र उष्ण वीर्य वाला, पुष्प के सदृश वर्ण, इसमे कटु रस प्रधान है वर्ण, ओज और तेज को देता है।

लोह शिलाजीत के लक्षण

गोमूत्रगंधिकृष्णं
गुग्गुल्वाभविशर्करंमृत्स्नम् ।
सिद्धमनम्लकषायकृष्ण ।
यसर्जशिलाजतुप्रवरम् ॥

गोमूत्र-की सी गंधवाला, कृष्ण वर्ण गुग्गुल के सदृश धूल रहित, मिट्टी के समान शुद्ध थोडा कपेला ऐसा काले लोह का शिलाजीत होता है।

शिलाजीत के भेद

शिलाजतुद्विधाप्रोक्तं-
गोमूत्राद्यंरसायनम् ।
कपूरपूर्वकचान्यत्त-
त्राद्यंद्विविधं पुनः ॥
ससत्त्वचाथनिःसत्त्वं
तयोःपूर्णगुणाधिकम् ।

शिलाजीत दो प्रकार का है-गोमूत्र शिलाजीत और कर्पूर शिलाजीत। इनमे गोमूत्र शिलाजीत रसायन है इसके भी दो भेद हैं ? सत्त्व सहित। दूसरा सत्त्व रहित उनमे भी सत्त्व सहित शिलाजीत मे अधिक गुण हैं।

अन्य मतान्तर

शिलाजतुद्विधाज्ञेयं-
तत्राद्यंगिरिसंभवम् ।
द्वितीयस्यादूषराया-
मृत्तिकाजलयौगतः ॥

शिलाजतु-एक पर्वत से प्रकट और दूसरा ऊसर भूमि से प्रकट होने से दो प्रकार का है, यह ऊसर भूमि मे मिट्टी और पानी के योग से बनता है।

शिलाजीत की उत्पत्ति

ग्रीष्मेतीव्रार्कतप्तेभ्यो
गर्तेभ्य किलभूभृताम् ।

स्वर्णरूप्यार्कगर्भेभ्यो-
शिलाधातुर्विनिस्सरेत् ॥

ग्रीष्मऋतु, मे सूर्य की किरणों से तप्त सुवर्ण चांदी और तांबे की खान वाले पर्वतो से शिलाधातु (शिलाजीत) निकलता है।

निदाघघर्मसंतप्ता
धातुसारधराः ।
निर्यासवत्प्रमुंचंति-
शिलाजतुसमीरितम् ॥

सूर्य की किरणो की गर्मी से पर्वत तप्त होकर धातुओ का साररूप गोंद के समान पतला पदार्थ निकलते हैं, उसे शिलाजीत कहते है।

शिलाजीत के भेद

सौवर्णं राजतं ताम्र-
मायसं च चतुर्विधम् ।
शिलाजतु हि विज्ञेय-
तत्तल्लक्षणलक्षितम् ।

शिलाजीत सौवर्ण,राजत, ताम्र और आयस चार प्रकार का है और वह सफेद आदि भेदो से जाना जाता है, इसका स्पष्टार्थ यह है कि, एक सोने की खान-दूसरा चादी की खान, और तीसरा तांबे की खान तथा चौथा लोहे की खान वाले पर्वतों से पैदा होता है, इनमे जिस धातु के लक्षण मिलें उसे उसी धातु का सार यानी शिलाजीत जानना।

शिलाजीत की परीक्षा

स्वर्णगर्भगिरेर्जातं
जपापुष्पनिभंगुरु ।
मधुरंकटुतिक्तंच-
शीतलंचरसायनम् ॥

सोने की खान से प्रकट शिलाजीत जपापुष्प के समान लाल, भारी, मधुर, तीखा, कड़वा और खारा होता है, इसका पाक तीखा और कड़वा होता है, यह शीतल और रसायन है।

रूप्यगर्भगिरेर्जातं
मधुरंपांडुरंगुरु ।
शिलाजंकफवातघ्नं
तिक्तोष्णंक्षयरोगजित् ॥

चांदी की खान वाले पर्वत से प्रकट शिलाजीत पीला, मीठा, भारी, कफनाशक, कटु, गरम और क्षय रोग को जीतने वाला है।

ताम्रगर्भगिरेर्जातं
नीलवर्णघनंगुरू ।
मयूरकंठसदृशंतीक्ष्ण-
मुष्णंचजायते ॥

तांबे की खान वाले पर्वत से प्रकट शिलाजीत नीला, गाढा, भारी,मोरकंठ के समान नील वर्ण का तीखा और गरम होता है।

लौहजटायुपक्षाभं
तिक्तकं लवणं भवेत् ।
विपाकेकटुकंशीतं
सर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥

लोह का शिलाजीत गीध के पंख के समान काले वर्णवाला, कड़वा,नमकीन, पाक के समान तीखा और शीतल है। वह सर्वोत्तम होता है।

शीलाजीत की दूसरी परीक्षा

गौमूत्रगन्धं यत्कृष्ण
स्निग्धं मृदुतथागुरु ।
तिक्तंकषायं शीतं
च सर्वश्रेष्ठंतदायसम् ॥

लोह शिलाजीत गोमूत्र के समान गन्धवाला काला, चिकना, नम्र और भारी, कड़वा कसेला और शीतल सर्वोत्तम होता है।

तीसरी परीक्षा

यत्तुगुग्गुलसंकाशं-
तिक्तचलवणान्वितम् ।
विपाकेकटुकंशीतं
सर्वश्रेष्ठंतदायसम्[1] ॥

१ शिलाजंपित्तरोगघ्नविशेषात्पाडुरोगहृत्।

जो शिलाजीत गूगल के सदृश, कदवा खारा और जिसका पाक तीखा और शीतल हो व सब शिलाजीतो में उत्तम लोहज शीलाजीत है ।

द्विविध शिलाजीत

शिलाधातुर्द्विधाप्रोक्तो
गोमूत्राद्योरसायनः ।
कपूरपूर्वक आन्यस्त-
त्राद्योद्विविधःपुनः ॥
ससत्त्वश्चै व निःसत्त्व-
स्तयोः पूर्वोगुणाधिकः ।

शिलाजीत दो प्रकार का है पहला गोमूत्र सज्ञक रसायन है, और दूसरा कपूर सज्ञक, गोमूत्र सज्ञक के दो भेद हैं ससत्त्व और नि सत्त्व अधिक गुण वाला है ।

शिलाजीत के वर्ण भेद से गुणभेद

वातपित्तेतुसौवर्ण
श्लेष्मवित्तेतुराजतम् ।
ताम्रजेकफरोगेषु
लोहजतु त्रिदोषनुत् ।
विद्यादौबहुतत्रेषु
तत्रलोहगुणाधिकम् ।

वातपित्त के विकार मे सौवर्ण शिलाजीत देवे, तथा कफपित्त मे राजत (चादी) वर्ण का, केवल कफ विकार मे ताम्र वर्ण और लोह शीलाजीत त्रिदोष नाशक है, इसको तत्र मंत्र विद्यादि मे वर्त्तते हैं। इसी कारण लोह शिलाजीत मे अधिक गुण हैं ।

शिलाजीत का शोधन

तच्छोधनमृतेव्यर्थ-
मनेकमलमेलनात् ।
शिलाजतुसमानीय
लोहजंलक्षणान्वितम् ॥
वहिर्मलमपाकर्त्तुं
क्षालयेत्केवलाम्बुना ॥

शिलाजीत में अनेक मल (कूड़े) का मिलाप होने से जब तक शुद्ध न किया जाय निष्प्रयोजन है, अतएव प्रथम लोहे की खानवाले पर्वत में जो शिलाजीत सब लक्षण युक्त प्रकट होवे उसको लाकर बाहर की शुद्धि के निमित्त केवल जल से धो डाले ।

दूसरा प्रकार

लोहेस्थितंनिंबगुडूचिसर्पिषा-
पुटैर्यथावत्परिभावयेत्तत् ।
संतानिकाकीटपतंग-
दंशदुष्टौषधीदोषनिवारणाय ।

शिलाजीत की उत्पत्ति के समय उसमें कीट पतग का दश और दुष्ट औषधिका मेल होता है, इस कारण सर्वदोष हरणार्थ उसे लोह पात्र में रख कर नीम, गिलोय और घी की भावना देवे तो शुद्ध होवे ।

तीसरा प्रकार

उष्णेचकालेरवितापयुक्ते
व्यभ्रेनिवातेसमभूमिभागे ।
चत्वारिपात्राण्यपिचायसानि
न्यस्तानितत्रापिकृतावधानः ॥
शिलाजतुश्रेष्ठमवाप्यपात्रे
प्रक्षिप्यतस्माद्द्विगुणंचतोयम् ॥
उष्णतदर्द्धं क्वथितचदत्वा
विशोषयेत्तन्मृदितंयथावत् ।
सुवस्त्रपूतंप्रविधायतत्तु
संस्थापनीयंपुनरेवतत्र ॥
ततस्तुयत्कृष्णमतीवचोर्ध्वं
संतानिकावद्रविरश्मितप्तम् ।
पात्रात्तदन्यत्रततोनिदध्यात्
तस्यान्तरेचोष्णजलंनिधाय ॥
ततश्चतस्माद् परत्रपात्रे
तस्माच्चपात्रादिपरत्रभूयः ।
पुनस्ततोऽन्यत्रनिधायकृत्स्नं
यत्सङ्गतंतत्पुनराहरेच्च

यदाविशुद्धं जलमच्छमूर्ध्वं
प्रसन्नभावान्मलयेत्यधस्तात् ।
तदातुल्याज्यंसलिलंगलहि
शिलाजतुस्वाज्जलऽद्धमेव ॥
चतुर्थपात्राद्गलितहिसर्वं
परीक्षणीयखलुवैद्यवर्यैः॥

गरमी के दिनो मे जब कडी धूप निकले, और आकाश बादल तथा पवन रहित हो उस समय समान भूमि मे चार लोहपात्र स्थापन करे और सावधान रहे। उनमे से प्रथम पात्र मे शिला जीत के टुकडे २ कर डाल देवे और शिलाजीत से दूना जल डाले, और उससे आधा गरम जल डाल उसे धीरे धीरे हाथ से मल कर बस्त्र मे छान डाले। उस छने जल को उसी पात्र में भर कर धूप में रख देवे जब उस पर मलाई जम जाय तब उसको उतार कर दूसरे पात्र में रखता जाय, जब मलाई जमना बन्द हो जाय तब दूसरे पात्र मे जो मलाई जमा की है उसमें गरम जल डाल कर धूप मे रख देवे, उसमे जो मलाई जमती जाय उसे निकाल २ कर तीसरे पात्र में जमा करे, इसी प्रकार चौथे पात्र में भी करे, इस चौथे पात्र में जो मलाई पडती जाय उसे निकाल निकाल कर प्रथम पात्र में रखे, इसी प्रकार चार पांच बार करे, जब पात्र में ऊपर पानी स्वच्छ रहे तब जानो कि शिलाजीत शुद्ध होगया, उस जल को फेंक देवे और नीचे के शिलाजीत को निकाल लेवे, इसकी परीक्षा जो आगे कहेंगे—उसके अनुसार करे।

चतुर्थ प्रकार

शिलाजतुसमानीय
ग्रीष्मेतप्तंशिलाच्युतम् ।
गोदुग्धैस्त्रिफलाक्वाथै
भृङ्गद्रावैश्चमर्दयेत् ॥
आतपेदिनमेकैक
तच्छुष्कंशुद्धतांव्रजेत् ।

ग्रीष्मऋतु की अत्यन्त गरमी पडने पर पर्वतो से जो शिलाजीत प्रगट हो उसको गोदुग्ध, त्रिफला के काढे और भांगरे के रस की एक २ दिन भावना देकर सुखा लेवे, तो शिलाजीत शुद्ध होवे।

पंचम प्रकार

मुख्यांशिलांजतुशिलां
सूक्ष्मखंडप्रकल्पिताम् ।
निःक्षिप्यात्युष्णपानीये
यामैकंस्थापयेत्सुधी ॥
मर्दयित्वाततोनीरं
गृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ।
स्थापयित्त्वाचमृत्पात्रे
धारयेदातपेबुधः ॥
उपरिस्थितघनचास्य
तत्क्षिपेदन्यपात्रके ।
धारयेदातपेधीमानु-
परिस्थघननयेत् ॥
एवंपुनःपुनर्नीत्वा
द्विमासाभ्यांशिलाजतु ।
भूयात्कार्यक्षमवह्नौ
क्षिप्तं लिंगोपमभवेत् ॥
निर्धूम च ततःशुद्धं
सर्वकर्मसुयोजयेत् ।
अधःस्थितचयच्छेषं
तस्मिन्नीरंविनिःक्षिपेत् ॥
विमर्द्य धारयेद्घर्मे
पूर्ववच्चैवतन्नयेत् ॥

शिलाजीत निकालने वाले उत्तम पत्थर को देख कर लावे, उसको फोडकर टुकडे-टुकडे कर उनको अत्यन्त गरम पानी मे डाल एक प्रहर पर्यन्त रक्खा रहने दे तदनन्तर उनको हाथ से खूब मल कर वस्त्र मे छान लेवे, उस छने हुए जल को मिट्टी के पात्र में भर कर धूप में रख देवे, ज्यो ज्यो उसके ऊपर मलाई जमती जाय त्यों २ आहिस्ता २ उतार २ कर दूसरे पात्र मे रखता जाय, जब मलाई इकट्ठी हो जाय,

तब गरम जल डाल पूर्वोक्त रीति से छान कर धूप मे रख देवे, इस पर जो मलाई पडे उसको तीसरे बर्तन मे रखता जाय, ऐसे बार बार दो महीने तक करे तो शिलाजीत अग्नि में रखने से निर्धूम होवे। और लिंग के समान ऊँचा हो जावे, इस प्रकार शिलाजीत को शुद्ध कर सब कर्मों मे योजना करे, पीछे पात्र मे नीचे जो शेष रहे उसमे गरम पानी डाल मल कर धूप मे रख पूर्वोक्त विधि से उसकी मलाई उतार लेवे।

शुद्धशिलाजीत की भावना

त्रिफलावारिगोदुग्ध
मूत्रैर्भाव्यशिलाजतु।
स्वल्पस्वल्पविधानेन
स्थापयेत्काचभाजने॥
अगुर्वादिशुभैर्धूपै
र्धूपयेत्ततप्रयत्नतः।
मात्रयासितयापश्चा
त्स्निग्धशुद्ध यथाविधि॥
एकत्रिसप्तसप्ताहं
कर्षमर्द्धपलपलम्॥
हीनमध्योत्तमोयोगो
शिलाजस्यक्रमाद्यतः।
क्षीरेणालोडितकुर्या-
च्छीघ्ररसफलप्रदम्।
हन्याद्रोगानशेषाच
जीर्णेहनिमिताशनः॥

शुद्ध शिलाजीत को त्रिफला के काढे गोदुग्ध और गोमूत्र की भावना देवे, पीछे काच के पात्र में रख अगरादि को धूनी देवे, पीछे स्निग्ध और वमन विरेचन से शुद्ध हुए प्राणी को इसमे से एक कर्ष या अर्द्धपल या एक पल उत्तम मध्यम या कनिष्ठ मात्रा दूध के साथ मिला कर १ या ३ या २१ या सात दिन सेवन करे तो सम्पूर्ण रोगो का नाश करे और शीघ्र रस का फल देवे, जब मात्रा पच जावे तब परिमाण का उत्तम भोजन करे।

शुद्ध शिलाजीत की परीक्षा

वह्नौक्षिप्तंतुनिर्धूमं
पक्वंलिंगोपमभवेत्।
तृणाग्रेणांभसिक्षिप्तम-
धोगलतितंतुवत्॥
गोमूत्रगंधमलिनं-
शुद्धंज्ञेयशिलाजतु।

जो शिलाजीत अग्नि में डालने से निर्धूम हो जावे, पक्व होकर लिंग के समान खड़ा हो जाय, तिनका के अग्र भाग पर रखकर जल में डालने से ततुओ के समान फैलकर नीचे बैठे, गोमूत्र की-सी दुर्गंधि दे, और जो मलिन हो ऐसे शिलाजीत को शुद्ध जानना।

शिलाजीत के गुण

रसोपरससूतेन्द्र-
रत्नलोहेषु ये गुणाः।
वसंतितेशिलाधातौ
जरामृत्युजिगीषया॥
क्षिलाजकटुतिक्तोष्णं-
कटुपाकंरसायनम्।
छर्दिरोगन्तथाहन्ति-
कम्पमेहाश्मशर्कराः॥
मूत्रकृच्छ्र क्षयश्वास-
वातमर्शांसिपाडुताम्।
अपस्मारमथोन्मादं
शोफकुष्ठोदरकृमीन्॥

रस,उपरस,पारद, रत्न और सुवर्णादिक अष्ट लोहो मे जो गुण हैं वह सब मृत्यु और बुढापे को जीतने वाले शिलाजीत मे रहते हैं। शिलाजीत तीखा, कडवा और गरम है। पाक के समय तीखा है, रसायन है और यह छर्दिरोग कंप,प्रमेह पथरी शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, श्वास, वादी, बवासीर पाडुरोग, मृगी, उन्माद, सूजन, कोढ, कृमि इन सब का नाश करे।

अन्य विशेष गुण

नसोस्तिरोगोभुविबाध्यरूपो
योह्यस्यजेयंनजयेत्प्रसह्य ।
तत्कालयोगैर्विविधैःप्रयुक्तं-
स्वास्थ्यंतनौ यद्विपुल ददाति ॥

ऐसा कोई असाध्य रोग पृथ्वी पर नहीं है जो शिलाजीत के खाने से न जाय । तत्काल अनेक रोगों के साथ देने से यह देह मे स्वस्थता को प्रदान करता है ।

शिलाजीत के अनुपान

एलापिप्पलिसंयुक्त-
माषमात्रं तुभक्षयेत् ।
मूत्रकृच्छ्रं मूत्ररोधं
हंतिमेहंतथाक्षयम् ।
सर्वानुपानैःसर्वत्र-
रोगेषु विनियोजयेत् ।
जयत्यभ्यासतोनूनतां-
तांस्तांन्रोगान्नसंशयः ।

छोटी इलायची और पीपल के साथ एक माशे शिलाजीत खाय तो मूत्रकृच्छ्र, मूत्र रोध, प्रमेह और क्षय को नाश करे । अन्य सब रोगो मे अनुपान के साथ देने से उन्हीं २ रोगों को अभ्यास के द्वारा नष्ट करे ।

शिलाजीत का पथ्यापथ्य

व्यायामातपमारुतचेतः
संतापिगुरुविदाहादि ।
उपयोगादपिपरितो-
द्विगुणंपरिवर्जयेत्कालम् ।
पिवेन्माहेन्द्रसलिलं-
कौपंप्रास्त्रावणांवुवा ।
कुलत्थान्काकमाचींच
कापोतांश्चसदात्यजेत् ।

शिलाजीत खाने वाला दंड कसरत, धूप, पवन और चित्त को सन्ताप कारक वस्तुओं को त्याग दे, भारी तथा दाहकारी वस्तुओं को भी त्याग दे, जितने दिन शिलाजीत सेवन करे उससे दूने दिन त्याग रक्खे, महेन्द्र (वर्षा सम्बन्धी) या कुआं अथवा झरने का जल पिये, कुलथी मकोय और कबूतर का मास कदाचित् सेवन न करे ।

शिलाजीत की भस्म.

शिलायांगंधतालाभ्यां मातुलुंगरसेनव ।
पुटितं हिशिलाधातुम्रियतेष्टोपलैनच ।
भस्मीभूत-शिलोद्भवंसमतुलंकान्ति च वैक्रां-
तिकंयुक्तं च त्रिफलाकटुत्रयघृतैवल्येन
तुल्यंभवेत् पाण्डोयक्ष्मगदेतथाग्निसदने
मेहेच मूलामये गूल्मप्लीहमदोदरेबहुविधे
शूलेचयोन्यामये

शिलाजीतमें गंधक और हरिताल मिलाय बिजौरे के रस का पुट दे आठ उपलों की अग्नि देवे, इस प्रकार आठ पुट देने से शिलाजीत की भस्म होवे, पीछे शिलाजीत की भस्म की बराबर कान्तलोह की भस्म और वैक्रांतमणि की भस्मो को मिलाकर त्रिफला, त्रिकुटा और घृत के साथ एक कर बलाबल देख कर देवे तो पाण्डु रोग, राजयक्ष्मा, मंदाग्नि, प्रमेह, गुदा की बीमारी, गोला, तापतिल्ली, उदर के घोर विकार शूल और योनिविकार नाश होवें ।

शिलाजीत का सत्व

पिष्टे द्द्रावणवर्गेण साम्लेनगिरिसंभवम् ।
रुध्वामूषोदरे ध्मातं कोकिलैःसत्वमृच्छति
सत्वंमुचेच्छिलाधातु श्चोत्तमंलोहसन्निभम् ॥

शिलाजीत को द्रावणवर्ग और अम्लवर्ग मे घोट कर मूषा में बंद कर भट्टी मे रख कोयलो की अग्निदेने से सत्व निकले, यह लोहे के सदृश निकलता है ।

दूसरा शिलाजीत.

द्वितीयंसोरकाख्यंस्याच्छेतवर्णशिलाजतु
अग्निवर्णप्रदं तद्धिहितंमूत्रामयेषुच ।

दूसरा सोरकाख्य अर्थात् सोरा नाम से

प्रसिद्ध शिलाजीत होता है, वह सफेद रंग का होता है यह अग्निकर्ता और देह का उत्तमवर्ण करे और मूत्ररोग मे हित है।

शिलाजीत के गुण.

पाण्डुरंसिकताकारं कर्पूराभशिलाजतु ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीमेहकामलापाण्डुनाशनम् ॥
एलातोयेनसंमिश्रं सिद्धंसिद्धमुपैतितत् ।
नतस्यमारणं सत्त्वपातनंविहितंबुधः ॥

कुछ कुछ पिलाई लिये कपूर के और वालू समान सोरा शिलाजीत होता है, यह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह, कामला और पाण्डुरोग का नाश करे, इस को इलायची के जल मे मिलाने से शुद्धि होवे इसका मारण और सत्वपातन पण्डितो ने नही कहा।

अशुद्ध शिलाजीत सेवन के दोष

अशुद्धंदाहमूर्च्छादीन्भ्रमपित्तास्रशोणितम्
शिलाजतुप्रकुरुत्ते माद्यमग्नेश्चविड्ग्रहं।

अशुद्ध शिलाजीत, दाह, मूर्छा, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरविकार, मन्दाग्नि और मल का रुकना इन रोगो को करे।

शिलाजीतके विकारों की शान्ति।

मरिचघृतसंयुक्तं सेवये द्दिनसप्तकम्।
शिलाजतुभवदोषं शान्तिमाप्नोतिनिश्चितम्।

कालीमिरिच घृतसयुक्त सात दिन सेवन करे तो शिलाजीत के विकार शान्ति हो इति बृहद् रसराजसुन्दरे शिलाजीतप्रकरणसमाप्तम्

अथसाधारणरसाः

कंपिल्लश्चपलो गौरीपाषाणोनरसारक.
कपर्दीवन्हिजारश्च गिरिसिंदूरहिंगुलौ
केदारश्च गमित्यष्टो साधारणरसाःस्मृताः
रससिद्धिकराःप्रोक्तानागार्जुनपुरस्सरैः॥

कंपिल्ल, चपल गौरीपाषाण (सेमल वा सखिया) नौसादर, कौडी, वन्हिजार, गिरिसिंदूर, हिंगुल, केदारश्ग ये आठ साधारण रस हैं पारद की सिद्धिकर्त्ता नागार्जुन आदि आचार्यो ने कहे हैं।

साधारणरसों का शोधन.

साधारणरसाःसर्वेमातुलुंगार्द्रकाम्बुना।
त्रिवारंभाविताःशुष्का भवेयुर्दोषवर्जिताः॥

सब साधारण रस बिजोरे और अदरख के रसकी तीन २ भावना देकर सुखाने मे दोषरहित अर्थात शुद्ध होते हैं।

कांपिल्ल.

इष्टिकाचूर्णमकाशश्च द्रिकावानम्रभेदनः।
सौराष्ट्रदेशखनिजःसहिकंपिल्लकोमत ॥

ईटके चूर्ण (कुकुष) के सदृश चमकदार, रेचक, सौराष्ट्रदेश (सोरठदेश काठियावार) के देशकी खानिसे उत्पन्न को कपिल्ल (कबीला) कहते हैं।

कांपिल्ल के गुण.

पित्तज्वराध्मानविबंधनिघ्न श्लेष्मोदरार्त्ति
कृमिगुल्मवैरी । व्रणामशूलज्वरशोफहारी
कंपिल्लकोनेकगदापहश्च॥

पित्तज्वर, अफरा, बद्धकोष्ठता, कफविकार, उदररोग कृमिरोग, गोला, व्रणरोग, आमवात, शूलरोग ज्वर, और सूजन इन सब रोगो को नाश करे यह कांपिल्ल अनेक रोग नाश करता है चपल के गुणदोष पहले कह आये हैं इस वास्ते यहां नहीं लिखे।

गौरी पाषाण

गौरीपाषाणक पीतोविकटोहतचूर्णक । रसबधकः.स्निग्धो दोषघ्नोवीर्यकारक.॥

पीला गौरीपाषाण (सेमल) विकट और हतचूर्णक कहलाता है, यह पारेका बद्धक और चिकना है त्रिदोष नाशक और वीर्य्य को बढावे।

गौरीपाषाणकंप्रोक्तोद्विविध.श्वेतपीतक ।
श्वेत शंखसम पोतो दाडिमाभःप्रकीतितः॥
श्वेत.कृत्रिमकःप्रोक्त.पीत.पर्वतसंभव
विषकृत्यकरौतौहि रसकर्मणिपूजितौ॥

दुर्लभःकृष्णवर्णोभोजरामृत्युहरोभुवि ।

गौरीपाषाण [संखिया] दो प्रकार का है. सफेद और पीला तहां सफेद शंखके समान, और पीला अनार के समान इन में सफेद कृत्रिम यानी बनाया हुआ और पीला पर्वत से निकलता है, ये दोनों विष के कर्म [मारणादि] करते है, और पारदकर्म में पूजित हैं यानी सखिया पारेका बद्धक हैं बुढापे और मृत्यु का हर्ता तथा काला सखिया दुर्लभ है ।

जोडा बनाना.

चतुःकर्षरसंग्राह्यां गौरीपाषाणकंसमर्निंबूनी रेणसप्ताहंमर्दयेत्कुशलोभिषक् । घनभावेस मुत्पन्ने तस्मादुद्धृत्यरक्षयेत् । पेटिकांतारजां रम्यानिर्मिमीयमनीषया । पलमात्रस्यमेधावी तन्मध्येविष्टिकांक्षिपेत् । तस्योपरिपुट देयं यथोद्घाटोभवेन्नच ॥ त्रिंशद्वन्योपलैरग्निप्र दद्याद्रहसिस्थित ॥ उक्तताम्रं पलार्द्ध तुवन्हि नाद्रवतांनयेत ॥ द्रवीभूतेचताम्रे चगुंजा- पंचमि तंखलु । निःक्षिपेच्छंखसंक्त पारदं- तस्यमध्यकम् । तत्ताम्र जायतेशुभ्रं शख- कुन्देन्दुसन्निभम् । तत्समंरौप्यकंदत्त्वा- प्रधमेद्द्रवन्हिता जायतेसकलंरौप्यं साध- कानां सुखावहम् ॥

पारा और संखिया दोनो को चार २ कर्ष ले, सात दिन नींबूके रस में खरल करें, जब गाढा हो जाय तब खरल से निकालकर रख छोडे और एक चादी की डिबिया ऐसी बनवावे कि जिस में एक पल पारेकी लुगदी आजावे उसमे पारे और सखियाकी पिठी को भर बन्द कर ऐसी कपर मिट्टी करे कि जिससे डिबिया खुले नहीं, पीछे सुखाकर एकान्त मे ३० आरने उपलोंकी आंच देवे, तो आधी डिबिया समेत सब चांदी होजाय, पीछे दो कर्ष शुद्ध तांबेको आंच मे तपाय पतलाकर उस में पूर्वोक्त डिबिया की पाँच रत्ती चांदी डाले तो वह तावा शंख, कुन्द, चन्द्रमाके समान सफेद हो जाय पीछे सफेद तांबेकी बराबर चादी मिलाय अग्नि में रख खूब धमावे तो सब चांदी होजाय। यह अनुभव करा हुआ है मिथ्या नहीं है ।

नवसादर

नवसारः समाख्यातश्चुल्लिकालवणाभिधः । रसेन्द्रजारणोलोह जारणोजठराग्निकृत् ॥ प्लीहगुल्मास्यशोषघ्नं भुक्तं मांसादिजारणम् । विडाग्र्यं च त्रिदोषघ्नं चुल्लिकालवणंमतम् ॥

नवसादर को चुल्लिका लवण भी कहते हैं, यह पारद और सुवर्णादि'अष्टलोहों के जारणमेंग्रह्य है । इसके खाने से जठराग्नि बढ़े, तापतिल्ली, वायगोला, मुखसूखना बंद हो, भोजन किये मांसादिक जारण होवे, यह पारे के सब विडो में अग्रवर्त्ती है, त्रिदोष को दूर करे ऐसा यह चुल्लीका लवण है ।

उत्पत्ति

करीरपीलुजैःकाष्ठैःपच्यतेचेष्टकोद्भवः । क्षारोसौनवसारःस्यात्चुल्लिकालवणस्मृतम् ॥ मनुष्यसूकराणांसविष्टात.कीटवद्भवेत् । क्षारेषुगणनातस्य स्वर्णशोधनकः परः ॥ इष्टकादहनेजातं पाडुरंलवणंलघु । शंखद्रावेरसेपूज्यामुख्यकर्मणिपारदे ॥ विडद्रव्योपयोगीच क्षारवत्तद्गुणाःस्मृता. ।

करीर और पीलू की लकडी से ईटका खार पकाने से नोसादर खार होता है, उसी को चुल्लिका लवण कहते हैं, यह मनुष्य और सूकर के विष्टा से कीट के समान ईटों के पजावे मे होता है, इसकी क्षारोंमे गणना है । यह सुवर्ण का शोधन करता है, और ईंटों के पकाने से पीले रंग का लवण होता है सो हलका है, शखद्राव रसमें पड़ता है और मुख्य पारे के कर्म मे लिया जाता है,-बिड द्रव्य (पारे की बद्धक वस्तु) का उपयोगी है इसके क्षारों के समान गुण हैं ।

अग्निजार

सामुद्रेणाग्निनातप्तोजरायुर्वहिरुत्सृतः ।
संशुष्कोभानुतापेनसोग्निजारइतिस्मृतः ॥
जराभंदहनस्यापिपिच्छलंसागरप्लवम् ।
जरायुतश्चतुर्वर्णश्रेष्ठंततसर्वेलोहितम् ॥

अग्निजार समुद्र में वडवाग्नि के जोर से तप्त होकर जरायु के सदृश पदार्थ वहार को आता है और सूर्य की धूप से सूख जाता है, उसी को अग्निजार कहते हैं अथवा समुद्र मे जरायु के समान अग्नि के तेज से पिच्छल तथा समुद्र मे तैरने वाला ऐसा पदार्थ उत्पन्न होता है, यह जरायु चारवर्ण का होता है जिनमे ताम्रवर्ण का उत्तम होता है।

अग्निजार के गुण

स्यादग्निजारः कटुरुष्णवीर्यः समीरहृद्रोग कफापहश्च । पित्तप्रदःसोधिकमन्निपात शूलाग्निशीतामयनाशकश्च ।

अग्निजार तीखा, उष्णवीर्य, वात और कफरोगनाशक, पित्त बढ़ाने वाला, सन्निपात, शूल, मंदाग्नि और शीत-सम्बन्धी विकारो का नाशक है ।

अब्धितीरेग्निनक्रस्यजरायुःशुष्कतांगत ।
अग्निजारस्तुसप्रोक्त.सक्षारोजारणेहित ॥
अग्निजारस्त्रिदोषघ्नोधनुर्वातादिवातनुत् ।
वर्द्धनोरसवीर्यस्यदीपनोजारणस्तथा ।
तदब्धिक्षारसशुद्धं तस्माच्छुद्धिर्नशस्यते ॥

समुद्र किनारे अग्नि नक्र का जरायु सूखकर बाहर आ जाता है उसको अग्निजार कहते हैं, यह क्षार जारणकर्म में उत्तम है, अग्निजार त्रिदोषनाशक, धनुर्वात (जिससे कमान के सदृश देह हो जावे) इत्यादि वातरोगों को दूर करे । रस वीर्य को बढ़ावे, दीपन और जारण कर्ता । अग्निजार समुद्र के खारसे स्वय शुद्ध है इसी कारण इसकी शुद्धि नहीं कही ।

समुद्र फेन

समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखनःशीतलःसरः ।
कर्णस्रावरुजागुल्महरःपाचनदीपन ॥
अशुद्धःसकरोत्यंगभंगंतस्माद्विशोधयेत् ।

समुद्र फेन नेत्रों को हित, सर, लेखन, कान के बहने और पेट के गोले को दूर करे, जठराग्नि को दीपन करे, अशुद्ध अंगभंग करे, इसलिये शुद्ध जरूर करले ।

समुद्र फेन की शुद्धि

समुद्रफेन.संपिष्टोनिंबुतोयेनशुद्धति ।

समुद्र फेन नीबू के रस में पीसने से शुद्ध होता है।

बोल

बोलगंधरसप्राणमिन्द्रगोपरसा.समाः ।
बोलंतुत्रिविधंप्रोक्तंरक्तंश्यामंमनुष्यजम् ॥

बोल के गधर सप्राण, इन्द्रगोपरस, रस, ये नाम हैं, बोल तीन प्रकार का है काला, लाल और मनुष्यज ।

लाल बोल के लक्षण

बोलरक्तहरंशीतंमेध्यंदीपनपाचनम् ।
मधुरंकटुकंतिक्तंग्रहस्वेदत्रिदोषनुत् ॥
ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नंगर्भाशयविशोधनम् ।
चक्षुष्यंचसरप्रोक्तरक्तबोलंभिषग्वरैः ॥

लालबोल बहते रुधिर को रोकने वाला, शीतल, पवित्र, दीपन, पाचन, मीठा, तीखा, कड़वा, ग्रह, स्वेद, (पसीना) और त्रिदोष को करे, ज्वर, मृगी, कोढ का नाश करे, गर्भाशय का शोधन करे नेत्रो को हित और दस्तावर है इसको बीजाबोल कहते हैं ।

काले बोल के लक्षण

श्यामबोलतीक्ष्णगंधंदद्रुकुष्ठविषापहम् ।
भग्नास्थिसधिजननंत्रिदोषशमनहिमं ॥
धातुकांतिवय स्थैर्यबलौजोवृद्धिकारकम् ।

कालाबोल-तीक्ष्ण गंधवाला, दाद, खुजली

और विषके विकारों का नाशक है। टूटी हड्डी जोड़ने वाला, त्रिदोष नाशक शीतल, धातु, कान्ति और अवस्था को स्थिर करता है, बल और ओज इनका बढाने वाला इसको मुसधर कहते हैं। दूसरा मानुषवाले जो मनुष्य के रुधिर से बनता है इसको भाषा मे मिमियाई कहते हैं इसके गुण भी श्याम बोल के समान हैं कोई श्याम बोल कोही मिमियाई कहते हैं परन्तु वह मिमियाई नहीं है।

गुग्गुल

भगवन्गुग्गुलोर्योगंयथावीर्यंयथागुणम्।
वक्तुमर्हसियोगेपुयेपुचायंप्रशस्यते ॥
एवमुक्तःसशिष्येणप्रत्युवाचमहातपाः।
मरुद्भूमौप्रजान्तेप्रायशःसुरपादपाः ॥
भानोर्मयूखैःसंतप्ताग्रीष्मेमुंचन्तिगुग्गुलुम्।
हिमार्त्तिदेचहेमन्तेविधिवत्तत्समाहरेत् ॥
जातरूपनिभंशुभ्रंपद्मरागनिभंक्वचित्।
क्वचिन्महिषसंकाशंयत्तदैवतवल्लभम् ॥
विधानतस्यविधिवन्त्रिबोधगदतोमम।

अत्रिऋषि का शिष्य पूंछता है कि हे भगवन्! मेरे आगे गूगल के योग, वीर्य और गुण वर्णन कीजिये, और जिन योगों मे यह प्रशस्त है सोभी कहो उसके वचन सुन महातपा ऋषि कहते हैं कि गुगल के वृक्ष मारवाड देश मे होते हैं, वो ग्रीष्म मे सूर्य की गर्मी से तप्त होकर गुगल छोडते हैं उसको सरदी के दिनों में विधि पूर्वक ग्रहण करना चाहिये, वह गूगल चादी वा पुखराजमणि तथा भैंस के नेत्रो के समान कान्ति वाला होता है यह यक्ष देवताओ का परम प्रिय है उसके विधान को श्रवण कर।

गुगल के गुण और शोधनविधि

त्रिदोषशमनोवृष्यःस्निग्धोबृंहणदीपनः॥
गुग्गुलुःकटुकःपाकेबलवर्णप्रवर्द्धनः।
आयुष्यःश्रीकरःपुण्यःस्मृतिमेधाविवर्द्धनी
पापप्रशमनः श्रेष्ठः शुक्रार्त्तवकरोमतः।
वर्णगंधरसोपेतंगुग्गुलुंमात्रयायुतम् ॥
भेषजैःसहनिःक्वाथ्ययथाव्याधि हरैःपृथक्
मात्रावशिष्ठंतंज्ञात्वागालयेच्छुक्लवाससा ॥
मृन्मयेहेमपात्रेचस्फाटिकेराजतेपिवा।
पुण्येतिथिपुनस्तत्र्क्षीणाहारसमन्वितः॥
हुताग्निःपर्युपासीतदेवान्विप्रांश्चभक्तितः।
प्रविश्यचशुभाकीर्णंमदिरंनिवसेत्स्फुटम्॥

गुग्गल त्रिदोश को शमन कर्ता, वृष्य (वीर्य को बढ़ानेवाला) और चिकना है, बृहण, दीपन और पचने के समय तीखा है बल और वर्ण को बढ़ाने वाला, आयु और शोभा को देने वाला पुण्य, स्मृति तथा मेधा को बढावे, पापो को दूर करै वीर्य और आतर्व करे, यह वर्ण गंध युक्त अनेक रोग हरनेवाली औषधियो के काढे के साथ औटाने से शुद्ध हो होता है, जब चतुर्थांश जल शेष रहे तब उतारकर सफेद महीन वस्त्र मे छान लेवे और उसको मिट्टी स्फटिक वा चादी के पात्र मे रख छोडे, फिर शुभ तिथि और और नक्षत्र मे अग्नि देवता और ब्राह्मणो का पूजन कर सेवन का प्रारम्भ करे, और उत्तम स्थान मे निवास करे।

अन्य विधि

माहिषंगुग्गुलुंशुभ्रं गृहीत्वापलपंचकम्।
प्रस्थमात्रेतुगोमूत्रे क्षिप्त्वासविपचेद्भिषक्॥
दोलायंत्रस्यविधिनापादशेषंसमाहरेत्।
अनेनविधिनासम्यग्गुग्गुलुशुद्धताव्रजेत्॥
सर्वकर्मसुसंयोज्योयोगेचफलदायकः।

उत्तम भैंसागूल ५ पल (२० तोले) ले उसकी पोटली बांध एक पात्र में एक प्रस्थ (१ सेर) गोमूत्र भर उसमे पोटली दोलायत्र की विधि से लटकाय देवे, फिर मदाग्नि से पचावे जब गोमूत्र चतुर्थांश शेष रहे तब चूल्हे से उतार लेवे पीछे पोटली को खोल कर धूप मे सुखा लेवे यह सफेद होजायगा, इसके ककर और तिनके

बीन कर साफ करे। इस प्रकार गूगल शुद्ध होती है इसको सर्व कर्मा में योजना करे, जिस २ योग मे यह गूगल पडे उसमे लिखे गुणों को करे है। यद्यपि रसकपूर बनाने और खाने की विधि पारे के प्रकरण मे लिख आये हैं, तथापि नवीन पाठ होने से यहां भी लिखते हैं।

रसकपूर की विधि

पारदःस्फटिकाचैवहीराकासीसमेवच।
सैंधवंचसमांशेनविंशांशेनवसादरम्॥
खल्वेविमर्द्यसर्वाणिकुमारीरसभावना।
क्रमवृद्धाग्निनापक्वोरसःकर्पूरसंज्ञक.॥

पारा, फिटकरी, हीरा कसीस और सैंधा निमक सब को समान भाग ले, सबका बीसवां भाग नवसादर ले, सबको खरल मे ग्वारपट्ठे के रस की भावना दें सुखा कर सीसी मे भर क्रम से मद मध्य और तेज अग्नि दे तो रसकपूर नामक रस बन कर तैयार हो।

अन्य विधि

गैरिकतुवरीकटुकासैंधवगंडीरज' कुडवम्।
प्रत्येकदढहडयांकृत्वारसभूयरजदेयम्॥
कूडवमिताथतदूर्ध्वंदेयाहडीतथास्यमुखे।
अथतत्सधेमु द्रांकृत्वा(तदधोहुताशनोज्वाल्य
अर्द्धमणपट्कप्रमितैर्दारुभिरूनातिदुर्बल—
स्थूलैःअग्निक्रमेणदद्याद्गुरुदर्शितवर्त्मनाद्युनि
शमृतन्नुततोयंत्रबराद्युत्तार्यकर्पूरसन्निभ-
सूतम् आदायकाचकुंभेनिधायनवसादरं-
दध्यात्॥ संमर्द्यचाथकाष्ठैरर्धमणसमितैः
पचेद्भस्म्। चुल्लीहंडिकमध्येवितस्तिचतुरगु-
लावकाशंतुकुर्यात्क्रमेणतदथ प्रज्वाल्यमध्य-
मचाग्नि। धवलमथोपरिलग्नयुक्त्यासगृह्य-
रक्षयेद्यत्नात्॥

गेरू, फिटकरी, कुटकी, सैंधा निमक और ईंट का चूर्ण इनको पाव २ भरले हडिया में भर उसमें पारा रक्खे, पीछे पावभर पूर्वोक्त चूर्ण को पारे के ऊपर रखकर दूसरी हाँडी से उसका मुख बद कर संधियों का अच्छी तरह लेप कर बंद करदे, पीछे भट्टी पर चढ़ाय ३ मन लकडी वा उपलो की अग्नि गुरु की बताई हुई रीति से रात दिन देवे, तो रसकपूर बनकर तयार हो फिर अचकसे उन हांडियों को उतार मुँह खोल ऊपर की हांडी मे जो सफेद रसकपूर लग रहा हो उसको निकाल लेवे, पीछे उसको बराबर का नवसादर डालकर पीसे फिर कांच की कुप्पी (शीशी) मे भर कर बीस सेर लकडी की आच देवे, इस प्रकार कि हांडी और अग्नि का एक बालिश्त और चार अंगुल का फासिला रहे, इस प्रकार मध्यमाग्नि दे जब शीतल हो जाय तब ऊपर जो चंद्रमा के समान सफेद भस्म लग रही हो उसको निकाल यत्न से रख छोडे।

रसकपूर के अनुपान

वल्लवल्लार्द्धमानेनगुडैजीर्णैःसमंददेत्।
यथोचितानुपानेनसर्वकर्मसुयोजयेत्॥
दुग्धोदनंतुपथ्यंदेयंचास्मिंश्चतांबूलम्।
हरतिसमस्तान्रोगान्कर्पूराख्यारसोनृणाम्॥

रसकपूर तीन वा डेढ़ रत्ती के प्रमाण पुरान गुड के साथ खाने को देवें, अथवा रोगोक्त अनुपान के साथ देवे और इसके ऊपर पान का बीडा खाय तथा दूध भात का पथ्य दे तो सपूर्ण रोगो का नाश करे।

रत्नोपरत्नों की उत्पत्ति

मणयोपिचविज्ञेयाःसूतबधस्यकारका'।
देहस्यधारकान्नृणांजराव्यधिविनाशक.॥

मणि (रत्न) भी पारद के बधन कर्त्ता, देह की धारणकर्त्ता, बुढापे और व्याधि के दूर कर्त्ता होती है।

रत्नों की निरुक्ति

धनार्थिनोजनाःसर्वेरमंतेस्मिन्नतीवयत्।
अतोरत्नमितिप्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदैः॥

धनार्थी सब मनुष्य इसमें रमण करते हैं

और इच्छा करते हैं इसी से शब्द शास्त्र जानने उसको रत्न कहते हैं।

रत्नों के नाम

रत्नक्लीवेमणिःपुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते।
तत्त्पाषाणभेदोस्तिवज्रादिश्चयथोच्यते॥

रत्नशब्द नपुंसकलिंग और मणिपुलिंग तथा स्त्रीलिंग है, रत्न पाषाण के अनेक भेदो से हीरा पन्नादि कहाते हैं।

नवरत्नों की गणना

वज्रंविद्रुममौक्तिकंमरकतंवैदूर्य्यंगोमेदकम् माणिक्यंहरिनीलपुष्पदृशदारत्नानिनाम्ना नव। यान्यन्यान्यपिसन्तिकानिचिदिहत्रैलोक्य सीम्निस्फुट नाम्नातान्युपरत्नसंज्ञकत मान्याहुः परीक्षाकृतः॥

हीरा, मूंगा, मोती, पन्ना, वैदूर्यमणि गोमेद माणिक, नीलम, पुखराज ये नौ प्रकार के पत्थर नवरत्न[१] के नाम से विख्यांत हैं इस पृथ्वी पर और जो रत्न के समान पत्थर मिलते हैं उन को जौहरी लोग उपन्न कहते हैं।

नवग्रहों के नवरत्न

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणितादर्यंचपुष्पंभिदुरंचनीलम्। गोमेदकंचाथविदूरयंचक्रमेण रत्नानिनवग्रहाणाम्॥

माणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद और वैदूर्य से सूर्यादि नवग्रहों नवरत्न कहाते हैं।

दूसरा प्रकार

मुक्ताफलहीरकं चवैदूर्यं पद्मरागकम्।
पुष्परागंचगोमेदनीलंगारुत्मतंतथा॥
प्रवालमुक्तान्येतान्येतानिमहारत्नानिवैनव।

१ द्विपहयवनितादीनास्वगुणविशेषेणरत्नशब्दोस्ति। इहतूपलरत्नानामधिकारोवज्रपूर्वाणाम्॥

मोती, हीरा, वैदूर्य, पद्मराग, पुखराज, गोमेद, नीलम, पन्ना, मूंगा ये मोती से आदि ले महारत्न हैं।

तीसरा प्रकार

पुंवज्रंगरुडोद्गारंमाणिक्यवासवोपलम्॥
वैदूर्यपुष्पगोमेदमौक्तिकंसप्रवालकम्॥
एतानिनवरत्नानिसदृशानिसुधारसैः।

हीरा, पन्ना, माणिक, इन्द्रमणि, वैदूर्य, पुखराज, गोमेद, मोती, मूंगा ये अमृत के तुल्य नवरत्न हैं।

मणिवर्ग

वैकान्त.सूर्यकांतश्चहीरकंमौक्तिकंतथा।
चन्द्रकान्तस्तथौचवराजावर्त्तस्तथैव च॥
गरुडोद्गारकश्चैवज्ञातव्यामणयोअमी।
पुष्परागमहानीलंपद्मरागंप्रवालकम्॥
वैदूर्यंचतथानीलमेतेचमणयोमताः।

वैक्रान्त, सूर्यकान्त, हीरा, मोती, चन्द्रकान्त राजावर्त, पन्ना, पुखराज, महानीलम, पद्मराग (माणिक) मूंगा, वैदूर्य, नीलमणि ये सब मणिवर्ग हैं।

रत्नोपरत्नभेद[१]

उपरत्नानिचत्वारिमहारत्नानिपचधा।
प्रवालंगरुडोद्गारंवैदूर्यंपुष्परागकम्॥
उपरत्नंसमाख्यातंरत्नशास्त्राथकोविदैः।

चार उपरत्न और पांच महारत्न हैं। मूंगा पन्ना, वैदूर्य और पुखराज इन चारोको रत्नशास्त्र के ज्ञाता उपरत्न कहते हैं, बाकी, हीरा, पन्ना, गोमोद (पीलीमणि) नीलम और मोती ये पाच महारत्न हैं।

१ वज्रेन्द्रनीलमरकतकर्के तनपद्यरागरुधिराख्याः। वैदूर्यपुलेकविमलकराजमणिस्फटिकशशिकाताः॥ सोगंधिक गोमेदकशखमहानीलपुष्परागाख्या। ब्रह्ममणिज्योतीरस सस्यकमुक्ताप्रवालानि

मणिरस

राजावर्त्तंचपुष्पचमौक्तिकंविद्रमंतथा. ।
वैक्रान्तेनसमायुक्ताएतेमणिरसाःस्मृताः ।

राजावर्त, पुखराज, मोती, मूंगा, वैक्रान्त संयुक्त सब मणिरस कहाते हैं। यह रत्नपद्धतिमें लिखा है।

सर्व रत्न शोधनकी आवश्यकता

रत्नोपरत्नान्येतानिशोधनीयानियत्नतः
अशुद्धानितुकुर्वन्तिव्रणान्रोगांश्चतन्वते ।

जितने रत्न और उपरत्न हैं उनका यत्नपूर्वक शोधन, करे, क्योंकि अशुद्ध रत्न और उपरत्न अवगुण और रोग करते हैं।

सर्वरत्न शोधन

शुद्धत्यम्लेनमाणिक्यंजयत्यामौक्तिकतथा ॥
विद्रुमंक्षारवर्गेणताक्ष्यंगोदुग्धतःशुचि ॥
पुष्परागंसैंधवेनकुलित्थकाथसंयुते ।
तंदुलीयजलेवज्रंनीलंनीलीरसेनच ।
रोचनाद्भिश्चगोमेदंवैदूर्यंत्रिफलाजलैः ।
एतान्येतेपुसंस्विन्नान्याशुशुध्यंतिदोलया ॥

माणिक अम्लवर्ग में शुद्ध होता है, मोती जयती (अरनी के रस मे) मूंगा दुग्धवर्ग में पन्ना गोदुग्ध मे, पुखराज सेंधा निमक मिले कुलथी के काढे में,हीरा चौलाई के रस में,नीलम नील के रस में गोमेद गोरोचन के जल में और वैदूर्य त्रिफला के काढे में, शुद्ध होता है। इन रत्नो की कहे हुए रसों में दोलायत्र द्वारा स्वेदन करने से शुद्धि होती है।

हीराआदिरत्नों के मारण में दोष,

नहन्याद्धीरकादीनिनवरत्नानिबुद्धिमान् ।
महामौल्यानितेपातुवधाद्रौरवमृच्छति ॥
यद्वातद्वनोजाततज्जातीयानिलक्षणैः ।
स्वल्पमौल्यानितेपान्तुवधेनास्तिहिपातकम्

बुद्धिमान् पुरुष हीरकादि नवरत्नों का मरण न करे, ये बहुमूल्य होते हैं, इनके मारने से रौरव नरक में पडता है। अथवा कोई मनुष्य कहते हैं कि हीरा आदि के बदले पृथ्वी में होने वाले उसी जाति के रत्न देखकर मारण करने से पाप नहीं होता।

हीराविना और रत्नों का मारण

लकुचद्रावसंपिष्टैःशिलातालकगधकैः ।
वज्रविनान्यरत्नानिम्रियंतेष्टपुटैःखलु ॥

मनसिल, गधक, और हरिताल को समान भाग ले वढहल के रस में बीस पुट दे तो आठ पुःट से हीरा बिना सब रत्नों की भस्म होवे।

दूसरी विधि

हिंगुसैंधवसंयुक्तेपात्काथेकुलत्थके ।
रत्नानांसप्तसप्तानांभवेद्भस्मांत्रसप्तधा ॥

सात रत्न और सात उप रत्नों को कुलथी के काढे में सैंधानमक और हींग डालकर २१ पुट देवे तो भस्म होवे।

तीसरी विधि

माक्षिकंगंधकंतालंदरदंचमनःशिला ।
पारदंटकणंदत्त्वायासमकेप्रपपेयेत् ॥
रत्नानिचाथसंपिष्यद्दढंगजपुटेपचेत् ।
मारणसर्वरत्नानापटेनैकेनजायते ॥

सोना मक्खी, गधक, हरिताल, हींगुल, मनिसल, पारा और सुहागे को एकत्र कर उसकी बराबर रत्न ले, गजपुट दे तो सब रत्नो की एक ही पुट से भस्म हो जावे।

रत्नोंपरत्नों के गुण

रत्नानिचोपरत्नानिचचक्षुष्याणिसराणिच ।
शीतलानिकषायाणिमधुराणिशुभानिच ॥
घृतानिमगलान्याशुतुष्टिपुष्टिकरानिच ।
ग्रहालक्ष्मीविपद्वेडपापसंतापकादिकम् ॥
यक्ष्मापाण्डुप्रमेहार्शःकासंश्वासंभगंदरम् ।
ज्वरंविसर्पकुष्टार्तिशूलकृच्छ्रव्रणामयान् ॥
घ्नंत्यायुष्यंयशःकीर्तिपुण्यंचवर्द्धयन्तिहि ॥

सब रत्न और उपरत्नों की भस्म नेत्रों को

आनंददायी, दस्तावर, शीतल, कपैली, मीठी और शुभ है। इन रत्नों और उप रत्नों के धारण करने से तत्काल मगलतुष्ट और पुष्टि होती है। नवग्रह अलक्ष्मी विपबाधा पाप और सताप का नाश करे। तथा खड्डे, पिलिया, प्रमेह, बवासीर, खासी, श्वास, भगदर, ज्वर, विसर्प, कुष्ठ, पांडो, शूल, मूत्रकृच्छ्र और उरग नाश करे आयु, यश, कीर्ति और पुण्य को बढाते हैं।

हीरा की उत्पत्ति[1]

दधीच्यस्थ्यन्य.समुत्पन्ना पतिताश्चकणःक्षितौ
विकीर्णास्तेतुवज्राख्याभजन्तेतच्चतुर्विधम् ॥

पहले जब विश्व कर्मा ने इन्द्र के निमित्त वृतासुर के मारने को दधीच ऋषी की हड्डी से वज्र बनाया था, उसके बनाने मे जो हड्डियों के कण पृथ्वी पर गिरे वही काल पाकर हीरा के नाम से विख्यात हो गये, वह हीरा चार प्रकार का है।

अन्यक्रम

पूर्वमंदरमथनाज्जलनिधौप्रत्युद्गतायासुधा
तांप्राय.पिवतांसुरासुरगणानामाननाद्दिव।
येभूमौपतिताविकर्त्तनकरव्रातैःपुनःशोपिता
स्तेवज्राण्यभवन्भवेनकथितंपूर्वमृडानींप्रति

पहले देवता और राक्षसों ने क्षीरसागर में मंदराचल पर्वत को डालकर मथन किया था उस समय अमृत उत्पन्न हुआ, उसको जब देव और दानव पीने लगे उस समय उनके मुख से जो अमृत की बूदे पृथ्वी पर गिरी वेही सूर्य की किरणों से सूख कर वज्र (हीरा) हो गयी यह महादेव जी ने पार्वती के प्रति कहा है।

अज्ञान से रत्नों का मौल्य कहने में दोष

अज्ञानात्कुरुतेमौल्येसन्मुक्तामणिहीरकान्
इहस्यदु.खितोऽमुत्ररौरवंनरकव्रजेत् ॥

जो मनुष्य, अज्ञान से मोती, मूंगा मणि, हीरा आदिका मोल कहता है वह इस लोक मे दुःख और परलोक में रौरव नरक पाता है।

अन्य प्रमाण

अज्ञानात्कथयेद्यस्तुरत्नमौल्यंकदाचन।
कुर्य्याच्चनिग्रंहसम्यङमंडलीतस्यविक्रयी ॥
अधमस्योत्तमंमौल्यमुत्तमस्याधमंतथा।
स्नेहान्मोहाद्भयात्कुर्युःसद्यःकुष्ठभवेन्मुखे ॥

जो मनुष्य अज्ञान से रत्नों का मोल कहता है, उसको राजा दंड देवे, और जो अधम रत्न का मोल उत्तम, तथा उत्तम का अधम प्यार से अथवा मोह से किवा भय से कहे उसके मुखमें तत्काल कोढ़ होवे।

रत्न परीक्षा

ग्राहकोभक्तिपूर्वेणसमाहूयविचक्षणम्।
आसनैर्गंधमाल्याद्यैस्तंवैद्यंतुप्रपूजयेत् ॥
वीक्ष्यसम्यग्गुणान्दोपान्रत्नानांचविशा-
रद.।दांपत्यकुरुसंज्ञांचलक्ष्मेकैकलन्निधौ ॥

रत्ना का ग्राहक भक्ति पूर्वक रत्न परीक्षा का बुलावे, और आसन गध (चंदन) माला आदि से पूजन पीछे उसको रत्न निकालकर देवे, और कहे कि इसकी परीक्षा कीजिये, तब वैद्य उसको सभीपसे अच्छी तरह गुण दोष देख कर और मन में निश्चय कर मौल कहे।

लक्षयेद्वैद्यशास्त्रज्ञोशाणोत्कर्षणालेखनैः।
लोहानियानिसर्वाणिसर्वरत्नानियानिच ॥

शास्त्रज्ञाता वैद्य सर्व लोह (चांदी सोना आदि) की और सब रत्नों की परीक्षा कसौटी पर घिसकर वा शान पर घिस कर करे।

तानिवज्रेणलेख्यानिसचतेन विलिख्यते।
अभेद्यमन्यजातीनांलोहवज्राग्निसंन्निधौ ॥
नाचान्यभेदकंतस्यवज्रंवज्रेणभिद्यते।

संपूर्ण लोह और रत्नो को हीरा से घिस कर परीक्षा करे और हीरा को हीरा ही से क्योकि सम्पूर्ण जाति के लोहो से तथा अग्नि से भी

[1]रत्नानामुत्पत्तिप्रदर्शनार्थमतभेदमार्चाणाम्।
रत्नानिबलीदैत्याद्दधीचतोऽन्येवदतिजातानि ।
केचिद्भुवः स्वभावाद्वैचित्र्य प्राहुरुपनाम्।

हीरा तोड़ने से नहीं आता इसको तोड़ने वाली और वस्तु नहीं यह अपने आप ही से टूटता है।

हीरा की चार जाति

वज्रं जातिविशेषेणचतुर्वर्णसमन्वितम। प्रयत्नेनचतद्वर्णंप्रविचार्यपृथकपृथक ॥ सुस्निग्धः स्फटिकप्रभः शशिकलाशङ्खच्छविर्ब्राह्मणो ह्यारकद्युतिमत्प्रियकुसुमच्छायंतथाक्षत्रियः। वैश्यश्चासितपीतवर्णं रुधिरौघोवासदीप्तिर्भवेत्। शुद्धः कृष्णमुखस्तथाविरिंचितोवर्णैश्चतुर्भिः शुभैः। ख्यातमेतद्विशेषेणवज्राणां वर्णलक्षणम् ॥

हीरा जाति की विशेषता करके और चार प्रकार के रग मे उनके वर्ण जुदे २ विचारने चाहिए, जो हीरा चिकना और फटिक मणि के समान कांति वाला तथा शख के समान सफेद होवे, वह ब्राह्मण वर्ण कहलाता है। और जो रग मे लाल तथा प्रियुंग के फूल के समान हो, उसे क्षत्रिय वर्ण जानना। कुछ काला तथा पीला तथा रुधिर के समान दीप्ति वाला हो उसे वैश्यवर्ण और जो शुद्ध काले मुख का होवे वह शूद्रवर्ण है, इन चारो वर्णों करके हीरा शुभ कहा है। ये हीरा के वर्ण लक्षण हैं।

अन्य प्रमाण

श्वेतंद्विजाभिधंरक्तंक्षत्रियाख्यंतदीरितम्।
पीतंवैश्याख्यमुदितंकृष्णंस्याच्छूद्रसञ्ज्ञकम् ॥

सफेद हीरा ब्राह्मण, लाल क्षत्रिय, पीला वैश्य और काले रंग का शूद्र संज्ञक होता है।

हीरा के धारण करने का फल

धारणावत्फलंपुंसांकथयामि पृथक् पृथक्।
सप्तजन्मांतरेविप्रोविप्रवज्रस्यधारणात् ॥
लभेद्वीर्यं महत्त्वंचदुर्जयोजयमाप्नुयात्।
सर्वसप्तांगसपूर्णःक्षत्रवज्रस्यधारणात् ॥
प्रगल्भ कुशलोदक्षोवलवान्धनसंग्रही।
प्राप्नोतिफलितंचैववैश्यवज्रस्यधारणात् ॥
वहूपार्जितवित्तेनधनवांश्चसमृद्धिमान्।
साधु परोपकारीचशूद्रवज्रस्यधारणात् ॥

अब इनके धारण का जुदा-जुदा फल कहते हैं, चारो वेदो के अनुष्ठान करने से जो फल होता है, वही फल ब्राह्मण जाति के हीराको धारण करने से ब्राह्मण को प्राप्त होता है। क्षत्री वर्ण का हीरा धारण करने से महत्त्व और दुर्जयजय पाव और सम्पूर्ण सातो अगयुक्त हो। बुद्धिमान् चतुर, बली धनका सग्रहकर्ता, वैश्यवर्ण हीरा धारण करने से होवे। अपने भुजोपार्जित धनसे धनवान्, साधु, स्वभाव वाला और परोपकारी शूद्र जातिका हीरा धारण करने वाला होवे।

हीरा के जाति-भेद से गुण.

विप्रोरसापनेप्रोक्त. सर्वसिद्धिप्रदायक.।
क्षत्रियोव्याधिविध्वंसीजरामृत्युहरः परः ॥
वैश्योधनप्रदःप्रोक्तोतथादेहस्यदार्ढ्यकृत्।
शूद्रोनाशयतिव्याधीन्वयःस्तंभंकरोतिच ॥
स्त्रीपुंनपुंसकाश्चेतिलक्षणीयाश्चलक्षणैः।

ब्राह्मण हीरा रसायन क्रिया मे सर्व सिद्धि दाता है। क्षत्रियसंपूर्ण व्याधि, बुढापे, और मृत्यु का हरण कर्ता है। वैश्याजाति हीरा धनदाता और देहको दृढ़ करता है। शूद्राजातिय सम्पूर्ण व्याधियो को दूर करे तथा देह का स्तंभन करे। हीराके लक्षणो मे स्त्री नपुंसक और पुरुष विशेष जानने चाहिये।

वज्रंचत्रिविधंप्रोक्तंनरोनारीनपुंसकम्।
पूर्वंपूर्वमिह श्रेष्ठरसवीर्यविपाकतः

हीरा तीन प्रकार का है, स्त्री पुरुष और नपुंसक इन मे क्रम से रस, वीर्य और विपाक के भेद से अधिक गुण हैं।

पुरुषसंज्ञक हीरा के गुण.

अष्टास्रंचाष्टफलकषट्कोणमतिभासुरम्।
अम्बुदेन्दुधनुर्वारितरपुंवज्रमुच्यते ॥

जो हीरा अष्टधार और जिससे आठ जगह फलक (अनीदार) हो तथा छ कोने और

अत्यन्त चमकदार हों, जो बहुत और इद्र धनुषके समान चमके तथा जलकी सी आभा वाला हो उस पुरुष हीरा कहते है।

स्त्री और नपुंसक हीरा के गुण

तदेवचिपटाकारं स्त्री वज्र वर्तुलायतम्।
वर्त्तुलकुटकोणाग्रंकिंचिदुरुनपुंसकम्॥
लोपुंनपुंसकेवज्रंयोग्यस्त्री पुं नपुंसके॥
व्यत्ययान्नवफलदम्पुम्वज्रणविनाक्वचित्।

कुछ चपटा और गोल हीरा स्त्री सञ्ज्ञक है, और जो गोल हो और कोने मे तरे हो तथ भारी हो उसे नपुंसक जानना ये तीनों प्रकार के हीराक्रम से स्त्री, पुरुष तथा नपुंसकों को यथाक्रम देनेचाहिये। जैसे पुरुष को पुरुष इत्या द, हीराके विपरीत और हीरा देनेसे गुण नहीं करता अर्थात् पुरुषको स्त्री सञ्ज्ञक और स्त्री को नपुंसक देने से गुण नहीं करता परन्तु पुरुप सञ्ज्ञक सब को गुण करता।

अन्य मतान्तर.

सुवृत्ताःफलसंपूर्णास्तेजोयुक्ताबृहत्तराः। पुरुषाहीरकास्तेच रेखाबिन्दुविवर्जितः। रेखाबिन्दुसमायुक्ताः षडस्रास्तेस्त्रियःस्मृताः
त्रिकोणाश्चसुदीर्घाश्चविज्ञेयास्तेनपुंसका॥
सर्वेपुपुरुषाःश्रेष्ठावेधकारसवंधकाः।

जो हीरा गोल, गांठदार, तेजस्वरूपी, बडा और रेखा तथा बिन्दुरहित हो वह पुरुष सञ्ज्ञक है; जो रेखा विन्दुयुक्त तथा षट्कोण होवे उसे स्त्री संज्ञक जानना। जो त्रिकोण तथा लम्बा हो वह नपुंसक कहलाता है। इन सब मे पुरुष सञ्ज्ञक श्रेष्ठ है, यह पारेका बद्धक और बेधक है।

हीराओं के गुण और दोष।

गाढस्त्रासश्चबिन्दुश्चरेखाचजलगर्भताः।
सर्वरत्नेष्वमीपंचदोषाः साधारणामता॥
क्षेत्रतोयभवादोषारत्नेपुनलंगतिते।

गाढ, त्रास, विन्दु, रेखा और जल-गर्भता ये पांचदोष सपूर्ण रत्नों में साधारण होते हैं और क्षेत्र तथा जलक दोष रत्नों को नहीं लगते।

अन्य मतान्तर।

दोषाःपचगुणा पंचच्छायाश्चैवचतुर्विधाः॥
मलोबिन्दुर्यवोरेखाभवेत्काकपदंतथा॥
दोषाःपंचसमुद्दिष्टाः शुभाशुभफलप्रदाः।
मूल्यंद्वादशकप्रोक्तंवज्रस्यापिमहात्मनः॥
धारासूत्रंस्थितकोणे वज्रमध्येभवेद्यदि।
तत्स्थानेमङ्गलंप्रोक्तंरत्नज्ञानविशारदैः॥ वह्नेर्भयभवेन्मध्ये तीक्ष्णधारासुदंष्ट्रिणः। रत्नविह्निरिदंज्ञेयतथाकोणद्वयाश्रितम्॥

हीरा में ५ दोष और ५ गुण हैं। और चार प्रकार की छाया होती है, मल; बिन्दु, यवरेखा, और काकपद ये ५ दोप हैं ये शुभ अशुभ फल देते हैं। और हीराका मोल भी बारह प्रकार का है, जिस हीरेके कोण मे धारया सूतसा प्रतीत होवे अथवा एक लक्षण बीच मे होवे तो उस स्थान मे मंगल होवे, ऐसा रत्नों के जाननेवाले कहते हैं। और रत्न के बीच में सर्पाकार तीखी रेखा होवे तो, उसे पास रखने मे अग्नि का भय हो, ऐसे रत्नज्ञाता (जौहरी) कहते हैं। और जिस में दो कोण हो वह भी अग्निभय जनक है।

हीरा के बिन्दुओं के भेद.

आवर्त्तोवर्त्तकश्चैवभालबिन्दुर्यवाकृतिः।
गुणदोषान्वितेवज्रोविन्दुर्ज्ञेयश्चतुर्विधः॥
आवर्त्तेविपुलंवर्त्तेवृत्तकेपियवाकृतिः आयुःश्रियःक्षयोरक्तेदेशेषुचपदाकृतिः॥ रक्तपीतशितच्छायावर्णाढ्यश्चपदाश्रयः॥ तेषुदोषगुणाःसर्वेलक्ष्यतेचपृथक्पृथक्॥ गजवाजिक्षयोरक्तपीते वशक्षयस्तथा। आयुर्धान्यं धनंलक्ष्मीःसितेयवपदाश्रये॥ सव्यचैवापसव्यं च छेदी छेदार्धगोपिवा।

आवंतक, वर्तक, भालबिन्दु, यवाकृति इन गुणदोषोयुक्त हीरा मे ४ प्रकार के बिन्दु भेद

जानने, आवर्त्तक विन्दु बडा होता है, और वर्त्तक विन्दु गोल और छोटा होता है, यवाकृति विन्दु जौके आकारका होता है यदि विन्दु लाल हो तो आयु, और लक्ष्मी का क्षय क्रमसे करे; इसकी पदाकृतिका भी देखना यदि हीरा की पदाश्रय छाया लाल होवे तो हाथी घोडों को भय हो, पींली होतो वंशक्षय यवपदाश्रय सफेद छाया हो तो आयु धन धान्य और लक्ष्मी इन का नाश करे। इनमे रेखाओंका सव्य और अपसव्य तथा छेद्य और छेदार्द्ध भी देखना चाहिये सो आगे लिखते हैं।

हीराकी रेखाओं के भेद.

वज्रे चतुर्विधारेखाबुधैरेवोपलक्ष्यते। सव्या-
चायुःप्रदाज्ञयानापसव्याशुभप्रदा ॥
ऊर्ध्वाचासिप्रहारायच्छेदश्छेदायवंधुभिः।

हीरा की चार प्रकार की रेखा पढितों करके जाननी चाहिये, यदि रेखा सव्य (दक्षिणावर्त्त) होवे तो आयु को वढावे और अपसव्य (वामावर्त) हो तो अशुभ जाननी और ऊपर हो तो तलवार का प्रहार करावे, और छेद हो तो वन्धुनाश करावे।

षट्कोणलघुतीक्ष्णाग्रं वृहत्पद्मदलोपिवा।
वज्रे काकवलोपेतेध्रुवंमृत्युं विनिर्दिशेत् ॥
सबाह्याभ्यतरेभिन्नेभग्नेकोणेपुवर्तुले।
नसमर्थोभवेत्तत्तुशुभाशुभफलोदये ॥

छः कोण वाला, हल्का और जिसका अग्रभाग तीक्ष्ण हो तथा कमलदल के सदृश लंबा हो उस हीरे का काक वलोपेत कहते हैं, इसको निश्चय मृत्युकारक जानना। और जो हीरा भीतर बाहर से भिन्न, टूटा और गोल कोनों वाला हो वह शुभाशुभ फल नहीं देता।

शुभाशुभ हीरा के लक्षण

लघुचाष्टांगषट्कोणं तीक्ष्णंधारासुनिर्मलम्।
गुणपंचकसंयुक्तंतद्वज्रं देवभूषणम् ॥

जो हीरा हलका, अष्टांगयुक्त, षट्कोण, जिसकी धारा तीखी होवे, और जो निर्मल हो वह पंचगुण युक्त हीरा देवताओं का भूषण है।

हीरा की छाया का भेद

श्वेतारक्तातथापीताकृष्णाछायाचतुर्विधा।
सितच्छायाभवंसर्वं शशिच्छायासुलक्षणम्।
धाराविन्दुविरहितेसर्वलक्षणसंयुते ॥
वद्वज्रं तोलयेत्सम्यक्पश्चान्मूल्यंविनिर्दिशेत्

सफेद, लाल, पीली और चार प्रकार की छाया है। सफेद चंद्रछाया कहलाती है वह उत्तम है। प्रथम धारा विन्दु रहित सर्व लक्षण युक्त हीरे को तोले, फिर मोल कहे।

हीरा की तोल और मोल

पूर्वपिंडसमंकुर्य्याद्वज्रतौल्यप्रमाणत ।
तंपिंडत्रिविधंज्ञेयलघुसामन्यगौरवैः ॥
अष्टाभिःसितसिद्धार्थैस्तंदुलश्चप्रकीर्त्तितः।
तंदुलस्यप्रमाणेनवज्रमौल्यस्मृतंवुधः ॥
गुरुत्वेचार्द्धमौल्यं स्यात्सामान्येमध्यमस्मृतम्
लाघवेचोत्तममौल्यमुत्तमाधममध्यमम् ॥
गुरुत्वेत्रिविधमौल्यं त्रित्रिधंलाघवंतथा।
सामान्येषड्विधंज्ञेयमेवंद्वादशधास्मृतम् ॥

प्रथम हीरा की तोल पिंड के अनुसार करे, वह पिंड लघु, सामान्य और गौरव के भेद से तीन प्रकार का है। आठ सफेद सरसों का एक चावल होता है; चांवल के प्रमाण से ही पडितो ने हीरे का मोल कहा है, चावल गुरु हो अर्थात् तोल मे तो चावल के बराबर हो, परन्तु चावल से छोटा दीखे तो उसका मोल आधा होता है, सामान्य में मध्यम तथा लघु अर्थात् दीखने में तो वड़ा दीखे परन्तु तोल मे चांवल की बराबर हो तो उसका उत्तम मोल होता है। इस प्रकार उत्तम, मध्यम और अधम के भेद से गुरुत्वादि द्वारा मोल के तीन भेद हैं, इसी प्रकार लाघव (हल्के) के भी तीन भेद हैं, और सामान्य मौल के छः भेद हैं, इस प्रकार तोल और मोल के बारह भेद हैं।

हीरा का मौल्य

मनसाभावयेत्पिडयवमात्रै कतंदुलम् ॥
तत्पिडसमवज्र तुज्ञात्वामूल्य विनिर्दिशेत् ।
गात्रे णयवमात्रश्च गुरुत्वंतंदुलेनच ।
मूल्यपचशतंतस्य वज्रस्य चविनिर्दिशेत् ।
यवद्वयसमंपिडलाघवंतदुलोपमम् ॥
मूल्य चतुगु णांतस्यत्रिभिश्चाष्टगुणंभवेत् ।
चतुर्भिर्द्वादशप्रोक्तं पचभि पोडशस्मृतम् ॥

प्रथम मन में पिंड का अनुमान करे, अर्थात् कितने यवके बराबर रत्न का मुटापा है, और कितने चावल अनुपान तोल मे है, इस प्रकार हीरा की मनमें कल्पना करे, पीछे इसका मोल कहे। जो हीरा मुटाव में जौ के समान होवे और चांवल बराबर तोल में होवे, तो उसकी कीमत ५०० रुपया जानना जो मोटा और दो जौ के समान तोल में एक चावल होता २००० रुपये और मुटाव में तीन जौ के समान और तोल में एक चांवल हो तो चार हजार ४००० रुपये का होता है। और मुटाव चार यव के समान तथा तोल एक चावल हो तो ६००० रुपये कहना, और जो मुटाव में पांच यव तथा तोल में एक चावल का हो तो उसका मोल ८००० आठ हजार रुपये कहा है।

षट्बिंदुर्यस्यवज्रस्यख्यापनाद्यदिनिगु णम्॥
सपादयवषट्कस्यपादहीनंचतदुलम् ।
अष्टाविंशतिक मूल्यकथितंचभिषग्वरैः ॥
सप्तमपिंडमौल्य चद्विसहस्र विनिर्दिशेत् ।
यावत्पिंडनिभंरूपदापयेद्द्विचतुगु णम् ॥
पिंडशास्त्रभवेद्वज्र पादाशंलघुतोयदि ।
अष्टादशगुणमौल्यरत्नकोशेप्रभाषितम् ॥
द्वौयवौलघुवज्रस्यषट्त्रिंशत्स्थापयेद्गुणान् ।
त्रिपादोपरितेवज्र चत्वारिंशद्गुणंभवेत् ।
पिंडपादाधिकवज्रतौल्य तद्गुणतोव्रजेत् ॥
त्पितेद्विगुणमौल्य रत्नकोशेप्रभाषितम् ।
"वज्रमणेर्मूल्यपरिज्ञानार्थपाठांतरम् ॥"

सितसर्षपाष्टकंतंडुलोभवेत्तंडुलैस्तुविंशत्या ।
तुलियस्यद्वेलचेद्वयूनंद्विय नितेचैतत् ॥
पादत्रय शार्द्धीनंत्रिभागपंचांशषोडशांशश्च ।
भागश्चपंचविंशतिकःस्यात्साहस्रिकश्चैव ॥

यह श्लोक एक बहुत प्राचीन पुस्तक से लिखे हैं सो जहां तहां अशुद्ध हैं, दूसरी प्रति नहीं मिली इस कारण शुद्ध नही समझा गया और प्रायः अशुद्धता के कारण टीका भी नही लिखी जिस किसी को इसका अर्थ जानना हो वह किसी पढ़े लिखे जौहरी से जान ले। भाषांतरकर्ता)

यवसप्तकगात्रन्तुयदिवारितरंभवेत् ॥
वज्रस्यास्यत्विदमौल्य द्विसहस्रगुणंभवेत् ।
दोषेप्रकाशितेवज्र समूल्यंयत्रयद् भवे ॥
हीनत्वप्राप्यतेतत्तुमौल्यशतगुणाधिकम् ।

जो हीरा सात यव के समान मोटा हो और जल में तैरे उस हीरा का मोल दो हजार गुणा जानना और जिसमें दोष मालूम दे उसका उत्तम हीरे से सौगुना मोल कम हो जाता है।

हीरे की परीक्षा का प्रकारान्तर

भस्माभंकाकपादच रेखाक्रान्तंतुवर्त्तलम् ॥
आधारमलिनविंदु सत्रासेस्फुटटितंतथा ।
नीलाभचिपिटरूक्षतद्वज्रदोषलत्यजेत् ॥१॥
यत्पाषाणतलेनिकाशनिकरेनोघृष्यतेनिष्ठुरे तच्चान्योपललोहमुद्गरमुखैर्लैखान्नयान्या हतम् । यच्चान्यद्निजलीलयैवदलयेद्वज्रे णाविभिद्यते तज्जात्यकुलिशंवदतिकुशला श्लाध्यमहार्घ चतत् ॥

भस्म (राख) के समान रग वाला रेखा युक्त, त्रिकोण, गोल, आधार मे मलिन वर्ण, बिंदु युक्त खुरदरा, फूटा, नील वर्ण, चिपटा और रूखा ऐसा हीरा दोषयुक्त त्याज्य है। जो कसौटी पर घिसने से घिसे नाहीं, जो लोह या किसी और पदार्थ से फूटे नही और स्वयं दूसरे पदार्थ

१ स्वच्छविद्यु त्प्रभस्निग्धंशौदर्यलघुलखनम् । षणारतीक्ष्णधारंचधारकाणाश्रियंदिशेत् ॥

को लीला पूर्वक फोड़ दे, अथवा हीरा से ही फूटे उसको हीरा के परीक्षक उत्तम हीरा कहते हैं हैं इसका घर मे रखना शुभ दायक होता है यह बहुमूल्य पदार्थ है।

स्त्रियः कुर्वन्तिकायस्यकान्ति स्त्रीणांसुखप्रदाः
नपुंसकास्त्वीर्याःस्युरकामाःसत्त्ववर्जिताः।
स्त्रियः स्त्रीपुप्रदातव्याःक्लीवंक्लीवेप्रयोजयेत्।
सर्वेभ्यः पुरुषायोज्याबलदावीर्य्यवर्द्धनाः॥

स्त्री जाति का हीरा स्त्रियो को कान्ति और सुखदायक है और नपुंसक जाति का हीरा हीन वीर्य है, यह निष्काम और सत्व रहित है, स्त्री जाति का हीरा स्त्रियों को देवे, और नपुंसक जाति का नपुंसक को देवे तथा पुरुष जाति का सब के लिये श्रेष्ठ है इसको औषधों में डालना चाहिये, और यह बल वीर्य वर्द्धक है।

अशुद्ध हीरा के दोष

अशुद्धवज्रं कुरुतेकुष्ठंपार्श्वव्यथांतथा।
पांडुतापंगुरुत्वंचतस्मात्संशोध्यमारयेत्॥

अशुद्ध हीरा-कुष्ठ, पसवाड़ों में पीड़ा, पीलिया, ज्वर और देह में भारीपन करता है इस लिये प्रथम शोधकर मारण करे।

हीरा का शोधन

व्याघ्रीकंदगतवज्रं दोलायंत्रेणपाचयेत्।
सप्ताहकोद्रवक्वाथैःकुलिशंविमलंभवेत्॥

हीरा को व्याघ्री कंद के बीच में रख कादों के काढे में दोला यंत्र की विधि से सात दिन पचावे तो शुद्ध हो।

दूसरी विधि

कुलत्थक्वाथकेस्विन्नंकोद्रवक्वाथितेनवा।
एकयामावधिस्विन्नं वज्रं शुद्ध्यतिनिश्चितम्।

कुलथी या कादों के काढे मे एक प्रहर दोलायंत्र द्वारा पचाने से हीरा शुद्ध हो।

तीसरी विधि

कुलत्थकोद्रवक्वाथैर्दोलायंत्रेविपाचयेत्॥
व्याघ्रीकंदगतंवज्रं मृदालिप्तं पुटेपचेत्।
अहोरात्रात्समुद्धृत्यहयमूत्रेणसेचयेत्।
वज्रीक्षीरेणवासिंचेन्कुलिशंविमलंभवेत्॥

हीरा को दोला यंत्र द्वारा कुलथी वा को दो के काढे में पचावे, पश्चात् व्याघ्री कंद (कटेरी की जड़) में रख ऊपर कपर मिट्टी कर संपुट में रखकर फूंक देवे, जब एक दिन रात व्यतीत हो जाय तब निकाल कर घोड़े के मूत्र वा थूहर के दूध में बुझावे तो हीरा शुद्ध होवे।

चौथी विधि

गृहीत्वाह्निशुभेवज्रं व्याघ्रीकंदेविनिःक्षिपेत्।
महिषी विष्टयालिप्त्वाकरीषाग्नौविपाचयेत्॥
त्रियामंचचतुर्यामंपंचयामेश्वमूत्रके।
सेचयेत्पाचयेदेवंसप्तरात्रेणशुद्ध्यति॥

हीरा का व्याघ्री कंदमें रखकर ऊपर से भैंस के गोबर का लेपकर उपलों की आंच तीन चार प्रहर देवे, पीछे पांचवें प्रहर निकाल घोड़े के पेशाव में बुझावे ७ बार करने से हीरा शुद्ध होवे।

हीरा का मारण

त्रिवर्षरूढकार्पासमूलमादायपेषयेत्।
त्रिवर्षनागवल्याःवाबीजद्रावैःप्रपेषयेत्॥
तद्गोलकेक्षिपेद्वज्रं रुद्ध्वागजपुटेपचेत्।
ऐवंसप्तपुटैर्नूनंकालिशंभस्मजायते॥

तीन वर्ष के कपास की जड़ की लुगदी में अथवा तीनवर्ष का नागर वेल के बीजों की लुगदी मे हीरा को रख सात कपर मिट्टी दे गजपुट मे फूंकदे, इस प्रकार सात पुटों में हीरा की भस्म होवें।

दूसरी विधि

त्रिसप्तकृत्वःसंतप्तं खरमूत्रेणशुद्ध्यति।
मत्कुणैस्तालकंपिष्ट्वातद्गोलेकुलिशंक्षिपेत्।
प्रध्मातंवाजिमूत्रेणसिक्तपूर्वक्रमेणच।
भस्मीभवीतत्द्वज्रं शंखशीतांशुपाण्डुरम्॥

हीरा को तपा तपा कर २१ बार गधे के मूत्र में बुझावे, तो हीरा शुद्ध हो, पीछे हरिताल में खटमल मिला कर घोटे और उसकी लुगदी रखकर अग्नि देवे जब खूब अग्नि देवे जब खूब अग्नि लगजाय तब निकालकर घोड़े के पेशाब मे बुझावे इस इस प्रकार २१ बार करने से हीरा की सफेद भस्म शंख या चन्द्रमा के तुल्य हो जाय ।

तीसरी विधि

हिंगुसैंधवसयुक्तेकाथेकौलत्थजेक्षिपेत् ।
ततप्तेपुनर्वभू ' याच्चूर्णीत्रिसप्तधा ॥

हींग कुलथी और सैंधे नमक के काढे में हीरा को तपा २ कर २१ बार बुझाने से हीरा की भस्म होवे ।

चतुर्थ विधि

मेष शृंगभुजंगास्थिकूर्म पृष्ठाम्लवेतसम् ।
शशदंतसमंपिष्ट्वावज्ञीरेणगोलकम् ।
कृत्वातन्मध्यगवाजम्रियतेध्मातवह्निना ॥

भेड़े का सींग, सांप की हड्डी, कछुवे की पीठ, अमलेवत, ससके दांत इनको समानभाग लें चूर्ण कर थूहर के दूध में घोटकर गोला बनावे, उसके बीच में हीरे को रख सात कपर मिट्टी कर गजपुट में फूंक देवे तो हीरे की भस्म होवे।

पांचवी विधि

विलिप्तंमत्कुणस्यांत्रै'सप्तवारंविशोधितम् ।
कासमर्दरसेपूर्णेलोहपात्रनिवेशयेत् ॥
सप्तवारंपरिध्मातत्रअभस्मभवेत्खलु ।
वज्रचूर्णंभवेद्रुश्यं योजयेच्चरसादिषु ॥
ब्रह्मज्योतिमुनीन्द्रेणक्रमोयपरिकीर्त्तित. ।

हीरा को तपा के खटमल की आंतो का लेप कर सुखाले, पीछे कसोंदी के रस से भरे पात्र मे रखकर अग्नि देवे जब सूखजावे तब फिर अग्नि में तपावे और खटमलो का लेप कर उसी प्रकार कसोंदी के रस में रखकर अग्नि देवे इस प्रकार सातवार करने से निश्चय हीरा की भस्म होवे, यह भस्म कांतिदायक है इसको रसादिकों मे डाले यह ब्रह्मज्योतिमुनीन्द्रका कहा योग है ।

छठी विधि

वज्र'मत्कुणरक्तनचतुर्वारंविभावितम् ।
सुगंधिमूषिकामांसैर्वर्त्तितैःपरिमर्द्य च ॥
पुटेत्पुटैर्वराहाख्यैस्त्रिशद्वारंततः परम् ।
ध्मात्वाध्मात्वाशतंवारान्कुलत्थेक्काथकेक्षिपेत्
अन्यैरुक्तःशतंवारंकर्त्तव्योयेविधिक्रमः ।
कुलत्थक्वाथसयुक्तलकुचद्रावपिष्टया ॥
शिलयालिप्तमूपायांवज्र'क्षिप्त्वानिरुध्यच ।
अष्ठवारंपुटेत्सम्यग्विशुष्कैश्चवनोपलैः ॥
शतंवारंततोध्मातंनिक्षिप्तंशुद्धपारदे ।
निश्चितंम्रियतेवज्र'भस्मवारितरंभवेत् ॥
सत्यवाक्सोमसेनानीरेतद्वज्रस्यमारणम् ॥
दृष्टप्रत्ययंसंयुक्तमुक्तवान्रसकौतुकी ॥

हीरा को खटमल के रुधिर की चार भावना देकर सुगन्ध मूंसा (छछूंदर) के मांस मे मर्दन कर वाराह पुट मे फूंक देवे, इस प्रकार सात, पुट दे पीछे उस हीरा को तपा २ कर कुलथी के काढे मे सौवार बुझावे, और अन्य आचार्य्य यह कहते हैं कि प्रथम सौवार खटमलो के रुधिर की भावना देकर पीछे कुलथी के काढे मे बुझावे पश्चात् कुलथी के काढे मे बढ़ैर का रस मिलाकर मनसिल को पीस हीरा पर लपेट घड़िया मे रख आंच मे फूंक देवे, इस प्रकार कर सूखे आरने उपलो के आठ पुट देवे,तदनन्तर सौवार हीरा को तपा तपा कर शुद्ध पारे मे बुझावे इस प्रकार करने से निश्चय जल मे तैरने वाली हीरा की भस्म होवे । यह सौमसेनानी सत्यवक्ता ने कहा है, उस रस कौतुकी का यह प्रयोग देखा और आजमाया है ।

सातवीं विधि

वि'लप्तमत्कुणस्यास्त्र सप्तवारविशोधितम् ।
कासमर्दरसै पूर्णेताम्रपात्रें निवेशितम् ॥

सतवारंपरिध्मातंवज्रभस्मभवेत्खलु ।
ब्रह्मज्योतिर्मुनी·द्रणभाषितंरत्नसागरे ॥

हीरा को खटमल के रुधिर मे लपेट कर सुखा लेवे, पीछे एक छोटे तांबे के पात्र में कसौंदी का रस भर उसमें हीरा को डाल कर धमावें पश्चात हीरा पर फिर खटमल का रुधिर लपेट कसौंदी के रससें डाल धमावे, इस प्रकार सौवार करने से निश्चय हीरा की ही भस्म होवे यह ब्रह्मज्योति ने रत्न सागर में कहा है ।

आठवीं विधि

नीलज्योतिर्लताकंदेन्युष्ठंघर्मेविशोषितम् ॥
वज्रंभस्मत्वमायातिक्रमवद्ध्मानवह्निना ॥

हीरा को नील ज्योति लता के कन्द में रख धूप में सुखाय यथा योग्य अग्नि देने से हीरा की भस्म होवे ।

नवीं विधि

मदनस्यफलोद्भूतरसेनक्षोणिनागरैः ।
क्रमकल्केनसंलिप्यपुटेद्विंशतिवारम् ॥
वज्रचूर्णंभवेद्धव्यंयोजयेच्चरसादिषु ।

मैनफल के रस मे अलसी और सोंठ को मिलाय कल्क बनाय उसमें हीरा को लपेट अग्नि में धमावे इस प्रकार २० पुट देने से हीरा की उत्तम भस्म होवे, इसको रसादिकों मे मिलाकर काम मे लावें ।

ब्रह्मजातीय हीरा का मारण

गरुटगधकतालवदरीरमसंप्लुतम् ।
अश्वत्थस्वरसैर्भाव्यंपुटेदिन्डंसरक्तकम् ॥
म्रियतेतेनयोगेनब्रह्मरत्नंहितत्त्वतः ।

छिरहिंटा, गधक, हरिताल इनका वेर के रसमें घोटकर पीपलके पत्तोंके रसकी भावना देवे तो ब्राह्मण जातिका हीरा भस्म हो ।

क्षत्रियजातीय हीराका मारण

नीलंचशंखचूर्णंचशिलाभूनागसूरणम् ।
म्रियतेक्षत्रजातीनांपुटैःस्वाभिर्नसंशयः ॥

नील, शंखचूरा, मनसिल, केंचुए और जमीकंदका रस इनको एकत्र पीस पुट देने से क्षत्रिय जातिके हीरा की भस्म हो ।

वैश्यजातीय हीरा का मारण

स्नुह्यर्ककरवीरंचभूनागदंरवटाः । उत्तमावारुणीक्षीरैर्वैश्यानांमारणंपुटैः ॥

थूहर, आक, कनेर, केंचुआ, शिंगरफ, बडका दूध, उत्तम दारू और दूधकी भावना दे कर फूंके तो वैश्य जातिके हीरा की भस्म हो ।

शूद्रजातीय हीराका मारण

गधाश्मकेघृततालंमेषशृंगंसमांशकम् । विषवंतिस्नुहीक्षीर नारीपुष्पंपयप्लुतम् ॥
एभिर्विलिप्तमूषायांधमनादन्यमारणम् ।

गधक, घृत, हरताल, मेढासिंगी, शहद विष, कान्तलोह, थूहर का दूध, स्त्रीके रजोदर्शका रुधिर और दूधको एकत्र पीस हीरा में पुट दे, मूषामें रख बंकनाल धोंकनी द्वारा धोंकने मे सर्व जाति के हीरो की भस्म होवे ।

हीरादि सब रत्नोंका मारण

रसंहसंशिलातालंगरुडगधटंकणम् । भूनागविमलवंगमेषशृंगसचुम्बकम् ॥ शुक्रशोणितसयुक्तस्वेदनौषधिभावितम् । मूषालेपप्रयोगेणरत्नानामारणध्रुवम् ॥ एवंवज्रभवंभस्मवज्रस्थानेनियोजयेत् ।

पारा, सिंगरफ, मनसिल, हरिताल, पन्ना का चूर्ण, गंधक, सुहागा, केंचुये, विमल वंग, मेंढेका सींग, चुंबक, पत्थरका चूर्ण और पुरुष का वीर्य और स्त्रीका रज इन सब को पीस कर इस में स्वेदन औषधियों की भावना देवे, पीछे इस को मूषा में लेपकर बीच में हीरादिरत्नों को रख अग्नि मे धोंके तो निश्चय सब रत्न प्रकार मरे, इस हीरा की भस्म को जिस प्रयोग में हीरा की भस्म लिखी हो मिलावे ।

हीराका सत्त्व विधि

तद्वज्रं चूर्णयित्वाथ किंचिट्टंकणसंयुतम् । खरभूनागसत्त्वेनविषेनावर्त्ततेध्रुवम् ॥ तुल्य स्वर्णेनतद्ध्मातंयोजनीयरसादिषु ।

फुंके हीराकी भस्म में थोडासा सुहागा मिलावे, फिर केंचुएके गरम सत्व में डाले और बराबर का सोना डालकर अग्नि पर धमावे तो सत्व निकले, फिर इस को सर्व रसों में मिला कर खाय ।

हीराकी गुटिकाके गुण

त्रिगुणेनरसेनैवसंमर्द्य गुटकीकृतम् । मुखे- धृतेकरोत्याशुचलदंतविबंधनम् ॥

हीराकी भस्म से तिगुना शुद्ध पारा मिलावे और गुटिका बनालेवे इस गुटिका को मुख में रखे तो हिलते दांत दृढ होवे ।

हीराकी भस्मसेवन की विधि

मृतंभस्माद्धं संयुक्तं मृतवज्रस्यभस्मकम् ॥
मृताभ्रसत्त्वमुभयोस्तुलितंपरिमर्दितम् ॥
क्षौद्राज्यसंयुतंप्राश्नं गुंजामात्रं चसेवितम् ॥
निहंतिसकलान्रोगान्सत्यंसर्वदाम्यहम् ॥
एवंवज्रभवंभस्मसेवनीयनृभिस्सदा । त्रिस- प्तदिवसैर्नृणांगंगांभईवपातकम् ॥

हीरा की भस्म एक भाग, पारेकी भस्म अर्द्ध भाग, इन दोनों के समान मरे अभ्रक का सत्व लेकर घृत और शहद में सब को घोट कर एक रत्ती नित्य खाय तो सब रोगों को दूर करे। इस प्रकार हीराकी भस्म मनुष्य को सदा सेवन करने से २१ दिन में गंगा जल के समान शुद्ध देह करे।

अन्य विधि

त्रिंशद्भागमितंहिवज्रभसितंस्वर्णंकलाभाग- कम् ॥ तारंचाष्टगुणासितंमृतवरंरुद्रांशकंचा- भ्रकम् पादांशंखलुताप्यकंवसुगुणंवैक्रांतकं- षड्गुणम् भागोप्युक्तरसैश्चसोयंमुदितः पाड्गुण्यससिद्धये ॥

हीरा की भस्म तीसभाग; सुवर्ण भस्म १६ भाग, रूपरस ८ भाग, सिगयाविष ११ भाग, अभ्रकभस्म १४ भाग, सोना मक्खी की भस्म ८ भाग, इन सबको एकत्र कर रख छोडे इसका षड्-गुणकी सिद्ध के निमित्त पूर्वाचार्य्योंने कहा है ।

हीराकी भस्म के गुण

आयुःप्रदंसद्गुणदंचवृष्यंदोषत्रयप्रशमनंसक लामयघ्नम्सूतेन्द्र वधसद्गुणदंप्रदीप्तंमृ- त्युंजयेत्तदमृतोपममेववज्रम् ॥

मनुष्य की आयु और श्रेष्ठगुणों की वृद्धि करे, वृष्य है, तीनों दोषों का शमन करे, सकल रोगों को दूर करे, पारे को बद्ध क तथा मारण करने वाली है और पारे के उत्तम गुण प्रकट करनेवाली है, अग्नि को दीप्त करे, मौत को जीते और अमृत के समान गुणकारक हीरा की भस्म है ।

अन्य गुण

वज्रं चषट्रसोपेतसर्वरोगापहारकम् । सर्वा- घशमनंसौख्यंदेहदार्ढ्यंरसायनम् ॥

हीरा षड्रससंयुक्त सपूर्ण रोगनाशक तथा सकल पाप हरण कर्ता सुख और देहका दृढ- कर्त्ता तथा रसायन है ।

तीसरे गुण

वज्रं समीरकफपित्तगदांश्चहन्याद्वज्रोपमंच । कुरुतेवपुरुत्तमधि शोषक्षयज्वरभगंदरमेह- मेदः पांडूदरश्वयथुहारिचषड्रसाढ्यम् । आयुःपुष्टिंचवीर्यंचवर्णंसौख्यंकरोतिच ॥ सेवितंसर्वरोगघ्नंमृतंवज्रंनसंशयः

हीरा की भस्म-वात पित्त और कफ के

विकारों को नाश करे, देह को वज्र के समान दृढ और उत्तम करे शोष, खई, ज्वर, भगंदर प्रेमह, मेद, पांडु उदर और सूजनका नाश करः छः रसयुक्त है, आयु और वीर्य को पुष्ट करे, देहका वर्ण उत्तम तथा सुख करे, मरा हीरा खान से निस्संदेह सकलरोग नाश हो।

हीराकी भस्म के अनुपान

कुष्ठखादिरत्वगथ्यथापवनजेसृकूशृंगवेरंमधु देयकासवलासश्वासविकृतौवासोषणात्वकणाः। पित्तेदाहसितासमज्वरगणेछिन्नाजले तिक्तके। वज्रंमारितशुक्लभस्मगदहृद्युञ्जयाद् भिषग्युक्तिभिः॥

कोढमें खैरकी छालके साथ, वातव्याधि तथा वातरक्तमे अदरख के रस और शहद के साथ; खांसी कफ और श्वास में अडूस के रस, कालीमिरच, दालचीनी, और पीपल के साथ, पित्त और दाहमे मिश्री के साथ सब ज्वरो मे गिलोय और चिरायते के काढ़ेके साथ हीरा की भस्म देवे, यह सर्वरोग नाशक परन्तु सर्व रोगो मे अनुपान वैद्य अपनी युक्ति से कल्पना करे।

हीराके मृदुकरनेकी विधि

मातुलुंगातरेवज्रंरुद्ध्वाबाह्यंमृदालिपेत्। पुटेत्पश्चात्समुद्धृत्यएवशतं पुटैः पचेत ॥ नागवल्याद्रवैर्लिप्ततत्पत्रैणैववेष्टयेत्। भूमध्यचस्थितयावत्तद्वज्रंमृदुतांव्रजेत्॥

हीरा को विजौरेमे रखे कपरमिट्टी कर अग्नि मे रख फूंकदे इस प्रकार १०० फुट दे पींछे नागर वेल के रस मे लपेट ऊपर से उक्त-वेल के पत्ते बाध ज़मीन मे गाड दे तो थोडे दिन में हीरा मोम के समान नरम हो जाय यह (रसेन्द्रप्रकाश) मे लिखा है।

हीराकी द्रुति

वज्रवल्लयूतरस्थंचकृत्वावज्रंनिरुत्थितम् ॥ अम्लभण्डगतस्वेद्यंससप्ताहाद्द्रवतांव्रजेत्

हीरा को वज्रवल्ली की लुगदीमे रख फूंक दे जब निरुत्थ होजाय तब अम्लवर्गके पात्र मे डाल स्वेदन करे तो हीरा की पारे के समान द्रुति होवे।

अशुद्ध हीरा के दोष

पीडांविधतेविविधांनराणांकुष्ठक्षयपांडुगदंचतुष्टम्। हृत्पार्श्वपीडाकुरुतेतिदुस्सहामशुद्धवज्रंगुरुमात्महंत्यजेत॥

अशुद्ध (कच्चा) हीरा मनुष्योंको अनेक पीडा करे, कोढ, खई, पांडुरोग, हृदय और पसवाडो मे दुस्सह पीडा करता है, भारी तथा प्राणहारक है, इसलिये अशुद्ध हीरा को त्याग देवें।

हीरा के विकारोकी शान्ति

सितामधुघृतैःसाकं गोदुग्धंदिनसप्तकम्। विधिनासेवितंहति वज्रदोषंचिरोत्थितम्॥

मिश्री, शहद, घी और दूधको मिलाकर ७ दिन विधि से सेवन करे तो हीरे का दोष नष्ट हो।

मूंगाकी उत्पत्ति.

बालार्ककिरणरक्तासागरसुशिलोद्भवेजललताया। नत्यजतिनिजंरूपनिकषेघृष्टापिसास्मृताजात्या॥

समुद्र के जल मे लाल रंग की मूंगा की बेल होती है, वह प्रात काल के सूर्य की लाल किरणो के समान प्रगट होती है उसको प्रवाल (मूंगा) कहते हैं, उनमेसे जो कसौटी पर घिसनेसे अपने रग और काति को न छोड़े वह मूंगा अमृत के समान गुण करता है।

शुभ मूंगा के लक्षण

पक्वबिम्बफलच्छाय वृत्तायतमवक्रक। स्निग्धमव्रणकंस्थूलंप्रवालं सप्तधाशुभं॥

पकी कदूरीके समान, गोल, वक्रता रहित, चिकना, छिद्रादिकरहित, मोटा, कुछ थोडा लबा, ऐसा सात प्रकार का मूंगा शुभ है।

अशुभ मूंगा के लक्षण

आररंगंजलकान्तिवक्रं सूक्ष्मंसकोटरं ।
रूक्षंकृष्णंलघुश्वेतप्रवालमशुभंत्यजेत् ॥

रंग में पीतल के समान जल की सी कांति टेढा, बारीक, छिद्र सहित, रूखा, काला, छोटा, और अशुभ है ।

मूंगा के गुण

प्रवालंमधुरंसाम्लंकफपित्तार्त्तिदोषनुत् ।
वीर्यंकांतिकरस्त्रीणांधृतेःमंगलदायकं ॥
क्षयेपित्तास्त्रकासघ्नंदीपनंपाचनंलघु ॥
विषभूतादिशमनंविद्रु मंनेत्ररोगहृत् ॥

मूंगामधुर, खट्टा, दीपन, पाचन, तथा लघु (हल्का) है तथा वीर्य और कांति को बढावे, स्त्रियों का धारण करने से मंगलकर्त्ता है । कफ, पित्त, त्रिदोष, क्षई, रक्तपित्त, खांसी, विष, भूतबाधा और नेत्र रोगों का नाश करे ।

मूंगा का मारण

मौक्तिकस्य विधिप्रोक्तःप्रवालेपितथाविधि.

जो विधि मोती के मारण की है वही विधि मूंगा के मारण की जाननी चाहिये ।

मोती की उत्पत्ति

शुक्ति. शंखोगज क्रोडफणीमत्स्यश्चदर्दु र.।
वेणुश्चाष्टौसमाख्यातासुज्ञैर्मौक्तिकयोनय. ॥

पण्डितों ने मोती की उत्पत्ति-सीपी, शंख, हाथी, शूकर, सर्प, मछली, मेंढक और बांस से कही है ।

गजमौक्तिक

यद्'तावलकुंभसंभवमदःपीतारुणंमंदरुक ।
धारीदघ्नतयात्र रत्नधमंकांभोजकुंभोद्भवं॥

गजमुक्ता—कांबोजदेशके बलवान हाथी के गंडस्थलसे किंचित्‌लाल तथा पीतवर्ण उत्पन्न होता है, इसको स्त्रिया धारण करती हैं यह हलकारत्न है ।

वाराह मौक्तिक

एकाकीससुखेननिस्पृहतयायः काननगाहतो तस्यानादिवराहवंशजनुषःकोलस्यमूर्ध्निस्थितं ॥ कंकोलाकृतिमिंदुवत्सधवलंदैवादवाप्नोतितत्सोमर्त्यैसमुपासतेसनिधिभिर्मर्त्योधनाधीशवत् ॥

श्री आदिवाराह वंशमें जो शूकर प्रगट हुआ वह अकेला ही वन मे निष्पृहता पूर्वक विचरता है, उसके मस्तक में बेर के समान बडा और चंद्रमा के समान सफेद मोती होता है, यह दैवेच्छा से हाथ लगता है, जिसके पास यह मोती होता हैं वह पुरुष अटूट संपत्तिवान् होता है ।

वेणुमौक्तिक

मुक्तासंतिकुलाचलेषुकरकाकान्त्युद्भवावंशजा । कर्कंधूफलबंधवोनिदधतेकंटेपुशुद्धांगना

कुलाचल पर्वत में वर्फ के समान सफेद बेर के समान बडा, मोती बांसो से प्रगट होता है उसको पवित्र स्त्री गले मे धारण करती है ।

मत्स्यजमौक्तिक

प्रोष्ठीगर्भगतस्तुमौक्तिकमणिर्नागसमःपाटली।
पुष्पाभः सनलभ्यतेभुविजनैरस्मिन् कलौ पापिभिः ॥

मत्स्यजमौक्तिक मच्छी के पेट में गजमुक्ता के समान रग में पाढर पुष्प के समान होता है, यह इस पृथ्वी पर कलयुगी पापी जीवों को नहीं प्राप्त होता ।

दर्दु रमुक्ता

यन्मेघोदरसंभवंतदवनीमप्राप्तमेवामरैः ।
व्योमस्थैरपनीयतेविनिपतद्धाशुमुक्ताफलं ॥
तिग्मांशोरपिदुर्निरीक्ष्यमकृशंसौदामिनीसन्निभं । देवानामपिदुर्लभंमनुजस्यैतस्यप्राप्तिपुनः ।

वर्षाऋतु में जो मेंढक मेघोदर से उत्पन्न

हो वह पृथ्वी पर न गिरे, उसके पेट मे मोती उत्पन्न होता है उसको देवता ग्रहण कर लेते हैं। वह सूर्य के समान तेजवाला बिजली के सदृश होता है वह मनुष्य को तो कब प्राप्त हो सकता है देवताओं को भी दुर्लभ है।

शंखमुक्ता

शंखस्याच्युतहारिणोजलनिधौयेवंशजाःकंबुका स्तेष्वंतःकिलमौक्तिकंभवतवैतच्छुक्रतारानिभ ॥ कापोतांडसमंसवृत्तमसकृत्श्रीकं स्वरूपलघु स्निग्धंस्पर्शकृतंचतेचनपुनर्मर्त्यैस्तदासाद्यते ॥

पांचजन्य शंख के वंश मे प्रगट ऐसे शंख समुद्र मे होते हैं, जिनके बीच मे तारागण के समान प्रकाशित, कबूतर के अंडे के समान बड़ा और गोल मोती होते हैं। वो पानीदार, चिकने हल्के, तथा लक्ष्मीकारक होते हैं। वो एक मनुष्य के स्पर्श करने से दूसरे के पास नही जाते।

सर्पजमुक्ता

शेषस्यांन्वयिनांफणांसुफणिनांयन्मौक्तिकं जायते। वृत्तंनिर्मलमुज्ज्वलंशशिरुचिश्याम च्छविश्रीकरं ॥ कंकोलाकृतिकेपिकोटिसुकृतैः प्राप्नोतिचेन्मानवः । सस्याद्वाजिगजाधिकोनृपसमोजातोपिनीचेकुले ॥ आस्तेसद्मनिचेत्सपन्नगमणिस्तेयातुधानामरा । हतु रध्रमवेक्ष्तेइतरतःकुर्यान्मिहाशान्तिकम् ॥

सर्पज मौक्तिक शेषनाग के वंश मे उत्पन्न सर्पों के फण में होता है, वह गोल, निर्मल, चकचकाहट वाला, चन्द्रमा के समान सफेद शोभायमान आकार मे बेर के समान होता है यह मोती करोड जन्म पर्यन्त पुण्यकर्त्ता के हाथ लगता है, जिसके पास यह रहे उसके घर हाथी घोडा आदि की वृद्धि होकर नीच कुल का भी बालक राजा के समान हो, इसकी चोरी करने को राक्षस छिद्र देखा करते हैं, इस लिये इसके मिलने की शान्ति करे।

सीपी मौक्तिक

पटुश्वेतेस्वपिरुक्मिणीवजगतिख्य'तिंगताारुक्मिणी। नाम्नाशुक्तिमतीवचोत्तमगुणाम्निधौसमुज्जृंभते ॥ तस्यागर्भभवतुकुंकुमनिभंजातीफलाकृत्तिनं। स्थूलंस्निग्धमतीवनिर्मलमलंभूमौप्रकाशसदा।

चांदी के समान झलकदार सीप उत्तम है, वह समुद्र मे उत्पन्न होती है, उसमें लाल जायफल के समान मोटा, चिकना, अत्यन्त निर्मल मोती निकलता है।

लक्षण

श्वेतस्निग्धमतीववधुरतरंस्यात्पारसीको द्भवं । रूक्षकांचनवर्णसंकरयुतंस्याद्बर्बरं मौक्तिकं ॥ शोणंतूर्मजसंभवंविदुरितिस्निग्धतथादोषज। चातुर्वर्ण्ययुतंसुलक्षणमिति श्लक्ष्णंकविश्रीकरं ॥

जो मोती फारिस के समुद्र मे प्रगट होता है, वह सफेद, चिकना और अत्यन्त तेजस्वी प्रगट होता है, अरब के समुद्र में रूखा जिसमे सुवर्ण की सी शंका होती है, अन्य समुद्रो का मोती लाल, अतिचिकना, दोषयुक्त, चारवर्णयुक्त उत्तम लक्षणवाला शोभायमान होता है।

मौक्तिक परीक्षा

यद्विच्छायमौक्तिकंव्यंगकायशुक्तिस्पर्शंरक्ततां चापिधत्ते । मत्स्याक्ष्यंकरूक्षमुत्तानमम्रं नैतद्धार्यंधीमतादोषदायी ॥

जो मोती फीका, व्यंग, सीप से चिपटा लालवर्ण, मछली के नेत्र सम चिह्नित, रूखा ऊँचा नीचा, ऐसा होवे उसको बुद्धिमान् धारण न करें यह दोष कारक है।

शुभ मोती के लक्षण

नक्षत्राभंवृत्तमत्यंतमुक्तं स्निग्धंस्थूलंनिर्व्रणं निर्मलंच । न्यस्तंधत्तेगौरवयत्तुलायानिर्मौल्यितन्मौक्तिकसिद्धिदायि ॥

जो मोती नक्षत्र के समान गोल, चिकना, मोटा, निर्व्रण, निर्मल, तथा तोलमें भारी होवे । वह महामौल्यवान मोती सिद्धि दायक है ।

मोती का शोधन

लवणक्षारक्षोदिनिपात्रे गोमूत्रपूरितेक्षिप्तं ।
मर्दितमपिशालितुषैर्यदविकृतमौक्तिकंजात्य॥

गोमूत्र मे निमक डाल कर उसमे मोती को दोलायंत्र की विधि से लटकाय देवे, पीछे उसमे से निकाल धान की तुषाओ मे डालकर मले यदि वह मोती विकार को प्राप्त न हो तो शुद्ध जाने ।

मणि मुक्ताप्रवाल शोधन

स्वेदयेद्दोलिकायंत्रे जयन्त्यास्वरसेनच ।
मणिमुक्ताप्रवालानांयामैकंशोधनभवेत् ॥

मणि मोती और मूंगा को जयती के रस मे दोलायन्त्र विधि से एक प्रहर पचन करे तो शुद्ध हो ।

दूसरा प्रकार

मौक्तिकशोधयेदम्लैःकाजिकैर्निंवुकद्रवैः ।
गोमूत्रे शोधयेत्पश्चाच्छोधयेत्पयसातथा ॥

मोती को अम्लवर्ग, काजी, नींबू के रस, गोमूत्र और दूध में शोधन करे ।

मुक्ताप्रवाल मारण

कुमारीतदुलीयेनस्तन्येनचविपाचयेत् ।
प्रत्येकंसप्तवारंचतप्ततप्तानिकृत्स्नशः ॥
उक्तमाक्षिकवन्मुक्ताप्रवालानिचमारयेत् ।

मोती को तपा २ कर घीगुवार के रस, चौलाई के रस, तथा स्त्री के दूध मे, सात-सात वार बुझावे और सोनामक्खी के मारण की तरह मोती और मूगा का मारण करे ।

दूसरी विधि

गंधपारदयोरैक्यान्मौक्तिकानिविमर्दयेत् ।
भावयेदुग्धयोगेनशराव सपुटेक्षिपेत् ॥
वस्त्रमृत्तिकयोर्लेपाज्ज्वालयेद्धस्तिजेपुटे ।
स्वांगशीतलमुधृत्यचूर्णंभाडेनिधापयेत् ॥

मोती को गधक और पारे की कजली मे दूध डालकर खूब घोटे, तदनतर सराव संपुट मे रख कपरमिट्टी कर गजपुट में फूंक दे, स्वांग-शीतल होने पर भस्म को काच की शीशी मे भर रख छोडे ।

मुक्ता भस्म के गुण

मौक्तिकसमधुरंसुशीतलंदृष्टिरोगशमनंविषापह । राजयक्ष्मपरिकोपनाशनंक्षीणवीर्यबलपुष्टिवर्द्धनं ॥

मोती की भस्म-मधुर और शीतल है नेत्र-रोग, विष रोग और राजयक्ष्मा (खई) का नाश करे, क्षीण वीर्य और क्षीणबल का नाश करे ।

अन्यच्च

कफपित्तक्षयध्वंसी कासश्वासाऽग्निमान्द्यजित् । पुष्टिदवृष्यमायुष्य दाहघ्नंमौक्तिकंमतम् ॥

कफ, पित्त, खई, श्वास खांसी और मन्दाग्निका नाश करे, पुष्टि करे, वीर्य और आयुष्य को बढ़ावे, दाह को जीते ।

मोती की द्रुति

मुक्ताफलानिसप्ताह वेतसाम्लेनभावयेत् ।
जंबीरोदरमध्येतुधान्यराशौनिधापयेत् ॥
पुटपाकेनतच्चूर्णंद्रवतेसलिलयथा ।
कुरुतेयोगराजोयरत्नांद्रावणंशुभं ॥

मोती को अम्लवेत के रस की भावना देकर नीबू के भीतर भर धान की राशि मे गाड दे पीछे उसमे से निकाल पुटपाक करे, तो मोती का चूर्ण जल के समान होवे ।

पन्ना की परीक्षा

स्वच्छंचसच्छायंस्निग्धगात्रचमार्द्रवसमेतं ।
अव्यंगंबहुरंगंशृंगारीमरकतशुभंविभृयात् ॥

शर्करिलकलिलरूक्षमलिनंलघुहीनकांतिक-ल्माषं। त्रासयुतविकृतांगंमर्कतममरोपिनोप-भुंजीत ॥

स्वच्छ, सच्छाया, चिकना, मृदु, अव्यंग और बहु रग पन्ना शृंगारकर्त्ता मनुष्य को धारण करना चाहिये, जो खरदरा, मलिन, हलका, कांति हीन, कल्मषयुक्त, त्रासयुक्त, और विकृतांग पन्ना हो उसके देवता भी धारण न करे।

दूसरी परीक्षा

हरिद्वर्णंगुरुस्निग्धंस्फुटरश्मिरयंशुभं ।
भासुरभास्वनतार्क्ष्यंगात्राभंसर्वसंमतम् ॥

जो पन्ना हरा, भारी, कान्तिवान, चिकना, तेजस्वी, दीप्तयुक्त, गरुडकान्त के समान कांतिवाला हो वह शुभ है।

अशुभ पन्ना के लक्षण

कपिलंकर्कशंनीलंपाण्डुकृष्णंचलाघवं ।
चिपिटंविकृतंकृष्णंरूक्षंतार्क्ष्यंनशस्यते ॥

कपिलवर्ण, कठोर, नीला, पीला, काला, हलका, चपटा, विकृत और रूक्ष पन्ना अच्छा नहीं।

शोधन प्रकार

शोधनमारणंरत्नप्रकर्णेकथितंमया।

पन्ना का शोधन और मारण रत्न प्रकरण में कह आये हैं।

गुण

मरकतंहिविषघ्नंशीतलमधुरंसरं।
अम्लपित्तहररुच्यपुष्टिदंभूतनाशनं ॥

पन्ना-विषनाशक, शीतल, मधुर, रेचक, अम्लपित्तहर्त्ता, रुचिकर्त्ता, पुष्टिकर्ता, और भूत नाशक है।

दूसरे गुण

ज्वरछर्दिविषश्वासंसतापाग्नेश्चमाद्यनुत् ।
दुर्नामपाण्डुशोफघ्नंतार्क्ष्यमोजोविवर्द्धनम् ॥

गरुडमणि (पन्ना) ज्वर, वमन, विष, श्वास, सताप, मंदाग्नि, बवासीर, पाण्डु रोग, और सूजन को दूर करे ओज और धातु को बढावे।

वैदूर्य मणि

घृष्टंयदात्मनास्वच्छंस्वच्छायानिकषाश्मनि। स्फुटंप्रदर्शयेदेतद्वैदूर्यंजात्यमुच्यते ॥

जो वैदूर्यमणि घिसने से अपने तेज को न छोडे, स्पष्ट दीखे, उसको जातिवंत तथा उत्तम जाननी। वैदूर्यमणि काले-काले और पीले रग मिले रग की होती है।

वैदूर्य के दोष

विच्छायमृच्छिलागर्भंलघुरूक्षंचसक्षतं।
सत्रासंपरुषंकृष्णंवैदूर्यंदूरतस्त्यजेत् ॥

जो वैदूर्यगतच्छाया और मिट्टी तथा पत्थर जिसमें दीखते हों तथा हलका, रूक्ष, सछिद्र त्रासयुक्त, खर्दरा और काला हो उसे दूर ही से त्याग देवे।

वैदूर्य के और लक्षण

एकवेणुपलासपेशलरुचामायूरकंठत्विषा ।
मार्जारेक्षणपिंगलाचविदुषाज्ञेयंत्रिधाछायया
यद्गात्रंगुरुतादधातिनितरांस्निग्धंतुदोषोज्झित
वैदूर्यंविमलंवदतिसुधिय.स्वच्छंचतच्छोभन।

एक जातिका वैदूर्यमणि-वस पत्र के समान दूसरा मोर के कठ के समान तीसरा बिलाव के नेत्रो के सदृश पीला, ऐसा तीन रंग का होता है। तिनमे जो शरीर पर धारण करने से भारी मालूम हो तथा चिकना दोष रहित और स्वच्छ होवे ऐसा वैदूर्यमणि बुद्धिमान् उत्तम समझे।

वैदूर्य के गुण

वैदूर्यमुष्णम्मलंचकफमारुदनाशनं।
गुल्मादिदोषशमनंभूषितंचशुभावहं ॥

वैदूर्यमणि उष्ण, खट्टा, भूषणार्ह, और मंगलकर्त्ता, कफ वादी तथा गुल्मादि दोषों का नाशक है।

अशुद्ध गोमेद के लक्षण

कुरंगश्वेतकृष्णागंरेखात्रासान्वितंलघु ।
विच्छायशर्करारंगेगोमेदंविबुधस्त्यजेत् ।।

जो गोमेदमणि हरिण के से रंग की सफेद, काली, रेखा युक्त, त्रासयुक्त, हलकी, छाया रहित, खर्दरी और दुष्ट रंग की हो उसे पंडित त्याग देवे। पीले रंग की मणि को गोमेद कहते हैं।

उत्तम गोमेद के लक्षण

पीतछागसमच्छायंस्निग्धंस्वच्छसमंगुरु ।
निर्दलंमसृणंदीप्तगोमेदंशुभमष्ठधा ।।

गोमेद, पीली बकरी की कांति के समान, चिकनी, स्वच्छ, समान, भारी, पर्त्त रहित, सचिक्कण, कांतसहित, इन आठ लक्षण युक्त शुभ है।

गोमूत्राभंयद्गुरुस्निग्धशुक्लशुद्धछायंगौरवं-यच्चधत्ते। हेम्नारक्तंश्रीमतांयोग्यमेतद्गोमेदाख्यंरत्नमख्यातिसंतः ।।

गोमूत्र के समान, भारी, चिकनी, कुछ सफेद, शुद्ध छाया युक्त, गौरवता युक्त, सुवर्ण के समान आरक्त, ऐसे लक्षणो युक्त गोमेद मणि श्रीमतो के योग्य कही है।

गोमेद के गुण

गोमेदकोम्लश्चोष्णश्चवातकोपविकारनुत ।
दीपनःपाचनश्चैवधृतोयंपापनाशनः ।।

गोमेदमणि-खट्टी गरम, दीपन, पाचन, धारण करने से पापो की नाशक और वात के सब विकारों को नाश करती है।

माणिक्य

तद्रक्तंयदिपद्मरागमथतत्पीतातिरक्तद्विधा जानीयात्कुरुविंदकंयदरुणंस्यादेषसौगंधिकम् ।। तन्नीलयदिनीलगंधकमितिज्ञेयं चतुर्धाबुधैः माणिक्यकषवर्षणेप्यविकृतरागेण जात्यंजगुः ।।

लाल पद्मरागसदृश, तथा पीलापन लिये अत्यन्त लाल होवे, और हिंगुलके समान अरुण-वर्ण होकर लालकमल के सदृश, होवे सो अतिउत्तम है, तथा जो नील वर्ण होवे सो नीलमाणिक्य ये दो प्रकार हुए, ऐसे माणिक के चार भेद हैं इन चारो मे जो कसौटी पर घिसने से विकृति को प्राप्त न होवे ज्यों का त्यों तेजवान् रहे वो उत्तम जातिवंत माणिक्य (लाल) है।

प्रकारान्तर

स्निग्धंगुरुगात्रयुतंदीप्तंस्वच्छसुरंगकंरक्तं ।
इतिजात्यंमाणिक्यंकल्याणंधारणात्कुरुते ।।

जो माणिक-गोल, सुन्दर, झलकयुक्त स्वच्छ उत्तम रंगदार तथा लाल होवे, उसे जातिवंत जानना यह धारण करने से कल्याण करता है।

अशुभ

विच्छायमभ्रपिहितमतिकर्कशशर्करंविधूसंच विरूपंरागविमलंलघुमाणिक्यंनधारयेद्धीमान् ।।

जो माणिक कुरंग जिसपर बादल के समान दोष हो, खर्दरा, शर्करायुक्त, विधूम, रंगका मलीन विरूप और हलका हो उसे बुद्धिमान् धारण न करे।

माणिक्य के गुण

माणिक्यंमधुरंस्निग्धवातपित्तविनाशनं ।
रत्नप्रयोगेप्रज्ञातंरसायनकरपरं ।।

जो माणिक मीठा, चिकना, वातपित्त नाशक रत्न प्रयोग मे श्रेष्ठ वह रसायन कारक है।

हरि नील

मृच्छर्कराश्मकलिलो विच्छायामलिनोलघू,
रूक्षस्फटितगर्त्तश्च वर्ज्योनील.सदोषकः ।।

हरिनील (इंद्रमणि) मिट्टी, ककर पत्थर, मिलो होवे, और बुरे रंग की मलीन, लघु रूक्ष, फूट तथा गड्ढे वाली ऐसी नील दोष युक्त जान कर त्याग देवे।

उत्तम नील

ननिम्नोनिर्मलोगात्रे मसृणोगुरुदीप्तक ।
तृणग्राही मृदुर्नीलो दुर्ल्लभोलक्षणान्वित ।।

जो बीच में नीची न हो, निर्मल, चकचकाहट युक्त, भारी, तेजस्वी, तिनका को पकटने वाली और मृदु लक्षणों युक्त नीलमणि दुर्ल्लभ है।

नील के वर्ण भेद

सितशोणपीतकृष्णच्छाया नीलाः क्रमादिमे कथिताः। विप्रादिवर्णसिद्ध्यै धारणमस्या पिवज्रवत्फलदम्॥

सफेद, लाल, पीली और काली इन चार प्रकार के रंगों की नीलमणि क्रम से ब्राह्मण,क्षत्री, वैश्य शूद्र संज्ञक जाननी इसका धारण करना हीरा के समान फलदायक है।

नीलम परीक्षा

आनंदचन्द्रिकाकारः सुंदरःक्षीरतप्तकः।
यः पात्रंरंजयत्त्याशु सजात्योनीलउच्यते॥

जिस नीलमें आनन्दहोवे, चकचका-हटवाला, सुन्दर, जिसको अग्नि में तपाकर दूध में डालने से पात्र नीला दीखे वो उत्तम है।

जलनीलेंद्रनीलंच शक्रनीलंतयोर्वरं। श्वेतगर्भितनीलाभं लघुतज्जलनीलकं॥ कार्ष्ण्यगर्भितनीलाभ सभारंशक्रनीलकं।

नीलम, जलनील और इन्द्रनील के भेद से दो प्रकार की हैं, इन मे इन्द्रनील उत्तम है, उसके लक्षण कहते हैं जो नीलश्वेत मिश्रित और हलकी हो वह जलनील और जो भीतर से काली नीली प्रभायुक्त और भारी हो उसे इन्द्रनील कहते हैं।

उत्तमोत्तमनील

एकच्छाय गुरुस्निग्धं स्वच्छांपिंडितविग्रहं।
मृदुमध्येलसज्ज्योति सप्तधानीलमुत्तमम्॥

एकछाया, भारी, चिकनी, स्वच्छ, गोल, बीच में कुछ नम्र और ज्योतिवान् ऐसी सातप्रकार की नीलमणि उत्तम जाननी।

अधम

कोमलविहितंरूक्षं निर्भारंरक्तगंधिच।
चिपिटाभसरूक्षंच जलनीलंचसप्तधा॥

पांचवर्णयुक्त, अधोभाग में संपूर्णवर्णवाला, आधेभाग मे कोमल, रूखी, हलकी, रुधिरकीसी गधवाली, और चपटी ऐसी जलनील सात प्रकारकी हैं।

नील के गुण

श्वासकासहरंवृष्यं त्रिदोषघ्नसुदीपनं।
विषमज्वरदुर्नामपापघ्ननीलमीरितं॥

श्वास, खांसी, त्रिदोष विषमज्वर और बवासीर को दूरकरे तथा वृष्य हैं, जठराग्नि को दीपन करे, पापोका नाश करे, नीलम में इतने गुण हैं।

पुखराज

पुष्परागंगुरुस्वच्छं स्थूलंस्निग्धंसमंमृदु।
कर्णिकारप्रसूनाभमसृणंशुभमष्टधा॥

पुखराज भारी, स्वच्छ, मोटी, चिकनी, समान मृदु, कनेर के पुष्पकीसी कांतिवाली झलकदार, ऐसी आठ प्रकार का पुखराज शुभ है।

अधम

निष्प्रभकर्कशंरूक्षं पीतस्यामंनतोन्नतं।
कपिलंकलिलंपाण्डुं पुष्परागपरित्त्यजेत्॥

जो पुखराज निष्प्रभ, कडा, रुखा, पीला, काला, ऊंचा, नीचा, कपिल (नीला पीला मिला) कलिल और पांडुरग हो वह त्याज्य है।

मतान्तर

कृष्णंविंद्वङ्कितरूक्षं धवलंमलिनंलघु।
विच्छायंशर्कराभास पुष्परागसदोपलं॥

जो काला, बिंदुओमें, चिन्हित, रुखगवाला, सफेद, मलिन, हलका, बुरेरग का, छाया रहित, कंकरके आकार,पुखराज दोषयुक्त त्यागने योग्य है

सुच्छायपीतगुरुगात्रसुरगशुद्धं। स्निग्धंचनिर्मलमतीवसुवृत्तशील॥ तत्पुष्परागममलं

कलयेदमुष्य । पुष्णातिकीर्तिमतिशौर्ये सुखायुरर्थान् ॥

जो पुंखराज-स्वच्छ, पीला, भारी, उत्तम रंग वाला, शुद्ध, चिकना, निर्मल, गोल और तेजस्वी हो वह उत्तम है यह कीर्ति, शूरता सुख आयु और धनको बढावे ।

पुखराज के गुण

पुष्परागविषच्छर्दि कफवाताग्निमांद्यजित्। दाहकुष्ठार्शशमन दीपनंलघुपाचन ॥

पुखराजमणि विषबाधा, वमन, कफ वात-रोग, मंदाग्नि, दाह, कोढ और ववासीरका नाशकरे, दीपन और पाचन है ।

बाजूबंद आदिमें नवरत्न रखनेका क्रम।

प्राच्य।दिकुलिशस्यामौक्तिकमणिराग्नेयकोदक्षिणादिग्वल्लिप्रभवस्य नैॠतककुभ्गोमेदसौ वारुणी। नीलस्यांतदिग्विदूरजमणेर्वायोः कुबेरस्यदिग्पुष्पस्याथ हरिन्मणैर्हरहरिच्छैष स्यशेषाहरित् ॥

यदि दुष्टग्रहको बाजू वा चौकी आदि बनवावे तो नवरत्नोको इस प्रकार रक्खे, हीरा पूर्वमें मोती अग्निकोण, मूंगादक्षिण, गोमेद नैॠत, नीलम पश्चिम, वैदूर्य वायव्य, पुखराज-उत्तर, पन्ना ईशान, और पन्ना ही बीचमें जडाजाय इस प्रकार अगूठी आदिमे नगोको जडवाना चाहिये ।

नवग्रहरत्नदान

माणिक्यतुरवे. बुधस्यगरुडोद्गारोगुरोः पुष्पक। गोमेदोतमसः प्रवालमवनीसनोर्विधौ मौक्तिक ॥ नीलोमदगते कवेस्तुकुलिशं केतो विंडालाक्षकं । रत्नंरत्नविदोवदंति विहित दानेथवाधारणे ॥

सूर्यका माणिक, बुधकापन्ना, बृहस्पतिका-पुखराज, राहुकागोमेद, मंगलका मूंगा चन्द्रकामोती, शनिकानीलम, शुक्रकाहीरा, केतुका-वैदूर्य, इस प्रकार ग्रहोके प्रसन्नतार्थ रत्नोका दान अथवा धारणकरना चाहिये ऐसा रत्नज्ञाता कहते हैं ।

पञ्चरत्न

पुष्परागंमहानील पद्मरागंचवज्रकं। प्रोक्तं-मरकतशुभ्रं पञ्चरत्नवराः शुभाः ॥

पुखराज, नीलम, माणिक, हीरा, और पन्ना ये पाच रत्न सब रत्नों मे उत्तम हैं।

सर्वरत्नोंकाशोधनतथा मारण

वज्रवत्सर्वरत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा । प्रोक्तंनमारणंतेषारत्नज्ञै पृथगेवहि ॥

सब हणिक आदि रत्नोंका शोधन और मारण हीराके समान जानना इनका पृथक् नहीं कहा ।

उपरत्न

वैक्रान्त.सूर्यकांन्तश्चचन्द्रकांन्तस्तथैवच । राजावर्त्तोलालसञ्ज पेरोजाख्यस्तथापरे ॥ नीलपीतादिमणयोप्यन्येविषहराहिये । वन्ह्यादिस्तंभकायेचतेसर्वेहिपरिक्षकैः उपरत्नेपुगणितामणयोलोकविश्रुताः। रत्नादीनामलाभेतुग्राह्यंतस्योपरत्नकं॥ मौक्तिकस्या-ऽयभावेतुमुक्ताशुक्तिंप्रयोजयेत्।

वैक्रान्त, सूर्यकांत, चन्द्रकांत, राजावर्त्त, लाल, फीरोजा, और नीली तथा पीलीमणि विषहरणकर्त्ता तथा अग्नि स्तंभक जो रत्न हैं वो सब परीक्षकोने उपरत्नो की गणनामे रक्खे हैं। जहां रत्न न मिले तहा उसकी प्रतिनिधि मे उसका उपरत्न लेना योग्य है मोतीके अभाव में मोती की सीप लेनी चाहिये ।

उपरत्नों के गुण

गुणायथैवरत्नानामुपरत्नेपुतेतथा । तेपुकिंचित्ततोहीनाविशेषोयमुदाहृत. ॥

जो गुण रत्नो मे हैं वही उपरत्नों में हैं

१पुष्परागपरीक्षा घृष्टोविकाशयेत्पुष्परागमधिकमात्मीयम् नखलुपुष्परागोजात्यतयापरीक्षकैरुक्त१

परन्तु रत्नो की अपेक्षा उपरत्नो मे किंचित् न्यून हैं यह विशेष कहा है।

वैक्रान्तकी उत्पत्ति

दैत्येन्द्रोमाहिष:सिद्ध:सहदेहसमुद्भव: ।
दुर्गाभगवतिदेवीतंशूलेन विमर्दयत् ॥
तस्यरक्ततुपातितंयत्रयत्रस्थितंभुवि ।
तत्रतत्रतुवैक्रांतवज्राकारमहारसम् ॥
विंध्यंसदक्षिणेचास्तिउत्तरेचास्तिसर्वत. ।
विकृत्तयतिलोहानितेनवैक्रांतिक:स्मृत: ॥

दैत्यपति महिषासुर और देवताओ का घोर युद्ध हुआ, तब उस महिषासुर को भगवती शूल से मारती हुई, उसकी देह से रुधिर जहां २ पृथ्वी मे गिरा वहा २ वैक्राति मणि हीरा के सदृश महारस प्रगट हुई। यह विन्ध्याचल के दक्षिण भाग मे तथा उत्तर में सर्वत्र प्राप्त होती है, यह लोहे को विकृत करती है इसीसे इसको वैकांत कहा है।

मतान्तर

देव्याहतेमहादैत्येमहिषासुरसंज्ञके ।
तद्देहरुधिरोद्भुताविंदुर्येयत्रयत्रहि ॥
पर्वतेषुविकारास्तुवैक्रांताइतिविश्रुता: ।

जब भगवती ने महिषासुर को मारा उसकी देह से जो रुधिर की बूंद जिस २ पर्वत में गिरी उसीके विकार से यह वैक्रान्तिमणि प्रगट हुई यह रसेन्द्रकल्पद्रुम का लिखा है।

तथा च

दैत्येन्द्रोमाहिष.सिद्ध:तस्यदेहात्समुद्भव: ।
अवध्य.सर्वदेवानांबलोनाममहासुर. ॥
त्रिदिवस्योपकारार्थं त्रिदिवै.प्रार्थितोमुखे ।
देवै:समस्तै:शक्राद्यै:स्तुतिंदुर्गां प्रचक्रम: ॥
तदादेवीभगवतीतवज्रेणविनाशयत् ।
तस्यरक्तंतुपतितयत्रयत्रस्थितभुवि ॥
तत्रतत्रतुवैक्रांतवज्राकारंमहीधरं ।
वज्रसंज्ञाकृतोदेवै:नामप्राप्तस्तुचोत्तमम् ॥
संभूत्वारत्नकूटानिवज्रेणहतमस्तक: ।
मूर्ध्निवर्णोत्तमोजातोभुजयो:क्षत्रिय:स्मृत: ॥
वैश्योनाभिप्रदेशेतुपादाच्छूद्रस्तथैवच ।
सुरदैत्योरगै:सिद्धै:यक्षगंधर्वकिन्नरै: ॥
मुकुटेकटिसूत्रेचकटकादिविभूषणे ।
खचितानेकरत्नानांत्रैलोक्येष्वपिदुर्लभा: ॥

दैत्येन्द्र महिषासुर सिद्ध की देह से प्रगट हुआ सर्व देवताओ से अवध्य बलनामा महा असुर उसको स्वर्ग के उपकारार्थ संग्राम मे सब इन्द्रादिक देवता दुर्गा की स्तुति करते हुए, तब भगवती देवताओ की प्रसन्नतार्थ उसको वज्र से मारती हुई, तब उसकी देह से रुधिर जहां-जहां पृथ्वी और पर्वतादिकों मे गिरा वहां २ हीरा के समान वैक्रातमणि प्रगट हुई, इसकी देवों ने वज्र संज्ञा की इस प्रकार इसका उत्तम नाम पडा, वज्र से जब उसका मस्तक तोडा सो रत्नखचित पर्वतो मे इसकी उत्पत्ति हुई जो उसके मस्तक के रुधिर से बना वो ब्राह्मणवर्ण वैक्रान्त प्रगट हुआ। भुजा से क्षत्रीवर्ण नाभि से वैश्यवर्ण, और पैरों के रुधिर से शूद्रवर्ण वैक्रान्त प्रगट हुआ, देव, दैत्य, सर्प, सिद्ध, यक्ष, गंधर्व और किन्नर इसको मुकट-कटिसूत्र-कडे आदि भूषणो मे अनेक रत्नों सहित धारण करते हुए, यह रसेन्द्रपद्मकोश से लिखा है।

शुभ वैक्रान्त के लक्षण

अष्टास्रश्चाष्टफलक:षट्कोणोमसृणोगुरु ।
शुद्धमिश्रितवर्णैश्चयुक्तोवैक्रान्तमुच्यते ॥

आठ कोने, आठ फलक, छः कोने, चमचमाहट, भारी शुद्ध, मिले हुए वर्ण का वैक्रांत उत्तम कहाता है।

वैक्रान्त के वर्ण

श्वेतरोक्तश्चपीतश्चनीलपारावतच्छवि. ।
श्यामल.कृष्णवर्णश्चकर्बुरश्चाष्टधाहिस ॥

सफेद, लाल, पीला, नीला, कबूतर के रंग

का, श्याम, कृष्ण, कबरा, ये आठ प्रकार का वैक्रान्तमणि होता है।

मतान्तर

वैक्रान्तश्वेतपीतादिभेदेनाष्टप्रकारकं ।
स्वर्णरूप्यादिकेवर्णेस्वस्ववर्णःशुभोमतः ॥
वैक्रान्तकृष्णवर्णोयःपट्कोणवसुकोणकः ।
मसृणोगुरुतायुक्तोनिमलःसर्वसिद्धदः ॥

वैक्रान्तमणि सफेद, पीले आदि रगों करके आठ प्रकार का है, सुवर्ण रूप आदि करके अपने २ वर्णों का उत्तम होता है जो काले रग का, और छः तथा आठ कोन वाला हो और चकचकाहट युक्त भारी और निर्मल हो वह सर्वसिद्धिदायक होता है।

अन्य प्रकारान्तर

श्वेतःपीतस्तथारक्तोनीलपारावतप्रभः ।
मयूरकठसदृशचान्योमरकतप्रभः ॥
देहसिद्धिकरंकृष्णंपीतेपीतसितेसितं ।
सर्वार्थसिद्धिदंरक्तं तथामरकतप्रभं ॥
शेपेद्वे निष्फलेवर्ज्येवैक्रांतमितिसप्तधाः ।

सफेद, पीला, लाल, नीला, कबूतर के रंग का, मोर की गर्दन का-सा, पन्ना के सदृश हरा इन में काला देह की शुद्धी करता है, सुवर्ण बनाने मे पीला, चादी बनाने में सफेद और सर्व सिद्धि के निमित्त लाल और हरा वैक्रान्तमणि लेना योग्य है। बाकी दो रग का नीला और कबूतर के रंग का सो निष्फल और वर्जित हैं, ऐसे सात प्रकार का वैक्रान्तमणि जानना।

वैक्रान्त की ग्रहणविधि

यत्रक्षेत्रे स्थितंचैववैक्रांतंतत्रभैरवं ।
विनायकंचसपूज्यगृह्णियाच्छुद्धमानसः ॥

जिस स्थान में वैक्रान्त होवे वहा भैरव और गणपति का शुद्ध मन से पूजन कर मणि गृहण करे, किसी पुस्तक मे (सुमुहूर्त्ते तत कार्यसपूज्य-बलिपूर्वक) ऐसा लिखा है अर्थात् शुभ मुहूर्त मे गणपति और भैरव का बलि आदि से पूजन कर पीछे मणि को निकाले।

वैक्रान्त का शोधन मारण

वैक्रांतंवज्रवत्शोध्यंनीलंवालोहितंतथा ।
हयमूत्रे तुतत्सेच्यंतप्तं तप्तं द्विसप्तधा ॥
ततस्तुमेपशृंग्युत्थपंचांगेगोलकेक्षिपेत् ।
पुटेन्मूषापुटेरुध्वाकुर्यादेवंचसप्तधा ॥
वैक्रांतभस्मतांयातिवज्रस्थानेनियोजयेत् ।

वैक्रान्त नीली हो वा लाल दोनों का हीरा के समान शोधन करे, पीछे तपा २ कर १४ वार घोडे के मूत्र मे बुझावे, पीछे मेंढासिगी का पंचाग ला उसको कूट पीस गोला बना उसमे मणि को रख मिट्टी के सरवो से बंद कर ऊपर कपरमिट्टी कर आरने उपलों की आंच से गजपुट में फूंक दे, इस प्रकार सात वार मे मणि की भस्म होवे, इसको हीरा की भस्म के अभाव में देवे।

दूसरा प्रकार

वैक्रांतंवज्रवच्छोध्यंध्मातसिक्तं नृमूत्रके ।
वज्रवन्मृतिमायातिवज्रस्थानेप्रयोजयेत् ॥

वैक्रातमणि का हीरा के समान शोधन करे, उसको अग्नि मे तपाकर मनुष्य के मूत्र मे बुझावे और इसका मारण भी हीरा के सदृश होता है इसको हीरा के अभाव मे देवे।

तीसरा प्रकार

कुलित्थकाथसंस्विन्नोवैक्रांत.परिशुद्ध्यति ।
म्रियतेष्टपुटैर्गंधर्निबुकद्रवसंयुतम् ॥

वैक्रान्तकुलथी के काढ़े में औटाने से शुद्ध होये, और नींबू के रस में गंधक पीस वैक्रान्त को उसमें लपेट अग्नि देवे इस प्रकार आठबार में मणि की भस्म हो।

चौथा प्रकार

वैक्रान्तकस्तुविधिवत्त्रिदिनंविशुद्धोसंस्वेदि
तोक्षारपट्टूनिदत्वा अम्लेपुमूत्रे पुकुलित्थरंभा
नीरेथवाकोद्रववारिपक्वः ॥

वैक्रांतमणि-क्षारवर्ग, लवणवर्ग, अम्लवर्ग, मूत्रवर्ग, कुलथी का काढा, केले का रस, अथवा कोदो के काढ़े से तीन तीन दिन स्वेदन करने से शुद्ध होवे।

पंचम प्रकार

वैक्रान्तेपुचतप्तेपुहयमूत्रेविनिक्षिपेत्।
पौनपुण्येनवाकुर्यात्द्रवदत्वापुटंतनु ॥
भस्मीभूततुवैक्रान्तंवज्रस्थानेनियोजयत्।

वैक्रान्त को तपाकर घोडे के पेशाब मे डालदे इस प्रकार बार बार करे जब खूब गरम हो जाय तब घोडे के मूत्र मे बुझावे तो भस्म होवे इसको हीरा के अभाव मे देवे।

वैक्रांतानुपान

भस्मत्वंसमुपागतोविकृतकोहेम्नामृतेनान्वितो। पादांशेनकलाज्यवल्लसहितोगुंजोन्मित.सेवितः॥ यक्ष्माणज्वरणाश्चपाण्डुगुदजं श्वासंचकासामय। दुष्टंसंग्रहणीमुर.क्षतमुखान्रोगान्जयेद्देहकृत॥

वैक्रान्त भस्म १ रत्ती, सुवर्णभस्म चौथाई रत्ती, पीपल, मिरच और मक्खन के साथ खाने से खई, ज्वर, पाण्डु, बवासीर, श्वास, खांसी, असाध्य सग्रहणी, और उरक्षत आदि रोगों का नाश करे।

सूतभस्माद्धं सयुक्त नीलवैक्रान्तभस्मक।
मृताभ्रसत्वमुभयोस्तुलितपरिमर्दितं ॥
क्षौद्राज्यसंयुतःप्रातगुंजामात्र निषेवितं।
निहतिसकलान्रोगान्दुर्जयानन्यभेषजै ॥
त्रिसप्तदिवसैर्नृणागंगाभइवपातक।

पारे की भस्म १ भाग, नील वैक्रान्त की भस्म आधा भाग, दोनो के समान मरी अभ्रक इन सब को सहत और घृत मे मिलाकर प्रातः काल एक रत्ती नित्य खाय तो सपूर्ण दुर्जय (असाध्य) रोगों को दूर करें, २१ दिवस सेवन करने से देह को गंगाजल के समान पवित्र करे।

वैक्रांत भस्म के गुण

वैक्रान्तवज्रसदृशोदेहलोहकरोमतः।
विषघ्नोरसराजस्यज्वरकुष्ठक्षयप्रणुत् ॥
वैक्रान्तस्तुत्रिदोषघ्नःषड्सोदेहदार्ढ्यकृत।
पांडूदरज्वरश्वासकासयक्ष्मप्रमेहनुत् ॥

वैक्रात के गुण हीरा के समान हैं यह देह को दृढ करे, पारे का विष दूर करे, ज्वर, कोढ, खई, त्रिदोष, पाण्डु, ज्वर रोग, श्वास, खांसी और क्षय का नाश करे, प्रमेह को जीते, यह षट्रसयुक्त है।

वैक्रान्त का सत्वपातन

सत्वपातनयोगेनमर्दितश्चवटीकृतः ॥
मूषास्थोघटिकाध्मातोवैक्रान्तःसत्वमुत्सृजेत्।

प्रथम जो सत्वपातन के योग कह आये हैं, उनमे वैक्रान्त मर्दनकर गोला करे उसको मूषा मे रख एक घडी प्रचण्ड अग्नि मे धमावे तो वैक्रांत मणि सत्व को छोड देवे।

दूसरा प्रकार

मोक्षमोरटपलाशक्षारगोमूत्रभावितं।
वज्रकंदनिशाकल्कफलचूर्णसमन्वितम ॥
तत्कल्वंटकणंलाक्षाचूर्णं वैक्रान्तसंभव।
शरावेणसमायुक्त मेषश्रृंगीद्रवान्वित ॥
पिंडितमूकमूषास्थंध्मापितेचहठाग्निना।
तत्रैवपततेसत्ववैक्रान्तस्यनसंशयः ॥

मोक्षवृक्ष (मोखावृक्ष) मोरट (शोरा या खैर इति दक्षिणी भाषा प्रसिद्ध) और ढाक इन तीनो के खार को गोमूत्र की भावना देवे तदनतर वज्रकद (थूहरकीजड) हल्दी का कल्क इनमे ककोल का चूर्ण मिलाकर मेढासिगी का रस मिलाय गोला बनावे उसको वज्रमूषा मे रख प्रचण्ड अग्नि से धमावे तो वैक्रान्त का सत्व निश्चय निकले।

तीसरा प्रकार

वैक्रान्तस्यपलचैककर्षंकंटकणस्यच।
रविक्षीरैर्दिनैर्भाव्यमद्यंशिग्रुदिनैर्द्रवं॥

गुञ्जापिण्याकवन्हीनांप्रतिकर्षाणियोजयेत् ।
एतेनगुटिकांकृत्वाकोष्टयन्त्रे धमेद्दृढं ॥
शंखकुन्देन्दुसंकाशंसत्ववैक्रान्तजंभवेत ।

चार तोले वैक्रान्त-दो तोले सुहागा, दोनों को एक दिन आक के दुध में घोट सहजने के रस मे एक दिन घोटे, पीछे घूंघची-खल, तथा चित्रक को एक एक तोला ले उसमे वैक्रान्त को खरल करे और गोला बनाय कोष्ट यन्त्र मे रख बंकनाल से धोके तो शंख कंद पुष्प और चंद्रमा के समान सफेद सत्व निकले ।

संपूर्ण रत्नों का शोधनमारण

स्वेदयेद्दोलिकायंत्रे जयंत्यास्वरसेनच ।
मणिमुक्ताप्रवालानांयामैकंशोधनंभवेत ॥
कुमार्यास्तंदुलोयेनस्तन्येनचनिषेचयेत् ।
प्रत्येकसप्तवेलंचतप्ततप्तानिकृत्स्नशः ॥
मौक्तिकानिप्रवालानितथारत्नान्यशेषतः ।
तृणाद्विविधवर्णानिम्रियंतेनात्रसंशयः ॥
उक्तमाक्षिकवन्मुक्ताःप्रवालानिचमारयेत् ।
वज्रवत्सर्वरत्नानिशोधयेन्मारयेत्तथा ॥

सूर्यमणि मोती और मूंगा को दोला यंत्र मे डालकर जयंती (अरनी) के रस मे एक प्रहर स्वेदन करे तो शुद्ध होवे । इसी प्रकार हीरा, पन्ना, पुखराज (पीले रंग की मणि) माणिक लाल रंग की मणि) इसको फारसी में याकत कहते हैं, इन्द्रनील (स्यामता लिये नीले रंग की गोमेद (पीलापन लिये लाल) वैदूर्य (जमीन हरी ऊपर तीन सफेद सूत) मोती और मूंगा ये नवरत्न कहाते हैं। हीरा को फारसी में अलमास कहते हैं, और खोटे हीरा को भाषा मे काँसुला कहते हैं और सस्कृत में वैक्रान्त कहते हैं और खोटी नील मणि को नीली कहते हैं और खोटा माणिक तामड़ा कहाता है, खोटा पुखराज करकत कहाता है, इनको गुवार को रस चौलाई के रस और स्त्री के दूध में गरम कर सात सात वार बुझाने से मोती मूंगा तथा और अनेक प्रकार के रत्न भस्म होवे; तथा मोती मूंगा आदि का सोना मक्खी के समान मारण करे अथवा पन्ना, पुखराज, माणिक, इन्द्रनील, वैदूर्य, मोती और मूंगा आदि का हीरा के समान शोधन मारण करे ।

रसोपरस

सिद्धंपारदमभ्रकंचविविधान्धातुंश्चलोहानि चप्राहुःकिंचमणीनथश्चसकलान्संस्कारतः- सिद्धिदान् ॥ यत्सस्कारविहीनमेपुहिभवेद्यचा न्यथासंस्कृतं तन्मर्त्यंविषवद्धिहंतितदिह- ज्ञेयाबुधै सत्क्रिया । यत्संकृताशुभगुणानथ चान्यथावैदोषाश्चयद्यपिदिशंतिरसादयोमी ॥ याश्चेहसंतिखलुसंस्कृतयस्तदन्तेनात्राभ्य- धायि बहुविस्तरभीतिभाग्भि ॥

पारा, अभ्रक, अष्टधातु, सप्तउपधातु, रत्न, और उप रत्न, ये सस्कार करने से गुणदायक होते हैं। अगर इनका संस्कार न हुआ हो तो ये मनुष्य के विष के समान प्राण हर लेते हैं। रसोपरसादि विधि पूर्वक संस्कार करने से जो गुण करते हैं सो अविधि सस्कार करने से अवगुण करते हैं सो सब शास्त्र मे लिखे हैं उन सबको ग्रन्थ विस्तार भय से नहीं लिखते ।

सूर्य्यक्रान्त

शुद्धःस्निग्धोनिर्व्रणोनिस्तुषस्तुयोनिघृष्टोव्यो मनैर्मल्यमेति । यःसूर्यांशुस्पर्शनिष्ठ्यतवन्हि जास्यःसोयंचद्यतेसूर्यकान्त ॥

सूर्यमणि-चिकनी, व्रण रहित, निस्तुष, घिसने से आकाश के समान स्वच्छ हो, सूर्य की किरण में रखने से जल उठे उसको जातिवत सूर्य्यकान्तमणि कहते हैं ।

गुण

रविकान्तोभवेदुष्णोनिर्मलश्चरसायनः ।
वातश्लेष्महरोमेध्यःपूजनाद्रवितोषकृत् ॥

सूर्य्यकान्तिमणि गरम, निर्मल और रसा-

यन है वादी और कफ का नाश करे बुद्धि को बढ़ावे, इसके पूजन से सूर्य प्रसन्न होते हैं।

चंद्रकान्त

स्निग्धंश्वेतपीतमात्राच्छमंतद्धत्तेचित्तेस्वेच्छयायन्मुनीना। यच्चस्त्रावयातिचद्राशुसंगाज्जात्यारत्नचन्द्रकाताख्यमेतत्॥

चद्रकान्तिमणि, चिकनी, सफेद वा पीली, मुनीश्वरों के अन्त:करण के समान निर्मल तथा चादनी में रखने से जल छोडे उसे जातिवन्त जानना।

गुण

चन्द्रकान्तस्तुशिशिर स्निग्ध:पित्तास्रतापनुत्। शिवप्रीतिकर.स्वच्छोग्रहालक्ष्मीविनाशन.॥

चद्रकान्तिमणि शीतल, चिकनी, शिव की प्रीति बढ़ाने वाली और स्वच्छ होती है। पित्त-रक्त, दाह, ग्रहपीडा और अलक्ष्मी की बाधा को दूर करे।

राजावर्त्त

राजावर्त्तोल्परुक्तारुनीलमामिश्रितप्रभ:॥ गुरुत्वमसृण'श्रेष्ठस्तदन्योमध्यम.स्मृत ॥

राजवर्त्त (खेटा) थोडा लाल कुछ नीलता मिश्रित, भारी, चकचकाहट युक्त ऐसा उत्तम होता है, इसके विपरीत मध्यम इसको दक्षिणा भाषा में गोविन्दमणि कहते हैं।

निर्गारमसितमसृणंनीलगुरुनिर्मलबहुच्छाय। शिखिकठसमसौम्यराजावर्त्त वदतिजात्यमणि:॥ राजावर्तोद्विधाप्रोक्त.गुटिकाश्चूर्णभेदत'।

राजावर्त्त-गढेला रहित, काला, चिकना, नीलवर्ण, भारी, निर्मल, बहुत छायायुक्त, मोर की गर्दन के-से रँग, और सौम्य जातिवत होता है, यह गुटिका और चूर्ण के भेद से दो प्रकार का है।

गुण

प्रमेहक्षयदुर्नामपाण्डुश्लेष्मानिलापह:। दीपन:पाचनोवृष्योराजावर्त्तोरसायन:॥ राजवर्त्तोगुरुस्निग्धोशिशिर.पित्तनाशन:। सौभाग्यकुरुतेनृणांभूपणेपुप्रयोजित ॥

प्रमेह, खई, ववासीर, पाडुरोग, कफ और वात विकारो का नाश करे। दीपन,पाचन, वृष्य, रसायन, भारी, चिकना शीतल और पित्त नाशक है। भूषण में धारण करने से सौंदार्यदाता ये राजावर्त्त के गुण हैं।

राजावर्त्त का शोधन

शिरीषपुष्पार्द्र रसै:संतप्तश्चनिमज्जित'। सप्तवारंभवेत्शुद्धोराजावर्त्तोनसशय ॥

सिरस के फूल के रस और अदरक के रस मे राजावर्त्त को तपा-तपा कर ७ बार बुझावे तो शुद्ध होवे।

दूसरा प्रकार

निंबुद्रवै:सगोमूत्रै.सक्षारै.स्वेदतोखलु। द्वित्रिवारेणशुध्यतिराजावर्त्तादिधातव:॥

राजावर्त्त को गो मूत्र और क्षारयुक्त नींबू के रस मे दो तीन बार स्वेदन करने से शुद्धि होवे। आदि शब्द से मोती, मूगा, फीरोज आदि भी शुद्ध होते हैं।

राजावर्त्त मारण

लुंगाबुगंधकोपेतोराजावर्त्तोविचूर्णित। पुटनात्सप्तवारेणराजावर्त्तोमृतोभवेत्॥

राजावर्त्त के चूर्ण मे गधक मिलाय विजोरे के रस मे घोट शराव मे रख गजपुट मे फूके, इस प्रकार सात बार मे राजावर्त्त की भस्म होवे।

राजवर्त्त का सत्वपातन

राजावर्त्तस्यचूर्णं तुकुनटीघृतमिश्रित। विपचेदायसेपात्रे महिषीक्षीरसयुत ॥

सौभाग्यपंचगव्येनपिंडीवद्ध न्तुकारयेत् ।
धामितंखदिरांगारै.सत्वमुंचतिशोभनम् ॥

'राजावर्त' के चूर्ण में मनसिल और घृत मिलाय लोह पात्र में दूध में औटावे तदनन्तर सुहागा पञ्चगव्य (दूध, दही, घृत, गोमूत्र, गोबर) से पूर्वोक्त राजावर्त का गोला बना कर परिया में रख खैरसार के कोलों में बकनाल से धोंके तो राजावर्त सत्व छोड़े ।

फिरोजा

फिरोजंहरितश्यामभस्मागंहरितंद्विधा ।
फिरोजसुकषायंस्यान्मधुरंदीपनपर
स्थावरंजंगमंचैवसयोगाच्चयथाविषम् ।
तत्सर्वंनाशयेच्छीघ्रं शूलभूतादिदोषजं ॥

फीरोजा पत्थर-भस्मांग और हरा दो प्रकार का होता है । यह कसेला, मधुर और दीपन है, सयोग से स्थावर जंगम विष, शूल तथा भूतादिकों का दोष नाश करता है ।

स्फटिक

यद्गंगातोयविंदुच्छविविमलतमनिस्तुषंनेत्र्यहृद्यं । स्निग्धंशुद्धांतरालमधुरमतिहिमपित्तदाहास्रहता ॥ पाषाणेयन्निघृष्ठस्फुटितमपिनिजास्वच्छतांनैवजह्यात्तज्जात्यजात्वलभ्यंशुचिमपिचिनुतेशैवरत्नचरत्नम् ॥

जो स्फटिकमणि गंगाजल के समान स्वच्छ अग्नि के समान, चकचकाहटदार, त्रिदु रहित, नेत्र और हृदय को हितावह, चिकना, जिसका भीतर का भाग शुद्ध, मधुर, अत्यन्त शीतल हो, पित्त-दाह-रुधिर विकार को शान्ति करे, पत्थर पर घिसने से जिसकी स्वच्छता न जाय, उसे जातिवत जानना इसको रत्नों में शिव प्रिय जानना ।

स्फटिक के गुण

स्फटिकःसमवीर्य स्यात्पित्तदाहार्त्तिशोषनुत् ।
तस्याक्षमालांजपतोधत्ते कोटिगुणफलम् ॥

स्फटिकमणि[1] समवीर्य, है, पित्त दाह तथा शोष का नाश करें, इसकी माला जपने से करोड़ गुणा फल हो ।

सर्व रत्नों के लक्षण

स्यामस्यादिन्द्रनीलस्त्वतिमसृणतनुश्चातिगारुत्मत.स्यान्नीलच्छायोतिदीप्तो ग्यथपिहरिमणि सूर्यतप्ताग्निमुक्स्यात् ॥ चद्रांशुस्पर्शतोभ स्रवतिशशिमणि पुष्परागस्तुपुष्पप्रख्य' श्रीवज्रमुच्चैर्घनसहमभितोसंविशेल्लोहपिंडे ॥ वैदूर्य यद्विडालेक्षणरुचिगदितस्याच्चगोमेदरत्नंगोमूत्राभविधूमं ज्वलदनलनिभंपद्मरागं वदति । मुक्ताशंखप्रवालसरिद्धिपतिजंविश्वविख्यातमेतद्राजावर्त्तं तुपीतारुणमृदुसुरभिक्षोणिजातोस्थमाहुः ॥

इन्द्रनीलमणि श्यामवर्ण अत्यन्त चिकनी, गरुडमणि (पन्ना) चिकनी नीलतालिये चकचकाहट वाली हरिन्मणि । सूर्यमणि सूर्य के तेज में अग्नि प्रगट करे, चंद्रकातिमणि चन्दमा की काति से स्रवे, पुष्पराग फूल के पराग के समान पीला, हीरा जो निहाई पर घन की चोट लगाने से निहाई तथा घन में प्रवेश हो जाय, वैदूर्यमणि बिलाव के नेत्रों के समान कातिवाली गोमेद गोमूत्र के वर्ण, पद्मराग निर्धूम अग्निके समान मोती शख और मूंगा समुद्र में होते हैं ये सब विख्यात हैं राजावर्त्त पीत और अरुण वर्ण, चिकना और स्वच्छ होता है । ये सब खान से प्रगट होते हैं ।

---

१ स्फटिक की उत्पत्ति और परीक्षा ।
कावेरविंध्ययवनचीननैपालभूमिषु । लागलीव्यकिरन्मेदोदान वस्यप्रयत्नत. ॥ आकाशशुद्ध तैलाख्यमुत्पन्नंस्फटिकंतत. । मृणालशखधवलकिंचिद्वर्णान्तरान्वितं ॥ नतत्तुल्यंहिरत्नानामथवापापनाशनम् । संस्कृतशिल्पिनासद्योमूल्यंकिंचिल्लभैतत: ॥

सत्वपातनार्थसामान्य शोधन

महारसानांसर्वेषारसानांशुद्धिरुच्यते ।
तथाचोपरसानाच शास्त्रदृष्टेनवर्त्मना ॥
वंध्याकर्दपीतवेणी स्नुह्यर्कावर्तवायसी ।
वारिपिप्पलिकाचैवकदलीसपुनर्नवा ॥
कोशातकीमेघनादो वज्रकंदश्चलांगली ।
एषांचैवरसैःसम्यक् पटुक्षीराम्लसंयुतैः ॥
भावतिव्या.रसा.सर्वे विषोपविषभिःक्रमात
महारसाश्चसर्वेपि शुद्धयत्यौपरसास्तथा ॥
पश्चाध्मातायिमुंचंति सत्वंबहुलमुत्तमम् ॥

सत्व पातन

गुडगुग्गुलसौभाग्यं लाक्षासर्जरसः पटुः ।
ऊर्णागुंजाक्षद्रमीनमस्थीनिशशकस्य च ॥
तथामध्वाज्यपिण्याकं तुल्यंपेष्यमजापयैः ।
सर्वतुल्यचधान्याभ्रं भूनागमृतिकाथवा ॥
कातपाषाणचूर्णं वा कठिनांण्रसाश्चये ।
मलयेन्माहिषैपंच दृढसर्वगुटीकृताः ॥
कर्षमात्रप्रमाणाच् कोष्टयंत्रं दृढ धमेत् ॥
अगारैर्खदिरोद्भूतै॰ त्रिवारधमनाद्‌ध्रुव ॥
निर्मलपततेसत्वं असाध्यस्याप्यसशयः ।

सत्व पड़ने की परीक्षा

शुक्रदीप्तःसव्दश्च यदावैश्वानरोभवेत् ।
तदासत्वतुपतित जानीयान्नान्यथाक्वचित् ।
तथाग्नौदक्षिणावर्तेसत्वप्रपतितंवदेत् ।

सत्व नम्र करने की विधि

यदिसत्वतुकठिनं भवेत्तत्रमृदुक्रिया ।
सत्वसमस्तसग्राह्यं काचकिट्ट विवर्जयेत् ॥
निक्षिप्यवज्रमूषाया वंकनालेनसधमेत् ।
स्तोकंस्तोकददन्नागं समद्वित्रिचतुर्गुणं ॥
यावत्सकोमलतावत्ससत्वयोजयेद्रसे ।

प्रकारान्तर

अथवार्काठिनसत्व वज्रमूषातरेस्थि ।
समटकणसौवीरद्रोणपुष्पीरसेनवै ॥
खदिरांगारकेध्मातं ढालयेद्गोघृतेनवै ।
कोमलजायतेसत्व नात्रकार्याविचारणा ॥

नम्रसत्व के खाने और पारे में मिलाने का प्रमाण

नसत्वंकठिनंसूते देहेवाक्रमतेक्वचित् ।
तस्मासत्वचलोहंच मृदुकृत्वाप्रयोजयेत् ॥
इतिरसार्णवे ।

सत्व पातन काले वन्हि लक्षणं

आवर्तमानंकनकेपीतातारेसितप्रभा ।
शुल्वेनीलनिभातीक्ष्णेकृष्णावर्त्मासुरेश्वरी ॥
वगेज्वालाकपोताभानागेमलिनधूसरा ।
शैलेतुधूसरादेविआयसेकपिलप्रभा ॥
अयस्कान्तेधूम्रवर्णाशस्येचलोहिताभवेत् ।
वज्रेनानाविधाज्वालात्वासत्वेपांडुरप्रभा ॥

शुद्ध सत्व की परीक्षा

नविस्फुलिंगानचबुद्बुदायदा यदानचैषांपटलंनशब्दः । मूषागतंरत्नसमस्थिरंच तदा विशुद्धंप्रवदन्तिसत्वम् ॥

तथा च

शुल्वेदीप्तिःसशब्दःस्यायदावैश्वानरोभवेत् ।
लोहावर्तसमंज्ञेयंसत्वपततिनिर्मलं ॥

घरिया बनाने का प्रमाण

षोडषांगुलविस्तीर्णा हस्तमात्रायताशुभा ।
धातुसत्वनिपातार्थं कोष्टिकावरवर्णिनी ॥
वशखादिरमाधूक वदरोदारुसंभवैः ।
परिपूर्णादृढांगारै रथवातेनकोष्ठकैः ॥
भस्त्रयाज्वालमार्गे ज्वलयेच्चहुताशनं ।
इतिरससिंधौ

सत्व और द्रुति के गुण

यस्यद्रव्यस्ययत्सत्व तत्गुणस्तच्छताधिक ।
द्रुति.शतगुणातस्माद्रसयुक्तात्ततोधिका ॥

मूष बनाने का क्रम

प्रविततमुखभागःसंवृतांत.प्रदेशः स्थलविर-

चितवीरांतर्जलिकोष्ठकंस्यात्। बकगलकसमानंचक्रमालंविधेय ससुपिरनलिकान्यामृन्मयादीर्घवृत्ता ॥ सिद्धासिध्यसमानित्यंसूरास्त्यागसमन्विताः। असिद्धेनोपहारयेतनासिद्धेप्यभिनर्दति ॥

विष प्रकरणम्

शृणुदेविप्रवक्ष्यामि यत्रोत्पन्नमहाविषं।
भेदास्तस्यवरारोहे यत्रतत्रसविस्तरं ॥
देवदैत्योरगाःसिद्धा अप्सरोयक्षराक्षसाः।
पिशाचाःकिन्नराश्चैव मिलित्वाचवरानने ॥
एकतोबलिराजश्च ब्रह्माद्याश्चतथैकतः।
मंथानंमदरंकृत्वा नागराजेनवेष्ठितं ॥
क्षीराब्धिमथनतत्र प्रारब्धसुरसुंदरि।
निर्गतास्तत्ररत्नानि कामधेन्वादयःप्रिये।
अमलाकमलोत्पन्नाः पश्चादुच्चैःश्रवाततः।
ऐरावतोमहाकायो निगतंदेविचामृतं ॥
अतीवमथनादेवि मंदराघातवेगतः।
अहिराजश्रमाद्देवि विषज्वालाविनिर्गता ॥
ततोतिघोरासाज्वालानिमग्नाक्षीरसागरे।
प्रलयानलसंकाश क्रुद्धाकालइवोत्कटः ॥
तंदृष्ट्वाविबुधासर्वेदानवाश्चमहाबला।
विषण्णवदना.सद्यःप्राप्ताश्चैवमदंतिकं ॥
ततस्तैःप्रार्थ्यमानोहमपिवविषमुत्तमं।
ततोवशिष्टमभवन्मूलरूपेणतद्विषं ॥
पत्ररूपेणकुत्रापिमृत्तिका रूपत.कचित्।
कंदरूपेणकुत्रापित्रयोदशविधंविषम् ॥

हे पार्वती! मैं तेरे आगे विष की उत्पत्ति तथा स्थान और भेद कहता हूँ, तू सुन, पहले देवता दैत्य, सर्प, सिद्ध, अप्सरा, यक्ष, राक्षस पिशाच और किन्नरों ने मिलकर समुद्र को मथा एक ओर सब दैत्य राक्षसो को ले राजा बलि खडा हुआ, दूसरी ओर सब देवताओ को साथ ले ब्रह्मा जी खडे हुए। उन्होंने मदराचल की रई, व सुकीसर्प को नेतो (डोरी) बनाकर हे सुरसुन्दरी! सबने समुद्र मथन का प्रारम्भ किया, उसमें कामधेनु आदि चौदह रत्न निकले, लक्ष्मी उच्चैश्रवा घोडा, ऐरावत हाथी तदनन्तर अमृत पीछे अत्यन्त मथन करने और मंदराचल के घमर के देने से हे देवि! सर्प को अत्यन्त श्रम होने से मुख से विष की ज्वाला उत्पन्न हुई वह घोर ज्वाला क्षीर सागर में लीन हो गई तदनन्तर वही अग्नि के समान तथा क्रोधित काल के समान हलाहलविष प्रगट हुआ, उसको सब देव दानव देखकर मलिनमुख होते हुए मेरे समीप आकर स्तुति की, तब मैं प्रसन्न होकर विष को पीता हुआ, जो मेरे पीने से बाकी रहा वह कहीं जडरूप, कहीं पत्ररूप, कहीं मिट्टी और कही कंदरूप से प्रगट हुआ उसके तेरह भेद हैं।

विषभेद

तेषुश्रेष्ठंकंदविषंत्रयोदशविधंस्मृतं। कर्कटंकालकूटचवत्सनाभंहलाहलं ॥ वालुकंकर्दमंचैवसक्तुकं मूलकंतथा। सर्षपंशृंगकदेविमुस्तकंचमहाविषं ॥ हरिद्रकमितिप्रोक्तंत्रयोदशविधविषं।

पूर्वोक्त विषो मे कंदविष उत्तम है, वह तेरह प्रकारका है कर्कट १, कालकूट २, वत्सनाभ ३, हलाहल ४, वालुक ५, कर्दम ६, सक्तुक ७, मूलक ८, सर्षप ९, शृंगक १०, मुस्तक ११, महाविष १२, और हरिद्रक।

कहे हुए विषों के वर्ण

कर्कटंकपिवर्णस्यात्काकचंचुनिभंपुनः। कालकूटंततोज्ञेयवत्सनाभंतुपाण्डुरं ॥ भंगुराकंदवद्विनीलवर्णंहलाहलं। वालुकवालुकाभंचकर्दमकर्दमोपमं ॥ सक्तुकश्वेतवर्णस्याच्छुक्लकंदंतुमूलकं। सर्षपपीतवर्णंस्याच्छृंगकंकृष्णपिंगलं ॥ मुस्ताभमुस्तकंप्रोक्तं रक्तवर्णंमहाविषं। हरिद्रकंपीतवर्णंविषभेदाःप्रकीर्तिताः ॥

कर्कटविष-कपिवर्ण अर्थात् बंदरके-रंगका होता है, कालकूट कौए की चौंचकेवर्ण, वत्सनाभ

उसे ब्रह्मपुत्र विष कहते हैं यह मलयाचल पर्वत मे होता है ।

विष के वर्ण

चतुर्धावर्णभेदेनविषंज्ञेयमनीषिभिः ।
ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्राःश्वेतरक्ताश्चपीतकाः ॥
कृष्णवर्णःक्रमाद्ज्ञेयोवर्णानामानुपूर्वशः ।

वर्ण भेद से विष चार प्रकार का है ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र इन चारो का रग क्रम से सफेद, लाल, पीला और काला जानो ।

कार्यपरत्वग्राह्य विष

मारणेकृष्णवर्णस्यद्राक्तरतुरसकर्मणि ।
पीतवर्णःक्षुद्रकार्येश्वेतवर्णोरसायने ॥

काला विष मारणार्थ, लाल रस कर्म में पीला क्षुद्र कर्ममें, और सफेद रसायनिक कर्म में लेना चाहिये ।

मतांतर

ब्रह्मणःपाण्डुरस्तेषुक्षत्रियोरक्तवर्णकः ।
वैश्यःपीतप्रभःकृष्णोवर्णश्चशूद्रउच्यते ॥
ब्राह्मणोदीयतेरोगे क्षत्रियोविषभक्षणे ।
वैश्योव्याधिपुसर्वेषुसर्पदंष्ट्रे चशूद्रकः ॥

कुछ पिलाई लिये सफेद ब्राह्मण, लाल क्षत्री, पीला वैश्य, और काला शूद्र संज्ञक विष होता है, इन में से ब्राह्मण विष को रोगो मे, क्षत्री को विष प्रयोग मे, सम्पूर्ण व्याधियों मे वैश्य, और सर्प के काटे पर शूद्र विष देते हैं ।

प्रकारांतर

रसायनेविषंविप्रोदेहपुष्टौतुबाहुजः ।
कुष्ठनाशेप्रयुंजीतवैश्यःशूद्रस्तुघातकः ॥

ब्राह्मणविष[1] रसायन मे, क्षत्री देहपुष्टि में, वैश्यकुष्ठ नाश मे और शूद्रविष मारण में देना चाहिये ।

---

१ रसायनेविषविप्रंक्षत्रियंदेहपुष्टये । वैश्यकुष्ठंविनाशायशूद्रंदद्याद्वधायहि ।

ग्रहण योग्य विष

उद्धूतफलपाकेननवंस्निग्धघनंगुरु. ।
अव्यापन्नंविषहरैरवातातपशोषितं ॥

विष को पकने के पीछे ग्रहण करे और नवीन, चिकना, घना और भारी हो, तथा विषहरन वस्तुओ करके दूषित न हो, पवन और आतप से शोषित न हो, ऐसा विष लेकर शुद्ध करे ।

शोधन का प्रथम प्रकार

विषभागांश्चकणवत्स्थूलान्कृत्वातुभाजने ।
तत्रगोमूत्रकंक्षिप्त्वाप्रत्यहंनित्यनूतनं ॥
शोषयेत्त्रिदिनादूर्ध्वंकृत्वातीव्रातपेततः ।
प्रयोगेपुप्रयुंजीतभागमानेनतद्विषं ॥

विष के छोटे २ टुकडे कर मिट्टी के पात्र में डाल गोमूत्र भरदे, तीन दिन तक नित्य नया मूत्र डाल २ कर धूप में रखे, पुराना मूत्र निकाल डाला करे, तीसरे दिन निकाल कर सुखादे इस को प्रयोग मे भाग प्रमाण डाले ।

दूसरा प्रकार

रक्तसर्षपतैलेनलिप्तेवाससिधारितं ।
सक्तुकमुस्तकश्रृंगीवालुकासर्षपाह्वयं ॥
वत्सनाभकर्कटचकालकूटादिकंततः ।
नजात्यन्यत्प्रयोक्तव्यविषेतीक्ष्णेचवारिते ॥

विष को लाल सरसो के तेल से चुपड वस्त्र मे रख कर सुखा लेवे तो सक्तुक, मुस्तक, सिंगिया, वालुक, सर्षप, वत्सनाभ, कर्कट और कालकूट विष शुद्ध हो अन्य रीति से विष न देना क्योकि तीक्ष्ण विष का अन्यथा देना वर्जित है ।

तीसरा प्रकार

विषभागांश्चकणवत्स्थूलान्कृत्वातुस्वेदयेत् ।
दुग्धेचघटिकापचशुद्धिमायातितद्विषम् ॥

विष के मोटे २ टुकडे टुकडे कर ४ घड़ी गोदुग्धमे स्वेदन करे तो शुद्ध होवे ।

चौथा प्रकार

खण्डीकृत्यविषवस्त्रे परिबद्धं तुदोलया।
अजापयसि संस्विन्नं यामतः शुद्धिमाप्नुयात्॥
विषग्रंथिमलेन्यस्य माहिषे दृढमुद्रितं।
करीषाग्नौपचेद्यामं वस्त्रपूतं विषं शुचि॥

विष की गांठ को टुकड़े २ कर कपडे की पोटली मे बांध बकरी के मूत्र मे एक प्रहर स्वेदन करे तो शुद्ध होवे, अथवा भैंस के गोबर मे विष की गांठ को चारो ओर से ढक देवे पीछे आरने उपलो की एक प्रहर अग्नि दे पीछे निकाल वस्त्र मे छानले तो विष शुद्ध होवे।

पांचवां प्रकार

कणशोवत्सनाभंचकृत्वाबध्वाचपर्पटे।
दोलायंत्रेजलक्षीरेप्रहराच्छुद्धिमृच्छति॥
अजादुग्धेभावितस्तुगव्यक्षीरेणशोधयेत्।

बच्छनाग विष के बारीक टुकडे करके पोटली बाँध दोला यंत्र मे पानी और दूध मिलाकर एक प्रहर पचन करावे तो शुद्ध हो।

विषमारण

समटंकणंसपिष्टंतद्विषंमृदुमुच्यते।
योजयेत्सर्वरोगेषुनविकारंकरोतिहि॥

विष के समान सुहागा डालकर घोटे तो विष का मरण हो इसको सर्व रोगों मे देना विकार नहीं कर सकता।

दूसरा प्रकार

तुल्येनटंकणेनैवद्विगुणेनोषणेनच।
विषसयोजितशुद्धंमृतंभवतिसर्वथा॥

विष के समान सुहागा और दुगुनी काली मिरच मिला कर घोटे तो शुद्ध हो और मरे।

विष के गुण

विषंरसायनंबल्यंवात श्लेष्मविकारनुत्।
कटुतिक्तंकषायंचमदकारिसुखप्रदं॥
व्यवायिरुधिरोद्वाहिकुष्ठवातास्रनाशनं।
अग्निमांद्यश्वासकासशलीहोदरभगंदरं॥
गुल्मपाण्डुव्रणार्शासिनाशयेद्विधिसेवितं।

बच्छनागविष-रसायन, बलकर्त्ता, वातकफ विकार नाशक, तीखा, कडवा, कसेला मादक, सुखकर्त्ता, व्यवाई, कोढ, वातरक्त, मदाग्नि, श्वास, खांसी, तापतिल्ली, उदर, भगदर, गोला, पाडुरोग, और बवासीर को विष विधिसे सेवन करे तो नाश करे।

गुणांतर

विषप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच।
आग्नेयवातकफहृद्योगवाहीमदावहं॥
तदेवयुक्तियुक्तंतुप्राणदायिरसायनं।
पथ्याशिनात्रिदोषघ्नंबृंहणंवीर्यवर्द्धनं॥
येदुर्गुणाविषेऽशुद्धेतेस्युर्हीनविशोधनात्।
तस्माद्विषप्रयोगेषुशोधयित्वाप्रयोजयेत्॥

विषप्राणहर्त्ता, व्यवायि (प्रथम सर्व देह मे व्याप्त होकर पीछे पचे) विकाशि (ओजको सुखा सधियो के बन्धन को ढीला करे) आग्नेय, वात कफ का हरणकर्त्ता, योगवाही और मदकर्त्ता है यही विधि से सेवन करने से प्राण दाता और रसायन है, पथ्य से सेवन करे तो त्रिदोष नाशक है, बृंहण, और वीर्य का बढाने वाला है, जो अवगुण अशुद्ध विष मे है वो शुद्ध मे नही इसी कारण शुद्ध कर प्रयोग मे डाले।

विष सेवन प्रकार

नानारसौषधैर्येतुदुष्प्रायातीहनंगदाः।
तेनश्यंतिविषेदत्तेशीघ्रवातकफोद्भवाः।
शरद्ग्रीष्मवसंतेचवर्षासुचतुदापयेत्।
हेमंतेशिशिरेचैवविधिनामत्रयार्पयेत्॥
चातुर्मासेहरेद्रोगान्कुष्ठलूतादिकानपि।
दातव्यसर्वरोगेषुघृताशिनिहिताशिनि॥
क्षीराशिनिप्रयोक्तव्यंरसायनरतोनरः।
ब्रह्मचर्यविधानहिविषकल्पेसमाचरेत्॥
पथ्येस्वस्थमनाभूत्वातदासिद्धिर्नसंशयः।
आचार्येणतुमोक्तव्यंशिष्यप्रत्ययकारकं॥

विषेशुद्धिर्हितदपिमात्रयानान्यथाभवेत् ।
सर्वरोगप्रशमनदृष्टिपुष्टिकरविषं ॥

जो वातकफात्मक रोग नाना प्रकार की औषधि सेवन से नहीं जाते वे विष सेवन से तत्काल नष्ट होवे, शरदऋतु, ग्रीष्म, वर्षा, वसंत, इनमे विधिपूर्वक विष दे। तथा हेमंत और शिशिर ऋतु मे दे इसके चार महीनेके सेवन से कोढ़ और लूतादि रोगनाश होवे। इस को सब रोगो मे दे, पथ्य घृत, दूध, सेवन करे, इसका सेवनकर्त्ता ब्रह्मचर्य से रहे, पथ्य से रहे, प्रसन्नचित्त रहे, तो विष कल्प की सिद्धि होवै, प्रथम शिष्य का संदेह दूर करने को वैद्य आप सेवन करे, शुद्ध विष की भी अन्यथा मात्रा नहीं हो सकती विष सेवन से सर्व नाश हो तथा दृष्टि पुष्टि करे।

विष[1] मात्रा का प्रमाण

प्रथमेसार्षपीमात्राद्वितीयेसर्षपद्वयं ।
तृतीयेचचतुर्थेचपंचमेदिवसेतथा ॥
षष्ठेचसप्तमेचैवक्रमवृद्ध्या।विवर्द्धयेत्।
सप्तसर्षपमात्रेणप्रथमंसप्तकंनयेत् ॥
एवमात्राविषदेयंतृतीयेसप्तकेक्रमात्।
वृद्ध्याह्निप्रदातव्यचतुर्थेसप्तकेतथा ॥
एवसप्तसमायातेपरामात्रांभिषग्वरैः ।
स्थिरीकुर्याद्यथेच्छतुततस्यांगतुकारयेत् ॥
सेवनक्रममेतत्तुविषकल्पस्तुईरितः ।
एवंमात्रासेवनस्याद्गुञ्जामात्रंतुकुष्ठवान् ॥
एवमेवाष्टपर्यन्तपरामात्राधिकामता ।
विविनामात्रयाकालेभवेत्पथ्याशिनांनृणां ॥

विष को पहले दिन सरसों के समान मात्रा लेनी, दूसरे दिन दो सरसों की बराबर इसी प्रकार प्रतिदिन एक एक बढाकर सातवें दिन सात सरसों के प्रमाण लेवे, और दूसरे सप्ताह मे भी सात ही सरसों लेवे, तीसरे सप्ताह अर्थात् १४ दिन के उपरात पन्द्रहवें दिन मात्रा फिर बढावे, जब चौथा सप्ताह आवे उसमें एक दिन कम और एक दिन विशेष इसी क्रम से देवे, इस प्रकार सात सप्ताहपर्यंत यानी ४९ दिन बढ़ावे तो परमावधि की मात्रा होवे, उसको जब-तक इच्छा हो तबतक भक्षण करे तदनतर घटाता जाय, इस प्रकार विषकल्प का प्रमाण कहा है, कुष्ठी को एक रत्ती के प्रमाण दे, और नित्य अठ गुणा प्रमाण बढावे, यह बहुत भारी मात्रा होती है, इस विष सेवन में रोग के सदृश समय पर पथ्य करावे।

1 विषभक्षणकामुहूर्त्त-चराचरेंदुकुलधृदु-चिरा। विषाशनेभानुरवीन्दुभौमान यईहतेनेक-विधानिताव सकालपृटानिसदेतिदैना ॥ १ ॥

दूसरा प्रकार

एकाष्टकंभवेद्यावदभ्यस्तंतिलमात्रया ।
सर्वरोगहरनृणांजायतेशोधितंविषं ॥

प्रथम आठ दिन शुद्धविष को तिल प्रमाण देवे, पीछे एक-एक तिल नित्य बढावे इस प्रकार मात्रा बढ़ाने से सर्व व्याधि नाश हो।

विषानुपान

शिखिकर्किरसोपेतंविषमज्वरजिद्विषं ।
विषयष्ट्युह्यरास्नासेव्यमुत्पलकंदकं ॥
तंदुलोदकपीतांनिरक्तपित्तस्यभेषजं ।
रास्नाविडंगत्रिफलादेवदारुकटुत्रयं ॥
पद्मकंक्षौद्रममृताविषंचश्वासकासजित् ।
सितारसविषक्षीरप्रवालमधुनान्विता ।
क्षौद्रेशीतमधुक्षीररजनीकुटजत्वच ।
च्यवनःप्राशनोपेतविषंक्षपयतिद्वय ॥

विष नीलाथोथा और पारायुक्त सेवन करने से विषमज्वर का नाश करे, मुलहटी रास्ना, खस, कमल गट्टे का चूर्ण और चावलो के धोवन के साथ रक्तपित्त को, रास्ना, वायविडंग, त्रिफला, देवदारु, त्रिकुटा, कमलगट्टा, सहत और गिलोय के रस के साथ श्वास और खासी का नाश करे। मिश्री, पारा, सिंगिया विष, दूध, मूंगा की भस्म और सहत के साथ वमन का नाश करे। सहत, पित्तपापडे का रस, मद्य,-

नोन, हलदी. कूडा की छाल तथा च्यवनप्राशावलेह के साथ विष सेवन करे तो खई नाश हो ।

विजयापिप्पलीमूलंपिप्पलीद्वयचित्रकैः ।
पुष्कराह्वसटीद्राक्षायवानीक्षारदीप्यकैः ॥
सितायष्टीद्विबृहतीसैंधवैःपालकैः पचेत् ।
सविषार्द्धपलैःप्रस्थघृतात्तज्जीर्णभुक्पिबेत् ।
दुर्नामामेहगुल्मार्शतिमिरकृमिपाडुका ।
गलग्रहग्रहोन्मादकुष्ठानिचनियच्छति ॥

भाग, पीपला मूल, छोटी पीपल, गज पीपल, चित्रक, पुहकर मूल, कचूर, दाख, अजवायन, जवाखार, अजमोद, मिश्री, मुलहटी, दोनो कटेरी, सेंधानोन निसोथ और विष प्रत्येक आधा-आधा पल ले एक प्रस्थ घृत मे भूनकर अनुमान माफिक खाय जब विष पच जाय तब ऊपर से घृतपान करे तो बवासीर, गोला, प्रमेह, अर्श रोग, तिमिर, कृमि, पाडु, गलग्रह, उन्माद और कुष्ठ को दूर करे ।

मुस्तावत्सकपाठाग्निव्योषप्रतिविषाविषं ।
धातकीमोचनिर्यासंचूतास्थिग्रहणीहरं ॥
कृच्छ्रघ्नंविषपथ्याग्निदंतीद्राक्षानिशावृषा ।
शिलाजतुविषत्र्यूषमुदावर्त्ताश्मरीहरं ॥

नागरमोथा, कुडा की छाल, पाढ, चित्रक, सोठ, मिरच, पीपल अतीस, सिंगिया विष, धाय के फूल, मोचरस और आम की गुठली को मिलायकैं खाने से सग्रहणी नाश होवे, हड, चित्रक, दती, दाख, अतीस, अडूसा, शिलाजीत और त्रिकुटा के साथ विष सेवन करने से पथरी और उदावर्त्त का नाश होवे ।

गोमूत्रक्षारसिंधूत्थविषपाषाणभेदकं ।
वज्रवद्दारयेत्येतदेकतःपीतमश्मरी ॥
त्रिफलासर्जिकाक्षारैःविषगुल्मप्रभेदनं ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलविषंशूलहरपरं ॥
विषंद्रवंतीमधुकंद्राक्षारास्नासठीकणाः ।
विषवेल्लमिशिक्षीरगुल्मप्लीहानिवर्हणं ॥
प्लीहोदरघ्नंपयसाशताह्वाकृमिजिद्विषम् ।

गोमूत्र, सेंधानोन, विष, पाषाण भेद, के खाने से पथरी को वज्र के समान तोडे । त्रिफला और सज्जी खार के साथ विष खाने से गोला, पीपल पीपला मूल के साथ शूल, द्रवंती, महुआ, दाख, रास्ना, कचूर, पीपल, वायविडंग, सोफ और दूध के साथ गोला, तापतिल्ली । और सोफ के साथ विष खाने से कृमि रोग का नाश करे ।

वायसीमूलनिःकाथ्यपीतंकुष्ठहरंविषं ।
पयसाराजवृक्षत्वक्त्रायंतीवाकुचीवला ॥
प्लीहघ्नीवाकुचायांचविषंक्काथेनकुष्ठजित् ।
अवल्गुजैलकजयाविडक्षारद्वयंविष ॥
लेपःससैंधवःपिष्टोवारिणाकुष्ठनाशनः ।
चित्रकार्कजहस्तिपिप्पलीवाकुचीविषैः ॥
सचार्द्रकैलजगजकरंजफलसैंधवैः ।
सव्योपस्वर्जिकाक्षारयवक्षारनिशाद्वायैः ॥
पानाद्यैःशीलितकुष्टदुष्टनाडीव्रणापची ।

सकोय की जड के काढे के साथ विष कोढ को दूर करे, अमलतास की छाल, त्रायमान, बावची, खरैटी और दूध के साथ तापतिल्ली को, सुहागे और विष का काढा कोढ को । बावची, एलुआ, सज्जीखार, जवाखार, सेंधानोन और सिंगिया विष इनको जल मे पीस लेप करे तो कोढ नाश होवे । चित्रक, आक, गजपीपल, बावची, वच्छनाग विष, कपूर, एलुआ, नागकेशर, कंजा का फल, सेंधानोन, त्रिकुटा सज्जीखार, जवाखार, हल्दी, और दारु हलदी के सेवन से कोढ नाडीव्रण और अपची दूर होवे ।

विषभल्लातकीद्विपिगुंजानिंबफलैर्जयेत् ।
लेपोम्लपित्तैश्वित्राणिपुंडरीकंचदारुणं ॥
ककुंदरुरुप्कद्वीपिरपृक्कापत्रैलवालुक ।
पिष्टंखादिरतोयेनत्रिरात्रमुषितंपिवेत् ॥
श्वित्रीविषेणसघृष्टंततस्फोटान्किलासजान् ।
कटकेनविभिंद्याशुलेपैर्लिपेचकोष्ठकैः ॥
अथवाकरवीरार्कमूलवाकुचिकाविषै ।
वस्तांवुपिष्टैःसद्वीपिद्वीपिपिप्पल्यरुष्करैः ॥

लाक्षासुरीचमंजिष्ठाकुष्टपद्माकशारिवा ।
गुंजामहीकुरवकोलांगलीवज्रकंदकः ॥
वाराहीकंदकास्फोतसप्ताह्वोगिरिकर्णिका ।
अर्कोश्वमारयीमूलंनागपुष्पंनतंनिशे ॥
दतीविषंहस्तिविषंपिप्पल्योमरिचानिच ।
ततैलंकटुतैलवाश्वित्रस्याभ्यंजनपचेत् ॥
सवर्णकरणश्रेष्ठमास्तिकयस्यवचोयथा ॥

वच्छनाग विष, भिलावा, चित्रक, घुंघची, निबौली, इनका लेप अम्लपित्त, चित्रकुष्ठ, पुंडरीक, कुष्ठ का नाश करे। कुंदरू, भिलाए, गज पीपल, सफेदलजालू, पत्रज और एलुआ को खैर के पानी में पीस कर तीन दिन रख छोडे, तदन्तर विष मिला कर कोढ़ पर लेप करे तो कोढ़ के फोडे दूर हो। अथवा कनेर, आक को जड, बावची, वच्छनाग विष तथा चित्रक, गजपीपल, और भिलाए को बकरो के मूत्र मे पीसकर लगावे तो अथवा लाख, राई, मजीठ कूठ, पद्माख, सारिवा, घूंघची, कुटकी, करवक कलयारी, थूहर, वाराही कंद, कोविदार, सतवन, इन्द्रजौ, आक, कनेर, इनकी जड, नाग केशर, छड, हलदी, दंती वच्छनागविष, हस्ति विष, पीपल, मिरच इनको इन्हीं औषधियो के तेल मे अथवा कडवे तेल मे मिलाकर चित्र कोढ वाले के उबटना करे तो सुवर्ण के समान देह का रूप हो जावे ।

एरंडतैलत्रिफलागोमूत्रंचित्रकविष ।
सर्पिषासहितंपीतवातार्त्तित्वमपोहति ॥
कोरकचीरनिक्काथैलांगलीविषसर्पपैः ।
गधककोलमरिचैःसस्नुकक्षीरैर्विपाचितं ॥
जयेज्ज्योतिष्मतीतैलमनलत्वग्गदान्नपि ।

अंड का तेल, त्रिफला, गोमूत्र, चीता, और विष को घृत के साथ पीवे तो वादी की पीडा नाश हो। ग्वारपाठा, सीसम, कलियारी वच्छनाग विष, सरसो, गधक, अंकोल, मिरच, थूहर का दूध, इनको मालकागनी के तेल में औट कर लगाने से वादी कृतत्वचा के रोग नाश हों ।

स्वरसंबीजपूरस्यवचाब्राह्मीरसघृत ।
वध्यापिबतिसविषसपुत्रैःपरिवार्यते ॥
चीरालांगलिकादंतिविषपाषाणभेदकैः ।
प्रयोज्यंमूढगर्भाणांप्रलेपोगर्भमोचनः ॥
देवदारुविषंसर्पिगोमूत्रंकंटकारिका ।
वचावाक्स्खलनहंतिबुद्धेश्चपरिवर्द्धनं ॥

विजौरे का स्वरस, वच, ब्राह्मी का रस, और नवीन घृत मे विष मिलाकर पीने से वध्या गर्भवती हो। सफेद कनेर, कलियारी, दती, वच्छनाग विष और पाषाण भेद का लेप मूढगर्भ का मोचन करे। देवदारु, विष, गोघृत, कटेरी और वच का सेवन जीभ के विकार नाश कर बुद्धि बढावे ।

विषंसर्पिःसिताक्षौद्रंतिमिरापहमंजनं ।
विषचैकमजाक्षीरकल्पितंघृतधूपितं ।
विषधात्रीफलरसैरसकृत्परिवासित ।
अजनशखसहितप्रगाढंतिमिरंजयेत् ॥
विषमिन्द्रायुधस्तन्येघृष्टंकाचेत्विदजनं ।
बीजपूररसैर्घृष्टंविषंतद्वत्सितान्वितं ॥
विषमागधिकाद्वेचनिशेकाचघ्नमजनम् ।

घृत, मिश्री और सहत मे विष को घिस कर लगावे तो तिमिर रोग नाश हो। अथवा केवल विष को ही बकरी के दूध में लगावे तो और घृत को धूनी दे, अथवा विष में शख की नाभि मिलाकर आवले के रस की भावना देकर अंजन करे तो घोर तिमिर नाश हो। हीरा और विष को स्त्री के दूध से घिसकर लगाने से काच को नष्ट करे, विजौरे के रस मे मिश्री और विष को घिसकर नेत्रो मे लगावे तो विष का नाश करे। पीपल, गजपीपल, हलदी और विष का अंजन करने से काच रोग नाश हो।

शुक्लामंजविषंकृष्णायुक्तगोमूत्रभावितं ।
समुद्रफेनस्फटिकीकुरुविंदरसांजन ॥

कूर्मपृष्ठंचतुल्यानितेभ्योर्धांशमनःशिला ।
अर्द्धमानानिमरिचसैंधवायोरजांसिच ॥
अथोयथोत्तरांदद्यादयसाचसमंविषं ।
आगारधूमसहितैर्वस्तमूत्रेणकल्कितैः ॥
भल्लातकाग्निसम्पाकविषैर्गोमूत्रपेषितैः ।
लेपोविचर्चिकादद्रुरसिकाकिटिभापहा ॥

पीपल के साथ विष गोमूत्र मे घिसकर लगाने से शुक्लार्म रोग नष्ट हो। समुद्र फेन, फिटकरी, हिंगुल, रसोत और कछुवे की पीठ बराबर ले सबसे आधी मनसिल तथा मनसिल से आधी मिरच तथा सेंधानोन और लोहचूर एक से दूसरा अधिक भाग लेवे, लोहचूर के समान वछनाग विष ले और घर का धुआं सब को बकरी के दूध में घिसकर लगावे। अथवा भिलाए, चित्रक, अमलतासकागूदा, और विष को गोमूत्र में पीसकर लेप करने से विचर्चिका, दाद, लसिका, कीटभ और कुष्ठ नाश हों।

सम्पाकपत्रत्वङ्मूलविषंतक्रंचतुर्गुणं ।
विषतुंवुरुबीजानिवाजिगंधाम्लवेतसं ॥
हरिद्रावायसीरास्नाहरितालमनःशिला ।
पटोलनिंबपत्राणिकणागंधकसैंधव ॥
विषंदारुशिरीषास्थितक्रंलेपेनकुष्टजित् ।
करंजकरवीराकमालतीरक्तचंदनैः ॥
आस्फोताकुष्ठमंजिष्ठासप्तच्छदनिशानतैः ।
सिंधुवारवचाद्वेलैर्गवामूत्रेचतुर्गुणे ॥
सिद्धंकुष्ठहरंतैलंदुष्टव्रणविशोधनम् ।

अमलतास के पत्ते, छाल और जड से विष को मिलाकर चोगुनी छाछ मे मिलाकर लेप करे, अथवा विष, तुंबरू के बीज, असगंध, अमल, वेत, हल्दी, वायसी, रास्ना, हरिताल, मनसिल, पटोलपत्र, नीब के पत्र, पीपल, गंधक, सेंधानोन इनको छाछ में मिलाकर लेप करे अथवा विष, देवदारू, सिरस की छाल, इनको छाछ मे मिला कर लेप करे तो कुष्ठ रोग नाश हो। कंजा, कनेर, आक, मालती के फूल, लालचन्दन, सपेद कोयल, कूठ, मजीठ, सतवन हलदी, छड, सिंधुवार, वच और विष को चौगुने गोमूत्र में औटाकर पीछे तेल डालकर तेल बनावे तो यह तेल कोढ और दुष्ट फोडो का नाश करे।

कुष्ठाश्वमृगभृंगार्कमूलस्नुक्क्षीरसैंधवैः ।
तैलंसिद्धंविषावाप्यमभ्यंगात्कुष्ठजित्परं ॥
भद्रश्रीदारुमरिचद्वेहरिद्रेत्रिवृतघनैः ।
गोमूत्रपिष्टैःसहसाविषस्यार्द्धपलेनच ॥
ब्राह्मीरसार्कजक्षीरगोशकृद्रससयुत ।
प्रस्थंसर्षपतैलस्यसिद्धमाशुव्यपोहति ॥
रसक्रियेयमधुनापिल्लशुक्लार्मकाचनुत् ।
अभीक्ष्णंशीततोयेनसिंचेन्नेत्रेविषांजिते ॥

कूठ, कनेर, कस्तूरी, भागरा, आककी जड, थूहरका, दूध, सेंधानोन, कमलगट्टा और विष मिलाकर तेल बनावे, इसके लगानेसे कुष्ठरोग शाति होवे। चन्दन, देवदारु, मिरच, हलदी, दारुहलदी, निसोथ, नागरमोथा, इनको एक एक पल और विष आधापल लेकर सबको गोमूत्र मे पीसे। ब्राह्मीकारस, आक का दूध, और गोबर का पानी एक एक प्रस्थ ले तेल मे डालकर तेल बनावे, यह रस क्रिया है इसको नेत्रो मे लगावे तो शुक्लार्म और कांच रोग का नाश करे जब विष को नेत्रो मे लगावे तब शीघ्र शीतल जल से नेत्रो की धो डाले।

रक्तचंदनमंजिष्ठातिंतिडीफलसूतकैः ।
अयसालोध्रकतकनिशाशंखकणोषणैः ॥
मनःशिलाकरजात्वबीजोग्राफेनसैंधवैः ।
अजाक्षीर.समंविषैर्वर्त्तयोविहिताहिता. ॥
शुक्लार्ममांसपिल्लेषग्रन्थिगडार्बुदेपुच ।

लाल चन्दन, मजीठ, इमली के फल पारा, लोहचूर, कतक, हलदी, शखनाभि, सोंठ, मिरच पीपल, मनसिल, कजा की मिगी, वच,समुद्रफेन, सेंधानोन, वच्छनाग विष, इन सबको बरावर ले बकरी के दूध मे बत्ती बनावे यह बत्ती

शुक्लार्म रोग, मास पिल्ल, गाठ, गंडरोग, अर्बुद इत्यादि ऐसे विकारों को हितकारक है।

रसोनकंदमरिचविषसर्षपसैंधवैः।
पिल्ले त्वणहितंकार्यंसुरसारसपेषितैः।
पूरयेत्सर्पिषाचानुसर्पिरेवचपाययेत्।
मधूकसारमधुकविषक्षीरजलैर्घृतं॥
पक्क संतर्पणश्रेष्ठंनक्तांध्यत्वचिरोत्थितं।
अजनंनरपित्तेनरोचनमधुशृंगिभिः॥
स्वर्जिकाक्षारसिंधुत्थशुक्तशुक्तवरंविष।
कर्णयोःपूरणतीव्रकर्णशूलनिवर्हण॥

सफेद लहसन, मिरच, विष, सरसो और सेंधानोन को तुलसी के रसमें पीसकर नेत्रो से लगावे और घृत से नेत्रों को पूर्ण करे और घृत भोजन को दे तो सपूर्ण नेत्ररोग नाश हो, महुआ, विष, दूध, जल, और घृत को एकत्र कर नेत्रो को तपर्ण करे तो नक्तांध्य (रतोंध) थोडे दिन का नाश हो। गोरोचन, सहत, काकडासिंगी, सज्जी, सेंधानोन, सिरका, काजी और वच्छनाग विष को मिलाकर कानो मे डालने से कर्ण शूल नाश हो।

प्रपौंडरीकमंजिष्ठाविषतिंदुसमुद्भवैः।
निहंतिसाधिततैलगण्डूषेणमुखामयान्॥
शालाखदिरककोलजातीकर्पूरचदनैः।
बोलाब्दवालैर्द्विगुणविषैसारांबुपेषितैः॥
समूत्रावटिकाक्लृप्ताघृताद्धन्तिमुखामयान्।
कटुतैलविषंनस्यंपलिकारूंषिकापहं॥

कमलपुष्प, मजीठ विष, और कुचला से तेल को बनाकर कुल्ले करने से मुखरोग नाश हो। शाल की छाल, कत्था, ककोल, जायफल, भीमसेनी कपूर, चन्दन, बोल, नागरमोथा और सुगन्धिवाला को समान ले, और हर एक की मात्रा से दूना विष ले, खैर सार और गोमूत्र से गोलियां बनाकर मुख मे रखे तो मुख के सर्व रोग दूर हो। विष मिलाकर नस्यलेने से पलिका और अरुंषिका दूर होवे।

गुञ्जाटंकणशिग्रुमूलरजनीसम्पाढकभल्लातका।स्नुह्यर्काग्निकरंजसैंधववचाकुष्ठाभया लांगली। वषाभूपटभूशिरीभूवरणव्योपाश्वमारोविष॥ गोमूत्रंशमयेद्विलुप्तमपची ग्रंथ्यार्बुदश्लीपदान्।

घूंघची, सुहागा, सहजने की जड़, हलदी, अमलतास, भिलावा, थूहर, आक, चित्रक कंजा, सेंधानोन, वच, कूठ, हर्ड, कलियारी, केंचुए, पटभू, शिरस की छाल, सोंठ, मिरच पीपल, कनेर और वच्छनागविष को गोमूत्र में पीसकर लगाने से इंद्रलुप्त, अपची, गांठ, अर्बुद, श्लीपद इनका नाश हो।

विष भक्षण के अधिकारी

अशीतियस्यवर्षाणिचतुर्वर्षाणियस्यवा।
विषंतस्यनदातव्यं दत्तंचेद्रोगकारकं॥
नक्रोधितेनपित्तार्तेनक्लीवेराजयक्ष्मणि।
क्षुत्तृष्णाश्रमकर्माध्वसेविनिक्षयरोगिणे॥
गर्भिण्यांबालवृद्धेचनविषंराजमन्दिरे।
नदातव्यंनभोक्तव्यविषंव्याधौकदाचन॥

८० वर्ष वा ४ वर्ष की अवस्था वाले को विष खाने को न दे, यदि खाय तो रोग करे। क्रोधी, पित्तप्रकृति, नपुंसक, खई वाला, भूंखा प्यासा, परिश्रमी, मार्ग चला, गर्भिणी, बालक, बूढा, राजा और राजा के परिकर मात्रा को विष भक्षण न करावे।

विष सेवन में पथ्य

घृतंक्षीरंसिताक्षौद्रंगोधूमास्तंडुलानितत्।
मरिचंसैंधवंद्राक्षामधुरंपानकहिमं॥
ब्रह्मचर्यंहिमदेशहिमकालंहिमंजलं।
विषस्यसेवकोमर्त्योभजेदतिविचक्षणः॥

विष सेवन कर्त्ता घृत, दूध, मिश्री, सहत, गैहूं, चावल, काली मिरच, सेधानोन, दाख, मधुर और शीतल, पदार्थ तथा ब्रह्मचर्य, शीतल ऋतु, और शीतल जल ऐसे पदार्थ सेवन करे।

मात्राधिक भक्षण की परीक्षा

मात्राधिकयदामर्त्यप्रमादाद्भक्षयेद्विषं ।
अष्टौवेगास्तदातेनजायतेतस्यदेहिनः ॥
उद्वेगप्रथमेवेगेद्वितीयेवेपथुर्भवेत् ।
वेगेतृतीयेदाहःस्याच्चतुर्थेपतनभवेत् ॥
फेनस्तुपंचमेवेगेषष्टेविकलएवच ।
जडतासप्तमेवेगेमरणंचाष्टमेभवेत् ॥
विषवेगानितिज्ञात्वामंत्रतंत्रैर्विनाशयेत् ।
यावन्नाष्टमवेगंतुसंप्राप्नोतिहिमानवः ॥

यदि मनुष्य प्रमाद से विष को अधिक मात्रा खाय लेवे तो विष के प्रभाव से उसको ८ वेग होते हैं, प्रथम उद्वेग, दूसरा कंप, तीसरा दाह, चौथा जमीन पर गिरना, पांचवां मुख से झाग डालना, छठा विकलता, सातवां जडता, और आठवां मरण, इन विष वेग को जान कर तंत्र मंत्र से शांति करे अष्टम वेग से पहले यत्न करे ।

विष निवारण विधि

अतिमात्रांयदाभुक्तंवमनंतस्यकारयेत् ।
अजादुग्धंददेत्तावद्यावद्भ्रांतिर्नजायते ॥
अजादुग्धंयदाकोष्ठेस्थिरीभवतिदेहिनः ।
विषवेगंततोऽजीर्णंजानीयात्कुशलोभिषक् ॥

किसी ने बहुत विष खा लिया हो उसे वमन करावे, जहां तक वमन बन्द न हो बकरी का दूध पिलावे, जब दूध पच जाय तब जाने विष उतर गया ।

दूसरा प्रकार

विषंहन्याद्रसःपीतोरजनीमेघनादयोः ।
सर्पाक्षिटंकणंवापिघृतेनविषहृत्परम् ॥

हलदी, चौलाई, सर्पाक्षी और सुहागा घृत के साथ भक्षण करे तो विष के वेग की शान्ति हो ।

तीसरा प्रकार

पुत्रजीवकमज्जावापीतानिंबकवारिणा ।
विषवेगंनिहंत्येववृष्टिर्दावानलंयथा ॥

जीयापोता की छाल नीबू के रस में मिला कर पीने से विष ऐसे शान्त हो जैसे वर्षा से दावानल ।

चौथा प्रकार

गोघृतपानाद्धरते विषंचगरलंचकर्कोटी ।
सकलविषोपविषशमनी त्रिमूलीसुरभिजिह्वाच ॥

बांझ ककोडा घृत के साथ पीने से विष और गरल का नाश हो, उसी प्रकार त्रिमूली और गोभी भी विष का नाशक हैं ।

अधिक विषोपचार

अतिमात्रंयदाभुक्त तदाज्यंटकणंपिबेत् ।
विषंसवेगतोनाश माशुमाप्नोतिनिश्चितं ॥

अधिक विष खाने से जिस समय अवगुण करे उस समय घृत मे सुहागा मिलाकर पिलावे तो वेग सहित वर्त्तमान विष का निश्चय नाश हो ।

विष सेवन में कुपथ्य

कट्वम्ललवणंतैलं दिवास्वप्नाऽनलातपान् ।
अभ्यस्तेपिविषेयत्ना द्वर्जनीयान्विवर्जयेत् ॥

तीखा, खट्टा, नोन, तेल, दिन का सोना, अग्नि से तापना, और धूप का डोलना विषाभ्यासी मनुष्य त्याग दे, और जो वर्जित वस्तु हैं उनको भी त्याग दे ।

घृतरहित विष सेवन के उपद्रव

दृग्विभ्रमंकर्णरुजमन्यान चानिलजान्गदाम् । विषरूक्षाशिनकुर्यान्मृत्यु मेवत्वजीर्णतः ॥

दृष्टिभ्रमण, कर्ण पीडा, और वातज रोग ये अवगुण विष पर रूखे पदार्थ सेवन करने से करता है, विष का अजीर्ण मृत्यु करता है ।

उपविषाणि

स्नुह्यर्कलांगलीगुंजा हयारिविषमुष्टिका ।
जेपालोन्मत्ताहिफेनं नवोपविषजातय. ॥

थूहर, आक, कलियारी, घूंघची, कनेर, कुचला, जैपाल (जमालगोटा) धतूरा और अफीम ये नौ उपविष हैं।

मतान्तर

भल्लातकंचातिविष चतुर्भागंचखाखस।
करवीरंद्विधाप्रोक्त महिफेनद्विधामत॥
धत्तुरश्चचतुर्धास्यात् द्विगुंजाचैवनिर्विषी।
विषमुष्टिलांगलीच गणश्चोपविषाह्वयः॥

भिलाए, अति विष चार प्रकार के खसखस, दो प्रकार की कनेर, दो प्रकार की अफीम चार प्रकार का धतूरा, दो प्रकार की गुंजा, कुचला और कलयारी यह उपविषाख्य गण हैं।

शोधन

पंचगव्येषुशुद्धानि देयान्युपविषाणिच।
विषाभावप्रयोगेषु गुणस्तुविषसंभवाः॥

उपविष पंचगव्य (दूध, दही, घृत गोमूत्र, गोबर) मे शुद्ध करे इनको विष भाव मे देवे इनके गुण विषों के समान हैं।

आक

अर्कद्वयंसरंवातं कुष्टंकडूविषापहम्।
निहतिप्लीहगुल्मार्शयकृत् श्लेष्मोदरकृमीन्॥

सफेद और लाल दोनो आक दस्तावर, वादी, कोढ़, खुजली, विष तापतिल्ली, गोला, बवासीर, यकृत, कफोदर, और कृमिरोग का नाश करे।

कलयारी

लांगलीशुद्धिमायाति दिनंगोमूत्रसंस्थितं।
कलयारीसराकुष्ठ शोफार्शोव्रणशूलनुत्॥
तीक्ष्णोष्णाकृमिनुल्लघ्वी पित्तलागर्भपातनी।

कलियारी के टुकडों को एक दिन गोमूत्र मे भिगोवे तो शुद्ध हो, यह दस्तावर है, कुष्ठ, सूजन, बवासीर, यकृत, कफोदर और कृमि रोग का नाश करे, व्रण रोग नाशक, तीखी, गरम, पित्तकर्त्ता, हलकी तथा गर्भ पातन कर्त्ता है।

गुंजा

गुंजाकांजिकसस्विन्ना प्रहराच्छुध्यतिध्रुवम्। गुंजालघुर्हिमारूक्षा भेदनीश्वासकासजित्॥ कृष्णाकृमिकुष्ठकंडू श्लेष्मपित्तव्रणापहा।

घूंघची (गुंजा) को काजी मे डाल एक प्रहर दोलायन्त्र मे पचावे तो शुद्ध हो यह हलकी, शीतल, रूखी, भेदक, श्वास, खाँसी, इनको दूसरी कालीगुंजा कृमि, कोढ़, खुजली, कफ, पित्त विकार और व्रण को दूर करे।

कनेर

हयारीविषवच्छोध्य गोदुग्धेगोलकेनतु।
करवीरद्वयनेत्ररोगकुष्ठव्रणापहं॥
लघूष्णकृमिकंडूघ्न भक्षितंविषवन्मतम्।

दोनो प्रकार की कनेरो के टुकडे २ कर गोदुग्ध मे दोलायत्र द्वारा एक प्रहर पचावे तो शुद्ध हो, यह हलकी, गरम, नेत्ररोग, कोढ, व्रण, कृमिरोग और खुजली को दूर करे, खाने से विष समान गुण करे।

कुचला

दोलायत्रेणसस्वेद्य कांजिकेप्रहरद्वयं।
किंचिदाज्येनसभृष्ठो विषमुष्टिविशुद्धयति॥

कांजी के पानी मे कुचला को दो प्रहर दोला यंत्र द्वारा स्वेदन कर घृत मे भूने तो शुद्ध हो।

विषमुष्टिःकटुस्तिक्तस्तीक्ष्णोष्णः श्लेष्मवातहा। सारमेयविषोन्माद हरोमदकरः सर॥

कुचला, तीखा, कडवा, चरपरा, गरम, मादक और दस्तावर है वादी कफ के विकार, तथा कुत्ते के विष को नाश करे, तथा उन्माद करे।

जमालगोटा

नविषविषमित्याहु र्जैमालोविषमुच्यते।
शोधितश्चविरेकेषु चमत्कृतिकरःपरः॥

विष को विष नहीं कहते किंतु जैपाल (जमालगोटा) को पंडित विष कहते हैं वह शुद्ध-दस्तो मे अत्यंत चमत्कारी है।

जैपाल शोधन

पंचगव्येपुसंशोध्य दूरंकार्यंतुजिह्विका।
ततोम्लवर्गेदशधा क्षारवर्गेत्रिधापुनः॥
कुमारीकौद्रवभस्म जलेचैवविशोधयेत्।
एवंशुद्धस्तुजैपालो वांतिदाहविवर्जितः॥

जमालगोटे को पचगव्य मे शोध इस की जीभ को निकाल फेंक दे, तदनन्तर दश वार अम्लवर्ग और तीन वार क्षारवर्ग मे घीगुवार के रस से अरहर की राख के जल मे शोधे तो जमाल गोटा वमन और दाह रहित होवे।

दूसरा प्रकार

जैपालंरहितंत्वगकुररसैर्चाह्निर्मलेमाहिषे। निक्षिप्त त्र्यहमुष्णतोयविमलं खल्वेसवासोर्दितं॥ लिप्तंनूतनखर्परेपु विगतस्नेहोरजः सन्निभं। निंबुकांवुविभातितश्च बहुशः शुद्धोगुणाच्छोभवेत्॥

जमालगोटे को तीन दिन भैंस के गोबर मे गाढ उसके वल्कल और जीभ को दूर कर गरम पानी से धो वस्त्र सहित खरल मे डाल मर्दन करे, पीछे कोरे खिपडे पर लेप करें तो उसका तेल सूख जाय, पीछे नींबू के रस में बहुत देर तक घोटे तो शुद्ध और गुणो मे निर्मल होवे।

तीसरा प्रकार

वस्त्रे बध्वातुजैपालं गोमयस्थोदकेन्यसेत्।
पाचयेद्याममात्रंतु जेपाल.शुद्धताव्रजेत्॥

जमालगोटे को पोटली मे वाध गोवर से दोला यत्र द्वारा एक प्रहर पचाने से और इसकी जीभ निकालने से शुद्ध होवे।

चौथा प्रकार

जेपालनिस्तुषकृत्वा दुग्धेदोलायुतेपचेत्।
अंतर्जिह्वांपरित्यज्य युंज्याच्चरसकर्मणि॥

जमालगोटे का वल्कल दूर कर पोटली वाध दूध से दोलायंत्र द्वारा पचावे और भीतरसे जिह्वा को निकाल डाले तो शुद्ध हो इसको रस कर्म मे डाले।

जमाल गोटा के गुण

जैपालोतिगुरुस्तिक्तो वातिकृतज्वरकुष्ठनुत्।
उष्णोगुरुर्व्रणः श्लेष्मकंडूक्रमिविपापह॥

जमालगोटा, अत्यन्त भारी, कडवा, गरम, वमनकर्त्ता, तथा ज्वर, कोढ, व्रण, कफ, खुजली, कृमि और विष वाधा का नाश करे।

धतूरा

धत्तूरबीजंगोमूत्रे चतुर्यामोषितपुनः।
कंडितंनिस्तुपकृत्वा योगेपुविनियोजयेत्॥

धतूरे के बीजो को चार प्रहर गोमूत्र मे भिगो तदनन्तर निकाल कर सुखाय भूसी दूर करे तो शुद्ध हो पीछे प्रयोग में डाले।

धतूरे के गुण

धत्तूरोमदवर्णाग्नि वातकृत्ज्वरकुष्ठनुत्।
उष्णोगुरुव्रणश्लेष्मा कडूक्रमिविषापहः॥

धतूरा उन्माद, काति, अग्नि, वायु का और ज्वर तथा कुष्ठ गरमी तथा भारी व्रण, कफ, खुजली, कृमि रोग विष को दूर करे।

अफीम

अहिफेनंशृंगवेर रसैर्भाव्यत्रिसप्तधा।
शुद्धयुक्तंपुयोगेपु योजयेतद्विधानतः॥

अफीमको अदरकके रसकी २१ भावना देने से शुद्ध हो तदनतर योगोमे डाले।

अफीम के गुण

आफुकशोषणग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तल।
मदकृद्दाहकृच्छुक्र स्तभनायासमेहकृत्॥
अतिसारेग्रहण्याच हितदीपनपाचन।
सेवितदिवसै कश्चित्भ्रमयत्यन्यथार्त्तिकृत्॥

अफीम शोषक, ग्राही, कफ हर्त्ता, वात-पित्त और मदकर्त्ता, दाह और शुक्र का स्तभन करे,

परिश्रम, प्रमेह को करे, अतिसार और संग्रहणी मे हित कारक दीपन और पाचन है। बहुत दिन के सेवन कर्त्ता को समय पर न मिलने से शरीर मे पीडा करे।

भाँग

बब्बुलत्वक्कपायेण भंगासंस्वेद्यशोपयेत्।
गोदुग्धभावनांदत्वा शुष्कांसर्वत्रयोजयेत्॥

भाग को बबूल के काढे मे स्वेदन कर गो दुग्ध की भावना देकर सुखाने से शुद्ध हो इसको सर्व योगो मे मिलावे।

भाँग के गुणदोष

विजयाकटुकपायोष्णा तिक्तावातकफापहा।
संग्राहीवाक्प्रदाबल्या मेधाकृद्दीपनीपरा॥

भाग-तीखी, कषेली, गरम, कटु, वात-कफ को दूर करने वाली, और संग्राही है वाणी की वृद्धि करे, बल कर्त्ता, मेधाकर, तथा अग्नि को दीपन करे।

थूहर

सेहुंडोरोचनस्तीक्ष्णो दीपनःकटुकोगुरुः
शूलमष्ठीलकाध्मानगुल्मशोफोदरानिलान्
हतिदोपान्यकृत्प्लीह कुष्ठोन्मादाश्मपाण्डुताः।

थूहर-रुच्य, कड़वी, तीखी, गरम, दीपन और भारी है। शूल, अष्ठीलिका, अफरा, गोला, सूजन, उदररोग, बादी, त्रिदोष, यकृत् प्लीहा, कोढ, उन्माद, पथरी और पाडु रोग का नाश करे।

संखिया (सोमल)

गौरीपाषाणकःप्रोक्तो द्विविध श्वेतपीतक।
श्वेत शंखस्यसदृशो पीतोदाडिमकःप्रभः॥
श्वेतःकृत्रिमकःप्रोक्तो पीत पर्वतसंभवः।
विपकर्मकरौतौहि रसकर्मणिपूजितौ॥
कृष्णरक्तविभेदेन चतुर्धाकथ्यतेक्वचित्।

संखिया दो प्रकार का है सफेद और पीला, सफेद शंख के समान उज्ज्वल, और पीला अनार के समान, जिनमे सफेद बना हुआ और पीला पर्वत से निकलता है, ये दोनो विष सदृश कार्य करते हैं, और पारद कर्म मे पूजनीय है, पारे का बंधन करते हैं, परन्तु कहीं काले और लालके भेद से चार प्रकारके माने जाते हैं।

विषविकारोंकी शान्ति

अफीमकेविषकीशांति

बृहत्यद्वाररसंदुग्धं पलमानानिसेवणात्।
नागफेनविपयाति सजीवतिचिरंपुमान्॥
उग्रासिंधुतथाकृष्णा मज्जामदनकफलं।
तप्तनीरेणतद्देय महिफेनंविपंजयेत्॥
टंकणंनीलतुत्थंच घृतयुक्तंचदापयेत्।
तेनवांतिर्भवेत्सद्य नागफेनविषंजयेत्॥

बडी कटेरीका एक पल रस दूधके साथ पीने से अफीम का विष नाश हो, और मनुष्य जीवे तथा वच, सैंधानोन, पीपल, मैन-फलकी छाल, इनको गरमजलके साथ खाय तो अफीम का विष दूरहो, अथवा सुहागा, नील, नीला-थोथा सबको पीस घृतमे मिलाकर पिये तो वमन होकर अफोमका विष दूर हो।

धतूरेके विषकी शान्ति

वृंताकफलबीजस्य रसोहिपलमात्रक।
भक्षणाद्धत्तूर विपनश्यतिनिश्चित॥
कर्पासास्थितथापुष्प जलेनोत्क्वाथ्यपानतः।
धतूरस्यविपहति तथालवणसेवनात्॥
गोदुग्धप्रस्थमेकंतु शर्करास्यात्पलद्वयं।
तत्पानतोविपयाति धत्तूरस्यतुनिश्चितं॥

बैंगनके बीजोका एक पल रस पीनेसे धतूरेका विष निश्चय शांतिहो, और बिजौरे और कपासका फूल जलमे औटाकर पीनेसे भी नाश हो अथवा निमक खानेसे वा सेर भर गोदुग्धमे दो पल मिश्री डालकर गरम २ पीवे तो धतूरेका विश नाश हो।

वच्छनाग (सिंगिया विष-की शान्ति)

पटवणस्यवृक्षस्यरसंपलप्रमाणक । शर्करायुक्तपानेनवत्सनागविषहरेत् ॥

हीरवण वृक्षके एकपल रसमें मिश्री-मिलाकर पीनेसे वच्छनाग विषकी शांति होवे ।

भिलावेके विषकी शांति

स्वरसोमेघनादस्यनवनीतेनसंयुतः । भल्लातकभवंशोफंहंतिलेपेनतत्क्षणात् ॥ दारुसर्षपमुस्तानिनवनीतेनलेपयेत् । भल्लातकविकारोऽयंसद्योगच्छतिनिश्चितं ॥ नवनीततिलंदुग्धपुनःखंडयुतेनच । लेपनाच्छमयातिभल्लातकव्यथात्वरं ॥

चौलाईकारस और मक्खन मिलाकर भिलावेकी सूजन पर लेप करे तो तत्क्षण दूर हो । अथवा देवदारु-सरसों और नागरमोथाको मक्खनमें मिलाकर लेप करे तो सूजन दूर हो-मक्खन-तिल-मिश्री और दूध मिलाकर लेपकरे तो भिलावेकी व्यथा दूर हो, अथवा नीम तिली और तिलका तेल औटाकर लगाने से भिलावेकी व्यथा तत्क्षण दूर हो ।

भांगके विषकी शांति

शुंठीगोदधियुक्ताचपानेभृंगाविकारनुत् ।

सोंठका चूर्ण गौके दहीके साथ सेवन करने से भागका विकार नाश हो ।

गुंजा (घूंघची) विषकी शांति

मेघनादरसोग्राह्य शर्करायुक्तपानतः । उच्चटायाविकारस्यशांतिःस्याद्दुग्धसेवनात् ॥ मधुखर्जूरिमृद्वीकावृक्षाम्लाम्लाचदाडिमौ । परूषैरामलेश्चैवयुक्तोसद्यविकारनुत ॥

चौलाईके रसमें मिश्री मिलाकर पीने से गुंजाविष नाशहो इसपर दूध पिये वा सहत, छुहारे, दाख, ततडीक, खट्टा अनार, फालसे और आवलों को एकत्र कर खानेसे गुंजाका विष मिटे ।

कनेरविषकी शांति

सितायुक्तसदादेयंदधिवामाहिषंपयः । तथाचार्कत्वचापीताकणवीरविषापहा ॥

मिश्रीमिला भैंसका दूध वा दही वा आककी छाल पिये तो कनेर का विष दूर हो ।

थूहर विषकी शांति

शीतवारिसितायुक्ता पानेवज्रीविषापहा । वस्त्रवायुतथाकार्या शीतच्छायाचसेवयेत् ॥ चिंचापत्रजलेपिष्ट्वा मर्दयेत्शांतिकृत्सदा । हेमगैरिजलेपाने स्नुहीचार्कविकारनुत ॥

शीतलजलमें मिश्रीमिलाकर पानकरे वा कपडेकी पवन और शीतल छायाका सेवन करे अथवा इमलीके पत्ते जलमें पीसकर लगावे तो थूहरविष शांतिहो । अथवा सुवर्ण गैरिकको जलमें पीसकर पीनेसे थूहर और आकका विकार नाश हो ।

जैपाल विकार शांति

धान्यकंसितयायुक्तं दधिनासह्यःपिवेत् । देहेजैपालजाव्याधिंनाशमाप्नोतिनिश्चितं ॥

धनिया और मिश्री दही मे मिलाकर सेवन करे तो जमालगोटेकी सब व्याधि नाश हो ।

अथ लोहाष्टक

सुवर्णरजतंताम्रं त्रपुसीसकमायस । षडेतानिचलोहानिकृत्रिमौकांस्यपित्तलौ ॥

सोना, चांदी, ताँबा, रागा, सीसा और लोहा ये छ लोह हैं और कासी पीतल दो बने लोह हैं ।

षट् लवण

लवणानिषडुच्यतेसामुद्रंसैधवंविडं । सौवर्चलरोमकंचचूलिकालवणतथा ॥

नोन छः प्रकार का होता है सामुद्र, सेधा, बिड, काला, रोमक और चूलिका ।

क्षार त्रय

क्षारत्रयसमाख्यातयवस्वर्जिकटकणं ।

जवाखार, सज्जीखार और सुहागा ये तीनो क्षारत्रय के नामसे प्रसिद्ध हैं

मधुर त्रय

घृतंगुडोमाक्षिकंचविज्ञेयंमधुरत्रयं ।

घृत, गुड और सहत ये तीनो मधुर-त्रय कहलाते हैं ।

वसा वर्ग

जवूकमंडूकवसावसाकच्छपसंभवा । कर्कोटीशिशुमारीचगोशूकरनरोद्भवा ॥ अजोष्ट्रखरमेषाणांमहिषस्यतथावसा वसावर्गसमाख्यातपूर्वाचार्य्यैसमासतः ॥

स्यार, मेंडक, कछवा,केकडा, सूस, गौ, सूअर, मनुष्य, बकरा, ऊट, गधा, मेंढा और भैंसा इन तेरहों की वसाको पूर्वाचार्य वसावर्ग कहते हैं ।

मूत्र वर्ग

मूत्राणिहस्तिकरभमहिषोखरवाजिनां ।
गाजावीनांस्त्रियःपुंसापुष्पंबीजतुयोजयेत् ॥

हाथी, ऊट, भैंसा, गधा, घोडा, गौ, बकरी, मेंढा, और स्त्रियोका रज और पुरुषो का वीर्य, मूत्रवर्ग कहलाते हैं ।

माहिष पंचक

महिषांवुदधिक्षीरसाभिसारशकृद्रसः । तत्पंचमाहिषज्ञेयतद्वच्छागलपचकम् ॥

भैंसकामूत्र, दही, दूध, घृत और गोबरका रस ये माहिष पंचक कहाता है इसी प्रकार बकरीका छागल पंचक होता है ।

अम्ल वर्ग

अम्लवेतसजंबीरनिंवुकवीजपूरकं ।
चागेरीचणकाम्लचअम्लीककोलदाडिमं ॥
अवष्टातिंतिडीकचनारंगरसपत्रिका ।
करवंदंतथाचान्यदम्लवर्गःप्रकीर्तितः ॥

अम्लवेत, जम्बीरी, नीबू, बिजोरा, लोनियां, चनाखार, इमली, बेर, अनारदाना, चूका, तिंतिडीक, (कोकम) नारंगी, रसपत्रिका, और करोंदासे आदिले और भी खट्टी वस्तु अम्लवर्ग कहलाती है ।

चणकाम्लश्चसर्वेषामेकएवप्रशस्यते ।
अम्सवेतसमेकंवासर्वेषामुत्तमोत्तम ॥
रसादीनाविशुद्धयर्थं द्रावणेजारणेहितं ।

सब खटाइयो मे चना की खटाई उत्तम है, अम्लवेतकी उत्तमोत्तम है पारे आदि के शोधन, द्रावण, जारण मे हितकर्ता है ।

अम्ल पंचक

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुल्लिकाचुल्लिकारसं ।
पंचाम्लकंसमुद्दिष्टंतच्चोक्तंचाम्लपचकम् ॥

बेर, अनारदाना, तितिडीक, लोनियां और चूका ये पंचाम्ल और अम्लपचक कहाते हैं ।

पंच मृत्तिका

इष्टिकागैरिकालोणंभस्मवल्मीकमृत्तिका ।
रसप्रयोगकुशलैःकीर्त्तिता.पंचमृत्तिका ॥

ईंट, गेरू, नोन इनके चूर्ण और राख, बांबी की मिट्टी, ये रस प्रयोग ज्ञाताओ ने पांच मिट्टी कही है ।

विष वर्ग

शृंगिकग्कालकूटंचवत्सनाभसकृत्रिम ।
पित्तचविषवर्गोयसवर परिकीर्त्तित ॥
रसकर्मणिशस्तोयंतद्भेदनवधापिच ।
अयुक्त्यासेवितश्चायमारयत्येवनिश्चित ॥

सिंगिया, कालकूट, वत्सनाभ, कृत्रिम और पित्त यह विषवर्ग कहा है। यह रस कर्म मे श्रेष्ठ है उपविष के नौ भेद हैं। विष को अयुक्ति पूर्वक खाने से मार डालता है ।

उपविष

लांगलीविषमुष्टिश्चकरवीरजयातथा ।
तिलकःकनकोर्कश्चवर्गोह्युपविषात्मकः ॥

कलयारी, कुचला, कनेर, भांग, तिलक-वृक्ष, धतूरा, और आक उपविष वर्ग कहलाता है।

दुग्धवर्ग

हस्त्यश्ववनिताधेनुगर्द्धभी छागिकोपिवा।
उष्ट्रकीदुंबराश्वत्थभानुन्यग्रोधतिल्वकं॥
दुग्धिकास्तुग्गणंचैतत्तथैवोत्तमकर्णिका।
एषांदुग्धैर्विनिर्दिष्टोदुग्धवर्गोरसादिषु॥

हथिनी, घोड़ी, स्त्री, गौ, गधी, बकरी, ऊटनी, गूलर, पीपल, आक, वड, हिंगोट, दुद्धी, थूहर, और उत्तमकर्णिका इनके दूध को दुग्धवर्ग कहते हैं।

विट (विष्टा) वर्ग

पारावतस्यचापस्य कपोतस्यकलापिनः।
गृध्रस्यकुक्कुटस्यापि विनिर्दिष्टोहिविड्गणः॥
शोधनसर्वलोहानां पुटनाल्लेखनात्खलु।

कबूतर, नीलकंठ, पिड़ुकिया, मोर, गीध, और मुरगा की बीठ को विड्गण कहते हैं यह सर्व लोह का पुट देने से शोधन करे।

रक्तवर्ग

कुसुंभखदिरोलाक्षा मंजिष्ठारक्तचदन।
आक्षीवबंधुजीवश्च तथाकर्पूरगंधिनी॥
माक्षिकश्चेतिविज्ञेयो रक्तवर्गोतिरंजनः।

कसूम, खैर, लाख, मजीठ लाल चंदन, सहजना, दुपहरिया, कपूरगधि, सोनामक्खी, यह रक्तवर्ग कहलाता है।

पीतवर्ग

किंशुकः कर्णिकारश्च हरिद्राद्वितियंतथा।
पीतवर्गसमादिष्टो रसराजस्यकर्मणि॥

ढाक, कनेर, दोनों हलदी यह पीतवर्ग पारद कर्म में कहा है।

श्वेतवर्ग

तगर कुटज कुंदो गुंजाजीवंतिकातथा।
सिताभोरुहकंदश्च श्वेतवर्गउदाहृतः॥

तगर, कूडा का फूल, कुंद का फूल गुंजा (घूंघची) का फूल, अरनी का फूल, सफेद कमल का फूल, और कंद, यह सफेद वर्ग कहाता है।

कृष्णवर्ग

कदलीकारवल्लीच त्रिफलानीलिकानलः।
पंकःकासीसबालाम्र कृष्णवर्गउदाहृतः॥

केला, करेला, त्रिफला, नील, चित्रक, कीच, कसीस, और नया आम, यह कृष्णवर्ग कहाता है।

द्रावणगण

गुडगुग्गुलगुंजाज्य सारधैष्टकणान्वितैः।
द्रुद्र्वाखिललोहादेर्द्रावणायगणोमतः॥

गुड, गूगल, घूंघची, घृत, नौसदर, सुहागा यह कठिन धातुओं के द्राव करने को द्रावणगण कहा है।

क्षाराःसर्वेमलंहन्यु रम्लाःशोधनजारणे।
मांद्यंविषाश्चनिघ्नंति स्नैग्ध्यंस्नेहाःप्रकुर्वते॥

क्षारवर्ग की भावना देने से पारा आदि धातुओं का मल नष्ट हो, अम्लवर्ग की भावना शोधन और जारण में हित है, विषवर्ग धातुओं की मंदता दूर करे, घृत तैलादि स्नेहवर्ग धातुओं में चिकनाहट पैदा करे।

रसानांतौल्यम्

त्रुटिःस्यादणुभिःषड्भिः तैर्लिक्षाषड्भिरीरिता। ताभिःषड्भिर्भवेद्यूकःषड्यूकास्तुरजः स्मृत। षड्रज सर्षपःप्रोक्तस्तैःषड्भिर्यवईरित॥ एकागुंजायवैःषड्भिर्निष्पावस्तुद्विगुंजकः। स्याद्गुंजात्रितयंवल्लो द्वौवल्लौमाषउच्यते॥

छः अणु की १ त्रुटि, छः त्रुटि की १ लिक्षा छः लिक्षा की १ यूक, छः यूक का १ रज, ६ रज की १ सरसो, ६ सरसो का १ यव, ६ जौ का १ रत्ती, २ रत्ती का १ मटर, ३ रत्ती का १ वल्ल, दो वल्ल का १ मासा होता है।

द्वौ माषौधरणंतेद्वौ शाणनिष्काःस्मृताः ।
निष्कद्वयंतुवटकं सचकोलइतीरितः ॥
स्यात्कोलत्रितयंतोल. कर्षोनिष्कचतुष्टयं ।
उदुंबरंपाणितलंसुवर्णं कवलग्रहः ॥
अक्षंविडालपदकं शुक्तिपाणितलद्वयं ।
शुक्तिद्वयंपलंकेचिदन्येशक्तित्रयंविदुः ॥
तदेवकथितंमुष्टिः प्रकुंचंबिल्वमित्यपि ।

दो मासे का १ धरण, दो धरण का शाण, शाण का सोलहवां भाग १ निष्क, दो निष्क का १ वटक, इसी को कोल भी कहते हैं ३ कोल का १ तोला, ४ निष्क का कर्ष, जिसको उदुंबर, पाणितल, सुवर्ण, कवलग्रह अक्ष और विडाल पदक भी कहते हैं। दो पाणितल की शुक्ति, दो शुक्ति की पल, किसी के मत मे ३ शुक्ति का पल कहा है, इसी को मुष्टि, प्रकुंच और बिल्व भी कहते हैं।

पलद्वयंतुप्रसृतं तद्वयं कुडवोंजलिः ।
कुडवौमानिकातौस्यात्प्रस्थंद्वौमानिकेस्मृते ॥
प्रस्थद्वयंशुभौस्तौद्वौ पात्रकेद्वयमाढकं ।
तैश्चतुर्भिर्घटोमाणिः नल्वनर्मणशूर्पकाः ॥
द्रोणश्चशब्दाःपर्यायाःपलानांशतकंतुला ।
चत्वारिंशत्पलशतं तुलाभारःप्रकीर्तितः ॥

दो पल का १ प्रसृत, दो प्रसृत का १ कुडव वा अंजली, दो कुडव की १ मानिका दो मनिका का १ प्रस्थ, दो प्रस्थ का १ पात्रक, दो पात्रक का १ आढक ४ आढक का १ घट वा मणि वा नल्वक वा शूर्पक वा द्रोण कहलाता है, १००० पलकी १ तुला, और ४०० पल का १ भार होता है परंतु शारगधर के मत से १००० पल का १ भार होता है सो ही ठीक है।

टंक १ कर्ष ४ पलं १६ चापि कुडवं ६४ प्रस्थ २५६ माढक। १०२४ द्रोणो ४०९६ द्रोणी १६३८४ खारिकेति ६५५३६ क्रमादेते-चतुर्गुणाः । रसार्णवादिशास्त्राणिनिरीक्ष्यकथितोमया। रसोपयोगियत्किंचिद्दिङ्मात्रंतत्प्रदर्शितम् ॥

टक, कर्ष, पल, कुडव प्रस्थ, आढक, द्रोण, द्रोणी और खारी ये प्रत्येक क्रम से एक से दूसरी चौगुनी संख्या कही है। अर्थात् टक से चौगुना कर्ष, और कर्ष से चौगुना पल, इत्यादि और भी जानो मैंने रसार्णवादि शास्त्रों को देखकर कहा है। रस का जो कुछ उपयोगी था उसको दिट् मात्र दिखला दिया है।

पुटों की संज्ञा और रीति

महापुट

घनचौरसकेगर्तेहस्तद्वितयमात्रके ।
करीषैरर्द्धपूर्णेचमुद्रितंचशरावकं ॥
संस्थाप्यचान्यकारीषैः पूरितेशुभगर्त्तके ।
अग्निप्रज्वाल्यशीतेचगृह्णीयात्तुशरावकं ॥
एतन्महापुटचोक्तंकृतिभि.पूर्वसूरिभिः ।

फैलाव में चौकोर दो हाथ का गढा करे, उसको आधा आरने उपलो से भरे, पीछे औषधि युक्त शराव पर कपरमिट्टी कर सुखाय पश्चात् गढे के बीच में रखे, पीछे बाकी के गढे को आरने उपलो से पूर्ण कर बंद करदे, फिर आग लगादे स्वांग शीतल होने पर सराव को निकाले इसको पहले वैद्य महापुट कहते हैं।

गजपुट के लक्षण

घन चौरसकेसार्द्धेहस्तेचैवतुगर्त्तके ।
पूर्ववद्दीयतेचाग्निस्तत्पुटंगजसज्ञितं ॥
माहिषंवेत्तिसंज्ञेयसूरिभिःसमुदाहृतं ।

घनाकार डेढ हाथ चौडा गढेला हो उस आधे मे उपला भर बीच मे सराव का संपुट रख अग्नि दे इसको गजपुट वा माहिषपुट कहते हैं।

वाराहपुट लक्षण

अरत्निमात्रेगर्त्तेयद्दीयतेपूर्ववत्पुटं ।
करीषाग्नौतुतत्प्रोक्तपुटंवाराहसंज्ञितं ॥

अरत्निमात्र (अंगूठे से उंगली तक) गढे में पूर्वोक्त रीति से आरने उपलों की अग्नि देने को वाराहपुट कहते हैं।

कुक्कुटपुट लक्षणं

वितस्तिमात्रगर्तेयत्पुटयेत्तत्तुकौक्कुटम्।

बालिश्त भर चौडे लवे गढे मे पूर्व प्रकार अग्नि देने को कुक्कुट पुट कहते हैं।

कपोत पुट लक्षणं

वितस्तिमात्रकेगर्त्तेसप्तभिर्वाथजाष्टभि.।
वन्यात्पलै.पुटंदत्ततत्तुकापोतसञ्ज्ञितम्॥

बालिश्त भर के गढे मे सात आठ उपलो की अग्निदेने को कपोत पुट कहते हैं।

गोबर पुट लक्षणं

चूर्णीकृतकरीपाग्नौभूमावेवतुयत्पुट।
दीयतेतत्तु कृतिभिर्गोबरसमुदाहृतम्॥

पृथ्वी पर उपलो का बारीक चूरा कर उस पर औषधियो को रख ऊपर मिट्टी कर सराब रखे उसके उपलों के चूरे से बद कर अग्नि देवे इसको गोबर पुट कहते हैं।

कुंभ पुट लक्षणं

मृद्घटेबहुछिद्र चकृत्वागुलसमानिवै।
चत्वारिंशत्ततर्त्तास्मनशीतमुल्मुकचूर्णक॥
अर्द्धमापूरियित्वाचमुखेदद्याच्छरावक।
कर्पटेनमृदालिप्त्वाछायाशुष्कचकारयेत्॥
तस्मिनगारकान्क्षिप्य चुल्यावाथेष्टकासुच।
निधायत्रिदिनाच्छीतगृहीत्वा.पधिमाहरेत॥
एतत्कु भपुटञ्ज्ञेयंकथितशास्त्रदर्शिभिः।

मिट्टी की गागर मे उंगली के समान छेद कर उस आधा मे कोले भर पीछे औषधो रख उसका मुख सराव से वंद कर ऊपर से कपरमिट्टी कर छाया में सुखाय आग के अगारे डाल चूल्हे वा ईटों पर रख अग्नि दे पीछे उतार कर तीन दिन शीतल होने दे जब शीतल हो जाय तब ओषधियो को निकाले इसे कुंभपुट कहते है।

भांडपुट लक्षणं

स्थूलभांडतुषापूर्णे मध्वेमूषासमन्वित।
वन्हिनाविहितेपाकंतद्भाडपुटमुच्यते॥

बडे घडे को धान के तुषो से भर बीच मे मूष को रखे पीछे अग्नि से यथा योग्य पाक करे इसको भाडपुट कहते है।

बालुका पुट

अधस्तादुपरिस्ताच्चचक्रिकाछाद्यतेखलु।
बालुकाभि. प्रतप्ताभिः यत्रतद्वालुकापुटं॥

मूष को ऊपर नीचे बालू से भर औषधियों को परिपक्व करे उसे बालुका पुट कहते हैं।

भूधर पुट

वन्हिमित्रात्क्षितौसम्यक्निखनेद्द्यंगुलादधः।
उपरिष्टात्पुटंयत्रपुटतद्भूधराह्वयम्॥

दो अगुल जमीन खोद उस पर घरिया को रख ऊपर से पुट देकर अग्नि दे इसे भूधर पुट कहते है।

लावक पुट

ऊर्ध्वपोडशिकामूत्रै. तुषैर्वागोवरैः पुट।
यत्रतल्लावकाख्य स्यात्स मृदुद्रव्यसाधने॥

मूसा पर मूत्र, तुष, और उपलो का पुट जहा दिया जाय उसे लावक पुट कहते हैं यह पुट नम्र वस्तु बनाने को उत्तम है।

अथ यंत्राध्यायः

अथय त्राणिवक्ष्यते.सतत्राण्यशेषत।
समालोक्यसमासेनसोमदेवेनसाम्प्रतम्॥

अव सपूर्ण रसग्रथो को देखकर सक्षेप से सोमदेव यत्रो को कहते हैं।

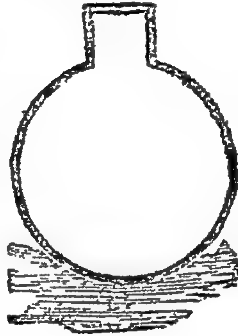
यंत्र शब्द की निरुक्ति

स्वेदादिकर्मनिर्मातु वार्त्तिकेन्द्रैः प्रयत्नत.।
युज्यतेपारदोयस्मात्तस्माद्यंत्रमितिस्मृतं॥

स्वेदादि कर्मनिर्माण करने को आचार्यों करके यत्नपूर्वक पारा योजना किया जाता है जिनमे इस कारण इनको यत्र कहते हैं।

कवची यंत्र

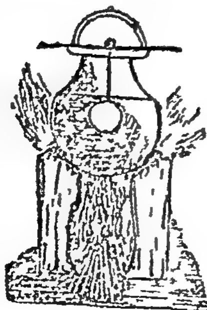
नातिह्रस्वांकाचकूपींनजातिमहतींदृढाम् ।
वाससाकर्दमाक्तेन परिवृत्यासमंततः ॥
संलिप्यमृदुरत्नाभिःशोपयेद्रविरश्मिना ।
निधायभेषजंतत्रमुखमाच्छादयेत्ततः ॥
कठिनाद्दृढयावापिपचेद्यत्तुविधानत. ।
कवचीयंत्रमेतद्धिरसादिपचनेमतम् ॥



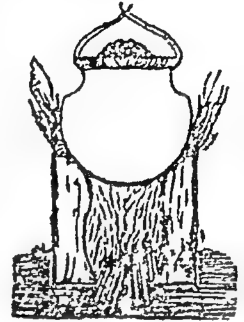
काचकी सीसी न बहुत बडी न छोटी दृढ हो उसपर मुलतानी मिट्टी से कपरमिट्टी करे और धूप मे सुखावे पीछे उस मे औषधी भर मुख बद कर वालुकायंत्रादिमे स्थापन कर विधिपूर्वक पाक करे इस प्रकार कपडा चढ़ी सीसी को कवचीयंत्र कहते हैं इससे पारदादिकी पाकक्रिया होती है ।

दोला यंत्र

निवद्धं त्वौपधसूतंभूर्जेतुत्रिगुणाम्बरे । रस-पोटलिकांकाष्ठे दृढंबध्वागुणेनहि ॥ सधा-यपूर्णेकुंभांत स्वावलंवनसस्थितां । अधस्ता-दुज्ज्वालयेद्वन्हितत्तदुक्तक्रमेणहि ॥ दोला-यंत्रमिदंप्रोक्तंस्वेदनाख्यंतदेवहि ।



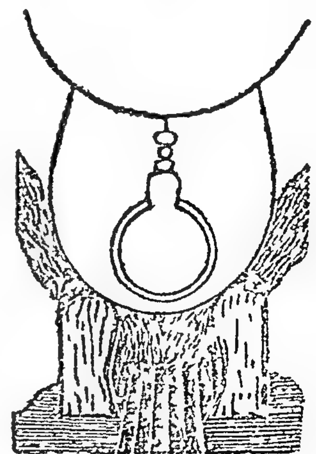
औपधि मिला पारा लेकर तीन वार भोजपत्र से लपेटे पीछे कपडे की पोटली से बाध एक या डेढ बालिस्त के छोटे काष्ठ से बाध कर घडे मे लटका दे, और जिस मे पाचन करना हो उस में आधा घडा जल भरदे फिर उस पोटली को उसके अदर इस तौर से लटकावे जिस मे उस का पैदा पेदी से न मिले, पीछे उस घडे को चूल्हे पर चढाय कहे प्रमाण अग्नि दे इसको दोलायत्र कहते हैं, और स्वेदनीयत्र भी कहते हैं।
साम्वुस्थालीमुखेवद्ध वस्त्रेस्वेद्यं निधायच ॥
विधायपच्यतेयत्रे स्वेदनतद्यथास्मृतम् ।



अथवा जलयुक्त पात्र मुख पर कपडा बाध उसमे जिसको स्वे-दन किया चाहते हैं उस को रख भाफ दे और पचन करावे इसको स्वेदनयंत्र कहते हैं ।

गर्भ यंत्र

स्थूलभांडस्यगर्भेतुइष्टिकांस्थापयेत्तत' ।
पत्रस्थाप्यचेष्टिकोर्ध्वेद्रव्यंस्थूलेचभाडके ॥
पश्चान्मुखेचान्यभांडघटिकासदृशंददेत् ।
साधुलेपततःकृत्वाजलदत्वोर्ध्वपात्रके ॥
अग्निप्रज्वालयेन्मंदंतप्तनीरंपुनस्त्यजेत् ।
पुनःशीतजलंदत्वातप्तंचेत्तत्त्यजेत्पुनः ॥
एवकृतेचोद्ध भाडेलग्नतैलादिकंस्रवेत् ।
अतस्थेसूक्ष्मपात्रे चतच्चग्राह्यं प्रयत्नत. ॥
गर्भयंत्रमिदंख्यातंसुगंध्यर्कादिसाधने ।

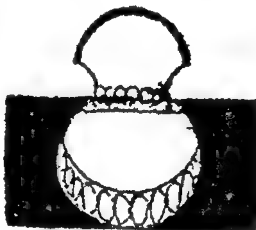


एक बडा घडा चूल्हे पर चढाय उस के पैदे मे ईट रख उस पर दूसरा पात्र रखे उसमे चारो ओर औषधि भरदे, पीछे घडे के मुख पर घडिया के समान पात्र रख संधि बद कर घडे के तले मदी २ अग्नि जलावे, मुख ढक्कन मे पानी भरदे, जव वह पानी गरम हो जाय

तब निकाल कर दूसरा शीतल जल भर देवे, इस प्रकार बारम्बार गरम जल निकाल २ कर शीतल जल भरता रहे, इस प्रकार करने से ऊपर के पात्र की पेंदी मे भाफ जमती है, वही शीतल जल ऊपर रहने के कारण टपक २ कर भीतर के कटोरे मे गिरती रहती है, उसको सावधानी से निकाल लेवे, इसको गर्भयंत्र कहते हैं इसके द्वारा सुगंधित अर्क (गुलाब जल आदि) बनाते है।

प्रकारांतर

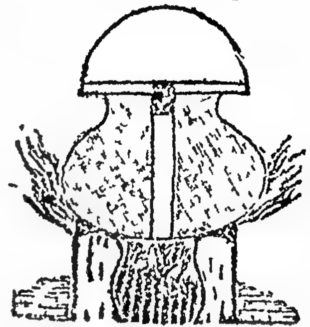
गर्भयंत्रं प्रवक्ष्यामि पिष्टिकाभस्मकारकं।
चतुरंगुलदीर्घातु त्र्यंगुलोन्मितविस्तराम् ॥
मृन्मयीतुदृढामूषां वर्तुलाकारयेन्मुखम्।
लवणंविंशतिभागो भागएकस्तुगुग्गुलोः॥
सुश्लक्ष्णंपेषयित्वातु वारंवारंपुनःपुनः।
मूषालेपदृढंकृत्वा लवणाद्यं मृदादिभिः॥
करेतुषाग्निनाभूमौ स्वेदयेन्मृदुमानवित्।
अहोरात्रंत्रिरात्रंवा रसेन्द्रोभस्मताव्रजेत॥



पारे की पिष्टि के भस्म कर्त्ता गर्भयंत्र को कहता हूं, चार अंगुल लंबी और तीन अंगुल चौड़ी मिट्टी की दृढ मूष बनावे उसका गोल मुख करे, तदनन्तर नोन के बीस भाग और एक भाग गूगल को महीन पीस कर मूषा पर दृढ लेप करे, लवणादि मिट्टी में प्रथम पारे की पिष्टी रखे, पीछे मुखबंद कर लेप करे, पीछे जमीन मे गढा खोद कर तुषाग्नि से मंद मंद स्वेदन करे तो एक दिन रात्रि वा तीन रात्रि मे पारा भस्म होवे।

हंसपाकयंत्र

खर्परंसिकतापूर्णं तत्कृतस्योपरिन्यसेत्।
अपरखर्परंतत्र शनैर्मृद्वग्निनापचेत्॥
पञ्चक्षारैस्तथामूत्रैः लवणैचविडैततः।
हंसपाकःसआख्यातो यंत्रतद्वार्तिकोत्तमैः॥



एक बडा खपरा बालू का भरा ले, उस मे औषधियो को रख ऊपर से दूसरे खपरे से मुख से मुख मिला कर दृढ बंद कर देवे, इस प्रकार पांचो क्षारो मे, मूत्रो मे, नोनो मे, मदाग्नि से पाक करे इस यंत्र को हंसपाक कहते है।

विद्याधरयंत्र

अधःस्थाल्यारसंक्षिप्त्वाविदध्यात्तन्मुखोपरि।
स्थालीमूर्ध्वमुखींसम्यक्निरुध्यमृदुमृत्स्नया॥
ऊर्ध्वस्थाल्यांजलंक्षिप्त्वाचुल्यामारोपयेत्ततः। अधस्ताज्ज्वालयेद्वन्हिंयावत्प्रहरपंचकम्
स्वांगशीतात्ततोयंत्रादूर्ध्वं ग्रहीयाद्रसमुत्तमम्।
विद्याधराभिधंयंत्र मेतत्तज्ज्ञैरुदाहृतम्॥

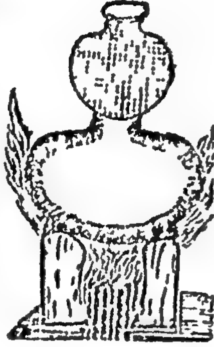


भीतर से चिकनी दो हाडी ले प्रथम एक मे घुटा हुआ डली का शिंगरफ अथवा घुटा हुआ पारा डाल दूसरी हाडी से मुख से मुख मिलाकर बंद करे, और दोनो की संधि मुलतानी मिले कपड़े से बंद करदे, और ऊपर की हांडी मे जल भर दे जब जल गरम होजाय तब निकाल कर दूसरा शीतल भरदे, उन दोनो को चूल्हे पर चढा नीचे अग्नि जलावे, इस प्रकार पांच प्रहर अग्नि देवे, पीछे स्वांग शीतल होने पर ऊपर की हाडीमे जो पारा लगा हो उसको युक्ति से निकाल लेवे, इसको यंत्रज्ञाता विद्याधरयंत्र कहते हैं।

लवण यन्त्र

एवंलवणनिक्षेपात्प्रोक्तं लवणयन्त्रकम्।
अतःकृतरसालेपाताम्रपात्रमुखस्यच॥

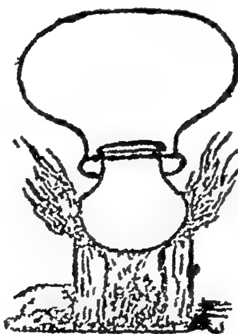
लिप्त्वामृल्लवणेनैवसन्धिभांडतलस्यच ।
तद्भांडंपटुनाऽपूर्वंक्षारैर्वापूर्ववत्पचेत् ॥
एवलवणयत्रस्याद्रसकर्मणिशस्यते ।



(पारे वाली छिपे मुख की कपरमिट्टी एक-एक अ गुल चढी हो ऐसी सूखी हुई काच की आतशी शीशी लेवे) उसको किसी बडे पात्र मे रक्खे और उसको निमक बीच में दबाय देवे। अथवा तावे के पात्र मे भीतर पारद का लेप कर किसी दूसरे पात्र मे औंधे मुख रख देवे, फिर उस भाडे की नीचे की संधि लवण और मिट्टी से बद कर देवे इस मिट्टी के पात्र को निमक से भर देवे अथवा किसी क्षार से भर के वालुका-यन्त्र के समान पचावे यह लवणयन्त्र रसकर्म में लिया जाता है।

डमरूयंत्र

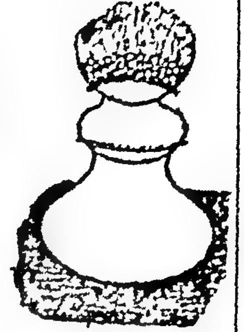
यत्रस्थाल्युपरिस्थालिं न्युब्जांदत्वानिरुध्यते
यत्रं डमरुकाख्य तद्रसभस्मकृतेहितम् ॥



एक हांडी के मुख से दूसरी हांडी का मुख जोड कर सधियो को मुल्तानी मिट्टी से वद करे, इसको डमरूयत्र कहते हैं। यह यंत्र पारद की भस्म के लिये उत्तम है।

सोमानलयन्त्र

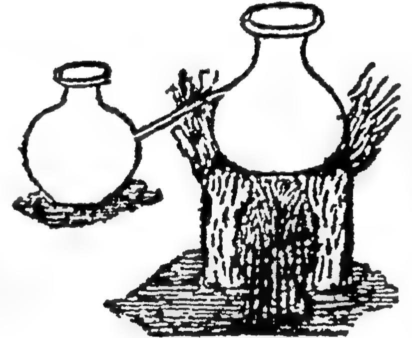
ऊर्ध्वंवह्निरधश्चापोमध्येतुरससग्रहः ।
सोमानलमिदंप्रोक्त जारयेद्गगनादिकम ॥



ऊपर अग्नि और नीचे जल बीच में रस आदि रखे यह सोमानल यन्त्र है इसके द्वारा पारद मे अभ्रकादि जारण करे जाते हैं।

ऊर्ध्वनलिकायंत्र

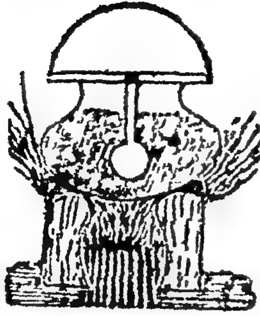
भांडकंठादधश्छिद्रे वेणुनालविनिक्षिपेत् ।
समानकरकांवापि भाडवक्त्रेनिवेशयेत् ॥
संधिलिप्त्वाचनालाग्रेकाचभांडनिधापयेत् ।
अधस्तात्प्रास्रवेद्वार टंकयत्रमितिस्मृतम् ॥



एक घड़ा लेकर उसके गले मे छेद करें उसमें वांस या नरसल की समान नली जो पोली हो प्रवेश कर मुखपर उतना ही वडा ढकना देकर लेपदे, नली के मुख पर काच का पात्र देवे, पीछे पूर्वोक्त घडे को भट्टी पर रख नीचे अग्नि जलावे तो अग्नि के ऊपरवाले पात्र में से औषधियो का अर्क खिच-खिचकर दूसरे पानी वाले पात्र मे इकट्ठा होवे इसको टंक यत्र कहते हैं, इसी से अत्तार लोग सब प्रकार के अर्क खींचते हैं।

वालुका यंत्र

भांडेवितस्तिगंभीरेमध्येनिहितकूपिके ।
कूपिकाकंठपर्यन्तवालुकाभिश्चपूरिते ॥
भैषजकूपिकासंस्थंवन्हिनायंत्रपूजिते ।
वालुकायंत्रमेतद्धीयत्रतंत्रवुधैः स्मृतं ॥



बालिस्त भर गहरा मिट्टी का पात्र ले उसकी पेंदी में पैसे के बराबर छिद्र कर उस पर ठिकरी रक्खे कि जिस के दोनो तरफ छेद रहें, पीछे उसमें आति-शी शीशी में औषधि रख मुखबन्द करदे, पीछे वालुका यंत्र को चूल्हे पर चढ़ाय प्रयोग में कहे प्रमाण पचन करावे इसको यन्त्रवेत्ता पुरुष बालुका यन्त्र कहते हैं ।

भूधर यंत्र

वालुकासुसमस्तागंगतेमूपारसान्विता ।
दीप्तोपलैः सवृणुयाद्यंत्रं भूधरनामकम् ।



मूष मे पारा भर कर बन्द करे, फिर उस को बालू से परि पूर्णकर बालू पर आरने उपलो की अग्नि देवे उसको भूधर यन्त्र कहते हैं ।

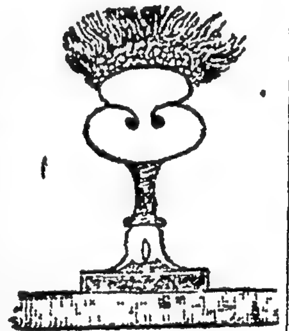
पाताल यंत्र

हस्तप्रमाणंनिम्नंचगर्त्तं कृत्वाप्रयत्नतः ।
तस्मिन्भाण्डचसंस्थाप्यतथान्यत्पात्रमाहरेत् ॥
तस्मिन्नौषधवर्गं चदत्वान्यच्चशरावक ।
मुखेसंस्थाप्यछिद्राणिकृत्वाचैवशरावके ॥
शरावसहितपात्रं गर्त्तस्थभाजनेन्यसेत् ॥
सधिलेपततःकृत्वागर्तमापूर्वमृत्स्नया ॥
पश्चादग्निंचप्रज्वाल्यस्वांगशीतसमुद्धरेत् ।
पश्चात्तत्पा मध्यस्थं पात्रं युक्त्यासमाहरेत्
तदंतस्थं चतत्तैलगृह्णीयाद्विधिपूर्वक ।
पातालाख्यमिदंयंत्रं भाषितशंभुनास्वयं ॥

एक हाथ गहरा गढा खोद उसमे बड़े मुख का पात्र रखें पीछे दूसरे पात्र मे औषधि रख कर उसके ऊपर छेद वाला शराव ढकदे और उस शराव समेत गढे वाले पात्र के ऊपर उलटा रखे ताकि दोनो का मुख मिल जावे,पीछे संधिलेपकर उस गढे को मिट्टी से भर देवे और ऊपर अग्नि जलावे तो शराव के छिद्र द्वारा तेल वा अर्क खिचकर नीचे क पा॰ मे गिरेगा, पीछे स्वांग शीतल हाने पर तेल वा अर्क के पात्र को युक्ति से निकाल लेवे इसको पाताल यन्त्र कहते हैं यह शिव ने कहा है ।

दीपिकायन्त्र

कच्छपयंत्रान्तर्गतमृन्मयपीठस्थदीपिका-संस्थः । तस्मिन्निपतितसूतःप्रोक्तं तद्दीपिका यन्त्रम् ॥



यह यन्त्र कच्छप यन्त्र का ही भेद है । इसको इस प्रकार निर्माण करैं कि मिट्टी की चाकी पर दीपिका (दीवट) रख उस पर चित्र मे लिखे माफिक यन्त्र को स्थापन करे तो नीचे से दीपकाग्नि और ऊपर से साक्षात् अग्नि लगने से जलस्थित पारे का सस्कार होगा इस यन्त्र को दीपिकायन्त्र कहते हैं ।

तेजो यंत्र

भाण्डेचार्द्धप्रमाणेनद्रव्यंसंस्थाप्यप्रयत्नतः ।
तन्मुखेद्विनलीयत्र सस्थाप्यंचनिरोधयेत् ॥
पश्चान्मदाग्निप्रज्वाल्यजलदत्वोर्द्ध पात्रके ।
तत्तप्तनलिकाद्वारानिःसार्यं चपुनःपुनः ॥
नीचस्थनलिकावक्त्रे भाडंस्थाप्यंद्वितीयकम् ।
तस्मिनर्कश्चपतितगृह्णीयात्तुविशेषत. ॥
तेजोयंत्रमितिख्याततथान्यैर्लवकमत ।

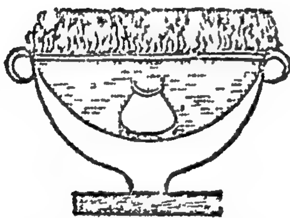
एक बडा पात्र ले उसको आधा द्रव्य से भर

उस पर दो नली का यंत्र रखे पीछे सधि लेपकर नीचे मंदाग्नि जलावे, और ऊपर के पात्र मे जल भरदे जब जलगरम हो जाय तब नली द्वारा निकाल डाले इसी प्रकार जब जब गरम हो तब तब निकाले नीचे की नली के मुख पर एकपात्र स्थापन करे, उसमे सब अर्क खिंच कर इकट्ठा होवे इसको तेजो यंत्र कहते हैं, और कोई इसको लवक यंत्र भी कहते है।

कच्छप यंत्र

खर्परंपृथुकंसम्यक् विस्तारंतस्यमध्यतः।
आलवालपुटेकृत्वा तन्मध्येपारदंक्षिपेत्॥
ऊर्ध्वाधस्तुविडंदत्वामल्लेनारुध्ययत्नतः।
ऊर्ध्व देयपुटंतस्य यंत्रं कच्छपसज्ञकम्॥
जारणार्थंरसस्योक्तंगंधादीनाविशेषत.।

मोटा और बडा खपराले उसके बीच थांवलासा बनावे उसमे

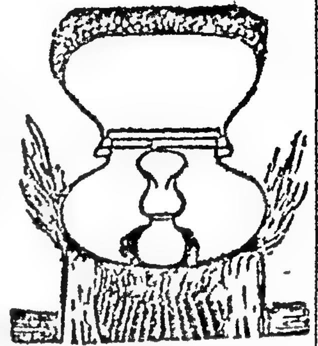


पारा भर देवे उसके ऊपर नीचे विड देवे, तदनन्तर मल्ल ऊपर लेपकर बन्द करे, उसको ढकना देकर उसके ऊपर अग्नि का पुट देवे, यह पारद की गधक जारण को कच्छप यन्त्र कहा हैं।

जारणायन्त्र

लोहमूषाद्वयकृत्वाद्वादशांगुलमानत।
ईषच्छिद्रान्वितामेकांतत्रगधकसयुताम्॥
मूषायारसयुक्तायाम॰यस्यांतांप्रवेशयेत्।
तोयस्यास्तूतकस्याधऊर्ध्वाधोवह्निदीपनम्॥
रसोनकरसंभद्रेयत्नतोवस्त्रगालितम्।
दापयेत्प्रचुरंयत्नादाग्लाव्यरसगंधकौ॥
स्थालिकायांपिधायोर्ध्वं स्थालीमन्यांदृढांकुरु
संधिविलपयेद्यत्नान्मृदावस्त्रेणचैवहि॥
स्थाल्यन्तरेकपोताख्यंपुटकर्पाग्निनासदा।
यत्रस्याधःकरीषाग्निदद्यात्तीव्राग्निमेववा॥

एवंतुत्रिदिनकुर्यात्ततोयत्र विमोचयेत्।
तप्तोदकेनप्रचुल्यानकुर्याच्छीनलेक्रियाम्॥
नतत्रक्षीयतेसूतोनचगच्छतिकुत्रचित्।
अनेनचक्रमेणैवकुर्याद्गंधकजारणम्॥



बारह बारह अंगुल की दो लोहे की मूषा बनावे, एक में थोडा छेद हो उसमे गधक भरे फिर दूसरी मूस में पारा रखे उस गन्धक वाली मूषा मे पारे के नीचे जल रक्खे और पारे के ऊपर नीचे अग्नि जलावे तथा कपडे मे छना लहसन के रस से पारे गन्धक दोनो को तर कर देवे। फिर एक बडी हांडी लेकर उसके बीच में इन पारे गन्धक की मूसो को रख दूसरी हांडी से हाडी का मुख बन्द कर देवे और दोनों हांडियोंके मुख को कपड़मिट्टी से बन्द कर देवे, उस नीचे की हांडी के भीतर कपोतपुट की आच देवे और हांडी के नीचे उपलों की तीव्र आग आग देय इस प्रकार तीन दिन करे चौथे दिन यन्त्र को खोले, परन्तु गरम चूल्हे और गरम जल रहते न खोले, स्वागशीतल होने पर खोले इस क्रिया से पारा क्षीण नहीं होता और न निकल कर बाहर ही जाता है, इस प्रकार पारे से गधक जारण करे।

तुला यंत्र

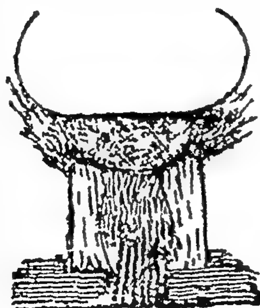
वृन्तकाकारमूषेद्वे तयोःकुर्यादध॰खलु।
प्रदेशमात्रांनलिकामृदालिप्तासुगंधिका॥
तत्रैकस्मिन्क्षिपेत्सूत मन्यस्यागधचूर्णक।
निरुध्यमूषयोर्वक्त्रं वालुकायत्रकेक्षिपेत्॥
गधाधोज्वालयेदग्नितुलायन्त्रमुदाहृतम्॥
वालगधाश्मसाराणाजारणार्थं मुदाहृतम्॥

बैंगन के आकार दो मूष बनावे उनके नीचे

प्रदेश संधि (अंगूठे से लेकर तर्जनी तक को प्रादेश कहते हैं) इतनी बडी नली बनावे उन दोनों को जोडकर मिट्टी से संधि लेपकर एक मूषा में पाराभर दूसरे में गंधक का चूर्ण भरे पीछे उनको वालुका यंत्र में रखकर गंधक के नीचे अग्नि जलावे इसको तुला यंत्र कहते हैं इससे हरिताल, गंधक, लोह इनका जारण होता है।

जल यंत्र

उपर्यापस्तलेतापोमध्येचरसगंधकौ।
जलयंत्रमिदंगोप्यंयत्रंश्रेष्ठसमीरितं॥
अस्मिन्स्वर्णादिभूसत्वगंधकादिंचजारयेत्।
कृत्वालोहमयींपात्रीमधोमुखसमन्विता॥
मुखमध्येक्षिपेद्द्रव्यपात्रवक्त्रं निरोधयेत्।
लोहचक्रिकयारुध्वातत्संधिसाधुलेपयेत्॥
तस्मिन्कोष्टेक्षिपेदच्छागलोहरजोन्वितं।
पुनःपुनश्चसशुष्केपुनरेभिश्चलेपयेत्॥
लोहवत्तच्चबव्बूलक्वाथेनपरिमर्दितं।
जीर्णेष्टकारजः सूक्ष्मगुडचूर्णसमन्वितम्॥
लेपयेत्खलुतत्प्रोक्तं दुर्भेद्यं सलिलैःखलु।
खटिकापटुकिट्टैश्चमाहिषीदुग्धमर्दितैः॥
यस्तयामृत्स्नयारुद्धोनगतुंक्षमतेरसः।
विदग्धवनिताप्रौढप्रेम्णावद्धःपुमानिव॥
ततोजलविनिक्षिप्यवन्हिप्रज्वालयेदधः।
अथवाकारयेन्मूषापात्रलग्नामधोमुखीं॥
लोहानामनुरूपाश्चतन्मूषामुखरोधिनीं।
दत्वाचान्यातयोसंधिविलेयानासृगादिभिः
जलमूर्ध्वंविनिक्षिप्यनिस्सदेहविपाचयेत्।
जलयंत्रंतुवहुभिर्दिनैरेवहिजायते॥



ऊपर जल, नीचे अग्नि बीचमें पारा गंधक रखकर पचन करे, उसको जलयंत्र कहते हैं। इसमें सुवर्ण, अभ्रकसत्व, गंधकादि जारण करे। एक लोह का बडा पात्र बनावे जिसका मुख नीचेको हो उसमे पारा आदि द्रव्य भर पात्रका मुख ढकदे, लोहेकी टिकयासे ढक उसकी संधियोको दृढ बन्दकर संधियोपर लोह चूर बकरेके रुधिर से सानकर लगावे, उसे बार २ सुखा २ कर लेप करे, पीछे पुरानी ईंटका कुकुआ, गुड इनको बबूरके काढेमे मिलाकर लेप करे तो यह जलके भेदनेमे नहीं आवे अर्थात पानी नहीं भरे-और उसपर खडिया-नोन और लोहचूरको भैंसके दूध मे खरलकर लेप करे तो पारा इस मुद्राको त्याग कर नहीं जावे, जैसे चतुर और युवा-स्त्रीके प्रेम से फंसा मनुष्य उसे छोडकर नही जाता, पीछे ऊपर जल भरकर नीचे अग्नि जलावे अथवा पात्रसे चिपटी नीचामुख ऐसी मूषा बनावे उस पर पात्र जमाकर मुख वदकरे और उसकी संधियोको पूर्वोक्त प्रकार वन्द करे और ऊपर जलभरकर निस्सदेह अग्निपर पाचन करे-यह जलयत्र बहुत दिनोंमे सिद्ध होता है।

धूपयन्त्र

विधायाष्टांगुलंपात्रंलोहमष्टांगुलोच्छ्रयम्।
कंठाधोद्व्यंगुलेदेशेजलाधारंहितत्रच॥
तिर्यग्लोहशलाकाश्चतन्वीस्तिर्यग्विनिक्षिपेत्।
तनूनिस्वर्णपत्राणितासामुपरिविन्यसेत्॥
पात्राधानिक्षिपेद्धूमंवक्ष्यमाणमिहैवहि।
तत्पात्रंन्युब्जपात्रेणाच्छादयेदपरेणहि॥
मृदावलिप्यसंधिंचवन्हिप्रज्वालयेदधः।
तेनपत्राणिकृष्णानिहतान्युक्तविधानतः॥
रसश्चरतिवेगेनद्रुतगर्भेद्रवतिच।
गन्धालकशिलानाहिकज्जल्यावामृताहिना॥
धूपनस्वर्णपत्राणांप्रथमंपरिकीर्तितम्।
ताराथतारपत्राणिमृतवंगेनधूपयेत्॥
धूपयेच्चयथायोग्यैरन्यैरुपरसैरपि।
धूपयन्त्रमिदंप्रोक्तंजारणाद्रव्यसाधनम्॥

आठ अंगुल लम्बा और आठ अंगुल चौडा लोहे का पात्र लेवे उसके कण्ठ को नीचे दो अंगुल मे जल रहने की जगह बनावे, फिर एक

पतली तिरछी लोहे की शलाका लेकर आड़ी डाल देवे उसके ऊपर बारीक सोने के पत्र रक्खे और उन पात्रों के नीचे धुंआ करे इस प्रकार की एक औंडे पात्र से उस पात्र को ढक देवे। और कपडमिटी से उसकी संधि बन्द करे नीचे आग जलावै तो उस आग से धुंआ उठकर उन सोने के पत्रो को काले और मृत करेगा इस क्रिया से रस सोने का खाया जाता है यह खाया हुआ सुवर्ण पारे में शीघ्र जीर्ण हो जाता है। अथवा गन्धक, हरताल, मनसिल की कजली और मृतशीशे की धूनी देवे, यह स्वर्णपत्रो की पहली धूनी कही ह यदि चादी के पत्रो मे धूनी देनी होय तौ मृतवंग की देवे। इस प्रकार अन्य उपरसों से यथोचित धूनी देवे यह धूप यन्त्र जारणद्रव्य के साधन के वास्ते कहा है।

स्थालीयन्त्र

स्थाल्यातांम्रादिनिक्षिप्यमल्लेनाऽस्यनिरुध्य च। पच्यतेस्थालिकाधस्थस्थालीयन्त्रमितीरितम् ॥

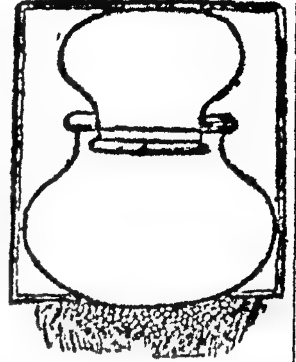
स्थाली मे ताम्र आदि द्रव्य डाले और मल्ल से मुख बन्द कर उसके नीचे अग्नि जलाय कर पाचन करे इसे स्थाली यन्त्र कहते हैं।



गौरी यंत्र

गौरीयत्रं प्रवक्ष्यामिसुखदंजारणाविधौ ।
अष्टागुलोच्छ्रायाकृत्वाचतुरस्रांसमेष्टिकां ॥
सतुनागात्समुत्कृत्यमध्येचूर्णेनलेपयेत् ।
श्लक्ष्णरसकृतांपिष्टिंकृत्वाप्राग्वद्धताभ्रजा ॥
रूप्यजांहेमजांवापिसत्वेनापिविनिर्मितां ।
निवेश्यतत्रचोर्ध्वाधोवलेश्चूर्णपिधायच ॥
तस्यांपिष्टयाश्चतुर्थांशवारंवारविशोषयेत् ।
वक्त्रं खर्परचक्रींतुदत्वालेप्यविशोष्यच ॥
ऊर्ध्वेहयखुराकारंपुटंदद्याल्लघुत्पलैः ।

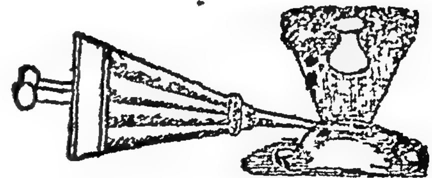
अब जारण-विधिं सुखकारक गौरी-यंत्र को कहताहूँ घनाकार आठ अगुल लवी चौडी और ऊंची समधरातल ईंट लेकर उसके बीचमे गेंढाकरे, उस को कांचसे साफकर बीचमे चूनालेप करे,



तदनन्तर अभ्रकसत्व वा सोने और चादीमें घोटी पारेकी पिष्टीको पूर्वोक्त ईंटके गढेमे भरकर ऊपरनीचे गंधक-का चूर्ण बिछावे परन्तु चूर्ण पारेका चतुर्थांश लेवे, पीछे गढेके मुखपर खीपडेकी टिकरी रख सधिलेपकर सुखाय उसके ऊपर घोडेके खुरके समान आरने उपलाकी अग्नि देवे इसको गौरीयंत्र कहते हैं।

कोष्टीयंत्र

हस्तप्रमाणदीर्घारमष्टसख्यागुलंतिर्यक् ।
समभूभागेघटितं वृत्तमृत्कर्मसंपन्नं ॥ वातायन द्विवृत्त भस्त्रीमुखतुल्यमित्यधोभागे ।
प्रधमेत्पशुवशानालैर्भस्त्राभिर्याऽभ्रसत्वार्थं ।
इदमेवकोष्टयंत्र पूर्णविद्याद्यथोचितांगारैः ।



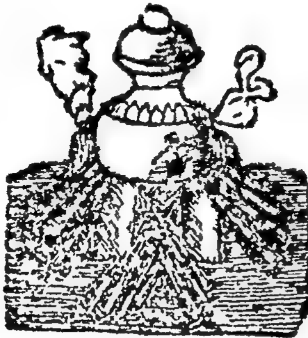
एक ऐसी लकडीले जो ऊपरसे नवी हुई हो लंबी एक हाथ और चौडी ४ अगुलहो-परन्तु ८ अंगुल तिरछी हो उसको समान पृथ्वीपर रख भींगी हुई गाढी मिट्टी उसपर चढावे और दोनों

सुडौल गोल मुखकरे, परन्तु नीचेमुख छोटा बनावे, पीछे सावधानीसे अचरू लकडीको निकाल लेवे, तदनतर धूपमे सुखाकर पीछे भट्टी वा अंगीठीमे छेदकर उस कोष्ठिकाको अच्छे-प्रकार रखदे और उसके पिछले भागमे पशूकी बसाकी नाल अथवा धोंकनी बाध तदनंतर भट्टी में पक्के कोयलेडाल अभ्रकादि सत्व निकालनेको रखे, और अग्निदे धोंकनीसे खूब धमावे इसे कोष्टीयन्त्र कहते हैं, इसकी क्रिया लुहारोसे भले-प्रकार मालूम होसक्ती है।

कोष्टीयन्त्र दूसरा

कृत्वास्वल्वाकृतिचुल्लीमङ्गारैः परिपूरिताम्।
तस्यानिर्वाशतरवल्वपार्श्वेभस्त्रिकयाधमेत्॥
रसेनमर्दितापिष्टिःक्षारैरम्लैश्चसयुता।
प्रद्रवत्यतिवेगेनस्वेदितानात्रसंशयः॥
कृतःकान्तायसासोऽयंभवेत्कोटिगुणोरस.।

खरल के आकार चूल्हा भट्टी बनावे, उसे अंगारो से भर देवे उसके ऊपर खरल रख बगल की तरफ धोंकनी से धोके तो रस से खरल

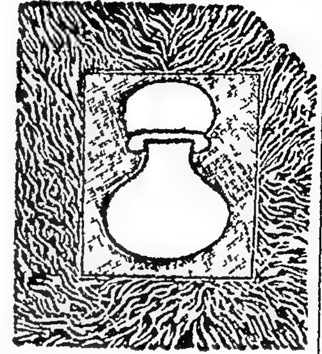


की गई पिट्टी तथा खीर और खटाई से युक्त पिट्टी इस यन्त्र को अग्नि से स्वेदन करने से बहुत जल्दी पतली होती है। यदि कात पाषाण का बनावे तो वह कोटिगुण दाता पारद को करे यह दूसरे प्रकार का कोष्टीयन्त्र है।

वज्रमूषा

वर्तुलागोस्तनाकारा वज्रमूषाप्रकीर्तिता।
द्वौभागौतुपदग्धस्य एकोवल्मीकमृत्तिका॥
लोहकिट्टस्यभागैकं श्वेतपाषाणभागकं।
नरकेशसमंकिंचित् छागीक्षीरेणपाचयेत्॥
यामद्वयंदृढमद्यं तेनमूषाचसपुटेत्। शोष-
यित्वारसक्षिप्त्वातत्कल्कैःसंधिलेपितं॥
वज्रमूषाइदंस्यातां सम्यक्सूतस्यमारणे।

दोभाग तिनकोकी राख एक भाग बाबीकी मिट्टी, एक भाग लोहकीट, एक-भाग सफेद पत्थर का चूरा और कुछ मनुष्य के बाल

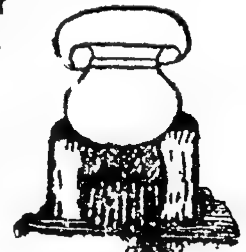


डाले, सबको एकत्रकर बकरीके दूधमें औटाय दोप्रहर पर्यन्त अच्छी तरह घोटे पीछे उस मिट्टी की गौके थनके सदृश गोल और लबी मूष बनावे पीछे उसका ढकना बनायकर धूपमें सुखाय उस में पाराभर ढकनासे ढक देवे और संधियोको उसी मिट्टी से बन्दकरे यह पारा मारनेको वज्र-मूष कहा है, इसीको अंध मूष कहते हैं।

पुटयन्त्र

शरावसपुटान्तस्थं करीषेष्वग्निमानवित्।
पचेचुल्यांद्वियामवा रसतत्पुटयन्त्रकम्॥

एक शराव (सरवा वा सकोरे) मे जारण द्रव्य को रख दूसरे शराव से बन्द कर देय और ऊपर उसके सात या तीन कपरमिट्टी चढाय धूप मे सुखाय लेवे फिर इसे उपलो के बीच मे रख अग्नि दे या चूल्हे पर चढाय दो पहर की रसको अग्नि देना इसे पुटयन्त्र कहते हैं।



चक्रयंत्र

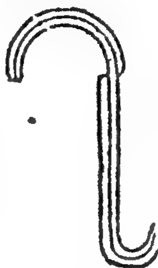
गर्त्तवाह्येभवेद्रक्तो मध्येगर्त्तेरसंकुरु। चक्र-यंत्रमिदंसिद्धं वाह्येगर्त्तेबृहत्पुट॥

पहले गोलाकार एक गढा खोदे और उस की थोडी दूर पर खाई खोदे, पहले गढे से

पारा रखे, और दूसरे में अग्निका पुटदे, इसको चक्रयन्त्र कहते हैं।

पालिका यन्त्र

चपकंवतु ललोह विनताग्रोर्ध्वडडरम्।
एतद्धिपालिकायन्त्रवन्हिजारणहेतवे ॥



गोल आगे से कुछ नवी हुई और ऊपर को दण्डवाली एक लोहे की कटारी लेवे इसे ही पालिकायन्त्र कहते हैं। यह गन्धक जारण के वास्ते कही है।

इष्टिकायंत्र

मध्येगर्त्तसमायुक्ता मिष्टिकांकारयेद्भिपक।
गर्त्तेचैवसमेश्लक्ष्णे तस्यासूतादिकन्यसेत् ॥
दत्वोपरिसरावंच सधिमृल्लवणलिपेत।
तदूर्ध्वसिकताकिंचित् दद्यादेयंपुटंलघु ॥
इष्टिकायंत्रमेतद्धि जारयेद् गधकादिकम्।

बीचमे गढेलायुक्त एक ईंट लेवे, उस गढेलेमें पारे आदिकी पिट्टी भर सरावसे मुख बन्दकर उसकी सधिओको नोन और मिट्टी से बन्दकर पीछे एक गढा खोद उसमे ईंटको रख ऊपरसे थोडी वालू बुरकदे, पीछे ईटपर थोटा अग्निका पुटदे, उसको इष्टिका यंत्र कहते हैं

कोष्टिकायंत्र

पोडशागुलविस्तीर्णं हस्तमात्रायतसमं।
धातुसत्वनिपातार्थं कोष्टिकापरिकीर्तितं ॥
वशखादिरमाधूक वदरीदारुसंभवः। परिपूर्णदढागारै रर्धवातेनकोष्टके ॥ भस्त्र-याज्वालमार्गेण ज्वालयेच्चहुताशन।

कोष्टिकायन्त्र १६ अगुल विस्तार मे एक हाथ लवा होना चाहिये, यह सपूर्ण धातुओंके सत्वपातनार्थ कहा है बांस, खैर, महवा, और बेर की लकडीके कोयलोसे उसको परिपूर्ण कर नीचे के मार्ग से अर्थात् धोंकनी के धमाने से अग्नि को प्रज्वलित करे कोष्टिका यत्र अर्थात् (धोकनी) यंत्र कहते हैं यह कोष्टिका यंत्र का तीसरा प्रकार यहा।

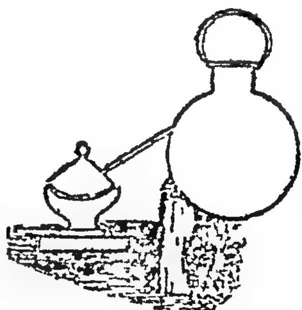
वक्र यंत्र

दीर्घकठोराचकुर्यान्निलयेत्काचभांडकम।
तिर्यक्कृत्वापचेच्चूल्यावक्रयंत्रमिदंस्मृत ॥

वडी गर्दन की एक शीशी लेवे, उस शीशी के कठाग्र भाग को दूसरी काच की शीशी मे प्रवेश कर देवे, इसको वक यत्र कहते है। पीछे उस आधारपात्र को वालुकायंत्र मे स्थापित कर नीचे अग्नि जलावे तो उस शीशी की औपधियो का रस साफ होकर दूसरी शीशी में प्राप्त हो जिसमे रस इकट्ठा हो उसको किसी जल के पात्र मे स्थित करे।

नाडिकायंत्र

विनिधायघटेद्रव्यकनीयाशमधोमुख।
घटमन्यमुखेतस्यस्थापयित्वापयोमुख ॥
मृदुमृद्भिःसमालिप्यनाडिकाविनिवेशयेत्।
यत्रात्कुडलितांभित्वाजलद्रोणीमहत्तमाम् ॥
आधारभांडपर्यंततस्तश्चूल्यांविधारयेत।
अधस्ताज्ज्वालयेद्वन्हियावद्वाष्पोविशेदध.।
गृह्णीयादाधारगतनिर्मलरसमुत्तमम।
नाडिकायंत्रमेतद्धिमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥



एक घडे में औषधी भर दूसरा छोटा पात्र उसके मुख पर रख दोनो के मुख चिकनी मिट्टी से ल्हेस दे, पीछे उस यंत्र मे एक गोल नल लेके दूसरे जल के पात्र मे डाल दे जल पात्र से भी निकाल दूसरे आधारपात्र मे डाले पूर्वोक्त यंत्र को चूल्हे पर रख नीचे अग्नि जलावे तो अग्नि के ऊपर वाले घडे का द्रव्य भाफरूप होकर नल के रस्ते जलपात्र मे शीतल और इकट्ठा होकर नीचेको

आधार पात्र में गिरे उसगिरे हुए निर्मल पारे को सावधानी से निकाल लेवे इस यंत्र के द्वारा गुलाबजलादि उत्तम २ अर्क निकाले जाते हैं इसे नाडिका यन्त्र कहते हैं।

वारुणीयंत्र

ऊर्द्ध्वं तोयसमायुक्तं जलद्रोणीविवर्जितं।
तोयसंवेष्टितोधारमृजुनाडीसमन्वितं ॥
यंत्रं तद्वारुणीसंज्ञं सुरासाधनकर्मणि।

पूर्वोक्त नाडिका यंत्र के समीप जल द्रोणी अर्थात् नलपात्र रहता है परंतु जलद्रोणी रहित केवल ऊपर जल का पात्र ही रहे, उसको वारुणीयत्र कहते हैं, इसका नल सीधा होता है इस यंत्र का आधार भाड जल का पात्र ऊपर रहता है इसके द्वारा दारू खींचते है।

दूसरा प्रकार

बीजद्रव्यंघटेदत्वासंछाद्यान्येनतन्मुखं।
मृदामुखविलिप्याथनाडीवंशादिसभवाम् ॥
यन्त्रादाधारगांकृत्वास्रावयेद्विधिनारसम्।
वारुणींयंत्रमेतद्धिसुरासंसाधनेशुभम् ॥

एक प्रकार का और सामान्य वारुणी यत्र होता है, एक मद्य (शराब) निकालने को घडा लेवे उसका मुख किसी छोटे पात्र के मुख मे मिला कर बंद करे, सधियो को मुलतानी मिट्टी से ल्हेस दे, पीछे उसे ऊपर के पात्र मे मिलादे, उस आधार पात्र के नीचे शीतल जल भरा रखे, इस प्रकार बना वारुणी यन्त्र सुरा (मद्य) आदि बनाने को शुभ है।

तिर्यक्पातन यंत्र

घटेरसंविनिक्षिप्यसजलघटमन्यकं।
तिर्यक्मुखद्वयोःकृत्वातन्मुखरोधयेत्सुधीः ॥
रसाधोज्वालयेदग्निंयावत्सूतोजलविशेत्।
तिर्यक्पातनमित्युक्तंसिद्धैर्नागार्जुनादिभिः

दो बडे २ घडे तिरछे रखे, दोने के मुख आपस मे मिला देवे, इसको तिर्यक्पातनयत्र कहते हैं। एक घडे मे पारा और दूसरे मे जल भरे दोनों का मुख मिला कर सधि भले प्रकार बंद करे, पारे वाले घडेके तले अग्नि जलावे, अग्नि के प्रभाव से पारा उडकर जल वाले घडे मे प्रवेश करेगा, इस क्रिया को तिर्यक्पातन कहते हैं।

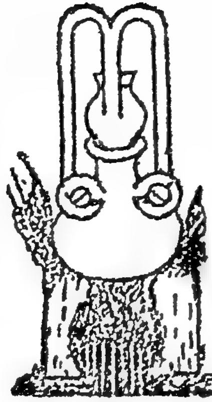
कन्दुक यन्त्र

स्थूलस्थाल्याजलंक्षिप्त्वावासोबध्वामुखेदृढम्
तत्रस्वेद्यं विनिक्षिप्य तन्मुखंप्रपिधायच ॥
अधस्ताज्ज्वालयेदग्निं यत्रैकन्दुकयन्त्रकम्।
स्वेदिनीयन्त्रमित्यन्येप्राहुरन्येमनीषिणः ॥
यद्वास्थाल्याजलंक्षिप्त्वातृणंक्षित्वातृणोपरि।
स्वेदद्रव्यंपरिक्षिप्यपिधानंप्रविधायच ॥
अधस्ताज्ज्वालयेद्वह्निं यत्र तत्कन्दुयन्त्रकम्।



एक बड़ी हाडी लेय उसमे जल भरे और उसके मुख को कपडे से दृढ बाध देवे उस कपडे पर स्वेदन द्रव्य को रख नीचे आग जलावे इसे कन्दुक यन्त्र कहते हैं। और कोई इसे स्वेदनीयन्त्र कहते है। अथवा स्थाली मे जल डाल तिनका ! (घासफूस) भर उन पर स्वेदन द्रव्य को रख मुख को ढक देवे और उस यन्त्र के नीचे अग्नि जलावे इसे कन्दुकयन्त्र कहते हैं।

एतत्स्याजलहार्यंत्र रसषाडगुण्यकारणम्।
सूक्ष्मकातमयेपात्रेरसस्याद्गुणवत्तर ॥



रस की षड्गुण गन्ध के जारण के वास्ते कोष्ठी यंत्र का दूसरा भेद यह जल हरियन्त्र है यह सूक्ष्म-कांतिमय लोह का बनाया जाता है इससे पारद से विशेष गुण होते हैं इसे ही वल्लभो यन्त्र कहते हैं स्वरूप देखो।

अर्द्धचन्द्र खरल

उत्सेधेमदशांगुल.खलुकलात्तुल्यगुलायामवान्विस्तारेणदशांगुलोमुनिमितैर्निम्नास्थितैर्वाऽगुलै ॥ पाल्याह्यंगुलविस्तरश्चमसृणोऽतीवार्द्धचन्द्रोपमोघर्षोद्वादशकांगुलश्चतद्यंस्वल्वोमतःसिद्धये॥ अस्मिन्पञ्चपल'सूतोमर्दनीयोविशुद्धये तत्तदौचित्ययोगेनखल्वेष्वन्येपुयोजयेत्।



ऊंचाव में दश अंगुल और सोलह अंगुल का लम्बाव में और चौडाव में दश अंगुल गहरा तथा उसकी पाली दो अंगुल चौडी, चिकनी हो ऐसा आधे चन्द्र के तुल्य खरल हो और बारह अंगुल की मूसली ऐसा खरल पारदसिद्धी के वास्ते कहा है ऐसे खरलमे पाच पल पारदका मर्दन सस्कार करे इसी प्रकार जहा जहा जैसा खरल लेना उचित होय वैद्य को लेना चाहिये।

द्वादशागुलनिम्नश्चमध्येतिमसृणीकृतः। मर्दकाश्चिपिटोधस्तात्सुग्राहश्चशिरोगार ॥ अयहिवर्तुलःस्वल्वोमर्दनेऽतिसुखप्रदः।



बारह अंगुल गहरा बीच में अत्यन्त चिकना और जिसके मूसली नीचे से चपटी हुई ऊपर से जो भले प्रकार पकडनेमें आवे ऐसा हो यह वर्तुल अर्थात् गोल खरल मर्दन संस्कारके वास्ते अत्यन्त सुखदाई है। शेषयंत्र रसराज सुंदर के परिशिष्ट भाग मे लिखे जायगे।

नानातंत्रानवीच्यस्वमतसयोज्ययत्नतश्शुभग। रसराजसुंदरेऽस्मिन्मध्यमखडस्तुपूर्णतागीत' ॥

इतिश्री मध्यमखंडः समाप्तः

अथोत्तरखंडप्रारंभः

अधुनात्र महेसद्यश्चमत्कारकरान्रसान्। रसतंत्राणिभूरिणिविलोक्यजनतुष्टये ॥१॥

अब अनेक रस तंत्रों को देख कर वैद्यों की प्रसन्नता के अर्थ तत्काल चमत्कार दिखाने वाले रसों को कहते हैं।

महामृत्युंजयरसः

सूतकंचविषंनागगधकंचचतुष्ठयं।
समंसर्वविघृष्टव्यशिखिनाचदिनद्वयम् ॥१॥
तस्यकल्कस्यपादैकंमृण्मयेदृढ भाजने ॥
क्षिप्त्वाहेम्नोपिकर्त्तव्यापत्रिकासममात्रिका २
दातव्यातस्यकल्कस्यसोपरिष्टात्समंततः।
पुनः शरावकंदत्वाकुर्य्यात्संधिनिरोधनम ॥३
विशोष्यवालुकांदद्यादुपरिष्टात्दृढायसी।
याममेकमथोचूल्ह्यांपाचयेन्सदवान्हिना ॥४॥
अन्यामेवमिमाहेमपत्रिकांमारयेत्क्रमात्।
अवशिष्टस्यकल्कस्यतस्याप्युपरिपत्रिकां ॥५॥
समावस्थांचसकलंहेमचूर्णंरसस्यच ॥
विषभागैकमेतस्यचतुर्भागंचमौक्तिक ॥६॥
गधकभागमेकस्यात्तस्मात्पूर्वात्तदौषधात्।
मर्दयेदेकतः कृत्वाचित्रकस्यरसेनतु ॥७॥
पुटित्वाकिंचिदेवतदिष्टंरूपतदुद्धरेत्।
हन्यात्सर्वानयरोगान्रोगयोगानुपानतः॥८॥

पारा शुद्ध १ तोले, संखिया विष शुद्ध, १ तोले, सीसा शुद्ध १ तोले, गधक शुद्ध १ तोले, प्रथम सीसे को गलाय उसमे तोले भर पारा मिला देवे, पीछे शीतल कर दोनों को खरल मे

डाल कर घोटे, जब महीन हो जावे तब इसमे गंधक डाल कर कजली करे, पीछे विष का चूर्ण डाल कर चीते के रस मे दो दिन खरल करे, जब गाढा हो जाय तब बहुत बारीक १ तोले सोने के पत्र उसी पिट्टी के आस पास लपेट देवे, पीछे इसको सराव सपुट मे रख कर उसके ऊपर एक कपरोटी कर सुखा लेवे, पीछे एक हांडी मे रख ऊपर सपुट करे और चार अ गुल वालू भरे, और लोहे की कटोरी से ढक देवे, फिर उस कटोरी की सधी गीली चिकनी मिट्टी से बंद कर देवे, पीछे चूल्हे पर चढ़ा कर एक प्रहर मन्दाग्नि देवे, जब स्वाग शीतल हो जावे तब उतार लेवे, सपुट में से पारे की भस्म निकाल कर तोले, जितनी भस्म तोल मे होवे उसका चतुर्थांश शुद्ध विष डाले, यदि चार भाग पारे की भस्म और सोने के वर्क होवें तो उनके वरावर ४ भाग मोती डाले और विष के बराबर १ भाग गधक डाले, दो दिन चीते के रस में घोटे, जब गाढा हो जाय तब फिर सोने के वर्क पिट्टी से लपेट कर सराब सपुट में रख कपरोटी करे, पीछे हाडी मे रख चार अ गुल बालू बिछाय फिर लोहे की कटोरी से पूर्वोक्त प्रकार मु ह बन्द कर दो प्रहर आच देवे [परन्तु यह भी याद रहे कि ऐसा मोटा पात्र भी न ले जिसमे बिलकुल आच न लगे, और ऐसा पतला भी न लेवे जो रस बिलकुल विगड जावे, इस रसके बनाने मे बहुत होशियारी चाहिये] जब स्वांग शीतल हो जाय तब निकाल कर बहुत उत्तम शीशी मे भर रख छोडे, इसमें से बलाबल देखकर १ रत्ती से ३ रत्ती तक वैद्य अपनी बुद्धि बल से मात्रा देवे जिस रोग के अनुपान से देवे उसी २ रोग का नाश करे ।

अथ अनुपान

पित्ताधिकेपुरोगेषुशाल्मलीद्रवमिश्रितः ।
क्षयेकासेऽम्लपित्तेचश्वासेपानात्ययेषुच ॥६
शाल्मलीद्रवसमिश्रं वल्लपुष्ट्यै प्रयोजयेत् ।
मरिचेनसमंदेयःकफरोगेषुपारदः ॥१०॥
पिप्पल्यावातरोगेषुमाक्षिकेणसमन्वित ।
शूलेषुपरिणामेषुघृताढ्योमधुमिश्रितः ॥११॥
गुडूचीजीरकाभ्यांचस्वरदोषेप्रशस्यते ।
नाशयत्यचिरेणाथमुदराण्यतिवेगतः ॥१२॥
वारणप्रतिमकुर्य्याच्छरीरमजरामर ।
नशक्यतेगुणान्वक्तुं रसस्यप्रलयेपिच ॥१३॥

सेमल के रस से इस रस को खाय तो पित्त के रोग दूर करे, खई, खासी, अम्लपित्त और श्वास इनको दूर करे, तथा इसी अनुपान से देह को पुष्टि करे । और काली मिरच के सग खाय तो कफ रोगों को दूर करे । पीपल के सग खाय तो बादी के रोग नाश होवें । वात ज्वर के काढ़े से खाय तो वात ज्वर को दूर करे । पित्त ज्वर के काढ़े से खाय तो पित्त ज्वर जाय । कफ ज्वर के काढे से खाय तो कफ ज्वर नष्ट होवे । सन्निपात के काढ़े से खाय तो सन्निपात जाय । विषम ज्वर के काढ़े से खाय तो विषम ज्वर शान्ति होवे । इसी प्रकार जिस २ रोग के काढे या चूर्ण या अवलेह के साथ खाय वह २ रोग दूर होवें । घृत और शहद के साथ खाय तो शूल रोग दूर होवे । ऊटनी के दूध अथवा नारायण चूर्ण के साथ खाय तो उदर रोग नाश होवे । गिलोय और जीरे के साथ खाय तो स्वरभग दूर होवे । इस रस का सेवन करने से हाथी के समान देह पुष्ट होवे । और बलवान होय सफेद बाल काले होवें, तथा मृत्यु और वृद्धावस्था रहित देह होवे । इसके गुण प्रलय पर्य्यंत नहीं कहने मे आवें ।

नवज्वरे लघुमृत्यु ंजयोरसः

कर्षशभूद्रवस्यैकंकर्षस्याद्दरदस्यच ।
जैपालस्यचशुद्धस्यत्रयमेतद्दिनद्वयम् ॥१॥
वृद्धदारुकनीरेणखल्वेकृत्वाविमर्दयेत् ।
ततोदु बुरण्णैश्चस्वरसेनविभावयेत् ॥२॥

शृंगवेररसेनामुं रविवारविमर्दयेत् ।
गुंजामात्रावटींकृत्वासितयासहभक्षयेत ॥३॥
मृत्यु जयरसोनामनवज्वरहरःपरः ।

शुद्ध पारा धेले भर, शिगरफ धेले भर, शुद्ध जमाल गोटे के बीज धेले भर, तीनो को विधारे के रस से २ दिन घोटे। कठूंमर के रस में २ दिन घोटे। अदरक के रस की १२ भावना देवे, पीछे १ रत्ती के प्रमाण गोलिया बनावे, १ गोली ४ रत्ती मिश्री के साथ खाने को देवे तो नवीन-ज्वर दूर होवें यदि इस रस के खाने से गरमी मालूम हो तो छाछ और भात खाने को देवे।

अपरोमृत्युंजयोरसः

ताप्यतालकजैपालवत्सनाभमन शिलाः ।
ताम्रगधकसूतचतुल्यंस्याद्रसमर्दितः ॥१॥
मृत्युंजयइतिख्यात कुक्कुटेपुटपाचितः ।
वल्लद्वयंप्रयुंजीतयथेष्ट दधिभोजन ॥२॥
नवज्वरसन्निपातहन्याद्देषमहारस. ।

सोना मक्खी, हरताल, जमालगोटा, वच्छनागविष, मनसिल, तावे की भस्म, और पारा ये सब शुद्ध लें पीछे तुलसी के रस मे ४ प्रहर घोटे, पीछे इसको सराव सपुट मे रख कर कुक्कुट पुट मे फूके तो यह मृत्यु जय रस बन कर तय्यार होवे, इसको ६ रत्ती रोगी का बलाबल देख कर मिश्री के साथ देवे, और इसके ऊपर इच्छा पूर्वक दही का भोजन करावे तो नवीन ज्वर और सन्निपात यह महारस दूर करे।

चतुर्थ मृत्युंजयोरसः

द्विक्षारत्र्यूषणपचलवणशतपुष्पिका ॥
समभागमिदंसर्वं वस्त्रपूतसमाचरेत् ॥१॥
तत्समौरसगंधौचकृत्वाकज्जलिकाशुभां ।
सर्वमेकत्रसखल्वेमर्दयेद्दिवसत्रयं ॥२॥
अयमृत्यु जयोनाम्नासन्निपातहर परः ।
कफाधिकेप्रयोक्तव्योरक्तिकापचमात्रक ॥३॥
शूलमामरुजचैववन्हिमांद्यचविट्ग्रहं । वात
श्लेष्मभवान्रोगान्कासश्वासौचनाशयेत् ॥४

सज्जीखार, जवाखार, सोठ, मिरच पीपल, सैंधानिमक, सोचर निमक, खारी निमक, साम्हर निमक, और सौंफ, प्रत्येक पैसा २ भर लेवे, सबको कूट पीस कपरछन करे। यह चूर्ण ११ पैसा भर होवे तो इसमें ११ पैसा भर ही शुद्ध पारा डाले, और ११ पैसा भर शुद्ध गंधक मिलावे, प्रथम पारे गधक की कजली करे, पीछे पूर्वोक्त चूर्ण मिलावे, ३ दिन खरल करे, यह मृत्युंजय नाम से विख्यात रस कफाधिक सन्निपात को दूर करे, शूल को, आमजन्य विकारो को, मन्दाग्नि को, कोष्ट को, बादी को, कफ के रोगो को, खासी और श्वास को दूर करे, इसकी २ रत्ती की मात्रा है।

त्रैलोक्यडंबररसः

सूतार्कगंधचपलाजयपालतिक्ता ।
पथ्यात्रिवृत्तविषतिंदुकजान्समांशान् ॥
संभाव्यवज्रपयसामधुनात्रिवल्ल ।
स्त्रैलोक्यडंबररसोऽभिनवज्वरघ्नः ॥१ ।

पारा, तावा, गधक, पीपल, जमालगोटा, कुटकी, हरड, निसोत, वच्छनागविष, और कुचला इन सबका चूर्ण कर थूहर के दूध की भावना देवे फिर सपुट मे रख कर फूंक देवे, जब स्वाग शीतल होजावे तब निकालकर शहत के साथ ८ रत्ती तक बलाबल देखकर मात्रा देवे, यह त्रैलोक्यडबर रस नवीन ज्वर का नाश करे यह रस रत्न समुच्चय में लिखा है।

ज्वरगजहरी रसः

दरदजलदयुक्तं शुद्धसूतंचगंधं ।
प्रहरमथसुपिष्ट वल्लयुग्मचदद्यात् ॥
ज्वरगजहरिसंज्ञ शृंगवेरोदकेन ।
प्रथमजनितदाहींक्षीरभक्तेनभोज्यं ॥

शिंगरफ, नागरमोथा, शुद्धपारा शुद्धगंधक,

इन सबको १ प्रहर खरलमें डालकर घोटे, पीछे इसमेंसे ६ रत्ती अदरकके रसमे खानेको देवे तो हाथी रूप ज्वर के मारने को यह रस सिंह रूप है इसके खाने से प्रथम दाह होता है, उसकी शांति के लिये दूध भात का पथ्य भोजन है।

तरुण ज्वरे धूम्रकेतुरसः

दद्यात्समंसूतसमुद्रफेनं ।
हिंगूलगंधंपरिमर्द्य यामं ॥
नवज्वरेवल्लयुगंत्रिघस्र ।
मार्द्रां बुनायज्वरधूम्रकेतुः ॥

शुद्ध पारा १ पैसाभर, शुद्धगंधक १ पैसेभर दोनोंकी कजलीकर पीछे समुद्र फेन १ पैसा भर, शिंगरफ १ पैसाभर, दोनों कजली मे मिलाकर १ प्रहर घोटे। परन्तु किसी वैद्य की यह सम्मति है कि ३ दिन घोटे पीछे २ रत्ती की गोली बना कर रखे १ गोली अदरक के रस मे ३ दिनतक देवे तो तरुणज्वर छूट जाय, गमार मनुष्य को ६ रत्ती देवे, पठान (मुसलमानो की जाति विशेष) को भी ६ रत्ती तथा बालक को १ रत्ती अदरक के रस के साथ देवे तो तरुण ज्वर दूर होवे।

तरुण ज्वरे इभसिंह रसः

शुद्धंसूतसमंगंधलोहताम्रं चशीशकं ॥
मरिचपिप्पलीव्यस्तसमभागंविचूर्णयेत ॥१॥
अर्द्ध भागंविषंशुद्ध मर्द्दयेद्वासरद्वयं ॥
शृंगवेररसेनामुं दद्याद्गुंजामितंभिषक् ॥२॥
नवज्वरेमहाघोरेवातेसंग्रहणीगदे ॥
नवज्वरेभसिंहोयसर्वरोगेपुयुज्यते ॥३॥

पारा शुद्ध, गंधक शुद्ध, लोहा मरा, तांबा मारा, सीसा मारा हुआ, मिरच का चूर्ण, पीपर का चूर्ण, जुदे जुदे एक एक तोले लेवे। विष शुद्ध ६ मासे, सब को खरल में डाल अदरक के रस में २ दिन घोटे, पीछे इसकी २ रत्ती की गोली बनावे, और १ रत्ती की जुदी गोली बनावे सुकुमार मनुष्यको १ रत्ती देवे, और बलवान को २ रत्ती की गोली अदरक के रस से देवे तो तरुण ज्वर दूर होवे बात और संग्रहणी रोग को भी दूर करे, और यह सर्व रोगो पर चले है।

नव ज्वरे उदकमंजरी रसः

सूतोगंधष्टङ्कणःसोषणश्च ।
सर्वंतुल्यंशर्करामत्स्यपित्तै. ॥
भूयोभूयोमर्द्दयेत्त त्रिरात्रं ।
वल्लोदेयःशृंगवेराम्बुनाच ॥
तापेशीतव्यंजनैस्तक्रभक्तं ।
वृन्ताकाढ्यंपथ्यमेतत्प्रदिष्टं ॥
अन्हैवोग्रंहन्तिसद्योज्वरंतु ।
पित्ताधिक्येमूर्ध्निनितोयंविदध्यात् ॥

पारा शुद्ध १ पैसा भर, शुद्ध गंधक १ पैसा भर, सुहागा भुना १ पैसा भर, मिरचकाली १ पैसा भर, मिश्री ४ पैसा भर, रोहू मछली का पित्ता ३ पैसे भर, प्रथम पारे गंधक की कजली करै, पीछे सुहागा मिरचकाली और मिश्री मिलाय १ पैसा भर पित्ता मिलाकर एक दिन घोटे दूसरे दिन पैसा भर पित्ता मिलाकर घोटे, तीसरे दिन पैसा भर पित्ता मिलाकर फिर घोटे, परन्तु अदरक का रस डालता जाय, पीछे इसमे से १ रत्ती के प्रमाण अदरक के रस में खाने को देवे बलवान को ३ रत्ती देवे बलवानका १ दिन मे नवीन ज्वर जाय इस पर पथ्य भटा (बैंगन) का भुर्ता और भात खाने को देवे यदि बहुत दाह होवे तो छाछ पीने को देवे, और मस्तक के ऊपर शीतल जलका तरडा देवे।

दीपिकारस

संतप्तसीसभागंचपारदंगधकंकणा ॥
समभागपृथकृत्त्वमेलयेच्चयथाविधि ॥१॥
जम्बीरस्यरसेसर्वंमर्दयेच्चदिनत्रयम् ॥
मेघनादकुमार्य्याश्चरसेचापिदिनत्रयम् ॥२॥

दिनद्वयमजामूत्रे गवांमूत्रे दिनत्रयम् ॥
भावयेच्चयथायोग्यंतस्मिनेतानिदापयेत् ॥३॥
सैंधवचित्रकंभागंसौवर्चलवणतथा ॥
तेनसंमेलनंकृत्वाभावयेच्चपुन क्रमात् ॥४॥
अनेनविधिनासम्यक्सिद्धोभवतितद्रसः ॥
शर्करावृतसयुक्तं दद्याद्वल्लत्रयरसं ॥५॥
गोधूमस्योदनपथ्यमाषसूपचवास्तुकं ॥
धात्रीफलसमायुक्तं सर्वज्वरविनाशनम् ॥६॥
दीपिकारसइत्येषस्तंत्रज्ञैःपरिकीर्तित ॥

सीसा १ भाग, पारा १ भाग, गन्धक १ भाग, और पीपल १ भाग, इन सब को पीसकर ३ दिन जभीरी के रस मे घोटे। चौलाई तथा खार पट्ठे के रस मे ३ दिन घोटे। बकरी के मूत्र मे ३ दिन घोटे। गौमूत्र मे ३ दिन घोटे। पीछे इतनी औषधि और मिलावे सैंधानोन, चित्रक, सचर नोन, सब को मिलाकर क्रम से फिर पूर्वोक्त रसो की भावना देवे। इस प्रकार करने से यह रस सिद्ध होवे इसकी मात्रा बलाबल देखकर मिश्री और मक्खन के साथ ३ रत्ती देवे। इसके ऊपर गेहू का यूष, चावल, उडद, मूग, बथुवा का साग, और आवलो का पथ्य देवे तो सर्वज्वरो का नाश करे इसको शास्त्र के ज्ञाता दीपिका रस कहते हैं।

भैरव रस

विषमहौषधिमागधिकोषणाद्युमणिरक्तकमार्द्रकमदित। क्रमविवर्धितमुद्वलितंज्वरंहरतिभैरवएषरसोवर ॥

विष, सोठ, पीपल, काली मिरच, तावे की भस्म, और हींगलू ये औषधि क्रम से बढ़ती लेवे पीछे इनको आक के दूध मे और अदरक के रस में घोटे तो यह भैरव रस बने। इसकी बलाबल देख कर मात्रा देवे तो घोर वात ज्वर को दूर करे। इसकी मात्रा आधी रत्ती की है।

कफ ज्वरे रस पर्पटः

शुद्ध सूतं द्विधागधंमर्द्यं भृंगीरसैःक्षण ॥
पाचयेल्लोहपात्रस्थंचाल्यंतुचुटकेनच ॥१॥
लोहभस्माथवाताम्रं पादांशेनविनिःक्षिपेत् ॥
पाच्यप्रचालयेन्नैवयामार्द्धं मृदुवन्हिना ॥२॥
तत्क्षिपेत्कदलीपत्रेगोमयस्योपरिस्थितं ॥
तत्पत्रं धारयेदूर्ध्वंतदूर्ध्वं गोमयंक्षिपेत ॥३॥
ततःसचूर्णयेत्खल्वेनिर्गुंडयाभावयेद्दिनं ॥
जयन्तीत्रिफलाकन्यावासाभार्ङ्गीकटुत्रयैः ॥४॥
भृंग्यग्निमुनिमुण्डीभिर्भावयेत्प्रत्यहपृथक् ॥
आर्द्रकस्यद्रवैःपश्चाद्भावयेद्दिनसप्तक ॥५॥
अंगारैःस्येदयेत्पश्चात्पर्पटाख्योमहारसः ॥
चतुर्गुंजामितोदेयःसम्यक्श्लेष्माधिकेज्वरे ६
वासाशुंठीभयाक्वाथमनुपानप्रकल्पयेत् ॥
चव्यकस्यरसैर्वाथपेयंश्लेष्मज्वरापह ॥७॥

शुद्ध पारा १ भाग, गन्धक १ भाग, इन दोनों की कजली कर भागरे के रसमें खरल करे, पीछे उस कजली को लोहे के पात्र मे भर चूल्हे पर चढ़ा कर मन्दाग्नि देवे, और उस कजली को हिलाता जाय, पीछे इसमें लोहे या तावे की भस्म चतुर्थांश डाले, और उसके नीचे मन्द अग्नि देवे लोह भस्म डाल कर हिलावे नहीं, उसी तरह पचावे। ऐसे आध प्रहर करे पीछे केले के पत्तेको गोबर के ऊपर रख उस गरम कजली को उसके ऊपर ढाल देवे,और उसे शीघ्र केले के पत्ते से ढक देवे, जब शीतल हो जाय तब खरल मे डाल कर चूर्ण कर निर्गुंडी (सम्हालू) के रस में एक दिन घोटे त्रिफला ग्वारपट्ठा, अरणी, अडूसा, भारगी, त्रिकुटा, (सोठ, मिरच पीपल) भांगरा, चित्रक, अगस्तिया, और गोरखमुंडी, इनकी पृथक्-पृथक् भावना एक २ दिन देवे, पीछे अदरक के रस मे सात दिन घोटे, फिर अग्नि पर रख कर पर्पटी की विधि से यह पर्पटी बनाय लेवे, इस पर्पटी को कफज्वर की अधिकता मे ४ रत्ती के प्रमाण देवे, और अडूसा, सोठ, हरड, इनका काढा बनाय अनुपान देवे, अथवा चव्य का काढा इसके ऊपर पीवे तो कफ ज्वर दूर होवे।

द्वितीय उदकमंजरी रसः

नवज्वरविनाशायवक्ष्याम्युदकमंजरीं ।
रसगंधौसमौस्यातामरिचंतत्समंक्षिपेत ॥
भावनामत्स्यपित्तेनमर्दयेद्दिवसत्रय ।
टंकणस्यसमभस्मशर्करासर्वसमिता ॥
आर्द्रकस्यरसेनायदीयतेवल्लमात्रकं ।

नवीन ज्वर के दूर करने को उदक मंजरी रस कहते हैं, पारा, गंधक, बराबर लेवें। दोनो की बराबर काली मिरच ले सब को खरल मे डाल रोहू मछली के, पित्ते मे, ३, दिन बराबर घोटे पीछे सुहागे की भस्म, बराबर की, मिलावे, और इन सब की बराबर मिश्री मिलावें। नवीन ज्वर वाले को इसमे से २ रत्ती अदरक के रस के साथ देवें।

विनोद विद्याधर रसः

रसगंधंमृतंलोहत्रिकुटात्रिफलातथा।
कटुकीवृच्चवृहतीहेमार्केटंकणविषं ॥
एतानिसमभागानिसमांशंतितिडीफलं ।
चूर्णयित्वाततःसम्यक्मर्दयेत्स्वर्जकाबुना ॥
दतीकाथेतत.सम्यग्वटिकावल्लमात्रजा ।
विद्याधरविनोदाख्यदद्याच्चैवनवज्वरे ॥
शूलेगुल्मेतथापांडौग्रहण्यर्शकृमीन्हरेत् ।
अजीर्णेतथामवानेचप्लीहोदरविवंधजित् ॥
दातव्यःसर्वरोगेपुनाशयेन्नात्रसंशयः।

शुद्ध पारा, गंधक, मृतलोह (सार) सोंठ मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, कुटकी, निसोत, कटेरी, सुवर्ण भस्म, और ताम्र भस्म, सुहागा, सींगिया विष, इन सबको बराबर लेवे, और सब की बराबर पकी इमली के फल लेवें, इन सब को कूट पीस सज्जीखार के जल में घोटे, पीछे दती के काढे में घोटे, और इसकी गोली तीन २ रत्ती की बनावे यह विनोद विद्याधर रस है, इसको नवीन ज्वर मे देवे इसके सेवन से शूल, गोला, पांडुरोग, संग्रहणी, बवासीर, कृमिरोग, अजीर्ण रोग, आमवात, प्लीहोदर, तथा फब्जियत दूर होय इसको सब रोगो मे देवे तो सर्व रोग नष्ट करे,

महा ज्वरांकुश

शुद्धंसूतविषगंधप्रत्येकशाणसम्मितं ॥
धूर्त्तबीजत्रिशाणस्यात्सर्वेभ्योद्विगुणाभवेत् । हेमाव्हाकारयेदेषांचूर्णंसूक्ष्मप्रयत्नतः ॥
जम्बीरजीरकैर्देयचूर्णगुंजाद्वयोन्मित ।
आर्द्रकस्यरसेनापिज्वरंहन्तित्रिदोषज ॥
एकाहिकंद्वाहिकंचत्र्याहिकचचतुर्थक ।
विपमचज्वरहन्यात्नवजीर्णंचसर्वथा ॥
महाज्वरांकुशोनाम्नारसोयसर्वसंमतः ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध विष, प्रत्येक एक २ टंक लेवे। धतूरे के बीज ३ टंक चोक (प्रसिद्ध है) १२ टंक, इन सबको कूट पीस बहुत बारीक चूर्णकर रख छोडे, पीछे इसमे से बलाबल देख कर जमीरी के रस में वा जीरे के साथ अथवा अदरक के रस मे इसको २ रत्ती के अन्दाज देवे, तो त्रिदोषज, इकतरा, द्वाहिक, तिजारी, चौथैया और विषमज्वर मात्र को तथा नवीन और पुराने सब प्रकार के ज्वरो का नाश करे, इस सर्व सम्मत रसका नाम महा ज्वरांकुश है ।

ज्वरघ्नी गुटिका

एकोभागोरसाच्छुद्धादैलेय पिप्पलीशिवा ।
आकारकरभोगंधकटुतैलेनशोधित ॥
फलानिचेन्द्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताअमी ।
एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिन्द्रवारुणिकारसै. ॥
माषोन्मितांवटींकुर्य्याद्द्यात्सद्योज्वरेबुधः ।
छिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीवटिकामता ॥

शुद्ध पारा १ भाग, और शुद्ध एलुआ, पीपल, हरड, अकरकरा, कडवे तेल से सोधी गंधक, और इन्द्रायण के फल का गूदा इन सबको चार २ भाग लेवे। सब को कूट पीस इन्द्रायन के रस मे खरल करे और एक २ मासे के प्रमाण गोलिया बनावे, और गिलोय के रस

के साथ रोगी को देवे तो नवीनज्वर दूर होवे इसको ज्वरघ्नी गुटिका कहते हैं।

लीलावती वटी

पारदोगंधकश्चैवविषहेमवतीतथा।
पंचमन्दन्तिबीजंचक्रमवृद्धानियोजयेत्॥
एषालीलावतीनामलीलयाज्वरनाशिनी।
निंबुनीरेणवटिकाकर्त्तव्यामुद्गसन्निभा॥

पारा, गंधक, सींगिया विष, चौक, जमाल, गोटा इनको क्रम से बढती भाग लेके, सब को कूट पीस कर नींबू के रस में मूंग के समान गोली बनावे इस गोली का लीलावती नाम है, यह लीला पूर्वक ज्वर का नाश करे।

नवज्वरहरीरसः

रसगंधंचदरदंजैपालक्रमवर्द्धितं।
दतीरसेनसंपिष्यवटीगुंजामिताकृता॥
प्रभातेसितयासार्द्धमसिताशीतवारिणा।
एकेनदिवसेनैषानवज्वरहरीभवेत्॥

पारा, गंधक, हिंगलू, जमाल गोटा, ये क्रम से बढती भाग लेवे। सब को कूट पीस दती के रस मे घोटे-और १ रत्ती की गोली बनावे, प्रातःकाल मिश्री वा शीतल जल के साथ खावे तो एक ही दिन में नवीनज्वर नष्ट होवे।

नवज्वरहरीवटी

रसोगन्धविषंशुंठीपिप्पलीमरिचानिच।
पथ्याविभीतकंधात्रीदन्तीबीजंचशोधितम्॥
चूर्णमेषांसमाशानांद्रोणपुष्पीरसैःपुटेत्।
वटींमाषनिभांकुर्य्याद्धन्त्येन्नूतनेज्वरे॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सिंगिया विष, सोंठ, पीपल, मिरच, हरड, बहेडा, आमला, शुद्ध जमालगोटा, सबको समान लेवे और सब को पीस गोमा के रस का पुट देवे, पीछे घोट कर उडद के समान गोली बना इसके खाने से नवीनज्वर नाश होवे।

विद्याधर रसः

रसोगधस्ताम्रःत्रिकटुकटूकाटंकणवरा।
त्रिवृद्दतीहेमद्युमणिविषमेतत्सममिद॥
समस्तैस्तुल्यस्याद्विमलजयपालोद्भवरजः।
ततःस्नुक्क्षीरेणप्रगुणमृदितंदन्तिसलिलैः॥
त्रिगुंजाभाप्रौढजयतिवटिकासाममतुलं।
ज्वरंपाण्डुंगुल्मग्रहणीगदकीलोदररुजः॥
मरुच्छूलाजीर्णपवनमथसामंकृतगदं।
विबन्धंप्लीहानंप्रबलमपिविद्याधररसः।

शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, तावे की भस्म, सोंठ, मिरच, पीपल, कुटकी, सुहागा हरड, बहेडा आवला, निसोथ, दती, धतूरे के बीज, आक, इन सबको बराबर लेवे, और इन सबकी बराबर जमालगोटा लेवे, सबको कूट पीस थूहर के दूध मे घोटे, पीछे दन्ती के काढे में घोटे, तदनन्तर ३ रत्ती की गोली बनावे इसके खाने मे नवीन ज्वर, पांडुरोग, गोला, संग्रहणी, कीलोदर, वायशूल, अजीर्ण, बादी आमवात, कृमिरोग, विवध, तापतिल्ली, इन सब रोगों को विद्याधर रस दूर करे।

विश्वतापहरणरसः

सूतशुल्वनलिकाबलितिक्तादन्तिबीजचपलं विषतिन्दु। पथ्ययासहविचूर्ण्यसमाशंहेम वारिसहितदिनमेकं॥ वल्लयुग्मगुटिकासहतोयैर्नाशयेद्विषज्वरमाशु। विश्वतापहरणोत्र च पथ्यमुद्गयूषसहितलघुभुक्तं।

शुद्ध पारा, तावे की भस्म, खपरिया गधक, कुटकी, जमालगोटा, चपल, सिंगिया विष, कुचला, और हरड, इन सबको बराबर लेवे और धतूरे के रस मे १ दिन घोटे, पीछे ६ रत्ती की गोली बनाकर जल के साथ खावे तो ज्वर को दूर करे, इस विश्वताप हरण रस के ऊपर मूंग का यूष और हलका भोजन पथ्य देवे।

अन्य मतेन विश्व नामान्तर

रसहिंगुलगंधचजैपालंमर्दितंत्रिभिः ।
दंतीक्वाथेनसंमर्द्यरसोज्वरहरःपरः ॥
नवज्वरंमहाघोरंनाशयेद्याममात्रतः ।
आर्द्रकस्यरसेनाथदापयेद्रक्तिकाद्वय ॥
शर्करादधिभक्तं चपथ्यंदेयंप्रयत्नतः ।
शीततोयंपिबेच्चानुचेत्तुमुद्गरसोहितः ॥
शीतभंजीरसोनाम्नासर्वज्वरकुलान्तकृत् ।

शुद्ध पारा, हींगलू, गन्धक, जमालगोटा, इन सब को पीस दंती के काढ़े से तीन दिन घोटे, इसके सेवन से महाघोर नवीन ज्वर, एक प्रहर मे नष्ट होइ, इसको अदरक के रस मे दो रत्ती देवे । दही, बूरा और भात भोजन को देय, इस रस को खाकर शीतल जल पीवे, और मूंग का यूष तथा ईख का रस पीना इस पर हित है । इस रस को शीत भंजी रस कहते हैं । यह सर्वज्वरों को काल रूप है ।

पुनः पाठान्तरं

समभागानुपादयरसहिंगुलगंधकान् ।
जैपालतै समंसर्वं गृह्णीयादिदमादरात् ॥
त्रिदिनदन्तिकाक्वाथै शीतभंजीरसोभवेत् ।
गुंजाद्वयंसितायुक्तं स्त्रिदोषोत्थंज्वरजयेत् ॥
पथ्यंदध्योदनंदद्यपातव्यशीतलंजलं ।
अपिमुद्गेक्षुरसकःशोभनंम्र तसेविनः ॥

शुद्ध पारा, हींगलू और गन्धक तीनो बराबर लेवे इन सब की बराबर शुद्ध जमालगोटा लेवे, सब को खरल मे डार तीन दिन पर्यंत दंती के काढ़े मे घोटे, तो यह शीत भंजीर रस बने । इसमे से दो रत्ती मिश्री के साथ खाइ, तो त्रिदोष ज्वर दूर होवे । इस पर दही, भात पथ्य देवे । और शीतल जल पीवे, तथा मूंग का यूष और ईख का रस पीने को दे ।

नवज्वरांकुशः

क्रमेणवृद्धान्रसगंधहिंगुलान्नैकुम्भबीजानथदन्तिवारिणा । पिष्ट्स्यगुंजाचज्वरापहा भवेज्जलेनचार्द्रासितयाप्रयोजिता ॥

पारा, गन्धक, हीगलू, और जमलगोटा, ये क्रम से बढ़ती भाग लेवे, पीछे खरल मे डार दंती के काढ़े से घोटकर एक रत्ती की गोली बनावे, जल के साथ वा अदरक के रस मे अथवा मिश्री के साथ खाय तौ नवीन ज्वर दूर होवे ।

गदमुरारिस रसः

हिंगुलंचविषव्योषंटकणनागराऽभया ।
जयपालसमायुक्तं मद्योज्वरविनाशनम् ॥

हीगलू, सिगिया विष, सोंठ, मिरच, पीपल सुहागा, नागरमोथा, और हरड इनमे जमालगोटा मिलाय गोली करे, इसके सेवन करने से नवीन ज्वर दूर होइ ।

ज्वरमुरारि रस

रसवलिफणिलोहव्योमताम्राणितुल्या ।
न्यथरसदलभागोनागरंतत्प्रभृष्टं ॥
भवतिज्वरमुरारिश्चास्यगुंजार्द्रवारिः ।
क्षपयतिदिवसेनप्रौढमामज्वराख्यं ॥

पारा, गन्धक, नागेश्वर, सार, अभ्रक, तामेश्वर, ये सब बराबर लेवे, सोंठ छः भाग लेवे इसको अदरक के रस में एक रत्ती देवे । तो यह ज्वर मुरारी रस एक ही दिन मे नवीन ज्वर को दूर करे ।

त्रिपुर भैरव रसः

विषटंकवलिम्लेच्छदन्तीबीजक्रमाद्बहु ।
दत्त्यम्बुमर्दितंयामंरसस्त्रिपुरभैरव ।
वल्लंव्यूषणचार्द्रस्यरसेनसितयाऽथवा ।
दत्तोनवज्वर हन्तिमांद्यमालिन्यशोषहा ॥
हन्तिशूलंसविष्टंभमर्शांसिकृमिजान्गदान् ।
पथ्यतक्रेणयुजीतरसेऽस्मिन्रोगहारिणे ॥

सिगियाविष, सुहागा, गन्धक, हींगलू, जमाल गोटा, ये क्रम से बढ़ती भाग लेवे, पीछे दन्ती के रस मे एक प्रहर घोटे तो त्रिपुर भैरव रस बने, इसको तीन रत्ती सोंठ, मिरच पीपल के चूर्ण मे अथवा मिश्री के संग अथवा अदरक के

रस मे देय तो नवीन ज्वर, मन्दाग्नि, मलिनता, छाई रोग, शूल, अफरा, बवासीर, कृमि रोग आदि को नष्ट करे इसमें छाछ का पथ्य देवे।

प्रचण्ड रसः

अमृतपारदगंधमर्द्दयेत्प्रहरद्वय।
सिंदुवाररसैःपश्चाद्भावयेदेकविंशति॥
तिलप्रमाणंचददेन्नवज्वरविनाशनम्।
उद्वेगेमस्तकी तैलंतक्रंचैवतुपाययेत्॥

शुद्ध विष, पारा, गन्धक इनको खरल मे डार दो प्रहर घोटे पीछे निगुंडी के रस की २१ भावना देवे, पीछे इसमे मे तिल के प्रमाण रोगी को देवे तो नवीन ज्वर दूर होवे। यदि रद्द वा दस्त हो तो मस्तकगी का तेल और छाछ पिलावे।

नवज्वररिपु रसः

पात्रंताम्रचयप्रताप्यबहुशोनिर्वाप्यपंचामृते गोमूत्रेऽग्निजलेचतद्विगुणितम्लेच्छेनपिष्टे-नच। लिप्त्वासप्तमृदांशुकैरथपुनःसामुद्रया-मपचेत्। यंत्रेलावणिकेनवज्वररिपुः स्या-द्गुंजयासमितःअत्रआर्द्रकरसानुपान॥

तावे के पत्रों को अग्नि में तपाय पचांमृत (सोंठ, मूसली, गिलोयसतावर और गोखरू) इनके काढ़े में बुझावे, तदनन्तर इसी प्रकार गोमूत्र और चीते के काढे में बुझावे, पीछे तावे के पात्रो से दूना शिंगरफ लेवे, और पीसकर तावे के पत्रो पर लेप कर सराव सपुट मे धर सात कपरोटी करे, पीछे अग्नि मे धर चार प्रहर लावणिक यत्र में आंच देवे तो यह रस बनकर तैयार होवे, एक रत्ती देवे तो नवीन ज्वर दूर होवे, इसको अदरक के रस में खावे।

पर्णखण्डेश्वररसः

समांशयोजयेत्खल्वेरसंगंधंशिलाविषं।
निर्गुंडीस्वरसैर्मर्द्य त्रिरात्रंचाद्रकद्रवैः॥
गुंजैकंभक्षयेत्पूर्णौज्वरहन्तिमहद्द्रुतम्।

पारा गधक, शुद्ध मनसिल, और सिंगि विष, इन सबको बराबर लेवे और खरलमे डाल निर्गुंडी (सम्हालू) के रसमें तीन रात्रि घोटे, पीछे अदरकके रसमे घोटे, तदनतर एक रत्ती पानक रससे खावे तो तत्काल ज्वर दूर करे।

स्वच्छन्दभैरवरसः

ताम्रभस्मंविषंहेम्नःशतधाभावितंरसै.।
गुंजार्धंसंजयेत्सन्निपातंवाभिनवज्वर॥
आर्द्रांबुशर्करासिंधुयुत.स्वच्छन्द्रभैरव। इक्षु-द्राक्षासिताभिर्वादधिपथ्यंरुचौददेत्॥

तावेकी भस्म, सिंगिया विष, सुवर्णकी भस्म, इनमें आद्रकादिरसोंको भावना देय इसमेंसे आधरत्ती खानेको देवे तो सन्निपात और नवीनज्वर दूर होवें। इसको अदरक, मिश्री सैंधा नोन इन में से किसी के साथ देवे ईख का रस, दाख का रस अथवा मिश्री का शरवत, दही ये पथ्य देवे, यह स्वच्छन्द भैरव रस है।

द्वितीयस्वच्छन्दभैरवः

रसंगधसैंधवंचसमभागंविमर्द्दयेत्। लोहे-चलोहदण्डेननिर्गुण्ड्याःस्वरसेनच॥ काष्ठ-नालेनमूषायांवालुकायंत्रपाचितं। पर्णेन-सहदातव्यंरसरक्तिचतुष्ठयम्॥ सर्वज्वर-हरःश्रेष्ठोरसःस्वच्छन्दभैरव.।

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सेंधानोन, ये तीनो वस्तु बरावर लेवे, इनको लोहेके पात्रमें डाल लोहेके मूसरासे निर्गुंडीके रसमें घोटे, पीछे लकडीके नलवासे मूषमें धर वालुका यंत्रमें पचावें, इसको पानके सग ४ रत्ती खानेको देवे तो सर्वज्वर दूर करे-यह स्वच्छन्द भैरव रस है।

रत्नगिरीरसः

सूताभ्रताम्रचूर्णानिगधआर्द्रांशलोहकम्।
लोहार्द्धामृतवैक्रान्तसर्द्दयेद्ध गजद्रवैः॥ पर्प-टीरसवत्पाच्यंचूर्णितभावयेत्पृथक्। शिग्रु-वासकनिर्गुंडीगुडूच्याग्निकभृंगजैः॥ क्षुद्रा-

मुंडीजयंत्याथमुनिब्राम्हयाथनिक्ककै ।
कन्यायाश्चद्रवैर्भाव्यद्वित्रिवारंपृथकपृथक् ॥
ततोलघुपुटेपक्कंस्वांगशीतसमुद्धरेत् । माषो-
न्मन.कणाधान्यःयुक्तश्चाभिनवज्वरे॥ कुर्या-
ज्ज्वरविनिर्मुक्त रोगिणघटिकाद्वयात ।
अयंरत्नागिरिर्नामरसोयोगस्यवाहकः ॥
मुद्गान्नंमुद्गयूषंवासनीरंतक्रभक्तकं । रस-
युक्तंपथ्यमस्मिन्शाकसर्वज्वरोदित ॥

शुद्ध पारा, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, शुद्ध गंधक, सबका आधाभाग लोहभस्म, लोहसे आधी वैक्रातकी भस्म, इन सबको भांगरेके रस में खरल करे। तदनन्तर पर्पटी रसके समान पचाय पीछे चूर्णकर उक्त औषधोंकी न्यारी २ भावना देवे । सहजना, अडूसा, निगुंडी, गिलोय, चीता, भांगरा, कटेरी गोरखमुंडा, अरनी, अगस्तिया, ब्राह्मी, कुटकी और ग्वारपाठा, इनके रसकी पृथक् २ तीन भावना देवे। तदनन्तर लघु पुटमें पक्क करे, जब स्वांग शीतल होजाय तब इसको १ मासे पीपल और धनिये के साथ नवीनज्वर वालेको देवे तो दो घडीमे रोगीको ज्वररहित कर देवे यह रत्नगिरी नाम रस है। पृथक् २ अनुपानोके साथ अनेक रोगो को दूर करता है । पथ्य मूग का यूष अथवा साबित पक्व मूग तथा छाछ और भात भोजनको देवे, तथा पारेमे जो पथ्य लिखे हैं सो देवे, और जो ग कज्वरमे कहे हैं सो खाने को देवे। इस रसमे पारेकी प्रतिनिधि चन्द्रोदय डाले। और चन्द्रोदयके अभावमें शुद्ध पारा लेवे ।

सर्वज्वरे भेदक मंजरीरसः

समांशंमरिचैसार्द्धं तालकटंकणोवलि ।
मत्स्यपित्तंतृतीयांशशर्करामखिलैसमाः ॥
शृंगवेररसेनात्रद्विगुंजतुलितोरसः ।

शुद्ध हरताल, सुहागा, गंधक, और काली मिरच, सब समान भाग लेवे। सबको कूट पीस रोहू मछलीका पित्ता तीसरा भाग डालकर घोटे, पीछे सुखाकर सबकी बराबर मिश्री मिलावे, इस रसको दो रत्ती अदरकके रसमे देवे।

द्विभुजोरसः

म्लेच्छंद्विगुणजैपालप्राग्नद्रोगंनिवारयेत् ।

शिंगरफ और जमालगोटा, दोनो बराबर लेकर दानोको घोटकर रोगीको देवे तो नवीन दूर होवे ।

प्राणेश्वररसः

शुद्ध सूततथागधमृताभ्रंविषसंयुत । समं-
तन्मर्द्दयेत्तालमूलीनीरैस्त्र्यहबुधः ॥ पूरयेत्कू-
पिकान्तेनमुद्रियित्वाथशोषयेत् । सप्तभिर्मृ-
तिकावस्त्रैर्वेष्टयित्वाथशोषयेत् ॥ पुटेत्तत्कुं-
भपात्रेणस्वांगशीतसमुद्धरेत् । गृहीत्वाकूपि-
कामध्यान्मर्द्दयेदिनमेकतः ॥ अजाजीचित्र-
कंहिंगुस्वर्जिकांटंकणंचयत् । गुग्गुलुपंच-
लवणयवक्षारोयवानिका ॥ मरिचंपिप्प-
लीचैवप्रत्येकरसमानतः । एषांकषायेणपुन-
र्भावयेत्सप्तधातवे ॥ नागवल्लीदलयुतःपंच-
गुंजरसेश्वरः । दद्यान्नवज्वरेतीव्रे सोष्णं-
वारिपिबेदनु ॥ प्राणेश्वरोरसोनामसन्नि-
पातंनियच्छति । शीतज्वरेदाहपूर्वेगुल्म-
शूलेत्रिदोषजे ॥ वांछितंभोजनंदद्यात्कुर्य्या-
च्चन्दनलेपनम् । तापोद्रेकस्यशमनवालभाष
णगायनैः ॥ जायतेनात्रसन्देह स्वास्थ्यंच-
भजतेनरः ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, अभ्रकभस्म सिंगिया विष, सबको मूसलीके रसमे तीन दिन खरल करे, पीछे सुखाय काचकी आतिशी शीशीमे भरे, मुखपर मुद्रा कर सात कपरोटी करे, पीछे सुखाय कुंभ पुटकी आंच देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब शीशी फोडकर रस निकाल लेवे। फिर एक दिन खरलमे डाल इन औषधियोमे खरल करे जीरा, चीता, हींग, सज्जी, सुहागा,

गूगल, पाचो नमक जवाखार, अजवायन, मिरच, और पीपल सब पारेके समान पृथक् पृथक् लेवे, इनके काढेकी सात २ भावना देवे तो यह रस बने। इसमेसे २ रत्ती नागरवेल पानके रसमें नवीन ज्वरमे देवे और इसके ऊपर गरम जल पीवे यह प्राणेश्वर रस है सर्व सन्निपातोंको दूर करे, दाह पूर्वक शीत ज्वरमे, गोलामें, शूलमे देवे इसपर जो रोगीकी इच्छा हो सो भोजन देवे, शरीरमे चन्दन लगावें, तापकी वृद्धिमे बालकोसे बोलना और गाना हित है तथा इस औषधिके खानेसे देहमे स्वस्थता होवे।

ज्वरांकुशः

ताम्रंगधरसोपेतंगुंजामरिचपूतना। समीनपित्तंजैपालतुल्यान्येकत्रमर्दयेत्॥ गुंजाचतुष्ठयंचास्यनवज्वरहरःपरः।
ज्वरांकुशः सन्निपातेभैरवेणप्रकाशित.॥

तावे की भस्म, गंधक, पारा, चिरमिठी, मिरच, हरड, रोहू मछली का पित्ता, और जमालगोटा, इन सब को खरल मे डाल घोटे, इसमे से चार रत्ती नवीनज्वर वाले को देवे, और सन्निपात में देवे तो दोनों को दूर करे यह भैरव ने कहा है।

हुताशन रसः

नागरंकर्षमात्रंस्यात्कर्षमात्रचटङ्कणं।
मरिचंचार्द्धकर्षस्यात्तावद्दग्धावराटिका॥१॥
विषकर्षचतुर्थांशसर्वमेकत्रचूर्णयेत्।
रसोहुताशनोनाम्नाखाद्यंगुंजामितज्वरे॥२॥

सोठ टक ४, सुहागा टक ४, मिरच टक ४, कौड़ी की भस्म टक २, सिगिया विष टक १, सब को मिला कर चूर्ण करे यह हुताशन रस एक रत्ती ज्वर वाले को खाना चाहिये।

रोमवेध रसः

शृंगीसर्पविषसूतगंधकंचसमांशकं।
संमर्द्य न्यस्यमृत्पात्रे जलदेशेनिधापयेत्॥१॥
एकत्रिंशद्दिनात्सिद्ध गुंजैकसघृतंतनौ। अभ्यंगान्नाशयेत्सर्वान्नवाश्चविविधज्वरान्॥२॥ रोमवेधइतिख्यातस्ताक्ष्र्य. सर्पगणानिव। धन्वन्तरिविनिर्दिष्टःकौतुकार्थंमहीभुजां॥३॥

सिंगिया विष, सर्प का विष, पारा, गंधक ये सब बराबर लेवे, सब को खरल में डालकर घोटे, पीछे किसी मिट्टी के पात्र मे भर मुख बंद कर जल मे गाड़ देवे, जब इक्कीस दिन बीतें निकाल लेवे, १ रत्ती रस मक्खन मे मिला कर सर्व देह में मालिश करे तो सब प्रकार के अनेक ज्वर नष्ट होवें। यह रोमवेधनाम से विख्यात रसज्वरो को ऐसे है जैसे सर्पो को गरुड। सम्पूर्ण राजाओं के आश्चर्य के निमित्त धन्वतरि भगवान ने कहा है।

सर्वेश्वर रसः

रसाद्द्विगुणितोगंधश्चतुर्भागस्तुटंकणं।
तथाष्टभागोजैपालस्त्रयहंसंमर्द्दयेद्दृढं॥१॥
वल्लोनवज्वरंहन्तिरसःसर्वेश्वराभिध.।
वल्लद्वयंहरीतक्यायुक्तोवातज्वरंतथा॥२॥
द्विवल्लोमल्लखंडेनपीत.क्षौद्रयुतंकफं।
गुंजाजीर्णज्वरंघोरप्रतिलंघितवांस्तथा॥३॥
वल्लस्तुसूतिकारोगेपिप्पलीमधुसंयुतः।
पंचवर्षस्यवालस्ययवमात्रोज्वरंजयेत्॥४॥
गुंजाभिवृद्ध्याविषमान्याचातुर्थकावधि।
मल्लखडेनसंयुक्तोहन्यादोषत्रयतथा॥५॥
यवानीक्रमिशत्रुभ्यावल्लोहन्यात्क्रमीनपि।
एवसर्वगदान्हतिरसोभैरवभाषितः॥६॥

पारा भाग १ गंधक भाग २ सुहागा भाग ४ जमाल गोटा भाग ८ इन सब को तीन दिन खरल करे, पीछे इसमें से एक वल्ल देवे तो नवीनज्वर को नष्ट करे, इस रस को सर्वेश्वर कहते हैं, ६ रत्ती हरड के साथ खाय तो वातज्वर नष्ट होवे। मिश्री और शहद के संग ६ रत्ती खाय तो कफ ज्वर दूर होवे, १ रत्ती जीर्णज्वर,

३ रत्ती पीपल और शहद के साथ खाय तो प्रसूति रोग नष्ट होवे। पाच वर्ष के बालक को एक जवके प्रमाण देवे तो ज्वर जाय, विषमज्वरो रत्ती २ वृद्धि मे देवे तो सतत, अन्येद्यु, तिजारी और चातुर्थिक ज्वर दूर होवे खाड के साथ त्रिदोष दूर करे। अजमायन और वाय विडग के साथ ३ रत्ती कृमिराग को दूर करे है, इस प्रकार यह रस सर्व रोगो को नष्ट करे है। यह श्रीभैरव ने कहा है।

कल्पतरु रसः

शुद्धंशकरशुकमत्तुलितमारारिनारीरजः। एतावत्तावदुमापतिस्फुटगलालंकारवस्तुस्मृतं तावत्येवमन.शिलाचविमलाताचत्तथाटकण शु ठीद्व्यत्तमितंकणाचमरिचदिक्पालस- ख्याक्षक ॥१॥ विषादिवस्तूनिशिलोपरिष्टाद्वि चूर्णयेद्वासिसिशोधयेच्च। ततस्तुखल्वेरसगध कौचचूर्णंचतद्यामयुगविमर्द्य ॥२॥ कल्प तरुर्नामधेयोयथार्थनामारसश्रेष्ठः। वातश्ले ष्मगदानथहरतेमात्रास्यगुंजैका॥ आर्द्रकेण सममेषभक्षितो हन्तिवातकफसम्भवंज्वरं। श्वासकासमुखमेकशीततावन्हिमांद्यमरु- चिचनाशयेत् ॥४॥ नस्येनाश्वेवहरतिशिरो- त्तिकफवातजांमोहमहातमपिचप्रलापत्तवथु ग्रहम्।

पारा, ग धक, विष, मनसिल, सोनामक्खी, सुहागा, ये सब शुद्ध कर प्रत्येक एक एक तोला लेवे। सोठ दो तोला, काली मिरच ८ तोला, पीपल, ८ तोले, इस प्रकार सब को ले प्रथम पारे ग धक की कजली कर पीछे पूर्वोक्त औषध कजली में मिला देव। सब को दो प्रहर खरल करे तो यह कल्पतरु नाम रस बन कर तय्यार होवे। इसको एक रत्ती खाने को देवे तो वात कफ के रोग नष्ट होवे और इसी रस को अदरक के रस में देवे तो वातकफ के ज्वर नाश होवे। श्वास, खासी, मुख से लार बहना, शीत, मदाग्नि और अरुचि इन का नाश करे। और जिसके नस्य लेने से मस्तक पीडा हुई हो उसको दूर करे तथा मस्तक की कफवात की पीडा दूर होवे। मोह प्रलाप (बकवाद) छींक का रुकना इनको दूर करे।

वातज्वरेसामान्यज्वरचिकित्सोक्त। महाज्वराकुश प्रदेयः॥

वातज्वर में सामान्य ज्वर में जो पिछाडी महाज्वराकुश लिख आये हैं उसे देना योग्य है।

हिंगुलेश्वर रसः

तुल्यांशचूर्णयेत्खल्वेपिप्पलीहिंगुलविष। द्विगुंजमधुनादेयवातज्वरनिवृत्तये॥

पीपल, हिगुल, और विष तीनो को खरल कर दो रत्ती सहत के साथ देवे तो वातज्वर दूर होवे।

रविसुन्दर रसः

ससिंधुजंचित्रकबीजशखमरीचयुक्तंविषभा- गयुक्त। दन्तीरसैर्भावनयात्रियुक्तंरसः प्रसिद्धोरविसुन्दरोऽय। वातज्वरार्त्तसक- लामयत्वमंदानलत्वशिरसोगुरुत्व। सर्व- निहत्युग्रतरंविकारंगु जाप्रमाणावटिकाकृ- तावा॥ कुलत्थयूषस्वथवातुकृष्णाशालीकृतं- सण्डपिवेद्धितेन। कोष्टाग्निवृद्धिविदधाति- रूपनिहन्तिवातज्वरवातदोष॥

सेधा नोन, चीता, पारा, शख की भस्म काली मिरच और सिंगिया विष इन सब को दती के रस की तीन भावना देवे तो यह रवि सुन्दर रस बने, वातज्वर और सपूर्ण रोग मन्दाग्नि, मस्तक भारी होना, इन सब घोर विकारो को दूर करे, इसकी मात्रा एक रत्ती की है, कुलथी का यूष या पीपल अथवा चावलो के साथ देवे तो कोठे की अग्नि बढे, रूप बढावै और वातज्वर तथा वात के विकार दूर होवें।

शीतभंजीर रसः

पारदरसकतालतुत्थगन्धयटकण ।
सर्वमेतत्समशुद्धकारवेल्याद्रवैर्दिन ॥१॥
मर्दयेत्तेनकल्केनताम्रपात्रोदरलिपेत ।
अगुलार्धार्धमानेनतपचेत्सिकताव्हये ॥२॥
पचेदावाग्निाचुल्यांताम्रपृष्टंगतोयदा ।
यत्रेयावत्स्फुटत्यव्रीह्यस्तस्यपृष्टतः ३॥
ततः सुशीतलंग्राह्यंताम्रपात्रोदराद्भिषक् ।
शीतभंजीरसोनामचूर्णयेन्मरिचैःसम ॥४॥
माषैकपर्णखडेनभक्षयेन्नाशयेज्ज्वरं ।
त्रिदिनाद्विषमतीव्रंएकद्वित्रिचतुर्थकम् ॥५॥

पारा, खपरिया, हरिताल, लीलाथोथा, गन्धक, और सुहागा, सब शुद्ध किये हुए बराबर लेवे, सब को कूट पीस करेला के रसमे मर्दन करे। पीछे इसको किसी तावे के पात्र के भीतर लेप कर देवे, चौथाई अगुल के अनुमान लेप करे, पीछे उसको वालुका यत्र में रख चूल्हे पर चढ़ाकर लकड़ी की आच से पचावे, और बालू के ऊपर धान रख देवे जब उस वालू मे धान खिल जावे,तब जाने कि रससिद्धि हो गश पीछे स्वाग शीतल होने पर तावे के पात्र मे से उस रस को निकाल लेवे, इस शीतभजीर नामक रस को काली मिरच के साथ चूर्ण करे, इसमें से पाच रत्ती पान के साथ खाय तो तिजारी, एकतरा दो दिन का और चातुर्थिकज्वर दूर होवें।

दूसरा शीतभंजीर रसः

सूततालशिलातुल्याःमर्दयेत्कर्कटीरसे ।
ताम्रपात्रेविनिक्षिप्यतत्कल्कंकज्जलीकृत ॥१॥
विपचेद्वालुकायत्रेयथोक्तविधिनाततः ।
दद्यान्मरिचचूर्णेनमाषमात्र भिषग्वरः ॥२॥
प्रपिवेदुष्णतोयेनचुलुकशीतकज्वरे ।
शीतभंजीरसःसोयशीतज्वरनिवारणः ॥

पारा, हरिताल, मनसिल, ये तीनों बराबर लेवे। सब को खरल मे पीसकर ककड़ी के रस मे पीस तांबे के पात्र के भीतर लेप कर देवे। पीछे उसको वालुका यन्त्र मे विधिपूर्वक पकावे, स्वाग शीतल होने पर उतार मिरच के चूर्ण मे एक मासे रोगी को देवे, शीतज्वर वाला इसे खाकर एक चुल्लु गरम जल पीवे, तो शीतज्वर नाश हो।

मृत जीवन रस

कूष्मांडचूर्णतिलजप्रविशुद्धताल । गाढवि
मद्य सुधर्वीसलिलेनतुल्य ॥ सूतेनहिंगुलभुवा
सिकतनाख्ययत्रे । गोलविधायपरिवृत्तकपा
लमध्ये पात्रेशनैर्दिनपतेर्विधायरुध्वा ॥ सं-
वितयोर्गुडसुधाख्यटकाशिवाभिः । वन्हौ-
पचेन्मृदुनिचार्व्रशिर स्थशालि ॥ वैवर्ण्य-
मात्रमवधिप्रविधायधीवान । वल्लंततंगुर-
समिश्रमसुंप्रदद्यात्सर्पिःसिताकणपयोम-
धुचानुपेयं । जेतुंज्वरान्प्रविषमानिहवांत्य-
शात्यै ॥ मौलौसुशीतलजलस्यदद्दीतधारां ।
अथामनामारसराजमौली । सूपामणिन्तं
मृतजीवनाख्यं । सुधारसेनैवरसेनयेन ।
सजीव.स्य.रसहस्रातुराणां ॥

पेठे मे, चूने मे और तिल के खार मे शोधी हरिताल लेवे, उसको करेले के रस में घोटे पीछे इसमे हिंगुलसें पारा निकाल डाल कर घोटे पीछे इसका गोला बनाकर वालुका यन्त्र के बीच में रख बड़े खपरे मे रख देवे, और शीशी का मुख गुड, चूना, खड़िया और मेथी को मिलाकर बंद कर देवे। पीछे उस वालुका यंत्र के मुख पर धान बिखेर देवे, पीछे उस यन्त्र को चूल्हे पर चढ़ाकर अग्नि देवे, जब धान खिल जावें तब उस यन्त्र को उतार लेवे, शीतल कर उसमें से औषधि को युक्ति से निकाल लेवे पीछे इसमे से तीन रत्ती खाने को देवे ऊपर घृत मिश्री, दूध, शहद मिलाकर पीवें तो विषम ज्वर मात्र को दूर करे, इसके खाने वाले मनुष्य के मस्तक पर शीतल जल की धार देवे यह सपूर्ण रसो का

राजा है मृत सजीवनाख्य नाम है यह अमृत के तुल्य है ।

पित्त ज्वरे क्षीरसारोरसः

मृतरसगगनार्क मुण्डतीक्ष्णसताप्य ।
सवलिसममिदंस्यात्पष्टिकावारिपिष्टं ॥
तदनुसलिलः तैर्वासकैर्गोस्तनीभि ।
मृदितमथविदारीवारिणाघस्रमेक ॥१॥
घृतमधुसहितोय निष्कमात्रावटीस्यात् ।
क्षपयतिगदपित्तं पाण्डुरोगक्षयन्च ॥
भ्रममदमुखशोषंदाहतृष्णासमुत्थान् ।
मलयजमिहपेयं चारुपानंसचन्द्रम् ॥

चन्द्रोदय, अभ्रक की की भस्म भस्म, तावे मुण्ड लोह की भस्म, फ़ौलाद की भस्म, सोना-मक्खी की भस्म, और गन्धक सब बराबर लेवे, सब को साठी चावल के पानी से खरल करे। पीछे अडूसा, दाख, विदारी, इनके रस मे खरल करे, पीछे घृत, शहत मिलाय एक एक टककी गोली बनावे, इसके खाने से पित्त के सब विकार दूर होवें । पाडु रोग, खई, भोर, मस्तपन, शोष, दाह, प्यास, इत्यादि रोग नष्ट होवें और इसके ऊपर कपूर चन्दन मिला पानी पीना चाहिये ।

शीतभजीरसोप्यत्रगुंजैकसितयासह ।
पित्तज्वरहरेत्तूर्णंवर्ममुस्तानुपानतः ॥

एक रत्ती शीतभंजीर रस मिश्री के साथ खाय, ऊपर पित्त पापड़ा और मोथा का काढा पीवे तो पित्त ज्वर दूर होवे ।

कफ ज्वराधिकारः

कफकुठार रसः

पारदगन्धकव्योपमृतताम्रं मृतायसं ।
कंटकारीफलद्रावैर्भाव्यंतद्यामयुग्मकं ॥
रोहिण्यास्तुरसेनैवधत्तूरस्वरसेनच ।
गुंजाद्वयपर्णखण्डैर्देयं श्लेष्मज्वरापहं ॥

शुद्ध पारा शुद्ध गन्धक, सोंठ, मिरच, पीपल, ताबे की भस्म, लोहे की भस्म, इन सबको कटेरी के फलों के रस में दो प्रहर खरल करे, पीछे कुटकी के काढे मे और धतूरे के रस मे घोटे, पीछे नागर पान के साथ देवे, तो कफ ज्वर दूर होवे, यह भैषज्य सारामृत सहिता मे लिखा है ।

ताम्र भस्म योगः

मृताताम्रं चमरिचंलवंगंकुंकुमंकणा ।
भार्गीसमांशचूर्णंस्यान्नागवल्लीदलान्वितं ॥
माषैकंसार्द्धमाषंवाकफव्याधिविनाशनम् ।

ताबे की भस्म, मिरच, लोग केशर, पीपर, और भारगी, सब बराबर ले कूट पीस कर धर रक्खे, एक मासे अथवा डेढ़ मासे पान मे रख कर खाय ता कफ व्याधि हो दूर होवे ।

कफकेतुरसोप्यत्रदेयस्यात्श्लेष्मजेज्वरे ॥

इस कफ ज्वर में कफ केतु रस देवे तो कफ ज्वर दूर होवे, सो आगे लिखेंगे ।

सर्वज्वरेनस्यं

शुद्धतुत्थंपलैकंचभावयेज्जालनीरसैः ।
शतविंशतिवारंचम्बिुनीरैस्तथैवचः ॥
शुष्कंनस्यंप्रदातव्यंसर्वज्वरविनाशनम् ।
यस्मिन्नासापुटेदत्ततदर्धांगज्वरापह ॥

शुद्ध तूतिया एक पल को कडवी तुरई के रस के रस मे १०० पुट देवे, पीछे जंभीरी नींबू के रस की २० भावना देवे, फिर सुखाकर रख छोडे, इसका नास लेवे तो तत्क्षण ज्वर दूर होवे । नाक के जिस नथने से नाल लेवे उसी आधे अंग का ज्वर दूर होवे ।

पर्पटी रसः

विमर्दिताभ्यारसगधकाभ्यांनीरेणकुर्य्यादि
हगोलकन्त । भाण्डेनवीनेविनिवेश्यपश्चात्त
द्गोलकस्योपरिताम्रपात्रं ॥१॥ सार्द्धं मुहू
र्त्तं विनिरुध्यधीमानुद्दीपयेद्दीपकृशानुनास्य ।
अधस्ततःसिध्यतिपर्पटीयं नवज्वरान्यकृ-

यह सन्निपातानल रस सन्निपात को दूर करे।

भस्मेश्वरो रसः

भस्मषोडशनिष्कंस्यादारण्योपलसम्भवः।
निष्कत्रयंचमरिचविषंनिष्कंविचूर्णयेत् ॥
रसोभस्मेश्वरोनामवातश्लेष्मामयापहः।

आरने उपलों की भस्म निष्क १६, मिरच टंक १२, सिंगिया विष टंक ४, सब का चूर्ण करे तो यह भस्मेश्वर रस वात कफ के विकारों को दूर करे।

स्वच्छन्द भैरव रसः

रसस्यद्विगुणंगन्धंशुद्धंसंमर्दयेत्क्षणं।
प्रतिलोहसूतसमष्टलोहंमृतंक्षिपेत्॥
ब्राह्मीजयंतीनिगुण्डोविषमुष्टिःपुनर्नवा।
नीलिकागिरिकर्ण्यर्ककृष्णधत्तरभृंगिकं॥
वृषभंकाकमाचीचद्रवैरेतैर्विमर्दयेत्।
मर्दयेत्त्रिदिनंखल्वेततःपित्तैर्विभावयेत्॥
मत्स्यमाहिषमायूरैर्यावत्सिक्तद्रवैरसः।
शताव्हाजीवनीरास्नावाजिगन्धाफणेलता॥
कचूरोनागराचैलासर्पाक्षीसुरसस्त्वचः।
जातवालस्यविष्टाचकणागोक्षुरसंयुतं॥
समैरेभिः कृतांमूषांपूर्वोक्तवेशयेद्रसं।
तैर्निरुध्यततोभांडेमृन्मयेरोधयेत्पुनः॥
स्रावकेणदृढंसंधिर्लेप्याकर्पटमृत्तिकां।
अल्पाग्निनादिनपाच्यरसमादायचूर्णयेत्।
पूर्वोक्तैर्भावयेत्पित्तै रसस्वच्छंदभैरवः।
आर्द्रकस्यरसैर्देयंसन्निपातेत्रिगुंजकं॥
दशमूलेननिगुंड्याःकाथंचानुपाययेत्।
सन्निपातंनिहत्याशुपथ्यसाध्यंयथोदितं॥

शुद्ध पारा लेवे, पारे की दूनी शुद्ध गंधक लेवे, तदनतर सोना, चांदी, रांग, तांबा, सीसा, लोहा, कांसा, और पीतल ये आठ लोह हैं-प्रत्येक की भस्म पारे के बराबर डाले, पीछे ब्राह्मी, अरनी, सम्हालू, कुचला, सांठ, नीली कोयल और आक, काला धतूरा, भांगरा, अडूसा, मकोय, इनके रससे तीन दिन खरल करे। पीछे मछली, भैंसा और मोर इनके पित्त की भावना देवे। पीछे शतावर, जीवनीयगण, रायसना, असगंध, नागरवेल, कचूर, सोंठ, इलायची, सरफोंका, तुलसी की छाल, पीपल, गोखरू, और सद्जाए बालक की विष्टा, सबको बराबर लेवे, कूट पीस कर मूष बनावे। इस मूष में पूर्वोक्त घुटे हुएपारे को रख, पीछे इन्ही ओषधियों से मुख बदकर मिट्टी के बरतन में रखे, उसका मुख सरवासे बन्द करे और संधियों को बन्द कर कपर मिट्टी करे, पीछे चूल्हे पर चढ़ाकर मंदमंद आंच से एक दिन पचावे, पीछे उतार मूषा में से रस निकाल कर पूर्वोक्त मछली, भैंसा और मोर के पित्तों में घोटे तो स्वच्छन्द भैरव रस बने, इसको तीन रत्ती अदरक के रस में सन्निपात वाले को देवे। इसके ऊपर दशमूल और निर्गुंडी का काढा पिलावे और पथ्य से रहै तो सन्निपात दूर होवे।

संधिकारी रसः

शुद्धंसूतंद्विधागंधंमारितंचाभ्रकंसमं।
त्रिक्षारंजीरकंव्योषंत्रिफलालवणैःसमं॥
चित्रकस्यकषायेणदिनैकंमर्दयेद्दृढं।
पंचगुंजमिदंखादेत्संधिकारीरसःस्मृतः॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक दो भाग, अभ्रक की भस्म दो भाग, सज्जीखार, यवाखार, चनाखार, जीरा, सोंठ, मिरच पीपल, हरड, बहेड़ा, आंवला, और नोन ये सब बराबर लेवे। सब को चीते के काढ़े में एक दिन खरल करे तो यह संधिकारी रस बने, ५ रत्ती रोगी को देवे तो संधिक सन्निपात दूर होवे।

मृतसंजीवन रसः

शुद्धसूतंद्विधागन्धंखल्वेनकृतकज्जलीं।
अभ्रलोहद्वयोर्भस्मताम्रभस्मसमंसमं॥

त्रिपतालककंकुष्ठशिलाहिंगुलचित्रकं ।
हस्तिशुंडीसातिविषाऽन्त्यूषणहेममाद्विकं ॥
भृंगीकुम्भीमेघनादंप्रतिचूर्णरसांशक ।
त्रिदिनमर्दयेत्खल्वेद्रवैराद्रंकसम्भवैः ॥
निगुंडीविजयाद्रावैस्त्रिदिनमर्दयेत्पुनः ।
जम्बीरस्यचचांगेयोद्रवैःसमर्दयेद्दिनं ॥
काचकुप्यांनिवेश्याथवालुकायन्त्रगपचेत् ।
द्वियामांतेसमुघृत्यमर्दयेच्चार्द्रकद्रवैः ॥
दिनेकंशोषितंचूर्णंत्रिगुंजंसन्निपातजित् ।
मृतसंजीवनोनामरसोयशंकरोदितः ॥
मृतोपिसन्निपातेनजीवत्येवनसशयः ।
सक्षीरदापयेत्पथ्यदेयचानंदभैरवः ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग, इन दोनो की कजलो करे अभ्रक की भस्म, लोह भस्म और तांबे की भस्म प्रत्येक गंधक को बराबर लेवे सिंगिया विष, हरताल, मुरदारसग, मनसिल, हींगलू, चित्रक, इन्द्रायण, अतीस, सोंठ, मिरच, पोपल, सोना मक्खी, भाग, निसोत, चौलाई, ये प्रत्येक पारे की बराबर ले, खरल में डाल तीन दिन अदरक के रस में घोटे, तदनंतर निगुंडी और भागरे के रस मे तीन दिन घोटे, पीछे जंभीरी निबू और चूका के रस में ३ दिन खरल करै, पीछे काच की आतिशी शीशी में भर दो प्रहर पचावे,तदनन्तर शीशी से निकाल अदरक के रस में एक दिन घोटे पीछे सुखा कर रख छोड़े, तीन रत्ती रोगी को दे तो सन्निपात ज्वर दूर होवे यह श्रीशंकर का कहा मृतसंजीवन रस है, सन्निपात के मरे हुए को भी जिलाता है इसके ऊपर दूध का पथ्य देवे और आनन्दभैरव रस देवे ।

भैरवी गुटिका

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंमर्दयेद्भिक्षुकद्रवैः ।
दिनंभाव्यंचमध्यंचशोषयित्वातुभृंगिजैः ॥
चतुर्धाभावयेद्द्रावैस्तिलपर्ण्याद्रवैश्चतत् ।
भावनाभिश्चशोष्याथचूर्णयेद्वस्त्रगालित ॥
चूर्णतुल्यमृतताम्र ताम्रादष्टांशकंविषं ।
कृष्णासिताविडंगानिकृष्णजीराशनंबला ॥
ताम्राद्धंप्रतिचूर्णंस्यात्सर्वमेकत्रकारयेत् ।
याममेकंभृंगिजैर्द्रावैर्मर्दयेत्कल्कतांगतं ॥
स्निग्धभांडगतपाच्यपिंडयावत्कृशाग्निना ।
चणकाभावटीयोज्याचित्रकार्द्रकसैंधवैः ॥
सम्यक्त्रिदोषजंहन्तिसन्निपातंसुदारुणं ।
भैरवीगुटिकाख्यातादध्यन्नंपथ्यमाचरेत् ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गधक २ भाग, इन को गोरख मुंडी के रस मे एक दिन भावना देवे, और एक दिन मर्दन करे, पीछे सुखा कर भागरे के रस की चार भावना देवे, पीछे हुलहुल के रस की भावना देकर सुखा लेवे फिर पीस कपडछन कर तदनन्तर चूर्ण के तुल्य तांबे की भस्म, तावे का आठवां हिस्सा सिंगिया विष, पीपल, मिश्री, वायबिडंग, काला जीरा,खैरसार, बला (गुलसकरी) ये सब प्रत्येक तांबे की भस्म की आधी २ लेवे । सब का चूर्ण कर पूर्वोक्त औषधी मिलाय एक प्रहर भागरे के रस मे खरल करे, पीछे सुखा चिकने बरतन मे भर मदाग्नि से पचावे जब पिंड के समान गाढा हो जाय तब चने के समान गोलिया बनावे, इनको चित्रक, अदरक, सैंधा निमक के साथ देवे तो घोर सन्निपात को दूर करे इसको भैरवी गुटिका कहते हैं, इस पर दही भात का पथ्य देवे ।

त्रिगुणाख्योरसः

शुद्धंसूतंसमगन्धंसूतांशंमृतताम्रकं ।
त्रिभिस्तुल्यगवांक्षीरैःमर्दयेदातपेदृढं ॥
निगुंड्याथद्रवैर्मर्द्यं दिनैकन्तंचगोलक ।
त्रियामवालुकायंत्रेह्यंधमूषागतंपचेत् ॥ १
आदायचूर्णयेत्खल्वेह्यष्टमाशविषक्षिपेत् ।
त्रिगुणाख्योरसोनामदेयोगुंजाद्वयंद्वय ॥
पचकोलपिवेच्चानुपथ्यंछागपयेनच ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, तावे की भस्म,

सब समान लेवे। सबके बराबर गौ का दूध लेवे, फिर औषधि डाल धूप में खरल करे, पीछे निगुंडी के रस में एक दिन खरल करे, पीछे उसका गोला बनाकर अंधमूषा मे रख कर बालुकायन्त्र में तीन प्रहर पचावे, पीछे निकाल खरल मे डाल चूर्ण करे। इसका आठवा हिस्सा सिंगियाविष डाले, तो यह त्रिगुणाख्यरस तय्यार होवे, इसकी मात्रा दो रत्ती की है, इसको खाकर पीछे पचकोलका काढ़ा पीवे इस पर बकरी का दूध पीना पथ्य है।

सन्निपातगजांकुशः

मृतंसूतमृतंचाभ्रं शुद्धतालकमाक्षिकैः।
हिंगुलंतुल्यतुल्यंस्यात्मर्दयेत्खल्वकेद्रवैः॥
वंध्यापटोलनिगुंडीसुगंधानिम्बचित्रकैः।
धत्तूरलांगलीपाटाभृंगीजंबीरजद्रवैः॥
त्रिदिनंमर्दयेदेभिश्चूर्णंकृत्वाविमिश्रयेत्।
त्रिक्षारंसैंधवंव्योषंविषंमधुकसारकं॥
तुल्यतुल्यंविचूर्ण्याथपूर्वोक्तंच रसंसम।
एकीकृत्यभवेत्सिद्धं सन्निपातगजांकुशम्॥
सन्निपातनिहंत्याशुमाषमात्रप्रयोजयेत्।

चन्द्रोदय, मरी अभ्रक, शुद्ध हरताल, शुद्ध सोनामक्खी, हींगलू, ये सब बराबर लेवे। पीछे बाझककोड़ा, पटोल पत्र, निंगुंडी, सुगंध वाला, नीम, चीता, धतूरा, कलयारी, पाढ़, भागरा, और जभीरी इनके रस में पृथक् २ तीन दिन घोटे। पीछे चूर्ण कर ये चीज और मिलावे। सज्जीखार, जवाखार, चनाखार, सेंधा नमक, सोंठ, मिरच, पीपल, सिंगियाविष, मुलेटी का सत, सब बराबर ले पूर्वोक्त औषधियों को मिला देवे तो सन्निपात गजांकुश रस बने, मात्रा एक उड़द की बराबर देने से सन्निपात दूर होवे।

प्राणेश्वररसः

रसगन्धसमशुद्धं मृताभ्र रससम्मित।
दिनैकंतालमूल्याश्चवराहीरसमर्दित॥
मुशल्यावाद्रवैर्मर्द्य यथालाभंदिनततः।
निरुध्यकाचकुप्यातवालुकायत्रगपचेत्॥
दिनंवाभूधरेपच्यात्समादायविचूर्णयेत्।
त्रिक्षारपंचलवणंत्रिफलाव्योपचित्रकैः।
सजीरकैःसेन्द्रयवैःहिंगुगुग्गुलदीप्यकैः।
सर्वैःसमैःपूर्वसमंचूर्णीकृत्यविचूर्णयेत्।
माषमात्रंप्रदातव्यंकिंचिदुष्णोदकपिबेत्॥
सन्निपातानलंभ्रंशग्रहणींसज्वरांप्रशुत।
कुर्य्यात्प्राणपरित्राणंमतःप्राणेश्वरोरसः॥

पारा गंधक समान भाग ले, और पारे के समान अभ्रक की भस्म लेवे, एक दिन मूसली के ही रस मे घोटे, तथा वराही कंद के रस में घोटे, अथवा मुसली के ही रस मे जितने दिन हो सके घोटे, पीछे सुखा कर काच की शीशी में भरे और वालुकायन्त्र मे पचावे, अथवा एक दिन भूधर यन्त्र में पचावे पीछे शीशी से निकाल खरल में डाल चूर्ण करे, तदनन्तर तीनों खार पांचों नोन, त्रिफला, त्रिकुटा, चीता, जीरा, इन्द्रजौ, हींग, गूगल और अजवायन, प्रत्येक पारे के समान ले चूर्ण कर पूर्वोक्त रस में मिला देवे। मात्रा इसकी एक उडद के बराबर गरम जल के साथ देवे तो सन्निपात, संग्रहणी, ज्वर इनको दूर करे। यह रस प्राणों की रक्षा करता है इसी से इसको प्राणेश्वर रस कहते हैं।

सर्वांगसुन्दर रसः

मृद्वग्निनाद्रुतेगन्धेचत्वारिपलसम्मितं।
सूताभ्रमृतमेकैकक्षिप्त्वागधेऽवतारयेत्॥
मागधीमरिचहिंगूदीप्यजीरकचित्रकैः।
पलैकैकंविषंचूर्णंकृत्वाखल्वेततःक्षिपेत्।
सर्वेषांपंचगुणितमृतताम्रं परिक्षिपेत्।
आर्द्रकैर्मर्दयेद्द्रावैरेरण्डजैश्चवा।
दिनैकंशोषयेत्तं चभाव्यशिग्रुद्रवैर्दिनं॥
सर्पाक्षयावामृताकन्याअर्कभृंगिपुनर्नवैः।
आर्द्रकस्यद्रवैर्भाव्यदिनान्तेतंनिरोधयेत्॥
दिनंवावालुकायंत्रे समादायविचूर्णयेत्।

जातिफलचकपूरकंकोलंमधुमिश्रित ॥
रस्यस्यार्द्धमिदंयोऽयं माषमात्रंचभक्षयेत् ।
अनुपानपिबेच्चास्यक्काथत्रिकटुसभवं ॥
सन्निपातहरःसोयंरसःसर्वांगसुन्दरः ।

चार पल शुद्ध गन्धक को अग्नि पर ताय कर उसमें चन्द्रोदय, अभ्रक की भस्म एक २ पल डाले गन्धक को उतार ले, पीछे पीपर, मिरच, हींग जीरा, अजवायन और विष एक २ पल लेवे सबको खरल में डाल चूर्ण करे और सबसे पांच गुनी तांबे की भस्म डाले पीछे अदरक के रस मे घोटे तथा अंड के रस में घोटे पीछे एक दिन सुखाय सहजने के रस की एक दिन भावना देवे तदनन्तर सरफोंका, गिलोय, घीगुवार, आक, भागरा, और पुनर्नवा (साठ) इनके रस की एक २ दिन भावना देवे और अदरक के रस की भावना देवे, पीछे सायंकाल में सब औषधियों को शीशी में भर कर एक दिन बालुका यन्त्र में पचावे, पीछे शीशी से निकाल लेवे। जायफल, भीमसेनी कपूर, ककोल, शहत, ये सब रस से आधे लेने चाहिए। उड़द के समान खाय ऊपर त्रिकुटा का काढा पीवे तो सन्निपात दूर होवे। यह सर्वांग सुन्दर रस है।

रक्तमारेश्वररसः

शुद्धसूतद्विधागन्धदिनैकंचार्द्रकद्रवैः ।
मर्दयित्वातुतद्गोलगोलाशैस्ताम्रसंपुटे ॥
क्षिप्त्वानिरुध्यतत्सधिंमूपातांचनिरुध्यच ।
रात्रौगजपुटेपाच्यप्रातरादायचूर्णयेत् ।
गुंजैकंनागरैसार्द्धंसघृतसन्निपातनुत् ॥
अनुपानपिबेत्पश्चात्तप्तवारिपलत्रय ।
दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंतृषार्थेशीतलज ॥
कृशांचकुरुतेस्थूलरक्तमारेश्वरोरस ।

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक दो भाग, दोनों को एक दिन अदरक के रस मे खरल करे, पीछे गोला बनावे, गोले के बराबर तांबा लेवे, उस तावे का सपुट बनावे, फिर संपुट मे पारे गन्धक की कजली रख मुख मूंद, संधियों को बद करे, पीछे गजपुट में रख कर फूंक देवे, प्रातःकाल स्वांग शीतल हो जाने पर संपुट को निकाल उसमें से रस लेवे, इस रस को १ रत्ती सोठ और घृत के साथ देवे तो सन्निपात दूर होवे। इसे खाकर ऊपर से दो पल गरम जल पीवे, दही भात भोजन करे, और प्यास में शीतल जल पीवे यह रस कृश मनुष्य को मोटा करे इस रस को मारेश्वर कहते हैं।

सूचिकाभरणोरसः

अहिफेनंमृतताम्रहिंगुलशृंगिकंविषं ।
मत्स्याजगजपित्तेनमाहिषेणविभावित ॥ ४
दातव्यसूचिकाग्रेणशीततोयंपिबेदनु ।
रसंचार्द्रकतोयेनअनुपानप्रकल्पयेत् ॥
शीतांगेस्यसितापयःसहचरेदत्तोपुनर्जीवति
दत्तोयोत्रससूचिकाभरणकः सूच्यग्रमात्रोरस
किंवाद्वादशरंध्रचर्मसुभिषक्शस्त्रेणकृत्वापदं
मध्ये चार्द्रकवारिणाद्रुततरंसज्ञालभेदाशुहि

अफीम, तांबे की भस्म, हिंगुल, सिंगिया-विष, इनको मछली, बकरा, हाथी और भैंसा इनके पित्ते की भावना देवे तो यह रस सिद्ध होय। इसमें मे सुई के अग्रभाग के समान शीतांग सन्निपात वाले को देवे, ऊपर शीतल जल पिलावे, तथा अदरक का रस पिलावे, तथा शीतांग वाले मनुष्य को इस प्रकार देवे उसको कहते हैं कि मिश्री, दूध और पियावांसे का रस इन में मिला-कर देवे तो मरा मनुष्य भी जी उठे, अथवा माथे को छुरी अथवा तलवार आदि से गोद कर उसमें यह सूचिकाभरण रस अदरक के रस मे मिलाकर भर थोडी देर उंगली से रगड़े तो शीघ्र सज्ञा हो जाय।

बृहत्सौभाग्यवटी

सौभाग्यविषहिंगुवन्हित्रिफलाव्योषचजीरद्वय । एलाकुष्ठलवंगगन्धकरसान्जातीफल चाभ्रकं ॥ द्वौक्षारौचायसमुस्तकट्फलंलव-

णत्रयं। एतानिसमभागानिश्लक्ष्णचूर्णंतुकारयेत्॥ अपामार्गस्यनिर्गुण्ड्याभृंगराजस्यच द्रवैः। आर्द्रकस्यरसेनापिनागवल्लीरसेनच॥ भावयेद्भावनासप्तलोहदण्डेनमर्दयेत्। माषद्वयानुमानेनवटिकांकारयेद्बुधः॥ आर्द्रकस्य रसेनापिभक्षयेत्प्रातरेवहि। ज्वरं चाष्टविध हन्तिसशीतंसन्निपातकम्।

सुहागा, विष, हींग, चीता, त्रिफला, त्रिकुटा, दोनों जीरे, इलायची, कूट, लोंग, गन्धक, पारा, जायफल, अभ्रक, सज्जीखार, जवाखार, सार, मोथा, कायफल, सेंधा नमक सचरनमक, साम्हर नमक, ये सब समान भाग लेकर चूर्ण करे, पीछे औंगा, निर्गुंडी, भांगरा, अदरक और नागरबेल के पान प्रत्येक की सात-सात भावना देवे और लोहे के मूसले से घोटता जाय, गोली दो उडद के प्रमाण बनावे। अदरक के रस के साथ प्रातःकाल खिलावे तो आठ प्रकार के ज्वर और शीतांग सन्निपात को दूर करे।

लघुसौभाग्यवटी

सौभग्यंविषजीरपंचलवणंव्योषाभयाधामला। निश्चन्द्राभ्रकशुद्धगन्धकरसैरेकीकृतंभावयेत्॥ निर्गुंडीयुतभृंगराजकवृषापामार्गपत्रोल्लसत्प्रत्येकंस्वरसेनासिद्धवटिकाघ्नंतित्रिदोषामयं॥ १॥ येषांशैत्यमतीवदेहमखिलंस्वेदार्द्रंचार्द्रीकृतं। निद्राघोरतरांसमस्तकरणव्यामोहदुष्टंजयेत्॥ तंद्राश्वासमतीवकासनिचितंमूर्च्छारुचित्तृडज्वरं। येषांवैपरिहृत्यजीवितमसौगृह्णातिमृत्योर्मुखात्॥

सुहागा, विष, जीरा, पांचौ नौन, त्रिकुटा, हरड़ बहेडा, आंवला, शुद्ध अभ्रक की भस्म, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, सब समान लेवे। सबका चूर्ण कर निर्गुंडी, भांगरा, अडूसा औंगा, इन प्रत्येक की भावना देकर गुटिका बनावे, इसके खाने से त्रिदोष दूर होवे, जिन की देह शीत से व्याकुल होय पसीना से गोली होय घोर निद्रा और सम्पूर्ण इन्द्रियों के मोह को दूर करे। तन्द्रा, श्वास, खांसी, मूर्छा, अरुचि, प्यास, ज्वर, इनको दूर करे और जो मौत के मुख मे रोगी जाय पहुंचे उसको भी मौत से बचावे।

सन्निपातांतकः

रसगंधकधुमणितीव्रविषत्रिकटुनिटंकणयुता मुहुः। शिखिसूकराणिमिषपित्तवरैःपरिमर्द्य भावितमथाग्निरसैः॥ १॥ गुटकीकृतंद्विगुणवल्लमितंघनसारजीरककणार्द्ररसैः। अतिशैत्यस्वमोहयुतमर्त्तिचिरञ्जयतिज्वरंतमपि-मृत्युकरम्॥

पारा, गन्धक, तावे की भस्म, अकरकरा, विष, त्रिकुटा, सुहागा, सब बराबर लेकर चूर्ण करे। मोर सूअर और मछली इनके पिते की सात २ भावना देवे पीछे चीते के रस की भावना देवे, पीछे छः रत्ती की गोली बनावे इस गोली को कपूर जीरा, पीपल, और अदरकके रस से खाय तो अत्यन्त शीत और मोह युक्त ज्वर का नाश करे।

आनन्दभैरवीगुटिका

त्रिपंत्रिकटुकंगन्धटंकणंमृतशुल्वकं।
धत्तूरस्यतुबीजानिहिंगुलंनवमंस्मृतं॥
एतानिसमभागानिदिनैकंविजयाद्रवः।
मर्दयेच्चणकाभातुवटिकानन्दभैरवी॥
भक्षयेच्चपिवेच्चानुरविमूलकषायकं।
सव्योषंहन्तिनोचित्रंसन्निपातंसुदारुणम्॥

विष, त्रिकुटा, गन्धक, सुहागा, तावे की भस्म, धतूरे के बीज और हिंगुल ये सब बराबर लेवे। सबको कूट पीस भांगरे के रस की एक दिन भावना देवे, पीछे चने के बराबर गोलियां बनावे, इस गोली को आनन्द भैरवी गुटिका कहते हैं। इसके ऊपर आक का और और अंड का काढा त्रिकुटा मिलाय पीवे तो दारुण सन्निपात दूर होवे।

ब्रह्मवटी

शुद्धं सूतं द्विधा गन्धं रससाम्यं मृतं क्षिपेत् ।
कृष्णाभ्रताम्रलोहश्च मर्द्द्येत्त्र्यूषणद्रवैः ॥
आर्द्रकस्य द्रवैः पश्चात्क्रमाद्भाव्यं दिनं दिनं ।
कृष्णजीरकचुक्रानमजमोदाजयंतिका ॥ ६
यवानितिलपर्णीजब्राह्मीधत्तूरभृङ्गिराट् ।
यवानिचार्द्रिकर्णीचशिग्रोहस्तिकशुंडिका ।
श्वेतापराजितावासाचित्रकानांद्रवैश्चतम् ॥
भावयेद्वटिकाकार्योबदरास्थिसमोपमा ।
योज्येयंयामयामांतेमरिचैरार्द्रकद्रवैः ॥
इयंब्रह्मवटीनामसन्निपातकुलांतकी ।
पथ्यंस्यान्मुद्गयूषेणदिवास्वापंचवर्जयेत् ॥

शुद्ध पारा, १ भाग, शुद्ध गधक दो भाग और पारे के बराबर सिंगिया विष डाले, वज्राभ्रक की भस्म, ताम्र भस्म, और लोह की भस्म, इन सबको त्र्यूषण (सोंठ, मिरच, पीपल) के काढ़े से मर्दन करे। पीछे अदरक के रस में क्रम पूर्वक दिन दिन में भावना देवे। पीछे काला जीरा, चुवुक्कान, अजमोद, अरनी, अजवायन, हुलहुल, ब्राह्मी, धतूरा, भांगरा, सफेद खिरकंद, हथशुंडी, सेतकोयल, अडुसा, चित्रक, इनके रस की भावना देकर बेर की गुठली के समान गोली बनावे यह गोली रोगी को प्रहर-प्रहर पश्चात् देवे। मिरच और अदरक के रस में इसको ब्रह्मवटी कहते हैं। सन्निपात के समूह को कालरूप है। इसके खाने वाला मूंगका यूष पीवे। और दिन को न सोवे।

जलस्नायीरसः

भस्म [1]सूतंसमगन्धंतयोस्तुल्यामनःशिला ।
माक्षिकंपिप्पलीव्योषंप्रत्येकंचशिलासम ॥
चूर्णयेद्भावयेत्पित्तैर्मत्स्यमायूरसम्भवैः ।
सप्तधाभावयेत्शुष्कंदेयंगुंजाद्वयंहितम ॥१॥
तालपर्णीरसंचानुपचकोलमथापिवा ।
जलस्नायीरसोनामहन्तिदोषत्रयोद्भव ॥
जलयोगोहिकर्त्तव्यस्तेनवीर्यंभवेद्रसे ॥

चन्द्रोदय, शुद्ध गन्धक, इन दानों के बराबर मनसिल, सोनामक्खी, पीपल, त्रिकुटा, प्रत्येक मनसिल के बराबर लेनी चाहिये। सबका चुर्ण कर मछली और मोर के पित्ते की सात-सात भावना देवे, पीछे सुखाकर रख छोड़े इसमें से २ रत्ती रस तालपर्णी (मूसली) के रस मे अथवा पचकोल के रस में देवे जब इस रस की गरमी होवे, तब शीतल जल से निहलावे तो यह जलस्नायी रस त्रिदोष को दूर करे इसका नाम जलचूड़ा रस है।

सन्निपातांतकरसः

मृतंसूतंसमगन्धंदरदंशुद्धखर्परं ।
रसस्यद्विगुणौदेयौमृतताम्राम्लवेतसौ ॥
जंबीरोत्थैर्द्रवैर्मद्यंभूधरेपाचयेल्लघु ।
हिंगुत्रिकटुकर्पूरंपंचैतानिसमंसमं ॥
पूर्वस्यैतत्समंचूर्णमार्द्रकस्यद्रवैःसह ।
महाराष्ट्रीचनिर्गुंडीजयन्तीपिप्पलीद्वयं ॥
भृंगराजद्रवैर्भाव्यंप्रत्येकभावनापृथक् ।
दातव्यंतच्चतुर्गुंजमार्द्रकस्यद्रवैःसह ॥
सन्निपातंनिहंत्याशुसन्निपातांतकोरसः ।

चन्द्रोदय, शुद्ध गन्धक, हींगुल, शुद्ध खपरिया ये सब बराबर लेवे। तांबे की भस्म और अमलवेत ये दोनों पारे से दूने २ लेने चाहिये। पीछे इन दोनो को जंभीरी के रस मे खरल करे, तदनन्तर भूधरयन्त्र में रख कर पचावे, पीछे उसमें से निकाल खरल में डाल चूर्ण करे, और ये औषधि और मिलावे। हींग, त्रिकुटा, और कपूर ये पाचो वस्तु पूर्वोक्त, औषधियों के सम मिलावे। पीछे अदरक के रस में घोटे तथा जलपीपल, निर्गुंडी, अरनी, पीपल, गजपीपल, और भागरा प्रत्येक की भावना पृथक् २ देवे इस रस की मात्रा ४ रत्ती की है अदरक के रस में देवे, यह सन्निपातांतक रस सन्निपात को शीघ्र ही दूर करे।

---

१. पाठान्तर ॥ भस्मसूतसमगन्धगन्धपादमनः शिलाविपपिप्पलिमाक्षीकंप्रत्येकचशिलासम मितिपाठोयुक्तःरसोनस्वरस चानुपिवेद्वापचकोलक इति-पाठःशुद्धः

सन्निपातकृतांतकः

शुद्धसूतंसमंगन्धबृहतीकंटकारिका ।
सक्षौद्रैः पेषयेद्यामंसशुष्कंभावयेद्द्रवैः ॥
रक्तशालिनिकावासाभृंगीश्वेतापराजिता ।
रुदंतीविजयाब्राह्मीनिंगुंडीचित्रकद्रवैः ॥
कपिकच्छुकमूलैश्चमरिचैश्चकषायकैः ।
सप्ताहंभावयेदेत्तैर्धूमसारंचनिक्षिपेत् ॥
रसतुल्यंभवेत्तचदिनंपित्तैश्चभावयेत् ।
मत्स्यमाहिषमायूरज्योतिष्मत्याश्चतैलकैः ॥
चणमात्रावटीकुर्याद्भक्षयेत्सन्निपातजित् ।
अभावेसतिपित्तानांविषमुष्टिन्तुषड्गुणं ॥
क्षिपेद्रसस्यतरसिद्धिःसन्निपातकृतांतकः ।
सेव्योदध्योदनपथ्यंघृताभ्यक्तंचकारयेत् ॥
धाराशिरसिदातव्यासर्वांगेशीतलैर्जलैः ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, दोनों बराबर लेवे । कटेरी और ऊंटकटेरी का रस और सहत इनसे दोनों की कजली करे । पीछे सुखाकर लाल चांवलों का पानी, अडुसा, भागरा, कोयल रुद्रवन्ती, भांग, ब्राह्मी, निगुंडी, चित्रक, कौंछ की जड़, इनके रस की तथा मिरच के काढ़े की सात २ भावना देवे । पीछे इनमें धूमसार पारे के समान मिलावे, तदनन्तर मछली, भैंसा, और मोर इनके पित्तों की भावना देवे । पीछे मालकांगनी के तेल की भावना देकर चना के बराबर गोली बनावे इसके खाने से सन्निपात दूर होवे। यदि मछली आदि के पित्ते न मिलें तो पित्तो से छ गुना कुचला डाले तो यह सन्निपात कृतांतक रस सिद्ध होवे । पथ्य दही भात घृत है, जब रस की गरमी होवे तब मस्तक पर शीतल जल की धारा देवे ।

विश्वमूर्त्तिरसः

स्वर्णनागार्कपत्राणागुंजापंचपृथक्पृथक् ।
त्रयाणांत्रिगुणंसूतं सर्वंखल्वेविमर्दयेत् ॥
क्षिप्त्वाजम्बीरमध्येत्तद्दोलायंत्रेदिनत्रयं ।
पाचयेदारनालेनतस्मादुद्धृत्यचूर्णयेत् ॥
ऊर्ध्वाधोगंधकंदत्वातालकंचरसोन्मितं ।
लोहसम्पुटकंरुध्वाभाण्डेक्षिप्त्वाप्रपूरयेत् ॥
लवणैश्चर्णितैरेवत्र्यहंमन्दाग्निनापचेत् ।
आदायचूर्णयेत्श्लक्ष्णंदेयंगुंजाचतुष्टयं ॥
आर्द्रकस्यरसैःसार्द्ध शीघ्रपथ्यनदापयेत् ।
विश्वमूर्त्तिरसोनामसन्निपातज्वरान्तकृत् ॥
अर्कमूलत्वचक्वाथमरिचैमिश्रितंपिवेत् ।
दशमूलकषायंवाअनुपानसुखावहम् ॥

सोने के, शीसा के, तांबे के पत्र पृथक् २ पाच २ रत्ती लेवे, तीनों से तिगुना पारा लेवे, सबको खरल में डाल घोटे, पीछे गभीरी के रस मे डाल दोलायन्त्र में तीन दिन पचावे, पीछे काजी में पचाकर कांजी से निकाल चूर्ण करे, तदनन्तर उस चूर्ण के ऊपर नीचे गन्धक देवे, और पारे के बराबर हरताल लेवे उसको भी उस चूर्ण के ऊपर बुरक दे । पीछे लोहे के सपुट मे बन्द कर किसी बडे पात्र में रख बालू भरकर नीचे अग्नि जलावे । पीछे इसी प्रकार नोन मे घोट कर तीन दिन मन्दाग्नि से पचावे, फिर उस संपुट से निकाल कर बारीक चूर्ण करे, अदरक के रस में चार रत्ती रोगी को देवे, शीघ्र ही पथ्य न देवे यह विश्वमूर्ति रस है, सन्निपात को दूर करता है, इस रस के ऊपर आक की जड का काढ़ा काली मिरच मिलाकर पीवे अथवा दशमूल का काढ़ा पीना चाहिये ।

सिद्धवटी

शुद्धसूतस्तथागन्ध.काकाण्डंसैंधवंसमं ।
सद्योवालस्यविष्टाचद्रवैर्ब्राह्मयाविमर्दयेत् ॥
गुटिकावदराकाराभक्षिताघोरनाशिनी ।
इयसिद्धवटीनामसन्निपातंनियच्छति ॥
पूर्वोक्तेनानुपानेनसन्निपातनियच्छति ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, कौआ के अडे, सैंधा नमक, ये सब बराबर लेवे, तत्काल हुए बालक का मल इन सब को ब्राह्मी के रस में घोटे । पीछे बेर के समान गोलिया बनावे,

यह सिद्धवटी है। सम्पूर्ण सन्निपात को दूर करती है। इसमें अनुपान पूर्वोक्त रस के अनुसार है।

सन्निपातविध्वंसकः

सूतंगन्धंसमशुद्धंतालकमाक्षिकंतथा। मृतंताम्राभ्रकवोलविषंधत्तूरबीजकम्॥ क्षारत्रयंवचाहिंगुपाठाशृंगीपटोलकम्। वंध्यानिम्बत्रयशुंठीकन्दलांगलिजसम॥ सिन्दुवारद्रवैर्मर्द्य सवजम्बीरजैर्द्रवैः। दिनैकवाटिकाकार्य्याचणकाभांचभक्षयेत्॥ अत्युग्रंसन्निपातन्तुसर्वोपद्रवसंयुत। निहन्यादनुपानेनदशमूलार्कजेनवा॥ कषायेणनसन्देहपथ्यंदध्योदनंहितं। रसोविध्वंसकोनामसन्निपातस्यनिश्चितं॥

शुद्ध पारा, गधक समान लेवे, हरताल, सोनामक्खी, ताम्रेकीभस्म, अभ्रककी भस्म, बोल, सिंगियाविष, धतूरेके बीज, तीनोक्षार, बच, हींग, पाद, काकडासिंगी, पटोलपत्र, बांझककोडी, तीनो नींब, (नीव बका यन, चिराता) सोंठ, कलयारी ये सब बराबर लेवे। सबको निर्गुंडी और जभीरीके रसमे पृथक् २ खरल करे। एक दिन पीछे चनाके समान गोलिया बनावे। इसके खाने से घोर सन्निपात उपद्रव सहित दूर होवे, इसके ऊपर दशमूलका काढा पिलावे और दही भात खानेको देवे, यह सन्निपातविध्वंसक रस है अनुपानसे अनेक रोगःदूर करे।

महाविजयपर्पटी.

शुद्धंसूतसमंगन्धंखल्वेकृत्वातुकज्जलीं। लोहपात्रे घृताभ्यक्ते तद्दर्व्याचालन्यपचेत्॥ सूततुल्यंमृतंताम्र ताम्रपादविषंक्षिपेत्। रक्तवर्णंभवेद्यावत्तावमृद्वग्निनापचेत्॥ पातयेत्कदलीपत्रे गोमयासनसंस्थिते। आच्छादतेनपत्रेणऊर्ध्वंदेयचगोमयम्॥ आदायचूर्णितसिद्ध महाविजयपर्पटी। त्रिगुंजभक्षयेदेतासन्निपातनिवृत्तये॥ मधुसारैःपंचकोलैर्लीढस्यादनुलेहयेत्॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, दोनो बराबर लेवे। पीछे इनकी कजलीको कढाई मे घृत सहित डाल नीचे आच देवे करछीसे धीरे-धीरे चलाता जाय, पारेकी बराबर मरा तात्रा, और ताम्रेसे चौथाई विष डाले, जबतक लाल रग न हो तबतक मन्दाग्नि से बचावे। पीछे धरती मे गोबरका चौका लगाकर केलेका पत्ता बिछावे। उसके ऊपर कजलीको डाल देवे, ऊपरसे दूसरे केलेके पत्तेसे ढक गोबरसे ढांक देवे, पीछे इस पर्पटीको निकाल चूर्ण कर लेवे यह महाविजय पर्पटी है, सन्निपात दूर करनेको तीन रत्ती खावे और पंचकोलका काढा इसके ऊपर पीवे।

वारिसागरोरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंचतुर्भागमृताभ्रकं। निर्गुंडीकाकमाचीचधत्तूरार्द्रकचित्रकैः॥ गिरिकर्णीजयन्तीचतिलपर्णीचभृंगजैः। दंडोत्पलशिग्रुदन्तीकदम्वकेशराजकः॥ जयाकृष्णामहाराष्ट्रीएभिर्मर्द्यंक्रमाद्द्रवैः। प्रतियामतुतत्शुष्कंकटुतैलेनलोलयेत्॥ सरावसंपुटेरुध्वावालुकायंत्रगपचेत्। यामैकेनसमुधृत्यचूर्णितंतत्त्रिगुंजक॥ त्र्यूषणपचलवणक्षारत्रीणिद्विजीरक। वचार्द्रकयवानीचसमभागतुचूर्णयेत्॥ अनुपानंचतुर्माषंसन्निपातहरंहितं। माहिषदधिसंयुक्त पथ्यंस्याद्रसवीर्यकृत्॥ साध्यासाध्योक्तव्योरसोयंवारिसागरः॥

शुद्ध पारा १ भाग, गंधक २ भाग, अभ्रक भस्म ४ भाग लेवे। इनको निर्गूंडी, मकोय, धतूरा, अदरक, चित्रक, श्वेत सिरंकट, अरनी, हुलहुल, भागरा, सहजना, दती, कदब, केशर, भाँग, पीपल महाराष्ट्री इनके रस. में मर्दन क्रमसे करे एक १ प्रहर। पीछे सुखाय कडवे तेल से घोटे, तदनन्तर सराव सपुटमे रख वालुकायं-

त्रमे पचावे, एक प्रहर उपरान्त सपुटसे निकाल चूर्ण करे, २ रत्ती यह रस सोंठ, मिरच, पीपल, पाचोंनोन, तीनोंक्षार, दोनों जीरे, बच, अदरक, अजवायन, सब समान लेवे सबको कूट पीस ४ मासे खानेको देवे तो सन्निपात दूर करे इस के ऊपर भैंसका दही खिलावे तो रस-पराक्रमवाला होवे यह रस साध्यासाध्य सन्निपात को दूर करता है यह वारिसागर रस है।

मार्त्तंडरसः

शुद्धसूतसमंगन्धगन्धपादंचटङ्कणं ॥ ताम्रपात्रे क्षिपेत्पिष्ट्वा जयंत्यालोलयेद्द्रवैः ॥ तिलपर्णीतथा जातीपिप्पलीमूलपत्रकम्। द्रवैरेषान्तुसप्ताहंशोष्यंचभावयेत् ॥ ताम्रपात्रात्समुद्धृत्यकृत्वागोलंतुशोषयेत्। वस्त्रे बध्वामृदालेप्याभूधरेस्वेदयेत्पुटेत् ॥ द्वियामान्तेसमुद्धृत्यचूर्णयेदौषधैसहः। विपकपूरजातीनांरालंचास्यदशांशतः ॥ भावयेद्विजयाद्रावैःदिनमेकंचमर्दयेत्। गुंजाचतुःसकपूरंमधुनासन्निपातजित् ॥ मार्त्तण्डोयंरसोनामअसाध्यंसाधयेत्ध्रुवं। दशमूलंपिवेच्चानुपथ्यंचमुद्गयूषकं ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, बराबर लेवे गंधक से चौथाई सुहागा, इन सबको तांबेके पात्रमें डाल जयतीके रसमें घोटे, पीछे हुरहुर, तथा चमेली, पीपलामूल और पत्रज इनके रसमें सात दिन सुखावे और घोटे, पीछे तांबेके पात्र से निकाल गोला बनावे, उस गोलेको सुखाकर कपरमिट्टी करे पीछे उसको भूधरयन्त्र मे दो प्रहर आंचदे तदनन्तर उसमेसे निकालकर सब का चूर्ण करे और उसमे इन औषधियोका चूर्ण मिलावे। विष, कपूर, जायफल, छोटी इलायची, ये पूर्वोक्त रसका दसवा भाग डाले पीछे इसमें भागके रसकी एक दिन भावना देवे इसमे मे ४ रत्ती भीमसेनीकपूर और शहतमें मिलाकर देवे तो सन्निपात दूर होवे, यह मार्तंडरस असाध्यको अच्छाकरे, इसके ऊपर दशमूलका काढा और मूंगका यूष देवे।

पंचवक्ररसः

शुद्धंसूतविषंगन्धंमरिचंटंकणंकणा। मर्दयेत्धूर्त्तजैर्द्रावैर्दिनमेकंचशोषयेत् ॥ पंचवक्ररसोनामद्विगुंजः सन्निपातजित्। अर्कमूलकषायंचसव्योषमनुपाययेत् ॥ पूर्ववद्दापयेत्पथ्यंजलयोगन्तुकारयेत्।

शुद्ध पारा शुद्ध गंधक, शुद्ध विष, काली मिरच, सुहागा, पीपल, इन सबको धतूरेके रसमें १ दिन घोटे सुखावे तो पंचवक्र रस बनाकर तय्यार होवे, दो रत्ती खानेसे सन्निपात नष्ट होवे, त्रिकुटा मिला आकको जडका काढा इसके ऊपर पीवे, मार्तंडरसके सदृश पथ्य देवे और जो इस रसको खावे जब इस इसकी गरमी बढे तब उसपर जलकी धारा गिरावे।

द्वितीयसूचिकाभरणः

हृद्धात्रीदरदंतुल्यंगरलेनसुमर्दितं। मुद्गप्रमाणावटिकानाभिहृत्तालुदेशके ॥ कुशेनचर्मनिभिद्यविघृष्यार्द्रकवारिणा। रसप्रभावमात्रेणनेत्रमुद्घाटयेत्क्षणात् ॥ सावधानोभवत्येवनिश्चैतन्यप्रवर्त्तते। ततःस्त्वेकांसुवटिकांदद्यादार्द्रकवारिणा ॥ सर्वथासुखमाप्नोतिभोजयेद्दधिभक्तकं। सूचिकाभरणोनामरसःपरमदुर्लभः ॥

हृद्धात् (हितवल्ली रूखडी) शिंगरफ दोनों बराबर लेवे, पीछे दोनोंको घोट मूंगके समान गोलियां बनावे-नाभि, हृदय, तालुवा, इनको कुश आदिसे चीरकर अदरकके रसमें पूर्वोक्त गोलीको घिसकर भर देवे तो इस रसके प्रभावसे रोगी तत्क्षण नेत्र खोल देवे सावधान हो जाय। यदि लगानेसे चैतन्यता न हो तो एक गोली अदरक के रसमें पिला देवे तो

सर्वथा सुख होवे । इसके ऊपर दही भात खाय यह सूचिकाभरण रस परम दुर्लभ है ।

सोमपाणिरसः

सूतनिष्कगन्धनिष्कमर्द्दयेच्चित्रकद्रवैः ।
माषैकंमृततीक्ष्णस्यमृतशुल्वचमाक्षिकम् ॥
माषैकचविमिश्रेतपूर्वसूतेथमर्द्दयेत् ।
धत्तूरत्रिफलाकन्यावृद्धदार्व्यार्द्रकद्रवैः
केशभद्रस्यमांडुक्यानिर्गुंड्याभृंगिचित्रकैः ।
वायसीनिंबवातारिशक्राशनद्रवैरपि ॥
प्रतिद्रावपलैकैकदत्त्वाखल्वेविमर्द्दयेत् ॥
रसांशत्र्यूषणाक्षिप्त्वाचणकाभावटिंकुरु ।
चतस्रःसन्निपातार्तेदापयेज्जीरकार्द्रवैः ॥
कषायपचमूलोत्थमनुपानंप्रशस्यते ।
दध्यन्नंदापयेत्पथ्यतृषार्तेशीतलजलं ॥

शुद्धपारा १ निष्क, गधक १ निष्क दोनो को चित्रक के रस मे घोटे, पीछे लोहभस्म १ माशा, तांबे की भस्म १ माशा, सोनामक्खी १ माशा, सब को पारे गंधक की कजली में मिला देवे, पीछे धतूरा, त्रिफला, ग्वारपट्ठा, विधायरा, अदरक भागरा, ब्राह्मी, निगुंडी, भांग, चित्रक, कंजा, नीब अंड, और इन्द्र जौ, सबके रस की पृथक्-पृथक् भावना देवे। एक-एक पल रस डालके घोटे पीछेपारे के बराबर त्र्यूषण (सोठ, मिरच पीपल) डार चना के बराबर गोली बनावे। सन्निपात वाले को अदरक और जीरे के साथ देवे, और इसके ऊपर पंच मूल का काढा देवे, तथा दही भात खाने को देवे प्यास लगे तब शीतल जल पीवे यह सोमपाणिरस सन्निपात को शीघ्र ही दूर करता है।

मृतोत्थापनकोरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धशिलालिविषहिंगुलं ।
मृतकांताभ्रताम्रायस्तालकचसमंसमं ॥
अम्लवेतसजम्बीरचांगेरीणांरसेनच ॥
निर्गुंड्याहस्तिशुंड्याश्चद्रवैर्मर्द्यदिनद्वयं ।
रुध्वातुभूधरेपच्यात्दिनान्तेतंसमुद्धरेत् ॥
चित्रकस्यकषायेणमर्द्येत्प्रहरद्वय ।
माषमात्रप्रदातव्यंहिंगुव्योषार्द्रकद्रवैः ॥
कर्पूरेणानुपानस्यान्मृतोत्थापनकोरसः ।
पीडितःसन्निपातेनगतश्चापियमालयं ॥
तत्क्षणाद्दापयेत्सत्यंपथ्यंक्षीरेणयोजयेत् ।
गुंजाद्वयंप्रदात्तव्योरसोह्यानन्दभैरवः ॥
स्वच्छन्दभैरवोवाथदशमूलैस्तुगुंजकम् ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गधक २ भाग, मनसिल, विष, हीगलू, कांतलोह की भस्म, अभ्रक की भस्म, तांबे की भस्म, सार, हरताल ये सब बराबर लेवे इनको कूट पीस अमलवेत जभीरी, चूका इन के रस की तथा निगुंडी, हथशुंडी, इनके रसमे दो दो दिन खरल करे । पीछे भूधर यन्त्र मे रख कर एक दिन पचावे, पीछे उसमे से उडद के समान हीग, सोठ, मिरच, पीपल और अदरक इनके रस मे देवे और कपूर का अनुपान करावे, तो यह मृत्तोत्थापन रस मरे हुए मनुष्यको भी जिला देवे इस रस को खिला कर तत्क्षण दूध पथ्य देवे और इसके उपर दो रत्ती आनन्दभैरव अथवा स्वच्छन्द भैरव रस दशमूल के के काढे के साथ देवे ।

मृतसंजीवनरसः

नागंसुद्रावितकृत्वाशुद्धसूतंसमंक्षिपेत् ।
सूतात्द्विगुणगन्धचचूर्णीकृत्यशनैःशनैः ॥
निक्षिप्यचालयेद्दंडैःसार्द्रनिर्गुंडिसभवे ॥
नागसूतमृतज्ञात्वाहिमज्वालानिवर्त्तित ॥
चुल्ह्यादुत्तार्ययत्नेनक्षारधवलनाभिज ॥
चूर्णितंसूततुल्यचनिक्षिपेन्मर्दयेत्तथा ॥
दरदंपारदंतुल्यंयोजयेत्सम्प्रदायवित् ॥
यवनेष्टभवंचूर्णंत्ततुल्यंयोज्ययत्नत ॥
विमर्द्यवस्त्रपूतचकृत्वारक्षेत्सुभाजने ॥
गुंजैकंवाद्विगुंजम्वाआर्द्रकस्वरसेनच ॥
जिव्हकेसन्निपातेचप्रकुर्यात्प्रतिसारण ॥

प्रकृतिंचानयेजिव्हांस्तम्भंचापिहनुग्रहं ॥
तथाचपिच्छलास्यचमन्यास्तंभशिरोग्रहं ॥
अर्दितचजयेद्दाशुश्रीमद्गोरक्षशासनात् ।
गुंजामात्रंचदातव्यंबहुदोषेघृतेसति ॥
शुष्कांविचेष्टितांजिव्हांशुकजिव्होपमांस्तथा
प्रकृतिंचानयेत्त्क्षिप्रंनात्रकार्य्याविचारणा ॥
मृतसजीवनोह्येषसंप्रदायक्रमागतः ।
नागादिद्रावणार्थेषुलोहपात्रप्रकल्पयेत् ॥

सीसे को तपा कर उसमें उतना ही पारा डाले, तदनंतर पारे से दूनी गंधक को पीस थोडी-थोडी डालता जाय और लोहे के मूसला से चलाता जाय। जब गंधक पूरी हो जाय तब निगुंडी का रस डाले; जब जाने कि पारे और सीसा में ज्वाला नहीं उठे तब पारा सीसा मरा-जान चूल्हे से उतारले, इसमे सुहागा पारे के बराबर डालकर फिर घोटे, पीछे हींगलू और लहसन ये दोनो पारे के समान पृथक् पृथक् डारे सबको पीस कपडछन कर डाले, इसको किसी शीशी आदि पात्र मे रख, छोडे इसमे से १ रत्ती अथवा २ रत्ती अदरक के रस से जीभ पर लेप करे,तो जीभ को अपने वर्ण पर ले आवे। और बात कफ को दूर करे, गले के रोग, कान के रोग, जिव्हास्तंभ, हनुग्रह, तथा मुख का लिहसा सा रहना, मन्यास्तंभ, मस्तक पीडा, अर्दितवात, इसको शीघ्र दूर करे गोरखनाथ के वचन से । यदि विशेष दोष हो तो १ रत्ती देय तो सूखी जीभ को, बिगडी जीभ को तथा तोता की-सी जीभ को अपनी प्रकृति परले यह मृतसजीवनी रस सम्प्रदाय के क्रम से प्राप्त हुआ है। सीसे आदि क गलाने को लोह पात्र लेवे।

कालाग्निरुद्रोरसः

त्रिक्षारैःपंचलवणैर्दिनैकमर्दयेद्रसं ।
राजिकानागरहिंगुएभिर्मूषाचकारयेत् ॥
मूपातर्मर्दितसूतरुध्वावस्त्रेणवधयेत् ।
सारनालेघटेपाच्यादोलायन्त्रेदिनान्तक ॥
आदायमर्दयेत्खल्वेसूततुल्यैर्द्रवैद्रवैः ॥
निगुंड्याभृंगिधत्तूरैजयन्त्यातिलपर्णिका ॥
मंडूक्याकाकमाच्याचगिरिकर्ण्योर्द्रकद्रवैः ॥
करवीराग्निपाठायारेभिर्मद्य क्रमाद्रसं ॥
मरिचगन्धकंतुल्यंक्षिप्त्वापित्तैर्विभावयेत् ॥
मायूरमत्स्यवाराहछागमाहिषजैरपि ॥
समस्तैरथवाव्यस्तैर्दिनैकंभावयेत्तत ॥
रस कालाग्निरुद्रोयद्विगुंजंभक्षयेदनु ।
शर्करामधुतोयचपाययेत्स्नापयेज्जलैः ॥
दाडिमंइक्षुदंडश्चदध्यन्नंपथ्यमाचरेत् ।
शैत्योपचारैरन्यैश्चसन्निपातंनिवारयेत् ॥
त्र्यूषणपचलवणसतपुष्पानिजीरकं ।
क्षारत्रयंसमांशेनचूर्णमेभिःपलत्रयम् ॥

तीनो क्षार, पाचो नोन, इनमे एक दिन पारे को मर्दन करे। पीछे,राई,सोठ, हींग,इनकी मूष बनाय उसमे पारा धर मुख बद कर कपर मिट्टी करे,पीछे पक्के घडे मे काजी भरके दोला-यंत्र मे औटावै, एक दिन-पीछे उनमे-से निकाल खरल मे डाल इन औषधियो के रस की क्रम से भावना देवे,निगुंडी, भांग,धतूरा,अरनी, हुरहुर, ब्राह्मी, काकमाची सफेद सिरकंद, अदरक, कणेर, चित्रक, और पीछे मिरच, गंधक दोनो बराबर डाल मोर, मछली, सूअर, बकरी, भैं सा इनके पित्तो की न्यारी २ अथवा एकही दिन सबकी भावना देय तो यह कालाग्निरुद्ररस बने। दो रत्ती खाय, ऊपर से मिश्री सहत मिला जल पीवे, और शीतल जल से स्नान करे। वलायती अनार, पौंढे की गंडेरी, दही, भात यह भोजन को देवे तथा और जो शीतल वस्तु होय देवे तो सन्निपात दूर होय । सोंठ, मिरच, पीपल पाचोनोंन, सौंफ, दोनो जीरे, तीनो क्षार, ये सब बराबर लेके चूर्ण करे इसमे से तीन पल चूर्ण रसके ऊपर खाय।

(चक्रिका) टिकिया

रसगन्धंविषचैवधत्तूरंमरिचंतथा ।
शोधितंचतथातालंमाक्षिकचसमांशकम् ॥

दतीक्वाथेनसंभाव्यंगुंजामात्रांतुचक्रिका।
साध्यासाध्यान्निहन्त्याशुसन्निपातांस्त्रयोदश:

पारा, गन्धक, सिंगियाविष, धतूरे के बीज, काली मिरच, तथा शोधी हरताल और सोना मक्खी, सब बराबर ले सब को दन्ती के काढे से खरल कर एक रत्ती के समान टिकिया बनावे तो साध्य असाध्य तेरह प्रकार के सन्निपातो को दूर करे।

द्वितीय चक्रिका

शम्भोकण्ठविभूषणसमरिचतालतथापारदं।
देवीबीजयुतंसुशाधितमिदजैपालबीजोत्तमं॥
दंतीमूलयुतसमार्गाधिफलसर्वसमाशनयेत्।
तत्सर्वंपरिमर्द्यचाद्रकरसै:गुंजाप्रमाणरसम्॥
दद्यात्घोरतरेत्रयोदशविधेदोषेचचक्राव्हय।
तन्द्रादाहसमन्वितेचतृषयासंपीडितेमानवे॥

सिगिया विष, कालीमिरच, हरताल, पारा, गन्धक, शुद्ध जमालगोटा, दन्ती की जड, और पीपल, ये सब समान लेवे सब को कूट पीस अदरक के रसमे खरल कर एक रत्ती की टिकिया बनावे। एक टिकिया अदरक के रस में तेरह सन्निपातों मे देवे तो सब सन्निपात दूर होवे, तन्द्रा, दाह, और तृषा से पीड़ित भी सन्निपात वाला मनुष्य अच्छा होय।

वीरभद्र रस:

शुद्धसूतमृतचाभ्रगन्धकंचपलंपल।
आर्द्रकस्यद्रवै: खल्वेदिनमेकविमर्दयेत्॥
वीरभद्ररसख्यातोमाषेकंसन्निपातजित्।
चित्रकाद्रकसिंधूत्थमनुपेयजलैसह॥
पथ्यक्षीरोदनदेयद्विवारचरसंहितम्।

शुद्ध पारा, अभ्रक की भस्म, और गधक एक-एक पल लेय। इनको अदरक के रस मे एक दिन खरल करे, तो यह वीरभद्र रस बने इसमें से एक उड़द के समान खाय तो सन्निपात दूर होय। इसके ऊपर चित्रक, अदरक और सैधा नोन जल के साथ पीवे तथा दूध भात पथ्य दो बार देय।

ब्रह्मरंध्ररस:

रसाभ्रगंधकंतालंहिंगुलमरिचतथा।
टंकणसैंधवोपेतंसर्वांशममृततथा॥
सर्वपादसमोपेतर्माहिषीपित्तमर्दितं।
ब्रह्मरंध्रेप्रयोक्तव्यंसंन्यासेज्ञानसंगमे॥
सहस्रकलशै:स्नानलेपनंचन्दनादिभि:।
इक्षुमुद्ररसंभोज्यंतक्रभक्तंयथेप्सितम्॥

पारा, अभ्रक, गन्धक, हरिताल, हिंगलु मिरच, सुहागा और सैंधा नोन सब समान लेवे और सब के समान विष लेवे। और सब औषधियो का चतुर्थांश भैसे का पित्ता डालकर अदरकके रससे घोटेपीछे इस रस को संन्यासकी अज्ञान अवस्था में मस्तक को छूरी आदि से चीर कर भर देवे, जब रस की गरमी होय तब हजार घड़ेशीतल जल से निहलावे,चन्दन आदि शीतल बस्तुओं का लेप करे, ईख और मूंग तथा छाछ भात का यथेच्छ भोजन कराना चाहिये।

अग्निकुमार रस:

दशनिष्कंशुद्धसूतशुद्धगन्धंचतत्समं।
सार्द्धनिष्कविषचैवहंसपद्याद्रवैर्दिनं॥
हस्तिशुद्ध्याद्रवैर्वाथमर्दितंवटिकांकुरु।
काचकुप्यानिवेश्याथमृदासलेपयेद्बहि॥
शुष्कांसावालुकायत्रे क्रमवृद्ध्यग्निनापचेत्।
षट्यामातेसमुधृत्यसार्द्धनिष्कविषेणच॥
सहसचूर्णयेत्श्लक्ष्णरसोह्यग्निकुमारक:।
गुंजैकंपर्णखण्डेनदातव्य:सन्निपातजित्॥
कासश्वासक्षयंपाडुमन्दाग्निचविनाशयेत्।

शुद्ध पारा निष्क १०, शुद्ध गधक निष्क १०, सिंगियाविष निष्क १॥, सब को हंसपदी के रस मे एक दिन खरल करे। अथवा हथ शुण्डी के रस में मर्दन कर गुटिका करे। पीछे आतिशी शीशी में भर कपर मिट्टी कर सुखावे जब सूख

जाय तब वालुका यन्त्र मे क्रम से मन्द, मध्य, तेज छ. प्रहर आंच देवे । पीछे शीशी मे से निकाल डेढ निष्क विष मिलावे । चूर्ण करै तो अग्नि-कुमार रस बने, इसमें से एक रत्ती रस पान के संग खाय तो सन्निपात, खासी, श्वास, खई, पांडु रोग, मन्दाग्नि इनको दूर करे ।

अर्केश्वर रसः

मृतसूतंमृतताम्रं मृतवतीक्ष्णचटकणं ।
खर्परंत्रिकटुतालंअर्कक्षीरेणमर्दयेत् ॥
दिनैकेनभवेत्सिद्धंनाम्नाह्यर्केश्वरोरसः ।
अर्कक्षीरेणवैनस्यसन्निपातहरपरं ॥

चन्द्रोदय, तावे की भस्म, सार, सुहागा, खपरिया, त्रिकुटा, हरिताल, इनको आक दूध से खरल करे, यह अर्केश्वर रस एक दिन मे सिद्ध होता है । आक के दूध में नस्य देय तो सन्निपात दूर करे ।

कुलवटी

शुद्धसूतमृतंताम्रंमृतनागंमनःशिला ।
तुत्थचतुल्यतुल्यांशदिनमेकंविमर्दयेत् ॥
द्रवैश्चोत्तरवारुण्याचणकाभांवटीकुरु ।
सन्निपातंनिहन्त्याशुनस्यमात्रे सुदारुणं ॥
एषाकुलवटीनामजलेपिष्ट्वाप्रयोजयेत् ।

शुद्ध पारा, तावे की भस्म, नागेश्वर, मनसिल, लीलाथोथा, ये सब बरावर लेवे, एक दिन इन्द्रायण के रस मे घोटे चना के समान गोली बनावे । यह दारुण सन्निपात को नास लेने से दूर करे, इसको जल मे पीसकर नास देना चाहिये ।

उन्मत्त रसः

रसंगन्धंचतुल्यांशंधत्तूरफलजैर्द्रवैः ।
मर्द्दयेद्दिनमेकन्तुतत्तुल्यांत्रिकटुंक्षिपेत् ॥
उन्मत्ताख्योरसोनामनस्येस्यात्सन्निपातजित् ।

पारा, गन्धक दोनो समान लेय धतूरे के फल से एक दिन खरल करे । पीछे इससे गधक पारे के तुल्य सोठ, मिरच, पीपल, मिलावे, यह उन्मत्ताख्यरस नस्य लेने से सन्निपात को दूर करे ।

स्वच्छंदनामक रसः

शुद्धं सूतंद्विधागन्धंसूतांशंमृतहेमकं ।
मृतंरौप्यंचताम्रंचसूततुल्यंपृथकपृथक् ॥
सूर्यावर्त्तस्तुनिर्गुण्ड्यतुलसीचार्द्रकद्रवैः ।
भृंग्योन्मत्ताद्रिकर्णीनामग्निवर्ण्याग्निमंथयोः ॥
तिलपर्णीचित्रकयोकाकमाच्यारसेनच ।
मर्दयेत्रिदिनंखल्वेशुष्कंपित्तैश्चभावयेत् ॥
मत्स्यवाराहमहिषछागमायूरजैर्दिनं ।
अन्धमूषागतंपाच्य वालुकायंत्रगंदिन ॥
आदायचूर्णितखादेत्माषैकंचार्द्रकद्रवैः ।
निर्गुण्ड्यादशमूलैश्चकषायंमरिचैःपिबेत् ॥
अभिन्यासंनिहन्त्याशुरसःस्वच्छन्दनामकः ।
पथ्यस्यान्मुद्गयूषेणजीरेणाज्यंचदापयेत् ॥

अर्थ—शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक दो भाग, सुवर्ण की भस्म, चादी की भस्म, तावे की भस्म ये सब पारे के समान पृथक् २ डाले । भांगरा, निर्गुंडी, तुलसी, अदरक ,भांग, धतूरा सुपर्णी, अग्निवर्णी, अरनी, हुलहुल, चित्रक, मकोय, इनके रससे ३ दिन खरल करे, जब सूख जाय तब मछली, सूअर भैंसा, बकरी, मोर इनके पित्ते की भावना देवे, पीछे अधमूषा संपुट मे धरके एक दिन वालुकायन्त्र मे पचावे पीछे उससे से निकाल चूर्ण कर एक माशे अदरक के रससे खाय, ऊपर निर्गुंडी, दशमूल इनका काढा मिरच मिला कर पीवे यह स्वच्छन्द नाम रस अभिन्यास सन्निपात को दूर करे । मूंग का यूष, जीरा और घृत मिलायके पथ्य देवे ।

जयमंगलरस

मृतसूताभ्रकान्तंचतीक्ष्णंआरंचमुण्डकं ।
तालकंमाक्षिकंव्योषंविषटंकणचित्रकं ॥

समाशमर्द्दयेत्खल्वेपाठानिर्गुंडिबिल्वजैः।
द्रवैर्यष्ट्यादिकैर्वाथरुध्वापाच्यंतुभूधरे॥
पुटेकेनभवेत्सिद्धि रसोऽयंजयमंगलः।
दशमूलकषायेणमाषैकंसन्निपातजित्॥

अर्थ—चन्द्रोदय, अभ्रक की भस्म, कान्त-लोह की भस्म, फौलादकी भस्म, आरलोह की भस्म, मुंडलोह की भस्म, हरताल, सोनामक्खी, त्रिकुटा, विष, सुहागा, चित्रक, सब बराबर लेय खरल में पीस पाठ, निर्गुंडी, बेल, मुलहठी, इनके रस में खरल करके सुखावे। पीछे अन्धमूषा में धर बालुकायंत्र में एक पुट देवे तो यह जयमंगलरस सिद्ध होय। दशमूल के काढे से एक माशे खाय तो सन्निपातको नष्ट करे।

सन्निपातभैरवरसः

हिंगुलस्यविशुद्धस्यसार्द्धं तोलचतुष्टयं।
गंधकस्यविषस्यापिप्रत्येकंतोलकद्वयम्॥
समाषकंद्वयंचैवकनकोतोलकत्रय।
माषैकाधिकतोलैकंटंकणस्यतथैवच॥
समर्द्यंजंबीररसै वटिच्छायाविशोषिता।
गुंजैकपरिमाणस्तुकारयेत्कुशलोभिषक्॥
एकान्तुभक्षयेत्तस्यगालयित्वाद्रकद्रवै.।
घोरेत्रिदोषेदातव्य.सन्निपातकभैरव॥

शुद्ध हिंगुल ४॥ तोले, गंधक २ तोले, विष दो तोले-दो माशे, धतूरे के बीज ३ तोले, सुहागा १ तोला १ माशे सबको जंबीरी नींबू के रस में खरल करे, गोली एक रत्ती की बनावे उसको छाया में सुखाय धर रक्खे इनमें से १ गोली अदरक के रस में घोल के देवे यह सन्निपात का नाशक सन्निपात भैरव है।

सूचिकाभरणरसः

रसगंधकनागंचविषस्थावरजंगमं।
मत्स्यमायूरवाराहछागपित्तैश्चभावयेत्॥
सूचिकाभरणोनामभैरवेणप्रकाशितः।
सूचिकाग्रेणदातव्यः सन्निपातकुलान्तकः॥
श्रृंगवेरांबुनाचास्यमात्रांसम्यक्दिवेल्लघु।

पारा, गंधक, सीसा, स्थावरविष (काष्टविष हलाहल ब्रह्मपुत्रादि) जंगम विष (सर्प आदि का) ये सब बराबर लेवे सबको खरल कर मछली, सूअर, मोर, और बकरी इनके पित्ते की भावना देवे यह सूचिकाभरण रस भैरव ने प्रकाश किया है, सुई के अग्र भाग मे जितना लगे उतना रोगी को अदरक के रस मे देवे तो सन्निपात को दूर करे।

सूचिकाभरण

अमृतंगरलंदारुंसर्वतुल्यंचहिंगुलं।
पंचपित्तेन संमर्द्यसर्षपाभावटींचरेत्॥
वटिकासूचिकाग्रेणसन्निपातकुलांतकृत्।
तिलंचतिलतैलंचभोजनंदधिभक्तकम्॥
सहस्रशोदृष्टफलेयंवटिका।

काष्टविष, सर्प विष, और छिलहिटा प्रत्येक एक २ भाग। हींगलू तीन भाग सब को मछली मोर, भैंसा बकरी और सूअर इन पाँच पित्तों की भावना देवे। पीछे इसकी सरसोंके बराबर गोली बनावे, यह सूचिकाभरणवटिका सन्निपातो के समूहको नष्ट करती है इसको सेवन करने वाले रोगी की देह में तिल-तैलादिका मर्दन करना, तथा दही भात का भोजन पथ्य है।

बृहत्सूचिकाभरणरसः

रसगंधकनागाभ्रंविषंस्थावरजंगमं।
मत्स्यमाहिषमायूरछागपित्तैर्विभावयेत्)
सूचिकाभरणोनामभैरवेणप्रकाशितः।
दातव्यंसूचिकाग्रेणपयःपेटीजलेनच॥
त्रयोदशेसन्निपातेविशूच्यामतिसारके।
त्रिदोषजेतथाकाशेदापयेत्कुशलोभिषक्॥
पयः पेटिशतद्द्यात्भोजनंदधिभक्तकं।
तथासुभर्ज्जितमासंलेपनंतिलचंदनैः॥
रोगिणोयत्प्रियंद्रव्यंतस्मैतच्चप्रदापयेत्॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सिंगियाविष, सर्प विष, इन सबको खरल कर मछली, भैंसा मोर

और बकरी इनके पित्तों की भावना पृथक् २ देवे तो यह भैरव का कहा हुआ सूचिकाभरण रस तैयार होवे। इस को सूई के नोक से उठा कर नारियल के जल के साथ देवे तो तेरह प्रकार के सन्निपात, विशूचिका, अतिसार, त्रिदोषजनित खांसी इन सबको दूर करे। इसमें सौ नारियल के गोलों का जल पिलावे। और दही भात भोजन को देवे तथा भुना मास, तैल मर्दन और चन्दन लगावे। रोगी को जो वस्तु प्रिय लगे वो वैद्य को देना चाहिये।

विजयभैरवरस:

पारदंगन्धकतुल्यसैंधवविषमुष्टिकं ।
कटुतुम्बीलसुनकोवचागुंजाकरंजकम् ॥
कुष्ठंसमरिचपिष्ट्वाधत्तूरजलजैरसैः ।
तदौषधेनवर्त्तिस्तुतिलतैलंप्रसाधयेत् ॥
पातालयन्त्रवद्धृत्यातैलंविजयभैरव ।
सन्निपातापहंप्रोक्तं महावातप्रणाशनम् ॥

शुद्ध पारा, गंधक दोनो बराबर लेय, सैंधा नोंन, कुचला, कडवी तूंबी, लहसन, वच, चिरमिठी, कजा, कूठ, और मिरच इन सबको धतूरे के रस मे पीस एक कपडे पर लपेट बत्ती बनावे। उसमे तिलका तेल सिद्ध करे अथवा इन औषधियोंका पाताल यन्त्र से तेल निकाले, यह विजय भैरव तेल है यह सन्निपात घोर वात को दूर करता है।

त्रिनेत्ररस:

शुद्धं सूतंसमंगन्धंसूतांशंमृतताम्रकं ।
त्रिभिस्तुल्यैःगवांक्षीरैर्मर्दयेदासपेखरे ॥
मर्दयेद्दिनमेकंतुनिर्गुण्डीशिग्रुजद्रवैः ।
विधायगोलन्तगोलमधमूषागतंपचेत् ॥
त्रियामंवालुकायंत्रे तत.खल्वेविमर्दयेत् ।
अष्टमांशंविषंतत्रनिक्षिपेत्तेनमर्दयेत् ॥ त्रिनेत्राख्योरसोह्येषदेयोगुंजाद्वयोन्मित । पंचकोलकषायेणछागीदुग्धेनवासह ॥ रसेमानेनभुक्तेनसन्निपातज्वरोमहान् । संक्षयत्रजतिक्षिप्रकर्त्तव्योनात्रसंशह. ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, बराबर लेय पारे की चतुर्थांश तांबेकी भस्म लेय, तीनो की बराबर गौका दूध लेवे। उसमे पूर्वोक्त औषध धूपमें धरके घोटे। तदनन्तर निर्गुंडी और सहजनेके रसमें तीन दिन घोटे। गोला बनाय उसको अंधमूषमे धर तीन पहर वालूयन्त्रमे पचावे। पीछे उसमें से निकाल खरल में घोटे। इस रसमें अष्टमांश विष डाले तो यह त्रिनेत्ररस बने इसमेंसे २ रत्ती पंचकोलके काढेसे अथवा बकरीके दूधके साथ देय इस रसके खानेसैं महासन्निपातज्वर दूर होय।

लोकनाथरस:

पंचभिर्लवणै.सूतंत्रिभिःक्षारैस्तथैवच । मर्द्येद्दोषनाशायगुणाधिक्यविधिक्रिया ॥ एवं संशोध्यसूतेन्द्रं राजिकाहिंगुशुंडिभिः । चूर्णितैःपिंडिकांकृत्वातन्मध्येसूतकंक्षिपेत् ॥ ततस्तांस्वेदयेत्पिंडीवस्त्रे बध्वातुपोदकैः । दोलायंत्रगतंयत्नाद्द्वौयामचतुष्टयम् ॥ एव शुद्धं रसंकृत्वाक्रमेणानेनमर्दयेत् । गिरिकर्णीतथाभृंगवारिनिर्गुंडिका तथा ॥ जयन्तीशृंगवेरंचमंडूकीचतिलछटी । काकमाचीतथोन्मत्तरूबूकश्चततःपरं ॥ एतासामौषधीनाचरसतुल्यैरसैःक्रमात् । ततस्तुसूतराजस्यकार्यामरिचमात्रका ॥ वटिकासन्निपातस्यनिवृत्यर्थंभिषग्वरै. । इयंश्रीलोकनाथेनसन्निपातनिवृत्तये ॥ कीर्त्तितावटिकापुण्यादृष्टप्रत्ययकारिका । इमांप्राप्य-वटींयस्मात्सन्निपातन्तुनश्यति ॥ मयूरमीनवाराहछागमाहिषसम्भवै. । प्रत्येकंचाथसवैर्वाभाविताचेदियंभवेत् । ढालयेत्तत्रतोयानिसुशीतानिवहूनिच । शर्करादधिसंयुक्तभक्तमस्मिन्प्रदापयेत् ॥ ईक्षवश्चतथायोज्याःरसवीर्यविवृद्धये । शीतेद्रव्येभवेद्वीर्यंपित्तवद्ध महारसे ॥

पारेका-पाचो नोनमें, तीनों खारोंमें दोष नष्ट करनेके अर्थ और गुणाधिक्य के लिये मर्दन करे। इस प्रकार पारेका शोधन करे, पीछे राई, हींग, और कुकूग्राको पीस उसकी पिंडी बनावे उसमें पारेको धरके उस पिंडीको कपडेमें बाधके तुषोदकके पानीमें दोलायन्त्रकी विधिसे स्वेदन करे। चार प्रहर इस प्रकार पारेको शुद्ध करे। पीछे मर्दन सस्कार करे, कोयल, भाग, निगुंडी, अग्नी, अदरक, ब्राह्मी, हुरहुर, मकोय, धतूरा, अंड इन औषधियोंका रस पारेके तुल्य डाले प्रत्येकके रसमें पृथक् ७ घोटे, पीछे इस पारेकी मिरचके बराबर गोली करे, यह सन्निपात दूर करनेके निमित्त लोकनाथ सिद्धने गोली कही है। इस रसमे मोर, मछली, सूअर, बकरी, भैंसा, इनके पित्तोकी सात २ भावना देय तो अत्यन्त गुणकरे। इसको रोगीको खवाय बहुत से शीतल जलका तर्डा दे, ज्यों २ जल डाले त्यों २ इस रसका गुण बढता है, और दही मिश्री मिलाकर भात भोजन करावे, पौंडा गन्नेका रस पिलावे और जो शीतल वस्तु अनार, अगूर आदि हैं। उनको खिलावे शीतल वस्तु खानेसे गुण होता है।

त्रिदोपहारीरसः

रसबलिशलिलालतालतुत्थोदधिमलटंकनि
कुंभजामृताख्य। विलुलितमहिपित्ततस्त्रि
धास्याद्रुधिरगतस्तुरसस्त्रिदोपहारी ॥

पारा, गंधक, हरिताल, लीलाथोथा, दही, कपूर, सुहागा, जमालगोटा, और विष इन सब को सर्पके पित्तेकी तीन भावना देय तो रुधिर, गत त्रिदोपको दूरकरे।

वेतालरसः

शुद्धंसूतंविपगन्धंमरिचालंसमाक्षिकं।
मर्दयेच्छिलयातावद्यावज्जायेतकज्जली ॥
आर्द्रकस्यरसेनाथकारयेद्वटिकाशुभाः ॥
गुंजामात्रंप्रदातव्यंद्वादशेसन्निपातके।
साध्यासाध्यंनिहंत्याशुसन्निपातत्रिदोपजं ॥
ईशेनकथितःशुद्धोवेतालाख्योमहारसः।
कठेह्यपगतैः प्राणैर्यमदूतान्निवारयेत् ॥

शुद्ध पारा २५, शुद्ध विष २५, शुद्ध गधक, २५, मिरच २५, हरिताल २५, सुवर्णमाक्षिक भस्म २५, इन सब वस्तुओंको एकत्र कर एक प्रहर घोटे। पीछे अदरकके रससे एक प्रहर घोटे। एक रत्तीकी गोली करे, एक गोली अदरकके रससे खाय तो सर्व प्रकारके साध्यासाध्य सन्निपात दूर होवे। यह श्रीशिवजीका कहा वेताल नाम रस हैं कठगत प्राण वाले रोगीको यमदूतोसे बचा देवे

सन्निपातसूर्यरसः

रसेनगन्धंद्विगुणंप्रगृह्यतत्पादभागरवितार-
हेम भस्मीकृतयोजयमर्दयीत दिनत्रयवन्हि-
रसेन घर्मे ॥१॥ विपंचदत्त्वात्रिकलाप्रमाण
मजादिपित्तैःपरिभावयेच्च। वल्लद्वयचास्य
ददीतवन्हिकटुत्रयार्द्रद्रवसम्प्रयुक्तं ॥ २ ॥
तैलेनवाभ्यज्यवपुश्चकुर्यात्स्नानजलेनापि
सुशीतलेन। यावद्भवेदुःसहशीतमस्यमूत्रं
पुरीषचशरीरकम्पः ॥ ३ ॥ पथ्येयदीच्छा
परिजायतेऽस्यमरीचखण्डदधिभक्तकंच ॥
स्वल्पंददीतार्द्रकमस्यशाकं दिनाष्टकस्नान
विधिचकुर्यात् ॥४॥

पारा १ भाग, गधक २ भाग, ताबे की भस्म, चांदीकी भस्म, सोनेकी भस्म, ये प्रत्येक पारेकी चतुर्थांश लेय। सबको खरलमें डाल चीतेके रसमे तीन दिन मर्दन करे, पीछे पारेका सोलहवा भाग विष डाल बकरी, मोर, भैंसा, आदिके पित्तेसे घोटे। इसकी छः रत्तीकी मात्रा है, चीता, त्रिकुटा, अदरक, इनके साथ दे पीछे देहमे तेलकी मालिश करावै, शीतल जलसे स्नान करावै, जबतक दुःसह शीत और मूत्र मल न उतरे। तथा जब तक कप न होय तबतक स्नान करावै। यदि रोगी की पथ्यपर इच्छा होवे तौ कालो मिरच, मिश्री, दही और भात

खिलावै और अदरक का थोडा शाक देवे, आठ दिनतक स्नान करावे।

त्रिदोषनिहारसूर्य:

रसेनगन्धंत्रिगुणंकृशानुरसैर्विमर्द्याष्टदिनानि घर्मे। रसाष्टभागत्वमृतचदत्वाविमर्दयेद्वन्हि जलेनकिंचित् ॥१॥ पित्तैस्तुसंभावितएषदेयस्त्रिदोषनीहारविनाशसूर्य.।

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गधक ३ भाग, दोनो को धूप मे धर चीते के रस से तीन दिन मर्दन करे। पारेका आठवा हिस्सा विष डाल के फिर चीते के रस मे घोटे। पीछे बकरी, भैसा आदिके पित्तोंकी भावना देय तो यह त्रिदोष रूप कोहल के नाश को सूर्यरूप रस बने।

चिन्तामणिरस:

सूतगन्धकमभ्रकंसमलवसूतार्धभागविषं ॥
तत्र्यशजयपालमम्लमृदितंतद्गोलकंवेष्टित।
पत्रैर्मंजुभुजगवल्लिजनितैर्निक्षिप्यखातेपुट ॥
दत्वाकुक्कुटसंज्ञिकसहदलैःसंचूर्ण्यतत्रक्षिपेत्।
भागार्द्धं जयपालबीजममृततत्तुल्यमेकीकृत॥
गुजानागरसिंधुचित्रकयुतासर्वज्वरान्नाशयेत्
शूलंचग्रहणीगदसजठरध्ध्यम्लससेविना ॥
तापेसेचनकारिणांगदवतासूतस्यचिन्तामणे
अयमेवरसोदेयोमृतकल्पेगदान्तरे ॥
सन्निपातेतथावातेत्रिदोषेविषमज्वरे ॥३॥
अग्निमान्द्ये ग्रहण्याचशूलेवातिसृतोपुन.।
शोथेदुर्नाम्निच।ध्मानेवातेसामेनवज्वरे॥

पारा, गंधक, अभ्रक भस्म, सब बराबर ले पारेसे आधा विष और पारे का तीसरा भाग जमालगोटा इन सबको खटाई में घोट गोला बनाय नागरवेलि के पत्तो से लपेटे। पीछे गढेला खोद कुक्कुटपुट की आच देय। पीछे पत्तों समेत चूर्ण कर इसमे विष का आधा भाग जमालगोटा, और जमालगोटे की बराबर विष डाले पीछे इसमें से एक रत्ती सोंठ, सैंधानोंन, चीता, इनके सग खाय तो सर्वज्वर, शूल सग्रहणी, उदर रोग, दूर होय। इसपै दही-खटाई खानी चाहिये। बहुत गरमी मालूम होय तो शीतल जल का मस्तक पर तर्डा दिलावे। यह मृत तुल्य रोगों में रस देना चाहिये, सन्निपात और वात तथा विषमज्वर मे मन्दाग्नि, सग्रहणी, शूल, सूजन, बवासीर, अफरा, आम सहित नवीन ज्वर दूर होय।

अग्निकुमार रस:

द्वौकर्षौगन्धकस्याथसूतकस्यतथैव च।
यत्नतस्तूभयमद्यहसपादीरसैर्दिन ॥
कल्कस्यवटिकाकृत्वानिक्षिपेत्काचभाजने।
कर्षैकममृतंतत्रक्षिप्त्वावक्रं निरोधयेत् ॥
कूपिकायाःपरौभागौवालुकाभिश्चपूरयेत्।
अहोरात्रिर्भवेत्सार्द्धं तावत्तत्रपचेद्रसं ॥
दीपमात्रं समारभ्यपावकवर्द्धयेच्छनै.।
स्वागशीतलतांज्ञात्वासमाकृष्यरसततः ॥
तोलार्द्धं ममृतदत्वातोलार्द्धं मरिचंतथा।
भक्षयेद्राक्तकामेकासर्वरोगविनाशनीं ॥
सन्निपातंतथावातंशूलंमन्दाग्नितामपि।
नाशयेद्ग्रहणीगुल्मयक्ष्मपांडूगदानपि ॥

गधक २ कर्ष, पारा २ कर्ष दोनों को हंसपदी के रस में घोटे, पीछे कल्क की गोली करके काच की शीशी में भरे, तदनन्तर एक कर्ष विष डाले, पीछे मुख बद कर वालुकायन्त्र में बारह प्रहर की आंच दे। क्रम से दीपक की-सी मंद फिर मध्य फिर तेज आच दे, स्वाग शीतल होने पर रस को निकाल लेवे, पीछे इसमे छः माशे विष और छः माशे मिरच मिला कर खाय तो सर्वरोग नष्ट होवे, सन्निपात, वादी, शूल, मन्दाग्नि, सग्रहणी, गोला, खई, पाडुरोग, और मस्तपन को दूर करे।

सन्निपाततूलानलोरस:

त्र्यूषणंपंचलवणंत्रिक्षारंजीरकद्वयम्।
शतांव्हागन्धसूताभ्रं यामंसर्वंविमर्दयेत् ॥
चित्रकार्द्रकसिंधुत्थै.पचगुंजप्रयोजयेत्।

सन्निपातेज्वरादौचसामेजीर्णेपिवैद्यराट् ॥
पानीयपाययित्वातुनिर्वातेस्थापयेत्ततः।
दधिभक्तंप्रदातव्यक्षुधाहीनेपुनर्ददेत् ॥
रसंवातेचमन्दाग्नौ प्रयुंजीतयथाविधि:।

त्रिकुटा पाचों नोन, तीनों खार, दोनो जीरे, सोफ, गधक, पारा, अभ्रक भस्म, सब को एक प्रहर घोटे। चित्रक, अदरक, और सैंधे नोन के साथ २ रत्ती सन्निपात में ज्वर की आदि मे सामज्वर और जीर्णज्वर मे वैद्य देवे। इसके ऊपर पानी पिला के वातरहित स्थान मे रोगी को रखे दही, भात, भोजन करावे भूख न लगै तो फिर मात्रा देय, मन्दाग्नि और वादी मे विधि से देय।

भैरवरसः

शुद्धसूतमृतताम्र समटकणगन्धक।
जंबीरफलमध्यस्थेदोलायत्रे पचेद्दिनं ॥
मर्दयेद्भावयेद्द्रावैःशिग्रुवासार्द्र निंबुजैः।
सर्पाक्षीविजयाब्राह्मीमीनाक्षीहंसपादिका ॥
हस्तिशुंडीरुद्रजटाधूर्त्तवातारिवायसी।
दिनैक मर्दयेदासां लोह संपुटग पचेत् ॥
दिनैकंवालुकायत्रे समुधृत्यविचूर्णयेत्।
तालकंदीप्यकंव्योपविषंजीरकचित्रकैः ॥
एभीरससमैमिश्रत्रिगुंजंभक्षयेत्सदा।
सन्निपातज्वरहन्तिमुद्गयूषाशिनःसुखम् ॥

शुद्ध पारा, तावे की भस्म इनकी बराबर सुहागा और गंधक लेय। सबको जवीरी नीवू के रस में दोला यत्र की विधिसे पचावे, पीछे सहंजना, अडूसा, अदरक, नीवू, सरफोका, भाग, ब्राह्मी, मछेछी, हसराज, हथशुंडी, रुद्र जटा, धतूरा, मकोय, अरंड इनके रसमे एक दिन मर्दन करे। पीछे लोह के सपुट मे रखके वालु कायत्र मे १ दिन पचावे। पीछे उसमें से निकाल चूर्ण करे, हरताल, अजमोद त्रिकुटा, विष, जीरा और चित्रक इनके रसके साथ तीन रत्ती इस रसको खाय तो सन्निपात दूर होय, पथ्य मूंग का यूष पीवे।

अर्द्धनारीनाटेश्वररसः

पलैकंभावयेत्तालंकूष्माडंकफलद्रवै।
त्रिःसप्तकृत्वाश्चुर्णाद्धिस्तथाकर्कटिकारसै. ॥
चतु.शाणाहिनिर्मोकयुक्तकूप्यानिरोधयेत्।
विपचेद्वालुकायत्रे द्वादशप्रहरततः ॥
स्वांगशीतसमुद्धृत्यद्विशाणतुत्थकक्षिपेत् ॥
अंजनात्सज्वरहन्तिसद्योगुंजामितोरसः।
अर्द्धनारीश्वरोह्येपकृपयाशंकरोदित ॥
देवदालीरसैर्भाव्यवारमष्टोत्तरशत।
तद्वन्निंबूरसैतुत्थसएवतद्गुणदायकः ॥

हरताल १ पल को पेठे के रस की २१ भावना देवे, और घोटे, पीछे बाझ ककोडा के रस की २१ भावना देवे पीछे इसमे चार शाण सांप की काचली डाल घोटे, शीशी मे भर १२ प्रहर वालुकायत्र मे पचावे, जब स्वाग शीतल हो जाय तव निकाल के दो शाण लीला थोथा मिलावे, इसके एक रत्ती अंजन करने से शीघ्र ज्वर दूर होय यह अर्द्धनारीश्वररस श्रीशिवजीने कृपा पूर्वक कहा है। अथवा १०८ वार देवदाली के रस की भावना लीला थोथे मे देय तथा नींवू के रस की १०८ भावना लीला थोथे मे देय तो इस अंजन से ज्वर दूर होय।

पानीयवटिका

रसमाषकचत्वारिइष्टिकागुंडकेमह।
शोषयित्वातत शोध्योतीक्ष्णपर्णतथार्द्रके ॥
स्वर्णधत्तूरसत्वेचवृद्धदारुद्रवेतथा।
कन्यकानिजसत्वेचरसशोधनमुत्तमम् ॥२॥
गंधकरसतुल्यत्तुप्रक्षाल्यन्तन्दुलांबुना।
कृत्वातैलसमदर्व्यांनिर्वाप्यचित्रकद्रवे ॥३॥
द्वाभ्यांकज्जलिकांकृत्वालोहचूर्णस्यमाषकं।
सुवर्णमाक्षिकचापितत्रलोहसमंददेत् ॥४॥
कृत्वाकंटकवेध्यन्तंताम्रंकज्जललेपितं।
मुहूर्त्तधम्यतस्ताम्रंद्रुतंचूर्णत्वमाप्नुयात् ॥५॥

एकीकृत्यतुतत्सर्वंतत्प्रस्तरभाजने ।
मर्द्दयेत्ताम्रदण्डेनदत्वाचैषांनिजद्रवम् ॥६॥
प्रथमेकेशराजश्चद्वितीयेग्रीष्मसुन्दरः ।
तृतीयेभृंगराजश्चचतुर्थेभेकपर्णिका ॥७॥
पंचमेचनिसुन्दारषष्ठेचरसपूतिका ।
सप्तमेपारिभद्रश्चअष्टमेरक्तचित्रकः ॥८॥
शक्राशनंचनवमेदशमेकाकमाचिका ।
एकादशेतथानीलीद्वादशेहस्तिशुंडिका ॥९॥
अमीषामौषधीनान्तुप्रत्येकतुपलद्रवम् ।
मर्दयेत्तुप्रयत्नेनद्वादशाहेनसादकः ॥१०॥
ततःपारदमानन्तुदत्वात्रिकटुगुण्डकम् ।
वटिकाराजिकांतुल्यांछायाशुष्कांसमाचरेत् ।
ततःशम्बूकजेपात्रेकर्त्तव्यावटिकात्वियम् ।
शरावेशंखपात्रेवाकृत्वासलिलगालितम् ॥१२॥
अत्यन्तदोषदुष्टायज्ञानशून्यायरोगिणे ।
ऊर्द्ध्वयोनिसमभ्यर्च्यप्रदद्याद्गुटिकाद्वयम् ॥१३॥
ढक्कयेत्ततःपश्चान्नरंस्थूलपटादिभिः ।
मलमूत्रागमात्सद्यःससाध्योभवतिध्रुवम् १४
दध्यन्नंतुततोदद्यात्पिबेद्वारियथेप्सया ।
दद्याद्वातहरन्तैलमभ्यगायसदेवहि ॥१५॥
चिरज्वरेपिबेद्वारिपंचमूलीप्रसाधितम् ।
ग्रहण्यांरक्तपित्तेचपिबेदतिविषांगदी ॥१६॥
पिबेत्पर्पटजवारिघोरेकम्पज्वरेतथा ।
तथाज्वरातिसारेचजीरकस्यजलंपिबेत् ॥१७॥
मन्दाग्नौकामलायांचसंग्रहणीगदे ।
कासेश्वासेसदाकार्यापानीयवटिकात्वियम् ॥

पारा ४ मांशे लेवे उसको पारे को प्रथम लाल ईंट के चूर्ण (कूकुआ) मे खरल करे, पीछे तुंवरू, अदरक, स्वर्ण धतूरे के पत्ता, चिंधायरा, और घीगुवार इनके रस मे पारे को पृथक् २ खरल करे। पीछे पारे के समान गंधक लेय उसको चावलो के पानी से धो लोहे की करछी मे तपावै। जब गल जावे तब उसको चित्रक के रस मे डाल देवे, इस प्रकार शोधित गधक और पारे की कजली करे। इस कजली को शुद्ध तांवे के कटक वेधी पत्रों पर लेप कर तांवे की थाली मे बंद कर चूल्हे पर चढाय नीचे आंच देवें इस प्रकार दो घडी आंच देने से तांवे की भस्म होय। पीछे लोह चूर्ण एक मांशा, सोना मक्खी १ मासा, ऊपर कही हुई ताम्र भस्म ४ माशे, सबको एकत्र कर खरल मे डाल तांवे के मूसला से खरल करे। पीछे हरे भागरे की प्रथम, और दूसरे ग्रीष्म सुन्दर (गिमाशाक इति वंगदेश प्रसिद्ध) तीसरे भागरे की चतुर्थ मंडूक पर्णी की, पचम निर्गुंडी की, छठे लता कुटकी की, सातवे नींव, अथवा कांटेदार नींव की, आठवें लाल चीते की, नवम भाग की, दशम मकोय की, ग्यारहवें नील वृक्ष की, बारहवें हथशुंडी की, इन प्रत्येक औषधियो के पल-पल मात्र रस की भावना देवे। इस प्रकार वारह दिन घोटे, पीछे पारे के समान त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) डाले सबको खरल कर राई के समान गोली बनावे। और छाया मे सुखा लेवे, परन्तु तांवे ही के दंड से घोटे, पीछे इन गोलियो को शंख अथवा मिट्टी के सरवा मे रखे। जल मे घोल के रोगी को देवे, अत्यंत दोष की वृद्धि मे वेहोश रोगी को ऊर्द्ध्वयोनि दुर्गा की पूजा करके दो गोली देवें, और उसी समय रोगी को कपडों से ढक देवै। मलमूत्र की बाधा रोगी को होते ही रोग दूर हुआ जानना। इसमे दही भात का भोजन देवे,। और यथेच्छ जल पीवै और वात हरण कर्त्ता तेलों की नित्य मालिश करावे। पुराने ज्वर मे इन गोलियो को खाय ऊपर पंचमूल का काढा-पीवे, और संग्रहणी तथा रुधिर गिरने मे अतीस के काढे के साथ लेवे, और घोर कंपज्वर मे पित्त पापडे के काढे से लेवे, और ज्वरातिसार मे जीरे के जल के सग लेवे, मन्दाग्नि, कामला, सग्रहणी, खासी, श्वास, इन रोगों मे सदैव पानीयवटिका सेवन करे।

द्रष्टफलापानीयवटिका

अनाथनाथोजगदेकनाथः श्रीलोकनाथःप्रथमः

प्रसन्नः । जगादपानीयवटींसुपटूवींतामेवव द्यामिगुरुप्रसादात् ॥१॥ जयाकस्वरसचैव निर्गुंडीवासकतथा । वात्स्यालककरंजश्चसू र्य्यावर्त्तकचित्रकौ ॥२॥ ब्राह्मीवनसर्षपचभृग राजविनिक्षिपेत् । दंतीचत्रिवृताचैवतथारग्व धपत्रकम् ॥३॥ सहदेवामरभण्डीतथात्रि पुरभण्डिका । मण्डूकपर्णीपिप्पल्यौद्रोणपु ष्पकवायसी ॥४॥ गुंजाकिनीकेशराजस्तथा योजनमल्लिका । आसारिणेतिविख्यातोध त्तूरःकनकस्तथा ॥५॥ त्रैलोक्यविजयाचै वतथाश्वेतापराजिता । प्रत्येकंकार्षिकचैवरस माकृष्यभाजने ॥६॥ एकैकचरसंदत्वाम र्दयेल्लोहदंडत. । चण्डातपेचसंशोष्यक्षीरंतत्र पुनःक्षिपेत् ॥७॥ स्नुहीक्षीरचार्कदुग्धंवटदु ग्धंतथैवच । प्रत्येककार्षिकदत्वामर्दयेच्चपुन. पुनः ॥८॥ सुमर्दितंचसंज्ञात्वायदापिंडत्व मागतम् । द्रव्याण्येतानिसंचूर्ण्यवस्त्रपूतानि कारयेत् ॥९॥ दग्धहीरंचातिविषांविषमु ष्टितथाभ्रकं । पारदशोधितंचैवगधकंविषमा धुर ॥१०॥ हरितालंविषंचैवमाक्षिकंचम नःशिला । प्रत्येकंचचतुर्मापसर्वचूर्णीकृतच तत् ॥११॥ प्रक्षिप्यमर्दयेत्सर्वंशोषयित्वापु नःपुनः । सुमर्दितंचतंदृष्ट्वाचांगेरीस्वरसेनच ॥१२॥ उत्थाप्यभेपजदृष्ट्वायदापिंडत्वमागत । तिलप्रमाणगुटिका कारयेन्मतिमान्भिषक ॥१३॥ त्रिदोषजनितोवैद्यमुक्तोऽपिबहुस म्मत' । लंघनैर्वालुकास्वेदै.प्रक्रान्तोदीन दर्शन ॥१४॥ संपूज्यकरुणाधारप्रणम्यच खसर्पणम् । शरावेवारिणाघृष्ट्वाविंशतिवटि का.पिबेत् ॥१५॥ पीततद्भेषजपश्चात्वस्त्रै राच्छादयेन्नरम् । रसलग्नवपुर्ज्ञात्वादद्या द्वारिसुशीतलम् ॥१६॥ शरावप्रतिमम्वारिपा तव्यंचपुन.पुन । सन्निपातज्वरंचैवदाहचैव सुदारुणम् ॥१७॥ कासंश्वासचहिक्कांचवि ड्ग्रहंचाश्मरींजयेत् । मूत्ररोगविबवेतुदात व्यंक्षीरसंयुतम् ॥१८॥ पचतृणकृतकाथंदात व्यंचपुनःपुन' । पानीयवटिकाह्येषालोकना थेननिर्मिता ॥१९॥ लोकानामुपकाराय सर्व्वसिद्धिप्रदायिनी ॥२०॥

अनाथो के नाथ जगत् के एक ही रक्षक ऐसे लोकनाथ के प्रथम प्रसन्न होकर परम सुन्दर पानीववाटिका को कहते हुए उसी बटोको मे गुरू कृपा से कहता हूँ । अरनी,आक, निर्गुंडी, अडूसा, वला (गुलसकरी) कजा, हुलहुल, चीता, ब्राह्मी, वनसरसो भागरा, दंती, निसोथ, अमलतास के पत्ता, सहदेवी, अमर कंद, मजीठ, त्रिपुरभण्डी (वडभाट इति बंग देश प्रसिद्धि) कोई-कोई रुद्रजटा कहते हैं । मडूकपर्णी, पीपल, गोमा, मकोय, चिर्मिठी, भागरा, योजन मल्लिका (हाफरमाली) आसा-रण, कनक धतूरा, भांग और सफेद कोयल, इन सब प्रत्येक का रस एक-एक कर्ष लेवे । और पत्थर के खरल मे लोह के मूसला से खरल करे पीछे धूप मे रख कर सुखा लेवे । पीछे इसमे थूहर, आक, वड, इन प्रत्येक का दूध एक एक कर्ष डाले, और लोह के मूसला से घोटता जावे जब घुटते-घुटते गोला सा वधने लगे, तव पारा ४ माशे, गधक ४ माशे दोनो की कजली कर पूर्वोक्त पिंड मे मिला कर घोटे, पीछे इतनी औषधि कपरछन कर और डाले । हीरा की भस्म, अतीस, कुचला, अभ्रक सिंगिया विष, हरताल, सर्पविष,सोनामक्खी,और मनसिल प्रत्येक चार-चार माशे ले । उसी गोला मे डाल कर घोटे, फिर धूप में सुखा कर चूका के रस मे खरल करे । जब गोला-सा होने लगे तव तिल के प्रमाण गोलिया वनावे । जो रोगी त्रिदोष सें व्याकुल हो रहा हो, तथा जिसको वैद्यो ने असाध्य जान कर छोड दिया हो, तथा लघन और वालू से पसीने लाना इत्यादि कर्म करने से जो रोगी दीन हो गया हो, उसको करुणाधार शिव का पूजन कर और सूर्य्य को प्रणाम कर अदरक के रस तथा जल मे मिट्टी

की सरैया मे घोल वृद्ध वैद्य की संमति से रोगी को पिलावे । और पिला कर कपडे उढाय सुला देवे, दो या तीन घडी पश्चात् शीतल जल पिलावे जितना सरैया मे आवे उतना बारबार जल देवे तो सन्निपात ज्वर, घोर दाह, खासी, श्वास, हिचकी, मल का रुकना, पथरी, इनको दूर करे, तथा मूत्ररोग यानी मूत्र के रुकने मे दूध के साथ गोली देवे और तृणपंचक का काढा पिलावे, यह पानीय वटिका लोकनाथ (शिव) ने जगत् के कल्याणार्थ रची है ।

सूचिकाभरणरसः

विषंपलमित सूत शाणकंचूर्णयेद्द्वयम् ।
तच्चूर्णसम्पुटै कृत्वा काचलिप्तशरावयोः ॥
मुद्रांकृत्वाथसंशोष्यततश्चूल्यांनिवेशयेत् ।
वन्हिंशनैःशनै कुर्य्यात्प्रहरद्वयसंख्यया ॥
ततः उदघाट्यतन्मुद्रामुपरिस्थशरावकात् ।
यावत्सूच्यामुखेलग्नकूप्यांनिर्य्यातिभेषजम्॥
तावन्मात्रारसोदेयोमूर्च्छितेसन्निपातिनि ।
क्षुरेणप्राच्छितेमूर्ध्नितत्रागुल्याचघर्षयेत् ॥
रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्च्छितोऽपिहिजीवति ।
तथैवसर्प्पदष्टोऽपिमृतावस्थोऽपिजीवति ॥
यदातापोभवेत्तस्यमधुरंतत्रदीयते ।

विष १ पल, पारा ४ माशे, दोनो को एकत्र चूर्ण कर काचलिप्त सरवा मे रख कपर-मिट्टी कर सुखा लेवे । पीछे चूल्हे पर चढाय दो प्रहर मदाग्नि देवे । स्वांग शीतल होने पर मुद्रा दूर कर ऊपर के सरवा में लगे हुए पारे को निकाल लेवे सन्निपात वाले रोगी को जितना शीशी मे से सुई के अग्रभाग मे आवे उतनी मात्रा देनी चाहिये । प्रथम छुरी आदि से मस्तक को गोद कर उसमे रसको भर कर उंगली से मल देवे, औषधिका रुधिरसे स्पर्श होते ही मूर्च्छित मनुष्य भी जी उठे । उसी प्रकार साप का काटा हुआ मनुष्य मरे के तुल्य भी होगया हो वह भी इससे जी उठे, यदि इस रस से गरमी होवे तो मीठी वस्तु भोजन को देवे ।

चिन्तामणिरसः

सूतंगन्धकमभ्रकंसमनवंसूतार्द्ध भागविषं ।
तत्तत्र्यंशजयपालमम्लमृदितंतद्गोलकवेष्टित ॥
पत्रैर्मंजुभुजंगवल्लिजनितैर्निक्षिप्यखाते पुट । दत्वाकुक्कुटसञ्ज्ञकसहृदलैःसचूर्ण्य-तत्रक्षिपेत् ॥ भागार्द्धं जयपालबीजमृततत्तुल्य-मेकीकृत । गुंजात्र्यूषणसिंधुचित्रकयुता-न्सर्वान्ज्वरान्नाशयेत् ॥ शूलसग्रहणीगदं-सजठरंदध्यन्नसंसेविनां । तापेसेचनका-रिणांगदवतांसूतस्यचिंतामणे ॥ अयमेवरसे देयोमृतकल्पेगदातुरे ।

पारा १ तोला गंधक १ तोला, अभ्रक १ तोला, विष ६ मासे, जमालगोटा ४ माशे, इन सबको एकत्र कर नींबू के रस मे घोटे पीछे गोला बनाकर उसके आस पास पानो को लपेटे, पीछे कपरमिट्टी कर कुक्कुटयन्त्र मे फूंक देवे । स्वांग शीतल होने पर खरल मे डाल पीसे पीछे इसमें आधा तोला जमालगोटा और आध तोला विष मिला कर अदरक के रस से १ रत्ती की गोली करे, एक गोली त्रिकुटा, सैंधा नोन और चित्रक की छाल के चूर्ण के साथ लेवे तो सर्वज्वर दूर होवे । तथा शूल, सग्रहणी, उदर रोग मे देवे, दही भात का भोजन करावे शीतल जल से स्नान करावे, इस रस को मरे तुल्य मनुष्य को देवे,

अर्द्धनारीनाटेश्वररसः

जयपालत्वगंकोल्हपत्रराजफलानिचः ।
तिलपर्ण्याश्वबीजानिसमभागानिचूर्णयेत् ॥
तुत्थार्द्धभागसंयुक्तंनस्यंसंज्ञाप्रबोधनं ।
सन्निपातंजयेच्चातिनिद्रातंद्राशिरोरुजां ॥
श्वासकासप्रलापानिकफमुग्रंचतत्क्षणात् ।
तृतीयोरसराजस्यतदर्द्धनारीश्वरोरसः ॥

जमालगोटा, तज, अंकोल के पत्र, परवल,

हुरहुर, अजमोद, ये समान लेवे, और चूर्ण कर इसमे अर्द्ध भाग लीलाथोथा डाले, इसका नाम लेने से सज्ञा हो आवे, सन्निपात, अत्यन्त निद्रा, तद्रा, मस्तकपीडा, स्वास, खासी, प्रलाप, उग्र-कफ इनको तत्क्षण दूर करे,

लहरीतरंगोरसः

मृतायोभ्राकवङ्गानांशुद्धपारदगन्धयोः ।
पचविंशतिभागास्युःपृथक्पंचविषस्यच ॥
नवसादरतःपंचभागाद्वादशटंकणात् ।
भावनोवरमुख्याश्च भावयेत्कन्यकाद्रवैः ॥
एकविंशतिवारंचतावदार्द्रकजैरसैः ।
सप्तधाधूर्त्ततैलेनतथाकन्यारसेनच ॥
काचकुप्याचसंशोध्यवालुकायन्त्रगपचेत् ।
यामद्वात्रिंशकयावत्स्वागशीतसमुद्धरेत् ॥
गुंजाद्वयंत्रयवापियथायोग्यंचभक्षयेत् ।
सन्निपातंनिहंत्याशुराजयक्ष्माणमुद्धत ॥
रोगंब्रह्मात्रलहरीतरंगोयमहारसः ।

अर्थ—लोह-भस्म, अभ्रक-भस्म, तांबे की भस्म, बंग, शुद्ध पारा, गंधक ये सब २५ भाग । विष ५ भाग, नोसादर ५ भाग, सोहगा १२ भाग, इन सबको ग्वार पट्टे के रस की २१ भावना देय, और अदरक के रस की २१ भावना दे, और धतूरे के तेल की ७ भावना, फिर ७ घीगुआर के रस की, पीछे आतिशी शीशी मे भरके वालुकायंत्र मे ३२ प्रहर पचावे । स्वाग शीतल होने पर निकाल लेवे इसकी मात्रा २ रत्ती की है । यह रस सन्निपात, राजयक्ष्मा आदि घोर रोगो को दूर करे यह लहरीतरंगरस है ।

मृतसंजीवनीरसः

विषंटकणजैपालहिंगुलानिविमर्दयेत् ।
क्रमवृद्धानियामैकंशुण्ठीवाभिश्चशोषयेत् ॥
चित्रकव्योषसिन्धुत्थैःसमोदेयोद्विगुंजकः ।
तापंजयेत्सकर्पूरंचन्दनेनविलेपयेत् ॥
निदध्यात्कांस्यपात्रंचदाहयुक्तंचवीजयेत् ।
शाल्यन्नंतक्रसहितभोजयेत्पलसम्मित ॥
अवलोमैथुनंजह्यात्सन्निपातेमहाज्वरे ।
विषमेचत्रिदोषोत्थेद्विदोषेचैकदोषजे ॥
दाहपूर्वेशीतपूर्वेसततादिज्वरेषुच ।
आमवातेमरुच्छूलेप्लीहगुल्मेजलोदरे ॥
आढ्यवातेग्निमांद्येचप्रयुंजीतरसोत्तमः ।
मृतसजीवनःख्यातोनियुक्तोरससागरे ॥

विष, सुहागा, जमालगोटा, हींगलू, इनको क्रम से बढती लेवे । सबको सोठ के जल से एक प्रहर मर्दन करे, पीछे सुखाय दो रत्ती रस चित्रक, त्रिकुटा, सैधानोन, इनके सग देय तो ज्वर दूर होय । इस रस को खिलाकर कपूर मिला चन्दन लगावे, और इसके खाने से जियादा गरमी मालूम हो तो कासे के पात्र से हाथ पैरो को रगडे, पंखा करे, दही भात भोजन करावे, निर्बल होय तो मैथुन न करे । यह सन्निपात, विषम, त्रिदोष, द्विदोष, एक दोष को, दाह पूर्वक, शीतपूर्वक, सतत आदि संपूर्ण ज्वरो को दूर करे । आमवात, वायशूल, ताप-तिल्ली, जलोदर, वात के रोग, मदाग्नि इन रोगो मे यह रस देय । यह मृतसजीवनी रस रससागरग्रन्थ मे लिखा है ।

राजचंडेश्वररसः

सूतंगन्धंविषशुल्वंभावना.स्युपृथक्पृथक् ।
निगुंड्यार्द्रकजद्रावैःसप्तधाचपुनःपुनः ॥
गुंजामात्रावटींकृत्वादद्यादार्द्रकवारिणा ।
ज्वराश्चसत्रिदोषाश्चनाशयेन्नात्रसंशयः ॥
तैलाभ्यंगजलस्नानंदधितक्रंनिषेचणं ।
गात्रेचचन्दनालेपस्ततस्तांबूलचर्वणं ॥
इक्ष्वाम्लकदलीद्राक्षाखर्जूराणाचभक्षणम् ।
राजचण्डेश्वरोनामसर्वदोषनिकृंतनः ॥
इतिकश्यपसहितायां ।

पारा, गधक, विष, तावे की भस्म इन सबको खरल मे डाल निर्गुंडी, अदरक, इनके

रसो की पृथक् २ सात सात भावना देवे। पीछे १ रत्ती की गोली बनावे और अदरक के रस में एक गोली देवे तो त्रिदोषज, नित्यज्वर, दूर होवे। तेल लगाना, शीतल जल से स्नान, दही छाछ का भोजन, देह मे चन्दन लगाना, बीडा चवाना, ईख, आम, केला की गहर, खजूर ये पथ्य हैं, यह राजचंढेश्वर रस सर्व रोग दूर करे।

अभिन्यासहररसः

सूतगन्धकलोहानिरौप्यंसम्मर्दयेत्र्यहं।
सूर्यावर्त्तश्चनिगुंडीतुलसीगिरिकर्णिका॥
अग्निपर्ण्यार्द्रकवन्हिविजयाचजयासह।
काकमाचीरसैरासांपंचपित्तैश्चभावयेत्॥
अन्धमूषागतपश्चाद्वालुकायत्रगदिनं।
आदायचूर्णितखादेन्मापैकचार्द्रकद्रवैः॥
निगुंडीदशमूलानांकषायंशोषणपिवेत्।
त्रिदोषजंज्वरहन्तिअभिन्यासहरोरस.॥
छागीदुग्धेनमुद्गैर्वापथ्यमत्रप्रयोजयेत्।

शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, लोह भस्म, चांदी की भस्म, इनको, हुरहुर, निगुंडी, तुलसी, कोयल, अग्निपर्णी अदरक चीता, भांग, अरनी, मकोय, इनके रस मे तीन दिन खरल करे। पीछे पाच पित्त (मोर, भैंसा, वकरी, सूअर, और मछली) की भावना देवे, तदनन्तर वालुका यत्र में अधमूषा मे धर के पचावे, एक दिन तक पीछे स्वागशीतल होने पर निकाल चूर्ण कर एक माशे अदरक के रस मे खाय ऊपर निगुंडी, दशमूल, और त्रिकुटा का काढा पीवे यह अभिन्यासहर रस त्रिदोष ज्वर को दूर करे, वकरी का दूध और मूंग का यूप पथ्य है।

रहस्य

येरसाःपित्तसंयुक्ताःप्रोक्ता.सर्वत्रशभुना।
जलसेकावगाहाद्यैर्वलिनस्तेतुनान्यथा॥
रसजनितविदाहेशीततोयाभिषेको।
मलयजघनसारोलेपनमन्दवात॥
तरुणदधिसिताढ्यांनारिकेलीफलांभो।
मधुरशिशिरपानशीतमन्यच्चशस्तं॥

जिन रसो मे वकरी आदि के पित्तों की भावना कही है, वे शीतल जल का तर्डा देने से और स्नान करने से बली होते हैं, यह सर्वत्र जान लेना।

नस्यभैरवरसः

मृतसूतार्कतीक्ष्णानिटंकणंखर्परंरसम।
सव्योषमर्कदुग्धेनदिनसमर्दयेद्दृढ॥
अर्कक्षीरयुतनस्यसन्निपातहरपर।

चन्द्रोदय, तावे की भस्म, लोह भस्म, सुहागा, खपरिया, सोंठ, मिरच, पीपल, इन सवको वरावर ले आक के दूध मे एक दिन खरल कर नस्य लेवे तो सन्निपात दूर होवे।

भैरवांजनरसः

सूततीक्ष्णकणागन्धंमेकांशंजयपालकं।
सर्वैस्त्रिगुणितंजम्भवारिपिष्टंदिनाष्टकम्॥
नेत्रांजनेनहन्त्याशुसर्वोपद्रवयुक्ज्वरं।

शुद्ध पारा, लोह भस्म, पीपल, गंधक १ भाग, जमालगोटा २ भाग, सवको जवीरी के रस मे आठ दिन खरल कर नेत्रो मे आजने से सर्वोपद्रवसंयुक्त ज्वर दूर होय।

मोहांधसूर्यनस्यं

गन्धेशौलसुनाभोभिर्मर्दयेद्यामभात्रकं।
तस्योदकेनसयुक्तंनस्यतत्प्रातबोधकृत॥
मरिचेनसमायुक्त हन्तितन्द्राप्रलापकान्॥

गधक पारे को एक प्रहर लहसन के रस मे खरल करे, पीछे लहसन के जल से नाश लेय तो संज्ञा होय। अथवा मिरच मिला कर नाश लेय तो तन्द्रा और प्रलाप दूर होय।

रसचूडामणिः

सूतभस्मविषताम्र जयपालंसुगन्धकम्।
हेमतैलेनसमर्द्यततोलघुपुटंददेत्॥

भावयेत्कनकद्रावैःरजामहिषमत्स्यजैः ॥
पित्तैपृथच सप्तमितविषधूमेनशोषयेत् ।
सप्तवारत्रिवारवापश्चदार्द्रकेणभावयेत् ॥
रसचूडामणिःसिद्ध.साक्षात्श्रीभैरवमहः ।
ततोस्यराजिकांगुञ्ज्याद्गुंजार्द्धंचार्द्रनिंबुयुक् ॥
महाघोरेसन्निपातेनवेवाप्यनवेज्वरे ।
जलावगाहनकुर्यात्शेचनंव्यजनानिलम् ॥
तत्क्षणान्मंगलस्नानंकुसुमचन्द्रचन्दनं ।
पथ्ययथेप्सितंखादेत्तद्द्राक्षेक्षुदाडिम ॥
सितांसमूलसफलकाजिकस्नानमेववा ।
शूलेगुल्मेग्निमांद्यादौग्रहण्युदरपामसु ॥
वातेसर्वांगकैकांगगतेवाप्यनिलेतथा ।
प्रसूतिवातेसामेवास्वानुपानैःप्रयोजयेत् ॥
रक्तदोषबिनाचैनयोजयेद्वर्जयेदिह ।
तैलाम्लराजिकामीनक्रोधशोकाध्यचक्रमम् ।
बिल्वारनालमुशलीफलवृत्तांकमैथुनं ।

शुद्ध पारा, विष, तांबे की भस्म, गंधक, सब को धतूरे के तेल में घोट लघुपुट मे फूंक देवे, पीछे धतूरे के रस की भावना देवे, और बकरी,भैंसा, मछली, इनके पित्तो की सात-सात भावना पृथक् २ देवे तथा विष के धुए से सात वार अथवा तीन बार सुखावे पीछे अदरक के रस की भावना देवे तो यह चूडामणि रस सिद्धि होय यह श्री भैरव का साक्षात् तेज रूप है। इसमे से एक राई अथवा आध रत्ती अथवा चौथाई रत्ती नींबू के रस के साथ देय तो घोर सन्निपात, नवीन ज्वर दूर होवे। इसका खाने वाला जल से स्नान करे, और शीतल जलका मस्तक पर तर्डा दिलावे, पखा करावे, तत्क्षण मंगल स्नान, पुष्पो की माला आदि धारण करना और कपूर मिला चन्दन लगाना हित है। दाख (अंगूर) पौंडागन्ने का रस, बला-यती अनार, मिश्री, कद, फल, इत्यादि यथेष्ट पथ्य भोजन करे, काजी से स्नान इत्यादि कर्म करै तो शूल, गोला, मदाग्नि, सग्रहणी, उदर रोग, सर्वांग अथवा एकाग बादी के रोग, प्रसूत के रोग, आमवात, इन रोगो मे अनुपान के साथ देवे रुधिर के रोगो को छोड कर सर्व रोगों मे देवे। इसका खाने वाला इन वस्तुओ को छोड देवे तेल, खटाई, राई, मछली, क्रोध, शोक, रास्ता चलना, बेल, काजी, मूशलीफल, बैंगन, और मैथुन करना।

द्वितीयचिंतामणिः

रसंगन्धंमृतशुल्वमृतमभ्रंफलत्रिकं ।
त्र्यूषणंजयपालंचसमखल्वेविमर्दयेत् ॥
द्रोणपुष्पीरसैर्भाव्यशुष्कंतद्वस्त्रगालितं ।
चिन्तामणिरसोह्येषस्त्वजीर्णानाप्रशस्यते ॥
ज्वरमष्टविधंहन्तिसर्वशूलहरःखलु ।
गुंजैकवाद्विगुंजम्वाआमरोगहरपर ॥

पारा, गधक, तांबेकी भस्म, अभ्रक की भस्म,त्रिफला, त्रिकुटा, जमालगोटा, सब बरा-बर लेवे, और सबको खरल मे डाल गोमा के रस मे खरल करे। पीछे सुखाय कपडछन कर लेवे। यह चितामणिरस अजीर्णरोग मे हित है। आठ प्रकार के ज्वर और सर्व शूलो को दूर करे, एक वा दो रत्ती खाय तो आमवात को नष्ट करे।

मृतोत्थापनकोरसः

विषचदरदतुल्यंमर्दयेद्वासरद्वयम्
अम्लवेतसजंबीरचागेरीणांरसेनच ॥
निर्गुंडीहस्तिशुण्ड्याश्चएवंघर्मेविपाचयेत् ।
चित्रकस्यकषायेणद्वियाममर्दयेत्तत. ॥
माषमात्रप्रदातव्योहिंगुव्योषार्द्रकद्रवै. ।
किंचित्कपूरसयुक्तोमृतोत्थापनकोरस. ॥
पीडित सन्निपातेनमृतोयातियमालयम् ।
प्रत्येतितत्क्षणादेवरसस्यास्यप्रभावत. ॥

विष, हींगलू, दोनो बराबर लेय। दो दिन घोटे, पीछे अम्लवेत, जंभीरी, चूका, निर्गुंडी, हथशुंडी, इनके रस मे धूप मे खरल करे। चित्रक के काढे से दोप्रहर खरल करे। इसमे से एक माशे रस हींग, सोंठ, मिरच, पीपल,

और थोडा कपूर मिलाकर अदरक के रस मे देय, तो यह मृतोत्थापन रस सन्निपात से पीडित मरकर यमराजके घरभी गया हो वह भी इस रसके प्रभाव से तत्क्षण उलट आवे।

कनकसुन्दररसः

कनकस्याष्टशाणास्यु सूतोद्वादशभिर्मतः ।
गंधोपिद्वादशप्रोक्तस्ताम्रं शाणद्वयोन्मित ॥
अभ्रकंस्याच्चतुःशाणंमाक्षिकर्चाद्विशाणक ।
वंगोद्विशाण.सौवीरंत्रिषाणलोहमष्टकम ॥
विषत्रिषाणककुर्य्याल्लांगलीपलसंमिता ।
मर्द्दयेद्दिनमेकतुरसैरम्लफलोद्भवै. ॥
दद्यान्मृदुपुटवन्हौततःसूक्ष्मंविचूर्णयेत् ।
माषमात्रोरसोदेय.सन्निपातेसुदारुणे ॥
आर्द्रकस्यरसेनैवरसोनस्यरसेनच ।
किलासंसर्वकुष्ठानिविसर्पंचभगदर ॥
ज्वरगरमजीर्णंचजयेद्रोगहरोरसः ।

धतूरे के बीज ८ शाण, शुद्धपारा १२ शाण, शुद्ध, गंधक १२ शाण, तांबे की भस्म २ शाण, अभ्रक ४ शाण, सोनामक्खी की भस्म २ शाण, वंगभस्म २ शाण, कालासुर्मा ३ शाण, अष्टलोह (सोना, चांदी, रागा तांबा, सीसा, कांसा, जस्ता, पीतल) की भस्म ३ शाण, सिंगियाविष ३ शाण, कलियारी १ पल, इन सब को जंबीरीनीबू आदि खट्टे फलोके रसमे घोटे एक दिन तक, पश्चात् मृदुपुट देय, पीछे निकाल कर चूर्ण कर डाले, १ माशे रस अदरक के रस के साथ देवे अथवा लहसन के रस से देवे तो घोर सन्निपात दूर होवे, किलास से आदिले सर्व प्रकार के कुष्ठ, भगदर, ज्वर, विष, अजीर्ण आदि सब रोग दूर होवें।

वडवाख्यरसः

पटुनापुरयेत्स्थालीतंमध्येपटुमूषिकां ।
तन्मध्येरामठींमूषांतन्मध्येपारदंक्षिपेत् ॥
विषनिघृष्यसूताशवारिणालोडयसप्तभि ।
कृतेत्रिभि.सगुणितेतेनचैवदहेच्छनैः ॥
वन्हिप्रज्वालयेच्चुल्ह्याहठाद्यामचतुष्टयं ।
तद्भस्मतिलमात्रन्तुदद्यात्सर्वेषुपाप्यसु ॥
ग्रहण्याजठरशूलेमन्दाग्नौपवनामये ।
युक्तमेतान्निहन्त्येवकुर्य्यात्बहुतरक्षुधां ॥
तापेशीतक्रियाकुर्यात्वाडवाख्येरसोत्तमे ।

एक हांडी में नोनभरे उसके बीच नोनका मूष बनाकर रक्खे उसमे हींग का मूष धरे, उस हींग की मूष मे पारा भरे, फिर पारे के समान विष का चूर्णकर उस को जल मे सान २१ बार मूष पर लेप करे, हांडी के नीचे अग्निजलावे, क्रम से मंद मध्य तेज आंच देवे, चारप्रहर हठाग्नि देवे जब स्वांग शीतल हो जाय तब उतार लेवे, इसमे से एक तिलके प्रमाण सर्व रोगो मे देवे तो संग्रहणी, उदर, शूल, मंदाग्नि, वादी के रोग, ये सब रोग दूर होवे, भूँख बढावे, यदि इसके खाने से गरमी मालूम हो तो शीतल किया करे,

सूचिकाभरण.

विषंरसकलैकाशंकाचलिप्त्वासरावकं ।
रुध्वाचूल्ह्यामंदवन्हौपचेद्यामद्वयतथा ॥
स्वयशीतेचगृह्णीयादुपरिस्थंसरावकात् ।
वायुवर्ज्यं क्षिपेत्कुप्यासन्निपातेऽहिदंष्ट्रके ॥
सूच्याग्रेचप्रदातव्यंछन्नं जाग्रतिमानवः ।
गुणतुपूर्ववत् ॥

पारेका सोलहवा भाग विष लेवे, पीछे सराव मे काचका लेपकर विष और पारा भरे, सराव का मुख बंदकर चूल्हेपर चढावे, मंदाग्नि से दो प्रहर पचावे, जब स्वांगशीतल होजाय तब ऊपर के सराव मे लगे पारे को धीरे से निकाल लेवे। पवन रहित स्थान मे इसे शीशी मे भर देवे सन्निपात में और सर्प के काटे मे एक सरसों के समान अदरक वा पानके रस के साथ देवे तो मनुष्य का मोह दूर होवे कोई विष शब्द से सवलखार लेते हैं।

सूचिकाभरणरसः

विषंपलमितसूतःशाणिकश्चूर्णयेद्वयम् ।
तच्चूर्णं सम्पुटेकृत्वाकाचलिप्तसरावयोः ॥
मुद्रांकृत्वाचसंशोष्यततश्चूल्ह्यांनिवेशयेत् ।
वन्हिंशनैःशनैःकुर्यात्प्रहरद्वयसंख्यया ॥
ततःउद्घाटयेतन्मुद्रामुपरिस्थशरावकात् ।
सलग्नयोभवेद्धूमस्तंगृह्णीयाच्छनैःशनैः ॥
वायुस्पर्शोयथानस्यात्तथाकूप्यां नवेशयेत् ।
यावच्छूच्यामुखेलग्नकूप्यान्निर्यातिभेषज ॥
तावन्मात्रोरसोदेयोमूर्च्छितेसन्निपातके ।
क्षुरेणप्रहृतेमूर्ध्नितत्रांगुल्याचघर्षयेत् ॥
रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्च्छितोपिहिजीवति ।
तथैवसर्पदंष्ट्रस्तुमृतावस्थोहिजीवति ॥
यदातापोभवेत्तस्यमधुरंतत्रदापयेत् ।

शुद्ध सिंगिया विष १ पल, शुद्धपारा २ शाण, दोनो का चूर्णकर काचलिप्त सराव मे भरे, पीछे उस सराव का मुख बदकर मुद्रा करे, धूप मे सुखाय चूल्हेपर चढावे, नीचे, धीरे-२ अग्नि देवे। दोप्रहर पीछे स्वांग शीतल होने पर उतार लेय, सावधानी से मुद्रा को दूर करे, ऊपर की सराव में लगे पारेके धुंए को धीरे-से खुरच लेवे, जिस से हवा न लगे ऐसे यत्न से भस्म को शीशी मे भर देवे, सन्निपातवाले को जितना सुई के मुख पर लगे उतना लेकर प्रथम छुरी से पछना लगा कर उस मे भर देवे, और उंगलो से रगड़ देवे, इस भस्म का रुधिर मे मेल होते ही मूर्च्छा जाती रहे, इसी प्रकार सर्प का काटा मुर्दा के सदृशभी जीवे यदि रोगी को गरमी मालूम हो तो मधुर वस्तु खिलावे

सूचिकाभरणरसः

खंडीकृत्यविषंकृष्णसार्कदुग्धेल्पभाण्डके ।
सकाजिकेसगरलेदद्याच्चूल्ह्याविनि क्षिपेत् ॥
सप्ताहततउद्धृत्यश्लक्ष्णसचूर्णयत्नत ।
सूचिकाभरणोनामरसोगुप्ततमोभवेत् ॥
संज्ञानाशेविचेष्टस्यवल्लःकांजिकपेषितः ।
ब्रह्मरध्रे प्रयोक्तव्य साखास्वतिहिमोदये ॥

काले संखिया के टूक आक के दूध मे भिगोय छोटे पात्र मे रख देवे, पीछे कांजी और सर्प के जहर मे डाल कर चूल्हे पर चढाय अग्नि देवे, सात दिन पर्य्यन्त पीछे उतार के सुखावे। और उसका चूर्ण कर रख छोडे यह सूचिकाभरण रस अति गुप्त है। सज्ञा नाश मे और विचेष्टा मे ३ रत्ती रस काजी में पीस मस्तक चीर के लगावे, तथा हाथ पैर आदि मे चीरा देकर लगावे तो अतिशीत दूर होय।

मंथनभैरवरसः

शुद्धंसूततथागन्धलोहताम्रंचसीसक ।
मरिचपिप्पलीविश्वसमभागानिचूर्णयेत ॥
अर्द्धभागविषंदद्यान्मर्दयेद्वासरद्वयम् ॥
शृंगवेरानुपानेनदद्याद्गुंजाद्वयोन्मित ।
नवज्वरेमहाघोरेसन्निपातेसुदारुणे ॥
शीतज्वरेदाहपूर्वेगुल्मशूलेत्रिदोषजे ।
वाञ्छितंभोजनंदद्यात्कुर्य्याच्चन्दनलेपनम् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध ग धक, लोह भस्म, सीसे की भस्म, मिरच, पीपल, सोठ, ये सब बराबर लेवे। और चूर्ण कर इसमे पारे से आधा विष डाले पीछे दो दिन खरल करे। अदरक के रस से दो रत्ती रोगी को देवे तो नवीन (तरुण) ज्वर, घोर सन्निपात, शीत ज्वर, दाह ज्वर, गोला, सन्निपात का शूल ये सब दूर होवें। इसके ऊपर वाछित भोजन करावे और चदन का लेप करे।

पंचवक्त्ररसः

रसोगन्धकष्टङ्कणःशोषणोयकणीपिप्पली
त्येषधत्तूरपिष्ट । जयेत्सन्निपातद्विगु जोऽ
नुपानभवेदर्कमूलाबुसव्योपचूर्णम् ॥

पारा, गंधक, सुहागा, मिरच, पीपल,

सीसे की भस्म, इस सबको धतूरे के रस मे पीसे दो रत्ती खाने से सन्निपात दूर होवे। इस रस के ऊपर आक की जड और त्रिकुटा का काढा पीवे।

रसराजेन्द्ररसः

सूतस्यशुद्धस्यपलंपलताम्रमयोरज ।
अभ्रंनागपलंवंगपलगधकतालक ॥१॥
पलंशुद्धविषचूर्णंसर्वमेकत्रकारयेत् ।
मर्दयेत्काकमाच्याश्चतत्रसाररसेनच ॥२॥
मत्स्यवराहमायूरछागमाहिषपित्तकैः ।
मर्दयेत्भिन्नाभिन्नचत्रिकटोरम्बुभिस्तथा॥३॥
आर्द्रकस्वरसैः पश्चात्शतवारान्मुहुर्मुहुः ।
सिद्धोयंरसराजेन्द्रोधन्वतरिप्रकाशितः ॥४॥
गुंजामात्रंरसंदद्यात्सुरसारससयुत ।
मेघधाराप्रवाहेणधारितवारिमस्तके ॥५॥
अनिवारोयदादाहस्तदादेयाचशर्करा ।
भोजनंदधिसंयुक्तंवारमेकतुदापयेत् ॥६॥
ईश्वरेणहतःकामःकेशवेनचदानवा. ।
पावकेनहतंशीत सन्निपातेरसस्तथा ॥७॥

शुद्ध पारा १ पल, तांबेकी भस्म १पलतथा लोहे की भस्म १ पल,अभ्रक १पल,सीसा १पल, वग १ पल,ग धक,हरिताल १ पल,शुद्ध विष का चूर्ण १ पल, सबको एकत्र कर मकोय के रस मे घोटे पीछे खैर सार से घोट कर मछली, सूअर, मोर, बकरी, और भैंसा इनके पित्तो से पृथक् २ मर्दन करे, पीछे त्रिकुटा (सोठ, मिरच पीपल) के काढे से खरल करे फिर अदरक के रसकी १०० भावना देय, तो यह धन्वतरि प्रकाशित रसराजेन्द्ररस सिद्धि होवे। इस रसको १ रत्ती तुलसी के रस के साथ खाने को देवे और जब गरमी होवे तब मस्तक पर जलका तर्डा देवे यदि जलधारा डालने से भी दाह न जावे तो मिश्री का शरबत पिलावे और दही खाने को देवे, तो जैसे श्री शिवजी ने काम को भस्म किया, और श्रीविष्णु ने जैसे दैत्यों को मारा और जैसे अग्नि से शीत नष्ट होता है,इसी प्रकार इस रसराजेन्द्र के सेवन से सन्निपात दूर होता है।

स्वेदशैत्यारिरसः

ताम्रशुंठ्यर्कमूलानिद्विनिष्कानिपृथक्पृथक् ।
ऐक्यतःपचलवणात्पलपिष्ट्वापुटंददेत् ॥
गन्धेशशंखभस्मानिवेदनिष्कमितानिच ।
देवदालीरसैःपिष्ट्वात्रिदिनकेकिपित्तकः ॥
स्वेदशैत्यापनुत्यर्थंवल्लमात्रंप्रयोजयेत् ।
दध्नासंमर्दयेत्पात्रेजलयोगसमाचरेत् ॥
पथ्यघृतंसिंधुमुद्गाइक्षुखर्जूरगोस्तनी ॥

तांबा, सोंठ, आक की जड प्रत्येक पृथक् २ दो दो तोले लेवे। और पाचो नोन ८ तोला, सब को पीस एकत्र कर पुटपाक की रीति से पुटपाक करे। पीछे इसमे ग धक ४ तोला, पारा ४ तोला, शख भस्म ४ तोला, मिलाय देवदाली के रस और मोर के पित्ते से तीन दिन खरल करे, तीन रत्ती के प्रमाण गोली बनावे। शीत पसीना दूर करने को एक गोली देवे। इस गोली को दही मे पीस कर देवे, जल देना वर्जित है। और इसकी गरमी होवे तब मस्तक पर जलका तर्डा दिलाना चाहिये। और पथ्य में घृत, सैधानोन, मूंग, ईख, छुहारा और मुनक्का देवे।

द्वितीयपंचवक्ररसः

गन्धेशटंकमरिचविषंधत्तूरजैर्द्रवैः ।
दिनंविमर्दितशुष्कंपंचवक्रोभवेद्रसः ॥
द्विगुंजमार्द्रनीरेणत्रिदोषज्वरहृत्परम् ।

ग धक, पारा, सुहागा, काली मिरच और विष ये सब समान लेवे। सबको धतूरे के रस से एक दिन खरल कर सुखा लेवे, तो यह पंचवक्र रस बने दो रत्ती अदरक के रस से देवे तो सन्निपात दूर होवे।

सन्निपातसूर्योरसः

हिंगुलगन्धकंताम्रंमरिचपिप्पलीविष ।
शुंठीकनकबीजंचश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥

विजयापत्रतोयेनत्रिदिनंभावयेत्सुधी । द्विगुंजपर्णखंडेनअर्ककाथपिवेदनु ॥ निहन्तिसन्निपातोत्थान्गदान्घोरान्सुदारुणान् । वातिकंपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकंच-विशेषत. ।

हिंगलू, गंधक, तांबा, काली मिरच, पीपल, विष, सोंठ, और धतूरे के बीज सबको बराबर ले चूर्ण कर भाग के पत्तो के रस की तीन दिन भावना देवे । पीछे दो रत्ती पान के टुकडे में देवे, उसके ऊपर आक की जड का क्वाथ देवे तो सर्व सन्निपात जनित दारुण पीडा तथा, वातक पैत्तिक और कफज इन विकारों को दूर करे ।

चिंतामणिरसः

रसविषगन्धकटङ्कणताम्रयवक्षारकव्योपम् । तालफलत्रयकचक्षौद्रंदत्वाचशतवाराम ॥ सम्मर्द्यरक्तिकमितावटिकाःकुर्य्याद्भिषक्प्राज्ञ । शुंठीपिष्टेनसममेकाद्वेवाथवातिस्त्रः ॥ सप्राश्यनारिकेलीजलमनुपेयप्रयुंजीत । भेदानन्तरमेवप्रक्षालितभक्तमन्नमुपयोज्यम् ॥ शोषात्सैंधवजीरतक्र भक्तंप्रयोक्तव्यम् । प्रशमयतिसन्निपातज्वरतथाजीर्णविषमंच ॥ प्लीहानचाध्मानकासश्वासचवन्हिमांद्यच । चिंतामणिरसोऽयंकिलानयतंभैरवेनिर्दिष्ट ॥

पारा, विष, गंधक, सुहागा, तांबा, जवाखार, (सोंठ, मिरच, पीपल) तालफल, हरड, बहेडा, आंवला, इन सब को बराबर लेवे, सब को कूट पीस शहत में १०० बार खरल करे, पीछे एक रत्ती के प्रमाण गोली बनावे, पीछे एक वा दो वा तीन गोली सोंठ के चूर्ण के साथ शहत मिला कर खाये ऊपर नारियल का जल पीवे । जब दस्त होवे तब धुले हुए चावलो का भात दही के साथ भोजन करावे । तथा सैंधानोन जीरा, छाछ मिले भातका भोजन करावे तो सन्निपातज्वर, जीर्णज्वर, विषमज्वर, ताप तिल्ली, अफरा, खांसी, स्वास, और मंदाग्नि को यह चिन्तामणिरस दूर करता है । यह भैरवने कहा है ।

घोरनृसिंहोरसः

भागैकंमृतताम्रस्यद्विभागमृतलोहकम् । त्रिभागंमृतवंगंचचतुर्भागंमृताभ्रकम् ॥ माक्षिकंरसगन्धौचतथाशुद्धामनःशिला । चत्वार्येतानिताम्रस्यप्रत्येकतुल्यमेवच ॥ गरलंचाभ्रतुल्यस्यात्त्रिकटुश्चाभ्रतुल्यकः । एतत्सर्वं समदेर्याविषमाख्यतथैवच ॥ एतत्सर्वस्यद्रव्यस्यद्विगुणकालकूटकम् । मत्स्यमाहिषमायूरघृष्टिपित्तैर्विभावयेत् ॥ चित्रकस्यद्रवेणवप्रत्येकयाममात्रकं । सर्षपाभावटीकार्य्याशोषयेद्वातपेततः ॥ दापयेद्वटिकामेकांपयःपेटीरसेनच । त्रयोदशेसन्निपातेविशूच्यामतिसारके ॥ त्रिदोषजेतथाकासेदापयेत्कुशलोभिषक् । पयःपेटीशतंदद्यात्भोजनंदधिभक्तकं ॥ अयघोरनृसिंहाख्यंरसानांमुत्तमोरसः ।

तांबा एक भाग, लोह, १ भाग, वंग ३ भाग, अभ्रक ४ भाग, स्वर्णमाक्षिक १ भाग, पारा १ भाग, गंधक १ भाग, मनसिल १ भाग, कालेसर्पकाविष ४ भाग, त्रिकुटा ४ भाग, कुचला २२ भाग, काष्ठविष ८८ भाग, ये सब द्रव्य ले सब को कूट पीस कर रोहित मछली, भैंसा, मोर, और शूकर इनके पित्तो से खरल करे । इसी प्रकार चीते के रस से खरल करे, एक २ वस्तू से तीन २ प्रहर खरल करे, पीछे सरसो के समान गोली बना कर धूप से सुखालेवे, पीछे नारियल के जल से एक गोली रोगी को देवे तो १३ सन्निपात, विशूचिका, (हैजा) अतीसार, त्रिदोषकी खाँसी, दूर होवें । १०० नारियल का जल पिलावे, और दही, भात भोजन को देवे, यह घोर नृसिंहरस सर्व रसों में उत्तम है ।

प्रतापतपनोरसः

गन्धकंहिंगुलंतालंसूतकंलोहटंकणं ।
खर्परंसज्जिकाक्षारंमंजिष्ठ हिंगुलंसम ॥
रसेनमर्द्दितंपिण्डनिगुं डीहस्तिशुण्डयो' ।
अष्टयामपचेत्कूप्यांनिरुध्यसिकताह्वये ॥
तत.सिद्धं समादायरक्तिकामार्द्र केनच ।
सन्निपातविनाशायप्रतापतपनोरसः ॥
दधिभक्तं तथादुग्धछागमांसंचभोजयेत् ॥

गंधक, हिंगुल, हरिताल, पारा, लोहा, सुहागा, सज्जीखार, मजीठ, और हिंगुल ये सब बराबर लेवे। सब को निगुं डी, और हथशु डी के रस मे खरल करे, पीछे वालुकायंत्र मे शीशी चढ़ाय ८ प्रहर आच देवे, जब सिद्धि हो जावे तब एक रत्ती अदरक के रस मे रोगी को देवे तो सन्निपात को यह प्रतापतपन रस दूर करे। इस के ऊपर दही, भात तथा बकरीका दूध और मांस का भोजन करावे।

सन्निपातभैरवः

पारदंगन्धकंतालंवत्सनाभंत्रिभिःसमं ।
दारुमूपंचगरलसर्वं चसमंहिंगुलं ॥
मुद्गप्रमाणवटिकांकारयेत्कुशलोभिषक् ।
सन्निपातेवटीमेकामार्द्र द्रावे.प्रदापयेत् ॥
रसोमहाप्रभावोऽयसन्निपातस्यभैरवः ।

पारा १ भाग, गधक १ भाग, हरताल १ भाग, विष ३ भाग, दारुविष १ भाग, काले सर्प का विष १ भाग, हिंगुल ८ भाग, इन सब को एकत्र मर्दन कर मूंग के समान गोली बनावे सन्निपात रोग मे एक गोली अदरक के रस मे देवे यह महा प्रभाव वाला सन्निपातो को भैरव स्वरूप है।

द्वितीयसन्निपातभैरवः

रसंविषगंधकंचहरितालंफलत्रयं ।
जयपालंत्रिवृत्तस्त्रर्णं ताम्रसीसाभ्रलोहकम् ॥
अर्कक्षीरंलांगलीचस्वर्णमाक्षिकमेवच ।
समकृत्वारसेनैपात्रिंशद्वारंचमर्दयेत् ॥
अर्कश्वेतालम्बुपाचसूर्यावर्त्तश्चकारवी ।
काकजंघाशोणकश्चकुष्ठंत्र्योपत्रिकंकतम् ॥
सूर्यमणिश्च द्रकान्तेनिगुं डीशजटापिच ॥
धत्तूरदन्तिपिप्पल्यादशाष्टागमिदंशुभं ।
रसतुल्यप्रदातव्यदत्वातोयचतुगु णम् ॥
शिष्टं कगुणतोयेनभावनाविधिरिष्यते ।
भावनायांभावनायांशोषणमुहुरिष्यते ॥
ततश्चवटिकांकृत्वाभैरवायबलिंददेत् ।
रसोऽयश्रीसन्निपातभैरवोज्वरनाशनः ।
सर्वोपद्रवसयुक्तं ज्वरंहन्तिनसंशयः ॥
सन्निपातज्वरहन्तिजीर्णं चविपमंतथा ।
एकाहिकद्व्याहिकंचचातुर्थकमपिध्रुवम् ॥
ज्वरंचजलदोषोत्थसर्वदोषसमाकुलं ।
भैरवस्यप्रसादेनजगदानंदकर्पटी ॥

पारा, विष, गंधक, हरिताल, त्रिफला, जमालगोटा, निसोथ, धत्तूरे के बीज, तांबा, सीसा अभ्रक, लोह, आकका दूध, कलियारी की जड, सोनामक्खी, इन सब वस्तुओं को बराबर लेवे। सब को कूट पीस आगे लिखो औषधियों की ३० भावना देवे। सफेद आक, धीया, हुलहुल, कालाजीरा, काकजघा, शोणक, कूठ, त्रिकुटा, विककत, सूर्यमणि, चन्द्रकांत, निगुं डी, रुद्रजटा, धतूरा, दती, और पीपल इनके रस औषधियो के समान लेवे। और औषधियो से चौगुना पानी डाले, सब का क्वाथ करे, जब चतुर्थांश रहे, तब उतार कर छान लेवें, इस रस की भावना देवे। प्रत्येक भावना को सुखाता जावे। पिछली भावना पर गोली बनावे। यह गोली श्रीभैरव को बलिदान देकर खावे तो यह सन्निपात भैरवरस सर्वोपद्रव सयुक्त ज्वरों का नाश करे। सन्निपात ज्वर, विषमज्वर, जीर्णज्वर, एकाहिक, द्व्याहिक, चातुर्थिक तथा जल के विकारो से जो ज्वर प्रगट होवे सब को दूर करे श्रीभैरव की कृपा से आनन्दकर्पटी ने यह रस कहा है।

संजीवनो रसः

रसेनगन्धंद्विगुणविमर्द्य रसप्रमाणानिभवत्यमूनि। शिलानलव्योपविषाभ्रकाणिभृंगविष-माक्षिकतन्दुलीया.॥ कुम्भीभमुंडी-मृततालकश्चसताम्रशाकोयमरालपादः। ककुभ्रकचेतिदिनत्रयंतदाद्याद्र्बुनासर्वमथोविमर्द्यः॥ निवेश्यकूप्यांरसमत्रदेयो। जम्बीरनिर्गुण्डि-जयाभिधाना ॥ नवप्रमाणानिरस.पलानि चांगेरिकाया.स्वरसःपलैक। ततःसुवध्वासिकताख्ययत्रे चतुर्दशाह्यानिपचेत्सुशीते॥ तद्भावयेदार्द्रकजेनसूतोमृताख्यसजीवनइत्यपूर्व.। वल्लोस्यसर्वान्जयतिप्रयुक्तो गदान्सदार्द्रद्रवयुक्प्रभावान्। प्राणेश्वरस्सर्वमिह प्रयोज्यह्ययत्रिदोषेसविशेषवीर्यः॥

पारे से गंधक दूनी लेवे, और मनसिल, चोता, त्रिकुटा, विष अभ्रक भाग, सखिया, सोना मक्खी, चौलाई, जगालगोटा, हथशुंडी, हरिताल भस्म, ताम्र भस्म, हंसपदी, ककुन्ठ ये सब पारे के समान लेवे, और सबको तीन दिन अदरक के रस मे घोटे। पीछे सुखा कर सीसी में भरे, और उसमें जबीरी, निगुंडी, अरनी, इसका रस ६ पल लेवे। और चूका का रस एक पल लेके उसी शीशी मे भरे फिर वालुका यन्त्र मे १४ दिन पचावे, स्वाग शीतल होने पर शीशी से निकाल अदरक के रस से घोटे, तो यह मृत सजीवन रस बने, तीन रत्ती रस संपूर्ण रोग को दूर करे। और प्राणेश्वर रस के सदृश पथ्य देने सन्निपात मे बहुत काम देता है।

अंजनवटीः

पारदटंकमेकन्तुद्विटंकगन्धकंतथा।
मरिचनवटकस्यात्सर्वंवैकज्जलीकृत ॥
कारवेल्लिरसैर्मर्द्य मेकविंशातिसख्यकम्।
गुंजामात्रावटींकुर्यात्तयाह्यंजनमाचरेत् ॥
सर्वान्ज्वरानिहत्याशुमत्यंशंकरभाषितम्।

परा टंक १, गधक टंक २, मिरच टक ६, सब को पीस कजली करै। पीछे उस मे करेले का रस डाल के २१ वार घोटे। पीछे एक रत्ती के प्रमाण गोली बनावे, इस गोली को जल मे घिस के अंजन करे तो सर्व प्रकार के ज्वर नाश होवे। यह श्री शिवजी का कहा प्रयोग सत्य हैं। किसी जगह 'कदलीपत्रतोयेन" ऐसा पाठ है, अर्थात् केले के पत्ते के रस के २१ पुट देके गोली करे।

वाडवरसः

पटुनापूरयेत्स्थालींतन्मध्येपटुमूषिका।
तन्मध्येरामठोमूषातन्मध्येपारदंक्षिपेत् ॥
विषविघृष्यसूताशवारिणालोड्यसप्तभिः।
कृतैस्त्रिभि सगुणितेतेनचैवदहेच्छनै ॥
वह्निंप्रज्ज्वालयेच्चूल्ह्याहठाद्यामचतुष्ठय।
तद्भस्मतिलमात्रंतुदद्यात्सर्वेषुपाप्मसु ॥
ग्रहण्याजठरेशूलेमंदाग्नौपरिणामजे।
युक्तमेतन्निहत्याशुकुर्याद्वहुराद्भवाम् ॥
तापेशीतक्रियाकुर्यात्वाडवाख्योमहारस ॥

एक हाडी मे सैंधा निमक पीस कर भरे उसके बीच मे नोन की मूष धरे, नोन की मूष के बीच मे हींग की मूंष धरे, उस हींग की मूष मे पारा भरे, पारे के समान विष लेवे उसको इक्कीस वार घिस कर उसी पारे के साथ मिला देवे। पीछे चूल्हे पर चढा कर चार प्रहर अग्नि देवे, इस रस की भस्म तिल प्रमाण सब रोगो मे देवे। सग्रहणी, उदर रोग, शूल, मन्दाग्नि, परिणाम शूल, इन सब रोगो को दूर करे। और जठराग्नि को प्रबल करे, यदि गरमी होवे तो शीतल क्रिया करनी चाहिये।

मृत्युंजयरसः

सूतगन्धकटंकणांशुभविषंधत्तूरबीजकटु।
नीत्वाभागयथोत्तरंद्विगुणितचोन्मत्तमूला-

वुना ॥ कुर्यान्माषवटींसुखातिसुखदांसर्वान्ज्वरान्नाशयेद्देशश्रीशिवशासनात्प्रजनित. सूतंचमृत्युंजय. ॥ नारिकेरसितायुक्तं वातपित्तज्वरजयेत् । मधुनाश्लेष्मपित्तोत्थं ज्वरसनाशयेत्ध्रुवम् ॥ सन्निपातज्वरघोर नाशयेत्तदार्द्रनीरतः ।

पारा १ मासे गंधक २ मासे, सुहागा ४ मासे, विष ८ मासे, धतूरे के बीज १६ मासे सात रत्ती । अर्थात् सब मिला कर ३२ मासे इन सबको धतूरे की जड के रस में खरल करके १ मासे के प्रमाण गोली बनावे । इसके सेवन करने से सब ज्वर नाश होवे, परम सुख दाता यह श्री महादेवजी ने कहा मृत्युंजय पारद है, नारियल के जल और मिश्री से वात पित्त ज्वर दूर होवें, सहत से कफ पित्त ज्वर दूर होवें । अदरक के रस से सन्निपात ज्वर को दूर करे ।

श्रीसन्निपातमृत्युंजयोरसः

विषंसूतकगन्धौचपित्तमत्स्यवराहयो. ।
आजमायूरपित्तेचमाहिष्याश्चापियोजयेत् ॥
हरितालचसव्योपवानरीबीजसंयुत ।
अपामार्ग चित्रमूलंजयपालंचकल्कयेत् ॥
एतत्सर्वं समांशेनअजामूत्रेणमर्दयेत ।
माषेनसदृशीकार्यावटिकासद्भिपक्वरैः ॥
महाज्वरेमहाशीतेमहाशीतज्वरेपिच ।
मज्जेगतेसन्निपातेविपूच्यांविषमज्वरे ॥
असाध्येमानवेयुंज्यादेकाहाज्ज्वरनाशिनी ।
जलोदरेशैथिलागेनासास्रावेचपीनसे ॥
अजीर्णेमूर्च्छनाभावेश्लेष्मभावेऽतिदुर्ज्जये ।
शोथकामलपांड्वादिसर्वरोगापहारक. ॥
सन्निपातजयेद्ब्रह्मे तज्ज्ञानज्योतिप्रकाशितः ।
भृंगराजरसेनायरसराजःप्रदीयते ॥
निर्वातेनिर्ज्जनेस्थानेवहुवस्त्रसमावृते ॥
प्रस्वेदक्षणमात्रेणजायतेचिह्नमीदृश ।
मूर्छितःपतितेभूमौदह्यमान.पुन.पुन. ॥
एवंचिन्हसमालोक्यवदेन्नैरुज्यमारुते ।
पथ्ययद्याचतेरोगीतद्दातव्यंप्रयत्नतः ॥
दध्योदनंशीतजलंदातव्यंतद्विचक्षणैः ।
एवंमहारसःश्रेष्ठ.शम्भुनाप्रेरितोभुवि ॥
कृपयासर्वभूतानाज्ञानज्योति प्रकाशित. ।

विष, पारा, गंधक, मछली का पित्ता, सूअर का पित्ता, बकरी का पित्ता, मोर का पित्ता, भैंसे का पित्ता हरिताल, त्रिकुटा, कौंच के बीज, ओंगा की जड, चीते की जड, और जमालगोटा ये सर्व वस्तु समान लेवे । सबको शिला पर पीस बकरी के मूत्र में खरल करे, उडद के प्रमाण गोली बनावे घोर ज्वर मे, घोर शीत मे, और महान शीत ज्वर मे, मज्जागत ज्वर मे सन्निपात मे, विशूचिका मे, विषम ज्वर मे, असाध्य रोगी को यह गोली देवे तो एक दिन मे ज्वर दूर करे, जलोदर, शिथिलता नाक टपकना, पीनस, अजीर्ण, मूर्च्छा, कफजन्य घोर उपद्रव, सूजन, कामला, पाडुरोग, आदि सर्व रोगो को यह रस श्रीज्ञानज्योति शिवजी ने प्रकाश किया है । भागरे के रस मे इस रसको देवे और इसके खाने के बाद पवन रहित और मनुष्य रहित स्थान मे बहुत वस्त्र उढ़ा कर सुला देवे । तो एक ही क्षण में पसीने आकर ये चिन्ह होते हैं । मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिरना, देह मे वारवार दाह होना, ऐसे चिन्ह वैद्य देख कर रोगी का रोग गया कहे, और रोगी जो पथ्य मागे वही देवे । दही, भात, शीतल जल दे यह महा रस सर्व प्राणियो की दया विचार श्री शिवजी ने प्रकाश किया है ।

प्रभाकरः

रसेनगन्धंद्विगुणकृशानूरसैर्विमर्द्य श्चादिनं-सुघर्मे । रसाष्टभागत्वमृतंचदद्याद्विपाचये-द्धन्हिरसेनकिंचित्॥ पित्तैश्चसंभावितएषदेयो

त्रिदोषनीहारविनाशसूर्यः । अत्रभैरवरुधिरवर्णं ध्यायेत् ॥

पारा १ भाग, गंधक २ भाग, एकत्र कर चीते के रस से आठ दिन खरल करे धूप मे सुखा कर पारे का अष्टमाश सिंगियाविष डालकर चीते के रस मे पकावे । पश्चात् मछली आदि के पित्तो की भावना देकर एक रत्ती की गोली बनावे यह रस सन्निपात रूप अंधकार के दूर करने मे सूर्य्य के समान है, इस रस का सेवन कर्ता रोगी रुधिरवर्ण भैरव का ध्यान करे ।

कालाग्निभैरवोरसः

शुद्धंसूतद्विधागन्धंमर्द्दयेद्गोक्षुरद्रवैः ।
भावितंचविशोष्याथचूर्णयेदतिचिक्कणम् ॥
चूर्णतुल्यंमृतंताम्रंताम्रादष्टांशकंविषं ।
हिंगुलंरसभागचद्वौभागौकनकस्य च ॥
बाणभागोत्रगोदन्तःनेत्रभागामनःशिला ।
टंकणनेत्रभागचऋतुभागचखर्परम् ॥
ब्रह्मभागचजैपालंनेत्रभागंहलाहलम् ।
माक्षिकंचाग्निभागचलोहवंगैकभागकम् ॥
सर्वान्खल्वोदगेक्षिप्त्वाक्षीरेणार्कस्यमर्दयेत् ।
दशमूलकषायेणमर्दयेद्दिनमात्रकम् ॥
पंचमूलकषायेणतथैवचविमर्दयेत् ।
चणकाभावटींकृत्वाबलंज्ञात्वाप्रयोजयेत् ॥
सर्वत्रिदोषजंहन्तिसन्निपातसुदारुणम् ।
पूर्ववद्दापयेत्पथ्यंजलयोगंचकारयेत् ॥
पथ्यशाल्योदनंदेयंदधिभक्तसमन्वितं ।
कालाग्निभैरवोनामरसोऽयंभूरिपूजितः ॥

पारा १ भाग, गंधक २ भाग, दोनो की कजली कर गोखरू के रस से खरल करे, पीछे शुष्ककर चूर्ण करे, फिर चूर्णके बराबर मरा तावा-तावे का आठवा हिस्सा विष, हीगलू १ भाग, धतूरे के बीज २ भाग, गोदंती हरिताल २ भाग, मनसिल ३ भाग, सुहागा २ भाग, खपरिया ६ भाग, जमालगोटा १ भाग, हलाहल विष२ भाग, सोनामक्खी ३ भाग, लोह १ भाग, वंग १ भाग, सबको खरल मे पीस आक के दूध से खरल करे। पीछे दशमूल के काढे से एक दिन खरल करे, इसी प्रकार पचमूल के काढे से १ प्रहर खरल करे। पीछे इसकी चने के बराबर गोली बनावे, बलाबल देखकर देनी चाहिये। यह सर्व सन्निपातो को दूर करे। पहले रसो के सदृश पथ्य देवे। जल का तडा मस्तक पर देवे। तथा दही भात का भोजन करावे, यह कालाग्नि भैरव रस सत्पुरुषो करके माननीय है।

त्रैलोक्यचिंतामणि

रसभस्मत्रयोभागा.द्विभागचभुजगम ।
कालकूटंचषड्भागंभागैकंतालक तथा ॥
गोदन्तंगगनंतुत्थशिलागन्धकटंकरण ।
जयपालोन्मत्तदन्तीकरवीरचलांगली ॥
पलाशमूलजैर्नीरैःसप्तधाभावितदृढं ।
चित्रमूलकषायेणचाद्रंकस्यचवारिणा ॥
मत्स्य माहिषमायूरछागवाराहडुण्डुभम् ।
प्रत्येकंदशधामद्य शिलाखल्वेनसंक्षयात् ॥
धान्यद्वयांवटींकुर्यात्शुद्धवस्त्रेणधारयेत् ।
दातव्यचानुपानेननारिकेलोदकेनच ॥
ताम्बूलंचततोदद्यात्भक्ष्यंशीतोपचारक ।
तिलतैलेसदास्नानघृतमत्स्यादिभोजनम् ॥
शीताम्ल दधिसयुक्तं पुराणान्नचभक्षयेत् ।

पारा ३ भाग, सर्पविष २ भाग, कालकूट विष ६ भाग, हरिताल १ भाग, गोदंती १ भाग, अभ्रक १ भाग, लीला थोथा १ भाग, मनसिल १ भाग, गधक १ भाग, सुहागा १ भाग, जमालगोटा १ भाग, धतूरे के बीज १ भाग, दती १ भाग, कनेर की जड १ भाग, कलियारी की जड १ भाग, इन सब वस्तुओ मे ढाक की जड के काढे की सात भावना देवे। चित्रक के काढे से, अदरक के रस से, रोहू मछली का पित्ता, भैसे का पित्ता, मोरका पित्ता, बकरी का पित्ता, बाराह का पित्ता, डुडुभ सर्प का पित्ता, प्रत्येक मे दश २ बार खरल करे पीछे दो चावल के

अनुमान गोली बनावे। उनका सफेद स्वच्छ कपडे पर सुखा लेवे। इस गोली को नारियल के जल के साथ देवें और इसके ऊपर ताबूल खावे तथा सर्व शीतल वस्तु खावे। तिल के तेल का लगाना, सदैव स्नान करना, घृत मछली का भोजन, तथा शीतल, खट्टे, दही और पुराना अन्न खाना हित है।

रसेश्वरः

रसेनगन्धद्विगुणगृहीत्वातत्पादगन्धंरविता लहेमं। भस्मीकृतयोजितमर्दयेच्चदिनत्रय वन्हिरसेनधर्मे। विषचदत्वात्रिकलाप्रमाण मजादिपित्तैपरिभावयेच्च॥ गुञ्जाद्वयचास्य ददीतमात्राकटुत्रयेणार्द्र रसे प्रयुक्तं॥ तैलेन चाभ्यक्तवपुश्चकुर्यात् स्नानजलेनैवसुशीतलेन॥ यावद्भवेदुःसहमस्यशीतं मूत्रं पुरीषच शरीरकपः॥ पथ्येयदिच्छापरिजायतेऽस्य मरीचखण्डदधिभक्तकच॥ अल्पददीतार्द्र कमात्रशाक दिनाष्टकंस्नानमिदंचपथ्यम्॥

पारा ८ तोला, गधक १६ तोला तावा २ तोला, हरिताल २ तोला, सोना २ तोला, इन सबकी भस्म को चीते के रस मे तीन दिन खरल करे। पीछे इनका १६ वा भाग विष डाले, बकरी आदि पाचो पित्तो की भावना देकर दो रत्ती के प्रमाण गोली बनावे एक गोली अदरक के रस के साथ देवे तथा त्रिकुटा के काढे के साथ देवे। देह मे तेल लगाना, शीतल जल से स्नान करना जब तक अत्यन्त शीत-मल मूत्र का उतरना और देह मे कम्प होना न हो तब तक पूर्वोक्त कर्म करे, यदि रोगी को भोजन करने की इच्छा हो तो काली मिरच मिला दही, और मिश्री भात खिलावे और थोडा १ अदरक का शाक देवे। और आठ दिन पर्य्यन्त शीतल जल मे स्नान किया करे।

वड़वानलरसः

कान्तचमूतहरितालगन्ध समुद्रफेनलवणानि पंच॥ नीलांजनतुत्थकमेवरूप्य भस्मप्रवा लानिवराटिकांश्च॥ वैक्रातशम्बूकसमुद्रग क्ति सर्वाणिचैतानिसमानिकुर्य्यात्॥ सूत भवेद्द्वादशभागकंच स्नुह्यर्कदुग्धेर्विमर्द्य येच्च दिनत्रयं वन्हिरसैस्ततश्च निवेशयेत्ताम्रजसंपुटेतत्॥ मृदाचसलिप्यरसपुटेतद्रसस्ततः स्याद्वडवानलाख्यः॥ तत्पादभागेनविषं नियोज्य कृशानुतोयेनपचेत्सुर्णतत्॥ वात प्रधानेचकफप्रधाने नियोजयेत्त्र्यूषणचित्रयुक्तं॥ दोषत्रयोत्थेपिचसन्निपाते वाताधिकस्यादिहसूतकोक्तः॥

कात लोह, पारा, हरिताल, गधक, समुद्रफेन, पाचों नोन, नीलाजन, (सुरमा) नीला थोथा, रूपा, मूंगा की भस्म, कौडी की भस्म, वैक्रान (कावुला) शख और समुद्र की सीप की भस्म, ये सब भस्म समान लेवे, तथा पारा बारह भाग ले सबको खरल में मर्दन कर थूहर आक इनके दूध से तीन दिन खरल करे उसी प्रकार चीते के रस से ३ दिन खरल करे, तांवे के सपुट में वन्द कर उस पर कपरमिट्टी कर सुखावे, पीछे चूल्हे पर चढा कर अग्नि देवे. फिर चूल्हे से उतार उस भस्म का चतुर्थांश विष डाले, और चीते के रस से घोट कर फिर अग्नि देवे तो यह रस सिद्धि होवे वात प्रधान कफ प्रधान रोगो में त्रिकुटाका चूर्ण और और चीते के रस से देवे, सन्निपात तथा वाताधिक्य मे यह वडवानल पारा कहा है

अर्कमूर्त्तीरसः

लोहाष्टकमारितमर्कभागंसूतद्विभागद्विगुणंच गन्ध। विमर्दयेद्वन्हिरसेनतापेदिनत्रयंचात्रवि षंकलाश॥ निक्षिप्यपित्तैःपरिभावितोऽयर सौऽर्कमूर्त्तिर्भवतित्रिदोषे। ताम्रस्यपात्रेतुदि नैकमात्र निम्बूरसेनापिचपित्तवर्गैः॥ ह्यार्द्र कोत्थेनरसेनसूतःत्रिदोषदावानलऐपसिद्धः गुञ्जात्रयत्र्यूषणयुक्तमस्यददीतचित्रार्द्ररसेन

वापि ॥ नासापुटेचापिनियोनीयागुंजा स्यशुंठीमरिचेनयुक्ता [यदिताम्रपात्रेजम्बीरादिरसैःपुनरपिभावयेत्तदात्रिषोदावानलोभवति] ॥

अष्टलोह (सोना, चांदी, तांबा, सीसा, जस्ता, रांग, लोहा और पीतल) की भस्म बारह भाग लेवे, पारा २ भाग, गंधक ४ भाग, इन सबको धूप मे रख के तीन दिन चीते के रससे खरल करे पीछे सब औषधियोका सोलहवा भाग विष डाले, और बकरी आदि के पित्तों की भावना देवे। तो यह रस बने। यदि इस रसको तांबेके पात्रमे रख के नीबू के रस की तथा बकरी आदि के पित्तो की भावना देवे तथा कटेरी और अदरक के रसकी भावना देवे तो त्रिदोप दावानल कहाता है इस की दो रत्ती की मात्रा त्रिकुटा के चूर्ण और अदरक तथा चीते के रस के साथ देवे। तथा नास देवे, नास मे एक रत्ती रस सोठ मिरच के साथ देवे तो सर्व सन्निपातो को दूर करे।

त्रिदोप दावानल कालमेघः

तालेनवंगशिलयाचनागंरसै सुवर्णरवितारपत्र। गन्धेनलोहदरदेनसर्वंपुटैर्मृतयोजयतुल्यभाग ॥ तत्तुल्यसूतद्विगुणचगधतुल्यचगन्धेन समानभाग। निम्बूत्थतोयेनविमर्द्य सर्वंगोल प्रकृत्वाथमृदाविलिप्य ॥ पुटंचदत्वाथविमर्द्येनगन्धेनतुल्येनकृशानुनीरैः। विषचदत्वाथकलाप्रमाणमीषत्कृशानुत्थरसैःपचेत्तु ॥ पित्तैस्तथाभावितएषसूतत्रिदोषदावानल कालमेघ। वल्लंददीतास्यचपूर्वयुक्त्यादद्यात्तरंतमधुपिप्पलीभि ॥ मुद्गश्चशाल्यन्नमिह प्रशस्तंपथ्यभवेत्कोष्णमिददिवान्ते। रसेश्वरादिकालमेघान्तारसाः वातोल्वणेसन्निपाते प्रयोज्याः ॥इतिसारकौमुद्यांमाधव।

हरिताल से वंग, मनसिल से सीसा, पारे से सुवर्ण, ताबे तथा चांदी के पत्र तथा गंधक से लोहा भस्म किया हुआ लेवे। अथवा हींगलू से सर्व धातु फुकी हुई लेवे। इन सब की भस्म बराबर लेके सबकी बराबर पारा और पारे से दूनी गंधक और गन्धक के बराबर नीला थोथा, सब को नीबू के रस मे खरल करे गोला बनावे उसके ऊपर कपर मिट्टी कर पुटपाक करे तदनंतर पारे के समान गन्धक डाल चीते के रस मे खरल करे, पीछे सबका सोलहवा भाग विष डाल, चीते के रस से घोट कुछ पाक करे, इसमें बकरी आदि के पित्तो की भावना देवे तो यह त्रिदोष दावानल काल मेघ रस सिद्ध होय। इसकी दो रत्ती के प्रमाण गोली करे एक गोली पूर्वोक्त प्रकार के अनुसार देवे, दाह प्रधान ज्वर में पीपल के चूर्ण और सहत के साथ देवे सायंकाल मे रोगी को मूंग चावल दही, दूध भोजन को देवे। रसेश्वर रस से लेकर काल मेघ पर्य्यंत जितने रस है वो वातोल्वण सन्निपात मे देने चाहिये। यह सार कौमुदी मे माधवने कहा है।

श्रीप्रतापलंकेश्वरोरसः

अपामार्गस्यमूलानांचूर्णंचित्रकमूलजैः।
वल्कलैर्मर्दयित्वाथरसंवस्त्रेणगालयेत् ॥
तेनसूतसमंगन्धमभ्रकंपारदंविष।
टंकणतालकंचैवमर्दयेद्दिनसप्तकम् ॥
त्रिदिनमूशलीकन्दैर्भावयेत्धर्मरक्षित।
मूषांचगोस्तनाकारामापूर्योपरिढक्कयेत् ॥
सप्तभिर्मृत्तिकावस्त्रैर्वेष्टयित्वापुटेल्लघु।
रसतुल्यलोहभस्ममृतवंगमहिस्तथा ॥
मधूकसारजलदंरेणुकंगुग्गुलशिला।
चाम्पेयंचसमांशस्याद्भागार्द्धं शोधितविषं ॥
तत्सर्वंमर्दयेत्खल्वेभावयेद्विषनीरतः।
आतपेसप्तधातीव्रेमर्दयेत्घटिकाद्वयम् ॥६॥
कटुत्रयकषायेणकनकस्यरसेनच।
फलत्रयकषायेणमुनिपुष्परसेनच ॥७॥
समुद्रफेन्नीरेणविजयापत्रवारिणा।
चित्रकास्यकषायेणज्वालामुख्यारसेनच ॥८॥
प्रत्येकंसप्तधाभाव्यतद्वत्पित्तैश्चपंचभिः।
सर्वस्यसमभागेनविषेणपरिपूरयेत् ॥९॥

विमर्द्य मूर्च्छियित्वा चालयेत्कूपिकोदरे ।
गुञ्जैकं वह्निनीरेणशृङ्गवेररसेन च ॥१०॥
दद्याच्च रोगिणे तीव्रमोहविस्मृतिशान्तये ।
छुरेणतालुमाहत्य घर्षयेद्द्राद्रनीरतः ॥११॥
नोद्घटन्ते यदा दन्तास्तदा कुर्यादिमुं विधिं ।
सेचयेन्मन्त्रविद्वै द्योवारांकुम्भशतैर्नरः ॥१२॥
भोजनेच्छा यदा तस्य जायते रोगिणः परम ।
दध्योदनं शतायुक्तं दद्यात्तक्रं सजीरकम् ॥१३॥
पाने पानं सिता जातं यदिच्छेत्तद्ददानि तत् ।
एवं कृते न शांतिस्यात्तापस्य च रुजस्य च ॥१४॥
सचद्रचन्दनरसालेपनं कुरु शीतल ।
यूथिकामल्लिकाजातीपुन्नागवकुलावृताम् ॥१५॥
विधाय शय्यां तत्रस्थलेपनैश्चन्दनैर्मुहुः ॥
हावभावविलासोक्तैः कटाक्षैश्चचलेक्षणैः ॥१६॥
पीनोत्तुंगकुचापीडैः कामिनीपरिरम्भणैः ।
रम्यवीणानिनादोक्तैः गायनैः श्रवणामृतैः ॥
पुण्यश्लोककथाद्यैश्चसन्तापहरणं कुरु ।
दद्याद्वातेषु सर्वेषु सिन्धुजैः सहवन्हिभिः ॥१८॥
दद्यात्कणामाक्षिकाभ्यां कामलाद्यपांडुषु
तत्तद्रोगानुपानेन सर्वरोगे प्रयोजयेत् ॥१९॥
अथ प्रतापलंकेशः सन्निपातहरः परः ॥२०॥

ओंगा की जड, चीते की जड की छाल, दोनो को जल मे पीस कर कपडे मे छान लेवे। पीछे इस रस के समान पारा, गधक, अभ्रक, विष, सुहागा, और हरिताल, सन को लेकर उसी चीत और ओंगा के रस मे ७ दिन खरल करे, पीछे ३ दिन मूसली के रस में खरल करे, और धूप में सुखावे । तत्पश्चात् इसको मूषामें धर ढकना से ढक देवे, पीछे इस पर सात कपर मिट्टी कर लघुपुट मे फूक देवे, फिर लोह भस्म, वग भस्म, सीसा की भस्म, मुलहटी, नागरमोथा, रेणुक, गुग्गुल, मनसिल और नागकेशर, इन सबको पारे के सामन लेवे और अर्ध भाग विष सबको कूट पीस सिंगिया विषके काढेसे सात भावनादे, फिर दो २ घडी धूप में रखकर घोटे पीछे त्रिकुटाके काढे से, धतूरेके रससे, त्रिफला के काढेमे, अगस्तिया पुष्प के रसमे, समुद्र फेनके रस से, भागके रसमे, चीतेके काढेमे, और ज्वालामुखी के रस से प्रत्येक की सात २ भावना देवे। उसी प्रकार बकरी, वाराह, मछली, भैंसा, और मोर इनके पित्तों की पृथक २ सात २ भावना देवे पीछे सबके समान विष मिलाकर खरल करे फिर पूर्व लिखित पारदादि सहित सर्व औषधि इकट्ठी कर काँच की शीशी मे भर कर रख छोडे, एक रत्ती यह रस चीते के रस मे अथवा अदरक के रस से रोगी का मोह दूर करने को देवे तथा छुरे से तालुए को चीर कर इस रस को अदरक के रस मे पीस कर भर देवे, तो रोगी होश मे आजावे। यदि इस प्रकार से भी रोगी के दातों की बत्तीसी न खुले तो यह विधि करे कि मत्र पढ कर १०० घडे शीतल जल से रोगी को स्नान करावे। तो सन्निपात की मूर्च्छा जाती रहे यदि रोगी को भोजन की इच्छा हो तो दही, भात, मिश्री तथा जीरा मिली छाछ देवे। पीने को शरबत देवे, जिस वस्तु पर इच्छा हो वही देवे। इस प्रकार करने से रसकी गरमी और रोग की शांति होती है। तथा कपूर, केवडे मिले चन्दन को लगावे, और चमेली, पुन्नाग, मौरसिरी के फूलो की सेज बना कर उस पर सोवे, बार, २ चन्दन लगाता रहे। हाव, भाव कटाक्षादि विलासवती स्त्रियो से आलिंगन करना। रमणीक शब्द वाले वीणा आदि बाजों का सुनना, सुनने मे प्रिय ऐसे गीतो का सुनना, भारतादि शास्त्रो का सुनना, इत्यादि कर्मों से इस रस की गरमी को दूर करे सर्व वात रोगो में चीते के चूर्ण और सेंधे नोन के साथ देवे। कामला, चर्ई, पाडुरोग, आदि मे पीपल का चूर्ण और सहत इनके साथ देवे। पृथक् २ अनुपान से सर्व रोगों मे देना चाहिये, यह प्रताप लकेश रस सर्व सन्निपात हरण कर्त्ता है।

कफकेतुरसः

टंकणमागधीशंखवत्सनाभंसमंसमं ।

आर्द्रकस्वरसेनाथ दापयेद्भावनात्रयम् ॥
गुंजामात्रं प्रदातव्यमार्द्रकस्वरसैर्युतम् ।
पीनसे श्वासकासे च शिरोरोगे गलग्रहे ॥
कफरोगान्निहन्त्याशु कफकेतुरयं रसः ।

सुहागा, पीपल, शंख की भस्म, वत्सनाभ विष, इन सब को बराबर लेकर अदरक के रस की ३ भावना देवे, एक रत्ती की गोली बनावे। एक गोली अदरक के रस के साथ देवे तो पीनस, श्वास, खांसी, मस्तक रोग, गले के रोग और कफ के रोगों को यह कफकेतु रस दूर करता है।

द्वितीयकफकेतुरसः

दग्धशंखत्रिकटुकटंकणसमभागिक ।
विषचपर्चाभरतुल्यमार्द्रतोयेनमर्दयेत् ॥
वारत्रयरक्तिकांचवटींकुर्याद्विचक्षण ।
प्रातःसायंचवटिकाद्वयमार्द्रकवारिणा ॥
कफकेतुःकंठरोगशिरोरोगंचनाशयेत् ।
पीनसकफसंघातसन्निपातसुदारुणम् ॥

शंख की भस्म, त्रिकुटा, सुहागा, ये सब बराबर लेवे और सबकी बराबर विष लेवे। सबको अदरक के रस मे खरल करे, इस प्रकार तीन भावना देकर एक रत्ती के अनुमान गोली बनावे। सायंकाल और प्रातःकाल दो गोली अदरक के रस के साथ खावे तो यह कफकेतु रस कंठ के रोगों को शिर के रोगों को, पीनस और कफ समूह और सन्निपात को दूर करे।

श्लेष्मकालनलोरसः

हिंगुलसम्भवसूतगन्धकमृतताम्रक ।
तुत्थमनोह्वातालचकटुफलधूर्त्तबीजकम् ॥
हिंगुंसमाक्षिककुष्ठत्रिवृद्दंतीकटुत्रिक ।
व्याधिघातफलवंगटंकणसमभागक ॥
स्नुहीक्षीरेणवटिकांकारयेत्कुशलोभिषक् ॥
विज्ञायकोष्टकालंचयोजयेद्रक्तिकाक्रमात् ॥
वातश्लेष्मणिमन्दाग्नौपित्तश्लेष्माधिकेऽपिच
जीर्णज्वरेचश्वयथौसन्निपातेकफोल्वणे ।
बलासप्रबलत्यक्ताधातुंवातात्मकेनयेत् ।
सेवनात्सर्वरोगघ्नःश्लेष्मकालानलोरसः ॥

हींगलू से निकाला पारा, गंधक, विष, तांबा, नीलाथोथा, मनसिल, हरिताल, कायफर, धतूरे के बीज, हींग, सोना मक्खी, कूठ, निसोथ, दन्ती, त्रिकुटा, अमलतास का गूदा, बंग और सुहागा, सब समानले। सबको कूट पीस थूहर के दूध से एक २ रत्ती की गोली बनावे। रोगी का कोठा तथा देश काल को विचार कर एक गोली देवे। वात कफ के रोगों में मन्दाग्नि मे, पित्त कफ के रोगो मे, जीर्ण ज्वर मे सूजन मे, कफोल्वण सन्निपात मे देवे प्रबल कफ को, और संपूर्ण वात के रोगों को दूर करे इस श्लेष्मकालानल रस के सेवन से सर्व रोग-दूर होवे।

स्वल्पकस्तूरीभैरवोरसः

हिंगुलंचविषटंकंजातीकोषफलंतथा ।
मरिचपिप्पलीचैवकस्तूरीचसमांशिका ॥
गुंजाद्वयंततःखादेत्सान्निपातसुदारुणे ।

हिंगुल, विष, सुहागा, जायफल, मिरच, पीपल, सब बराबर लेवे। और सबकी बराबर कस्तूरी डाले। दो रत्ती के अनुमान रोगी को देवे तो दारुण सन्निपात दूर होवे।

मध्यकस्तूरीभैरवोरसः

मृतवंगखर्परंचहिरण्यंतारतालकं ।
एतेषांसमभागेनकर्षमेकंपृथक्पृथक् ॥
मृतकांतपलंदेयंहेमसारार्द्धकार्षिकं ।
रसभस्मलवंगचजातिकाफलमेवच ॥
वक्ष्यमाणौषधैर्भाव्यंप्रत्येकंदिनसप्तकं ।
द्रोणपुष्पीरसैर्वापिनागवल्यारसेनच ॥
द्विचन्द्रोत्रिकटुर्देयोयत्नतोवटिकाचरेत् ।
वातात्मकेसन्निपातेमहाश्लेष्मगदेपुच ।

त्रिदोषजनितेघोरेसन्निपातातिदारुणे ॥
नष्टगर्भेनष्टशुक्रे प्रमेहेविषमज्वरे ।
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेमहाशोथेमहागदे ॥
स्त्रीणांशतंगच्छतिचनचशुक्रक्षयोभवेत् ।
एतान्सर्वान्निहंत्याशुतमसूर्योदयेयथा ॥

वग की भस्म, खपरिया, सुवर्ण, चांदी, हरिताल, इन सबको एक २ कर्ष लेवे। कांत-लोह को भस्म एक पल, कस्तूरी दो कर्ष, पारे की भस्म दो कर्ष, लोंग दो कर्ष, जायफल दो कर्ष, इन सबको आगे जो औषधि लिखते हैं उनके रस की सात दिन भावना देवे। गोमा के रस मे, नागरवेल पान के रस से खरल करे। कपूर और कबीला त्रिकुटा मिला कर यत्नपूर्वक गोली बनावे। वातात्मक सन्निपात मे, घोर कफ के रोगो मे, त्रिदोष जनित सन्निपात मे, नष्ट गर्भ मे, नष्टशुक्र मे, प्रमेह और विषमज्वर मे, खांसी, श्वास, खई, गोला, और सूजन, इन रोगों मे इस रसको देवे। सौ स्त्री गमन करने से भी शुक्र क्षीण न होवे। यह रस सर्व रोगो को नष्ट करता है। जैसे सूर्य के उदय से अन्धकार नष्ट होता है।

बृहत्कस्तूरीभैरवोरसः

मृगमदशशिसूर्य्याधातकीशूकशिंबी ।
रजतकनकमुक्ताविद्रुमलोहपाठा ॥
कृमिरिपुवनविश्वावारितालाभ्रधात्री ।
रविदलरसपिष्टंसर्वरोगान्तकारी ॥१॥
कस्तूरीभैरवःख्यातसर्वज्वरविनाशनः ।
आर्द्रकस्यरसै पेयोविषमज्वरनाशनः ॥
द्वद्वजान्भौतिकान्वापिज्वरान्कामादिसम्भवान्। अभिचारकृतांश्चैवतथाशस्त्रकृतान्पुनः निहन्याद्क्षणादेवडाकिन्यादियुतास्तथा। बिल्वचूर्णनीरकाभ्यामधुनासहपानतः ॥ आमातिसारंग्रहणींज्वरातीसारमेवच।
अग्निदीपकरःशान्तःकासरोगनिकृन्तनः ॥
क्षपयेद्क्षणान्देवमेहरोगहलीमकम् ।
जीर्णज्वरनूतनवाद्धिकालीनचसततम् ॥
प्रक्षिप्तंभौतिकवापिहंतिसर्वान्विशेषतः ।
एकाहिकंद्वाहिकवात्र्याहिकंचचतुर्थकम् ॥
पंचाहिकंपष्टसंस्थपाक्षिकमासिकतथा ।
सर्वान्ज्वरान्निहंत्याशुभक्षमाणमथार्द्रकैः ॥

कस्तूरी, कपूर, तांबा, धायकेफूल, कौंचकेबीज, चादी, सोना, मोती, मूंगा, लोह, पाढ, वायविडग, मोथा, सोठ, नेत्रबाला, हरिताल, अभ्रक आवले, इन सब औषधियोंको आकके पत्तों क रसमे खरल कर रस तयार करे यह सर्व रोगातकारी है। यह कस्तूरी भैरव नाम से प्रसिद्ध रस सर्वज्वर नाशक है अदरक के रससे पिये तो सर्व विषमज्वर नाश करे। द्वंद्वज (इकतरा, तिजारी आदि) भौतिक और काम, क्रोधजनित ज्वर, अभिचार जनितज्वर, तथा शस्त्रकृत और डाकिनी आदिके ज्वरों को यह रस सेवन करते ही नाश करे। बेलकाचूर्ण जल और शहत इनके साथ सेवन करे तो आमातिसार, संग्रहणी, ज्वरातिसारको दूर करे। अग्नि को दीप्त करे, खासी, प्रमेह, हलीमक, जीर्णज्वर, नवीनज्वर, दो समय आनेवाला, सततज्वर, और भौतिकज्वर, एकाहिक, द्वाहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, पचाहिक, छठे दिन का, पाक्षिक, मासिकज्वर इत्यादि सर्व रोगो को अदरक के रसके साथ भक्षण करने से दूर करे।

कालानलरसः

रसगन्धमृताभ्र चटकणाचमन शिला ।
हिंगुलगरलदारु विषताम्र चतत्सम ॥
विडालपदमात्रन्तुसर्वशुद्ध विचूर्णयेत् ।
भावनाचप्रदातव्यलागलीमूलकतथा ॥
घोषामूलतथादेयमूलंलोहितचित्रकम् ।
अपुष्पफलभूधात्रीमूलभ्रमररुद्रकम् ॥
छागवाराहमायूराःमहिषोमत्स्यएवच ॥
एतेषांचददेत्पित्तमार्द्रकस्यरसेनच ।
प्रत्येकमर्दितशुष्ककणामात्राप्रमाणतः ॥
अत्रभ्रमरोभ्रमरेष्टाभागोइत्यर्थः ।

पारा, गंधक, अभ्रक की भस्म, सुहागा, मनसिल, हींगलू, सर्पविष, देवदारु, सिंगिया-विष और ताबा सब एक २ तोले लेवे । सब का चूर्ण कर कलियारी के रस की भावना देवे। काकडासिंगी के रसकी, ऊटकटेरीके रस की, पनसके रसकी, आंमले की, सोनापाठ, मोर-सिरी के रसकी पृथक् २ भावना देवे। पीछे बकरी, सूअर, भैंसा, मोर, मच्छली इनके पित्तों की भावना पृथक् २ अदरक के रस मे देवे। बहुत छोटी गोली करे। इस गोली को सन्निपात मे देवे।

मृतसंजीवनीसुरा.

गुडंद्रोणसमंग्राह्य वर्षादूर्द्ध्वंपुराननम् ।
वाबूरीत्वचमादायदापयेत्पलविंशतिम् ॥१॥
दाडिमीवृषभोचचुवराक्रान्ताऽरुणातथा ॥
अश्वगन्धादेवदारुबिल्वश्योनाकपाटलाः॥२॥
शालपर्णीपृष्ठपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुर ।
बदरीन्द्रवारुणीचित्र स्वयगुमापुनर्नवा ॥३॥
एषांदशपलान्भागानकुट्टयित्वाउदूखले ।
सुगभीरेचमृद्भाडेतोयमष्टगुणंक्षिपेत् ॥४॥
गुडसंगोलनकृत्वाएतैसम्पूरयेद्बुधः ।
मुखंशरावकंदत्वारक्षयेद्दिनविंशतिम ॥५॥
षोडशादिवसादूर्द्ध्वं द्रव्यानीमानिदापयेत ।
पूगप्रस्थद्वयंचात्रकुट्टयित्वाविनिक्षिपेत ॥६॥
धत्तूरदेवपुष्पञ्चपद्मकौशीरचन्दनम ।
शतपुष्पोयवानीचमरिचजीरकद्वयम् ॥७॥
शु ठीमांशीत्वगेलाचसजातीफलमुस्तकम ।
ग्रन्थिपर्णीतथाशु ठीमेथीमेषीचचन्दन ॥८॥
एषांद्विपलिकान्भागानकुट्टयित्वाविनिक्षि
पेत। मृन्मयेमोचिकायंत्रेमयूराख्येऽपियत्रके॥
यथाविधिप्रकारेणचालनन्दापयेद्बुध ।
बुद्धिमान्सोज्वलकृत्वाउद्धरेद्विविवत्सुराम्
एतन्मद्य पिबेन्नित्यंयथाबानुवय.क्रम ।
देहदार्ढ्यकरंपुष्टिबलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥११॥
सन्निपातज्वरेघोरेविषूच्याचमुहुर्मुहुः ॥
शीतेदेहप्रयोज्योयंमृतसंजीवनीसुरा ॥१२॥

एक वर्ष का पुराना गुड ३२ सेर लेवे, बबूलकी छाल ८० तोले, अनारकीछाल, अडू-सेकीछाल, मोचरस, वराहीकंद, मजीठ, असगंध, देवदारु, बेलगिरी, श्योनाक, पाढलकीछाल, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेरी, बडी-कटेरी, गोखरू, बेर, इन्द्रायण, चीता, ताल-मखाना, सांठकीजड, प्रत्येक ओषधि दश २ पल लेवे। तथा जल २५६ सेर सब औषधियों को कूटकर इस जल मे डाले, सब को एक बडे मिट्टी के पात्र मे भर उस मे गुड घोल देवे। पीछे इस पात्र का मुख बंद कर बीस दिन रक्खा रहने देवे, जब १६ दिन व्यतीत हो जावे, तब इतनी वस्तु और डाले। दक्षिणी सुपारी ४ सेर कूटकर डाले। धतूरा, लोंग, पद्माख, खस, लालचन्दन, सोंफ, अजवायन, काली मिरच, दोनों जीरे, कचूर, जटामासी, दाल-चीनी, छोटी इलायची, जायफल, नागरमोथा, ग्रन्थिपर्णी, सोंठ, मेथी, मेढासिंगी, और सफे-दचन्दन प्रत्येक दो २ पल लेवे। सब को कूट-कर इसी पात्र में डालदे, पीछे इसी प्रकार मुख बंद कर चारदिन रक्खा रहने देवे, पीछे चक्र-यंत्र द्वारा अथवा मिट्टी के मयूरयंत्र द्वारा जो मोचियों के होता है। इसके द्वारा यथा विधि इस आसव को निकाले। बुद्धिमान् पुरुष इस आसव को उज्ज्वल पात्र मे भरकर रख छोडे इसको बलाबल, दोष, धातु और अवस्था देख कर देवे तो देह को दृढ करे, पुष्टकरे, बल, वर्ण और अग्नि को बढावे। सन्निपातसे घोरज्वर मे विषूचिका (हैजा) में तथा शीतांग मे इस मृत-सञ्जीवनी सुराको देना चाहिये।

मृगमदासवः

मृतसञ्जीवनी ग्राह्य पचाशत्पलसंमिता ।
तदर्द्ध मधुसग्राह्य तोयंमधुसमंतथा ॥१॥
कस्तूरीकुडवंतत्रमरिचंदेवपुष्पकं ।
जातीफलंपिप्पलींत्वक्भागंद्विपलिकांक्षिपेत

भांडेसंस्थाप्यरुद्धाचनिदध्यान्मासमात्रक ।
विशूचिकायांहिक्कायांत्रिदोषप्रभवेज्वरे ॥
वीक्ष्यकोष्ठबलंचैवाभपक्कमात्रांप्रयोजयेत् ॥

मृतसंजीवनी आसव ५० पल लेवे, शहत २५ पल, जल २५ पल, कस्तूरी ४ पल, मिरच, लोंग, जायफल, पीपल, तज, प्रत्येक दो २ पल लेवे। सब को कूट एकत्र कर उस जल और शराब, शहत से मिलाय पात्र मे भर मुख बंद कर एक महीने रखा रहने देवे, पीछे इस अर्क को विषूचिका, हिचकी, तथा त्रिदोष जनित ज्वर मे कोष्ठ और बलाबल देख कर देवे तो सर्व रोग नष्ट होवे

इतिसन्निपाताधिकारः

अथविषमज्वराधिकारः

ज्वरमातंगकेशरीरसः

पारदगन्धकंचैवहरितालसमाक्षिकम् ।
कटुत्रयंतथापथ्याक्षारौद्वौसैंधवंतथा ॥१॥
निम्बस्यविषमुष्टेश्चबीजंचित्रकमेवच ।
एषांमाषमितभागंग्राह्यप्रतिसुसंस्कृतम् ॥२॥
द्विमाषंकनकफलविषं चापिद्विमाषकम् ।
निर्गुंडीस्वरसेनैवशोषयेतत्प्रयत्नतः ॥३॥
सार्द्ध गुंजाप्रमाणेनवटीकार्यासुशोभना ।
सर्वज्वरहरीचैषाभेदनीदोषनाशनी ॥४॥
आमाजीर्णप्रशमनीकामलापाण्डुरोगहा ।
वन्हिदीप्तकरीचैषाजठरामयनाशनी ॥५॥
उष्णोदकानुपानेनदातव्यंहितकारिणी ।
भाषितोलोकनाथेनज्वरमातंगकेशरी ॥६॥

पारा, गंधक, हरिताल, सोनामक्खी त्रिकुटा, हरड, जवाखार, सज्जीखार, सधा नोन निबौरी, कुचला, चीते की छाल, प्रत्येक एक एक मासे लेवे। जमालगोटा दो मासे, सिंगियाविष दो मासे, सबको कूट छान निर्गुंडी के रस में खरल कर १॥ रत्ती के प्रमाण गोलिया बनावे। यह सर्वज्वरों को हरण करे, दस्तावर है, तथा सर्व दोष नाशिनी है। आमाजीर्ण, कामला, पाण्डुरोग, उदर रोग इन सबको दूर करे। अग्नि दीप्त करे। इस गोली को गरम जल के साथ लेवे यह लोकनाथ का कहा ज्वरमातंग केशरी रस है।

सुंबलादिज्वरांकुशः

श्वेतक्षारंतुत्थकंचतालकशंखभस्मच ।
समभागसमादायचूर्णंकृत्वातुभावना ॥
कारवेल्लरसेनैवसप्तधापरिकीर्त्तिता ।
सिद्धोरसोनागवल्ली दलेगुंजामितोवुधैः ॥
शीतज्वरेप्रयुक्तोयंनाशयेद्विषमज्वरान् ।
अयज्वरांकुशोनाम्नोविख्यातोरसराजके ॥
पथ्यंशीघ्रं प्रदातव्यंगोदुग्धंनसहौदनं ।

सुंबलखार, नीला थोथा, हरिताल, शंखकी भस्म, सबको बराबर ले सबका चूर्ण करे। और करेले के रस की सात भावना देवे। जब रस सिद्धि होजावे तब नागरबेलि के पान मे एक रत्ती खाय तो यह शीतज्वरादि विषमज्वरों को नाश करे। यह ज्वरांकुश रसराजग्रंथ मे विख्यात है इसके ऊपर शीघ्र दूध भात का पथ्य देना चाहिये।

तालकादिज्वरांकुशः

तालकशुक्तिकाचूर्णंतुल्यंतत्रोभयोरपि ।
नवमांशंचतुत्थस्यान्मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥
तत्तुसंशुष्कमुपलैर्वन्यैर्गजपुटेपचेत् ।
शीततच्चूर्णयेच्चूर्णंगुंजामात्र सितायुत ॥
प्रभातेभक्षयेत्तेनयातिशीतज्वरः क्षयम् ।
वातिभिर्वातिकस्यापिकस्यापिनभवत्यपि ॥
एकेनदिवसेनैवशीतज्वरहरंपर ।
मध्यान्हसमयेपथ्यंभक्तंशिखरणीयुतं ॥

हरिताल, सीप का चूर्ण, दोनो बराबर लेवे, इनका नवमांश नीलाथोथा डाले, सबको घीगुवार के रस मे खरल करे, फिर सुखाकर आरने कंडों से गजपुट मे फूंक दे जब शीतल होजाय तब पीसके एक रत्ती मिश्री के साथ प्रातःकाल

देवे तो शीतज्वर दूर होवे। इसके खाने से किसी को रद्द होती है तो किसी को नहीं एक ही दिन मे शीतज्वर दूर हो मध्याह्न में शिखरण भात का पथ्य देवे।

द्वितीयतालकादिज्वरांकुशः

एककर्षभवेत्तालद्विकर्षतुत्थकभवेत्।
षट्कर्षभृष्टशुक्तीनांचूर्णमेकत्रकारयेत्॥
धत्तूरपत्रस्वरसैर्मर्दयेद्यामभात्रकम्।
निधायभाजनेलोहेसमर्द्यक्रमशोबुधैः॥
उप्यर्यग्ने स्थापयित्वातद्रसंशोषयेद्भिषक्।
पुनःपथ्यु पितप्रातर्गृहीत्वाकिंचिदग्नितः॥
कोष्टं कृत्वाकल्कमेतत्ततोवस्यःप्रसाधितः।
चणकप्रमितास्तासामेकाशर्करयासहः।
शीतज्वरनिहन्त्येवसर्वनास्त्यत्रसंशयः॥

हरिताल १ कर्ष, नीलाथोथा २ कर्ष, सीप की भस्म ६ कर्ष, सबका एकत्र कर धतूरे के पत्तो के रस में एक प्रहर घोटे। तदनतर लोहे के पात्र में भर के मर्दन करे, पीछे इस पात्र को अग्नि पर रख कर सुखा देवे। पीछे प्रात काल कुछ गीलाकर अग्नि पर घोट चने के प्रमाण गोली बनावे। एक गोली मिश्री वा कच्ची खाड से खाय तो शीतज्वर मात्र को दूर करे।

तुत्थकादिज्वरांकुशः

तुत्थशंबूकतालानांद्विगुणानांयथोत्तरम्।
चूर्णंकुमारिकाद्रावैर्घृष्ट्वागोलंप्रकल्पयेत्॥
द्वाभ्यामेरंडपत्राभ्यांतद्गोलंवध्यतेबुधैः।
सरावसंपुटेधृत्वापुटेद्गजपुटेनतु॥
स्वागशीतसमुद्धृत्यचूर्णयित्वानिधापयेत्।
गुंजात्रयसितायोज्याखादेत्सर्वज्वरापहम्॥
पथ्यक्षीरोदनदेयंनिहन्तिविषमज्वरान्।

नीला थोथा, सीप की भस्म हरिताल, प्रत्येक एक एक से दूनी लेवे। सबका चूर्ण कर घीगुवार के रससे खरल करे। पीछे गोला बना कर अरंड के पत्तो से चारो ओर लपेटे। सराव सपुट मे रख गजपुट मे फूक देवे। स्वाग शीतल होने पर निकाल कर चूर्ण करे। तीन रत्ती चीनी के साथ खाय तो सर्वज्वर दूर होवे, और दूध भात का पथ्य देवे।

लंकेश्वरोरसः

तालकमाक्षिकतुत्थ हरबीजसगधकम्।
कर्कोटीपत्रतोयेनमर्दयेद्दिनसप्तक॥
चुल्यांपाच्यंचतुर्यामसशर्करज्वरापहः।
अयंलंकेश्वरोनामशीतमातंगकेशरी॥१॥

हरिताल, सोनामक्खी, नीलाथोथा, पारा, गधक, सबको ककोडा के रस मे सात दिन घोटे। पीछे चूल्हे पर चढा कर ४ प्रहर पचावे। इस रस को मिश्री के साथ खाय तो सर्व ज्वर दूर होवें। यह लकेश्वर रस शीतज्वर रूप हाथी को सिंह रूप है।

मेघनाद वा आरादिज्वरांकुशः

आरंकांश्यंमृतताम्रंत्रिभिस्तुल्यंतुगन्धक।
क्वाथेनमेघनादस्यपिष्ट्वारुध्वापुटैःपचेत्॥
षड्भिस्तुजायतेसिद्धो मेघनादोज्वरापहः।
पर्णखंडेनमाषैकंविषमज्वरनाशनम्॥

लोहभस्म, कांसे की भस्म, तावे की भस्म, तीनो की बराबर गंधक सबको चौलाई के काढे से घोटे। पीछे संपुट मे रखकर फूक देवे छः पुट से भस्म होवे। यह मेघनाद रस पान के साथ खाने से विषमज्वर को दूर करे।

मनःशिलादिज्वरांकुशः

मनःशिलाबलिरसैर्भागैर्वन्हिकरेन्दुभि।
कुमारीरससम्पिष्टं कृत्वागोलन्तुशोभनम्॥
युगभागमितेसूदमेताम्रसम्पुटकेन्यसेत्।
ततस्तुवालुकायन्त्रे पचेद्यामंतुचाष्टकम्॥
स्वागशीतसमुद्धृत्यचूर्णयित्वानिधापयेत्।
गुंजात्रयंशर्करयाह्याद्र्कस्यरसेनच॥
दद्यात्समस्तविषमान्ज्वरान्हन्तिनसंशय।
पथ्यंक्षीरोदनदेयंमुद्गयूषोरसोदनम्॥

मनसिल, पारा, गंधक, ये क्रम से ३-१

और २ भाग ले सबको ग्वारपट्ठे के रस से घोट कर गोला बनावे, पीछे मनसिल आदि सबसे दूने तावे का सम्पुट बनाय उसमें घुटी हुई औषधि धरे, और वालुका यंत्र में आठ प्रहर पचावे। स्वांग शीतल होने पर रस को निकाल चूर्ण करे, इसमें से तीन रत्ती खाड वा अदरक के रस के साथ खावे तो सर्व विषमज्वर दूर होवे, दूध भात और मूंग का यूप पथ्य देवे।

तालेश्वर रस

समर्थ रम्भासलिलेनतालचूर्णेनतुल्यदिवसत्रयेण। शुद्धं सखण्डंर्वानिहन्तिमुद्गमानपयोन्नासिनयेततापम्॥

हरिताल को केला के रस से तीन दिन खरल करे पीछे मूंग के सामन गोली बनावे खाड के साथ १ गोली खाय ऊपर दूध, भात खाय तो ज्वर जाय।

रससिन्दूरादि वटी

रससिन्दूरटंकैकंटंकैकगन्धकस्यच।
टंकणत्रिकुटानाचटंकैकंचप्रदापयेत्॥
रक्तिकाद्वितयतुत्थयोजयेद्वैद्यसत्तम.।
भृंगराजरसैर्भाव्यवटींकुर्याद्विचक्षणः॥
आर्द्रकस्यानुपानेनप्रदेयंरक्तिकाद्वयम्।
एकाहिकद्वाहिकवातृतीयकचतुर्थक॥
विषमचत्रिदोषोत्थहतिमत्यंनसशयः।

रस सिंदूर १ टंक, गन्धक १ टंक, सुहागा १ टंक, त्रिकुटा १ टंक, नीलाथोथा २ रत्ती, सब को भाग के रस की भावना देकर गोली बनावे। अदरक के रस के साथ दो रत्ती खावे तो इकतरा, द्वाहिक, तिजारी चौथया, विषम और त्रिदोषज ज्वर दूर होवें।

महा ज्वरांकुशः

ताम्रपत्राणितालचसमसम्म्लेनमर्दयेत्।
तयोस्तुल्यचभल्लातमयोर्ध्वं तच्चदापयेत्॥
सरावसंपुटेदग्धंस्वांगशीतंविचूर्णयेत्।
दुग्धेक्षीरेणसमर्द्य भूधरेतत्पुटेत्पुन॥
पचगुंजामितंखादेदार्द्रकस्यरसेनवा।
महाज्वरांकुशोनामसर्वज्वरनिकृंतन.॥
एकाहिकंद्वाहिकंचतृतीयकचतुर्थकौ।
अन्तर्वेगधातुगचविषमचनियच्छति॥

कंटक वेधी तामे के पत्र और हरिताल दोनों बराबर लेवे, सब को खटाइ में खरल करे पीछे दोनों के बराबर भिलावा लेवे। उसको तावे हरिताल के ऊपर देके सराव सपुट में फूक देवे, स्वांगशीतल हो जाय तब चूर्ण कर थूहर के दूध से खरल करे, फिरभूधर यंत्रमे रखकर फूक देवे। पीछे इसमें से पाच रत्ती रस अदरक के साथ खाय तो यह महाज्वरांकुश रस सर्व ज्वरो को दूर करे। एकाहिक, द्वाहिक, तिजारी, चौथैया, अन्तर्वेगी, धातु गत और विषम ज्वर सब नष्ट होवें।

महा ज्वरांकुशरसः

पारदोगन्धकश्चैवविषकनकक्षीरिका।
कनकस्यचबीजानिरोहिणीशरपुंखिका॥
रामसेनोऽमृताजाजीकारवीवरवर्णिनी।
विश्वाचचपलातीक्ष्णमागधीमूलभक्षकः॥
शिवादन्त्योद्भवंबीजंधात्रीवैताम्रभस्मकं।
कान्तोभस्मंरौप्यभस्मसर्वंचैवसमाशकम्॥
सूक्ष्मचूर्णं विधायाथजम्बीरेणविमर्दयेत्।
त्रियामांतेवटिंकुर्याद्गुंजामानप्रमाणतः॥
सर्वज्वरघ्नीवटिकातुलसीस्वरसेनच।
पित्तज्वरनिहंत्याशुसितयादाहपूर्वकम्॥
विश्वयाचयदायुक्ताहन्याद्वैवातपूर्वकम्।
पिप्पलीक्वाथयुक्तातुश्लेष्माणंहन्तिसत्वरं॥
शीतपूर्वंदाहपूर्वंज्वरमष्टविधतथा।
अनुपानविशेषेणहंतिसत्यंनसंशयः॥
महाज्वरांकुशोनाम्नाविख्यातोरसराजके॥

पारा, गधक, विष, चोक, धतूरेके बीज, कुटकी, सरफोंका चिरायता, गिलोय, जीरा, सौंफ,

हलदी, सोंठ पीपल, मिरच, पिपलामूल, बहेडा, हरड, जमालगोटा, आवला, तावे की भस्म, कान्त लोह की भस्म, रुपे की भस्म, सब समान लेवे। सबका चूर्ण कर जबीरी के रस से ३ प्रहर खरल करे. पीछे १ रत्तीके सदृश गोली बनावे १ गोली तुलसीके रससे खाय तो सर्वज्वर दूर होवें। दाह युक्त पित्त ज्वर मिश्रीके साथ खाने से दूर होवे। सोंठ के साथ वात ज्वर में, पीपल के काढे से कफ ज्वरमे, शीत पूर्वक दाह पूर्वक, आदि अष्टविध ज्वर अलग अलग अनुपातो से दूर होवे यह महा ज्वराकुश रस रसराज ग्रंथ मे लिखा हुआ है और ससार में बृहद्बटी नाम से विख्यात है।

शांकरी ज्वरांकुशः

हरिद्राचसुधाक्षारंसिन्दूरंजातिकाफलं।
एतानिपलमात्राणिग्रह्णीयात्तुसुधीनर ॥
हरितालच भल्लातंपृथक्पलचतुष्टयम्।
एषाकृत्वासूक्ष्मचूर्णं भावयेत्रिःपृथक्पृथक् ॥
काकमाचीभृंगराजसूरणस्यरसै क्रमात्।
अर्कदुग्धै.स्नुहीक्षीरैस्तद्वदेयपुटत्रयं ॥
सुष्कंतुहंडिकामध्येकृत्वादेयसरावक।
पश्चाद्वै सधिसरोधगुडलवणचारकै ॥
हडिकाभस्मनापूर्य्यारण्योपलजैर्नवै. ।
तस्यामुखंमुद्रयित्वामृद्भि.पटयुतैध्रुवम् ॥
पश्चाच्चूल्हासमादायहठाग्नितुदिनार्धकम्।
स्वांगशीतलमुत्तार्यतोलयेत्सिद्धमौषध ॥
तस्यसिद्धस्यषष्ठाशंमरिचंदीयतेबुधै. ।
सूक्ष्मचूर्ण विधायाथमात्रागुंजाद्वयंददेत् ॥
पर्णपत्रेणमतिमान्सशीतज्वरसज्ञकम्।
दाहयुक्तंतुविषमज्वरान्सर्वान्व्यपोहति ॥
सत्यमुक्तंशकरेणसर्वलोकस्यश्रेयसे।

हलदी, नोंसादर, सिंदूर, जायफल, इन सब को एक २ पल लेवे। हरिताल और भिलावा प्रत्येक चार २ पल लेवे, सबको मिलाकर चूर्ण कर पीछे मकोय, भागरा, जमीकन्द प्रत्येक की तीन २ भावना देवे। उसी प्रकार आक के दूध की, थूहरके दूधकी तीन २ भावना देवे, तदनतर सुखाकर हाडी मे भरे उसके मुख को सराव से वद कर उसकी संधियो को गुड नोन और चून से बद करे हाडी को राख से भर देवे और मुख वद कर कपर मिट्टी करे, पीछे चूल्हे पर चढाकर दो प्रहर हठाग्नि देवे। स्वाग शीतल होने पर उतार लेवे, पीछे सिद्ध हुई औषधियो को तोल उसका छठा हिस्सा मिरच मिलावे, सबको पीस बारीक चूर्ण करे, दो रत्ती की मात्रा पान के साथ शीत ज्वर में देवे तो दाह युक्त और विषमज्वर सब दूर होवे श्रीशिवजीने जगत् के कल्याणार्थ सत्य कहा है।

महा ज्वरांकुशः

पलैकंहरितालचस्नुहीक्षीरेणभावयेत्।
भावनात्रिप्रदातव्यंततोमुद्राप्रकल्पयेत् ॥
सरावसम्पुटेकृत्वाततोगजपुटेपचेत्।
स्वागशीतलकंज्ञात्वापुनःखल्वेविनिक्षिपेत् ॥
तुलसीपत्रतोयेनमर्दयेद्यामभात्रकम्।
ततोमात्राप्रयुंजीतगुंजात्रयमितां बुधै ॥
महाज्वराकुशोनामसर्वज्वरनिवारण. ।

हरिताल १ पल लेकर थूहरके दूधसें खरल करे। ऐसे तीन भावना देकर पीछे सुखाकर सराव सपुटसे धरकर गजपुटमें फुक देवे, जब स्वाग शीतल होजाय तब निकालकर खरल मे पीसे, और तुलसी के पत्तो का रस डालकर एक प्रहर घोटे पीछे तीन रत्ती की मात्रा देवे, यह महाज्वरांकुश सर्वज्वर नाशक है।

महाज्वरांकुशः

सूतगन्धविषतुल्यधत्तूर्बीजत्रिभि.सम।
चतुर्णाद्विगुणव्योषचूर्णगुंजाद्वयाहित ॥
जम्बीरस्यतुमज्जाभिराद्रंकस्यरसेनतु।
महाज्वराकुशोनामज्वराणामूलकृतनः ॥
एकाहिकद्वाहिकचत्र्याहिकचचतुर्थकम्।
रसोदत्तोनुपानेनज्वरान्सर्वान्व्यपोहति ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध विष, तीनो को बराबर लेकर इन सबकी बराबर धतूरे के बीज लेवे। चारो से दूना त्रिकुटा, सबका चूर्ण कर दो रत्ती जबीरी के गूदे से अथवा अदरक के रस से खावे तो यह महाज्वरांकुश एकाहिक, द्वाहिक, तिजारी, चातुर्थिक आदि सर्वज्वरोको दूर करे।

ज्वरांकुशः

रसस्यद्विगुणगन्धगन्धतुल्यंतुटकणं।
रसतुल्यविषयोज्यमरिचपचधाविषात् ॥
कट्फलदंतिबीजंचप्रत्येकमरिचोन्मितं।
महाज्वराकुशोनाम्नामर्दयेद्याममात्रक।
एकाहिकद्वाहिकचतथैवचतृतीयक ॥
मासिकपाक्षिकंचापिदिवारात्रौतथैवच।
शीतज्वरेषुदातव्यहंतिसत्यंनसंशयः ॥

एक भाग शुद्ध पारा, दो भाग गधक, दो ही भाग सुहागा, पारे के बराबर विष, विष से पाच गुनी मिरच, कायफर, जमालगोटा, प्रत्येक मिरच के समान लेवे सब को कूट पीसकर चूर्ण करे। और एक प्रहर घोटे तो यह महाज्वराकुश, एकाहिक, द्वाहिक, तृतीयक, चातुर्थिक, मासिक, पाक्षिक, दिन और रात्रि में आने वाले सर्व शीतज्वरो को नाश करे।

विषमज्वरांकुशलोहं

रसेनुक्तोदुग्धभक्त सनीरंतक्रभक्तक।
अजादुग्धकेवलवाघृतवासाधितहितं ॥
रक्तचन्दनह्रीबेरपाठोशीरकणाशिवा।
नागरोत्पलधात्रीभिस्त्रिमदेनसमन्वितः॥ लोहोनिहन्तिविविधान्समस्तानविषमज्वरान्॥

पारे भक्षण मे जो पथ्य कहे है वो अथवा दूध, भात। छाछ, भात अथवा केवल बकरी का दूध, अथवा बना हुआ घृत, अथवा लाल चन्दन, हाँबेर, पाढ, खस, पीपल, हरड, सोंठ, कमलगट्टा, आमला, त्रिमद, (मोथा, चित्रक और विडग) इनको लोहे की भस्म मे मिलाके खाने से अनेक प्रकार के समस्त विषमज्वर दूर होवे।

विद्यावल्लभरसः

रसम्लेच्छशिलातालचन्द्रद्व्यग्न्यर्कभागिक।
पिष्ट्वातुमुशलीतोयैस्ताम्रपात्रोदरेक्षिपेत् ॥
न्युब्जेसरावेसरुध्यवालुकामध्यगपचेत्।
स्फुटतिव्रीहयोयावत्तच्छिरस्थाःशनैःशनैः ॥
सञ्चूर्ण्यशर्करायुक्तंद्विवल्लसम्प्रयोजयेत्।
नाशयेद्विषमान्पञ्चतैलाम्लादिविवर्जयेत् ॥

पारा १ भाग, शिगरफ दो भाग, मनसिल ३ भाग, हरिताल १२ भाग सब को मूशली के रस से घोटे पीछे उसका तांबे के पात्र के भीतर लेप कर देवे। और सराव सपुट से बद कर दे फिर वालुकायन्त्र मे पचावे, जब वालू में धान भुन जाय तब उतार लेवे। चूर्ण कर मिश्री के सग ६ रत्ती देवे तो पाच प्रकार के विषमज्वर दूर होवें, इसको सेवन करने वाला तेल खटाई न खाय।

रामज्वरापहारीरसः

रसेन्द्रगधौविषटंकणौचसहसपाककटुकत्रयंच सर्वैःसमंतज्जयपालबीजंविमर्दयेदार्द्रकजद्रवेण ॥ सशोध्यसपेध्यभवेत्सुसिद्धोरसस्तुधत्तूरसितार्द्रतोयैः। ददीतवल्लविषमज्वरेवाजीर्णज्वरेवाथनवज्वरेवा ॥ वनान्निवृत्तायरघूत्तमायपुरासुषेणेनस्वयप्रदिष्ट । तदाप्रभृत्येवचरामनामज्वरापहारीतिरसःप्रसिद्धः ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, विष, सुहागा, हिंगुल, त्रिकुटा, (सोंठ, मिरच, पीपल) सब बराबर लेवे। और सबको बराबर जमालगोटा, सब को अदरक के रस से खरल करे। पीछे धतूरे के रस से खरल करे, तो रस सिद्धि होय। विषमज्वर, तरुण ज्वर, जीर्ण ज्वर मे, अदरक के रस और मिश्री के साथ देवे। तो सर्व ज्वर दूर होवे। जब श्रीरामचन्द्र जी वन से पधारे तब स्वय सुषेण वैद्य ने यह रस कहा तब ही से रामज्वरापहारी नाम से विख्यात हुआ।

मेघनादरसः

आरंकाश्यंमृतताम्र त्रिभिस्तुल्यतुगन्धक ।
रसेनमेघनादस्यपिष्टारुध्वापुटेपचेत ।।
सचूर्ण्यपर्णखण्डेनदातव्योविषमापहः ।
मात्रास्यगुंजाद्वितयंपथ्यदुग्धोदनहित ।।
पचामृतपलचैकमनुपानंप्रकल्पयेत् ।

लोह, कांसा, तांबे की भस्म, तीनों बराबर लेवे, सब की बराबर गंधक, सबको चोलाई के रस से खरल करे, पीछे संपुट में रख कर फूक देवे, स्वांग शीतल होने पर निकाल कर चूर्ण कर पान के टुकडे के साथ दो रत्ती खाय तो विषम-ज्वर दूर होवे, दूध, भात पथ्य देवे पचामृत १ पल, इसके ऊपर अनुपान देवे ।

संजीवनाभ्रं

वज्राभ्रमारितकृत्वाकर्षयोग्यसुचूर्णित ।
जीरककारुकंबीजकर्षंवासारसेनच ।।
कंटकारिरसेनैवधात्रीमुस्तारसेनच ।
गुडूचीस्वरसेनैवपलांशेनपृथक्पृथक् ।।
मर्दयित्वावटीकार्य्यादृगुंजामात्रानियोजिता।।
विषमाख्यान्ज्वरान्सर्वान्प्लीहानयकृतवर्मि।
रक्तपित्तवातरक्तंग्रहणीश्वासकासकौ ।।
अरुचिशूलहृल्लासावर्शांसिचविनाशयेत् ।
जीवनानन्दमेवेदमभ्र वृष्यबलप्रदम् ।।
रसायनवरश्रेष्ठ धातुसवर्द्धनपरम् ।।

वज्राभ्रक की भस्म १ कर्ष का चूर्ण कर उसमे जीरा, काकुंडी के बीज १ कर्ष मिलाय अडूसा, कटेरी, आमला, नागरमोथा, और गिलोय इनके एक २ पल रस से पृथक् २ मर्दन करे, पीछे एक २ रत्ती की गोली बनावे इस गोली के खाने से विषमज्वर, तापतिल्ली, यकृत रोग, वमन, रक्तपित्त, वातरक्त, संग्रहणी, स्वास, खासी, अरुचि, शूल, हल्लास, और बवासीर, इनको दूर करे यह जीवानन्द अभ्रक है बलकर्त्ता, वृष्य, रसायन और सर्व धातु बढाने वाली है ।

शीतकेसरीरसः

पारदंगन्धकतुत्थंदरदंचविषंसमं ।
विषादष्टगुणयोज्यंमरिचविश्वभेषजं ।।
अश्वगन्धाथविजयाकासमर्दकठिल्लकः ।
चतुर्णांचरसैरेतच्चूर्णयत्नेनमर्दयेत् ।।
तुलस्यास्तुदलैःसार्द्ध भक्षितोरक्तिकामितः ।
हंतिशीतज्वरघोरंनाम्नायंशीतकेशरी ।।

पारा, गंधक, नीलाथोथा, शिंगरफ, विष, ये सब समान लेवे, विष से अठगुनी काली मिरच, और सोंठ लेवे, असगंध, भांग कसौंदी, और करेला इन चारो के रस में, पूर्वोक्त औषधियों को खरल करे, पीछे तुलसी के पत्तों के साथ एक रत्ती खाने को देवे, तो यह शीतकेशरी रस शीत को दूर करे ।

शीतभंजीररसः

सूतकगन्धकचैवहरितालमनःशिला ।
एकद्विर्द्विनिष्कचचतुर्निष्कंतथैवच ।।
पचनिष्करसैःकारवेल्याःकल्कप्रकल्पयेत् ।
ताम्रपत्राणितुल्यानितेनकल्केनलेपयेत् ।।
शरावसपुटेकृत्वाततोचुल्हांनिधापयेत् ।
धान्यस्फुटनमात्रेणततोत्तार्यःप्रयत्नतः ।।
तत सचूर्णयेद्वरस.क्षौद्रेणभावितः ।
यवैकमात्रयाहन्तिघोरशीतज्वरंध्रुव ।।

शुद्धपारा, शुद्धगंधक, हरिताल, मनसिल, ये क्रमसे १, २, ४, ५ निष्क लेवे, सब को करेले के रस से खरल कर बराबर तांबे के पत्रों पर लेप कर दे, सराव संपुट में रख वालुकायंत्र मे पचावे। वालू के ऊपर धानरखे जब धान खिल जावें तब उतार लेवे चूर्णकर इस रस को १ रत्ती शहत के साथ खावे तो घोर सन्निपात ज्वर दूर होवे ।

शीतभंजीररसः

तालकतुत्थकंताम्र रसंगन्धमनःशिलां ।
कर्पकर्षंप्रयोक्तव्यंमर्दयेत्रिफलाम्बुभिः ।।

गोलंन्यसेत्सम्पुटकेपुटदत्वाप्रयत्नत' ।
ततोनीत्वार्कदुग्धेनवज्रदुग्धेनसप्तधा ॥
क्वाथेनदन्त्या'श्यामायाभावयेत्सप्तधापुन' ।
माषमात्र रसंदिव्यपचाशन्मरिचैर्युतं ॥
गुडगद्याणकंचैवतुलसीदलयुग्मक ।
भक्षयेत्रिदिनंभक्त्याशीतारिदुर्लभंपर ॥
पथ्यदुग्धोदनदेयंविषमशीतपूर्वक ।
दाहपूर्वहरन्त्याशुतृतीयकचतुर्थको ॥
द्वाहिकंसततंचैववेवर्ण्यंचनियच्छति ।

हरिताल, नीलाथोथा, ताबेकी भस्म, पारा, गधक, मनसिल, इन सब को एक २ कर्ष लेवे। त्रिफला के रस से खरल कर गोला बनावे, उस गोलेको सपुट मे रख कर पुट देवे, अर्थात् अग्नि देवे, पीछे स्वाग शीतल होने पर उतार आक और थूहर के दूध की सात ७ भावना देवे, दती और निसोथ के काढे की सात २ भावना देवे तो रस सिद्धि होय, पीछे ५० मिरच और १ गद्याणक (६ माशे) गुड तथा दो दलतुलसीके सबको पीसकर तीन दिन यह शीतारिरस परम दुर्ल्लभ भक्ति से भक्षण करे, और दूधभात पथ्य लेवे तो शीतज्वर, दाहज्वर, तृतीयक, चतुर्थक, इकतरा, और नित्य आनेवाला इत्यादि सर्वज्वर दूर होवें ।

पंचाननज्वरांकुशः

शभोकठविभूषणसमरिचंदैत्येन्द्ररक्तोरविः। पक्षसागरलोचनशशियुतभागोऽर्कसंख्यान्वित ॥ खल्वेतंखलुमर्दितरविजलै.गुंजैकमात्रं ततः सिद्धोयंज्वरदृतदर्पदलनेपचाननाख्योरसः ॥ पथ्यंचदेयंदधितक्रभक्तं सिंधूत्थयुक्त सितयासमेतं। गन्धानुलेपोहिमतोयपानपय.पिवेद्वाडिमभक्ष्ययुक्त ॥

विष २ भाग, कालिमिरच ४ भाग, गंधक २ भाग, शिगरफ, १ भाग, ताबे की भस्म १२ भाग, सब को खरल मे डालकर आक के जल से खरल कर एक रत्ती की गोली बनावे। यह रस ज्वररूप हाथी के दात तोड़ने को सिंह रूप है, इस पर दही, छाछ, भात, सेंधानोन, और मिश्री पथ्य है. चंदन लगाना, शीतल जल पीना, दूधपीना, और बलायती अनार, अगूरो का खाना हित है ।

तरुणज्वरारिरसः

जैपालगन्धविषपारदंचतुल्यांकुमारीस्वरसेन मर्द्यं । अस्याद्विगुंजाऽर्हसितोदकेनस्यात्तोरसोयतरुणज्वरारि ॥१॥ दातव्यएपोऽह्निपचमेवापष्ठेथवासप्तमएववापि । जातेविरेकेविगतंज्वर'स्यात्पटोलमुद्गान्ननिषेवणेन ॥

जमालगोटा, गधक, सिंगियाविष, पारा इन सब को बराबर लेवे, और घीगुवार रस से घोटे, इसमें से २ रत्ती मिश्री के शरबत के साथ देवे, इस तरुणज्वरारि रसको पाचवे, छठवें अथवा सातवें दिन देना चाहिये, दस्तोंके होते ही ज्वर दूर होवे, इसमे परवल और मूगका यूप पथ्य देवे ।

श्रीमृत्युंजयोरसः

विषस्यैकंतथाभागमरिचपिप्पलीकणा ।
गन्धकस्यतथाभागभागस्याटंकणस्यच ॥१॥
सर्वत्रसमभागस्यात्द्विभागहिंगुलंभवेत् ।
जम्बीरस्यरसेनात्रभाव्यहिंगुलशोधितम् ॥२॥
रसश्चे तसमभाग स्यात्तहिंगुलनेष्यतेतदा ।
गोमूत्रीशोधितश्चात्रविषांशौर्विशोषित॥३॥
चूर्णयेत्खल्वमध्येतुमुद्गमात्रावटींचरेत् ।
मधुनालेहनप्रोक्त सर्वज्वरनिवृत्तये ॥४॥
दध्युदकानुपानेनवातज्वरनिवर्हण. ।
आर्द्रकस्यरसै.पानदारुणेसन्निपातके ॥५॥
जम्बीररसयोगेनह्यजीर्णज्वरनाशनः ।
अजाजीगुडसयुक्तोविषमज्वरनाशन ॥६॥
जीर्णज्वरेमहाघोरेपुरुषेयौवनान्विते ।
पूर्णमात्राप्रदातव्यापूर्णवटिचतुष्टय ॥७॥

अतिक्षीणेऽतिवृद्धे चशिशोचाल्पवयस्यपि।
तुर्यमात्राप्रदातव्याऽव्यवस्थासारनिश्चिता ॥८॥
नवज्वरेप्रदानेचयामैकान्नाशयेज्ज्वरान्।
अक्षीणेचकफेभावेदाहेचवातपैत्तिके ॥९॥
सिताढ्यात्प्रयत्नेननारिकेलाम्बुनिर्भयं।
अयंमृत्युंजयोनामरससर्वज्वरापहः ॥१०॥
अनुपानप्रभेदेननिहन्तिसकलान्गदान्।

विष १ भाग, मिरच १ भाग, पीपल १ भाग, गंधक १ भाग, सुहागा १ भाग, हींगलू २ भाग, [यहा पर हिंगलुको जंबीरी के रससे शुद्ध कर डालना चाहिये, यदि सब औषधियो के समान एक भाग पारा डाल देवे, तो फिर हिंगुल न डाले, और विष को गोमूत्र मे शोध के धूप मे सुखा के डाले] सब को खरल मे डाल अदरक के रस से घोटे, मूंगके समान गोलिया बनावे, सर्वज्वरो मे साधारण अनुपान सहत है, अर्थात् सर्वज्वरो में सहत के साथ देवे वातज्वर मे दहीभात के अनुपान से देवे दारुण सन्निपात में अदरक के रस के साथ देवे, अजीर्णज्वर में जंबीरी के रसके साथ देवे, जीरे और गुडके साथ देने से विषमज्वर दूर होवे, महाघोर जीर्णज्वर वाले पुरुष जवान को चारगोली देनी चाहियें. यह पूर्ण मात्रा इस रस की जाननी चाहिये। अति क्षीण और अतिवृद्ध तथा बालक को चौथाई मात्रा अर्थात् एक गोली देनी चाहिये, नवीनज्वर मे इसकी मात्रा देनेसे एक प्रहर मे ज्वर को दूर करे कफाधिक्य मे तथा वात पित्त के दाह में नारियल के जल मे मिश्री मिलाकर शरबत के साथ निर्भय होकर देवे। यह मृत्यु जय नामका रस सर्वज्वर नाशक है अनुपान के भेदो से सकल रोगो का नाश करता है।

श्रीरामरसः

गन्धकंपारदंतुल्यंमरिचंचात्रिभिसमम्।
बीजंनेकुम्भकंमद्यं दन्तीक्वाथेनयामकम् ॥
द्विवल्लं शूलविष्टंभानिलमामज्वरजयेत्।
श्रीशिवेनस्वयप्रोक्तं रसंश्रीरामसज्ञकम् ॥

शुद्ध गंधक, शुद्धपारा, काली मिरच, बराबर ले तीनो की बराबर जमालगोटा लेवे सब को खरल मे डाल चूर्ण कर दंती के काढे से १ प्रहर घोटे ४ रत्ती खाने से शूल, विष्टंभ, बादी, नवीनज्वरको जीते, श्रीशिवका कहा यह रामसंज्ञक रस है।

वैद्यनाथवटी

शाणगन्धमथोरसस्यचतथाकृत्वाद्वयोकज्जलीं। तिक्ताचूर्णमथात्रमेवसकलरौद्रैस्त्रिधा भावयेत् ॥ पश्चात्तत्सुखवीरसेननतुवाऽका थेमलेत्रै फले। सशोष्यावटिकाकलायसदृशी कार्याबुधैःयत्नतः ॥ ज्ञात्वादोपवलरसेनसुखवीपत्रस्यपर्णस्यवा। एकद्वि त्रचतु.क्रमेण वटिकादद्यात्कदुष्णाम्बुना ॥ हन्तिशूलानि चयनवज्वरं। पाण्डुतामरुचिशोथसचयम् ॥ रेचनेचदधिभक्तभोजन। वैद्यनाथसुकुमार रेचन ॥ भाव्यंद्रव्यसमक्वाथक्वाथश्चाष्टावशेषितः।

गंधक ४ माशे, पारा ४ माशे, दोनो की कजली कर दो तोले कुटकी का चूर्ण मिलावे, पीछे इसमे करेले के रस वा त्रिफला के काढे की तीन भावना देकर मटर के समान गोलिया बनावे। रोगी के दोष और बल को विचार करेले के पत्तो वा पान के रसमे एक वा दो वा तीन अथवा चार गोली देवे, अथवा गरम जल के साथ देवे तो शूल, नवीन ज्वर, पांडु रोग, अरुचि, सूजन, इन रोगो को दूर करे जब दस्त होवें तब दही भात, भोजन करावे यह वैद्यनाथ का कहा हुआ सुकुमार विरेचन है, द्रव्य के समान अन्य द्रव्य की भावना देवे।

प्रतापमार्तंडरसः

विषहिंगुलजैपालटंकणक्रममर्दितं।
रस'प्रतापमार्तण्डसद्योज्वरविनाशनः ॥

विष, हींगलू, जमालगोटा और सुहागा

प्रत्येक समान लेके जल से घोट पीछे १ रत्ती की गोली बनावे. यह प्रतापमार्तंड रस के सेवन करने से नवीन ज्वर दूर होवे।

चंडेश्वररसः

रसगन्धविषताम्रं मर्दयेदेकयामकम्।
आर्द्रकस्वरसेनैवमर्दयेत्सप्तवारकम्॥
निर्गुंड्या स्वरसेपश्चान्मर्दयेत्सप्तवारकम्।
गुंजैकार्द्ररसेनैवदत्ताहतिज्वरंक्षणात्॥
वातजपित्तजश्लेष्मद्विदोषजमपिक्षणात्।
सुशीतलजलेस्नानतृषार्थेक्षीरभोजनं॥
आम्रं चपनसचैवचंदनागुरुलेपन।
एतत्समोरसोनास्तिवैद्यानाहृदयगम.॥
एषचंडेश्वरोनामसर्वज्वरकुलांतकृत्।

पारा, गंधक, विष, और तांबा ये सब बराबर लेवे, सबको एक प्रहर खरल कर पीछे अदरक के रस की सात भावना देवे तथा निर्गुंडी के रस की सात भावना देवे. पीछे १ रत्ती अदरक के रस के साथ देवे तो तत्काल ज्वर दूर होवे, वातज, पितज, कफज, और द्विदोष जनितज्वर क्षण मात्र मे दूर होवे शीतल जल से स्नान करे, प्यास मे दूध पीवे, आम पनस को खाय, चन्दन और अगर का लेप करे. इस रस के समान वैद्यो का मन चुराने वाला दूसरा रस नहीं है,यह चंडेश्वर रस सर्व ज्वरो को दूर करता है।

अग्निकुमाररसः

मरिचोग्राकुष्ठमुस्तै.सर्वैरेवसमविष।
पिष्ट्वा चार्द्ररसेनैववटिकारक्तिकामिता॥
आमज्वरेप्रथमत शुंठ्याचमधुपिष्ट्या।
आर्द्रकस्यरसेनापिनिर्गुंड्याश्चकफज्वरे॥
पीनसेचप्रतिश्यायेआर्द्रकस्यचवारिणा।
अग्निमान्द्येलवंगेनशोथेसदशमूलकं॥
ग्रहण्यासहशुंठ्याचदशमूल्यातिसारके।
सामेचधान्यशुंठीभ्यापक्वेचकुटजमधु।
सन्निपातज्वरारम्भेपिप्पल्यार्द्रकवारिणा॥
कंटकार्यारसैःकासेश्वासेतैलगुडान्वितम्।
पीत्वावटीद्वयरोगीस्वास्थ्यसमुपगच्छति॥
सर्वेषामेवरोगाणामामदोषप्रशान्तये।
अग्निवृद्धिकरोनाम्नाविख्यातोऽग्निकुमारकः॥

काली मिरच २ माशे, वच २ माशे कूट २ माशे, मोथा २ माशे, विष ८ माशे ले, सबको अदरक के रस मे घोट कर १ रत्ती की गोली बनावे। आमज्वर की प्रथम अवस्था मे सोंठ का चूर्ण और सहत इनके साथ देवे। कफ ज्वर मे निर्गुंडी और अदरक के रस के साथ देवे। पीनस, और सरेकमा रोगो में अदरक के रस के साथ देवे, मन्दाग्नि में लौंग के साथ देवे सूजन मे दशमूल के काढे के साथ देवे. संग्रहणी मे सोंठ के संग, अतिसार में दशमूल के सग, आमातिसार मे धनिये सोंठ के साथ, पक्वातिसार मे कुडाकी छाल के काढे और सहत के साथ सन्निपात ज्वर के प्रारम्भ मे पीपर और अदरक के रस के साथ, खासी मे कटेरी के काढे के साथ, श्वास मे तेल गुड के साथ देवे दो गोली पीते ही स्वस्थ होवे, सर्व रोगो के आमदोष दूर करने को यह रस देवे, अग्नि को वृद्धि करने वाला यह अग्नि कुमार रस कहाता है इसकी द। रत्ती की मात्रा है।

ज्वरसिंहरसः

पारदगन्धकतालभल्लातकसथैवच।
वज्रीक्षीरसमायुक्तमेकत्रचविमर्दयेत्॥
मृत्तिकाभाजनेस्थाप्यमुद्रितव्यंविचक्षणैः।
अग्निप्रज्वालयेत्तत्रप्रहरद्वयसंख्यया॥
शीतलखल्लयेत्तत्रभावनाचप्रदीयते।
भृंगराजरसैस्त्रगडदूर्वाभवैरसैः॥
चित्रकस्यरसेनापिभावनादीयतेपुन.।
पश्चात्तच्चूर्णयेद्यत्नात्कूपिकायाचधारयेत्॥
ज्वरमुत्पद्यतेयस्यचतुर्थेचापरेपुन।

मापैकंचरसंदेयंतत्क्षणान्नाशयेज्ज्वरं ॥
ज्वर:शान्ते:परंपथ्यंदेयंमुद्गौदनंपय: ।

पारा, गंधक, हरिताल, भिलावा, इन सबको बराबर लेकर, थूहर के दूध में खरल करे, पीछे मिट्टी के बर्त्तन में रख मुख बन्द कर कपरमिट्टी करे, पीछे चूल्हे पर चढ़ाकर दो प्रहर अग्नि देवै, पीछे शीतल होने पर खरल में डाल कर भागरे के रस की भावना देवे, सफेद दूब के रस की, चित्रक के रस की, पृथक् पृथक् भावना देवे, पीछे यत्न पूर्वक पीस कर शीशी में भर कर धर रक्खे, जिसको ज्वर आता हो उसको प्रथम के चार दिन त्याग कर पांचवे दिन अथवा छठे या सातवें दिन १ माशे रस देवे तो तत्क्षण ज्वर को दूर करे, जब ज्वर शान्त हो जावे तब मूंग और भात तथा दूध पथ्य देना चाहिये ।

अचिंत्यशक्तीरस:

रसगंधकयोर्ग्राह्य प्रत्येकंमापकद्वयम् ।
भृंगकेशाख्यनिर्गुंडीमडूकीपत्रसुन्दर: ।
श्वेतापराजितामूलशालिश्चकाणमाविषम् ।
सूर्यावर्त्त सितश्चैपाचतुर्मापकसम्मिते. ॥
प्रत्येकस्वरसै:खल्वेशिलायामवधानत: ।
स्वर्णमाक्षिकमाषञ्चदत्वामरिचमाषकम् ॥
नैपालंताम्रदंडेनदृष्ट्वात्तत्कज्जलद्युति ।
वटीमुद्गोपमाकार्य्याछायाशुष्कातुरक्षिता ॥
प्रथमेवटिकास्तिस्र:कृत्वानवशरावके ॥
तत:खमर्पणंसूर्य्यपूजयित्वाप्रणम्यच ।
वारिणागालयित्वातुपातुंदेयञ्चरोगिणे ॥
स्वेदोपवासरचितेक्लान्तेचात्यबलेतथा ।
द्वितीयेन्हिवटीयुग्मंवटीमेकातृतीयके ॥
यावन्तोवटिकादेयास्तावज्जलशरावक ।
तृष्णायाचरसंदद्याज्जाङ्गलानांजलतृपि ॥
तुलायदधिसंयुक्तंभक्तंभोज्यंयथेप्सित ॥
लावपक्षीरसोदेय:सरक्त:सैंधवादिभि: ।
पथ्यमग्निवलवीक्ष्यवारिभक्तरसंतथा ॥
शिरश्चलनशूलादौतैलनारायणादिच ।

पारा, गंधक, प्रत्येक दो दो माशे लेकर दोनों की कजली करके भागरा, खस, निर्गुंडी, ब्राह्मी, गोमा, सफेद कोयल की जड़, कमलकंद, काकतुंडी, विष, सफेद हुरहुर प्रत्येक चार चार माशे औषधियो के रस की भावना देवे, पीछे सोनामक्खी १ माशा, काली मिरच १ माशा, सबको तावे के मूसले से घोट कर कजली के समान करे। पीछे मूंग के समान गोली बनावे उनको छाया में सुखाकर अच्छी तरह रख छोडे, पहले दिन तीन गोली सरवा में रख कर जल में घोले पीछे सूर्य का पूजन कर प्रणाम करे, और उस पूर्वोक्त गोलियो के पानी को पी जावे, जिसने पसीना और उपवास किया हो तथा क्लेशित शरीर और अतिनिर्बली पुरुष को तीन गोली प्रथम दिवस देवे, दूसरे दिन २ गोली, तीसरे दिन १ गोली देवे, जितनी गोली देवे उतनी ही सरैया जल की देनी चाहिये, और प्यास में जगली जीवो के मास का रस तथा शीतल जल देवे भैंस के दही और भात का भोजन यथेच्छित करना चाहिये। लवा पक्षी के मास के रस में सैंधा निमक आदि मसाला मिला कर देना चाहिये, अग्नि का बलाबल देखकर पथ्य देना चाहिये. इसके सेवन करने से शिरका घूमना, तथा मस्तक शूल होवे तो नारायण तैल आदि का मर्दन करावे ।

रसमंगलोक्तोज्वरमुरारिरस:

शुद्धंसूतशुद्धगंधविषचदरदपृथक् ।
कर्षप्रमाणकर्षार्द्धलवगमरिचपल ॥१॥
शुद्ध कनकवीजचपलद्वयमितंतथा ।
त्रिवृताकर्षमेकचभावयेद्दन्तिकाद्द्रवै: ॥२॥
सप्तधाचतत:कुर्य्याद्गुटीगुंजामिताशुभा ।
मुरारिज्वरनामायरसोज्वरकुलांतक ॥३॥
अत्यताजीर्णपूर्णेचज्वरेविष्टंभसंयुते ।
सर्वांगग्रहणीगुल्मेचाम्लवातेम्लपित्तके ॥४॥
कासेश्वासेयक्ष्मरोगेऽप्युदरेसर्वसंभवे ।
गृध्रस्यांसधिमज्जस्थेवातेशोथेचदुस्तरे ॥५॥

यकृतोप्लीहरोगेचवातरोगेचिरोत्थिते ।
अष्टादशेकुष्ठरोगेसिद्धोगहननिर्मितः ॥६॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध विष, हींगलू प्रत्येक १ तोला, लोंग ६ माशे, काली मिरच १ पल, शुद्ध धतूरे के बीज २ पल, निसोथ १ तोला सबको एकत्र कर दती के काढे से खरल करे, सात भावना देकर एक २ रत्ती की गोली बनावे, यह ज्वरमुरारि रस सब ज्वरो को काल रूप है, अजीर्ण, संग्रहणी, गुल्म, आमवात अम्लपित्त, खाँसी, श्वास, खई, उदर, गृध्रसी, बादी की सूजन, यकृत और प्लीह रोग, बादी के रोग अठारह प्रकार का कुष्ठ रोग, इनको दूर करे ।

ज्वरमुरारिरसः

हिंगुलंचविषव्योपटंकणनागराभया ।
जयपालसमायुक्तंसद्योज्वरनिवारणम् ॥
सर्वचूर्णसमंजयपालचूर्णसर्वपिष्ट्वाकलाय ।
प्रमाणावटीकार्य्या ॥

हिंगुल, विष, त्रिकुटा, सुहागा, सोंठ, हरड और जमालगोटा, इन सबको एकत्र कर पीसे, पीछे अदरक के रस से मटर के समान गोली बनावे, इसके सेवन से नवीन ज्वर दूर होय परन्तु जमालगोटा सब औषधियो के समान लेना चाहिये ।

ज्वरकेशरीरसः

शुद्ध सूतविषंव्योषगन्धंत्रैफलमेवच ।
जयपालसमकृत्वाभगतोयेनमर्दयेत् ॥
गुंजामात्रावटीकार्य्याबालानांसर्षपाकृति ।
सितयाचसमपीतापित्तज्वरविनाशनी ॥
मरिचेनप्रयुक्तासासन्निपातज्वरापहा ।
पिप्पलीजीरकाभ्यांचदाहज्वरविनाशिनी ॥
ज्वरकेशरिनामायरसोज्वरविनाशक. ।

शुद्ध पारा, विष, त्रिकुटा, गंधक, त्रिफला, और जमालगोटा, सब समान लेवे, भागरेके रससे खरल करे, पीछे एक २ रत्ती की गोली बनावे, बालक के वास्ते सरसो के समान गोली बनावे, मिश्री के संग खाय तो पित्त ज्वर दूर होवे, मिरच के संग देने से सन्निपात ज्वर दूर होवे, पीपर जीरे के साथ खाने से दाहज्वर दूर होवे, यह ज्वर केशरी रस सर्व ज्वरों का नाश करता है ।

ज्वरभैरवोरसः

त्रिकटुत्रिफलाटंकविषगंधकपारद ।
जयपालसममर्द्यद्रोणपुष्पैरमैदिन ॥
ताम्बूलेनसमद्यतत्खादेद्गुंजामितांवटीं ।
मुद्गयूषशिखरणीपथ्यदेयप्रयत्नत ॥
नवज्वरंत्रिदोषोत्थजीर्णंचविषमज्वर ।
दिनैकेननिहत्याशुरसोयज्वरभैरवः ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, सुहागा, विष, गंधक, पारा, और जमालगोटा, सबको समान लेकर गोमा के रससे १ दिन खरल करे, पान के साथ एक रत्ती की गोली खाने से नवीन ज्वर, त्रिदोष ज्वर, विषमज्वर, और जीर्ण ज्वर इन सब ज्वरो को यह ज्वरभैरव रस १ दिन में दूर करे, इसके ऊपर मूंगका यूष और शिखरण भोजन करना पथ्य है।

अर्द्धनारीश्वरोरसः

रसगंधामृतंचैवसमंशुद्धंचटंकण ।
मर्दयेत्खल्लमध्येतुयावत्स्यात्कज्जलप्रभं॥१॥
नकुनारिमुखेक्षिप्त्वामृदासम्वेष्टयेद्बहिः ।
स्थापयेन्मृन्मयेपात्रेऊर्ध्वाधोलवणक्षिपेत् ॥२
भाण्डवक्त्रंनिरुध्याथचतुर्य्यामहठाग्निना ।
सागशैत्यंसमुधृत्यखल्लेकृत्वातुकज्जलीं ॥३॥
गुंजामात्र प्रदातव्यनस्यकर्मणियोजयेत् ।
वामभागेज्वरहन्तितत्क्षणाल्लोककौतुकम्॥४
कुर्य्याद्दक्षिणभागेनचारोग्यनिश्चितंभवेत् ।
गोप्याद्गोप्यतमंप्रोक्तंगोपनीयंप्रयत्नतः॥६॥
अर्द्धनारीश्वरोनामरसोऽयकथितोभुवि ॥६॥

पारा, गंधक, विष और सुहागा सबको समान ले खरल मे डाल कजली करे, जब कज्जल के समान हो जावें तब इनको काले सर्प के मुख

मे भरे, ऊपर कपरमिट्टी देकर एक मिट्टी का पात्र ले, प्रथम उसमे नोन बिछाय उसमे पूर्वोक्त सपुट रख ऊपर फिर नोन भर देवे, पीछे उस पात्रका मुख सराव से बन्द कर चूल्हे पर रख चार प्रहर तीव्र आंच देवे, जब स्वाग शीतल हो जाय तब निकाल खरल मे डाल कजली करे, १ रत्ती इस रस की नस्य देनी चाहिये बाए नथने में नास देने से तत्क्षण ज्वर दूर होवे, और दहने नथने में नास लेने से आरोग्य होय, यह अति गोप्य किसी से न कहे इसे अर्द्धनारीश्वर रस कहते हैं।

श्रीरसराजः

भागैकंरसराजस्यभागैकहेममाक्षिक।
भागद्वयशिलायाश्चगन्धकस्यत्रयोमता ॥१॥
तालकोऽष्टादशोभागोशुल्वस्याद्भागपचकं।
भल्लातकस्त्रयोभागा.सर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥२॥
वज्रीक्षीरेप्लुतकृत्वाद्दढेमृन्मयभाजने।
विधायसुदृढामुद्रांपचेद्यामचतुष्टयम ॥३॥
स्वागशीतसमुद्धृत्यखल्लयेत्तुद्दढंपुनः।
गुंजाचतुष्टयंचास्यपर्णखण्डेनदापयेत् ॥४॥
रसराज प्रसिद्धोयंज्वरमष्टविधंजयेत्।

पारा १ तोले, सोनामक्खी १ तोले, मनसिल २ तोले, गधक तोले, हरताल १८ तोले, तांबे की भस्म ८ तोले, भिलावे ३ तोले, सबको एकत्रकर चूर्ण करे पीछे थूहर के दूध मे खरल करे सराव संपुट मे रख कपरमिट्टी चढाय ४ प्रहर पचावे, जब स्वाग शीतल होजाय तब निकाल खरल मे डालकर घोटे, इस रस को ४ रत्ती नागरवेल पान के रस मे देवे तो यह रसराज प्रसिद्ध रस आठ प्रकार के ज्वरो को र करे।

मुद्रोद्घाटकोरसः

पारदंगन्धकश्चैवत्रिक्षारलवणत्रयं।
गुग्गुलुवत्सनाभचप्रत्येकतुद्विमाषक॥
कृष्णोन्मत्तजटानीरैर्भावयेत्सप्तवारकम्।
गोक्षुरेन्द्रकुमारीषकरजन्दिवत्रतेजिका ॥
भूकुरुवकलताभिश्चत्रिफलाबृहतीरसैः।
मर्दितावटिकाकार्य्याकृष्णलाफलसंन्निभा ॥
ततोवटीद्वयदत्वायत्नैःवस्त्रादिभिर्वृतः।
रसःसर्वज्वरंहन्तिक्षणमात्रान्नसशयः॥

पारा २ माशे, गधक २ माशे, तीनो खार, प्रत्येक दो दो माशे, तीनो नोन प्रत्येक दो २ माशे, गूगल २ माशे, विष २ माशे सबको काले धतूरे के रस मे खरल करे, सात बार उसी प्रकार गोखरू, इन्द्रजौ, घीगुआर, चौलाई, और कजा के बीज, चीते की छाल, लता कुटकी, लाल फूल का पियावांसा, त्रिफला, और कटेरी के काढे से पृथक् २ भावना देकर एक २ रत्ती की गोली बनावे,, दो गोली अदरक के रस से देवे, जब रोगी इस औषधिको सेवन कर चुके तब कपडो से ढककर सुला देवे, तो शीघ्र ही ज्वर दूर होवे।

शीतारिरसः

पारदंगन्धकंटकंशुल्वचूर्णसमंसम।
पारदाद्विगुणंदेयंजैपालतुषवर्जितं॥
सैंधवंमरिचंचिंचात्वक्भस्मशर्करापिच।
प्रत्येकंसूततुल्यंस्याज्जबीरैर्मर्दयेद्दिनम्॥
द्विगुंजतप्ततोयेनवातश्लेष्मज्वरापह.।
रस'शीतारिनामायंशीतज्वरहरःपर.॥

पारा, गन्धक, सुहागा, तांबा, प्रत्येक एक २ भाग लेवे, और पारे दूना जमालगोटा लेवे, सेंधा नोन १ भाग, काली मिरच १ भाग, इमली की छाल की भस्म १ भाग, मिश्री १ भाग सब को एकत्र कर जबीरी के रस मे १ दिन घोटे, पीछे दो रत्ती के प्रमाण गोली बनावे एक गोली गरम जल से लेवे तो वात कफ ज्वर दूर होवे, यह शीतारि नामा शीत ज्वर को हरण करता है।

त्र्याहिकारि रसः

रसकेनसमशखशिखिग्रीवचपादिकम्॥
गोजिव्हयहयाजयन्त्याचतन्दुलीयैश्चभावयेत्
प्रत्येकसप्तसप्ताथशुष्कगुंजाचतुष्टय॥
जरणेनघृतेनाद्यात्त्र्याहिकज्वरशान्तये।
अत्ररसकखर्परशिखिग्रीवतूतिय।द्वयोपादांश

खपरिया और शख दोनो को समान लेकर दोनों की चतुर्थांश तूतिया लेवे, तीनों को गोभी आरनी, चौलाई, प्रत्येक के रस की पृथक् २ सात सात २ भावना देवे, पीछे सुखाकर ४ रत्ती की मात्रा पुराने घृत के साथ देवे तो तिजारी दूर होवे।

चातुर्थकारी रसः

हरितालंशिलातुत्थंशंखचूर्णंचगंधक ॥
समांशंमर्दयेत्प्राज्ञःकुमारीरससंयुत ।
शरावसंपुटेकृत्वादत्वागजपुटेपचेत् ॥
कुमारिकारसेनैववल्लमात्रावटीकृता ।
दत्ताशीतज्वरहन्तिचातुर्थंकविशेषतः ॥
मरीचघृतयोगेनतक्रंपीत्वाचरेद्वटीम् ।
एतयावमनभूत्वाज्वरस्तस्माद्विनश्यति ॥

हरिताल, मनसिल, लीलाथोथा, शख की भस्म, गन्धक सब समान लेवे, सबको घी गुवार के रस मे खरल कर सराव सपुट में रख गज पुट में फूक देवे, पीछे उसको निकाल घी गुवार के रस मे घोट दो रत्ती की गोली बनावे इस रसके देने से शीत ज्वर दूर हो, और विशेष करके चातुर्थक ज्वर को शीघ्र दूर करे, मरिच और घृत के योग से और छाछ के अनुपान से गोली खाय, इसके खाने से वमन होती है वम वमन होते ही तत्काल ज्वर दूर होवे।

रात्रि ज्वरे विश्वेश्वरोरसः

पारदरसकगन्धंतुल्यासम्मर्दयेद्रस ।
अश्वत्थजेत्र्यहपच्याद्रसेकोलकमूलजे ॥
निदग्धिकारसेकाकमाचिकायांरसेतथा ।
द्विगुंजावात्रिगुंजावागोक्षीरेणप्रदापयेत् ॥
रात्रिज्वरंनिहंत्याशुनाम्नाविश्वेश्वरोरसः ।

पारा, खपरिया, गन्धक, तीनों बराबर लेवे, सबको पीसकर पीपल की जड के रस, कटेरी की जड के रस, मकोय के रस प्रत्येक मे तीन २ दिन खरल करे, पीछे दो वा तीन रत्ती के प्रमाण गौ के दूध में देवे तो रात्रि ज्वर को शीघ्र दूर करे इसका नाम विश्वेश्वर रस है।

विक्रमकेशरीरसः

शुल्वमेकद्विधातारमर्दयेद्विधिवद्भिषक ।
पश्चाद्विषरसंगन्धमेलयित्वातुभावयेत् ॥
एकविंशतिवाराश्चनिंबूकवल्कलद्रवै ।
रसःसिद्धःप्रदातव्योगुंजामात्रःज्वरांतकृत् ॥
सर्वज्वरहरःख्यातोरसोविक्रमकेशरी ।

तांबा १ भाग, चान्दी २ भाग, दोनो को खरल करे, पीछे विष १ भाग, पारा १ भाग, गन्धक १ भाग सबको खरल कर नींबू रस की २१ भावना देवे, तो यह रस सिद्धि होवे, १ रत्ती खाने से सर्व ज्वर दूर होवे इस रस को विक्रमकेशरीरस कहते हैं।

ज्वरकालकेतुरसः

रसविषंगन्धकताम्रकंचमनःशिलारुष्करता लकच। विमर्द्यवज्रीपयसासमांशगजाह्वयेत त्रपुटंविदध्यात् ॥१॥ द्विगुंजमस्यैवमधुप्र युक्तंज्वरनिहंत्याष्टविधमहोग्र। पुराभवान्यैः कथितोभवेननृणांहितायज्वरकालकेतुः ॥२॥

पारा, विष, गधक, तांबा मनसिल, भिलावा, हरिताल, सब को थूहर के दूध में खरल कर सराव संपुट में रख गज पुट मे फूंक देवे, २ रत्ती शहत के सग खाय तो आठ प्रकार के ज्वर दूर होवे, यह कालकेतु रस पहले श्री शिवजी ने मनुष्यो के कल्याणार्थ पार्वतीजी से कहा था।

त्रिपुरारि रसः

दरदोत्थन्तुसंशुद्धं रसताम्रंचगन्धकं ।
क्राथेनमेघनादस्यसर्वं कुर्य्यात्समांशकं ॥
रसार्द्धं मृतरूप्यंचशृंगवेराम्बुमर्दितं ।
द्विगुंजमधुनादेयसितयार्द्ररसेनवा ॥
ज्वरमष्टविधहन्तिवारिदोषभवंतथा ।
प्लीहानमुदरंशोथमतीसारविनाशयेत् ॥
रोगानेतान्निहत्याशुत्रिपुरंशंकरोयथा ।

हिंगुलोत्थ पारा, तांबा, गधक, लोह भस्म,

अभ्रक, विष, प्रत्येक, एक २ तोला लेवे रूपरस आधा तोला लेवे, सबको एकत्र कर अदरक के रस मे खरल कर दो रत्ती की गोली बनावे १ गोली शहत अथवा मिश्री वा अदरक के रस के साथ देवे तो आठ प्रकार के ज्वर अथवा दुष्ट जल जनित ज्वर, प्लीहा, उदर, सूजन, और अतिसार इनको दूर करे जैसे शिव ने त्रिपुर को मारा इस प्रकार यह रोगो को दूर करता है।

मेघनादरसः

तारंकाश्यंमृतताम्रं त्रिभिस्तुल्यंचगन्धकम्।
क्वाथेनमेघनादस्यपिष्ट्वारुध्वापुटेपचेत्॥
षड्भि.पुटैर्भवेत्सिद्धोमेघनादोज्वरापहः।
भक्षयेत्पर्णखण्डेनविषमज्वरनाशनः॥
अस्यमात्राद्विगुंजास्यात्पथ्यदुग्धोदनंहितं।
नागरातिविषामुस्तभूनिंवामृतवत्सकैः॥
सर्वज्वरातिसारघ्न काथमस्यानुपाययेत्।
तरुणंवाज्वरजीर्णं तृष्णादाहचनाशयेत्॥

चांदी, कासा, तावेकी भस्म, प्रत्येक एक २ तोला, लेवे, गधक ३ तोला सब को चौलाई के काढे में पीस गजपुट मे रख फूंक देवे, इस प्रकार ६ पुट देने से मेघनादरस सिद्धि होता है इस रस को पान के साथ खाय तो विषमज्वर दूर होवे, इस रस की मात्रा दो रत्ती की है तथा सोठ, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, और कुडाकी छाल यह सर्व ज्वरातिसारघ्नक्वाथ इसके ऊपर पिलाना चाहिए, तरुणज्वर, अथवा जीर्णज्वर दाह और तृष्णा इन सब को दूर करें,

जयमंगलोरसः

हिंगुलंसभवसूतगन्धकंटंकणतथा।
ताम्रं बङ्गं माक्षिकंचसैन्धवंमरिचंतथा॥१॥
समसर्वं समुधृत्यद्विगुणंस्वर्णभस्मकं।
तदर्द्धं कांतलोहचरूप्यभस्मंचतत्समं॥२॥
एतत्सर्वंविचूर्ण्याथभावयेत्कनकद्रवैः।
शेफालिदलजैश्चापिदशमूलरसेनच॥३॥
किराततिक्तककाथैस्त्रिवारम्भावयेत्सुधीः।
भावयित्वाततःकार्यागुंजाद्वयमितावटी॥४॥
अनुपानप्रयोक्तव्यजीरकमधुसंयुत।
जीर्णज्वरमहाघोरचिरकालसमुद्भवं॥५॥
ज्वरमष्टविधहन्तिसाध्यासाध्यमथापिवा।
पृथक्दोषांश्चविविधान्समस्तान्विषमज्वरान्॥ मेदोगतंमासगतमस्थिमज्जगतंतथा।
अन्तर्गतमहाघोरवहिस्थंचविशेषतः॥७॥
नानादोषोद्भवचैवज्वरंशुक्रगतंतथा।
निखिलज्वरनामानहन्तिश्रीशिवशासनात्॥
जयमगलनामायरसःश्रीशिवनिर्मितः।
वलपुष्टिकरश्चैवसर्वरोगनिवर्हणः॥६॥ -

हिंगुलसे निकाला हुआ पारा १ तोला, गधक १ तोला, सुहागा १ तोला, तावे की भस्म १ तोला, वंगभस्म १ तोला, सोनामक्खी की भस्म १ तोला, सैधानोन १ तौला, काली मिरच १ तोला, सोने की भस्म २ तोला, कांतलोहकी भस्म १ तोला, रूपे की भस्म १ तोला, सब को एकत्र कर धतूरे के रस की भावना देवे, निर्गुंडी के रस की, तथा दश मूलके काढे की, चिरायता और कुटकी के काढे की, पृथक् २ तीन २ भावना, देवे। पीछे २ रत्ती की गोली बनावे। इस गोली को जीरे और शहत के साथ देवे तो घोर, जीर्णज्वर, अति प्राचीन तथा आठ प्रकार के ज्वर, साध्य असाध्य सब प्रकार के ज्वर नष्ट हो। मेदोगत, मासगत, अस्थिगत, मज्जागत, और शुक्रगत-ज्वर तथा अनेक दोषो से होने वाले सर्व प्रकार के ज्वर दूर होवे यह शिवका निर्माण किया हुआ जयमगल रस है वलकरे पुष्टिकरे और सर्व रोगो को दूर करे।

ज्वरकुंजरपारीन्द्ररसः

मूर्च्छितंरसकर्षैकतदर्धं जारिताभ्रकम्।
तारंताप्यचरसजंरसकताम्रकतथा॥
मौक्तिकंविद्रुमंलोहगिरिजगैरिकंशिला।
गन्धकहेमसारंचपलार्द्धं चपृथकपृथक्॥

चीराचीसुरवल्लीचशोथघ्नीगणिकारिका
तामलाज्योत्स्निकाचैवसतिक्तातुसुदर्शना॥३॥
अग्निजिव्हापूतितैलाशूर्पपर्णीप्रसारणी।
प्रत्येकंस्वरसंदत्वामर्दयेत्त्रिदिनावधि ॥४॥
भक्षयेत्पर्णखण्डेनचतुर्गुंजाप्रमाणतः।
महाअग्निकारकोरोगशंकरघ्न.प्रयोगराट् ॥५
सततसततोऽन्येद्यु तृतीयकचतुर्थकान्।
ज्वरान्सर्व्वान्निहत्याशुभास्करांस्तमिरयथा
कासश्वासप्रमेहंचसशोथपाण्डुकामलाम् ॥
ग्रहणीक्षयरोगंचसर्वोपद्रवसयुतम ।७॥
ज्वरकुंजरपारीन्द्रःप्रथीतःपृथिवीतले।

मूर्छित पारा २ तोले, अभ्रक की भस्म १ तोला, रूपेकी भस्म, सोनामक्खी की भस्म, खपरिया (अथवा रसोजन) सीसेकी भस्म, ताम्र, भस्म, मोती की भस्म, मूंगा की भस्म लोह भस्म, शिलाजीत, गेरू, मनसिल, गंधक हेमसार (अत्युत्तम सुवर्णवर्क) अथवा कोई २ तूतिया कहते हैं ये सर्व वस्तु प्रत्येक चार २ तोला लेवे, और सब को एकत्र कर दुद्धी, तुलसी, पुननवा (साठ) अरनी, भूय आंवला, तोरई की बेलका रस, चिरायता, सुदर्शना, कलयारी, लताकुटकी, मुद्गपर्णी, और प्रसारणी, इनके रससे तीन दिन खरल कर चार २ रत्ती की गोलिया बनावे, एक गोली पान के साथ खाय तो अग्नि को प्रज्ज्वलित करे, सकर रोगों को नष्ट करे, सतत, सतत, अन्येद्यु, तृतीयक, और चातुर्थकादि सब ज्वरों का नाश करे जैसे सूर्य की किरण अन्धकार का नाश करे।

विद्यावल्लभोरसः

रसम्लेच्छशिलातालश्चंद्वद्व्यग्न्यार्कभागिकाः
पिष्ट्वातान्मुखवीतोयैस्ताम्रपात्रोदरेक्षिपेत्॥
न्यस्तंशरावेसरुध्वावालुकायन्त्रगपचेत्।
स्फुटतिव्रीह्योयावत्तच्छिरस्थाशनैः शनैः
सचूर्ण्यशर्करायुक्त द्विवल्लंभक्षयेत्तत.। विष
माख्यान्ज्वरान्हंतितैलाम्लादिविवर्जयेत्

शुद्ध पारा, शुद्ध हींगलू, मनसिल, हरिताल, क्रमसे १ भाग, दो भाग, तीन भाग, और १२ भाग लेवे, सब को करेले के रस में पीस ताँबे के पात्र में भरे, ऊपर शराव ढक्कर कपरमिट्टी कर वालुकायन्त्र मे पचावे। वालू के ऊपर धान रख देवे। जब धान खिलजावें तब चूल्हे से उतार खरल करके पीछे इससे से ४ रत्ती चीनी के साथ नित्य भक्षण करे तो सर्व विषमज्वरों को दूर करे। इस पर तेल खटाई आदि को न खावे।

शीतारिरसः

कूष्मांडक्षारचूर्णोदकतिलजपृथक्पाचितशु द्धताल। तुल्यंसूतेनपिष्ट्वात्रिदिवसमसकृत् कारवेल्लीरसेन ॥ क्षिप्त्वातत्खर्परांतर्दिनप तिपिहितरध्रमप्यधयेत्तम्। नीरध्रचूर्णपथ्या गुडलवणखटीमृद्भिरप्यन्तरालं ॥१॥ तद्वालुकापूर्णघटविदध्याच्छनै.पचेत्तावदुपर्य मूष्य। व्रीहिविवर्णत्वमुपैतियावत्ततस्तुशीतविदधीतचूर्णं ॥२॥ सिद्धंतच्चसमाददी ततुलसीतोयेनवल्लोन्मितं। पश्चात्क्षौद्रकणा सिताज्यपयसाकृत्वानुपानंगदी ॥ भुंजीता थपयोन्नमुद्गसहितसाम्यचहन्यान्नृणां । तापकालवशेनसंचितमयशीतारिनामा-रसः ॥ ३ ॥

पेठे के खार में, चूने के जल में, और तिल के खार से जल मिला कर पृथक्-पृथक् हरिताल को पचावे, इस प्रकार शुद्ध हरिताल लेवे, उसमें बराबर का पारा मिलाय तीन दिन करेले के रसमे खरल करे पीछे उसको शराव संपुट में बन्द कर उस शराव के मुख को तावे के पात्र से बन्द करे. और उसके छिद्रों को हरड के चूर्ण, गुड, नोन, खडिया, और मुल्तानी मिट्टी इन सबको मिला कर इससे बन्द करे, पीछे इस पात्र को वालुका यन्त्र में रख कर भट्टी पर चढा कर पचावे, और इस पात्र के मुख पर धान बखेर देवे जब धान खिल जावें तब उतार लेवे. और उसमें से रसको निकाल लेवे इस रस मे

मे दो रत्ती तुलसी के रस के साथ देवे। पीछे शहत, पीपर, मिश्री मक्खन मिलाहुआ दूध पीवे. पथ्य दूध, अन्न, मुंग का यूप और घृत हैं. इस रस के सेवन करने से बहुत दिन का भी संचितज्वर नष्ट होवे।

ज्वरशूलहरोरसः

रसगन्धकयो.कृत्वाकज्जलीभाण्डमध्यगां।
तत्राधोवदनाताम्रपात्रींसंरुध्याशोषयेत् ॥१॥
पादांगुष्टप्रमाणेनचुल्ल्यांज्वालेनतादहेत्।
यामद्वयततस्तस्थम्सपात्र समाहरेत॥२॥
चूर्णयेद्रक्तियुगलंतृतीय ग्रावि चक्षण.।
ताम्बुलीदलयोगेनदद्यात्सर्वज्वरेष्वसुम॥३॥
जीरसैन्धवसंलिप्तवक्त्रायज्वरिणेहित।
स्वेदोद्गमोभवत्येवदेत्रिनर्वेपुपाप्मसु ॥४॥
चातुर्थकादीन्विषमान्नवमागामिनज्वर।
साधारणसन्निपातंजयत्येवनसशयः ॥५॥

पारा, गधक दोनों की कजली कर एक पात्र के बीच में भर के उसके ऊपर ओंधे मुख तावे के कटोरी ढक देवे, उसके ऊपर कपर मिट्टी कर धूप मे सुखा लेवे पीछे उसको चूल्हे पर चढा कर उसके नीचे पैर के अंगूठे के समान मोटी लकडी की अग्नि जलावे, दो प्रहर अग्नि देवे, जब स्वांग शीतल हो जाय तब उतार उसमें से दो वा तीन रत्ती रस ले पीस कर पान मे सर्व ज्वर मात्र मे देवे. प्रथम ज्वर वाले मनुष्य का मुख जीरे और सेंधे नोन से लिप्त करा कर पीछे इस रस को देवे. इस रस के सेवन करने से पसीनो के आते ही चातुर्थकादि सर्व विषम ज्वर नाश होवें. और साधारण सन्निपात भी दूर हो।

षडाननोरसः

आरकाश्यमृतताम्र दरदपिप्पलीविष ।
तुल्यांशमर्दयेत्खल्ले याम चगुडूचीरसैः ॥१॥
गुंजामात्रं रसदेयगुंजामात्र लिहेत्सदा।
ज्वरमन्दानलंचैववातपित्तज्वरेषुच ॥२॥
ज्वरंवैषम्यतरुणेजीर्णेचैवविशेषत'।
मुद्गान्नमुद्गयूषम्वातक्रभक्तंचकेवल ॥३॥
नारिकेलोदकदेयमुद्गपथ्यविशेषत ।
षडाननोरसोनामसर्वज्वरकुलान्तकृत् ॥४॥

पीपल की भस्म १ तोला, कासे की भस्म १ तोला, तावे की भस्म १ तोला, हींगलू १ तोला, पीपल १ तोला, सिंगिया विष १ तोला, सबको खरल मे डाल गिलोय के रस से एक प्रहर घोंटे। इसकी एक २ रत्ती की गोली बना कर १ गोली नित्य खाया करे तो ज्वर, मन्दाग्नि, वात पित्त ज्वर, विषमज्वर, तरुण ज्वर, और जीर्ण ज्वर नष्ट होवे। पथ्य मुद्गान्न तथा मूंग का यूप छाछ और भात देवे तथा नारियल का जल देवे और मूंगका पथ्य विशेष करके देना चाहिये यह षडानन रस सर्व ज्वरों के कुल को काल रूप है।

कल्पतरुरसः

रसगन्धांविषताभ्रंसमभागविचूर्णयेत्।
भावयेत्पचभिःपित्तैक्रमशः पचवासरं ॥१॥
निर्गुडीस्वरसैनैवमर्दयेत्सप्तवासर।
आद्रकस्यरसेनैवभावयेच्चत्रिधापुनः ॥२॥
सर्षपाभावटीकार्य्याछायथापरिशोषिता।
तत.सप्तवटीयोज्यायावन्नत्रिगुणाभवेत् ॥३॥
वयोऽग्निदोषकवुध्याप्रयोज्याभिषजाम्वरै.।
अनुपानचोष्णजलंकज्जलीपिप्पलीयुतम् ॥४॥
पानावशेषेप्रस्वाप्यवस्त्रैराच्छादयेन्नरम्।
घर्म्माभ्यगमनयावत्ततोरोगात्प्रमुच्यते ॥५॥
रोगिणस्नापयित्वातुभोजयेत्ससितदधि।
एषकल्पतरुर्नामरस'परमदुर्ल्लभ. ॥६॥
असाध्यचिरकालोत्थजीर्णंचविषमज्वर।
हन्तिज्वरातिसारौचग्रहणींपाण्डुकामलाम् ॥७॥
नदेयःश्वासकासेचशूलयुक्तनरेतथा।
गोपनीयप्रयत्नेननदेयोयस्यकस्यचित् ॥८॥

पारा, गधक, सिंगिया विष, और तावे की भस्म, सब बराबर लेवे। सब को खरल मे डाल पाच दिन पांच पित्तो की भावना देवे पीछे

संभालू के रस से सात दिन खरल करे, तथा अदरक के रस की तीन भावना देवे। पीछे सरसो के समान गोली बनावे, और छाया में सुखा लेवे इक्कीस दिन पर्य्यंत नित्य सेवन करे, बलाबल देख कर सात से बढावे, इसके ऊपर पारे गंधक की कजली और पीपल का चूर्ण गरम जल के साथ देवे। औषधि खाकर कपडा ओढ कर सो जावे। पसीना के आते ही रोग से रोगी छूट जावे। पीछे रोगी को शीतल जल से निहला कर मिश्री दही भोजन करावे, यह कल्पतरु नाम रस परम दुर्लभ है असाध्य बहुत काल के पुराने विषम ज्वर को ज्वरातिसार को, संग्रहणी, पाडु, कामला, इन सब रोगो को नष्ट करे। इस रस को श्वास, खांसी और शूल वाले रोगी को न देवें इस रस को वैद्य किसी को न बतावे गुप्त रक्खे।

तालांकोरसः

तालकस्यचभागौद्वौभागन्तुत्थस्यशुक्तिका।
चूर्णकानांचतुर्भागंमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥१॥
यामैकेनततःपश्चात्रुध्यागजपुटेपचेत्।
अस्यगुंजाद्वयंहन्तिवातिकपैत्तिकज्वर ॥२॥
शीतज्वरविशेषेणतृतीयकचतुर्थकौ ॥३॥

हरिताल २ तोला, तूतिया १ तोला, सीप की भस्म ४ तोला, सबको एकत्र कर घीगुवार के रस से एक प्रहर खरल करे, पीछे सरवा सपुट में रस कपरमिट्टी कर गज पुट से फूंक देवे. इस रस को १ रत्ती खाय तो वातिक ज्वर, पैत्तिक ज्वर, शीतज्वर और विशेष करके तृतीयक और चातुर्थिकज्वर दूर होवे।

ज्वरारिअभ्रकम्

अभ्र ताम्र रसगन्धविषचेतिसमसमं।
द्विगुणवृत्तबीजचव्योपपचगुणांमत ॥१॥
जलेनवटिकाकुर्याद्यथादोषानुपानत.।
अभ्रंज्वरारिनामेदंसर्वज्वरविनाशनम् ॥२॥
वातिकान्पैत्तिकाश्चैवश्लैष्मिकान्सान्निपातकान्। विषमाख्यान्द्वंद्वजांश्चधातुस्थान्द्विषमज्वरान् ॥३॥ नाशयेन्नात्रसन्देहोवृक्षान्मिन्द्राशनिर्यथा। प्लीहानंयकृतगुल्ममग्निमांद्यंसशोथकम् ॥४॥ कासंश्वासंतृषाकम्पंदाहंशीतंवमिंभ्रमिम ॥

अभ्रक, ताम्र भस्म, पारा, गंधक, और विष ये सब वस्तु दो दो मासे लेवे. और धतूरे के बीज ४ तोला लेवे त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) १० तोले लेवे, सबको जल में पीस कर एक रत्ती के सदृश गोली बनावे दोषानुसार इसको पृथक् पृथक् अनुपान से देवे, तो यह ज्वरारि नामक अभ्रक सर्व ज्वरो को नष्ट करे. वातिक, पैत्तिक, कफजन्य, सन्निपातज, विषम ज्वर, द्वन्द्वज, धातुस्था, सर्व विषम ज्वरों को दूर करे. जैसे इन्द्र का वज्र वृक्षो का नाश करता है। प्लीह रोग, कलेजे के रोग, गुल्म रोग, मन्दाग्नि, सूजन, श्वास, खासी, प्यास, कप, दाह, शीत, वमन, और भ्रम-रोग, इन सबके यह ज्वरारिअभ्रक नाश करने वाला है।

जीवनानन्दाभ्रम्.

वज्राभ्रंमारितंकृत्वाकर्षयुग्मविचूर्णयेत्।
जीरकनकबीजंचकर्षवासारसेनच ॥१॥
कंटकारीरसेनैवधात्रीमुस्तरसेनच।
गुडूच्यास्वरसेनैवपलांशेनपृथक्पृथक् ॥२॥
मर्दयित्वावटीकार्य्यागुंजामात्राप्रयोजिता।
विषमाख्यान्ज्वरान्सर्वान्प्लीहानयकृतवर्मि ॥३॥ रक्तपित्तवातरक्त ग्रहणींश्वासकासकौ। अरुचिंशूलहृल्लासावर्शांसिचविनाशयेत् ॥४॥ जीवनानन्दनामेदमभ्र वृष्यबलप्रद। रसायनवरश्रेष्ठमग्निसदीपनपरं ॥५॥

वज्राभ्रक की भस्म कर २ तोला लेवे. जीरा दो तोला, धतूरे के बीज दो तोला, सबको एकत्र कर चूर्ण कर अडूसा, कटेरी, आवला,

नागरमोथा और गिलोय इन प्रत्येक के एक एक पल रस में पृथक् २ मर्दन करे, पीछे एक एक रत्ती के प्रमाण गोली बनावे यह १ गोली विषम ज्वर वाले रोगी को देवे तो सर्व विषम ज्वर दूर होवे. तापतिल्ली, यकृत, वमन, रक्त-पित्त, वातरक्त, सग्रहणी, श्वास खांसी, अरुचि, शूल, हृल्लास (सूखीरह) बवासीर इन सबको नष्ट करे । इस अभ्रक को जीवनानन्द अभ्रक कहते हैं, यह वीर्यकर्ता, बलकर्ता है, सर्व रसायनों में श्रेष्ठ है और अग्नि को दीप्त करता है ।

चन्दनादिलोह

रक्तचन्दनह्रीवेरंपाठोशीरकणाशिवा ।
नागरोत्पलधात्रीभि स्त्रिमदेनसमन्वितः॥१॥
लोहोनिहन्तिविविधान्समस्तान्विषमज्वरा
न्। त्रिमदंमुस्तकंचित्रकविडंगंसर्वसमलोह॥२
ॐअमृतोद्भवायस्वाहा । इतिमन्त्रेणमर्दनम् ।
ॐअमृतेहुँ ॥ इतिमन्त्रेणभक्षणं । द्वादश
द्रव्यसमलोहम् ॥ रक्तिकाद्वयमधुनालिहेत ।
पश्चात्मुस्तकानुचवर्णंकर्त्तव्यम् वृद्धोपदे-
शात् ॥

लाल चंदन, नेत्रवाला, पाढ, खस, पीपल, हरड, सोंठ, कमलगट्टा, आवले, मोथा, चीता, और वायविडंग सब बराबर लेवे. और सबकी बराबर लोह भस्म, (सार) लेवे. यह लोह सर्व विषम ज्वरों को नाश करता है इसकी मात्रा दो रत्ती की शहत के साथ खाय पीछे मोथा को चबावे, यह वृद्ध पुरुषों की समति है ।

श्लेष्मशैलेन्द्रोरसः

गन्धकपारदचाभ्र त्र्यूषणजीरकद्वयम् ।
शटीशृगीयवानीचपुष्कररामठतथा ॥१॥
सैंधवचयावशूकचटकणंगजपिप्पली ।
जातिकोषाजमोदाचलोहयासलवगकम् ॥२॥
धत्तूरबीजजयपालकट्फलंचित्रकतथा ।
प्रत्येककार्षिकचैषांश्लक्ष्णचूर्णप्रकल्पयेत् ॥३॥
पाषाणेविमलेपात्रे घृष्टंपाषाणमुद्गरैः ।
बिल्वमूलरसदत्वाचार्कचित्रकदन्तिका ॥४॥
शिखरीकांजिकावासानिर्गुडीगणकारिका ।
धत्तूरकृष्णजीरचपारिभद्रकपिप्पली ॥५॥
कटकार्यार्द्रयोश्चैवमूलान्येतानिदापयेत् ।
एषामूलरसदत्वाघृष्टमातपशोषित ॥६॥
गुंजाप्रमाणावटिकाकारयेत्कुशलोभिषक् ।
चतुर्विधवटीखादेन्नित्यमार्द्रकवारिणा ॥७॥
उष्णतोयानुपानेनश्लेष्मव्याधिव्यपोहति ।
विंशतिश्लेष्मकाश्चैवशिरोरोगांश्चदारुणान्
॥८॥ प्रमेहान्विंशतिचेवपंचगुल्मनिपू-
दनम् । उदरान्यत्रवृद्धिंचाप्यामवातविनाश-
नम् ॥९॥ पचपाण्डवामयान्हन्तिकृमिस्थौ-
ल्यामयापह । सोदावर्त्तज्वरंकुष्ठगात्रकडूवा
मयापहम् ॥१०॥ यथाशुष्केन्धनेवन्हिस्तथा-
वन्हिर्विवर्द्धनः। श्लेष्मामयिकृपाहेतोरसेन्द्रो-
मुनिभाषित. ॥११॥ श्लेष्मशैलेन्द्रकोनामरसे
न्द्रगुटिकास्मृता ।

'गधक, पारा, अभ्रक की भस्म, त्र्यूषण (सोंठ, मिरच, पीपल) सफेद जीरा, काला जीरा, कचूर, काकाडशृंगी, पोहोकर मूल, हींग, सैंधा नमक, जवाखार, सुहागा, गज पीपल, जायफल, अजमोद, लोह, जवासा, लोग, धतूरे के बीज, जमालगोटा, कायफर, चित्रक, प्रत्येक चार चार टक लेवे सबका सूक्ष्म चूर्ण कर स्वच्छ पाषाण के खरल मे डाल मूसले से घोटे, बेल की जड के रस मे, आक, चित्रक, दन्ती, चिरचिटा, काजी, अडूसा, निर्गुंडी, अरनी, धतूरा, काला जीरा, इनके रसमे तथा पीपल, कटेरी, अदरक, इनके रस मे पृथक् २ भावना देकर धूप में सुखा लेवे. एक रत्ती के प्रमाण गोली बनावे. चार गोली अदरक के रस में खाय, और ऊपर गरम जल पीवे तो कफ के २० प्रकार के रोगो को, मस्तक के रोगो को, २० प्रकार की प्रमेह को,

५ प्रकार के गुल्म रोगो को, उदर रोग, अन्त्र वृद्धि, आमवात, ५ प्रकार के पाडु रोग, कृमि-रोग, मेद रोग उदावर्त्त, ज्वर कुष्ठ, खुजली, इन सब रोगों को यह रस दूर करे, जैसे सूखे ई धन मे अग्नि बढती है इस प्रकार अग्नि को बढावे, कफ पीडित मनुष्यो की कृपा विचार मुनीश्वर ने यह रस कहा है, यह श्लेष्मशैलेन्द्र नाम गुटिका कहलाता है।

लक्ष्मीविलासोरसः

पलकृष्णाभ्रचूर्णस्यतदर्द्धोरसगन्धकौ।
तदर्द्धचन्द्रसज्ञस्यजातिकोषफलतथा ॥१॥
वृद्धदारुकवीजचवीजधत्तूरकस्यच।
त्रैलोक्यविजयाबीजविदारीमूलमेवच ॥२॥
नारायणीतथानागबलाचातिबलातथा।
बीजगोक्षरकस्यापिनैचुलबीजमेवच ॥३॥
एतेषांकार्षिकंचूर्णपर्णपत्ररसैःपुनः।
निष्पिष्यवटिकाकार्य्यात्रिगुञ्जाफलमानतः ॥४॥ निहन्तिसन्निपातोत्थान्गदान्घोरान्चतुर्विधान्। वातोत्थान्पैत्तिकाश्चैवनास्त्यत्रनियमः क्वचित् ॥५॥ कुष्ठमष्टादशाख्यचप्रमेहानविंशतितथा। नाडीव्रणव्रणंघोरगुदामयभगन्दर ॥६॥ श्लीपदंकफवातोत्थरक्तमांसाश्रितंचयत्। मेदोगतंधातुगतंचिरजकुलसम्भवं ॥७॥ गलशोथमंत्रवृद्धिमतिसारसुदारुणम्। आमवातसर्वरूपजिह्वास्तभगलग्रहम् ॥८॥ उदरकर्णनासाक्षिमुखवैकृतमेवच। कासपीनसयक्ष्मार्शस्थौल्यदौर्गंध्यनाशनः ॥९॥ सर्वशूलशिरःशूलस्त्रीणागदानिपूदन। वटिकांप्रातरेकैकाखादेन्नित्ययथाबलम् ॥१०॥ अनुपानमिहप्रोक्त मासपिष्ट पयोदधि। वारिभक्तसुरासिन्धुसेवनात्कामरूपधृक् ॥११॥ वृद्धोपितरुणिगच्छेन्नचशुक्रस्यसक्षय। नचलिंगस्यशैथिल्यनकेशोयान्तिपक्वता ॥१२॥ नित्यस्त्रीणाशतंगच्छन्मत्तवारणविक्रम.। द्विलक्षयोजनीदृष्टिर्जायतेपौष्टिक.परः ॥१३॥ प्रोक्त.प्रयोगराजोयंनारदेनमहात्मना। रसोलक्ष्मीविलासन्तुवासुदेवजगत्पते ॥१४॥ अभ्यासाद्यस्यभगवान्लक्षनारीसुवल्लभः। [रसगन्धककर्पूरजातीकोषजातीफलानापचानाप्रत्येकपलार्द्ध वृद्धदारुकबीजादीनानवद्रव्याणाप्रत्येकंपर्दइतिभट्टादिव्यवहारः] ॥

अभ्रक भस्म १ पल, पारा आधा पल, गंधक अर्द्ध पल, कपूर १ तोला, जायफल, विधायरे क बीज, धतूरे के बीज, भाग के बीज, विदारी कन्द, शतावर, नागवला, खरेटी, गोखरू, वेत के बीज, ये प्रत्येक एक २ तोला लेवे सबको कूट पीस पानो के रस मे खरल कर तीन-तीन रत्ती की गोलियां बनावे। इस गोली के खाने से सर्व सन्निपात के रोग तथा कायिक, वाचिक, मानसिक और आगतुज रोग, वात के, पित्त के, अठारह प्रकार के कोढ, बीस प्रकार के प्रमेह, घोर व्रण, ववासीर, भगन्दर, श्लीपद, कफ वातोत्थरोग, रुधिर, मासाश्रित रोग, मेदगत, धातुगत, पुराने रोग, कुलपरपरा के रोग, गलशोथ, अंत्रवृद्धि, अतिसार, आमवात, सर्व प्रकार का जिह्वास्तभ, गलग्रह, उदर रोग, कर्ण रोग, नासिका रोग, नेत्र रोग, मुख रोग, खासी, पीनस, खई, गुदा के रोग, स्थूलता का रोग, दुर्गन्धि, सर्वप्रकार के शूल, मस्तकशूल, स्त्रियों के रोग, इन सब रोगो को यह रस दूर करे। बलाबल देखकर एक गोली प्रात.काल नित्य सेवन करे इस पर मास, गेहू का चून, मैदा दूध, दही, मद्य का सेवन पथ्य है. इसके सेवन से वृद्ध मनुष्य भी तरुण हो जाता है, अक्षय वीर्य होवे, लिंग कभी शिथिल न हो, न कभी सफेद बाल होवे, सौ स्त्रियो से भोग करने का बल होवे, मतवाले हाथी के समान पराक्रम हो, दो लाख योजन की दृष्टि होवे। यह रस परम पुष्टिकारक है। यह लक्ष्मी विलास का प्रयोग नारद जी ने रास के समय कृष्ण भगवान् से कहा था। इस रस के अभ्यास से श्री

वासुदेव भगवान् एकलाख स्त्रियों के प्यारे हुए।

विषमज्वरान्तकलोहः

पारदंगन्धकतुल्यंसूताद्धं जीर्णताम्रक ।
ताम्रतुल्यमाक्षिकंचलोहंसर्वसमंनयेत् ॥१॥
जयन्त्यास्वरसेनैवकोकिलाख्यरसेनच ।
वासकार्द्रपर्णरसैःपंचधाचविमर्दितः ॥२॥
पृथक्कलायमानन्तुवटिकांकारयेद्भिषक्।
विषमज्वरान्तनामायंविषमज्वरनाशनः ॥
वन्हिदीप्तिकरोहृद्यप्लीहगुल्मविनाशनः ।
चक्षुष्योवृंहणोवृष्य.श्रेष्ठःसर्वरुजापहः ॥

पारा, गंधक दोनो समान लेवे पारे से आधी; पुरानी तांबे की भस्म लेवे, तांबे के समान सोना मक्खी, और सब के तुल्य लोह भस्म, सबको अरनी के रस मे कालमपाने के रस मे, अडूसे के रस में, अदरक और पान के रस मे पृथक् २ पाच-पाच भावना देकर मटर के समान गोलिया बनावे। यह विषम ज्वरान्तक लोह सब विषम ज्वरों का नाश करे, अग्नि को दीप्त करे हृदय का हित करता है, तापतिल्ली और गोला य रोगों को दूर करे, नेत्रो को पथ्य है, वृंहण और वृष्य है। सर्व रोग नाशक ये परमोत्तम है।

विषमज्वरांतकलोह

(पुटपक्व)

हिंगुलमम्भवंसूतंगन्धककेनसुकज्जलं ।
पर्पटीरसवत्पाच्तसूतांग्रहेमभस्मकम् ॥१॥
लोहताम्रमभ्रकचरसस्याद्विगुणंतथा ।
वगकंगैरिकचैवप्रवालचरसार्द्धकम् ॥२॥
मुक्ताशखशुक्तिभस्मप्रदेयंरसपादकम् ।
मुक्तागृहेचसस्थाप्यपुटपाकेनसाधयेत् ॥३॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थायद्विगुंजाफलमानत ।
अनुपानंप्रयोक्तव्यंकणाहिंगुससैंधवम् ॥४॥
ज्वरमष्टविधंहन्तिवातपित्तकफोद्भवम् ।
प्लीहानयकृतगुल्मसाध्यासाध्यमथापिवा॥५॥
सनतसततोत्थचविषमज्वरनाशन ।
कामलांपाण्डुरोगचशोथमेहमरोचकं ॥६॥
ग्रहणीमामदोषंचकासश्वासचतत्रतत् ।
मूत्रकृच्छ्रातिसारंचनाशयेदविकल्पतः ॥७॥
अग्निचकुरुतेदीप्त बलवर्णप्रसादनः ।
विषमज्वरान्तकोनाम्नाधन्वन्तरिप्रकाशितः

शुद्ध पारे और गंधक की कजली करे, पीछे पर्पटी की विधि से पचावे, पीछे इसमे पारे की चतुर्थांश सुवर्ण भस्म मिलावे, तदनन्तर सार, तावे की भस्म, अभ्रक की भस्म, प्रत्येक पारे से दूनो लेवे। वग भस्म, गेरू मूगा की भस्म, प्रत्येक पारे से आधी लेवे। मोती की भस्म, शख की भस्म, सीप की भस्म, प्रत्येक पारे की चतुर्थांश लेवे। सब वस्तुओ को खरल कर सीप मे भर पुटपाक की रीति से सिद्ध करे। इस मे से नित्य प्रात.काल दो रत्ती पीपल, हीग और सेंधे निमक के साथ खाय तो आठ प्रकार के ज्वर, तिल्ली, यकृत, गोला, ये साध्य असाध्य सब प्रकार के राग दूर होवे सतत, सतत ज्वरो को, कामला, पाडुरोग, सूजन, प्रमेह, अरुचि, संग्रहणी, आमदोष, खासी, श्वास, मूत्रकृच्छ, अतिसार इन सब रोगो का नाश करे, अग्नि को दीप्तकरे, बल-वर्ण को बढावे, यह धन्वतरिका प्रकाशित विषम-ज्वरांतक लोह है।

सर्वज्वरहरलोहम्

चित्रकत्रिफलाव्योषविडगमुस्तकतथा ।
श्रेयसीपिप्पलीमूलमुशीरदेवदारुच ॥१॥
किराततिक्तकवालकटुकीकटकारिका ।
सौभांजनस्यबीजचमधुकवत्सकंसमम् ॥२॥
लोहतुल्यगृहीत्वातुवटिकांकारयेत्भिषक् ।
सर्वज्वरहरो ह्येषसर्वज्वरकुलांतकृत् ॥३॥
वातिकपैत्तिकश्लेष्मद्वंद्वजसन्निपातकम् ।
जीर्णज्वरचविषमरोगसकरमेवच ॥४॥
प्लीहानमग्रमांसचयकृतचविनाशयेत् ॥

चीते की छाल, त्रिफला, त्रिकुटा, वायवि

डग, नागरमोथा, सफेद कटेरी, पीपलामूल, खस, देवदारु, चिरायता, परवल के पत्ते, नेत्रवाला, कुटकी, कटेरी, सहजने के बीज, मुलहठी, इन्द्रजों, सब औषधि समान लेवे. सब की बराबर लोह भस्म ले अदरक के रस वा पानी से गोली बनावे. यह लोह सर्वज्वरों के कुल को काल रूप है. वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, द्वंद्वज, सन्निपातज जीर्णज्वर, विषमज्वर, रोगसकर, छीहारोग, तथा अग्रमांस और कलेजे के रोगो को दूर करे।

बृहत्सर्वज्वरहरलोहम्

द्विपलंजारितलोहंरसगन्धौद्वितोलक।
तोलकत्रिफलाव्योषंविडंगमुस्तकतथा ॥१॥
श्रेयसीपिप्पलीमूलहरिद्रे द्वे चचित्रकम्।
आर्द्रकस्यरसेनैववटिकांकारयेद्भिषक् ॥२॥
गुंजाद्वयंवटींकृत्वाभक्षयेदार्द्रकद्रवैः।
सर्वज्वरहरंलोहंसर्वज्वरविनाशनम् ॥३॥
वातिकंपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकसन्निपातिकम्।
विषमज्वरभूतोत्थज्वरप्लीहानमेवच ॥४॥
मासजंपक्षजंचैवतथासंवत्सरोत्थितम्।
सर्वान्ज्वरान्निहन्त्याशुसत्यंश्रीशिवशासनात्

शुद्ध लोह भस्म ८ तोला, पारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले, त्रिफला १ तोले, त्रिकुटा १ तोले, वायविडंग १ तोले, नागरमोथा १ तोले, गज पीपल, पीपलामूल, हलदी, दारुहलदी, चीते की छाल, प्रत्येक एक २ तोला लेवे। सब को कूट पीस अदरक के रस से घोटकर गोली बनावे। एक रत्ती के प्रमाण गोली अदरक के रस से खाय तो सर्व ज्वर नष्ट होवे। वातिक ज्वर, पैत्तिक ज्वर, श्लेष्मिक ज्वर, सन्निपात ज्वर, विषम ज्वर, भूतोत्थ ज्वर, तिल्ली' महीने मे आने वाला ज्वर पखवारे मे आने वाला ज्वर, वर्ष दिन से आने वाला ज्वर इत्यादि सर्व ज्वर नाश होवें। यह श्रीशिवजी का कहाविषमज्वरांतकलोह है।

बृहत्सर्वज्वरहरलोहम्।

पारदंगन्धकंशुद्धं ताम्रमभ्रं चमाक्षिकम्।
हिरण्यतारतालंचकर्षमेकंपृथक्पृथक् ॥
मृतकान्तंपलंदेयंसर्वमेकीकृतंशुभम्।
वक्ष्यमाणौषधैर्भाव्यंप्रत्येकंदिनसप्तकम् ॥२॥
कारवल्लेरसेनापिदशमूलरसेनच।
पर्पटस्यकषायेणक्वाथेनत्रैफलेनच ॥३॥
काकमाचीरसेनैवनिर्गुण्डयास्वरसेनच।
पुनर्नवार्द्रकांभोभिर्भावनांपरिकल्पयेच ॥४॥
रक्तिकादिक्रमेणैववर्टिकांकारयेद्भिषक्।
पिप्पलीगुडसंयुक्तागुटिकावीर्यवर्धिनी ॥५॥
ज्वरमष्टविधंहन्तिचिरकालसमुद्भवम्।
विविधवारिदोषोत्थंनानादोषोद्भवंतथा ॥६॥
सततादिज्वरंहन्तिसाध्यासाध्यंनसंशयः।
क्षयं द्धवचधातुस्थकामशोकभवतथा।
भूतावेशज्वरंचैवऋत्वदोषोद्भवेतथा।
अभिघातज्वरंचैवअभिचारसमुद्भवम् ॥८॥
अभिन्यासंमहाघोरंविषमंचत्रिदोषजम्।
शीतपूर्वं दाहपूर्वं विषमशीतलज्वरम् ॥९॥
प्रलेपकंज्वरंघोरंअर्द्धनारीश्वरंतथा।
प्लीहज्वरंतथाकासेचातुर्थिकविपर्ययम् ॥१०॥
पाण्डुरोगगणान्सर्वानग्निमांद्यंमहागदम्।
एतान्सर्वान्निहन्त्याशुपक्षार्द्धेनात्रसंशयः ॥११॥
शाल्यन्नं तक्रसहितंभोजयेद्द्विजसंयुतम्।
ककारपूर्वकंसर्वंवर्ज्जनीयंविशेषतः ॥१२॥
मैथुनंवर्जयेत्तावद्यावन्नोबलवान्भवेत्।
सर्वज्वरहरंश्रेष्ठमनुपानंप्रकल्पयेत् ॥१३॥

शुद्ध पारा शुद्ध गधक, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, सोना मक्खी की भस्म, सोने की भस्म चांदी की भस्म, हरिताल ये सब प्रत्येक एक २ तोला लेवे कांत लोह की भस्म ४ तोला, सब को एकत्र कर आगे जो औषधी कहते है उनकी सात दिन भावना देवे, करेले का रस, दशमूल का काढा, पित्तपापरे का काढा, त्रिफले का काढ़ा. मकोय का रस, निर्गुंडी का रस, सांठ का रस, अदरक का रस इन सब की पृथक् २ भावना देवे पीछे क्रम से १ रत्ती २ रत्ती ३ रत्ती को गोलियां बनावे, बलाबल देखकर १ गोली पीपल और गुड के साथ खाय तो इस रस से वीर्य बढे, आठ प्रकार का ज्वर पुराना ज्वर दुष्ट-

जल जनित ज्वर, अनेक दोषजनित ज्वर साध्य असाध्य संततादि विषम ज्वर, खड्डे से उत्पन्न ज्वर धातुगत ज्वर, काम ज्वर, शोक ज्वर, भूतावेश, नक्षत्र जनित ज्वर, अभिघातजनित, अभिचार जनित, शीतलग के आनेवाला, दाहलग के आने वाला विषम शीतल अभिन्यास, त्रिदोषजनित विषम प्रलपक, अर्द्ध नारीश्वर, इन सब ज्वरों को प्लीह ज्वर, खाँसी, चातुर्थिका विपरीत ज्वर, पाडुरोग मन्दाग्नि इन सब रोगों को एक ही सप्ताह में दूर करे जब रोगी को भोजन करने की इच्छा होवे तब दही भात ब्राह्मणों के साथ करावे और ककार आदि से जिनके ऐन पदार्थ त्याज्य है, मैथुन करना भी निषिद्ध है यह सर्वज्वरहरलोह है।

मकरध्वजोरसः ।

दलस्वर्णपलैकचरसेन्द्रं चपलाष्टकम् ।
रसस्यद्विगुणगन्धअन्योन्यंकज्जलीकृतम् ।१।
कुमारिकारसैर्भाव्यकाचपात्रे निधापयेत ।
बालुकायंत्रकेरुध्द्वाक्रमादिनत्रयपचेत ।।२।।
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यपुष्पारुणसमप्रभम् ।
यवमात्र प्रदातव्यमहिवल्लीदलेनच ।।३।।
एतदभ्यासतश्चैवजरामरणनाशनम ।
अनुपानविशेषेणकरोतिविविधान्गुणान् ।४।
ज्वरत्रिदोषजंघोरमन्दाग्निस्त्वमरोचकम ।
अन्यांश्चविविधानरोगान्नाशयेन्नात्रसंशयः ।

सोने के वर्क ४ तोले शुद्ध पारा ३२ तोले, गधक ६४ तोले, सबको मिलाकर कजली करे, पीछे घी गुवार के रस मे खरल कर धूप मे सुखाय आतिसी शीशी मे भरे, उस पर कपर मिट्टी कर बालुका यत्र मे रख शीशी का सुख बदकर तीन दिन अग्नि से पाक करे, जब स्वाग शीतल हो जावे तब उस शीशी की फोड लाल पुष्प के समान इस मकरध्वज रस की नाल को निकाल लेवे इसमें से एक यव के समान पान मे रखकर खाने को देवे, इस रस के अभ्यास से बुढापा और अकाल मृत्यु का भय दूर होवे। पृथक २ अनुपान से अनेक गुण करे, त्रिदोषजनित ज्वर' मन्दाग्नि, अरुचि और अनेक प्रकार के रोग इस रस के सेवन से दूर होते हैं। इस रस को मकरध्वज रस कहते हैं। वास्तव मे यह चन्द्रोदय रस है।

पंचाननज्वरांकुशः

पारदगन्धकंशृगीविषचोकंहरीतकी ।
धतूरस्यबीजानिमत्स्यपित्तविभीतकम् ।।१।।
कैरातममृतासत्त्वजीरकंकारवीजगत् ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलसमभागं विचूर्णयेत् ।।२।।
जम्बीरनिम्बुनीरेणमर्दयेत्प्रहरत्रयम् ।
वटीकलायसदृशीविषमज्वरनाशिनी ।।३।।
शीतज्वरचपलयादाहचसितयाहरेत् ।
रसोज्वरांकुशोनामपचाननइतिस्मृत' ।।४।।
बहुधायमनुभूतोभिषग्भिर्नात्रसंशय' ।

पारा, गंधक, काकडासिगी, विष, चोक हरड, धतूरे के बीज, कुटकी, बहेडा, चिरायता, गिलोयसत्व, जीरा, सोफ, सोठ, पीपल, पीपला मूल, इन सबको बराबर लेवे। और जबीरी नींबू के रस से तीन प्रहर घोटे। पीछे मटर के समान गोलियां बनावे। इसके खाने से विषम ज्वर दूर होवे शीत ज्वर मे पीपल के साथ देवे, दाह ज्वर मे मिश्री के साथ देवे। पचानन ज्वराकुश नाम से प्रसिद्ध है यह वैद्यो ने अनेक वार अजमाया है।

शीतभंजीररसः

तालकतुल्यकचूर्ण शुक्तिभागैकवर्द्धितम् ।
धत्तूरपत्रजरसै संपचेदभाण्डकेभिषक् ।।५।।

हरिताल १ भाग, नीलाथोथा ४ भाग, सीप की भस्म ३ भाग, धतूरे के पत्तो के रस से घोट पूर्वविधि से वैद्य इस रस को बनावे।

रविसुन्दररसः

द्विभागतालेनहतंचताम्रं
रसचगन्धंचसमानमाहुः ।

विषंसमचद्विगुणंचताम्रं
त्रिसप्तवारेणदिवाकरांशौ ॥१॥
विमर्द्य निम्बस्यरसनेचूर्णं
गुंजैकमात्र.सितयायुतश्च ।
ज्वरांकुशोयरविसुन्दराख्यो ।
ज्वरंनिहन्त्यष्टविधसमग्रम् ॥२॥

दुगना हरिताल से मृततांबा, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक सब समान लेवे । सबके बराबर विष और दूनी तांबे की भस्म, सबको आक के रस से २१ बार खरल करे । और १२ बार नीम के रस में घोटे इस में से १ रत्ती रस मिश्री के साथ देवे तो यह रविसुन्दर नाम ज्वरांकुश आठ प्रकार के ज्वरों को दूर करे ।

सर्वज्वरांकुशवटी.

शुद्ध सूतंतथागन्धंमरिचनागरकणा ।
त्वचजैपालककुष्टं भूनिम्बमुस्तकपृथक् ॥
चूर्णयित्वासमांमन्तुकज्जलयासहमेलयेत् ।
निगुं ड्या स्वरसेचापिआर्द्रकस्यरसेतथा ॥
भावनाकारयित्वातुवटिकांकारयत्भिषक् ।
वटिकाभक्षयित्वातुवस्त्रवेष्ट चकारयेत् ॥
एषाज्वरांकुशवटीसर्वज्वरविनाशिनी ।
पृथक्दोषाश्चविविधान्समस्तान् विषमज्वरा
न् ॥ प्राकृतंवैकृतंचापिवातश्लेष्मकृतंचयत् ।
अन्तर्गतंवहि स्थचानिरामसाममेववा ।
ज्वरमष्टविधहान्तवृत्रामिन्द्राशनिर्यथा ॥

शुद्ध पारा, गंधक, काली मिरच, सोंठ, पीपल, तज, जमालगोटा, कूठ, चिरायता, नागरमोथा, प्रत्येक बराबर लेवे, प्रथम पारे गंधक की कजली कर उसमें उक्त औषधियों का चूर्ण मिलावे, पीछे इस को सभालू और अदरक के रस की भावना देकर गोली बनावे इस गोली को खाकर पीछे वस्त्र ओढ कर सो जावे तो यह ज्वरांकुशवटी सर्वज्वरों को दूर करे, जैसे वात, पित्त, और कफज्वर, सन्निपात, विषम ज्वर, प्राकृत, वैकृत, तथा वातकफज्वर, अन्तर्वेग, वहिर्वेग, निराम और सामज्वर, तथा आठ प्रकार के ज्वरों को यह नाश करे, जैसे इन्द्र के वज्र से वृत्र नष्ट होता है ।

बृहज्ज्वरांकुशः

पारदंगन्धकताम्रं हिंगुलतालमेवच ।
लोहवगमाक्षिकचखर्परचमनःशिला ॥
मृताभ्रकगैरकचटंकणदान्तवीजकम् ।
सर्वाण्येतानितुल्यानिचूर्णयित्वाविभावयेत्
जम्बीरतुलसीचित्र विजयातिन्तिडीरसै ।
एभिर्दिनत्रयंरौद्रेनिर्जनखलुमर्दयेत् ॥
चणमात्रांवटिंकृत्वाछायाशुष्कन्तुकारयेत् ।
महाग्निजननीचेषामर्वज्वरविनाशिनी ॥
एकजद्व द्वजचैवचिरकालसमुद्भव ।
एकाहिकद्वयाहिकंचत्रिदोषप्रभवंज्वरं ॥
चातुर्थकतथात्युग्रं जलदोषसमुद्भवं ।
सर्वान्ज्वरान्निहन्त्याशुभास्करस्तिमिरंयथा
नातःपरतरंकिंचिज्ज्वरनाशायभेषजम् ।
महाज्वरांकुशोनामरसोयमुनिभाषितम् ॥

पारा, गन्धक, ताम्रभस्म, हिंगुल, हरिताल लोहभस्म, वंग, सोनामक्खी की भस्म, खपरिया, मनसिल, अभ्रक की भस्म गेरू, सुहागा, और जमालगोटा, सब को समान लेकर सबको जंभीरी, तुलसी, चीता, भाग, और तितडी इनके रसो की भावना पृथक २ तीन २ दिन धूप में देवे [कोई पचावे ऐसा कहते हैं] पूर्वोक्त रसो की भावना पृथक् २ तीन २ दिन देवे, पीछे चने के समान गोलिया बनाकर छाया से सुखा लेवे । यह गोली महाग्नि कर्ता है । और सर्व ज्वर नाशक है । एक दोष से, दो । दोष से बहुत दिनो के आनेवाले तथा एकाहिक, द्वाहिक, त्रिदोषज, चातुर्थक, जलदोषजनित, सपूर्ण ज्वरों को दूर करे । जैसे सूर्य्य अन्धकार का नाश करता है इससे परे ज्वरनाशक और औषधि नहीं है, यह महाज्वरांकुशरस मुनीश्वर ने कहा है ।

सर्वज्वरेज्वरांकुशः

दारुमूषाशिखिग्रीनांरसकंचपृथकपृथक् ।
टकत्रयानुमानेनगृहीत्वाकनकद्रवै. ॥
मर्द्दयेत्रिदिनाकार्यावटीचणकसन्निभा ।
मरिचैरेकविंशत्यासप्तभिस्तुलसीदलै ॥
खादेद्द्वौद्वयपथ्यंदुग्धभक्तसशर्करं ।
तरुणविषमजीर्णं हन्यात्सर्वज्वरंध्रुव ॥

दारुमूनी, लीलाथोथा खपरिया प्रत्येक तीन २ टक लेवे । सब को धतूरे के पत्तों के रस मे तीन दिन खरल कर चने के समान गोलिया बनावे, २१ कालीमिरच और ७ पत्ते तुलसी के इनके साथ दो गोली खाय इस के ऊपर मिश्री मिला दूधभात खाय तो तरुणज्वर, विषमज्वर औ॰ जीर्णज्वर दूर होवे ।

ज्वरांकुशरसः

शुद्धंसूतविषंगन्धधूर्त्तबीजत्रिभिःसमं ।
चतुर्णांद्विगुणंव्योपहेमक्षीरीविभावितं ॥
चतुर्वारघर्मेशुष्कचूर्णंगुंजाद्वयोन्मित ।
जम्बीरकस्यमज्जाभिरार्द्रकस्यरसेनच ॥
महाज्वरांकुशोनामसमस्तज्वरनाशन ।
एकाह्निकद्वयाहिकवात्र्याहिकचचतुर्थकम् ॥
विषमंचत्रिदोषोत्थहन्तिसद्योनसंशयः ।

शुद्धपारा, शुद्ध विष, शुद्ध गधक, और सब की बराबर धतूरे के बीज, और सब से चौगुना त्रिकुटा ले सब को चोक की चार भावना दे सुखा कर ४ रत्ती जंबीरी के रस वा अदरक के रस से खाय तो यह ज्वरांकुश एकाहिक, द्वाहिक, तृतीयक, चातुर्थक आदि समस्त ज्वरो को दूर करे ।

ज्वरांकुशः

ससारावैष्णवीमेनाअचलाकादिकंकणा ।
रागरुद्रोपमोपेताप्रौढामस्तकशालिनी ॥

पारा, हरिताल, मनसिल, पीपल, तावे की भस्म इन सब को करेले के रस मे घोट तावे के पात्र के भीतर लेप कर सपुट बंद कर वालुका-यत्र मे रखे, और वालू के ऊपर धान रखे, पीछे अग्नि देवे । जब धान खिलजावे तब उतार लेवे तो यह ज्वरांकुश वन गुण पूर्वोक्त ज्वरा कुश के समान है ।

चातुर्थिकनिवारणरसः

त्रिभागंतालकंविद्यादेकभागतुपारदं ।
तदर्द्धं गन्धकंचैवतदर्द्धं तुमनःशिला ॥
कारवल्लीदलरसैर्मर्दयेत्प्रहरत्रयम् ।
पाचितावालुकायंत्रे चातुर्थिकनिवारणः ॥

हरताल ३ भाग, पारा १ भाग, पारेसे आधी गधक, और गन्धक से आधी मनसिल, सब को करेले के रस से तीन प्रहर मर्दन करे, पीछे वालुका यत्र में पचावे तो यह रस चौथैयाज्वर को दूर करे ।

चातुर्थिकगजांकुशः

स्याद्रसेनसमायुक्तोगन्धक सुमनोहर. ।
ह्रियावलित्रिगुणितोनिर्गुंडीरसमर्दितः ॥
सप्तवाराणितद्योज्यमार्द्रकस्वरसेनतु ।
सततादिज्वरंहन्याच्चातुर्थिकगजाकुशः ॥

गन्धक, पारा, दोनो को एक २ भाग ले और हियावली ३ भाग ले इनको निर्गुंडो के रसमे खरल करे । और ७ वार अदरक के रस से घोटे इसके देने से सतताद्विज्वर दूर होवे यह चातुर्थिक ज्वरांकुश कहाता है ।

चन्द्रोदयरसः

रसगन्धौतथावगमभ्रकसमभागतः ।
मेलयित्वातुवगेनसमसूतंविमर्दयेत् ॥
तत्रैकीकृत्यगन्धाभै पेष्यजम्बीरवारिणा ।
सामान्यपुटमादद्यात्सप्तधासाधितंरस ॥
कुमार्य्याचित्रकेणापिभावयित्वाथसप्तधा ।
गुडेनजीरकेणापिज्वरेजीर्णेप्रयोजयेत् ॥
कासेश्वासेकुमार्याचत्रिफलाकाथयोगत. ।
उन्मादंचधनुर्वातममृताकाथयोगतः ॥
इत्येवरोगतापघ्नोरसश्चन्द्रोदयाह्वय ।

पारा, गधक, वग, अभ्रक, इनको समान

लेवे। पीछे पारे और वंग को मिला कर खरल करे। पीछे इसमे गंधक और अभ्रक मिलावे। तदनन्तर जभीरी के रस से खरल करे इस प्रकार सात पुट देवे। इसी प्रकार घी गुवार और चित्रक की सात-सात भावना देवे, पीछे इसको गुड और जीरे के साथ जीर्ण ज्वर मे देवे। खांसी, श्वास मे घीगुवार और त्रिफला के साथ देवे. उन्माद, धनुर्वात, इनमे गिलोय के योग के साथ देवे इत्यादि रोग ताप का नाशक चन्द्रोदय रस है।

जीर्णज्वराररिरसः

नागवंगंरसंताम्रं गन्धकटंकणतथा।
सूताविषचनेपालहरितालसमंतथा॥
वटक्षीरेणमर्द्याथसर्वं कुर्यात्तुगोलकं।
तगोलभाण्डमध्येपाचयेद्दीपवन्हिना॥
ततस्सशीतलकृत्वाभृ गराजेनमर्दयेत्।
आर्द्रकस्यरसेनापिमर्दयेच्चपुनःपुनः॥
चणप्रमाणवटिकारसेनार्द्रस्यदापयेत्।
गुंजाद्वयप्रयोगेणज्वरजीर्णंहरत्यसौ॥

शीशे की भस्म, वग की भस्म, खपरिया, तांबे की भस्म, ग धक सुहागा, पारा, विष, जमालगोटा, हरिताल, ये सब बराबर लेवे. सब को बड़ के दूध मे खरल करे, गोला बनावे उस गोला को भाडे मे रख कर भट्टी पर चढाय दीपकाग्नि से पकावे पीछे उस गोले को शीतल कर रस निकाल भागरे के रस से मर्दन करे, अदरक के रस से घोटे, पीछे चने के बरावर गोलिया बनावे, एक गोली अदरक के रस के साथ देवे, दो रत्ती रस खाने से जीर्ण ज्वर नष्ट होवे।

प्रतापलंकेश्वररसः

प्रत्येकरसगन्धयोर्द्विपलयो कृत्वामशीशुद्धयोरस्याम्लेच्छलुलायलोचनमनोधात्रीप्रकुंचत्रय॥ पथ्यायावदर्यात्रिकत्रिकटुषट्षाणवचाधर्मिणी। वेल्लाभोधरपत्रकाद्विरदकिंजल्काश्वगन्धाह्वया॥ पिष्ट्वैतत्समधूकसारमखिलंकर्पोन्मितंन्यस्यतत्। अोन्मृद्याथकरजकाऽमृतयुतंसागस्तिकत्र्यूषणैः॥ भूधात्रीविजयासरित्पतिफलज्वालामुखीमार्कवैः प्रत्येकविदधीतनिश्चलमतिःसप्तक्रमाद्भावनाः॥ पित्तैरथोपचविधायपंचभि.करजमात्रामृतधूपनंततः। दत्वार्द्रकस्यम्बरसेनतद्गुलाकृतिंविदध्याद्गुटिकाभिषग्वरः॥ दद्यैका सन्निपातेप्रतिहतविधयेमोहनेत्रप्रसुप्तयोः। स्याद्गुल्मेसाजमोदापतनविकृतिपुत्र्यूषणेन-ग्रहण्या॥ दातव्याजीरकेणद्विपतुरंगनृणा-प्राणसरक्षणाय। कारुण्यांभोविरेतद्रसकसमरसवैद्यनाथोऽभ्येवत्त.॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, दोनो २ पल लेवे। दोनो की कजली कर पीछे इसमे हींगलू, भैंसा गुग्गुल, हितालीये प्रत्येक १२ तोला लेवे, हरड, बेर तीनों त्रिकुटा (सोठ मिरच, पीपल) प्रत्येक १॥ तोला, बच, रेणुक, वायविडग, नागरमोथा, पत्रज, नागकेशर, असगध ये सब चार-चार टंक लेवे, सबको मुलहठी के सत्त में घोटे, कजा, विष, अगस्तिया, त्रिकुटा, भुंइ आवला, भाग, समुद्रफल, ज्वालामुखी, और भागरा, प्रत्येक के रस की सात-सात भावना देवे, पीछे मछली, भैंसा, मोर, सूअर, और बकरी इनके पित्तों की भावना देवे, पीछे कंजा और विष की धूप देकर अदरक के रस से घोट चावलके समान गोली बनावे, मोह, बेहोशी और नेत्र मुदे हुए, ऐसे सन्निपात मे एक गोली देवे. गोला के रोग मे एक गोली अजमोद के साथ देवे, गिरपडा हो उसको सोठ, मिरच, और पीपलके चूर्ण के साथ देवे, सग्रहणी रोग मे जीरे के साथ एक गोली देवे, हाथी, घोड़ा और मनुष्यो के प्राण रक्षणार्थ, करुणा सागर वैद्यनाथ ने दिया है, यह प्रतापलकेश्वर रस है।

जीर्णज्वरघ्नीवटी:

शुद्धं जैपालटकन्तुकट्वीटंकद्वयोन्मिता।
गैरिकंटकमेकंचकन्यानीरेणमर्दयेत्॥

कलायसदृशीकार्य्यावटिकान्तंचभक्षयेत् ।
शीतलेनजलेनैपावटीजीर्णज्वरापहा ॥

जमालगोटा १ टंक, कुटकी २ टक, गेरू १ टक, सबको घी गुवार के रस मे खरल करे. पीछे मटर के समान गोली बनावे, और शीतल जल के साथ खाय तो जीर्ण ज्वर दूर होवे ।

ज्वरांकुशः

रसतोद्विगुणगंधगन्धतुल्यन्तुटङ्कणं ।
रसतुल्यविषयोऽयमरिचंपंचधाविषात् ॥
कट्फलदन्तिबीजचप्रत्येकमरिचान्वितं ।
ज्वरांकुशोरसोह्यपचूर्णयेद्याममात्रकम् ॥
माषैकेणनिहंत्याशुज्वरंजीर्णंत्रिदोषनुत् ।

पारा १ भाग, गधक २ भाग, सुहागा २ भाग, विष १ भाग, काली मिरच ५ भाग, कायफर ५ भाग, जमालगोटा ५ भाग, सब को कूट पीस एक प्रहर घोटे,एक माशे खाने से जीर्णज्वर और सन्निपात दूर होवे ।

लघुमालनीवसंत

रसकयुगलभागवह्निजभागमेकं ।
द्वितयमथसुखल्वेमर्दयेन्मृत्क्षणेन ॥
भवतिघृतविमुक्तोनिम्बुनीरेणयाव-
ज्ज्वरहरमधुकुल्यामालनीप्राग्वसन्तः ॥

खपरिया २ भाग, काली मिरच १ भाग, दोनों को खरल में डाल गौ के मक्खन से घोटे, पीछे नीबू के रस में जब तक चिकनाई दूर न हो तब तक घोटे तो वसत मालनी रस बने इसको सहत और पीपल के चूर्ण के साथ खाय तो जीर्णज्वर दूर होवे ।

स्वर्णमालनीवसंत.

स्वर्णंमुक्तादरदमरिचभागवृध्यागृहीतं ।
खर्परर्य्यष्टौप्रथममखिलमर्दयेन्मृत्क्षणेन ॥
यावत्स्नेहोव्रजतिविलयमर्दनेदीयतेसौ ।
गुंजाद्वंद्वंमधुमगधयामालनीप्राग्वसन्तः ॥
जीर्णज्वरेधातुगतेतिसारे रक्तान्वितेरक्तजदृष्टिरोगे । घोरेऽव्यथेपित्तकृतेथरोगेबलप्रदोदुग्धयुतचपथ्य ॥ वमन्तोमालिनीपूर्वःसर्वरोगहरःशिशोः । गर्भिण्यादेयमेतच्चजयतीपुष्पकैर्युतं ॥ सर्वज्वरहरश्रेष्ठंगर्भपालनमुत्तमम् ।

सोने के तवक १ माशे, छोटे अनविंधे मोती २ माशे, सिंगरफ ३ माशे काली मिरच ४ माशे, खर्परिया ८ माशे, प्रथम सबको १ प्रहर मक्खन से घोटे । पीछे पूर्वोक्त प्रकार से कागजी नीबू के रस से घोटे । जब तक चिकनाई दूर न होवे, तब तक घोटे, जो गुण पहले मालनी बसत के हैं, सोई इसके गुण हैं और जो इसके गुण है वही उसके गुण हैं, विशेष यह नेत्र रोग पर बहुत चलता है । तिमिर, धुध, अच्छा होवे, इसमे से दो रत्ती रस पीपल और सहत के साथ देवे, तो जीर्ण ज्वर, धातुगत ज्वर, रक्तातिसार, रक्तजबवासीर घोर व्यथा, पित्त रोग जाय, बल कर्त्ता है, इस पर दूध पीना पथ्य है । यह मालनी वसत रस बालक के सर्व रोगों को दूर करता है, गर्भिणी को जयंती पुष्प के साथ देवे । सर्व ज्वर दूर करे गर्भ की रक्षा करे ।

बृहन्मालनीवसंतोरसः

वैक्रान्तमभ्रं रविताप्यरौप्यगन्धप्रवालरसभस्मलोह । सटंकणशम्बुकभस्मसर्वसमस्तमेतच्चवरीरजन्यो ॥ द्रवैर्विमर्द्यमुनिसंख्ययाच कस्तूरिकाशीतकरेणपश्चात् । वल्लप्रमाणेमधुपिप्पलीभ्यांजीर्णज्वरेधातुगतेप्रदेयः ॥ छिन्नोद्भवासत्वसितायुतश्चसर्वप्रमेहेपुचयोजनीयः। कृच्छ्राश्मरींनिहन्त्याशुमातुलुंगार्द्रकद्रवैः। रसोवसतनामायमालनीपदपूर्वकः ॥ इतिभैषज्यसारामृतसहितायां ।

वैक्रान्त (कासुले) की भस्म, अभ्रक की भस्म, तांबे की भस्म, सोनामक्खी की भस्म, चान्दी की भस्म, शुद्ध गधक, मूंगा की भस्म, चन्द्रोदय, लोहे की भस्म, सुहागा शख की भस्म, ये सब बराबर लेवे । सबको खरल मे घोटे

शतावर के रस की सात भावना देवे। पीछे हल्दी के रस की सात भावना देवे, तथा कपूर और कस्तूरी को जल में घोलकर भावना देवे, पीछे इस रस की टिकिया बनावे और इसमें से २ रत्ती रस शहद और पीपल के साथ जीर्णज्वर और धातुज्वर में देवे। और गिलोयसत्व तथा मिश्री के साथ प्रमेह रोग में देवे। और अदरक और बिजौरे के साथ मूत्रकृच्छ्र और पथरी रोग में देवे। यह मालतीवसंतरस भैषज्यसारामृत संहिता में लिखा है।

रसपर्पटी

जयापत्ररसेनाथवर्द्धमानरसेनच।
भृंगराजरसेनापिकाकमाच्यारसेनच॥
रससंशोध्ययत्नेनतत्समंशोधयेद्बलिं।
भृंगराजरसैःपिष्ट्वाशोषयेदर्करश्मिभिः॥
सप्तधावात्रिधावापिपश्चाच्चूर्णन्तुकारयेत्।
चूर्णयित्वासमतेनरसेनसहमर्दयेत्॥
नष्टसूतयदाचूर्णंभवेत्कज्जलसन्निभं।
निर्धूमेवदरांगारद्रवीकुर्यात्प्रयत्नतः॥
तत्रतमहिषीविष्टास्थापितकदलीदले।
निक्षिप्यतदुपर्यन्यत्पत्रंदत्वाप्रपीडयेत्।
शीतलाततःपत्रात्समुद्धृत्यविचूर्णयेत्।
एवंसिद्धाभवेद्व्याधिघातिनीरसपर्पटी॥
ज्वरादिव्याधिभिर्व्याप्तं विश्वदृष्ट्वापुराहरः।
चकारकृपयायुक्तःसुधावद्रसपर्पटीं॥
रक्तिकासम्मितातावद्दुष्टजीरकसंयुता।
गुंजार्द्ध भृष्टहिंगुपाल्यांभक्षयेद्रसपर्पटीं॥
रोगानुरूपैर्भैषज्यैरपिताभक्षयेद्बुधः।
पिबेत्तदनुपानीयशीतलंचुल्लुकत्रयम्॥
प्रत्यहंवर्द्धतेतस्याएकैकारक्तिकाभिषक्।
नाधिकांदशगुंजातोभक्षयेत्ताकदाचन॥
एकादशदिनारम्भात्तातथैवापकर्षयेत्।
एवमेतांसमश्नीयान्नरोविंशतिवासरान्॥
शिवंगुरुंतथाविप्रान्पूजयित्वाप्रणम्यच।
श्रद्धयाभक्षयेदेतांक्षीरमांसरसाशनः॥
ज्वरांश्चग्रहणींचापितथातीसारमेवच।
कामलांपाण्डुरोगंचशूलंप्लीहजलोदरं॥
एवमादीन्गदान्हत्वाहृष्टपुष्टश्चवीर्यवान्।
जीवेद्वर्षशतसाग्रंवलीपलितवर्जितः।

अरनी के पत्तों से, वा सफेद अरंड के रस से, भांगरे के रस से, और मकोय के रससे, पारे को शुद्ध करे, फिर पारे के बराबर गंधक भांगरे के रस में पीस सुखा देवे, इस प्रकार सात अथवा तीन भावना देवे, पीछे चूर्ण कर पारे गंधक की कजली करे, जब काजल के समान होजाय तब धुआं रहित बेर के कोलों में कजली को पिघलावे, पीछे भैंस के गोबर में केला का पत्ता रख कर उस पर उस कजली की चाशनी को डाल दूसरा पत्ता ढक कपडे की पोटली से दाब देवे, पीछे शीतल होने पर उस पर्पटी को निकाल चूर्ण करे, इस प्रकार व्याधिघातिनी पर्पटी सिद्धि होय, ज्वरादि व्याधियों से पीडित विश्व को देख प्रथम श्रीमहादेवजीने कृपा कर अमृत के समान यह पर्पटी कही है, इसको १ रत्ती भुने जीरे और आध रत्ती हींग के साथ इसकी पर्पटी करे, इस को रोगानुसार न्यारे २ अनुपान से देवे, इसको खा कर ३ चुल्लू पानी पीवे, ऐसे प्रतिदिन १ रत्ती बढावे इस प्रकार दश रत्ती तक बढावे, पीछे एक २ रत्ती नित्य घटावे, इस प्रकार २० दिन पर्यंत सेवन करे, शिव, गुरु, और ब्राह्मणों का पूजन तथा प्रणाम कर श्रद्धा पूर्वक भक्षण करे, और दूध भात पथ्य खाय तो ज्वर संग्रहणी, अतिसार, कामला, पांडुरोग, शूल, तापतिल्ली, जलोदर, इत्यादिक रोग दूर होवे, देह को हृष्ट-पुष्ट करे, वृद्धावस्थारहित १०० वर्ष जीवे।

जीर्णज्वरहररसः

नागवंगंरसताम्रंगन्धकंटकणंतथा।
शुद्धं विषचजैपालंहरितालंसमंतथा॥
वटक्षीरेणमर्द्याथसर्वंकुर्यात्तुगोलकं।
तंगोलंभाण्डमध्येतुपाचयेद्दीपवन्हिना॥

गोलशीतलंकृत्वा भृंगराजेनमर्दयेत् ।
आर्द्रकस्यरसेनापिमर्दयेच्चपुनःपुनः ॥
चणप्रमाणवटिकान्रसेनार्द्रस्यदापयेत् ।
गुंजाद्वयप्रयोगेणज्वरंजीर्णंहरत्यसौ ॥

सीसे की भस्म, वग, खपरिया, तावे की भस्म, गधक, सुहागा, पारा विष, और जमालगोटा, हरिताल, सबको बड के दूध से खरल कर गोला बनावे। उस गोला को किसी दूसरे पात्र मे रख कर दीपक के समान अग्नि देवे पीछे उस गोले को शीतल कर उस रस को भांगरे के रस से खरल करे। तथा अदरक के रस में खरल करे। पीछे चने के समान गोलिया बनावे, एक गोली अदरक के रस के साथ खाने को देवे, दो रत्ती रस के खाने से जीर्णज्वर यानी पुराना ज्वर दूर होवे।

कज्जली

शुद्धसूततथागन्धखल्वेतावद्विमर्दयेत ।
सूतंनदृश्यतेयावत्किंतुकज्जलवद्भवेत् ॥
एषाकज्जलिकाख्यातावृंहणीवीर्यवर्द्धनी ।
नानानुपानयोगेनसर्वव्याधिविनाशिनी ॥
एतत्कज्जलिकाविधानरसप्रदीपेप्रोक्तम् ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, दोनों को खरल में डाल कर जब तक मर्दन करे जब तक पारा दीखने से बद न हो और दोनो की कजली काजल के समान हो जाय, यह कजली पुष्ट करे, और वीर्य को बढ़ावे, अनेक अनुपानो के साथ सर्व रोग दूर करे यह कजली की विधि रसप्रदीप ग्रथ मे कही है।

कज्जल्याःप्रकारान्तरं

कंटकारीसिन्धुवारस्तथापूतिकरंजकं ।
एतेषांरसमादायकृत्वाखर्परखण्डके ॥१॥
प्रक्षेप्यगन्धकतत्रतांचमृद्वग्निनादहेत् ।
गन्धकेस्नेहतापन्नेतत्समपारदंक्षिपेत् ॥२॥
मिश्रीकृत्यततोद्वाभ्याद्रुतमवतारयेत् ।
आमर्दयेत्तथात्तुयथास्यात्कज्जलप्रभम् ॥३॥
ततस्तुरक्तिकामस्यमापकंजीरकस्यच ।
माषैकलवणस्यापिपर्णेकृत्वानिधापयेत् ॥४
ज्वरेत्रिदोषजेघोरेजलमुष्णंपिबेदनु ।
छर्द्यांशर्करयादद्यात्सामेदद्यात्तथागुडम् ॥५॥
क्षयेछागभवक्षीरंप्रदद्यादनुपानकम् ।
रक्तातिसारेकुटजमूलवल्कलजरसम् ॥६॥
रक्तवान्तौतथादद्यादुदुम्बरभवंजल ।
सर्वव्याधिहरश्चायगन्धकःकज्जलीकृत ॥७॥
आयुर्वृद्धिकरश्चैवमृतचापिप्रबोधयेत् ।

कटेरी, निगुंडी और कजा इनका रस एक, खापरा मे भर उसमे गधक डाल, नीचे अग्नि बरावे, मन्द अग्नि से पचावे जब गन्धक पतली हो जावे तब गन्धक के समान शुद्ध पारा मिलावे, दोनो को मिला शीघ्र चूल्हे पर से उतार लेवे, पीछे खरल मे डाल जब तक घोटे, तब तक कज्जल के सदृश होवे, पीछे इस १ रत्ती कजली को १ माशे जीरे १ माशे नोन के साथ पान मे रखकर खाय तो घोर त्रिदोष जनित ज्वर इसके ऊपर गरम जल पीने से दूर होवे, छर्दि रोग से मिश्री के साथ, सामज्वर मे गुड के साथ देवे, खई रोग मे बकरी के दूध के साथ देवे, रक्तातिसार मे कुडा की छाल के रस मे देय रुधिर की वमन में गूलर के जल के साथ देवे, यह गन्धक की कजली सर्व रोग नाशक है, आयु की वृद्धि कर्त्ता है, मृत तुल्य मनुष्य को भी जिलावे।

इति श्री माथुरदत्तरामनिर्मिते वृहद्रसराज सुन्दरे उत्तरखण्डे ज्वराधिकारः समाप्तः

अथ ज्वरातिसाराधिकारः

सिद्धप्राणेश्वरोरसः

गन्धेशाभ्र पृथक्वेदभागमन्यच्चभागिकम् ।
सर्जिटकयवक्षारा पञ्चैवलवणानिच ॥

वराव्योषेन्द्रबीजानिहिंजीराग्नियवानिका ।
सहिंगुबीजसारंचशतपुष्पासुचूर्णिता ॥
सिद्धप्राणेश्वर.सूतःप्राणि प्राणदायकः ।
माषैकभक्षयेदस्यनागवल्लीदलैर्युतम् ॥
उष्णोदकानुपानंचदद्यात्तत्रपलत्रय ।
ज्वरातिसारेऽतिसृतौकेवलेवाज्वरेऽपिच ॥
घोरेत्रिदोषजेरोगेग्रहण्यामसृगामये ।
वातरोगेचशूलेचशूलेचपरिणामजे ॥

गन्धक, पारा, अभ्रक, प्रत्येक ४ माशे, सज्जिखार, सुहागा, जवाखार, पाचौनोन, त्रिफला त्रिकुटा, इन्द्र जौ, दोनो जीरे, चित्रक, अजवायन हीग, वायविडग और सौंफ प्रत्येक एक एक माशे लेवे, सब को कूट पीस एक २ माशे की गोली बनावे, यह सिद्ध प्राणेश्वर पारा प्राणियो को प्राणदायक है । १ गोली को पान मे रखकर ऊपर गरम जल पीवे तो ज्वरातिसार वा केवल ज्वर, त्रिदोष के रोग, सग्रहणी, रुधिर के उपद्रव, वात-रोग, शूल, और परिणाम शूल, इत्यादिक रोगों को यह रस दूर करे ।

गगनसुन्दरोरसः

टंकणदरदंगन्धमभ्रकंचसमसम ।
दुग्धिकायारसेनवभावयेच्चादिनत्रयम् ॥
द्विगुंजमधुनादेयश्वेतसर्जस्यवल्लक ।
विविधनाशयेद्रक्तज्वरातीसारमुल्वणं ।
पथ्यतक्रं पयच्छागमामशूलंविनाशयेत् ।
अग्निवृद्धिकरोह्येषरसोगगनसुन्दरः ॥

सुहागा, हींगलू, गन्धक, अभ्रक, ये सब बरावर लेवे,दुद्धी के रस से तीन दिन खरल करे पीछे दो २ रत्ती की गोली बनावे १ गोली शहत और २ रत्ती सफेद राल के साथ देवे तो अनेक प्रकार के रुधिर विकार और ज्वरातिसार नष्ट होवे, इस पर छाछ, वकरी का दूध पीवे तो आमशूल को नष्ट करे,अग्नि को प्रबल करे यह गगन सुन्दर रस है।

कनकप्रभावटी.

सुवर्णबीजमरिचमराल पादकणाटंकनवि-
षंच । गन्धंजयाद्विदिवसंविमर्द्य गुंजाप्रमाणां
वटिकां.वटध्यात् ॥ एषातिसारग्रहणीज्वरा
ग्निमांद्यानिहन्यात्कनकप्रभेय । दध्योदनंप
थ्यमनुष्णवारिमासंभजेत्तित्तिरलावकानां ॥

धतूरे के बीज, काली मिरच, हंसपदी, पीपल, सुहागा, सिंगियाविष, और गन्धक ये सब वस्तु समान लेवे । सबको भाग के रस मे खरल कर १ रत्ती को गोली बनावे इस रस के सेवन करने से अतिसार, सग्रहणी, ज्वरातिसार और मन्दाग्नि इन रोगों को यह कनक प्रभावटी, दूर करे । इस पर दही, भात, शीतलजल तथा तीतर और लवापक्षी आदि का मास खाना पथ्य है।

इतिज्वरातिसाराधिकारःसमाप्तः

अतिसाररोगचिकित्सा

आनन्दभैरवरसः

दरदवत्सनाभचमरिचटकणकणा ।
चूर्णयेत्समभागेनरसोह्यानन्दभैरवः ॥
गुंजैकवाद्विगुंजावाबलदृष्ट्वाप्रयोजयेत् ।
मधुनालेहयेच्चानुकुटजस्यफलत्वचं ॥
चूर्णितंकर्षमात्रं तुत्रिदोषोत्थातिसारजित् ।
दध्यन्नदापयेत्पथ्यगवाजतक्रमेववा ॥
पिपासायांजलशीतविजयाचहितानिशि ।

शिगरफ, विष, मिरच, सुहागा, पीपल, सबको बरावर लेकर पीसे तो आनन्द भैरव रस सिद्धि होय, एक वा दो रत्ती बलावल देख कर देवे और इसके ऊपर कुडा की छाल का चूर्ण शहत के साथ भक्षण करे, तो त्रिदोष जनित अतिसार दूर होवे । दही भात अथवा गौ और वकरी की छाछ पथ्य देवे । शीतलजल और रात्रि मे भाग पीना हित है ।

सुशलक्ष्णतीक्ष्णचूर्णन्तुरसेन्द्रसमभागकम् ।
कांचनाररसैर्घृष्टासर्वातीसारनाशनम् ॥

फौलाद की भस्म और पारा दोनों बरावर

लेकर कचनार के रस मे पीस कर गोली बनावे। इसके खाने से सब प्रकार के अतिसार नष्ट होवे।

दर्दुराह्वसूतः।

पिष्टं समेनतीक्ष्णेनकाचनाराम्बुमर्दितः।
पुटपाकोतिसारघ्न सूतोऽयदर्दुराह्वय ॥

समान लोह भस्म के साथ पारे को पीसकर और कचनार के रस की भावना दे पुटपाक करे, तो यह दर्दुराह्व पारा अतिसार को दूर करे।

वातातिसारेवातारि

शुद्धसूतमृतंगन्धलोहकंचैवमाक्षिक ।
पथ्याश्रृगीविषंतुल्यमग्निमंथंचटंकणम् ॥
तुल्याशमर्दयेत्खल्वेशुण्ठीनिर्गुण्डिकारसैः ।
द्विगुंजावटिकांखादेत्सर्ववातोपशातये ॥

शुद्ध पारा, विष, गन्धक, लोहा की भस्म, माक्षिक भस्म, हरड, सिंगिया विष, अरनी, सुहागा, सब बराबर लेवे, सबको खरलकर सोंठ और निर्गुण्डी के रस मे खरल करे और दो-दो रत्ती की गोलियां बनावे यह सर्व वातातिसार शान्ति करे।

अमृतार्णवरसः

हिंगुलोत्थरसंलोहंगन्धकटकणंशटी।
धान्याकवालकमुस्तपाटाजीरवनप्रिया ॥
प्रत्येकत लकचूर्णं छागीक्षीरेणपेषयेत् ।
मापाभावटिकाकार्य्यारसोयममृतार्णवः ॥
वटिकांभक्षयेत्प्रातर्गहनानन्दभाषिता ।
धान्यजीरकचूर्णेनविजयाशालबीजतः ॥
मधुनाछागदुग्धेनमण्डेनशीतवारिणा ।
कदलीमोचकरसैं कटकारीद्रवेणवा ॥
अतिसारजयेदुग्रमेकजद्वंद्वजतथा ।
दोपत्रयसमुद्भूतमुपसर्गसमन्वित ॥
शूलघ्नोवन्हिजननोग्रहण्यर्शोविकारनुत् ।
अम्लपित्तप्रशमनःकासघ्नोगुल्मनाशनः ॥

हींगलू से निकाला पारा, लोहभस्म, गन्धक, सुहागा, कचूर, धनियां, नेत्रवाला, नागरमोथा, पाढ, जीरा और अतीस, प्रत्येक एक २ तोला लेवे, सब का चूर्ण कर बकरी के दूध से पीस एक २ माशे की गोलियां बनावे, इस रस को अमृतार्णव कहते हैं, यह गहनानन्द सिद्धकी कही हुई गोली धनिया, जीरा, भाग, शालबीज, शहत, बकरी का दूध, भात का माड, शीतलजल, केला की जडकारस, मोचरस, अथवा कटेरी का रस, इनमे से किसी एक के साथ खावे तो घोर अतिसार को दूर करे। एकदोषज, द्विदोषज, त्रिदोषज, उपद्रवयुक्त सब अतिसार दूर होवे। शूल, सग्रहणी, बवासीर, अम्लपित्त, खासी, और गोला इन रोगो का नाश करे, और अग्नि को प्रज्वलित करे।

आनन्दभैरवरसः

हिंगुलवत्सनाभंचमरिचटंकणंकणा ।
मर्दयेत्समभागंचरसोह्यानन्दभैरवः ॥
गुंजैकमर्द्धगुंजावाबलज्ञात्वाप्रदापयेत् ।
मधुनालेहयेच्चानुकुटजस्यपलत्वचं ॥
चूर्णितंकर्षमात्रंतुत्रिदोषोत्थातिसारजित् ।

हिंगुल, विष, मिरच, सुहागा, पीपल, सब बराबर लेकर घोटे तो यह आनन्द भैरवरस तयार होवे, १ रत्ती अथवा आधी रत्ती बलाबल देखकर शहत के साथ देवे, इस के ऊपर कूडाकी छाल १ पलका काढा पीवे तो त्रिदोषजन्य अतिसार दूर होवे,

महारसः

भस्मसूतस्यतीक्ष्णस्यमरिचाज्यसमंसमं।
स्नुकक्षीरकाकमाचीभ्यामर्दयेद्यामसमात्रकं॥
निरुध्यमूधरेपाच्यंदिनैकेनमहारस।
निष्कार्द्धंभावयेच्चानुपाययेद्दधिसयुतम्॥
सर्पाद्धीकर्पमात्रं तुपीत्वावातातिसारनुत्।

पारे की भस्म, फौलाद की भस्म, मिरच और घृत ये सब वस्तु बराबर लेवे। सब को कूट पीस थूहर के दूध और मकोय के रस मे एक प्रहर खरल करे। पीछे सरावसंपुट मे

घोटकर भूधरयन्त्र से रस कर एक दिन पचावे, तो यह महारस सिद्ध होवे। इसमें से डेढ़ मासे अनुपानके साथ देवे। और ऊपर दही तथा सरफोका मिलाय दश मासे खाने को देवे, तो वातातिसार दूर होवे।

द्वितीयमहारसः

शुद्धसूतससगन्धमरिचटकणकणा।
स्वर्णबीजसमसर्वंभृ गिद्रावैर्दिनार्द्धकं॥
सूततुल्योरसोयोज्योरसःकनकसुन्दरः।
योज्योगु जाद्वयहन्तिवातातीसारमद्भुत॥
दध्यन्नदापयेत्पथ्यमाज्यवाथगवांदधि।

शुद्धपारा, शुद्ध गंधक, काली मिरच, सुहागा, पीपल, तथा धतूरे के बीज, इन सब को बराबर ले खरल मे डाल भांगरे के रस की आधे दिन भावना देवे। पीछे इसमें पारे के समान कनकसुन्दर रस मिलावे तो यह महारस दो रत्ती देने से अद्भुत वात के अतिसार को दूर करे। इसके ऊपर दही भात का पथ्य देना चाहिये, "सूततुल्योरसोयोज्यः" इस जगह कोई आचार्य कहते हैं कि "सूततुल्य विषयोज्य" अर्थात् पारेके तुल्य विष लेवें।

जातीफलरसः

पारदाभ्रकसिन्दूरंगन्धजातीफलं समं।
कुटजस्याफलंचैवधूर्त्तबीजानिटंकणं॥
व्योषंमुस्ताभयचैवचूतबीजतथैवच।
विल्वकंसर्ज्जबीजंचदाडिमोवल्कजीरकं॥
एतानिसमभागानिनि:क्षिपेत्खल्वमध्यत.।
विजयास्वरसेनैवमर्दयेत्श्लक्ष्णचूर्णितम्॥
गु जाफलप्रमाणन्तुवटिकाकारयेद्भिषक्।
राकांकुटजमूलत्वक्कषायेणप्रयोजयेत्॥
आमातिसारहरतिकुरुतेवन्हिदीपनम्।
मधुनाविल्वशु ठेनरक्त ग्रहणिकांजयेत्॥
शु ठीधान्यकयोगेनचातिसारंनिहत्यसौ।
जातीफलरसोह्येपग्रहणीगदहारक.॥

पारा, अभ्रकभस्म, रससिन्दूर, गन्धक, जायफल, इन्द्रजौ, धतूरे के बीज, सुहागा, त्रिकुटा, नागरमोथा, हरड, आमकी गुठली, बेलगिरी, राल के बीज, अनार की छाल, जीरा ये सब वस्तु बराबर लेवे। सब को कूट पीस भांगके पत्तों के रस में खरल करे। एक एक रत्ती की गोलिया बनावे, १ गोली कूडा की छाल के काढे मे देवे। तो आमातिसार को दूर करे। अग्नि को प्रज्वलित करे। रक्तसग्रहणी रोग मे शहद और बेलगिरी के चूर्ण के साथ देवे। और सोठ धनियेके साथ देवे तो अतिसार दूर होवे। यह जातीफलरस सग्रहणी रोग का नाशक है।

सुधासाररसः

पृथक्पलिकगंधाभ्रमृतंजातकज्जलिं।
प्रद्राव्यनिक्षिपेद्व्योमपलिकंगतचन्द्रकम्॥
काष्ठेनालोड्यतत्सर्वंक्षिपेत्कुटजपत्रके।
पुनःसंचूर्ण्ययत्नेनभावयेत्तदनन्तरं॥
वालतिन्दुफलद्रावैःक्षीरकोदुम्बरैस्तथा।
अरलुत्वग्रसैश्चापिदुग्धनीरसैस्तथा॥
पुटपक्वस्यवालस्यदाडिमस्यरसैःशुभैः।
कृष्णकाबीजकामूलरसैःकुटजवल्कलैः
तुल्यांशविश्वगावारीचूर्णं द्विपलिकंक्षिपेत्।
मुस्तावत्सकटीप्याग्निमोचसारसजीरकम्॥
वत्सनाभंचकर्षांशंप्रत्येकतत्रनिक्षिपेत।
विचूर्ण्यभावयेद्भूयःशु ठीक्वाथेनसप्तधा॥
सुधासारइतिख्यात सुधारससमद्युतिः।
दीपन.पाचनोग्राहीहृद्योरुचिकरस्तथा॥
दोषत्रयातिसारंचदुर्जयभेषजान्तरे।
आमचैवामरक्तंचज्वरातीसारमेवच॥
सातिसारीविषूचीचप्रतिबध्नातितत्क्षणात्।
स्त्रीणामानन्यतिक्रान्तिरिवपुष्पफलोदय॥
पिष्ट विश्वाष्टकल्केनपिधायखलुचक्रिकां।
निक्षिपेत्स्वेदनीयन्त्रेपक्वार्धघटिकावधि॥
आकृष्यतज्जलैरेवसंप्रमर्द्य हरेद्रसं।
सुधासाररसंतत्रक्षिप्त्वाधान्यकसमितं॥

पूर्वोदितेषुरोगेषुप्रदद्दीतभिषग्वर ।
गोतक्रेणाजदग्धावापथ्यदेयहितमित ॥
बालरम्भाफलंगुर्वीफलबिल्वफलंतथा ।
आम्रपेशीचमधुकवृन्ताकंचप्रशस्यते ॥
सर्वातिसारग्रहणींचहिक्कामन्दाग्निमानाह-
मरोचकच । निहन्तिसद्योविहितामपाके-
द्वित्रिप्रयोगेणरसोत्तमोयम ॥

गन्धक ४ तोले, पारा ४ तोले, दोनो की कजली करे पीछे इस कजली को अग्निमे तायकर इसमे निश्च द्र अभ्रककी भस्म ४ तोला डाले, पीछे किसी लकडीमे उसको मिलावें । तदनन्तर गोबर से पृथ्वी लीप उस पर कूडा के पत्र बिछाय उस पर अभ्रक मिली कजली को ढाल देवे । जब पपडी जम जावे तब उठा खरल मे डालकर घोटे । और इस में नये कुचले के रस, और गूलर के दूध, मोन पाढर की छाल के रस, और दुद्धी के रस की भावना देकर घोटे । तथा पुटपाक किये हुए कच्चे अनार के रस में घोटे। गुंजा की जड के रस से, कूडा की छाल के काढे में पृथक् २ खरल करे । पीछे सब की बराबर लहसन का चूर्ण डाले, पीछे नागर मोथा, कूडा की छाल, अजवायन, चित्रक, मोचरस, जीरा, विष, प्रत्येक एक एक तोला डाले । सबका चूर्ण कर सोंठ के काढे की सात भावना देवे,तो अमृत के तुल्य यह सुधासार रस बने. यह दीपन है, पाचन है । ग्राही है हृदय-को हित है, और रुचि कर्ता । जो किसी औषधि से न जावे ऐसा त्रिदोष जनित अतिसार दूर होवे । आम, आमरक्त, ज्वारातीसार, अतिसार, सयुक्तविशूचिका । इनको तत्क्षण बन्द करे । जैसे वसन्त ऋतु के आते ही स्त्रियों का मान नष्ट हो जाता है । पारे गधक को अष्टावशेष सोंठ के काढे में घोट टिकिया बनावे, और कपड मेबाध कर आध घडी पर्यन्त स्वदनी-यन्त्र से स्वेदन करे, पीछे उन टिकियाओ को निकाल उसी जल से खरल करे पीछे इसमे सुधासार रस १ माशे डाल कर घोटे पीछे गोलिया बनावे, इस गोली को बलाबल देख कर पूर्वोक्त रोगों से देनी चाहिये । गौ के मठे वा बकरी के दही मे देना चाहिये । केला की फली, सुपारी, बेल का फल,आम की गुठली, महुआ और बैगन इतनी वस्तू इस पर खाना पथ्य है. यह रस सर्व प्रकार के अतिसार, सग्रहणी, हिचकी, मदाग्नि, अफरा, अरुचि, इत्यादि रोगो को दो तीन बार के खाने से ही नष्ट करे ।

अभयनृसिंहोरसः

दरदचविषव्योषजीरकटकणंसमं ।
गन्धकचाभ्रकंचैवभागैकशुद्धसूतकम् ॥
आङ्कूकसर्वतुल्यंस्यान्मर्दयेन्निम्बुकद्रवैः ।
एकैकभक्षयेच्चानुजीरकमधुनासह ॥
त्रिदोषोत्थमतीसारसज्वरंवार्थाविज्वरं ।
सर्वरूपमतीसारसंग्रहग्रहणींजयेत् ॥
रसोऽभयनृसिंहोऽयमतीसारेसुपूजित ।

हींगलू, विष, त्रिकुटा, जीरा, सुहागा, गन्धक, अभ्रक और पारा. ये सब समान भाग लेवे । सब के बराबर अफीम लेवे । सब को नींबू के रस में खरल कर एक एक रत्ती की गोलियां बनावे । जीरेके चूर्ण और शहत के साथ एक गोली नित्य सेवन करे, तो ज्वर सहित वा ज्वर रहित त्रिदोष के सन्निपात को दूर करे तथा सब प्रकारके अतिसार, संग्रहणी को दूर करे । यह अभयनृसिंहरस अतिसार रोग से माननीय है ।

लोकेश्वररसः

द्वौभागौगन्धकस्याष्टौशङ्खचूर्णस्ययोजयेत् ।
एकमेवर स्याशमर्कक्षीरेणमर्दयेत् ॥
चित्रकस्यद्रवेणैवशोषयित्वापुन.पुनः ।
एकीकृत्यरसेनाथक्षारदत्वातदर्धकम् ॥
अर्कक्षीरेणकुर्वीतगोलकानथशोषयेत् ।
निरुध्यचूर्णलिप्तेथभाण्डेदद्यात्पुटततः ॥
लोकनाथरसोह्येषसर्वातिसारनाशन. ।
गोतक्रेणनिहन्त्याशुग्रहणीगदमुत्कट ॥

गुंजाचतुष्टयंचास्यमरिचाज्यसमन्वितं।
ददीतदविभक्तंचग्रहण्यांचविशेषत ॥

गन्धक २ तोले, शंख भस्म ८ तोले, पारा १ तोले, सब को आक के दूध से खरल करे। पीछे चित्रक के रस मे वारम्बार खरलकरे। पीछे सबको सुखा कर एकत्र कर इस रस मे आधा आक का खार मिलाय, आक के दूध से गोला बांधे। उसको धूप में सुखाय सराव सपुट मे रख कपरमिट्टी कर पकावे तो यह लोकनाथ रस सिद्ध होवे। यह सब अतिसारो को दूर करे गौ की छाछ के साथ लेवे, तो घोर संग्रहणी को दूर करे। ४ रत्ती यह रस काली मिरच और घृतके साथ सग्रहणी रोग मे देवे और दही भात का पथ्य देना चाहिये।

कर्पूररसः

हिंगुलचाहिफेनचमुस्तकेन्द्रयवतथा।
जातीफलचकर्पूरसर्वसमर्दयेत्ततः॥
जलेनवटिकाकार्य्याद्विगुंजापरिमाणतः।
ज्वरातिसारणेचैवतथातीसाररोगिणे॥
ग्रहणीषट्प्रकारेचरक्तातीसारउल्वण।
(अत्रकेचित्टकणमप्येकभागमिच्छति) ॥

हिंगुल, अफीम, नागरमोथा, इन्द्र जौ, जायफल और कपुर सबको समान ले जल से खरल कर, दो-दो रत्ती की गोलियां बनावे, [किसी वैद्य की यह सम्मति है कि इसमे एक भाग सुहागा मिलावे,] एक गोली नित्य खाय तो ज्वरातिसार, अतिसार, छः प्रकार की सग्रहणी और घोर रक्तातिसार ये सब दूर होवे।

नागसुन्दर

नागभस्मरसव्योमगन्धैरर्द्धपलोन्मितैः।
कुर्वीतकज्जलीश्लक्ष्णांप्रक्षिपेत्तदनन्तरं॥
द्विपलोन्मितरालायांद्रुतायांपरिमिश्रिता।
भृष्टैयाक्षसिन्धूत्थवचाव्योषद्विजीरकै.॥
सपथ्याविजयादिव्यैस्तुल्याशेरवचूर्णितैः।
मेलयेत्प्राक्तनकल्कं भावयेत्तदनन्तर॥
महानिम्बत्वचासारैःकाम्बोजीमूलजद्रवै.।
रसैर्नागबलायाश्चगुडूच्याश्चत्रिधात्रिधा॥
ततश्चगुटिकाकार्य्याबदरास्थिप्रमाणतः।
हन्यादेवहिनागसुन्दररसोवल्लोन्मितः
सेवितोनानातीसरणंतथागुदपरिभ्रंशतथा त्तिविष।

शीशे की भस्म, पारा, अभ्रक, गंधक प्रत्येक २ तोला लेवे। प्रथम गन्धक पारे की कजली करे, पीछे इस कजली मे सब औषधी मिलावे, तदनन्तर ८ तोले राल ले किसी पात्र मे रख अग्नि पर पिघलावे, पीछे, इसमे पूर्वोक्त कजली को मिला देवे। पीछे भुना बहेड़ा, सैंधा नोन, बच, त्रिकुटा, दोनो जीरे, हरड, भांग ये सब बराबर लेकर चूर्ण करे, पीछे पूर्वोक्त पारे गंधक की कजली में मिलाय इसमे बकायन की छाल के काढे, घृघची की जड के रस, नागबला के रस, तथा गिलोय के रस, प्रत्येक की तीन तीन भावना देवे। फिर बेर की गुठली के समान गोलिया बनावे इस नागसुन्दररस के सेवन करने से, अनेक प्रकार के अतिसार, तथा गुदा की काच निकलना, और विष रोगों को दूर करे।

सूतादिवटी

मृतंसूतमृतंस्वर्णमृतंताम्रंसमसम।
तुल्यचखादिरसारंतथामोचरसक्षिपेत्॥
द्रवै.शाल्मलिमूलोत्थैर्मर्दयेत्प्रहरद्वयम्।
चणकाभावटीकृत्वाखादेज्जीरकसयुताम्॥
त्रिदोषोत्थमतीसारसज्वरनाशयेत्ध्रुवम्।

पारे की भस्म, सुवर्ण भस्म ताम्र भस्म, सब बराबर लेकर इन तीनो की बराबर खैरसार और मोच रस लेवे। सब को सेमर की जड के रस से दो प्रहर खरल कर चने के समान गोलियां बनावे, एक गोली जीरे के साथ खाये तो त्रिदोष जन्य अतिसारज्वर सहित दूर होवे।

चतुःसमागुटी

अभयानागरमुस्तं गुडेनसहयोजितं ।
चतुःसमेयंगुटिकात्रिदोषघ्नीप्रकीर्त्तिता ॥
आमातिसारमानाहसविबन्धविशूचिकां ।
कृमीनरोचकहन्याद्दीपयत्याशुचानल ॥

हरड, सोठ, नागरमोथा, सब के समान गुड मिला कर गोलिया बनावे तो यह चतुः समागुटिका, त्रिदोषातिसार, आमातिसार, अनाह विबध, विशूचिका, कृमिरोग, अरुचि, इन रोगो को शान्ति करे, और जठराग्नि दीपन करे, [जहा जहां पारे की भस्म लिखी होवे तहा २ चद्रोदय डालना चाहिये।]

लोकनाथरसः

शुद्धं सूतद्विधागन्धंमर्दयेत्प्रहरद्वयम् ।
सजातेकज्जलंश्लक्ष्णंतेनपूर्यावराटिका ॥
टकणंचगवामूत्रे पिष्ट्वालेप्यमुखततः ।
वराटिकाःप्रयत्नेनरुध्वाभाण्डेपुटेपचेत् ॥
स्वागशीततथाभाण्डमुत्तार्यचवराटिका ।
ततोसूक्ष्मकृतचूर्णंलोकेश्वररसःस्मृतः ॥
चतुर्गुजाप्रमाणेनलीढंदधिमधुसमैः ।
अतिसारग्रहण्यार्शोनाशयेत्तत्क्षणादपि ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गधक २ भाग, दोनो को दो प्रहर घोट कर कजली करे, उस कजली को पीले रंग की कौडी मे भरे, कौडी के मुख को गोमूत्र से पिसे सुहागे से बद करे। मुद्रा कर अग्नि का पुट देवे, जब शीतल होजाय तब निकाल लेवे। पीछे महीन पीसे तो लोकनाथ रस सिद्ध होवे, चार रत्ती रस दही शहत के साथ खाय तो अतीसार सग्रहणी दूर होवे, [पीली काति और जिसकी पीठ भी पीली होवे तथा मुख चौडा और तोल मे छः मासे को होवे ऐसी कौडी को लेना चाहिये]।

शंखोदररसः

सूतभस्मबलिर्लोहंविषत्रिकटुकसमं ।
पिष्ट्वानिम्बुजतोयेनशखमेभिश्चतुर्गुण ॥
क्षिप्त्वामृदःशुकैर्लिप्त्वाभाण्डेगजपुटेपचेत् ।
शीतेचप्राग्विषंक्षिप्त्वावल्लमात्रंप्रयोजयेत् ॥
जातीफलचविजयामधुनातिसृतौददेत् ।
ग्रहण्याचित्रकाद्राम्बुविजयाविश्वभेषज ॥
पृथक्देयंसमधुनामरीचैश्चघृतान्वित ।
वन्हिमांद्यक्षयेतद्वदुदरोत्थानिलामये ॥
पथ्यदध्नाचतक्रेणक्षीरशाकैश्चसंयुतम् ।

पारे की भस्म, गधक, लोह, विष, सोठ, मिरच, पीपल, सब बराबर लेवे, नीबू के रस से खरल कर सब औषधियो के वजन से चौगुने वजन का शख ले उसमे सब औषधियो को भर ऊपर कपरमिट्टी देकर सराव सपुट मे रख गज-पूट मे फूक देवे। जब स्वागशीतल होजाय तब निकाल एक भाग विष मिलावे और दो २ रत्ती की गोलिया बनावे। एक गोली जायफल, भाग और शहत के साथ देवे तो अतीसार दूर होवे, सग्रहणी मे चित्रक, अदरक, नेत्र वाला, भांग, सोठ और शहत के साथ देवे तथा मिरच घृत के साथ मदाग्नि मे खई उदर के रोग, और बादी के रोगो मे देवे, दही, छाछ, दूध, और शाक ये सग्रहणी रोग मे पथ्य है।

तृप्तिसागररसः

रसभस्मंतुभागैकरसाद्द्विगुणगन्धकम् ।
गधकाद्द्विगुणचाभ्रंनिश्चन्द्रंमर्दयेत्तत ॥
दिनैककटुतैलेनरुध्वाचुल्याविपाचयेत् ।
यामैकवालुकायत्रे समुधृत्यविमर्दयेत् ॥
हयमारकमूलोत्थेरसैर्यामनिरुध्यच ।
पूर्ववत्पाचयेच्चुल्यासमादायविमिश्रयेत् ॥
त्रिक्षारपंचलवणनिष्कान्द्विद्वयजीरकै ।
विडगेनचतत्तुल्ययुक्तोयतृप्तिसागर. ॥
भक्षयेन्माषमात्र चर्सान्नपातातिसारजित् ।
सज्वराग्रहणींहन्तिह्यनुपानर्विनारस ॥

पारे की भस्म १ भाग, गधक २ भाग, अभ्रक ४ भाग ये सब पदार्थ एकत्र मर्दन कर सरसों के तेल से १ दिन खरल करे, पीछे शीशी

से भर मुख बंद कर एक प्रहर वालुकायन्त्र में पचावे । तदनन्तर कनेर की जड के रस से खरल करे, १ प्रहर पीछे पूर्वोक्त रीति से शीशी में भर कर पचावे, पश्चात् उस रस का शीशी से निकाल सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, सैंधानोन, साम्हर नोन, कचिया नोन, काला नोन सामुद्रनोन, चित्रक, सफेद जीरा, काला जीरा, वायविडंग, हरएक ३ माशे ले सबका चूर्ण कर इस रस मे मिला देवे, तो यह तृप्ति सागर रस बने, इसमें से १ माशे देवे तो सन्निपात के अतिसार को दूर करे, ज्वरसहित संग्रहणी इन सब रोगों को विना अनुपान ही दूर करे ।

आनन्दरसः

जातीफलंसैन्धवहिंगुलंचवराटशुंठीविषहेम बीजं। सपिप्पलीकंवटिकांचकुर्य्याद्गुंजाप्रमा णांजठरामयघ्नी ॥ निहन्तिवातकफशूलमात्र मामातिसारग्रहणीविकारं । निहन्तिशुष्क सितयासमेतरसोयमानन्दइतिप्रदिष्टः ॥

जायफल, सैंधानोन, हिंगलू, कौडी की भस्म सोंठ, सिंगिया विष, धतूरे के बीज और पीपल, ये सब समान भाग लेवे । सबको पीस एक २ रत्ती की गोलिया बनावे । इस गोली को खांड के साथ खाने से उदर रोग, वात, कफशूल, आमातिसार, संग्रहणी, योनि रोग इनको दूर करे, इस रस को आनन्द रस कहते हैं ।

गंधाधरोरसः

मुस्तमोचरसंलोध्रंकुटजत्वक्तथैवच ।
विल्वास्थिधातकीपुष्पमहिफेनन्तुगन्धकं ॥
शुद्धं हिपादंचैवसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ।
रसोगंगाधरोनाम्नामाषमात्रं प्रयोजयेत् ॥
वल्लमात्रमिदंखादेद्गुडतक्रसमन्वितं ।
सर्वातिसारग्रहणींप्रशमंयातिवेगतः ॥
सरिद्वेगप्रवाहघ्नंपथ्यंतक्रोदनंतथा ।

नागरमोथा, मोचरस, लोध, कुडे की छाल, वेलगिरी, धाय के फूल, अफीम, गंधक, और पारा, प्रथम पारे की कजली करे । पीछे पूर्वोक्त औषधियों का चूर्ण मिलाय, छोतरान के रस से १ रत्ती की गोली बनावे, १ गोली गुड और छाछ के साथ देवे तो यह गंगाधर नामक रस सब अतिसार, संग्रहणी, इनको दूर करे । यह रस नदी के सदृश वेग को भी बंद करने वाला है । इस पर दही भात खाना पथ्य है । यह लक्ष्मणोत्सव ग्रन्थ में लिखा है ।

अतिसारेभसिंहोरसः

पारदंगन्धकंशुद्धंमहिफेनंचतत्समं ।
मर्दयेद्विजयाद्रावैर्धत्तूरस्यरसैःपुनः ॥
जातीफलचतुर्थांशंमाषमात्रन्तुभक्षयेत् ।
अतिसारेभसिंहोयंविख्यातोरससागरे ॥

पारा, गंधक, दोनो शुद्ध लेवे, और पारे के तुल्य अफीम लेवे, सबको भाग के रसमें घोटे, पीछे धतूरे के रससे खरल करे, और एक २ माशे की गोली बनावे । १ गोली चौथाई जायफल के साथ खाय तो सब प्रकार के अतिसार रोगो को दूर करे, इसको अतिसारेभसिंह रस कहते हैं, यह शिवानुभव ग्रंथ में लिखा है ।

चन्द्रप्रभावटी

मृतसूतमृतंचाभ्रंमृतस्वर्णंसमंसमं ।
तुल्यंचखादिरसारंतथामोचरसंक्षिपेत् ॥
द्रवैःशाल्मलिमूलोत्थैर्मर्दयेत्प्रहरद्वयं ।
चणकाभावटीखादेन्निष्कैकजीरकैःसह ॥
त्रिदोषोत्थमतीसारंसज्वरंनाशयेद्ध्रुवं ।

पारे की भस्म, अभ्रक की भस्म, सोने की भस्म, ये सब समान लेवे । इनके बराबर ही खैरसार और मोचरस लेवे, सबको सेमर की जड के रस में दो प्रहर मर्दन करे, और चने की बराबर गोलिया बनावे, १ गोली ३ मास जीरे के साथ खाय तो ज्वर सहित त्रिदोष का अतिसार दूर होवे ।

पंचामृतपर्पटी

रसायसचताम्राभ्रसर्वद्विगुणगन्धकम्।
लोहपात्रेत्वादराग्नौमृदुपाकोभवेद्रस ॥
लेपयेत्कदलीपत्रे कर्त्तव्यारसपर्पटी।
पचामृतापर्पटीचरसोवन्हिप्रदीपनः॥
ज्वरातिसारकासघ्नीकामलापाण्डुमेहजित्।
अनुपानंमलेवद्धेज्वरेजीर्णेजमूत्रकम् ॥
पलपथ्यतुतैलाम्लवर्ज्यमन्यत्तुयुक्तितः।

पारा, लोहभस्म, तांवे की भस्म, अभ्रक की भस्म, इन सबको बरावर लेवे। और गंधक दो भाग लेवें सब को लोह पात्र में रख बेर की आच से मन्द २ पचावे। जब सब मिल जावें तब उनको केला के पत्ते पर ढाल देवे। तो पचामृत पर्पटी सिद्ध होवे, यह अग्नि दीपक ज्वर, अतीसार, खांसी, कामला, पांडुरोग, और प्रमेह इनका नाश करे। मल रुकने में और जीर्ण ज्वर में ४ तोले बकरी के मूत्र में देवे, तैल खटाई का छोड और सब वस्तु युक्ति से देवे।

नृसिंहपोटलीरसः

रसश्चगन्धपाषाण प्रत्येककर्षमात्रकम्।
श्लक्ष्णचूर्णद्वयो.सम्यक्प्रकुर्य्यात्कुशलोभिषक्॥ एतच्चूर्णं पीतवर्णा कपर्दाभ्यन्तरेकृतं।
शरावसम्पुटेकृत्वालिप्त्वासमृतगोमये.॥
सतीव्राग्नौपचेत्तावद्यावद्गच्छतिभस्मतां।
समुद्धृत्यास्मनासर्वंचूर्णितसकपर्दकं ॥
गव्येनसर्पिषानित्यभक्षयेद्रत्तिकाद्वयम्।
ज्वरातीसारकसर्वं हन्यात्तूर्णंचदुर्जयं॥
अतिसारसमग्रंचग्रहणींसर्वजांतथा।
चिरज्वरंचमन्दाग्निंक्षीणज्वरहरंचतत्॥
रसराजनृसिंहस्यमतापोटलिकाहिता।
हितासर्वज्वरीणान्तुसर्वातीसारिणांशुभा ॥

पारा और गन्धक दोनो एक एक कर्ष लेकर कजली कर पीली कौडी के अन्दर भरे। दो सराव के सपुट के अन्दर उन कौडियो को रख ऊपर मिट्टी कर अग्नि में रख देवे। जब कौडी भस्म हो जाय तब निकाल लेवे, उन कौडियों को पीस कर चूर्ण करे, इस चूर्ण को दो रत्ती नवीन मक्खन के साथ खाय तो पुराना ज्वर दूर होवे। मन्दाग्नि, मन्द ज्वर, इत्यादिक नष्ट होवे। ज्वरातिसार, अतिसार सग्रहणी दूर होवे। यह नृसिंह पोटली सर्वज्वर और अतिसारोको दूर करती है।

अतिसारदलनोरसः

दरदाम्बुचकर्पूरवत्सबीजसुचूर्णितं।
भावितंखाखसक्षीरैःसर्वातीसारनाशनं ॥
सृतपानीयत सिद्धतक्रेनेदंद्रतभवेत्।
नाम्नातीसारदलनमनुभूतमहीतले ॥

हीगलू, नेत्रवाला, कपूर, कूडा के बीज, इन सब का चूर्ण कर अफीम की भावना देवे। पीछे पानी से गोली बनाकर छाछ के साथ भक्षण करे तो संपूर्ण अतिसार दूर होवे। यह अतिसारदलन रस अनुभूत है।

कनकसुन्दररसः

शुद्धसूतसमंगन्धमरिचटंकणतथा।
स्वर्णबीजसममर्द्यं भृंगद्रावैर्दिनार्द्धकं॥
सूततुल्यविषयोज्यरस कनकसुन्दर.।
युक्तोगुंजाद्वयहन्तिवातातीसारमद्भुत॥
दध्यन्नंदापयेत्पथ्यमाजवाथगवादधि ॥२॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, काली मिरच, सुहागा, इन सबके बरावर धतूरे के बीज लेवे। सबको भांगरे के रस में दो प्रहर घोटे, पीछे पारे के बरावर शुद्ध सिंगया विष मिलावे तो यह कनक सुन्दर रस बने। दो रत्ती खाने से वातातिसार को शीघ्र दूर करे। इसके ऊपर भात तथा बकरी या गौ का दही भोजन करना पथ्य है।

करुणासागररसः

रसभस्मद्विधागन्धस्तस्मात्द्विघ्नमृताभ्रकं।
दिनसर्षपतैलेनपिष्ट्वायामंविपाचयेत्॥
रसमार्कवमूलोत्थैर्निर्य्यासैः सविमर्द्यच।
त्रिक्षारपचलवणविषव्योषाग्निजीरकैः ॥

सचित्रकैःसमानांशैर्युक्तैःकरुणसागर ।
माषद्वयप्रयुंजीतरसस्यास्यातिसारकैः ॥
सज्वरेविषमेवाथसशूलेशोणितोद्भवे ।
निरामेशोपयुक्तेवाग्रहण्यासानुपानकम् ॥
अनुपानविनाप्येष.कार्यं सिद्धिकरिष्यति ।

चन्द्रोदय १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, अभ्रक भस्म ४ भाग ,इन सबको सरसो के तेल मे १ दिन घोटे । पीछे सराव संपुट करके वालुका यन्त्र मे १ प्रहर पचावे । जब स्वाग शीतल हो जावे तब निकाल भांगरे के जड की रस की भावना देवे पीछे ढाक के गोंद और मोचरस के साथ भागरे के रस मे घोटे, पीछे सज्जीखार, जवाखार, सुहागा और पाचोनोंन, शुद्ध सिंगिया विष त्र्योष (सोंठ, मिरच, पीपल) चीता, जीरा, और वायविडग ये सब बराबर लेवे । सबको खरल करे, तो यह करुणा सागर रस सिद्ध होवे । दो माशे देने से अतिसार ज्वर, विषमज्वर, शूल, रुधिर विकार, निराम और सूजन युक्त सग्रहणी मे अनुपान के साथ सेवन करनेसे सब को दूर करे । यह रस विना अनुपान के भी कार्य सिद्ध करता है ।

इति श्री बृहद्रसराजसुन्दरे उत्तरखण्डे
अतिसाराधिकार.समाप्तः

अथ संग्रहणी रोगाधिकारः

लघुलाईचूर्ण

कर्ष गन्धकमर्द्धं पारदमुभेकुर्याच्छुभाकज्जलीं
त्र्यन्तत्र्यूषणतश्चपचलवणासार्द्धं चकर्ष पृथक्
भृष्ट हिंगुचजीरकद्वययुतसर्वार्द्ध भगायुत ।
खादेट्टंकमितप्रवृत्तगदवास्तक्रस्यविल्वेनच ॥

गन्धक ४ माशे, पारा २ माशे, दोनो की कजली करे इस कजली मे सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक कर्ष २ भर लेवे । पांचो नोन, दोनो जीरे, भुनीहींग, एक कर्ष लेवे । सब औषधियो से आधी भांग लेवे । सब का कूट-पीस चूर्ण करे । इस चूर्ण मे से १ टक अतिसार वाला बेल गिरी के काढे मे अथवा छाछ मे लेवे तो अतिसार दूर होवे ।

मध्यलाईचूर्ण

शाणंशाणरसगन्धतयो.कुर्याच्चकज्जलीं ।
मृताभ्र भ्रष्टबाल्हीकत्रिसुगन्धचवालुक ॥
जातीफलंलवगचकुष्ठं जीरकुलिजन ।
व्योपंमाचरसविल्वकारवीपटपटूनिच ॥
एतानिशाणमात्राणिभ्रष्टभंगाखिलैःसमाः ।
लाइचूर्णमितिख्यातरुच्यदीपनपाचन ॥
प्रातस्तक्रे णशाणन्तद्द्यशाणार्द्धकंनिशि ।
अतक्रं हन्त्यतीसारग्रहणींचप्रवाहिका ॥

पारा १ शाण, गधक १ शाण, दोनो की कजली करे अभ्रक की भस्म, भुनी हींग, त्रिसुगन्ध (इलायची, तज, नाग केशर) जायफल, लौंग, कूट, जीरे, कुलिजन, सोंठ, मिरच, पीपल मोचरस, वेलगिरी, सोफ, छ नोन ये सब शाणमात्र अर्थात् चार २ माशे लेवे । सब औषधियों के समान भुनी भाग लेवे । सब का कूट पीस चूर्ण करे, इस लाईचूर्ण को छाछ के साथ खाने से रुचि करे, दीपन, पाचन है, प्रात.काल ४ माशे और रात को २ माशे लेवे । और विना छाछ के लेने से अतिसार और सग्रहणी दूर करे ।

बृहल्लाईचूर्ण

त्रिकटुत्रिफलाचैवविडगंजीरकद्वयम् ।
भल्लातकयवानीचहिंगुलंलवणत्रयम् ॥
गृहधूमवचाकुष्ठंरसोगन्धकमभ्रक ।
क्षारत्रयाजमोदाचचित्रकंगजपिप्पली ॥
मुस्तामोचरसपाठालवगजातिपत्रक ।
समभागकृतंचैषांचूर्णं श्लक्ष्णंविनिर्मितं ॥
शक्राशनस्यचूर्णन्तुसर्वतुल्यप्रदापयेत् ।
मन्दाग्निकासदुर्नामप्लीहपाण्डवरुचिज्वरान् ॥
विष्टंभसंग्राहिशूलंहन्यान्नानातिसारजित् ।
आमवातप्रहवल्यसूतिकादोषनाशनं ॥
वर्जनीयंचमापाम्लस्नानांपिशितभोजन ।

पथ्यकांजिकमत्रापिदधितक्रमथापिवा ॥
वृहल्लाईचूर्णमिदंलाईभाषितमुत्तमम् ।

त्रिकटु (सोठ, मिरच, पीपल,) त्रिफला (हरड, बहेड़ा, आंवला) वायविडंग, दोनो जीरे, भिलावा, अजमायन, हिंगुल, नोन, घर का धूआ, वच, कूठ, पारा, गन्धक, अभ्रक भस्म, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, अजमोद, चित्रक, गजपीपल, नागरमोथा, मोचरस, पाढ, लौंग, जावित्री, ये सब बराबर लेवे। सब का चूर्णकर सब के बराबर इन्द्रजव का चूर्ण लेवे। इस चूर्ण के खानेसे मदाग्नि, खासी, बवासीर, तापतिल्ली पांडुरोग, अरुचि, ज्वर, विष्टभ, शूल, और अनेक प्रकार के अतिसार आमवात, प्रसूतरोग, इतने रोग दूर होवे और बलकर्ता है। इसपर उडद का पदार्थ, मांस भक्षण, स्नान आदि वर्जित हैं। काजी पीना, दही छाछ पीना हित हैं। यह लाई धाय का कहा वृहल्लाईचूर्ण है।

मध्यलाविकाचूर्ण

अभ्र पारदगंधककरिकणाभल्लातजातीफल ।
क्षारहिंगुविडगपचलवणारंधूमकुष्ठावचा ॥
द्वे जीरेत्रिफलाजमोदमरुणाव्योपयवानीत
तच्चूर्णंसर्वमिदसमेनरजसाशक्राशनेनान्वित
मन्दाग्निग्रहणीप्रमेहहरणदुनोमकासापह ।
शोथानीकवमित्वशूलनिचयनानातिसारंज्वरं ॥ हन्यादामसमीरणार्चिगदान्लूतामयपाण्डुता । सर्वेऽन्येपिशमप्रयान्तिनियतरोगास्तुवाताद्य ॥ प्रातश्चाक्षमितारनालसहिता भुक्ताचसालाविका । कुर्यात्कान्तिमयवपुश्चमतिदगम्भीरनादंतथा ॥ अभोभिस्त्वथवानुपानविधिनाभक्षेच्चतामस्तुभि. । स्वेच्छाभक्षणातोभवेत्प्रमुदितोसद्वैद्यनिर्देशनात् ॥

अभ्रक भस्म, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, गजपीपल, भिलावा, जायफल, जवाखार, हीग, वायविडग, पाचोनोन, लोह भस्म, ग्रह धूम, कूठ, बच, सफेद जीरा, काला जीरा, त्रिफला अजमोद, मजीठ, त्रिकुटा, और अजवायन इन सब औषधियों को बराबर लेवे। और सब की बराबर भाग को पीस कर मिलावे, तो यह लाविका चूर्ण मंदाग्नि संग्रणी, प्रमेह, बवासीर, खांसी, सूजन, वमन, शूलरोग, अनेक प्रकार के अतिसार आमवात, अरुचि लूतारोग, पाडुरोग, और वातादिक सब रोगो को दूर करे। इसमे से प्रात. काल एक तोले नित्य काजी के साथ खाय तो देह को उज्वल करे, बुद्धि बढावे, सिंह का सा नाद करे, जल के साथ अथवा अन्य अनुपान के साथ अथवा छाछ के साथ रोग के अनुसार वैद्य की आज्ञा से खाना चाहिये।

महती लाविकाचूर्ण

पारदगन्धकंलोहत्र्यूपणंलवणानिच ।
क्षारत्रयंयमान्यौचमुस्तकगजपिप्पली ॥
कुटजेन्द्रयवोहिंगुशतपुष्पाहिफेनक ।
गृहधूमवचाकुष्ठविडगजीरकद्वयम् ॥
अभ्रकंचित्रकंपाठालवंगत्रिफलाशुभा ।
जातीफलंसकर्पूरंत्वगेलापत्रकेशरं ॥
एतानिसमभागानिशक्राशनमानिच ।
यथाव्याधिवलिखादेद्दीपयेज्जठरानलं ॥
अवश्यजारयत्याशुभक्षचैवातिभोजन ।
नाशयेद्ग्रहणीशोथमामचेवामवातकम् ॥
कामलांपाण्डुरोगचकासश्वासजलोदर ।
लोहानपीनसशूलकुष्ठकृमिगदतथा ॥
सेव्यमानोभवेत्काक्षासगच्छेत्प्रमदाशत ।
जीवेद्वर्षशतसाग्रवलीपलितनाशन ॥
वातश्लेष्मविकारेषुशस्यते चतुपोढकै. ।
अलावीमहतीचैवसर्वरोगविनाशिनी ॥

पारा, गधक, लोह भस्म त्रिकुटा, पाचौनोन, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, अजवायन, खुरासानी अजवायन, नागरमोथा, गजपीपल, कूडा की छाल, इन्द्र जो, हींग, सौंफ, अफीम, घर का धूंआ, वच, कुट, वायविडङ्ग, दोनो जीरे, अभ्रक चित्रक, पाठ, लौग, त्रिफला, जायफल, कपूर, दालचीनी, वा तज, इलायची, पत्रज, और केशर

इन सबको बराबर लेवे, और सब की बराबर भांग लेवे, रोगी की अवस्था के अनुसार खाने को देवे तो अग्नि को प्रज्वलित करे। अत्यन्त भोजन किया हुआ भी तत्क्षण भस्म होवे। सग्रहणी रोग, सूजन, आमवात, कामला, पाडुरोग, खांसी श्वास, जलोदर, प्लीह, पीनस, शूल, कोढ, कृमि रोग, ये सब दूर होवे। इसके खाने वाला सौ स्त्रियों से भोग करे, वली पलित रहित सौ वर्ष जीवे, वातकफ के विकारों मे तुषोदक के साथ देना चाहिये। यह सर्व रोग नाशक महती लाविका चूर्ण कहाता है।

वज्रकपाटरसः

मृतसूताभ्रकंगन्धयवक्षारंसटङ्कणम्।
वचाजयासमसर्वंजयन्तीभृंगजद्रवैः॥
सजंबीरैस्त्र्यहंमर्द्य शं षयेत्तचगोलकम्।
मन्दवन्हौशनैःस्वेद्य यामार्द्धं लोहपात्रके॥
रससाम्येप्रतिविषादेयामोचरसस्तथा।
भावयेद्विजयाद्रावैःशोष्यपेष्यचसप्तधा॥
रसोवज्रकपाटोयंनिष्कार्द्धं मधुनालिहेत्।

पारे की भस्म, अभ्रक की भस्म, गन्धक, जवाखार, सुहागा, वच और अरनी इन सब को बराबर लेवे। सबको अरनी और भांगरे के रस मे तथा जंबीरी के रस मे तीन दिन खरल करे। पीछे उस औषधी का गोला बनाकर धूप से सुखा लेवे, पीछे उस गोले को किसी लोहे के पात्र मे रखकर मंदाग्नि से दो प्रहर स्वेदन करे। पीछे इसमे पारे के समान अतीस और मोचरस मिला कर भांग के रस की सात भावना देवे। और दो २ मासे की गोलियां बनावे, तो यह वज्रकपाटरस बने १ गोली शहत के साथ खानेसे सग्रहणी नष्ट होवे।

ग्रहणीकपाटरसः

तारमौक्तिकहेमानिसारश्चैकैकभागिकाः।
द्विभागोगन्धकः मृतस्त्रिभागोमर्द्दयेद्दिमान्॥
कपित्थस्वरसैर्गाढमृगशृङ्गेततःक्षिपेत्।
पुटेन्मध्यपुटेनैवततउद्धृत्यमर्द्दयेत्॥
बलारसैःसप्तवेलमपामार्गरसैस्त्रिधा।
लोध्रप्रतिविषामुस्तधातकीन्द्रयवामृता॥
प्रत्येकमेतत्स्वरसैर्भावनास्यात्त्रिधात्रिधा।
माषमात्रोरसोदेयोमधुनामरिचैस्तथा॥
हन्यात्सर्वानतीसारान्ग्रहणींसर्वजामपि।
कपाटोग्रहणीरोगेरसोयंवन्हिदीपनः॥

रूपे की भस्म, मोती की भस्म, सुवर्ण भस्म, और लोह भस्म, इन सब को एक २ भाग लेवे, गन्धक २ भाग ले, पारा तीन भाग ले, सब को एकत्र कर कैथ के रस से खरल कर हिरण के सींग मे भर उस पर कपरमिट्टी करे, और मध्यपुटकी अग्नि से फूंक देवे, फिर उस मे से निकाल बला के रस से सातवार घोटे, ओंगा के रस का तीन भावना देवे। लोध, अतीस, नागरमोथा, धाय के फूल, इन्द्रजौ, और गिलोय इनमें से प्रत्येक के रस की तीन २ भावना देवे, पीछे एक २ मासे की गोलियां बनावे, एक गोली काली मिरचों के चूर्ण और शहत के साथ देवे तो सब अतिसार और सब प्रकार की सग्रहणी को दूर करे, यह सग्रहणी के बंद करने को कपाटरूप है, और अग्नि को दीप्त करे।

द्वितीयग्रहणीकपाटोरसः

रसेन्द्रगन्धातिविषाभयाभ्रक्षारद्वयंमोचरसंवचाच। जैपालजम्बीररसेनघृष्टःपिण्डीकृतःस्याद्ग्रहणीकपाटः॥ अस्यार्द्धमाषमधुनाप्रभातेशम्बूकभस्माज्यमरीचयुक्तम्। सर्वातिसारग्रहणीज्वरचशूलाग्निमाद्यंचह्यारोचकंच॥ निहन्तिसद्यश्चतथामवातं द्वित्रिप्रयोगेनरसोत्तमोयं।

पारा, गन्धक, अतीस, हरड, अभ्रक-भस्म, सज्जीखार, जवाखार, मोचरस, वच, और कुरैया इन सब को जंबीरी के रस से घोट कर आधे २ माशे की गोलियां बनावे। एक गोली शहत

शंखभस्म और मक्खन और मिरचों के साथ प्रात काल सेवन करे तो यह ग्रहणीकपाटरस सब प्रकार के अतिसारो को और सग्रहणी, ज्वर, शूल, मदाग्नि, अरुचि, और आमवात इनको दो तीन बार खाने से शीघ्र दूर करे।

तृतीयग्रहणीकपाटोरसः

टंकणंक्षारगन्धचरसजातीफलानिच ।
विश्वखदिरसारचजीरकंश्वेतधूपकम् ॥
कपिकच्छुकबीजचतथैववकपुष्पकम् ।
एषांशाणसमादायश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥
विल्वपत्रककार्पासफलशालिंचदुग्धिका ।
शाल्मलीमूलकुटजत्वच कंचटपत्रकम् ॥
सर्वेषांस्वरसेनैवववटिकाकारयेद्भिषक् ।
रक्तिकैकाप्रमाणेनखादेद्वन्हिवटीद्वयम् ॥
दधिसण्डयुत:पेय.पलमात्रप्रमाणत' ।
अतियोगमतिक्रान्ताग्रहणींयोद्धतांजयेत् ॥
आमशूलंश्वासकासज्वरशोथप्रवाहिकां ।
इ त रानिलाकृतितत्रकार्यं नैवात्रयुक्तित. ॥
रक्तस्रावकरद्रव्यंकार्यं नैवात्रयुक्तितः ।
कृष्णावार्त्ताकमत्स्यचदधितक्रंचशस्यते ॥
ज्ञात्वानिलाकृतितत्रजलतैलप्रदापयेत् ।

सुहागा, गन्धक, पारा, जायफल, सोंठ, खैरसार, जीरा, राल, कौंछ के बीज, और अगस्तियाके पुष्प, इन प्रत्येक औषधियो के चार २ मासा लेवे। और सब का चूर्ण कर बेल के पत्तो के रस को, कपास के फल को, शालिच दुद्धी, सेमल का मूसला, कूडाकी छाल, पनिया चौलाई, इन सब के रस की भावना देकर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, दो गोलिया एक पल छाछ वा माडके साथ लेवे तो सग्रहणी दूर होवे आमशूल, श्वास, खासी, ज्वर, सूजन, प्रवाहिका, इनको दूर करे। इस रस के स्राव (दस्त कारक) वस्तु न खाना चाहिये काले बेगन, मछली, दही, और छाछ इनका सेवन हितकारक है।

चतुर्थग्रहणीकपाटोरसः

रसगन्धकयोश्चापिजातीफललवगयो ।
प्रत्येकशाणमानचश्लक्ष्णचूर्णीकृतशुभम् ॥
सूर्य्यावर्त्तस्मैनैवविल्वपत्ररसेनच ।
शृंगाटकस्यपत्राणांरसैःप्रत्येकशःपलैः ॥
चण्डातपेनसशोष्यवटिकांकारयेद्भिषक् ।
विल्वपत्ररसेनैवदापयेद्रक्तिकाद्वयम् ॥
दध्नाचभोजनीयंचग्रहणीरोगनाशनः ।
पाण्डुरोगमतीसारशोथहन्तियथाज्वरम् ॥
ग्रहणीकपाटनामारसःपरमदुर्लभ. ।

पारा, गन्धक, जायफल, लोंग, प्रत्येक छ' छ' माशे लेवे। सब को एकत्र कर चूर्ण करे, पीछे हुरहुर, बेलपत्र और सिंघाडे के पत्ते, प्रत्येक क एक २ पल प्रमाण रससे खरल करे, पीछे दो २ रत्ती की गोलिया बना कर धूप मे सुखावे। एक गोली बेलगिरी के रस से देवे इस के ऊपर दही खाय तो सग्रहणी, अतीसार, पाडुरोग, सूजन, ज्वर आदिरोग दूर होवे।

पंचमग्रहणीकपाटोरसः

श्वेतसर्जस्यशुद्धस्यगन्धकस्यरसस्यच ।
शुभेन्हिपृथगादायचूर्णंमाषचतुष्टयम् ॥
एकीकृत्यशिलाखल्ले दद्यात्तेपान्तदारसम् ।
सूर्य्यावर्त्तस्यविल्वस्यशृंगाटस्यचपत्रजम् ॥
प्रत्येकपलमेकैकंदापयेद्ग्रहणीगदे ।
दापयेत्सततोयत्नाद्दधिभक्त समाचरेत् ॥
असवृत्तगुदद्वारंकपाटमिवढक्कयेत् ।
अतश्चग्रहिणीरोगकपाटोऽयरस.स्मृत ॥

सफेदराल, शुद्धगन्धक, पारा, प्रत्येक चार २ माशे लेवे। चूर्ण कर हुरहुर, बेलपत्र, सिंघाडे के पत्र इन प्रत्येक के एक २ पल रस से पृथक् २ खरल करे। फिर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, इस का सेवन करने से प्रबल सग्रहणी नाश होवे। इसके ऊपर दही भात खाना पथ्य है, खुलेहुए गुदा के द्वार को किवाडों की तरह

बंद कर देता है, इसी लिये इस रस को ग्रहणी कपाट रस कहते हैं।

षष्ठग्रहणीकपाटोरसः

गिरिजाभवबीजकज्जलीपरिमृद्यार्द्ररसेन।
शोधिताकुटजस्यतुभस्मना॥
पुनस्तुद्विगुणेनार्थाविमृद्यपरिमिश्रिता॥
मर्दयित्वाप्रदातव्यसम्यग्गुञ्जाचतुष्टयम्॥
अजाक्षीरेणदातव्यंकाथेनकुटजस्यवा।
यूषदेयंमयूरस्यवारिभक्तंचशीतलम्॥
दध्नासहपुनर्देयग्रामाद्धौरक्तिकाद्वयम्।
वर्द्धयेद्दशपर्य्यन्तह्रासयेत्क्रमशस्तथा॥
निहन्तिग्रहणींसर्वांविशेषात्कुक्षिमाद्र्यवम्।

पारा १ तोला, गन्धक १ तोला, दोनो को पीस उत्तम कजली करे. पीछे इस मे कुडाकी छाल की भस्म ४ तोले मिला कर अदरक के रस से खरल करे,। इस को बकरी के दूध में अथवा कुडा की छाल के काढे से प्रात काल ४ रत्ती देवे, तथा भोजन के पहले दो रत्ती की मात्रा दही में मिला कर देवे, नित्य एक रत्ती मात्रा बढावे दश रत्ती तक बढावे, और उसी प्रकार दश से घटा कर चार पर्य्यन्त ले आवे। पथ्य इसपर मोर के मासका यूष, शीतल जल और अन्न। इस रस के सेवन करने से सब प्रकार की संग्रहणी और कूख की नम्रता दूर होवे।

सप्तमग्रहणीकपाटोरसः

दरदगन्धपाषाणंतुगाक्षीर्य्याहिफेनकम्।
तथावराटिकाभस्मसर्वंक्षीरेणमर्दयेत्॥
रक्तिकायुग्ममानेनछायाशुष्कावटींचरेत्।
ग्रहणींविविधा हन्तिरक्तातीसारमुल्वणं॥

हींगलू, गंधक, वंशलोचन, अफीम, और कोडी की भस्म, इन सबको समान लेकर दूधसे खरल करे, दो २ रत्ती की गोलिया बना कर छाया मे सुखा लेवे, इसके खाने से संग्रहणी और रक्तातिसार दूर होवे यह लघु संग्रहणीकपाट रस कहाता है।

अष्टमबृहत्संग्रहणीकपाटोरसः

शुद्धाहिफेनबलिसूतकपर्दभस्महालाहलोपण विशुद्धसुवर्णबीजे.। अम्भोधिपक्तिकरशैल धराष्टविंशत्यशैर्विचूर्णितनमं.ग्रहणीकपाटः॥ वल्लोस्यहन्तिमधुनासहजीरकेणमुक्तोतिसार मपिसग्रहणीमुदग्राम्। आमंविपाच्यसहसा जनयत्यवश्यवैश्वानरजठरमात्तिनमात्तिभाजम्॥

शुद्ध अफीम ४ भाग, गंधक १० भाग, पारा २ भाग, कोडी की भस्म ७ भाग, हलाहल १ भाग, त्रिकुटा ८ भाग, और शुद्ध धतूरे के बीज २० भाग लेवे। सबका चूर्ण करे तो यह ग्रहणीकपाट रस सिद्ध होवे। दो रत्ती रस शहत और जीरे के साथ सेवन करने मे प्रबल संग्रहणी और अतिसार को दूर करे, आम को पचाय अग्नि को प्रज्वलित करे।

नवमग्रहणीकपाटोरसः

मुक्तासुवर्णरसगन्धटकणघनकपर्दोऽमृततुल्य भागम्। सर्वं.समशखकचूर्णयुक्तंखल्वेचमा व्योतिविपाद्रवेण॥ लोहस्यपात्रेपरिपाचि तश्चसिद्धोभवेत्संग्रहणीकपाट.। वातोत्तरा यामरिचाज्ययुक्तः पित्तोत्तरायामधुपिप्पली भिः॥ श्लेष्मोत्तरायाविजयारसेनकटुत्रये णापियुतोग्रहण्याम्। क्षयेज्वरेप्यर्शसिविड् विकारेसामेतिसारेऽरुचिपीनसेच॥ मोहेच कृच्छ्रेगतवातुवृद्धौगुंजाद्वयचापिमहामयघ्नम्

मोती की भस्म, सुवर्ण भस्म, पारा, गंधक, सुहागा, नागरमोथा, कौडी की भस्म, और विष ये सब समान भाग लेवे। सबकी बराबर शख भस्म लेवे। पीसकर लोहे के पात्र मे अतीस के रस की भावना देवे, तो संग्रहणीकपाट रस सिद्ध होवे। वातजन्य ग्रहणी में मिरच और घृत के साथ देवे, पित्तजन्यग्रहणी मे शहत और पीपल

के साथ देवे। और कफजन्य संग्रहणी में भांग के रस अथवा त्रिकुटा के साथ देना चाहिये। खई ज्वर, बवासीर, मल के विकार, आमातिसार, अरुचि, पीनस, मोह धातुक्षीण, इन रोगो मे २ रत्ती देने से सबको दूर करता है।

दशमग्रहणीकपाटोरसः

पारदात् द्विगुणोगन्धस्ताभ्यांतुल्यंच टुत्रिकम्।
अजाजीटङ्कणंधान्यंहिंगुजीरयवानिका ॥
प्रत्येकंद्विगुणसूताद्धुचकचचतुर्गुणम्।
सर्वेषाचसमाःस्यादग्धासुश्चैर्वराटिका ॥ —
सर्वमेकीकृतचूर्णंमापमात्रमिततः।
तक्रेणालोड्यमतिमानभक्षयेत्सततनर. ॥
ग्रहणीकपाटकोह्ये षहित'स्याद्ग्रहणीगदे।

पारा २ तोले, गंधक ४ तोले, त्रिकुटा, ८ तोले, जीरा ४ तोले, सुहागा ४ तोले, धनिया ४ तोले, धनिया ४ तोले, हींग ४ तोले, आजवायन ४ तोले, सचरनोन ८ तोले, कौडी की भस्म ४ तोले, सबका चूर्ण कर एक मासा नित्य छाछ के साथ पीवे तो संग्रहणी दूर होवे।

रसपर्पटी

श्रीविन्ध्यवासिपादान्नत्वाधन्वन्तरिंचसुर भिषज। रसगन्धकपर्पटिकापरिपाटीपाटव वक्ष्ये ॥ मग्नरसेजयन्त्या'पश्चादेरंडसम्भूते। आद्रकरसेचसूतंपत्ररसैःकाकमाच्याश्च ॥
मग्नमुदितानुपूर्व्यामर्दनशुष्ककरेणगृह्णीयात्।
प्रस्तरभाजनमध्येशुद्धिरियपारदस्योक्ता ॥
शुकपुच्छसमच्छायोनवनीतसमद्युति. ।
मसृण कठिनःस्निग्धःश्रेष्ठोगन्धकइष्यते ॥
कृत्वाभद्रगन्धकमतिकुशलःक्षुद्रतण्डुलाकार।
तद्भृंगराजरसैरनतरंभावयेत्पात्रे ॥
तदनुचशुष्ककुर्य्याद्धूलिसमानचसप्तधारौद्रे।
तदनुचशुष्कंचूर्णंकृत्वाविन्यस्यलौहिकामध्ये ॥
निर्धूमबदरकाष्ठागारेन्यस्तविलाप्यतैलसमं।
पात्रस्थितभृंगराजरसमध्येढालयेन्निपुणः ॥

तस्मिन्प्रविष्टमात्रं कठिनत्वंयातिगंधकचूर्णं।
पुनरपिरौद्रेशुष्कंकेतकररजसासमानतांनीत ॥
शुद्धेसुतेशोधितगन्धकचूर्णेनतुल्यताकार्य्या।
तावन्मर्दनमनयोर्यावन्नकणोपिदृश्यतेसूते ॥
पश्चात्कज्जलसदृशाचूर्णंलौहीस्थितंनियत्नेन।
निर्धूमबदरकाष्ठांगारेन्यस्तंविलाप्यतैलसमम्।
सद्योगोमयनिहितेकदलिदलेढालयेन्मूर्द्धनि।
लौहीस्थितमवशिष्ट कठिनतत्रगृहीतव्य ॥
पश्चात्पर्पटरूपापर्पटिकाकीर्त्यतेलोकैः।
मयूरचन्द्रिकाकारलिंगंयत्रतुदृश्यते ॥
तत्रसिद्धंविजानीयाद्वैद्योनैवात्रसंशय ।
समुदितपात्रे भरणावदनीयापर्पटीमनुजैः ॥
जीरकगुंजेहिंगोरद्ध खादेच्चवानलेजठरे। जीरकहिंगुरसेनत्वनुपानसलिलधारयाकार्य्यम्। रसगन्धकपर्पटिकाभक्षणमात्रेतुनाम्भसःपान प्रथमंगुंजायुगलंप्रतिदिनमेकैक वृद्धितोभक्ष्यम् दशगु जापरिमाणान्नाधिकमदनीयमेवविंश तिदिनानि। वातातपकोपमनश्चिन्तनमाहा रसमयवैषम्यं ॥ व्यायामश्चायासःस्नानव्या ख्यानमहितमन्यन्तं। पावेस्तोकंसर्पिजीरक धन्याकवेशवारैश्च॥ सिंधूद्भवेनरद्धनमोदन धान्यानिशालयोभक्ष्याः। कृष्णं वार्तिगल फलमविद्धकर्णाचवास्तूक ॥ अक्षतमुद्ग.सहितःकदलिदलसहितपटोलंच। क्रमुकफलशृंग वेरौभक्ष्यौशावेषुकाकमाचीच ॥ लावक वर्त्तकतित्तरमयूरमासंचहिततरं भवति। मुद्गररोहितमीनावदनीयौकृष्णमत्स्याश्च ॥ नीर क्षीरव्यंजनमदनीयपंचकदलंच। रम्भा फलदलवल्कलमूलान्नवर्जनकार्य ॥ तिक्त निम्बादिकमपिनाद्यंनोष्णतथान्नच। अनूपमांसजलचरपतत्रिपललंचसर्वथात्याज्यम्॥ स्त्रीणासम्भाषणमपिकडकश्चकृष्णमत्स्येषु। नाम्लनदधिशाकपर्पट्याभक्षणेभक्ष्यम। गुडखण्डशर्करादिकइक्षुविकारोनभक्ष्यइक्षुश्च नदलनफलंनलताप्यदनीयाकारवेल्लस्य ॥ स्तोकंघृतमिहभक्ष्यपथ्येसाकांक्षमुत्थान।

क्षुत्पीडायांभोजनमवश्यकार्य्यं महानिशाया ॥ च॥समजलमिश्रपक्वं क्षीरं यद्वाधिकजलपक्व । कथमपिभोजनसमयातिक्रमजातेज्वरेविरके च ॥ वमनेचनारिकेलसलिलदुग्धचपानव्य । स्वप्नेजातेरमितेविरेकन क्षीरमेवपातव्यं ॥ न जायतेवुभुक्षालक्ष्यालक्ष्याप्रतीयतेयदिवा । अशक्तिर्भिन्नभिन्नमस्तव शूलाद्यैर्नमवधार्य्य। किंवहुवाच्यरोगीयदायदाभवतिसाकांक्ष । पायायितव्यदुग्धतदातदानिर्भयीभूयः ॥ विहिताकरणं चास्यामविहितकरणं चरोगाद्य न्नानाम्।व्यापत्तयोपिवहुधादृष्टा प्रमाणकैर्व हुशः ॥ तस्मादवधातव्यभवितव्यभोजनेनि पुणैः। एवमियक्रियमाणाभवतिश्रेयस्करी नियत ॥ अर्शोरोगग्रहणीसामाशूलातिगा रौच । कामलापाण्डुव्याधिप्लीहानचातिदा रुणहन्ति ॥ गुल्मजलोदरभस्मकरोगनिह न्त्यामवाताश्च। अष्टादशैवकुष्ठान्यशेषशोथा दिरोगांश्च ॥ इयमम्लपित्तशमनीत्रिदोषद मनीक्षुधातिकमनीया । अग्निनिमग्नमुदरे ज्वालाजटिलकरोत्याशु ॥ रसगन्धकपर्पटि कात्वपवार्यंव्याधिसघात । वलिपलितशून्य पुरुषदीर्घायुषंकुरुते ॥ व्याधिप्रभावहरणा दपमृत्युत्राशनाशकरणाच्च। मर्त्यानाममृतघ टीरसगन्धकपर्पटीजयति ॥ शम्भुं प्रणम्य भक्त्या।पूजाकृत्वाचविष्णुचरणाब्जे। रसगन्ध कपर्पटिकाभक्ष्यातेनार्तिसिद्धिदाभवति ॥ नृणासरुजाध्रुवमियमारोग्यासततशीलिता कुरुते । श्रीवत्सांकविनिर्मितसम्यग्रसपर्पटी श्रेष्ठा ॥ उक्तमेवाहिकर्त्तव्यनानारोगतयात था । औषधक्रियथैवात्रकर्त्तव्याचोत्तरक्रि या ॥ प्रत्यवायविनाशार्थंक्षेत्रपालवलिन्यसे त् । कृतमगलकःप्रातर्योगिनिनामत पर ॥ भक्षणपूर्वं बलिदानमत्रः ॥ ॐ क्ष क्षे क्षेत्रपा लायनम. । क्षेत्रपालस्यसामान्यवलिमत्रः ॥ ॐ ह्रीं दिव्याभ्योयोगिनीभ्योमातृभ्य । क्षेत्रीभ्योभूतेभ्य. ॥ शालिकीभ्योनमोनमो ह्रींसामान्ययोगिनीनांवलि. । ॐ गन्धकम् हाकालायस्वाहा ॥ ॐ व्रजकोपिगीरक्षक्ष स्वाहा । विशेषबलिः॥ अत्रपारदस्यनैस र्गिकदोषत्रयशोधनचावश्यककार्यम् । यदु क्तम् ॥ मलशिखिविषनामोपरसम्यर्नसर्गि कादोषाः । मूर्च्छांमलेनकुरुतेशिखिनादाह विषेणहिक्काच ॥ गृहकन्याहरतिमलत्रिफला वन्हिचचित्रकस्तुविषम् । तस्मादेभिर्वारान् समूर्च्छयेत्सप्तसप्त व इति ॥ गृहकन्याघृत- कुमारीतस्यदलरसेनखल्लनम् । त्रिफलाया श्चूर्णेनखल्लनं ॥ चित्रकस्यपत्ररसेनमूर्च्छ नम् । तदैवनैसर्गिकदोषापहारानन्तर । जयन्त्यादिद्रव्यचतुष्टयरसेनमूर्च्छनमधि गतव्यम् ।

श्री विध्यवासि के चरणों को प्रणाम कर तथा देव वद्य धन्वन्तरि को प्रणाम कर रस (पारा) और गधक पर्पटी की उत्तम परिपाटी को मैं कहता हूँ, प्रथम पर्पटीकी क्रिया में पारे क मलदोष, अग्निदोष, तथा विषदोष अवश्य दूर करने चाहिये, वह दोष दूर करने की प्रणाली यह है कि ८ तोले पारा लेवे, उसको घी गुवार के रस से मर्दन करे इस प्रकार, करने से मल दोष दूर होवे, इसी प्रकार त्रिफला के चूर्ण से मर्दन करने से अग्नि दोष दूर होवे, तथा चीते के पत्तों के रसमे पारा खरल करने से विष दोष दूर होवे,पश्चात् यथा क्रम जयन्ती (अरनी) के पत्ते, अण्ड के पत्ते, अदरक और मकोय के पत्तों के रस मे पारे को डबोकर क्रम पूर्वक मर्दन द्वारा शुद्ध करे तब इस पारे को पर्पटी की क्रिया मे लेना उचित है, इस पारेके साथ गधक मिलावे उसकी परीक्षा यह है जो गन्धक तोता की पूछके समान हरे रग की कांति वाली, और मक्खन के समान दीप्तवाली, चिकनी, कठिन और स्निग्ध हो उसे श्रेष्ठ जानना चाहिये, ऐसी गन्धक ८ तोले लेवे, उसको छोटे २ चावलो के समान टुकडे करे, पीछे भांगरे के रस की ७ भावना देकर धूप मे सुखाय धूल के समान चूर्ण करे, पश्चात् इस गन्धक को लोहे की कलछी में रख धुआ रहित

बेर की अग्नि मे गलाय भांगरे के रस मे बुझा देवे, रससे डालते ही गन्धक का पिंड बन्ध जाता है, फिर इस गन्धक को धूप में सुखाकर चूर्ण करे केतकी के पुष्प के रज के समान सूक्ष्म करे, पीछे इस प्रकार शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक दोनो समान भाग लेवे, दोनो को उत्तम रीति से कजली करे, यावत् निश्चन्द्र अर्थात् पारा दीखने से बन्द हो जाय, सब चूर्ण को कजलीके समान होने पर लोहे की बड़ी कलछी मे रखकर निर्धूम बेरकी लकड़ी के कोयलो मे गलाकर तेल के समान पतली करे पीछे गोबर के ऊपर केले का पत्ता बिछाकर उस पत्ते के ऊपर पूर्वोक्त पिघली हुई कजली को ढाल देवे, और तत्क्षण दूसरे पत्ते से ढक किसी कपड़े की पोटली बनाकर उसमे दाब देवे कि जिससे वो पिघली हुई कजली फैल जावे, पीछे पिघली हुई कजली का जो कुछ अंश कठोर कलछी मे रह गया हो उसको उसी मे रहने देवे, लेना न चाहिये।

अब पर्पटी की परीक्षा कहते है, जो पर्पटी मोर की चन्द्रिकाके आकार होवे वो उत्तम होती है, इस पर्पटी को मूल आदि नक्षत्रमे जो औषधि भक्षण के हैं सेवन करना उचित है, तथा इसके बनाने और सेवन करने के समय पूजा का विधान लिखा है, वो पद्धति के अनुसार करना चाहिये, वात के रोग में २ रत्ती जीरे और १ रत्ती हींग के साथ देना चाहिये, पर्पटी खाने के पश्चात् शीघ्र ही जल पीना चाहिये, पहले दिन दो रत्ती की मात्रा देवे, फिर प्रतिदिन एक एक रत्ती बढ़ाना चाहिये, इस प्रकार दश रत्ती तक बढ़ावे, दश रत्ती से जियादा मात्रा का बढाना वर्जित है, २१ दिन पर्यंत औषधि सेवन करना चाहिये, पर्पटी का सेवन करने वाले को पवन खाना, धूप मे डोलना, क्रोध, अत्यन्त चिंता, भोजन समय का उल्लंघन करना, दण्ड कसरत परिश्रम, स्नान, बहुत बोलना, ये सब बाते त्याज्य है, घृत, सेंधा-नोन और जीरा तथा अनेक प्रकार के मसालो से सिद्ध किये हुए व्यंजनादि, साठी चावलो का भात काले बैंगन, पाठ का शाक, बथुवे का शाक वगैरे कीडो की खाई हुई मूंग, परवल, सुपारी, अदरक, मकोय का शाक, लवा, बतक, तीतर, और मोर, इन पक्षियो का मांस, जल मुर्गी, रोहू मछली, तथा काले रंग की मछली, और दूध जल मिला कर बनाई हुई लहस्सी, इन सब वस्तुओं का खाना हित है केला की फली, पत्ता, बक्कल और जड़ तथा नीम से आदि ले कड़वी वस्तु गरम अन्न, जल के किनारे रहने वाले शूकरादि, तथा जल के रहने वाले पक्षियो का मांस, खट्टी द्रव्य, दही, शाक, तथा काले रंगकी मछलियो मे गढ़क मछली, इन सबका खाना वर्जित है। और पर्पटी के खानेवाले को स्त्रियोंसे बोलना भी वर्जित है। गुड, खांड और, ईख आदि पदार्थो का खाना भी वर्जित है। करेले के पत्ते, फल लता कदाचित न खाने चाहिये। और घृत थोड़ा खाना चाहिये। भूख लगते ही भोजन करना चाहिये। यदि अर्द्ध रात्रि को भूख लगे तो उसी समय भोजन करना चाहिये। तथा भोजन समयके व्यतिक्रम करनेसे वमन अथवा ज्वर प्रगट होवे तो बराबर शीतल जल मिला अथवा अधिक जल मिला दूध पीना चाहिये। अथवा वमन होने मे नारियल का जल या दूध मिला कर पीवे। यदि स्वप्नान्तर मे वीर्य्य पतन हो जावे तो दूध पीना चाहिये। भूख लगी है या नहीं इसका यथार्थ ज्ञान होने से इस प्रकार परीक्षा करे कि जब देह शक्ति रहित हो जावे और मस्तक मे शूल तथा झनझनाहट होने लगे तब जाने कि भूख लगी है, ये भूखके उपद्रव जानकर उसे उसी समय भोजन कराना चाहिये। बहुत कहने से क्या है रोगी को जब जब भूख लगे तब तब निर्भय होकर दूध पिलाना चाहिये। उक्त निषेध आचरणो के करने से यथा-विहित आचरणो के न करने से अनेक प्रकार की व्यापत्ति (रोग) होते है। यह प्रमाणिक मनुष्यो की देखी हुई वार्त्ता है, इसी से साव-धान होकर पूर्वोक्त भोजनादि का नियम विधि-

पूर्वक पालन करना चाहिये। इस प्रकार पर्पटी भक्षण करना हितकारी होता हैं। पर्पटी सेवन से ववासीर, संग्रहणी, शूल, अतिसार, कामला, पांडुरोग, प्लीहके रोग, गुल्म, जलोदर, भस्मक, आमवात, अठारह प्रकार का कुष्ठ, सर्व शोथ रोग, और अम्लपित्त को शमन करे, सन्निपात को दमन कर्ता है, भूख बढावे, मन्दाग्नि को प्रज्वलित करे, यह रस गन्धक की कजली रोग समूहो का नाश करती हैं। जिस के देह में गुजलट पडगयी हो और सफेद बाल हो गये हो उसको दीर्घायु करे। व्याधिप्रभाव को हरण करे और अकाल मृत्यु के दूर करने को यह अमृत की वटी रूप है श्रीशिवजी को प्रणाम कर और श्रीविष्णु के चरण कमलो का पूजन कर पर्पटी खाने से सिद्ध कर्त्ता होता है। यह श्रीवत्साक की कही हुई हैं, परमोत्तम रसपर्पटी है, विघ्न न हो इसलिये, क्षेत्रपाल को बलिदान देना चाहिये। मगलाचरण करके प्रात काल इस पर्पटी का सेवन करना उचित है। इस पपटा के सेवन कर्त्ता को दूध अन्न इनके साथ मिला और भी आहर देना उचित हैं। नोन और जलका सेवन करना वर्जित हैं, जिसको प्यास अति व्याकुल करे वह नारियल का जल पीवे।

लोहपर्पटी.

समौगन्धरसौकृत्वाकज्जलीकृत्ययत्नतः।
शुद्धलोहस्यचूर्णन्तुरसतुल्यप्रदापयेत् ॥
एकीकृत्यततोयत्नाल्लोहपात्रे प्रमर्दितम्।
घृतप्रलिप्तदर्व्यान्तुस्वेदयेन्मृदुनाग्निना ॥
द्रवीभूतसमाहृत्यढालयेत्कदलीदले।
चूर्णीकृत्यसुखार्थायपथ्यसुभिःप्रसेव्यते ॥
शीतोदकानुपानंवाक्काथवाधान्यजीरयोः।
लोहेनपर्पटीह्येषाभद्यालोकस्यसिद्धिदा ॥
रक्तिकैकांसमारभ्यवर्द्धयेद्रक्तिकांक्रमात्।
सप्ताहंवाद्वयवापियावदारोग्यदर्शनम् ॥
सूतिकांचज्वरचेवग्रहणीमतिदुस्तराम्।
आमशूलातिसारांश्चपाण्डुरोगंसकामलाम् ॥
प्लीहानमग्निमाद्यंचभस्मकंचतथैवच।
आमवातमुदावर्त्तंकुष्ठान्यष्टादशैवतु ॥
एवमादींस्तथारोगान्गराणिविविधानिच।
हन्त्यनेनप्रयोगेणवपुष्मान्निर्मल.सुधी ॥
जीवेद्वर्षशतपूर्णवलीपलितवर्जित.।
भोजनंरक्तशालीनांत्यक्त्वाशाकविदाहिच
आमवातप्रकोपंचचिन्तनमैथुनतथा।
प्रातरुत्थायससेव्याविधिनायुःप्रवर्द्धिनी ॥

पारा २ तोले, गन्धक २ तोले, दोनों की कजली कर इस मे २ तोले शुद्ध लोह की भस्म मिलावे। पीछे लोहेकी कलछीमे रख कर तीनो को मर्दन करे, पीछे उस कजली को घृत से लिप्त कर कलछी में रख मंदाग्नि से स्वेदित करे, जब कजली द्रवीभूत हो जावे तब अग्नि पर से उतार कर पूर्व रीति के अनुसार पत्ते पर ढाल देवे, तो यह लोहपर्पटी सिद्ध होवे। पीछे इस का चूर्ण कर किसी उत्तम पात्र में भर कर रख देवे, इस को पथ्य सेवन कर्ता मनुष्य को सेवन करना उचित है। इस पर्पटी को शीतल जल के साथ या धनिये और जीरे के साथ खाना उचित है। एक २ रत्ती से बढावे सात या चौदह दिन अथवा जब तक रोग दूर न हो तब तक सेवन करे तो प्रसूत रोग, ज्वर, घोर संग्रहणी, आमशूल अतिसार, पांडुरोग, कामला, प्लीहरोग, मन्दाग्नि, भस्मकरोग, आमवात, उदावर्त्त, अठारह प्रकार का कुष्ठरोग, तथा विष के उपद्रव, इन सब को दूर करे। निर्मल देह हो बुद्धि बढे, वलीपलित रहित सौ वर्ष की पूर्ण आयु हो, भोजन मे लाल चावलो का भात देवे, तथा दाहकारक पदार्थ और शाकादि द्रव्य देना वर्जित है। लोहपर्पटी सेवन करने वालो को चिन्ता और मैथुन करना वर्जित है, प्रात काल उठ कर सेवन करने से आयु को बढावे।

स्वर्णपर्पटी.

रसोत्तमंपलशुद्ध हेमतोलकसंयुतम्।
शिलायामर्दयेत्तावद्यावदेकत्वमागतम् ॥

गन्धकस्यपलचैवलोहपात्रेततोन्दृढे ।
मर्दयेत्दृढपाणिभ्यांयावत्कज्जलतांव्रजेत् ॥
तत परंविधानज्ञ.पर्पटींकारयेत्सुधीः ।
रक्तिकादिक्रमेणैवयोजयेदनुपानतः ॥
ग्रहणींविविधान्हन्तिवृष्यासर्वरुजापहा ।

शुद्ध पारा ८ तोला, सुवर्ण की भस्म १ तोला, दोनो को खरल करे जब दोनो एकत्र हो जावे तब इस मे ८ तोला गन्धक मिलाकर लोहपात्र मे खरल करे, जब काजल के समान हो जावे तब पूर्वोक्त रीति के अनुसार पर्पटी बनालेवे। इस की १ रत्ती से मात्रा बढानी चाहिये, इस के सेवन करने से संग्रहणी, राजयक्ष्मा आदि अनेक रोग दूर होवे ।

स्वर्णपर्पटीकापाठान्तरम्

शुद्धंसूतपलमिततुर्यांशस्वर्णसंयुतम् ।
मर्दयेन्निम्बुनीरेणयावदेकत्वमाप्नुयात् ॥
प्रक्षाल्योष्णांबुनापश्चात्पलमात्रेसुगन्धके ।
द्रुतेलोहमयेपात्रेवादरानलयोगतः ॥
प्रक्षिप्यचालयेल्लोह्यामन्दलोहशलाकया ।
तत पाकंविदित्वातुरम्भापत्रेशनैःक्षिपेत् ॥
गोमयस्थेतदुपरिरम्भापत्रेणयन्त्रयेत् ।
शीततच्चूर्णितगुंजाक्रमवृद्धंनिषेवयेत् ॥
माषमात्र भवेद्यावत्तोमात्रानवर्द्धयेत् ।
सक्षौद्रेणोषणेनैवलेहयेद्भिषगुत्तमः ॥
ग्रहणींहन्तिशोषंचसुवर्णरसपर्पटी ।
सद्योवलकरीशुक्रवर्द्धनोवन्हिदीपनी ॥
क्षयकासश्वासमेहशूलातीसारपाण्डुनुत् ।

शुद्ध पारा ८ तोले, सुवर्ण भस्म २ तोले, दोनो को खरल में डाल नीबू के रस से खरल करे। जब दोनो एक होजावे, तब गरम जल से धुली हुई गन्धक ८ तोले मिलावे, सबकी कजली कर लोहकी कडाही को घृतसे चपड उसमे कजली को रख कर बेर की लकडी की आंच से पिघलावे। और लोह की सलाई से चलाता जाय, जब तेलके सदृश पतली हो जाय तब केलेके पत्ते पर डाल देवे। और दूसरे पत्ते से ढक देवे, शीतल होने पर चूर्ण कर रख छोडे, एक रत्ती से बढावे सो एक मासे तक देवे,। मासे से अधिक मात्रा न देवे, त्रिकुटा चूर्ण और शहत के साथ इस पर्पटी को सेवन करने से संग्रहणी, शोषरोग, खई, खासी, श्वास, प्रमेह, शूल, अतिसार, और पाडुरोग, इन सब को दूर करे। शीघ्र बल करे, वीर्य्य को बढावे, और मन्दाग्नि को प्रबल करती है।

पंचामृतपर्पटी

अष्टौगन्धकतोलकंरसदललोहतदर्द्धंशुभ । लोहार्द्धंचवराभ्रकंसुविमलंताम्र तथाभ्रार्द्धिकम् ॥ पात्रेलोहमयेचमर्दनविधौचूर्णीकृतेचैकतो । दर्व्यांवादरवन्हिनाऽतिमृदुनापाकंविदित्वादले ॥ रम्भायालघुढालयेत्पटुरियपचामृतापर्पटी। ख्याताक्षौद्रघृतान्विताप्रतिदिनगुंजाद्वयंवृद्धित ॥ लोहैर्मर्दनयोगतः सुविमलभक्तक्रियालोहवत् । गुंजाष्टावथवा त्रिकंत्रिगुणितसप्ताहमेवभजेत् ॥ नानावर्णग्रहण्यामरुचिसमुदयेदुष्टदुर्नामकादौ । छर्दौदीर्घातिसारेज्वरभरकलितेरक्तपित्तेक्षयेपि॥ वृष्याणांवृष्यराजीवलिपलितहरानेत्ररोगैकहत्री । तुन्दंदीप्तस्थिराग्निपुनरपिनवकरोगिदेहंकरोति ॥

गन्धक ८ तोला, पारा ४ तोला, लोह भस्म २ तोला, अभ्रक १ तोला, ताम्र भस्म आधा तोला, इन पाचो द्रव्यो को लोहे के पात्र मे एकत्र कर खरल करे, पीछे इस कजली को लोहे की कलछी मे रखकर बेर की लकडी की मृदु अग्नि से पिघला कर केला के पत्ते पर ढाल देवे तो यह पंचामृत पर्पटी बने, इसकी मात्रा २ रत्ती की है, इस पर्पटी को लोहे के पात्र मे पीस शहत और घृत के साथ सेवन करनी चाहिये, दो रत्ती से ८ या १० रत्ता तक बढाना चाहिये, इस प्रकार एक सप्ताह पर्यंत सेवन करने से अनेक प्रकार की संग्रहणी, अरुचि, वमन, बहुत काल का

उत्पन्न हुआ अतिसार, श्वासोर, ज्वर, रक्तपित्त और सर्ड रोग इनको दूर करे, पृथ्व्य औषधियो की महाराणी अर्थात् सर्वोत्तम है, वली पलित और नेत्र रोगो की हरणकर्त्ता है, जठराग्नि को प्रबल करके रोगी की देह को फिर नवीन करती है।

विजयपर्पटी

गन्धकच्चूर्णितंकृत्वाभाव्यभृंगरसेनतु।
सप्तधावात्रिधावापिपश्चाच्छुष्कंविचूर्णयेत्॥
चूर्णयित्वायसेपात्रेकृत्वावन्हिगतंसुधीः।
द्रुतंभृंगरसेक्षिप्तंततउद्धृत्यशोषयेत्॥
तचगन्धपलचैकगन्धार्द्धंशुद्धपारदम्।
सूतार्द्धंभस्मरौप्यचतदर्द्धंस्वर्णभस्मक॥
तदर्द्धंमृतवैक्रान्तमौक्तिकंचविनिक्षिपेत्।
एकीकृत्यततःसर्वंकुर्य्यात्पर्पटिकाशुभाम्॥
लोहपात्रेसमरसमर्दितंकज्जलीकृतम्।
बदराङ्गारवन्हिस्थंलोहपात्रेद्रवीकृते॥
मयूरचन्द्रिकाकार लिङ्ग वायदिदृश्यते।
मृदौनसम्यग्भगस्यान्मधोभगश्चरूप्यवत्॥
खरेलघुर्भवेद्भगोरूक्षःसूक्ष्मोऽरुणच्छवि.।
मृदुमध्यौतथाखाद्यौखरस्त्याज्योविषोपम॥
ज्वरव्याधिशताकीर्णंविश्वदृष्ट्वापुराहर.।
चकारपर्पटीमेतायथानारायणोऽमृत॥
आदौशंकरमभ्यर्च्यद्विजातीन्प्रणिपत्यच।
प्रभातेभक्षयेदेनांप्राग्रक्तिद्वयसम्मिताम्॥
रक्तिकादिक्रमाद्वृद्धिभक्षान्नैवदशोपरि।
आरोग्यदर्शनयावत्तावद्ह्रासस्तत परम्॥
अजीर्णेभोजनंनैवपथ्यकालेव्यतिक्रम।
घृतसैन्धवधन्याकहिंगुजीरकनागरैः॥
शस्यतेव्यंजनंसिद्धं पित्तेस्वादम्लमाक्षिकम्।
कृष्णमत्स्येनदुग्धेनमासेनजांगलेनच॥
जांगलेपुशशच्छागोमत्स्येरोहितमद्गुरौ।
पटोलपत्र चतथाकृष्णवार्ताकुजालिका॥
सुस्विन्नपूगैस्ताम्बूलैरेलाकर्पूरसयुतै,।
क्षुधाकालेव्यतिक्रान्तेयदिवायुप्रकुप्यति॥
झिंझिनीतिशिरःशूलेविरेकेवमथौनथा।
तृष्णायांचाधिकेपित्तेनारिकेलाम्बुनिर्भयम्॥
नारिकेलपय.पेयद्विभक्षीरमेवच॥
स्वप्नेशुक्रच्युतौचैवचपक्वंकदलीदलम्।
वर्जनिम्बादिकशाकपाकाम्लंकांजिकसुराम्॥
कदलीफलपत्राग्नित्रपुपालाम्बूकर्कटी।
कूष्माण्डंकारवेल्लचव्यायामंजागरंनिशि॥
नपश्येन्नस्पृशेद्गच्छेत्स्त्रियजीवितुमिच्छति।
यद्यौषधेस्त्रियगच्छेत्कर्त्तव्यातुप्रतिक्रिया॥
दुर्वाराग्रहणींहन्तिदु साध्यांबहुवार्षिकीम्।
आमशूलमतीसारसामंचैवसुदारुणम्॥
अतीसारपडर्शांसियदमाणसपरिग्रहम्।
शोथचकामलापाण्डुप्लीहानंचजलोदरम्॥
पक्तिशूलंचाम्लपित्तप्रमेहान्विषमज्वरान्॥
वातपित्तकफोत्थाश्चज्वराहन्तिसुदारुणान्॥
जार्णोऽपिपर्पटींकुर्वन्वपुषानिर्मलःसुधीः।
जीवेद्वर्षशतश्रीमान्वलीपलितवर्जित.॥
प्रात.करोतिसततनियतंद्विगुंजायस्तासविन्द तितुलांकुशमायुवस्य। आयुश्चदीर्घमनघंवपुषः स्थिरत्वंहानिंवलीपलितयोरतुलबलंच॥

गंधक के छोटे २ टुकडे कर भागरे के रसकी सात या तीन भावना देकर धूप में सुखा कर चूर्ण करे, पीछे लोहे के पात्र में रख अग्नि मे गलाय साठ और भागरे के रस में डाल देवे, पीछे उस रस मे से गधक को निकाल सुखा लेवे इस प्रकार शोधी हुई गंधक ८ तोला, शुद्ध पारा ४ तोला, रूपे की भस्म २ तोला सोने की भस्म १ तोला, वैक्रान की भस्म आधा तोला, और मोती की भस्म ३ मासे, सबको एकत्र कर खरल करे, पीछे इस कजली को लोहे की कलछी मे रख बेर की लकड़ी के अगारो मे गलावे, जब कजलीकी कान्ति मोर की पूंछ की चन्द्रिका की-सी हो जावे तव पाक सिद्धि हुआ जाने, उस समय पर्पटी की विधि से इसको बना लेवे, कज्जलीका पाक तीन प्रकार का होता है, मृदु, मध्य और तीक्ष्ण, इनमे मृदु और मध्य पाक की पर्पटी

सेवन करनी चाहिए और खर पाक पर्पटी विष के समान होती है, इसी से इसको न खावे दो रत्ती से आरभ कर दश रत्ती तक मात्रा बढावे, दश रत्ती मे अधिक मात्रा वर्जित है, जब रोग नष्ट हो जावे तब क्रम से घटाता जाय, नित्य प्रात काल औषधि खावे, अजीर्ण मे भोजन और पथ्यकाल का व्यतिक्रम करना बुरा है, धनिया हींग, जीरा, सोठ, घृत और सैंधा निमक इनसे बने व्यजन सेवन करना चाहिये, पित्त की आधिक्यता मे खट्टी, मधुर द्रव्य और शहत सेवन करे, काली मछली दूध और जगली जीवो का मास पथ्य है,जगली जीवो मे भी शशेका और बकरी का मास तथा मछलियो में रोहू मछली और मुद्गर मछली उत्तम हैं, शाको मे पटोलपत्र, काले वैंगन, और तोरई, औटाई हुई सुपारी, इलायची और भीमसेनी कपूर मिश्रित तांबूल खाना हित है, आहार समय के व्यतिक्रम होने मे वायु कुपित होकर मस्तक में भिन भिन शब्द और शूल, दस्त और वमन को कराती है, अत्यन्त प्यास और पित्त की वृद्धि मे निर्भय होकर नारियल का जल पीने को देवे, जलो मे नारियल का जल और नित्य दो वार दूध पीना अच्छा है,यदि स्वप्न मे वीर्य पतन होवे तो दूध पावे, चपा, कदलीदल, नीम का शाक खट्टे पदार्थ, काजी, दारु, केला की गहर, पत्राम्र, खीरा, घीया, ककडी, पेठा, करेला दड कसरत करना, रात्रि मे जागना, इत्यादि बातें निषेध हैं, जीवनेच्छु पुरुष को स्त्री का देखना, गमन करना और स्पर्श करना वर्जित हैं, यदि आवश्यकता से स्त्री गमन करे तो उसका विधि पूर्वक प्रति क्रिया अर्थात् इलाज करे, इस पर्पटी के सेवन करने से दुर्निवार और बहुत काल की सग्रहणी, आमशूल, अतीसार, आम, छ प्रकार की ववासीर, खई, सूजन, कामला, पांडुरोग, प्लीह, जलोदर, अम्लपित्त, वातरक्त, प्रमेह, विषमज्वर, वातपित्त, कफ के रोग, घोर ज्वर, इन सबको नष्ट करे इसके सेवन से बुड्ढा मनुष्य भी दिव्य देह वाला हो जाय और वली पलित वर्जित सौ वर्ष जीवे दो रत्ती नित्य प्रातःकाल खाने से काम देव के तुल्य होवे दीर्घआयु स्थिर देह और बलिष्ट होवे।

तंत्रान्तरोक्तविजयपर्पटी

रसवज्रंहेमतारमौक्तिकताम्रमभ्रकम्।
सर्वतुल्येनगन्धेनकुर्याद्विजयपर्पटीम्॥
दुर्वारांग्रहणींहन्तिदुःसाध्यांबहुवार्षिकीम्।
आमशूलमतीसारंचिरोत्थमतिदारुणम्॥
प्रवाहिकाषडर्शांसिश्वयथुमारणंसपरिग्रहम्।
शोथचकामलापाडुप्लीहगुल्मजलोदरम्॥
पक्तिशूलमम्लपित्तवातरक्तंवमिभ्रमिम्।
अष्टादशविधंकुष्ठंप्रमेहान्विषमज्वरान्॥
पूर्वोक्तान्येचतेसर्वेरोगाःसयातिसक्षयम्।
नानारोगसमाकीर्णविश्वंदृष्ट्वापुराहरः॥
चकारपर्पटीमेतांयथानारायणःसुधाम्।

पारा, हीरा की भस्म, सुवर्ण की भस्म, मोती की भस्म, तावे की भस्म और अभ्रक की भस्म प्रत्येक एक २ भाग लेवे। और गन्धक सात भाग ले, सब को एकत्र कर कजली करे, और पूर्वोक्त रीति से पर्पटी बना लेवे इसके गुण पूर्वोक्त विजय पर्पटी के समान है।

अग्निकुमाररसः

रसगन्धविषंव्योषंटंकणंलोहभस्मकम्।
अजमोदाहिफेनचसर्वतुल्यमृताभ्रकम्॥
चित्रकस्यकषायेणमर्दयेद्यामसात्रकम्।
मरिचाभावटींखादेदजीर्णग्रहणींतथा॥
नाशयेन्नात्रसन्देहोगुह्यमेतच्चिकित्सितम्।

पारा, गन्धक, विष, त्रिकुटा, सुहागा, लोह भस्म, अजमोद, और अफीम सब को समान लेवे और सब की बराबर शुद्ध अभ्रक की भस्म, सब को मिलाय अभ्रक चित्रक के काढे से एक प्रहर खरल करे। और मिरच के समान गोलियां बनावे। एक गोली खाने से अजीर्ण और सग्रहणी रोग नाश होवे यह औषधि गोप्य है।

ग्रहणीशार्दूलवटिका

जातीफलदेवपुष्पमजाजीकुष्टटंकणम् ।
छिडंत्वगेलाधत्तूरफणिफेनसमसमम ॥
प्रसारणीरसेनैवसंमर्द्यावटिकाकृता ।
यथादोषानुपानेनसेविताग्रहणींहरेत् ॥
नानावर्णमतीसारंदारुणाचप्रवाहिकाम ।
नाम्नाग्रहणिशार्दूलवटिकाग्राहिणीपरम् ॥

जायफल, लौंग, जीरा, कूट, सुहागा, चिटनोन, दालचीनी, इलायची, धतूरे के बीज, और अफीम सब समान लेवे, सब को गन्ध प्रसारणी के रस से खरल कर दो २ रत्ती की गोलिया बनावे। अनुपान वेलगिरी और सोंठ का क्वाथ, आदि है। इसके सेवन करने से अनेक प्रकार की संग्रहणी, अतिसार, घोर प्रवाहिका, ये दूर होवे इस को ग्रहणी शार्दूल गुटका कहते हैं, यह रस ग्राही हैं।

ग्रहणीगजेन्द्रवटिका

रसगन्धकलोहानिशखटकणरामठम् ।
शटीतालीशमुस्तानिधान्याजीरकसैन्धवम् ॥
धातक्यातिविषाशुंठीगृहधूमोहरीतकी ।
भल्लातकंतेजपत्र जातीफललवगकम् ॥
त्वगेलावालुकविल्वंमेथीशक्राशनस्यच ।
रसैःसमवंवटिकारसवैद्येनकारिता ॥
गहनानन्दनाथेनभाषितेयंरसायने ।
ग्रहणीगजेन्द्रसञ्ज्ञेयंश्रीमतालोकरक्षणे ॥
ग्रहणींविविधाहन्तिज्वरातीसारनाशिनी ।
शूलगुल्माम्लपित्तांश्चकामलाचहलीमकम् ॥
बलवर्णाग्निजननीसेविताचचिरायुषी ।
कण्डुकुष्ठंविसर्पचगुदभ्रंशंकृमिजयेत् ॥
माषद्वयवटींखादेच्छागीदुग्धानुपानत ।
वयोग्निबलमावीक्ष्ययुक्त्यावात्रुटिवर्द्धनम् ॥

पारा, गन्धक, लोह भस्म, शख चूरा, सुहागा, हींग, कचूर, तालीस पत्र, नागरमोथा, धनिया, जीरा, सेंधानोन, धाय के फूल, अतीस, सोंठ, गृहधूम, हरड, भिलाये, तेजपात, जायफल, लौंग, दालचीनी, इलायची, नेत्रवाला, बेलगिरी, मेथी, ये सब बराबर लेवे सब का भाग के रस मे खरल कर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, यह गहनानन्दने रसायन प्रकरण मे कहा है। इसको ग्रहणी गजेन्द्र रस कहते हैं। इसका सेवन करने मे अनेक प्रकार की संग्रहणी, ज्वर, अतिसार, शूल, गोला, अम्लपित्त, कामला हलीमक, खुजली, कुष्ठ, विसर्प, गुदभ्रंश और कृमिरोग इनको दूर करे बल, वर्ण और अग्नि को बढावे। इसके सेवन से दीर्घ आयु होती है। बकरी के दूध के साथ १ रत्ती से दो माशे पर्य्यंत अवस्था अग्नि और बल देखकर देवे।

चंडसंग्रहगदैककपाटरसः

हिंगुलोत्थितमहेश्वरबीजपातयत्रविधिनाहरणीयम् । गन्धटंकणमृताभ्रतुल्यककोकिलाद्मथचायसखल्वे ॥ मर्दनीयमभिधारणयुक्तं धूमहीनदहनोपरिसस्थे । यावदेषजलशोषणदत्तोजीरकार्द्रकयुतेनसवल्लः ॥ संग्रहज्वरमतीसृतिगुल्मानर्शसाचविनिहन्तिसमूहं । वासुदेवकथितोरसराजश्चडसंग्रहगदेक कपाटः ॥

हींगलु का निकाला पारा, उसको पातना यत्र द्वारा शुद्ध करे। पीछे गन्धक, सुहागा, अभ्रक की भस्म, इन सब को बराबर लेकर लोहे के खरल मे डाल तालमखाने के रस को भावना देवे। परन्तु यह भावना तप्तखल्व मे देवे, जब रस सूख जावे तब इसका चूर्णकर रख छोडे दो रत्ती रस जीरे के चूर्ण और अदरक के साथ देवे तो सग्रहणी, ज्वर, अतिसार, गोला, बवासीर, इनको दूर करे यह वासुदेव आचार्य्य का कहा चडसग्रहगदैक कपाट रस कहाता है।

जातीफलाद्यावटी

जातीफलटंकणमभ्रकचधत्तूरबीजसमभागचूर्णं । भागद्वयाढ्यंफणिफेनयुक्तंगन्धालिकापत्ररसेनमर्द्यम् ॥ चणप्रमाणावटिकावि

धेयामधुप्रयुक्ताग्रहणीगदेषु । रोगेषुदद्यादनुपानभेदैर्युक्त्याविदध्यादतिसारवत्सु ॥ मामेषुरक्ते पुमशूलकेषुपक्वेष्वपक्वेषुगुदामयेषु । पथ्यसदध्योदनमत्रदेयंरसोत्तमोयंग्रहणी कपाटः ॥

जायफल १ तोला, सुहागा, १ तोला, अभ्रक १ तोला, धतूरे के बीज १ तोला, अफीम दो तोला ले । सब को एकत्र कर गन्ध प्रसारणी के पत्तों के रससे मर्दन करके चनेके समान गोलिया बनावे । सग्रहणी रोग मे शहद के साथ देवे और रोगो मे दोष को विचार अनुपान कल्पना करे । यह रस सग्रहणी को दूर करे पथ्य में दही भात देवे ।

ग्रहण्यारिरसः

शुद्धसूतसमगन्धसूताशमृतमभ्रकम् ।
मर्दयेन्मातुलुंगाम्लै शोष्यपेष्यंचसप्तधा ॥
त्र्यूषणंनीलिकामूलधत्तूरस्यचबीजकम् ।
एकैकसूततुल्यस्यात्मर्वताद्वजयाद्रवे ॥
श्वेतापराजिताकन्यामत्स्याक्षीकाकमाचिका
आर्द्रक.पर्पटोवन्हिःकदल्यातालुमूलका ॥
द्रवैर्दिनत्रयंभाव्यंमाषमात्र चभक्षयेत् ।
ग्रहण्यारिरसोनामअसाध्यंसाधयेत्ध्रुवम् ॥
द्विपलजीरकक्काथमनुपानप्रदापयेत् ।
श्वासज्वरामशूलास्रमतिसारंचिरतनम् ॥
अरुचिंराजयक्ष्माणमन्दाग्निचविनाशयेत् ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, पारे की बराबर अभ्रक की भस्म, लेकर सब को बिजौरे के रस मे सातवार खरल करे त्र्यूषण (सोंठ, मिरच, पीपल) नीलकाकी जड, धतूरे के बीज ये प्रत्येक पारे के समान लेवे, सब को भांग, सफेद कोयल, घीगुवार, मछेछी, मकोय, अदरक, पित्तपापडा, चीता, केला, और मूसली इनके रसकी पृथक् २ तीन दिन भावना देवे, पीछे एक २ माशे की गोलिया बनावे, १ गोली नित्य जीरे के काढे से खाय तो यह ग्रहण्यारिरस असाध्य सग्रहणी को, श्वासज्वर, आमशूल, रुधिर विकार, पुराना अतीसार, अरुचि, राजयक्ष्मा, और मन्दाग्नि को दूर करे ।

हिरण्यगर्भपोटलीरसः

एकांशोरसराजस्यग्राह्यौद्वौहाटकस्यच । मुक्ताफलस्यचत्वारोभागा.षट्दीर्घनिःस्वनात ॥ त्र्यंशबलेर्वराटधाश्चटंकनोरसपादिकः ।
पक्वनिम्बुकतोयेनसर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
मूषामध्येन्यसेत्कल्कतस्यवक्रनिरोधयेत् ।
गर्तेऽरत्निप्रमाणेनपुटेत्त्रिंशद्वनोपलै. ॥
सागशीतलताज्ञात्वारसमूषोदरान्नयेत् ।
ततःखल्वोदरेमद्यं सुधारूपसमुद्धरेत् ॥
एतस्यामृतरूपस्यदद्याद्गुंजाचतुष्टयम् ।
घृतमाध्वीकसंयुक्तमेकोनत्रिंशदूषणै ॥
मन्दाग्नौरोगसंघेचग्रहण्यांविषमज्वरे ।
गुदांकुरेमहाशूलेपीनसेश्वासकासयो. ॥
अतिसारेग्रहण्यांचश्वयथौपांडुकेगदे ।
सर्वेषुकोष्ठरोगेषुयकृत्प्लीहादिकेषुच ॥
वातपित्तकफोत्थेषुद्वन्द्वजेषुत्रिजेषुच ।
दद्यात्सर्वेषुरोगेषुश्रेष्ठमेतद्रसायनम् ॥

पारा १ तोला, सुवर्ण भस्म २ तोला, मोती की भस्म, ४ तोला, कासे की भस्म ६ तोला, गन्धक ३ तोला, कौडी की भस्म ३ तोला, सुहागा, २ माशे, इन सब वस्तुओ को एकत्र कर नीबू के रस से खरल करे । पीछे सुखा कर मूषा मे भरे, उस का मुख बन्द कर देवे पीछे एक बालिस्त का गड्ढा खोद तीस आरने उपलो के उस मूषा को अग्नि देवे, जब स्वाग शीतल हो जाय तब उस मूषामे से रस को निकाल लेवे, खरल मे चूर्ण कर किसी शीशी आदि पात्र मे भरकर रख देवे, इस अमृततुल्य रसकी मात्रा ४ रत्ती की है घृत, शहत और २९ काली मिरचो के साथ देवे तो मदाग्नि, संग्रहणी, विषमज्वर, बवासीर, महाशूल, पीनस, श्वास, खासी, अतिसार, सूजन, पाडुरोग सब उदर विकार, यकृत

और प्लीहके रोग, तथा वातकफ और पित्त से होने वाले, तथा द्वंद्वज और त्रिदोषज, सर्व रोगो को दूर करे, यह परमोत्तम रसायन है।

अर्कलोकेश्वररसः

शुद्धं मृतपलचार्कक्षीरैर्मर्द्यं पुनःपुनः।
द्विपलशुद्धगन्धंचमहाकम्बुपलाष्टकम् ॥
उभौवन्हिरसैर्भाव्यौशोष्योपेष्यौदिनत्रयं।
मेलयेत्पूर्वसूतेनतदर्द्धं टंकणंक्षिपेत ॥
अर्कक्षीरैःपुनःसर्वं यामैकंमर्दयेद्दृढम्।
तच्छुष्कचूर्णं लिप्तेथभाण्डेरुध्वापुटेपचेत् ॥
चतुर्गुंजामितंखादेन्मरिचाज्येनसंयुतम्।
देयदध्योदनपथ्यंविजयासगुडानिशि ॥
ग्रहणीदोषनाशार्थं नास्त्यनेनसमम्भुवि।
ग्रहणींनाशयेत्सर्वामर्कलोकेश्वरोरसः ॥

शुद्ध पारा ४ तोले, उस को आक के दूध मे खरल करे, पीछे शुद्ध गन्धक ८ तोले, और बड़े शख की भस्म ३२ तोले, दोनो को चीते के रस मे तीन दिन खरल करे, पश्चात् उस पूर्वोक्त पारे को इस चूर्ण में मिला देवे, और १ तोला सुहागा इस मे और मिलावे सब को मिला कर एक प्रहर आकके दूध से खरल करे, पीछे उस को एक हांडी के भीतर लेप कर सुखा लेवे, पीछे सपुट मे रख कर फूक देवे, जब शीतल हो जावे तब निकाल कर ४ रत्ती रस मिरच और मक्खन के साथ खाय, इस पर दही भात का पथ्य देवे, और रात्रि में गुड मिली हुई भाग पीनी चाहिये, सग्रहणी दोष के दूर करने को इस से बढ कर दूसरी औषधि पृथ्वी पर नहीं है, सब प्रकार की सग्रहणी को यह अर्कलोकेश्वर रस दूर करता है।

अग्निसूनुरसेन्द्रः

भागोदग्धकपर्दकस्यचतथाशंखस्यभागद्वयम्
भागोगन्धकसूतयोर्मिलितयो पिष्टामरीचादपि ॥ भागस्यत्रितयंनियोज्यसकलंनिम्बूरसेचूर्णितम्। नाम्नावन्हिसुतोरसोयमचिरान्मांद्यं जयेद्दारुणम् ॥ घृतेनखण्डात्सहभक्षितेनक्षीणान्नरान्हस्तिसमं करोति। समागधीचूर्णघृतेनलीढ्वानरःप्रमुच्येद्ग्रहणीविकारात् ॥ शोफज्वरारोचकशूलगुल्मान्पांडूदराशोग्रहणीविकारान्। तक्रानुपानाज्जयतिप्रमेहान्युक्त्याप्रयुक्तोग्निसूनोरसेन्द्र ॥

शख की भस्म १ भाग, कौडी की भस्म २ भाग, पारा १ भाग, गन्धक १ भाग, और काली मिरच ३ भाग, सब को एकत्र कर नींबू के रस से खरल करे तो यह वन्हिसूतरस शीघ्र मन्दाग्नि को दूर करे, घृत और खाड के साथ खाने से क्षीण मनुष्य को हाथी के समान बली करे, और मिरच के साथ खाने से सग्रहणी दूर होवे, शोथ, ज्वर, अरुचि, शूल, गोला, पाडु, उदर बवासीर, सग्रहणी, इनको दूर करे, छाछ के साथ खाने से प्रमेह रोग दूर होवे, इस अग्निसूनुरस को युक्ति के साथ सब रोगों में देना चाहिये।

अथशीघ्रप्रभावोरसः

पारदगन्धकव्योमतीक्ष्णंतालंमनःशिलां।
सौवीरमंजनशुद्धं विमलंचसमांशकम् ॥
एभिःकज्जलिकांकृत्वास्वल्पतैलेनभर्जयेत्।
अथिकंजीरकंचित्रं दीप्यकमुस्तकंविषं ॥
वालाम्रं वालविल्वंचमोचसारंसमांशकं।
विचूर्ण्यपूर्ववत्कल्कंतदर्द्धं नविनिक्षिपेत् ॥
पुनर्विमर्दयेद्यत्नादेकरूपंभवेद्यथा।
भावयेत्सप्तवाराणिपंचकोलकषायतः ॥
अरलुत्वग्रसेनापिदशवाराणिभावयेत्।
अनेनक्रमयोगेनरसोनिष्पद्यतेह्ययम् ॥
जगधोविश्वघनाम्बुनासहिरसःशीघ्रप्रभावाभिधो। निष्कार्द्धप्रमितोमहाग्रहणिकारोगेतिसारामये ॥ आध्मानेग्रहणीभवेऽरुचिहरो वातेचमन्दानले। मुक्तेवापिमलेपुनश्चलमलाशंकासुहिक्कासुच ॥

पारा, गन्धक, अभ्रक भस्म, हरताल भस्म, मनसिल, शुद्ध सुरमा, विमला की भस्म, इन सबको बराबर ले सबकी कजली कर थोडे तेल

से भूने। पीछे पीपला मूल, जीरा, चीता, अजमायन, नागरमोथा, गिंगिया विष, आम की गुठली, बेलगिरी, मोचरस, इन सबको समान लेकर उस कजली के अर्द्ध भाग मिलावे, पीछे सबको घोटकर एक रूप करे। पीछे पंचकोल के काढे को सात भावना देवे, और अरलू की छाल के काढे की दश भावना देवे, इस क्रम से यह रस बने इस शीघ्र प्रभाव रसको सोठ और नागरमोथा के काढे के साथ २ माशे सेवन करने से स्‍ग्रहणी, अतिसार, अफरा, अरुचि, वात, मन्दाग्नि, मल के मुक्त होने पर फिर मल निकलने की शंका, और हिचकी इन सब रोगों को दूर करे।

द्वितीयजातीफलाद्यावटी

विशुद्धसूतस्यचगन्धकस्यप्रत्येकमाषतुचतुष्टयंच। विधायशुद्धोपलपात्रमध्येसुकज्जलींवैद्यवरःप्रयत्नात्॥ जातीफलशाल्मलिवेष्टमुस्तसटङ्कणसातिविषसजीरम्। प्रत्येकमेषांमरिचस्यशाणप्रमाणमकेविषमाषकंच॥ विचूर्णयेत्सर्वाण्यवलोड्यपश्चाद्विभावयेत्पत्रभवैरमीषाम्। रसैरसोन्मानमितैरसालवशोच भद्रोत्कटकवटौच॥ इन्द्रालिकेन्द्राशनकसजम्बुजयान्तकादाडिमकेशराजौ। अविद्धकरणापिचभृंगराजौविभाव्यसम्यक्वटिकाविधेया॥ कोलास्थिमानाचबहुप्रकारंसामनिहन्त्यत्रयथानुपानम्। कुर्य्याद्विशेषादनलावलम्बकासचपचात्मकमम्लपित्तम्॥ हेयंनिहन्तिग्रहणींप्रवृद्धा मर्त्यस्यजीर्णग्रहणीमसाध्याम्॥ चिरोद्भवासग्रहकोष्टदुष्टिशोथस मग्रंगुदजानसाध्यान्। आमानुबद्धस्त्वतिसारमुग्रजयेद्भृशयोगशतैसाध्यम्॥ विवर्जनीयात्विहभृष्टमत्स्यामत्स्यःस्तथापाण्डुरवर्णाएवरम्भाफलमूलमथोदनचबुधैर्विधेयनकदाचिदत्र। जातीफलाद्यावटिकाविधेयोयशोर्थिनोवैद्यवरस्यहृद्या। अनेकसम्भावितमर्त्यलोकानानाविधव्याधिपयोधिनौका।

पारा ४ माशे, गन्धक ४ माशे, एकत्र मर्दन कर कजली करे। पीछे जायफल, मोचरस, नागरमोथा, सुहागा, अतीस, जीरा और मिरच प्रत्येक आधा आधा तोला लेवे। विष १ माशे इन सबको कजली में मिला कर चूर्ण करे। पीछे आम के पत्ते, बास के पत्ते, गन्धप्रसारिणी के पत्ते, जल चालाई के पत्ते, निर्गुण्डी के पत्ते, भाग के पत्ते, जामुन के पत्ते, अरनी के पत्ते, अनार के पत्ते, केशराज (भागरे का भेद) पाढ और भागरा इनके रस की भावना दे खरल कर बेर की गुठली के समान गोलियां बनावे। यह अनुपान के साथ अनेक रोग दूर करती है, अग्नि को प्रबल करे, खासी, अम्लपित्त असाध्य संग्रहणी, बहुत काल से प्रगट उदर की अशुद्धि, सूजन और गुदा के रोग और आमातिसार, इत्यादि सब रोग नष्ट होवें। इस औषधि सेवन करनेवाले को भुनी मछली, तथा पीले रंग की मछली, केला की गहर और कन्द आदि शाक और भात ये वर्जित हैं। यह जातिफल गुटिका यशोर्थी वैद्यो के मन का चुराने वाली है। अनेक रोग रूप समुद्र में डूबे हुए मनुष्य को यह गोली नौका रूप है।

पीयूषवल्लीरसः

सूतकगन्धकचाभ्र तरलोहसटङ्कणम्।
रसाञ्जनमाक्षिकचशाणमेकपृथक्पृथक्॥
लवगंचन्दनमुस्तपाठाजीरकधान्यकम्।
समगातिविषालोध्र कुटजेन्द्रयवत्वचम्॥
जातीफलविश्वनिम्बकनकदाडिमच्छदम्॥
समगाधातकीकुष्ट प्रत्येकरससम्मितम्।
भावयेत्सर्वमेकत्रकेशराजरसैःपुन।
चणकाभावटीकार्य्याछागीदुग्धेनपेषिता॥
अनुपानप्रदातव्यदग्धबिल्वसमंगुड।
अतिसारज्वरतीव्र रक्तातीसारमुल्वण॥
ग्रहणींचिरजाहन्तिशोथदुर्नामकंतथा।
आमशूलविबन्धंसग्रहग्रहणीहर॥
पिच्छामदोषविविधपिपासादाहरोगकम्।
हृल्लासारोचकच्छर्दिगुदभ्रंशसुदारुणम्॥

पक्वापक्वमतीसारनानावर्णसवेदनम् ।
कृष्णारुणंचपीतंचमांसधावनसन्निभम् ॥
प्लीहगुल्मोदरानाहंसूतिकारोगसंकरम् ।
असृग्दरनिहन्त्येवचवन्ध्यानागर्भदंपर ॥
कामलापाण्डुरोगंचप्रमेहानपिविंशतिम् ।
एतान्सर्वांन्निहन्त्याशुमासार्द्धेनात्रसंशयः ॥
पीयूषवल्लीवटिकाअश्विभ्यांनिर्मितंपुरा ।
कश्यपायददेऽश्विभ्यांततःप्राप्तप्रजापतिः ॥
धन्वंतरिस्ततःप्राप्तदेवतानांपतिस्ततः ।
परम्पराप्राप्तएषरसस्त्रैलोक्यदुर्लभः ॥

पारा, गंधक, अभ्रक, राप्य भस्म, लोह भस्म, सुहागा, रसौंत, सोनामक्खी, लौंग, लाल चन्दन, नागरमोथा, पाढ, जीरा, धनियां,अतीस लोध, कूडा की छाल, इन्द्रजौं, तज, जायफल, सोंठ, नीम की छाल, धतूरे के बीज, अनार का वक्कल, धाय के फूल, कूट, प्रत्येक आधा-आधा तोला लेवे। इन सबको एकत्र कर भागरे के रस से खरल करे,और बकरी के दूध से घोट कर चने के प्रमाण गोलियां बनावे। इस गोली को बेल का भुर्त्ता और गुड के साथ देवे, (परन्तु गुड और बेल का भुर्त्ता समान लेना चाहिये) इस रस के सेवन करने से अतीसार, ज्वर, रक्तातिसार, पुरानी संग्रहणी, सूजन, बवासीर,आमशूल, मलबंध, आमदोष, प्यास, दाह, हल्लास, अरुचि, वमन, गुदभ्रंश, पक्व अपक्व अतिसार, प्लीहरोग, गुल्म, उदर, अफरा, प्रसूत, असृग्दर, वंध्यारोग, कामला, पाडु, प्रमेह इन सब रोगो को एक पक्ष मात्र में दूर करे। यह पीयूषवल्ली रस प्रथम अश्विनी कुमार ने निर्माण कर कश्यप ऋषि को दिया, कश्यप ने दक्ष प्रजापति को दिया, दक्ष प्रजापति ने इन्द्र को और इन्द्र से धन्वतरि को प्राप्ति हुआ इस प्रकार यह रस त्रिलोकी में दुर्लभ परम्परा से इस पृथ्वी मे प्राप्त हुआ है।

नृपतिवल्लभोरसः

जातीफललवंगाब्दत्वगेलाटंकरामठम् ।
जीरकंतेजपत्रंचयवानीविश्वसैंधवम् ॥
लोहमभ्रंरसोगन्धस्ताम्रंप्रत्येकशःपलम् ।
मरिचंद्विपलंदत्वाछागीक्षीरेणपेषयेत् ॥
धात्रीरसेनवापिष्यवटिका कुरुयत्नतः ।
श्रीमद्गहननाथेर्नाविचिन्त्यपरिनिर्मितम् ॥
सूर्यवत्तेजसाचार्यंरसोनृपतिवल्लभ. ।
अष्टादशवटींखादेत्पवित्रःसूर्य्यदर्शकः ॥
हन्तिमन्दानलमर्वं मामदोपविशूचिकाम् ।
प्लीहगुल्मोदराष्ठीलायकृत्पाडुत्वकामलाम् ॥
हृच्छूलपृष्ठशूलंचपार्श्वशूलंतथैवच ।
कटिशूलकुक्षिशूलमानाहंहृद्ग्रहशूलकम् ॥
कासश्वासामवाताश्चश्लीपदंशोथमर्बुदम् ।
गलगण्डगण्डमालामम्लपित्तंचगर्दभीम् ॥
कृमिकुष्ठानिदद्रूणिवातरक्तंभगन्दरम् ।
उपदंशमतीसारंग्रहण्यर्शःप्रमेहकम् ॥
अश्मरीमूत्रकृच्छ्रंचमूत्राघातंसुदारुणम् ।
ज्वरजीर्णंतथापाण्डुतन्द्रालस्यंभ्रमक्लमम् ॥
दाहंचविद्रधिंहिक्काजडगद्गदमूकताम् ।
मूढचस्वरभेदंचब्रध्मवृद्धिविसर्पकान् ॥
ऊरुस्तम्भंरक्तपित्तंगुदभ्रंशारुचितृषाम् ।
कर्णनासामुखोत्थाश्चदंतरोगांश्चपीनसान् ॥
शैत्यंचशीतपित्तंचस्थावरादिविषाणिच ।
वातपित्तकफोत्थांश्चद्वंद्वजान्सन्निपातकान् ॥
सर्वानेवगदान्हन्तिचण्डांशुरिवपापहा ।
बलवर्णंकरोह्येषआयुष्योवीर्य्यवर्द्धन. ॥
परंवाजीकरःश्रेष्ठपटुदोमंत्रसिद्धिदः ।
अरोगीदीर्घजीवीस्याद्रोगीरोगाद्विमुच्यते ॥
रसस्यास्यप्रसादेनबुद्धिमान्जायतेनरः ।

जायफल, लौंग, नागरमोथा, तज, इलायची, सुहागा, हींग, जीरा, तेजपात, अजमायन, सोंठ, सैंधानोन, लोहभस्म अभ्रक, पारा, गंधक, और तांबे की भस्म, प्रत्येक एक २ पल लेवे। मिरच २ पल लेवे, इन अठारहो औषधियों को बकरी के दूध में अथवा आमले के रस में पीस आध २ माशे की गोलिया बनावे, इस औषधि के सेवन करने से मन्दाग्नि, संग्रहणी, शूल, खांसी, श्वास तथा सूजन आदि उक्त रोग सब नष्ट होवे। बलवर्णको चढावे, आयु वृद्धि

करे, वीर्य को पुष्ट करे, यह रस अत्यन्त वाजीकरण है, इसके सेवन से मनुष्य रोगरहित हो पूर्ण आयु को प्राप्त हो, यह गहननाथ सिद्ध का कहा हुआ नृपतिवल्लभरस है।

बृहन्नृपवल्लभोरसः

रसगन्धकलोहाभ्रं नागंचित्रं चमुस्तकं।
टङ्कजातीफलंहिंगुत्वगेलावन्हिवंगकम् ॥
तेजपत्रमजाजीचयवानीविश्वसैंधवान्।
प्रत्येकंतोलकंचूर्णंतथामरिचताम्रयोः ॥
निरुत्थतुमृतहेमंतथामाषचतुष्टयम्।
आर्द्रकस्यरसेनैवधात्र्याश्चस्वरसैस्तथा ॥
भावयित्त्वाप्रदातव्यंचणमात्रंभिषग्वरैः।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायपथ्यभक्षेद्यथोचितम् ॥
अग्निमांद्यमजीर्णंचदुर्नामग्रहणींजयेत्।
आमाजीर्णप्रशमनंसर्वरोगनिषूदनम् ॥
नाशयेदौदरान्रोगान्विष्णुचक्रमिवासुरान्।
ग्रथातरेऽस्यराजवल्लभसंज्ञा ॥

पारा, गंधक, लोह भस्म, अभ्रक, शीशे की भस्म, चीते की छाल, नागरमोथा, सुहागा, जायफल, हींग, दालचीनी, इलायची, चीते की जड़ की छाल, वंग भस्म, तेजपात, काला जीरा, अजमायन, सोंठ, सैंधानिमक काली मिरच, और तांबे की भस्म, प्रत्येक एक २ तोला लेवे। और सुवर्ण भस्म आधा तोला इन सब वस्तुओं को एकत्र कर अदरक के रस तथा आमले के रससे खरल करे और चने के प्रमाण गोलियां बनावे। प्रात काल एक गोली नित्य खाय और पथ्य से रहे तो मंदाग्नि, अजीर्ण, बवासीर, संग्रहणी, आमाजीर्ण इत्यादि सर्व रोग दूर होवे। इसको ग्रंथातरों में राजवल्लभ रस कहते हैं।

चित्राम्बररसः

शुद्धंसूतमृतचाभ्रं गन्धकमर्दयेत्समम् ॥
लोहपात्रेघृताभ्यक्तेयाममृद्वग्निनापचेत्।
चालयेल्लोहदंडेनअवतार्यविभावयेत् ॥
त्रिदिनंजीरककाथैर्माषैकंभक्षयेन्नरः।
रसश्चित्राम्बरोनामग्रहणींरक्तसंयुताम् ॥
शमयेदनुपानेनआमशूलप्रवाहिकाम्।

शुद्ध पारा, अभ्रक भस्म, गन्धक, सब समान लेकर घृत से लिप्त लोहपात्र में एक प्रहर मन्दाग्नि से पचावे। और लोह के मूसला से चलाता जाय पीछे उतार शीतल कर तीन दिन जीरे के काढे से खरल करे। एक २ माशे की गोलियां बनावे, १ गोली अनुपान के साथ खाने से यह चित्राम्बर रस रक्त मिली संग्रहणी, आम, शूल, और प्रवाहिका को दूर करे।

अभ्रवटिका

अथ शुद्धस्यसूतस्यगन्धकस्याभ्रकस्यच ॥
प्रत्येककर्षमानन्तुग्राह्य रसगुणैषिणा।
ततः कज्जलिकाकृत्त्वाव्योमचूर्णंप्रदापयेत् ॥
केशराजस्यभृंगस्यगुंड्याश्चित्रकस्यच।
ग्रीष्मसुन्दरकस्याथजयन्त्या स्वरसंतथा ॥
मण्डूकपर्ण्याःस्वरसतथाशक्राशनस्यच।
श्वेतापराजितायाश्चस्वरसपर्णसम्भवम् ॥
दापयेत्तत्रतुल्यंचविधिज्ञःकुशलोभिषक्।
रसतुल्यंप्रदातव्यंचूर्णंमरिचसम्भवम् ॥
शुभेशिलामयेपात्रेघर्षणीयप्रयत्नतः।
शुष्कमातपसयोगाद्वटिकांकारयेद्भिषक् ॥
कलायपरिमाणान्तुखादेत्तान्तुप्रयत्नतः।
दृष्ट्वावयश्चाग्निबलंयथाव्याध्यनुपानतः।
हन्तिकासक्षयंश्वासवातश्लेष्मभवंरुजम्।
परवाजीकरःश्रेष्ठोबलवर्णाग्निवर्द्धनः ॥
ज्वरेचैवातिसारेचसिद्धएषप्रयोगराट्।
नातःपरतरःश्रेष्ठोविद्यतेऽभ्ररसायनः ॥
चतुर्थकेज्वरेश्रेष्ठःसूतिकातकनाशनः।
भोजनेशयनेपानेनास्त्यत्रनियमःक्वचित् ॥
दधिचावश्यकंभक्ष्यंप्राहनागार्जुनोमुनि।

पारा २ तोले, गन्धक २ तोले, दोनो का कजली करे। पीछे अभ्रक २ तोले, काली मिरच का चूर्ण २ तोले, सुहागा १ तोले, सब कजली

मे मिलाय केशराज (कुकर भागरा) भागरा, निगुंडी, चित्रक, ग्रीष्म सुन्दर जिसको वगाला (गिमाशाक) कहते ह । अरनी, ब्राह्मी, भाग, सफेद कोयल के पत्ते, इन प्रत्येक के दो २ तोले रस की भावना पृथक् २ देवे । पत्थर के खरल मे घोट कुछ सुखाय मटर के समान गोलिया बनावे । अवस्था, अग्नि का बलाबल विचार इस औषध को देवे, तो खांसी क्षय, श्वास, तथा वात कफ के विकार, ज्वर, अतिसार, चातुर्थक-ज्वर, प्रसूत इत्यादि सब रोग नष्ट होवे । यह प्रयोग श्रेष्ठ है, इस प्रयोगराज से परे दूसरा नहीं है इसे अभ्ररसायन कहते हैं । इस औषधि पर भोजन का सोने का और पीने का कोइ नियम नहीं है । संग्रहणी रोग वाले को इस औषधि के ऊपर दही अवश्य खाना चाहिये, यह नागार्जुन ने कहा है ।

महाभ्रगुटिका

अभ्रकपुटितताम्रं लोहंगन्धकपारदम् ।
कुनटीटकनक्षारंत्रिफलाचपलपलम् ॥
गरलस्यतथामापचतुष्कचैवचूर्णयेत् ।
तत्सर्वंभावयेदेपारसैःप्रत्येकश.पलैः ॥
देवराजाशनाख्यस्यकेशराजाख्यकस्यच ।
सोमराजस्यभृंगाख्यराजस्यश्रीफलस्यच ॥
पारिकद्राग्निमंथस्यवृद्धदारस्यतुम्बरोः ।
मण्डूकपर्णीनिगुंडीपूतिकोन्मत्तकस्यच ॥
श्वेतापराजितायाश्चजयन्त्याश्चार्द्रकस्यच ।
ग्रीष्मसुन्दरकस्याढरुकस्यरसेनच ॥
रसैस्ताम्बूलवल्याश्चपत्रोत्थैर्भावयेत्पृथक् ।
द्रवेकिंचित्स्थितेचूर्णं मरिचस्यपलंक्षिपेत् ॥
ततःश्चैववटींकुर्यान्मात्रांदद्याद्यथोचिताम् ।
ज्वरेचैवातिसारेचकासेश्वासेक्षयेतथा ॥
सन्निपातज्वरैचैवविविधेविपमज्वरे ।
क्षयरोगेपुसर्वेपुक्षीणशुक्रेचयत्नमणि ॥
ग्रहण्यांचरभूतायासूतिव ायांविशेपत. ।
शोथेशूलेतथामध्येस्थविरेचामवातके ॥
मन्दानलेऽम्लेचैवमकलेश्लेष्मजेगदे ।
पीनसेऽपीनसेचैवपक्केऽपक्केविशेपतः ॥
वातश्लेष्मणिवातेवाविविधेचेन्द्रियस्थिते ।
वातवृद्धेवृतेपित्तेबलासेनावृतेऽपिच ॥
अष्टासूदररोगेपुकुष्टरोगेप्रशस्यते ।
अजीर्णेकर्णरोगेचकृशेस्थूलेचयत्नमणि ॥
अयसर्वगदेष्वेवरसोवैपरिकीतितः ।
महाभ्रवटिकासेयपरश्रेष्ठोरसायनः ॥

अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, लोहभस्म, गन्धक, पारा, मनसिल, सुहागा, जवाखार, त्रिफला, ये सब प्रत्येक ८ तोला लेवे । विष आधा तोला, सब को एकत्र कर उक्त रसो से खरल करे । भाग के पत्ते केशराज, सोमराज, सोमवल्ली) भागरा, बेलपत्र, नीम के पत्ते, अरनी, विधायरा तुंबरू ब्राह्मी, निगुंडी चौलाई, धतूरा, सफेद कोयल, जयती (अरनी का भेद) अदरक, ग्रीष्म-सुन्दर अड़ूसा, और नागरवेल के पत्ते इन सब क आठ २ तोला रस मे पृथक २ खरल करे । जब कुछ रस का अश बाकी रहे तब आठ तोला मिरच का चूर्ण मिलावे । एक रत्ती के प्रमाण गोलिया बनावे । इस का सेवन करने से संग्रहणी, अतीसार, प्रसूति का, आदिरोग सब नष्ट होवें । यह महाभ्र गुटिका परमोत्तम, रसायन है ।

महागंधकम्

रसगन्धकयो.कर्षंग्राह्यमेकसुशोधितम् ॥
तत.कज्जलिकांकृत्वामृदुपाकेनसाधयेत् ।
जात्याःफलतथाकोषोलवगारिष्टपत्रके ॥
एतेषांकर्षमात्रंणतोर्यनसहमर्दयेत् ।
मुक्तागृहेपुनःस्थाप्यंपुटपाकेनसाधयेत् ॥
गुंजापट्कप्रमाणेनप्रत्यहभक्षयेन्नरः ।
एतत्प्रोक्त कुमाराणारक्षणायमहौपधम् ॥
ज्वरघ्न दीपनचबलवर्णप्रसाधनम् ।
दुर्वारंग्रहणीरोगजयत्येवप्रवाहिकाम् ॥
सूतिकाचजयेदेतदपिवैद्यविवर्जिताम् ।
कासश्वासातिसारघ्नंवाजीकरणमुत्तमम् ॥

वालरोगंनिहंत्याशुसर्वोपद्रवसंयुतम् ।
पिशाचादानवादैत्यावालानायेविघातका
मन्त्रौषधवरस्तिष्ठेत्तत्रसीमात्यजतिते ।
वालानागदयुक्तानांस्त्रीणांचापिविशेषतः ॥
महागन्धकमेतद्धिसर्वव्याधिनिषूदनम् ।

पारा २ तोले, गन्धक २ तोले, दोनों की कजली कर इस कजली में थोडा जल डाल कीच के समान कर लोहपात्र में कुछ गरम करे। पीछे जायफल, जावित्री, लौंग, और नीम के पत्ते प्रत्येक दो २ तोला लेकर चूर्ण कर पूर्वोक्त कजली में मिला देवे। सब को घोट पीछे इन सब औषधियो को एक सीप में भरे, दूसरी सीप से ढक केला के पत्ते से लपेट देवे, ऊपर से कपरमिट्टी कर मदाग्निसे पुटपाक करे, जब कुछ लालवर्ण हो जावे तब अग्नि से उतार लेवे, उस को खरल में डाल कर घोटे। इसमें से छ रत्ती रस अनुपान के साथ देवे तो इस औषधि के खाने से संग्रहणी, अतिसार, और प्रसूत के रोग और ज्वरादि सब रोग दूर होवे। यह बालको की रक्षा के अर्थ महा औषधि कही है, यह महागन्धक सर्व रोग नाशकहै। विशेषकरके बालको के उदर रोग आदि को अत्यन्त उपकारी है।

श्रीवैद्यनाथवटिका.

रसस्यशाणसंग्राह्यंकाजिकेनतुशोधयेत् ।
चित्रकस्यरसेनापित्रिफलायाश्चबुद्धिमान् ॥
रसार्द्धं गंधकशुद्ध भृगराजरसेनवा ।
द्वाभ्यांसमूर्च्छनकृत्वास्वरसैः शाणसंमितैः ॥
खल्लयेत्तुशिलाखल्ले क्रमशोवक्ष्यमाणजैः ।
निर्गुंडीमडुकीश्वेताकुचेलाग्रीष्मसुन्दरैः ॥
भृंगाह्वकेशराजैश्चजयेन्द्राशनकोरकटः ।
सर्षपाभावटीकृत्वादद्यातांग्रहणीगदे ॥
सामवाहेग्निमांद्ये चज्वरप्लीहोदरेपुच ।
वातश्लेष्मविकारेपुतथाश्लेष्मगदेपुच ॥
दधिमस्तुविनिक्षिप्यमर्दयित्वायथाबलम् ।
दातव्यगुडिकाःसप्तरोगिणेग्रहणीगदे ॥
अम्बुनक्राणिसेवास्तुकुर्वीतस्वेच्छयाबहु ।
श्रीमतोवैद्यनाथेनलोकानुग्रहकारिणा ॥
स्वप्नान्तेब्राह्मणस्येयभाषितालिखितेनतु ।

आधा तोला पारा ले काजी में और चीतेके रस में और त्रिफला के काढेमे शोधन करे। पीछे भागरे के रस में शुद्ध की हुई गंधक २ माशे मिला कर कजली करे। पीछे निर्गुंडी, मडूकपर्णी (ब्राह्मी) सफेद कोयल, पाढ, भागरा, केशराज, जयंती (अरनी) भाँग के पत्र और दालचीनी इन के रस मे खरल कर सरसों के बराबर गोलिया बनावे। संग्रहणीवाले मनुष्यको एक बार सात गोली की मात्रा देवे, पथ्य दही, छाछ, भात देवे इस मे यथेच्छ छाछ पीवे, यह गोली श्रीवैद्यनाथ की कही हुई है।

खसर्पणवटी।

पक्वेष्टकाहरिद्राभ्यामगारधूमकेनच ।
शोधितपारदचैवकर्षार्द्धं तुलयाघृतम् ॥
भृंगराजरसैःशुद्ध गन्धकरससमितम् ।
द्वाभ्यांकज्जलिकाकृत्वाभावयेत्तत्तुभेषजैः ॥
सिंधुवारदलरसेरसेमडूकपर्णिकाम् ।
केशराजरसेचापिग्रीष्मसुन्दरजेरसे ॥
रसेऽपराजितायाश्चसोमराजीरसेतथा ।
रक्तचित्रकपत्रोत्थेरसेचपरिभावितम् ॥
रसमानसमानेनछायायाशोषयेद्भिषक ।
सर्षपाभाश्चगुटिकाःकारयेत्कुशलोभिषक् ॥
ततःसप्तवटींदद्याद्दधिमस्तुसमाप्लुताः ।
नित्यदःनाचभोक्तव्यकोष्ठदुष्टिनिवृत्तये ॥
ग्रहणीमतिसारचज्वरदोषंचनाशयेत् ।
अग्निदार्ढ्यकरश्रेष्ठमामपर्पटिकाह्वयम् ॥

इट का कूकुआ, हलदी का चूर्ण, और घर के धुँए से शोधा हुआ पारा, १ तोला, तथा भागरे के रस में शुद्ध की हुइ गन्धक १ तोला, दोनो को एकत्र कर कजली करे। पीछे निर्गुंडी, मडूकपर्णी (ब्राह्मी) कुकरभागरा, ग्रीष्मसुन्दर, कोयल, सोमराज, लाल चित्रक के पत्ते,

इन प्रत्येक का दो २ तोले रस लेकर खरल कर सरसो के समान गोलिया बनावे । दही के मट्ठे के साथ सात गोली सेवन करनी चाहिये । और नित्य दही खावें तो इस रस से संग्रहणी, अति- और ज्वर दूर होवे अग्नि को प्रज्वलित करे ।

ग्रहणिकामदवारणसिंहः

सूरभिपारदहिंगुलचित्रकान्गगनभ्रष्टसुटकणजातिकान् । कनकबीजमथाऽतिविषाकटुत्रयहरीतकिभस्मसुदीप्यकान् ॥ गरलबिल्वकलिंगकपित्थकान्नलदूमोचकदाडिमधातकी । जलदशाल्मलिपिच्छयुतान्समान् ३ नकसाम्यहिफेनमिदंदृढम् ॥ कनकपत्ररसैःपरिमर्दयेन्मरिचमानेवटीमधुसयुता । विनिहरेद्ग्रहणीगदमुत्कटज्वरयुतामसतींचविशूचिकाम् ॥ अग्निमांद्यमथशूलविबन्धगुल्मशूलमथपाण्डुममदम् । सरुधिराममतीवसमुत्कट- ग्रहणिकामदवारणसिंहः ॥

शुद्ध पारा, हिंगुल, चीता, अभ्रकभस्म भुना सुहागा, धतूरे के बीज, अतीस, सोंठ, मिरच, पीपल, छोटी हरड, उपले की राख, अजवायन, विष, बेलगिरी, इन्द्रजौ, कैथ, नेत्र वाला, मोच- रस, अनार की छ ल, धाय के फूल, नागरमोथा, सेमल का मूसला, धतूरे के बीजो की बराबर अफीम इन सब को बराबर ले, धतूरे के पत्तो के रस मे खरल कर मिरच के समान गोलिया बनावे । एक गोली शहत के साथ देने से, ज्वर- युक्त सग्रहणी, दुष्ट विशूचिका, मन्दाग्नि, शूल, गोला, पाडुरोग, तथा रक्तस्राव युक्त आम इन रोगों का नाश करे । इसको ग्रहणिकामदवारण- सिंह रस कहते हैं ।

अगस्तिसूतराजरसः

रसवलिसमभागंतुल्यहिंगूलयुक्तम् ।
द्विगुणकनकबीजनागफेनेनतुल्यम् ॥
सकलविहितचूर्णंभावयेद्भृंगनीरैः ।
ग्रहणिजलधिशोपेसूतराजोह्यगस्तिः ॥
त्रिकटुकमधुयुक्तोसर्ववांतिचशूलं ।
कफपवनविकारंवन्हिमांद्यंचनिद्राम् ॥
घृतमरिचयुतोऽयंगुंजमात्रःप्रवाहिं ।
हरतिषडतिसारान्जीरजातीफलेन ॥

पारा, गन्धक और हींगलू प्रत्येक एक २ तोला लेवे । धतूरे के बीज और अफीम दो तोला लेवे, सब को एकत्र कर भांगरेके रस की भावना देवे, यह अगस्ति सूतराज, सोंठ, मिरच, पीपल और शहत के साथ एक रत्ती खाने को देवे । इस से वमन, शूल, कफ, वात के विकार, मंदाग्नि और घोर निन्द्रा को दूर करे । घृत और मिरच के चूर्ण के साथ देवे तो प्रवाहिका दूर होवे । तथा छः प्रकार के अतिसार मे जीरा और जायफल इन के चूर्ण से देवे ।

क्षारताम्ररसः

शंखक्षारार्कभूतिंचवराटंलोहभस्मकं ।
अयोमलयवक्षारटंकणक्षारमेवच ॥
त्रिकटुसैन्धवतुल्यभृंगतोयेनमर्दयेत् ।
आटरूषरसैर्मद्यमार्द्रकस्वरसेनच ॥
चणमात्रावटींकृत्वारसोयंक्षारताम्रकः ।
श्वासेकासेप्रतिश्यायेपुराणज्वरपीडिते ॥
मन्दाग्नौग्रहणीदोषेत्वनुपानयथोचितम् ।
सेवयेत्सप्तरात्रेणनाशयेन्नात्रसंशय ॥
चिरकालानुबन्धेचसेवयेन्मण्डलावधि ।
तत्तद्व्याधिविहितपथ्यंनियमेनसमाचरेत् ॥

शंख की भस्म, जवाखार, तावे की भस्म, कौडी की भस्म लोह भस्म, मंडूर, जवाखार, सुहागा, सोंठ, मिरच, पीपल, और सैंधानोन, इन सबको समान भाग लेकर भागरे के रस मे, अडूसे के रस मे, और अदरक के रसमे, पृथक् २ खरल कर चनेके समान गोलियो बनावे यह क्षार ताम्र रस, श्वास, खासी, पीनस पुराना ज्वर, मंदाग्नि और सग्रहणी दोष इनमे यथोक्त अनुपान के साथ देवे तो सात दिनमे सबरोग दूर होवे । और बहुत पुराने रोग में एक मडलपर्यंत देवे ।

तथा व्याधि के अनुसार इसमे पथ्य देवे।

पूर्णचन्द्ररसः

सूतंगन्धंचाश्वगन्धागुडूचीयष्टीतोयैर्मर्दयेदेकघस्रम्। क्षुद्रंशंखमौक्तिकलोहकिट्टं भस्मीभूतं सूततुल्यंतुदद्यात ॥ भूकुष्माण्डैस्तावदेवंविमर्द्य गोलंकृत्वाभूधरेतंपुटेच्च। चूर्णंकृत्वानागवल्लीरसेन दद्यादेतंमर्दयित्यैकयामम ॥ मध्वाज्याभ्यांपूर्णचन्द्रोरसेन्द्र.। पुष्टिंवीर्यं दीपनंचैवकुर्यात् ॥ प्रायोयोज्य.पित्तरोगेग्रहण्यामर्शोरोगेपित्तजेवोलयुक्तम्। स्त्रीणातापेशाल्मलीनीरयुक्तम् ॥ योज्यचाज्यवाशताह्वाविपक्वम्।

पारा, गन्धक, इनको असगध, गिलोय, और मुलहटी, इनके काढे मे एक दिन घोटे। पीछे छोटे शंख, मोती और मडूर इनकी भस्म पारे के समान डालकर भूकुहडा के रस मे एक दिन घोट गोला बनावे। उसको भूधर यन्त्र मे पचावे। जब शीतल हो जावे तब उसमे से निकाल चूर्ण कर पान के रस से १ प्रहर खरल कर गोलिया बना लेवे, इस पूर्ण चन्द्ररसेन्द्र को शहत घृत के साथ देने से पुष्टि करे, वीर्य्य बढावे, अग्नि को दीप्त करे, यह रस प्राय पित्त रोगमे पित्त की सग्रहणी में खूनी बवासीर मे छाछ के साथ देना चाहिये। स्त्रियो के सताप मे सेमर के रस के साथ देवे। अथवा घृत और शतावर के रस के साथ देवे।

सूतराज

रसगन्धाभ्रकाणांचभागानेकद्विकाष्टकान्।
संचूर्ण्यसर्वरोगेषुयु ञ्ज्याद्वल्लचतुष्टयम् ॥
ग्रहणीक्षयगुल्मार्शोमेहधातुगतज्वरान्।
निहन्तिसूतराजोयमण्डलस्यचसेवनात् ॥

पारा १ भाग, गन्धक २ भाग, अभ्रक ८ भाग, इस प्रमाण लेकर पीस डाले। इसमे से ८ रत्ती सब रोग मे देवे इससे सग्रहणी, खाई, गोला, बवासीर, प्रमेह और धातुगत ज्वर इन को यह सूतराज एक मडल सेवन करने से दूर करे।

सूतादिवटी

सूतकंगन्धकंलोहविषंचित्रकपत्रकम्।
विडंगंरेणूकामुस्तमेलाग्रन्थिककेशरम् ॥
फलत्रिकंत्रिकटुकशुल्वभस्मतथैवच।
एतानिसमभागानिदीयतेद्विगुणोगुडः ॥
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे।
लूतायाग्रहणीमाद्ये शूलेपार्श्वामयेतथा ॥
हस्तपादादिरोगेषुगुटिकेयप्रशस्यते।

पारा, गन्धक लोह भस्म, विष, चीते की छाल, पत्रज,वायविडंग, पित्तपापडा, नागरमोथा इलायची, पीपलामूल, नागकेशर, त्रिफला, त्रिकुटा, और तांबे की भस्म ये सब समान लेवे और गुड २ भाग लेवे, सब को मिलाकर गोलिया बनावे। यह रस खांसी, श्वास, खई, गोला, प्रमेह विषमज्वर, लूता सग्रहणी, मन्दाग्नि, शूल पाशुओ का रोग, और हाथ पैरो के रोग इन सब को यह गोली दूर करे।

पारदादिवटी

पारदंगन्धकतारममृतचानुशुल्वकम्।
त्रिफलात्रिसुगन्धचचित्रकोशीररेणुका ॥
रजनीद्वयसंयुक्त सम्पेष्यवटकीकृतम।
ग्रहण्यष्टविधशूलशोथातीसारनाशनम् ॥

पारा, गन्धक, रूपे की भस्म, विष, तावे की भस्म, त्रिफला, त्रिसुगन्ध (तज, पत्रज, इलायची) चीते की छाल, नेत्रवाला, पित्तपापडा, हलदी, दारु हलदी, इन सबको एकत्र घोटकर गोलिया बनावे। यह पारदादि गोली संग्रहणी, आठ प्रकार का शूल, सूजन, और अतिसार को दूर करे।

वराटादियोग

दग्ध्वावराटकानपीतान्त्र्यूषणटकणविषं।
गन्धकशुद्धसूतचसमजम्बीरजैर्द्रवै ॥

मर्दयेद्द्वयेन्मापंमरीचाज्यलिहेदनु ।
निहन्तिग्रहणीरोगान्पथ्यतक्रौदनहितम् ॥

पीली कौडी की भस्म, सोंठ, मिरच, पीपल सुहागा, विष, गन्धक, और शुद्ध पारा इन सब को समान लेवे सबको जंबीरी के रस में घोटकर १–१ माशे की गोलिया बनावे, १ गोली मिरच के चूर्ण और घृत के साथ लेवे तो संग्रहणी दूर होय । इसके ऊपर छाछ और भात खाना पथ्य है ।

ज्वालालिंगरसः

शुद्धसूतंमृतस्वर्णमरिचंतुत्थकंसमम् ।
ज्वालामुख्याग्निजैर्द्रावैर्जलमन्दविपाचयेत् ॥
दिनैकमर्दयेत्खल्वेगुंजामात्र चभक्षयेत् ।
ज्वालालिंगरसोनामत्रिदोपेयोजयेत्सदा ॥
कर्षैकवन्हिमूलन्तुतक्रेपिष्ट्वापिवेदनु ।
तक्रारिष्टयुतंपथ्यशाल्यन्नंभक्षयेत्सदा ।

शुद्ध पारा, सोने की भस्म, काली मिरच, नीलाथोथा, सब समान लेवे । सब को ज्वाला मुखी, और चीते के रस मे मंदाग्नि से एक दिन पचावे और इन्हीं दोनों औषधियो के रस से खरल करे, पीछे एक एक रत्ती की गोलिया बनावे । इस ज्वालालिंग रस से त्रिदोष की संग्रहणी दूर होवे । इस रस के उपर एक तोले चित्रक की जड को पीस कर पीवे, तथा छाछ, मद्य, और भात खाना पथ्य है ।

हंसपोटलीरसः

निष्कैकमर्दितंसूतंद्विनिष्कमृततीक्ष्णकम् ।
शिखितुत्थतीक्ष्णतुल्यकर्पार्द्धगन्धमौक्तिकम् ।
विपनिष्कचतत्सर्वंभृंगाद्रासुरसारसै. ।
अग्निपर्णीहरिद्राचलागलीकंदजैर्द्रवैः ॥
मरिचैर्मधुनालेह्यमापैकहंसपोटली ।
हन्तिसंग्रहणींचैवअतिसारंचपाण्डुता ॥
दौर्बल्यगुल्मश्वासचकासहिक्कामरोचकम् ॥
क्षौद्रेणविजयानिष्कंलेहयेदनुपानकम् ।

पारा ३ माशे, लोह भस्म ६ माशे, मोचरस ६ माशे, गधक ६ माशे, मोती की भस्म ६ माशे, और विष २ माशे । सब को एकत्र कर भागरा, अदरक, तुलसी, अग्निपर्णी, हलदी और कलियारी इनके रस मे खरल करके एक एक माशे की गोलिया बनावे, १ गोली मिरच के चूर्ण और शहत के साथ खावे, तो यह हंसपोटली रस संग्रहणी, अतिसार, पाण्डुरोग, दुर्बलता, गोला, श्वास, खासी, हिचकी और अरुचि इनको दूर करे । इसके ऊपर शहत में मिला कर ३ माशे भाग का चूर्ण चाटे ।

राजावर्तरसः

मृतसूतमृतशुल्बयष्टीकराजवर्त्तकम् ।
तुल्यांशमर्दयेदाज्येक्षणमृद्वग्निनापचेत् ॥
सितामध्वाज्यसहितंनिष्कार्द्धंभक्षयेत्सदा ।
राजावर्तरसोनामग्रहणीरोगनाशनः ॥

चन्द्रोदय, ताम्र भस्म, मुलहठी, और राजावर्त्त, (सुवर्ण वर्ण की मणि) की भस्म, ये सब बराबर लेकर घृत मे खरल कर कुछ थोडी देर पचावे । मदाग्नि से तदनन्तर उतार लेवे । इसमे से डेढ़ माशे शहत, मिश्री और मक्खन के साथ खाय, तो यह राजावर्त्त रस संग्रहणी को दूर करे ।

चन्द्रप्रभावटी

मृतसूतमृतंस्वर्णमृतताम्रं समंसमम् ।
तुल्यंचखादिरंसारंतथामोचरसंक्षिपेत् ॥
द्रवैःशाल्मलिमूलोत्थैर्मर्दयेत्प्रहरद्वयम् ।
चणमात्रावटींभक्षयेन्त्रिष्कैर्जीरकैःसह ॥
त्रिदोषोत्थमतीसारंसत्वरंनाशयेद्ध्रुवम् ।

चन्द्रोदय, सुवर्ण भस्म, तावे की भस्म, सब बराबर ले सब की बराबर खैरसार, और मोचरस डाले । सब को खरल कर सेमल के मूसल के रस सें दो प्रहर खरल करे । पीछे चने के प्रमाण गोलिया बनावे. १ गोली ३ माशे, जीरे के साथ खाय तो तत्काल त्रिदोष जन्य

अतिसार और संग्रहणी दूर होवे।

हिंगुलेश्वररसः

तोलकैकंसमादायशुद्धं हिंगुलगंधयोः।
माषद्वयजीर्णताम्रं सर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
शिलायांशिलयायामशाल्मलीसत्वभावितम्
गु जाद्वयवटींकुर्य्यात्प्रयत्नेनभिषग्वरः ॥
संमर्द्यमधुनाखादेदतिसारनिपीडितः।
ग्रहणीरोगसयुक्तःसंग्रहग्रहणीयुतः ॥
प्रवाहिकाक्रांततनुरग्निमांद्यादिकजयेत्।
धान्यकंजीरकक्काथमनुपानंप्रयोजयेत् ॥
हिंगुलेश्वरनामोयरस.सर्वगदापह.।

शुद्ध हींगलू १ तोला, गन्धक १ तोला पुरानी तावे की भस्म २ माशे, सबको एकत्र करके सेमल के रस से खरल करे। दो दो रत्ती की गोलियां बनावे। एक गोली को अतिसार वाला मनुष्य शहत के साथ खाय इससे सग्रहणी, प्रवाहिका, मदाग्नि, आदि रोग दूर होवे इस गोली को खाकर ऊपर धनिये और जीरे का काढा पीवे। यह हिंगुलेश्वर रस सर्व रोग नाशक हैं।

लघुसिद्धाभ्रक

समाशरसगन्धाभ्रदरदंचविशोधितम्।
लोहखल्वेविनिक्षिप्यगवाज्येनसमन्वितम ॥
मर्दकेनापिलोहेनमर्दयेद्दिवसद्वयम्।
द्रोणीचुल्यान्यसेत्खल्वसागारायप्रयत्नत. ॥
इतिसिद्धोरसेन्द्रोयलघुसिद्धाभ्रकोमतः।
वल्लतुल्योरसोजीरवारिणासहितःप्रगे ॥
पीतोहरतिवेगेनग्रहणीमतिदुर्धराम्।
अतिसारमहाघोरसातिसारज्वरतथा ॥
पाचनोदीपनोहृद्योगात्रलाघवकारक.।
नागार्ज्जुनेनकथितःसद्य प्रत्ययकारकः ॥

पारा १ तोला, गन्धक १ तोला, अभ्रक १ तोला, शुद्ध हींगलू १ तोला, सब को एकत्र कर लोहे के खरल में गौ के घृत के साथ दो दिन लोहे के मूसले से खरल करे। पीछे द्रोणी के आकार बने हुए चूल्हे पर चढा कर नीचे मन्दाग्नि से इस रस को सिद्ध करे। यह लघु-सिद्धाभ्रक दो रत्ती जीरे के जल के साथ प्रात काल देवे. तो घोर सग्रहणी, अतिसार, ज्वरातिसार, इनको दूर करे। पाचन और दीपन है। हृदय को हितकारी और देह को लाघव करता है। यह नागार्ज्जुन का कहा सद्य पर्चा दिखाने वाला है।

सर्वारोग्यवटी

रसपलमितंतुल्यशुद्धनागेनसयुतम्।
द्रावयित्वायसेपात्रे सतैलेनिक्षिपेत्क्षितौ ॥
ततोघृतंविनिक्षिप्यगधकतद्विलोड्यच।
पुनरायसपात्रे तुक्षिप्त्वाप्रद्राव्यनिक्षिपेत् ॥
तत्तुल्यजारयेत्तालपुनःसंचूर्ण्यपूर्ववत्।
तत्तुल्याजारयेत्सम्यक्कुनटींपरिशोधिताम्।
तत्तुल्यंचूर्णितेतस्मिन्क्षिपेन्नागनिरुत्थकम्।
तावदेवमृतताप्यंसर्वमन्यच्चतत्समम् ॥
तीक्ष्णाय खर्परेव्योमहिंगुलचशिलाजतु।
पृथक्कर्षासमानेनषट्कोलषट्पलमिशी ॥
दीप्यकचचतुर्जातरेणुकोशीरवेल्लकम्।
तुम्बुरुभार्डिकारास्नाककोलचोरपुष्करम् ॥
रिंगणीचिरतिक्तं चबीजान्युन्मत्तकस्यच।
पलद्वयचलागल्याःसर्वेषाद्वादशाशकम् ॥
वत्सनाभसितम्भूरिविनिक्षिप्यतत परम्।
त्रिफलानादशाधाराणाकशायेणतत.परम् ॥
जयन्त्यादेकवासानामार्कवस्वरसैस्तथा।
भावयित्वाचकर्त्तव्यावटिकाश्चणकोन्मिता॥
एककावटिकासव्याकुर्य्यात्तीव्रतराक्षुधाम्।
विशूचासवताहिकासव्येस्वादुचशीतलम् ॥
सामाचग्रहणामदागनुदनंशाप्रात्कटपाण्डुता
मातिवातकफात्रदोषजानताशूलचगुल्मामय
म्॥वाताध्यानविशूचकाचकसनश्वासार्शसा
विद्रधिसर्वारोग्यवटिकाक्षणाद्धजयतेरोगांस्त-
थान्यानपि ॥

चार तोले पारे मे चार तोले शुद्ध सीसा

मिलावे, पीछे इस सीसे को लोहे के पात्र मे गला कर तेल में बुझावे, इसी प्रकार घृत मे बुझावे, पीछे इस से गंधक मिला कर फिर लोहे के पात्र मे गलावे, और तेलघृत मे बुझावे। तदनन्तर गन्धक के समान हरताल को जारण करे। चूर्णकर इस चूर्ण के तुल्य शुद्ध मनसिलका जारण करे। पीछे इस चूर्ण के बराबर निरत्थ सीसे की भस्म मिलावे। और इतना ही सुवर्णमाक्षिक मिलावे। तथा लोह भस्म, खपरिया, अभ्रक, हींगलू और शिलाजीत प्रत्येक एक एक तोला लेवे। पट्कोल (तज, पत्रज, इलायची, चीता, सोठ और काली मिरच) २४ तोला, सोफ, अजमोद, चातुर्जात (तज, पत्रन, इलायची और नागकेशर) पित्तपापडा, नेत्रबाला, वायविडंग, तुंबरू, भारंगी, रासना, ककोल, चन्द्रसूर, पोहकरमूल, कटेरी, चिरायता, धतूरे के बीज, प्रत्येक एक-एक तोला लेवे। कलियारी ८ तोला, सब का बारहवा हिस्सा विष डाले, पीछे सब का दशाश त्रिफला ले कर काढ़ा कर के भावना देवे अरनी, अदरक, भांगरा, इन के रस की पृथक् २ भावना देकर चने के बराबर गोलिया बनावे, १ गोली नित्य सेवन करने से क्षुधा बढे, विशूचिका, हिचकी, सग्रहणी, अगों की पीडा, शोप, पाडुरोग, वात, कफ, और त्रिदोषजन्यविकार, शूल, गोला, बादी, अफरा, खासी, स्वास, बवासीर और विद्रधि इन सब रोगो को यह सर्वारोग्यवटी दूर करती है।

अथ अर्शरोगाधिकारः

अर्शकुठाररसः

शुद्धसूतपलैकन्तुद्विपलंशुद्धगन्धकम्।
मृतंताम्रं मृतलोहंप्रत्येकन्तुपलत्रयम् ॥
त्र्यूषणलागलीदंतीपीलुकंचित्रकतथा।
प्रत्येकद्विपलयोज्यंयवक्षारचटंकणम् ॥
उभौपचपलौयोज्यौसैंधवंपलपंचकम्।
द्वात्रिंशत्पलगोमूत्रं स्नुहीक्षीरंचतत्समम्।
मृद्वग्निापचेत्स्थाल्यासर्वं यावत्सुपिंडितम ॥
माषद्वयंसदाखादेद्रसोह्यर्शकुठारकः।

शुद्ध पारा ४ तोले, गन्धक ८ पल, तांबेकी भस्म, लोहभस्म, प्रत्येक १२ तोले। त्रिकुटा, कलियारी, दन्ती, पीलू, चीता, प्रत्येक ८ तोला लेवे। जवाखार, सुहागा, प्रत्येक पाच-पाच पल लेवे। सेंधानोन ५ पल गोमूत्र ३२ पल, थूहर का दूध ३२ पल, सब को एकत्र कर पात्र मे भर मदाग्नि मे पचावे। जब गाढा हो जावे तब दो दो माशे की गोलिया बनावे। एक गोली नित्य खाने से यह अर्शकुठार रस बवासीर को दूर करे।

अर्शकुठाररसः

भागःशुद्धरसस्यभागयुगलगन्धस्यलोहाभ्र
योः। षट्बिल्वाग्निहत्र्यूषणाभयरजोदतीच
भागैःपृथक्। पचम्यु स्फुटटकणस्यचयव
क्षारस्यसिंधूद्भवाः। भागाःपंचगवांजलेसु
विमलेद्विंत्रिंशदेतत्पचेत् ॥ स्नुकूदुग्धंचगवा
जलार्धशनेःपिंडीकृततद्भवेत्। द्वौमाषौ
गुदकीलकाननजटाच्छेदेकुठारोरसः ॥

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक दो भाग, लोहा और अभ्रक छः २ भाग, बेलगिरी, चित्रक, त्रिकुटा, हरड, और जमालगोटा, प्रत्येक एक-एक भाग। सुहागा, जवाखार, और सैंधानोन, प्रत्येक पाच-पांच भाग। इन सब को एकत्र कर बत्तीस भाग गोमूत्र में पचावे। तथा थूहर का दूध ३२ भाग, डाल कर पुनः पक्व करे। पीछे दो-दो माशे की गोलिया बनावे, १ गोली देने से गुदा के मस्सों की शिखा तोडने को कुल्हाडी के समान है।

अर्शकुठाररसः

श्रेष्ठादन्त्वग्नियुग्मत्रिकटुकहलिनीपीलुकुम्भं
विपक्वम्। प्रस्थेमूत्रस्यसस्नुकूपयसिरसपलं
द्वे पलेगंधकस्य ॥ लोहस्यत्रीणिताम्रात्कुडव

मथरजःक्षारयोश्चापिपचच्छिप्त्वास्थाल्यांपचे
तुज्वलतिदहनकश्चूर्णमर्श कुठारः ॥

दन्ती और चीता दो भाग, त्रिकुटा, कलियारी, पीलू जमालगोटा, प्रत्येक एक भाग, सब को १ प्रस्थ गोमूत्र और १ प्रस्थ थूहर का दूध, पारा ४ तोले, गन्धक ८ तोले, लोह भस्म २२ तोले, तांबे की भस्म १६ तोले, सुहागा और जवाखार दोनो पाच-पाच भाग लें, सब को एकत्र मिट्टी के पात्र मे भर पक्व करे यह रस अर्श (बवासीर) को दूर करे ।

तीक्ष्णमुखरसः

मृतसूताभ्रलोहार्कतीक्ष्णमुण्डंचगन्धकं ।
मण्डूरंचसमताप्यमद्य कन्याद्रवैर्दिनं ॥
अधमूषागतंपाच्यत्रिदिनंतुपवन्हिना ।
चूर्णितसितयामासंखादेत्पित्तार्शसाजये ॥
रसस्तीक्ष्णमुखोनामह्यनुयोज्यमधुत्रयम् ।

पारे की भस्म, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, ताम्रभस्म, कान्तलोह, मुण्डलोह, गन्धक, मंडूर और सोनामक्खी इन सब की समान भाग भस्म लेकर एक दिन घीगुवार के रस मे खरल करे, मूष मे भर कर ३ दिन तुषाग्नि की अग्नि दे । जब शीतल हो जावे तब पीस कर चूर्ण करे, इस मे से एक मासे मिश्री के साथ और तीक्ष्ण मुख रस के साथ (खाड शहत, और घृत ये मधुत्रय) देवे तो पित्तार्श शांति होवे ।

शिवरसः

सूतवैक्रान्तशुल्वाभ्रंकान्तभस्मसगन्धकम् ।
तुल्यांशंमर्दयेच्चादौदाडिमोत्थैरसै स्तथा ॥
भक्षयेन्मापमेकन्तुहन्त्यर्शांसिशिवोरसः ।

पारा, वैक्रान्तमणि, तांबा, अभ्रक, और कान्तलोह, इन की भस्म तथा गन्धक ये सब समान लेकर चूर्ण करे, उस को अनार के रस से खरल कर एक २ माशे की गोलियां बनावे, एक गोली नित्य खाने से यह शिव रस बवासीर को दूर करे ।

लोहामृतरसः

सम्राह्यमृतलोहस्यपलान्यष्टादशानिच ।
त्रिकटुत्रिफलादार्वीवन्हिमुस्तादुरालभा ॥
किराततिक्तकोनिम्बपटोलकटुकामृता ।
देवदारुविडगानिपर्पटप्रतिकर्षकम् ॥
मध्वाज्याभ्यालिहेत्कर्षमर्शांसिग्रहणींजयेत् ।
वातपित्तकफरक्त नाशयेद्रोगसंचयम् ॥
ख्यातोलोहामृतोनामदेहदार्ढ्यकरःपरः ।

लोह भस्म ७२ तोले, त्रिकुटा, त्रिफला, दारुहलदी, चित्रक, नागर मोथा, धमासा, चिरायता, बकायननीम, पटोलपत्र, कुटकी, गिलोय, देवदारु, बायबिडंग, और पित्तपापडा ये प्रत्येक एक २ तोला लेवे । सब का चूर्ण कर लोहभस्म को मिलाय १ तोले शहत और घृत के साथ देवे तो बवासीर, संग्रहणी, बात, पित्त, कफ, रुधिर और अनेक प्रकार के रोग दूर होवे । तथा यह लोहामृतनाम रस देह को दृढ करने मे उत्तम है ।

अग्निमुखलोहम्

त्रिविच्चित्रकनिर्गुंडीस्नुहीमुंडिरकाजटा ।
प्रत्येकशोऽष्टपलिकाजलद्रोणेविपाचयेत् ॥
पलत्रयविडंगाच्च्व्योषकर्पत्रयंपृथक् ।
त्रिफलायापलपंचशिलाजतुपलंन्यसेत् ॥
दिव्यौषधहतस्यापिवैकंकतहतस्यवा ।
पलद्वादशकंदेयरुकूर्णलोहस्यचूर्णितम् ॥
पलैश्चतुर्विंशत्याज्यान्मधुशर्करयोरपि ।
घनीभूतेपुशीतेचदापयेदवतारिते ॥
एतदग्निमुखनामदुर्नामातकरपरम् ।
मन्दमग्निकरोत्याशुकालाग्निसमतेजसम् ॥
पर्वतानपिजीर्यन्तिप्राशनादस्यदेहिनाम् ।
गुरुवृष्याणिपानानिपयोमासरसोहितः ॥
दुर्नामपाडुश्वयथुकुष्ठप्लीहोदरापह ।
अकालपलितंहन्यादामवातगुदामयम् ॥
नासरोगोस्तियचापिननिहन्तिक्षणादिदम् ।
करीरकांजिकादीनिककारादीनिवर्जयेत् ।
संवत्यतोऽन्यथालोहदेहात्किट्टंचदुर्जरम् ॥

निसोथ, चीते की छाल, निगुंडी, थूहर, गोरखमुंडी, भूआमला, प्रत्येक ६ पल लेवे। जल ६४सेरका १६ सेर रहे तब उसे ले,घृत २४ पल, दिव्यौषध से फुंका हुआ अथवा विककत के रस मे फुंका हुआ लोह १२ पल लेवे, पीछे पूर्वोक्त सबको एकत्र कर अग्नि मे पचन करावे। चीनी २४ पल इसमे और मिल वे, जब गाढा होजाय तब वायविडंग तथा त्रिकुटा का चूर्ण प्रत्येक ३ पल त्रिफला का चूर्ण ५ पल, और शिलाजीत १ पल मिलावे। पीछे शीतल होने पर इसमें शहत २४ पल मिलावें। इसकी मात्रा १ माशे सेलेकर ४ माशे तक की है. यह श्रेष्ठ अग्निकारक औषधि है। इसके सेवन से सब प्रकार की बवासीर, सूजन, श्लीपद, कोढ, और उदर रोगों को दूर करे। यह पर्वत के समान किये हुए भोजन को भी पचाता है, ऐसा कोई रोग नहीं है जो इसके सेवन से दूर न हो। इसके ऊपर भारी और वृष्य पदार्थ दूध मास आदि बलक रक भोजन करने चाहिये तथा करील, कांजी, कुह्मडा, आदि जो ककार नामक पदार्थ हैं, उनको कदापि भोजन न करे, कदाचित् ककारादि पदार्थ भोजन कर लेवे तो यह लोह देह से फूट निकलता है।

मानशूरणाद्यं लोहम्

मानशूरणभल्लातत्रिवृद्दन्तीसमन्वितम्।
त्रिकत्रयसमायुक्तमयोदुर्नामनाशनम्॥

मान (बगदेश प्रसिद्ध शाक विशेष) जमीकन्द, भिलाये, निसोत, दन्ती, त्रिकुटा, त्रिफला और त्रिमद (अर्थात् चीता, मोथा और वायविडंग) इन सबका चूर्ण समान भाग लेवे। और सबके बराबर लोह की भस्म लेव, मात्रा १ माशे की है इसके सेवन से बवासीर नष्ट होवे।

चन्द्रप्रभावटी

मृतंलोहंपलद्वं द्वलोहांशशुद्धगुग्गुलु.। द्वयोस्तुल्यासितायोज्यात्रिभिस्तुल्याशिलाजतु॥ तवक्षीरपलैकन्तुअन्याकर्षा शका.शृणु। विडगत्रिफलात्र्यूपभूनिम्बगजपिप्पली॥ द्विनिशापिप्पलीमूलदेवदारुसुवर्चलम्। सैंन्धवंधनिकातार्प्यंकचूरोतिविषावृता॥ तार्प्यंसज्जीयवक्षारवचामुस्तासपत्रकम्। दन्तीएलासूक्ष्मचूर्णं मधुना गुटिकाकृता॥ कर्षमात्रासदाखादेन्नाम्नाचन्द्रप्रभावटी। सर्वाशांसिनिहंत्याशुपाण्डुरोगंभगन्दरं॥ कृच्छ्रान्मेहान्क्षयंकासंनानारोगहरापरा॥

लोह भस्म ८ तोले, शुद्ध गुगल ८ तोले, सफेद चीना १६ तोले, शिलाजीत ३२ तोले, तवाशीर ४ तोला, और वायविडंग, त्रिफला, त्रिकुटा, चिरायता, गजपीपल, हल्दी, दारुहल्दी पीपलामूल, देवदार, सोचरनोन, सेंधानोन, धनिया, सोनामक्खी, कचूरा, अतीस, सज्जीखार, जवाखार, निसोथ, वच, नागरमोथा, पत्रज, दन्ती, इलाची, इन सबको एक २ तोला लेवे। और सब का चूर्ण कर शहत के साथ एक एक माशे की गोलिया बनाव, यह चन्द्रप्रभावटी सब प्रकार की बवासीर, पाडुरोग, भगन्दर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और क्षय तथा खासी, ऐसे अनेक रोगो को नाश करे।

अभ्रकहरीतकी

मृताभ्रकपलविंशन्मृतलोहस्यपंचकम्।
गन्धकस्यपलंपचत्रिभिर्द्विगुणमाक्षिकम्॥
पथ्याशतपलयोज्यधात्रीपलनशतद्वयम्।
सर्वमेकत्रतच्चूर्णं जम्बीरैर्भावयेद्दिनम्॥
भृंगीपुनर्नवाद्रावै.पातालगुरुडाकुलैः।
भल्लातवन्हिकोराटैर्हस्तशुंडीतुलागली॥
क्षीरिणीजलकुम्भींचप्रत्येकप्रत्यहद्रवैः।
भावयेन्मर्दयेदित्थमश्वाज्याभ्याविलोलयेत्॥ स्निग्धभांडेस्थितखादेन्नित्यनिष्कद्वयंद्वयम्। सिद्धसावरयोगोत्थत्रिदोषार्शांसि नाशयेत्॥

अभ्रकभस्म ८० तोले, गंधक २० तोले, लोहभस्म २० तोले, सोनामक्खी की भस्म २४०

तोले, हरड ४०० तोले, आमले ८०० तोले, इन सब पदार्थों को एकत्र कर १ दिन जवीरी के रस की भावना देवे, पीछे भागरा, सोंठ, पातालगरुडी, मिलाये, चीता, कुरंटक, हथशुंडी कलयारी, तुम्बी जलकुम्भी, इन प्रत्येक के रस में एक २ दिन खरल करे, तदनन्तर चिकने चीनी आदि के बासन में भर कर रख छोडे इस में से १ तोला नित्य खाय तो त्रिदोष जन्य बवासीर दूर होवे, यह मित्रसावर योग से बना हुआ है।

वैक्रान्ताख्यरसः

मृतसूताभ्रवैक्रान्तताम्रंसमंसमम्।
सर्वतुल्येनगन्धेनमर्द्यं भल्लातकान्वितम्॥
दिनैकंतद्द्रवैरेवबटींकुर्य्यात्द्विगुंजकाम्।
भक्षयेद्द्वन्द्वजान्हन्तिद्वन्द्वजचत्रिदोषजम्।
वैक्रान्ताख्योरसोनामसाध्यासाध्यार्शशांतये॥

पारे की भस्म, अभ्रक भस्म, वैक्रान्त भस्म, कांत लोह भस्म, तांबे की भस्म, इन सबको बराबर लेवे इन सब को बराबर गन्धक और भिलाये डालकर भिलाये के रस में खरल कर दो २ रत्ती की गोलियां बनावे, १ गोली नित्य खाने से द्वन्द्वज, त्रिदोषज, तथा साध्य असाध्य सब प्रकार की बवासीर दूर होवे।

नित्योदितरसः

विषरविगगनाय मृतगंधसमांश।
समहुतभुजद्रावैर्भावितसप्तवारम्॥
प्रबलगुदजकीलंहन्तिनित्योदितोसौ।
मलहतिमलवधेमाषमात्रःससर्पिः॥

विष, ताम्र भस्म, अभ्रक, लोह भस्म, पारा और गन्धक इन सब को समान भाग लेवे, और चीते के रस की सातभावना देवे, तो यह नित्योदितरस मूलव्याधि (बवासीर) और मल बंध को घृत के साथ एक माशे देने से दूर करे।

नित्योदितरसः

मृतसूताभ्रलोहार्कविषगन्धसमंसमम्।
सर्वतुल्यांशभल्लातफलमेकत्रचूर्णयेत्॥
द्रवैःसूरणकन्दोत्थैःखल्वेमर्द्यं दिनत्रयम्।
माषमात्रं लिहेदाज्यैरसश्चार्शांसिनाशयेत्॥
रसोनित्योदितोनामगुदोद्भवकुलान्तकः।
हस्तेनाभौमुखेपादेगुदेवृषणयोस्तथा॥ शोथोहृत्पार्श्वशूलंचतथासाध्यार्शसाहितः। असाध्यस्यापिकर्त्तव्याचिकित्साशंकरोदितः

पारे की भस्म, अभ्रक, लोह, ताम्र, विष और गंधक ये सम भाग लेवे। सबकी बराबर भिलाये का चूर्ण मिलावे, सबको एकत्र कर जिमीकन्द के रस से ३ दिन खरल करे इसमें से १ माशे घृत के साथ देवे तो यह नित्योदित रस मूलव्याधिका नाश करे, हाथ, पैर, नाभि, मुख, गुदा, और अंडकोश इनकी सूजन और हृदय तथा पार्श्वों का शूल तथा असाध्य बवासीर इनका नाश करे, असाध्यअर्श की चिकित्सा शिवप्रोक्त करनी चाहिये।

षडाननरसः

वैक्रान्तताम्राभ्रकगंधकानांरसस्यकान्तस्य समानभागम्। चूर्णं भवेत्तेनषडाननोयमर्शोविनाशायचवल्लमात्रम्॥

वैक्रांतमणि, ताम्र भस्म अभ्रक, गंधक, पारा, और कान्तलोह की भस्म, ये सब समान भाग लेवे, सबका चूर्ण करे तो यह षडानन रस तय्यार होवे, बवासीर रोग में दो रत्ती देना चाहिये।

पीयूषसिंधुरसः

शुद्धंसूतंषड्गुणजीर्णगन्धं। काचेपात्रेवालुकायंत्रयोगात्॥ भस्मीकृत्वायोजयेदत्रहेमतत्तुल्यांशंभस्मलोहाभ्रयोश्च॥ सूतात्तुल्यंगन्धकमेलयित्वाखल्लेमर्द्यं सूरणस्यद्रवेण॥ दन्तीमुण्डीकाकमाचीहलाख्या। भृंगार्कोग्नि सप्तमेषारसेन॥ क्षिप्त्वापश्चात्धान्यराशौत्रिघस्रं चूर्णं कृत्वामाषमात्रं ददीत। अर्शोरोगेदारुणेचग्रहण्यांशूलेपांण्डवम्लपित्तेक्षयेच॥ श्रेष्ठक्षौद्रंचानुपानप्रशस्तरोगोक्तं वामा

पपटकप्रयोगात् । सर्वरोगायान्तिनाशंजरा यांवपैंद्ध इसेवनीयंप्रयत्नात । पथ्यंसात्म्य चाम्लयोगादियोषिद्वर्ज्यं देयसर्वरोगप्रशा न्त्यै ॥ पुष्टिकान्तिवीर्य्यवृद्धिसदाचसेवा युक्तोमानवःसंलभेत ।

शुद्ध पारा लेकर उसको वालुकायत्र से षड्गुण गन्धक जारण करे । और इस पारे के समान सुवर्ण भस्म, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, और गधक ये मिलावे, पीछे इसमे सूरण (जमी-कन्द के रस की, दंती, गोरख मुंडी, मकोय, मद्य, भांगरा, आक और चित्रक इन प्रत्येक के रस की सात २ भावना देवे । पीछे इसका गोला बना कर धान की रास मे रख देवे । तीन दिन पीछे निकाल लेवे । इसमें से एक मासे रोगी को नित्य देवे, तो यह उग्र बवासीर, संग्रहणी, शूल पांडु रोग, अम्लपित्त तथा खई इनमे शहत के साथ देवे, इसके छ मासे खाने से सब रोग दूर होवे । और बुढापा दूर होवे, इसी से यत्न पूर्वक भक्षण करे, इसका खानेवाला खट्टा खारी आदि पदार्थ तथा स्त्री संग करना छोड देवे, और जो अपने आत्मा को उपयोगी पदार्थ हो उसका सेवन कर्तव्य है । इसके सेवन से पुष्टि, कान्ति तथा वीर्यवृद्धि प्राप्त होवे ।

चक्रवंधरसः

दिनत्रयंगन्धसमरसेन्द्रविमर्दयेच्छ्वेतवसुद्रवेण ताम्रस्यचक्रेणनिबध्यवन्हिहरीतकीभृंगरसै विमर्द्य ॥ कटुत्रयेणापिददीतगुंजाद्वयमरू त्पायुरुहप्रशान्त्यै । चक्रवंधरसोयंहिसर्व रोगापहारकः ॥ एतैस्तुगंधकेनैकपुटंचैवप्रदा पयेत् ।

पारा और गन्धक समान लेवे, दोनों को सफेद पुनर्नवा (साठ) के रस में ३ दिन खरल करे, तथा तांबे की भस्म डालकर खरल करे तो चक्र के सदृश पारा बद्ध होवे । पीछे उसको चित्रक, हरड, भांगरा, सोंठ, मिरच, पीपल, इन के रस से खरल करे । पीछे दो २ रत्ती की गोलियां बनावे, १ गोली वात की बवासीर दूर करने को देवे, यह चक्रबन्धरस सर्व रोग नाशक है, इस रस मे १ गन्धक पुट और देवे ।

सर्वलोकश्रमहारीरसः

शुद्धसूतंपलंगन्धंगन्धार्द्धंतालताप्यकम् ।
अमृतंरसकंचैवतालकार्धंविभागकम् ॥
एतेषांकज्जलींकुर्य्याद्दृढंसम्मर्द्य वासरम् ।
त्रिदिनमर्दयेच्चाथदन्त्यानिम्बजलखलु ॥
वटींकृत्वाविशोष्याथकाचकुप्यांनिवापयेत् ।
निष्कंतुल्यार्कपात्रेणपिधायास्यप्रयत्नत ॥
सार्धांगुलमितोत्सेधांमृत्स्नयातांविलिप्यच ।
ततोभाण्डेतृतीयांशेसिकतापरिपूरिते ॥
निधायसिकतामूर्ध्निसिकताभिःप्रपूरयेत् ।
रुध्वास्यतदधोवह्निंज्वालयेत्सार्द्धवासरम ॥
स्वांगशीतलितंकाचपुटादाकृष्यतद्रसं ।
वटचूर्णंविधायाथताम्रमभ्रपलद्वयम् ॥
पलार्द्धममृतंचैवमरिचंचचतुःपलम् ।
एकीकृत्यक्षिपेत्सर्वं नारिकेलकरण्डके ॥
साऽद्योगुंजाद्विमानोहरतिरसवरःसर्वलोका-श्रयोयं । वातश्लेष्मोत्थरोगान्गुदजनितगदं शोफपाण्डवामयंच ॥ यक्ष्माणवातशूलज्वरम पित्तंखिलवन्हिमांद्यंचगुल्म । तत्तद्रोगघ्नयो गैःसकलगदचयंदीपनतल्लक्षणेन ॥

पारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले, हरताल २ तोले, सोनामक्खी २ तोले, विष १ तोले, खपरिया १ तोले, सब की कजली कर १ दिन घोटे, तदनन्तर नींबू के रस से ३ दिन खरलकरे, पीछे इसकी गोली कर आतिशी शीशी में भर तीन २ मासे के आक के पत्तों से उसको लपेट देवे, उस के ऊपर डेढ़ अंगुल ऊंची कपर मिटी चढ़ाये धूप में सुखा लेवे पीछे एक मिट्टी का पात्र लेवे उसका तीसरा हिस्सा बालू रेते से भर उस के ऊपर उक्त पूर्वोक्त शीशी को रखे और ऊपर से वालू भर देवे उस शीशी के मुख में ईंट का टुकडा देकर वन्द कर देवे, पीछे दो प्रहर की

अग्नि देवे, जब स्वांग शीतल हो जावे तब उस शीशी से रस को निकाल लेवे, पीछे उसका चूर्ण कर उसमे ताबे की भस्म और अभ्रक भस्म दो २ पल मिलावे, विष ४ तोले और काली मिरच का चूर्ण ४ पल मिलावे, सबको एकत्र कर नारियल की नरेली मे भर देवे, इसमे से २ रत्ती रस मक्खन के साथ खाय तो सब रोग दूर होवे, वादी कफ के रोग, गुदा के रोग, शोष, पाडू, राज यक्ष्मा, वातशूल, सब प्रकार के ज्वर, मदाग्नि गोला, इन रोगो मे इन्ही २ के अनुपान के साथ देवे तो यह रस तत्क्षण दीपन करे।

त्रैलोक्यतिलकोरसः

रजःकृत्वाभर्जयित्वाशोधितंकाचटंकणम्।
रेतयित्वारजःकृत्वाभर्जयित्वाघृतेनतु ॥
अष्टादशांगकोपेतपुटेद्वारत्रयततः।
त्रिवारस्यद्रवेत्तेनलुंगस्वरसयोगिना ॥
चतुर्वारंचवर्षाभूवासामत्स्याक्षिकारसै.।
गुग्गुलुत्रिफलाक्वाथैस्त्रिंशद्वाराणियत्नत. ॥
तुल्याशरसगन्धोत्थकज्जल्याष्टांशभागिका।
पुटेत्पंचाशतंवारान्मर्दयेच्चपुटेपुटे ॥
शोधितरेतितकान्तसत्वंचघृतभर्जितं।
पुटेदष्टाशदरदैःसयुतंलकुचाम्बुना ॥
दशवारंतथासम्यक्‌तारंशुद्धंमनोह्वया।
तथाविंशतिवाराणिवलिनामनिद्रसैः ॥
दशावाराणिताप्येतुकृष्णागोघृतयोगिना।
उभयंसमभागन्तत्पुटेत्रिगुंडिकारसे ॥
रसगन्धोत्थकज्जल्यादशवारपुटेत्पुनः।
तस्मिन्नष्टांशभागेनक्षिपेद्वैकान्तभस्मकं ॥
राजावर्त्तकलांशेनसमभागेनपर्पटीं।
तत्सर्वंपरिमर्द्याथभावयित्वार्द्रकाम्बुना ॥
गुडूच्याःस्वरसेनापिभूकदम्बरसेनवा।
भृंगराजरसेनापिचित्रमूलरसेनच ॥
व्योषगुंजाकिनींकन्दैर्भूयोथार्द्रद्रवेणच।
पटचूर्णमतःकृत्वाक्षिपेच्छुद्धंकरण्डके ॥
त्रैलोक्यतिलकःसोयख्यातःसर्वरसोत्तम.।
सर्वव्याधिहरःश्रीमान्शम्भुनापरिकीर्त्तितः ॥
उदावर्त्तंचविड्बंधंव्यथांचजठरोद्भवाम्।
लोहलंमन्दबुद्धित्वशूलित्वमपिवंध्यताम् ॥
सूतिरोगानशोषांश्चशूलनानाविद्ध तथा।
परिणामाख्यशूलंचतथाभिद्यात्समुत्कटम् ॥
रक्तगुल्मंचनारीणांरजःशूलंचदुःसहं।
अनुपानंचपथ्यंचतत्तद्रोगानुरूपतः ॥

सफेद और काली अभ्रक का सत्व उसको कांच और सुहागे से शोध कर रेती से रेत लेवे, पीछे उस सत्व के रेत को घी में भून पीछे अष्टादशांग काढे के तीन पुट देवे,और सुखाय-सुखाय कर ताय लेवे, इस प्रकार तीन पुट देवे, पीछे तीन भावना विजौरे के रस की, चार भावना के चूर्णों के रस की, अडूसा, मछेछी, गूगल, त्रिफला, इनके काढे की तीस भावना देवे, पीछे इस चूर्ण का अठारहवां भाग पारे गधक की कजली मिलावे, पीछे पूर्वोक्त अडूसा आदि औषधियों की २० पुट देवे,प्रत्येक पुट मे घोटता जावे पीछे कान्तपाषाण के सत्व को शोधन कर और रिताय कर उस तत्व को भून आठवा भाग हींगलू डालकर बडहलके रसकी १० भावना देवे पीछे चांदी को मनसिल द्वारा शुद्ध करके गन्धक डाल मछेछी के रस की बीस भावना देवे, तदनन्तर सुवर्ण माक्षिक डाल कर काली गौ के घृत से १० पुट देवे, पीछे पूर्वोक्त रेता हुआ सत्व और चादी समान लेवे और सझालू के रस के १० पुट देवे.और १० पुट पारे गधक की कजली के देवे, फिर इससे पूर्वोक्त सत्व का आठवा भाग वैक्रान्त की भस्म डाले, और राजावर्त्त की भस्म सोहलवां भाग डाल कर पर्पटी बनावे. पीछे सबका चूर्ण कर अदरक, गिलोय, गोरखमुडी, भागरा, चीते की छाल, त्रिकुटा का काढा, भाग, इसके रस की भावना देकर फिर अदरक के रस की भावना देवे। पीछे धूप मे सुखा कर कपरछनकर लेवे। इसको किसी उत्तम चीनीके बर्तन या शीशीमे रख लेवे। यह त्रैलोक्य तिलक नाम से विख्यात सर्वोत्तम रस है। सर्व रोग हरणकर्त्ता

श्री शिव ने कहा है. उदावर्त्त, मलबंध, उदर की पीडा, तोतलापन, मन्दबुद्धि, शूल, वंध्यता, प्रसूत रोग, परिणाम शूल, रक्त गुल्म, रज की पीडा, इसको यह रस दूर करे. इस पर रोगानुसार पथ्य देना चाहिये।

इति श्रीबृहद्रसराजसुन्दरे उत्तरखण्डे अर्शरोगाधिकारः

अथ अजीर्णरोगाधिकारः

अग्निसंदीपनोरसः

पट्ूपणंपंचपटुत्रिक्षारजीरद्वयम् ।
वृक्षदर्भोग्रगंधाचमधुरीहिंगुचित्रकम् ॥
जातीफलतथाकुष्ठजातीकोपंत्रिजातकम् ।
चिंचाशेखरिकक्षारममृतंरसगन्धकौ ॥
लोहमभ्रंचवंगंचलवंगंचहरीतकी ।
समभागानिसर्वाणिभागौद्वावम्लवेतसात् ॥
शखस्यभागाश्चत्वारःसर्वमेकत्रभावयेत् ।
क्वाथेनपचकोलस्यचित्रापामार्गयोस्तथा ॥
अम्ललोणीरसेनैनप्रत्येकंभावयेत्त्रिधा ।
त्रिःसप्तकृत्वोलिम्पाकरसैःपश्चाद्विभावयेत् ।
वदराभावटीकार्य्यायोक्तव्यासध्ययोर्द्वयोः
अनुपानप्रदातव्यंवुध्यादोषानुसारतः ॥
अग्निसदीपनोनामरसोऽयंभुविदुर्लभः ।
दीपयत्याशुमन्दाग्निमजीर्णंचविनाशयेत् ॥
अम्लपित्तंतथाशूलगुल्ममाशुव्यपोहति ।

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, और काली मिरच, पांचों नोन, जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, सफेद जीरा, काला जीरा, अजमायन, वच, सोफ, हींग, चीते की छाल, जायफल, कूट, जावित्री, दालचीनी, तेजपात, इलायची, इमली की छाल की भस्म, ओंगा की भस्म, विष, पारा, गधक, सार, अभ्रक, वंग, लौंग, हरड़, ये प्रत्येक १ भाग लेवे, अमलवेत २ भाग ले, शंख भस्म ४ भाग ले, सबको कूट पीस पंचकोल, चीता और ओंगा के काढे की भावना देवे। उसी प्रकार खट्टे लोनिया के रस की ३ भावना देवे, नीबू के रस की २१ भावना देवे, पीछे वेर के समान गोलियां बनावे, प्रातःकाल और सायंकाल दोनों वक्त एक-एक गोली खाय और दोष के अनुसार अनुपान करे तो यह अग्नि संदीपन रस मंदाग्नि को प्रज्वलित करे। अजीर्ण, अम्लपित्त, शूल, और गोला इन सब को नष्ट करे।

अजीर्णवलकालानलोरसः

द्विपलंशुद्धसूतंचगन्धकंचसमंमतम् ।
लोहंताम्र हरीतालंविपतुत्थंसवंगवम् ॥
पलप्रमाणंचपृथक्लवगटकणंतथा ।
दन्तीमूलत्रिवृच्चूर्णमेकैकपलसम्मितम् ॥
अजमोदायवानीचद्विक्षारलवणानिच ।
पृथगर्द्धपलंग्राह्यमेकीकृत्यचभावयेत् ॥
आर्द्रकस्वरसेनैकविंशतिपाचकोलजैः ।
दशधाभावयेत्तोयैर्गुडूचीनारसैर्दश ॥
सर्वार्द्धं मरिचंदत्वाकाचकुप्याचधारयेत् ।
चणमात्रावटींकृत्वाछायायांपरिशोषयेत् ॥
रसोजीर्णवलकालानलएषप्रकीर्तितः ।
अनेककालनष्टाग्नेर्दीपन.परमःस्मृतः ॥
आमवातकुलध्वसीप्लीहपाण्डुगदापहः ।
प्रमेहानाहविष्टम्भसूतिकाग्रहणीहरः ॥
श्वासकासप्रतिश्याययक्ष्मक्षयविनाशनः ।
अम्लपित्तंचशूलंचभगन्दरगुदोद्भवौ ॥
अष्टौदराणिप्लीहानयकृतिंहन्तिदारुणम् ।
आकठभोजयित्वातुखादयेच्चरसोत्तमम् ।
अर्द्धयामेनतत्सर्वंभस्मीभवतिनिश्चितम् ।
चतुर्विधरसोपेतंमहाभोजनमिच्छतः ॥
भोजस्यनृपतेःकांक्षाभोजनेकृपयाकृता ।
गहनानन्दनाथेनसर्वलोकहितैषिणा ॥

पारा २ पल, गन्धक २ पल, लोह भस्म, ताम्र भस्म, हरिताल भस्म, विष, लीलाथोथा, वंग,

लौंग सुहागा, दन्ती की जड़, निसोथ, ये प्रत्येक एक २ पल लेवे। अजमोद, अजमायन, जवाखार, सज्जीखार, पाचोनोन, ये प्रत्येक चार २ तोला इन सब वस्तुओं को एकत्र कर कूट पीस अदरक के रस की २१ भावना देवे, पंचकोल के काढ़े की १० भावना देवे, गिलोय के रस की १० भावना देवे, पीछे सब चूर्ण से आधी काली मिरच पीस कर मिलावे। सब को घोट काच की शीशी में भरकर रख देवे, जब कुछ सूख जावे तब चने के समान गोलिया बनावे, और छाया में सुखा लेवे। यह जीर्ण बलकालानल नामक रस है। बहुत दिनो की जीर्ण जठराग्नि को दीपन करे, आमवात, प्लीह, पाडु, प्रमेह, विष्टंभ, प्रसूत संग्रहणी, खांसी, श्वास, पीनस, खई, अम्लपित्त शूल, भगंदर, बवासीर, आठ प्रकार के उदर-रोग, कलेजे के रोग, सब को दूर करे। कंठ पर्य्यन्त भोजन करके इस रस को खाय तो आधे प्रहर मे सब भोजन किये को भस्म कर देवे, यह गहनानन्द सिद्ध का कहा हुआ रस है।

श्रीरामबाणरसः

पारदाऽमृतलवंगगन्धकंभागयुग्ममरिचेनमि-
श्रितम्। अत्रजातिफलमर्धभागिकतिन्ति-
डीफलरसेनमर्दितम ॥ माषमात्रमनुपानयो
गत.सद्यएवजठराग्निदीपन.। संग्रहग्रहणिकु
भकर्णकसामवातखरदूषणजयेत्॥ वन्हिमांद्य
दशवक्रनाशनोरामबाणगुटिकारसायनः ॥

पारा, विष, लौंग, गन्धक, प्रत्येक एक २ तोला ले। मिरच २ तोला, जायफल आधा तोला, इन सब को कच्ची इमली के रस में खरल कर एक २ माशे की गोलिया बनावे, दोषानुसार अनुपान देवे, इस रस के सेवन से तत्काल अग्नि दीपन होवे, और-संग्रहणी रूप कुंभकर्ण, आमवात रूप खरदूषण, तथा मन्दाग्नि रूप रावण का नाशक यह रामबाण रस रसायन है।

क्षुद्बोधकरसः

व्योषसिन्धुत्थबलिभिरेकद्वित्रिलवैःस्मृत ।
निम्बांम्बुमर्दितोगाढनाम्नाक्षुद्बोधकोरसः ॥

सोठ, मिरच, पीपल, तीनो १ तोला सैंधा-नोन २ तोला, गन्धक ३ तोला, इन सब को कूट पीस नींबू के रस में खरल करे। तो यह क्षुद्बोधरस बने। इस के खाने से भूंख लगती है मात्रा ३ माशे की है।

दूसरा क्षुद्बोधरसः

टंकणकणामृतानांसहिंगुलानांसमोभागः ।
मरिचस्यभागयुगलनिम्बूनीरैर्वटीकार्य्या ॥
वटीकलायसदृशीमेकामेवसमश्नीयात् ।
सत्वरमजीर्णशान्त्यैवन्हेर्वृध्यैकफध्वस्त्यै ॥

सुहागा, पीपल, विष, और हींगलू ये समान भाग लेवे। और काली मिरच २ भाग लेवे, इन का चूर्ण कर नींबू के रस से खरल करे। और मटर के समान गोलियां बनावे, यह गोली अजीर्ण का नाश करे, भूंख बढ़ावे, और कफ को दूर करे।

अग्निकुमाररसः

पारदचविषंगन्धटंकणसमभागतः ।
मरीचादष्टभागास्युर्द्वौशखकपराटयोः ॥
पक्वजंबीरजैर्गाढरसे'सप्तविभावयेत् ।
गुंजाद्वयमितोदेयोरसोह्यग्निकुमारकः ॥
समीरणसमुद्भुतमजीर्णंचविशूचिकाम् ।
क्षणेनक्षपयत्येषक्षयेरोगनिकृंतन ॥

पारा, विष, गन्धक, और सुहागा, इन को समान भाग लेवे। मिरच ८ भाग, शख भस्म, और कौडी की भस्म दो भाग, सब को एकत्र कर पकी हुई जंबीरी के रस से खरल कर सात भावना देवे। पीछे दो २ रत्ती की गोलिया बनावे। यह अग्निकुमाररस बादी से प्रगट अजीर्णको विशूचिका को और क्षयरोग को एक क्षण मात्र में दूर करे।

दूसरा अग्निकुमाररसः

रसेनगन्धसहटंकणेनसमंविषंयोज्यमतस्त्रि-
भागम्। कपर्दशंखावपिनेत्रभागौमरीचकं
चाष्टगुणंविमर्द्य ॥ सुपक्वजम्बीररसेनखल्वे

शुद्धोभवत्यग्निकुमारकोयम् । अजीर्णवातं गुदगुल्मवातविशूचिकानांविनिहन्तिसद्यः ॥

पारा, गन्धक, सुहागा, इन को एक १ भाग ले, विष ३ भाग, और कौडी तथा शखकी भस्म, २ भाग, काली मिरच ८ भाग, सब को एकत्र कर पकी जबीरी के रस मे खरल करे, तो यह अग्निकुमाररस बने, ये अजीर्णवायु, गुदा की वात वायगोला, विशूचिकादि व्याधियों का नाश करे।

तीसरा अग्निकुमाररसः

टंकणंरसगन्धौचसमभागत्रयविषात् ।
कपर्दशंखौद्विलवौवसुभागमरीचकम् ॥
दिनंजम्बांभमापिष्ट्वानागवल्यार्द्रवन्हिना ।
शिग्रुमूलेनलुगेनभवेदग्निकुमारकः ॥
अजीर्णशूलमन्दाग्निप्लीहपाडुवामयेपुच ।
वातरोगेपुसर्वेपुमूत्ररोगेपुदातजे ॥
कासेदुर्नाम्न्यतीसारेग्रहण्यांसन्निपातके ।

सुहागा, पारा, गन्धक, इन सब को बराबर ले, विष ३ भाग, कोंडी और शख की भस्म दो भाग, काली मिरच ८ भाग, सब को एकत्र कर जबीरी के रस में एक दिन खरल करे । पान के रस मे, अदरक के रस मे, सहंजने के रस में, तथा विजौरे के रस में एक १ दिन घोटे, तो अग्निकुमार रस बने, यह अजीर्ण, शूल, मदाग्नि, प्लीह, पाडु, वादी के रोग, मूत्ररोग, खांसी, बवासीर, अतिसार, सग्रहणी और सन्निपात को दूर करे ।

चतुर्थ अग्निकुमाररसः

समानौगन्धकरसौतदर्द्धवत्सनाभकम्।
रसस्यताम्रभस्मोपिसमंचूर्णं विमर्दयेत्
हंसपादिरसेनाथकाचकुप्यांविनिक्षिपेत्।
वालुकायत्रविधिनात्रियामपाचयेद्भिषक्
रसार्द्धममृतक्षिप्त्वापुनःसंचूर्ण्यमर्दयेत् ।
वन्हित्रिकटुसिंधुत्थयुक्तेनार्द्रकवारिणा ॥
गुंजामात्रंहिदातव्यमन्दाग्नौसन्निपातके ।
धनुर्वातेप्यजीर्णेचशूलेचक्षयकासयोः ॥
अयमग्निकुमाराख्योरसःस्यात्प्लीहगुल्मनुत्।

गन्धक, पारा, दोनो बराबर ले, और विष आधा भाग, ताम्र भस्म १ भाग, इन सब पदार्थोंको एकत्र कर के हसपदी के रस से खरल करे । पीछे धूप मे सुखा कर शीशी मे भर वालुका यत्र से तीन प्रहर पचावे । जब शीतल हो जावे तब उसमे से निकाल उस में विष आधा भाग मिलावे, पीछे सोंठ, मिरच, पीपल और सैंधानोंन इनके चूर्ण के साथ इस रसको अदरक के रस से खाय तो मन्दाग्नि, सन्निपात, धनुर्वात, अजीर्ण, शूल, खई, खासी, प्लीह, और गुल्म इन रोगो को यह अग्निकुमाररस दूर करे ।

पंचम अग्निकुमाररसः

पारदशुद्धगन्धचविषभागत्रिभिःसमम् ।
कपर्दं विपतुल्यांशतत्तुल्यंस्वर्जिकाकणा ॥
शुंठीचाष्टगुणायुक्तामरिचमेलयेद्बुधः ।
मर्दयित्वाखलेकृत्वायावत्साकज्जलप्रभा ॥
जम्बीरनीरैर्देयाचभावनासप्तवैततः ।
आर्द्रकस्यरसेनैवततःसिद्धंद्विगुंजकम् ॥
रसश्चाग्निकुमारोयआमसंचयजांरुजम् ।
अग्निमांद्यजीर्णंचनाशयेत्कफहृत्परः ॥

पारा, गन्धक, और विष, ये समान भाग ले, कौडी की भस्म ३ भाग, सज्जीखार, सुहागा, पीपल,ये १ भाग ले । सोंठ ८ भाग और मिरच ८ भाग, इन सबको खरल में डाल तब तक घोटे जब तक काजल के समान न हो पीछे जबीरी नींबू के रस की ७ भावना देवें, और अदरक के रस की ७ भावना देवे पीछे दो २ रत्ती की गोलिया बनावे, यह अग्निकुमार रस आम के सचय को सुखावे । और मदाग्नि, अजीर्ण तथा कफ का नाश करे ।

वडवानलरसः

रसेनगन्धंद्विगुणंगृहीत्वातौनागवङ्गौरसतुल्यभागौ । कृत्वासमषोडशभागसंख्ययामरीचचूर्णंवडवानलस्य ॥

पारा १ तोला, गंधक २ तोला, शीशे की भस्म १ तोला, और वग की भस्म १ तोला, और काली मिरच का चूर्ण १६ तोला, इन सब को एकत्र कर पीस डाले, इसको वडवानल रस कहते हैं ।

स्वयमग्निरसः

मरिचाब्दवचाकुष्ठसमांशविषमेवच ।
आर्द्रकस्यरसैःपिष्ट्वामुद्गमात्रन्तुकारयेत् ।
स्वयमग्निरसोनामसर्वाजीर्णप्रशान्तये ॥

काली मिरच, नागरमोथा, वच, कूठ, सब बराबर ले । सब की बराबर विष लेवे, सब को कूट पीस अदरक के रस से खरल कर मूंग के समान गोलिया बनावे, इससे सब प्रकार का अजीर्ण दूर होवे ।

क्षुधासागररसः

त्रिकटुत्रिफलाचैवतथालवणपंचकम् ।
क्षारत्रयंरसंगन्धभागैकंपूर्ववद्विषम् ॥
गुंजामात्रांवटींकुर्य्याल्लवगैःपचभिःसमम् ।
क्षुधासागरनामायंरसःसूर्य्येणनिर्मित· ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, पांचोंनोंन, जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, पारा, गन्धक, प्रत्येक एक २ तोला लेवे, विष २ तोला सबको एकत्र पीस जल से घोटकर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, इसको ५ लौंग के चूर्ण और शहत में मिला कर खावे तो भूख अत्यन्त बढे ।

हुताशनरसः

गधेशटकनैकैकंविषमात्रिभागकम् ।
अष्टभागन्तुमरिचजम्भाभोमर्दितदिनम् ॥
तद्वटींमुद्गमानेनकृत्वार्द्रेणप्रयोजयेत् ।
शूलारोचकगुल्मेषुविशूच्यामग्निमांद्यके ॥
अजीर्णेसन्निपातादौशैत्यजाड्येशिरोगदे ।

गन्धक १ तोला, पारा १ तोला, सुहागा १ तोला, विष ३ तोला, मिरच ८ तोला, इन सब को पीस कर जबीरी के रस में १ दिन खरल करे, और मूंग के समान गोलिया बनावें, एक गोली अदरक के रस के साथ देवे तो शूल, अरुचि, गोला, विशूचिका, मन्दाग्नि, अजीर्ण, सन्निपात, शीत की जडता, और मस्तक रोग इनको दूर करे ।

भास्करोरसः

विषसूतफलंगन्धत्र्यूषणटंकजीरकम् ।
एकैकद्विगुणलोहशखमभ्रवराटकम् ॥
सर्वंतुल्यलवगंचजम्बीरैर्भावयेद्भिषक् ।
सप्तवासरपर्य्यन्तंततःस्याद्भास्करोरसः ॥
गुंजाद्वयप्रमाणेनवटींकुर्य्याद्विचक्षणः ।
ताम्बूलीदलयोगेनवटींसचर्व्यंभक्षयेत् ॥
शूलरोगेषुसर्वेषुविशूच्यामग्निमांद्यके ।
सद्योवन्हिकरोह्येषतत्रनाथेननिर्मितः ॥

विष, पारा, त्रिफला, गन्धक, त्रिकुटा, सुहागा, और जीरा प्रत्येक एक २ भाग, लोह भस्म, शंख भस्म, अभ्रक और कौडी की भस्म प्रत्येक दो २ भाग । और सबके बराबर लौंग का चूर्ण, सब को पीस कपर छन कर जंबीरी के रस मे ७ दिन घोटे, पीछे दो २ रत्ती की गोलियां बनावे, १ गोली पान में रख कर खाय तो शूल, विशूचिका और मन्दाग्नि को दूर करे, और तत्क्षण जठराग्नि को बढावे ।

अग्नितुंडीवटी

शुद्धसूतंविषंगन्धमजमोदफलत्रयम् ।
सर्जिक्षारंयवक्षारवन्हिसैंधवजीरकम् ॥
सौवर्चलविडंगानिसामुद्रटंकणसमम् ।
विषमुष्टिसर्वतुल्यजम्बीराम्लेनमर्दयेत् ॥
मरिचाभावटींखादेदग्निमांद्यप्रशान्तये ।

पारा, विष, गन्धक, अजमोद, त्रिफला, सज्जीखार, जवाखार, चीते की छाल सेंधा नोन, जीरा, सचर नोन, वायविडंग, समुद्र नोन और सुहागा इन सबको बरावर ले, और सबकी बराबर कुचला लेकर सबको कूट पीस जंबीरी के रस से खरल कर मिरच के समान गोलिया

बनावे। मन्दाग्नि दूर करने को १ गोली खाय,
[पथ्याशुंठीगुडंचानुपलार्द्धं भक्षयेत्सदा । अग्नितुंडीवटीख्यातासर्वरोगकुलांतका]
इसके ऊपर हरड, सोठ, गुड मिला कर दो तोले भक्षण करे। यह अग्नितुन्डीवटी सर्व रोगों के कुल को नष्ट करने वाली यह पाठ किसी पुस्तक में अधिक है।

अमृतवटी

अमृतवराटकमरिचैर्द्विपंचनवभागिकैःक्रमशः
वटिकामुद्गसमानाकफपित्ताग्निमांद्यहारिणी॥

विष २ तोले, कौडी की भस्म ४ तोले, मिरच ८ तोले, सब को जल से पीस मूंग के समान गोलिया बनावे। ये कफपित्त मन्दाग्निका नाश करे।

द्वितीयामृतवटी

कुष्योद्गगधविषव्योषत्रिफलापारदैःसमैः।
भृंगाम्बुमर्दितैर्मुद्गमात्रामृतवटीशुभा ।
अजीर्णश्लेष्मवातघ्नीदीपनीवन्हिवर्द्धिनी।

गधक, विष, त्रिकुटा, त्रिफला, पारा, इन सब को समान लेवे। सबको भागरे के रस से घोट कर मूग के समान गोलिया बनावे, यह गोली अजीर्ण, कफ, वात को नष्ट करे, और जठराग्नि को बढावे।

टंकणादिवटी

रसगन्धकटकणनागरकगरलमरिचंसमभाग युतम्। लकुचस्वरसैश्चणकप्रमितागुटिकाज नयत्यचिरादनलम्॥

सुहागा, सोठ, पारा, गन्धक, विष, मिरच, इन सबको बराबर लेवे। और बडहर के रस मे खरल करके चने के समान गोलिया बनावे, इसमे शीघ्र जठराग्नि दीप्त होवे।

लवंगादिवटी

लवगशुंठीमरिचानिभृष्टौभाग्यचूर्णानिस मानकृत्वा। भाव्यान्यपामार्गहुताशवाराप्र भूतमांसादिकजारणाय॥

लौंग, सोंठ, मिरच, और भुना सुहागा, सब बराबर लेकर ओंगा के रस मे और चीते के रस से भावना देकर एक एक रत्ती की गोलियां बनावे। इसके सेवन से प्रभूत (अत्यन्त) मांसादिक भी पचे।

महोदधिवटी

एकैकविषसूतौथजातीटकंद्विकंद्विकं।
कृष्णात्रयंत्रिश्वपट्कंदग्धकपंदकंतथा॥
देवपुष्पंत्राणमितंसर्वंसमर्द्य यत्नतः।
महोदधिवटीनाम्नानष्टमाग्निप्रदीपयेत्॥

विष १ तोला, रस सिन्दूर १ तोला, जायफल २ तोला, सुहागा दो तोला, पीपल ३ तोला सोंठ ६ तोला, कोडी की भस्म ६ तोला, लौंग ५ तोला, सब को एकत्र कर जल मे घोट कर १-१ रत्ती की गोलिया बनावे। इसके सेवन मे नष्ट अग्नि फिर दीप्त करे।

अजीर्णहरमहोदधिवटी

दतीबीजमकल्मषसदहनंशुंठीलवगंसमं।
गन्धपारदटंकणंचमरिचंश्रीवृद्धदारूविषम्
खल्वेयामयुगंविमर्द्य विधिनादन्तीद्रवैर्भाव-
ना। देयापचदशानुनिम्बुकजलैस्त्रे धात्रिधाचि
त्रकैः। त्रेधाचार्द्रकजैरसैःशुभधियासप्तैवचावे
दिता। पश्चाच्छुष्ककलायसम्मितवटीकार्य्या
भिषक्सम्मता। क्षुद्बोधंप्रकरोतिशूलशमनीं
जीर्णज्वरध्वसिनी। कासारोचकपाण्डुतोदर
गदःसामामरुङ्नाशिनी॥ वस्त्याटोपहली
मकामयहरीमन्दाग्निसदीपनी। सिद्धेयतुम
होदधिप्रकटितासर्वामयघ्नीसदा॥

शुद्ध जमाल गोटा, चित्रक सोठ, लौंग, गन्धक, पारा, सुहागा, मिरच, विधायरा और विष इनको बराबर ले, खरल मे डाल दो प्रहर घोटे, पीछे दती के रस की १५ भावना दे, और नींबू के रस की ३, चीते के रसकी ३, अदरक के रसकी सात भावना देकर सुखा लेवे। जब गोली बंधने लायक हो जाय तब मटर के समान गोलि-

या बनावे। एक गोली देने से क्षुधबोधकरे शूल, अजीर्ण, ज्वर, खासी, अरुचि, पाडुरोग, उदर आमरोग, पेट का गुडगुडाहट शब्द, हलीमक मन्दाग्नि, तथा सर्व रोगो का नाश करे।

क्षुधासागरवटी

त्रिकटुत्रिफलाचैवतथालवणपंचकम्।
क्षारत्रयंरसोगन्धद्विभागंपूर्ववद्विषम् ॥
आर्द्रकस्यरसेनैवगुंजाभावटकीकृता।
अजीर्णेद्विवटीखादेल्लवगे पंचसप्तभिः ॥
क्षुधासागरनाम्न्येयवटीसूर्य्येणनिर्मिता।

त्रिकुटा, त्रिफला, पाचौनोन, तीनो खार, पारा गधक, प्रत्येक एक २ तोला। और विष दो तोला लेकर सबको पीस कर अदरक के रस मे एक २ रत्ती की गोलिया बनावे। अजीर्ण में दो गोली पांच अथवा सात लौंगों के चूर्ण के साथ देवे, यह क्षुधासागरवटी सूर्य्य की कही हुई है।

अग्निदीपनीवटी

गन्धकंमरिचशुण्ठींसैंधवंयवजन्तवम्।
निम्बूरसेनवटिकाचणमात्राग्निदीपनी ॥

गधक, मिरच, सोठ, सैंधानोन, इन्द्रजौ, वायविडग, इनका चूर्ण कर नींबू के रस से खरल कर चने के प्रमाण गोलियां बनावे, यह अग्निदीपक रस है, कोई इसको गधक वटी कहते हैं।

भस्मवटी

रजीकृतपचपलंतुपाम्लेखिन्नशिवायुग्विपति न्दुबीजम् हिंगुक्रमिघ्नत्रिपटुत्रिदीप्यपलपृथ क्त्र्यूषणगन्धयुक्त ॥ चूर्णीकृतनिम्बुरसेन भाव्य कोलास्थिमात्रावटिकाविधेया। संसे विताहन्तिनृणामजीर्णहृद्रोगगुल्मंकृमिजाश्च रोगान् ॥ प्लीहानिमाद्यार्त्तितथामवातशूला तिसारग्रहणीरुजच। जलोदरार्शकृमिजा श्चरोगान्हन्याद्बहून्वातकफोद्भवाश्च ॥

हरड और कुचला, दोनों को पीसकर काजी में स्वेदन करे। पीछे हींग, वायविडग, सैंधानोन, विडनोन, सचरनोन, अजमायन, अजमोद, खुरासानी, अजमायन, सोठ, मिरच, पीपल, गन्धक ये प्रत्येक चार २ तोला ले, सबका चूर्ण कर नींबू के रस की भावना देकर बेर की गुठली के बराबर गोलिया बनावे। इसके सेवन से अजीर्ण, हृद्रोग, गोला, कृमि, प्लीह, मदाग्नि, अमावात, शूल, अतिसार, सग्रहणी, जलोदर, बवासीर और अनेक प्रकार के वात कफ के रोग दूर होवे।

लघुपानीयभक्तवटी

रसार्द्ध भागिकस्तुल्याविडगमरिचाभ्रकाः।
भक्तोदकेनसंमर्द्य कुर्य्याद्गुंजासमागुटी ॥
भक्तोदकानुपानैश्चसेव्यावन्हिप्रदीपनी।
वार्य्यं नभोजनंचात्रप्रयोगेसात्म्यमिष्यते ॥

पारा आधा भाग, वायडिंग, मिरच, अभ्रक, ये प्रत्येक १ भाग, भात के पानी से एक २ रत्ती की गोलिया बनावे। १ गोली माड के साथ खाय तो अग्नि को दीपन करे। यद्यपि इस पर किसी वस्तु का भोजन वर्जित नही है, तथापि आत्मा को जो हित हो वह भोजन करे।

पंचामृतावटी

अभ्रकंपारदंताम्रं गन्धकंमरिचानिच।
समभागमिदंसर्वं चागेरीरसमर्दितम् ॥
मर्दितंहिरसैर्भूयोजयन्तीसिंधुवारयो।
भावनापिचकर्त्तव्यागुंजापरिमितावटी ॥
उष्णोदकानुपानेनचतस्त्ररितस्त्रएववा।
वन्हिमांद्ये प्रदातव्यावटीपचामृताशुभा ॥

अभ्रक, पारा, तावा, गधक, काली मिरच, ये सब समान ले पीछे इसे चूका के रस मे घोटे तथा अरनी, निगुंडी इनके रस की भावना देकर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, गरम जल के साथ ३ वा ४ गोली लेवे तो मदाग्नि को दूर करे। यह पचामृतावटी है।

भुक्तपाकवटिका

अभ्रं गन्धकपारदौसदरदौताम्रं सतालंशिल,

वंगचत्रिफलाविषचकुनटीभाव्यास्त्रयोदन्ति नाम। शृंगीव्योषयवानिचित्रकजलंद्वेजीरकेटकणम्॥ एलापत्रलवंगहिंगुकुटकीजातीफलसैंगन्धवम्। एतान्यार्द्रेनचित्रदन्तिसुरसामूर्वारसैर्विल्वजैः॥ प्रत्येकंदिनसंख्ययास्यसकलगाढविमर्द्यान्यत। स्याद्वल्लमितंतथाचसकलव्याधौप्रयुञ्ज्याद्बुधः। विड्बद्धेकफजेत्रिदोषजनितेह्यामानुबन्धेपिच। मन्दाग्नौविषमज्वरेचसकलेशूलेत्रिदोषोद्भवे। हत्वाधीनपिभुक्तपाकवटिकाभूयश्चसम्भोजयेत्।

अभ्रक, गन्धक, पारा, हींगलू, तावा, हरिताल, शिलाजीत, वग, त्रिफला, विष, मनसिल, प्रत्येक एक भाग, दन्ती ३ भाग, काकडासिंगी-त्रिकुटा, अजवायन, चित्रक, नेत्रवाला, सफेद जीरा कालाजीरा, सुहागा, इलायची, पत्रज, लौंग, हींग कुटकी, जायफल, सेंधानोंन, प्रत्येक एक दो भाग ले। सब का चूर्णकर अदरक, चीता, दन्ती, तुलसी, मूर्वा, और बेल इनके रसकी पृथक २ एक २ दिन भावना देवे। और दो-दो रत्ती की गोलियां बनावे, इन गोलियों को सब रोगों में देवे, बद्धकोष्ट, कफ के रोग, त्रिदोष जन्य, आम के रोग, मंदाग्नि, विषमज्वर, शूल, इत्यादि रोगों का नाश करे। और किये हुए भोजन को पाचन करे, और फिर भोजन करानेकी सामर्थ्य करे है।

भुक्तोत्तरीयावटी

माक्षिकरसगन्धौचलोहताम्रंमनःशिला।
त्रिवृद्दन्तीवारिवाहश्चित्रकंचमहौषधम्॥
पिप्पलीमरिचंपथ्यायवानीकृष्णजीरकम्।
रामठकटुपांचालीसैन्धवंचाजमोदकम्॥
जातीफलंयवक्षारंसमभागंचकारयेत्।
आर्द्रकस्वरसेनाथनिर्गुण्ड्याःस्वरसेनच।
सूर्य्यावर्त्तरसेनापिद्रोणपुष्प्यारसेनच।
आतपेभावयेद्वैद्यःस्वर्णपात्रीप्रयत्नतः॥
शोषयित्वावटींकृत्वागुञ्जाफलमितांशुभाम्॥
भक्षयेत्तांवटींप्रायोलवंगेननियोजिताम्॥
भुक्तोत्तरैयेवहुभोजनेवाआमानुबन्धौचिरमन्दवन्हौ। विट्संग्रहेवातकफानुबन्धेशोथोदरेमेहगदेप्यजीर्णे॥ शूलेत्रिदोषेप्रभवेज्वरेच सम्यक्कृतटींभुक्तविपाकसंज्ञा। सुखंविपच्याशुनरस्यकोष्ठमुहुर्मुहुर्वाञ्छतिभोजनंच॥

सुवर्णमाक्षिक, पारा, गंधक, लोह, तावा, मनसिल, निसोथ, दन्ती, अभ्रक, (अथवा नागरमोथा,) चीता, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, अजमायन, काला जीरा, हींग, सेंधा नोंन, अजमोद, जायफल, जवाखार, सब बराबर लेकर पीछे निर्गुंडी, अदरक, हुरहुर, मालकांगनी, इनके रसकी पृथक् २ भावना सोने के पात्र में देकर धूपमें सुखाता जाय। पीछे एक २ रत्ती की गोलियां बनावे। इस गोली को लौंग के साथ देवे, भोजन के पीछे अथवा बहुत भोजन कर चुका हो तब अथवा आम विकार, मंदाग्नि, मल संग्रह, वात कफ के विकार, सूजन, प्रमेह, अजीर्ण शूल और त्रिदोषज्वर में देवे। तो सब रोगों को शान्ति करे। और भोजन किये हुए आहार को पचाय वारंवार भोजन की रुचि प्रगट करे। कोई तांबे की जगह हरिताल डालना लिखते हैं।

गंधकवटी

शुद्धगन्धकभागैकसत्वंशुण्ठ्याश्चतुर्गुणम्।
निम्बुनीरेणसम्मर्द्य सप्तवारंविशेषतः॥
पुनश्चसैन्धवंक्षेप्यंयथारुचिभिषग्वरैः।
चणकप्रमिताकुर्य्यात्वटिकांरुचिदायिनीम्॥
भोजनान्तेसदादेयागन्धकाख्यावटीशुभा।

शुद्ध गंधक १ तोला, सोंठ का सत्व ४ तोला, दोनों को नींबू के रस से ७ बार घोटे, पीछे इसमें रुचि के अनुसार सैंधा नोन डाले। पश्चात् चने के समान गोलियां बनावे, यह गोली रुचि को बढावे, इस गंधकवटी को भोजन के पश्चात् देवे।

द्वितीयगंधकवटी

गन्धकस्यार्द्धपलकंचित्रकंमरिचंकणा।
प्रत्येककर्षमात्राणिपलार्द्धंविश्वभेषजम्॥

यवक्षारंत्रिलवणंकोलमात्राणिकारयेत् । निम्बुनीरेणवटिकाकुर्य्यात्कोलमिताम्बुध । दृद्बोधनीशूलहराग्रहणीदोषपाचनी । आमदोषप्रशमनीगुल्मोदावर्त्तनाशिनी ॥

गंधक २ तोला, चिते की छाल, मिरच, पीपल, प्रत्येक चार २ तोला। सोंठ २ तोला जवाखार, तीनो नोन, प्रत्येक छः २ मासे सबको नींबू के रस से खरल कर वेर के समान गोलियां बनावे। यह गोली भूंख बढावे, शूल, सग्रहणी दोष, आम दोष, गोला और उदावर्त्त रोग आदि को नष्ट करें।

तृतीयगन्धकवटी

रसार्द्धं गन्धकं शुद्धं शुण्ठीचूर्णेनतत्समम् । लवंगमरिचचापिप्रत्येकन्तुपलंभवेत् ॥ सैन्धवंत्रिपलंग्राह्यं त्रिपलंचसुवर्चलम् । चणकाम्लंपलद्वंद्वं क्षारंमूलकजंतथा ॥ मर्दयेन्निम्बुकद्रावैर्दिनसप्तखराशुभि. । बदरप्रमाणमात्रासर्वाजीर्णप्रनाशिनी ॥ चणकाम्लंतुवैदेयंचुक्रं वादेयमिष्यते ।

पारा ४ तोला, गंधक २ तोला, सोंठ का चूर्ण २ तोला, लौंग ४ तोला, मिरच ४ तोला, सेंधा निमक १२ तोला, सचर नोन १२ तोला, चनाखार ८ तोला, मूलीं का खार ८ तोला, सब को नींबू के रस से धूप में रख कर ७ दिन घोटे, पीछे झरबेर के समान गोलिया बनावे। इसके खाने से सब अजीर्ण दूर होवे। या तो चनाखार डाले या चूका उसके प्रतिनिधि डाले।

राजशेखरवटी

भागोमृतरसस्यैकोवत्सनाभांशकद्वयम् । रसतुल्यंशिवाचूर्णंगन्धकंत्र्यूषणंतथा ॥ विचूर्ण्यातिप्रयत्नेनभावयेत्सप्तधारसं । ताम्बूलीपत्रतोयेनस्वर्णधत्तूरजद्रवैः॥ पिष्ट्वाच णमिता कुर्य्याच्छायाशुष्कास्तुगोलिकाः । उ ष्णाम्भोयुतराजशेखरवटीमन्दाग्निसन्दीप नी नानाकारमहाज्वरप्रशमनीनिश्शेषरोगा पहा । पांडुव्याधिमहोदरादिशमनीशूलाष्ट निःकृतनी । श्लेष्मश्लीपदनाशिनीरसक रीदुष्टामयच्छेदनी । कामोत्साहविवर्द्धनीम तिमताप्रोल्लासिनीगुर्विबालार्कप्रतिमासुकं शजननीखालित्यरुग्गंजनी ॥ नारीणाम तिरंजनीमतिमतायूनामनोमोहिनी । सारा त्नारतराकरोतिचतनुर्बालस्यरुङ्नाशिनी ॥

चन्द्रोदय १ तोला, विष २ तोला, हरड का चूर्ण १ तोला, गन्धक, त्रिकुटा प्रत्येक एक तोला सबका चूर्ण कर नागरवेल के पानो के रस की ७ भावना देवे, धतूरे के रस की ७ भावना देकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे, और छाया मे सुखा कर एक गोली गरम जल के साथ देवे, यह गोली मदाग्नि, अनेक प्रकार के ज्वर, पाडूरोग, उदर व्याधि, आठ प्रकार के शूल, कफ के विकार और श्लीपद रोग को नष्ट करे। काम की वृद्धि करे, बुद्धि बढावे, बालसूर्य्य का-सा तेज, सुन्दर बालों को प्रगट करे, खालित्य रोग को दूर करे, स्त्रियो को प्रसन्न करे, जवानो के मन को मोहन कर्त्ता, अत्यन्त बलदायिनी और बालको के रोग को नष्ट करे।

रविसुन्दरवटी

विषगन्धरसशुण्ठीभेदीमरिचसयुतम् । पिप्पलीचात्रदातव्यावज्रीक्षीरं विभावितं ॥ धत्तूरस्यचवैर्जानिसर्वान्येकत्र कारयेत् । भावनाचत्रिधादेयादन्तीमूलस्यसप्तधा ॥ चित्रकस्यापिहेम्नश्चत्रिवृत्तश्चार्द्रकस्यच । मुद्गप्रमाणावटिकारविसुन्दरसंज्ञिका ॥ करोत्यग्निबलपुसाज्वर कासव्यपोहति । वातश्लेष्मभवानरोगान्यानन्यान्श्लेष्मस म्भवान्॥ अजीर्णंषड्विधंजित्वाकोष्ठाग्निंव र्द्धयेत्सदा । सर्वमन्दानलंहन्तिवज्रेणेन्द्रो यथाऽसुरान् ॥

विष, गन्धक, पारा, सोंठ, अम्लवेत, काली मिरच और पीपल इन सबको बराबर लेकर थूहर के दूध की भावना देवे। इनमे धतूरे के

बीज विष के तुल्य मिलाय दन्ती के काढ़े की तीन भावना देवे, चित्रक की, धतूरे के, निसोथ के काढ़े की और अदरक के रस की पृथक् पृथक् भावना देकर मूंग के समान गोलिया बनावे। यह रविसुन्दरवटी, अग्नि को बढावे, ज्वर खांसी, वात कफ के रोग तथा कफके विकार छः प्रकार का अजीर्ण, इन सब रोगों को दूर करे। सब प्रकार की मंदाग्नि इस तरह नष्ट हो जाय, जैसे वज्र से इन्द्र असुरों का नाश करता है।

भैरवीवटी

तिंतिडीकंविपशुद्धं दग्धशंखंनियोजितम्।
जातीफलत्रुटियुतंसर्वमेकत्रकारयेत्॥
रसगन्धसमरिचंनिम्बूरसविमर्दितम्।
चित्रकेनतुवारैकवटिकामाषमात्रका॥
देयायत्नेनसततंनाम्नामन्दाग्निभैरवी।
कासेश्वासेप्रतिश्यायेविपरोगादिकेज्वरे॥
सर्वरोगेषुविख्यातावटीभैरवसंज्ञिता।

तिंतडीक, शुद्ध विप, शंख की भस्म, जाय फल, इलायची, पारा, गंधक और काली मिरच, सब को एकत्र कर नींबू के रस में खरल करे। पीछे एक वार चीते के रस से घोट कर उडद के समान गोलिया बनावे। एक गोली नित्य खाने से खासी, स्वास, पीनस, विपरोग, ज्वर और मन्दाग्नि आदि सब रोगो को यह भैरवीवटी दूर करे।

वैश्वानरपोटली

शुद्धोसूतवलीचराचररजःकर्षांशतःकज्ज...। कृत्वागोपयसाविमर्द्य दिवसरुध्वाचमूपोदरे॥ सिद्धःकुम्भिपुटेस्वतश्चशिशिरःपिष्टःकरण्डे स्थितः। स्याद्वैश्वानरपोटलीतिकथिता-तीव्राग्निदीप्तिप्रदा॥ एकोनविंशतिश्चचूर्णैर्मरिचानांघृतान्वितैः। देयोयवल्लमानेनवयोबलमपेक्ष्यताम्॥ गिलेद्गलविशुध्यर्थं दधिभक्तमनुत्तमम्। कवलत्रयमानेनदुर्गंधोद्गारशान्तये॥ मध्यदिनेततोभोज्यघृततक्रोपदंशयुक्। रात्रौचपयसासार्द्धं यद्वाररोगानुसारतः॥ विदाहिविदलभूरिलवणतैलपाचितम्। बिल्वचकारवेल्लं चवृन्ताककांजिकंत्यजेत्॥ इयंहिपोटलीप्रोक्तासिंहलेनमहीभृता। मंदाग्निप्रभवाशेपरोगसघातघातनी॥ सिंहलंयविनिर्दिष्टाभैरवानन्दयोगिना। लोकनाथोक्त पोटल्याउपचारायहिस्मृतः॥ पोटल्यांदीपनाःस्निग्धामन्दाग्नौनितरांहिताः।

शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, कौडीकीभस्म, प्रत्येक एक १ तोला लेवे। और पारे गंधक की कजली कर उस में कौंडी की भस्म मिलाय गोमूत्र में १ दिन खरल करे, और मूषायंत्र से बदकर कुंभ पट में फूंक देवे, स्वांग शीतल होने पर शीशी आदि पदार्थ में बंद कर के रख छोडे, इस रस को वैश्वानर पोटली कहते हैं। २१ मिरच के चूर्ण और घृत के साथ-दो रत्ती अवस्था वल-विचार कर देवे, और इस रस को बिना दांत लगाये निगल जावे, ऊपर दही भात के तीन ग्रास दुर्गंधि दूर करनेको खावे, मध्यान्हके समय घृत छाछ, और उपदंश (जो मद्य पीने के पीछे चाटते हैं) रात्रि में इस को दूध के साथ वा रोग के अनुसार देवे, इस पोटली का सेवन कर्त्ता दाहकारी, दो दल के अन्न, अत्यंतनोन, तेल के पदार्थ, वेल, करेला, वैंगन, और कॉंजी आदि का सेवन न करे। यह पोटली सिंहल राजा की कही है। इस के सेवन से मंदाग्नि से होने वाले सब रोग दूर होवें। और अग्नि को दीपन करे, तथा मंदाग्नि में तो अत्यन्त हितकारी है।

शंखवटी.

चित्राश्वत्थस्नुहीक्षारादपामार्गोर्ककतथा।
लवणंपंचसगृह्यनतोलवणपंचकात्॥
सैंधवाद्याःसमादायसर्वमेतत्पलद्वयम्।
द्वौद्वौकर्षौपृथक्कार्यौतथाद्वौशंखचूर्णत.॥
फलत्रयाच्चकर्षैकद्विकर्षं तुलबगकम्।
एतत्सर्वं समासाद्यश्लक्ष्णचूर्णीकृतशुभम्॥

भावयेदम्लयोगेनसप्तधाचप्रयत्नतः।
रसःशंखवटीनामसेवितःसर्वरोगजित् ॥
गुंजामात्रमिमखादेद्ववेद्दीपनपाचनम्।
अजीर्णवातसम्भूतपित्तश्लेष्मभवतथा ॥
विशूचींशूलमानाहहन्यादत्रनसशयः।

इमली, पीपल, थूहर, ओंगा, आक, इन के खार पार्चोनोन, प्रत्येक ८ तोला, शंख भस्म २ तोला, त्रिफला १ तोला, लौंग २ तोलो, इन सब को ले महीन चूर्ण करे, इस से नींबू के रस की सात भावना देवे, यह शखवटी सर्व रोग नाशक हैं, १ रत्तीके प्रमाण नित्य खानेसे दीपन होवे, वात, पित्त, कफसे प्रगट अजीर्ण, विशूचिका और शूल इन का नाश करे।

द्वितीयाशंखवटी.

पलंचिंचाक्षारःपलपरिमितंपचलवणं।
द्वय ८म्यकर्पिष्ट भवतिलघुनिम्बूफलरसैः ॥
ततस्तप्त तस्मिन्पलपरिमितंशंखशकलं।
क्षिपेद्वारान्सप्तद्रवतितदनेनैवविधिना ॥
पलप्रमाणकटुकत्रयचपलार्द्धमानेनचहिंगुभागः। विपपलद्वादशभागयुक्त तावद्रसोगन्धक एपचोक्तम् ॥ बदरास्थिप्रमाणेनवटीमेतस्य कारयेत्। भक्षयेत्सर्वदासास्यात्सर्वाजीर्णप्रशान्तये। सर्वोदरेपुशूलेपुविशूच्यांविविधेपुच ॥ अग्निमाद्येपुगुल्मेपुसदाशखवटीहिता

इमलीकाखार ४ तोले, और पांचौनोन ४ तोले, दोनो को खरल करके नीबू के रससे घोटे, इस में ४ तोले शख के टुकड़े डाले, उनको सात वार नींबू के रस से बुझावे, जब गलजावे तब डाले, और सोठ, मिरच, पीपल ये ४ तोला लेवे, हींग २ तोले, विष १२ तोले, गन्धक १२ तोला, डालकर घोटे और छोटे वेर के समान गोलिया बनावे, यह सर्व अजीर्ण, सव उदर के विकार, शूल, विशूचिका और अनेक प्रकार की मन्दाग्नि, और गुल्म इन सबको यह शखवटी हित है।

तृतीयाशंखवटी.

चिंचाक्षारपलपटुव्रजपलनिम्बूरसेकल्कितम् तस्मिन्शखपलप्रतप्तमसकृत्सस्थाप्यशीर्णावधि ॥ हिंगुव्योषपलरसामृतवलीनिःक्षिप्य निष्कांशिकान्। बद्धाशखवटीक्षयग्रहणीकारुकूपक्तिशूलादिपू ॥

इमली की छाल को भस्म १ पल, पाचोनोंन १ पल, शख भस्म १ पल, (शंख को अग्नि मे जलाकर नीवू के रस मे बुझावे, जब सब गलजावे तब उस को धूप में रखकर भावना देवे, जब तक खटाई आवे, पीछे आगे और पिछाडी लिखी औषधियो को मिलावे,) हींग, सोठ, मिरच, पीपल, सब मिलाकर १ पल पारा गन्धक, और विष प्रत्येक आधा तोला ले, सब को एकत्र कर नीवू के रस से खरल कर गोलिया वनावे, इस के सेवन करने से क्षय, सग्रहणी, अजीर्ण और शूल आदिरोग दूर होवे।

चतुर्थीशंखवटी.

द्वौक्षारौरसगन्धकौसलवणौव्योषंचतुल्यविप। चिंचाभस्मचतुर्गुणंरसवरेलिम्पाकजातेकृतम् ॥ वारवारमिदंसुपाकचरितंलोहक्षिपेद्धिंगुलम्। भृष्टंवगसमसुमर्दितमिदंगुंजाप्रमाणाभवेत् ॥ ख्याताशखवटीमहाग्निजननीशूलान्तकृत्पाचनी। कासश्वासविनाशिनीक्षयहरीमदाग्निसन्दीपनी ॥ वातव्याधिमहोदरादिशमनीतृष्णामयोच्छेदनी। सर्वव्याधिविनाशिनीकृमिहरीदुष्टामयध्वंसिनी

सज्जीखार, जवाखार, पारा, गन्धक, सैधा नोन, विडनोन, त्रिकुटा, विष, ये प्रत्येक एक २ तोला, इमली की छाल की भस्म ४ तोला, सब को एकत्र करे फिर लोह की भस्म १ तोला मिला कर नींबू के रस की भावना देवे, परन्तु इतनी वस्तु और मिला लेवे, घृत की भुनी हींग और वग भस्म, प्रत्येक एक २ तोला पीछे एक २ रती की गोलिया वनावे, यह शखवटी इस नाम से विख्यात रस इसके सेवन से अत्यन्त जठराग्नि बढे, तथा वातव्याधि, महा उदर

रोग, तृष्णा, कृमिरोग, शूल, खासी, श्वास, आदि सब रोग नाश होवे।

पंचमीमहाशंखवटी

पटुपचकहिंगुशखचिंचाभमितव्योषवलीश्च रामृतानि। शिखिशैखरिकाम्लवर्गनिम्बूभ्र शभाव्यानियथाम्लताव्रजन्ति ॥ महाशख वटीख्याताभोजनान्तेप्रयोजिता। दीपनी हन्त्यपस्मारसेहार्शोग्रहणीमुखान् ॥

पाचोनोंन, हींग, शख की भस्म, इमली की भस्म, त्रिकुटा, गन्धक, पारा, और विष प्रत्येक समान लेवे, चीते और ओंगा के काढे की भावना दे, पीछे नींबू के रस की भावना खटाई आने पर्यंत देवे, अग्निको दीप्त करे,मृगी रोग, प्रमेह, बवासीर, सग्रहणी आदि रोगों को नाश करे, इसमें अम्लवर्ग की भी भावना देवे।

षष्ठी महाशंखवटी

दग्धशखस्यचूर्णंहितथालवणपंचकं।
चिंचिकाक्षारकचैवकटुकत्रयमेवच॥
तथैवहिंगुकंत्राह्यंविषगन्धकपारदम्।
अपामार्गस्यवन्हेश्चक्काथैर्लिम्पाकजैरसै ॥
भावयेत्सर्वचूर्णन्तदम्लवर्गैर्विशेषतः।
यावत्तदम्लतायातिगुटिकामृतरूपिणी॥
सद्योवन्हिकरीचैवभस्मकचनियच्छति॥
भुक्ताकण्ठन्तुतस्यान्तेभक्षयेच्चगुटिकामिमाम्
तत्क्षणाज्जारयत्याशुसर्वाजीर्णविनाशिनी।
ज्वरंगुल्मपाण्डुरोगंकुष्ठशूलप्रमेहकम्॥
वातरक्तमहाशोथवातपित्तकफानपि।
दुर्नामारिरयचाशुदृष्टोवारसहस्रश.॥
निर्मूलयत्यतेशीघ्रलुनकवन्हिनायथा।
लोहवगयुतामेयमहाशखवटीस्मृता॥
प्रभातेकोष्णतोयानुपानमेवप्रशस्यते।
जम्बीरबीजपूरचमातुलुंगकचुक्रकम्॥
चागेरीतिंतिडीचेवबदरीकरमर्दकम्।
अष्टावम्लस्यवर्गोयकथितोमुनिपुगवै.॥

शख की भस्म, पाचोनोन, इमली की खाल का खार, त्रिकुटा, हींग, विष, पारा, गन्धक ये सब वस्तु समान लेवे, सब को एकत्र कूट पीस ओंगा और चीते की छालके काढेमें नीबूके रससे और अम्लवर्ग में खट्टा न हो तब तक घोटे, इस प्रकार अमृत रूप गुटिका बने दो २ रत्ती की गोलिया बनावे, यह तत्क्षण अग्नि को वृद्धी करे, भस्मक रोग को दूर करे, कंठ पर्य्यन्त भोजन करके इस गोली को खाय तो तत्काल अन्न पचजावे, ज्वर, गोला, पांडुरोग कुष्ठ, शूल, प्रमेह, वातरक्त, घोर सूजन, वात-पित्त, और कफ के रोग, और बवासीर को तो जड से उखाड देता है, ऐसा हजारो बार देखा गया है, यदि इसमें लोह भस्म और वंग मिला-दी जावे तो यही महाशंखवटी कहाती है, प्रातः काल गरम जल के साथ इस गोली का सेवन करना चाहिये, जभीरी, बिजौरा, मातु लुंग (बिजौरे का भेद जिसको चकोतरा कहते हैं) तितडीक, चूका, इमली, बेर, और करोंदा इन आठ वस्तुओं को अम्लवर्ग कहते हैं।

सप्तमीमहाशंखवटी

कणामूलंवन्हिदन्तीपारदंगन्धकंकणा।
त्रिक्षारपचलवणमरिचनागरविषम्॥
अजमोदामृताहिंगुक्षारतिंतिडिकाभवम्।
सचूर्ण्यसमभागन्तुद्विगुणंशखभस्मकम्॥
अम्लद्रवेणसभाव्यवटीकोलास्थिसम्मिता।
अम्लदाडिमतोयेनलिम्पाकस्वरसेनच॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थायनाम्नाशखवटींशुभा।
तक्रमस्तुसुरासीधुकांजिकोष्णोदकेनच॥
शशैणादिरसेनैवरसेनविविधेनच।
मंदाग्निंदीपयत्याशुवडवाग्निसमप्रभम्॥
अर्शासिग्रहणीरोगकुष्ठमेहभगन्दरम्।
प्लीहानमश्मरींश्वासकासमेहोदरकृमीन्॥
हृद्रोगपाण्डुरोगचविविधानुदरस्थितान्।
तान्सर्वान्नाशयत्याशुभास्करस्तिमिरंयथा॥

पारा, गन्धक, पीपल, जवाखार, सज्जीखार,

सुहागा, पांचौनोन, कालीमिरच, सोठ, विष, अजमोद, गिलोय, हींग, और इमली का खार, सब को एक एक तोला लेवे, शख की भस्म दो तोला, इन सब को अम्लवर्ग के रस की भावना देकर बेर की गुठली के प्रमाण गोलिया बनावे, खट्टे अनार का रस नीबू का रस, छाल, दारू, सिरका, काजी, अथवा गरम जल इनके साथ सेवन करे, तो तत्काल मदाग्नि को प्रज्वलित करे, बवासीर, सग्रहणी, कोढ,प्रमेह, भगन्दर, प्लीह, पथरी, श्वास, खांसी उदर, कृमी, हृद्रोग, पाडु-रोग, इन सब रोगो का नाश करे, इस पर ससे और हिरन का मास खाना पथ्य है ।

अष्टमीबृहच्छंखवटी

स्नुगर्कचिंचाऽपामार्गरम्भातिलपलाशजान् ।
क्षाराश्चभिषगादद्यात्प्रत्येकंपलमात्रया ॥
लवणानिपृथकपचग्राह्याणिपलमात्रया ।
सर्जिकाचयवक्षारंटकणत्रितयपलम् ॥
सर्वंत्रयोदशपलमूदमचूर्णविधायतु ।
निम्बूफलरसेप्रस्थसम्मितेतत्परिक्षिपेत् ॥
तत्रशंखस्यशकलपलवन्हौप्रताप्यतु ।
वारान्निर्वापयेत्सप्तसर्वद्रवतिसप्तधा ॥
नागरत्रिपलग्राह्य मरिचचपलद्वयम् ।
पिप्पलीपलमानास्यात्पलार्द्धं अष्टांगुल ॥
ग्रंथिकचित्रकचापियवानीजीरकतथा ।
जातीफललवगचपृथक्कर्षद्वयोन्मितम् ॥
रसोगन्धोविषंचापिटकणचमन शिला ।
एतानिकर्षमात्रानिसर्वं सचूर्ण्यमिश्रयेत् ॥
सरावार्द्रेनचुकेणसन्नीयवटिकाचरेत ।
मासप्रमाणासावैद्यैर्बृहच्छखवटीस्मृता ॥
सर्वाजीर्णप्रशमनीसर्वशूलनिवारिणी ।
विशूच्यलसकादीनासद्योभवतिनाशिनी ॥

थूहर, आक, इमली, ओगा, केला, तिल, और ढाक इनका खार, चार २ तोले लेवे, और पाचौनोन प्रत्येक चार २ तोले सज्जीखार, जवाखार, और सुहागा तीनो एक २ पल इस प्रकार सब मिलाकर ५२ तोले हुए, इनका बारीक चूर्ण कर ६४ तोले नीबू के रस से डाल देवे, पीछे ४ शख के टुकडे लेवे, इनको अग्नि तोले से तपा पूर्वोक्त नीबू के रस मे बुझावे, इस प्रकार बार बार बुझावे, ऐसे सात बार करने से सब शख के टुकडे उस रस से मिल जावेगे, पीछे १२ तोले सोठ, मिरच ८ तोले, पीपल ४ तोले, भुनी हींग २ तोले, पीपला मूल, चित्रक, अजवायन, जीरा, जायफल, लौंग ये प्रत्येक, दो २ तोला लेवे, पारा, गन्धक, विष, सुहागा, और मनसिल ये प्रत्येक एक २ तोला, इस प्रकार सब को ले चूर्ण कर १६ तोले चूका (वा अम्लवेत) के रस मे मिलाकर खरल करे और एक एक माशे की गोलियां बनावे, इस को बृहच्छंखवटी कहते हैं, इसके सेवन से सब प्रकार का अजीर्ण, शूल, विशूचिका, अलसक आदि को तत्काल शान्ति करे ।

लघुक्रव्यादरसः

पारदाद्द्विगुणंगन्धमर्द्धांशमृतलोहकम् ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलमग्निशुंठीलवगकम् ॥
लोहसाम्यंपृथककुर्य्याद्रससाम्यसुवर्चलम् ।
टकणमरिचचापिगन्धतुल्यप्रदापयेत् ॥
एतद्विचूर्ण्ययत्नेनभावयेत्सप्तधाम्लकैः ।
एतद्रसायनश्रेष्ठमाषमात्रप्रदापयेत् ॥
तक्रेणकेवलवापिमद्याद्भोजनपाचने ।
क्षिप्रतज्जीर्यतेभुक्त दीपनभवतिध्रुवम् ॥
सर्वाजीर्णप्रशमनंलघुक्रव्यादसज्ञितम् ।

पारा २ तोला, गन्धक २ तोला, लोह भस्म ६ माशे, पीपल, पीपला मूल, चीता, सोठ, लौंग, प्रत्येक छ छ माशे, सचर नोन १ तोला, सुहागा, काली मिरच, दोनो दो २ तोले, इन सब औषधियो को एकत्र कर अम्ल वर्ग की ७ भावना देवे, यह परमश्रेष्ठ रसायन है, एक महीने पर्य्यंत छाछ के साथ अथवा केवल रस ही भोजन पचाने को देवे, तो तत्काल किया हुआ भोजन भस्म होवे, और अग्नि दीपन होवे, यह

लघुक्रव्याद रस सर्व अजीर्णों का नाशक है।

क्रव्यादरसः

मस्तुनिम्बुरसप्रस्थंतृतीयाशार्द्रकान्वितम्।
वरागैलापलदेवपुष्पपंचदशस्मृतम्॥
टकणवन्हिसहितमलार्द्धं कटुकत्रयम्।
वरसार्द्धपलपर्वपिष्ट्वासंशोध्यवाससा॥
रस क्रव्यादसंज्ञोयंराजारामप्रकाशितः।

छाछ और नींबू का रस ६४ तोले, तथा अदरक का रस २१ तोले, हरड, वहेडा, आवला १६ तोले, इलायची ४ तोले लौंग १५ तोले, सुहागा, चीते की छाल, ये दो दो तोला। सोठ, मिरच और पीपल प्रत्येक छ: छ: तोला। सबका चूर्ण कर कपरछन करे, पूर्वोक्त छाछ और नींबूके रस मे मिला देवे। तो यह राना राम का कहा क्रव्याद सज्ञक रस बने, इसके खाने से अत्यन्त क्षुधा बढे।

क्रव्यादरसः

पलरसस्यद्विपलवले.स्याच्छुल्कायसोचार्द्धप
लप्रमाणं। विचूर्ण्यसर्वंद्रुतमग्नियोगादेरण्डप
त्रेथनिवेशनीयम्। कृत्वाथतांपर्पटिकांविद
ध्याल्लोहस्यपात्रे वरपूतमस्मिन। जम्बीरज
स्यकरसपलानिशतनियोज्याग्निमहाल्पमा
त्राम। जीर्णेरसेभावितमेतदेतै.सुपचको
लोद्भवयवारिपूरैः। सवेतसाम्लै शतमत्रदेय
समरजष्टवणजसुभृष्टम्। विडतदर्द्धं मरिचस
मच। नत्सप्तधार्द्रांचणकाम्लवारा। क्रव्या
दनामाभवतिप्रसिद्धोरसस्तुसस्थानकभैरवो
क्तः। माषद्वयसैन्धवतक्रपीतमेतस्यधन्यैः स्व
लुभोजनान्ते। गुरूणिमासानिपयांसिपिष्टो
कृतानिसेव्यानिफलानिकैव। मात्रातिरिक्ता
न्यपिसेवितानियामद्वयाज्जारयतिप्रसिद्धः॥

पारा ८ तोले, गधक ८ तोले, तावे की भस्म ८ तोले, लोह भस्म ८ तोले, इन सबको एकत्र कर चूर्ण करे, और लोह पात्र में रखकर मन्दाग्नि से पर्पटी के सदृश करे। पीछे जबीरी का रस १०० पल मिलावे, और थोडा २ पाक करे। जब सब रस सूख जाय तब ५० पल पचकोल का काढा तथा ५० पल अम्लवेत का काढा इनकी भावना देवे, ४ पल सुहागा २ पल विडनोन और १० पल काली मिरच का चूर्ण मिला कर चनाखार के जल की ७ भावना देवे। पीछे इसकी गोली बनावे, यह संस्थानक भैरव का कहा हुआ क्रव्याद नामक रस है। २ माशे रस सैंते नोन और छाछ के साथ देवे। इसके ऊपर गुरू पदार्थ, मांस, दूध, मैदा, सूजी, आदि पिष्ट पदार्थ और फलादि खाना पथ्य है। यदि अनुमान से अधिक भी भोजन कर जाय तो वो सब इस रस के प्रभाव से दो ही प्रहर मे भस्म हो जांय।

बृहत्क्रव्यादरसः

द्विपलंगन्धकशुद्धंद्रावयित्वाविनिक्षिपेत्।
पारदपलमानन्तुमृततुल्यायसपुन॥
ततोविचूर्ण्ययत्नेनलोहपात्रे विचक्षणः।
स्थापयेच्चरसंतत्रपात्रंचोपरिनिक्षिपेत्॥
वस्त्रपूततत कृत्वालोहपात्रे विनिक्षिपेत्॥
पलमानेनसंमिश्रयपचाशुलदलेक्षिपेत्॥
मृद्वग्निनापचेत्तत्तुदर्व्यासचालयेन्मुहु।
पलमात्रसशुद्ध दद्याज्जम्बीरकस्यतु॥
सचूर्ण्यपचकोलोत्थै कषायैःसाम्लवेतसै.।
भावना.किलदातव्या.पचाशत्प्रमिता:पृथ
क्॥ भृष्टटकणचूर्णंचतुल्येनसहमेलयेत्। त
दर्द्धं कृष्णलवणमरिचसर्वतुल्यकम्। सप्तधा
भावयेत्पश्चाच्चणकक्षारवारिणा॥ ततःसशो
ष्यवैपश्चात्कूप्याश्चजठरेक्षिपेत्। अत्यर्थगुरु
मांसानिगुरुभोज्यान्यनेकश॥ भुक्त्वाचा
कण्ठपर्य्यतचतुर्वल्लमितोनर। कट्वम्लतक्र
सहितपीतमात्रे विपाचयेत्॥ पुनर्भोजयति
क्षिप्रकापुनर्मन्दवन्हिता। रस क्रव्यादनामा
यप्रोक्तोमथानभैरवै॥ सिंहलक्षोणिपाल
स्यभूरिमासप्रियस्यच। पुनर्भोजनकामस्यभै

रवानन्दयोगिना ॥ कुर्य्याद्दीपनमूर्ध्वजत्रु ग दहृत्कुष्ठामसंशोधनम् । स्कधस्थौल्यनिबर्हणोगदहरःशूलार्त्तिमूलापहः ॥ गुल्मप्लीह विनाशकोग्रहरुजांविध्वंसनोवातहृद्वातग्र थि हरोमदापहरणःक्रव्यादनामारसः ॥

गन्धक ८ तोला लेकर लोहे के पात्र मे पतली करे, पीछे उसमे पारा, ताम्र भस्म, और लोह भस्म, इनको चार २ तोला मिलावे, सब को पीस लोहपात्र मे रख कर अग्नि देकर फिर थोड़ा पतला करके सुखा लेवे। फिर लोहपात्र मे अंड के पत्ते पर रखकर मदाग्नि से पाचन करे, और लोहे की कलछी से बारंबार चलाता रहे, पीछे ४ तोला जभीरी नींबू का रस और पंचकोलका काढा और अमलवेत इनकी पृथक् २ पचास २ भावना देवे, पीछे भुना सुहागा ४ तोला मिलावे, काला नमक २ तोला, और सब औषधियो के बराबर काली मिरच मिलावे। सबको चनाखार के जल की सात भावना देवे। पीछे सबको सुखाय सीसी मे भर कर रख छोड़े, जब काम पड़े तब ८ रत्ती खाय, अत्यन्त भारी मास के पदार्थ और मैदा आदि के गरिष्ट पदार्थ कठ तक भोजन किये हुए को यह रस कटु रस, अम्ल रस, छाछ, इनमे से किसी एक के साथ खाने से तत्काल पचाय देवे, और पुन भोजन करने की इच्छा होवे, फिर मदाग्नि तो दूर होना कितनी बात है? यह मथान भैरव का कहा क्रव्यादनामारस है, अत्यन्त मास का भोजन करने वाला और बारबार भोजन की इच्छा करने वाला, ऐसे सिहल देश के राजा को भैरवानन्द योगी ने यह रस कहा था, यह रस अग्नि को दीप्त करे, कंठरोग, कुष्ठ और आम का रोग, इनको सशोधन करे, हाथ पैर की स्थूलता को दूर करे। शूल बवासीर, गुल्म, प्लीह, वात, ग्रंथि रोग, उन्माद रोग, इन सब का नाश करे।

लब्धानन्दरसः

पारदगन्धकलोहमभ्रकविषमेवच।
समाशमरिचचाष्टौटकणाचचतुर्गुणम्।
भृंगराजरसैःसप्तभावनाचाम्लदाडिमैः ॥
गुंजाद्वयंपर्णखण्डैःखादेत्सोयनिहन्तितान्।
वातश्लेष्मोद्भवान्रोगान्मन्दाग्नीन्ग्रहणी ज्वरान् ॥ अरुचिंपाण्डुतांचैवजयेद्चिरसेवनात्।

पारा, गन्धक, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, विष, ये प्रत्येक समान भाग लेवे। तथा मिरच ८ भाग लेवे, सुहागा ४ भाग, इस प्रकार सबको एकत्र करके भागरा, तिंतडीक तथा अनारदाने इनकी सात २ भावना देकर दो २ रत्ती की गोलिया बनावे। १ गोली पान के साथ खाने से वादी, कफसे उत्पन्न हुए रोग, मन्दाग्नि, सग्रहणी, ज्वर, अरुचि, पाण्डु रोग इनका शीघ्र ही नाश करती है।

राजवल्लभरसः

रसनिष्कंगन्धकैकनिष्कमात्रंप्रदीपनम्।
सार्द्धपलप्रदातव्यचूलिकालवणंततः ॥
खल्लेनमर्दयेत्तत्तुसूक्ष्मवस्त्रेणगालयेत।
माषमात्रंप्रदातव्योभुक्तमांसादिजारकः ॥
अजीर्णेपुत्रिदोषेपुदेयोयंराजवल्लभः।

पारा ४ माशे, गन्धक १ तोला, विष ४ माशे, नोसादर ६ तोला, इन सबको खरल कर कपरछन करे, और जल से एक २ माशे की गोलिया बनावे, एक गोली नित्य खाने से मासादि खाये हुए को भस्म करे, अजीर्ण, त्रिदोष, आदि रोगो में इस राजवल्लभ रस को देना चाहिये।

वह्निनामकरसः

जातीजातंत्रिकर्षंमरिचमपिपलचार्द्धकर्षप्रमाणं। गन्धसूतंलवगविषमिदमखिलंचिंचिणींसस्यतोये ॥ विष्टामाषैकमात्रावितरतिदहनंवन्हिमाद्येचसद्यो। रोगाञ्छूलानिलादीन्दहतिकृतगुणोवह्निनामारसोय ॥

जावित्री १॥ तोला, मिरच ४ तोला, गधक ६ माशे, पारा ६ माशे, लौंग ६ माशे, विष ६ माशे, इन सब को पकी इमली के रस से खरल

कर एक २ मासे की गोलिया बनावे, इनके सेवन से जठराग्नि की वृद्धि होवे, शूल, वादी आदि अनेक रोगों को यह वन्हिनामक रस दूर करे।

अग्निमुखरसः

सूतगन्धंविषतुल्यमर्दयेदार्द्रकद्रवैः।
अश्वत्थंचिचापामार्गक्षारःक्षारोचटकणम्॥
जातीफललवंगंचत्रिकटुत्रिफलासमम्।
शंखक्षारंपचलवणंहिंगुजीरंद्विभागकम्॥
मर्दयेदम्लयोगेनगुंजामात्रंवटीकृता।
पाचनीदीपनीसद्योजीर्णशूलविशूचिका॥
हिक्कागुल्मचोदरचनाशयेन्नात्रसंशयः।
रसेन्द्रसंहितायांचनाम्नावन्हिमुखोरसः॥

पारा, गन्धक, और विष बराबर लेकर अदरक के रस मे खरल करे, पीछे पीपल, इमली और ओंगा इनके खार सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, जायफल, लौंग, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड बहेडा, आवला, शंख की भस्म, हींग, जीरा, पांचों नोन, प्रत्येक दो-दो भाग लेवे, सब को नींबू के रस मे खरल कर एक एक रत्ती की गोलिया बनावे। यह गोली पाचन है, अग्नि को दीपन करे, अजीर्ण और विशूचिका को तत्काल नाश करे, हिचकी, गोला, उदर रोग का नाश करे, यह वन्हिमुख रस रसेन्द्र संहिता मे लिखा है।

अजीर्णारिरसः

शुद्धंसूतगन्धकचपलमानंपृथक्पृथक्।
हरीतकाचद्विपलानागरस्त्रिपल स्मृतः॥
कृष्णाचमरिचन्द्वंसिंधुत्थंत्रिपलंपृथक्।
चतुःपलाचविजयामर्दयेन्निंबुकद्रवैः॥
पुटानिसप्तदेयानिघर्ममध्येपुनःपुनः।
अजीर्णारिरयंप्रोक्तःसद्योदीपनपाचनः॥
भक्षयेद्द्विगुणंनित्यंपाचयेद्रेचयेदपि।

शुद्ध पारा ४ तोले गंधक ४ तोले, हरड ८ तोले, सोंठ १२ तोले, पीपल, मिरच सेंधा नोंन, प्रत्येक बारह १२ तोले, भांग १६ तोले, इन सब का चूर्ण कर धूप मे नींबू के रस के ७ पुट देवे, यह अजीर्णारि रस दीपन और पाचन है, इसके सेवन से मनुष्य दूना भोजन करने लगे और यह दस्तावर है।

बृहन्महोदधिरसः

दन्तीबीजमकल्मषंदहनंशुण्ठीलवंगसमं।
गन्धंपारदटंकणचमरिचंश्रीवृद्धदारुविषम्॥
खल्वेदंडयुगंविमर्द्यविधिनादन्तीद्रवैर्भावितम्। देयापंचदशानुनिम्बुकजलैस्त्रैधात्रिधाचित्रके॥ त्रेधाचार्द्रकजैरसैःशुभधियासप्तैवचावेगिना। पश्चात्क्षुद्रकलायसम्मितवटीकार्याभिषक्सम्मिता॥ क्षुद्बोधप्रकरीत्रिशूलशमनीजीर्णज्वरध्वंसिनी। कासाऽरोचकपाण्डुतोदरगदैःसामरुजाशिनी॥ वस्त्याटोपहलीमकामयहरीमन्दाग्निसन्दीपनी। सिद्धियातिमहोदधिप्रकटितासर्वामयघ्नीसदा॥

शुद्ध जमालगोटा, चीते की छाल, सोंठ, लौंग, पारा, गंधक, सुहागा, काली मिरच, विधायरा, और विष, इन सबको बराबर ले, दन्ती के रस से दो दंड खरल करे, इस प्रकार १५ पुट देवे, तीन पुट नींबू के रस के देवे, ३ पुट चित्रक के रस के देवे, ३ पुट अदरक के रस के देवे, ३ भावना बरयारे के रस की देकर मटर के समान गोलिया बनावे, यह भूख को बढावे, शूल, अजीर्ण, ज्वर, खासी, अरुचि, पांडु, उदर, आमवात, वस्ती फूलना, हलीमक और मंदाग्नि को दूर करे।

पाशुपतरसः

कर्षंसूतद्विधागन्धंत्रिभागंभस्मतीक्ष्णकम्।
त्रिभिःसमविषंयोज्यंचित्रकद्रवभावितम्॥
द्विधात्रिकटुकंयोज्यंलवंगैलातुतत्समे।
जातीफलजातिपत्रीचार्द्धभागमितंसमम्॥
तथार्द्धंपंचलवणंस्नुह्यर्कौचापितिंतिणी।
अपामार्गोश्वत्थपालवणंचपलार्द्धकम्॥

टकणयावकक्षारस्वर्जिकाहिंगुजीरक ।
हरीतकीसूततुल्यामर्दयेदम्लयोगतः ॥
धूर्त्तबीजस्य भस्मन्तुसवैसप्तमभागतः ।
रसःपाशुपतोनामप्रोक्तःप्रत्ययकारकः ॥
गुंजामात्रावटीकार्य्यासर्वाजीर्णविनाशिनी ।
मोचरसेनातिसारंग्रहणींतक्रसैंधवैः ॥
शूलेनागरकशस्तहिंगुसौवर्चलान्वितम् ।
अर्शस्तुतक्रेणहितापिप्पलीराजयक्ष्मणि ॥
वातरोगनिहन्त्याशुशुंठीसौवर्चलान्विता ।
गुडूचीशर्करायोगात्पित्तरोगविनाशिनी ॥
पिप्पलीक्षौद्रयोगेनश्लेष्मरोगनिकृंतति ।
अतःपरतरानास्तिधन्वतरमतेवटी ॥

पारा १ तोला, गंधक २ तोला, और कान्त भस्म ३ तोला, इन सबकी बरावर विष लेवे। सबको चीते के रस से खरल करे, और सोंठ, मिरच, पीपल ये २ तोला, लौंग, इलायची के वीज २ तोला, जायफल और जीवित्री दोनो दो तोला, पाचौनोन ५ तोला, थूहर, आक, इमली ओंगा (चिरचिरा) पीपल इन सबका खार प्रत्येक दो तोला, सुहागा, सज्जीखार, जवाखार, हींग, जीरा और हरड,प्रत्येक एक २ तोला, सबको नींबू के रस अथवा अम्लवर्ग से घोटे, और धतूरे के बीजो की भस्म ७ तोला मिलावे, पीछे खरल कर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, यह गोली सब अजीर्णो का नाश करे, मूसली और छाछ के साथ खाने से उदररोग, मोचरस के साथ खाने से अतिसार, छाछ और सैंधेनोन के साथ सग्रहणी, शूलरोग मे सोंठ कालेनोन और हींगके साथ देवे, बवासीर मे छाछ के साथ खई रोग मे पीपल के साथ, वात रोग मे सोंठ और काले नोन के साथ, पित्तजरोगो में गिलोय और मिश्री के साथ, कफके रोगो मे पीपल और शहत के साथ देवे, तो उक्त रोग दूर होवे, इस से परे अन्यवटी धन्वतर के मत मे उत्तम नही है ।

अजीर्णकंटकरसः

शुद्धसूतविषगधकसमंतुल्यभागमरिचंचचूर्णितम् । मर्दयेत्तुबृहतीफलद्रवैरेकविंशतिविभावितपुनः ॥ गुंजिकात्रयमिदंसुभक्षितंसद्यएवजठराग्निवर्द्धनम् । एषकटकरसोविशूचिकाजीर्णमारुतगदान्निहन्तिच ॥

शुद्धपारा, विष गन्धक, ये बराबर ले, इन तीनों के बरावर मिरच का चूर्ण लेवे, सब को कटेरीके रसकी २१ भावना देवे, और तीन तीन रत्ती की गोलिया बनावे, इस के सेवन से जठराग्नि तत्काल वढे, यह अजीर्ण कटक रस विशूचिका अजीर्ण और वादी आदि के अनेक रोग नाश करे ।

आदित्यरसः

दरदंचविषंगन्धत्रिकटुत्रिफलासमम् ।
जातीफललवगचलवणानिचपचवै ॥
सर्वमे-ीकृतचूर्णमम्लयोगेनसप्तधा । भावयित्वावटींकुर्य्याद्गुंजार्द्धप्रमिताबुधैः ॥ रसोह्यादित्यसंज्ञोयमजीर्णक्षयकारकः । भुक्तमात्रंपाचयतिजठरानलदीपनः ॥

हीगलू, विष, गंधक, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, जायफल, लौंग, पाचौंनोन, इन सब को एकत्र कर चूर्ण कर अम्लवर्ग से खरल कर सात भावना देवे, पीछे आधी २ रत्ती की गोलिया बनावे, यह आदित्यरस अजीर्ण नाशक है, जो खाय वो तत्क्षण पचे और अग्नि प्रदीप्त होवे ।

चिंतामणिरसः

रसगन्धमृतशुल्वमृतमभ्रंपलत्रिकम् ।
त्र्यूषणजयपालचसमंखल्वेविमर्दयेत् ॥
द्रोणपुष्पीरसैर्भाव्यशुष्कंतद्वस्त्रगालितम् ।
चिन्तामणिरसोह्येषअजीर्णेशसतेसदा ॥
ज्वरमष्टविधहन्तिसर्वशूलहर.परः ।
गुंजैकवाद्विगुंजंवाआमवातहरःपर. ॥

पारा, गन्धक, तांबे की भस्म, अभ्रक, त्रिफला, त्रिकुटा, शुद्धजमालगोटा के बीज, सब को समान लेवे, और चूर्ण कर द्रोणपुष्पी

(गोमा) के रस मे खरल कर एक या दो-दो रत्ती की गोलियां बनावे, इस चिंतामणीरस को अजीर्ण से देवे, यह आठ प्रकार के ज्वर, सब प्रकार के शूल, और आमवात का नाश करे ।

वीरभद्राभ्रकम्

अभ्रकंपुटसहस्रमारितंकर्णयुग्ममतिनिर्मलीकृत । वासराणिनवतिंविमर्दितचित्रकस्वरससाधुसिन्क्तम् ॥ शृंगवेररसमर्दितावटीकारितासकलरोगनाशिनी । भक्षिताभुजगवल्लिपत्रकैःशृंगवेरशकलेनवापुनः ॥ वन्हिमाद्यभिनाश्यसत्वरंकारयेत्प्रखरपावकोपरम् । श्वासकासवमिशोथकामलांप्लीहगुल्मजठरारुचिप्रभान् ॥ रक्तपित्तयकृदम्लपित्तकंशूलकोषजगदान्विषूचिकाम् । आमवातबहुवातशोणितंदाहशीतबलह्रासकार्श्यकम् ॥ विद्रधिज्वरगरशिरोगदंनेत्ररोगमखिलंहलीमक । हंतिवृष्यतममेतदभ्रकंवीरभद्रमतिवल्यमुत्तमम् ॥ भक्षितविविधभक्ष्यमागलंकाष्ठसंघमपिभस्मतांनयेत् ।

हजार पुट की अभ्रक भस्म २ तोला लेकर ९० दिन चीते के रसमे खरल करे,पीछे अदरक के रस की भावना देवे, और गोलिया बनावे, नागरवेल पान अथवा अदरक के टुकडों के साथ खाय तो मदाग्नि, श्वास, खांसी, शूल और विशूचिकादि जो उक्त रोग हैं सब नाश होवे यह वीरभद्राभ्रक वृष्य है ।

विश्वोद्दीपकाभ्रम्.

अभ्रनिर्मलमारितपलमितचूर्णीकृतयत्नत । अव्यचित्रकमिन्द्रसूरकनकमालूरपत्रार्द्रकम् ॥ मूलपिप्पलिमम्भवंमधुरिकानीपोर्कमूलप्रथक् चेषांसत्वपलैर्विमर्दितामदकर्ष क्षिपेत्टकणम् । गुंजासमितमेतदेववलिततत्पारिभद्रद्रवैः मन्दाग्निंचिरजातगुल्मनिचयंशूलाम्लपित्तज्वरं ॥ छर्दिदुष्टमसूरिकामलसकश्वासंचकासतृषाम् । प्लीहानयकृतंक्षयंस्वरहितकुष्ठमहारोचकम् ॥ दाहंमोहमशेषदोषजनितकृच्छ्रंचतुर्भामक मामवातविमिश्रितनयनजंरोगंसमुन्मूलयेत् ॥ विश्वोद्दीपकनामरोगहरणेप्रोक्तंपुराशम्भुना । सर्वेषांहितकारकगदवतां सर्वामयध्वमनम् ॥ पाषाणयदिभक्षितंतदपितंकुर्य्यान्नसजीर्णं पुनः । वल्यवृष्यतरम्सायनवरंमेधाकरंकान्तिदम् ॥

अभ्रक १ पल, चव्य १ पल, दोनो को एकत्र कर चीता, संभालू, धतूरा, बेल इन प्रत्येक के पत्तों का रस १ पल ले, उसी प्रकार पीपलामूल, सोंफ, कदंब और आक की जड इन प्रत्येक के १ पल काढे की भावना पृथक् २ देवे, दो तोले सुहागा मिलाय दो-दो रत्तीके प्रमाण गोलियां बनावे १ गोली नीम के रस के साथ खाय तो बहुत दिनो की मदाग्नि, गोला, शूल, अम्लपित्त, ज्वर, छर्दि, दुष्टशीतला, अलसक, श्वास, खांसी, प्यास, प्लीह, यकृतकेरोग, खई, स्वरभग, कोढ, अरुचि, दाह, मोह, अनेक प्रकार की बवासीर, आमवात, नेत्ररोग, यह विश्वोद्दीपक नाम से विख्यात अभ्रक प्रथम श्री शिवने कहा है,सर्व मनुष्यों को हितकारक गुदों के रोगों का नाशक, यदि पत्थर खा लिया हो उसको भी भस्म करदे बल करे, वीर्य बढावे, रसायन है, बुद्धि को बढ़ावे, और देह की दिव्यकाति करे हैं ।

इतिश्री बृहद्रससराजसुन्दरस्य उत्तरखंडस्य पूर्वभागःसमाप्तः

अथ बृहद्रसराजसुन्दरस्योत्तरखण्डस्योत्तरभागः

प्रारंभः

क्रमिरोगेकीटमर्दोरसः

शुद्ध सूतशुद्धगधमजमोदाविडगकम् ।
विषमुष्टीब्रह्मदण्डीयथाक्रमगुणोत्तरम् ॥१॥

चूर्णयेन्मधुनामिश्रंनिष्कैकंकृमिजिद्भवेत् ॥२॥
काटमर्दो रमोनामंमुस्ताक्काथपिवेदनु ।
अत्रब्रह्मदण्डीभार्गी ॥

शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोले, अजमोद ३ तोले, वायविडंग ४ तोले, कुचला ५ तोले, ब्रह्मदण्डी ६ तोले, सब को कूटपीस चूर्ण कर मात्रा चार तोले की बनावे अनुपान सहत और नागरमोथा का काढा इसके सेवन करने से कृमि रोग नष्ट होता है, (कोई ब्रह्मदण्डी की प्रतिनिधि में भारंगी कहते हैं)

कृमिमुद्गरोरसः

क्रमेणवृद्धं रसगंधकाजमोदा
विडंगविषमुष्टिकाच ।
पलाशबीजंचविचूर्णमस्य
निष्कप्रमाणंमधुनावलीढम् ॥१॥
पिबेत्कषायंघनजतदूर्ध्वं
रसोयमुक्तःकृमिमुद्गराख्यः ।
कृमीन्निहन्तिकृमिजाश्चरोगान् ।
संदीपयत्यग्निमयंत्रिरात्रात् ॥२॥
सुश्रुतमानेन ४ माषा. ।

पारा १ तोला, गन्धक २ तोले, अजमोद ३ तोले. वायबिडंग ४ तोले, कुचला ५ तोले, ढाक के बीज ६ तोले, सबको एकत्र मर्दन कर चार माशे सहत के साथ सेवन करे ऊपर से मोथा का काढा पीवे, तो यह कृमि मुद्गरस तीन दिन में कृमि रोग तथा कृमिजन्य विकारो को दूर करे और अग्नि को दीप्त करे ।

कीटारिरसः

शुद्धसूतमिन्द्रयवचाजमोदामनःशिला ।
पलाशबीजगंधचदेवदाल्याद्रवैर्दिनम् ॥
समंचं भक्षयेन्नित्यमुद्गपर्णीरसैःसह ।
सितायुक्तं पिवेच्चानुकृमिपातोभवत्यलम् ॥२॥

पारा, इन्द्रजौ, अजमोद, मनशिल, ढाक के बीज, और गन्धक इनको देवदाली के रस से १ दिन मर्दन कर एक रत्ती के प्रमाण गोली बनावे इसके ऊपर मिश्री मिला वन मूंग का रस पिलाना चाहिये, इसके सेवन करने से निश्चय कृमि समूह निकल जाय इस रस में सब औषधि समान लेवे ।

कृमिघातिनीगुटिका

रसगंधाजमोदानाकृमिघ्नब्रह्मबीजयो. ।
एकद्वित्रिचतुःपंचतिन्दोबीजस्यषट्क्रमात् ॥
सचूर्ण्यमधुनासर्वं गुटिकाकृमिघातिनीम् ।
खादन्पिबेन्मुस्तोयंचमुस्तानाकृमिशान्तये ॥
आखुपर्णीकषायंवाप्रपिवेत्शर्करान्वितम् ।

पारा १ तोला, गन्धक २ तोला, अजमोद ३ तोले, वायविडंग ४ तोले, ढाक के बीज ५ तोले, कुचला ६ तोले, इन सबका चूर्णकर सहत के साथ मिलाय रत्ती २ की गोली बनावे, इसके सेवन के पश्चात् मोथा अथवा मूषापर्णी का काढा मिश्री मिला कर पीने से कृमि रोग शीघ्र नष्ट होवे ।

कृमिकालानलोरसः

विडंगंद्विपल चैवविषचूर्णं तदर्द्धकम् ।
लोहचूर्णं तदर्द्धं चतदर्द्धं शुद्धपारदम् ॥
रसतुल्यशुद्धगन्धछागीदुग्धेनपेषयेत् ।
छायाशुष्कांवटींकृत्वाखादेत्षोडशरक्तिका
न् ॥ धान्यजीरानुपानेननाम्नाकालानलोरस
उदरस्यकृमीनहन्यादुग्रहण्यर्श.समन्वितम् ॥
अग्निदःशोथशमनोगुल्मप्लीहोदरान्जयते ।
गहनानन्दनाथेनभाषितोविश्वसंपदे ।

वायविडंग २ पल, विषचूर्ण १ पल, लोह भस्म अर्द्ध पल, शुद्ध पारा चौथाई पल, शुद्ध गन्धक ६ माशे, सब को कूट पीस बकरी के दूध मे १ दिन घोटे पीछे गोली बनाकर छाया मे सुखावे, इस कालानल रस को धनिये और जीरे के साथ देवे तो उदर की कृमि, संग्रहणी, बवासीर और सूजन को दूर करे, और अग्नि को प्रज्वलित करे, तथा गुल्म प्लीह और उदरोग को दूर करे ।

कृमिविनाशनोरसः

शुद्धं सूतसमंगधमभ्रलोहंमनःशिला ।
धातकीत्रिफलालोध्रं विडरजनीद्वय ॥
भावयेत्सप्तधासर्वं शृंगवेरभवैरसैः ।
चणमात्रंवटींकृत्वात्रिफलारससंयुताम् ॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थायकृमिरोगोपशान्तये ।
वातिकपैत्तिकंहन्तिश्लैष्मिकंचत्रिदोषजम् ॥
कृमिविनाशनामायंकृमिरोगकुलान्तकः ।

पारा, गन्धक, अभ्रक, लोह भस्म, मनसिल, धय के फूल, त्रिफला, लोध्र, वायविडंग, हलदी, दारुहलदी, इन सबको समान भाग लेवे और कूटपीस अदरक के रस की सात भावना देकर चने के प्रमाण गोलिया बनावे, एक गोली त्रिफला के रसके साथ प्रातःकाल लेवे तो वातिक पैत्तिक और कफजन्य रोग तथा त्रिदोषज रोग दूर होवे, यह कृमि विनाशन रस कृमि समूह का नाशक है ।

कृमिकुठारोरसः

कर्पूरंचाष्टभागचकुटजश्चैकभागकः ।
तत्समानंत्रायमाणमजमोदाविडंगक ॥
हिंगुलंविषभागचतत्समानचकेशरम् ।
सर्वं दृढचसमघृ भृ गराजरसैर्दिन ॥
पालाशबीजसमिश्रसुंदरीरसभावितम् ।
ब्राह्मीरसततोदत्वासिद्धे तुक्रमिकुठारकः ॥
वल्लमात्रावटींकृत्वादद्याद्धु मसमन्वितां ।
कुर्य्यात्कृमिविनाशचएवसप्तविधदृढम् ॥

शुद्ध कपूर ८ भाग, कुडा की छाल, त्रायमाण, अजमोद, वायविडंग, हींगलू, विष, केशर और ढाक के बीज इन सब को एक एक भाग ले एकत्र कर भांगरा और मूसापर्णी तथा ब्रह्मी के रसको एक दो दिन भावना देवे तो यह कृमी कुठार रस सिद्ध होवे, दो रत्ती धतूरे के रस के साथ देने से सर्व प्रकार की कृमि नष्ट होवे ।

कृमिदावानलोरसः

हिंगुलःकर्षमानस्याद्दन्तीबीजंतदर्धकम् ।
अर्कक्षीरेणसमर्दं दापयेद्भावनादश ॥
माषमात्र प्रदातव्यमर्कमूलरसंपुनः ।
प्रपिबेद्धिंगुसंयुक्तं कृमिजालनिपातनम् ॥
कृमिदावानलोनामनाशयेत्कृमिसत्वरम् ।

हिंगलू १ तोला, जमाल गोटा ६ माशे इनका चूर्णकर आक के दूध की दश भावना देवे, इसमें से एक माशे आक की जड और हींग के साथ देवे तो सर्व कृमि गिर जाय, इसको कृमिदावानल रस कहते है ।

कृमिरोगारिरसः

सूतगंधमृतलोहमरिचविषमेवच ।
धातकीत्रिफलाशुंठीमुस्तकीसरसाञ्जनम् ॥
त्रिकटु मुस्तकपाठावालुकबिल्वमेवच ।
भावयेत्सर्वमेकत्रस्वरसंभृंगजैस्ततः ॥
वराटिकाप्रमाणेनभक्षणीयोविशेषतः ।
कृमिरोगविनाशायरसोयकृमिनाशन. ॥

पारा, गन्धक, सार, मिरच, विष, धायकेफूल, त्रिफला, सोंठ, नागरमोथा, रसोत, त्रिकुटा, मोथा, पाढ, नेत्रवाला, और बेलगिरी इन सब को समान लेवे, और सब को कूट भागरे के रस की भावना देवे, इसमे से कौडी को बराबर भक्षण करे तो कृमिरोग दूर होवे ।

कृमिघ्नोरसः

कृमिघ्नं किंशुकारिष्टबीजसरसभस्मकम् ।
वल्लद्वयचाखुपर्णीरसे कृमिविनाशन ॥

वायविडंग, ढाकके बीज, नींब की निबोली, और चन्द्रोदय सब को समान लेकर चार रत्ती मूंषापर्णी के साथ खाय तो सर्व कृमि नष्ट होवे ।

कृमिधूलिजलप्लवोरसः

पारदगधकशुद्ध वंगशखसमसम ।
चतुर्णांयोजयेत्तुल्यपथ्याचूर्णं भिषग्वरः ॥
दण्डयंत्रे णनिर्मथ्यपटोलस्वरसक्षिपेत् ।
कार्पासबीजसदृशींवटिकाकुरुयत्नतः ॥
त्रिवटींभक्षयेत्प्रात.शीततोयपिबेदनु ।
केवलेपैत्तिकेयोज्यःकदाचिद्वातपैत्तिके ॥

श्रीमद्गहननाथोक्तःकृमिधूलिजलप्लव. ।

पारा, गन्धक, बंग, शंखभस्म, सबको समान ले और सब की बराबर हरड का चूर्ण तदनन्तर दंडयन्त्रसे मथकर पटोलका स्वरस डाले, पश्चात् बिनौले के समान गोलिया बनाकर प्रात काल तीन गोली खावे, ऊपर शीतलजल पीवे यह औषधि केवल पित्त विकार से टवे और वातापित्त के रोग मे भी टवे, यह गहननाथ का कहा कृमि-धूलिजलप्लवरस ह ।

लाक्षादिवटी.

लाक्षाभल्लातश्रीवासशिफाश्वेतापराजिता ।
अञ्जुनस्यफलपुष्पंविडंगमजगुग्गुलु ॥
एभिःकीटाश्चशाम्यन्तेतिष्ठतापिग्रहेसदा ।
भुजंगामूषकादंशासवनामामतगजा. ॥
दूरादेवपलायन्तेकिन्नकीटाश्चयेपराः ।

लाख, भिलावा, रार, निगुंडी, सफेदकोयल कोह के फल और फूल, वायविडंग, अजमोद और गूगल इन सब को एकत्र कर मर्दन करे, इस को घर में रखने से कीट शांत होते हैं, सर्प, मूंसे, मच्छर आदि तथा वन के हाथी इस की गंधमात्र से ही भागते हैं, बाकी छोटे कीडों का तो क्या कहना है ।

विडंगलोहम्.

रसंगंधंचमरिचंजातीफललवंगकम् ।
कणातालशुंठिवंगप्रत्येकभागसम्मितम् ॥
सर्वचूर्णसमंलोहविडंगसर्वतुल्यकम् ।
लोहविडंगकनामकोष्ठस्थकृमिनाशनम ॥
दुनाममरुचिंचैवमन्दाग्निंचविशूचिकाम् ।
शोथशूलज्वरहिकाश्वासकासंविनाशयेत् ॥

पारा, गन्धक, मिरच, जायफल, लौंग, पीपल, हरिताल, सोंठ, बंग, प्रत्येक समान भाग ले, और सब चूर्ण समान लोहभस्म और सब के बराबर वायविडंग डाले तो यह विडंगलोह, पेट की कृमि, बवासीर, अरुचि, मन्दाग्नि, विशूचिका, सूजन, शूल, हिचकी, श्वास और खासी को दूर करे ।

पाण्डुरोगाधिकारः

पाण्डुसूदनोरसः

रसगंधमृतताम्रंजयपालंचगुग्गुलु ।
समाशमाज्यसंयुक्तागुटिकाकारयेद्भिषक् ॥
एकैकाखादयेद्वद्यःपाण्डुशोथापनुत्तये ।
शीतलंचजलंचाम्लंवर्जयेत्पाण्डुसूदने ॥

पारा, गन्धक, ताम्रभस्म, जमालगोटा, गुगल, इन सब को समान, ले और सब की बराबर घी डालकर खरलकर गोलिया बनावे, इस पांडुसूदन रस का सेवन कर्ता शीतल जल और खटाई न खावे ।

पञ्चाननवटी.

शुद्धंसूतसमंगंधमृतताम्राभ्रगुग्गुलू ।
जैपालबीजतुल्यंचघृतेनगुटिकीकृतम् ॥
भक्षयेद्वदराण्डाभशोथपाण्डुप्रशान्तये ।
पचाननवटीख्यातापाण्डुरोगकुलान्तिका ॥

पारा, गन्धक, ताम्रभस्म, अभ्रक, गूगल, सब को समान लेवे, और सबके बराबर जमालगोटा, सब को घृत में खरल कर दो २ रत्ती की गोलिया बनावे, इस के सेवन से पाण्डु रोग और सूजन नष्ट होवे, इस को खाकर गोमा का रस पीवे ।

चन्द्रसूर्यात्मकोरसः

सूतकंगंधकंलोहमभ्रकंचपलंपलं ।
शखटंकवराटंचप्रत्येकार्द्धपलंहरेत् ॥
गोक्षुरबीजचूर्णंचपलैकंतत्रदीयते ।
सर्वमेकीकृतंचूर्णंवाष्पयंत्रेविभावयेत् ॥
पटोलंपर्पटंभार्गींविदारीशतपुष्पिका ।
कुंडलीदन्तीवासाकाकमाचीन्द्रवारुणी ॥
वर्षाभू.केशराजश्चशालिंचीद्रोणपुष्पिका ।
प्रत्येकार्द्धंपलैर्द्रावैर्भावयित्वावटींकुरु ॥
चतुर्दशवटींखादेच्छागोदुग्धानुपानत ।
गहनानन्दनाथोक्तचन्द्रसूर्यात्मकोरस ॥
हलीमकंनिहन्त्याशुपाण्डुरोगंचकामलाम् ।
जीर्णज्वरसविषमरक्तपित्तमरोचकम् ।

शूलप्लीहोदरानाहगृध्रीलागुल्मविद्रधीम् ।
शोथमन्दानलकासश्वासार्तिक्षयमिभ्रमम् ॥
भगदरोपदंशश्चहृत्क्षताद्व्रणापची ।
दाहतृष्णामुरस्तम्भामवातकटीग्रहम ॥
युक्त्यामद्यैनमण्डेनमुद्गयूषेणवारिणा ।
गुडूचीत्रिफलावासाकाथनीरेणवार्कोचितत् ॥

पारा, गंधक लोह भस्म और अभ्रक, एक २ पल लेवे, शंखभस्म, कौड़ी की भस्म, और सुहागा प्रत्येक, चार २ तोले, गोखरू का चूर्ण एकपल, इन सब को एकत्र कर पटोलपत्र, पित्तपापड़ा, भारंगी, विदारीकंद, सोंफ, गिलोय, ब्रह्मदण्डी, अडूसा, मकोय, इन्द्रायन, सांठ की जड़, भांगरा, शालिंच और गोमा प्रत्येकका आठ २ पल रस ले तप्तखरल में यथाक्रम भावना देकर एक-एक रत्ती की गोलिया बनावे, नित्य एक गोली खाय ऐसे चौदह दिन सेवन करे, अनुपान बकरी का दूध इसके सेवन से पाण्डुरोग, कामला, हलीमक, जीर्णज्वर, रक्त, पित्त, अरुचि और शूल आदि अनेक रोग नष्ट होवे, रोग २ मे यथा लगती मद्य, भात का मांड, मूंगका-यूष, गिलोय का काढा, तथा अडूसे के काढे से यह रस देना चाहिये ।

प्राणवल्लभोरसः

हिंगुलसम्भवसूतगंधकाश्मीरसभवं ।
लोहताम्रवराटीचतुर्थहिंगुफलत्रयम् ॥
स्नुहीमूलयवक्षारजैपालटंकणत्रिवृत् ।
प्रत्येकंतुसमंभागंछागीदुग्धेनभावयेत् ।
चतुर्गुंजांवटींखादेद्वारिणामधुनासह ।
प्राणवल्लभनामायगहनानन्दभाषितः ॥
श्लेष्मदोषंचसर्वीध्ययुक्त्यावात्र्टिवर्द्धन ।
निहन्तिकामलांपांडुमानाहंश्लीपदंतथा ॥
गलगंडगंडमालांकृच्छ्राणिचहलीमकम् ।
शोथशूलमुरुस्तम्भंसग्रहंग्रहणींतथा ॥
हन्तिमूर्च्छांवमिंहिक्काकासंश्वासगलग्रहम् ।
असाध्यसन्निपातंचजीर्णज्वरमरोचकम् ॥
जलदोषभवंशोथमेदोत्थंचजलोदरम् ।
नातःपरतरश्रेष्ठकामलार्तिरुजापहम् ॥

हींगलू से निकाला हुआ पारा, आमलासार गंधक, लोह भस्म, ताम्र भस्म, कौड़ी की भस्म, तूतिया, हींग, त्रिफला, थूहर की जड़, जवाखार, जमालगोटा, सुहागा, और निसोथ इन सबको समान लेवे और मर्दन कर बकरी के दूध की सात भावना दे, चार-चार रत्ती की गोलियां बनावे, और शहत वा जल के साथ खावे तो यह प्राणवल्लभ रस कामला, पाण्डु, आनाह, श्लीपद आदि रोगों का नाश करे [कोइ कहता है जैसी कफ की अधिकता होवे उसी के अनुसार इस गोली को बढ़ा कर देवे ।]

पंचामृतलोहमंडूरम्

लोहंताम्रंगंधमभ्रंपारदंचसमांशकम् ।
त्रिकटुत्रिफलामुस्तविडंगचित्रकंतथा ॥
किरातदेवकाष्ठंचहरिद्राद्वयपुष्करम् ।
यवानीजीरयुग्मंचशठीधान्यकचव्यकम् ॥
प्रत्येकलोहभागंचश्लक्ष्णचूर्णन्तुकारयेत् ।
सर्वचूर्णस्यचार्द्धांशंसुशुद्धंलोहकिट्टकम् ॥
गोमूत्रेपाचयेद्वद्योलोहकिट्टंचतुर्गुणं ।
पुनर्नवाष्टगुणितक्वाथंतत्रप्रदापयेत् ॥
सिद्धेवतारितेचूर्णंमधुनःपलमात्रकम् ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायकोकिलाक्षानुपानतः ॥
ग्रहणींचिरजांहन्तिसशोथांपांडुकामलाम् ।
अग्निंचकुरुतेदीप्तंज्वरजीर्णंव्यपोहति ॥
प्लीहानयकृतंगुल्ममुदरंचविशेषतः ।
कासश्वासंप्रतिश्यायंकान्तिपुष्टिविवर्द्धनम् ॥
[अत्रसर्वचूर्णसमांशंमंडूरमितिवृद्धाः ।
गोमूत्रेपुनर्नवाकाथेमंडूराणापाकः ।
चूर्णानांप्रक्षेपःशीतेचमधुनः ।]

लोह भस्म, ताम्रभस्म, गंधक, अभ्रक, पारा, त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, वायविडंग, चीता, चिरायता, देवदारु, हलदी, दारुहलदी, पोहकर मूल, अजमायन, जीरा, काला-

जीरा, कचूर, धनिया और चव्य प्रत्येक का एक २ तोला चूर्ण ले और सब चूर्ण से आधा मंडूर लेवे [वृद्ध आचार्यों का मत है कि चूर्ण के समान लोह भस्म लेवे और मडूर चौगुना लेवे, और ८ गुना गोमूत्र लेवे और आठ गुना पुनर्नवा (सांठी) का काढा लेवे, गोमूत्र, पुनर्नवाका काढा और मडूरको एकत्र कर पाक करे, पाक हो जानेपर आवे सब लोह भस्मादि चूर्णों को डाल कर खूब मिला देवे] पश्चात् शीतल होने पर एक पल सहत मिलावे इसकी मात्रा वैद्य अपनी बुद्धि से कल्पना करे, इसका अनुपान तालमखाने का रस है। इस रससे संग्रहणी, पाण्डु रोग, कामला, तथा शोथ प्रभृति अनेक रोग नष्ट होवे।

निशालोहम्

लोहचूर्णनिशायुग्मंत्रिफलारोहिणीयुत ।
प्रलिह्यान्मधुसर्पिर्भ्यांकामलापाण्डुशान्तये ॥

लोह भस्म, हलदी, हरड, बहेडा, आमला, और कुटकी सब को समान भाग ले चूर्ण कर सहत और घी के साथ चाटे तो कामला और पाण्डु रोग दूर होवे।

धात्रीलोहम्

धात्रीलोहरजव्योषनिशाक्षौद्राज्यशर्करा ।
भक्षणाद्विनिहन्त्याशुकामलाचहलीमकम् ॥

आमले, लोह भस्म, सोंठ, मिरच, पीपल, हलदी, बहेडा, प्रत्येक समान ले चूर्ण कर सहत और मिश्री मिला कर चाटे तो कामला और हलीमक को शीघ्र दूर करे।

पाण्ड्वारिरसः

रसगंधाभ्रलोहैक्यपाण्ड्वारिपुटितस्त्रिधा ।
कुमार्याक्वचतुर्वल्लं पाण्डुकामलपूर्वनुत ॥

पारा, गन्धक, अभ्रक भस्म, और लोह भस्म इन सबको एकत्र कर कुटकी के रस के ३ पुट दे घी ग्वार के रस मे खरल कर एक २ माशे की गोलिया बनावे, इनके सेवन मे पाण्डु रोग और कामला दूर होवे।

कामेश्वरोरसः

पलंसूतपलंगंधंपथ्याचित्रकयोःपलम् ।
मुस्तैलापत्रकाणांचप्रतिसार्द्धपलंक्षिपेत् ॥
त्र्यूषणंपिप्पलीमूलंविषंचार्धपलन्यसेत् ।
नागकेशरकंकर्षंमेरंडस्यपलंतथा ॥
पुरातनगुडेनैवतुल्येनैवविमिश्रयेत् ।
मर्दयेत्कनकद्रावैर्भावयेच्चघृतान्वितम् ॥
वटिकांबदरास्थ्याभाकारयेद्भक्षयेन्निशि ।
पाण्डुरोगहरःसोऽयरस.कामेश्वरःस्वयम् ॥

पारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले, हरड और चीते की छाल प्रत्येक चार २ तोले, नागरमोथा, इलायची, पत्रज प्रत्येक ६ तोले, सोंठ, मिरच पीपल, पीपलामूल, और सिंगिया विष प्रत्येक ४ तोला, नागकेशर और अंड की जड प्रत्येक १ तोला, सब को एकत्र कर कूट पीस सबके बराबर गुड मिलाय धतूरे के रस में घोट घी की भावना दे बेर की गुठली के बराबर गोलियां बनावे और १ गोली रात्रि के समय खाय तो यह कामेश्वर रस पाण्डुरोग को दूर करे।

पाण्डुनिग्रहोरसः

अभ्रभस्मरसभस्मगंधकंलोहभस्ममुशलीविमर्दितम् । शाल्मलीजरसतोगुडूचिकाक्वाथकैश्चपरिमर्दितोदिनम् ॥ भावयेत्रिफलकार्द्रकन्यकावन्हिशिग्रुजरसैश्चसप्तधा । जायतेहिभवतोमृतस्त्ववःशोषपाण्डुविनिवृत्तिदायक ॥ वल्लयुग्मपरिमाणतस्त्विमंलेहयेच्चघृतमाक्षिकान्वितम् । पथ्यमत्रपरिभाषितपुरायत्तदेवपरिवर्ज्यवर्जितम् ॥ शोषपाण्डुनिवृत्तिदायकःसेवितस्तुयवचिंचिकाद्रवै । नागराग्निजयपालकैस्तुवावज्रदुग्धपरिपक्वसर्पिषा ॥ तक्रभक्तमिहयोजयेदतिस्निग्धमन्नमतिनूतनंत्यजेत् ।

अभ्रकभस्म, पारा भस्म, शुद्ध गन्धक, लोह भस्म, प्रत्येक समान लेवे और सब को एकत्र कर मूसली के रस, गिलोय क रस और सेमल

के रस में एक २ दिन खरल करे फिर त्रिफला, अदरक, घी गुवार, चीता और सहजन के रस की सात २ भावना देवे तो यह रस अमृत के समान बने इसको ५ रत्ती सहत और घी के साथ खाय और जो वस्तु पाण्डु रोग वर्जित कही हैं उनको त्याग देवे और पथ्य सेवन करे तो यह रस पांडु रोग शोथरोग को दूर करे, अथवा इस रस को जौ और इमली के रस के साथ सेवन करे, अथवा सोंठ चीता और जमालगोटा एव थूहर के दूध को दूध में औंटा कर उसके साथ सेवन करे, इसके सेवन करने वाला छाछ भात खाय, अथवा अत्यन्त चिकने पदार्थ और नवीन वस्तु सबको त्याग देवे, इसे पाण्डु निग्रह रस कहते हैं।

नवायसचूर्णम्

माक्षिकस्यशशुद्धस्यलोहस्यरजतस्यच ॥
अष्टौभागसितायाश्चतत्सर्वंसूक्ष्मचूर्णितम् ।
माक्षिकेणाप्लुतंस्थाप्यमायसेभाजनेशुभे ॥
उदुंबरसमामात्रांततःखादेद्यथाग्निना ।
दिनेदिनेप्रयोगेनजीर्णेभोज्ययथेप्सितं ॥
वर्जयित्वाकुलत्थांश्च काकमाचीकपोतकान् ।
योगराजइतिख्यातोयोगोयममृतोपमः ॥
रसायनमिदंश्रेष्ठंसर्वरोगहरंशिवं ।
पाडुरोगविषकासयक्ष्माणविषमज्वरान् ॥
कुष्ठान्यलसकमेहश्वासहिक्कामरोचक ।
विशेषाद्धंत्यपस्मारकामलागुदजानिच ॥
सुवर्णमथवारोप्यंयोगेयत्रनसभवेत् ।
तत्रलोहेनकर्मास्यभिषक्कुर्यादतंद्रितः ॥

त्रिफला, और त्रिकुटा तीन २ तोले चित्रक की जड और वायविडंग तोले २ भर शिलाजीत ५ तोले, रूपे की कीटी, और सार एक-एक तोले शुद्ध सुवर्ण माखी १ तोले, मिश्री ८ तोले, सब को पीस वारीक चूर्ण करे। इसको सहत मे मिला लोहे के पात्र में भर रखे, इस मे से तोला भर नित्य भक्षण करे, अथवा बलाबल देख के मात्रा देवे, जब ये औषधी पच जावे तब यथेष्ट भोजन करे, परन्तु कुलथी, मकोय कबूतर का मांस न खावे, यह संपूर्ण योगों का राजा अमृत के तुल्य है, श्रेष्ठ रसायन सर्व रोग हरण कर्ता है, पाण्डु रोग, विष, खांसी, क्षई, विषमज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, श्वास, हिचकी, अरुचि, अपस्मार, कामला और बवासीर को दूर करे।

विभीतकाख्यलवणम्

कृत्वाग्निवर्णंमलमायसतुमूत्रे निषिंचेद्बहुशोगवातत् । तत्रैवसिंधूत्थसमंविपाच्यनिरुद्धधूमेतविभीतकाग्नौ ॥ तक्रेणपीतंमधुनाथवापि विभीतकाख्यलवणप्रयुक्त। पाण्डूवामयेभ्यो हितमेतदस्मात्पाण्डूवामयघ्ननहिकिंचिदस्ति॥

लोह कीटी को खूब तपाय गोमूत्र में बार-बार बुझावे, फिर इसमें बराबर का सैंधा निमक मिलाके बहेडे की निर्धूम अग्नि मे पचावे, तो यह सिद्ध होवे, इस विभीतक लवण को छाछ और सहत के साथ सेवन करे यह पाडु रोगियों को हितकारी और पांडु रोग को दूर करने वाला, इससे बढकर दूसरा योग नहीं है, यह सारावली ग्रन्थ मे लिखा है।

वृद्धनवायसचूर्णम्

माक्षीकत्रिफलात्रिकत्रिकटुकमुस्ताचतुर्ज्जातक। जतुघ्नमगधाजटासुरतरुद्राक्षानिशेद्वेशटी ॥ कर्षांशानियवानिवन्हिबदराजाजीद्वयाभोरुहैः । लोहादर्द्धपलांसिताद्विपलिका किट्टन्तुसर्वार्द्धतः ॥ चूर्णंसूक्ष्मतमंविधायमथितेनालोड्यवाप्राश्यते । क्षौद्रेणानिलजान् रुजस्तुसकलाःश्वासप्रमेकामयान् ॥ शूलश्लीपदविद्रधिश्चजठरामर्शांसिमदाग्निना ।हन्यादामसमीरपाडुनिचयकासक्षयंमेहजित्॥ एतद्वृद्धनवायसाख्यममृतश्रीभोजभेडोवदत्॥

सुवर्ण मक्खी की भस्म, त्रिफला, त्रिकुटा, मोथा, चातुर्जात, वायविडंग, पीपल, जटामासी देवदारु, दाख, हल्दी, दारु हल्दी, कचूर, अजवायन, चीते की छाल, बेर की छाल, सफेद और

स्याह दोनों जीरे, और कमल गट्टे की मिगी प्रत्येक एक २ तोला, लोह भस्म २ तोले मिश्री ५ तोले, कीटी की भस्म सबसे आधी ले, सबका बारीक चूर्ण कर सहत के साथ अनुमान माफिक सेवन करे तो बादो के रोग, श्वास, रद्द, शूल, श्लीपद, विद्रधि, उदर रोग, बवासीर, मंदाग्नि, आमवात, पाण्डु रोग, खासी, क्षय, और प्रमेह को यह वृद्धनवायस चूर्ण दूर करे, यह श्री भोज और भेड आचार्यों का कहा अमृत के तुल्य है, यह सार संग्रह में लिखा है।

त्रिकत्रयादिलोहं

पललोहस्यकिट्टस्यपलंगव्यस्यसर्पिषः।
सितायाश्चपलंचैकक्षौद्रस्यापिपलतथा॥
तोलैककान्तलोहस्यत्रिकत्रयसुभावितम्।
ततःपात्रेविधातव्यलौहेचमृन्मयेतथा॥
हविषाभावितचापिरौद्रेचशिशिरेतथा।
भोजनादौतथामध्येचान्तेचापिप्रदापयेत्॥
अनुपानप्रदातव्यंबुद्ध्वादोषबलाबलम्।
कामलांपाण्डुरोग चहलीमकसुदारुणम्॥
निहन्तिनात्रसन्देहोभास्करस्तिमिरयथा।

शुद्ध लोह की कीटो, गो का घी, मिश्री और सहत प्रत्येक चार २ तोले, कान्ति लोह की भस्म १ तोले इन सबके चूर्ण में त्रिफला त्रिकुटा और त्रिसुगंध की भावना देकर लोहपात्र में बन्द कर रख दे, अथवा मिट्टी के पात्र में रख दे इसको धूप में वा शरदी में घृत की भावना देकर रख छोडे इसको भोजन के आदि वा मध्य अथवा अन्त में देवे और दोषो का बलाबल निश्चय कर वैद्य अपनी बुद्धिके अनुसार अनुपान कल्पना करे तो ये कामला पाडुरोग, हलीमक, इन सबको यह त्रिकत्रयादिलोह दूर करे।

विडंगादिलोहं

विडगमुस्तत्रिफलादेवदारुषडूषणैः।
तुल्यमात्रमयश्चूर्णं गोमूत्रेष्टगुणे पचेत्॥
तैरक्षमात्रांगुटिकांकृत्वाखादेद्दिनेदिने।
कामलापाण्डुरोगार्त्तःसुखमाप्स्यतेचिरात्॥

वायविडंग, नागरमोथा, त्रिफला, देवदारु, अडूसा, इनको समान भाग ले और सब की बराबर मृतलोह चूर्ण लेवे, सब को अष्टगुने गोमूत्र में पचा कर तोले २ भरकी गोलिया बनावे और एक गोली नित्य सेवन करे तो कामला और पाण्डुरोगी शीघ्र सुखी हो।

विडंगत्रिफलाव्योषंशुद्धलोहन्तुतत्समम्।
पुरातनगुडेनात्रलेहयेद्दिनसप्तकम्॥
श्वयथुंनाशयेत्क्षौद्रपाण्डुरोगहलीमकम्॥

वायविडग, हरड, बहेडा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक समान भाग ले, और सब की बराबर शुद्ध लोहकी भस्म मिलावे, इस में पुराना गुड मिलाकर ७ दिन खावे तो सूजन दूर हो और सहत के साथ चाटे तो पाडुरोग और हलीमक रोग दूर हो।

दार्व्यादिलौहम्.

दार्वीसत्रिफलाव्योषविडगान्यायसोरज.।
मधुसर्पिर्मृतलिह्यात्कामलापांडुरोगवान्॥

दारुहलदी, हरड, बहेडा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग और लोह भस्म समान भाग लेकर चूर्णकर सहत के और घीके संग चाटे तो कामला और पाडुरोग को दूर करे।

मंडूरवज्रवटक.

पचकोलसमरिचदेवदारुफलत्रिकम्।
विडंगमुस्तयुक्ताश्चभागास्त्रिपलसम्मिताः॥
यावन्त्येतानिचूर्णानिमण्डूरद्विगुणततः।
पक्त्वाचाष्टगुणे मूत्रे घनीभूतेतदुद्धरेत॥
ततोक्षमात्रान्वटकान्पिवेत्तक्रेणतक्रभुक्।
पाण्डुरोगजयत्याशुमन्दाग्नित्वमरोचकम॥
अर्शांसिग्रहणीदोषमुरुस्तम्भमथापिवा।
कृमिप्लीहानमानाहगलरोगचनाशयेत्॥
मंडूरोवज्रनामाऽयरोगानीकप्रणाशन'।

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ,

कालीमिरच, देवदारु, त्रिफला, वायविडंग, नागरमोथा, प्रत्येक पौनपाव ले, सब का चूर्णकर चूर्णसे दुगुनी शुद्ध मडूरकी भस्म मिलावे, फिर अष्टगुने गोमूत्र से औटावे, जब गाढा हो जाय तब उतार कर तोले २ भरकी गोलिया बनावे, १ गोली छाछ के साथ खाय और छाछकाही भोजन करे तो पाण्डुरोग, मंदाग्नि, अरुचि, बवसीर संग्रहणी, उरुस्तभ, कृमिरोग, प्लीहा, अफरा और गलरोग इन सब रोगसमूह को यह मडूरवज्रवटक दूर करे, यह वृन्दग्रंथ में लिखा है।

संभोहलौहम्.

त्रिकटुत्रिफलावन्हिविडंगंलोहमभ्रकम्।
एतानिसमभागानिघृतेनगुटिकांकुरु ॥
कामलांपाण्डुरोगचहृद्रोगशोथमेवच।
भगंदरकृमिकुष्ठंमन्दाग्निरमरोचकम् ॥
तान्सर्वान्नाशयेदाशुबलवर्णाग्निवर्द्धनः ॥
सम्भोहलोहनामायपाण्डुरोगेचपूजितः।

सोठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला चित्रक, वायविडंग, लोह भस्म और अभ्रक को समान भाग लेके घी से गोलिया बनावे, यह कामला, पाण्डुरोग, हृदयरोग, सूजन, अरुचि, भगदर, कृमिरोग और कोढ को शीघ्र दूर करे, तथा बल वर्ण और अग्नि को बढावे, यह सभोहलोह पांडुरोग में माननीय है।

त्र्यूषणादिमण्डूरम्.

स्विन्नमष्टगुणेमूत्रेलोहकिट्टंसुशोधितम्।
पाकान्तेत्र्यूषणवन्हिवरादार्वीसुरद्रुमान् ॥
विडगबीजचूर्णंचमुस्तकिट्ट समंक्षिपेत।
प्रातःकर्षं भजेदस्यजीर्णेतक्रोदनंभजेत् ॥
हलीमकपाण्डुरोगमर्शांसिश्वयथुन्तथा।
उरुस्तभंजयेदेतत्कामलांकुम्भकामलाम् ॥

शुद्ध कीटी को अठगुने गोमूत्र मे औटावे जब पक जावे तब सोठ, मिरच, पीपल, चीते की छाल, हरड, वहेडा, आवला, दारुहलदी, देवदारु, वायविडग और नागरमोथा, इन सब को कीटी के समान लेय, सब को मिला कर गोलिया बनावे, एक गोली नित्य सेवन करे तो हलीमक, पांडुरोग, बवासीर, सूजन, उरुस्तंभ, कामला, और कुंभकामला को दूर करे।

विभीतकादिवटी.

विभीतकायोमलनागराणां चूर्णं तिलानांच गुडप्रमुख्य.। तक्रानुपानाद्गुटिकाप्रयोज्या हिनस्तिरोगानपिपाण्डुरोगान् ॥

बहेडा, लोहकीटी, सोठ, और तिलका चूर्ण कर इसमे गुड मिला कर गोलिया बनावे और छाछ के साथ इस विभीतकादि वटी को सेवन करे तो घोर पाण्डु रोग को दूर करे।

पुनर्नवादिमण्डूर.

पुनर्नवात्रिवृदव्योपंविडगदारुचित्रकम्।
कुष्ठ हरिद्रेत्रिफलादतोचव्यकलिंगकम् ॥
कटुकापिप्लीमूलमुस्तशृंगीचकारवी।
यवानीकट्फलचेतिपृथक्पलमितंमतम् ॥
मंडूरद्विगुणचूर्णाद्गोमूत्रेऽष्टगुणेपचेत्।
गुडवद्वटकान्कृत्वातक्रेणालोड्यतान्पिवेत् ॥
पुनर्नवादिमडूरवटकोऽश्विनीविनिर्मितः।
पाडुरोगपुराणंचकामलाचहलीमकम् ॥
श्वासकासचयक्ष्माणंज्वरशोथतथोदर।
शूलंप्लीहानमाध्मानमर्शांसिग्रहणींकृमीन् ॥
वातरक्तंचकुष्ठंचसेवनान्नाशयेत्ध्रुवम्।

साठ की जड, निसोथ, सोठ मिरच, पीपल, वायविडंग, दारुहलदी, चीते की छाल, कूट, हलदी, देवदारु, हरड, बहेडा, आवला, दर्ती, चव्य, इन्द्रजौ, कुटको, पीपलामूल, नागरमोथा, काकडासिंगी, सोफ, अजमायन, और कायफल, प्रत्येक ४ तोले लेवे सबका चूर्णकर चूर्ण से दूनी मडूर लेकर अठगुने गोमूत्र मे पचावे, फिर उक्त औषधियों के चूर्ण को और गुड को मिलाके गोलिया बनावे, इस को छाछ मे मिलाकर पीवे, यह पुनर्नवादि मडूर अश्विनीकुमारने निर्माण किया है। यह पुराने पाडुरोग, कामला, हली-

मक, श्वास, खांसी, खई, ज्वर, सूजन, उदर, शूल, प्लीहा, अफरा, बवासीर, ग्रहणी, कृमिरोग वातरक्त और कुष्ठ इसके सेवन से नष्ट होवे ।

हंसमण्डूरम्.

गोमूत्रे ष्टगुणेलोहकिट्टं प्राग्विपचेत्तत.
फलत्रयाबुदव्योषविडंगग्रन्थिकाग्निक ॥
चव्यदार्वीन्द्रफलदान्समान्सचूर्णकं ।
तत्सर्वं तत्रतत्तुल्यं क्षिपेत्कर्षमित तथा ॥
भोक्तव्यमौषधेजीर्णेपिबेत्तक्र सभोजन ।
हसमडूरनामायरस सर्वरसाग्रणीः ॥
हन्तिपाण्डुरुज.सर्वाःसहलीमककामलाः ।
उरुस्तभंतथाशोथेमुन्मूलयतिमूलत.॥

प्रथम अठगुणे गोमूत्र मे कीटी को पचावे, फिर त्रिफला, मोथा, सोठ, मिरच, पीपल, वायविडग, पीपलामूल, चीते की छाल, चव्य, दारुहलदी, और इन्द्रजौ समान लेकर चूर्ण कर छाछ के साथ पीवे, जब, औषधी पच जावे, तब छाछ भात का भोजन करे, यह हंसमंडूर संपूर्ण रसो मे श्रेष्ठ है, पाडुरोग, हलीमक, कामला, उरूस्तभ और सूजनको जड से उखाड देवे ।

मधुमंडूर

गृहीत्वाभिषक्प्रस्थमडूर भागंश्रुतेत्रैफलेमर्द यित्वाचयाम । पुटेपाचयेद्यामयुग्मकृशानो. पुटानीहदेयानिचद्राक्षिवारं ॥ तथाधेनुमूत्रे कुमारीरसेचविधेयश्चपचामृते योगराजः । भ वेर्त्सिधुनागैःपुटैःसिद्धिदोयमचिंत्यप्रभावश्च मंडूरएषः ॥ मधुमंडूरकणामधुनाचिरपाण्डु गदननुहेममितः । जनकोरुधिरस्यनिहन्तिप रविविधार्तिहरस्त्वनुपानबलैः ॥

शुद्ध मण्डूर १ सेर को त्रिफला के काढे में प्रहर भर खरल करे, फिर दो प्रहर संपुट में रख कर अग्नि देवे इस प्रकार २१ बार त्रिफला के काढे मे घोटे और और अग्नि से फूके फिर गोमूत्र, घीगुवार, पचामृत (गिलोय,गोखरू आदि) इनके रस का पुट दे २ कर फूके इस प्रकार ८१ पुट देने से यह अचिंत्यप्रभाववाला और सिद्धदाता मण्डूर बने यह मधु मण्डूर पीपल के चूर्ण और सहत के साथ १ माशे के अनुमान सेवन करने से पाण्डुरोग को दूर करे,रुधिर को उत्पन्न करे, और अनुपान के जोर से और भी अनेक रोगो को जीते ।

खदिरलोहम्

पचेत्खदिरनिःकाथेविडगाब्दान्ययोरज. ।
वलातिक्तासितायष्टीत्रिफलारजनीद्वयै. ॥
लेहंलिह्यात्समध्वाज्यपाण्डुरोगहलीमकी ।
सलेहःकामलहन्याऽपिसवत्सरोत्थित ॥

खैर के काढे में वायविडंग, नागरमोथा, और लोहे की भस्म को पचावे, तथा इसी मे गंगेरन, कुट की, मिश्री, मुलेटी, त्रिफला, हलदी और दारुहलदी डाल के अवलेह बना लेवे इसमे सहत और घी मिलाकर खावे तो पाडु रोग और हलीमक दूर होवे और एक वर्ष का भी पीलिया रोग दूर हो ।

लोहसुन्दरोरसः

सूतभस्ममृतलोहगंधकौभागवर्द्धितमिदविनि क्षिपेत्दीर्घनालदृढकूपिकोदरेमृत्स्नयाचपरिवेष्टयताक्षिपेत् ॥ चुल्हकोपरिचकूपिकामुखे प्राक्षिपेच्चवरशाल्मलीद्रवैः । त्रैफलवसुगुड्चिकारसंपाचयेत्तुमृदुवन्हिनादिनं ॥ स्वाग शीतलमिमंप्रगृह्यचत्र्यूषणार्द्रकरसेनभावयेत् लोहसुन्दररसोयमीरितःशोषपाण्डुविनि वृत्तिद.परः ॥

चन्द्रोदय, लोह भस्म, गन्धक इनको क्रम से एक से दूसरे को जियादा लेवे, सबको एकत्र खरलकर लबी नाल की शीशी मे भर देवे, फिर उस पर कपरोटी कर धूप में सुखा लेवे, फिर चूल्हे पर चढावे जब अग्नि लगने लगे, तब उस शीशीमें सेमरका रस त्रिफला, वृद्धि औषधि और गिलोय के रस मे मन्दाग्नि द्वारा एक एक दिन पचावे, फिर स्वाग शीतल होने पर शीशी से

निकाल त्रिकुटा के काढे की और अदरक के रस की भावना देवे, तब यह लोह सुन्दर रस बने, ये शोष रोग और पाडु रोग को दूर करे।

कांस्यपिष्टीरसः

कांस्येनपिष्टिकांकृत्वादेवदालीरसप्लुतां।
लीचणगंधरजायुक्त्याभुक्तंहंतिहलीमकम् ॥

कासे की पिट्टीमे बंदाल का रस और सहजनेका (अथवा गंधकका चूरा) मिलाकर सेवन करे तो हलीमक रोग दूर होवे।

त्रिफलायागुडूच्यावादार्व्यानिम्बस्यवारसः
प्रातर्माक्षिकसंयुक्त शीलितःकामलापहः ॥

त्रिफला, गिलोय, दारुहलदी अथवा नींब का रस इनमे से किसी एक में सहत मिलाकर सेवन करे तो कामला रोग नष्ट हो।

सिंदूरभूषणोरसः

शुद्धंसूतंचसिंदूरपलैकैकंविमर्दयेत्।
वासारसेनयामैकंतेनकुर्याच्चचक्रिका ॥
सुपक्कांकारयेन्मूषामुत्तमांद्वादशांगुलां।
तन्मध्येगंधकंसूतंक्षिपेत्पलचतुष्टय ॥
पूर्वोक्तचक्रिकावक्रे दत्वारुध्वापुटेलघु ।
जीर्णगंधमसुद्र्‌त्यचक्रिकांतांविचूर्णयेत् ॥
चूर्णाद्दशगुणंयोज्यमृतलोहंचमर्दयेत् ।
लशुनेनदशांशेनचणमात्रावटीभवेत् ॥
वातपाण्डुहर.सिद्धोरस सिंदूरभूषणः ।
पिवेच्चानुपानमपामार्गस्यैरंडस्यचमूलिकां ॥
तक्रे पिष्टाथकर्षंकहन्तिपाण्डुसकामल ।

शुद्ध पारा और सिंदूर चार २ तोले दोनो को खरल कर अडूसे के रस मे १ प्रहर खरल करे फिर उसकी टिकिया बनावे पश्चात १२ अंगुल की पक्की मूष बना के उसके बीच में चार पल गन्धक और पारा डालके पूर्वोक्त चक्रिका उसके मुखपर रख मुख को बन्दकर लावक पुट मे फूक देवे जब गन्धक भस्म हो जावे तब उन टिकियों को निकालकर चूर्ण करे, फिर इस चूर्ण मे दशगुणी लोह भस्म मिला के लहसन के रसमे खरल कर चने के प्रमाण गोलिया बनावे ये वात पाडुहरने वाला सिंदूर भूषण रस सिद्धि होवे इसको खाकर ऊपर से ओंगा अरंड की जड को छाछ मे पीसकर १ तोलेके प्रमाण पीवे तो कामला सहित पाडुरोग का नाश करे।

त्रिसंघट्टोरसः

सूतार्कहेमताराणांसमंपिष्टीप्रकल्पयेत् ।
जंबीरनीरसंयुक्तमातपेशोषयेद्दिनं ॥
ऊर्ध्वाधोद्विगुणंदेयगंधमस्यांक्षिपेत्क्षितिम् ।
भाण्डगर्भेनिरुध्याथोद्वियामपाचयेल्लघु ॥
आदायचूर्णयेत्‌श्लक्ष्णंत्रिसंघट्टोमहारसः ।
हरीतक्यासमदेयद्विगुंजंपाण्डुरोगजित् ॥

पारा, तांबा,सुवर्ण और चादी इनकी समान भाग पिट्ठी ले जबीरी के रस मे एक दिन धूप मे खरल करे, फिर एक सराव मे दूनी गन्धक बिछाय बीच में पिट्ठी को रख ऊपर मे फिर गन्धक डाल देवे, और बन्द कर दो प्रहर लावक यंत्र मे पचावे फिर निकालकर चूर्णकर डाले, तो यह त्रिसंघट्टरस सिद्ध होवे, इसको ३ रत्ती हरड और गुड के साथ देवे तो पाडुरोग को दूर करे, यह रसरत्नाकर मे लिखा है।

लोहगर्भोरसः

रसभस्मचतुर्भागोलोहभस्माष्टभागकम् ।
वन्हिमुस्ताविडगंचत्रिफलाकुटजत्वचः ॥
त्रिकटुचूर्णितयोज्यंप्रतिभागंचलेहयेत् ।
मधुनाकर्षमात्रंचपित्तपाण्डुहरपर ॥
रसोयंलोहगर्भाख्योदयपथ्यमृगांकवत् ।
मुस्तामतिविषशुंठीगुडूचीचिरातिक्तका ॥
क्वाथयित्वापिबेद्रात्रौसुशीतमधुनासह ।

चन्द्रोदय ४ तोले लोह भस्म ८ भाग, चीते की छाल, नागरमोथा, वायविडंग, हरड, बहेडा आमला, कूडा की छाल,सोंठ, मिरच और पीपल प्रत्येक एक एक तोला सब को कूट पीस चूर्णकर सहत के साथ १ तोला चाटे तो पाडुरोग को दूर करे, यह लोह गर्भ रस है इसमे मृगांक के समान

पथ्य देवे, और रात्रि मे नागरमोथा, अतीस, सोठ गिलोय, चिरायता इनका काढा सहत मिलाकर पिलावे ।

त्रैलोक्यनाथोरसः

पलानिचत्वारिरसस्यपचगधस्यसत्वस्यगुडूचिकायाः । व्योषस्यचूर्णस्यचतालमूल्याः सशाल्मलस्येहपलत्रयच ॥ पृथक्पृथक्षड्गुणितस्यचाष्टौलोहस्य सर्वत्रिफलाजलेन । घृष्टंचतुःषष्टिमिततदर्द्धास्युर्भावनामार्कवजद्रवस्य ॥ शिग्रूत्थनीरेणचषोडशाष्टौतथानलोत्थागृहकन्यकायाः । आर्द्रद्रवस्येतिरसोयमुक्तःपाण्डुक्षयश्वासगदादिहंता क्षौद्रेणवाशर्करयाघृतेनकर्षार्द्धमेतस्यभजेत्प्रयत्नात् ॥

पारा४ पल, गन्धक ४ पल, गिलोय का सत्व, सोठ, मिरच, पीपल, मुसली और सेमल को तीन २ पल लेवे । एकत्र कर सब की बराबर लोह की भस्म मिला कर त्रिफला के काढे की ६४ भावना देवे, और ३२ भावना भांगरे के रस की देवे, और १६ सहजने के रस की देवे, तथा चिते के रस की घीगुवार और अदरक के रस की आठ २ भावना देवे तो यह रस पाडु रोग, क्षय और श्वास का नाश करने वाला बने, इसको छः मासे सहत अथवा मिश्री वा घी के साथ सेवन करे ।

आरोग्यसागरोरसः

एकैकंपलगधाश्मरससंभूतकज्जलीं ।
तस्यामध्येद्विपलिकताप्यतालपलोन्मित ॥
पलमात्रमनोह्वाचपलमभ्रकभस्मकम् ।
सुखस्पर्शस्यकर्षचनिक्षिप्यपरिमर्द्य च ॥
मूषामध्येविनिक्षिप्यपिनद्धांतमुखींतत. ।
पत्रेणशुद्धताम्रस्यनिर्दलेनत्रिकर्षिणा ॥
मूषामृद्भिःसवस्त्राभिःपरिरुध्ययथादृढ ।
परिशोष्यगिरंडैश्चपुटेद्गजपुटेनहि ॥
स्वागशीतसमुद्धत्यस्फोटीभूतविचूर्णयेत् ।
गधतालशिलाचूर्णैःसहितखल्वचूर्णक ॥
पुटेत्क्रोडपुटेनैवदशवारंततःपरं ।
क्षिपेद्विंशतिभागेनवैक्रातभस्मतांगत ॥
विमृद्यगोलकंकृत्वाक्षिपेद्रौप्यकरडके ।
आरोग्यसागरोनामरसोतिगुणवत्तर ॥
हन्यात्पाण्डुमरोचकगुदगदवातचपित्तकफ ।
गुल्माध्मानकशोफरोगमथचश्वासंशिरोर्तिवमिं ॥ अत्यर्थोनिलमेदतांगुरुमुदावर्तविचित्रंज्वरान । रोगानप्यपरान्रतिद्वयमितंसूतोमरीचाज्ययुक् ॥

पारा और गंधक चार २ तोले ले, दोनों की कजली कर इसमे ८ तोले सोनामक्खी की भस्म और हरिताल, मनसिल, अभ्रक की भस्म, प्रत्येक ४ तोले और १ तोला सज्जीखार सबको एकत्र कर खरल करे, फिर तीन तोले तांबे की डिबिया बनाय उसमें पूर्वोक्त औषधियो को रख बद कर देवे, फिर कपरमिट्टी कर धूप मे सुखाय आरने कंडों के गजपुट मे रख फूक देवे, जब स्वाग शीतल हो जाय तब निकाले, तब वह डेलासा निकलेगा, उसको तोड कर चूर्ण करे फिर इसमे गधक, हरिताल, मनसिल, मिला कर बाराह पुट मे दश वार फूके, फिर इसमे बीस भाग (वैक्रात) याना कासुला की भस्म मिला सबका खरल कर गोलिया बनावे और चादी के डिब्बे मे रखे यह आरोग्य सागर रस अत्यन्त गुणदाता है । पाण्डु रोग, अरुचि, बवासीर, वातपित्त, कफ, गोला, अफरा, सूजन, श्वास, मस्तक पीडा, वमन, अत्यन्त अग्नि की मदता, और उदावर्त्त आदि अनेक रोगो को और अनेक प्रकार के ज्वरो को काली मिरच के चूर्ण और घी के साथ दो रत्ती देने से दूर करे ।

अमृताख्याहरीतकी

शतावरीभृगराजपुनर्नवकुरटक. ।
प्रतिसप्तपलचूर्णंजलेक्वाथ्यचतुर्गुणे ॥
पादशेषकषायतवस्त्रपूतसमाहरेत ।
हरीतकीफलतस्मिषष्ट्याधिकशतत्रयम् ।

पाचयेच्छोषयेत्पश्चात्रिंशद् ग्धपलैःपचेत् ।
भित्वानिवारयेद्दृढंतद्गर्भेचक्षिपेदिदं ॥
पट्पलौरसगंधौद्वौसुपत्रे चद्रणपचेत् ॥
उत्तार्यचालयेत्तावद्यावत्कठिनतांव्रजेत् ॥
चूर्णयित्वामृतासत्वपलान्सप्तविमिश्रयेत् ।
मधुनावटिकाःकार्य्याशष्टथाधिकशतत्रयम् ॥
एकैकाह्यभयागर्भेकृत्वासूत्रेणवेष्टयेत् ।
मधुभाण्डेक्षिपेत्पश्चादेकैकंभक्षयेद्दिनम् ।
शुष्कपाण्डुहरासम्यगमृताख्याहरीतकी ।

शतावर भागरा, सांठ की जड, और पियावासा प्रत्येक ७ तोला लेकर सबको कूट चौगुने जल में काढा करे, जब पानी जल कर चतुर्थांश रह जाय तब उतार कपडे में छान लेवे, और उस में ३६० बडी और मोटी हरड डाल के पचावे, फिर सुखा कर ३० पल दूध मे औटावे, पीछे गुठली निकाल कर ये वस्तु भरे, पारा और गधक प्रत्येक ६ पल दोनो को किसी पात्र मे रख थोडी देर अग्नि पर पचावे फिर उतार कर जब तक गाढा न हो तब तक चलाता रहे, फिर इसमे गिलोय का सत्व मिला कर सहत से ३६० गोलियां बाधे, और एक २ गोली पूर्वोक्त हरडो मे भर देवे, और सूत से लपेट देवे फिर एक पात्र में सहत भर कर उसमे हरडो को डाल देवे इन मे से प्रति दिन एक हरड भक्षण करे तो शुष्क पाण्डु रोग को ये अमृताख्य हरीतकी दूर करे ।

मदेभसिंहोरसः

रसगधवराटताम्रशखविषवंगाभ्रककान्ततीक्ष्णमुंडाअहिहिंगुलटकणसमाशशकलंतत्रिगुणंपुराणकिट्टं ॥ पशुमूत्रविशोधितसुभृष्टात्रिफलाभृंगतथाद्रकोत्थनीरैः । सुविशोष्यवरामृतालिवांस्वरसैरष्टगुणैःपुनर्नवोत्थैः ॥ पृथगग्निकृतघर्नविपाच्यगुटिकागुंजयुतनिजानुपाने । ज्वरपाण्डुतृषास्रपित्यमेहक्षयकाशस्वरभग्निमादमूर्च्छान ॥ पवनादिपुदुस्तराष्टरोगान्सकलंपित्तहरंह्युदावर्त्तंच । गहनाकिमसौयथार्थनामासकलव्याधिहरोमदेभसिंहः ॥ इतिमदेभसिंहोरसः ॥

पारा, गन्धक, कौडी की भस्म, ताम्र भस्म, शख भस्म, विष वंग, अभ्रक भस्म, कान्त लोह, तीक्ष्ण लोह, और मुण्ड लोह, तथा शीशा इनकी भस्म, हींगलू, और सुहागा प्रत्येक समान भाग लेवे, तथा सबसे तिगुनी पुरानी कीट लेवे, उसको गोमूत्र मे शुद्ध कर लेवे, फिर त्रिफला, भागरा और अदरक, इनके रसमे शुद्ध करे, पश्चात् सम्पूर्ण पूर्वोक्त औषधियो को मिला कर त्रिफला गिलोय और पाटल के स्वरस मे खरल करे, फिर सब औषधियों से अठगुने सांठ के रस में डाल के अग्नि पर पचावे, जब गाढ़ा हो जावे तब रत्ती २ भर की गोलिया बनावें (कोई कहता है त्रिफला आदि प्रत्येक के अठगुने रस मे पचा कर गोलियां बनावें । एक गोली पृथक् पृथक् रोगो मे अपने २ अनुपान के साथ देव तो ज्वर, पाण्डु रोग, तृषा, रक्तपित्त, खई, खासी, श्वास, स्वर भग, मन्दाग्नि, मूर्च्छा, वात व्याधि आदि आठ प्रकार के दुष्ट रोग तथा सर्व प्रकार के पित्त विकार, और उदावर्त्त इनको शीघ्र ही नाश करे। बहुत कहना क्या है असल तो यो है कि हाथी रूप, सपूर्ण रोगो को यह सिंहरूप है यह कश्यप सहिता मे लिखा है ।

तीक्ष्णादिरसः

तीक्ष्णसूतककान्ताभ्रशुल्वसूतकतालकं ।
देवदालीरसैःपिष्टंवालुकायत्रमूर्च्छितम् ॥
अमृतोत्पलकल्हारकंदद्राक्षासमन्वितम् ।
पिष्टयष्टंथभसात्क्षौद्रसिताभ्यांकामलाप्रणुत् ॥

खेरीलोह, शुद्धपारा, कान्तलोहकी भस्म, अभ्रक, ताम्रभस्म, वंगभस्म, इनको समान भाग लेकर बटाल के रस मे खरल कर वालुकायत्र में पचावे, फिर विष, कमल, लाल कमल और दाख के रस मे खरल करे, तथा मुलहटी के स्वरस मे

सहत और मिश्री मिलाकर देवे तो कामला रोग दूर हो।

त्रियोनिरसः

ताम्रस्यतुर्यभागेनरसेनोत्पल्यभावयेत्।
निम्बुद्रावेणसयोज्य.सूर्यतापेविनिक्षिपेत्।
ऊर्ध्वाधोगंधकदत्वामृत्स्नयासन्निरुध्यच।
यामद्वयन्तुपक्वंचस्वागशीतसमुद्धरेत्॥
गुंजामात्र ददीतास्यभावयेद्गुडसंयुतम्।
त्रियोन्याख्योरसोह्येषशोफपाण्डुव्यपनोदनः॥

४ तोले शुद्ध ताम्रके कटकवेधी पत्रों को १ तोला पारा चराकर नींबू के रस में खरल कर धूप में सुखा लेवे, फिर सराव संपुट में ऊपर नीचे गन्धक रख कपर मिट्टी कर दो प्रहर की अग्नि देवे, जब स्वाग शीतल हो जाय तब निकाल लेवे, इस में से १ रत्ती गुड के साथ देवे तो यह त्रियोनिरस सूजन और पाडुरोग को दूर करे।

कांस्येनपिष्ट.शिलयासंहितःपाचितोरसः।
हताभ्यातीक्ष्णताम्राभ्यांयुतोहन्तिहलीम-कम्॥

कांसे को मनसिल के साथ पीस और उस मे पारा मिलाकर पचावे, फिर इसमे मृत खेरीलोह और ताम्रभस्म के साथ सेवन करे तो हलीमक रोग दूर होवे।

हरिद्रालोहम्

लोहचूर्णनिशायुक्तंत्रिफलाकटुरोहिणी।
प्रलिह्यमधुसर्पिभ्यांकामलार्त्तं सुखीभवेत्॥

लोहभस्म मे हलदी, त्रिफला, और कुटकी का चूर्ण मिलाकर सहत और घी के साथ खाय तो कामला रोग वाला सुखी होवे।

रक्तपित्ताधिकारः

रक्तपित्तकुठारोरसः

शुद्धपारदबलिप्रवालकहेममाक्षिकभुजगरगकं। मारितसकलमेनदुत्तमभावयेच्चविततद्रवैस्त्रिशः॥ चदनस्यकमलस्यमालतीकोरकस्यवृषपल्लवस्यच। धान्यवारणकणाशतावरीशाल्मलीवटजटामृतस्यच॥ रक्तपित्तकुलकडनाभिधोजायतेरसवरोस्रपित्तिनाम्। प्राणदोमधुवृषद्रवैरयसेवितस्तुवसुकृष्णलामत.॥ नास्त्यनेनसममत्रभूतलेभेषजकिमपिरक्तपित्तिनाम्।

शुद्धपारा, गंधक, मूंगेको भस्म, सोनामक्खी को भस्म, सीसे की भस्म और राग की भस्म इन सब को बराबर लेवे, फिर चन्दनके काढे की कमल, मालती, कंकोल, अडूसे के पत्तो की, धनिया, गजपीपल, शतावरी, सेमल के मूंसले के रसकी, वडकी जटा और विष इन के रस वा काढे की भावना दे तो रक्तपित्त नाश कारी सर्वोत्तम रस बने, इसे सहत और अडुसा के रसमे आठरत्ती इस रसका चूर्ण मिलाकर सेवन करे तो सर्व प्रकार का रक्तपित्त दूरहो इस से परे रक्तपित्त की हरणकर्त्ता दूसरी औषधि नहीं है।

बोलपर्पटीरसः

सूतगधकसुकज्जलिकायाःपर्पटीसमयुतासमभाग॥ बोलचूर्णविहितप्रतिवाप्यस्याद्रसोयमसृगामयहारी। वल्लयुग्मयुगलप्रतिदेयशर्करामधुयुतंकिलदत्त॥ रक्तपित्तगुदजस्तु॰नियोनिस्रावमाशुविनिवारयतीह।

पारा, गन्धक दोनो समान भाग ले कजली कर पर्पटी बनावे, उस पर्पटी बनावे, उस पर्पटी मे समान भाग बोल चूर्ण मिलावे तो यह रक्तपित्त हरणकर्त्ता रस बने, इस में से ६ रत्ती चूर्ण मिश्री और सहत के साथ देवे तो रक्तपित्त, गुदा के रोग, योनिस्राव ये तत्काल दूर हो।

पटोलमायसचूर्णसूतेन्द्रसमचारित।
लोहारिमृगससृष्टंरक्तपित्तहरपरम्॥

पटोलपत्र, लोहभस्म, इन मे समान भाग पारद मिलावे फिर इस मे कोटी मिलाकर सेवन करे तो रक्तपित्त दूर हो।

वृषादलानास्वरस्यकर्षंरसेन्द्रगुंजामधुशर्करायुतम्। लिहन्प्रभातेमनुजोनिहन्याद्दुःखाकरदारुणरक्तपित्तम्॥

अडुसे के पत्तोका रस १ तोले, चन्द्रोदय १ रत्ती, इनमे सहत और मिश्री मिलाके प्रातःकाल चाटे तो घोर दुःखदाई रक्तपित्त भी दूर होवे।

पारदंहिंगलूकंचऊर्ध्वयंत्रेणमेलयेत्॥
कुक्कुटांडरसभागटकणक्षारमेवच।
गंधकस्यतथाभागघृतेनपरिमर्दयेत्॥
सिद्ध रससमादायजीरतोयेनदापयेत्।
दिनानित्रीणिमापचग्रहणीरक्तदोषनुत्॥
ज्वरदाहविनाशंचरक्तपित्तनिवारणम्।

पारा और हींगलु दोनो को घोट ऊर्ध्वयन्त्र द्वारा पारे को निकाल लेवे, फिर मुर्गे के अण्डे की जरदी मे घोट के उडाले फिर सुहागा, गधक, राल और घृत से उस पारद को खरल करे, जब सिद्धि हो जावे तब १ माशे जीरे के जलके साथ तीन दिन सेवन करे तो सग्रहणी, रुधिरविकार, ज्वर, दाह और रक्त पित्त को दूर करे।

चन्द्रकलारसः

प्रत्येकंतोलमानेनसतकताम्रभस्मकम्। दिनानित्रीणिगुटिकांकृत्वाचाग्नौविनिक्षिपेत्। तत शुष्कंसमादायपुनरेवचमर्दयेत्॥ समस्तैःसमभागैश्चकृत्वाकज्जलिकांचतैः। मुस्तादाडिमदूर्वाचकेतकीस्तनवारिभिः॥ सहदेव्या कुमार्याश्चपर्पटस्यापिवारिणा। रामशीतलिकातोयैःशतावर्यारसेनच॥ भावयित्वाप्रयत्नेनदिवसेदिवसेपृथक्। तिक्तागुडूचिकासत्वंपर्पटोशीरमागधी॥ शृंगाटकसारिवाचसमानसूक्ष्मचूर्णकं। द्राक्षादिककषायेणसप्तधापरिभावयेत्॥ ततःपोताश्रयक्षिप्त्वावट्यःकार्याश्चणोपमाः।अयचन्द्रकलानामरसेन्द्रःपरिकीर्तितः॥ सर्वपैत्तगदध्वसी वातपत्तगदापह। अन्तर्बाह्यमहादाहविध्वसनमहाक्षय। ग्रीष्मकालेशरत्कालेविशेषेणप्रशस्यते। कुरुतेनाग्निमांद्यंचमहातापज्वरंहरेत्॥ भ्रममूर्च्छांहरत्याशुस्त्रीणांरक्तमहास्रवं। ऊर्ध्वाधोरक्तपित्तंचरक्तवान्तिविशेषतः॥ मूत्रकृच्छ्राणिसर्वाणिनाशयेन्नात्रसंशयः। सपटोलकहिंगूलःसक्षौद्रोरक्तपित्तजित्॥ नवनीतसितालाजाद्राक्षयासहभक्षयेत्। मस्तकेचघृतदध्याद्रक्तपित्तहरंपरम्॥ द्राक्षावासायुक्तंख्यातशर्कराभावितंपिवेत्। वासारससिताक्षौद्रैर्लाजांवाशर्करासमां॥ भक्षयेद्रक्तपित्तार्त्तःतृष्णादाहज्वरंजयेत्।

शुद्ध पारा और ताम्र भस्म दोनो को एक २ तोले ले गोली बनावे, और संपुट कर तीन दिन अग्नि मे रखे फिर निकाल के बराबर की गन्धक डाल कजली करे इसमें नागरमोथा, अनारदाना, दूब, केतकी, दूध, सहदेई, घीगुवार, पित्त पापड़ा, रामशीतला, और शतावर प्रत्येक के रस की एक एक दिन भावना दे फिर चिरायता, गिलोय सत्त, पित्त पापडा, खस, पीपल, सिंघाडा और सारिवा को समान ले चूर्ण कर द्राक्षादिक काढे की सात भावना देवे, फिर अग्नि के आश्रय गाढा कर चने के बराबर गोलियां बनावे, इसे चन्द्र कला रसेन्द्र कहते हैं, यह सर्व प्रकार के पित्त रोग, तथा वात पित्त विकार, देह के बाहर भीतर का घोर दाह,महाघोर ज्वर, भ्रम मूर्च्छा, स्त्रियो के अत्यन्त रुधिर स्राव, ऊर्ध्व रक्त पित्त, तथा नीचे का रक्त पित्त, रुधिर की वमन, सर्व प्रकार का मूत्र कृच्छ्र , इन सब रोगो को दूर करे। इसको गरमी की ऋतु मे अथवा शरद ऋतु मे विशेषकर देवे, ये मदाग्नि नहीं करता पटोल पत्र के काढे मे हींगलू और सहत भी मिला लेवे तो रक्त पित्त को दूर करे। मक्खन, मिश्री, खील, दाख इनके साथ खाय, मस्तक मे घी की मालिश करावे तो रक्त पित्तकी बीमारी दूर होवे। दाख और अडूसे के काढे मे मिश्री मिला इसके साथ इस रस को सेवन करे तो अथवा अडूसे का रस मिश्री और सहत

मिला इसके साथ या मिश्री मिले खील के यूष के साथ इस रस की मात्रा मिलाकर पीवे तो रक्त पित्त, तृष्णा, दाह और ज्वर को दूर करे।

अर्केश्वरः

मृतार्कंमृतवंगंचमृताभ्रंचसमाक्षिकम्।
अमृताम्बुरसैर्भाव्यंत्रिसप्तकपुटेपचेत्॥
वासाक्षौद्रविदारीभ्यांचतुर्गुञ्जाप्रमाणतः।
भक्षणाद्विनिहन्त्याशुरक्तपित्तसुदारुणम्॥

ताम्र भस्म, वंग भस्म, अभ्रक, और सोना मक्खी को गिलोय और नागरमोथा के रस के २१ पुट देकर सराव सपुट मे रख फूंक देवे फिर अडूसा सहत और विदारी कंद के रस मे चार-चार रत्ती की गोलिया बनावे इसके सेवन से रक्त-पित्त तत्काल दूर होवे।

सुधानिधिरसः

सूतंगधंमाक्षिकचैवलोहसर्वं घृष्ट्वात्रैफलेनोदकेन। लोहेपात्रेगोमयेग्नौपुटित्वारात्रौदद्याद्रक्तपित्तप्रशान्त्यै॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, सोना मक्खी की भस्म, और लोह भस्म को त्रिफला के काढे मे खरलकर और लोह पात्रमे रख आरने उपलोका पुट देवे इसकी २ रत्ती रात्रिमे खावे तो रक्तपित्त शात हो।

आमलाद्यंलौहम्

आमलंपिप्पलीचूर्णं तुल्ययासितयासह।
रक्तपित्तहरंलोहयोगराजमिदंस्मृतम्॥
वृष्याग्निदीपनंबल्यमम्लपित्तविनाशनम्।
पित्तोत्थानपिवातोत्थान्निहन्तिविविधान् गदान्॥

आमला, और पीपल का चूर्ण इन दोनो के समान लोह भस्म और इन तीनो के बराबर मिश्री मिलावे तो यह चूर्ण रक्त पित्त हरणकर्त्ता अति श्रेठ बने, वृष्य हैं, अग्नि को दीप्त करे, बल बढावे, अम्ल पित्त, पित्त रोग, वातरोग और अनेक प्रकार के रोगों को यह आमलादिलोह दूर करे।

शतमूल्याद्यंलौहम्

शतमूलीसिताधान्यनागकेशरचन्दनैः।
त्रिकत्रयतिलैर्युक्तं लौहंसर्वगदापहम्॥
तृष्णादाहज्वरच्छर्दिरक्तपित्तविनाशनम्।

शतावर, मिश्री धनियां, नागकेशर, सफेद चन्दन, त्रिकुटा, त्रिफला, त्रिमद, तिल, और लोह भस्म इन सब को एकत्र कर ६ माशे नित्य सेवन करे तो प्यास, दाह ज्वर, वमन, और रक्त पित्त दूर होवे।

रक्तपित्तान्तकोरसः

रक्तपित्तीपिवेद्व्योमसहितपर्पटीरसम्।
वासाद्राक्षाभयानाञ्चकाथंवाशर्करान्वितम्॥
योगवाहिरसान्सर्वान्रक्तपित्तेप्रयोजयेत्।
मृताभ्र मुण्डतीक्ष्णञ्चमाक्षिकरसतालकम्॥
गन्धकञ्चभवेत्तुल्ययष्टिद्राक्षामृताद्रवैः।
दिनैकमर्दयेत्खल्लेसिताक्षौद्रसमन्वितम्॥
माषमात्रंनिहन्त्याशुरक्तपित्तसुदारुणम्।
ज्वरदाहक्षतक्षीणतृष्णाशोषमरोचकम्॥

रक्त पित्त मे अभ्रक भस्म के साथ पर्पटी रस मिलाके पीवे (कोई खेत पापडाके क्वाथ के साथ पीना कहता है) अथवा अडूसे, दाख और हरड का काढा मिश्री मिलाकर पीवे, तथा और जो योगवाही रस हैं उनको रक्त पित्त मे देवे, अथवा अभ्रक, सार, सोनामक्खी की भस्म, हडताल की भस्म, और गन्धक समान भागले इनको मुलहटी, दाख और गिलोयके काढेसे १ दिन खरलकर मिश्री और सहतके साथ १ माशे खाय तो घोर रक्तपित्त, ज्वर, दाह, क्षतक्षीण, तृषा, शोष और अरुचि को दूर करे।

रसामृतरसः

रसस्यद्विगुणगन्धंमाक्षिकंचशिलाजतु।
चन्दनगुडूचीद्राक्षामधुपुष्पञ्चधान्यकम्॥

कुटजस्यत्वचबीजधातकीनिम्बपत्रकम् ।
यष्टिमधुसमायुक्तं मधुशर्करयान्वितम ॥
विधिनामर्दयित्वातुकर्षमात्रन्तुभक्षयेत् ।
धारोष्णपयसायुक्त प्रातरेवसमुत्थितः ॥
पित्तंतथाम्लपित्तचरक्तपित्तंविशेषतः ।
निहन्तिसर्वदोषचज्वरंसर्वं नसशयः ॥
रसामृतरसोनामगहनानन्दभाषितः ।

पारा १ तोले, गन्धक, २ तोले, सोनामक्खी शिलाजीत, चन्दन, गिलोय, दाख, महुवे के फूल धनियां, कुडा की छाल, इन्द्रजौ, धाय के फूल, नीबू के पत्ते, मुलहटी और सहत, मिश्री इनको एकत्र कूट पीस तोले भर धारोष्ण दूध के साथ प्रात.काल सेवन करे तो पित्त के रोग रक्त पित्त के सर्व विकार और सर्व प्रकार के ज्वरों को यह रसामृत नामक रस दूर करता है यह गहनानन्द योगी का कहा हुआ है ।

खण्डकूष्मांडकः

कूष्माण्डकान्पलशतसुस्विन्नं निष्कुलीकृतम् ।
पचेत्तप्तघृतेप्रस्थेशनैस्ताम्रभयेदृढे ॥
यदामधुनिभःपाकस्तदाखण्डशतंन्यसेत् ।
पिप्पलीशृंगवेराभ्याद्वे पलेजीरकस्यच ॥
त्वगेलापत्रमरिचधान्यकानापलार्द्धकम् ।
न्यसेच्चूर्णीकृततत्रदार्व्यासघट्टयेत्पुन. ॥
तत्पक्व स्थापयेद्भाण्डेदत्वाक्षौद्रघृतार्द्धकम् ।
तद्यथाग्निवलखादेद्रक्तपित्तक्षतक्षयी ॥

१०० पल छिला और तराशा हुआ पेठा उसको चूने के पानी से धोकर अच्छे पानी से धो डाले, फिर थोडा जल डाल के उवाल लेवे जब गल जावे तब बारीक कपडे मे डाल के निचोड डाले फिर थोडी देर धूप मे सुखाकर पीस डाले, तदनन्तर तावे के पात्र मे सेर भर घी डालकर भून ले, जब भुनकर सहत के समान लाल हो जावे तब १०० पल खांड की चाशनी कर उसमे डाल देवे और इतनी वस्तु और मिलावे, पीपल, अदरख और जीरा प्रत्येक दो पल, तज, छोटी इलायची के बीज, पत्रज, काली मिरच और धनिया प्रत्येक दो तोला, सबका चूर्ण कर उसी मे डाल दे, और कलछी से चला देवे, जब पक जाय तब उतार कर किसी उत्तम पात्रमे भर कर रख छोडे और आध सेर सहत मिला देवे, इसको बलाबल देख कर रक्तपित्त, उरःक्षत और खई वाला सेवन करे ।

शर्कराद्यं लौहम्

शर्करातिलसंयुक्तं त्रिकत्रययुतन्त्वयः ।
रक्तपित्तंनिहन्त्वाशुचाम्लपित्तहरंपरम् ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, और त्रिमद मे बराबर लोह भस्म मिलावे तथा मिश्री और तिल मिलाय सेवन करे तो रक्तपित्त और अम्लपित्त को दूर करे ।

समशर्करलौहम्

लौहाच्चतुर्गुणक्षीरमाज्यद्विगुणमुत्तमम् ।
चूर्णपादन्तुवैडगंदद्यान्मधुसितेसमे ॥
ताम्रपात्रे दृढेपक्त्वास्थास्थापयेत्घृतभाजने ।
मापकादिक्रमेणैवभक्षयेद्विधिपूर्वकम् ॥
अनुपानप्रयुंजीतनारिकेलोदकादिकम् ।
रक्तपित्तंजयेत्तीव्रमम्लपित्तक्षतक्षयम् ॥
प्रहृष्टकान्तिजननमायुष्यमुत्तमोत्तमम् ।

लोह भस्म ४ तोले, दूध १६ तोले, गौ का घी ८ तोले और लोह भस्म की चतुर्थांश वायविडंग का चूर्ण ले प्रथम लोह भस्म, दूध और घी को ताम्र पात्र मे पका के फिर वायविडंग का चूर्ण मिलावे, फिर शीतल होने पर बराबर का सहत और मिश्री मिलाय घी के बासन मे भर रखे, क्रमपूर्वक माशे से बढा कर विधि पूर्वक सेवन करे, इसके ऊपर नारियल का जल पीवे तो तीव्र अम्लपित्त और रक्तपित्त तथा क्षत, क्षीणता को दूर करके कांति और आयु को बढावे ।

रक्तपित्तकुलकंडनोरसः

शुद्धपारदवलिप्रवालकहेममाक्षिकभुजगरंग
क । मारितंसकलमेतदुत्तमभावयेत्पृथक्पृथ

कुद्रवैस्त्रिशः ।। चंदनस्यतगरस्यमालतीकोरकस्यवृषपल्लवस्यच । धान्यवारणकणाशतावरीशाल्मलीवटजटामृतस्यच ।। रक्तपित्तकुलकडनाभिधोजायतेरसवरोस्रपित्तिना। प्राणदोमधुवृषद्रवैरयसेवितस्तुवसुकृष्णलमितः।। नास्त्यनेनसमसत्रभूतलेभेषजंकिमपिरक्तपित्तिनाम् ।

शुद्ध पारा, गंधक, मूंगा, सोनामक्खी, सीसा और रांगा इन सबकी भस्म लेवे फिर इनको चन्दन, तगर, मालती की कली, अडूसे के पत्ते धनियां, गजपीपल, शतावर, सेमल, बडकी जटा, और विष इन रसो की पृथक् २ भावना देवे, तो यह रक्तपित्त कुलकडन उत्तम रस बने, रक्तपित्त के रोगियो को प्राणो का देने वाला इसको ८ रत्ती सहत और अडूसे के काढे के साथ देवे, इसके समान रक्तपित्त नाशक दूसरी औषधी नही है।

रक्तपित्तीपिवेद्बोलसहितपर्पटीरसम् ।
वासाद्राक्षाभयाक्काथपिवेत्पश्चात्सशर्करम ।।

रक्तपित्त रोग वाला बोल के चूर्ण मे पर्पटी रस मिला कर खावे, पश्चात् अडूसा, दाख, और हरड के काढे से मिश्री मिला कर पीवे तो रक्तपित्त दूर हो ।

अमृताख्यलोहरसायन

अमृतावृताद्न्तीश्रावणीखदिरोवृषः ।
चित्रकोभृंगराजश्चकोकिलाक्षःसपुष्करः ।।
पुनर्नवाबलाकासशिग्रुमोरटदारुकः ।
स्नुहीरुष्करशरोदर्भकुशास्थिसहपीवरी ।।
गवाक्षीवरुणःकंदश्चविकातालमूलिका ।
नागबलाकणामूलकुष्टंब्राह्मणयष्टिका ।।
पलोन्मितानिचैतानिजलद्रोणेविपाचयेत् ।
अष्टभागावशिष्टन्तुकषायमुपकल्पयेत् ।।
त्रिफलायास्तथाप्रस्थजलाष्टगुणपाचितम् ।
तस्मादष्टावशिष्टस्तुकषायस्तुपरिस्रुत.।।
माक्षिकेनहतस्यापिपुटितस्ययथाविधिः ।
अयसश्चूर्णितपूततलषोडशसम्मितम् ।।
पलान्यभ्रस्यचत्वारितावंतिगंधकस्यच ।
द्वेपलेचरसस्यापिखलितस्यविधानत ।।
गुडस्यचपलान्यष्टौशितायावाथपैत्तिके ।
रक्तपित्तेथखण्डस्यमत्स्यंड्यावापिकार्षिके ।।
गुग्गुलोर्द्विपलंदत्वाप्रस्थार्द्धंसर्पिषस्तथा ।
एवपाकविधिज्ञस्तुपचेल्लोहंसमाहितः ।।
शीतेऽवतायेमधुनःक्षिपेदष्टपलभिषक् ।
माक्षिकस्यविशुद्धस्यर्द्विपलरजसःक्षिपेत् ।।
शिलाजतुस्तथाचूर्णपलार्द्धसम्मितपृथक् ।
अथैषांप्रक्षिपेच्चूर्णपलमात्रं पृथक्पृथक् ।।
त्रिकटुत्रिफलादन्तीवृताजीरकद्वयम् ।
गायत्रिसारतालीसंधान्यकमधुयष्टिका ।।
शुभंरसाजनंशृंगीचित्रकतान्तवस्रुत ।
चातुर्जातककोलवगंजातिकाफलम् ।।
द्राक्षाखजूरकचूर्णपलार्द्धसम्मितपृथक् ।
एषोलोहवर.श्रीमान्सर्वव्याधिप्रणाशनः ।।
यत्रयत्रप्रयुंजीततत्तदाशुविनाशयेत् ।
रक्तपित्तेऽम्लपित्तेचक्षयेकुष्टेज्वरेऽरुचौ ।।
दुर्नाम्निचोदरेशूलेग्रहण्याचामवातके ।
वातरक्तेमूत्रकृच्छ्रेप्रमेहेशर्करागदे ।।
अस्योपयोगान्मनुजस्तारुण्यमधिगच्छति ।
ब्रह्मचर्येणकुर्वीतप्लुतमाक्षिकसर्पिषा ।।
माषकरक्तिकावृद्धयायावदष्टौचमाषकान् ।
वर्जयेद्विदलसूपमासचानूपसम्भवम् ।।
ककारपूर्वकसर्वंप्रयत्नेनविवर्जयेत् ।
अमृताख्योवल्लोहोयंसर्वत्रैवोपयुज्यते ।।
अनेनजतवःस्वस्थाभवतिइतिनिश्चितम ।

गिलोय, निसोथ, दन्ती गोरखमुंडी, खैरसार, अडूसा, चीता, भागरा, तालमखाना, पुहकरमूल, साठ की जड, गगरेन, कास, सहजना, अंकोल, दारुहलदी, थूहर मिलावे, सरपता, कुश, डामहडसकरी, शतावर, इंद्रायन, वरना, चव्य, मूसली, खरैठी, पीपलामूल, कूट, ब्राह्मी और मूलैठी, प्रत्येक चार २ तोले लेकर एक द्रोण जल मे औटावे जब अष्टावशेष काढा रहे तब उतार लेवे फिर त्रिफला का अष्टावशेष काढा लेवे,

पश्चात् सुवर्णमाखी करके मारा हुआ लोह चूर्ण लेकर उक्त फा॰ै का पुट देवे, फिर इस लोह को १६ पल लेकर, अभ्रक, भस्म, गंधक, प्रत्येक १६ तोले, और शुद्ध पारा ८ तोले सबको खरल करे इसको ८ तोले गुड में यदि पित्तविकार हो ८ तोले मिश्री अथवा तोले भर खांड उसमें ८ तोले शुद्ध गूगल और आध सेर घी मिला कर पाक करे जब अवलेह हो जावे तब उतार लेवें, शीतल होने पर ८ पल सहत मिला के तथा ८ पल सुवर्ण माक्षिक की भस्म मिलावे, और दो तोले शिलाजीत मिलावे फिर, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, दन्ती, निसोथ, दोनो जीरे, खैरसार, तालीस पत्र, धनियां, मुलहठी, रसोत, काकडासिंगी, चीता, चातुर्जातक, ककोल लोंग, जायफल, दाख, और छुहारे प्रत्येक दो तोले डाले तो यह उत्तम अवलेह सर्व रोगो का दूर करने वाला बने जिस २ रोग पर देवे उसी२ रोग को शीघ्र दूर करे, रक्तपित्त, अम्लपित्त, क्षय, कुष्ठ, ज्वर, अरुचि, बवासीर, उदर रोग, शूल, संग्रहणी, आम वात, वात रक्त, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और शर्करा आदि सब रोगों को दूर करे, इसका सेवन करने से मनुष्य तरुण होता है, इस का खाने वाला ब्रह्मचर्य से रहे, और इस अवलेह मे सहत और घी मिला कर सेवन करे, प्रथम एक मासे फिर एक २ रत्ती नित्य बढ़ावे ऐसे ८ मासे तक इसकी परम मात्रा है, इसके सेवन वाले को दाल, मूंग अनूपदेश का मास तथा ककारपूर्व जिनके नाम हैं, जैसे (कुटकी, कालशाल, ककडी करेले, आदि को त्याग देवे, यह अमृताख्य „अवलेह सर्वत्र देना चाहिये इससे मनुष्य रोगहीन होता है यह वगसेन ग्रन्थ मे लिखा है।

कपर्दकीरसः

मृतंवामूर्च्छितसूतंकार्पासकुसुमद्रवैः।
मर्द्दयेद्दिनमेकन्तुतेनपूर्यावराटिका॥
निरुध्याचान्धमूषायांभांडेरुद्ध्वापुटेपचेत्।
उद्धृत्यचूर्णयेत्श्लक्ष्णमरिचैर्द्विगुणैःसह॥
गुंजामात्रंघृतेनैवभक्षयेत्प्रातरुत्थितः।
उदुंवरंघृतेचैवअनुपानप्रयोजयेत्॥
कपर्दकीरसोनामरक्तपित्तविनाशनः।

मरे हुए वा मूर्च्छित पारे को नादनवन (नरमा) फूल के रस में १ दिन खरल कर कौडियों मे भरके उनका मुख बंद कर देवे, फिर अधमूषा मे रख गजपुट मे फूक देवे, जब मूष स्वांगशीतल होजाय तब निकाल दूनी कालिमिरच मिलाय के पीस डाले, इसको एक रत्ती प्रात.-काल घी के साथ खाय तो यह कपर्देश्वर रस रक्तपित्त को दूर करे, इस पर घृत का अनुपान देवे।

नीलोत्पलसिताक्षौद्रसयुक्तंपद्मकेशरम्॥
तण्डुलोदकपानेनरक्तपित्तंनियच्छति।

नीलकमल, मिश्री, सहत इनमे कमल की केशर मिलाय चावल के पानी से पीवे तो रक्तपित्त दूर हो।

खडखाद्यंलौहम्.

शतावरीछिन्नरुहावृषोमुडीतिकावला।
तालमूलीचगायत्रीत्रिफलायास्त्वचस्तथा॥
भार्गीपुष्करमूलचपृथक्पचपलानिच।
जलद्रोणेविपक्तव्यमष्टभागावशेषित॥
दिव्यौषधिहतस्यापिमाक्षिकेणहतस्यच।
पलद्वादशकदेयंरुक्मलोहस्यचूर्णकम्॥
खडतुल्यघृतंदेयंपलषोडशकवुधैः।
पचेत्ताम्रमयेपात्रेगुडादेपाकवद्यथा॥
प्रस्थार्द्धंमधुनोदेयशुभाश्मजतुकस्यच।
शृंगीकृष्णाविडंगंचशुंठ्याजाजीपलपलं॥
त्रिफलाधान्यकपत्रंद्वयक्षमरिचकेशरम्।
चूर्णंदत्वासुमथितस्निग्धभाण्डेनिधापयेत्॥
यथाकालप्रयुंजीतविडालपदमात्रकम्।
गव्यक्षीरानुपानंचसेव्यंमांसरसंपय॥
गुरुवृष्यान्नपानानिस्निग्धंमांसादिबृंहणं।
रक्तपित्तंक्षयंकासंपक्तिशूलंविशेषतः॥

वातरक्तं प्रमेहञ्चशीतपित्तंवमिंक्लम ।
श्वयथुं पाण्डुरोगंकुष्ठप्लीहोदरंतथा ॥
आनाहंमूत्रसंस्रावयम्लपित्तंनिहन्तिच ।
चक्षुष्यबृंहणंवृष्यमांगल्यप्रतिवर्द्धनम् ॥
आरोग्यपुत्रदश्रेष्ठ कामाग्निबलवर्द्धनम् ।
श्रीकरंलाघवकरंखण्डखाद्य प्रकीर्त्तितम् ॥
छागंपारावतमांसतित्तिरःक्ककराःशशाः ।
कुरंगाःकृष्णसाराश्चतेषामांसानियोजयेत् ॥
नारिकेलपयःपानसुनिष्णणकवास्तुक ।
शुष्कमूलकजीवान्तपटोलवृहतीफल ॥
फलवार्त्ताकपकाम्र खर्जूरंस्वादुदाडिम ।
ककारपूर्वकयच्चमांसचानूपसंभव ॥
वर्जनीयंविशेषेणखण्डखाद्य प्रकुर्वता ।
लोहान्तरचतत्रापिपुटेनाविक्रियेष्यते ॥
नपुनर्माक्षिकेणैवशिलयावन्हिमारण ।

शतावरि, गिलोय, अडूसे के पत्ते, गोरख-मुंडी गगेरन, मूसली, खेरसार, त्रिफला, भारंगी और पुहकर मूल प्रत्येक पावभर ले २० सेर जल में औटाके अष्टावशेष काढा बनावे, पश्चात् मनसिलसे मरा और सुवर्ण माक्षिकके योग से फूका जगवेल लोह ४८ तोले लेवे और खाड, घी, गुड प्रत्येक १६ तोले मिलाके तांबे के बरतन में पाक बनावे, जब अवलेह होने पर आवे तब आधसेर सहत मिलावे और शिलाजीत, काकडासिंगी, पीपल, वायविडंग, मोठ, जीरा, प्रत्येक ४ तोले, त्रिफला, धनिया, पत्रज, कालीमिरच और केशर प्रत्येक, दो तोले मिलावे, सब को एकत्र कर चिकने बरतन में रख छोडे । इसको यथा समय मे १ तोले सेवन करे और अनुपान में गौका दूध लेवे, तथा मांसरस, दूध, भारी पदार्थ, पुष्ट करने वाले पदार्थ, चिकने मासादिक तथा वृंहण कारी पदार्थों का सेवन करे तो यह रस रक्तपित्त तथा खांसी परिणामशूल, वातरक्त, प्रमेह, शीत पित्त, वमन, क्लम, सूजन, पाण्डुरोग, कोढ, प्लीह, उदर, अफरा, मूत्रका निकलजाना, अम्ल पित्त, इन सब को दूर करे, नेत्रों का हितकारी, वृंहण, वृष्य, मंगलकर्त्ता और प्रीतिका बढाने वाला है, आरोग्यता और पुत्रदाता है कामाग्नि को बढावे, कान्ति और हलकेपन को करने वाला यह खंडखाद्यावलेह है, इसका सेवन करने वाला बकरे और कबूतर का मांस, तीतर, कुक्कर, ससा, हरिण, कालाहरिण, इनका मास सेवन करे, प्यास मे नारियल का जल पीवे, चौपतिया, बथुआ, सूखीमूली, डोडी, परवल, कटेरी के फल, बेंगन, पकाआम, छुहारा, मीठे अनार तथा ककार पूर्वक जो नाम (ककडी, करेले आदि) अनूपका मांस इतनी वस्तु खण्डखाद्यका सेवन करने वाला त्याग देवे ।

रक्तपित्तहारसः

मृतसूतमृतंताम्रंतीक्ष्णंवासारसैर्दिनम् ।
मर्द्दितमाषमात्रंतुभक्षयेद्रक्तपित्तनुत् ॥

चन्द्रोदय, ताम्रभस्म और लोहभस्म सब को अडूसेके रसमें एक दिन खरल कर १ मासे के अनुमान भक्षण करे, तो रक्तपित्त दूर होवे, यह नारायण विलास ग्रन्थ से लिखा गया ।

अथ यक्ष्माधिकारः

रास्नादिलौहम्.

रास्नाश्वगन्धाकर्पूरभेकपर्णीशिलाह्वये ।
त्रिकत्रयसमायुक्तंलौहंयक्ष्मान्तकृन्मतम् ॥
सर्वोपद्रवसंयुक्तमपिवैद्यविवर्जितम् ।
हन्तिकासंस्वराघातराजयक्ष्मक्षतक्षयम् ॥
बलवर्णाग्निपुष्टीनांवर्द्धनदोषनाशनम् ।

रास्ना, असगन्ध, कपूर, मण्डूकपर्णी (ब्राह्मी का भेद) शिलाजीत, त्रिफला, त्रिकुटा, और त्रिमद प्रत्येक समान भाग लेवे, सब का चूर्णकर चूर्ण की बराबर लोहभस्म ले, सब को एकत्र कर बलाबल देख मात्रा देवेतो सर्व उपद्रव युक्त रोगी जिसको वैद्य त्याग गया हो उसकी खासी, स्वरभेद, राजयक्ष्मा, और क्षयी को नाश करे तथा

बल, वर्ण और जठराग्नि को बढ़ावे और सर्व दुष्ट दोषो को शान्ति करे।

राजमृगाङ्कोरसः

रसभस्मत्रयोभागाभागैकहेमभस्मकम्।
मृततारस्यभागैकशिलागधकतालकम्॥
प्रतिभागद्वयंशुद्धमेकीकृत्यविचूर्णयेत।
वराटिकातेनपूर्य्याचाजाक्षीरेणटकणम्॥
पिष्ट्वातेनमुखरुध्वामृद्भाण्डेतांनिरोधयेत।
शुष्कंगजपुटेपाच्यचूर्णयेत्स्वांगशीतलम्॥
शपिप्पलिकै.क्षौद्रैर्मरिचैर्वाघृतान्वि तः।
गुंजाचतुष्टयचास्यक्षयरोगप्रशान्तये॥
सघृतैर्दापयेद्वाथवातश्लैष्मभवेक्षये।
रसोराजमृगाङ्कोयनानारोगनिषूदनः॥

पारे की भस्म ३ भाग, सुवर्ण भस्म १ भाग रूपे की भस्म १ भाग, मनसिल, गन्धक, हरिताल प्रत्येक दो भाग, सब शुद्ध किये हुए लेकर खरल करे, फिर इसको पीली और बड़ी कौडियो में भर कर बकरी के दूध मे पिसे हुए सुहागे से मुख बद कर देवे फिर एक मिट्टी के बासन मे भर मुख बद कर गजपुट से फूं क देवे, जब स्वांग शीतल हो जाय तब कौडियो को निकाल के पीस डाले इससे से ४ रत्ती पीपल के चूर्ण और सहत के साथ सेवन करे अथवा काली मिरचो के चूर्ण और घी मे मिलाकर खाय तो क्षय रोग दूर हो यदि वात कफ से क्षय विकार होवे तो केवल घृत मे मिलाकर खाय यह अनेक रोगो को दूर करता है।

मृगाङ्करसः

स्याद्रसेनसमंहेममौक्तिकंद्विगुणंभवेत्।
गंधकचसमतेनरसतुल्यन्तुटङ्कणम्॥
तत्सर्वंगोलकंकृत्वाकाञ्जिकेनचपेषयेत।
भाण्डेलवणपूर्णेथपचेद्यामचतुष्टयम्॥
मृगाकसज्ञकोज्ञयोराजयक्ष्मनिकृन्तनः।
गुंजाचतुष्टयचास्यमरिच'सहभक्षयेत्॥
पिप्पलीदशवैर्वापिमधुनासहलेहयेत्।
पथ्यन्तुलघुभिर्मा सैःप्रयोगेस्मिनप्रयोजयेत्।
व्यजनैर्घृतपक्वैश्चसंस्कृतैर्वा विदाहिभिः।
वृन्ताकबिल्वतैलानिकारवेल्लचवर्जयेत।
स्त्रियंपरिहरेद्बुद्रूकोपचापिविवर्जयेत्।

पारे की बराबर सुवर्ण के वर्क और दूने मोती और पारे की बराबर गन्धक और सुहागा सब को काजी मे पीसकर गोला बनावे, फिर एक पात्र मे निमक भरकर गोले को बीच मे रख दे और ऊपर से निमक भर पात्र का मुख बन्द कर चूल्हे पर चढाय चार प्रहर की अग्नि देवे तो यह मृगाङ्कसज्ञक रस बने, यह राजयक्ष्मा को दूर करे, ४ रत्ती मिरच के चूर्ण मे खाय अथवा दश पीपल के चूर्ण और सहत के साथ भक्षण करे, इसके ऊपर हलके मास का पथ्य देवे, और घृत-पक्व (पूरी, कचारी,मटरी आदि) पदार्थ खावे परन्तु दाह कर्त्ता पदार्थ वर्जित है, इसके सेवन करने वाला बैंगन, बेलफल, तेल और करेले खाना त्याग देवे तथा स्त्री संग और क्रोधको भी सर्वथा त्याग देवे।

रत्नगर्भपोटलीः

रसवज्रहेमतारनागलोहचताम्रकम्।
तुल्याशमरिचदेयमुक्ताविद्रुममाक्षिकम्॥
शखतुत्थचतुल्याशमप्राहचित्रकद्रवै।
मर्द्दयित्वाविचूर्ण्याथतेनपूर्य्योवराटिका॥
टकणरविदुग्धेनमुखलिप्त्वानिरोधयेत्॥
मृद्भाण्डेतानिरुध्याथसम्यग्गजपुटेपचेत्।
आर्द्रकस्यरसैसप्तचित्रकस्यचविंशत।
द्रवैर्भाव्यततश्चास्यदेयगुंजाचतुष्टयम्॥
यक्ष्मरोगनिहत्याशुसाध्यासाध्यनसशय'।
योजयेत्पिप्पलीक्षौद्रैसघृतैर्मरिचैस्तथा॥
महारोगाष्टकेकासेश्वासेचैवातिसारके।
पोटलींरत्नगर्भोयसर्वरोगकुलान्तका.॥

शुद्ध पारा, हीरा, सुवर्ण, चादी, सीसा, लोह और ताम्र इन सब की भस्म और काली मिरच इन सब को समान भाग लेवे, तथा मोती, मूंगा, सोना मक्खी, और शख इनकी

भस्म और नीलाथोथा सब समान भाग ले सब को एकत्र कर चीते के रस मे खरल कर पीली कौड़ी से भर के आक के दूध से पिसे हुए सुहागे से उन कौड़ियों के मुख को बन्द कर देवे, फिर इनको मिट्टी के बरतन में रख के बरतन का मुख बन्द कर गजपुट मे रख के फूंक देवे जब स्वांग शीतल हो जावे तब निकाल खरलकर अदरक के रस की सात भावना देवे फिर चीते के रस की २० भावना देवे तो यह रस बनाकर तयार हो इसमें से ४ रत्ती रस पीपल और सहत के साथ अथवा काली मिरच और घृत के साथ देवे तो साध्य और असाध्य क्षय रोगको दूर करे, और आठ महारोग (वातव्याधि, पथरी, कुष्ठ, प्रमेह, उदररोग, भगदर, बवासीर और संग्रहणी) को दूर करे, खासी, श्वास, अतिसार आदि इन सब रोगो को यह रत्नगर्भ पोटली दूर करे।

स्वल्पमृगाङ्कः

रसभस्मंहेमभस्मंतुल्यगु जाद्वयभजेत् ।
दोषबुध्वानुपानेनमृगाङ्कोयक्षयापहः ॥

चन्द्रोदय और सुवर्ण भस्म दो रत्ती को दोषानुसार अनुपान के साथ देने से क्षय रोग दूर हो।

लोकेश्वरपोटली

भस्मसूताच्चतुर्थांशमृतस्वर्णं प्रदापयेत् ।
द्विगुणगंधकंदत्वामर्दयेच्चित्रकाम्बुना ॥
पूर्य्यावराटिकातेनटकणेननिरुध्यच ।
भाण्डेचूर्णप्रलिप्तेऽथक्षिप्त्वारुध्वाचमृण्मये ॥
शोषयित्वागजपुटेपुटयेत्तुपरान्हके ।
स्वागशीतसमुद्धृत्यचूर्णयित्वातुविन्यसेत ॥
एषलोकेश्वरोनामवीर्यपुष्टिविवर्द्धन. ।
गुंजाचतुष्टयचास्यपिप्पलीमधुसयुतम् ॥
मरिचैर्घृतयुक्तैश्चभक्षयेद्दिवसत्रयम् ।
अङ्गकार्श्येऽग्निमान्द्येचकाशेपित्तेक्षयेपिच ॥
लवणवर्जयेदत्रसार्ज्यंदधिचयोजयेत् ।
एकविंशद्दिनयावत्सघृतमरिचपिबेत् ॥
पथ्यमृगाङ्कवद्देयशयीतोत्तानपादितः ।
येशुष्काविषमाशनैःक्षयरुजाव्याप्ताश्चयेष्ठीलया । पाण्डुत्वेननहताश्चवैद्यविधिनाहीनाश्चयेदुर्भगाः । येतप्ताविविधैर्ज्वरैःश्रममदोन्मादैः प्रमादगता । तेसर्वेविगतामयाहतरुजाःस्युः पोटलीसेवनात् ।

पारे की भस्म १ तोले, सुवर्ण भस्म ३ माशे गन्धक दो तोले, सबको चीते के रसमे खरल करे पिट्ठी बनाय कौडियो मे भर सुहागेसे मुख बन्द देवे फिर कौडियों को मिट्टी के पाल भर मुंह ढक चूने से संधि बन्द कर देवे और धूप मे सुखाय गजपुट मे फूक देवे, जब स्वाग शीतल हो जाय तब कौड़ियो को निकाल चूर्ण कर शीशी में भर रख छोड़े, और इसकी ४ रत्ती मात्रा पीपल और सहत के साथ अथवा काली मिरच और घी के साथ खावे तो तीन दिन मे वीर्य्यको पुष्ट करे, और अग की कृशता, मंदाग्नि खासी तथा पित्त क्षयमें इसका सेवन करने वाला रोगी नमक को त्याग देवे, परन्तु दही मे घी मिलाकर खाय तथा २१ दिन तक घी मे काली-मिरच मिलाकर पीवे, और मृगाङ्क रस के समान इस से पथ्य देवे, और रोगी पैर सीधे पसार कर सोवे तो विषम भोजन करने से जो शुष्क हो गये हो और क्षयरोग, अष्टीला, तथा पांडुरोग करके व्याप्त हो और जिनको वैद्य ने त्याग दिया हो तथा अनेक ज्वरो और श्रम करके व्याप्तहो तथा उन्माद करके प्रमाद को प्राप्त हुए वो सब इस लोकेश्वरपोटली के सेवन करनेसे दूर हो जाते हैं।

कनकसुन्दरोरसः

रसस्यतुर्य्यभागेनहेमभस्मप्रयोजयेत् ।
मनःशिलागंधकचतुत्थमाक्षिकतालकम् ॥
विषटंकणकंसर्वंरसतुल्यंप्रदापयेत् ।
मर्दयेत्सर्वमेकत्रखल्लपात्रेचनिर्म्मले ॥
जयन्तीभृंगराजोत्थैःपाठायावासकस्यच ।
अगस्तिलाङ्गलाग्नीनास्वरसैश्चपृथक्पृथक् ॥
भावयित्वाविशोष्याथपुनश्चार्द्रकवारिणा
सप्तधाभावयित्वाचरसःकनकसुन्दर. ॥

गुंजाद्वयंत्रयवास्यराजयक्ष्मप्रशान्तये ।
मधुनापिप्पलीभिर्वामरिचैर्वाघृतान्वितम् ॥
सन्निपातेप्रदातव्यमार्द्रकस्यरसेनवै ।
जयपालरजोभिर्वागुल्मिनेशूलरोगिणे ॥
अम्लवर्ज्यंचरेत्पथ्यंबल्यहृद्यंरसायनम् ।
वर्ज्जयेल्लवणंहिंगुतक्रंदधिविदाहियत् ॥

पारा ४ तोले, सुवर्णभस्म १ तोले, मनसिल गन्धक, लीला थोथा, सुवर्णमाक्षिक, हरिताल, सिंगिया विष, और सुहागा प्रत्येक, ४ तोले ले सब को एकत्र कर साफ खरल मे घोट अरनी, भागरा, पाढ, अडूसा, अगस्तिया, कलियारी और चीता प्रत्येक, के रस की जुदी २ भावना देवे और सुखाता जाय फिर ७ भावना अदरक के रस की देवे, तो यह कनक सुन्दर रस बन के तयार होवे, इसकी दो या तीन रत्ती की मात्रा सहत और पीपल के साथ अथवा घी और काली मिरच के साथ देवे तो राजयक्ष्मा दूर होवे । अदरक के रस से देवे तो सन्निपात दूर होवे तथा शूलरोगीको शुद्ध जमालगोटे के साथ देवे, इस का सेवन कर्त्ता खटाई के पदार्थ, नोन, हींग, छाछ, दही और दाहकारी पदार्थो को त्याग देवे यह बलकारी और हृदय को हितकारी रसायन है ।

हेमगर्भपोटली.

रसभस्मत्रयोभागाभागैकहेमभस्मकम् ।
मृतताम्रस्यभागैकंतोलैकगन्धकस्यच ॥
मर्दयेच्चित्रकैर्द्रावैर्द्वियामान्तेसमुद्धरेत् ।
पूर्वावराटिकातेनटङ्कणेनविलेपयेत् ॥
वराटींपूरयेद्भाण्डेरुध्वागजपुटेपचेत् ।
विचूर्णयेत्स्वागशीतेपोटलीहेमगर्भिकां ॥
मृगाङ्कवच्चतुर्गुंजाभक्षणाद्राजयक्ष्मनुत् ।

पारद भस्म, ३ भाग, सुवर्ण भस्म १ भाग, तांम्रभस्म १ भाग, और गन्धक, तोले भर इन सब को चीते के रस मे दोप्रहर खरल करे, जब पिट्ठी बनजाय तब कौडियों मे भरके कौडियो के मुख को आक के दूधमे पिसे सुहागे से बन्द कर मिट्टी के बरतन मे भरदे, और बरतन का मुख बदकर गजपुट में फूक देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब पीसकर शीशी मे भर रख छोडे इस हेमगर्भपोटलीको ४ रत्ती रोज खाने से राज यक्ष्मा दूर होवे इस पर मृगाङ्करसके समान पथ्य देना चाहिये ।

महामृगाङ्कोरसः

निरुत्थभस्मसौवर्णंद्विगुणंभस्मसूतकम् ।
द्विगुणंभस्ममुक्तोत्थंशुकपुच्छचतुर्गुणम् ॥
मृतताप्यञ्चपञ्चाशततारभस्मचतुर्गुणम् ।
सर्वमेकत्रसंमर्द्य त्रिदिनलुङ्गवारिणा ॥
ततश्चगोलकंकृत्वाशोषयित्वाखरातपे ।
सप्तभागप्रवालंचरसतुल्यञ्चटङ्कणम् ॥
लवणैःपात्रमापूर्य्यतन्मध्येगोलकंक्षिपेत् ।
तन्मुखन्तुमृदारुध्वापचेद्यामचतुष्टयम् ॥
आकृष्यचूर्णयेच्छुद्धंचतुःषष्टिविभागतः ।
वज्र वातदभावेतुवैक्रान्तषोडशासिकम् ॥
महामृगांकःखलुएषसिद्धः श्रीनन्दिनाथप्र कटीकृतोयम् । वल्लोस्यसेव्योमरिचाज्ययु क्तःसेव्याथवापिप्पलिकासमेत । तत्रोपचा राःकर्त्तव्याःसर्वेक्षयगदोदिताः । बल्यंवृ ष्यञ्चभोक्तव्यंत्यजेत्सूतविरोधियत् । यक्ष्मा णबहुरूपिणज्वरगदंगुल्मंतथाविद्रधिम् । म न्दाग्निस्वरभेदकासमरुचिंश्वासञ्चमूर्च्छांभ्र मिम् ॥ अष्टावेवमहागदान्गरगदान्पाण्डवा मयान्कामलान् । पित्तोत्थाश्चसमग्रकान्बहु विधानन्यास्तथानाशयेत् ॥

सुवर्ण भस्म १ तोले रससिंदूर दोतोले, मोतीकीभस्म दो तोले, गधक ४ तोले, सुवर्णमा क्षिककी भस्म ५ तोले, रूपे की भस्म ४ तोले, मू गे की भस्म ७ तोले, और सुहागा दो तोले, सब को एकत्र मर्दन कर तीन दिन बिजौरेके रस की भावना देवे, फिर इसका गोला बनाय धूप मे सुखाय नोनके पात्र मे रख ऊपर से नोनभर मुख बदकर सधि लेपन कर चूल्हेपर चढ़ाय ४ प्रहर मन्दाग्नि से पचावे, और स्वाग शीतल होनेपर

निकाल कर पीस डाले, फिर इसका चौसठवां भाग हीरे की भस्म मिलावे और सोलहवां भाग वैक्रांतकी भस्म मिलावे, तो यह महा मृगाङ्करस बने, इसकी २ रत्ती की मात्रा काली मिरच के चूर्ण और घी के साथ अथवा पीपल और सहत के साथ सेवन करे और इसके ऊपर वो उपचार करे जो कि यक्ष्मारोग को दूर करनेवाले है अर्थात् बल और पुरुषार्थकारी पदार्थो का सेवन करे, और पारे के विरोधी सब पदार्थों को त्याग देवे, तो यह रस खई, ज्वर, गोला, विद्रधि, मदाग्नि, स्वरभेद, खांसी, अरुचि, श्वास, मूर्च्छा, भ्रम, आठ महारोग, विष रोग, पाडु, कामला, तथा समग्र पित्तरोग, और अन्य सर्व प्रकार के रोगो को यह महामृगाङ्करस दूर करे ।

क्षयकेशरी.

मृतमभ्रंमृतंसूतमृतंलोहञ्चताम्रकम् ।
मृतनागञ्चकास्यञ्चमडूरविमलंमतम् ॥
वगखर्परकंतालशंखटंकणमाक्षिकम् ।
मृतस्वर्णंमृतकान्तवैक्रान्तविद्रुमौक्तिकम् ॥
वराटंमणिरागञ्चराजपट्टञ्चगन्धकम् ।
सर्वमेकत्रसंचूर्ण्यखल्लमध्येविनिक्षिपेत् ॥
मर्दयेत्वग्निभानुभ्यांप्रपुटेत्रिदिनंलघु ।
भावयेत्पुटयेदेभिर्वारांस्त्रींश्चपृथकपृथक् ॥
मातुलुंगवरावन्हिह्यम्लवेतसमार्कवः ।
हयमारार्द्रकरसैःपाचितोलघुवन्हिना ॥
वातपित्तकफोत्क्लेशान्ज्वरान्संमर्दितानपि
सन्निपातनिहन्त्याशुसर्वांगैकांगमारुतान् ॥
सेवितश्चसितायुक्तोमागधीरजसायुतः ।
मधुकार्द्रकसंयुक्तस्तद्व्याधिहरणौषधैः ॥
सेवितोहन्तिरोगाणांव्याधिवाराणकेशरी ।
क्षयमेकादशविधशोषंपाण्डुंकृमिजयेत् ॥
कासंपंचविधश्वासमेहमेदोमहोदरम् ।
अश्मरींशर्करांशूलप्लीहगुल्मंहलीमकम् ॥
सर्वव्याधिहरोबल्योवृष्योमेध्योरसायनः ॥

अभ्रक भस्म, पारे की भस्म, लोह भस्म, ताम्रभस्म, शीशेकी भस्म, कासेकी भस्म मडूर, विमला, बंग, खपरिया, हरिताल, शंख, सुवर्ण माक्षिक, सुवर्ण, कांतिलोह, वैक्रान्त, मूंगा, मोती, कौडी, पद्मराग, और कान्तिपाषाण इन सबकी भस्म फुलाया हुआ सुहागा, शुद्ध गन्धक सबको एकत्र कर पीसे पश्चात् ३ दिन चीते और आक के दूध की भावना देवे । और लघुपुटकी आंच देवे, इस प्रकार तीन वार करे, फिर बिजौरा, त्रिफले का काढ़ा, चीता, अमलवेत, भागरा, कनेर, अदरक, इनके रस मे पृथक् पृथक् खरल करके लघुपुट मे फूंक देवे तो यह रस वनकर तयार हो, यह वात पित्त और कफ के विकारों को तथा ज्वर, सन्निपात, सर्वांग तथा एकांग वात, इन सब रोगों को मिश्री अथवा पीपल के साथ खाने से दूर करे । अथवा सहत और अदरक के रस के साथ सेवन करे, अथवा जिस जिस रोग पर जो जो औषधि कही है उनके साथ इसको सेवन करे तो सर्व रोग दूर हो, ग्यारह प्रकार के क्षय रोग, शोष, पाण्डु, कृमि, पांच प्रकार की खासी, श्वास, प्रमेह, मेद-रोग, उदरी, पथरी, शर्करा, शूल, प्लीह, गोला, हलीमक, इत्यादि सर्व रोगो को दूर करे, बल, करे, पुष्टता करे, बुद्धि को वढावे तथा रसायन है ।

रजतादिलौहम्

चन्दनंमधूकक्षीरंपीतंरुधिरवान्तिजित् ।
भृंगराजस्यपत्रन्तुचूर्णितमधुनासह ॥
गोलकंधारयेदास्येकासारिष्टप्रशान्तये ।
पिवेद्वान्तिप्रशान्त्यर्थंक्षौद्रैश्छिन्नरुहारसम् ॥
भस्मीभूतरजतममलतत्समंव्योमचूर्णम् ।
सर्वैस्तुल्यत्रिकटुकवरसर्वमाज्येनयुक्तम् ॥
लीढप्रातःक्षपयतितरांयक्ष्मपाण्डूदरार्शः ।
श्वासकासनयनजरुजःपित्तरोगानशेषान् ॥

सफेद चन्दन और महुए के चूर्ण को दूध में मिलाकर पीवे, तो रुधिर की वमन करना बन्द हो, तथा भांगरे के पत्तो के चूर्ण को सहत से मिलाकर गोलिया बनावे और गोली को मुख से रखे तो खासी आदि पीडा शांति हो । अथवा

रुधिर की वमन बन्द करने को गिलोय के रस मे सहत मिलाकर पीवे ।

अथवा—शुद्ध चादी की भस्म, और अभ्रक की भस्म एक २ तोले, त्रिकुटा और त्रिफला के चूर्ण दो तोले इन सब को सहत मे मिला कर प्रात.काल चाटे तो यक्ष्मा, पाडु, उदर, ववासीर श्वास, खासी, नेत्र रोग, और संपूर्ण पित्त रोगो को यहा रजतादिलोह दूर करे ।

सर्वांगसुन्दरोरसः

रसगन्धञ्चतुल्यांशंद्वौभागौटंकणस्यच ।
मौक्तिकंविद्रुमशंखभस्मदेयंसमांशकम् ॥
हेमभस्मार्द्ध भागञ्चसर्वंखल्लेविमर्द्दयेत् ।
निम्बुद्रावेणसपिष्यपिण्डिकाकारयेत्ततः ॥
पश्चाद्गजपुटेदत्वासुशीतञ्चसमुद्धरेत् ।
हेमभस्मसमतीक्ष्णंतीक्ष्णार्द्धं दरदंमतम् ॥
एकीकृत्यसमस्तानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ।
ततःपूजांप्रकुर्वीतरसस्यदिवसेशुभे ॥
सर्वागसुन्दरोह्येपराजयक्ष्मनिकृन्तनः ।
वातपित्तज्वरेघोरेसन्निपातेसुदारुणे ॥
अर्शांसिग्रहणीदोषेमेहेगुल्मेभगदरे ।
निहन्तिवातजान्रोगान्श्लैष्मिकाश्चविशेषत' ॥ पिप्पलीमधुसंयुक्त घृतयुक्तमथापिवा ।
भक्षयेत्पर्णखण्डेनसितयाचार्द्रकेणवा ॥

सुवर्ण भस्म, पारा, गन्धक प्रत्येक एक भाग ले सुहागा दो भाग, मोती, मूगा और शख की भस्म प्रत्येक आधा भाग लेवे सब को खरल मे डाल नींबू के रसमें घोटकर गोलिया बनावे, उस पर कपर मिट्टी कर गजपुट से फूक दे, जब शीतल हो जाये तब निकाल खरल मे पीस सुवर्ण भस्म के तुल्य खेरी लोहे की भस्म डाले, और लोह भस्म से आधा हींगुल मिलावे और सब को एकत्र कर पीस डाले जिस दिन रस बन कर तयार हो उस दिन परमात्मा का पूजन कर सेवन करे तो यह सर्वांगसुन्दर रस राज यक्ष्मा, वातपित्त, ज्वर, घोर सन्निपात, ववासीर सग्रहणी, प्रमेह, गुल्म, भगदर और वात तथा कफ विकारो को दूर करे, इसको पीपल और सहत के साथ अथवा घृत के साथ पान मे या मिश्री के साथ अथवा अदरक के रस के साथ इस रस को सेवन करना चाहिये ।

लोकेश्वरोरसः

पलकपर्द्दचूर्णस्यपलंपारदगन्धयोः ।
माषञ्चटंकणस्यैवजम्बीराद्भिर्विमर्दयेत् ॥
पुटेल्लोकेश्वरोनाम्नालोकनाथरसोत्तमः ।
ऋतेकुष्ठरक्तीपित्तमन्यान्रोगान्बलोजयेत् ॥
पुष्टिवीर्यप्रसादोजःकान्तिलावण्यदःपरः ।
कोस्तिलोकेश्वरादन्योनृणांशंभुमुखोद्गतः ॥
पथ्यशाल्योदनसर्पिर्दधिशाकसहिंगुकम् ।
नित्ययामद्वयादूर्ध्वंकार्य्यंवारत्रयदिवा ॥
त्र्यहाद्द्वौवावान्तेवालग्नःसूतोनचेत्पुनः ।
अष्टमेऽन्हिप्रदातव्यःपूर्ववत्कार्यसिद्धये ॥
प्रथमेसप्तमेदेयालावसूरणमुद्गका ।
द्वितीयेमाषगोधूमभक्ष्यपूर्वोदितञ्चयत् ॥
देयानिमत्स्यमासानितृतीयेमर्दनादिवम् ।
तैलबिल्वारनालानिकोपस्त्रीस्वप्नजागरान् ॥
त्यजेत्कादीनिद्रव्याणिहृद्य स्वादुंचशीलयेत्
वायौसेव्यपय.कोष्णपित्तेतुससितंहितम् ॥
अत्यग्नौचोरबीजानितिलेपुकदलीफलम् ।
खजूरमाससमृद्वीकासितादिसकलंभजते ॥
वीर्य्यच्युतौनारिकेलजलंतालफलानिच ।
आनाहारुचिमूर्च्छार्तिधूमोद्गारविशूचिकाः ॥
एतेपुलघुशाल्यन्नंकेवलम्घृतंहितम् ।
अतिवान्तौपिवेच्छिन्नारसक्षौद्रेणसंयुतम् ॥
सक्षौद्रंवासकंरक्तपित्तेऽरुचिविपर्य्यये ।
भृष्टधान्यंसितायुक्तमथवाक्षौद्रसयुतम् ॥
यवान्नंमधुसयुक्त पिवेद्वामाहिषंदधि ।
घृतान्नभक्षयेन्नित्यंसुखोष्णेनचवारिणा ॥
छिन्नाम्बुसहितदेयदाहेजीर्णेसुधाजलम् ।
आर्द्रकरार्पपरम्भाफलभगकफोल्वने ॥
अन्येप्युपद्रवायेस्युस्तत्तच्छान्त्यैयथौषधम् ।
द्वात्रिंशद्दिवसेकार्यंस्नानमामलकैस्तिलैः ॥
युक्त सेव्यंबलेजातेशनैरग्निबलादनु ।

कौडी की भस्म, पारे की कजली प्रत्येक ४ तोले और सुहागा एक माशे इन सब को जबीरी नींबू के रस मे खरल कर इसमे लोकनाथ रस मिलावे तो यह लोकेश्वर नामक रस कुष्ठ और रक्त पित्त को छोड कर और सम्पूर्ण रोगो को बलात्कार कर दूर करे यह पुष्टि, वीर्य प्रसन्नता कान्ति और लावण्य को देवे, इस लोकेश्वर के ऊपर भात दही, घृत हींग, मिलाकर दही देवे, दो २ प्रहर के उपरात दिन मे तीन बार पथ्य देवे, इस प्रकार देने से अरुचि और वान्ति नही होती, कदाचित् पारा विकार न करे, तो तीसरे दिन फिर देवे फिर पूर्व विधि से आठवे दिन देवे इस रसके सेवन कर्त्ता प्राणी को पहले और सातवे दिन लवा, शूकर का मास और मू ग का यूष देवे, दूसरे दिन उडद और गेहू तथा लवा का मांस देवे, तीसरे दिन मछली का मांस और तैलादिक की मालिश करावे ।

इस लोकेश्वर रस का सेवन कर्त्ता प्राणी तेल, बेलफल, काजी, क्रोध, स्त्री सग, जियादा सोना, और बहुत जागना, तथा करेले ककडी आदि जो ककार नाम की वस्तु हैं उन सब को त्याग देवे, अर्थात् तेल आदि पदार्थ सब इस पर अपथ्य हैं ।

तथा जो वस्तु हृदय को हितकारी हो और स्वादिष्ट हो उसका सेवन करे, जहा सुन्दर पवन आती हो वहा मिश्री मिला कर कुछ गरम दूध पीवे, यदि इस प्रकार पदार्थ सेवन करने पर भी क्षुधा अधिक लगे तो तिल, ईख, केले की गहर, खजूर (छुहारे) मांस, दाख और मिश्री आदि सबका सेवन करे ।

यदि इस प्रकार सेवन करने से वीर्य्य खलित हो जावे तो नारियल का जल और ताल फलो का सेवन करे, यदि इनके सेवन से अफरा, अरुचि, मूर्छा पीडा, धुआ सहित डकार और विशूचिका हो तो हलका केवल अन्न घी मे मिला कर देवे, यदि वमन अत्यत होती हो तो सहत मिला कर गिलोय का रस पीवे, यदि वमन मे रुधिर आता हो तो अडूसे के रस मे सहत मिला कर पीवे, यदि अरुचि की विपरीतता होवे तो भुने हुए धान मे खाड मिला कर अथवा सहत मिला कर सेवन करें, अथवा भुने जवों मे सहत मिला कर सेवन करे तथा भैस का दही और घृत प्लुत अन्न का सेवन करे, तथा सुखोष्ण जल से स्नानादिक करे, यदि दाह होता हो तो गिलोय का रस मिला चूने का नितरा हुआ जल देवे, कफ की वृद्धि मे अदरक सरसो केला की फली और भाग देवे, और उपद्रवो मे उन्ही की शान्तिकारी वस्तु देवे, जब इस तरह ३२ दिन हो जावे तब आमले और तिलो की मालिश करे और स्नान कर डाले जब बल आ जाय तब धीरे धीरे अन्य वस्तुओ का सेवन करे ।

काञ्चनाभ्ररसः

काञ्चनंरससिंदूरंमौक्तिकलोहमभ्रकम् ।
विद्रुमञ्चाभयातारकस्तूरीचमनःशिला ॥
प्रत्येकंबिन्दुमात्रन्तुसर्वंसंमर्द्य यत्नत ॥
वारिणावटिकाकार्य्याद्विगुञ्जाफलमानतः ॥
अनुपानंप्रयोक्तव्यंयथादोषानुसारतः ।
क्षयहन्तितथाकासश्लेष्मपित्तसमुद्भवम् ॥
प्रमेहविविधञ्चैवदोषत्रयसमुत्थित ।
कफजान्वातजान्रोगान्नाशयेत्सद्यमेवहि ॥
बलवृद्धिवीर्यवृद्धिलिंगदार्ढ्य करोतिच ।
श्रीकर पुष्टिजननोनानारोगनिपूदनः ॥
गहनानन्दनाथोक्तोरसोयकाञ्चनाभ्रकः ।

सुवर्ण भस्म, पारद, सिंदूर, मोती, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, मू गा की भस्म, हरड, चान्दी की भस्म कस्तूरी, मनसिल, प्रत्येक एक २ तोले सब को जलसे खरल कर दो २ रत्ती के प्रमाण गोलिया बनावे, इनको दोषानुसार अनुपान के साथ देवे तो क्षयी को दूर करे, तथा खासी, कफ, पित्त विकार, अनेक प्रकार के प्रमेह और कफ के तथा वात के विकारो को तत्काल दूर करे, बल और वीर्य को पुष्ट करे, लिंग को

कडा करे, शोभा और पुष्टि कर्त्ता है तथा और भी अनेक रोगों को दूर करे। यह गहनानन्द का कहा काञ्चनाभ्र रस है.

बृहत्काञ्चनाभ्ररसः

काञ्चनंरससिंदूरंमौक्तिकंलौहमभ्रकम्।
विद्रुमंमृतवैक्रान्ततारंताम्रञ्चवंगकम्॥
कस्तूरिकालवंगञ्चजातीकोषैलवालुकम्।
प्रत्येकबिन्दुमात्रञ्चसर्वमर्द्य प्रयत्नतः॥
कन्यानीरेणसंमर्द्य केशराजरसेनच।
अजाक्षीरेणसंभाव्यंप्रत्येकंदिवसत्रयम॥
चतुर्गुञ्जाप्रमाणेनवटिकांकारयेद्भिषक्।
अनुपानप्रयोक्तव्यंयथादोषानुसारतः॥
क्षयहन्तितथाकासंयक्ष्माणंश्वासमेवच।
प्रमेहान्विंशतिञ्चैवदोषत्रसमुद्भवान्॥
सर्वरोगंनिहन्त्याशुभास्करस्तिमिरंयथा।

सुवर्ण, चन्द्रोदय, रससिन्दूर, मोती, लोह, अभ्रक, मूंगा, वैकांत (कांसुला) रूपा, तांबा और बंग इन सबकी भस्म, कस्तूरी, लौंग, और जावित्री प्रत्येक एक-एक तोले सबको खरल कर घी गुवार के रस, भागरे के रस, और बकरी के दूध मे खरल कर चार-चार रत्ती की गोलियां बनावे, और वैद्य दोषानुसार अनुपान के साथ देवे तो क्षय, खासी, श्वास, और बीस प्रकार का प्रमेह तथा और संपूर्ण रोगमात्रो को यह वृहत्काञ्चनाभ्र रस दूर करे।

शिलाजत्वादिलोहम्

शिलाजतुमधुव्योषताप्यलौहरजस्तथा।
क्षीरेणलोहितस्याशुक्षय.क्षयमवाप्नुयात्॥

शिलाजीत, मुलहठी, त्रिकुटा, (सोंठ मीरच पीपल) और सुवर्ण माक्षिक की भस्म प्रत्येक समान लेकर सबकी बराबर लोहे की भस्म लेवे, फिर सबको दूध मे मिला कर पीवे तो यक्ष्मा रोग दूर हो।

कुमुदेश्वरोरसः

हेमभस्मरसभस्मगन्धकंमौक्तिकन्तुरसटंकणं तथा। तारकगरुडसर्वतुल्यककाञ्जिकेनपरिमर्द्यगोलकम्॥ मृत्स्नयाचपरिवेष्ट्यशोषितंभाण्डकेलवणगेथपाचयेत्। एकरात्रमृदुसंपुटेनवासिद्धिमेतिकुमुदेश्वरोरसः॥ वल्लमस्यमरिचैर्घृतान्वितैराजयक्ष्मपरिशान्तयेपिवेत्।

सुवर्ण भस्म, चन्द्रोदय, गंधक, मोती, खपरिया, सुहागा, रौप्य भस्म (कोई हरिताल भस्म कहता है) और सुवर्ण माक्षिक की भस्म सबको समान भाग ले कांजी में खरल कर गोला बनावे, उस पर कपरमिट्टी कर धूप मे सुखा लेवे, फिर एक हांडी में नमक भर बीच मे गोले को रख दे फिर ऊपर से नोन भर हडिया का मुख बंद कर चूल्हे पर रख मंदाग्नि से रात्रि भर पचावे तो कुमुदेश्वर रस सिद्धि हो, इसमें से ३ रत्ती रस मिरच और घी मे मिला के सेवन करे तो यक्ष्मारोग दूर हो।

क्षयकेसरीरसः

त्रिकटुत्रिफलैलाभिर्जातीफललवंगकैः।
नवभागोन्मितैस्तुल्यंलौहपारदसिंदुरम्॥
मधुनाक्षयरोगांश्चहन्त्ययंयक्ष्मकेसरी।

त्रिकुटा, त्रिफला, इलायची, जायफल, और लौंग प्रत्येक समान भाग ले और सबकी बराबर लोह भस्म, पारा और सिंदूर लेवे और सब को एकत्र कर सहत मिला कर सेवन करे तो यह क्षयकेसरी रस क्षयादि सर्व रोगो को दूर करे।

बृहच्चन्द्रामृतोरसः

रसगन्धकयोर्ग्राह्यं कर्षमेकंसुशोधितम्।
अभ्रंनिश्चन्द्रकंदद्यात्स्वर्णंतोलकसम्मितम्॥
कर्पूरंशाणकंदद्यात्स्वर्णतोलकसम्मितम्।
ताम्रञ्चतोलकंदद्याद्विशुद्धंमारितंभिषक्॥
लौहंकर्षंक्षिपेत्तत्रवृद्धदारकजीरकम्।
विदारीशतमूलीचक्षुरकंचबलातथा।
मर्कट्यतिबलाचैवजातीकोषफलेतथा।
लवंगविजयाबीजंश्वेतस्वर्जरसंतथा॥
शाणभागंसमादायचैकीकृत्यप्रयत्नतः।
मधुनामर्दयेत्तावद्यावदेकत्वमागतम्॥

चतुर्गुञ्जाप्रमाणेनवटिकांकुरुयत्नत. ।
भक्षयेद्वटिकामेकांपिप्पलीमधुनासह ॥

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक प्रत्येक सवा तोले, निश्चन्द्र अभ्रक ढाई तोले, भीमसेनी कपूर ४ माशे, सुवर्ण भस्म और ताम्र भस्म प्रत्येक एक तोले, लोह भस्म सवा तोले, विधायरा, जीरा, बिदारी कन्द, शतावर, तालमखाने, गुलसखरी, कौंच के बीज, कगई की छाल, जावित्री, जायफल, लौंग, भांगरे के बीज और सफेद राल प्रत्येक चार मासे ले और सबको एकत्र पीस सहत से तब तक खरल करे जब तक एक जिगर न हो फिर चार २ रत्ती के प्रमाण गोलियां बनावे और एक गोली पीपल और सहत के साथ खाय तो चई दूर हो ।

कालवंचकोरसः

मृतसूतमृतनागंगन्धकतुत्थटंकणम् ।
प्रत्येकमर्द्धनिष्कस्यान्मृतशुल्वद्विनिष्ककम् ॥
शंखनिष्कद्वयचूर्ण्यनवनिष्कवराटकम् ।
पूरयेत्पूर्ववत्सम्पुटयेल्लोकनाथवत् ॥
ततस्त्वर्कदलद्रावैर्मर्द्य रुध्वापुटेपचेत् ।
आदायचूर्णयेत्श्लक्ष्ण तुल्यांशमरिचैर्युतम् ॥
चूर्णाच्चतुर्गुणं गंधमेकीकृत्यविचूर्णयेत् ।
पचमाषैर्घृतैर्लेह्यमसाध्यराजयक्ष्मण ॥
त्रिसप्ताहान्नसन्देहाद्रसोयकालवचकः ।

चन्द्रोदय, सीसे की भस्म, गन्धक, नीला थोथा, और सुहागा प्रत्येक दो माशे तावे और शख की भस्म प्रत्येक ८ माशे, सबको कूट पीस ३६ माशे कौड़ियों में लोकनाथ रस के समान भरे, और फूक दे फिर आक के पत्तो से खरल कर सपुट मे रख फूंक देवे, जब स्वाग शीतल हो जाय तब चूर्ण कर चूर्ण के बराबर काली मिरच का चूर्ण और काली मिरच के चूर्ण से चौगुना शुद्ध गन्धक इन सबको एकत्र कर चूर्ण करे, इसमे से ५ माशे की मात्रा घी मिला कर खावे तो असाध्य भी राजयक्ष्मा को २१ दिन में दूर करे, इसे कालवंचक रस कहते हैं ।

नीलकंठोरसः

विषंचुद्रोशीरंचहरिद्रागोपयोमधु ।
कुटजस्यत्वचाचूर्ण समांशंमाषमात्रकम् ॥
राजयक्ष्महरखादेद्रसोयंनीलकठकः ।

विष, कटेहरी, खस, हलदी, गौ दूध, सहत, कूडा की छाल, सब माशे २ भर लेवे, और भक्षण करे तो यक्ष्मा को दूर करे ।

रसमाणिक्यम्

शुद्धं सूतपलान्यष्टौकुनटीतस्यतत्समम् ।
नागपत्र चाष्टपलमष्टौस्याच्छुद्धगधकः ॥
एकत्रकज्जलींकृत्वाकाचकुप्यांविनिक्षिपेत् ।
वालुकायत्रमध्येतुअग्निंषोडशयामकम् ॥
भवेन्माणिक्यवर्णोयशुद्धस्तभकरोतिच ।
जराव्याधिविनाशायराजरोगकुलांतकृत् ॥
दशरात्रिप्रयोगेणमहाव्याधिविनाशन ।
रक्तिकार्द्धं सदापथ्यवृद्धःसंयातियौवन ॥

शुद्ध पारा, मनसिल, सीसे के पत्र, और शुद्ध गन्धक प्रत्येक ८ पल ले और सब की कजली कर शीशी मे भर वालुका यत्र से १६ प्रहर की अग्नि देवे तो यह माणिक के वर्ण रस बने यह वीर्य का स्तम्भन करे, वृद्धावस्था और रोगो को तथा राजरोग को नाश करे, दश रात्रि के सेवन करने से घोर व्याधि को दूर करे, इसके सेवन से बुड्ढा भी जवान हो, इस माणिक्य रस की मात्रा आध रत्ती है ।

रसराजः

मुक्ताप्रवालरसहेमशिताभ्रकञ्चवंगमृतसकल मेतदहोविभाव्य । छिन्नारसेनचवरीसलिलेनसप्तपश्चात्प्रदमधुहविर्मरिचेनसाकं ॥ लिह्यादुरक्षतहररसराजकाख्यमाषप्रमाणकतनूद्भवहेतुमेन

मोती, मूंगा, चन्द्रोदय, सुवर्ण, सफेद अभ्रक और वग इन सबकी भस्म समान भाग लेकर कुटकी और शतावरी के रसो की सात २ भावना देवे, फिर इस रस को सहत घी और

काली मिरचोंके चूर्ण के साथ १ मासे सेवन करे तो उरक्षत को तत्काल दूर करे ।

वज्ररस:

कर्षंखर्परसत्वस्यषरणमाषेहेम्निविद्रुते ।
षड्निष्कसूतकगन्धास्माऽष्टनिष्केप्रवेशित ॥
प्रवालमुक्ताफलयोश्चूर्णंहेमसमांशयो: ।
क्रमात्द्वित्रिचतुर्निष्कमृतायसीसभास्करं ॥
चाङ्गेर्यम्लेनयामांस्त्रीन्मर्दितचूर्णितंपृथक् ।
द्वौनिष्कौमीलततुत्थव्योमायस्कांततालका
त् ॥ अकोलकगुणीबीजतुत्थेभ्यश्चतुर:पृथक्
अष्टौचटंकणक्षाराद्वराटानाञ्चविंशति: ।
महाजवीरनीरस्यप्रस्थद्वंद्वेनपेषयेत् ॥
एतदष्टसरावस्थंशुद्धंखार्यांस्तुषस्यच ।
करीषभारेचपचेदथमाषद्वयंतत ॥
एतावद्गंधकात्पाच्यमरिचाढ्यावितादपि ।
मधुनालोडितलिह्यात्ताम्बूलीपत्रलेपित ॥
गतेस्यघटिकामात्रे प्रतियामंचपथ्यभुक् ।
नोचेदुद्दीपितोवन्हि:क्षणाद्धातून्पचत्यत ॥
दिनमेकनिपेव्यैनत्यजेन्यामडलात्यजेत् ।
तत: परयथेष्टाशीद्वादशाब्दंसुखीभवेत् ॥
एकमेकदिनभुक्त्वावर्षेवर्षेमहारसं ।
वर्षाद्दौचरयजेत्याऽयद्वादशाब्दांजरांजयेत्
एषवज्ररसोनामक्षयपर्वतभेदन: ॥

खपरिया का सत्व १ तोले, पारा १६ मासे, और गन्धक १६ मासे, और मोती, मूंगा ये दोनो सुवर्ण के बराबर लेवे । प्रथम ६ मासे सुवर्ण की द्रुति मे खपरिया का सत्व मिलाय फिर लोह भस्म २ निष्क, सीसेकी भस्म ३ निष्क तांबे की भस्म ४ निष्क सबको एकत्र कर चार प्रहर चूके के रस मे खरल करे फिर चूर्ण कर नीला थोथा अभ्रक भस्म, लोह भस्म, कान्त लोह की भस्म, और हरिताल, ये सब ३२ मासे लेवें, अकोल, कागनी इनको नीलाथोथे से चौगुनी लेवे, सुहागा ८ निष्क, कौडियो की भस्म २० निष्क, सबको दो सेर जभीरी नींबू के रसमें खरल करे, फिर ८ सराब तुषोदक से खरल कर एक भार आरने कंडो की अग्नि में दो महीने तक पचावे,, फिर जितनी ये औषधि रहे उसकी चतुर्थांश गन्धक डाल कर खरल करे, फिर काली मिरच की भावना देवे इसमें से ४ रत्ती के अनुमान सहत मे मिला कर पान मे लेप कर खाय और एक घडी बाद प्रहर २ में पथ्य भोजन करे, अन्यथा जठराग्नि दीपन होकर क्षणमात्र में रसादि धातुओं को पचाती है, इस औषधि को १ दिन सेवन करके फिर मडल ४६ पर्यन्त पथ्य सेवन करे इसके उपरांत यथेष्ट भोजन करे तो १२ वर्ष पर्यंत सुखी हो, वर्ष २ दिन पीछे एक २ दिन इस महारस का सेवन करे और पथ्य से रहे तो १२ वर्ष मे वृद्धावस्था को जीते, यह वज्ररस नामक क्षयरोग रूप पर्वत को तोडने वाला है, यह रसरत्नसमुच्चय में लिखा हुआ है ।

महावीरोरस:

निष्कौद्वौतुत्थभागस्यरसादेकंसुसस्कृतात् ।
निष्कंविषस्यद्वौतीक्ष्णात्कर्षांशगन्धमौक्तित
कात् । अग्निपर्णीहरितालभृंगार्द्रस्वरसारसै:
मर्दितलांगलीकदप्रलिप्तेसपुटेपचेत् ॥
अर्द्धं पादचपोटल्याकाकिण्योद्वेविषस्यच ।
लिहेन्मरिचचूर्णचमधुनापोटलीसम ॥
क्षयग्रहण्यतीसारवन्हिदौर्बल्यकासिनां ।
पाण्डुगुल्मवतांश्रेष्ठोमहावीरोहितोरस. ॥
अतिस्थूलस्यपूयासृक्कफानुद्वमत:क्षये ।
नयोजयेत्क्षीररसान्विरुद्धोथक्रमस्त्वत: ॥

लीलाथोथा दो निष्क, शुद्ध पारा १ निष्क, विष १ निष्क, खेडीलोह की भस्म २ निष्क, शुद्ध गन्धक १ तोले मोती १ तोले, इन सबको अग्निपर्णा, हरिताल, भागरा, अदरक, और तुलसी के रस मे खरल कर कलियारी के कद से रख कपर मिट्टी कर सपुट में रख कर फूक देवे, जब स्वांग शीतल हो जावे तब इसमे अर्द्ध भाग मृगाकपोटली रस मिलावे, और दो काकणीभर विष मिलावे, सबको घोट कर एक जी करे, इस को मिरच के चूर्ण और सहत के साथ खाय तो

क्षय, संग्रहणी, अतिसार, मंदाग्नि, खांसी, पाडुरोग, गोला, इन रोगो को यह महावीररस हित है, जो अति स्थूल तथा राध रुधिर कफको डालता हो उनको चीर और मांसरस पथ्य मे न दे, किन्तु इससे विपरीत क्रम करना चाहिये।

दशांगलोहम्.

रास्नाकर्पूरतालीसभेकपर्णीशिलाजतु ।
त्रिकटुत्रिफलामुस्तविडंगदहनासमा ॥
चतुर्दशायसोभागास्तच्चूर्णं मधुसर्पिषा ।
लीढंयक्ष्माणमत्युग्रंकासश्वासेतथाज्वरं ।
बलवर्णाग्निपुष्टीनावर्द्धनदोषनाशनं ॥

रास्ना, कपूर, तालीस पत्र, ब्राह्मी, शिलाजीत, सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, नागरमोथा, वायविडंग, और चीते की छाल को बराबर ले, इनका चौदहवां भाग लोहभस्म मिलावे और २ माशे चूर्ण को सहत और पीपल मिलाकर चाटे तो घोर खई, खांसी, श्वास और ज्वर को दूर कर बलवर्ण और जठराग्निको बढ़ावे, और सर्व दोषो का नाश करे।

स्वर्णभूपतिरसः

शुद्धसूतंसमगन्धमृतशुल्वतयोःसम ।
अभ्रलोहकयोर्भस्मकान्तभस्मंसुवर्णज ॥
रसकचविषसम्यक्पृथक्सूतसमभवेत् ।
हंसपादीरसैर्मर्द्य दिनमेकवटीकृतम् ॥
काचकुप्यांविनिक्षिप्यमृदासलेपयेद्बहिः ।
शुष्कांसवालुकायन्त्रेशनैर्मृद्वग्निनापचेत् ॥
चतुर्गुंजामितदेयमार्द्रकद्रवपिप्पली ।
क्षयत्रिदोषजहंतिसन्निपातांस्त्रयोदश ॥
खण्डपातधनुर्वातंशृंखलावातमेवच ।
आढ्यवातपगुवातकफवाताग्निमांद्यनुन् ॥
कटिवातसर्वशूलंनाशयेन्नात्रसंशयः ।

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक दोनो बराबर लेय और दोनों की बराबर भरा ताम्रा लेवे । तथा अभ्रक, लोह, कांत, सुवर्ण खपरिया और विष प्रत्येक पारे के समान लेवे, सब को हंसपदी के रस मे एक दिन खरल कर गोली बनावे, और शीशी मे भर शीशी पर कपरमिट्टी कर सुखाय, वालुका यन्त्र मे धीमी आंच से पचावे, इसकी ४ रत्ती मात्रा को अदरक के रस और पीपल के चूर्ण के साथ दे तो त्रिदोषकी खई और तेरह प्रकार के सन्निपात, खडवात, धनुर्वात, शृंखलावात, आढ्यवात, पगुवात, कफवात, मंदाग्नि, कमरकी वादी, सब प्रकार के शूल, गोले का दर्द, उदावर्त्त, संग्रहणी, प्रमेह, सर्व प्रकार के उदररोग, पथरी, मूत्र का रुकना, मलका रुकना, भगंदर, सर्व प्रकार के कुष्ठ विद्रधि, खांसी, श्वास, अजीर्ण, आठ प्रकार का ज्वर, कामला, पाडु रोग, और शिर के रोगो को अनुपान भेद करनेसे दूर करे। जैसे सूर्य के उदय से सारा अन्धकार नाश हो जाता है। यह सर्व रोगो के हितार्थ प्राचीन आचार्य्योंनें कहा है।

पंचामृतपर्पटीरसः

सुवर्णरजतंताम्र सत्वाभ्रंकान्तलोहकम् ।
क्रमवृद्धमिदसर्वं मर्दयेदम्लवर्गतः ॥
ताप्यनीलांजनतालशिलागधचचूर्णितम् ।
दत्वादत्वापुटेत्तावद्यावद्विंशतिवारकम् ॥
लोहाद्द्विगुणसूतेनततोद्विगुणगधतः ।
विधायकज्जलींश्लक्ष्णांलिह्यात्तांलोहपात्रके
द्रावयेद्बदरांगारैर्मृदुभिश्चाप्यनिक्षिपेत् ।
हेमादिपचलोहानांभस्मचाप्यविलोडयेत् ॥
अथतत्कदलीपत्रेगोमयस्थेविनिक्षिपेत् ।
पत्रेणानेनसंछाद्यचिपिटीकुरुयत्नत ॥
तस्योपरिक्षिपेत्स्वल्पोगोमयस्तोकमेवच ।
स्वत.शीतसमाहृत्यतावच्चूर्णंविधायच ॥
निक्षिपेदूर्ध्वदंडायांपालिकायांततःपर ।
पूर्ववद्बदरागारेमृदुभिर्द्रावयेच्छनैः ॥
तुल्यालकशिलागधंपलार्द्धं विषभावितं ।
पूर्ववद्वटिकातुल्यतस्माद्ल्पमुहुर्मुहुः ॥
जारयेत्पलिकामध्येयथादह्येन्नपर्पटी ।
पलिकेतिविनिर्दिष्टालेहक्षेपणयन्त्रिका ॥
जीर्णे तालादिकेचूर्णेषट्चूर्णंतुविवीयतां ।
पूतीकरजमेषशृंगीचव्यांग्रीसौभाजनांत्रि-

भिः ।। एतैःपंचपलैःक्वाथंषोडशांशावशेषितं ।
तेनक्वाथेनसस्वेद्यशोषयेत्सप्तधाहितां ।।
विषतिंदुफलोद्भूतैरसैर्निर्गुंडिकारसैः ।
विभाव्यपलिकामध्येक्षिप्त्वाबदरवन्हिना ।।
ईषत्प्रस्वेदनकृत्वास्थापयेदतियत्नतः ।
उक्ताभैरवनाथेनस्यात्पचामृतपर्पटी ।।
व्योषाज्यसहितालीढागुञ्जावीजेनसम्मिता ।।
सर्वलक्षणसंपूर्णं विनिहंतिक्षयामयं ।।
श्वासकासंविशूचींचप्रमेहमुदरामयं ।
अरोचकचदुःसाध्यप्रसेकछर्दिहृद्भव ।।
अधिकंगुदरोगचशूलकुक्षान्यशेषतः ।।
वातज्वरचविड्वधग्रहणीकफजानगदान् ।
एकद्वंद्वत्रिदोषोत्थान्रोगानन्यान्महागदान्
अग्निमांद्यं विशेषेणरसोयंपरमोत्तमः ।
एवंसमुह्यदातव्योरसोयंभिषगुत्तमैः ।।
तत्तद्रोगहरैर्योगैस्तत्तद्रोगानुपानतः ।
यक्ष्मादिसर्वरोगघ्नीस्यात्पंचामृतपर्पटी ।।
तैलसर्षपबिल्वाम्लकारवेल्लकुसुंभकं ।
त्यज्येत्पारावतमासवृंताककुक्कुटंतथा ।।

सुवर्ण, चादी, तावा, अभ्रकसत्व, कान्तिलोह, इनकी भस्म क्रमसे बढ़ती भाग लेवे, सब को खरल में डाल अम्लवर्ग से खरल करे, फिर सुवर्णमक्खी, सुरमा, हरिताल, मनसिल और गन्धक इनका चूर्णकर वार वार पुट देकर अग्नि में फूंक देवे, इस प्रकार २० पुट देकर लोहे से दूना पारा और पारे से दूनी गन्धक दोनो की कजली कर लोहे के पात्र मे डालके वेरकी लकडियो की अग्निपर रख के तपावे, जब पतली हो जावे, तब सुवर्णादि पचलोहकी भस्म भी मिला देवे, सब को एक जीव करके शीघ्र पत्रपर डाल देवे, फिर दूसरे केले के पत्र से ढक गोवर की लुगदी से दवा देवे और शीतल होने पर निकाल लेवे फिर इसमे कजली मिला के ऊपर की हाडीवाली पाली मे डालके मंदाग्नि से तपावे, फिर इसमे हरिताल, मनसिल और गधक मिलाके और दो तोले विष लेवे पूर्वक्रमसे पाली मे जारण करे, परन्तु गन्धक आदि औषधीही जले पर्पटी न जले इस प्रकार जारण करे, जिस लेह को डालके पतली करते हैं उसे पलिका वा पारी कहते है, फिर कंजा, मेढासिंगी, कटेरी, सहजना, इनको पांच २ पल लेकर षोडशांशावशेष काढा करे। उससे पूर्वोक्त पर्पटोका सातवार स्वेदन करे और सुखाकर सिंगया विष, कुचला, और निर्गुंडी के रस को भावना देकर पाली मे डाल थोडी देर वेर की अग्नि पर गरम कर रख छोडे, यह भैरवनाथ की कही पंचामृत पर्पटी है, इसको सोठ, मिरच, पीपल के चूर्ण और घी, सहत के साथ १ रत्ती लेवे तो सब प्रकार की क्षयो का नाश करे श्वास, खासी, विशूचिका प्रमेह, उदर, असाध्य अरुचि, सग्रहणी, एक दोषज, द्विदोषज, त्रिदोषज, सर्वरोग, लारका गिरना, हृदय से उत्पन्न छर्दि, गुदा के रोग, कूखका शूल, वातज्वर, मल का रुकना, और मन्दाग्नि को यह रस परम हितकारी है, इस प्रकार विचार कर इस रस को देना चाहिये, ये पृथक् २ अनुपान से जिस जिस रोग पर दिया जावे उसी उसी को दूर करे। यह क्षयादि रोग नाशक पचामृतपर्पटी है इसका सेवन कर्ता तेल सरसो का साग, वेल, खटाई, करेले, कसूम, कबूतर का मास, वेगन और मुर्ग का मास इनसे बचता रहे, अर्थात् इनको न खाय।

चिंतामणिरसः

रसेन्द्रवैक्रान्तकरौप्यताम्रसलौहमुक्ताफलगन्धहेम्ना । त्रिभावितचार्द्रकमार्क्कवन्हिरसैरजागोपयसातथैव ।। अर्शःक्षयंकाशमरोचकचजीर्णज्वरंपाण्डुमपिप्रहेहान् । गुंजाप्रमाणंमधुमागधीभ्यांलीढनिहन्याद्विषमचवातं ।। चिंतामणिरितिख्यातापार्वत्यानिर्मितास्वयं ।

चन्द्रोदय, वैक्रांत की भस्म, रूप रस, तामेश्वर सार मोती की भस्म, शुद्ध गन्धक, और सुवर्ण की भस्म, इन सबको अदरक के रस को

३ भावना देवे, और भांगरे, चीते इनके रसों की तीन तीन भावना देकर गौ के दूध की तीन भावना देवे, तो यह चिंतामणि रस सिद्धि होवे, इसकी १ रत्ती मात्रा को सहत और पीपल के चूर्ण के साथ सेवन करे तो बवासीर, क्षय, खासी अरुचि, जीर्ण ज्वर, पांडुरोग, प्रमेह, और विषम वात को यह रस दूर करे।

स्वर्णभस्मराजमृगाङ्कोरसः

पलंस्वर्णस्यपत्राणापारदस्यपलंतथा।
गधकस्यपलंदेयंप्रयत्नैःपरिशोधितम्॥
विधायपुटितंपश्चाद्भूमिखातेनिधापयेत्।
त्रिशद्वनोपलैर्देयःपुटपाकश्चतुर्दशम्॥
पुटेपुटेयोजनीयौपुनर्गंधकपारदौ।
काचनाररसंतद्वत्कांजिकसःप्रयोजयेत्॥
एवंप्रजापतेभस्मराजार्हं राजवल्लभम्।
गुञ्जाचतुष्टयमितदातव्यवायथावल॥
लवगैलामृगमदैःस्वर्णमानमितैस्तथा।
सजातीफलकर्पूरंमरिचैःक्षयनाशनम्॥
पाण्डुरोगमुदावर्त व्याधीन्वातभवान्जयेत्।
अमृतासत्वसयुक्त सर्वज्वरविनाशनम्॥
सितैलावशजैःपित्तःपीडातिमिरभास्करं।
तदेवरससिंदूरयुक्तं द्विगुणमौक्तिकम्॥
तुर्याशटकणदेयभर्जितंखर्परेशुभे।
लवगरससंपिष्टंपुटयन्त्रेणपाचितम्॥
स्वर्णभस्ममितिख्यातमृगांकोजायतेरसः।
क्षयादिसर्वरोगघ्नंराज्ञाचपदपूर्वकम्॥

स्वर्ण के वर्क, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक प्रत्येक ४ तोले ले, खरल कर कचनाल के रस का पुट देवे, फिर कांजी का पुट देकर सुखा ले, पश्चात् पृथ्वी में गड्ढा खोद ३० आरने उपले रख उस में इस सुवर्ण की पिट्ठी को रख सपुट से बन्द कर फूक देवे, इस प्रकार १४ पुट देवे तो राजा के खाने योग्य यह राजमृगांक रस बने, इसमें से ४ रत्ती अथवा बलावल देखकर देवे, लौग, इलायची, कस्तूरी एक २ माशे ले तथा जायफल भीमसेनी कपूर और काली मिरच के चूर्ण में मिला के इस राजमृगांक रस को देवे तो क्षय, पाडु रोग, उदावर्त और वादी के रोगों को दूर करे गिलोय के सत्व के साथ खाने से सर्व प्रकारके ज्वरों का नाश करे, छोटी इलायची और वशलोचन के साथ पित्त के विकारों को जीते, यदि इसमे रस सिंदूर और दूने वूका के मोती तथा चतुर्था श सुहागा साफ खिपडे का भुना सबको लौंग के रस में पीस पुट यंत्र में फूंक देवे तो यह स्वर्ण भस्म मृगांक रस बने, यह क्षयादि सर्व रोगों का नाश करे यह रसराज लक्ष्मी ग्रन्थ मे लिखा है।

महाकनकसिंदूरोरसः

रसगंधकनागांश्चरसकोमाक्षिकाभ्रके।
कान्तविद्रुममुक्तानांवंगभस्मंचतारक॥
भस्मीकृत्वाप्रयत्नेनप्रत्येककर्षसंमितम्।
सर्वतुल्यशुद्धहेमभस्मीकृत्वाप्रयोजयेत्॥
मर्दयेत्त्रिदिनसर्व हंसपादीरसैर्भिषक्।
ततोवैगोलकान्कृत्वाकाचकुप्यांविनिक्षिपेत्।
रुध्वातत्काचकूपींचसप्तवस्त्रेणवेष्टयेत्।
ततोवैसिकतायन्त्रे त्रिदिनंचोक्तवन्हिना॥
पश्चात्तंस्वांगशीततुपूर्वोक्तंरसमर्दयेत्।
विनिक्षिप्यकरंडेथसंपूज्यरसराजकम्॥
महाकनकसिंदूरोराजयक्ष्माहरःपरः।
पाण्डुरोगश्वासकासकामलाग्रहणीगदान्॥
कृमिशोफोदरावर्त्तगुल्ममेहगुदाकुरान्।
मन्दाग्निछर्दिरुचीरामशूलहलीमकान्॥
ज्वरान्द्वंद्वादिकान्सर्वान्सन्निपातास्त्रयोदशान्। पैत्तरोगमपस्मारंवातरोगान्विशेषतः॥
रक्तपित्तप्रमेहांश्चस्त्रीणांरक्तस्रवांस्तथा।
विंशतिश्लेष्मरोगाश्चमूत्ररोगान्निहन्त्यसौ॥
बलवर्णकरश्चायमायुःशुक्रविवर्द्धनः।
महाकनकसिंदूरःकाश्यपेनविनिर्मितः॥

पारा, गन्धक, सीसा, खपरिया, सोनामक्खी अभ्रक, कान्तलोह, मूंगा, मोती, बंग और चादी प्रत्येक की भस्म दो तोले लेवे, सब की भस्म के समान सोने की भस्म मिलावे, फिर सब को हंसपदी के रस मे ३ दिन खरल करे, फिर गोला

बनाय काच की शीशी में रख उसका मुख मन्द कर सात कपर मिट्टी कर देवे, फिर वालु का यंत्र में रख तीन दिन बराबर अग्नि देवे और स्वांग शीतल होने पर खरल कर उत्तम पात्र में भर के रख छोड़े तो पूजनीय रसराज बने, यह महाकनक सिंदूररस राजयक्ष्मा, पांडुरोग, श्वास, खासी, कामला, संग्रहणी, कृमि, सूजन, उदर, उदावर्त, गोला, प्रमेह, बवासीर, मन्दाग्नि, वमन, अरुचि, आमवात, शूल, हलीमक, द्वंद्वजादि सपूर्ण ज्वर तेरह प्रकार का सन्निपात, पित्त रोग, मृगी, वात रोग, रक्तपित्त, प्रमेह, स्त्रियों के प्रदरादि, बीस प्रकार के कफरोग, मूत्ररोग, इन सबको दूर करे, बल, वर्ण, आयु और वीर्य को बढ़ावे, यह महाकनक सिंदूररस कश्यप ऋषि का निर्माण किया हुआ है।

मृगांक खानेकी विधि

मृगांक १ रत्ती, वंशलोचन २ रत्ती, छोटी इलायची के बीज २ रत्ती, बूका मोती १ रत्ती यदि कफ अधिक हो तो पीपल १ रत्ती, सहत ६ माशे सब को एकत्र कर खाय।

मृगांक का पथ्य

गुञ्जाचतुष्टयंचास्यमरिचैर्भक्षयेद्भिषक्।
पिप्पलीदशकंचानुमधुनालेहयेद्बुधः॥
पथ्यंसुलघुमांसेनप्रायेणास्यप्रयोजयेत।
दध्याज्यंगव्यतक्रंवाक्षीरंवाजप्रयोजयेत्॥
व्यञ्जनैर्घृतपक्वैश्चनातिक्षारैरहिंगुकैः॥
एलाजाजीमरिचैस्तुसंस्कृतैरविदाहिभिः॥
वृन्ताकंतैलविल्वानिकारवेल्लंचवर्जयेत्।
स्त्रियंपरिहरेद्दूरात्कोपंचापिपरित्यजेत्॥
वल्लीरुधिरकानामतन्मूलक्वाथयेत्पलं।
कटुत्रयसमायुक्तंपाययेत्कफशान्तये॥
ईषद्धिंगुसमायुक्तंकाकिणीमूलमेवच।
भक्षयेत्पथ्यभोज्यचसर्ववान्तिप्रशान्तये॥
मार्कण्डीपत्रचूर्णस्यगुटिकांमधुनाकृतां।
धारयेत्सततवक्त्रेकासविष्टंभनाशिनीं॥
छागमांसंपयश्छागंछागंसर्पिससनागर।
छागोपसेवाशयनंछागमध्येतुयक्ष्मनुत्॥

४ रत्ती मृगांक को काली मिरच के चूर्ण में मिला कर खावे, अथवा १० पीपल के चूर्ण और सहत में मिला कर खावे, और पथ्य में हलके मांस खाने चाहिये, दही घी, गौकी छाछ, अथवा बकरी का दूध देवे, तथा घी के पके पदार्थ जिनमें बहुत हींग और नोन न पड़े हों, तथा छोटी इलायची, जीरे और काली मिरचों से सस्कार किये हुए हो, और दाहकारी पदार्थ जिन में पड़े हो ऐसे पदार्थ सेवन न करे, एव *बैंगन, तेल, बेल, करेले आदि खाना त्याग दे*, स्त्री के पास न जावे, क्रोध न करे, तथा रुधिर का नाम बेल की जडका काढा कर उसमें त्रिकुटा डालकर पीवे, तो कफशांति हो, इसी में थोड़ी हींग मिलाय काकतुंडी की जड के चूर्ण से इस रस का सेवन करे और पथ्य से रहे तो वांटी के सर्व विकार दूर हो, भूंयखखसा रूखडी के पत्तो के चूर्ण की सहत में गोली बनाकर मुख में रखे तो खासी और मलावरोध को दूर करे, बकरे का मास और बकरी का दूध और बकरी का घृत और सोठ मिला कर खावे तथा बकरियों की सेवा करे तथा बकरियो मे रहे तो राजयक्ष्मा यानी क्षयी को दूर करता है।

मोतीकेगुण

कफपित्तक्षयध्वंसिकासश्वासाग्निमांद्यनुत्।
पुष्टिदंवृष्यमायुष्यदाहघ्नंमौक्तिकमतम्॥

कफ, पित्त, खासी, श्वास, मन्दाग्नि और दाह को दूर करे, देह को पुष्टि करे, वीर्य और आयु को बढ़ावे, इतने गुण मोती मे है।

हेमाभ्ररससिंदूरोरसः

अभ्रकंरससिंदूरंमिश्रितहेमभस्मना।
समभागंप्रकुर्वीतरसेनार्द्रकयोजित॥
क्षयचक्षयपाण्डुंचक्षयकासचकुंभकम्।
जयेन्मण्डलपर्य्यन्तपूर्वकर्मविपाककृत्॥

अभ्रक भस्म और रससिंदूर को सुवर्ण भस्म मे मिला कर अदरक के रस से सेवन करे तो क्षयरोग, पाण्डुरोग, खांसी की क्षीणता और कुंभकामला इन सब रोगों को एक मण्डलपर्यन्त सेवन करने से दूर करता है।

सुवर्णपर्पटीरसः

शुद्धंसुवर्णदलमष्टगुणेनशुद्धसूतेनपिंडितमथोनसुभागभाज। गधंद्रुतेबदरवन्हिकलोहपात्रे दत्वाविलोड्यलघुलोहशलाकयातत्॥ मर्दनिरस्यसुरभीमलमण्डनस्थंरभादलेतदुपरिप्रणिधायचान्यत्। रंभादललघुनियंत्र्यतदादद्यीतशीतंसुवर्णरसपर्पटिकाभिधान ॥ पित्तोल्वणेसशितयानुगयाथवातश्लेष्मोल्वणेकिलतुगामधुपिप्पलीभिः। क्षीणेविरेकिणिचशोषिणिमन्दवन्हौपाण्डुप्रमेहिणिचिरज्वरिणाग्रहण्यां ॥ वृद्धेशिशौसुखिनिराज्ञिनिदेयनार्यांभैषज्यमेतदुदितंहितमामयध्नम ।

सोने के वर्को में अठगुने शुद्ध पारे को मिला कर खरल करे फिर अठगुनी गन्धक को लोहे के कलछे से बेर की अग्नि पर पतली करे उसमे पारा और सोना वुरक दे और लोहे की सलाई से चलाता जाय जब खूब मिल जाय तब गोवर पर केले का पत्ता बिछा कर उस तपी हुई गधक को ढाल देवे, और ऊपर से दूसरा पत्ता ढक कर दाब देवे, तो यह सुवर्ण पर्पटी रस बने इसको पित्त की अधिकता में मिश्री के साथ देवे, वात कफाधिक्य में वंसलोचन, सहत और पीपल के चूर्ण के साथ देवे यह क्षीणता, दस्त, शोषरोगी, मन्दाग्नि, पाण्डु, प्रमेह, जीर्णज्वर और सग्रहणी इन रोगो मे तथा वृद्ध, वालक, सुखी, राजा और स्त्री को यह औषधी सर्वरोग नाशक और परमहितकारी है।

नवरत्नराजमृगांकोरसः

सूतगंधकहेमताररसकवैक्रान्तकान्तायस । वगनागपविप्रवालविमलामाणिक्यगारुत्मते ॥ ताप्यौमौक्तिकपुष्परागजलजवैदुर्यकंताम्रक। शुक्तिस्तालकमभ्रहिंगुलशिलागोमेदनीलंसमे ॥ गोक्षुरैःफणिवल्लिसिंहवदनामुंडीकणाचित्रकैः। इक्षुछिन्नरुहारविप्रियजयाद्राक्षावरीजद्रवैः॥ कांकोलैर्मदनागकेशरजलैर्भाव्यंपृथक्सप्तधा। भाण्डेसिंधुभृतेमृगांकवदयःपाच्यःक्रमाग्नौदिन ॥ भूय.प्राक्समुदाहृतैर्द्रवचयैस्तंभावयेत्पूर्ववत् । पश्चात्तुल्यविभागशीतलजलःकस्तूरिकाभावना ॥ गोप्याद्गोप्यतरंरसायनमसौश्रीशंकरेणोदितं। गुञ्जासिंधुयुत कणामधुयुतःशोफेसपाण्डवामये ॥ वातव्याधिमुपद्रवैश्चसहितमेहस्तथाविंशतिः। संयोज्यश्चाहरीतकीगुडयुतोवाताभ्रकेदुर्जये॥ गंभीरेचगुडूचिसत्वचपलाद्यौद्रैस्तुसंयोजिता। आध्मानारुचिशूलमांद्यकसनापस्मारवातोदरान्॥ श्वासान्संग्रहणीहलीमकमथासर्वज्वरान्नाशयेत्। धातून्पुष्ट्यतिच्चयच्चपयतिस्यामाशतयौवनं ॥ प्रौढाढोपयुतंकरोतिसहसातारुण्यगर्वेप्सित। सिद्धोरत्नमृगांकराजजयतिस्वस्वानुपानैर्गदान् ॥

पारा, गंधक, सुवर्ण, चांदी, खपरिया, वैक्रान्त, कान्तलोह, बंग, नाग, हीरा, मूंगा, विमला, मानिक, पन्ना, सोनामक्खी, तारमाक्षिक, मोती, पुखराज, शंख, वदूर्य, ताम्र, सीप, हरिताल, अभ्रक, हींगलू, मनसिल, गो, मेद, नीलम, इन सबकी भस्म समान भाग लेवे, फिर सबको एकत्र कर गोखरू, पान, कटेरी, गोरखमुंडी, पीपल, चीते की छाल, ईख, गिलोय, हुलहुल, अरनी, दाख, शतावर, ककोल, कस्तूरी, और नागकेसर इनके काढो की पृथक् २ सात सात भावना देवे, फिर एक पात्र मे सेंधानिमक भर कर उसमें मृगाङ्क रस के समान इस रसको पचावे. क्रम से १ दिन की अग्नि देवे फिर स्वांग शीतल होने पर पूर्वोक्त रसों की भावना देवे, फिर इसमे इस रसके समान कस्तूरी की भावना

देवे, यह गुप्त से भी गुप्ततर रसायन श्रीशिव ने कही है, इसमें से १ रत्ती रस कों सेंधे निमक, पीपल और सहत के साथ देवे सूजन और पांडु रोग दूर हो तथा उपद्रव युक्त वातव्याधि २० प्रकार के प्रमेह दूर हो, वातरक्त में हरड के चूर्ण और गुड के साथ देवे, गम्भीर ज्वर में गिलोय के सत्व, पीपल और सहत से देवे, अफरा, अरुचि, शूल, मन्दाग्नि, खासी, मृगी, वातोदर, श्वास, संग्रहणी, हलीमक, और सर्व ज्वरों को नाश करे, रसादि धातुओं को पुष्टि करे, चुडे को दूर करे, सौ स्त्री भोगने की शक्ति करे, तरुणताको गर्वच्युत करे, यह सिद्ध मृगाङ्क रस पृथक् पृथक् अनुपान से सम्पूर्ण रोगों को दूर करता है।

शंखगर्भपोटलीरसः

शखनाभिगवांक्षीरै.पेषयेन्निष्कषोडशः।
तेनमूषाप्रकर्त्तव्यातन्मध्येभस्मसूतकम् ॥
निष्कार्द्धं गधकात्त्रीणिचूर्णीकृत्यविनिक्षिपेत्।
रुध्वातद्वृट्टयेद्वस्त्रैर्मृत्तिकालेपयेद्वहिः॥
शोष्यंगजपुटेपाच्यान्मूषयासहचूर्णयेत।
मधुकृष्णानुपानेनगुंजामेकांप्रदापयेत् ॥
यक्ष्मरोगनिहत्याशुमृगांकरसवद्ध्रुवम्।

शख की ३२ माशे नाभि लेके गौ के दूध में पीसे फिर उसकी मूषा बना कर उसमें ८ माशे चन्द्रोदय और १२ माशे गन्धक का चूर्ण डाल कपरमिट्टी कर धूप में सुखाय गजपुट में फूंक दे, जब स्वांग शीतल हो जावे तब उसको निकाल ऊपर की कपरमिट्टी दूर कर मूषा सहित खरल में डाल पीस डाले, फिर किसी पात्र में भर कर रख छोडे और १ रत्ती की मात्रा पीपल और सहत के साथ देवे तो क्षय रोग को शीघ्र दूर करे, इस पर पथ्य मृगाङ्क रस के समान देवे।

त्रैलोक्यचिंतामणिरसः

रसंवज्रं हेमतारंताम्रतीक्ष्णाभ्रकमृत।
गन्धकमौक्तिकंशखप्रवालंतालकशिला ॥
शोधितचसममर्वं सप्ताहंभावयेद्दृढम्।
चित्रमूलकषायेणभानुदुग्धैर्दिनत्रयम् ॥
निगुंण्डीसूरणद्रावैर्वज्रदुग्धैर्दिनत्रयम्।
अनेनतूरयेत्सम्यक्पीतवर्णान्वराटकान् ॥
टंकणंरविदुग्धेनपिष्ट्वातेषांमुखंलिपेत्।
मृदाभाण्डेपुटेत्पश्चात्स्वांगशीतविचूर्णयेत्॥
चूर्णतुल्यंमृतंसूतंवैक्रान्तंसूतपादकं।
शिग्रुमूलद्रवैःसर्वंसप्तवारंविभावयेत् ॥
चित्रमूलकषायेणभावनाचैकविंशति.।
आर्द्रकस्यरसेनैवभावनासप्तएवच ॥
सूक्ष्मचूर्णंततःकृत्वाचूर्णपादांशटंकणम्।
टंकणांशंवत्सनाभंतत्समंमरिचंक्षिपेत्।
लवंगंनागरंपथ्याकणाजातीफलंपृथक् ॥
प्रत्येकंवत्सनागस्यपादांशचूर्णितंक्षिपेत्।
मातुलुंगआर्द्रकस्यरसेनतद्विलोडयेत् ॥
चतुर्गुंजामितंखादेत्कणाक्षौद्रंलिहेदनु।
अनुपानैःसमायोज्यंसर्वरोगोपशान्तये ॥
वन्हिंदीपयतेबलंचकुरुतेतेजोमहौषधृते।
वीर्यंवर्द्धयतेविपंचहरतेदार्ढ्यंचधत्तेतनौ ॥
अभ्यासेनविहन्तिमृत्युपलितंपुष्टिंप्रदत्तेनृणां
कासंतुंदयतेक्षयंक्षपयतेश्वासंचनिर्णाशयेत्-
वातविद्रधिपाण्डुशूलग्रहणीरक्तातिसारंजये॥
न्मेहप्लीहजलोदराश्मरितृपाशोफोहलीमो
दरं॥ मूतोत्थंचभगंदरंज्वरगणंचार्शांसि
कुष्ठान्जयेत्। साध्यासाध्यरुजोनिहन्तिस
रसस्त्रैलोक्यचिंतामणिः॥

पारा, हीरा, सुवर्ण, चांदी, तांबा, तीक्ष्ण लोह, और अभ्रक ये सब मरे हुए लेवे, गन्धक, मोती, शंख, मूंगा, हरिताल, मनसिल, ये सब शुद्ध किये हुये लेवे, इनको ७ दिन चीते के रस से खरल कर ३ दिन आक के दूध से खरल करे, फिर ३ दिन निर्गुंडी, जमीकँद और थूहर के दूध से घोटे, फिर इस पिट्ठी को पीली कौडियों में भर कौडियों का मुख आक के दूध में पिसे हुए सुहागे से बँद कर देवे, पश्चात् इन कौडियों को मिट्टी के बरतन में रखकर फूंक देवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब निकाल कर पीस डाले, इस चूर्ण के बराबर पारे की भस्म और पारे की

भस्म से चौथाई वैक्रान्तिक मणि की भस्म मिलावे, सबको एकत्र खरल कर सहैंजने की जड के रस में ७ दिन खरल करे, फिर चीते की जड के काढे की २१ भावना देवे, ७ भावना अदरख के काढे की देवे, फिर सब का चूर्ण कर चूर्ण की चौथाई सुहागा मिलावे, और सुहागे की चौथाई वच्छनाग विष डाले, और वच्छनाग की बराबर काली मिरच डाले, तथा लौंग, सोंठ, हरड, पीपल, जायफल, प्रत्येक, बच्छनाग की चौथाई डाले, सबको बिजौरे और अदरख के रस से खरल कर चार २ रत्ती की गोलियां बनावे १ गोली पीपल और सहत के साथ खाय तथा सर्व रोग दूर करने को इस पर रोगानुसार अनुपान करावे, तो यह जठराग्नि को दीपन करे, बल, तेज, धृति और वीर्य को बढावे, विष को हरण करे, देह दृढ हो, यह अभ्यास से मृत्यु और बुढापे को दूर करे, पुष्टि करे, खांसी, श्वास,क्षय, वातविद्रधि, पाण्डु रोग, शूल, सँग्रहणी, रक्तातिसार, प्रमेह, प्लीह, जलोदर, पथरी, प्यास, सूजन, हलीमक, उदर, भूत बाधा, भगन्दर, ज्वरोंका समूह, बवासीर, और कोढ सब साध्यासाध्य रोगों को यह त्रैलोक्य चिन्तामणि रस दूर करने वाला है।

वसंतकुसुमाकरोरसः

प्रवालरसमौक्तिकाम्बरमिदंचतुर्भागभाक्।
पृथक्पृथगथस्मृतेरजतहेमनीद्व्यंशके ॥
अयोभुजगरंगकँत्रिलवकंविमर्द्याखिलं।
शुभेहनिविभावयेद्भिषगिदँधियासप्तशः॥
द्रवैर्विषनिशेक्षुजै.कमलमालतीपुष्पजैः।
पयःकदलिकँदजैर्मलयजैर्णमाभ्युद्भवैः॥
वसन्तकुसुमाकरोरसपतिर्द्विवल्लोन्मितः।
समस्तगदहृद्भवेत्किलनिजानुपानैरयम्॥
शिलाजतुमधूषणैःक्षयगदेषुसर्वेष्वपि।
प्रमेहरुजिरात्रिभिःसमधुशर्कराभिःसह॥
सितामलयजद्रवैर्महतिरक्तपित्तेथवा।
सितामधुसमन्वितैर्वृषभपल्लवानांद्रवैः॥
त्रिजातगजचन्दनैरपिचतुष्टिपुष्टिप्रदो।
मनोभवकरःपरोवमिपुशंखपुष्पीरसैः॥
अभीरुरसशर्करामधुभिरम्लपित्तामये।
परेषुतुयथोचितननुगदेषुसंयोजयेत्॥

मूंगा, चन्द्रोदय, मोती और अभ्रक भस्म प्रत्येक ४ तोले, रूप रस, सुवर्ण की भस्म प्रत्येक २ तोले, सार, नागेश्वर, वंगेश्वर प्रत्येक ३ तोले इन सबको एकत्र कर आगे लिखे रसो की भावना देवे, अडूसा, हलदी, ईखका रस, कमल, मालती के फूल, गौ का दूध, केलाकंद, चन्दन, और कस्तूरी की यथा योग्य भावना देवे, तो यह वसत कुसुमाकर सर्व रसों का राजा बने, इसकी ४ रत्ती की मात्रा को पृथक् २ अनुपान के साथ देने से सम्पूर्ण रोगो का नाश करे, शिलाजीत और काली मिरच के चूर्ण और सहत मे मिला कर देने से सब क्षय रोगो का नाश करे, हलदी सहत और मिश्री में मिलाकर देने से सम्पूर्ण प्रमेहों को दूर करे, मिश्री और चन्दन के काढे के साथ रक्तपित्तको दूर करे, अथवा मिश्री सहत और अडूसे के पत्तों के रस मे देनेसे घोर रक्तपित्त को दूर करे, त्रिजातक, गजपीपल, और चन्दन के साथ तुष्टता और पुष्टता करे, और कामदेवको बढावे, सखाहूली के रस में वमन को दूर करे, शतावर के रस, मिश्री और सहत के साथ अम्लपित्त का नाश करे, बाकी के रोगो मे यथोचित अनुपान के साथ वैद्य को देना चाहिये।

शिलाजत्वादिलोहम्

शिलाजतुयुतलोहवल्लतुविधिमारितम्।
पथ्याशीसेवतेयस्तुसयक्ष्माणव्यपोहति ॥
शिलाजतुमधुव्योषताप्यलोहरजांसिच।
क्षीरभुक्लेढितस्याशुक्षय क्षयमवाप्नुयात् ॥

विधिपूर्वक २ रत्ती मरेहुए लोह को शिलाजीत में मिलाकर सेवन करे, और पथ्य से रहे तो राजयक्ष्मा दूर हो, अथवा शिलाजीत सोंठ, मिरच, पीपल, और सुवर्णमक्खी की भस्म, और

लोहभस्म को मिला कर सेवन करे तो क्षयरोग शीघ्र नाश हो।

लक्ष्मीविलासोरसः

सुवर्णताराभ्रकताम्रवंगंत्रिलोहनागामृतमौक्तिकंच। एतत्समंव्योमरसस्यभस्मएकीकृतस्यात्कृतकज्जलीकं॥ समर्दयेन्माक्षिकसप्रयुक्तंतच्छोपयेद्धित्रिदिनंचघर्मे। तत्कल्कमूपोदरमध्यगामीयत्नीकृततार्दयपुटेनपक्वं॥ यामाष्टकपावकमर्दितचलक्ष्मीविलासोरसराजएपः। क्षयत्रिदोपप्रभवेचपाण्डोसकामलासर्वसमीरणेपु॥ शोफप्रतिश्यायविनष्टवीर्यमूलामयंसर्वसशूलकुष्टं। हत्वाग्निमांद्यंक्षयसन्निपातश्वासंचकासंचहरेत्प्रयुक्तं॥ तारुण्यलक्ष्मीप्रतिवोधनायश्रीमद्विलासोरसराजएपः।

सुवर्ण, चादी, अभ्रक, ताम्र, वन्ग, तीक्षण मुंड और कान्तलोह, सीसा इनकी भस्म, विष और मोती इन सब को समान लेवे, और सबकी बराबर त्रिकुटा का चूर्ण और चन्द्रोदय लेवे, सब की कजली कर सहत मिलाय ३ दिन बराबर धूप मे रख कर फिर इस कल्क को मूषा में रख भूधरयंत्र मे आठ प्रहर की अग्नि देवे. फिर आठ प्रहर चीते के रस मे खरल करे, तो यह लक्ष्मी विलास सब रसो का राजा बने, यह त्रिदोषजन्य क्षई, पांडुरोग, कामला, सर्व वातविकार, सूजन पीनस, वीर्यक्षीणता, गुदा के रोग, सर्व प्रकारके शूल, कुष्ठ, मन्दाग्नि, क्षय, सन्निपात, श्वास, खासी, इन रोगो को हरण करे, यह तरुणता और सुन्दरता को करे, इसे लक्ष्मीविलास रस कहते हैं।

चन्द्रामृतपर्पटी.

त्रिकटुत्रिफलाचव्यंधान्यजीरकसैंधवम्।
प्रत्येकतोलकंग्राह्यं छागदुग्धेनगोलयेत्॥
रसगंधकलौहानिप्रत्येककर्षसम्मितम्।
टकणस्यपलद्वत्वामरिचाद्धंपलंतथा॥
नवगुंजाप्रमाणेनवटिकांकारयेद्भिपक्।
प्रातःकालेशुचिर्भूत्वाचिंतयित्वामृतेश्वरं॥
एकैकांवटिकाखादेद्भक्तोत्पन्नद्रवेनवा।
नीलोत्पलस्यवाद्रावैःकुलत्थस्यरसेनवा॥
निहन्तिद्विविधंकासंवातपित्तसमुद्भवं।
सरक्तमथनीरक्तंज्वरश्वाससमन्वितं॥
तृड्दाहभूतशूलघ्नीरुचिदावन्हिवर्द्धिनी।
बलवर्णकरीवृष्याप्लीहगुल्मोदरापहा॥
आनाहकृमिपाण्डुघ्नीजीर्णज्वरविनाशिनी।
इयंचंद्रामृतानामचन्द्रनाथेननिर्मिता॥
वासागुडूचिकाभार्गीमुस्तककटकारिका।
काथोऽशनान्तेदातव्योवटिकावीर्यवद्धये॥

सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, चव्य, धनियां, जीरा, सैंधानिमक, प्रत्येक एक तोले सब को बकरी के दूध में खरल कर, पारा, गन्धक, लोहभस्म, प्रत्येक दो तोले, सुहागा ४ तोले, कालीमिरच दो तोले, सब को पूर्वोक्त औषधियो के साथ खरल कर एक एक माशे की गोलियां बनावे, फिर प्रात काल पवित्र हो अमृतेश्वरका चितवन कर १ गोली चांवलों के मांडके साथ खावे, अथवा नीलकमल के रस से वा कुलथी के रस से खावे तो सूखी और गीली खासी वातपित्त से प्रकट, वातपित्तोद्भवपित्त, कफरोग वातपित्तरोग, पैत्तिकरोग, तथा विषजन्य विकार तथा रुधिरजन्य, तथा विना रुधिर के विकार, श्वासयुक्त ज्वर, प्यास, दाह, भूत, शूल, अफरा, कृमिरोग, पाण्डु, और जीर्णज्वर को दूर करे, रुचि, जठराग्नि, बल, वर्ण इनको बढ़ावे, वृष्य है प्लीह, गुल्मका नाश करे, यह चन्द्रामृता नाम गुटिका चन्द्रनाथ ने कही है, इस गोली को खाकर अडूसा, गिलोय, भारगी, नागरमोथा, कटेरी इनका काढा वीर्य बढ़ाने को पिलावे, यह रसचन्द्रिका में लिखा है।

रुद्ररसः

तीक्ष्णशुल्वंनागतारस्वर्णञ्चमरिचपृथक्।
एकद्वित्रिचतुष्पंचक्रमात्षट्शुद्धसूतकम्॥

चांगेरीद्रवसंमर्द्य दिनैकतश्चगोलकम् ।
गोलकंलेपयेत्तेनततोवस्त्रेणवेष्टयेत् ॥
मृगागवत्पचेत्स्थाल्यांवालुकाभिप्रपूरयेत् ।
उद्धृत्यचूर्णयेच्छूलदर्णांहरतुल्योरसोत्तमः ॥
मृगाकवत्त्तयहन्तितथामात्रानुपानकम् ।

सेरीलोहकी भस्म, तामेश्वर, नागेश्वर, रूप रस, सुवर्ण भस्म, कालिमिरच, क्रम से पहली १ तोले, दूसरी दो तोले, तीसरी ३ तोले चौथी ४ तोले पाचवी ५ तोले और छठी ६ तोले लेकर, शुद्धपारा ६ तोले लेवे, इन सब को १ दिन चूका के रस मे खरल कर गोला बनावे, फिर पत्नासी लताके रस मे घुटी हुई गन्धक उस गोले पर चारो तरफ लपेटकर कपरमिट्टी कर देवे, फिर उत्तम पात्र मे रख मृगाङ्करसकी तरह वालुकायंत्रमे पचावे, स्वाग शीतल होजाय तब निकाल कर पीसडाले, तो यह रुद्ररस मृगाङ्कके समान सई रोग को दूर करे, इसकी मात्रा और अनुपान भी मृगांक रस के समान जाने ।

अथनस्यं.

तालकगंधकतुत्थंवाकुचीचमनःशिला ।
अर्कदुग्धेनसम्पिष्ट्वाबदर्याग्नौचजारयेत् ॥
नस्यसप्तदिनचैककफत्तयविनाशनम् ।

हरिताल, गन्धक, नीलाथोथा, बावची और मनसिल इनको आकके दूध मे पीस वेरकी लकडियों में रख के फूक देवैं, इस की सात दिन नस्य लेने से कफकी क्षय दूर हो ।

अथकासाधिकारः

बृहद्रसेन्द्रगुटिका.

कर्षं शुद्धरसेन्द्रस्यगन्धकस्याभ्रकस्यच ।
ताम्रस्यहरितालस्यलोहस्यचविषस्यच ॥
मनःशिलायाःक्षाराणांबीजंधत्तूरकस्यच ।
मरिचस्यचसर्वेषांसमंचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥
जयंन्तीचित्रकमानखण्डकर्णोथमण्डुकी ।
शक्राशनंभृङ्गराजंकेशराजार्द्रकंतथा ॥
एतेषांस्वरसेनापिकर्षमात्रेचमर्दयेत् ।
आर्द्रकस्वरसेनैवपचकासंव्यपोहति ॥
अग्निमांद्यारुचिंशोथमुदरंपाण्डुकामलाम् ।
रसायनीचवृष्याचबलवर्णप्रसादिनी ॥

शुद्धपारा, गन्धक, अभ्रक, ताम्र, हरिताल और लोह इन की भस्म तथा विष, मनसिल, जवाखार से लेके ख र, धतूरेके बीज, और काली मिरच इन को समान भाग लेवे और चूर्ण कर अरनी, चीता, मानसाग, खण्डकर्ण, ब्राह्मी, भांग, भागरा, केशराज (भांगरेका भेद) और अदरख के रस में पृथक् २ मर्दन कर मटर के समान गोलिया बनावे, इनको अदरक के रस के साथ सेवन करे तो पाच प्रकारकी खांसी श्वास, यक्ष्मा, भगदर, मन्दाग्नि, अरुचि, सूजन, उदर, पाण्डुरोग, कामला, इनको दूर करे, यह रसायन वृष्य और बल कर्त्ता है ।

अमृतार्णवोरसः

पारदगधकंशुद्धमृतलोहश्चटंकणम् ।
रास्नाविडगत्रिफलादेवदारुसचित्रकम् ॥
अमृतापद्मकक्षौद्रविषचैवविमर्दयेत् ।
द्विगुञ्जंवातकासार्त्तःसेवयेदमृतार्णवम् ॥

पारा, गन्धक, लोह भस्म, सुहागा, रास्ना, वायविडंग, त्रिफला, देवदारु, चीता, गिलोय, पद्माख, शहत, और सिगिया विष इन सबको समान भाग लेकर खरल करे, पश्चात् रत्ती २ की गोलिया बनावे इनमे से १ गोली सेवन करने से बादी और खांसी को दूर करे, इसे अमृतार्णव रस कहते हैं ।

पित्तकासान्तकोरसः

भस्मताम्राभ्रकान्तानांकासमर्दत्वचोरसैः ।
मणिजैर्वेतसाम्लैश्चदिनंमर्द्य सुपिण्डितम् ॥
निष्कार्द्धं पाण्डुकासार्तीभक्षयेद्यदिनत्रयम् ।
कासश्वासाग्निमान्द्यक्षयश्चापिनिहन्त्यलम्

ताम्र, अभ्रक और कान्तीसार इन तीनों की भस्म समान भाग लेवे और कसोंदीकी छाल के रस में तथा बक पुष्प और अम्लवेत के रसमें एक दिन खरल कर २ माशे की गोलियां बनावे इनमे से एक गोली सेवन करे तो पांडुरोग, खांसी श्वास, मंदाग्नि और क्षय को दूर करे ।

कासंसंहारभैरवः

रसगन्धकताम्राभ्रंशखटंकणलोहकम ।
मरिचंकुष्ठतालीसजातीफललवंगकम् ॥
कार्षिकचूर्णमादायदण्डेनामर्द्यभावयेत ।
भेकपर्णीकेशराजनिर्गुण्डीकाकमाचिका ॥
द्रोणपुष्पीशालपर्णीग्रीष्मसुन्दरकतथा ।
भार्गीहरीतकीवासाकार्षिकैःपत्रजैरसैः ॥
वटिकांकारयेद्वैद्यःपञ्चगुञ्जाप्रमाणतः ।
वातजपैत्तिकंकासश्लैष्मिकचिरजंतथा ॥
श्रीमद्गहननाथेनकाससंहारभैरवः ।
रसोयंनिर्मितोयत्नाल्लोकरक्षणहेतवे ॥
वासाशुंठीकण्टकारीकाथेनपाययेद्बुधः ।
कासंनानाविधंहन्तिश्वासमुग्रमरोचकम् ॥
वलवर्णकरःश्रीदःपुष्टिदःकान्तिवर्द्धनः ।

पारा, गन्धक, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, शंखभस्म, सुहागा, लोह भस्म, काली मिरच, कूठ, तालीसपत्र, जायफल और लौंग प्रत्येक एक तोला ले खरल में डाल मूसले से घोट, मण्डूक पर्णी, भांगरा, निर्गुंडी, मकोय, गोमा, साबौन, ग्रीष्म सुन्दर (शाकविशेष) भारंगी, हरड और अडूसा प्रत्येक के एक एक तोले रस की भावना देकर पाच पांच रत्ती की गोलियां बनावे, इनको अडूसा, सोंठ और कटेरी के क्वाथ से सेवन करे तो वातज, पितज, द्वन्द्वज और पुरानी खांसी को दूर करे, यह गहननाथका कहा कासहार भैरव रस है । यह अनेक प्रकार की खांसी, श्वास विष रोगों को दूर करे, बल वर्ण करे, शोभा बढावे, पुष्टाई करे, तथा अग्नि दीपन करे ।

लक्ष्मीविलासोरसः

शुद्धंसूतंसतालञ्चतालार्द्धंरसखर्प्परम ।
वंगंताम्रंघनंकान्तंकास्यंगंधंपलंपलम् ॥
केशराजरसेनैवभावयेद्दिवसत्रयम् ।
कुलत्थस्यरसेनैवभावयेच्चपुनःपुनः ॥
एलाजातीफलाख्यञ्चतेजपत्रंलवंगकम् ।
यवानीजीरकञ्चैवत्रिकटुत्रिफलासमम् ॥
भावयेच्चरसेनैवगोलयेत्सर्वमौषधम् ।
छायाशुष्कावटीकार्य्याचणकप्रमिताशुभा ॥
शीताम्बुनापिवेद्धीमान्सर्वकासनिवृत्तये ।
मत्स्यंमासंतथाक्षीरंपथ्यंस्यात्स्निग्धभोजनम ॥
क्षयकासतथाश्वाससज्वरंवाथविज्वरम् ।
हलीमकंपाण्डुरोगंशोथंशूलप्रमेहकम् ॥
अर्शोनाशंकरोत्येवबलवृद्धिचकारयेत् ।
वर्जयेच्छाकमम्लञ्चभ्रष्टद्रव्यंहुताशनम ॥

शुद्ध पारा,हरिताल, प्रत्येक चार तोले, खपरिया २ तोले, बंग, ताम्र, लोह, कान्ति लोह, कांसा, प्रत्येक की भस्म चार चार तोले, सब को भांगरे के रस मे ३ दिन खरल करे, इसी प्रकार कुलथी के रस की बार बार भावना दे,फिर इलायची, जायफल, तेजपात, लौंग, अजवायन, जीरा त्रिकुटा, त्रिफला, इन सबको समान लेकर काढा कर काढे की भावना देवे, फिर चने के प्रमाण गोलियां बनाकर छाया मे सुखा लेवे, एक गोली शीतल जल के साथ सेवन करे तो सब प्रकार की खांसी दूर हो, पथ्यमें मछली मांस, दूध और ताजा स्निग्ध भोजन कहा है, यह क्षय, खांसी श्वास, ज्वर, हलीमक, पांडुरोग, सूजन, शूल, प्रमेह और बवासीर को दूर करे, बलको बढ़ावे इस लक्ष्मीविलास रसका सेवन कर्त्ता मनुष्य शाक खटाई और भुनी हुई वस्तु और अग्निसे तापना छोड़ दे ।

सर्वेश्वरोरसः

रसगन्धकयोश्चूर्णनेकीकृत्याभ्रकंतथा ।
हेमभिश्चसमंकृत्वामर्दयेद्यामकद्वयम् ॥

भूषणानिलवंगैलाटंकणहेमतुल्यकम् ।
कटकार्य्यारसैर्भाव्यमेकविंशतिवारकम् ॥
शिग्रुबीजार्द्रकरसै सप्तधाभावयेत्पृथक् ।
रसःसर्वेश्वरोनामकासश्वासक्षयापह ॥
अनुपानप्रयोक्तव्यविभीतकफलत्वचम् ।

पारे और गधककी कजली कर इसमे समान भाग अभ्रक और सुवर्णकी भस्म मिलावे, और खूब खरल करे, फिर त्रिकुटा, लौंग इलायची और सुहागा प्रत्येक सुवर्ण भस्मके बराबर लेकर २१ भावना कटेरीके रस की ७ भावना सहजने के रस की,और ७ भावनाअदरकके रसकी देवे। तो सर्वेश्वर रस बने,इसको बहेडेकी छालके चूर्णके साथ सेवन करनेसे खासी, श्वास, और क्षय दूर हो ।

शृंगाराभ्रम्

शुद्धकृष्णाभ्रचूर्णंद्विपलपरिमितशाणमात्रंय दन्यत् । कर्पूरजातीकोशसजलमिभकणातेजपत्रंलवगम् ॥ मासीतालीसचोचेगजकुसुमगदंधातकीचेतितुल्यम् । पथ्याधात्रीविभीतत्रिकटुरथपृथगद्धशाणद्विशाणम् ॥ एलाजातीफलाख्यक्षितितलविधिनाशुद्धगन्धाश्मकोलम् । कोलार्द्धपारदस्यप्रतिपदविहित सर्वमेकत्रमिश्रम् ॥ पानीयनैवकार्य्या परिणतचणकस्विन्नतुल्याश्चवट्य: । प्रातखाद्याश्चतस्रस्तदनुचकियत शृंगवेरसपर्णम् ॥ पानीयपीतमतेध्रुवमपहरतिक्षिप्रमेतान्विकारान् । कोष्ठेदुष्टाग्निजातान्ज्वरमुदररुजो राजयक्ष्मक्षयञ्च ॥ कासंश्वाससशोथंनयनपरिभवमेहमेदोविकारान् । छर्दिशूलाम्लपित्ततृषमपिसहर्तीगुल्मजालंविशालम् ॥ पाण्डुत्वरक्तपित्तंगरलभवगदान्पीनसप्लीहरोगान् । हन्यादामाशयोत्थान्कफपवनकृतान् पित्तरोगानशेषान् ॥ वल्योवृष्यश्चयोगस्तरुणतरकरःसर्वरोगेप्रशस्तः । पथ्यमासैश्चयूषैर्घृतपरिलुलितैर्गव्यदुग्धैश्चभूयः ॥ भोज्ययोज्यंयथेष्टंललितललनयादीयमानमुदायत् । शृंगाराभ्रेणकामीयुवतिजनशताभोगयोगादतुष्टः ॥ वर्ज्योशाकाम्लमादौदिनकतिपयचित्स्वेच्छयाभोज्यमन्यत् । दीर्घायुःकामसमूर्तिर्गतवलिपलितोमानवोऽस्यप्रसादात् ॥

शुद्ध काली अभ्रकका भस्म ४ तोले, कपूर, जायफल, नेत्रवाला, गजपीपल, तेजपात लौंग, जटामांसी, तालीसपत्र, तज, नागकेसर, कूठ और धायके फूल प्रत्येक ४ माशे तथा हरड, बहेडा, आमला, सोठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक ६ माशे, इलायची और जायफल इन सबको खरल करके सिद्ध करे, फिर शुद्ध गधक ८ माशे और पारा ४ माशे सबको एकत्र कर जलसे चनेके प्रमाण गोलिया बनावे, प्रात काल चार गोली खाकर ऊपर से अदरख और पानका रस पीवे, अन्तमे थोडा जल पीवे तो इन रोगोको तत्काल दूर करे, जो जठराग्नि दूषित होनेसे हुए हो, ज्वर, उदररोग, राजयक्ष्मा, खई, खासी, श्वास, नेत्ररोग प्रमेह, मेदरोग, वमन, शूल, अम्लपित्त, प्यास, गोला, पाडुरोग, रक्तपित्त, विषरोग पीनस, प्लीहरोग, आमाशयके रोग, कफवातके विकार, और पित्त विकारोको दूर करे, बलकरे, पुरुषार्थ बढावे, तरुणता करे. इसका देना सर्वरोगोमे उत्तम है, इस पर, मास, यूष, गौका घृत और दूध पथ्य है, और दिव्य स्त्रीके हाथसे यथेष्ट भोजन करे, इसका सेवन कर्त्ता सौ स्त्रियोको भोगनेसेभी सतुष्ट नहीं होता, इसका सेवन करनेवाला शाक और खटाई कुछ दिनके लिए त्याग देवे, बाकी सर्व वस्तु सेवन करे तो दीर्घायु और कामदेवके समान दिव्य मूर्त्तिमान होवे, तथा इसके प्रतापसे मनुष्य वली पलित रहित हो ।

सार्वभौमः

जीर्णंसुवर्णंलौहवायद्यत्रैवप्रदीयते ।
तदायसर्वरोगाणासार्वभौमोनसशय. ॥

यदि इसीमे सुवर्णभस्म अथवा लोहभस्म जलसे सेवन करे तो खासी दूर करे और सब रोगोंका जीतनेवाला यह सार्वभौम रस है ।

तरुणानन्दरसः

कर्पद्वयरसेन्द्रस्यशुद्धस्यगन्धकस्य च ।
कज्जलीकृत्ययत्नेनशिलातलशुभेदृढे ॥
बिल्वाग्निमथ स्योनाकःकाशमरीपाटलाबला
मुस्तपुनर्नवाधात्रीवृहतीवृषपत्रकम् ।
विदारीशतमूलीचकृषैरेषापृथग्रसैः ।
मर्दयित्वापुनर्वासास्वरसैर्दशतोलकैः ॥
मर्दयेत्तत्रशुद्धाभ्रं रसस्यद्विगुणंक्षिपेत् ।
रसस्यार्द्धञ्चकर्पूरंतत्रैवदापयेद्भिषक् ॥
जातीकोषफलेमासीतालीशैलालवङ्गकम् ।
चूर्णंकृत्वाप्रयत्नेनमाषमात्रंक्षिपेत्पृथक् ।
विदारीस्वरसेनैववटिकाकारयेद्भिषक् ॥
राजयक्ष्माणमत्युग्रं क्षयंचोग्रसुरक्षतम् ॥
कासंपञ्चविधश्वासस्वराघातमरोचकम् ।
कामलांपाण्डुरोगञ्चप्लीहानंसहलीमकम् ॥
जीर्णज्वरतृषागुल्मग्रहणीमामसम्भवाम् ।
अतीसारञ्चशोथंञ्चकुष्ठानिचभगदरम् ॥
नाशयेदेषविख्यातस्तरुणानन्दसंज्ञितः ।
रसायनवरोवृष्यश्चक्षुष्पुष्टिवर्द्धनः ॥
सहस्रंयातिनारीणांभक्षणादस्यमानवः ।
क्षीणतानचशुक्रस्यनचबुद्धिबलक्षयम् ॥
द्विमासमुपयोगेननिहन्तिकामलान्गदान् ।
शुक्रसंदीपनंकृत्वाज्वरंहन्तिनसंशयः ॥
नारिकेलजलेनैवभक्ष्योऽयञ्चरसायनः ।
क्षीरानुपानवृष्योऽयनक्वचित्प्रतिहन्यते ॥

शुद्धपारा, १ तोले और शुद्धगंधक १ तोले, दोनोंकी कजली कर बेल, अरनी, टेंटू, कभारी, पाद, खरेंटी, नागरमोथा, सोंठ, आमले, कटेरी, अडूसा, पत्रज, विदारीकंद, और शतावरी प्रत्येकके एक २ तोले रससे खरल कर फिर अडूसेके १० तोले रससे खरल कर रससे दूनी अभ्रकभस्म डाले, और रससे आधा कपूर मिलावे, तथा जायफल, जटामासी, तालीसपत्र, छोटीइलायची और लौंग प्रत्येक एक एक माशेको चूर्ण कर डाले, फिर विदारीकंदके रससे खरलकर गोलिया बनावे, और १ गोली खाय तो घोर राजयक्ष्मा, क्षय, घोर उर क्षत, पांच प्रकारकी खांसी, श्वास, स्वरभेद, अरुचि, कामला, पाण्डुरोग, प्लीह, हलीमक, जीर्णज्वर, प्यास, गोला, आम, संग्रहणी, अतीसार, सूजन, कोढ, भगदर, इस सब रोगोंको यह तरुणानन्द रस दूर करे, रसायन है, वृष्य और नेत्रोंको हितकारी, पुष्टकरता और इसके सेवनसे हजार स्त्री भोगनेकी सामर्थ्य हो, कभी शुक्र क्षीण न होवे, न बुद्धि बलका क्षयहो, दो महीनेके सेवन करनेसे कामलादि रोगोंको दूर करे, शुक्रको बढा कर ज्वरका नाश करे, इसको नारियलके जलसे भक्षण करना चाहिये और ऊपरसे दूध पीना चाहिये ।

महोदधिरसः

सूतकंगधकंलौहविषञ्चैववराङ्गकम् ।
ताम्रकवंगभस्मापिव्योमकञ्चसमांशकम् ॥
त्रिकटुंभद्रमुस्तञ्चविडङ्गनागकेशरम् ।
रेणुकामलकञ्चैवपिप्पलीमूलमेवच ॥
एषाञ्चद्विगुणभागमर्दयित्वाप्रयत्नतः ।
भावनातत्रदातव्यागजपिप्पलिकाम्बुभिः ॥
चणमात्रावटीकार्य्यासंग्रहग्रहणींतथा ।
कासहन्तितथाश्वासमर्शांसिचभगंदरम् ॥
हृच्छूलंपार्श्वशूलञ्चकर्णरोगंकपालिकाम् ।
हरेत्सग्रहणीरोगानष्टौचजठराणिच ॥
प्रमेहान्विंशतिञ्चैवचतुर्विधमजीर्णकम् ।
नचात्रपानेपरिहार्य्यमस्तिनशीतवातातपमैथुनेषु ॥ यथेष्टचेष्टाभिरतःप्रयोगैर्नरोभवेत्
काञ्चनराशिगौरः ।

पारा, गंधक, लोहभस्म, विष, दालचीनी, तांबेकी भस्म, वंगभस्म, अभ्रक, सब समान लेवे, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, वायविडंग, नागकेशर, रेणुका, आमले और पीपलामूल प्रत्येक दो दो भाग ले, सबको एकत्र खरल कर गजपीपलके रसकी भावना दे, चनेकी बराबर गोलिया बनावे, यह गोली संग्रहणी, खांसी, श्वास, बवासीर भगंदर, हृदयका शूल, पसवाडेका शूल,

कानके रोग, कपालके रोग, आठ प्रकारके उदर-रोग, बीस प्रकारका प्रमेह, और चार प्रकारके अजीर्ण रोगको दूर करे। इसपर किसी प्रकारके भोजन और पीनेका पथ्य नहीं है, तथा सरदी, गरमी, हवा और मैथुनका त्याग नही है,- इसमे यथेष्ट आचरण करनेसे भी मनुष्य सुवर्णके समान दिव्य देहवाला होता है।

जयागुटिका

सूतकगन्धकलौहविषवत्सकमेवच।
विडंगकेशरंमुस्तमेलाग्रन्थिकरेणुकम् ॥
त्रिकटुत्रिफलाचित्रं शुद्धं जैपालबीजकम्।
एतानिसमभागानिद्विगुणोगुडउच्यते ॥
तिन्तिडीबीजमानेनप्रातःकालेचभक्षयेत्।
कासश्वासक्षयगुल्मंप्रमेहविषमज्वरम् ॥
अजीर्णग्रहणीरोगशूलपाण्ड्वामयतथा।
अपानेहृदयेशूलेवातरोगेगलग्रहे ॥
अरुचावतिसारेचसूतिकातङ्कपीडिते।
जयाख्यानिर्म्मिताह्येषाभक्षणीयासुरैरपि॥

पारा, गन्धक, लोह भस्म, विष, चीते की छाल, पत्रज, रेणुका, केशर, नाग केशर, इलायची, पीपला मूल, सोठ, मिरच, पीपल, हरड, वहेडा, आंवला और जमालगोटा, इन सबको समान भाग लेवे, और खरल कर दूना गुड मिलाय इमली के चीये के समान गोलियां बनावे, और एक गोली प्रात काल सेवन करे तो खासी, श्वास क्षय, गोला, प्रमेह, विषम ज्वर, अजीर्ण, सग्रहणी, शूल, पाडु, गुदा और हृदय के शूल, वादी के रोग, गले का रुकना, अरुचि, अतिसार और विशूचिका को यह ज्याख्या गोली दूर करे।

विजयागुटिका

सूतकंगन्धकलौहविषचित्रकपत्रकम्।
विडगरेणुकामुस्तमेलाकेशरग्रन्थिकम् ॥
फलत्रिकंत्रिकटुकंशुल्वभस्मतथैवच।
एतानिसमभागानिद्विगुणोपीयतेगुडः ॥
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे।
सूतायांग्रहणीरोगेशूलेपाण्ड्वामयेतथा ॥
हस्तपादादिदाहेचगुटिकेयप्रशस्यते।

पारा, गधक, लोहभस्म, सिंगिया विष, चीते की छाल, पत्रज, वायविड ग, रेणुका, मोथा, इलायची, केशर, पीपलामूल, हरड, बहेडा, आमला, सोठ, मिरच, पीपल, तावे की भस्म, इन सबको समान भाग ले और इन सबसे दूना गुड मिला कर गोलिया बनावे और एक गोली नित्य खाय तो खासी, श्वास, क्षय, गोला, प्रमेह, विषमज्वर, प्रसूत के रोग, सग्रहणी, शूल, पांडु रोग, हाथ पैरो के दाह को यह विजय-गुटिका हितकारी है।

स्वच्छन्दभैरवोरसः

रसमेकद्विधागन्धगन्धतुल्यञ्चसैंधवम् ॥
ज्वालामुखीरसै.पञ्चदिनानिपरिमर्दयेत्।
मूषकायानिरुध्याथपुटेद्रात्रौचमध्यमम् ॥
सर्वभस्मवदायातिवल्लमेनप्रयच्छति।
ग्रहण्यांसग्रहण्याञ्चकासेश्वासेविशेषतः ॥
उग्रासुज्वरतन्द्रासुनिद्रास्वल्पासुयोजयेत्।
अन्यरोगेपुतद्द्याद्रसस्वच्छन्दभैरवम् ॥
तुष्टिंतुष्टिमसौकुर्य्यात्सौकुमार्य्यञ्चकारयेत्।

पारा १ भाग, गन्धक दो भाग, सेंधानिमक दो भाग, इन सबको पाच दिन तक ज्वालामुखी के रस मे खरल करे, फिर मूषा मे रख रात्रि के समय मध्यम पुट में फू क दे, ऐसा करने से सब की भस्म हो जायगी, इसकी ३ रत्ती को मात्रा अनुपान के साथ देवे तो संग्रहणी, मन्दाग्नि, खासी, श्वास, घोर ज्वर, अल्पनिद्रा तथा अन्यान्य रोगो मे इस स्वच्छन्द भैरव रस को देवे तो तुष्टता देह की पुष्टता और सुकमारता करे।

रसगुडिका

रसभागोभवेदेकोगन्धकोद्विगुणोभवेत्।
त्रिभागापिप्पलीपथ्याचतुर्भागोविभीतक. ॥
पचभागास्त्वामलचषड्गुणासप्तभाविका।
भार्गीसर्वमिदंचूर्णं भाव्यबव्बूलजेद्रवैः ॥

एवं विंशतिवारञ्चमधुनागुडिकाकृता ।
विभीतकप्रमाणेनप्रातरेकान्तुभक्षयेत ॥
कासश्वासहरेतत्तु क्वाथतद्वनुकर्णया ।

पारा १ तोले, गन्धक दो तोले, पीपल ३ तोले, हड ४ तोले, बहेडा ५ तोले, आंवला ६ तोले और भारंगी ७ तोले, इन सबको बारीक पीस बबूल के रस की २१ भावना देवे, फिर सहत में बहेडे की बराबर गोलियां बनावे । १ गोली प्रातःकाल सेवन करे तो खासी, श्वास को दूर करे, इस गोली को खाकर पीपल का चूर्ण मिला कटेरी का काढा पीवे ।

रसेन्द्रगुडिका

माक्षिकञ्चशिखिग्रीवमभ्रकतालकतथा ।
एतांस्तुमिलितान्सर्वानभावयेदार्द्रकद्रवैः ॥
रक्तिद्वयप्रमाणान्तुकल्पयेतगुडिकाभिषक्
जीर्णेन्नेभक्षयेदेकाक्षीरमांसरसाशनः ॥
पञ्चकासक्षयंश्वासरक्तपित्तंविनाशयेत् ।
पाण्डुकृमिज्वरहरीकृशानांपुष्टिवर्द्धनी
शुक्रवृद्धिकरीचैवाम्लपित्तविनाशिनी ।
वह्निदीप्तिकरीचैवारुचिकविनाशिनी ॥

सुवर्णमक्खी की भस्म, मोरचूत, अभ्रक भस्म, और हरिताल प्रत्येक एक तोले, लेकर अदरक के रस की भावना देवे, दो २ रत्ती की गोलिया बनावे और अन्न पचने के पश्चात् इस गोली को भक्षण करे और ऊपर से दूध, मांस रस का पथ्य लेवे तो पांच प्रकार की खांसी, और श्वास, रक्तपित्त, पाडु रोग, कृमि और ज्वर को दूर करे, तथा कृश मनुष्य को पुष्टि करे, वीर्य बढावे, अम्लपित्त का नाश करे, जठराग्नि बढावे अरुचि दूर करे ।

पुरंदरवटी

सूतकाद्द्विगुणगन्धमेकधाकज्जलीकृतम् ।
त्रिकटुत्रिफलाचूर्णप्रत्येकसूतसम्मितम् ॥
अजाक्षीरेणसंभाव्यवटिकाकारयेत्तत. ।
आर्द्रकस्यरसे सेव्याशीततोयंपिबेदनु ॥

कासश्वासप्रशमनीविशेषाद्ग्निवर्द्धनी ।
इयंयदिरादामेव्यात्तदास्याद्योगवाहिका ॥
वृद्धोऽपितरुणः शक्तःस्त्रीशतेपुवृषायते ॥

एक तोले पारा और दो तोले गन्धक दोनो की कज्जली कर सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला प्रत्येक एक २ तोला मिला कर बकरी के दूध से खरल कर एक २ रत्ती की गोलियां बनावे, और एक गोली अदरख के रस के साथ खाकर ऊपर से शीतल जल पीवे तो यह खासी और श्वास को दूर करे अग्नि को बढावे यदि इसको सदैव सेवन करे तो यह योगवाही है, वृद्ध मनुष्य भी सौ स्त्रियो के मद को दूर करे ।

कासान्तकोरसः

सूतंगन्धविपञ्चैवशालपर्णीविधान्यकम् ।
यावन्त्येतानिचूर्णानितावन्मात्रंमरीचकम् ॥
गुञ्जाचतुष्टयखादेन्मधुनाकासशान्तये ।

पारा, गन्धक, विष, सालपर्णी, धनिया, इन सबको बराबर लेकर सबकी बराबर काली मिरच लेवे, सबको जल से खरल कर चार चार रत्ती की गोलिया बनावे और सहत के साथ नित्य खाय तो सब प्रकार की खासी दूर हो ।

कासकुठारः

हिंगुलमरिचगन्धसव्योषटंकणंतथा ।
द्विगुञ्जमार्द्रकद्रावैःसन्निपातसुदारुणम् ॥
कासनानाविधहन्तिशिरोरोगविनाशयेत् ।

हींगलू, काली मिरच, गन्धक, सोंठ, मिरच, पीपल, और सुहागा इन सबको समान भाग ले, अदरख के रस से खरल कर दो २ रत्ती की गोलियों बनाये, इनका सेवन अनेक प्रकार की खासी और मस्तक रोगों को दूर करे।

श्रीचंद्रामृतलौहम्

त्रिकटुत्रिफलाधान्यचव्यजीरकसैन्धवम् ।
दिव्यौषधिहतंस्यात्पितत्तुल्यमायसोरज. ॥

नवगुञ्जाप्रमाणेनवटिकाकारयेद्भिषक ।
प्रातःकालेशुचिर्भूत्वाचिन्तयित्वामृतेश्वरीम् ॥
एकैकावटिकाखादेद्रक्तोत्पलरसाप्लुताम् ।
नीलोत्पलरसेनैव कुलत्थस्वरसेनच ॥
निहन्तिविविधकासदोषत्रयसमुद्भवम् ।
तानिकफैस्तिकञ्चै वगन्दोषसमुद्भवम ॥
सरक्तमथजीर्णरक्तज्वरश्वाससमन्वितम ।
भ्रमदाहतृट्शूलघ्नरुच्यवन्हिप्रदीपनम ॥
बलवर्णकरवृष्यजीर्णज्वरविनाशनम् ।
इदचन्द्रामृतलोहचन्द्रनाथेननिर्मितम् ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, धनिया, जीरा, सेधा निमक, इन सब को समान भाग ले, और सब की बराबर मनसिल से की हुई लोह भस्म लेवे, और सब को एकत्र कर नौ २ रत्ती की गोलिया बनावे, एक गोली लालकमल के रस के साथ खाय अथवा नील कमल के रस से अथवा कुलथी के काढे से खाय तो अनेक प्रकार की खासी, त्रिदोष की खासी, भ्रम, दाह, प्यास, शूल और जीर्णज्वर को दूर करे अग्नि को बढावे बल और वर्ण को करे वृष्य है, यह चन्द्रामृत लोह श्रीचन्द्रनाथ का निर्माण किया है।

अमृतमञ्जरी.

हिंगुलञ्चविषञ्चैवकणामरिचटङ्कणम ।
जातीकोषसमंसर्वंजम्बीररसमर्दितम् ॥
रक्तिमानावटींकुर्य्याद्राद्रकद्रवसंयुताम् ।
वटीद्वयत्रयंखादेत्सन्निपातंसुदारुणम ॥
अग्निमान्द्यमजीर्णञ्चसामवातंसुदारुणम् ।
उष्णतोयानुपानेनसर्वव्याधिनियच्छति ॥
कासपञ्चविधश्वाससर्वांगग्रहमेवच ।
जीर्णज्वरक्षयकासहन्यादमृतमञ्जरी ॥

हींगलू, विष, पीपल, काली मिरच, सुहागा, जायफल, सबको समान ले, जबीरी नींबू के रस से खरल कर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे और अदरख के रस से दो अथवा तीन गोली खाय तो घोर सन्निपात, मन्दाग्नि, अजीर्ण, दारुण आमवात, पाच प्रकार की खासी, श्वास, सर्व देह का जिकडना, जीर्ण ज्वर, क्षय, खासी, इन सब रोगो को यह अमृतमञ्जरी रस गरम जलके साथ लेने से दूर करता है।

कासान्तकः

त्रिफलाव्योषचूर्णञ्चसमभागंप्रकल्पयेत ।
मधुनासहपानात्तुदुष्टकासंनियच्छति ॥

हरड, बहेडा, आवला, सोठ, मिरच, पीपल सब समान भाग ले चूर्ण कर खाय तो दुष्ट खासी दूर होवे।

बृहत्शृंगाराभ्रम्.

पारदगन्धकञ्चैवटङ्कणनागकेशरम ।
कर्पूरजातीकोषञ्चलवंगतेजपत्रकम् ॥
सुवर्णंचापिप्रत्येककर्षमात्रंप्रकल्पयेत् ।
शुद्धकृष्णाभ्रचूर्णन्तुचतुःकर्षप्रयोज्येत् ॥
तालीसघनकुष्ठञ्चमासीत्वक्धात्रिपुष्पिका ।
एलाबीजत्रिकटुकंत्रिफलाकरिपिप्पली ॥
कर्षद्वयञ्चएतेषांपिप्पलीकाथमर्दितम् ।
अनुपानप्रयोक्तव्यंचोचक्षौद्रसमायुतम ॥
अग्निमन्द्यादिकान्रोगानरुचिंपाण्डुकामलाम् । उदराणितथाशोथमानाहज्वरमेवच ॥
ग्रहणीश्वासकासञ्चहन्याद्यक्ष्माणमेवच ।
नानारोगप्रशमनंबलवर्णाग्निकारकम् ॥
बृहच्छृंगाराभ्रनामविष्णुनापरिकीर्तितम् ।
एतस्याभ्यासमात्रेणनिर्व्याधिर्जायतेनरः ॥

पारा, गंधक, सुहागा, नागकेशर, कपूर, जायफल, लौंग, तेजपात, और सुवर्ण की भस्म प्रत्येक एक २ तोले लेवे और शुद्ध काली अभ्रककी भस्म ४ तोले, तालीसपत्र, नागरमोथा, कूट, जटामांसी, दालचीनी, धाय के फूल, इलायची के बीज, सोठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, गजपीपल, प्रत्येक दो तोले लेवे. सबको पीपल के काढे से खरल कर दालचीनी और शहत के साथ देवे तो मन्दाग्नि, अरुचि, पाण्डु, कामला, उदर, सूजन, अफरा, ज्वर, संग्रहणी, श्वास, खासी, खई और नाना प्रकार के रोगों को दूर करे वर्ण और जठराग्नि को बढावे, यह बृहच्छृंगार

भक विष्णु भगवान् ने कही है इसके अभ्यास से मनुष्य रोग रहित होता है।

नित्योदयरसः

सुशुद्धं पारदं गन्धं प्रत्येकशुक्तिसम्मितम्।
ततःकज्जलिकांकृत्वामर्दयेच्चपृथक्पृथक्॥
बिल्वाग्निमन्थश्योनाककाश्मरीपाटलाबला।
मुस्तपुनर्नवाधात्रीबृहतीवृषपत्रकम्॥
विदारीबहुपुत्रीचणपाकपैरसैभिषक्।
सुवर्णरजतताप्यंप्रत्येकंशाणमात्रकम्॥
पलमात्रन्तुकृष्णाभ्रं तदर्द्धन्तुसिताभ्रकम्।
जातीकोषफलेमासीतालीशैलालवङ्गकम्॥
प्रत्येकंकोलमात्रन्तुवासानीरैर्विमर्दयेत्।
शोषयित्वातपेपश्चाद्विदार्य्यापेषयेद्रसैः॥
द्विगुञ्जावटिकांकृत्वापिप्पलीमधुनाभजेत्।
नाम्नानित्योदयश्चायरसोविष्णुविनिर्म्मितः
पचकासान्निहन्त्याशुचिरकालोद्भवानपि।
राजयक्ष्माणमप्युग्रं जीर्णज्वरमरोचकम्॥
धातुस्थविषमाख्यञ्चतृतीयकचतुर्थकम्।
अर्शांसिकामलांपाण्डुमग्निमान्द्यं प्रमेहकम्॥
सेवनादस्यकंदर्परूपोभवतिमानवः।

शुद्ध पारा और गन्धक प्रत्येक एक तोले, दोनो की कजली कर बेलगिरी, अरनी, टेंटू, कभारी, पाढल, खिरैटी, नागरमोथा, साठ, आमले, कटेरी, अडूसे के पत्ते, विदारीकंद और शतावर के रस में पृथक् पृथक् खरल करे फिर इसमें सुवर्ण भस्म रूपे की भस्म, सोनामक्खी की भस्म, प्रत्येक चार माशे मिलावे, काली अभ्रक की भस्म ४ तोले, सफेद अभ्रक की भस्म दो तोले, जायफल, जावित्री, जटामासी, तालीसपत्र, इलायची, लौंग प्रत्येक दो टक लेवे, और सबको पीस कर अडूसे के रस में खरल करे, फिर धूप मे सुखाय विदारीकद के रस मे घोट दो २ रत्ती की गोलिया बनावे, इन को पीपल और सहत के साथ खाय तो यह नित्योदित रस पाच प्रकार की खासी, क्षई, जीर्ण ज्वर, अरुचि, धातुगतज्वर, विषम ज्वर, तृतीयक, चातुर्थक, बवासीर, कामला, पाडु रोग, मन्दाग्नि और प्रमेह को दूर करे, देह को कामदेव के समान करे।

रसपर्पटी

रसात्रिगुणगन्धेनमर्दयित्वासभृङ्गकम्।
लोहपात्रेघृताभ्यक्तेद्रावितंबदराग्निना॥
ऊर्ध्वाधोगोमयंदत्वाकदल्याःकोमलेदले।
स्निग्धेपत्रे ह्ययोदर्व्यापर्पटाकारतानयेत्॥
पात्रेलोहेविनिक्षिप्तेलोहपर्पटिकाभवेत्।
ताम्रेपात्रेविनिक्षिप्तेताम्रपर्पटिकाभवेत्॥
विषघ्नाद्यञ्च युञ्जीततत्साध्येष्वामयेषुच।
सुरसायाजयन्त्याश्चकन्यकाढकरूपयो॥
त्रिफलायामुनेर्भार्ग्यामुण्डयात्रिकटुसत्रयो।
भृङ्गराजश्चवन्हेश्चप्रत्यहंद्रवभावित॥
आर्द्रकस्यद्रवेणाथसप्तधाभावयेत्पुनः।
अगारेस्वेदयेदीषत्पर्पटीरससुत्तमम्॥
गुञ्जाष्टकंददीतास्यताम्बूलीपत्रसंयुतम्।
पिप्पलीरसकैश्चापिनिर्गुण्ड्याअनुपाययेत्॥
त्रिकण्टकस्यमूलानिशुण्ठीछित्वाविनिक्षिपेत्।
अजाक्षीरेसनीरार्द्धं यावत्क्षीरविपाचयेत्॥
तत्क्षीरपाययेद्रात्रौसकणभोजयेदपि।
कूष्माण्डवर्जयेच्चिचावृन्ताकंकर्कटीमपि॥
आरनालञ्चतैलञ्चमैथुनञ्चविवर्जयेत्।
मासत्रयन्तुसेवेतकासश्वासापनुत्तये॥
सहिंगुजीरकव्योपैःशमयेद्ग्रहणीरसः।
दशमूलाभसावातज्वरत्रिकटुनाकफ॥
ज्वरमधुकसारेणपञ्चकोलेनसर्वज।
यक्ष्माणमधुपिप्पल्यागोमूत्रेणगुर्दांकुरान्॥
शूलमेरण्डतैलेनपाण्डुशोथसगुग्गुलु।
कुष्ठानिभृङ्गभल्लातवाकुचीपञ्चनिम्बकैः॥
धत्तूरबीजसयोगान्महोन्मादविनाशिनी।
अपस्मारंनिहन्त्याशुव्योषनिम्बदलैसह॥
स्तनपयःशिशूनान्तुनितरांपर्पटीहिता।
पथ्यायाश्चूर्णसंयुक्ताव्याधीश्चान्यान्सुदुस्तरान्॥ सजातीफलशतोदयोजयेत्पर्पटीरसः
पित्तेजीर्णेशिरश्चास्यशीततोयेनसेचयेत्॥
नस्यनिष्ठीवनंधूमंतीक्ष्णंवमनरेचनं।

अन्नं रूक्षाल्पतीक्ष्णोष्णकटुतिक्तकषायकं ॥
चिरकालस्थितमद्यं योजयेत्कफरोगिणे ।

४ तोले पारा, १२ तोले गंधक, दोनोंकी कजलीकर भांगरेके रससे घोटे, फिर घीसे चुपडे हुए लोहपात्रमें बेरकीलकडी की आंचसे कजलीकी चाशनी कर केलेके पत्तेके नीचे गोबर बिछाय उसपर डाल देवे, और दूसरे पत्तेसे दबाकर पपडीके समान बना लेवे, यदि इस कजलीमें चौथा भाग लोहभस्म मिलादी जावे तो यही लोहपर्पटी बनजावे, और तांबेकी भस्म मिलानेमें यही ताम्रपर्पटी कहलाती है, इस पर्पटीमें चोथाई भाग सिंगियाविष मिलाके तुलसी, अरनी, घीगुवार, अडूसा, त्रिफला, अगस्तिया, भारंगी, गोरखमुंडा, त्रिकुटा, भांगरा, चीता, इनके काढे तथा रसमें पृथक्-पृथक् एक २ दिन भावना देवे, फिर ७ भावना अदरकके रसकी देवे, फिर किंचिन्मात्र अंगारों पर स्वेदन करके रखछोडे इसकी एक मासेकी मात्रा पानमें अथवा दश पीपलोंके साथ देवे, इसके पश्चात् निर्गुंडीका रस अथवा गोखरूकी जड और सोंठको बकरीके दूधमें आधा पानी मिलाकर औटावे, जब दूधमात्र रहजाय तब उसे छानकर पीपलका चूर्ण मिलाय रात्रिके समय पिलावे इस पर्पटीरसका सेवन कर्त्ता पेठा, इमली बैंगन, ककडी, कांजी, तेल और मैथुन करना त्याग देवे, तीन महीनेके सेवनसे श्वास, खांसी दूरहो, हींग, जीरा और त्रिकुटाके साथ सेवन करनेसे संग्रहणी दूर हो, दशमूलके काढेके साथ वातज्वर, त्रिकुटाके साथ कफ, मुलहटीके सारके साथ ज्वर, पंचकोलके काढेके साथ सब प्रकारके ज्वर, सहत और पीपलके साथ खांई, गोमूत्रके साथ बवासीर, अंडीके तेलके साथ शूल, गूगलके साथ पांडुशोथ, कूढ, भांगरा, भिलावा, बावची और पंजनिंब अर्थात् नीबके पंचांगके साथ कोढ, धतूरेके बीजोंके साथ उन्माद, त्रिकुटा और नीमके पत्तोंके साथ मृगीको दूरकरे, यह दूध पीने वाले बालकको अत्यन्त हितकारी है। हरडके चूर्णके साथ और व्याधियोंको दूर करता है, तथा जायफल और शीतल जलके साथ इस पर्पटीको देवे, जब यह रस जीर्ण होजावे तब शीतल जलसे रोगीके शिरको धोवे, नस्य, कुरला, धूम्रपान, तीक्ष्ण वमन, विरेचन, रूखा तीखा और थोडा तथा कडवा, चरपरा, और कसैला ऐसा भोजन, तथा बहुत दिनका रखा हुआ मद्य ये कफरोगीको देने चाहिये।

कल्पतरुरसः

निष्कमात्रं विषं दद्यान्मरिचं चाष्टनिष्ककम् ।
पलार्द्धं करहाचूर्णं निष्कषट्‌कं कुलिञ्जनम् ॥
जातीफलं पलार्द्धं च जातीकेशरकं तथा ।
शोपणं कर्षमात्रं तु चूर्णयेत्सर्वयत्नतः ॥
क्षौद्रेण च विमुक्तः स्यादिमं गुञ्जाचतुष्टयम् ।
कासश्वासक्षयकुष्ठं ग्रहणीवह्निमान्द्यनुत् ॥
पुष्टिवीर्यबलोत्साहं भजते कामिनीशतं ।
वातश्लेष्मभवान्रोगान्प्रमेहांश्चैव विंशतिं ॥
अनुपानविशेषेण निहन्ति विविधान्गदान् ।
रसः कल्पतरुर्नाम शंकरेण विनिर्मितः ॥

४ मासे विष, काली मिरच ८ टंक, अकरकरा दो तोले, कुलीजन ६ टंक, जायफल और जावित्री दो २ तोले, काली मिरच एक तोले, सबको एकत्र कर चूर्ण करे, फिर इसमेंसे ४ रत्ती रस सहतके साथ सेवन करे तो खांसी, श्वास, क्षय, कोढ, संग्रहणी, मन्दाग्नि, इनको दूर करे, पुष्टता, वीर्य, बल, और उत्साहको बढावे, सौ स्त्रियोंको भोगनेकी शक्ति हो, वात कफके रोग और बीस प्रकारके प्रमेहको दूर करे, तथा अनुपानके बलसे अनेक रोगोंको दूर करे।

ताम्रभैरवोरसः

विषखदिरसारञ्च करहाटकणं तथा ।
व्योषं ताम्रं शुद्धफेनसममात्रा वटीकृता ॥
दीयते श्वासकासेषु पीनसे ग्रहणीकफे ।
नाशयेन्नात्र सन्देहस्तिमिरञ्च यथा रविः ॥
ताम्रभैरव इत्येष ज्वराणाञ्च निकृन्तनः ।

सिंगियाविष, खैरसार, अकरकरा, सुहागा,

मोह, भ्रम, पीनस, शूल [illegible] [illegible] करे [illegible] [illegible], इस [illegible] श्वास, [illegible], पीनस, [illegible] और [illegible] देवे तो [illegible] [illegible], यह [illegible] सर्व रोगोंका नाशक है।

ताम्रपर्पटीरसः

मृतताम्र [illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] पाचयेत् ।
ढालयेद् [illegible] ॥
गुञ्जाद्वयं [illegible] ।
त्रिसप्ताहप्रयोगेन राजयक्ष्मविनाशनम् ॥
आर्द्रकस्वरसेनैव [illegible] ।
त्रिफलारससंयुक्तं सर्वपाण्डुविनाशनम् ॥
वातारितैलसंयुक्तं [illegible] निवारणम् ।
कुमारीरसयोगेन वातपित्तोपशान्तये ॥
बाकुचीरससंयुक्तं सर्वदद्रुविनाशनम् ।
त्रिफलामधुसंयुक्तं सर्वमेहनिवारणम् ॥
खदिरक्वाथपानेन कुष्ठाष्टादशनाशनम् ।
मंथानभैरवेणोक्ता [illegible] ॥

ताम्रभस्म, पारा, गन्धक, प्रत्येक २ तोले और अरहुनाग विष १ तोले, सबकी खरल में कज्जली कर घीके साथ लोहेके कलछे में कज्जली करे और आकके पत्तेपर इस पर्पटी रसको ढाल देवे, तो यह पर्पटी बने, इसको दो या तीन रत्ती नित्य पीपल और सहतके साथ २१ दिनतक खावे तो राजरोग (क्षयी) को दूर करे, अदरकके रसमें सन्निपातको दूर करे, त्रिफलाके रसमें सर्व प्रकार के पांडुरोग, अरंडीके तेलसे सब प्रकारसे शूल-घीगु-वारके रससे वातपित्तकी शान्ति, बावचीके रसमें सब प्रकारके दाद, त्रिफला और सहतके साथ सब प्रकारका प्रमेह, खैरके काढेके साथ १८ प्रकारके कोढोंको दूर करे, यह मथनभैरवकी कही ताम्र-पर्पटी है।

[illegible]

[illegible] ॥
[illegible] ।

[illegible], पारा, [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दूर करे।

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।

[illegible], [illegible] और [illegible] [illegible], [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] रत्ती [illegible] [illegible] प्रकार की खांसी को दूर करे।

रसोलौहेश्वरः [illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] नाशयेत्

इस खांसी में पीपल और सहत के साथ ४ रत्ती लोहेश्वर रस देवे, अथवा घी और पानी मिश्री के साथ देवे तो सर्व प्रकार की खांसी, श्वास, मन्दाग्नि और [illegible] खांसी को दूर करे।

स्वयमग्निरसोवाथभक्षितस्तद्दयं त्रयम् ।
पित्तकासारुचिश्वासक्षयपाण्डुविनाशयेत् ॥

अथवा स्वयमग्नि रस दो टंक सेवन करे तो पित्त, खांसी, अरुचि, श्वासक्षय, और पांडु रोग दूर होवे।

स्वर्णपर्पटीरसः

शुद्धसूतंभवेत्कर्षंगंधकंद्विगुणंतथा ।
भस्महाटकसूताशंत्रयखल्वेविमर्दयेत् ॥

कज्जलाभंलोहपात्रेकदल्याद्रावभावयेत।
ऊर्ध्वाधोगोमयंदत्वाहेमपर्पटिकारस.॥
कासक्षयंसकृच्छ्रंचमूत्रघातंतथाश्मरीम्।
सिद्धापर्पटिकाख्यातासर्वरोगविनाशिनी।
रसायिनीत्वियंश्रेष्ठाशिशूनाञ्चगदापहा।

शुद्ध पारा १ तोले, गन्धक दो तोले, सुवर्ण भस्म १ तोले, तीनों को खरल में डाल कजली करे, फिर लोहपात्र मे ताप कर केले के पत्ते पर ढाल देवे और दूसरा पत्ता ऊपर से ढक गोवर से दबा देवे तो यह स्वर्णपर्पटी रस खासी, क्षय, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, और पथरी को दूर करे, यह सर्व रोग नाशिनी सिद्ध पर्पटी है, रसायन और बालकों को हितकारी है।

भूतांकुशोरसः

शुद्धसूतस्यभागैकंद्विभागशुद्धगंधकम्।
भागत्रयंमृतंताम्रंमरीच पञ्चभागिकम्॥
मृताभ्रस्यचतुर्भाग भागमेकविषक्षिपेत्।
भूतांकुशस्यभागैकसर्वंचाम्लेनमर्दयेत्॥
यामंभूतांकुशोनाममापैकंवातकासनुत्।
अनुपानलिहेत्क्षौद्रैर्विभीतकफलत्वचः॥

शुद्ध पारा १ तोले, गन्धक दो तोले, ताम्र-भस्म ३ तोले, अभ्रक भस्म ४ तोले, काली मिरच ५ तोले, विष और भूताकुशरस प्रत्येक एक तोले, सबको मिला कर एक प्रहर नींबू के रस से खरल करे, फिर इस भूताकुश रस को १ १ माशे सेवन करने से वात की खासी दूर होवे, इसको सहत और बहेडे की छाल के साथ सेवन करना चाहिये।

बोलवद्धोरसः

रसभस्मंविषतुल्यगन्धकंद्विगुणमतम्।
बोलतालकबाल्हीककर्कोटीमाक्षिकंनिशा॥
कंटकारीयवक्षारलागलीक्षीरसैंधवै।
मधूकसारंसंचूर्ण्यसप्ताहंचार्द्रकद्रवै॥
छायायांभावयेत्पश्चात्सप्ताहचित्रकद्रवै.।
गुटिकाबदराकाराश्लेष्मकासापनुत्तये॥
भक्षयेद्बोलवद्धोयरसःसश्वासपाण्डुजित्।

पारे की भस्म १ तोले, गन्धक दो तोले, विष १ तोले, बोल, हरिताल, पाढ, ककोडा, सुवर्णमक्खी की भस्म, हलदी, कटेरी, जवाखार कलियारी का दूध, सैधानिमक, महुए का सार, प्रत्येक एक तोले लेकर सवको ७ दिन अदरक के रस में छाया मे घोटे, फिर ७ दिन चित्रक के रस में खरल कर झडिया के वेर के समान गोलियां बनावे और सेवन करे, तो कफ की खांसी दूर हो।

कासकर्त्तरीरसः

रसगंधकपिप्पल्योहरीतक्यक्षवासकम्।
यथोत्तरंगुणं चूर्णं वब्बूलक्वाथभावितम्॥
एकविंशतिवारेणचोषयित्वाविचूर्णयेत्।
भक्षयेन्मधुनाहन्तिकासवैकासकर्त्तरि॥

पारा, गन्धक, पीपल, हरड, बहेडा, अडूसा, प्रत्येक एक से दूसरे को दूना लेवे और सब को बवूल के काढे की इक्कीस भावना देकर सुखा लेवे और इसको सहत के साथ सेवन करे तो खासी दूर हो।

पारदादिचूर्ण

पारदगंधकशुद्धं मृतलोहञ्चटकणम्।
रास्नाविडगांत्रिफलादेवदारुकटुत्रयम्॥
अमृतापद्मकक्षौद्रविषतुल्यानिचूर्णयेत्।
त्रिगुञ्जाःसर्वकासघ्नोज्वरारोचकमेहनुत्॥

पारा, गन्धक, सार, सुहागा, रास्ना, वाय-विडग, त्रिफला, देवदारु, त्रिकुटा, गिलोय, पद्माख, सहत, और विष को समान लेकर ३ रत्ती सेवन करने से खासी, ज्वर, अरुचि, और प्रमेह दूर करे।

सोमनाथीताम्रं

शुल्वंसूतसमद्वयोरपिसमोगन्धस्तदर्द्धं.पुन।
स्तालश्चार्द्धं शिलायुतोविरचयेत्पिष्ठं तितत्क

ज्जलीं ॥ लिप्त्वाताम्रदलानिमार्तिकदृढोपात्रे निधायाथ । तत्पाच्यंसैकतयन्त्रकेद्विदिवसं शीतंस्वतोनिहरेत् ॥ तत्कासस्त्रसनाग्निमांद्यगुदजानेकार्तिपांडवामय । प्लीहोरःक्षतिरोधकोष्टमरुतोयुक्तःयाजयेद्योजितः ॥ वल्लद्वंद्व मितंकणामधुयुतंक्षाराद्र्रवारापिवा । युक्त्या सर्वे कफामयघ्नमचिराद्यत्सोमनाथाभिधम् ॥

पारा १ तोले, गन्धक दो तोले, हरिताल और मनसिल एक २ तोले सबको खरल मे डाल कजली करे, फिर उसको तांबे के कंटक वेधी पत्रों पर लेप कर मिट्टी के पात्र मे रख दो दिन वालुका यन्त्र में पचावे, स्वागशीतल होने पर निकाल कर रोगी को देवे तो खांसी; श्वास, मन्दाग्नि, बवासीर, पाण्डुरोग, प्लीहा, उरःक्षत, बद्धकोष्ठ, वादी, इनको दूर करे, ४ रत्ती पीपल और सहत के साथ अथवा खार और अदरख के रस के साथ देवे तो यह सोमनाथ ताम्र युक्ति से सब रोगो को दूर करे।

मंथानभैरवोरसः

मृतंसूतंमृतंताम्रं हिंगुपुष्करमूलकम् ।
सैंधवंगंधकंतालंकटुकंचूर्णयेत्समान् ॥
देवदालीपुनर्नवयोर्निगुंडीमेघनादयोः ।
तिक्तकोशातकीद्रावैर्दिनैकमर्दयेद् दृढम् ॥
माषमात्रं लिहेत्क्षौद्रैरसोमंथानभैरवः ।
कफरोगप्रशान्त्यर्थंनिंबक्वाथंपिवेदनु ॥

पारेकी भस्म, ताम्रभस्म, हींग, पुहकरमूल सेंधानिमक, गंधक, हरिताल, त्रिकुटा, इन सबको समान ले वंदालके रस, साठ, निगुंडी, चौलाई, कुटकी, तोरई, इनके रसमे एक एक दिन खरल करे और १ माशे को सहतके साथ खाय तो यह मथानभैरवरस कफको दूर करे, इसके ऊपर नींबका काढ़ा पीवे।

त्रिनेत्रोरसः

ताम्रभस्मारतीक्ष्णानांकांचनारत्वचोरसैः ।
मुनिजैर्वेतसाम्लेर्नादिनंमर्द्य सुपिण्डितं ॥
द्विगुञ्जं पित्तकासार्त्तोभक्षयेच्चत्रिनेत्रकम् ।

तावेकी भस्म, लोहभस्म, पीतलकी भस्म, कचनारके रससे, अगस्तिया और अमलवेंतके रस में खरल कर गोलिया बनावे, २ रत्ती पित्तकी खासीवाला भक्षण करे।

शिलातालोरसः

त्रिकटकरसैर्भाव्यंतालमेकंचतुःशिला । द्विनवासारसैःपिष्ट्वावालुकायन्त्रपाचितं ॥ द्वियामान्तेसमुद्धृत्यतत्तुल्यंकटुकत्रयं । निर्गुंडीमूलचूर्णञ्चव्योषतुल्यंविमिश्रयेत् ॥ शिलातालोरसोनाम्नामापैकंश्वासकासजित् ।

एक तोले हरिताल और ४ तोले मनसिल, दोनोंको गोखरूके रसकी भावना देकर एक दिन अडूसेके रसमे पीस दो प्रहर वालुकायत्रमे पचावे, फिर शीशीसे निकाल बराबरका त्रिकुटा मिलाय त्रिकुटाकी बराबर निगुंडीकी जडका चूर्ण मिलावे तो यह शिलातालरस एक माशे खानेसे श्वास और खांसीको दूर करता है।

तारेश्वरोरसः

रसपादंमृतंतारंशिलातालंचतुर्गुणं ।
वासागोक्षुरसाराभ्यांमर्दयेत्प्रहरद्वयम् ॥
द्वियामवालुकायंत्रेस्वेद्यमादायचूर्णयेत् ।
गुञ्जाद्वयनिहन्त्याशुनूनंकासंक्षतोद्भवं ॥
रसास्तारेश्वरोनाम्नाह्यनुपानंचकथ्यते ।
दाडिमत्रिफलात्र्यूषंत्रयाणांचसमंगुडम् ॥
चूर्णितंभक्षयेत्कर्षंसर्वकासापनुत्तये ।

पारा १ तोले, रूपेकी भस्म, ३ माशे, हरिताल और मनसिल, पारेसे चौगुने, सबको अडूसा गोखरू, और खेरसारके रससे दो प्रहर खरल करे, फिर दोप्रहर वालुकायत्रसे पचाकर चूर्ण करडाले, इसमेसे दो रत्ती खाय तो क्षईकी खांसी दूर हो इसपर अनार, त्रिफला, त्रिकुटा, और इन तीनो की वरावर गुड मिलाकर खानेसे सब प्रकारकी खांसी दूर हो।

सूर्य्यरसः

रसमेकद्विधागंधत्रिताप्यपचतालकम् ।
सर्णंशुद्धं विचूर्ण्याथचतुर्भागंमृताभ्रकम् ॥
वचाकुष्ठंहरिद्राग्निटंकणसैंधवविषं ।
सपाठंलांगलीव्योषमर्द्धंप्रत्येकभागकम् ॥
भावितंभृंगसारेणदिनैकतंचभक्षयेत् ।
माषंसूर्यरसोनामहिध्माश्वैश्वासकासजित् ॥

पारा १ तोले, गंधक दो तोले, सुवर्ण माक्षिक की भस्म, ३ तोले, अभ्रक भस्म, ४ तोले, हरिताल ५ तोले, सबको एकत्र कर खरल करे, फिर बच, कूठ, हल्दी, चीता, सुहागा सेंधानिमक विष, पाट, कलियारी, सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक एक २ तोले ले, सबको कूट पीस भागरेके रसकी एक दिन भावना देकर एक-एक मासेकी गोलियां बनावे, इसके खानेसे हिचकी, श्वास और खासी दूर होवे ।

कफकुंजरोरसः

रसगंधौशुक्तिमांसस्नुह्यर्कपयसःपलम् ।
पलंपलपंचलवणमेकोकृत्यप्रलेपयेत् ॥
आलोडयचार्कदुग्धेनपूरयेत्शखमध्यतः ।
पिप्पलीचविषवराचूर्णंकृत्वाप्रलेपयेत् ॥
प्रज्वालयेद्यामभात्रसूक्ष्मचूर्णन्तुकारयेत ।
कर्पूरनागपत्रेश्चदेयोमात्रार्द्ध गुञ्जया ॥
श्वासकासचहृद्रोगंकफपचविधतथा ।
वज्रवद्धतिरोगाश्चरसोयंकफकुञ्जर ॥

पारा, गधक, सीपका मास, और थूहरका दूध, प्रत्येक एक पल ले और पाचों नोंन, एक-एक पलके अनुमान ले सबको एकत्र कर घोटे, तथा आकके दूधमे घोटकर शंखके बीचमें भरदे फिर पीपर, विष और त्रिफलाका चूर्णकर उस शखको लहेस दे और फिर सपुटमे रख १ प्रहरकी अग्नि देवे, फिर उसको निकाल चूर्ण कर आध रत्ती रसकपूर और पानके साथ देवे तो श्वास, खासी हृदयरोग और पांच प्रकारकी खासी दूर हो ।

हेमगर्भपोटलीरसः

रसस्यभागाश्चत्वारस्तावन्तःकनकस्यच ।
तयोश्चपिष्टिकांकृत्वागन्धोद्वादशभागिकः ॥
कुर्य्यात्कज्जलिकांतेपुमुक्ताभागाश्चषोडशः ।
चतुर्विंशश्चशखस्यभागेकटंकणस्यच ॥
एकत्रमर्दयेत्सर्णंपक्वनिंबुकजैरसै ।
कृत्वातेषाततोगोलमूषासंपुटकेन्यसेत ॥
मुद्रांदत्वाततोहस्तमात्रे गर्तेचगोमये ।
पुटेद्गजपुटेनैवस्वांगशीतसमुद्धरेत् ॥
पिष्ट्वागुञ्जाचतुर्मानदद्याद्गव्याज्यसयुतम् ।
एकोनत्रिंषड्मानमरिचैःसहदीयते ॥
राजतेमृन्मयेपात्रे काचजेवाथलोहजे ।
लोकनाथसमपथ्यकुर्यात्प्रयतमानसः ॥
कासेश्वासेक्षयेवातेकफेग्रहणिकागदे ।
अतीसारेप्रयोक्तव्यापोटलीहेमगर्भिका ॥

पारा और गंधक, दोनों चार २ तोले ले, दोनोकी कजली कर १२ तोले गधक मिलावे फिर सबकी कजली कर १६ तोले मोती, २४ तोले शखकी भस्म, और एक तोले सुहागा ले सबको एकत्र कर नीबूके रससे खरल करे फिर उसका गोला बनाय मूषामे रख ऊपरसे मुद्रा करके हाथ भरके गडढेमे उसे रख गजपुटमे फूक देवे, स्वाग शीतल होनेपर निकाल ४ रत्तीके मात्रा गौके मक्खन मे २९ काली मिरचोके चूर्ण के साथ देवे, इसको सुवर्ण, काच, लोह, अथवा मिट्टीके पात्रमे रखे लोकनाथ रसके तुल्य पथ्य करावे तथा खांसी, श्वास, क्षय, वातकफ, संग्रहणी और अतीसार इन रोगो मे इस हेमगर्भ पोटलीको देना चाहिये ।

कासश्वासविधूननोरसः

रसभागोभवेदेकोगंधकाद्द्वौतथैवच ।
यवक्षारंत्रिभागंस्याद्रुचकंचचतुर्गुण ॥
मरिचपचभागस्यात्शुद्धसम्यक्विमर्दितः ।
कासपचविधहन्यात्श्वाससप्तविधंहरेत् ॥

पारा १ तोले, गधक दो तोले, जवाखार ३ तोले, संचरनिमक ४ तोले, और काली मिरच ५

तोले, सबको खरल कर गोलियां बनावे, इसके सेवन करनेसे पाच प्रकारकी खांसी और ७ प्रकार का श्वास दूर हो।

नागरसः

पारदंपलमानस्याद्गंधकद्विपलस्मृतम्।
गन्धकेनहतंनागसाद्र्द्धंद्विपलकस्मृतम्॥
अमृतद्विपलप्रोक्तंपिप्पलीद्विपलास्मृता।
मरिचद्विपलचोक्तंशंखभस्मपलंमतम्॥
आरण्योपलजभस्मपलमानंप्रयोजयेत्।
सर्वमेकत्रकृत्वातुसुखल्वेमर्द्दयेद्दिन॥
आर्द्रकस्यरसेनाथद्विगुञ्जंभक्षयेत्पुमान्।
शीतागसन्निपातंचवानरोगंजयेद्ध्रुवम्॥

पारा ४ तोले, गधक ८ तोले, और गधक करके मरा हुआ सीसा १० तोले विष ८ तोले, पीपल और काली मिरच आठ २ तोले शंखकी भस्म ४ तोले, आरने उपलों की राख ४ तोले, सब को एकत्र कर चार प्रहर खरल करे। और इसकी २ रत्ती मात्रा को अदरख के रस के साथ सेवन करे तो शीताग सन्निपात, बादी और खांसी आदि को दूर करे।

० कफकेतुरसः

आकल्लकंचसविषंसमुद्रफलसंयुतम्।
प्रत्येकसमभागचद्विगुणमरिचंततः॥
आर्द्रकस्यरसेनैवमर्द्दयित्वाप्रयत्नतः।
गुञ्जामात्रामिमाचैववटींकुर्य्याद्विचक्षण॥
भुक्तेयनाशयत्याशुकफरोगनसशयः।

अकरकरा, विष, समुद्रफल, इन सब को समान लेकर सबसे दूनी काली मिरच लेवे, और अदरख के रस से खरल कर एक-एक रत्ती की गोलियां बनावे, इस के सेवन से तत्काल कफका रोग दूर होवे।

० तथा

भर्जितटङ्कणक्षारपिप्पलीमरिचतथा।
आकल्लकंविषशुद्धं वराटीभस्मएवच॥
सर्वाणिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णंविधायच।
द्विगुञ्जमात्रकंदद्यात्कफकेतुरयंरसः॥
कासश्वासौशीतवातंनाशयेन्नात्रसंशयः।

भुना हुआ सुहागा, पीपल, काली मिरच, अकरकरा, विष, कौडी की भस्म, इन सब को समान भाग लेकर चूर्ण करे और दो रत्ती देवे तो यह कफकेतु रस खासी, श्वास और शीत-वात को दूर करे।

तथा

रसवलिरवितालान्पौष्करंहिंगुसिंधूद्भव।
कटुकिरजस्ततत्सर्वमेकत्रपिष्टं॥
वनरवसुरदालीतिक्तकोशातकीभिः।
तदनुचनतुभाव्याकुण्डलिनीरैः॥
कफगदकुलकेतु.स्याद्रसोमापमात्र'।
समधुरितिनिहन्तिप्रोत्कटंश्लेष्मरोगं॥
अनभवतिकषायोनिम्बजःपेयमस्मिन्।
पवनमशनमात्रंपथ्यमुष्णाम्बुसेव्यम्॥

पारा, गंधक, ताम्रभस्म, हरिताल की भस्म, पुहकर मूल, हींग, सैंधा निमक, और कुटकी सब का चूर्ण कर, चौलाई, बंदाल, कुटकी और तोरई की भावना देवे, इसकी १ माशे मात्रा को सहत के साथ चाटे तो उत्कट भी कफ रोग दूर हो, इसके ऊपर नींब का काढा पीवे और वात-कारी द्रव्य न खाय और गरम जल पिया करे।

पारदादिवटी.

पारदस्यपलचैवयशदंनागरंगके।
पृथक्पलमितप्रोक्तंत्रयाणाञ्चविशेषतः॥
अयंतुमृत्तिकापात्रेद्रावकुर्य्याद्यथाविधि।
सूतंचप्रक्षिपेत्तस्मिन्पुनर्भूम्यांतुप्रक्षिपेत्॥
खल्वेधृत्वामर्द्दयेत्तुकज्जलींकारयेद्बुधः।
शुद्धामृतपलमितमरिचस्यपलाष्टकम्॥
सूक्ष्मचूर्णं विधायाथवस्त्रपूतसमाचरेत्।
शिग्रुजस्यरसैर्मर्द्यं पुटानित्रीणिदापयेत्॥
आर्द्रकस्यरसेनैवात्रिपुटंतुपुनर्द्देत्।
कालायसदृशीकायावटिकाकफनाशिनी॥

कासश्वासौनिहन्त्याशुशीतवातंतथैवच ।
शूलरोगहरीप्रोक्तारसादिर्वटिकात्वियं ॥

पारा, जस्ते की भस्म, सीसे की भस्म, प्रत्येक ४ तोले, लेवे और मिट्टी के पात्र में प्रथम सीसे और जस्त को गलाय उस मे पारा मिला देवे, फिर उतार गंधक डाल खरल में कजली करे, इस कजली में ४ तोले शुद्ध विष मिलावे, और काली मिरच ३२ तोले मिला कर सब का बारीक चूर्ण कर कपरछन कर डाले, फिर सहजने के रस के तीन पुट देवे, और अदरख के रस के ३ पुट देकर मटर के समान गोलिया बना डाले, यह खांसी, श्वास, शीतवात और शूल रोग तथा कफ रोगों का नाश करे ।

कासश्वासरोगेवाजीकरणाधिकारोक्तो ।
वसंततिलकोरसोऽपियोजनीयः ॥

खासी और श्वास रोगो मे वाजीकरणाधिकार में जो वसंत तिलक रस कहा है वो देना चाहिये ।

कटकारीकषायेणपिप्पल्यामधुनासह ।
पचवक्रोरसोदेयःश्लेष्मकासापनुत्तये ॥

कटेरी के काढे मे पीपल और सहत मिला के इस के साथ पंचवक्र रस देवे तो कफ की खांसी दूर हो ।

हिक्काधिकार

हेममुक्तार्ककान्तानांभस्मवल्लमितवरम् ।
बीजपूररसक्षौद्रःसौवर्चलसमन्वितम् ॥
हन्तिहिक्काशतसत्यमेकमात्राप्रयोगतः ।
काकथापचहिक्कानांहरणेपुनरुच्यते ॥

सुवर्ण, मोती, ताम्र और कान्तलोह की भस्म ३ रत्ती को विजोरे के रस सहत और संचर नोन के साथ खाय तो एक ही मात्रा सौ हिचकियों को दूर करे, फिर पाच हिचकियो का दूर करना क्या बडी बात है ! यह बौद्ध सर्वस्व में लिखा है ।

दशमूलीकषायेणमधुनाचसमन्वितम् ।
कान्तायोभस्महिक्कानांपचानांपचतांनयेत् ॥

दशमूल के काढे और सहत में कान्तलोह की भस्म मिला कर देवे तो पांच प्रकार की हिचकी दूर हो यह वसतराज ग्रथ से लिखा है ।

मेघडंबररसःअन्नजायां

तंदुलीयद्रवेपिष्टंसूततुल्यंचगंधकम् ।
वज्रमूषागतचैवभूदरेभस्मतांनयेत् ॥
दशमूलकषायेणभावयेत्प्रहरद्वयम् ।
गुञ्जाद्वयंहरत्याशुहिक्कांश्वासज्वरकिल ॥
अनुपानेनदातव्योरसोऽयमेघडंबरः ।
नांगरपिप्पलीभार्गीपुष्करकर्कटीसटी ॥
शर्कराष्टगुणंचूर्णमनुपानेप्रकल्पयेत् ।

पारा और गंधक दोनों को बराबर ले चौंलाई के रस मे खरल करे, फिर वज्रमूषा मे रख भूधर यत्र में भस्म करे, फिर दशमूल के काढे की दो प्रहर भावना देकर दो रत्ती सेवन करे तो हिचकी, श्वास और ज्वर दूर होवे, इस मेघडंबर रस को अनुपान के साथ देवे तहा सोठ, पीपल, भारगी, पुहकरमल, काकडासिगी, कचूरको समान लेवे और अठगुनी मिश्री मिलाय कर देवे यही अनुपान है ।

पाटलाफलतोयेनक्षौद्रेणचसमन्वितम् ।
हेमभस्मनिहन्त्येवहिक्काःपंचापिदुस्तराः ॥

पाढल के फल के जल मे सहत मिलाय इस के साथ सुवर्ण भस्म को सेवन करने से पांच प्रकार की हिचकी दूर होवे ।

कटुकागैरिकाभ्यांचमुक्ताभस्मतथैवच ।
बीजपूरस्यतोयेनताम्रंतद्वत्समाक्षिकम् ॥

कटुकी, गेरू, मोतीकी भस्म और तावेकी भस्मको विजौरेके रसके साथ सेवन करनेसे हिचकी दूर हो ।

मधुनामाक्षिकस्यापिभस्महिक्कांविनाशयेत् ।

सुवर्णमाक्षिककी भस्म सहतमे चाटने से हिचकी दूर होवे ।

शंखचूलोरसः

रसाभ्रहेमभस्मानिवैक्रान्तंसर्वतुल्यकम् ।
सर्वैःपचगुणंशखचूर्णंशुष्कंविमर्दयेत् ॥
लेहयेन्मधुनामाषचतुष्कंसानुपानकम् ।
हिक्कापंचविधंहन्तिमुमूर्षोरपितत्क्षणात् ॥

पारा, अभ्रक, सुवर्णभस्म, और वैक्रान्त भस्मको बराबर लेकर सबसे पचगुना शखचूर्ण लेवे, सबको पीस ४ माशे सहतके साथ खाय और अनुपानमे रहे तो पाच प्रकारको हिचकी दूर होवे ।

पिप्पल्याद्यं लोहम्,

पिप्पल्यामलकीद्राक्षाकोलास्थिमधुशर्करा ।
विडंगपुष्करैर्युक्तोलेहोहन्तिसुदर्जयम् ॥
छर्दिहिक्कातथातृष्णांत्रिरात्रेणनशंसयः ।

पीपल, आवले, दाख, बेरकीगुठली, सहत, मिश्री, वायविडङ्ग पुहकरमूल, इनके साथ लोह भस्म सेवन करे तो दुर्जयवमन हिचकी और तृष्णा इनको तीनही रात्रिमे दूर करे ।

यमलाख्यायाम्

रसस्यतुर्यभागेनताम्रचूर्णंप्रकल्पयेत् ।
जबीरोत्थैर्द्रवैर्मर्द्य दिनान्तेतत्समुद्धरेत् ॥
बध्वावस्त्रे ष्टिकायत्रे तुल्यगधेनपाचयेत् ।
एवान्तुषड्गुणकार्य्यंततःपिष्टसमुद्धरेत् ॥
पाषाणभेदीमत्स्याक्षीद्रवैःपिष्टन्तुमर्दयेत् ।
तद्गोलंलेपयेद्बाह्ये कल्केपाषाणभेदजे ॥
मत्स्याक्षाचघनंलेपदत्वापातनयंत्रके ।
स्वेदयेद्यामममात्रन्तुरसोऽययोगवाहिकः ॥
गुञ्जाद्वयप्रदातव्यवैश्वर्य श्वासहिध्मजित् ।
दशमूलंपिबेच्चानुसकुलत्थकषायकम् ॥

पारा ४ तोले, तांबेकी भस्म १ तोले, दानो को जंभीरीके रसमे १ दिन खरल करे, और सायकालको निकाल कपडेमे बाध इष्टिकायन्त्र (गौरीयंत्र) मे षड्गुण गंधक जारण करे, फिर पाषाणभेद, मछेछी, इनके रसमे खरलकर पिट्ठी करे फिर उसका गोला बनाय उसको पाषाणभेदके कल्कसे और मछेछी इनका गाढा लेप देकर पादनयंत्रमे १ प्रहर स्वेदन करे तो यह योगवाहक बने । इसमेसे दो रत्ती देवे ऊपरसे कुलथी डालकर दशमूलका काढा पिलावे तो स्वरभंग, श्वास और हिचकी दूर होवे ।

अथ श्वासाधिकारः

श्वासारिरसः

पारदोवत्सनागश्चगंधकटंकणंकणा ।
समांशद्विगुणंशुंठीमरिचंपंचभागिकम् ॥
सूक्ष्मचूर्णमिदंकृत्वावल्लमात्रंप्रदापयेत् ।
श्वासारिसंज्ञिकोह्येषसद्यःश्वासहरःपरः ॥

पारा, वत्सनाग विष, गन्धक, सुहागा और पीपल सबको समान भाग लें और सबसे दूनी सोंठ और पाच भाग काली मिरच लेवे सबका बारीक चूर्णकर ३ रत्ती देवे तो यह श्वासारिरस तत्काल श्वासको हरण करे ।

उदयभास्कररसः

धान्याभ्र सूतकगधंश्वेतापामार्गजैरसै ।
तुल्यांशंमर्दयेच्चाह्न यंत्रेपातनकेपचेत् ॥
ऊर्ध्वलग्नन्तुतद्ग्राह्यं रसोह्युदयभास्कर ।
श्वासंपंचविधहन्तिद्विगुंजमनुपानतः ॥

धान्याभ्रक, पारा, गंधक इनको सफेद औंगा के रस मे एक दिन खरल कर फिर पातनायंत्र में पचावे, फिर ऊपर के पात्र मे लगी हुई भस्म को निकाल लेवे, यह उदयभास्कर रस पाच प्रकार की श्वास को दूर करे, इसको दो रत्ती पथ्यके साथ देवे ऊपरमे ४ माशे कुटकी का चूर्ण सहतके साथ चाटे ।

नीलकंठरसः

सूतशुल्वंसलोहंवलिममृतयुतत्रित्रिकंरेणुकाऽब्द । गडीरंकेशराग्निद्विगुणगुडयुतंमर्दयित्वा समस्तं ॥ कुर्य्यात्कोलास्थिमात्रान्सुरुचिर वटकान्भक्षयेत्प्राक्दिनादौ । पथ्याशीसर्वरोगानपहरतितरांनीलकंठाभिधानः ॥

शुद्धपारा, ताम्रभस्म, लोहभस्म, गंधक, विष, त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिसुगंधपित्तपापरा, नागरमोथा, जमीकन्द, नागकेशर, और चीता सबको समान लेवे और सबसे दुगना गुड मिलाकर बेरकी बराबर गोलियां बनावे, नित्य प्रातःकाल भक्षण करे और पथ्यसे रहे तो यह नीलकंठरस श्वासादि सर्व रोगोका नाश करे ।

अपरनीलकंठोरसः

सूतकंगंधकलोहविषंचित्रकपत्रकम् ।
विडङ्गरेणुकंमुस्तमेलाकेशरग्रन्थिकं ।
फलत्रयत्रिकटुकंशुल्वभस्मतथैवच ।
एतानिसमभागानिद्विगुणंगुडमुच्यते ॥
संमर्द्य वटिकाकृत्वाभक्षयेच्चणकोन्मिता ।
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे ॥
प्रसूतौग्रहणीमान्द्ये शूलेपाण्डवामयेतथा ।
मूत्रकृच्छ्रे मूढगर्भेवातरोगेचदारुणे ॥
नीलकंठोरसोनामब्रह्मणानिर्मितःपुरा ।

पारा, गन्धक, लोहभस्म, चीतेकीछाल, पत्रज वायविडङ्ग, रेणुका, नागरमोथा, इलायची, केशर पीपलामूल, त्रिफला, त्रिकुटा और तांबेकी भस्म सबको समान भाग लेवे और सबसे दूना गुड मिलाकर चनेके प्रमाण गोलिया बनावे, इनके सेवनसे खांसी, श्वास, क्षय, गोला, प्रमेह, विषमज्वर, प्रसूतरोग, संग्रहणी, मंदाग्नि, पाडुरोग, मूढगर्भ और घोर वादीके रोगोको यह नीलकंठरस दूर करे ।

श्वासगजकेशरीरसः

तारताम्ररसपिष्टिकांशिलागंधतालसमभागिकंरसैः । आढरूषसुरसार्द्रसंभवैर्मर्दयेत्प्रकुरुगोलकततः ॥ मृत्स्नयाचपरिवेष्टयगोलकयामयुग्ममथभूधरेपचेत् । गोलकेनकुरुतरसमंततश्चाढरूषकटुकैश्चभावयेत् ॥ श्वासकासकरिकेशरीरसोवल्लमस्यपरिसेवयेद्बुध ।

रूपेकी भस्म, तावेकी भस्म, पारा, मनसिल, गन्धक, और हरिताल प्रत्येक समान भाग लेवे, इन सबको अडूसा, तुलसी और अदरखके रससे खरलकर गोला बनाकर उसपर कपरमिट्टी कर दो प्रहर भूधरयन्त्रमे पचावे स्वागशीतल होनेपर निकालकर फिर अडूसा और त्रिकुटाके काढेसे खरल करे तो श्वास और खासीको दूर करे, इसकी ३ रत्तीकी मात्रा है ।

घोडाचोलीरसः

पारदटंकणगन्धविषंव्योषफलत्रयम् ।
तालकञ्चसमंसर्वंजैपालचापितत्समम् ॥
मर्दयेद्भृंगनीरेणभावनातुत्रिसप्तधा ।
गुंजामात्रांवटींकृत्वाछायायांशोषयेद्बुधः ॥
शृंगवेररसैःसार्द्धं वटीमेकांप्रयोजयेत् ।
उष्णेनवारिणाशूलेकासेश्वासेचयक्ष्मणि ॥
घोडाचोलीतिविख्यातानाम्नानागार्जुनोदिता । मधुनावलितपलितजयेत् । सौभाजनरसगोघृताभ्याजठरशूलजयेत् । दध्नाअजीर्णशतपत्ररसेनशीतज्वर ॥ पुनर्नवारसेनपाण्डु तिलपर्णीरसेन । नेत्रांजनेननेत्ररोगान तदुलोदकेनविष । जीरशर्करयाज्वरव हुदिनसेवनेनसुभगोभवेत् । वचादेवदारु कुष्ठैरस्थिगतवात । मस्तककेशान्दूरीकृत्य छित्वानिम्बूनीरेणमर्दयेत् । दतनिर्मूकत्व भवतिगोमूत्रेणपूगलग्नव्यथाहरेत् । आर्द्रकरसेनविरेचनंभवेत् । जातीफलेनार्शसां नाश । पुत्रजीवरसेनवध्यायाःपुत्रोभवेत् शिरीषरसेनसर्पविषनाशः । वचायवानीरसेनकटिवातं । आढरूषकरसेनश्वासकासौ॥

पारा, सुहागा, गन्धक, विष, सोंठ, मिरच, पीपल हरड, बहेडा, आवला और हरिताल सबको

बराबर ले और सबकी बराबर शुद्ध जमालगोटा लेवे, सबको भागरे के रस को २१ भावना देवे, फिर एक एक रत्ती की गोलिया बना कर छाया मे सुखा लेवे, और एक गोली अदरख के रस के साथ देवे तो श्वास, खासी शूल और खई इन मे गरम जल के साथ देवे यह घोडाचोली विख्यात नागार्जुन की कही है, सहत के साथ खाने से बली पलित को दूर करे, सहजने की जड़ के रस मे गो का घृत मिला कर। लेवे तो उदर रोगो को दूर करे दही से अजीर्ण, कमल के रस से शीतज्वर, सांठ के रस से पांडु रोग, तिलवन के रस के साथ नेत्रों मे आनने से नेत्र रोग, चावल के धोवन के साथ विष, जीरे और मिश्री के साथ ज्वर, बहुत दिन सेवन से सुभग होवे, गोमूत्र के साथ लेने से सुपारी लगने की व्यथा को दूर करे, वच देवदारु और कूट के साथ हड्डी की बादी को दूर करे, सन्निपात वाले रोगी का मस्तक मूंड कर छुरे से छील के इस गोली नींबू के रस में घिस उस छिले हुए स्थान पर मले तो भिची हुई दाती खुल जावे, अदरख के रस के साथ देने से दस्त करावे, जायफल के साथ बवासीर को दूर करे, जीवापोता के रस से बंध्या के पुत्र होवे, सिरस के रस से बध्या के पुत्र हो, वच और अजवायन के रस से कमर की बादी दूर हो, अडूसे के रससे श्वास और खासी दूर हो।

अमृतार्णवोरसः

पारदगंधकंशुद्धंमृतलोहंचटंकणम्।
रास्नाविडंगत्रिफलादेवदारूकटुत्रयम्॥
अमृतापद्मकक्षौद्रंविषतुल्यंसुचूर्णितं।
द्विगुंजश्वासकासार्त्त.सेवयेदमृतार्णवं॥

पारा, गन्धक, लोहभस्म, सुहागा, रास्ना, वायविडंग, त्रिफला, देवदारु, त्रिकुटा, गिलोय, पद्माख, सहत और विष सबको समान लेकर पीसे, यह २ रत्ती श्वास और खासी को दूर करे।

ताम्रेश्वरोरसः

पलानिपञ्चशुद्धानिताम्रपत्राणिबुद्धिमान्।
गृहीत्वायोजयेत्तत्रतदर्द्धंशुद्धसूतकं॥
मर्द्दयेन्निंबुकद्रावैस्त्रिदिनान्युभयमिपरं।
ताम्रपत्रैःसमशुद्धंगंधकंतत्रनिक्षिपेत्॥
मर्द्दयित्वाघटीयुग्मकाचकूप्यांचनिक्षिपेत्।
यामानष्टौपचेदग्नौवालुकायंत्रमध्यितं॥
एवंताम्रेश्वरोहन्यात्श्वासादीनखिलानगदान्। धातुपुष्टिकरश्चैवसूतिकारोगनाशनः॥

फटक वेधी ताबे के शुद्ध पत्र ५ पल, और शुद्ध पारा २॥ पल, दोनो को ३ दिन नींबू के रस से खरल करे फिर ताबे के पत्रों के समान शुद्ध गन्धक डाल कर दो घडी खरल करे फिर काच की शीशी में भर कर ८ प्रहर बालुका यंत्र मे पचावे यह ताम्रेश्वर रस श्वासादि सर्व रोगों को दूर करे, धातु को पुष्ट करे, और प्रसूत के रोगों का नाश करे।

निधायहृदिधूर्जटिंनिखिलविघ्नशात्यैमुदा।
विधायवरहिंगुलैःसविधिभस्मकान्तायसं॥
विनिर्मितमनेनचेत्भजतिएरंडखाद्यंसदा।
कदापिनचबाध्यतेश्वसनरोगयोगैरिह॥

सम्पूर्ण विघ्नो के शान्ति के अर्थ हृदय में श्रीसदाशिव का ध्यान कर विधि पूर्वक हिंगुल से कान्त लोह की भस्म करे, इस भस्म के साथ एंड खाद्य लोह का सेवन करे तो उस मनुष्य को श्वास रोग कभी बाधा न करे।

कालाग्निरुद्रोरसः

वज्रसूतार्कस्वर्णारस्तारतीक्ष्णमयंक्रमात्।
भागवृद्धयामृतसर्वंसहसाचित्रकद्रवैः।
मर्द्दयेन्मातुलुंगाम्लैर्जंबीरस्यदिनत्रयम्।
शिग्रुमूलजलैःकाथोकण्याकाथदिनत्रयम्॥
आर्द्रकस्यदिनैःसप्तदिवसेभावितततः।
शोषितंसूक्ष्मचूर्णन्तुपादांशंटकणंतथा॥
टकणसवत्सनागचूर्णीकृत्वाविमिश्रितं।
त्रिकटुत्रिफलाचव्हिजातुर्पातकसैंधव॥

सौवर्चलंधूमसारचूर्णमेतत्समंसमं ।
कृत्वाशमसुभागैकतत्सर्वंचाद्र करसैः ।
शिग्रुजैर्मातुलुंगोत्थैर्लोलयित्वावटीकृतम ।
रसःकालाग्निरुद्रोयत्रिगुजंखादयेत्सदा ॥
अग्निदीप्तिकरहिक्काश्वासंसर्वकुलातकः ।
स्थूलानाकुरुतेकार्श्यकृशानास्थौल्यकारकम् ॥
अनुपानविशेषैस्तुततोरोगेपुयोजयेत् ।
साध्यासाध्यंजयत्याशुमण्डलान्नात्रसशयः ॥

हीरा, पारा, तांबा, सुवर्ण, लोहा, चादी, और खेडीलोह इन सबकी भस्म क्रम से बढती लेवे, और विष एक भाग ले कर सब को चीते, बिजौरे और जंभीरी के रस से तीन २ दिन खरल करे, तथा सहजने, पीपल, त्रिकुटा, त्रिफला इनका तीन २ दिन पुट देवे, फिर ३ दिन अदरख के रस की भावना दे कर सुखा लेवे फिर चतुर्थांश सुहागा मिलाय इतना ही बच्छनाग विष मिला कर चूर्ण करे, फिर त्रिफला, त्रिकुटा, चीता, चातुर्जात, सेधा निमक, संचर निमक, और कूकुआ समान लेकर अदरख सहँजने और बिजारे के रस से खरल कर तीन २ रत्ती की गोलियां बनावे, इस कालाग्नि रुद्र रस की एक गोली नित्य सेवन करे तो अग्नि दीपन करे, खांसी और श्वास को दूर करे, स्थूल को कृश और कृश को स्थूल करे, तथा अनुपान विशेष करके समस्त रोगो मे योजना करे, १ मडल सेवन करने से साध्यासाध्य रोग दूर हो ।

मुष्टियोग

भृष्टंटकणरक्तिकापञ्चप्रतप्तसीहुण्डाम्बुदशदे।
कुट्टिततज्जातरसमासकपंचएकीकृत्यातुर ॥
पुरुपंपाययेत्श्वासोपशमोभवतिशिवोनभू-
तोऽयम् ॥

भुना सुहागा ५ रत्ती, गरम सेहुड के डंडे में मिलाय पत्थर पर पीस के रस निचोड ले, और श्वास रोगी को पिलावे तो श्वास दूर हो यह शिव का अनुभूत है ।

भैरवरसः

पिप्पलीमरिचंचैवटकणदरदतथा ।
शुद्धमन.शिलागन्धहरितालंतथैवच ॥
विशुद्ध पारदप्रोक्त तथाशुद्ध विषस्मृत ।
रौप्यभस्मचाभ्रकंचपलमानंपृथक्पृथक् ॥
चूर्णसूक्ष्मविधायाथभावयेत्तुरसै पुनः ॥
कदलीमूलकचित्र धत्तरस्यचमूलकम् ।
पृथक्पृथक्पलमितकुट्टयित्वाजलेक्षिपेत् ॥
षोडशांशेकाथयित्वावस्त्रपूतंसमाचरेत् ।
खल्लेक्षित्वाभावयेत्तुकुर्यान्मुद्गनिभावटीं ।
भैरवाख्यावटीख्यातारसशंकरसज्ञिता ॥
कासश्वासौनिहन्त्येषासर्वव्याधिविनाशिनी

पीपल, काली मिरच, सुहागा, शिंगरफ, मनसिल, गन्धक, हरिताल और शुद्धपारा, विष और रूपरस, और अभ्रक प्रत्येक चार २ तोला ले सबका बारीक चूर्ण कर जलमे डाल देवे, और षोडशावशेष काढा वनाय कपडेमे छान खरलमें डाल घोटे जब गाढा होजाय तब मूंगके समान गोलिया बनावे, यह भैरवाख्यवटी श्वास, खासी, और सर्व रोगोको दूर करे ।

कालेश्वरोरसः

वगलोहतथाताम्रमभ्रकपारदमतम् ।
गन्धकताप्यदरदौदिव्यंजातीफलंतथा ॥
सूक्ष्मैलादालचिनीचकेशरविषकस्मृत ।
धूर्तबीजचजैपालंटकणचसमसम ॥
सर्वेभ्यस्त्रिगुणस्यामक्षिप्त्वाचूर्णीकृतभिषक् ।
वृषापामार्गनिगुडीभंगाभृगरसेनच ॥
मर्दयेद्दिनमेकैकरस कालेश्वरोभवेत् ।
एकगुंजद्विगुजावाबलज्ञात्वाप्रयोजयेत् ॥
कासश्वासनिहन्त्याशुकफरोगचदारुण ।

वग, सार, तामेश्वर, अभ्रक, चन्द्रोदय, गधक, सुवर्णमाक्षिक भस्म, हींगलू, लौंग, जायफल, छोटी इलायची, दालचीनी, केशर, विष, धतूरेके बीज, जमालगोटा और सुहागा सबको समान भाग लेवे, और सबसे तिगनी काली मिरच मिलावे,

सबका चूर्णकर अडूसा, ओंगा, निर्गुंडी, भंग और भागरा प्रत्येकके रसमें एक २ दिन खरल करे, तो यह कालेश्वररस बने, एक या दो रत्ती बलाबल देखकर देनेसे खांसी, श्वास और दारुण कफके रोगोको दूर करे ।

शुल्वतालेश्वरः

शुद्धं ताम्रं दशपलंचतुर्थांशंतुपारदम् ।
जंबीरनीरैःसंमर्द्य यावदेकत्रमेलित ॥
शुद्धतालपलंपश्चात्किंचित्तद्देयन्तुगन्धकम् ॥
मृद्भाण्डेसंनिरुध्यैवअग्निसञ्ज्वालयेदधः ।
दशयामन्तुमन्दाग्निंपश्चादुत्तारयेत्तुतं ।
स्वांगशीतलसंग्राह्यं देयंगुञ्जाद्वयंमृतं ॥
तांबूलीदलसंयुक्तं कासेश्वासेज्वरेपुच ।
पीनसेस्वरभेदेचमण्डलेरक्तसंभवे ॥
शूलंचाष्टविधंहंतिकफक्षयसमुद्भवम् ।
कृमिपाण्डवामयंप्लीहज्वरेषुविषमेषुच ॥
एकाहिकंद्व्याहिकञ्चत्र्याहिकंचचतुर्थकम् ।
शुल्वतालेश्वरोह्येषरसःपरमदुर्लभः ॥

शुद्ध कंटकभेदी तांबेके पत्र आधसेरसे आधपाव शुद्ध पारा डाल दोनोंको मिलाकर जवीरीके रसमे तबतक घोटे जबतक कि पारा पत्रोंपर न चढाया जाय, फिर पावभर गधक डालके मिट्टीके बरतनमे बन्द कर चूल्हेपर चढाय दश प्रहरकी मंदाग्नि देवे, फिर उतारले स्वांगशीतल होनेपर दो रत्ती पानमें रखकर खाय तो श्वास, खांसीज्वर, पीनस, स्वरभंग, रुधिरके चकते, आठ प्रकारका शूल, खई, कफ, कृमिरोग, पाण्डुरोग, प्लीहा, ज्वर, विषमज्वर और इकतरा आदि ज्वरोको यह शुल्वतालेश्वर रस दूर करे ।

महोदधिरसः

सूतकगन्धकंलोहंविषंचापिवराटकम् ।
ताम्रकवंगभस्माथअभ्रकञ्चसमांशकम् ॥
त्रिकटुपत्रकंमुस्तविडगंनागकेशरम् ।
रेणुकांपिल्लकंचैवपिप्पलीमूलमेवच ॥
एषाञ्चद्विगुणाभागंमर्दयित्वाप्रयत्नतः ।
भावनातत्रदातव्याजलपिप्पलिकारसैः ॥
मात्राचणकमानञ्चवटिकेयंप्रकीर्त्तिता ।
श्वासंहन्तितथाकासंअर्शांसिचभगंदरम् ।
हृच्छूलंपार्श्वशूलञ्चकर्णरोगकपालिकम् ॥
हरेत्सग्रहणीरोगानष्टौचजठराणिच ।
प्रमेहान्विंशतिञ्चैवअश्मरींचचतुर्विधं ॥
नचान्नपानेपरिहारमस्मिनशीतवाताध्वनिमैथुनेच ॥ यथेष्टचेष्टाभिरतप्रयोगैःनरोभवेत् कांचनराशिगौरः ॥

पारा, गन्धक, लोहभस्म, विष, कौडीकी भस्म, वगभस्म और अभ्रक सबको समान भाग ले और त्रिकुटा, पत्रज, नागरमोथा, वायविडंग, नागकेशर, रेणुका, कचीला, और पीपलामूल प्रत्येक पूर्व औषधियोंसे दूनी लेवे, और पीसकर जलपिप्पलीके रसकी भावना देवे और चनेके प्रमाण गोलियां बनावे, यह गोली श्वास, खांसी, बवासीर, भंगदर, हृदयका शूल, पसवाडेका शूल, कर्णरोग, कपालिका, सग्रहणी, आठ प्रकारका जठर, वीस प्रकारका प्रमेह, चार प्रकारकी पथरी इन सबको दूर करे, इसपर यथेष्ट आहार विहार करना चाहिये, यह देहको सुवर्ण राशिके तुल्य करे ।

आनन्दभैरवोरसः

पारदगन्धकश्चैवभृंगराजेनमर्दयेत् ।
हिंगुलंचविषव्योषटंकणमगधासमं ॥
मातुलुंगरसैमर्द्य रसमानंदभैरवम् ।
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेग्रहणीसन्निपातके ॥
अपस्मारेमहाघोरेशस्तमानंदभैरवम् ।

पारा और गन्धक दोनोंको भागरेके रससे खरल करे, फिर इसमें हींगलू, विष, सोठ, मिरच, पीपल, और सुहागा मिलाकर बिजौरके रससे घोट कर गोलियां बनावे, यह आन्दभैरवरस, खांसी, श्वास, क्षय, गुल्म, संग्रहणी, सन्निपात और मृगी इन सब रोगोको दूर करे ।

रसेन्द्रवटी.

कर्षशुद्धं रसेन्द्रस्यगन्धकस्याभ्रकस्यच ।
ताम्रस्यहरितालस्यलोहस्यचविषस्यच ॥
मरिचस्यचसर्वेषांश्लक्ष्णचूर्णंपृथक्पृथक् ।
सालौल्वखण्डकर्णंश्चगिुंडीकाकमाचिका ॥
केशराजस्यभृंगस्यस्वरसेनविभावितः ।
कलायपरिमाणञ्चवटिकांकारयेद्भिषक् ॥
कृत्वादौशिवमभ्यर्च्यद्विजातीन्परितोष्यच ।
जीर्णेतेभक्षयेत्पश्चात्क्षीरमांसरसासन ॥
अपिवैद्यशतैस्त्यक्तमम्लपित्तनियच्छति ।
कासपञ्चविधचैवश्वासंहन्तिसुदुर्जयं ॥

पारा, गन्धक, अभ्रक, ताम्र, हरिताल, लोह, विष, और काली मिरच, प्रत्येक एक तोला लेवे, और सबको पीस साल औल्वना कंद, रतालू, निगुंडी, मकोय, भांगरा और केसुरिया इनके स्वरसकी भावना देकर मटरके बराबर गोलिया बनावे फिर शिव और ब्राह्मणका पूजन कर भोजन जीर्ण होनेके पश्चात् देवे । ऊपरसे दूध और मांसरस सेवन करे तो सौ वैद्योकरके त्याग हुआ अम्लपित्त और पांच प्रकारकी खासी तथा दुर्जय श्वास को दूर करे ।

पारदादिरसः

सूतःषोडशतत्समोदिनकरस्तस्यार्द्धभागोबलिः । सिंधुस्तत्यसम.सुसूक्ष्ममृदित.षट्पिप्पलीचूर्णितः ॥ जबीरस्वरसेनमर्दितमिदतप्तसुपक्वं भवेत् । कासश्वासशूलगुल्मजठरपाण्डुप्लीहंनाशयेत् ॥

पारा और शुद्ध तावे के कटक वेधी पत्र प्रत्येक १६ तोले, गन्धक, सैंधा निमक प्रत्येक ८ तोले, और पीपल ६ तोले सब का चूर्ण कर जंभीरी के रस से खरल कर चूल्हे पर चढाय १२ प्रहर की अग्नि देवे तो यह खासी श्वास, शूल, गोला, उदर पाडु रोगो का और तिल्ली को नाशक पारदादि रस बने ।

साधारणवटक

साधारणन्तुवटकवक्ष्यामिश्रृणुतत्वतः ।
पारदगंधकचैवपलमेकंपृथक्पृथक् ॥
पलत्रयत्रिकटुकवगमेकपलंक्षिपेत् ।
सर्वमेकत्रसंयोज्यदिनानित्रीणिमर्दयेत् ॥
अक्षप्रमाणवटकंछायाशुष्कंतु कारयेत् ।
नित्यमेकन्तुवटकदिंनानित्रिंशदेवच ॥
श्वासकासज्वरहरमग्निमांद्यारुचिप्रणुत् ।

पारा और गन्धक प्रत्येक एक पल, त्रिकुटा ३ पल, बग भस्म १ पल, सबको पीस ३ दिन अदरख के रस से खरल कर बहेडे की बराबर गोलियां बनाय नित्य एक गोली सेवन करे तो ३० दिन मे श्वास, खांसी, ज्वर, मदाग्नि और अरुचि इनको दूर करे ।

सप्तोत्तरावटी

रसभागोभवेदेकोगधकोद्विगुणोमतः ।
त्रिभागापिप्पलीग्राह्याचतुभागाहरीतकी ॥
विभीतःपचभागस्तुवासाषड्गुणितंभवेत् ।
भार्ङ्गीसप्तगुणाग्राह्यासर्वचूर्णप्रकल्पयेत् ॥
बब्बूलक्वाथमादायभावयेदेकविंशति ।
विभीतकप्रमाणेनमधुनागुलिकांकिरेत् ॥
एकैकाभक्षयेत्प्रातःश्वासकासनिवृत्तये ।
निर्गुंडीघृतसयुक्त भक्तमादौप्रयोजयेत् ॥

पारा १ तोले, गन्धक दो तोले, पीपल ३ तोले, हरड ४ तोले, बहेड़ा, ५ तोले, अडूसा ६ तोले, भारगी ७ तोले, सबका चूर्ण कर बबूलके काढे की २१ भावना दे, बहेड़े की बराबर गोलिया बनावे, और एक गोली प्रातःकाल सहत के साथ खाय तो श्वास, और खासी दूर होवे, प्रथम निर्गुंडी का रस, घी और भात भोजन कर लेना चाहिये ।

जयागुटिका

सूतकंगधकलोहविषंवत्सकमेवच ।
विडगकेशरमुस्तमेलाग्र थिककेशरम् ॥

त्रिकटुत्रिफलाचित्रं शूल्वजैपालवीजकम् ।
एतानिसमभागानिद्विगुणोगुडउच्यते ॥
तिंतिडीवीजमानंचप्रातःकालेतुखादयेत् ।
श्वासकासक्षयंगुल्मंप्रमेहंविषमज्वर ॥
अजीर्णग्रहणीरोगं शूलपाण्ड्वामयतथा ।
अपानेहृदयेशूलेवातरोगेगलग्रहे ॥
अरुचौचातिसारेचसूतिकाविषनाशिनी ।
जयाख्यानिर्मिताह्येषातत्त्वणात्रिदिवेश्वरी

पारा, गन्धक, लोहभस्म, वच्छनागविष, वायविडंग, केशर, नागरमोथा, इलायची, पिपलामूल, नागकेशर, त्रिकुटा, त्रिफला, चीते की छाल, ताम्र भस्म, और जमालगोटा सब को समान भाग लेवे और सबसे दूना गुड मिला कर इमली के चीये के समान गोलियां बनावे, और प्रात काल खाय तो श्वास, खासी, क्षय, गोला, प्रमेह, विषम ज्वर, अजीर्ण, सग्रहणी, शूल, पांडु रोग गुदा और हृदय के शूल, वात रोग, गले का रुकना, अरुचि, अतिसार, प्रसूत का रोग और विष को दूर करे ।

लोवानसत्वविधि

विषंपलमितप्रोक्तंलोवानकुडवसतम् ।
सितसोमलकंचैवपलमानमुदीरितम् ॥
वितस्तमात्रं सेहुँडकाष्टंचैवविनिक्षिपेत् ।
सर्वमेकत्रसचूर्ण्यहडिकायांनिधापयेत् ॥
डमरूयत्रविधिनासत्वनिष्कासयेद्बुधः ।
तर्जनीप्रतिमावर्तिदीपेधृत्वातुज्वालयेत् ॥
यत्रस्याधोवेदयामदीपाग्निंतत्रदापयेत् ।
ऊर्ध्वलग्नशुद्धसत्वस्थापयेच्चकरडके ॥
गुंजाद्वयत्रयंवापिचतुगुंजमथापिवा ।
श्वासकासनिवृत्यर्थंबलज्ञात्वाप्रयोजयेत् ॥
राजयोग्यमिदंसत्वविख्यातरसमागरे ।

सिंगिया विष ४ तोले, लोवान १६ तोले, सफेद सोमल विष ४ तोले, और थूहर का टुकडा एक वालिश्त डाल सबको कूट पीस हाडी में भर डमरू यंत्र द्वारा, सत्व निकाले परन्तु उस हांडी के तले तर्जनी उंगली के बराबर मोटी दीवे की लौ की ४ प्रहर अग्नि देवे, ऊपर के ढक्कन मे जो सत्व लगे उसे खुलच कर एक शीशी मे भर कर रख छोडे इसको दो तीन अथवा चार रत्ती सेवन करने से खांसी और श्वास को दूर करे, इसको बलावल देख कर देना चाहिये, यह राजाओ के योग्य हैं ।

महाश्वासारिलौहम्

कर्षद्वयलोहचूर्णकर्पार्द्धमभ्रमेवच ।
सिताकर्षद्वयञ्चैवमधुकर्षद्वयतथा ॥
त्रिफलामधुकद्राक्षाकणाकोलास्थिवशजा ॥
तालीसपत्रवैडगमेलापुष्करकेशरम् ॥
एतानिश्लक्ष्णचूर्णानिकर्पार्द्धचसमांशकम् ।
लोहेचलोहदण्डेनमर्दयेत्प्रहरद्वयम् ॥
ततोमात्रालिहेत्क्षौद्रैर्वुध्वादोषबलाबलम् ।
इदश्वासारिलोहञ्चमहाश्वासंविनाशयेत् ॥
कासंपञ्चविधंचैवरक्तपित्तसुदारुणम् ।
एकजंद्वद्वजंचेवतथैवसान्निपातजम् ॥
निहन्तिनात्रसदेहोभास्कररस्तिमिरंयथा ।

लोह भस्म दो तोले, अभ्रक ६ मासे, मिश्री दो तोले, सहत दो कर्ष, त्रिफला, मुलहटी, दाख पीपल, बेर की छाल वंशलोचन, तालीस पत्र, वायविडग, इलायची, पुहकर मूल, और केशर सबको समान भाग ले सबका वारीक चूर्ण कर लोहे के पात्र मे लोहे के मूसले से दो प्रहर घोटे फिर बलावल देखकर इसकी मात्रा देवे तो यह श्वासारि लोह महाश्वास को दूर करे, और पाच प्रकार की खासी,रक्तपित्त, एक दोषज, द्विदोषज, और सन्निपात रोगो को दूर करे ।

डामराभ्रम

मेचकंपलमितमृतमभ्र ग्राह्ययष्टिकनकामृतवासा । कासमर्दवननिंबकचव्यग्रन्थिकंदहनमूलममेतम ॥ एकशश्चपलिकैरिहसत्वैर्मर्दितमुवलितगुरुहिका । कासश्वासमुदरचिरमेहा

नृपाण्डुगुल्मयकृतगलरोगम् ॥ शोथमोहनय नास्यज्वरोगं यक्ष्मपीनसगरबलसाद॥गण्डम डलवमिभ्रमदाहप्लीहशूलविषमज्वरकृच्छ्र । हन्तिवातकफपित्तमशेषडामरेश्वरमिदंमहद भ्रम् ॥

काली अभ्रक भस्म ४ तोले, महादवी, धतूरा, विष, अडूसा, कमोंदी, वकायन, चव्य. पीपला मूल, और चीते की जडकी छाल, प्रत्येक एक पल ले सब को खरल कर सेवन करे तो हिचकी, खासी, श्वास, उदर, पुराना प्रमेह, पांडु. गुल्म, यकृत गलरोग, सूजन, मोह, नेत्र और मुखके रोग, यक्ष्मा, पीनस, विषविकार, बलक्षय, गडमाला, वमन, भ्रम, दाह, प्लीह, शूल, विषम ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, वातकफ और पित्तके विकारोंको यह डामरेश्वराभ्र दूर करे ।

सूर्य्यावर्त्तोरसः

मूतकंगन्धकंमर्द्ययामैकंकन्यकाद्रवैः ।
द्वयोस्तुल्यताम्रपात्रं पूर्वकल्केनलेपयेत् ॥
दिनैकंहंडिकायंत्रे पचेच्छीतंसमुद्धरेत् ।
सूर्य्यावर्त्तरसोनामद्विगुञ्जःश्वासकासनुत् ॥
इन्द्रवारुणिकामूलंदेवदारुकटुत्रयं ।
शर्करासहितंखादेदूर्द्ध्वश्वासनिवृत्तये ॥

पारा, गन्धक बराबर ले १ प्रहर घीगुवारके रससे खरल करे, फिर दोनोंकी बराबर तांबेके कटकवेधी पत्र ले उनपर पूर्वोक्त पारे गन्धकके कल्कका लेपकर हाडीमे भर एक दिन पचावे यह सूर्य्यावर्त्तरस नाम दो रत्ती सेवन करनेसे श्वास, खासीको दूर करे, इसके ऊपर इन्द्रायनकी जड, देवदारु, त्रिकुटा और मिश्री मिलाकर इस चूर्ण को खावे ।

विजयपर्पटी.

सूतक गन्धकलोहविषमभ्रकमेवच ।
विडगरेणुकमुस्तमेलाग्रन्थिककेशरम् ॥
त्रिकटुत्रिफलाताम्र शुल्वजैपालचित्रकम् ।
एतानिसमभागानिद्विगुणोदीयतेगुडः ॥
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे ।
मूतायांग्रहणीदोषेशूलेपाण्ड्वामयेतथा ॥
हस्तपादादिदाहेषुवटिकेयप्रशस्यते ।

पारा, गन्धक, लोहभस्म, विष, अभ्रक, वायविडग, रेणुका, नागरमोथा, पीपलामूल, केशर, त्रिकुटा. त्रिफला, तांबेकी भस्म, जमालगोटा, चीतेकी छाल, सबको बराबर गुड मिलाय गोलियां बनावे, यह गोली खासी, श्वास, क्षय, गोला- विषमज्वर, सग्रणी, प्रसूतके रोग, शूल, पांडुरोग, हाथपैरोका दाह, इन सबको दूर करती है

घृतेनपाचयेन्मूलपत्रञ्चवासकस्यच ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायकासेश्वासेक्षयेतथा ॥
पिप्पलीदेवदारूचशुण्ठीचूर्णसमंतथा ।
उर्ध्वश्वाससदाहन्तिपिबेदुष्णजलेनच ॥

अडूसेकी जड और पत्तोको घृतमे पचाकर प्रातःकाल खावे तो खासी, और श्वास, और क्षय रोग दूर होवे, अथवा पीपल, देवदारु और सोठ इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीनेसे उर्ध्वश्वास दूर होवे ।

लौहपर्पटीरसः

भागौरसस्यगंधस्यद्वावेकोलौहभस्मनः ।
एतद्घृष्टंद्रवीभूतमृद्वग्नौकदलीदले ॥
पातयेद्गोमयगतेतथैवोपरियोजयेत् ।
ततःपिष्ट्वाद्रवैरेभिःसप्तधाभावयेत्पृथक् ॥
भार्ङ्गीमुंडीमुनिवराजयानिर्गुंडिकातथा ।
व्योषवासककन्यार्द्रद्रवैरेनंपुटेपचेत् ॥
आगंधखर्परेताम्रैपर्पटाख्योरसोभवेत् ।
सर्वरोगहरस्तैस्तैरनुपानैर्हिमाषकैः ॥
ताम्बुलीपत्रसहितःश्वासकासहरःपरः ।
सकणःसुरसाकाथोनुपानवासकाज्जलम् ॥
अम्लिकातैलवार्ताकुकूष्माण्डकदलीफलम् ।
वर्ज्यमांसरससर्वंपथ्यंदद्याद्विचक्षणः ॥
वर्जयेच्चविशेषेणकफकृत्स्त्रीसुखादिकम् ।

पारा और गन्धक प्रत्येक दो तोले, लोह भस्म एक तोले, इन सबको अग्निपर पतले करके

केलेके पत्ते पर ढाल देवे, ऊपरसे दूसरा पत्ता ढक गोबरसे दबा देवे फिर इस पर्पटीको पीस उक्त रसोंकी सात भावना देवे, भारंगी, गोरखमुडी, अगस्तिया, त्रिफला, अरनी, निगुंडी, त्रिकुटा, अडूसा, घीगुवार और अदरख फिर तांबेके पात्र मे पुट देकर पचावे जबतक गन्धक निशेष न होवे पचाता रहे, तो यह लोहपर्पटीरस सिद्ध होवे, इसको अनुपानके योगसे १ माशे सेवन करे तो सर्व रोगोंको हरण करे, और पानमें रखकर खानेसे श्वास और खांसीको दूर करे, तुलसीका काढा पीपल और सहत मिलाकर ऊपरसे पीवे और इसका सेवन करनेवाला तेल, खटाई, बैंगन पेठा, और केला, मासरसको त्याग दे और अन्य-वस्तु पथ्यमें सेवन करे तथा कफकारी वस्तु न खाय और स्त्रीसग न करे ।

ताम्रपर्पटी.

लोहस्थानेताम्रयोगात्ताम्रपर्पटिकाभवेत् ।

यदि ऊपर कही पर्पटीमें लोहभस्मकी जगह ताम्रभस्म डाले तो यह ताम्रपर्पटी रस बने ।

पिप्पल्याद्यंलोहम्.

पिप्पल्यामलकीद्राक्षाकोलास्थिमधुशर्करा ।
विडंगपुष्करैर्युक्तंलौहंहन्तिसुदारुणम् ॥
छर्द्दिहिक्कांतथातृष्णांत्रिरात्रेणनसंशयः ।

पीपल, आवले, दाख, बेरकी छाल, मुलहठी, मिश्री, वायविडंग, और पुहकरमूल इनके साथ लोहभस्म मिलाकर सेवन करनेसे वमन, हिचकी, और प्यासको को तीन रात्रिमें दूर करे ।

श्वासकुठार.

टंकणंपारदंगंधंशिलाविषकटुत्रिकम् ।
निष्पिष्यवटिकाकार्यावाणगुंजाप्रमाणत. ॥
उष्णोदकंपिबेच्चानुशुद्राकाथमथापिवा ।
कासंपञ्चविधंहन्तिश्वासंश्लेष्मसमुद्भवम् ॥
शिरोरोगंनिहत्याशुवृत्तमिद्राशनिर्यथा ।

सुहागा, पारा, गन्धक, विष, मनसिल, त्रिकुटा, सबको कूटपीस पाच २ रत्तीकी गोलियां बनावे, और गरम जलके साथ सेवन करे ऊपरसे कटेरीका काढा पीवे तो पांच प्रकारकी खांसी, कफसे उत्पन्न श्वास, और मस्तकरोग इन सबको यह श्वासकुठार रस नाश करे ।

श्वासकासचिन्तामणिः

पारदंमाक्षिकंस्वर्णंसमांशंपरिकल्पयेत् ।
पारदार्द्धंमौक्तिकञ्चसूतात्द्विगुणगंधकम् ॥
अभ्रञ्चैवतथायोज्यंव्योम्नोद्विगुणलोहकम् ।
कण्टकारीरसेनैववछागीदुग्धेनचपृथक् ॥
यष्टिमधुरसेनैवपर्णपत्ररसेनच ।
भावयेत्सप्तवारञ्चद्विगुंजवटिकांभवेत् ॥
पिप्पलीमधुसंयुक्तांश्वासकासविमर्दिनीम् ।

पारा, सुवर्ण माक्षिक, और सुवर्णभस्म, इनको समान भाग लेवे, और पारेसे आधी मोती तथा दूनी गंधक लेवे और गन्धककी बराबर अभ्रक भस्म और अभ्रकसे दूनी लोहभस्म मिलावे सबको कटेरीके रस, बकरीके दूध, मुलहटी और पानके रससे सात २ वार खरलकर दो २ रत्तीकी गोलिया बनावे, इनको पीपल और सहतके साथ सेवन करनेसे श्वास और खासी दूर होवे ।

श्वासकुठारः

रसगन्धंविषंटंकशिलोषणकटुत्रयम् ।
सर्वंसंमर्द्यदातव्योरसःश्वासकुठारकः ॥
वातश्लेष्मसमुद्भूतंश्वासंकासंक्षयंजयेत् ।

पारा, गन्धक, विष, सुहागा, मनसिल, कालो मिरच और सोंठ, मिरच, पीपल, सबको समान ले यह कफ से उत्पन्न श्वास, खांसी, और क्षय को दूर करे ।

तथा

रसगंधविषञ्चैवटंकणंसमनःशिलम् ।
एतानिसमभागानिमरिचंतच्चतुर्गुणम् ॥
त्रिभागंत्र्यूषणंज्ञेयंखल्लेसर्वंविचूर्णयेत् ।
रसःश्वासकुठारोऽयंद्विगुञ्जःश्वासकासजित् ।
गतासज्ञायदापुंसातदानस्यंप्रदापयेत् ।
घ्रापयेन्नासिकारन्ध्रेसज्ञाजननमुत्तमम् ॥

प्रतिश्यायंक्षतक्षीणंएकादशविधक्षयम् ।
हृद्रोगंश्वासशूलञ्चस्वरभेदसुदारुणम् ॥
सन्निपातंतथाघोरंतन्द्रामोहान्वितंजयेत् ।

पारा, गन्धक, विष, सुहागा, और मनसिल को समान भाग ले और काली मिरच चार भाग ले, तथा त्रिकुटा तीन भाग लेकर खरल करे । इस श्वास कुठार रस को दो रत्ती सेवन करने से श्वास, और खांसी जाय, और सन्निपात की बेहोशी में इसका नस्य देवे तो संज्ञा हो आवे । पीनस, क्षतक्षीण, ग्यारह प्रकार की क्षय, हृद्रोग, श्वास, शूल, घोर स्वर भेद, घोर सन्निपात, तन्द्रा और मोह को यह श्वास-कुठार रस दूर करे । परंतु जिस समय इसको पीसे तब एक २ काली मिरच डाल के पीसे ।

अथ स्वरभेदाधिकारः

भैरवोरसः

रसंगन्धविषटंकंमरिचंचव्यचित्रकम् ।
आर्द्रकरसेनैवसमर्द्यवटिकांततः ॥
गुञ्जात्रयप्रमाणेनखादेत्तोयानुपानतः ।
स्वरभेदंनिहन्त्याशुश्वासंकासंसुदुस्तरम् ॥

पारा, गंधक, विष, सुहागा, काली मिरच, चव्य और चीता सबको बराबर ले अदरख के रस से खरल कर तीन २ रत्ती की गोलियां बनावे । और गरम जल के साथ सेवन करे तो श्वास स्वरभेद और खांसी दूर हो ।

चव्याम्लवेतसकुटात्रयतिंतिडीक ।
तालीशजीरकतुगादहनैःसमांशैः ॥
चूर्णंगुडप्रमृदितंत्रिसुगंधियुक्त ।
वैस्वर्यंपीनसकफारुचिसुप्रशस्तम् ॥
अनेनैवानुपानेनभस्मसूतंप्रयोजयेत् ।
योगवाहिरसञ्चापियोजयतिभिषग्वराः ॥
सशर्करंशुंठिचूर्णंक्षौद्रेणसहयोजितम् ।
कोकिलस्वरएवस्याद्गुडिकाभुक्तमात्रतः ॥

चव्य, अम्लवेत, त्रिकुटा, ततडीक, तालीस पत्र, जीरा, वंशलोचन, चीता और त्रिसुगंधि बराबर लेकर सब को कूट पीस बराबर का गुड मिलाय देवे यह स्वरभंग, पीनस, कफ रोग और अरुचि में हितकारी है । इसी अनुपान के साथ यदि पारे की भस्म देवे तथा इस स्वर भंग रोग में अन्य योगवाही रस भी वैद्य देते हैं । सोंठ के चूर्ण में मिश्री और सहत मिला के गोलियां बना कर सेवन करे तो कोकिला के समान स्वर होवे ।

स्वरप्रसादकोरसः

पारदंगधकतुल्यतालकञ्चमनःशिला ।
सर्वतुल्यञ्चकंकोलजलैस्तुदिवसत्रयं ॥
ततःपुटेद्गजपुटेशरपुंखाजलैःपुनः ।
समर्द्यपाचयेत्भूयस्ततःसिद्धोभवेद्रसः ॥
स्वरप्रसादकोनामरसोयंदृष्टविक्रमः ।
पर्णखण्डेनदातव्योगुञ्जाद्वयमतोबुधैः ॥
गुडार्द्रकेनमद्येनपिप्पलीमधुनाथवा ।

पारा, गन्धक, हरिताल, मनसिल, सबको बराबर ले सबकी बराबर ककोल मिलाय जल से खरल कर गजपुट ले फूंक देवे तो यह रस सिद्धि होवे यह स्वर प्रसादक रस अनुभव किया हुआ है । पान के टुकडे में दो रत्ती रख कर या गुड अदरख, मद्य, पीपल और सहत इन में से किसी के साथ देवे तो स्वरभंग दूर होवे ।

गोरखवटी.

रसभस्मार्कलोहस्यभावितस्यत्रिसप्तधा ।
क्षुद्राफलरसैर्मुद्गतुल्याकार्यावटीशुभा ॥
मुखस्थाहरतेशीघ्रंस्वरभंगमसंशय ।
गोरक्षनाथैर्गदितास्वरभंगिकृपालुभिः ॥

चन्द्रोदय, तांबे की भस्म और लोह भस्म सब को समान भाग ले कटेरी के फलों के रस की भावना देकर मूंग के समान गोलियां बनावे, इन गोलियों को मुंह में रखने से तत्काल स्व-

रभग दूर होवे, यह गोरखनाथ की कही गोरख वटी वैद्य रहस्य ग्रंथ मे लिखी है।

अथ रोचकाधिकारः

अग्निकुमाररसः

यवक्षारंतथास्वर्जीटकणंलवणानिच। त्रिकटुत्रिफलालोहचूर्णद्विविधभागकं॥ कर्पूरश्चलवंगंचचव्यकंचित्रकतथा। दाडिमाम्लविशेषेणशृंगवेरश्चरेणुकां॥ एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्। यवानीनिम्बुनीरेणदिवसत्रयभावित॥ तथामृतरसेनैवमर्दितंचाम्लवेतसै.। चणकाकारमात्राणिदीयतेरसमुत्तम.॥ अरोचकवन्हिविशेषमांद्य गुल्मप्रमेहंविनिहन्त्यवश्य। चुक्रेणयुक्त खलुपक्तिशूलंसूर्योदयाद्वृद्धमतीवजात॥ श्वासकासकफातकाप्राशनंप्राणवर्द्धनं। दद्यात्त्रिकटुकश्चैवकफारोचकनाशनम्॥ रसोह्यग्निकुमारोयसर्वरोगप्रणाशनम्।

जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, पाचो नोन, त्रिकुटा, त्रिफला, लोहचूर्ण, कान्तलोह, कपूर, लौंग, चव्य, चीता, अनारदाना, अदरख और रेणुका को समान भाग ले और बारीक चूर्ण कर अजवायन और नींबू के रस मे तीन दिन खरल कर विष के काढे से तीन दिन खरल करे फिर चने के प्रमाण गोलियां बनावे, यह गोली अरुचि, मदाग्नि, गुल्म, और प्रमेह को दूर करे, चूका के रस के साथ देने से परिणाम शूल को, श्वास, खासी और कफ के रोगो को नाश करे, प्राण (दिल) को बढावे, त्रिकुटा के साथ देने से कफ की अरुचि का नाश करे, यह अग्निकुमररस सर्व रोग नाशक है।

सूतादिवटी.

सूतगंधाभ्रमगधाम्लिकामरिचसैंधवै.। गुटिकारोचकहरीजिव्हावदनशुद्धिकृत्॥

पारा, गधक, अभ्रक, पीपल, इमली, काली मिरच और सैंधा निमक सब को कूट पीस गोली बनावे यह गुटिका रुचि कर्त्ता और जीभ तथा मुख की शुद्धि करे।

सुधानिधिरसः

रसगधौसमौशुद्धौदन्तीकाथेनभावयेत्। जम्बीरस्यरसेनैवआर्द्रकस्यरसेनच॥ मातुलुंगस्यतोयेनतस्यमज्जरसेनच। पश्चाद्विशोष्यान्सर्वांस्तानटङ्कणश्चावचारयेत्॥ देवपुष्पवाणमितरसपादंमृतामृतम्। माषमात्रंचतत्सर्वंनागरेणगुडेनवा॥ सर्वारोचकशूलार्त्तिसामवातसुदारुणम्। विषूचीश्चाग्निमान्द्यश्चभक्तद्वेषश्चदारुणम्॥ रसोयवारयत्याशुकेसरीकरिणयथा।

पारा, गधक, दोनो समान भाग ले, दती के काढे, जवीरी, अदरख, बिजोरा इनके रस तथा बिजौरे के छिलके के रस की भावना देकर सुखा लेवे और सब की बराबर सुहागा, पंचमाश, लौंग और पारे की चौथाई शुद्ध विष मिला कर एक २ माशे की गोलियां बनावे, और सोठ और गुड के साथ लेवे तो सर्व प्रकार की अरुचि, शूल, आमवात, हैजा, मदाग्नि, भक्तद्वेष इन सब को यह सुधानिधि रस दूर करता है, ग्रन्थान्तर मे इसी को रस केशरी कहा है।

सुलोचनाभ्रम्.

पलसुजीर्ण गगनन्तुवज्रकतेजोवतीकोलमुशीरदाडिमम्। धात्र्यम्लएलारुचकपृथग्दशपलोन्मितमर्दितमेवसेवितम्॥ अरोचकवातकफत्रिदोषजंपित्तोद्भवगधसमुद्भवनृणाम्। कासंस्वराघातमुरुग्रहरुजश्वासवलासयकृतभगन्दरम्॥ प्लीहाग्निमान्द्यश्वयथु समीरणमेहभ्रूशकुष्ठमसृग्दरचाशूलान्लपित्तक्षयरोगमुद्धतसरक्तपित्तवमिदाहमश्मरीम्॥ निहन्तिचार्शांसिसुलोचनाभ्रकबलप्रदंवृष्यतमरसायनम्।

वज्राभ्रक की शुद्ध भस्म ४ तोले, तेजवल्कल, बबूल की छाल, रास, अनारदाना, आमला, अम्लवेत, इलायची, सेंधा निमक प्रत्येक एक २ पल लेवे। और सब को खरल कर सेवन करे तो वात कफ, पित्त और त्रिदोष जन्य अरुच, खासी, स्वरभग, ऊरुश्रो का जकड़ना, श्वास, कफ, यकृत रोग, भगंदर, प्लीहा, मन्दाग्नि, सूजन, वाटी, प्रमेह, कोढ, रक्तप्रदर, कृमिरोग, शूल, अम्लपित्त क्षय रोग, रक्तपित्त, छर्दिरोग, दाह, पथरी, और बवासीर इन सब रोगों को यह सुलोचनाभ्र दूर करती है, बल कर्त्ता और वृष्य है. रसायन तथा सर्व धातुओं को पुष्ट करे।

समृतमरुचिघ्नस्यात्तिन्तिडीकगुडोषणम्।
मृद्धिकाजीरकंकृष्णामातुलुंगाम्लवेतसम ॥

तितिडीक, त्रिकुटा, गुड तथा दाख, जीरा, पीपल, विजौरे की केशर और अम्लवेत इन मे चन्द्रोदय मिलाके सेवन करे तो अरुचि दूर हो।

छर्दिरोगाधिकारः

मधुकंत्रिफलाचूर्णमयोरजसमलिहन्।
मधुसर्पियुतंसम्यक्गव्यंक्षीरंपिबेदनु ॥
छर्दिसतिमिरशूलमम्लपित्तंज्वरक्लम।
अनाहंमूत्रकृच्छ्रं चशोथचेवनिहन्तिहि ॥

महुआ और त्रिफला को समान ले बराबर का मार मिलाय सहत और घृत के साथ खावे ऊपर से गौ का दूध पीवे तो छर्दि, तिमिर शूल, अम्लपित्त, ज्वर, क्लम, अफरा मूत्रकृच्छ्र और सूजन को दूर करे।

पारदादिचूर्णम्.

रसबलिघनसारकोलमज्जामरकुशमावुधिस प्रियगुलाजा.। मलयजमगधत्वगेलपत्रदलितमिदंपरिभाव्यचन्दनाद्धिः ॥ मधुमरिचयुतंरजोस्यमापजयतिवलिप्रबलाविलिह्यमर्त्यः

पारा, गधक, कपूर, बेर की मिगी, लौंग, समुद्रफल, प्रियगु, खील, चन्दन, पीपल, दालचीनी, इलायची और पत्रज इन सब को पीस चंदन के जल की भावना देकर सहत और काली मिरच के चूर्ण के साथ सेवन करे तो प्रबल छर्दि रोग को दूर करे।

वमनामृतयोगः

गन्धकःकमलाक्षश्चयष्टीमधुशिलाजतु।
रुद्राक्षोटकणश्चैवसारंगस्यचशृंगकम् ॥
चदनश्चतवक्षीरोगोरोचनमिदंसम।
बिल्वमूलकषायेणमर्दयेद्याममात्रकं ॥
मात्राचैवप्रकुर्वीतवल्लस्यैवप्रमाणतः।
नानाविधानुपानेनछर्दिहन्तित्रिदोषजां ॥
वमनामृतयोगोयकमलाकरभाषितः।

गधक, कमलाक्ष, मुलहटी, शिलाजीत, रुद्राक्ष, सुहागा, हरिन का सींग, चन्दन, तवाखीर और गोरोचन सब को बराबर ले बेल की जड के काढे से एक प्रहर मर्दन कर तीन २ रत्ती की गोलिया बनावे, यह गोली नाना अनुपानो के साथ त्रिदोषज वमन रोग को दूर करे, यह कमलाकर वैद्य ने कहा है।

वान्तिहृद्रसः

अय शखवलीसूतखल्वेतुल्येविमर्दयेत्।
कन्याकनकचागेरीरसैर्गोलंविधीयता ॥
सप्तमृत्कर्पटैर्लिप्तात्पुटितोवान्तिहृद्रसः।
द्विवल्ल.कृमिरोगेपिसाजमोद.सवेल्लकः ॥
वान्तिहारेणमुनिनाप्रोक्तोयमधुनायुत.।
पिंगलाक्षारपानीयपाययेद्वांतिहृद्भिषक् ॥

लोह भस्म, शख के भीतर की बली, और पारा तीनो को बराबर लेकर घीगुवार, धतूरा, चूका, इन के रस से गोला बनाय सात कपरमिट्टी कर सपुट मे रख कर फूंक देवे तो यह वातिहृत् रस बने, ६ रत्ती अजमोद और वायविडग के साथ देवे तो कृमि रोग दूर होवे, और सहत और शीशमक्षार के पानी के साथ देवे तो वाटी रोग दूर होवे।

अजाजीधान्यपथ्याभि सक्तुद्राभि कटुत्रिकैः।

एभिःसार्द्ध भस्मसूतःसेव्योवान्तिप्रशान्तये ॥
हिक्काधिकारोक्तपिप्पल्यादिलौहमत्रविधेयम

जीरा, धनिया, हरड, कटेरी और त्रिकुटा के साथ चन्द्रोदय सेवन करे तो वमन रोग दूर हो, इस छर्दि यानी रद्द के रोग में हिचकी के अधिकारमे जो पिप्पल्यादि लोह कहा है देना चाहिए।

अथ तृष्णाधिकारः

महोदधिरसः

ताम्रं चक्रिकयावंगंसूतंतालंसतुत्थकम्।
वटांकुररसैर्भाव्यंतृष्णाहृद्वल्लमात्रतः॥
सक्षौद्रमाम्रजम्बूत्थपिवेत्क्वाथपलोन्मितं।
सकृष्णमधुनाकुर्य्यात्गण्डूषंशीतलेस्थितः॥

तांबे की भस्म, वंग भस्म, पारा, हरिताल, लीला थोता इन को वड के अंकुरो के रस की भावना देकर गोलिया बना कर सेवन करे, तो अत्यन्त तृषा के वेग दूर हो, आम, जामन के पत्तो को काढे मे सहत मिला कर ४ तोले पीवे तो प्यास दूर हो अथवा शीतल जल मे पीपल का चूर्ण और सहत मिला कर शीतल स्थान मे बैठ कर कुल्ले करे तो प्यास दूर हो।

कुमुदेश्वरोरसः

मृतताम्रस्यभागौद्वौभागैकवंगभस्मकं।
यष्टिमधुरसैर्भाव्यंशुष्कमापार्द्धकंशुभम्॥
सेव्यंचैवानुपानेनवक्ष्यमाणेनवुद्धिमान्।
चन्दनंशारिवामुस्तक्षुद्रैलानागकेशरम्॥
सर्वतुल्यातथालाजापचेत्षोडशकैर्जलैः।
अर्द्धशेषहरेत्क्वाथसिताक्षौद्रयुतन्तुतम्॥
छर्दितृष्णानिहन्त्याशुरसोयकुमुदेश्वरः।

तांबेकी भस्म दो तोले, वंग भस्म १ तोले, दोनो को मूलहटी के काढे की भावना देकर चार २ माशे की गोलियां बनावे, फिर चन्दन, सरवन, नागर मोथा, छोटी इलायची, नाग केशर और सब की बराबर धान की खील ले १६ गुने पानीमें औटावे, जब आधा रहे तब इसमें मिश्री और सहत मिलाके ऊपर कही हुई गोली खाने के पश्चात पीवे तो वमन होना और प्यास रोग को यह कुमुदेश्वर रस दूर करता है।

पारदादिचूर्णम्.

रसगन्धककर्पूरैःसैलोशीरसरोचकैः।
सशितैःक्रमवृद्धैश्चसूक्ष्मचूर्णमहर्मुखे॥
त्रिगुञ्जाप्रमितखादन्नपिवेत्पथ्युपितांवुच।
भृशंतृषांनिहन्त्येवमाश्विनेयप्रकाशित॥

पारा, गन्धक, भीमसेनीकपूर, शिलाजीत, खस, काली मिरच, और मिश्रीको क्रमसे बढती भाग लेवे, सबको पीस ३ रत्ती वासे पानीके साथ खाये तो प्यासको दूर करे, यह अश्विनीकुमार संहितामे लिखा है।

क्षीरसागरोरसः

मृतरसगगनार्कमुण्डतीक्ष्णंसताप्यंसवलिसममिदस्याद्यष्टिकावारिपिष्टं। तदनुसलिलजातैर्वासकैर्गोस्तनीभिर्मृदितमथविदारीवारिणाघस्रमेक॥ घृतमधुसहितेयनिष्कमात्रावटीत्रिक्षपयतिगुरुपित्तपित्तरोगंक्षयच। भ्रममदमुखशोषान्दाहतृष्णासमुत्थान्मलयजमिहपेयंचानुपानसचन्द्र॥

चन्द्रोदय, अभ्रक, ताम्र मुंडलोह, खेरी लोह, सोनामक्खी, और गन्धक प्रत्येक समान भाग लेवे, और सबको मुलहठीके रसमें एक दिन खरल कर अडूसा, दाख, और बिदारीकन्दके रससे एक दिन खरल करे, फिर चार २ रत्तीकी गोलिया बनावे, इसके खानेसे घोर पित्तकेरोग, क्षय, भ्रम, मस्तपन, मुखशोष, दाह तृष्णा, ये सब रोग दूर हो, इसके ऊपर चन्दन और कपूर मिलाकर जल पीना चाहिये यह रसशंकर ग्रन्थसे लिखा है।

मूर्च्छाधिकारः

ताम्रचूर्णंसमोशीरंकेशरशीतवारिणा।
पीतंमूर्च्छांद्रुतहन्याद्वृत्तमिंद्राशनिर्यथा॥

तानेकी भस्ममें खस और केशर मिलाय शीतल जलके साथ पीवे तो मूर्च्छा शीघ्र दूर हो।

ताम्रभस्मयोग.

ताम्रं दुरालभाक्वाथैःपीतन्तुघृतसंयुतं।
निवारयेमदंभ्रमशीघ्रंमूर्च्छांचापिसुदुस्तराम्॥

तांबेकी भस्मको धमासेके काढेमें मिलाय और घृत मिलाकर पीवे तो घोर मूर्च्छा दूर हो।

अभ्रकभस्मयोगः

कणामधुयुतंव्योममूर्च्छायामनुशीलयेत्।

पीपल और सहतके साथ अभ्रकभस्म का सेवन मूर्च्छाको दूर करे।

सुधानिधिरसः

कणामधुयुतसूतमूर्च्छायामनुशीलयेत।
शीतसेकावगाहादिसर्वदाशीतलभवेत्॥
सुधानिधिरसोनाममदमूर्च्छाविनाशनः।

पीपल और सहतके साथ पारा मिलाकर खाय तो मूर्च्छा दूर हो, इसके ऊपर शीतल जल का तरडा देना चाहिये, शीतल जलसे स्नानादि करके सेवन करनेसे यह सुधानिधिरस मद और मूर्च्छा को दूर करे।

अष्टाङ्गलवणम्

सचव्यहिंगुरुचकंधान्यार्कविश्वदीपकम्।
चूर्णंससूतमद्येनपीतपानात्ययजयेत्॥
सौवर्चलमजाज्यश्चवृक्षाम्लसाम्लवेतसं।
त्वगेलामरिचार्द्धांशशर्करामधुयोजित॥
हितंलवणमष्टांगमग्निसंदीपनपरम्।
मदात्ययेकफप्रायेदद्यात्स्रोतविशोधनम्॥

चव्य, हींग, निमक, धनिया, सोंठ, अजवापन और पारा सबका चूर्णकर मद्यके साथ पीवे तो पानात्ययका विकार दूर हो, सचर निमक, जीरा, तितिडीक, अमलवेत, दालचीनी, इलायची और कालीमिरचको बराबर लेवे और सबसे आधी मिश्री और सहत मिलाके देवे तो यह आष्टागलवण अग्नि दीप्ति करे, तथा कफप्राय मदात्यय रोगमें छिद्रोंके शोधन करनेको देवे।

रसामृतम्.

मातुलुंगद्रवै:सूतभावितंवासरावधि।
गन्धकञ्चपलान्यष्टौनागतत्पादसयुतं॥
एकीकृत्याथसंभाव्यहस्तिशुंडीरसैस्तथा।
धूमसारैस्त्र्यहंभाव्यंरामठेनत्र्यहत्र्यह॥
शुष्ककाचघटेन्यस्ययामानष्टौप्रदीपयेत्।
सिकताख्येनयंत्रेणवैद्योबुद्धिविशारदः॥
रक्तिकाद्वितयसेव्यंमदात्ययनिवृत्तये।
मधुनामलकैर्नित्यराजार्हन्तुरसामृतं॥

प्रथम पारेको विष उपविषमें सात २ दिन खरल करके उडाय लेवे, इस प्रकार शुद्ध किया हुआ पारा ८ टके भर लेवे, और शुद्ध गन्धक ८ टकेभर प्रथम दो टके शुद्ध शीशेको पिघलाकर पारेमें मिलादेवे, फिर पारे और गन्धककी कजली करे और बिजौरेके रसमें १ दिन खरलकर हथशुंडीके काढे, धुएंनसै हींगके जलसे तीन २ दिन खरल करे जब सूखजाय तब शीशीमें भर ३ कपर मिट्टी करे, फिर हाडीके पेंदेमें पैसेकी बराबर छेदकर उसपर ठीकरी रख ३ जौके बराबर दोनो तरफ छेद करे, और छेदके चौगिर्द गीली माटी की मेढ लगाकर उसपर शीशी रख बालूसे हांडी को भरदेवे, पीछे दो प्रहर दो लकडियोंकी मन्द आच देवे, और २ प्रहर मध्यम तथा ४ प्रहर शीशीका मुख बन्दकर तेज आच देवे, ३ प्रहर अग्निपर रखा रहने देवे, स्वांगशीतल होनेपर उतारके शीशेमें भरकर रखछोडे इसमेसे दो रत्ती रस दो माशे आवलेके चूर्णमें मिलाकर सहतके साथ चाटे तो मद्यके सर्व विकार दूर होवे, भूख बढे और अन्न पचे।

कज्जली.

धात्रीस्वरसनिपीतारसगन्धककज्जलीसिता।
सहिता। हरतिमदात्ययरोगानाशुगरुत्मा
निवोरगान्सहसा॥

पारे और गन्धककी कजलीको आमलेके

स्वरससे मिश्री मिलाके पीवे तो मदात्यय रोगोंको शीघ्र दूर करे ।

सूतभस्म.

पूरकहिंगुरुचकंसचव्यंविश्वदीप्यक ।
चूर्णंससूतंमद्यं नपीतंपानात्ययजयेन ॥

विजोरेका रस, हींग, निमक, चव्य, सोंठ, अजमायन और पारा मिलाके मद्य पीवे, तो पानात्यय दूर हो ।

राजावर्त्तादियोगः

राजावर्त्तोरसःशुल्वमधुर्कघृतपाचितं ।
मध्वाज्यशर्करायुक्तं हन्तिसर्वान्मदात्ययान्

राजवर्त्तकी भस्म, ताम्रभस्म, और महुएको घीमे पचाके सहत मक्खन और घीके साथ खावे, तो सर्व प्रकारका मदात्यय रोग दूर हो ।

अथ दाहचिकित्साः

दाहान्तकोरसः

सूतात्पचार्कतश्चैकं कृत्वापिण्डसुशोभनम् ।
जंबीरस्वरसैर्मर्द्यं सूततुल्यचगंधकम् ॥
नागवल्लीदले पिष्ट्वाताम्रपत्रीप्रलेपयेत् ।
प्रपुटेद्भूधरेयन्त्रे यावद्भस्मत्वाप्नुयात ॥
द्विगुञ्जमार्द्रकद्रावैस्त्र्यूषणेनचयोजयेत् ।
निहन्तिदाहसन्तापमूर्च्छापित्तसमुद्भवा ॥

५ तोले पारा, और १ तोले तांबेकी भस्म, दोनोको जंबीरीके रसमे खरलकर पारेके समान गन्धक मिलाय पानके रसमे पीस तांबेके पात्रमे लेपकर फिर भूधरयन्त्रमे तबतक पचावे जबतक भस्म न होवे इसकी दो रत्तीकी मात्रा अदरख और त्रिकुटाके रससे देवे तो दाह और पित्तजन्य सन्निपातको दूर करे ।

रसादिवटी.

रसबलिघनसारचन्दनानासनलदसेव्यपयोदजीवनानां । अपहरतिगुटीमुखस्थितेयंसकलंसमुत्थितदाहमाशुहन्यात ॥

पारा, गन्धक, कपूर, चन्दन, कूट, नेत्रवाला, और नागरमोथा इनकी जलमे गोलियां बनाय मुखमे रखे तो सम्पूर्ण दाहोंको शान्ति करे ।

योगान्तरम्.

दाहेशस्तौद्वावपिपूर्वोक्तौमालनीवसन्ताख्यौ
लीढौमधुनाशाकंगुंजाद्वित्रिप्रमाणेन ॥
दुग्धोदनभिपग्भिःसिताविमिश्रंसदायोज्यं ।
आभ्यामसमानकश्चिद्योगोलोकेस्तिदाहरोगघ्नः
चन्द्रकलारसोप्यतीवगुणदः ॥

दाहरोगमे पूर्वोक्त लघु और बृहन्मालिनी वसन्तरस हितकारी है, इसे दो अथवा ३ रत्ती लेकर सहतमे मिलाकर खाय ऊपर दूध भात और मिश्रीका पथ्य देवे, इन दोनों योगोंकी बराबर दाहनाशक और दवा नहीं है, इस दाहरोगमे अम्लपित्त रोगमे कहा हुआ चन्द्रकलारस भी अत्यन्त गुणदायक है ।

उन्मादाधिकारः

उन्मादगंजाकुशोरसः

त्रिदिनंकनकद्रावैर्महाराष्टीद्रवैःपुनः ।
विषमुष्टिजलैःसूतसमुत्थाप्याथचक्रिकाम् ॥
कृत्वातप्तासगन्धान्तायुक्त्याबधनमाचरेत् ।
तत्समकनकबीजमभ्रकंगंधकविषम ॥
मर्दयेत्त्रिदिनंसर्वंवल्लमात्रंप्रयोजयेत् ।
दोषोन्मादद्रुतहन्तिभूतोन्मादविशेषतः ॥

पारेको धतूरेके रस, ब्रह्मदण्डीके रस और कुचलेके काढेसे तीन २ दिन खरल करे, फिर इससे गन्धक मिलाकर युक्तिपूर्वक अग्निसे बधन करे फिर पारेकी बराबर धतूरेके बीज, अभ्रक, गन्धक, और विष मिलाके ३ दिन खरल करे, और दो रत्ती देवे तो वात पित्त और कफजन्य उन्माद तथा भूतजन्य उन्मादको यह शीघ्र दूर करे ।

"समुत्थाप्यार्क चन्द्रिका" इस जगह समुत्थाप्यार्कचन्द्रिका" ऐसा पाठ कहते हैं तहां अर्क कहिये ताम्रभस्म भी मिलावे ।

भूतांकुशोरसः

मृतायस्ताम्रमभ्रं चमुक्ताचापिसमंसमम् ।
सूतपादोत्तमवज्रं शिलागन्धकतालकम् ॥
तुल्यंरसांजनशुद्धसहिंफेणरसांजनम् ।
पचानांलवणानांचप्रतिभागरसोन्मितं ॥
भृंगराजंचित्रवज्रीदुग्धेनापिविमर्दयेत् ।
दिनान्तेपिण्डिकांकृत्वारुद्धागजपुटेपचेत् ॥
भूतांकुशोरसोनामनित्यंगुंजाद्वयंलिहेत् ।
आर्द्रकस्यरसेनापिभूतोन्मादनिवारणम् ॥
पिप्पल्योत्थंपिबेच्चानुदशमूलकषायकम् ।
स्वेदयेत्कटुतुम्ब्याचतीक्ष्णरुक्षंचवर्जयेत् ॥
माहिषंचघृतंक्षीरंगुर्वन्नमपिभक्षयेत् ।
अभ्यङ्गकटुतैलेनहितोभूतांकुशोरसे ॥

पारा, लोहचूर्ण, ताम्र, अभ्रक और मोती को समान भाग ले और पारेके चतुर्थांश हीरा, गन्धक, मनसिल, हरिताल, लीलाथोथा, रसौत अफीम, शिलाजीत, सुरमा और पांचोनोन प्रत्येक पारेके तुल्य ले सबको भांगरे, चीते, थूहरके दूध इनमें पृथक् २ दिनतो खरलकर रात्रिमें गोला बनाय गजपुटमें रखकर फूंक देवे इनमेंसे २ रत्ती अदरखके रसके साथ खाय तो भूतोन्मादको दूर करे, इसके ऊपर दशमूलके काढेमें पीपलका चूर्ण मिलाकर पीवे, तथा कडवी तूम्बी करके स्वेदन करे और तीक्ष्ण और रूखा खानेमें परहेज करे, तथा भैसका घी, दूध और गरिष्ट पदार्थ भक्षण करे, तथा इस भूतांकुश रसपर कडवे तेलकी मालिश कराना चाहिये ।

उन्मादभञ्जिनी.

शुद्धंमनःशिलाचूर्णसैंधवकटुरोहिणी ।
वचाशिरीषबीजञ्चहिंगु चश्वेतसर्षपम् ।
करञ्जबीजंत्रिकटुमलंपारावतस्यच ॥
एतानिसमभागानिगोमूत्रैर्वटिकाकुरु ॥
गिरिमल्लीबीजसमाश्छायाशुष्कांश्चकारयेत् ।
प्रातःसन्ध्यानिशाकालेचक्षुषोरञ्जनंहितम् ॥
मधुरादिरसेचाज्यरात्र्यावापिजलेनच ।
वटिकैकासमाख्यातानाम्नाचोन्मादभञ्जिनी ॥
चातुर्थकमपस्मारमुन्मादञ्चविनाशिनी ।

शुद्ध मनसिलका चूर्ण, सैंधानिमक, कुटकी, बच, सिरसके बीज, हींग, सफेद सरसों, कंजाके बीज सोंठ, मिरच, पीपल, और कबूतरकी बीट, सबको समान भाग ले, और गोमूत्रसे खरल कर इन्द्रजौकी बराबर गोलिया बनावे और छायामें सुखाकर प्रातःकाल सायंकाल और रात्रिमें अंजन करे, मिष्टरसादि, घृत अथवा जलसे रात्रिमें एक गोली लगावे तो यह उन्मादभंजिनी गुटिका चौथैयाज्वर, मृगी, और उन्मादको दूर करे ।

त्रिकत्रयादिलौहम्.

त्रिकत्रयसमायुक्त जीवनीययुतस्त्वयः ।
हन्त्यपस्मारमुन्मादवातव्याधिंसुदुस्तरम् ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, त्रिसुगन्ध, और जीवनीय गण इन सबको समान ले सबकी बराबर लोहभस्म मिलाय सेवन करे तो मृगी उन्माद और घोर वातव्याधिको दूर करे ।

उन्मादभञ्जनोरसः

त्रिकुटात्रिफलाचैवगजपिप्पलिकातथा ॥
विडंगञ्चदेवदारुकिरातकटुकीतथा ॥
कंटकारीचयष्टीन्द्रयवचित्रकमेवच ।
बलाचपिप्पलीमूलंमूलञ्चवीरणस्यच ॥
शोभाञ्जनस्यबीजानित्रिवृताचेन्द्रवारुणी ।
वगरूप्यमभ्रकंचप्रवालसमभागिकम् ॥
सर्वचूर्णसमंलौहंसलिलेनविमर्दयेत् ।
उन्मादमपिभूतोत्थमुन्मादंवातजंतथा ॥
अपस्मारंतथाकार्श्यंरक्तपित्तंसुदारुणम् ।
नाशयेदविकल्पेनरसश्चोन्मादभञ्जनः ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, गजपीपल, बायविडंग, देवदारु, चिरायता, कुटकी, कटेरी, मुलहटी, चीते कीछाल, खरेटी, पीपलामूल, वीरणतृणकी जड,

सहजनेके बीज, निसोथ, इन्द्रायन, वंगभस्म, रूपरस, अभ्रक, मूंगाकी भस्म, इन सबको समान भाग लेवे, और सबकी बराबर लोहेकी भस्म लेवे फिर सबको जलसे खरलकर गोलियां बनावे, इनके सेवन करनेसे भूतोन्माद, वातजन्यउन्माद, मृगी, कृशता, रक्तपित्त, इन सब रोगोको यह उन्मादभञ्जन रस दूर करे।

चतुर्मुखोरसः

मृतसूतस्यभागौद्वौभागैकंहेमभस्मकम्।
शिलाकस्तूरिकातालप्रत्येकहेमतुल्यकम्॥
सर्वंखलुतलेक्षिप्तवाकन्ययामर्दयेद्दिनम्।
एरण्डपत्रै रावेष्ट्यधान्यगर्भेदिनत्रयम्॥
संस्थाप्यचतदुद्धृत्यसर्वरोगेषुयोजयेत्।
एतद्रसायनवरंत्रिफलामधुमर्दितम्॥
तद्यथाग्निबलंखादेद्वलीपलितनाशनम्।
अपस्मारेज्वरेकासेशोषेमन्दानलेक्षये॥
हस्तकम्पेशिरःकम्पेगात्रकम्पेविशेषत।
वातपित्तसमुत्थांश्चकफजान्नाशयेद्ध्रुवम्॥
सर्वौषधिप्रयोगैर्येव्याधयोनप्रसाधिता।
कर्म्मभिःपञ्चभिश्चैवमंत्रौषधिप्रयोगतः।
सर्वांस्तान्नाशयत्याशुवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा।
चतुर्मुखरसोनाममहेशेनप्रकाशितः॥

चन्द्रोदय १ भाग, सुवर्ण २ भाग, मनसिल, कस्तूरी और हरिताल प्रत्येक एक भाग, सबको खरल मे डाल घीगुआर के रस में एक दिन खरल करें, फिर गोला बनाय अरंडके पत्तों से लपेट धान की राशि में ३ दिन तक गाड देवे, चौथे दिन निकाल लेवे, और सर्व रोगों में देवे यह श्रेष्ठ रसायन है इसमें त्रिफला और सहत मिलाके यथाबालानुसार सेवन करे तो वृद्धावस्था को दूर करे, मृगी, ज्वर, खांसी, शोष, मन्दाग्नि, क्षय, हाथो का कापना, देह कापना, तथा वात पित्त और कफ के रोग, अवश्य दूर करे, सम्पूर्ण औषधो के देने से जो रोग दूर न होवे वो, यथा वमन विरेचनादि पच कर्म से एव महौषधादि कसे जो रोग दूर न होवे वो सब इस चतुर्भुज रस के सेवन करने से नष्ट होवे, जैसे इन्द्र के वज्र से वृक्ष नष्ट होते हैं।

उन्मादपर्पटीरसः

कृष्णधत्तूरजैर्बीजैःपञ्चभिःपर्पटीरसः।
संप्रयोज्यप्रशान्त्यर्थमुन्मादभूतसंभवम्॥

पर्पटी रस मे धतूरे के पाच बीजों का चूर्ण मिलाके खावे तो भूतोन्माद दूर होवे।

योगांतरम्

उन्मादेपर्पटीदद्यात्साजावीपयसान्विता।
अपस्मारेपितत्प्रोक्तमेतयोराज्यकेनवा॥

भेड के दूध मे पर्पटी रस देवे तो उन्माद दूर होवे, इसी प्रकार राई के चूर्ण के साथ देने से मृगी दूर हो।

उन्मादध्वंसीरसः

तालकशुल्वकतुल्यगन्धकेनप्रमारयेत्।
तन्मृतञ्चपुटेत्पश्चाद्दत्वागंधसमपुन॥
गुंजाद्वयप्रदातव्यमुन्मादेचवचायुत।
अपस्मारे चसततमुन्मादध्वंसनंरस॥

हरिताल और तांबा बराबर ले और दोनों की बराबर गंधक ले तावेकी भस्म करे फिर इसमे बराबर की गधक मिला के दो रत्ती वच के साथ देवे तो उन्माद दूर होवे, तथा अपस्मार यानी मृगी दूर होवे।

उन्मादगजकेसरीरसः

मूतंगंधंशिलातुल्यस्वर्णबीजविचूर्णयेत्।
भावयेदुग्रगधायाःक्वाथेनमुनिशःपृथक्॥
ब्राह्मीरसेनसप्तैवभावयित्वाविचूर्णयेत्।
रसःसजायतेनूनमुन्मादगजकेसरी॥
अस्यमाषं ससर्पिष्कोलीढोहन्तिहठाद्गद।
उन्मादाख्यमपस्मारभूतोन्मादमपिज्वर॥

पारा, गन्धक, मनसिल, तीनों को समान ले और बराबर के धतूरे के बीज मिलाय सब को कूटपीस वच के रस की ७ भावना और ब्राह्मी के

रस की ७ भावना देवे तो यह उन्मादगजकेशरी रस बने, इसको १ माशे मक्खन के साथ सेवन करे तो बलात्कारसे उन्मादरोग, अपस्मार, भूतोन्माद और ज्वर को दूर करे।

पारदोमारितःसम्यकूतत्तद्रोगहरौपधैः।
संयुक्तंसर्वरोगघ्नोनरकुंजरवाजिनाम् ॥

विधिपूर्वक मरे हुए पारे को जिस २ रोग को जो २ औपधि हरण करे उसके साथ देने से मनुष्य, हाथी और घोडे आदि सबके रोग दुर करे।

अभ्रार्कभूत्याख्यरसस्यवल्लंधत्तूरवीजेनसमंप्रदद्यात्। मरीचचूर्णेनघृतेनवापिपथ्यचगुर्वन्नमिहप्रशस्तम् ॥

अभ्रक और ताम्र दोनो की भस्म ३ रत्ती धतूरे के बीज के साथ अथवा काली मिरच और घी के साथ देवे तो उन्माद रोग दूर हो इस पर भारी अन्न देवे।

अपस्माराधिकारः

सर्वेश्वरोरसः

रसनारंगमूलंचदंतीपाठापृथकपृथक्।
पलमेकंफेनफलमर्कमूलंतथैवच ॥
पलंतुहारिणशृंगंत्रिफलात्रिपलंमत।
एतेपाक्काथसंयुक्तंदिनानित्रीणिमर्दयेत् ॥
अम्लवेतससंयुक्तमर्कक्षारसमन्वितं।
पचपचदिनेतद्वदमनारससंयुत ॥
त्रि.सप्तदिवसंतद्वन्मर्दयेत्सिद्धमौपधं।
पिष्टं चित्रकनिष्काथेवल्लत्रयानिषेवितं ॥
उन्मादापस्मृतीहन्यादेपसर्वेश्वरोरसः।

पारा, नारगी की जड की छाल, दंती, और पाढ प्रत्येक एक तोले लेवे तथा मेनफल और आक के फल ४ तोले, हरन का सींग ४ तोले, त्रिफला १२ तोले, इनके रस मे पारे आदि को खरल करे, पीछे अमलवेत और आक का क्षार मिलाके पाच २ दिन खरल करे पश्चात् दवन पापरा के रस मे २१ दिन खरल करे, फिर चीते के रस में गोलियां वाध के रख छोडे और ६ रत्ती सेवन करे तो उन्माद और मृगी को यह सर्वेश्वररस दूर करे

भूतभैरवः

मृतसूतार्कलौहानांशिलागंधकतालकम्।
रसांजनचतुल्यांशंनरमूत्रेणमर्दयेत् ॥
तद्गोलद्विगुणंगन्धलौहपात्रेक्षणंपचेत्।
पचगुंजामितखादेदपस्मारहरंपरं ॥
हिंगुसौवर्चलव्योपंनरमूत्रेणसंपिबेत्।
कर्षमात्रंपिबेच्चानुरसोयंभूतभैरवः ॥

चन्द्रोदय, ताम्र, लोह, मनसिल और हरिताल इनकी भस्म गन्धक और सुहागा ये बराबर ले मनुष्य के मूत्र मे खरल कर गोला बनावे फिर एक कडाही मे गोले से दूनी गन्धक डाल उसमें गोले को पचावे, इसमे से ५ रत्ती सेवन करे तो अपस्मार दूर हो इसके ऊपर हींग, संचरनोन और त्रिकुटा को मनुष्य के मूत्र से खरल कर घी के साथ एक तोले पीवे इसको भूतभैरवरस कहते हैं।

सूतभस्मप्रयोगः

शंखपुष्पीवचाब्राह्मीकुष्टमेलारसैःसह।
सूतभस्मप्रयोगोयंरक्तिकाद्वयमानत. ॥
सर्वापस्मारनाशायमहादेवेनभाषितः।

शंखाहुली, वच, ब्राह्मी, कूट और छोटी इलायची इनके चूर्ण मे २ रत्ती पारे की भस्म मिलाकर सेवन करे तो सर्व प्रकार के अपस्मार (मृगी) दूर हो यह महादेव ने कहा है।

ब्रह्मवटीः

मृतसूताभ्रकतीक्ष्णतारताप्यविषंसमम्।
पद्मकेशरसंयुक्तंदिनैकंमर्दयेद्द्रवैः ॥
स्नुह्यग्निविजयैरण्डवचानिष्काथशूरणै.।
निर्गुण्ड्याश्वद्रवैर्मर्द्यंतद्गोलंपाचयेत्पुन ॥

कगुनीसर्षपोत्थेनतैलेनगधसयुतम् ।
ततःपक्व वाम्रशुद्ध स्यचचणमात्रावटीकृता ॥
इदंब्रह्मवटीनामभक्षयेद्रार्द्रकद्रवै ।
दशमूलकषायञ्चकणायुक्तंपिवेदनु ॥
अपस्मारजयत्याशुयथासूर्य्योदयेतम ॥

चन्द्रोदय, अभ्रक, तीक्ष्ण लोह, रूप रस, सोना मक्खी और विष को समान भाग ले, इस मे कमल की केशर मिला के एक दिन खरल करे, तथा थूहर, चीता, अरनी, अड, बच, सेमा, जमीकंद और निर्गुंडी इनके रस मे खरल कर गोला बनाय सपुट मे रखकर फूंक देवे, जब स्वाग शीतल हो जाय तब निकाल के गधक मिलाके कागनी और सरसो के तेल की भावना देवे, फिर इस को अग्नि देके चने के प्रमाण गोलिया बनावे, इस ब्रह्म वटी को अदरख के रस के साथ सेवन करे अथवा दशमूल के काढे मे पीपल मिला के पीवे तो मृगी रोग को तत्काल दूर करे; जिस प्रकार सूर्योदय से अंधकार दूर होता है।

वातकुलांतकः

मृगनाभिशिलानागकेशरकलिवृक्षजम् ।
पारदगधकजातीफलमेलालवगकम् ॥
प्रत्येककार्षिकञ्चैवश्लक्ष्णचूर्णञ्चकारयेत ।
जलेनमर्दयित्वातुवटींकुर्याद्द्विरत्तिकाम् ॥
यथाव्याध्यनुपानेनयोजयेच्चचिकित्सकः ॥
अपस्मारेमहाघोरेमूर्च्छारोगेचशस्यते ।
वातजान्सर्वरोगांश्चहन्यादचिरसेवनात् ॥
नातःपरतरश्रेष्ठमपस्मारेपुवर्त्तते ।
ब्रह्मणानिर्मितःपूर्वंनाम्नावातकुलातक ॥

कस्तूरी, मनसिल, नागकेशर, बहेडा, पारा, गधक, जायफल, इलायची और लौंग प्रत्येक एक तोले लेवे, और सब को जल मे वारीक पीस दो-दो रत्ती की गोलिया बनावे, यथा रोगानुसार अनुपानके साथ देवे तो घोर मृगी, मूर्च्छा, वातविकार ये थोडे दिन के सेवन से दूर होवे, इससे परे अपस्मार रोग पर उत्तम प्रयोग अन्य नहीं, यह ब्रह्मा ने निर्माण किया है।

वातव्याधिचिकित्सा

द्विगुणाख्योरसः

गधकाद्द्विगुणसूतशुद्ध मृद्वग्निनातणम ।
पक्व यावताय्यंसंचूर्ण्यतुल्याभयासमन्वितम
सप्तगुंजामितंखादेद्वर्धयेच्चदिनेदिने ।
गुंजैकैकक्रमेणैवयावत्स्यादेकविंशति ॥
क्षीराज्यशर्कराभिश्चशाल्यन्नंपथ्यमाचरेत् ।
कम्पवातप्रशान्त्यर्थंनिर्वातेनिवसेत्सदा ॥
द्विगुणाख्योरसोनामत्रिपक्षात्कम्पवातजित

पारा ४ तोले, गंधक दो तोले, दोनो को थोडी देर अग्नि पर रख के पचावे फिर उतार बराबर का हरड का चूर्ण मिलाय ७ रत्ती खाय और प्रति दिन एक रत्ती बढावे, इस प्रकार २१ रत्ती पर्य्यन्त बढावे, तथा दूध, घी, मिश्री और साठी चावल पथ्य मे देवे, और पवनरहित स्थान मे रहे तो यह द्विगुणाख्यरस तीन पक्ष ४५ दिन मे कम्पवायु को दूर करे।

वातगजांकुशः

मृतसूतंमृतलौहताप्यगधकतालकम् ।
पथ्याशृंगीविषव्योषमग्निमन्थञ्चटंकणम् ॥
तुल्यखल्वेदिनंमर्द्यं मुण्डीनिर्गुण्डिकाद्रवैः ।
द्विगुञ्जांवटकाखादेत्सर्ववातप्रशान्तये ॥
कणाचूर्णयुतञ्चैवजिंगीक्वाथंपिवेदनु ।
साध्यासाध्यंनिहन्त्याशुरसोवातगजांकुशः ॥
क्रोष्टुशीर्षकवातचाप्यववाहुकसज्ञकम् ।
मन्यास्तम्भमुरुस्तम्भहनुस्तम्भविनाशयेत् ॥
पक्षाघातादिरोगेपुकथित परमोत्तमः ।

चन्द्रोदय, सार, सुवर्ण मक्खी की भस्म, गधक, हरिताल, काकडा सिंगी, विष, त्रिकुटा, अरनी और सुहागे को समान ले गोरख मुंडी और निर्गुंडी के रस से एक दिन खरल कर दो २ रत्ती की गोलिया बनावे, एक गोली पीपलके चूर्ण के साथ खाय ऊपर से जिंगिणीका काढा पीवे तो साध्यासाध्य वातरोगो को यह वातगजांकुश

रस शीघ्र दूर करे, क्रोष्टुकशीर्षक, अपबाहुक, उरुस्तभ, मन्यास्तंभ, हनुस्तम, और पक्षाघातादिक रोगों को यह परमोत्तम रस है।

बृहद्वातगजांकुशः

रसोवारिशोषणोत्रयुक्तोन्योयोगवाहिक.।
सूताभ्रतीक्ष्णकान्तानिताम्रतालकगन्धकम्॥
स्वर्णशुंठीबलाधान्यकट्फलचभयाविषम्।
पथ्याशृंगीपिप्पलीचमरिचंटकणतथा।
तुल्यंखल्वेदिनमर्द्यं मुण्डीनिगुंण्डजैर्द्रवैः॥
द्विगुंजावटिकाखादेत्सर्ववातप्रशान्तये।
साध्यासाध्यनिहन्त्याशुबृहद्वातगजांकुशः॥

इस वात व्याधि रोग मे वारिशोषण रस देवे, अथवा जो और योगवाही रस हो वो देने चाहिये, पारा, अभ्रक, सार, कान्तलोहकी भस्म, ताम्रभस्म, हरिताल, गधक, सुवर्ण, सोठ, खरैटी, धनियां, कायफर, हरड, विष, छोटी हरड, काकडासिंगी, पीपल, काली मिरच, और सुहागे को समान भाग ले गोरख मुंडी और निगुंण्डी के रस में खरल कर दो २ रत्ती की गोलिया बनावे इस के खाने से साध्य और असाध्य सर्व प्रकार की वात दूर हो, इसे बृहद्वातगजांकुश कहते हैं।

महावातगजांकुशः

मृताभ्रतीक्ष्णताम्रचसूततालकगन्धकम्।
भार्ङ्गीशुंठीबलाधान्यंकट्फलञ्चाभयाविषम्॥
संपिष्यचपलाद्रावैर्निष्कैकाभक्षयेद्वटीम्।
वातश्लेष्महरोह्येषरुरुवातगजांकुश.॥

अभ्रक, तीक्ष्णलोह की भस्म, ताम्र भस्म, पारा, हरिताल, गधक, भारगी, सोठ, खरैटी, धनिया, कायफर, हरड और विष को पीपल के रस मे पीस ४ माशे की गोली सेवन करे तो वातकफ तथा उरुवात को दूर करे।

वातनाशनोरसः

सूतहाटकवज्रानिताम्रलौहंचमाक्षिकम्।
तालनीलांजनंतुल्यंसिन्धुफेणसमाशकम्॥
पचानांलवणानाचभागैकसुविमर्दयेत्।
वज्रीक्षीरैर्दिनेकन्तुरुद्धान्तभूधरेपचेत्॥
माषैकमार्द्रकद्रावैर्लिह्याद्वातविनाशनम्।
पिप्पलीमूलजकाथसकृष्णमनुपाययेत्॥
सर्वान्वातविकारांश्चनिहन्त्याक्षेपकादिकम्।

पारा, सुवर्ण, हीरा, ताम्र, लोह, माक्षिक, हरिताल, नीला सुरमा, नीला थोथा, समुद्र फेन इन को समान भाग ले, और एक भाग पाचो निमक लेवे, सब को सपुट में रख भूधर यंत्र मे एक दिन पचावे, इस को एक माशे अदरख के रस के साथ चाटे तो वादी दूर होवे, इस पर पीपलामूल का काढा पीवे, पीपलका चूर्ण डाल के यह सम्पूर्ण आक्षेपादिक वातविकारो को दूर करे, परन्तु सुवर्ण हीरा आदि की भस्म डालनी चाहिये।

वातारिरसः

रसभागोभवेदेकोद्विगुणोगन्धकोमतः।
त्रिगुणात्रिफलाग्राह्याचतुर्भागन्तुचित्रकम्॥
गुग्गुलो.पञ्चभागमेरण्डतैलेनमर्दयेत्।
गुटिकाकर्षमात्रान्तुभक्षयेत्प्रातरुत्थितः॥
नागरैरडमूलानांकाथतदनुपाययेत्।
अगमेरण्डतैलेनस्वेदयेत्पृष्ठदेशतः॥
विरेकेतेनसंजातेस्निग्धमुष्णञ्चभोजयेत्।
वातरिसञ्ज्ञकोह्येषरसोनिर्वातसेवितः॥

पारा १ तोले, गन्धक दो तोले, त्रिफला ३ तोले चित्रक ४ तोले, प्रथम पाच तोले गूगलको अडी के तेलमे खरल कर फिर अन्य सब वस्तुओंको मिलाय उसी अडीके तेलसे खरलकर एक २ तोले, की गोलियां बनावे, और प्रात.काल खाकर ऊपर से सोठ और अण्डीकी जडका काढा पीवे तथा रोगीकी पीठमे अण्डीके तेलकी मालिश करे, जब दस्त होजावे तब चिकना और गरम पदार्थ भोजन करावे, इस वातारिरसका सेवनकर्त्ता पवनरहित स्थानमे रहे।

अनिलारिरसः

रसेनगन्धंद्विगुणंविमर्द्य वातारिनिगुंण्डिरसै-

दिनैकम् । निवेशयेत्ताम्रमयेपुटेतत्सर्वंमुदावेष्ट्यचवालुकाख्ये ॥ यत्रपुटेद्गोमयचूर्णवन्हीस्वभावशीतेतुसमुद्धरेत्तत् । निर्गुण्डिकावातहराग्नितोयैःसचूर्ण्ययत्नेनविभावयेत्तत् ॥ रसोनिलारिःकथितोस्यवल्लमेरण्डतैलेनससैन्धवेन । मरीचचूर्णेनससर्पिषावानिर्गुण्डिचित्रैश्चकटुत्रिकैर्वा ॥

पारा १ तोले, गन्धक दो तोले, दोनोकी कजलीकर अंड और निर्गुण्डीके रससे एक २ दिन खरल करे फिर उसको तावेके संपुटमें रख कपरमिट्टीकर वालुकायत्रमें आरने उपलोंकी अग्नि देवे, जब स्वांगशीतल होजावे तब निकालके निर्गुण्डी, अड, चीता, इनके रसोकी पृथक्-पृथक् भावना देवे, तो यह अनिलारीरस दो वा तीन रत्ती अडीके तेल वा सैंधेनिमकके साथ अथवा काली मिरच कौर घीके साथ अथवा निर्गुण्डी चीता और त्रिकुटाके साथ सेवन करे तो सर्व प्रकारकी वात दूर हो ।

वातकण्टकोरसः

वज्रंमृताभ्रहेमार्कतीक्ष्णमुण्डकमोत्तरम् ।
मरिचंमर्दयेदम्लवर्गेणदिवसत्रयम् ॥
द्विक्षारंपञ्चलवणमर्दितस्यात्समसमम् ।
ततोनिर्गुण्डिकाद्रावैर्मर्दयेद्दिवसत्रयम् ॥
शुष्कमेतद्विचूर्ण्याथविषञ्चस्याष्टमांशत. ।
टंकणंत्रिषतुल्यांशदत्वजम्बीरकद्रवैः ॥
भावयेद्दिनमेकन्तुरसोयंवातकण्टकः ।
दातव्योवातरोगेषुसन्निपातेविशेषतः ॥
निर्गुण्डीमूलचूर्णन्तुमहिषाख्चगुग्गुलुम् ।
समांशमर्दयेदाज्येतद्वटीकर्षसन्मिता ॥
अनुयोज्यघृतैर्नित्यस्निग्धमुष्णंचभोजयेत् ।
मंडलनाशयेत्सर्ववातरोगविशेषतः ॥
सन्निपातेपिबेच्चानुतालमूलीकषायकम् ।

हीरा, अभ्रक, सुवर्ण, तावा, तीक्ष्णलोह, और मुंडलोह इनकी भस्म, और काली मिरच क्रमसे वढती लेवे और सबको अम्लवर्गमे (जो इस ग्रन्थके मध्यमें लिखा है) तीन दिन खरल करे फिर सुहागा, सज्जीखार, पांचों निमक, बराबरके लेकर पृथक् २ खरल करे, फिर निर्गुण्डीके रसमें तीन दिन खरल करे, जब सूख जावे तब चूर्णकर इसमें आठवां भाग सिंगियाविष मिलावे, और विषके समान सुहागा मिलावे, सबको जभीरीके रसमें एक दिन खरल करे तो यह वातकण्टक रस बने, इसको वातरोग तथा सन्निपात रोगमें देना चाहिये, निर्गुण्डीकी जडका चूर्ण और भैंसागूगलको समान लेकर घीमें खरलकर एक २ तोलेकी गोलिया बनावे और इस गोलीको रसके ऊपर घीके साथ खिलावे तथा चिकना और गरम भोजन देवे, तो देहके चकत्ते और सम्पूर्ण वातविकारोंको दूर करे । सन्निपातवाला इसको खाकर ऊपरसे मूसलीका काढा पीवे तो सन्निपात दूर हो ।

लघ्वानन्दोरसः

पारदगंधकंलोहमभ्रकंविषमेवच ।
समांशमरिचस्याष्टौटंकणन्तुचतुर्गुणम् ॥
भृंगराजरसेनैवदातव्यापञ्चभावना ।
तथादाडिमतोयेनवटीकुर्य्यात्सममाहितः ॥
निहन्तिवातजान्रोगान्भ्रमदाहपुरःसरान् ।

पारा, गन्धक, लोह, अभ्रक, तथा विष ए समान भाग लेके तथा काली मिरच एक औषधसे अठगुनी और सुहागा चौगुना लेके भांगरेके रसकी पाच भावना देवे, फिर अनारके रसकी भावना देकर गोलिया बनावे, यह भ्रम और दाहयुक्त सम्पूर्ण वातरोगोको दूर करे ।

चिन्तामणिरसः

कर्षैकरससिन्दूरतत्समंमृतभस्मकम् ।
तदर्द्धंमृतलौहञ्चस्वर्णांशाणक्षिपेद्बुधः ॥
कन्यारसेनसमर्द्यगुञ्जमानावटीञ्चरेत् ।
अनुपानादिकदद्याद्बुध्वादोषबलाबलम् ॥
हन्तिश्लेष्मान्वितवातकेवलपित्तसंयुतम् ।
हृल्लासमरुचिंदाहवान्तिभ्रान्तिशिरोग्रहम् ॥

प्रमेहंकर्णनादञ्चज्वरगद्गदमूकताम् ।
बाधिर्य्यंगर्भिणीरोगमश्मरीसूतकामयम् ॥
प्रदरंसोमरोगञ्चयद्माणज्वरमेवच ।
बलवर्णाग्निदःसम्यक्कान्तिपुष्टिप्रसाधकः॥
चिन्तामणिरसश्चायञ्चिन्तामणिरिवापरः।

रससिन्दूर और अभ्रक एक तोले, सार ६ माशे, स्वर्ण भस्म ४ माशे, सबको घीगुवारके रसमें खरलकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे, इसपर वैद्य अपनी बुद्धिसे बलाबल विचारके अनुपान कल्पना करे तो यह कफयुक्त वादी, केवल वादी, पित्तयुक्त वादी, हल्लास, अरुचि, दाह, वमन, भ्रान्ति, मस्तक पीडा, प्रमेह, कर्णनाद, ज्वर, गद्गद् बोलना, गूगापन, बहरापन, गर्भिणीके रोग, पथरी, प्रसूतरोग, प्रदर, सोयरोग, खई और ज्वरको दूर करे, बल वर्ण और अग्नि को देवे, कान्ति और पुष्टिको करता है, यह चिन्तमणिरस चिन्तामणिके समान है ।

चतुर्मुखोरसः

रसगंधकलौहाभ्र समसूताघ्रिहेमच ।
सर्वंखल्लतलेक्षिप्त्वाकन्याम्बुरसमर्दित ॥
एरण्डपत्रैरावेष्टयधान्यराशीदिनत्रयम् ।
संस्थाप्यचतदुद्धृत्यत्रिफलारससयुतम् ॥
एतद्रसायनवरंसर्वरोगेपुयोजयेत् ।
तद्यथाग्निवलंखादेद्वलीपलितनाशनम् ॥
पौष्टिकंवल्यमायुष्यपुत्रप्रसवकारकम् ।
क्षयमेकादशविधकासपंचविधंतथा ॥
कुष्टमेकादशविधपाण्डुरोगान्प्रमेहकान् ।
शूलंश्वासञ्चहिक्कांचमन्दाग्निंचाम्लपित्तकान्
अपस्मारंमहोन्मादंसर्वाशांसित्वगामयान् ।
क्रमेणशीलितहन्तिवृक्षमिन्द्राशनिर्य्यथा ॥
जगतांचहितार्थायचतुर्मुखमुखोदित ।
रसश्चतुर्मुखोनामचतुर्मुखइवापर. ॥

पारा, गंधक, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, इनको समान भाग लेवे, और पारेकी चौथाई सोनेकी भस्म मिलावे, सबको खरलमे डाल घीगुवारके रससे खरलकर गोला बनाय, अरडके पत्तोसे लपेट तीन दिन धानकी राशिमे गाड रखे फिर निकालकर त्रिफलाके काढेकी भावना देवे तो यह उत्तम रसायन सर्वरोग हरणकर्त्ता बने, इसको बलाबल देखकर देवे तो वलिपलितताको दूर करे, पुष्टि तथा बल करे, आयुको बढावे, पुत्र कारक है, ग्यारह प्रकारकी खई, पाच प्रकारकी खांसी ग्यारह प्रकारका महाकुष्ठ, पांडुरोग, प्रमेह, शूल, श्वास, हिचकी, मन्दाग्नि, अम्लपित्त, मृगी, घोर उन्माद, सब प्रकारकी बवासीर, त्वचाके रोग, इन सबको यह क्रमके साथ खानेसे दूर करता है, यह संसारके कल्याणार्थ ब्रह्माने कहा है इसी कारण इसको चतुर्मुख कहते हैं ।

लक्ष्मीविलासोरसः

पलंकृष्णाभ्रचूर्णस्यतदर्द्धौरसगन्धकौ ।
बलानागबलाभीरूविदारीकन्दमेवच ॥
कृष्णधत्तूरनिचुलगोक्षुरवृद्धदारयो ॥
बीजंशक्राशनस्यापिजातीकोषफलेतथा ।
कर्पूरञ्चैवकर्षांशंलक्ष्णचूर्णंपृथक्पृथक् ।
गृहीत्वाचाष्टमांशेनस्वर्णपर्णरसेनच ॥
वटिकास्विन्नचणकप्रमाणाकारयेद्भिषक् ।
रसोलक्ष्मीविलासोयपूर्ववत्गुणकारकः ॥

काली अभ्रकका चूर्ण ४ तोले, पारा, गन्धक दोनो दो तोले लेवे, सबको खरल कर खरेटी, गगेरन, शतावर, विदारीकन्द, काला धत्तूरा, बेत, गोखरू, विधायरा, इन्द्रजौ, जायफल, जावित्री भीमसेनी कपूर, इन सबका पृथक् २ चूर्ण कर हिरनडोडीका रस मिलाके चनेके प्रमाण गोलिया बनावे, यह लक्ष्मीविलासरस (चतुर्मुख रसके समान गुणकर्त्ता है

रोगेभसिंहश्रीखंडवट्यौ.

सूताद्ब्योघनवरानलवेल्लभार्ङ्गी ।
तिक्ताकटुत्रयवरैःसवचैःसमांशै ॥
रोगेभसिंहइतिवातकफामयघ्न' ।
सान्द्रोयमल्पपटुतोविहितोद्विगुञ्ज. ॥

एतैर्गुडिप्रमृदितैरसवर्जितैः स्यात् ।
श्रीखण्डनामगुटिकाविहिताद्विगुंजा ॥
शैत्याद्यजीर्णकफवातभवान्विकारान् ।
हन्त्यार्द्रकेननियुताप्यथकेवलावा ॥

पारा दो तोले, नागरमोथा, त्रिफला, चीते की छाल, वायविडंग, भारंगी, कुटकी, त्रिकुटा, और बच प्रत्येक एक तोला लेवे तो यह रोगेभसिंह रस बादी और कफके रोगोंका नाश करे, इसको किंचित् नमकके साथ सेवन करे, यदि इसमें गुड मिलाके दो २ रत्तीको गोलिया बनावे परन्तु इनमें पारा न डाले तो श्रीखडनामक गुटिका बने, यह शीत, अजीर्ण, कफ वातके विकारोंमें अदरखके रसके साथ अथवा फकत श्रीखण्ड ही सेवन करे ।

पिण्डीरसः

सूतात्पञ्चार्कतश्चैकंकृत्वापिण्डसुगन्धकम् ।
सूताशनागशल्लयाश्चद्रवैःपिष्ट्वाप्रलेपयेत् ॥
ताम्रपत्रींमुखेदत्वारुध्वागजपुटेपचेत् ।
द्विगुञ्जंत्र्यूषणेनाद्ध्धनुर्वातंसकम्पकं ॥
निहन्तिदाहसतापमूर्च्छापित्तसमन्वितम् ।

पारा ५ तोले, तावेकी भस्म १ तोले. गधक ५ तोले, सबको पानके रसमे पीस तावेके पत्रों पर लेप कर गजपुटमें रखके फूंक देवे, स्वागशीतल होनेपर निकालके दो रत्ती रसको त्रिकुटा के साथ सेवन करे तो धनुर्वात, कंपवात, दाह, संताप और पित्तसहित मूर्च्छाको दूर करे ।

कुब्जविनोदरसः

रसगधौसमौशुद्धौचाभयातालकतथा ।
विषकटुत्रिकव्योपञ्चबोलजैपालकौसमौ ॥
भृंगराजरसेमर्द्य स्नुह्यर्कस्वरसैस्तथा ।
गुञ्जाद्वयभक्षयेच्चहृच्छूलपार्श्वशूलकम ॥
आमवाताढ्यवातादीन्कटीशूलञ्चनाशयेत् ।
अग्निञ्चकुरुतेदीप्तिस्थौल्यचाप्यपकर्षति ॥
रसःकुब्जविनोदोयंगहनानन्दभापितः ।

पारा और गन्धक समान भाग लेवे, हरड, हरिताल, विष, कुटकी, त्रिकुटा, बीजाबोल, और जमालगोटा इन सबको बराबर ले, भागरेके रस, थूहर और आकके दूधमें खाल कर गोलियां बनावे तो हृदय और पसवाडेके शूल, आमयुक्त बादी, कमरकी बादीको हरणकर अग्नि दीप्ति करे, स्थूलताको हरण करे, यह कुब्ज विनोदी रस गहनानन्द योगीने कहा हैं ।

शीतारिरसः

हिमवन्तिहिगात्राणिरोगाणिस्फूरितानिच ।
शिरोक्षिवेदनालस्यशीतवातस्यलक्षणम् ॥
रसेनगंधद्विगुणंप्रगृह्यपुनर्नवाग्निस्वरसैर्विभाज्य । पकाकपत्रस्यरसेनपश्चाद्विपाचयेदष्टगुणेनयत्नात् ॥ रसार्द्धभागञ्चविषञ्चदत्वा विपाचयेदग्निजलैस्तणतत् । शीतारिसंज्ञस्य रसायनस्यवलञ्चसार्द्धमरिचार्द्रकेण ॥ मरीचचूर्णेनघृतप्लुतेनसेवेतमांसञ्चघृतञ्चपथ्यम् ।

जिस प्राणीका शीतल देह हो, और बादीका रोग हो मस्तक और नेत्रमें पीड़ा होवे और आलस्य हो ये शीतवातके लक्षण हैं । १ तोले पारा और दो तोले गन्धककी कजली कर पुनर्नवा और चीतेके रसकी भावना देवे, फिर आक के पके पत्तोंके अठगुने रसमे वालुकायन्त्रद्वारा पचावे फिर पारेसे आधा विष डालके चीतेके रस से पचावे, यह शीतारिसंज्ञक रस परम रसायन बने, वलावल देखकर काली मिरच और अदरख के साथ अथवा घृत और काली मिरचके चूर्णके साथ देवे, पथ्यमे मासरस और घी देवे तो यह रस वातरोगको दूर करे ।

वातविध्वंसिनोरसः

सूतमभ्रकसत्वंचकांस्यशुद्धंचमाक्षिकम् ।
गधकतालकसर्वंभागोत्तरविवर्द्धितम् ॥
कज्जलीकृत्यतत्सर्वंवातारिस्नेहसयुतम् ।
सप्ताहमदयित्वातुगोलकीकृत्ययत्नत ॥

निम्बुद्रवेणसंपीड्यतिलकल्केनलेपयेत् ।
अर्द्धांगुलदलेनैवपरिशोष्यप्रयत्नतः ॥
प्रपचेद्वालुकायन्त्रे द्वादशप्रहरंततः ।
जठरस्यरुजःसर्व्वास्तथाचमलविग्रहं ॥
आध्मानकतथानाहविपुर्चीवन्हिमांद्यकम् ।
आमदोषमशेषचगुल्मछर्दिंचदुर्जरम् ॥
ग्रहणींश्वासवासौचकृमिरोगविशेषतः ।
हन्यात्सर्वांगशूलंचमन्यास्तभंतथैवच ॥
ज्वरेचैवातिसारेचशूलरोगेत्रिदोषजे ।
पथ्यरोगानुसारेणदेयमस्मिन्भिषग्वरैः ॥
श्रीमतानन्दनाथेनवातविध्वंसिनोरसः ।

शुद्ध पारा, अभ्रक, मरत्र, कास्य, शुद्ध सुधर्षे मक्खी, गधक और हरिताल क्रम से एक से दूसरी अधिक लेवे और कजली करके अडी के तेल में ७ दिन खरल करे, फिर गोला बनाय नीबू के रस मे तर कर तिल का कल्क आध अगुल उस पर लपेटे उस को सुखा के १२ प्रहर वालुका यत्र मे पचावे तो यह रस उदर के रोग, मल का रुकना, अफरा, अनाह, विशूचिका, मन्दाग्नि, आम दोष, गोला, छर्दि, संग्रहणी, श्वास, खासी, कृमि रोग, सर्वांग शूल मन्यास्तभ, ज्वर, अतिसार, त्रिदोष का शूल, रोग इन सब रोगों को यह दूर करे, इस पर वैद्य रोगानुसार पथ्य बतावे, यह आनदनाथ का कहा वात विध्वंसन रस है ।

पलाशादिवटी

पलाशबीजोत्थरसेनसूतंगधेनयुक्तं त्रिदिनंविमद्य । श्लक्ष्णीकृतन्तद्विषतिन्दुबीजंसंयोजयेदस्यकलाप्रमाणम ॥ माषद्वयंनिष्कमित प्रयत्नादर्शांसिहन्त्वाशुनियोजनीयम् ॥
वातरक्तंतथाशोथमस्पर्शाख्यानिलामयम ।
वातवत्पित्तरोगेपित्तत्रपित्तेनभावयेत् ॥
पलाशादिवटीख्यातावातरोगकुलान्तिका ।

ढाक के बीजो के रस में पारे और गंधक को खरल कर इस कजली के सोलहवे भाग कुचला के बीज डाले, और सब को घोट कर चार चार मासे की गोलिया बनावे, और दो महीने सेवन करे तो बवासीरको दूर करे, वातरक्त, सूजन जिस मे स्पर्श न सुहावे ऐसी वादी को दूर करे, इसी प्रकार पित्त के रोगो मे पित्तहरणकर्त्ता औषधियो के रस की भावना देकर पित्त रोग मे देवे, अथवा पाचों पित्तों की भावना देवे, यह पलाशादि वटी सर्व वातरोगो को हरण करने वाली है ।

दशसारवटी.

यष्टिधात्रीवलाद्राक्षाएलाचन्दनवालुकम् ।
मधूकपुष्पखर्जूरंदाडिमपेषयेत्समम् ॥
सर्वंतुल्यासितायोज्यापलार्द्धंभक्षयेत्सदा ।
दशसारवटीख्यातासर्ववातविकारनुत् ॥
अथदाडिममित्यत्रगणमिच्छन्तिचापरे ।

मुलहटी, आमले, खरैटी, दाख, इलायची, चन्दन, एलुआ, महुआ के फूल, छुहारे और अनारदाने सब को बराबर ले कर पीसे और सब की बराबर मिश्री मिलाके दो तोले नित्य भक्षण करे तो यह दश सार वटी सर्व वात विकारो को दूर करे, किसी २ प्राचीन वैद्य की यह सम्मति है कि इस मे दाडिमादिगण और मिलावे ।

गगनादिवटी.

मृतगगनरसार्कंमुण्डतीक्ष्णसताप्यम् ।
सवलिसममिदस्याद्यष्टितोयप्रपिष्टम् ॥
तदनुसलिलजातैर्वासकैर्गोस्तनीभिः ।
मृदितमनुविदारीवारिणाघस्रमेकम् ॥
घृतमधुसहितेयनिष्कमात्रावटीति ।
क्षपयतिगुरुवातपित्तरोगक्षयच ॥
भ्रममदकफशोषान्दाहतृष्णासमुत्थान् ।
मलयजमिहपेयचानुपेयसचन्द्रम् ॥

अभ्रक भस्म, चन्द्रोदय, ताम्र भस्म, मुण्डलोह और तीक्ष्ण लोह की भस्म, सुवर्णमाक्षिक की भस्म, और गधक इन सब को समान भाग ले मुलहटी के रस मे घोटे, फिर कमल, अडूसा, मुनक्का दाख और विदारी कद के रस मे एक २

दिन खरल कर घी और सहत मे चार २ मासे की गोलियां बनावे, यह घोर वात के रोग, पित्त के रोग क्षय, भ्रम, मद, कफ, शोष, दाह और प्यास को दूर करे, इस पर चन्दन और खस मिला जल पीवे ।

सर्वांगसुन्दरोरसः

शुद्धसूताभ्रताम्रायोहिंगुलंकार्षिकंसमम् ।
गंधकश्चैकभागःस्यात्तत्सर्वंसैकत्रमर्दयेत् ॥
सप्तपर्णार्कस्नुकक्षीरवासावातारिवारिणा ।
विषमुष्टिसमंसर्वं पेष्यंतद्गोलकीकृतम् ॥
विपचेद्वालुकायन्त्रे द्वियामान्तेसमुद्धरेत् ।
पिप्पलीविषसंयुक्तोरसःसर्वांगसुन्दरः ॥
सर्ववातविकारघ्नःसर्वशूलनिषूदनः ।

शुद्ध पारा, अभ्रक, ताम्र भस्म, लोह भस्म और गंधक प्रत्येक एक तोले लेवे, सब को खरल कर सतौना, आक, थूहर का दूध, अडूसा और अंड के रस से बराबर का कुचला मिलाकर पीसे फिर गोला बनाय वालुका यंत्र मे पचावे दो प्रहर उपरान्त उतार लेवे, इस सर्वांगसुन्दर को पीपल और विष के साथ सेवन करे तो सम्पूर्ण वातरोगों को और सब प्रकार के शूलों को दूर करे ।

तालकेश्वरः

एकभागोरसस्यस्याच्छुद्धस्तालैकभागिकः ।
अष्टौस्युर्विजयायाश्चगुटिकागुडतश्चरेत् ॥
एकैकांभक्षयेत्प्रातश्छायायामुपवेशयेत् ।
तालकेश्वरनामायरोगश्चास्पर्शनाशनः ॥

शुद्धपारा और शुद्ध गंधक प्रत्येक एक तोले, भाग ८ तोले, इस मे बराबर का गुड मिला के गोलिया बनावे और एक गोली खाय छाया मे रहे तो यह तालकेश्वर रस स्पर्श होना न मालूम हो ऐसे वात रोग को दूर करे ।

त्रैलोक्यचिन्तामणिरसः

हीरंसुवर्णंसुमृतश्चतारंलोहंसमंतीक्ष्णरजश्च तुल्याम् । सममृताभ्रं रससिन्दुरश्चनिष्पिष्यतीक्ष्णस्यतथाश्मनोवा ॥ खल्लेद्रवेणैवकुमारिकायागुञ्जाप्रमाणांवटिकांप्रकुर्यात् । त्रैलोक्यचिन्तामणिरेषनाम्नासम्पूज्यसम्यग्गिरिजान्दिनेशम् ॥ हन्त्यामयानरोगगणैर्विवर्ज्यामयप्रयोगाशयमुनिप्रणीतम् । अस्यप्रसादाज्जगदानशेषानजराविनिर्जित्यमुदंविभर्ति ॥ स्निग्धकफेत्वार्द्रकस्यरसेनपाययेत्सुधीः । शुष्केचमाक्षिकेणैवपित्तेतुनसितायुतम् ॥ श्लेष्मवातकेसम्यग्दुष्टं चप्रमेहादिते । कणाचूर्णं क्षौद्रयुतंप्रमेहेदुग्धसंयुतम् ॥ बलवर्णाग्निजननःकासघ्नःकफवातजित् । आयुःपुष्टिकरोवृष्यःसर्वरोगनिषूदनः ॥ तारशब्देनात्रशुद्धमौक्तिकमेवोच्यतेनतुरजतम् । हीरंस्वर्णं सुशुद्धं चमौक्तिकमितिपाठान्तरदर्शनात् ॥

हीरा, सुवर्ण, मोती, और तीक्ष्ण लोह को समान भाग लेवे सब के बराबर अभ्रक भस्म लेवे, और अभ्रक भस्म के बराबर रस सिंदूर लेवे, सब को लोहे के खरल मे अथवा पाषाण के चिकने खरल में घीगुवार के रससे खरल कर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, इस त्रैलोक्य चिन्ता मणि रस को भगवती और सूर्य्य का पूजन कर भक्षण करे, इस को सैकडो प्रयोगो करके जो रोग दूर न हुआ हो उस के दूर करने को मुनीश्वरों ने कहा है । इस रस के प्रभाव से सम्पूर्ण रोग और बुढापा दूर हो, गीले कफ रोग में अदरख के रस के साथ देवे, शुष्क कफ में सहत के साथ, पित्त रोगों मे मक्खन मिश्री के साथ, वातकफ के रोगों मे पीपल के चूर्ण और सहत के साथ, प्रमेह मे दूध के साथ देवे, यह बल, वर्ण और जठराग्नि को बढावे, खासी और कफवात को दूर करे, आयुष्य और पुष्टि करे, और सर्व रोगो को दूर करे, इस मे तारशब्द करके मोती इस कारण ग्रहण किया है कि अन्यत्र लिखा है, "हीर स्वर्ण सुशुद्ध च मौक्तिक" इत्यादि ।

स्वच्छन्दभैरवोरसः

शुद्धसूतंमृतलोहताप्यगन्धकतालकम् ।
पथ्याग्निमन्थनिर्गुण्डीत्र्यूषणटंकणविषम् ॥

तुल्यांशंमर्दयेत्खल्लवेदिनंनिर्गुण्डिकाद्रवैः ।
मुण्डीद्रावैर्दिनैकंतुद्विगुंजंवटिकीकृतम् ॥
भक्षयेद्वातरोगार्त्तोनाम्नास्वच्छन्दभैरवः ।
रास्नामृतादेवदारुशुंठीवातारिसूजत ॥
सगुग्गुलपिबेत्कोष्णमनुपानसुखावह ।

शुद्धपारा, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिक, गंधक, हरिताल, छोटी हरड, अरनीकी जड, निर्गुंडी, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा और विषको समान भाग लेवे और निर्गुंडीके रसमे एक दिन खरल कर गोरखमुंडीके रसमे एक दिन खरल करके दो २ रत्तीकी गोलिया बनावे, इसको स्वच्छन्द भैरव रस कहते हैं, इसको रास्ना, गिलोय देवदारू, सोठ, और अरण्डकी जडके काढ़ेमे गिलोय डालकर देवे तो सर्व वायुविकार दूर हो ।

वातराक्षसरसः

मृतसूतंतथागन्धंकान्तंचाभ्रकमेवच ।
ताम्रभस्मकृतंसम्यङ्मर्दयित्वासमांशकम् ॥
पुनर्नवागुडूच्यग्निसुरसात्र्यूषणंतथा ।
एतेषांस्वरसेनैवभावयेत्रिदिनंपृथक् ॥
दत्वालघुपुटसम्यक्स्वांगशीतसमुद्धरेत् ।
वातराक्षसनामायवातरोगेप्रयोजयेत् ॥
तत्तद्रोगानुपानेनद्विगुंजामात्रसेवनात ।
उरुस्तभंवातरक्तंगात्रभंगतथैवच ॥
आमवातंधनुर्वातवेदनावातमेवच ।
पक्षाघातकपवातंसर्वसंधिगततथा ॥
सुप्तवातवातशूलमुन्मादञ्चविनाशयेत् ।
तत्तद्रोगानुपानेनवाताशीतिविनाशन. ॥

पारदभस्म, गन्धक, कान्तलोहकी भस्म, अभ्रकभस्म, और ताम्रभस्मको, समान भाग लेवे सबको खरलकर सोठ, गिलोय, चीता, तुलसी, और त्रिकुटा इनके स्वरसमें पृथक् २ तीन २ दिन खरल करे, फिर लघुपुट देवे, जब शीतल होजावे तब निकाल ले इसको वातराक्षस रस कहते हैं, इसको वातरोगपर देवे, और पृथक् २ रोगोके अनुपानसे इसे देवे तो उरुस्तभ, वातरक्त, देह का बिगडजाना, आमवात, धनुर्वात, वेदनावात, पक्षाघात, कम्पतवात, सर्व सन्धिगतवात, सुप्तवात, वातशूल, और उन्मादको दूर करे, इसको अनुपानके साथ देनेसे ८० प्रकारकी वातको दूर करे ।

समीरगजकेसरी.

नवाहिफेनकुचिलंनवानिमरिचानिच ।
समभागानिसर्वाणिरक्तिकाप्रमितानिच ॥
देयासमरिचैतानिपुनस्ताम्बूलचर्वणं ।
कुब्जेचखंजवातेचसर्वजेगृध्रसीग्रहे ॥
अपबाहौप्रयोक्तव्यःशोफेकपेप्रतानके ।
विषूच्यामरुचौदेयमपस्मारेविशेषतः ॥

नवीन अफीम, कुचला, नवीन काली मिरच इनको समान भाग ले इसमेसे १ रत्ती देवे और ऊपरसे पान खाय तो कुब्जवात, खजवात, सर्वजवात, गृध्रसी, अपबाहुक, सूजन, कम्प, प्रतान वायु, विशूचिका और अपस्मारको दूर करे ।

मृतसंजीवनीरसः

म्लेच्छस्यभागाश्चत्वारोतदर्द्धंविषसयुतम् ।
टकणदतिवीजचआर्द्रकस्यरसेनवै ॥
एतत्सर्वंक्षिपेत्खल्वेमर्द्यंयामद्वयभिषक् ।
भानुदुग्धैर्महोदर्याद्विगुंजंभक्षयेत्सदा ॥
वातव्याधिमुरुस्तभमामवातविशेषतः ।
ग्रहण्यर्शोविकारेपुज्वरमष्टविधतथा ॥
निहन्तितत्क्षणादेवतम.सूर्योदयेयथा ।
मृतसजीवनोनामप्रख्यातोरससागरे ॥

हींगलू ३ तोले, विष २ तोले, सुहागा और जमालगोटा प्रत्येक एक तोले, इस प्रकार सबको एकत्र कर अदरखके रससे दो प्रहर खरल करे फिर आकके दूध और शतावरके रसकी भावना देकर दो दो रत्तीकी गोलिया बनावे, एक गोली देनेसे वातरक्त, उरुस्तभ, आमवात, सग्रहणी, बवासीर, और आठ प्रकारके ज्वर इनका नाश करे ।

सूर्य्यप्रभावटी.

चित्रकत्रिफलानिंबपटोलमधुयष्टिका ।
वरांगकेशरचैवयवानीचाम्लवेतसं ॥

भूनिंबकंचदार्व्येलामुस्तापर्पटकंतथा ।
तुत्थकक्कटुकाभार्ङ्गीचव्यपद्माकदीप्यकैः ॥
पिप्पलीमरिचदंतीशठीशुंठीसपुष्करम् ।
विडंगपिप्पलीमूलजीरकंदेवदारुच ॥
पत्रकंकुटजंरास्नादुरालभामृतात्रिवृत् ।
लतारुष्करतालीसवृक्षाम्लंलवणत्रय ॥
धान्यकचाजमोदाचकारवीधातुमाक्षिकम् ।
जातीफलंतुगाक्षीरीवाजिगन्धासदाडिमं ॥
कांकोलकमुशीरचक्षिारंमरिचतथा ।
एतानिपलमात्राणिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥
गिरिजस्यपलान्यष्टौद्वेपलेचैवगुग्गुलोः ।
प्रस्थमेकसितायाश्चघृतस्यकुडवंतथा ॥
गिरिजस्यसमलोहंप्रस्थार्द्ध माक्षिकस्यच ।
सर्वमेकत्रसंमिश्रयस्निग्धभाण्डेनिधापयेत् ॥
वातव्याधिमुरुस्तंभमर्दितंगृध्रसीतथा ।
विद्रधिश्लीपदंगुल्म पांडुरोगहलीमकम् ॥
कासंपंचविधघाटमूत्रकृच्छ्रंगलग्रहं ।
अनाहमश्मरीवर्ध्मग्रहणीमपवाहुक ॥
अरोचकंपार्श्वशूलमुदरंसभगंदरं ।
हृद्रोगशूलमुत्कम्पविषमज्वरनाशनं ॥
उरःक्षतेक्षयेदोषेमुखरोगेचदारुणे ।
प्राशयेद्गुटिकाचापिचूर्णपाणितलोन्मितं ॥
विविधान्नानिभुंजीतयथेष्टंचयथासुखं ।
गुटिकाभास्करीनाम्नादृष्टादेवेनशंभुना ।
प्रमेहंरक्तपित्तचपांडुरोगंसकामल ।
अग्निसंदीपनहृद्य दीर्घायुपुष्टिदोभवेत् ॥
येवातप्रभवारोगायेचपित्तसमुद्भवा ।
कफरोगाश्चयेकेचित्द्वंद्वजाःसन्निपातिका ॥
तेसर्वेप्रशमयान्तिभास्करेणतमोयथा ।
रोगविद्राविणीकार्य्यागुटिकासूर्य्यवत्प्रभा ॥

चीतेकी छाल, त्रिफला, नींबकी छाल, पटोल पत्र, मुलहटी, दालचीनी, नागकेशर, अजवायन, अमलवेत्त, चिरायता, दारुहलदी, इलायची, नागरमोथा, पित्तपापडा, नीलाथोथा, कुटकी, भारगी, चव्य, पद्माख, खुरासानी, अजवायन, पीपल, कालीमिरच, जमालगोटा, कचूर, सोंठ, पुहकरमूल, जीरा, देवदारु, तमालपत्र, कुडकीछाल, रास्ना, धमासा, गिलोय, निसोथ, तालीसपत्र, अमलवेत सेंधा काला और कचिया तीनों प्रकारका नमक, धनिया, अजमोद, सोंफ, सुवर्णमक्खी, जायफल, वंशलोचन, असगन्ध, अनारकीछाल, कंकोल, नेत्रवाला, जवाखार, सज्जीखार, और काली मिरच प्रत्येक ४ तोले, लेवे, शिलाजीत ३२ तोले गूगल ८ तोले, शुद्धलोहकी भस्म ३२ तोले, माक्षिकभस्म ८ तोले, इन सबका चूर्ण, एकत्रकर सेर भर मिश्री, पावभर गौंका घी, सहत आध सेर ले, सबको मिलाय चिकने बरतन चीनी या शीशी आदिमें भरके रखछोडे इसमेंसे एक तोले या उससे कम बलाबल देखकर देवे तो वातव्याधि उरुस्तंभ, अर्दित, गृध्रसी विद्रधि, श्लीपद, गोला पाण्डुरोग, हलीमक, पांच प्रकारकी खांसी, मूत्रकृच्छ्र, गलग्रह, अफरा, पथरी वद, सग्रहणी, अपवाहुक, अरुचि, पार्श्वशूल, उदर, भगन्दर, हृदयरोग, शूल, कम्प, विषमज्वर, उरःक्षत, मुख रोग, प्रमेह, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, कामला, तथा वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, द्वंद्वज, और सन्निपातज इत्यादि रोग इस सूर्य्यप्रभागोली के खानेसे नष्ट होवे, जठराग्निको दीप्ति करे, हृदय को हितकारी है, दीर्घावस्था और देहको पुष्टि करे, इसको ऊपर खाने पीनेका कुछभी पथ्य नहीं यथेष्ट अनेक प्रकारके विविध अन्न भोजन करे यह लोक हितार्थ श्रीशिवजी महाराजने निर्माण किया है।

लघुवातविध्वंसिनी

पारदष्टंकणोगंधपाषाणभिद्वत्सनागोवराट
स्तथातालकः । त्र्यूषणहेमनीरेणतन्मर्दयेद्र
क्तिकाभावटीवातविध्वंसक· ॥ सन्निपातके
मारुतेकफेशीतमांद्यकेश्वाससंभवे । सग्रहा
भिधेशूलजेगदेकाससंस्तौयोजयेत्सदा ॥

पारा, सुहागा, गंधक, पाषाणभेद, वच्छनागविष, कौडी की भस्म, हरिताल, सोंठ, मिरच,

पीपल, इनको समान भाग लेवे और सबको पीस धतूरे के रस से खरल कर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे इसको वातविध्वसक कहते हैं, यह सन्निपात, कफ, वायुशीत, मदाग्नि, श्वास, सग्रहणी, शूल और खासी इनका नाश करे ।

वातराजवटी

सुशुद्धंपारदंगधंलोहमाक्षिकभस्मकम् ।
स्वर्णतारंताम्रवगकान्तंतीक्ष्णन्तुनालकम् ॥
दरदवत्सनाभचचातुर्जातसचित्रकम् ।
त्रिकटुत्रिफलाभार्ङ्गीग्रन्थिकंगजपिप्पली ॥
कुष्ठंजातीद्वयंदारुपुष्करचाम्लवेतसं ।
शठीदारुहरिद्रेद्वेपद्मकदाडिमत्रिवृत् ॥
रास्नादुरालभाछिन्नादन्तीजैपालकविषम् ।
कर्षमात्राणिसर्वाणिद्विपलगिरिजमत ॥
जातीफलतुगाक्षीरीवाजिगधासचव्यकम् ।
ककोलकमुशीरचक्षारौलवणत्रयम् ॥
सर्वसचूर्णयेविधिवत्सुखल्वेशोभनेदिने ।
निर्गुंडीवासकभृगकाकमाचीसहार्द्रकम् ॥
तर्कारीसूरणद्रावैःततोन्मत्तरसस्यच ।
भावनाखलुदातव्यासप्तसप्तक्रमादिह ॥
ततःपर्णरसैर्भाव्यःवटिकावल्लसम्मिता ।
छायाशुष्कंततःकृत्वाज्ञात्वारोगवलावलम् ॥
सुदिनेशुभनक्षत्रे शिवदुर्गाविभाकरम् ।
प्रणम्ययोजयेत्सम्यक्यथारोगानुपानत ॥
अशीतिवातजान्रोगान् चत्वारिंशच्चपैत्तिका
न् । विंशतिश्लेष्मिकान्घोरान्श्वासकासभ
गंदरंकुष्ठ उरुक्षतशूलज्वरपाण्डुगलग्रह ॥
प्रमेहरक्तपित्तञ्चगुल्मसंग्रहणींतथा ।
साध्यासाध्यान्निहन्त्याशुसत्यश्रीशिवभाषि
तम्। वातराजवटीह्येषानन्दिनापरिकीर्त्तिता॥

शुद्ध पारा, गधक, लोह, सुवर्णमाक्षिक, अभ्रक, सुवर्ण, रूपा, तावा, वग, कान्तलोह, खेरीलोह और हरिताल इनकी भस्म और शुद्ध शिगरफ, बच्छनागविष, दालचीनी, इलाइची, के बीज, पत्रज, नागकेशर, चीते की छाल, सोठ, मिरच, पीपल, हरड, वहेडा, आंवला, भारगी, पीपलामूल, गजपीपल, कूट, सफेदजीरा, काला-जीरा, देवदारु, पुहकरमूल, अम्लवेत, कचूर, दारुहलदी, हल्दी, पद्माख, अनारदाना, निसोथ, रास्ना, धमासा, गिलोय, दन्ती, जमालगोटा और सिंगियाविष प्रत्येक एक तोले, शिलाजीत, ८ जायफल, बशलोचन, असगन्ध, चव्य, कंकोल, खस, सज्जीखार, जवाखार, सैंधानिमक, कालानिमक, और कचियानिमक प्रत्येक एक तोले लेकर सबको निर्गुंडी, अडूसा, भागरा, मकोय, अदरख, अरनी, जिमीकद और धतूरे के रस की सात २ भावना देवे फिर सात भावना पान के रस की देकर तीन २ रत्ती की गोलिया बनाय छाया मे सुखाय रख छोडे, और रोगी का बलाबल देख शुभ दिन, नक्षत्र मे शिव पार्वती और सूर्य्य को प्रणाम कर जैसा रोग हो उसके अनुपानानुसार देवे तो अस्सी प्रकार की वादी, चालीस प्रकार के कफ रोग, बीस प्रकार के प्रमेह, श्वास, खासी, भगन्दर, कोढ, उरःक्षत, शूल, ज्वर, पाण्डु रोग, गलग्रह, प्रमेह, रक्तपित, गोला, संग्रहणी, इत्यादि सम्पूर्ण साध्यासाध्य रोगो को दूर करे, यह वातराज वटी नदीराज ने कही है ।

वातराजवटी

पारदगधकशुद्धंचातुर्जातकटुत्रयं ।
जीरकयुगलचन्द्रंपत्र तालीसकेशरम् ॥
जातीफललवगचदीप्यकवह्निवालुकम् ।
अमृताचन्दनद्राक्षामासीचव्यंवरीवचा ॥
जातिकोशविडधान्यत्रिफलातगरवृषम् ।
प्रत्येकतोलेकग्राह्य द्विपलचहतायस ॥
शुद्धंनवाहिफेनन्तुपलमात्र प्रकीर्तित ।
सर्व सचूर्णयेद्विधिवन्मर्दयेत्खाखसद्रवैः ॥
यामद्वयतत कार्य्यावटिकावल्लसम्मिता ।
दद्याद्वलावलवीक्ष्ययथारोगानुपानक ॥
वातव्याधिमुरुस्तंभज्वरदाहमनिद्रताम् ।
प्रमेहरक्तपितचउर क्षतमरोचकम् ॥

हन्तिसर्वानशेषेणतमःसूर्योदयेयथा ।
अस्यप्रभावान्मनुजोरमतेरमणीशतम् ॥

पारा, गंधक, चातुर्जात (दालचीनी, पत्रज, इलायची और नागकेशर) सोंठ मिरच, पीपल, कालाजीरा, सफेदजीरा, भीमसेनी कपूर, तालीसपत्र, केशर, जायफल, लौंग अजवायन, चीते की छाल, एलवालुक, गिलोय, सफेदचन्दन, मुनक्का दाख, जटामासी, चव्य, शतावरि, वच, जावित्री, वायविडंग, धनिया, हरड, बहेडा, आंवला, तगर, और अडूसे के पत्ते प्रत्येक एक तोले, लोहभस्म द्विपल ८ तोले, तथा नवीन अफीम चार २ तोले, सबका चूर्ण कर छोत्तरान के रस मे दो प्रहर खरल कर दो २ रत्ती की गोलिया बनावे, इनको बलाबल विचार रोग के अनुपान के अनुकूल देवे तो वातव्याधि, उरुस्तंभ, ज्वर, दाह, निद्रा का न आना, अतिसार, भ्रम, बवासीर, उपदंश, पथरी, प्रमेह, रक्त पित्त, उरःक्षत और अरुचि इन सब रोगों को दूर करे, इस वातराज गोली के सेवन करने से मनुष्य १०० स्त्रियो से भोग करे ।

वह्निकुमाररसः

टंकणःपारदोगंधशखौकपर्दःसमोवत्सनाभस्त्रिभागस्तथा । वलिजअष्टभागंवन्हिपूर्वःकुमार'स्मृतोभृ गनीरेणमर्दितः॥ वातरोगेपुसवेंपुस्वसनीवन्हिमाद्यकेकफामयेसीहकासेशूलेवाग्निकुमारक' ।

पारा, गंधक, सुहागा, शखभस्म, कौडी की भस्म, प्रत्येक एक तोले लेवे, और बच्छ नाग विष ३ तोले, काली मिरच ८ तोले, सबको एकत्र करे भांग के रस से खरल करे इसको वन्हिकुमार रस कहते हैं, यह सम्पूर्ण वात रोग, श्वास, मन्दाग्नि, कफप्लीहा, खांसी और शूल को दूर करे ।

एकांगवीरोरसः

शुद्धगंधंमृतंसूतंकान्तंवंगसनागकम् ।
ताम्रचाभ्रंमृततीक्ष्णंनागरमरिचंकणा ॥
सर्वमेकत्रसचूर्ण्यंभावयेच्चपृथकत्रयं ।
वराव्योषकनिगुंडीवह्निमार्कवजैर्द्रवैः ॥
शिग्रुकुष्ठद्रवेणापिमनोधात्र्याद्रवेणच ।
विषमुष्टयर्कहाटैश्चआर्द्रकस्यरसैस्तथा ॥
रसैश्चैकांगवीरोसौंसुसिद्धोरसराट्भवेत् ।
पक्षाघातंचार्दितंचधनुर्वातंतथैवच ॥
अर्द्धागंगृध्रसीचापिविश्वाचीमपबाहुकं ।
सर्ववातामयान्हन्तिसत्यसत्यंनसंशयः ॥

शुद्ध गंधक, चन्द्रोदय, कान्तलोह, वंग, सीसा, तांबा, अभ्रक और खेरीलोह इन की भस्म, सोठ, मिरच, पीपल सब को समान भाग लेकर चूर्ण करे, फिर त्रिफला, त्रिकुटा, निर्गुंडी, चीता, भांगरा, सहजना, कूठ, कुचला, अकरकरा और अदरख के रस की पृथक् २ तीन २ भावना देवे तो यह एकांगवीर रस बने, यह पक्षाघात, अर्दित, धनुर्वात, अर्द्धांगवात, गृध्रसी, विश्वाची, अपबाहुक इत्यादि संपूर्ण वात रोगो का नाश करे ।

मेघडंबरोरसः

तंदुलीयद्रवैःपिष्टंसूततुल्यंचगंधकम् ।
वज्रमूषाधृतेपाच्याद्भूधरेभस्मतांनयेत् ॥
दशमूलकषायेणभावयेत्प्रहरद्वयं ।
गुंजाद्वयंहरेद्वायु.हिक्काश्वासंज्वरंकिल ॥
अनुपानेनदातव्योरसोऽयमेघडंबरः ।
योगसारावल्याम् ॥

पारा और गंधक दोनो को बराबर लेके चौलाई के रस में खरल कर वज्रमूषा में रख भूधर यंत्र मे पचावे, फिर दशमूल के काढे से दो प्रहर खरल कर एक २ रत्ती की गोलियां बनावे, यह बादी, हिचकी, श्वास और ज्वर को मेघडंबर रस अनुपान के साथ देने से दूर करे, यह सारावली ग्रन्थ मे लिखा है ।

रामबाणोरसः

श्वेतक्षारपीतक्षारपारदंमृतसिंहिकम् ।
मन शिलावलिश्चैषामेकभागंपृथकपृथक ॥

त्रिभागश्वेतखदिरंसर्वंसंचूर्ण्यमर्दयेत।
नागवल्लिदलरसेचतुर्याममभिषग्वरः॥
मुद्गमानावटीकार्य्याएकान्ताभक्षयेन्नरः।
पथ्यंमुद्गाढकीचूर्णं लवणेनविनाकृतम्॥
चतुर्दशदिनान्येवमुपदंशीचरेन्नरः।
सोपदंशसर्ववातंसाध्यासाध्यचनाशयेत्॥
रामबाणरसोनाम्नाकथितंरससागरे।

सुहागा, नौसादर, शिगरफ, बगेश्वर, मनसिल, गंधक प्रत्येक एक तोला लेवे, और सफेद कत्था ३ तोले लेकर सब का चूर्ण करे, फिर पान के रस में ४ प्रहर खरल कर मूंग के बराबर गोलियां बनावे, १ गोली नित्य खाय, ऊपरसे मूंग, अरहर, ज्वार इन की रोटी दाल विना निमक के खाय, तो १४ दिन में अवश्य साध्यासाध्य उपदंश जाता रहै, यह रामबाण रस रस सागर ग्रन्थ से लिखा गया है।

रसादिगुटिका

पारदस्तालकोगधस्त्रय शुद्धाःसमाःस्मृताः।
जातीफलंजातिकोशभंगाबीजंलवंगकम्॥
यवानीतुत्थकशुद्धं शुद्धं त्र्यूषंसमपृथक्।
नागवल्लीदलरसैर्मर्दयेत्प्रहरद्वयम्॥
सोसनस्याशफानीरैर्मर्दयेत्तुतथाविधम्।
अष्टगुञ्जामिताकार्य्यागुटिकाचभिषग्वरैः॥
प्रभातेचैवसायान्हेवटीदेयाविशेषतः।
मधुनानीरयुक्तेनगिलेत्तांववैटींशुभाम॥
पक्षाघातनिहन्त्याशुरसादिगुटिकात्वियं।
चन्द्रटेनसमाख्यातायोगरत्नसमुच्चये॥

पारा, गधक, हरिताल प्रत्येक शुद्ध किया हुआ ले, जायफल, जावित्री, भाग के बीज, लौंग, अजमायन, शुद्ध नीला थोथा और त्रिकुटा प्रत्येक समान भाग लेकर पान के रस से दो प्रहर खरल करे, फिर सोसन की जड के फाडे मे दो प्रहर खरल करे, फिर आठ ८ रत्ती की गोलिया बनावे, एक-एक गोली सायकाल और प्रात काल सहत और जल के साथ देवे तो यह पक्षाघात (अर्द्धांग वात) को दूर करे, यह रसादिगुटिका योगरत्न समुच्चय मे चन्द्रट आचार्य्य ने कही है।

कंपवातारिरसः

मृतसूतंमृतंताम्रं मर्दयेत्कटुकीद्रवैः।
एकविंशतिवारंतच्छोष्यपेष्यंपुनःपुन॥
चणमात्र वटींखादेत्सर्वांगकंपवातहृत्।

चन्द्रोदय, ताम्र भस्म, दोनो को समान भाग ले कुटकी के रस की २१ भावना देवे, फिर चने के प्रमाण गोलिया बनावे, इन को खाय तो सर्वांगवात और कपवात को दूर करे।

कम्पवातहाररसः

सूतकस्यपलान्पंचपलैकंताम्रचूर्णकम्।
जंबीराणांद्रवैःपिष्टंसूततुल्यंचगंधकम॥
नागवल्लीद्रवैःपिष्टंताम्रपिष्टप्रलेपयेत।
रुध्वागजपुटेपाच्याद्भूधरेयामपचकम्॥
आदायचूर्णयेत्तुल्यैस्त्र्यूषणैःसममिश्रित।
अर्द्धांगकंपवातार्त्तोभक्षयेत्तद्द्विगुंजकम्॥

शुद्ध पारा २० तोले, तांबे के कटकवेधी पत्र ४ तोले, दोनों को जंभीरी के रस मे खरल कर फिर पारे की बराबर गंधक मिलाय पान के रस से खरल करे, और उन तांबे के पत्रो पर लेपकर संपुट में रख गजपुट और भूधर यन्त्र में पाच प्रहर पचावे फिर निकाल बराबर का त्रिकुटा का चूर्ण मिलाय सेवन करे तो अर्द्धांग और कम्पवातो को दूर करे।

गगनगर्भिकावटी.

मृताभ्रंतीक्ष्णताम्रंचमृततालकगंधकम्।
भार्ङ्गीशुण्ठीवचाधान्यकंपिप्पलीचाभयाविष॥
मद्यंपर्पटकद्रावैर्निर्गुण्डिकाभक्षयेद्वटीम।
वातश्लेष्महराशुवटीगगनगर्भिका॥

पारा, अभ्रक, गेरी लोह, ताम्र और हरिताल, इन की भस्म गधक, सोंठ, भारगी, वच, धनिया, कचीला, हरड और सिंगिया विष इन सब

को समान लेवे, पित्त पापड़ के काढे से खरल कर चार २ मासे की गोलियां बनावे, यह गगन गर्भिकावटी वात और कफ के रोगो को शीघ्र दूर करे।

पलाशबीजोत्थरसेनसूतगंधेनयुक्तंपरिमर्दनीयः। अदग्णीकृतेतद्विषमुष्टिबीजसंयोजनीयंचकलायमात्रं ॥ मासत्रयंनिष्कमीतप्रयत्नादस्पर्शनुत्यैखलुसेवयेत् ।

ढाक के बीजो के रस मे पारे और गधक को खरल कर और मटर के अनुमान कुचला मिला कर एक तोले तीन महीने पर्य्यन्त सेवन करे तो अस्पर्श (शून्य) वात दूर हो।

पर्पटीरसगुंजाष्टौवदयमाणंचगुग्गुलम् ।
कर्षार्द्धंखादयेत्साज्यमेकांगानिलशान्तये ॥

आठ रत्ती पर्पटी रस को योगराज गूगल और घृत मे मिला कर ६ माशे नित्य खाय तो देह की सब वादी दूर हो।

दरदादिवटी.

म्लेच्छसाद्र्धपलंप्रोक्तंगुडस्यात्द्वादशंपल ।
मृत्पात्रेनिंबदण्डेनताम्रपत्रयुतेनच ॥
घर्षणंसप्तदिवसंप्रकुर्यात्तुप्रयत्नतः ।
ततोद्विमाषप्रमाणेनवटिकाकारयेद्बुधः ॥
प्रभातेचैवसायान्हेवटिकांभक्षयेन्नरः ।
सर्ववातप्रशान्त्यर्थंदरदादिवटीत्वियम् ॥

सिंगरफ डेढपल, गुड १२ पल, दोनोको मिट्टीके पात्रमे नीमकी डण्डीमें तांबेका पैसा चिपका कर ७ दिन घोटे फिर आठ २ माशेकी गोलिया बनावे, प्रातःकाल और सायकाल एक २ गोली नित्य सेवन करे, पथ्यसे रहे, तो यह दरदादिवटी सम्पूर्ण वातरोगोंका नाश करे।

अमरसुन्दरीगुटिका.

त्रिकटुत्रिफलाचैवरेणुकाग्रन्थिकानलं ।
मृतलोहचतुर्जातपारदगन्धकविषं ॥
विडंगाकल्लकमुस्तासर्वेभ्योद्विगुणोगुड. ।
चणकप्रमितानाम्नागुटीअमरसुन्दरी ॥
अपस्मारेसन्निपातेश्वासेकासेगुदामये ।
अशीतिवातरोगेषुउन्मादेषुविशेषतः ॥

सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला रेणुका, पीपलामूल, चीतेकी छाल, सार, चातुर्जात, पारा, गन्धक, विष, वायविडंग, अकरकरा और मोथा, और सबसे दूना गुड लेकर चने के प्रमाण गोलिया बनावे। यह अमरसुन्दरी गोली मृगी, सन्निपात, श्वास, कास, गुदाके रोग, अस्सी प्रकारके वातरोग और उन्मादको दूर करे।

अमृतानामगुटिका

पलत्रयचित्रकचचेतकीचपलत्रयं ।
पारदत्रिकुटचैवपिप्पलीमूलमुस्तकम् ॥
जातीफलवृद्धदारुग्राहयेच्चपलपल ।
एलाशुभाकुष्ठगधदरदकरहाटकम् ॥
ज्योतिष्मतीत्वगभ्रंचआयसंचपलार्द्धकम् ।
हालाहलनिष्कमेकगुडदेयंपलाष्टकम् ॥
भृंगराजरसेनैवगुटिकाकोलसम्मिता ।
एकैकांभक्षयेन्नित्यवाताशीतिर्विनश्यति ॥
कुष्ठाष्टादशनश्यन्तिप्रमेहंविंशतिंतथा ।
अपस्मारषडेतानिसर्वनाडीव्रणानिच ॥
क्षयमेकादशहन्तिऊर्ध्वश्वाससुसुप्तिका ।
शोथामवातपाण्डुत्वंकामलार्शोनिहन्तिषट् ॥
सर्वरोगहरख्यातवाताम्लचविवर्जयेत् ।

चीतेकी छाल और हरड बारह २ तोले, पारा त्रिकुटा, पीपलामूल, नागरमोथा, जायफल, और विधायरा, प्रत्येक ४ तोले, राल, कूठ,गधक, शिगरफ, अकरकरा, मालकांगनी, तज, अभ्रक और सार प्रत्येक १० तोले, विष ४ माशे, गुड ३२ तोले, सबको भागरेके रससे खरलकर बेरके समान गोलिया बनावे, एक गोली नित्य सेवन करे तो ८० प्रकारके वात १८ प्रकारके कुष्ठ, २० प्रकार का प्रमेह, ६ प्रकारकी मृगी, सर्व नाडीव्रण, ११ प्रकारकी क्षय, ऊर्ध्वश्वास, शोथ, प्रसूतवात, आम वात, पाडुरोग, कामला ६ प्रकारकी बवासीर,

और वाताम्ल इन सब रोगोंको यह अमृतनाम गुटिका दूर करे ।

मार्त्तण्डेश्वरोरसः

समताप्ययुतंशुल्वंपलविंशतिमानकम् ।
प्रध्मातहिचतुर्वारखडयित्वाततश्चरेत् ॥
तत्तुल्यंमाक्षिकोपेतपुटेद्विंशतिवारकम् ।
गन्धकेनपुटेत्तावद्यावत्पलमितभवेत् ॥
क्षिपेत्पलमिततत्रगंधकेनहतरस ।
शाणमात्र मृतवज्र सर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
इतिसिद्धोरसेन्द्रोयमार्त्तण्डेश्वरनामवान् ।
कीर्तितोलोकनाथेनलोकानाहितकाम्यया ॥
मरीचघृतसयुक्तःसेवितोमडलाद्ध्रुतः ।
वाताद्यष्टमहारोगानश्वासकाससयुतक्षयं ॥
हलीमकंचपाण्डुंचज्वरानपिसुदुद्धरान् ।
इत्यादिकगदान्सर्वान्विनाशयतिनिश्चित ॥
करोतिदीपनतीव्रंदीपानलशतोपम ।
सन्निपातजयत्याशुव्योपाद्धकसमन्वितम् ॥
सर्वसौख्यकरोनृणास्त्रीणांवंध्यत्वनाशन ।

सोनामक्खी २० पल और तावा २० पल दोनोको मिलाय अग्निमे गलाके एक जी करे, फिर निकालके तोड डाले, और फिर एक जी करे, फिर सहतकी २० पुट देवे, फिर जबतक एक पल अर्थात् ४ तोले शेष रहे तबतक बराबर गन्धक की पुट दिये जाय, फिर इसमे ४ तोले चन्द्रोदय ४ माशे हीराको भस्म डाल सबको एकत्र खरल करे तो यह मार्त्तण्डेश्वररस सिद्ध होवे, इसको घी और काली मिरचोके साथ २४ दिन सेवन करे तो वातसे आदि ले अष्ट महारोग, श्वास, खांसी, चय, हलीमक, पाण्डुरोग, घोर ज्वर, इत्यादि संपूर्ण रोगोंको यह रस दूर करे, अग्नि को दीपनकर तीव्र करे, त्रिकटाके साथ लेनेसे सन्निपातको दूर करे पुरुषोंको सर्व सुखका देने वाला है और स्त्रियोके वध्यापनेको दूर करता है।

चतुःसुधारसः

समभागशुभेहेम्निनिर्व्यूढताप्यमुत्तमम् ।
शतधाशतधारौप्येशुल्वेचशतवारकम् ॥
इत्थंसिद्धिमितंबीजपृथगत्तप्रमाणत. ।
समावर्त्यतत्रैकत्ररसेपचपलात्मके ॥
वक्ष्यमाणप्रकारेणजारयेदतियत्नतः ।
तत्रखल्वेरसदत्वाबीजनिष्कमितंतथा ॥
मर्दयेदतियत्नेनभवेद्यावद्दिनत्रयं ।
पूर्वोक्तकच्छपेयन्त्रेवक्ष्माणविडान्विते ॥
वक्ष्यमाणप्रकारेणवीजमेवमशेषतः ।
बलिकाशीशव्योमकांक्षीसौवर्चलै.समैः ॥
चक्रांगीरसखभिन्नैःशतधाविडजारयेत् ।
एवजारितसूतेनपलमात्रेणवातथा ॥
गन्धकेनापिकर्त्तव्यासुस्निग्धावरकज्जली ।
तुल्यसत्वाभ्रमसितक्षिप्त्वासमिश्रसर्वशः ॥
रभापत्रेविनिक्षिप्यकुर्यात्सपर्पटिकाशुभां ।
विचूर्ण्यपर्पटीसम्यग्वैक्रान्तात्रिंशदशतः ॥
निक्षिप्यहिंगुतोयेनशतधापरिभावित ।
निरुध्यामल्लमूषायास्वेदयेदतियत्नतः ॥
पुनःसचूर्णयेयत्नेनकरडेविनिवेशयेत् ।

बराबरके सुवर्णमे सुवर्णमाक्षिक मिलावे और धमावे इस प्रकार सौबार करे, इसी प्रकार चांदी और तांबा मिलाकर सौबार धमावे तो यह बीज सिद्ध होवे, फिर इसमेसे १ तोले लेकर २० तोले शुद्ध पारेमे मिलाकर बीज जारणकी विधिसे जारण करे, फिर इस पारेको खरलमे डाल एक तोले बीज मिलाकर ३ दिन खरल करे, फिर इसको कच्छप-यन्त्रमे विडके साथ रखके पूर्वोक्त (जो पारदजारण के प्रकरणमे लिख आए है) उस प्रकार जारण करे, फिर गन्धक, कसीस, अभ्रक, फिटकरी, संचर नमक, बराबर मिला कुटकीके रसमे खरल कर सौबार विड दे २ कर जारण करे, इस प्रकार जारण कियाहुआ पारद ४ तोले लेकर दूनी गधक मिला कजली करे, और कजलीकी बराबर काली अभ्रकका सत्व मिलाय सबको एकत्रकर पर्पटी बनावे, फिर इसका चूर्णकर तीसवा भाग वैक्रान्ति मणिकी भस्म मिलावे, फिर हीगके जलकी सौ भावना देवे, पश्चात् सपुटमे बन्दकर विडसे मूषा के मुखको बन्दकर स्वेदन करे, फिर मूषामेसे

सावधानीके साथ निकालकर चूर्णकर किसी उत्तम शीशी आदि से बन्द कर रख छोडे।

हन्यात्सर्वमरुद्गदान्क्षयगदपांडुंचनष्टाग्नितां। निर्वीर्यत्वमरोचकंचजरणाशूलंचगुल्मादिकं॥ अष्टोचैवमहागदान्प्रशमयेत्तृव्याधिसशोषंक्षणात्। भुक्तोमुद्गमितश्चतुःसुधरसःस्वस्थोचितोभूभुजा॥ मूलकंवर्जयेदस्मिन्रसेनान्यंतुकिंचनत्रिवारमेकवारेणवुभुक्षांजनयेत्ध्रुवम्।

यह चतुःसुधारस सर्व प्रकार के वात रोग, क्षय रोग, पाण्डु, मन्दाग्नि, वीर्य हीनत्व, अरुचि परिणाम शूल, गुल्म रोग, बवासीरादि ८ महा रोग और शोष को क्षणमात्र में दूर करे, इस को मूंग के बराबर सेवन करना चाहिये, यह राजाओं के योग्य है, इस का सेवन करने वाला मूली का सेवन न करे, बाकी सब वस्तु खाय, यह तीन वार या एक वार खानेसे क्षुधा प्रगट करता है।

सर्ववातारिरसः

गंधकात्द्विगुणतालतालकात्द्विगुणाशिला।
शिलायाद्विगुणताप्यताप्याच्चद्विगुणारस॥
खल्लयेत्सर्वमेकत्रयावत्स्याद्दिनसप्तकम्।
सर्वस्यअष्टभागेनदत्वारक्तामृतशुभ॥
विषतिंदुकजद्रावै:पिष्ट्वागोलकमाचरेत्।
विशोष्यवालुकायंत्रे रुंधयेद्दिवसद्वयम्॥
स्वांगशीतलमुद्धृत्यतुल्यहिंग्वष्टकान्वितम्।
भावयेद्वीजपूरस्यसप्तवाररसेनहि॥
सप्तवाररसै शुंठ्याश्चित्रमूलस्यवारिणा।
इतिसिद्धरसेन्द्रोयंसर्ववातारिसंज्ञकः॥
घृतेनसहितोलीढोवल्लद्वयमितोनृभि।
निहन्त्यशीतंवातार्ति गुल्मानष्टविधानपि॥
चतुर्विधंचमंदाग्निस्थूलानुदरजान्क्रमीन्।
आध्मानचतथाहिक्कांमूढवातंचविड्ग्रहम्॥

गंधक ४ तोले, हरिताल ८ तोले, मनसिल १६ तोले, सुवर्ण माक्षिक ३२ तोले, पारा ६४ तोले, सब को एकत्र कर ७ दिन तक घोटे, फिर सब का आठवां भाग लाल विष मिलावे, फिर विष और कुचला के रस से खरल कर गोला बनावे, उस को सुखाय वालुकायन्त्र मे रख दो दिन की आंच दे, जब स्वांग शीतल हो जावे, तब इस मे बराबर का हिंगाष्टक चूर्ण मिलाय बिजौरे के रस की ७ भावना देवे, और सात २ भावना सोंठ और चीते की छाल की देवे तो यह वातारिसंज्ञक रस सिद्ध हो, इसमे से ६ रत्ती घी के साथ सेवन करे तो ८० प्रकार की वादी, १८ प्रकार के गुल्म, ४ प्रकार की मन्दाग्नि, उदर के कृमि, अफरा, हिचकी, मूढवात और मल का रुकना आदि को नष्ट करे।

समीरपन्नगोरसः

अभ्रंगंधविषव्योषरसटंकान्समांशकान्।
भावयेत्सप्तवाभृंगरसेनस्यात्समीरहा॥
आर्द्रद्रवेणवल्लोवाखंडव्योषेणयोजित।
महावातान्जयत्याशुनासाध्मातःसुसंज्ञकृत्॥

अभ्रक, गंधक, विष, सोंठ, मिरच, पीपल, पारा और सुहागा प्रत्येक समान भाग ले फिर खरल कर भांगरे के रस की सात भावना देवे, और तीन २ रत्ती की गोलिया बनावे, १ गोली खांड, त्रिकुटा और अदरख के रस के साथ सेवन करे तो घोर वातों को दूर करे, और नास देने से सज्ञा करता है।

वातगजसिंहोरसः

सूतगंधकचित्रकंत्रिकटुकमुस्तविषत्रैफलम्।
तुल्यांशंविदधातुमार्कवरसेकृत्वातुगुंजावटी॥
कुष्टाष्टादशकप्रमेहकफजवातप्रकोपक्षय।
रोगानीककरीन्द्रदर्पदलनेपञ्चाननोवैद्यराट्॥

पारा, गंधक, चीते की छाल, त्रिकुटा, नागरमोथा, विष और त्रिफला प्रत्येक समान भाग ले सब को भांगरे के रस से खरल कर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, यह १८ प्रकार का कोढ, कफ को प्रमेह, वादी का क्षय, इत्यादि रोग रूप हाथियो के मारने को सिंह रूप है।

वृद्धचिंतामणिरसः

शुद्ध सूतंविषंगंधदरदटंकणशिवा ।
त्र्यूषणसैंधवंजातीफलार्ककरहाटकम् ॥
पारसीकयवानीचजीरकचाजमोदक ।
शृंग्यश्वगंधाश्रीपुष्पसमभागंविचूर्णयेत् ।
भावनात्रितयदद्याद्भृंगराजरसेनच ।
नागवल्लीरसेनैवतथार्द्रकरसैस्त्रिधा ॥
तत.शुष्कंविधायाथयथारोगेप्रयोजयेत् ।
सामंनिरामविज्ञायदद्याद्गुंजाचतुष्टय ॥
महावातेऽपतत्रे चसर्वगात्रे पुशून्यता ।
सर्वज्वरहर श्रेष्ठःसन्निपातास्त्रयोदश ॥
हन्तिशीततथास्वेदश्वासचप्रबलकफ ।
प्रलापचातिनिद्राचरोमहर्षारुचितथा ॥

शुद्ध पारा, विष, गधक, शिगरफ, सुहागा, हरड, त्रिकुटा, सैंधा निमक, जायफल, तवे की भस्म, अकरकरा, किरमानी, अजमायन, जीरा, अजमोद, काकडासिगी, असगध और लौंग सब को समान भाग ले कर चूर्ण करे, फिर भागरे के रस की तीन भावना देवे तथा पान और अदरख के रसो की तीन २ भावना देवे, फिर इस को सुखा कर रख छोडे, पश्चात् साम और निराम रोगो का विचार कर ४ रत्ती की मात्रा देवे, यह महावात, अपतत्रवात, सर्व देह की शून्यता, सर्व प्रकार के ज्वर, तेरह प्रकार के सन्निपात, शीत, पसीने, प्रबल श्वास, प्रबल कफ, प्रलाप, अत्यत निद्रा, रोमाच का खडा होना और अरुचि ,इत्यादि सब रोगो का नाश करे ।

राक्षसरसः

समांशंयोजयेच्छुद्धं पारदगधकतथा ।
नागार्जुनीरसैमर्द्य सुरसावाकुचीतथा ॥
मयूरपर्णीकौमारीमधुयष्टीतथैवच ।
वाराहकर्णीस्वरसंबहुफल्यास्तथैव ॥
एतासारंसमादायभावनायापृथक्पृथक् ।
कुक्कुटाडंतत्रघृष्ट्वाप्रक्षाल्यंतुपुन पुन. ॥
अधोर्द्धे कुक्कुटदेयसंपुटेतान्निरोधयेत् ।
सप्तवारमृदावस्त्रं चतुर्यामाग्निनापचेत् ॥
पक गजपुटेनीतपुनर्मर्द्य पुन पचेत् ।
एवत्रिवारसंस्कारेरसंरक्षोमृतोपमम् ॥
क्षुधाकरवीर्यकरबलवर्णाग्निवर्द्धनम् ।

पारा और गधक चार २ तोले लेकर दुद्धी के रस, तुलसी, बावची, मयूर पखी, घी गुवार, मुलहटी, वाराहकर्णी, बहुफली, प्रत्येक के रस में पृथक् २ भावना देवे, फिर मुरगे के अडे को घिसे जब छेद हो जाय तब भीतरका मवाद निकाल साफ कर उस मे औषधिया भर कपरमिट्टी कर कुक्कुटपुट से रस फूक देवे, इस प्रकार ४ प्रहर की अग्नि देवे, फिर पूर्वोक्त औषधियो की भावना देकर गजपुटमे फूक देवे इस प्रकार तीन बार अग्नि देवे तो यह राक्षसरस बन कर तैयार हो, यह भूख को बढावे, वीर्यकी वृद्धि करे, बल वर्ण तथा अग्नि को बढावे, यह रसार्णव ग्रन्थ में लिखा है ।

वंगेश्वरोरसः

शुद्धतालशुद्धसूतंवगगधकशुद्धकम् ।
ग्राहयेत्समभागानिअर्कक्षीरेविमर्दयेत् ॥
दिनसप्तकपर्यन्तमर्दयेच्चनिरतरम् ।
काचकुप्याक्षिपेन्मुद्रादत्वाचैकभिषग्वर ॥
द्वादशप्रहरदेयमन्दाग्निचनसशयः ।
रसोग्राह्योप्रयत्नेनरक्तिकार्द्ध प्रदीयते ॥
पुनरेवप्रकर्त्तव्योविधिरेपनसंशय ।
ताम्बूलपत्रसयुक्तं वातव्याधिविनाशयेत् ॥
उन्मादेनष्टशुक्रे चअग्निहीनेचदीयते ।
कुष्ठव्रणज्वरचैवनाशयेच्चकिमद्भुतम् ॥

शुद्ध हरिताल, शुद्धपारा, वग, और शुद्ध गन्धकको समान भाग लेकर आकके दूधसे ७ दिन खरल करे, और कांचकी शीशीमे भर वालुका यन्त्रमे रख चूल्हेपर चढाय १२ प्रहरकी मदाग्नि देवे, फिर उन औषधियोको निकाल आकके दूध में खरलकर शीशीमे भर वालुकायन्त्रमे रख चूल्हे

पर चढाय १२ प्रहरकी मंदाग्नि देवे, जब सिद्ध होजाय तब निकालकर आधरत्तीकी मात्रा पानमे रखकर देवे तो वातव्याधि, उन्माद, शुक्रका नष्ट होना, कुष्ठ, व्रण, और ज्वर इन सबको यह वगेश्वररस दूर करे, यह योगतरगिणीमे लिखा है।

तालकादिगुटिका.

तालकगधसूतंचशुद्धंदरदटंकणम्।
त्र्यूषणंसमभागानिसर्वमेकत्रमर्दयेत्॥
भावनैकाप्रदातव्याआर्द्रकस्यरसेनच।
मुद्गप्रमाणवटिकाएकांप्रातःप्रभक्षयेत्॥
प्रसूतिवातरोगघ्नमंदाग्निग्रहणींतथा।
श्लेष्मघ्नविषमचैवशीतज्वरविनाशन॥

हरिताल, गन्धक, पारा, शिंगरफ, और सुहागा, प्रत्येक शुद्ध किये हुए ले और त्रिकुटा लेकर सबको खरल करे, और एक भावना अदरखके रसकी देवे, फिर मूंगके समान गोलिया बनाय एक गोली प्रातःकाल भक्षण करे तो प्रसूत वात मदाग्नि, संग्रहणी, कफविकार, विषमज्वर और शीतज्वरका नाश करे।

प्रभावतीगुटिका

सूतगधकतीक्ष्णार्कैसताप्यैःसमभागिकै।
रसांशमपरसर्वंषट्कोलंजीरकद्वयम्।
सौवर्चलंचसिन्धूत्थंविडगचहरीतकीं॥
अम्लवेतसकसर्वंबीजपूराम्लमर्दितम्।
गुटिकास्तेनकल्केनकार्याःकोलास्थिमात्रिकाः।
योगिन्यावहुधातिनामजितयात्रैलोक्यविख्यातया॥ निर्दिष्टाहिवृकोदरातिगुटिकाशोष्णाम्बुनासेविता॥ निःशेषानिलदोषरोगजरुजःश्लेष्मामरोगोद्भवम्॥ मदाग्निग्रहणींचतुर्विधमहाजीर्णंचतूर्णंजयेत्।

• पारा, गन्धक, खेडीलोहकी भस्म, तांबेकी भस्म, सुवर्णमाक्षिककी भस्म, प्रत्येक बराबर लेवे, षट्कोल, दोनो जीरे, सचरनोन, सैंधानोन, वायविडंग और छोटी हरड प्रत्येक पारेकी बराबर लेवे, सबको अम्लवेत और बिजौरेके रससे खरल कर बेरकी गुठलीके बराबर गोलिया बनावे, अजीतायोगिनीने यह प्रभावती गुटिका कहा है, इसको गरमजलके साथ सेवन करे तो सम्पूर्ण वातव्याधि के रोग, कफ और आमवातके रोग मन्दग्नि, ४ प्रकार का सग्रहणी, अजीर्ण रोग इन सबको शीघ्र दूर करे, यह रसरत्नसमुच्चय ग्रन्थसे लिखा गया है।

अथ कफरोगचिकित्सा:

श्लेष्मकालानलोरसः

रसस्यद्विगुणगधगधकात्द्विगुणविषम।
विषात्तुद्विगुणदेयचूर्णंत्रिकटुसम्भवम्॥
रसतुल्याप्रदातव्याचाभयासविभीतकी।
धात्रीपुष्करमूलञ्चाजमोदाचगन्धिका॥
विडंगंकटूफलंचव्यपञ्चैवलवणानिच।
लवंगत्रिवृतादन्तीसर्वमेकत्रचूर्णयेत्॥
भावयेतसप्तधारौद्रेस्वरसैःसुरसोद्भवैः।
हन्तिसर्वंकफोद्भवंतंव्याधिकालानलोरसः॥

पारा ४ तोले, गन्धक ८ तोले, विष १६ तोले, त्रिकुटाका चूर्ण ३२ तोले, हरड, बहेडा, आवला, पुहकरमूल, अजमोद, वनतुलसी, वायविडङ्ग, कायफर, चव्य, पाचोनिमक, लौंग, निसोथ और दन्ती, प्रत्येकको ४ तोले लेवे, सबका चूर्ण कर धूपमे तुलसीके रसकी ७ भावना देवे, तो यह कालानलरस सम्पूर्ण कफरोगोको दूर करे।

श्लेष्मशैलेन्द्रोरसः

पारदंगंधकंलौहत्र्यूषणजीरकद्वयम्।
शृंगीशठीयमानीचपौष्करचार्द्रकन्तथा।
गैरिकयावशूकञ्चकट्फलगजपिप्पली।
जातीकोषाजमोदाचवरायासलवगकम्॥
कनकस्यचबीजानिकट्फलंचव्यकतथा।
प्रत्येकतोलकञ्चैपांश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत्॥
पाषाणेविमलेखल्लेघृष्टंपाषाणमुद्गरैः
बिल्वमूलरसदत्वाचार्द्रचित्रफलत्रिका॥

वासानिर्गुण्डिगणिकाचेन्द्राशनप्रचोदनी ।
धत्तूरंकृष्णजीरञ्चपारिभद्रकपिप्पली ॥
एतेषाञ्चरसैर्मर्द्य माद्र कैश्चविभावयेत् ।
उष्णतोयानुपानेनसर्वव्याधिंविनाशयेत् ॥
विंशतिंश्लैष्मिकान्रोगान्सन्निपातभवान्गदान् । उदराष्टकदुर्नाममामवातञ्चदारुणम
पंचपांडवामयान्दोपान्कृमिस्थौल्यमथोनृणाम् ॥ यथाशुष्केन्धनेत्रन्हिस्तथैवाग्निविवर्द्धन.

पारा, गन्धक, लोहभस्म, त्र्यूषण (सोठ, मिरच, पीपल,) दोनो जीरे, काकडासिंगी, अजमायन, कचूर, पुहकरमूल, अदरख, गेरू, जवाखार, कायफल, गजपीपल, जावित्री, अजमोद, त्रिफला, जवासा, लौंग, धतूरेके बीज, चव्य, प्रत्येक एक तोले, लैवे, और सबका चूर्ण दिव्य चिकने खरलमें लोहेके मूसलेसे कर बेलकी जड़, अदरख, चीता, त्रिफला, अडूसा, निर्गुण्डी, अरनी भाग, कटेरी, धतूरा, कालाजीरा, नीम और पीपल इनके रसमें खरल कर फिर अदरखके रसमें भावना देकर गोलियां बनावे, और गरम जलके साथ सेवन करे, तो सर्व वातविकार, बीस कफविकार सन्निपातके रोग, आठ प्रकारके उदररोग, बवासीर, दारुण आमवात, पाच प्रकारके पाडुरोग, कृमिरोग, और स्थूलतादि सब रोगोंको दूर करे, जैसे सूखे ईंधनसे अग्नि बढती है उसी प्रकार जठराग्निको बढ़ाता है ।

महाश्लेष्मकालानलोरसः

हिंगुलसम्भवसूतशिलागन्धकटंकणम् ।
ताम्रंगधतथाभ्रञ्चस्वर्णमाक्षिकतालकम् ॥
धत्तूरसैंधवकुष्ठंहिंगुपिप्पलिकट्फलम् ।
दन्तीबीजसोमराजीवनराजफलत्रिवृत्त ॥
वज्रीक्षीरेणसमर्धं वटिकाकारयेद्भिषक् ।
कलायपरिमाणान्तुखादेदेकांयथाबलम् ॥
सन्निपातनिहन्त्याशुवृत्तमिन्द्राशनिर्यथा ।
मदसिंहोयथारण्येमृगाणांकुलनाशनः ॥
तथायंसर्वरोगाणांसद्योनाशकरोमहान् ।

हींगलूसे निकाला हुआ पारा, मनसिल, गंधक सुहागा, ताम्र, बग और अभ्रक इनकी भस्म, सुवर्णमाक्षिक हरिताल, धतूरा, सैंधानिमक, कूट, हींग, पीपल, कायफर, जमालगोटा, बावची, नादनवन, निसोथ और थूहरका दूध, इन सबमे खरल कर मटरके प्रमाण गोलिया बनावे, और बलाबल देखके खिलावे तो सन्निपातको शीघ्र दूर करे, जैसे वृक्षोको वज्रपात और मृगोंके यूथको मस्त सिंह नाश करता है इस प्रकार सम्पूर्ण घोर रोगों का नाश करे ।

महालक्ष्मीविलासः

पलवज्राभ्रचूर्णस्यतदर्द्धं गन्धकंभवेत् ।
तदर्द्धं वगभस्मोपितदर्द्धं पारदतथा ॥
तत्समहरितालञ्चतदर्द्धं ताम्रभस्मकं ।
रससाम्यञ्चकर्पूरजातीकोषफलंतथा ॥
वृद्धदारुकबीजञ्चबीजस्वर्णफलस्यच ।
प्रत्येकंकार्षिकभागमृतस्वर्णञ्चशाणकम् ॥
निष्पिष्यवटिकाकार्य्याद्विगुञ्जाफलमानतः
निहन्तिसन्निपातोत्थान्गदान्घोरान्सुदारुणान् ॥ गलोत्थानाण्डवृद्धिञ्चतथातिसारमेवच । कुष्ठमेकादशविधप्रमेहान्विंशतिंतथा ॥ श्लीपदकफवातोत्थचीरजकुलजंतथा ।
नाडीव्रणव्रणघोरगुदामयभगदरम् ॥
कासपीनसयक्ष्मार्शःस्थौल्यदौर्गन्ध्यरक्तनुत् ।
आमवातसर्वरूपजिव्हास्तभगलग्रहम् ॥
उदरकर्णनासाक्षिमुखवैजाड्यमेवच ।
सर्वशूलशिरःशूलस्त्रीरोगञ्चविनाशयेत् ॥
वटिकाप्रातरेकैकाखादेन्नित्ययथाबलम् ।
अनुपानमिहप्रोक्त मांसपिष्टपयोदधि ॥
वारिभक्त सुरासीधुसेवनात्कामरूपधृक् ।
वृद्धोपितरुणस्पर्द्धीनचशुक्रक्षयोभवेत् ॥
नचलिंगस्यशैथिल्यनकेशायान्तिपक्कताम् ।
नित्यगच्छेच्छतस्त्रीणाममत्तवारणविक्रमः ॥
द्विलक्षयोजनीदृष्टिर्जायतेपौष्टिकस्तथा ।
प्रोक्तःप्रयोगराजोयनारदेनमहात्मना ॥

रसोलक्ष्मीविलासोयवासुदेवोजगत्पतिः ।
प्रसादादस्यभगवान्लक्षनारीसुवल्लभः ॥

वज्राभ्रक की भस्म ४ तोले, गंधक २ तोले, वंग भस्म १ तोले, पारा ६ माशे, हरिताल ६ माशे, तांबे की भस्म ३ माशे, भीम सेनी कपूर ६ माशे, जायफल, जावित्री, विधायरे के बीज, धतूरे के बीज, प्रत्येक १ तोले, सुवर्ण की भस्म ४ माशे, सब को पानी से पीस दो २ रत्ती की गोलिया बनावे, यह सन्निपात के घोर रोग, गले के रोग, अंडवृद्धि, अतिसार, ११ प्रकार के घोर कुष्ठ, २० प्रकार का प्रमेह, कफ वात का और बहुत पुराना श्लीपद, नाडीव्रण, व्रण रोग, गुदा के रोग, भगंदर, खासी, पीनस, खडे, ववासीर, स्थूलता, दुर्गंधिता, रक्तविकार, आमवात जिव्हा-स्तभ, गलग्रह, उदर रोग, कर्ण रोग, नासिका के रोग, नेत्र और मुख की जडता, सर्व प्रकार के शूल, मस्तक शूल और स्त्रियो के रोगो को यह रस दूर करे, बलाबल विचार के नित्य एक गोली खाय इस के ऊपर मास, पिट्ठी, मैदा के पदार्थ, दूध, दही, भात, दाख, सोधु, (मद्य का भेद) इन का सेवन करे तो काम रूप हो, वृद्ध मनुष्य भी तरुण के समान हो जाय, अमोघ वीर्य हो, लिंग की शिथिलता दूर हो, कभी सफेद बाल न हो, १०० स्त्रियो से भोग की सामर्थ्य हो, मतवारे हाथी के समान पराक्रम हो, दो लक्ष योजन की दृष्टि होवे, पुष्टि करे, यह प्रयोग राज नारद ने श्री वासुदेव भगवान् के आगे कहा है, इसी के प्रताप से श्री कृष्ण भगवान् लक्ष स्त्रियो के प्रिय हुए ।

कफकेतुरसः

टंकणमागधीशुद्ध वत्सनाभसमसमम् ।
आर्द्रकस्यरसेनापिभावयेद्दिवसत्रयम् ॥
गुञ्जामात्रप्रदातव्यमार्द्रकस्यरसेनवै ।
पीनसंश्वासकासञ्चगलरोगगलग्रहम् ॥
दन्तरोगकर्णरोगंनेत्ररोगंसुदारुणम् ।
सन्निपातनिहन्त्याशुकफकेतुरसोत्तमः ॥

सुहागा, पीपल, शुद्ध वच्छनाग विष, सब को समान ले अदरख के रस मे ३ दिन खरल कर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, १ गोली अदरख के रस के साथ सेवन करे तो पीनस, श्वास, खांसी, गल रोग, गल ग्रह, दंत रोग, कर्ण रोग, नेत्र रोग और सन्निपात के रोगों को यह कफ केतु रस दूर करता है ।

कफचिन्तामणिरसः

हिंगुलेन्दुयवटंकत्रैलोक्यवीचमेवच ।
मरिचञ्चसमसर्वंत्रिभागरससिन्दूरम् ॥
आर्द्रकस्यरसेनैवमर्दयेद्यामामात्रकम् ।
चणकाभावटीकार्य्यासर्ववातप्रशान्तये ॥
कफरोगनिहन्त्याशुभास्करस्तिमिरयथा ।

हिंगुल, कपूर, इन्द्रजौ, सुहागा, भाग के बीज, काली मिरच, इन को समान भाग लेवे और एक औषधि का तिगुना रस सिन्दूर लेवे, सब को अदरख के रस से खरल कर चने के प्रमाण गोलियां बनावे, इस के सेवन से सपूर्ण वात रोग और कफ रोग शीघ्र दूर होवे ।

अथ पित्तरोगाधिकारः

गुडूच्यादिलौहम्.

गुडूचीसारसंयुक्तंत्रिकत्रययुतन्त्वयः ।
वातरक्तनिहन्त्याशुसर्ववातहरपरम् ॥

त्रिकुटा, त्रिफला और त्रिमद तथा गिलोय का सत्व इन मे सार मिला कर पीवे तो वातरक्त और वादी के सर्व रोग दूर होवे ।

धात्रीलौहम्.

धात्रीचूर्णस्याष्टौपलानिचत्वारिलौहचूर्णस्य
यष्टीमधुकरंजद्विपलदद्यात्पुटेघृष्टम् ॥
धात्र्याश्चक्वाथेनतच्चूर्णंभाव्यंचसप्ताहम् ॥
चण्डातपेनसंशोष्कभूय.पिष्ट घटेस्थितम् ॥
घृतेनमधुनायुक्तंभोजनाद्यन्तमध्यतः ।

त्रीन्वारान्भक्षयेन्नित्यपथ्यदोषानुबन्धतः
भक्तस्यादौनाशयेच्चदोषान्पित्तकृतानपि ।
मध्येचानाहविष्टम्भन्तथान्तेचाग्निमांद्यताम् ॥
रक्तपित्तसमुद्भूतान्रोगान्हन्तिनसंशयः ।

आमले का चूर्ण ८ टके भर, लोह भस्म ४ टके भर, मुलहटी और कजा २ टके भर, सब को कूट पीस आमले के काढे में ७ दिन भावना देवे, फिर तीव्र धूप में सुखाय वारीक पीस किसी वर्तन मे रख छोडे, इस को घी और सहत के साथ खाय, आदि मध्य और अंत मे खाना चाहिये, दिन मे तीन वार भक्षण करे और दोषानुसार पथ्य करे, यह भोजन के पूर्व खानेसे पित्तजन्य विकारो को दूर करे, मध्य में खाने से अफरा विष्टभ आदि रोगो को दूर करे, और भोजन के अन्त मे खाने से मदाग्नि और रक्त पित्त से उत्पन्न रोगो को दूर करे ।

पित्तान्तकोरसः

जातीकोषफलेमांसीकुष्ठतालीसपत्रकम् ।
माक्षिकमृतलौहञ्चअभ्रंदिव्यसमांशिकम् ॥
सर्वतुल्यमृततारसमनिष्पिष्यवारिणा ॥
द्विगुञ्जाभावटीकार्य्यापित्तरोगविनाशिनी ॥
कोष्ठाश्रितञ्चयत्पित्तशाखाश्रितमथापिवा ।
शूलञ्चैवाम्लपित्तञ्चपाण्डुरोगंहलीमकम् ॥
दुर्नामंभ्रान्तिवातञ्चक्षिप्रमेवविनाशयेत् ।
रसःपित्तान्तकयोह्यंपकाशीराजेनभाषितः ॥

जावित्री, जायफल, जटामासी, कूठ, तालीसपत्र, सुवर्ण माक्षिक, लोह भस्म, और अभ्रक भस्म, प्रत्येक समान भाग लेवे, और सब को बराबर रूपे की भस्म ले एकत्र कर जल से पीस दो २ रत्ती की गोलियां बनावे, यह पित्त रोग को दूर करे, तथा कोष्ठाश्रित पित्त, हाथ पैर गत पित्त, शूल, अम्लपित्त, पाण्डु रोग, हलीमक, बवासीर और भ्रान्ति इन सब रोगो को यह पित्तान्तक रस दूर करे, यह काशीराज का कहा है ।

महापित्तांतकोरसः

यदात्रमाक्षिकंत्यक्त्वासुवर्णमपिदीयते ।
महापित्तान्तकोनामसर्वपित्तविनाशनः ॥

पूर्वोक्त पित्तान्तक रस मे सुवर्ण माक्षिक की जगह सुवर्ण भस्म मिलावे, तो महापित्तान्तक रस बने, यह रस सर्व पित्तरोगो का नाश करे ।

अथ वातरक्तचिकित्सा

लांगलाद्यंलौहम्

विशुद्धलांगलीमूलत्रिकटुत्रिफलातथा ।
द्राक्षागुग्गुलभिस्तुल्यलौहचूर्णनियोजयेत् ॥
मातुलुंगरसेनैवत्रिफलायारसेनच ।
विमृद्यंयत्नतःपश्चात्गुटिकांकोलसम्मिताम् ॥
भक्षयेन्मधुनासार्द्धं शृणुकुर्वन्तियान्गुणान् ।
आजानुस्फुटितंघोरसर्वांगस्फुटितंतथा ॥
तत्सर्वंनाशयत्याशुसाध्यासाध्यचशोणितम् ।

शुद्ध कलियारी की जड, त्रिकुटा, त्रिफला, दाख, और गूगल सब समान भाग ले, और सब की बराबर लोह भस्म मिलावे, सबको विजौरे और त्रिफला के रस मे खरल कर कंकाल के बराबर गोलिया बनावे, १ गोली सहत के साथ भक्षण करे तो घुटनो का फटना सर्वांग का फटना इत्यादि सर्व साध्यसाध्य रोगो को दूर करे, और रुधिर के विकारों को दूर करे ।

वातरक्तान्तकोरसः

गंधकंपारदंलौहशिलातालघनन्तथा ।
शिलाजतुपुरशुद्धसमभागन्तुचूर्णयेत् ॥
श्वेतापराजितादार्वीवागुचीचित्रकतथा ।
पुनर्नवादेवकाष्टंत्रिफलाव्योषवेल्लकम् ॥
चूर्णमेषापृथकतुल्यंसर्वमेकत्रकारयेत् ।
त्रिफलाभृंगराजस्यरसेनैवत्रिधात्रिधा ॥
भावयेद्भक्षयेत्पश्चातचणमात्रंदिनेदिने ।
ततोनुपाननिंबस्यपत्रपुष्पत्वचसमम् ॥

शाणमात्रं घृतैःकुर्य्यात्सर्वेवातविकारनुत ।
वातरक्तं महाघोरगभीरसर्वंचजयेत् ॥
सर्वोपद्रवसंयुक्त साध्यासाध्यनिहन्त्यलम् ।

गन्धक, पारा, लोह भस्म, मनसिल, हरिताल, अभ्रक, शिलाजीत, और शुद्ध गुगल, इनको समान भाग ले चूर्ण करे, फिर सफेद उपलसिरी, दारुहलदी, वावचो, चीते की छाल, साठ की जड, देवदारु, त्रिफला, सोठ, मिरच, पीपल और वायविडंग इन सब को समान भाग ले और सबको खरल कर त्रिफला और भांगरे के रस की तीन २ भावना देकर चने के प्रमाण गोलिया बनावे, १ गोली नित्य खाय ऊपर से नीम के पत्ते, फूल, छाल इनको बराबर २ ले चूर्ण कर ४ माशे के अनुमान घी के साथ भक्षण करे तो सर्व प्रकार के वात विकार, सर्व प्रकारके घोर वातरक्त तथा साध्यासाध्य वातरक्त दूर हो ।

तालभस्म

हरितालंपलशुद्धंतथाकर्ष विपस्यच ।
श्वेतांकोटरसेनैवद्वयमेकत्रखल्लयेत् ॥
पलाशभस्मद्विपलनिधायस्थालिकोपरि ।
तद्भस्मोपरितालस्यगोलकस्थापयेत्सुधी ॥
तस्योपरिअपामार्गभस्मदद्यात्पलत्रयम् ।
स्थालीमुखेशरावंचदद्याद्यत्नेनलेपयेत् ॥
लेपयित्वाततश्चूल्यामहोरात्रंपचेद्भिषक् ।
ततस्तुजायतेभस्मशुद्धकपूरसन्निभम ॥
गुंजात्रयततोभक्ष्यमनुपानंविशेषतः ।
वातरक्तश्चकुष्टश्चदद्रुविस्फोटकापचीम् ॥
विचर्चिकाचर्मदलवातरक्त चशोणितम ।
रक्तपित्त तथाशोथगलित्कुष्ट विनाशयेत् ॥
हलीमकतथाशूलमग्निमान्द्यमरोचकम् ।

शुद्ध हरिताल टके भर, विष १ तोले, दोनों को सफेद अकोल के रस मे खरल करे, फिर एक हाडी में दो टके भर ढाक की भस्म भरके बीच में घुटी हुई हरिताल के गोले को रखे ऊपर से ३ पल ओंगा की राख भर कर खूब दबा देवे, फिर उस हांडो के मुख को शराव से बंद कर कपरमिट्टी से लहेस देवे, जब सूख जाय तब चूल्हे पर चढाय १ दिन रात की अग्नि देकर पचावे, इस हरिताल की कपूर के समान शुद्ध भस्म होवे, इसमे से ३ रत्ती अनुपान के साथ देवे तो वातरक्त, कोढ, दाद, विस्फोटक, अपची, विचर्चिका चर्मदल, वातरक्तका रुधिर, रक्तपित्त, सूजन, गलित्कुष्ठ, हलीमक, शूल, मन्दाग्नि और अरुचि को दूर करे ।

महातालेश्वरोरसः

तथासिद्धेनतालेनगधतुल्येनमेलयेत् ।
द्वयोस्तुल्यंजीर्णताम्र वालुकायन्त्रगपचेत् ॥
अयंतालेश्वरोनामरसःपरमदुर्लभः ।
हन्यात्कुष्ठानिसर्वाणिवातरक्तमथापिच ॥
शूलमष्टविधचित्ररसस्तालेश्वरोमहान् ।

शुद्ध हरिताल की भस्म मे बराबर की गन्धक मिलावे और दोनो की बराबर तांबे की भस्म मिला कर खरल करे, और वालुकायंत्र में पचावे तो यह परम दुर्लभ तालेश्वर बने, यह सर्व प्रकार के कुष्ट, वातरक्त, ८ प्रकार का शूल और चित्रकुष्ठ को दूर करे ।

विश्वेश्वरोरसः

रसाद्दशविपात्पंचगधकाद्दशशोधितात् ।
तुत्थाद्दशपलाशस्यबीजेभ्यःपञ्चकारयेत् ॥
चन्द्राश्वमारधत्तूरंकरहाटकमीलित ।
दशकंदशकंकुर्य्याच्छोपयित्वाजटात्वच. ॥
दशकदशकंदत्वाकुचिलाद्दशनूतनात् ।
भल्लातकाच्चदशकचूर्णयित्वाभिषक्कृतत. ॥
सुदिनेचबलिंदत्वावैद्यपूजापरायणः ।
रक्तिकाद्वितयंदद्यात्सहतयदिवात्रयम् ॥
वातरक्तंज्वरंकुष्ठखरस्पर्शमसौख्यदम् ।
आजानुस्फुटितहन्तिविपजवास्थितिनिःसृतम् ॥
कुष्ठमष्टादशविधमग्निमान्द्यमरोचकम् ।
विश्वेश्वरोरसोनामविश्वनाथेनभापित ॥

शुद्धपारा १० तोले, शुद्धविप ५ तोले, शुद्ध

गन्धक १० तोले, नीलाथोथा १० तोले, ढाकके बीज १५ तोले, कटेरी, कनेर, धतूरा, अकरकरा, और नलिपुष्प प्रत्येक १० तोले, नवीन कुचला और भिलावे दस २ तोले सबको एकत्रकर चूर्ण करे, फिर उत्तम दिनमें इष्टदेवको बलिदान दे, वैद्यका पूजनकर दो वा तीन रत्ती देवे तो वातरक्त, ज्वर, कोढ, गजचर्म, घुटनो तक फटना, विषजन्य, विकार, हड्डीका निकलना, १८ प्रकारका कोढ, मन्दाग्नि और अरुचिको दूर करे. यह विश्वेश्वर नामकरस है ।

वक्ष्यतेकुष्ठरोगेयदौषधभिषजांवरैः ।
वातरक्तेप्रयुंजीतकुर्याच्चरक्तमोक्षणम् ॥

जो औषधि कुष्ठरोगपर कही हैं उसको वातरक्तपर देना और रुधिर निकालना चाहिए ।

अथ उरुस्तंभाधिकारः

गुंजाभद्ररसः

निष्कत्रयशुद्धंसूतनिष्कद्वादशगंधकम् ।
गुंजाबीजचषड्निष्कंजयन्तीनिंबबीजकम् ॥
प्रत्येकंनिष्कमात्रन्तुनिष्कंजैपालबीजकम् ।
जयाजंबीरधत्तूरकाकमाचीद्रवैर्दिनम् ॥
भावयित्वावटींकुर्यात्चतुर्गुञ्जाप्रमाणतः ।
गुञ्जाभद्ररसोनामहिंगुसैंधवसंयुतः ॥
शमयत्युल्यवर्णदुःखमूरुस्तभसुदारुणम् ।

शुद्धपारा ३ निष्क, गन्धक १२ निष्क, घूघचीके बीज ६ निष्क, अरनी, नीमके बीज, प्रत्येक १ निष्क, (१६ माशे) लेवे, जमालगोटा १६ माशे, सबको खरलकर अरनी, जंभीरी, धतूरा और मकोय इनके रसमें एक दिन २ दिन खरल कर चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे, यह गुञ्जाभद्र नामक रस हींग और सहतके साथ लेनेसे घोर उरुस्तभको दूर करे ।

शिलाजतुगुग्गुलवापिप्पलीमथनागरम् ।
उरुस्तम्भेपिबेन्मूत्रैर्दशमूलीरसेनवा ॥
प्लीहाधिकारेकथितंरसेन्द्रवारिशोषणम् ।
उरुस्तभेप्रयुञ्जीतचान्यद्वायोगवाहिकम् ॥

शिलाजीत, गूगल, पीपल, अथवा सोंठ इनमेंसे किसी एकको पीसकर गोमूत्रके साथ पीवे अथवा दशमूलके काढेके साथ पीवे अथवा प्लीहाधिकारमें जो वारिशोषण रस कहा है उसको सब उरुस्तभ रोगोमें देवे अथवा अन्य योगवाही रसको देवे ।

आमवाताधिकारः

आमवातारिवटी

रसगन्धकलोहाभ्रंतुत्थंटकणसैन्धवम् ।
समभागंविचूर्ण्याथचूर्णाद्द्विगुणगुग्गुलुः ॥
गुग्गुलोःपादिकदेयंत्रिवृत्तामूलवल्कलम् ।
तत्समंचित्रकंदेयघृतेनपरिमर्दयेत् ॥
खादेन्माषद्वयचास्यत्रिफलाचूर्णयोगतः ।
आमवातारिवटिकापाचिकाभेदिकामता ॥
आमवातनिहन्त्याशुगुल्मशूलोदराणिच ।
यकृत्प्लीहोदराष्ठीलाकामलापांडुरोचकान् ॥
ग्रन्थिशूलंशिरःशूलवातरोगञ्चगृध्रसीम् ।
गलगण्डगण्डमालांक्रिमिकुष्ठभगन्दरान् ॥
विद्रधिमन्त्रवृद्धिञ्चअर्शांसिगुदजानिच ।
आमवातारिवटिकापुरेशानेनचोदिता ॥

पारा, गन्धक, लोह, अभ्रक, नीलाथोथा, सुहागा और सैंधानिमक समान भाग ले चूर्णकर चूर्णसे दूना गूगल मिलावे और गूगलकी चतुर्थांश नीमकी छाल, और इतनीही चित्रक मिलाकर घीमें खरल करे, फिर दो माशेके अनुमान त्रिफलाके चूर्णके साथ खाय, यह आमवातारि गुटिका पाचनी और भेदनी है, आमवात गोला, शूल, उदररोग, यकृत, प्लीहा, अष्टीला, कामला पाण्डु, अरुचि, गाठोंका दुखना, मस्तकपीडा, वात रोग, गृध्रसी, गलगण्ड, गण्डमाला, कृमि, कुष्ठ, भगन्दर, विद्रधि, अन्त्रवृद्धि, और ववासीर इन

सब रोगोको दूर करे ।

अपरामवातारिवटिका

रसगन्धौवरावन्हिगुग्गुलःक्रमवर्द्धितः ॥
एतदेरण्डतैलेनमर्दयेदतिचिक्कणम् ।
कर्षोऽस्यैरण्डतैलेनहन्त्युष्णजलपायिनः ।
आमवातमतीवोग्र दुग्धमौद्गादिवर्जयेत् ॥

पारा, गन्धक, हरड, बहेडा, आमला, चीते कीछाल, और गूगल इनको क्रमसे बढती भाग लेवे, और सबको पीसकर अ डीके तेलसे खरल कर एक २ तोलेकी गोलिया बनावे, और एक गोली अंडीके तेलके साथ लेवे और ऊपरसे गरम जल पीवे, तो यह आमवातारि गुटिका आमवात को दूर करे, इसपर दूध और मूंगके पदार्थ वर्जित हैं ।

आमवातेश्वरोरसः

शुद्धगन्धपलार्द्धं चमृतताम्रं चतत्सम ।
ताम्रार्द्धं पारदशुद्ध रसतुल्यमृतायसम ॥
सर्वंपचांगुलेनैवभावयेच्चपुन'पुनः ।
सचूर्ण्यपचकोलोत्थै काथैःसर्व विभावयेत् ॥
रौद्रे विंशतिवारांश्चगुडूचीनारसैर्दश ।
भृष्टटकणचूर्णेनतुल्येनसहमेलयेत् ॥
टंकणार्द्धं विडदेयंमरिचविडतुल्यकम् ।
तिंतिडीक्षारतुल्यचसूततुल्यचदन्तिकम् ॥
त्रिकटुत्रिफलंचैवलवगचार्द्ध भागकम ।
आमवातेश्वरोनामविष्णुनापरिकीर्त्तित. ॥
महाग्निकारकोह्येषआमवातान्तकोमतः ।
स्थूलानाकर्षणे श्रेष्ठःकृशानास्थौल्यकारकः ॥
अनुपानविशेषेणसर्वरोगविनाशनः।
अनेनसदृशोनास्तिवन्हिदीप्तिकरोमहान् ॥
गुल्मार्शोग्रहणीदोषशोथपाण्डूरुजापहः ।

शुद्ध गन्धक और तांबेकी भस्म दो २ तोले, शुद्धपारा और लोहभस्म एक २ तोले, सबको कूटपीस अ डके रससे ७ वार खरल करे, फिर पचकोलके काढेकी २० भावना धूपमें रखकर देवे गिलोयके रसकी १० भावना दे, फिर भुने सुहागे का चूर्ण ६ तोले, वायविडंग, कालीमिरच, तिंतडीकका खार, प्रत्येक तीन ३ तोले भर, जमालगोटा, सोठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, और आंवला प्रत्येक ६ माशे ले सबको कूटपीस गोलिया बनावे, यह आमवातेश्वर रस विष्णु भगवान्ने कहा है, अत्यत अग्नि बढावे आमवात का नाश करे, पुष्ट पुरुषोको कृश करे, कृशोको पुष्ट करे, यह अनुपानके योगसे सब रोगोको दूर करता है, अग्निके दीप्त करनेवाला इसके सिवाय कोई योग नहीं है, यह गोला, बवासीर, सग्रहणी, सूजन और पाण्डुरोगको दूर करता है ।

वृद्धदाराद्यं लौहम्

वृद्धदारत्रिवृद्दन्तीगजपिप्पलिमानकैः ।
त्रिकत्रयसमायुक्तैरामवातनिकृंत्वयः ॥
सर्वानेवगदान्हन्तिकेसरीकरिणयथा ॥

विधायरा, निसोथ, दन्ती, गजपीपल, मानकन्द, त्रिकुटा, त्रिफला और त्रिमद इन सबको समान भाग ले और सबको बराबर लोहभस्म मिलावे, तो यह सर्व रोगोंको दूर करे ।

शिवागुग्गुलुः

शिवाविभीतामलकीफलानाप्रत्येकशोमुष्टि चतुष्टयञ्च । तोयाढकेतत्क्वथितंविधायपादा वशेषेत्ववतारणीयम् ॥ एरण्डतैलद्विपल निधायपिचुत्रयगधकनामकस्य । पचेत्पुरस्या त्रपलद्वयञ्चपाकावशेषेचविचूर्ण्यदद्यात् ॥ रास्नाविडंगं मरिचकणाचदन्तीजटानागरदेवदारु । प्रत्यकशःकोलमितंततैश्चांविचूर्ण्यनिक्षि प्यनियोजयेत् ॥ आमवातेकटीशूलेगृध्रसी क्रोष्टशीर्षके । नचान्यदस्तिभैषज्ययथायंगुग्गुलुःस्मृतः ॥

हरड, बहेडा और आमला प्रत्येक चार २ पल ले सबका चार सेर जलमें काढा करे, जब चतुर्थांश जल रहे तब उतार लेवे, फिर इसमें दो पल अ डीका तेल मिलावे, फिर ६ तोले गन्धक और दो पल गूगल पूर्वोक्त काढेमें डालके पचावे,

जब पाक होजावे तब रास्ना, वायविडंग, काली मिरच, पीपल, दती, जटामांसी, सोंठ, और देवदारु प्रत्येक एक२ तोला ले सबको एकत्रकर गोलिया बनावे, यह शिवागूगल आमवात, कमरकी बादी, गृध्रसी, क्रोष्टुशीर्षक इन रोगोको दूर करे, इस गूगलके बराबर आमवातमे पथ्य कोई और दूसरी औषधि नही है।

आमवातगजसिंहमोदकः

शुंठीचूर्णस्यप्रस्थैकयमान्याश्चपलाष्टकम्।
जीरकस्यपलेद्वेचधन्याकञ्चपलद्वयम्॥
पलैकशतपुष्पायालवंगस्यपलंतथा।
टंकणस्यपलंभृष्टंमरिचस्यपलानिच॥
त्रिवृतात्रिफलाक्षारपिप्पलीनांपलंतथा।
शठ्येलातेजपत्रञ्चचविकानांपलंतथा॥
अभ्रंलौहंतथावंगंप्रत्येकञ्चपलंपलम्।
एतेषांसर्वचूर्णानांखण्डंदद्यात्गुणत्रयम्॥
घृतेनमधुनामिश्रंकर्षमात्रन्तुमोदकम्।
एकैकंभक्षयेत्प्रातःघृतंचानुपिबेत्पयः॥
शूलघ्नोरक्तपित्तघ्नश्चाम्लपित्तविनाशनः।
आमवातकुलध्वंसीकेसरीविधिनिर्मितः॥

सोंठ का चूर्ण १ सेर, अजमायन ३२ तोले, जीरा और धनियां आठ २ तोले, सोफ, लौंग, भुना सुहागा और काली मिरच प्रत्येक ४ तोले, निसोथ, त्रिफला, जवाखार और पीपल प्रत्येक चार तोले ले, कचूर, इलायची, तेजपात, चव्य प्रत्येक ४ तोले, अभ्रक, लोह, वंग, प्रत्येक ४ तोले ले चूर्ण कर चूर्ण से तिगुनी खाड मिलावे, इस को सहत और घी में मिला कर १ तोले, नित्य प्रातःकाल भक्षण करे,ऊपरसे घी और दूध मिला कर पीवे तो शूल, रक्तपित्त अम्लपित्त और आमवात इन सब रोगों का नाश करे, इस आमगजसिंहमोदक में प्रथम खाड जल डाल के अग्नि पर पाक करे, फिर चूर्णादिक सब मिलाय लड्डू बाध लेवे सहत, घी भी मिलावे।

रामबाणोरसोदेयोयोगवाहिरसेन्द्रकम्।
आमवातेविधीयन्तेसानुपानेप्रयत्नतः॥

इस आमवात रोग मे रामबाण रस तथा योगवाही रस अनुपान के साथ देवे, तथा वैद्यरहस्य ग्रन्थ मे जो आमवातरि गुटिका लिखा है उसे देवे।

अथ शूलरोगचिकित्साः

सप्तामृतलौहम्.

मधुकंत्रिफलाचूर्णमयोरजसमंलिहेत्।
मधुसर्पियुतसम्यक्‌ उर्ध्वंक्षीरंपिबेदनु॥
छर्दिसतिमिरशूलमम्लपित्तंज्वरारुचिम्।
मूत्रकृच्छ्रंतथामेहंहन्यादेतन्नसंशयः॥

मुलहटी और त्रिफला बराबर लेकर चूर्ण करे और चूर्ण की बराबर लौह भस्म मिला कर सहत और घीते के साथ चाटे ऊपर से गौ का दूध मिश्री मिला कर पीवे तो वमन तिमिर शूल, अम्लपित्त, ज्वर, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र और प्रमेह इन सब को दूर करे।

त्रिफलालौहम्.

तीक्ष्णायश्चूर्णसंयुक्तंत्रिफलाचूर्णमुत्तमम्।
क्षारेणपाययेद्धीमान्सद्यशूलनिवारणम्॥

खेडीलोह की भस्म मे त्रिफला का चूर्ण मिलाय दूध के साथ पीवे तो तत्काल शूल रोग दूर हो।

चतुःसमलौहम्.

अभ्रंताम्रंरसंलौहंगंधकंसंस्कृतंपलम्।
सर्वमेतत्समाहृत्ययत्नतःकुशलोभिषक्॥
आज्येपलेद्वादशकेदुग्धेवत्सरसंख्यके।
पक्त्वातत्रक्षिपेच्चूर्णंसुपूतंघनवाससा॥
विडंगत्रिफलावन्हित्रिकटूनांतथैवच।
पिष्ट्वापलोन्मितानेतानथसंमिश्रतान्नयेत्॥

ततःपिष्ट्वाशुभेभाण्डेस्थापयेच्चविचक्षणः ।
आत्मनःशोभनेचाह्निपूजयित्वारविंगुरुम् ॥
घृतेनमधुनालोड्यभक्षयेन्मापकादिकम् ।
अष्टौमापान्क्रमेणैववर्द्धयेच्चसमाहितः ॥
अनुपानंप्रयोक्तव्यंनारिकेलजलपयः ।
जीर्णेलोहितशाल्यन्नंमुद्गमासरसंतथा ॥
भक्षयेद्घृतसयुक्तंसद्यःशूलाद्विमुच्यते ।
हृच्छूलपार्श्वशूलञ्चआमवातकटीग्रहम् ॥
गुल्मशूलशिरःशूलयोगेनानेननाशयेत् ।

अभ्रक, तांबे की भस्म, पारा, गन्धक, और लोह भस्म प्रत्येक ४ तोले ले, घी ४८ तोले, दूध १२ पल, दोनों को पचाके आगे लिखे चूर्ण को कपरछन कर डाले, वायविडंग, त्रिफला, चीते की छाल और त्रिकुटा प्रत्येक ४ तोले ले मिलाय सब को एकत्र कर उत्तम पात्र में रख छोडे फिर शुभ दिन मे सूर्य और गुरू का पूजन कर घृत और सहत के साथ मिला के १ माशे के अनुमान खाय, फिर प्रतिदिन एक २ माशे बढ़ाता जाय और इस के ऊपर नारियल का जल पीवे, जब यह पच जावे तब लाल चावलों का भात, मूंग, मास रस, इन में घी मिला के भोजन करे तो तत्काल शूल से छूट जावे, हृदय का शूल, पीठ का शूल, आमवात, कमर का रह जाना, गोला और मस्तक शूल को यह चतुःसम लोह नाश करे ।

पंचात्मकोरसः

मृतसूताभ्रकचाम्लवेतसताम्रगंधकम् ।
विषफलत्रयाच्चूर्णंतुल्यमर्धं दिनावधि ॥
जयन्तीमुण्डिरिवासावृहतीचगुडूचिवा ।
महाराष्ट्रीजम्बुरसैस्तथानीलोत्पलस्यच ॥
प्रतिद्रावैर्दिनंभाव्यततःसंशोष्ययत्नतः ।
अर्द्धांशंपञ्चलवणंदत्वार्द्रकरसेनच ॥
दिनंपेष्यततःकुर्य्यात्‌वटिकांचणसन्निभाम् ।
प्रातर्मध्यान्हरात्रौचभक्षयेद्वटिकात्रयम् ॥
माषेसुपिष्टगुवन्नंगोपयश्चहितंतथा ।
सेवेन्नवातशूलार्त्तश्चायंपञ्चात्मकःस्मृतः ॥

चन्द्रोदय, अभ्रक, अम्लवेत, ताम्र भस्म, गंधक, विष और त्रिफला को एकत्र कर खरल करे, अरनी, गोरख मुंडी, अडूसा, कटेरी, गिलोय, बड़ी दही, जामुन और नील कमल प्रत्येक के रस मे एक २ दिन खरल कर सुखा लेवे फिर सर्व चूर्ण मे आधे पांचों निमक मिलावे, और अदरख के रस मे १ दिन घोट चने की बराबर गोलियां बनावे, एक २ गोली प्रातःकाल मध्यान्ह और सायंकाल मे भक्षण करे, इस पर उड़द के पदार्थ, ईख, पिष्टपदार्थ, भारी अन्न और गौ का दूध वायशूल वाला मनुष्य सेवन न करे तो वायुशूल को दूर करे ।

धात्रीलौहम्.

कुडवंशुद्धमण्डूरयवञ्चकुडवंतथा ।
पाकार्थञ्चजलप्रस्थचतुर्भागावशेषितम् ।
शतावरीरसस्याष्टावामलक्यारसस्यच ।
तथादधिपयोभूमिकुष्माण्डस्यचतुःफलम् ॥
चतुःपलमिक्षुरसदद्यात्तत्रविचक्षण ।
प्रक्षिपेत्‌जीरकधान्यत्रिजातंकरिपिप्पली ॥
मुस्तहरीतकीचैवअभ्रंलौहंकटुत्रयम् ।
रेणुकात्रिफलाचैवतालीशस्वर्णकेशरम् ॥
कटुकमधुकरास्नाचाश्वगधाचचन्दनम् ।
एतेषांकार्षिकंभागंचूर्णयित्वाविनिक्षिपेत् ॥
भोजनाद्यवसानेचमध्येचैवसमाहित ।
तोलैकभक्षयेन्नित्यअनुपानपयस्तथा ॥
शूलमष्टविधहन्तिसाध्यासाध्यमथापिवा ।
वातिकपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकसन्निपातकम् ॥
परिणामसमुत्थञ्चअन्नद्रवभवतथा ।
सर्वशूलहरश्रेष्ठधात्रीलौहमिदंशुभम् ॥

प्रथम पावभर जवोंमें सेरभर जल डालकर काढ़ा करे जब चतुर्थांश बाकी रहे तब उसमे पाव भर शुद्ध मंडूर डाले और औटावे फिर शतावर और आमलोंका रस आठ २ पल, दही, दूध, भूयकुमडेकारस प्रत्येक ४ पल लेवे, और ईखका रस ४ पल मिलाकर जीरा, धनिया, त्रिजातक,

गजपीपल, नागरमोथा, हरड, अभ्रक, लोहभस्म, त्रिकुटा, रेणुका, त्रिफला, तालीसपत्र, नागकेशर, कुटकी, महुआ, रास्ना, असगन्ध, और चन्दन प्रत्येक एक तोले ले, सबका चूर्णकर पूर्वोक्त क्वाथ मे मिलाके एक २ तोलेकी गोलिया बनावे, एक गोली भोजनके पश्चात् तथा मध्यमे सेवन करे, और ऊपरसे दूध पीवे तो ८ प्रकारके शूल, साध्यासाध्य शूल, वातज पित्तज, कफज, सन्निपातज, तथा परिणाम शूल और अन्नद्रवमे उत्पन्न सर्व प्रकारके शूल दूर हो यह धात्रीलोह कहाता है

शूलराजलौहम्.

कर्षैककान्तलौहस्यशुद्धमभ्रपलंतथा ॥
सितायाश्चपलञ्चैकमधुसर्पिस्तथैवच ।
सर्वमेकीकृतपात्रे लौहदण्डेनमर्दयेत् ।
त्रिकुटात्रिफलामुस्तविडंगंचव्यचित्रकम् ॥
प्रत्येकतोलकमानचूर्णिततत्रदापयेत् ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायशिशिराम्ब्वनुपानतः ॥
सर्वदोषभवशूलंकुक्षिशूलंचयत्भवेत् ।
हृच्छूलपार्श्वशूलंचअम्लपित्तंचनाशयेत् ॥
अर्शांसिग्रहणीदोषंप्रमेहाश्चविपूचिकाम् ।
शूलराजमिदंलौहंहरेणपरिनिर्मितम् ॥

कांतलोह १ तोले, शुद्धअभ्रक ४ तोले, मिश्री ४ तोले, सहत और घी चार चार तोले, सबको लोहके पात्रमे डालके लोहके मूसलेमे खरल करे, फिर त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, वायविडंग, चव्य चीता, प्रत्येक एक तोले, सबको एकत्रकर किसी उत्तम पात्रमे भरकर रख छोडे, प्रातःकाल उठके शीतलजलके साथ भक्षण करे तो सर्व दोष जन्य शूलोको दूर करे, कुक्षिशूल, हृदयका शूल, पसवाडेका शूल, अम्लपित्त, बवासीर, संग्रहणी, प्रमेह, और विशूचिका (हैजा) इन सब रोगो को यह शूलराज लोह दूर करता है ।

विद्याधराभ्रम्.

विडंगमुस्तत्रिफलागुडूचीदन्तीत्रिवृद्वह्निकटुत्रयञ्च । प्रत्येकमेषांपिचुभागचूर्णंपलानिच त्वारुय्यंयसोमलस्य ॥ गोमूत्रशुद्धस्यपुरांतनस्ययद्वायसस्तानिशशिवाटिकायाः । कृष्णाभ्रचूर्णस्यपलंविशुद्धंनिश्चन्द्रकंशुद्धमतीवसूतात् ॥ पादोनकर्षस्वरसेनखल्ले शिलातलेथानकुनीदलस्य । समर्द्य पश्चादतिशुद्धगन्धपाषाणचूर्णेनपिचुन्मितेन् ॥ युक्त्यातत'पूवरजासिदत्वासर्पिर्मधुभ्यामवमर्द्य यत्नात् । निधापयेत्स्निग्धविशुद्धभाण्डेततःप्रयोज्यास्यरसायनस्य ॥ प्राङ्माषकोवाप्यथवाद्वितीयोगव्यपयोवाशिशिरजलम्वा । पिबेद यथोगवरःप्रभूताकालप्रणष्टानलदीपकञ्च ॥ रोगनिहन्यात्परिणामशूलंशूलंतथान्नद्रवसञ्ज्ञकंच । यक्ष्माम्लपित्तग्रहणीप्रवृद्धांजीर्णज्वरंलोहितपित्तकञ्च ॥ नश्यन्तितेयानिननिहन्तिरोगान्योगोत्तम'सम्यगुपास्यमानः ।

वायविडंग, नागरमोथा, त्रिफला, गिलोय, दन्ती, निसोथ, चीतेकीछाल, और त्रिकुटा प्रत्येक १ तोले ले गोमूत्रमे सुधी पुरानी कीटी ४ तोले, अथवा लोहके पत्र ४ पल लेवे, काले अभ्रक की निश्चन्द्र भस्म ४ तोले, शुद्धपारा पौन तोले, उसको मडूकपर्णीके पत्तोके रसमे शुद्धकर फिर एक तोले गन्धक मिलाके पूर्वोक्त विडंगादि चूर्ण मिलाके उत्तम घीके चिकने वासनमे रखछोडे फिर इसमेसे दो माशे रस लेके सहत और घी मिलाय लोहेके खरलमे लोहेके मूसलेसे खरलकर बलाबल देखकर एक या दो माशे देवे और इसके ऊपर गौका दूध या शीतलजल चौंसठगुना पीना चाहिये तो यह योगवर बहुत कालकी नष्ट जठराग्निको उद्दीपन करे, परिणामशूल, शूल, अन्नद्रव सञ्ज्ञक, खई, अम्लपित्त, संग्रणी, अजीर्णज्वर, रक्तपित्त इत्यादि रोगोको दूर करे ऐसा कोन सा रोग है जिसको यह उत्तम योगोत्तम दूर नहीं कर सके ।

वृद्धविद्याधराभ्रम्

शुद्ध सूततथागन्धफलत्रयकटुत्रयम् ।
विडंगमुस्तकञ्चैवत्रिवृत्तादन्तिचित्रकम् ॥

आखुपर्णीग्रन्थिकञ्चप्रत्येकंकर्षसम्मितम् ।
पलकृष्णाभ्रचूर्णस्यमृतायश्चचतुर्गुणम् ॥
घृतेनमधुनापिष्ट्वावटिकांकोलसम्मिताम् ।
एकैकावटिकांखादेत्प्रातरुत्थायनित्यश. ॥
अनुपानगवाक्षीरनीरवानारिकेलजम् ।
सर्वशूलंनिहन्त्याशुवातपित्तभवन्तथा ॥
एकजद्वंद्वजञ्चैवतथैवसान्निपातकम् ।
परिणामोद्भवंशूलमामवातोद्भवंतथा ॥
कार्श्यंवैवर्ण्यमालस्यतन्द्रारुचिविनाशनम् ।
साध्यासाध्यनिहन्त्याशुभास्करस्तिमिरयथा ॥

शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, त्रिफला, त्रिकुटा, वायविडंग, नागरमोथा, निसोथ, दन्ती, चीतेकी छाल, मूषाकर्णी, पीपलामूल, प्रत्येक एक तोले, काली अभ्रककी भस्म ४ तोले, और लोहभस्म १६ तोले, सबको सहत और घृतके साथ घोट कर बेरके बराबर गोलिया बनावे, एक गोली नित्य प्रात.काल खाय ऊपरसे गौका दूध पीवे, अथवा नारियलका जल पीवे तो सर्व प्रकारके शूल, वातजन्य, पित्तजन्य, एकदोषज, द्विदोषज, तथा सन्निपातजन्य, परिणामशूल, आमवातका शूल, देहकी कृशता, विवर्णता, आलस्य, तन्द्रा, अरुचि इत्यादि साध्यासाध्य रोगोको दूर करे ।

सर्वांगसुन्दरोरसः

शुद्धंसूततथाताम्रंशिलामाक्षिकतालकम् ।
रजतंस्वर्णवंगञ्चलोहमभ्रंसनागरम् ॥
चूर्णयेत्पंचलवणादेयंसर्वन्तुतुल्यकम् ।
गन्धकंमिश्रयेत्सर्वंरसैरेषांविभावयेत् ॥
शुन्ठीजयन्तीविजयामहाराष्ट्रकधूर्त्तजैः ।
सर्वांगसुन्दरोनाम्नारसोयंविष्णुनिर्म्मित ॥
खादेदेरण्डशुंठीभ्यामाषमात्रंदिनेदिने ।
कफवातामयंहन्तिचानुपानंवदाम्यहम् ॥
व्योपसौवर्चलहिंगु करंजबीजसयुतम् ।
पिबेदुष्णाम्बुनाचानुसर्वशूलनिकृन्तनम् ॥

शुद्धपारा, ताम्रभस्म, मनसिल, सोनामक्खी, हरिताल, रूपरस, सुवर्णभस्म, वग, लोहभस्म, अभ्रक, सोंठ,कालानिमक,सैंधानिमक,कचियानिमक खारीनिमक,और समुद्रका निमक,इन सबको बराबर लेवे, और सबकी बराबर गन्धक मिलावे, सबको खरलकर सोंठ, अरनी, भाग, जलपीपल, और धतुरेके रसोकी पृथक् २ भावना देवे, इस सर्वांगसुन्दररसको तयार करके १ माशे अंड और सोंठ के काढेसे नित्य खाय तो कफवातके रोगोको दूर करे, इसके अनुपानको मैं कहताहूं सोंठ, मिरच, पीपल, कालानिमक, हींग, और कंजाको गरमजल के साथ पीवे तो यह सर्व शूलमात्रको हरण करे ।

शूलवज्रिणीवटिका

रसगन्धकलोहानापलार्द्धंनसमन्वितम् ।
त्रिफलारामठशुल्वत्रिकटुशठिटङ्कणम् ॥
पत्रंत्वगेलातालीशजातीफललवंगकम् ।
यमानीजीरकंधान्यप्रत्येकंतोलकंशुभम् ॥
माषैकावटिकाकार्य्याछागीदुग्धेनवापुनः ।
एकैकाभक्षिताचेयवटिकाशूलवज्रिणी ॥
शूलमष्टविधंहन्तिप्लीहगुल्मोदरन्तथा ।
अम्लपित्तामवातचपाण्डुत्वकामलातथा ॥
शोथंगलग्रहवृद्धिंश्लीपदंसभगंदरम् ।
वृद्धेबलकरीचवमन्दाग्नेरपिदीपनी ॥

पारा, गन्धक, और लोहभस्म प्रत्येक दो पल लेवे, त्रिफला, हींग, ताम्रभस्म, त्रिकुटा, कचूर, सुहागा, पत्रज, दालचीनी, इलाइची, तालीसपत्र, जायफल, लौंग, अजवायन, जीरा और धनिया प्रत्येक एक तोले, सबको कूट पीस एक-एक माशे की गोलियां बनावे, एक गोली बकरी के दुध से लेवे, तो आठ प्रकार के शूल, प्लीह, गोला, उदर, अम्लपित्त, आमवात ,पाण्डु रोग, कामला, सूजन, गलग्रह, अण्डवृद्धि, श्लीपद, और भगंदर को दूर करे, वृद्ध को बल दे, मंदाग्नि को दीपन करे ।

त्रिपुरभैरवः

भागोरसस्यारमहेम्नभागोग्राह्योतियत्नतः ।
तयोर्द्वादशभागानिताम्रपत्राणिलेपयेत् ॥

पचेत्शूलहरःसूतोभवेत्त्रिपुरभैरवः ।
माषोमध्वाज्यसयुक्तोदेयोऽस्यपरिणामजे ॥
अन्येत्वेरण्डतैलेनहिंगुत्रययुतोरसः ।

पारा १ भाग, गन्धक १ भाग, सुवर्ण १ भाग, सबसे बारह गुने कटकवेधी ताम्र पत्र ले उन पर पारे आदि की पिट्ठी का लेपकरि यंत्र मे रख के पचावे, तो त्रिपुरभैरव रस सिद्ध हो, १ माशे सहत घी के साथ दे, अथवा अ डी के तेल और हिगुत्रय के साथ देवे तो परिणामशूल दुर हो ।

अग्निमुखः

रसबलिगगनार्कवेतसाम्लंविषंस्यात् ।
सवरमिहपृथक्स्याद्भवेदूषस्रमेतै ॥
कनकभुजगवल्लीकण्टकारीजयाद्भिः ।
कमलसलिलवासामुष्टिवज्राम्बुपूरैः ॥
अरुणसदृशपाकैर्मातुलुंगश्चयोज्यः ।
पुटगणइहतुल्योभावयेदार्द्रकाद्भिः ॥
दहनवदननाम्नावल्लमात्रोनिहन्ति ।
प्रबलसकलशूलंतद्विकारानशेषान् ॥

पारा, गन्धक, अभ्रक, ताम्र, अमलवेत, सिगियाविष और त्रिफला प्रत्येक समान भाग ले, सबको कूटपीस धतूरा, पान, कटेरी अरनी,कमल, नेत्रवाला, अडूसा, कुचला, थूहर और बिजौरेकी पृथक् २ भावना देवे और सबकी बराबर अदरखके रसकी भावना देवे, इस अग्निमुख रसको ३ रत्ती सेवन करनेसे सपूर्ण प्रबल शूलो और शूलके विकार दूर हों ।

शूलगजकेशरी.

शुद्ध सूतद्विधागधंयामैकमर्दयेद्दृढम् ।
द्वयोस्तुल्यंशुद्धताम्रं संपुटेसन्निवेशयेत् ॥
ऊर्ध्वाधोलवणदत्वामृद्भाण्डेस्थापयेद्भिषक् ।
ततोगजपुटदद्यात्स्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥
सपुटंचूर्णयेत्श्लक्ष्णपर्णखण्डेद्विगु जकम् ।
भक्षयेत्सर्वशूलार्त्तोहिंगुशु ठीचजीरकम् ॥
वचामरिचचूर्णंतुकर्षमुष्णजलैःपिबेत् ।
असाध्यंनाशयेच्छूलश्रीशूलगजकेशरी ॥

शुद्ध पारा १ तोले, गन्धक २ तोले, दोनों को प्रहर भर खरल करे फिर इस कज्जलीका इससे दूने ताबेके कटकवेधी पत्रोपर लेपकर मिट्टीका सपुटकर उसके ऊपर नीचे निमकके पुट लगाय मुख बन्द कर गजपुटमे रखके फू क देवे, स्वाग शीतल होनेपर निकाल लेवे, और दो रत्ती पान के टुकडेमे रखकर देवे, ऊपरसे हीग, सोठ, जीरा वच और कालीमिरचके चूर्णको गरमजलके साथ पिलावे, तो साध्य असाध्य सर्व प्रकारके शूलो को यह शूलगजकेशरी रस दूर करे ।

त्रिगुणाख्योरसः

टंकणहारिणशृंग स्वर्णगन्धमृतंरसम् ।
दिनैकमार्द्रकद्रावैर्मर्द्य रुद्धापुटेपचेत् ॥
त्रिगुणाख्योरसोह्येषमापैकंमधुसर्पिषा ।
सैधवंजीरकंहिंगुमध्वाज्याभ्यांलिहेदनु ॥
पक्तिशूलहरःख्यातोयाममात्रान्नसंशयः ।

सुहागा, हरिणका सींग, सुवर्ण, गन्धक, और चन्द्रोदय सबको अदरखके रसमें एक दिन खरलकर संपुटमें रखके फू क देवे फिर इसकी १ रत्तीकी मात्रा सहत और घीके साथ देवे ऊपरसे सैधानिमक, जीरा, हींग, सहत और घी मिलाके चाटे तो यह परिणाम शूलको दूर करे ।

शूलहरणयोगः

हरीतकीत्रिकटुककुचिलाहिंगुसैधवम् ।
गन्धकचसमसर्ववटीकुर्य्यात्सुखावहाम् ॥
लघुकोलप्रमाणान्तुशस्यतेप्रातरेवहि ।
एकैकावाटिकाग्राह्यागुल्मशूलविनाशिनी ॥
ग्रहण्यामतिसारेचसाजीर्णेमन्दपावके ।
योजयेदुष्णपयसासुखमाप्नोतिनिश्चित. ॥
सुवर्णश्चभवेद्देयसदोत्साहयुतनृणाम् ।

हरड, सोंठ, मिरच, पीपल, कुचिला, हींग, सैंधानिमक, और गन्धक, सबको समान भाग लेके बेरके बराबर गोलियां बनावे, और एक गोली

प्रातःकाल खाय तो शूलरोग, गोला, मग्रहणी, अतिसार, अजीर्ण, मन्दाग्नि इनको दूर करे, इसको गरमजलके साथ देवे तो सुवर्ण समान देह होजावे और उत्साह बढ़ावे।

शर्करालौहम्

त्रिफलायस्तथाधात्र्याश्चूर्णवाकाललौहजम्।
शर्कराचूर्णसंयुक्त सर्वशूलेपुयोजयेत्॥

त्रिफला वा आवलेका चूर्ण अथवा लोहभस्म इनमेसे किसी एकको मिश्रीके साथ सर्व प्रकारके शूल रोगोमे देना चाहिये।

शंखादिचूर्णम्

शंखचूर्णस्यचपलपंचैवलवणानिच।
क्षारंटंकणकजातीशतपुष्पायमानिका॥
हिंगुत्रिकटुकञ्चैवसर्वमेकत्रचूर्णयेत्।
आमवातंयकृच्छूलंपरिणामसमुद्भवम्॥
अन्नद्रवकृतशूलंशूलंचैवत्रिदोषजम्।

शंखका चूर्ण ४ तोले, पांचो निमक, सुहागा, जावित्री, सोफ, अजमायन, हींग, और त्रिकुटा सबको समान भाग ले चूर्ण करे, यह आमवात, यकृत, शूल, परिणामशूल, अन्नद्रवजन्य शूल और त्रिदोषजन्य शूल को दूर करे।

अथ उदावर्त्तानाहाधिकारः

वैद्यनाथवटी.

पथ्यात्रिकटुसूतञ्चद्विगुणकनकन्तथा।
थानकुनीरसैरम्भोणिकायारसै कृता॥
गुडिकोदरगुल्मादिपाण्डवामयविनाशिनी।
कृमिकुष्ठगात्रकण्डूपीडकाश्चनिहन्तिच॥
गुडीसिद्धफलाचेयवैद्यनाथेनभाषिता।

हरड, सोंठ, मिरच, पीपल, और शुद्धपारा प्रत्येक समान भाग लेवे, और सबको मडूकपर्णी औषधिके रसमे और इमलीके रससे खरल कर गोलिया बनावे, यह उदर, गोला, पाडुरोग, कृमि-रोग, कुष्ठ सर्वदेहकी खुजली और फुंसी इन सबको यह वैद्यनाथवटी दूर करे।

बृहदिच्छाभेदीरसः

शुद्धंपारदटंकणंसमरिचंगधाश्मतुल्यात्रिवृत
विश्वाचद्विगुणाततोनवगुणाजैपालचूर्णक्षिपेत
खल्लेदण्डयुगंविमर्द्य विधिनाचार्कस्यपत्रेतत
स्वेदंगोमयवन्हिनाचमृदुनास्वेच्छावशाद्धेद
क॰॥ गुंजैकप्रमितेरसोहिमजलै संसेवितोरे
चयेत्। यावन्नोष्णजलपिबेदपिवरंपथ्यञ्च
दध्योदनम्॥ आमसर्वभवसुजीर्णमुदरगुल्म
विशालंहरेत। वन्हेर्दीप्तिकरोवलाशहरणः
सर्वामयध्वसन.॥

शुद्धपारा, सुहागा, कालीमिरच, और गधक समान भाग लेवे. और सबकी तुल्य निसोथ लेवे तथा दूनी सोठ और नौगुने जमाल गोटे लेवे, सबको खरलमे डाल ४ घडी विधिपूर्वक मर्दन करे, आकके पत्तेसे रख आरने कंडोंकी मन्दाग्नि मे स्वेदन करे, एक रत्ती रस शीतल जलके साथ सेवन करे, तो जबतक गरमजल न पीवे तबतक दस्त होते रहेंगे इसपर दही भातका पथ्य देना चाहिये यह सर्व प्रकारकी आम और उदररोग गोला और कफको दूर करे, अग्नि को दीपन करे तथा सर्व प्रकारके रोगोंको दूर करता है।

योगवाहिरसान्सर्वान्रेचकेकथितानपि।
प्लीहाधिकारेकथितरसेन्द्रवारिशोषणम्॥
उदावर्त्ततथानाहेप्रयुंज्जीतानुपानतः।
पुटितभावितलोहंत्रिवृत्क्वाथैरनेकशः॥
उदावर्त्तहरयुञ्जात्ससितसयथाबलम्।
उदावर्त्तेप्रयोक्तव्याउदरोक्तारसा.खलु॥

जो दस्तकर्त्ता रस कहे हैं तथा प्लीहाधिकारमें जो वारिशोषणरस कहा है उन सबको उदावर्त्त और अफरारोगमे देना चाहिये, शुद्ध लोहभस्मको निसोथके काढेकी पुट और अनेक भावना देकर बलावल विचारमिश्री के साथ देवे, तो उदावर्त्त रोग दूर हो, एव उदावर्त्त रोगपर उदररोगमें कहे

हुए सब रस देने चाहिये।

अथगुल्मरोगचिकित्सा:

महानाराचरस:

ताम्रं सूतं समगधं जैपालञ्चफलत्रिकम् ।
कटुकं पेषयेत्क्षारैर्निष्कं गुल्महरं पिबेत् ॥
उष्णोदकं पिबेच्चानु नाराचोऽयं महारस. ।

ताम्रभस्म, पारा, गन्धक, जमालगोटा, हरड बहेडा, आमला और कुटकी इनको पीस जवाखार आदिके साथ गरमजलसे पीवे तो यह नाराचरस गोलेके रोगको दूर करे।

पञ्चाननोरस:

पारदं शिखितुत्थञ्च गन्धं जैपालपिप्पली ।
आरग्वधफलान्मज्जा वज्रीक्षीरेण पेषयेत् ॥
धात्रीरसयुतं खादेद्रक्तगुल्मप्रशान्तये ।
चिञ्चाफलरसाञ्चानुपथ्यं दध्योदनं हितम् ॥

पारा, मोरचूत, गन्धक, जमालगोटा, पीपल, अमलतासका गूदा, सब समान भाग लेकर थूहर के दूधसे खरल करे इसको बलाबल देखकर आमलेके रसके साथ देवे, तो रक्तगुल्म दूरहो, इसके ऊपर पकी इमलीका रस पीवे और इस पर दही भातका पथ्य हित है ।

गुल्मवज्रिणीवटी.

रसगन्धकताम्रं च कांस्यं टंकणतालकं ।
प्रत्येकं पलिकं ग्राह्यं मर्दयेदतियत्नतः ॥
तद्यथाग्निबलं खादेद्रक्तगुल्मप्रशान्तये ।
निर्मिता नित्यनाथेन वटिका गुल्मवज्रिणी ॥
गुल्मप्लीहोदराष्ठीलायकृदानाहनाशिनी ।
कामलापाण्डुरोगघ्नी ज्वरशूलविनाशिनी ॥

पारा, गन्धक, ताम्रभस्म, कांसेकी भस्म, सुहागा और हरिताल प्रत्येक ४ तोले लेवे, सबको खरलकर जठराग्निके समान भक्षण करे तो रक्तगुल्म, प्लीह, उदर, अष्ठीला, यकृत्‌के रोग, अफरा कामला, पांडुरोग, ज्वर और शूलको नष्ट करे यह नित्यनाथकी कही हुई गोली है ।

गुल्मकालानलोरस:

सूतकं लोहकं ताम्रं तालकं गंधकं समम् ।
तोलद्वयमितं भागं यवक्षारञ्च तत्समम् ॥
मुस्तकं मरिचं शुण्ठी पिप्पली गजपिप्पली ।
हरीतकी वचा कुष्ठं तोलैकं चूर्णयेद्बुधः ॥
सर्वमेकीकृतं पात्रे क्रियन्ते भावनास्ततः ।
पर्पटं मुस्तकं शुण्ठ्यपामार्गं पाचे लिकम् ॥
तत्पुनश्चूर्णयेत्पश्चात्सर्वगुल्मनिवारणम् ।
गुञ्जाचतुष्टयं खादेद्धरीतक्यनुपानतः ॥
वातिकं पैत्तिकं गुल्मं तथा चैव त्रिदोषजम् ।
द्वन्द्वजं श्लैष्मिकं हन्ति वातगुल्मं विशेषतः ॥
गुल्मकालानलो नाम सर्वगुल्मकुलान्तकृत् ।

पारा, लोहभस्म, तांबा, हरिताल, गन्धक, प्रत्येक दो तोले लेवे, सबके बराबर जवाखार लेवे, नागरमोथा, कालीमिरच, सोंठ, पीपल, गजपीपल हरड, वच, कूठ, प्रत्येक एक तोला ले, सबका एकत्र चूर्णकर पित्तपापडा, नागरमोथा, सोंठ, ओंगा, पाढ इनके रससे खरलकर चार २ रत्तीकी गोलिया बनावे, एक गोली हरडके चूर्णके साथ खाय तो वातजन्य, पित्तजन्य, त्रिदोषज, द्वन्द्वज, कफजन्य. गोला और वायगोलाको दूर करे, यह गुल्मकालानल रस सर्व गोलेके रोगोका नाश करता है ।

वडवानलोरस:

पारदं गन्धकं तथाप्ययवक्षारार्कमभ्रकम् ।
अग्न्यम्बुनाहिपत्रेण समर्द्याथ द्विगुञ्जकम् ॥
भक्षयेत्पर्णखण्डेन हिंगुसिंधुसुवर्चलैः ।
दाडिमञ्च तथा बिल्वकार्षिकं भृङ्गजैर्द्रवैः ॥
पिष्ट्वा तु सुरया युक्तं देयं स्यादनुपानकम् ।
सर्वगुल्मं निहन्त्याशु शूलं च परिणामजं ॥

पारा, गन्धक, सुवर्णमाक्षिक, जवाखार, तांबे की भस्म और अभ्रकको समान भाग ले सबको चीतेकी पत्तोके रससे खरलकर दो २ रत्तीकी

गोलिया बनावे, एक गोली पानमें रखके खाय ऊपरसे हीग, सेंधानिमक, कालानिमक, अनारदाना बेलगिरी, प्रत्येकको एक २ तोले ले भागरेके रस मे खरलकर शराबके साथ पिलावे तो यह वडवानलरस सर्व प्रकारके गुल्म और शूलोंको नाश करे।

महानाराचरसः

सूतटंकणतुल्यांशमरिचंसूततुल्यकम्।
गंधकपिप्पलीशुंठीद्वौद्वौभागौविमिश्रयेत्॥
सर्वतुल्यंक्षिपेत्दन्तीबीजंनिस्तुषमेवच।
द्विगुंजरेचनंसिद्धं नाराचाख्योमहारसः॥

पारा, सुहागा, कालीमिरच, प्रत्येक १ तोले ले गन्धक, पीपल, सोंठ, प्रत्येक दो तोले ले, और सबकी बराबर जमाल गोटा मिलावे सबको खरलकर दो रत्ती सेवन करे तो यह नाराचरस उत्तम दस्तकारक बने।

विद्याधरोरसः

पारदंगंधकंतालंताप्यंस्वर्णं मनःशिलाम्।
कृष्णाक्वाथैःस्नुहीक्षीरैर्दिनैकंमर्दयेत्सुधीः॥
निष्कार्द्धं श्लैष्मिकंगुल्मंहन्तिमूत्रानुपानतः।
रसोविद्याधरोनामगोदुग्धंचपिबेदनु॥

पारा, गधक, हरिताल, सोनामक्खी, सुवर्ण, मनसिल सब को समान भाग ले पीपल के काढे और थूहर के दूध से एक एक दिन खरल करे, इस में से ४ माशे गोमूत्र के साथ सेवन करे, तो कफ का गोला दूर हो, इस विद्याधर रस पर गौ का दूध पीना चाहिये।

महागुल्मकालानलोरसः

गन्धकंतालकंताम्रं तथैवतीक्ष्णलोहकम्।
समांशंमर्दयेत्गाढंकन्यानीरेणयत्नतः॥
संपुटंकारयेत्पश्चात्सन्धिलेपंचकारयेत्।
ततोगजपुटंदत्वास्वांगशीतंसमुद्धरेत्॥
द्विगुंजंभक्षयेद्गुल्मीशृंगवेरानुपानतः।
सर्वगुल्मंनिहन्त्याशुभास्करस्तिमिरंयथा॥

गंधक, हरिताल, तांबे की भस्म, तीक्ष्ण लोह की भस्म, इन सब को समान भाग लेवे, सब को घी गुवार के रस मे खरल कर सपुट मे रख के सन्धि लेपन कर गजपुट में रख कर फूंक देवे, जब स्वांग शीतल हो जावे तब निकाल कर दो रत्ती रस को अदरक के रस के साथ सेवन करे तो सर्व प्रकार के गोला दूर होवे।

अभयावटी.

अभयामरिचंकृष्णाटंकणंचसमांशकम्।
सर्वचूर्णसमंचैवदद्यात्कनकजंफलम्॥
स्नुहीक्षीरैर्वटीकार्य्यायथास्विन्नकलायवत्।
वटीद्वयंशिवामेकांपिष्ट्वाचोष्णाम्बुनापिबेत्॥
उष्णाद्विरेचयेद्देपांशीतेस्वास्थ्यमुपैतिच।
जीर्णज्वरंपाण्डुरोगंप्लीहाष्ठीलोदराणिच॥
रक्तपित्ताम्लपित्तादिसर्वाजीर्णंनिनाशयेत्।

हरड, काली मिरच, पीपल और सुहागा प्रत्येक समान भाग ले और सब की बराबर धत्तुरे के फल लेवे, सब को थूहर के दूध से मटर के समान गोलिया बनावे, एक गोली और एक हरड के चूर्ण को गरम जल के साथ लेवे तो दस्त करावे, और शीतल जल के साथ दस्त बंद करावे यह जीर्ण ज्वर, पाण्डु रोग, प्लीहा, अष्ठीला, उदररोग, रक्तपित्त, अम्लपित्त और सर्व अजीर्ण रोगो को दूर करे।

गोपीजलः

जैपालाष्टौद्विकोगन्धःशुण्ठीमरिचचित्रकम्।
एकःसूतःससौभाग्योगोपीजलइतिस्मृतः॥
शूलव्याध्याश्रयात्गुल्मान्कोष्ठादिदशपैत्तिकान्। भगंदरादिहृद्रोगान्नाशयेदेषभक्षणात्॥

जमालगोटा ८ तोले, गंधक दो तोले, सोंठ, मिरच, चीता, पारा और सुहागा एक २ तोले ले, यह गोपी जल शूल और व्याधी के आश्रय गोले के रोग, दशपैत्तिक रोग, भगंदर आदि रोग हृदय के रोग इन सबको भक्षण करने से दूर करता है।

कांकायनगुटिका:

शठीपुष्करमूलञ्चदन्तीचित्रकमाढकीम् ।
शृंगवेरवचाञ्चैवपलिकानासमाहरेत ॥
त्रिवृताया पलञ्चैकंकुर्य्यात्त्रीणिचहिंगुन. ।
यवक्षारात्पलेद्वेचद्वेपलेचाम्लवेतसात ॥
यमान्यजाजीमरिचधान्यकञ्चत्रिकार्षिकम् ।
उपकुंच्यजमोदाभ्यांपृथगर्द्धपलभवेत् ॥
मातुलुंगरसेनैवगुटिकांकारयेद्भिषक् ।
तासामेकापिवेत्द्वेवातिस्रोवाथसुखाम्बुना ॥
अम्लैर्मद्यैश्चयूषैश्चघृतेनपयसाथवा ।
एषाकांकायनेनोक्तागुटिकागुल्मनाशिनी ॥
अर्शोहृद्रोगशमनीकृमीनाञ्चविनाशिनी ।
गोमूत्रयुक्ताशमयेत्कफगुल्मचिरोत्थितम ॥
क्षीरेणपित्तरोगचमद्यैरम्लैश्चवातिकम् ।
त्रिफलारसमूत्रैश्चनियच्छेत्सन्निपातकम् ॥
रक्तगुल्मेपुनारीणामुष्ट्रीक्षीरेणपाययेत् ।

सोंठ, पुहकर मूल, दन्ती, चित्रक, अरहर, अरदक और वच प्रत्येक ४ तोले, निसोथ ४ तोले, हींग १२ तोले जवाखार २ पल, अमलवेत दो पल, अजवायन, जीरा, काली मिरच और धनिया प्रत्येक ३ तोले ले के काला जीरा और अजमोद दो २ तोले लेवे, सब की बिजौरेके रस मे खरल कर गोलिया बनावे, इन से से एक दो वा तीन गोली गरमजल के साथ अथवा खटाई, मद्य,यूष, घी तथा दूध के साथ सेवन करे, तो यह कांकायनगुटिका गोले के रोग, बवासीर, हृदय के रोग और कृमि को नष्ट करे, गो मूत्र के साथ पीवे तो बहुत दिन के कफ के गोले को, दूध के साथ पित्त रोगो को, मद्य अथवा खटाई के साथ वादी के रोगो को, त्रिफला के रस अथवा गोमूत्र से सन्निपात के रोगो को और ऊंटनी के दूध के साथ स्त्रियो के रक्त गुल्म रोगो को दूर करता है।

गुल्मशार्दूलोरस:

रसगन्धशुद्धलौहगुग्गुलो पिप्पलपल ।
त्रिवृतापिप्पलीशुंठीशठीधान्यकजीरकम् ॥
प्रत्येकंपलिकग्राह्यंपलार्द्धंकानकफलम् ।
संचूर्ण्यवटिकाकार्य्याघृतेनवल्लमानत: ॥
वटीद्वयभक्षयेच्चार्द्रकोष्णाम्बुपिबेदनु ।
हन्तिप्लीहयकृत्गुलमकामलोदरशोथकम् ॥
वातिकपैत्तिकंगुल्मंश्लैष्मिकरौधिरन्तथा ।
गहनानन्दनाथोक्तरसोयगुल्मनाशन: ॥

पारा, गंधक, लोह भस्म, गूगल, पीपला मूल, निसोथ, पीपल, सोंठ, कचूर, धनिया, और जीरा प्रत्येक् एक पल ले और जमालगोटा दो तोले सब का चूर्ण कर घी से गोलियां बनावे, दो गोली अदरक के रस के साथ खाय ऊपर से गरम जल पीवे, तो प्लीह, यकृत्, गुल्म,कामला उदर, सूजन वातपित्त के गोले, कफ के गोले, रुधिर के रोग, इन सब को यह गुल्मशार्दूल रस दूर करे।

प्राणवल्लभोरस:

लोहताम्र वराटचतुत्थहिंगुफलत्रिकम् ।
स्नुहीमूलयवक्षारजैपालटकणत्रिवृत् ॥
प्रत्येकपलिकग्राह्यंछागीदुग्धेनपेषयेत् ।
चतुर्गुंजावटीखादेद्वारिणामधुनापिवा ॥
प्राणवल्लभनामायगहनानन्दभाषित ।
निहन्तिकामलापाण्डुमेहंहिक्काविशेषत. ॥
असाध्यसन्निपातचगुल्मंरुधिरसभवम् ।
वातरक्तंचकुष्ठचकण्डूविस्फोटकापचीम् ॥

लोह, तावा, कौडी की भस्म, नीला थोथा, हींग, त्रिफला, थूहर की जड, जवाखार, जमालगोटा, सुहागा, निसोथ, प्रत्येक ४ तोले ले सब को बकरी के दूध से पीस चार-चार रत्ती की गोलिया बनावे, और गरम जल अथवा सहत के साथ खावे, तो यह महाप्राणवल्लभ रस कामला पाण्डु रोग, प्रमेह, हिचकी असाध्य सन्निपात के गोले को तथा वातरक्त, कोढ, खुजली, विस्फोटिक और अपची रोगो को दूर करे।

सर्वेश्वरोरस:

ताम्रंदशगुणस्वर्णात्स्वर्णपादकटुत्रिकम् ।
त्रिकटुत्रिफलातुल्यात्रिफलार्द्धमयोरज ॥

अयसोद्वं विषञ्च वसर्वं समर्घ यत्नतः ।
सर्वेश्वररसोनामरौधिरगुल्मनाशन ॥

सुवर्ण भस्म ४ तोले, तालेकी भस्म ४० तोले सोंठ, मिरच, पीपल, और त्रिफला प्रत्येक एक तोले, लोहभस्म ६ मासे, विष ३ मासे सबको खरल करे यह सर्वेश्वर रस रुधिरके गोलेको दूर करे ।

अथहृद्रोगाधिकारः

हृदयार्णवोरसः

शुद्धसूतसमगन्धमृतताम्र तयोःसमम ।
मर्दयेत्त्रिफलाकाथैः काकमाचीद्रवैर्दिनम् ॥
चणमात्रावटींखादेद्रसोयहृदयार्णवः ।
काकमाचीफलकर्षंत्रिफलाफलसयुतम ॥
द्वात्रिंशत्तोलकतोयक्काथमष्टावशेषितम् ।
अनुपानंपिवेच्चात्रहृद्रोगेचकफोत्थिते ॥

शुद्धपारा और शुद्ध गन्धक दोनोंको बराबर ले और दोनोकी बराबर ताम्रभस्म ले सबको मिलाय त्रिफला और मकोयके रसोंमें एक २ दिन खरलकर चनेके प्रमाण गोलिया बनावे, इनमेंसे एक गोली खानेसे हृदयके रोग दूर हो, मकोय के फल और त्रिफला एक एक तोले और जल ३२ तोले ले आष्टवशेष काढा करके गोलीपर पीवे तो कफका हृदय रोग दूर हो ।

नागार्जुनाभ्रम्

सहस्रपुटनैःशुद्ध वज्राभ्रमर्जुनत्वच ।
सत्वैर्विमर्दितसप्तादिनंखल्ले विशोषितम् ॥
छायाशुष्कावटीकार्य्यानाम्नेदमर्जुनाहृवयम् ।
हृद्रोगसर्वशूलार्शोहृल्लासच्छर्दिरोचकान् ॥
अतीसारमग्निमान्द्य रक्तपित्तक्षतक्षयम् ।
शोथोदराम्लपित्तञ्चविषमज्वरमेवच ॥
हन्त्यान्यानपिरोगानिबल्यवृष्यरसायनम् ।

हजार पुटकी अभ्रकको कोहके काढेसे ७ दिन खरलकर गोलिया बनाय छायामे सुखा लेवे तो अर्ज्जनाख्यावटी हृदयके रोग, सर्व प्रकारके शूल बवासीर, हृल्लास, वमन, अरुचि, अतिसार, मंदाग्नि रक्तपित्त, क्षतक्षय, सूजन, उदररोग, अम्लपित्त, विषमज्वर, और बहुतसे रोगोंको दूर करे, बलकर्त्ता वृष्य और रसायन है ।

पञ्चाननोरसः

सूतगन्धौद्रवैर्धात्र्यामर्दयेत्गोस्तनीद्रवैः ।
यष्टिखर्जूरसलिलैर्दिनञ्चपरिमर्दयेत् ॥
धात्रीचूर्णसिताञ्चानुपिवेत्हृद्रोगशान्तये ।

पारे और गन्धकको बराबर ले आवलेके रस मुनक्का, मुलहटी, और खजूर इनके रससे एक २ दिन खरल करे, फिर आवलेके चूर्ण और मिश्री के साथ सेवन करे तो हृदयरोग शान्त हो ।

अथमूत्रकृच्छ्राधिकारः

त्रिनेत्राख्योरसः

वगसूतंगधकभावयित्वालौहेपात्रेमर्दयेदेकवासम । दूर्वायष्टीगोक्षुरैःशाल्मलैर्भि मूषामध्ये भूधरेपाचयित्वा ॥ तत्तद्द्रावैर्भावयित्वास्य वल्लंदद्यात्शीतपायसवच्च्यमाणम् ॥ दूर्वायष्टीशाल्मलीतोयदुग्धैस्तुल्यैः कुर्य्यात्पायसंतद्दीत । प्रातःकालेशीतपानीयपानात्मूत्रे जातेस्यात्सुखीक्रमेण ॥

वग, पारा और गन्धक सबको लोहेके पात्र में भावना देकर एक दिन दूव, मुलहटी, गोखरू और सेमलके रससे खरलकर मूसमें रख भूधर यत्रमें फूक देवे, फिर पूर्वोक्त रसोंमे खरलकर २ रत्ती रसको दूव, मुलहटी और सेमलके रस और दूधकी खीरके साथ देवे, या प्रात काल शीतल जलके साथ देवे तो मूत्रके होतेही मनुष्य सुखी होवे ।

वरुणाद्यंलौहम्

द्विपलंवरुणंधात्र्यास्तदर्द्धं धात्रिपुष्पकम् ।
हरीतक्याःपलार्द्धञ्चपृश्नीपर्णीतदर्द्धकम् ॥
कर्षमानंचलौहाभ्र चूर्णमेकत्रकारयेत् ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायशाणमानविधानवित् ।
मूत्राघातंतथाघोरंमूत्रकृच्छ्रञ्चदारुणम् ।
अश्मरींविनिहन्त्याशुप्रमेहविषमज्वरम् ॥
बलपुष्टिकरंचैववृष्यमायुष्यमेवच ।
वरुणाद्यमिदंलौहम्चरकेणविनिर्मितम् ।

वरना ८ तोले, आवले ४ तोले, धायके फूल, और हरड एक-एक तोले, पृष्टपर्णी १ तोले लोहभस्म और अभ्रक भस्म प्रत्येक १ तोले, सबको एकत्रकर चूर्ण करे, इसमेसे ४ मासे प्रात काल भक्षण करे तो घोरमूत्राघात, दारुण मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह, विषमज्वर इनको दूर करे, बल और पुष्टी करे वृष्य है, तथा आयुष्यको बढावे, यह वरुणाद्यलोह चरकने कहा है ।

मूत्रकृच्छ्रान्तकोरसः

अयोरजःश्लक्ष्णपिष्टं मधुनासहयोजयेत् ।
मूत्राघातनिहन्त्याशुमूत्रकृच्छ्रं सुदारुणम् ॥
रसगन्धयवक्षारसितातक्रयुतंपिवेत् ।
मूत्रकृच्छ्राण्यशेषाणिनिहन्त्यनियतंनृणाम् ॥
भैषज्यैरश्मरीप्रोक्तैःमूत्रकृच्छ्रामुपाचरेत् ।
योगवाहिरसैःपिष्ट्वामृतसूतंचतालकम् ॥
शतावरीरसैःपिष्ट्वामृतसूतञ्चतालकम् ।
शिखितुत्थञ्चतुल्यांशादिनैकंमर्दयेदृढम् ॥
तद्गोलेसार्षपेतैलेपाच्ययामञ्चचूर्णयेत् ।
मूत्रकृच्छ्रान्तकश्चास्यक्षौद्रैर्गुञ्जाचतुष्टयम् ॥
भक्षणान्नात्रसन्देहोमूत्रकृच्छ्रं निहन्त्यलम् ।
तुलसीतिलपिण्याकबिल्वमूलंतुषाम्बुना ॥
कर्षैकंवानुपानेनसुरयावासुवर्चलैः ।

लोहकी बारीक भस्म सहतके साथ सेवन करे तो मूत्रघातको शीघ्र दूर करे, पारा, गन्धक, जवाखार, और मिश्रीको समान भाग लेकर चूर्ण कर छाछके साथ पीवे तो सर्व प्रकारके मूत्रकृच्छ्र निसन्देह दूर होवे ।

जो यत्न पथरीरोगके कहे हैं वे मूत्रकृच्छ्रमें करे तथा योगवाही रसोको अनुपानके साथ देवे ।

चन्द्रोदय, हरिताल, नीलाथोथा, समान ले शतावरीके रससे १ दिन खरल करे, फिर उसका गोला बनाय सरसोंके तेलमे १ प्रहर पचावे, फिर चूर्णकर ४ रत्ती सहतमे देवे, तो मूत्रकृच्छ्र अवश्य दूर हो, अथवा तुलसी, तिल, खल, वेलकी जड़, तुषोका पानी, इनके साथ १ तोला पूर्वोक्त रस देवे, अथवा तुलसी और सोराके साथ देवे ।

अथमूत्रघाताधिकारः

तारकेश्वरोरसः

मृतसूताभ्रगन्धञ्चमर्दयेन्मधुनादिनम् ।
तारकेश्वरनामायंगहनानन्दभाषितः ॥
माषमात्रंभजेत्क्षौद्रैर्बहुमूत्रप्रशांतये ।
उदुम्बरफलंपक्वंचूर्णितकर्षमात्रकम् ॥
संलिह्यान्मधुनासार्द्धमनुपानंसुखावहम् ।

चन्द्रोदय, अभ्रक, गन्धक, सबको समान भाग ले सहतमे १ दिन खरल करे यह तारकेश्वर रस गहनानन्दका कहा हुआ है, इसको १ मासे सहतके साथ खाय तो बहुमूत्र दूर हो, इसके ऊपर पके गूलरका चूर्ण १ तोला सहतके साथ चाटे ।

लघुलोकेश्वरोरसः

शुद्धसूतस्यभागैकंचत्वारःशुद्धगंधकम् ।
पिष्ट्वावराटिकापूर्य्यारसपादेनटंकणम् ॥
क्षीरैःपिष्ट्वामुखंलिप्त्वाभाण्डेरुध्वापुटेपचेत् ।
स्वांगशीतंविचूर्ण्याथलघुलोकेश्वरोमतः ॥
चतुर्गुञ्जाप्रमाणन्तुमरिचेनतथैवच ।
जातीमूलफलैर्युक्तमजाक्षीरेणपाययेत् ॥
शर्कराभवितञ्चानुपीत्वाकृच्छ्रहरःपरः ।

पारा १ तोले, गन्धक ४ तोले, दोनों की

कज्जलीको कौडियोंमें भर पारेके चौथाई सुहागे को दूधसे पीस कौडियोंका मुख बन्दकर दे, फिर उनको किसी बरतन में भर बरतन का मुख बन्द कर संपुटमें रख फूक देवे, जब शीतल हो जावे तब ४ रत्ती के प्रमाण चार रत्ती कालीमिरचका चूर्ण, जायफल और जावित्रीको मिश्री पड़े बकरी के दूधके साथ पीवे ऊपरसे शर्बत पीवे तो मूत्र-कृच्छ्र दूर होवे।

येनौषधेनमतिमान्मूत्रकृच्छ्रमुपाचरेत्।
तेनौषधेनश्रेष्ठेनमूत्राघातानुपाचरेत्॥
लवणाम्लवरायुक्तंघृतंचापिपिबेन्नरः।
तस्यनश्यन्तिवेगेनमूत्राघातास्त्रयोदश॥
पक्वमेर्वारुबीजानामक्षमात्रंससैन्धवम्।
धान्याम्लयुक्तंपीत्वैवमूत्राघाताद्विमुच्यते॥
त्रिकण्टकैरण्डशतावरीभिः। सिद्धंपयोवा तृणपञ्चमूलैः॥गुडप्रगाढसघृतपयोवा।
रोगेषुकृच्छ्रादिषुशस्तमेतत्।

जिस औषधिसे वैद्य मूत्रकृच्छ्रका यत्न करे, उसी औषधिसे मूत्राघातका उपाय करे, निमक, खटाई, त्रिफला, इनको घीमें मिलाकर पीवे तो १३ प्रकारका मूत्राघात शीघ्र दूरहो, पके खीरेके १ तोले बीजोंको पीस सेंधानिमक तथा धान्याम्ल मिलाके पीवे, तो मूत्रघातसे छूट जावे, गोखरू, अंडकी जड़ और शतावर इनसे सिद्ध किया हुआ दूध अथवा तृणपंचमूल, गुड, घृत और दूध मूत्र-कृच्छ्रादि रोगों पर हितकारी है।

अथाश्मर्य्यधिकारः

पाषाणवज्रोरसः

शुद्धं सूतंद्विधागन्धंरसैः श्वेतपुनर्नवै।
मर्दयित्वादिनंखल्वेरुद्ध्वातद्भूधरेपचेत्॥
दिनान्तेतत्समुद्धृत्यमर्दयेद्गुडसयुतम्।
अश्मरीबस्तिशूलञ्चहन्तिपाषाणवज्रकः॥
गोरक्षकर्कटीमूलक्काथकौलत्थकंतथा।
अनुपानप्रयोक्तव्यबुद्ध्यादोषबलाबलम्॥

शुद्ध पारा १ तोले, गंधक दो तोले, दोनों को विषखपरेके रससे १ दिन खरल कर संपुट में रखके भूधरयंत्रमें पचावे, जब सायंकाल हो तब निकाल गुडके साथ मर्दन करे, इसके खाने से पथरी, बस्तिशूल ये दूर होवे, इन्द्रायनकी जड़ और कुलथीका काढा इनको बलाबल विचार पाषाणवज्ररसपर पिलावे।

त्रिविक्रमोरसः

मृतताम्रमजाक्षीरैःपाच्यंतुल्यगतेद्रवे।
तत्ताम्रंशुद्धसूतञ्चगंधकंचसमंसमम्॥
निर्गुण्डीस्वरसैर्मर्द्यदिनंतद्गोलकीकृतम्।
यामैकवालुकायन्त्रेपक्त्वायोज्यंद्विगुञ्जकम्॥
बीजपूरस्यमूलञ्चसजलंचानुपाययेत्।
रसस्त्रिविक्रमोनामशर्करामश्मरीजयेत्।

तांबेकी भस्मको बराबरके बकरीके दूधमें औटावे, जब सूख जाय तब बराबरकी गंधक ले निर्गुंडीके स्वरसमें एक दिन खरल कर गोला बनाय वालुकायंत्रमें रखके पचावे फिर इसमेंसे दो रत्ती रसको बिजौरेकी जडके जलमें घोटके पिलावे तो यह त्रिविक्रमरस शर्करा और पथरी को दूर करे।

लोहप्रयोगः

अयोरजश्लक्ष्णपिष्टंमधुनासहयोजितम्।
अश्मरींविनिहन्त्याशुमूत्रकृच्छ्रंचदारुणम्॥

लोहेकी भस्मको बारीक पीस सहतके साथ देवे तो पथरी और दारुण मूत्रकृच्छ्रका नाश करे।

इन्द्रवारुणिकामूलमारिचक्षीरपाचितम्।
पर्पटीरससयुक्तसप्ताहादश्मरींजयेत्॥
गंधकजीरकद्राक्षाफलंटंकद्वयसदा।
अश्मरींशर्करामूत्रकृच्छ्रंक्षपयतिध्रुवम्॥

इन्द्रायनकी जड, और कालीमिरचोंको दूध में औटावे फिर इस दूधमें पर्पटीरस मिलाके सेवन

करे तो ७ दिनमे पथरीका नाश हो, अथवा गंधक, जीरा, कटेरीके फल सबको दो टक नित्य सेवन करे तो पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र इन सब को दूर करे ।

अथ प्रमेहाधिकारः

हरिशंकरोरसः

मृतसूताभ्रकंतुल्यधात्रीफलनिजद्रवैः ।
सप्ताहभावयेत्खल्लेयोगोयंहरिशंकर. ॥
माषमात्र वटींखादेत्सर्वमेहप्रशान्तये ।

चन्द्रोदय, अभ्रक दोनो समान लेकर आमलो के रससे ७ दिन खरल करे तो यह हरिशंकर रस बने, एक मासेकी गोली खानेसे सब प्रकारकी प्रमेहको शान्ति करे ।

इन्द्रवटी

मृतंसूतमृतवंगमञ्जु नरयत्वचान्वितम् ।
तुल्यांशंमर्दयेत्खल्लेशाल्मल्यामृलजैर्द्रवैः ।
दिनान्तेवटिकाकार्य्यामाषमात्राप्रमेहहा ॥
एषाइन्द्रवटीनाम्नामधुमेहप्रशान्तकृत् ।

चन्द्रोदय, वग, लोहकी छाल, समान भाग ले सेमरकी जडके रससे खरल कर सायकालको एक मासेकी गोली बनाकर लेवे तो यह इन्द्रवटी मधुमेहको शान्ति करे ।

वंगावलेहः

वगभस्मद्विवल्लंचलेहयेन्मधुनासह ।
ततोगुडसमंगंधभक्षयेत्कर्षमात्रकम् ॥
गुडूचीसत्वमथवाशर्करासहिततथा ।
सर्वमेहहरोह्य योवगावलेह उत्तमः ॥

६ रत्ती वंगभस्मको सहतके साथ चाटे फिर गुड और गंधक समान भाग मिलाके तोलेभर गिलोय सबमिलाके अथवा मिश्री मिलाके खाय तो यह वंगावलेह सर्व प्रकारके प्रमेहोको दूर करे ।

प्रमेहसेतुः

सूताभ्रखवटक्षीरैःमर्दयेत्प्रहरद्वयम् ।
विशोष्यपक्वमूषायासर्वरोगेप्रयोजयेत् ॥
विशेषा-मेहरोगेपुत्रिफलामधुसयुतम् ।
युञ्जीतवल्लमेकन्तुरसेन्द्रस्यास्यवैद्यराट् ॥

चन्द्रोदय, अभ्रक, दोनोको बडके दूधसे दो प्रहर खरलकर फिर सुखाके पक्की मूषामें रखके पकावे, इसको सर्व रोगोमे देवे विशेकर प्रमेह रोगमे देवे, त्रिफला और सहतके साथ ३ रत्ती देवे तो सर्व प्रकारकी प्रमेह दूर हो ।

विडंगादिलौहम्

विडंगत्रिफलामुस्तैःकणयानागरेणच ।
जीरकाभ्यांयुतहन्तिप्रमेहानतिदारुणान् ॥
लोहमूत्रविकाराश्चसर्वानेवविनाशयेत् ।

वायविडग, हरड, बहेडा, आंवला, नागर मोथा, पीपल, सोठ, काली मिरच, काला जीरा, सफेद जीरा, इन सब को बराबर ले सबकी बराबर लोह भस्म लेवे तो यह विडंगादि लोह सम्पूर्ण मूत्र विकारो को दूर करे ।

अभ्रकयोग.

निश्चन्द्रमभ्रकंभस्मसवरारजनीरजः ।
मधुनालीढमचिरात्प्रमेहान्विनिकृन्तति ॥

अभ्रक की भस्म, त्रिफला और हल्दी ये सब बराबर ले कर चूर्ण कर सहत के साथ खाय तो प्रमेह नष्ट होवे ।

सर्वेश्वरोरसः

ताप्योटङ्कणहेमताररसकगन्धपृथक्भागिकम् । ताम्रं विद्रुमशुक्तिजशिखरिणाद्विघ्नतथा भागिकम् ॥ वङ्गायोहिरसेन्द्रभूतिगगनवैकान्तकान्तत्रिशः । तमद्य सुविभावयेत्त्रिदिवस यष्टीत्रिजाताम्बुभि ॥ मुस्तोशीरवरावृषामृतसटीकन्याविदारीवरी । नीरैर्गोपयसेक्षुजैश्च मुसलींगोलपचेद्यामक ॥ मन्दाग्नौचमृगाङ्क वत्पुनरसौभाग्यस्ततोभावने । द्वे कस्तूरीमृ

गाङ्क्योर्मधुकणायुक्तोस्यवल्लोजयेत् ॥ मेहार्शोग्रहणीज्वरोदरमरुद्व्याधिरुजंकामलां । पाण्डुंकुष्टभगन्दरज्वरगणाकृच्छ्रंचशुक्रक्षयम् ॥

सुवर्ण माक्षिक, सुहागा, रूप रस, सुवर्ण भस्म, खपरिया और गंधक प्रत्येक एक तोले, ताम्र भस्म, मूंगा की भस्म, मोती और शिलाजीत प्रत्येक दो तोले, बंग, सार,नागेश्वर, चन्द्रोदय, अभ्रक भस्म, कांसे की भस्म, कान्त लोह की भस्म, प्रत्येक ३ तोले, सब को खरल कर मुलहटी, त्रिजातक, नागर मोथा, खस, त्रिफला, अडूसा, गिलोय, कचूर, घी गुवार, विदारीकंद, शतावरि, इन प्रत्येक के काढ़ों की पृथक् २ तीन २ दिन भावना देवे फिर गौ के दूध, ईख और मूसली के रसकी तीन २ भावना दे गोला बनाय, यंत्र में रख, प्रहर भर पचावे, फिर स्वांग शीतल होने पर रस को निकाल मृगांक रस के समान फिर भावना, देवे इस में से ३ रत्ती रस कस्तूरी और मृगांक रस के समान पीपल और सहत के साथ देवे तो प्रमेह, बवासीर, सग्रहणी, ज्वर, उदर, वातव्याधि, कामला, पाण्डु, कोढ, भगदर, ज्वर के समूह, मूत्रकृच्छ्र और शुक्र क्षय इन को दूर करता है।

मेहहरोगोलः

गन्धेनसूतंद्विगुणंविमर्द्यविमर्दयेद्गोक्षुरनीरयुक्तं । शुष्कचक्रत्वाथसुतप्तताम्रचक्र चतस्यो परिविन्यसेत् ॥ चक्रे विलग्नंचतत प्रगृह्यमुषोदरेध्मापयटङ्कणेन । संगृह्यतक्रैचनिधाय गोलत्रिसप्तकान्मेहविमुक्तमेति ॥

पारा ४ तोले, गंधक २॥ तोले, दोनों को गोखरू के स्वरस से खरल कर फिर सुखाय गरम तावे के चक्र के ऊपर रखे, उस चक्र में जो लगे उस को ले के मूषामें रख सुहागा डाल के धमावे, इस में से छाछ के साथ एक २ मासे की गोलियां बनावे, इन को २१ दिन तक प्रत्येक दिन १ गोली सेवन करने से प्रमेह दूर हो।

रुजादलनवटी.

रसवलविषमग्निस्त्रैफलव्योषयुक्तम् । समलवमितिसर्वैर्द्विगुणोस्याद्गुडोथ ॥ जठरगुदसमीरश्लेष्ममेहान्सगुल्मान् । हरतिझटितिपुंसांवल्लमात्रावटीयम् ॥

पारा, गधक, विष, चीते की छाल, त्रिफला और त्रिकुटा। इन सब को समान भाग लेवे, सब की बराबर गुड मिलाय गोलियां बनावे, यह उदर व्याधि, गुदा के रोग, वादी के रोग, कफके रोग, प्रमेह और गोला को तत्काल दूर करे, इस की मात्रा ३ रत्ती की है।

नागभक्त्यादि.

तुल्याशमारितसीसंदग्धहरिणशृङ्गकम् । कर्पासबीजमज्जाचतुल्यमङ्कोलबीजकं ॥ पेषयेन्माहिषैस्तक्रैर्दिनैकवटकीकृतम् । माषद्वयंसदाखादेत्सुरानामप्रमेहजित् ॥

सीसे की भस्म, हरिण के सींग की भस्म, बिनौलेकी मिंगी अकोलके बीज, प्रत्येक ४ तोले, सब को भैंस की छाछ से एक दिन पीस दो २ मासे की गोलियां बनावे, और एक गोली नित्य सेवन करे तो सुरा नाम प्रमेह को शीघ्र ही दूर करे।

मेहभैरवोरसः

रसगन्धंविषलोहंजातीपत्रं चतत्फलम् । अब्धिशोषाहिफेनचखुरासानचचित्रकम् ॥ देवपुष्पसममर्वैसर्वैस्तुल्यंमृताभ्रकम् । भावयेत्सप्तवासर्वं चित्रमूलकषायकैः ॥ यथासात्म्येनसयोज्यसर्वमेहापनुत्तये । अर्शांशिग्रहणीशोथपाण्डुशुक्रक्षयनृणाम् ॥ यथानुपानतोयोज्यःसिद्ध श्रीमेहभैरवः ।

पारा, गंधक, विष, लोह भस्म, जावित्री, जायफल, समुद्र शोष, अफीम, खुरासानी अजवायन, चीते की छाल और लौंग को समान भाग

ले सब की बराबर अभ्रक भस्म लेवे, सब को चीते की छाल की ७ भावना देवे, फिर इस को यथायोग्य अनुपान के साथ देवे तो प्रमेह, बवासीर, सग्रहणी, सूजन, पाण्डुरोग और शुक्र का क्षीण होना इन को यह मेहभैरवरस दूर करे।

राजावर्त्तावलेह.

राजावर्तञ्चवैक्रान्तताम्रमभ्र पृथक्पृथक्।
शुक्तिमात्रं कृष्णलोहपार्वतञ्चपलद्वयम्॥
मण्डूरकुडवञ्चैवशुद्धमञ्जनसन्निभम्।
त्रिकत्रयतालमूलीतथैवकरिकेशरम्॥
श्वेतोच्चटानागवलाप्रत्येककर्षमात्रकम्।
शुभ्रंशाल्मलिनीरस्यप्रस्थचछागदुग्धतः॥
मत्स्यडिकायाःप्रस्थार्द्धमेभिःकुर्य्यादवलेहक
म्। लिहेद्विधिज्ञःसुदिनेह्यनुपानंपिवेदनु॥
चण्डामूलंशुक्तिमात्रंसर्वमेहप्रशान्तये।
गुल्महृद्रोगवर्ध्माशंमुष्कपीडाप्रशान्तये॥
शुक्राश्मरीमूत्रघातरेतोदोषापनुत्तये।

राजावर्त्त, वैक्रान्त, (कासुला) ताम्र और अभ्रक प्रत्येक की भस्म दो तोले, खेरी लोह की भस्म और शिलाजीत प्रत्येक दो पल, मण्डूर १६ तोले, त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिमद, मूसली, गजपीपल, सफेद घू वची और नागवला प्रत्येक एक तोले ले सेमलका रस ६४ तोले, सेर भर बकरी का दूध और आध सेर सफेद खांड डाल के अवलेह सिद्ध करे, इस को विधि का जानने वाला उत्तम दिन में भक्षण करे, और चंडा (चोरनाम गंध द्रव्य) की जड दो तोले इस के ऊपर सेवन करे, तो सर्व प्रकार का प्रमेह, गोला, हृदय रोग, वद, बवासीर, अण्डकोषों की पीडा, शुक्राश्मरी, मूत्राघात और वीर्य विकार को यह राजावर्त्तावलेह दूर करे।

प्रमेहकुठारोरसः

एलासकर्पूरसितासधात्रीजातीफलगोत्तुरशाल्मलीत्वक्। सूताभ्रवङ्गायसभस्ममेतत्समर्दयेद्गाढतरंहठेन॥ ततोभवत्येपरस.प्रमेहकुठारनामाविदितप्रभावः। निष्कार्द्धमात्रोमधुनावलीढोनिहन्तिमेहानखिलानुदग्रान्॥

छोटी इलायची, भीमसेनी कपूर, मिश्री, आमले, जायफल, गोखरू, सेमर की छाल, पारा, गंधक, वग, लोह भस्म, सब को समान भाग ले कर खूब खरल करे, तो यह प्रमेह कुठाररस सिद्ध होवे, इस में से दो माशे रस सहतके साथ सेवन करे तो यह राजावर्तावलेह प्रमेह को दूर करे।

मृत्युंजयोरसः-

एकांशप्रक्षिपेत्स्वर्णरौप्यंवज्रञ्चतत्समम्।
मुसल्याचाखुकर्ण्याचभाव्यंलुङ्गरसैस्त्र्यहम्॥
मोचात्मगुप्तास्वरसैस्तदामृत्युंजयोरसः।
सर्वरोगहरोह्येषसेवित.पथ्यशालिभि॥
राजयक्ष्मादिरोगांश्चप्रमेहान्विंशतिस्तथा।
जीर्णज्वरानतीसारान्ग्रहणीबहुमूत्रतां॥
तेनतेनानुपानेननाशयेन्नात्रसंशयः।
किमत्रबहुनोक्तेनजरामृत्युहरस्तथा॥
वज्रदेहोभवेत्सेवीद्रावयेद्वनिताशतम्।
नरेतसःक्षयस्तस्यषण्डोऽपितरुणायते॥
ऊर्द्धवलिङ्गःसदातिष्ठेल्ललनायाःप्रियोभवेत्।
सतुहाटकमध्वाज्यःश्रीधीमेधाविभूषित.॥
हयवेगोमयूराक्षोवाराहश्रुतिरेवसः।
अपरःकामदेवोवामानिनीमानमर्दन॥
शाल्यन्नगोपयखण्डसिताजाङ्गलमामिषं।
गोधूमजान्विकरांश्चमाषान्नकदलीफलम्॥
पनसचापिखर्ज्जूरमुततीनालिकेरकम्।
मधुरञ्चभजेत्प्राज्ञोवर्षमात्रमतन्द्रित॥
मात्रास्यमापप्रमितासदासेव्यानरोत्तमै।

सुवर्णके वर्क, चादीके वर्क और हीरेकी भस्म, प्रत्येक समान भाग ले, सबको खरलकर मूसली मूषाकर्णी, बिजौरा, इनके रसमे तीन दिन खरल करे, फिर केला, और कौंच, के रसोंकी भावना देवे तो यह मृत्यजयरस सिद्ध होवे, यह पथ्यके साथ सेवन करनेसे सब रोगोको दूरकरे, राजयक्ष्मादिरोग बीस प्रकारके प्रमेह, जीर्णज्वर, अतिसार,

संग्रहणी और बहूमूत्रताको अपने २ अनुपानके साथ दूर करे, बहुत कहनेसे तो क्या यह वृद्धावस्था और अकाल मृत्युको हरण करे, इसके सेवनसे,देह वज्रके समान हो, सौ स्त्रियोंको द्रवावे कभी वीर्यका क्षय न हो, हिजडाभी तरुणत्वको प्राप्तहो, सदैवलिंग खडा रहे, इसको सोनेके वर्क सहत और मक्खनके साथ खाय तो तेज बुद्धि और धारणाशक्तिको बढावे,घोडेका-सा वेग, मोर कीसी आंख, शूकरके समान कानोकी शक्तिहो, मानों दूसरा कामदेव ही है, इसके ऊपर साठी चावलका भात, गौका दूध, बूरा, जंगलके जीवोंका मास गेहूँके पदार्थ, उडदके पदार्थ, केलेकीगहर, कटहर सुलैमानी खजूर, गोला, एक वर्ष पर्यंत मिष्ट पदार्थ भक्षण करे, इसकी मात्रा १ माशे की है।

तारकेश्वररसः

मृतसूताभ्रगन्धानांमर्दयेन्मधुनादिनम् ।
तारकेश्वरनामायंमाषैकबहुमूत्रजित् ॥
उदुम्बरफलपक्क चूर्णितकर्षमात्रकम् ।
सलिहेन्मधुनासार्द्धमनुपानंसुखावहम् ॥

चन्द्रोदय, अभ्रक, और बंग समान भाग ले कर १ दिन सहतके साथ खरल करे, इस तारकेश्वररसको १ माशे सेवन करनेसे बहुमूत्रको दूर करे, इसके ऊपर पके गूलरोंका चूर्ण १ तोले सहत के साथ चाटे, यह अनुपान हैं ।

त्रैलोक्यमोहनोरसः

शुद्धसूतस्तथागन्धोवङ्गभस्मशिलाजतुः ।
मौक्तिकंचसमंसर्वंशुष्कमादौविमर्दयेत् ॥
पाषाणभेदक्काथेनकुमारीस्वरसेनच ।
मूर्वांगुडूचित्रिफलाकषायेणपृथक्पृथक् ॥
दिनानिपञ्चसंमर्द्य घर्मेसंशोषयेत्ततः ।
काचकुप्यांविनिक्षिप्यमुखतस्यविमुद्रयेत् ॥
माषान्नविषचूर्णानां कल्केनभिषगुत्तमः ।
संस्थाप्यवालुकायन्त्रे चतुर्यामविपाचयेत् ।
चोपचोनीयचूर्णेनमाषमानेनयोजितः ॥
त्रैलोक्यमोहनोनाम्नागुञ्जामात्रोरसोत्तम. ।
पर्णखण्डेनदातव्यःप्रमेहमथनःपरः ॥

शुद्धपारा, गन्धक, वंग, शिलाजीत, और मोतीकी भस्म सब समान लेके खरल करे, फिर पाषाणभेदके काढ़ेसे, तथा घीगुवारके रसमे एव मूर्वा, गिलोय, और त्रिफला इनके काढोंमे पृथक् २ पाच २ दिन खरल करे परतु धूपमे रखके फिर इसको काचकी शीशीमें भर मुख बन्द कर उडद के चून और विष चूर्णके कल्कसे फिर वालुकायंत्र मे ४ प्रहरकी अग्नि देवे, फिर इसमेंसे १ रत्ती रसको १ माशे चोबचीनीके चूर्णके साथ पानमे रखके खाय तो सर्व प्रकारको प्रमेहको दूर करे ।

कर्पूराद्योरसः

कर्पूरभृङ्गीउन्मत्तबीजंजातीफलंतथा ।
मृताभ्रंमृतलोहञ्चत्रपुनागरसंतथा ॥
एलापुन्नागधान्यार्कविषव्योषलवंगकम् ।
तालीसपत्र पत्रंचजयाबीजंत्वचंतथा ॥
अककरंनागवलातुल्यांशेनसमन्वितम् ।
चूर्णयित्वासितातुल्यंदत्वासेवेद्यथाबलम् ॥
श्वासंप्रमेहंचसरक्तपित्तप्रस्वेदवातंबहुसन्निपातम् । स्वरक्षयंचाशुजयेद्विचित्रम् ॥ कर्पूररसज्ञःकथितोरसोऽयम् । उन्मत्तबीजसभूततैलं वात्रापिपूजत' ॥

बरास, भाँग, धतूरेके बीज जायफल, अभ्रक सार, नागभस्म, बंग,पारा छोटी इलायची, पुन्नाग धनिया, विष, त्रिकुटा, लौंग, तालीसपत्र, पत्रज, अरनीके बीज, अरनीकी छाल, अकरकरा और खरैटी सबको समान भागले सबका चूर्णकरबराबर कीमिश्री मिलाय बलाबल देखकर खानेको देवे तो श्वास, प्रमेह, रक्तपित्त, प्रस्वेदवात, अनेक सन्निपात, स्वरभंग (गलेका बैठना) इन सबको दूर करे, यह कर्पूररसज्ञक रस है, धतूरेके बीजोका तेल इसमें अनुपान माफिक मिलावे, तो अति गुण करे ।

मेहमर्दनोरसः

शुद्धशीशोद्भवभस्मनिव्यूढेहेम्निसप्तधा ।
गोमूत्रकशिलाधातुद्रवेणपरिमर्दयेत् ॥

शोषयित्वाविचूर्ण्याथक्षिपेन्नागकरङ्कके ।
मेहमर्दननामायप्राकभालुकिनाकिल ॥
गुञ्जाद्वयमितोदेयोनिम्बामलकसयुतः ।
निहन्तिसकलान्मेहान्सर्वोपद्रवसंयुतान् ॥

शुद्धशीशेकी भस्म, सुवर्णभस्म, दोनोको गो मूत्र और मनसिलके जलसे ७ बार खरलकर सुखा के चूर्णकर लेवे, फिर इससे रागकी भस्म और नागेश्वरकी भस्मको मिलावे तो यह भालुकी आचार्यका कहा मेहमर्दननामक रस बने इसको दो रत्ती नीम और आमलेके रसके साथ देवे तो सर्व प्रकारके उपद्रव युक्तभी प्रमेह दूर होवे ।

मस्कमृगाङ्कोरसः

सुशुद्धंपारदंचैवसुशुद्ध गन्धकंभवेत् ।
वङ्गशुद्धंसमादायनवसादरमेवच ॥
समभागानिसर्वाणिमर्दयित्वासुखल्लके ।
काचकूप्यांविनिक्षिप्यपावकेस्थापयेद्बुधः ॥
मुखेमुद्राचनोदेयाधूमसलक्षयेत्ततः ॥
निर्धूमेजायमानेतुसिद्धोमस्कमृगाङ्ककः ।
मधुमेहन्तुमेहानांगणनाशयतेध्रुवम् ॥
मधुनाभक्षयेच्चैवसूक्ष्मैलाचूर्णकेनच ।
रससागरग्रन्थेतुसुश्रेष्ठस्वर्णभस्मच ॥

शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, शुद्धरागा, नोसद्दर, सब समान भाग लेके खरल करे, फिर कांचकी शीशीमे भर बालुकायन्त्रसे चढाय मुख बन्दकर अग्निपर रखे उसमेसे जो धुआ निकले उसे देखता रहे, जब धुआ निकलना बन्द हो जावे तब उतार लेवे, तो यह मस्कमृगाक सिद्ध होवे, यह मधुमेह और अन्य प्रमेहोके गणोका नाश करे, इससे छोटी इलायचीका चूरा मिलाय सहतके साथ चाटे यह प्रयोग रससागर ग्रन्थमे लिखा है ।

संजीवनोरसः

पलमात्र रसंशुद्ध वरनागसमन्वितम् ।
निक्षिप्यपातनायन्त्रे त्रिंशद्वाराणिपातयेत् ॥
समाहरेद्रसंसम्यक्पातनायन्त्रकेमृतम् ।
मृतरसंक्षिपेत्तुल्यंभूपालावर्त्तभस्मकम् ॥
निरुत्थंत्रपुभस्मापिनिक्षिपेदष्टमांशतः ।
ततोनिम्बदलद्रावैस्त्रिंशद्वारंहिभावयेत् ।
ततःसंशोष्यसंचूर्ण्यक्षिपेद्वरकरण्डके ॥
संजीवनोयंखलुवल्लमानोनिःशाकुलीचूर्णयुतः सतक्रः ॥ निहन्तिसर्वानपिमेहरोगान्नृणांनितान्तंकुरुतेक्षुधांच ।

पारा ५ तोले, शीशा पांच तोलेमे मिलाय पातना यन्त्र द्वारा ३० बार पातन करे जब पातनायंत्रमें शुद्ध होजावे तब इससे पारेकी बराबर राजावर्त्त भस्म मिलावे और निरुत्थ रांगेकी अष्टमांश भस्म मिलावे, पश्चात् नीमके रसकी तीस भावना देवे, फिर इसको सुखाय चूर्णकर किसी उत्तम शीशीमे भरके रखछोडे, यह सजीवनरस ३ रत्ती कुटकी के चूर्णमें छाछके साथ सेवन करे तो सर्व प्रकारकी प्रमेहको दूर करे और भूख बढावे ।

रसस्यभस्मनातुल्यवङ्गभस्मसमाहरेत् ।
मधुनालेहयेत्प्राज्ञोवातमेहप्रशान्तये ।

पारेकी भस्मसे बराबर रागकी भस्म मिलाय सहतके साथ चाटे तो बादीकी प्रमेह दूर हो ।

मुद्गमूलयूषेणपथ्यंदेयसतक्रकम् ।
तिलपिण्डीचतक्रेणपक्त्वादद्यान्नहिंगुकम् ॥
घृतबहुनदद्याच्चतिलतैलेनभोजयेत् ।
मार्कण्डीचूर्णमादायसगुडखादयेन्निशि ॥

अब पथ्य कहते हैं कि मूग मूलीके यूषके साथ और छाछ पथ्यमे देवे, तथा तिलकी पिडी छाछके साथ देवे, परन्तु हींगका देना वर्जित है, बहुत घृत न देवे किन्तु तिलके तेलसेही भोजन करे और रात्रिमे भारगीके चूर्णमे गुड मिलाके खाया करे ।

चन्द्रप्रभागुटिका

वोलंजातीफलमधूकयुगलंसारंतथाखादिर । कर्पूरामलकीसटीबहुसुताघोटाम्लसारःस्थिरा ॥ कासीसभववीजदाडिमसहासर्वेसमकल्पितम् । प्रत्येकदधिदुग्धलाङ्गलिरसैस्तुम्ब

स्यमुद्गस्यच ॥ रसेनभावितस्यगुटिकासंप्रकल्पितः । जयेच्चन्द्रप्रभानामतीव्रान्मेहादिकान्गदान् ॥

बोल, जायफल, महुएकासार, मुलहटीकासार, खैरसार, कपूर, आवला, कचूर, शतावर, बेर, तिंतडीक, मगरेला, कसीस, पारा, अनारदाना इन सबको बराबर लेवे, फिर दही, दूध, कलियारी, तूत्रा और मूग इनके रसोंकी भावना देकर गोलिया बनावे, यह चन्द्रप्रभानाम गुटिका तीव्र प्रमेहोको दूर करे ।

प्रमेहगजसिंहरसः

चांडालीराक्षसीपुष्पारसमध्वाज्यटङ्कणम् ।
रससमांशोपरसंसमहेम्नाविमर्दिता ॥
समांशपूतिलोहवामूषायांविपचेत्क्रमात् ।
प्रमेहगजसिंहोयंरसःक्षौद्रैद्विमाषकम् ॥

लिंगली, गन्धपलासी, पारा, सहत, घृत, और सुहागा तथा पारेकी बराबर उपरस ले फिर बराबरका सुवर्ण मिलावे, तथा कीटी मिलाय मूषा में रखके पचावे, तो यह प्रमेहगजसिंहरस बने इसमेंसे दो माशे रस सहतके साथ खाय तो प्रमेह का नाश करे ।

भीमपराक्रमःसर्वमेहे

तुल्याभ्यारसगधाभ्यांकृत्वाकज्जलिकांत्वियं
द्रावयित्वायसेपात्रे मृदुनाबदराग्निना ॥
निरुत्थमष्टमासेनसीसभस्मविनिक्षिपेत् ।
समिश्रंकदलीपात्रे निक्षिप्यतदनन्तरम् ॥
आकृष्यपरिपिष्ट्वाथसीसभस्मप्रमाणत. ।
कान्ताभ्रसत्वयोर्भस्मराजावर्त्तकभस्मच ॥
परिसिद्धंसगोमूत्रे शिलावातुनिधायच ।
खल्लेनिक्षिप्यतत्सर्वंयत्नेनपरिमर्दयेत् ॥
तुल्यगुञ्जाकुलीबीजचूर्णकल्कोथवारिणा ।
कतकाच्छिकषायेणनिम्बपत्ररसेनच ॥
ततःसंशोष्यसचूर्ण्यक्षिप्त्वालोहस्यभाजने ।
त्रिफलानाकषायेणसप्तधापरिभावयेत ॥
आकुलीबीजबब्बूरनिर्यासौभृष्टचूर्णितौ ।
समौरससमौकृत्वारसेनसहमर्दयेत् ॥
इतिसिद्धोरसःसोऽयंभवेद्भीमपराक्रमः ।
नामतःसर्वमेहघ्नौदृष्टप्रत्ययकारकः ॥
वल्लद्वयमितोग्राह्योजलैःपर्युषितैःसह ।
पथ्यंमेहोचितंदेयंवर्ज्यंसर्वविवर्जयेत ॥

पारा और गन्धक दोनों चार २ तोले दोनोंकी कजलीकर लोहेके पात्रमे बेरकी अग्निसे पिघलाकर उसमें एक तोले निरुत्थ सीसेकी भस्म मिलाके केलेके पत्तेपर ढाल देवे, फिर उस पर्पटीको पीस, कांतलोहकी भस्म, राजावर्त्त और अभ्रकसत्वकी भस्म डाले, तथा मनसिल टाल गोमूत्रमे खरल करे, फिरघूवचीके बीजके चूर्णके कल्कके रससे निर्मलीके काढे, और नीमके पत्तोके रसकी भावना देकर सुखाके चूर्ण करलेवे, फिरलोहपात्रमें डाल त्रिफलाके काढेकी ७ भावना देवे, आकुली, बबूरका गोंद, इनको भूनकर रस में मिलावे तो यह भीमपराक्रमरस सिद्ध होवे, यह सर्व प्रकारकी प्रमेहको दूर करता है, मात्रा ६ रत्तीकी, बासे जलके साथ लेवे और प्रमेहपर लिखे पथ्य करे तो यह प्रयोगानुभूत है ।

रामबाणोरसः

त्रिगुणानिहततारस्वर्णंनागहतंतथा ।
मृतसूततयोस्तुल्यमर्दयेद्दिवसत्रयम् ॥
आकुलीमूलजैःक्वाथैःशोषयित्वामुहुर्मुहुः ।
ताप्यवैक्रान्तराजावर्त्तभस्मसर्वंसमक्षिपेत् ॥
विमर्दबलिनासर्वंपोडातुषपुटैःपचेत् ।
अकुलीबीजबबूक्वथितैर्भावयेत्त्रिधा ॥
तत्संपरिचूर्ण्याथस्थगयेत्कूपिकोदरे ।
गुडूचीसत्वसंयुक्तोवल्लातुल्योरसस्त्वयं ॥
निहन्तिसकलंमेहंमोहध्मातइवेश्वरः ।
बाणवद्रामचन्द्रस्यसज्जनस्येवभाषितम् ॥
नयातिजातुमेहत्वरामबाणरसोत्तमः ।

रांगेसे मारा हुआ रूपा और शीशेसे मारा हुआ सुवर्ण दोनोंको समान ले दोनोंकी बराबर चन्द्रो-

दय मिलावे फिर आकुली बीजोंके काढ़ेमें तीन दिन खरलकर बारबार सुखावे, और भावना देवे, फिर सुवर्णमाक्षिककी भस्म, कांसुला, राजावर्त्तकी भस्म सबको समान भाग डालके गन्धक के साथ घोटे, फिर तुषाग्निके छः पुट देवे, फिर आकुली बीज और बबूल इनके काढ़े की तीन २ भावना देवे। पश्चात् उसका चूर्ण कर उत्तम पात्र में रखे इस को गिलोय के सत्व के साथ ३ रत्ती सेवन करे, तो सपूर्ण प्रमेहों को दूर करे जैसे पर मात्मा के ध्यानसे मोह, रामचन्द्रके बाणसे राव- णादि दुष्टोका नाश हुआ, वैसे ही इस सज्जन पुरुषों के कहे इस रामबाण रसके सेवन करनेसे फिर कदाचित् प्रमेह नहीं होता।

राजमृगाङ्कोरसः

सुवर्णरजतकान्तताम्र त्रपुससीसकम्।
भस्मीकृत्वाचतत्सर्वंक्रमवृध्याकृतांशकम् ॥
व्योमसत्वभवभस्मसर्वैस्तुल्यप्रकल्पयेत्।
कज्जलीसूतराजस्यसर्वैरेतैःसमांशिकां॥
प्रदातव्यलोहभस्माथपूर्वभस्मविनिःक्षिपेत्।
काष्टेनालोड्यतत्सर्वं सद्रवह्निसमाहरेत ॥
ततोविचूर्ण्यतत्सर्वं सप्तवारविभावयेत्।
आकुलीबीजसभूतंकाथलौहेप्रयत्नतः॥
रुद्धं न्तन्मल्लमूषायांसर्वं सस्वेदयेच्छनैः।
इतिसिद्धोरसेन्द्रोयंचूर्णितःपटगालितः॥
कान्तपत्रस्थितैरात्रौजलैस्त्रिफलसयुतैः।
वल्लत्रयमितःप्रातर्दातव्योमेहरोगिणां ॥
मृगचारिमृगेन्द्रेणमेहव्यूहविनाशनः।
निर्दिष्टोऽयंरसोराजमृगाङ्कइतिकीर्तितः॥
दीपनःपाचनोवृष्योग्रहणीपाण्डुनाशनः।
तापघ्नोरुचिकृत्सर्वरोगघ्नोयोगसयुतः॥

सुवर्ण, चांदी, कान्त, ताम्र, रांगा, और सीसा इन की भस्मों को क्रम से एक से दूसरी अधिक लेवे, जैसे (सुवर्ण से जितनी अधिक चांदी की लेवे वैसे चादी से उतनी ही अधिक कांत की लेवे) और सब की बराबर अभ्रक की भस्म ले, तथा सब की बराबर पारे गंधक की कजली लेवे, उस कजली अग्नि पर पतली करके सब भस्म मिला देवे, और लकडी से जला देवे, जब वह एक जी हो जावे तब केले के पत्ते पर डाल देवे, फिर उस पर्पटी को पीस आकुली के रस की सात भावना देवे, फिर मूषा मे रख धीरे २ स्वेदन करे, तो यह मृगांक रस सिद्ध होवे, इस को कपरछन कर रख छोडे, रात्रि मे कान्त लोह के पात्र मे रखे, त्रिफला के रस के साथ तीन रत्ती प्रमेह वाले को देवे, तो यह सम्पूर्ण प्रमेहो का नाश करे, इस को रसराजमृगांक कहते हैं, दीपन, पाचन, वृष्य, सग्रहणी, पाण्डु रोग, ज्वर इत्यादि सब रोगो को दूर करे और रुचि प्रकट करता है।

मेहबद्धोरसः

भस्मसूतंमृतंकान्तंमुण्डभस्मशिलाजतुः।
ताप्यशुद्धं शिलाव्योषत्रिफलाकोलबीजकम् ॥
कपित्थरजनीचूर्णंसमभाव्यंचभृङ्गिणां।
त्रिंशद्वारविशोष्याथमधुयुक्तं लिहेत्सदा ॥
निष्कमात्रं हरेन्मेहान्मेहबद्धोरसोमहान्।

चन्द्रोदय, कान्त लोह की भस्म, मुंड लोह की भस्म, शिलाजीत, सुवर्ण माक्षिक की भस्म, मनसिल, त्रिकुटा, त्रिफला, अंकोल के बीज, कैथ और हल्दी का चूर्ण, इन सब को बराबर लेवे और भांगरे के रस की ३० भावना देवे फिर चार २ माशे की गोलिया बनावे, एक गोली सहत के साथ नित्य खाय तो यह प्रमेहबद्ध रस सर्व प्रमेहो को दूर करे।

बृहद्धरिशंकरोरसः

रसगन्धकलोहंचस्वर्णवङ्गञ्चमाक्षिकम्।
समभागन्तुसंपिष्यवटिकाकारयेद्भिषक् ॥
सप्ताहमामलद्रावैर्भावितोयंरसेश्वर.।
हरिशंकरनामायगहनानन्दभाषितः॥
प्रमेहान्विंशतिंहन्तिसत्यंसत्यनसशयः।

पारा, गधक, लोह भस्म, सुवर्ण भस्म, बंग

भस्म और सुवर्ण माक्षिक की भस्म इन सब को समान भाग ले और सब को आवले के जल से ७ दिन खरल कर गोलिया बनावे, तो यह गहनानन्द का कहा हुआ हरिशंकर रस २० प्रकार की प्रमेहो को निसन्देह दूर करे ।

आनन्दभैरवोरसः

वङ्गभस्ममृतंस्वर्णंरसक्षौद्रैर्विमर्दयेत् ।
द्विगुञ्जंभक्षयेन्नित्यहन्तिमेहंचिरोद्भवम् ॥
गुञ्जामूलतथाक्षौद्रैरनुपानंप्रशस्यते ।

वंग भस्म, सुवर्ण भस्म और पारे की भस्म इन तीनो को सहत मे खरल कर दो २ रत्ती की गोलिया बनावे, १ गोली नित्य खाय तो बहुत दिन की प्रमेह को दूर करे, इस के ऊपर घूंघची की जड का चूर्ण सहत मे मिला कर चाटे ।

विद्यावागीशरसः

मृतसूताभ्रनागञ्चस्वर्णंतुल्यप्रकल्पयेत् ।
महानिम्बस्यचूर्णन्तुचतुर्भिःसममाहरेत् ॥
मधुनालेहयेन्माषंलालामेहप्रशान्तये ॥
सक्षौद्रंरजनीचूर्णंलेह्यंनिष्कद्वयन्तथा ।
असाध्यंनाशयेन्मेहविद्यावागीशकोरसः ॥

चन्द्रोदय, अभ्रक, शीशे की भस्म, और सुवर्ण भस्म, सब को समान ले, सब की बराबर बकायन का चूर्ण लेवे, एक माशे सहत के साथ सेवन करे, तो लाला प्रमेह को दूर करे, इस पर हल्दी का चूर्ण ८ माशे सहत के साथ लेवे तो यह असाध्य प्रमेह का नाश करे, इसे विद्यावागीश रस कहते हैं ।

मेहमुद्गरोरसः

रसाञ्जनविडदारुबिल्वगोक्षुरदाडिमम् ।
भूनिम्बपिप्पलीमूलत्रिकटुत्रिफलात्रिवृत् ॥
प्रत्येकंतोलकंदेयलोहचूर्णन्तुतत्समम् ।
पलैकंगुग्गुलदत्वाघृतेनवटिकांकुरु ॥
माषैकानिर्मिताचेयमेहमुद्गरसञ्ज्ञिनी ।
श्रीमद्गहननाथेनलोकनिस्तारकारिणा ॥
अनुपानप्रकर्त्तव्यंछागीदुग्धजलचवा ।
विंशन्मेहनिहन्त्याशुमूत्रकृच्छ्रंहलीमकम् ॥
अश्मरींकामलांपाण्डुमूत्राघातमरोचकम् ।
अर्शांसिव्रणकुष्ठञ्चवातरक्तंभगन्दरम् ॥

रसोत, वायविडंग, देव दारु, बेलगिरी, गोखरू, अनारदाना, चिरायता, पीपलामूल, सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, निसोथ प्रत्येक एक २ तोला लेवे और सब की बराबर लोह भस्म लेवे, और गूगल ४ तोले सब को मिलाय घृत मे एक एक माशे की गोलिया बनावे । इसे मेहमुद्गर गोली कहते हैं, श्रीगहननाथ ने कही है, इस को बकरी के दूध अथवा जल के साथ देवे, तो बीस प्रकार के प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हलीमक, पथरी, कामला, पाण्डु रोग, मूत्राघात, अरुचि, बवासीर, व्रण, कोढ, वातरक्त और भगन्दर को दूर करे ।

मेघनादोरसः

भस्मसूतंसमंकान्तमभ्रकन्तुशिलाजतु ।
शुद्धताप्यशिलाव्योषत्रिफलांकोठजीरकम् ॥
कर्पासबीजरजनीचूर्णंभाव्यञ्चवन्हिना ।
विंशद्वारविशोष्याथलिह्याच्चमधुनासह ॥
माषमात्रंहरेन्मेहमेघनादरसोमहान् ।

चन्द्रोदय, कान्त लोह की भस्म, अभ्रक, शिलाजीत, शुद्ध सुवर्ण माक्षिक, मनसिल, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, अकोल, जीरा, कपास के बीज और हल्दी, इन सब को बराबर ले कर चूर्ण करे, और सुखा २ कर २० भावना चीते के रस को देवे, फिर इस मे से १ माशे को सहत के साथ चाटे तो यह मेघनाद रस सर्व प्रकार के प्रमेहो का नाश करता है ।

चन्द्रप्रभावटिका

मृतसूताभ्रकलौहनागंवंगंसमंसमम् ।
एलाबीजंलवगञ्चजातीकोषफलंतथा ॥
मधुकंमधुयष्टिश्चधात्रीचसमशर्करा ।
कर्पूरखादिरसारशताह्वाकण्टकारिका ॥

आम्लवेतसकंतुल्यदिनैकंलागलोद्भवैः ।
भावयेन्मेषदुग्धेननागवल्यारसैर्दिनम् ॥
वटिकाबदरास्थाभाकार्य्याचन्द्रप्रभापरा ।
भक्षयेद्वटिकामेकांसर्वमेहकुलान्तिकाम् ॥
धात्रीपटोलपत्रवाकषायंवामृतायुतम् ।
सक्षौद्रंभक्षयेच्चानुसर्वमेहप्रशान्तये ॥

चन्द्रोदय, अभ्रक, सार, नागेश्वर और बंग सबको समान भाग लेवे, छोटी इलायचीके बीज लौंग, जायफल, जावित्री, मुलहठी, महुआ, और आमले इन सबको समान भागले, कपूर, खैरसार, शतावर कटेरी और अमलवेत सबको समान लेके चूर्ण करे, फिर कलियारीके रसकी १ दिनकी भावना देवे, फिर बकरीके दूध और खरेटीके रसकी एक २ दिनकी भावना देवे, फिर बेरकी गुठलीके बराबर गोलिया बनावे इस चन्द्रप्रभाकी १ गोलीको प्रातःकाल नित्य भक्षण करे और आवले पटोलपत्र और गिलोय इनके काढेमे सहत मिलाकर पथ्य देवे तो सर्व प्रमेहोका नाश करे ।

इक्षुमेहेवंगेश्वरोरसः

रसभस्मसमायुक्तंवंगभस्मंप्रकल्पयेत् ।
अस्यमाषद्वयहन्तिमेहान्क्षौद्रसमन्वितम् ॥

चन्द्रोदयकी बराबर बङ्गभस्म मिलाकर सब को चूर्ण करे और दो माशे सहतके साथ सेवन करे तो प्रमेह दूर हो ।

वृहद्वंगेश्वरोरसः

वगभस्मरसंगन्धंरौप्यकपूरमभ्रकम् ।
कर्षकर्षमानमेषासूताद्विहेममौक्तिकम् ॥
केशराजरसैर्भाव्यंद्विगु जाफलमानतः ।
प्रमेहान्विंशतिञ्चैवसाध्यासाध्यमथापिवा ॥
मूत्रकृच्छ्रंतथापाण्डुंधातुस्थञ्चज्वरजयेत् ।
हलीमकंरक्तपित्तंवातपित्तकफोद्भवं ॥
ग्रहणीमामदोषञ्चमन्दाग्नित्वमरोचकम् ।
एतान्सर्वान्निहन्त्याशुवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा
बृहद्वगेश्वरोनामसोमरोगनिहन्त्यलम् ।
वहूमूत्र वहुविधंमूत्रमेहसुदारुणम् ॥
मूत्रातिसारकृच्छ्रंचक्षीणानांपुष्टिवर्द्धनः ।
ओजस्तेजस्करोनित्यंस्त्रीपुसम्यकवृषायते ॥
वलवर्णकरोरुच्यःशुक्रसञ्जननःपर ।
छागंवायदिवागव्यपयोवादधिनिर्म्मलम् ॥
अनुपानप्रयोक्तव्यंबुद्ध्वादोषगतिंभिषक् ।
दद्याच्चबालेप्रौढेचसेवनार्थरसायनम् ॥

वंगकीभस्म, चन्द्रोदय, गधक, रूपरस, कपूर, और अभ्रक प्रत्येक एक २ तोले, मोती ३ पैसे, सुवर्णभस्म ३ माशे, सबको एकत्र कर भागरेके रसकी भावना देवे और दो-दो रत्तीकी गोलिया बनावे, यह बृहद्व गेश्वररस साध्यासाध्य २० प्रकार के प्रमेहोको, मूत्रकृच्छ, पाण्डुरोग, धातुगतज्वर, हलीमक, रक्त पित्त, वात पित्त, कफ के रोग, सग्रहणी, आम दोष, मन्दाग्नि, अरुचि, सोम रोग, वहुमूत्र, दारुण मूत्र प्रमेह, मूत्रातिसार, और मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगो को नाश करे, क्षीण पुरुषो को पुष्ट करे ओज और तेज को बढावे, स्त्री भोग की शक्ति बढावे, बल, वर्ण, रुचि और वीर्य को प्रगट करे, इस के ऊपर बकरी या गौ का दूध या निर्मल दही अनुपान मे देवे इस से वैद्य दोषोंका बलाबलविचार कर अपनी बुद्धि से बालक और जवान मनुष्यो को रसायनार्थ देवे ।

कस्तूरीमोदकः

वगाभ्रमथनागाभ्रंनागवगञ्चकेवलम् ।
मेहरोगेप्रयोक्तव्यशिलाजतुसमन्वितम् ॥
कस्तूरीवनिताक्षुद्रात्रिफलाजीरकद्वयम् ।
कदलीनाफलपक्वखर्ज्जूरकृष्णातिल्लकम् ॥
कोकिलाख्यस्यबीजञ्चमाषमात्रंसमसमम् ।
यावन्त्येतानिचूर्णानिद्विगुणासितशर्करा ॥
धात्रीरसेनपयसाकूष्माण्डस्वरसेनच ।
विपचेत्पाकविद्वैद्योमन्दमन्देनवन्हिना ॥
अवतार्य्यसुशीतेचयथालाभविनिक्षिपेत् ।
अक्षमात्र प्रयुञ्जीतसर्वमेहप्रशान्तये ॥
वातिकपैत्तिकञ्चैवश्लैष्मिकसान्निपातकम् ।
सोमरोगबहुविधमूत्रातीसारमुल्वणम् ॥

मूत्रकृच्छ्रं निहन्त्याशुमूत्राघातंतथाश्मरीम् ।
ग्रहणींपाण्डुरोगञ्चकामलांकुम्भकामलान् ॥
वृष्योबलकरोहृद्यःशुक्रवृद्धिकरःपरः ।
कस्तूरीमोदकश्चायचरकेणचभाषितः ॥

वंग, अभ्रक, शीशे की भस्म, अथवा नागेश्वर वा केवल वंग को शिलाजीत में मिला कर खाय तो प्रमेह दूर हो, कस्तूरी, फल प्रियंगु, कटेरी, त्रिफला, सफेद जीरा, काला जीरा, पके केले की गहर, खजूर, काले तिल, ताल मखाने, प्रत्येक एक एक मासे लेवे, सबको चूर्ण से दूनी सफेद खांड मिलावे, और फिर आवले के रस, दूध और पेठेके चौगुने रससे मन्दाग्नि से पचावे, जब स्वांग शीतल हो जावे तब इस में से एक तोले खाने को देवे, तो यह सर्व प्रकार के प्रमेह, वात के, पित्त के, कफ के, सन्निपात के रोग और सोम रोग, घोर मूत्रातिसार, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, संग्रहणी, पाण्डु रोग, कामला और कुम्भकामला आदि सब रोगों को दूर करे, वृष्य, बल कारी, हृदय को हितकारी तथा शुक्र को बढाने वाला है, यह कस्तूरी मोदक चरक से लिखा गया है ।

हेमवज्रः

भस्मसूतंमृतंकान्तलोहभस्मशिलाजतु ।
शुद्धताप्यशिलाव्योषंत्रिफलाविल्वजीरकम् ॥
कपित्थरजनीचूर्णंभृङ्गराजेनभावयेत् ।
त्रिंशद्वारंविशोष्याथलिह्याच्चमधुनासह ॥
निष्कमात्र हरेन्मेहान्मूत्रकृच्छ्रं सुदारुणम् ।
महानिम्बस्यबीजञ्चपड् निष्कपेषितञ्चयत् ॥
पलतण्डुलतोयेनघृतनिष्कद्वयेनच ।
एकीकृत्यपिवेच्चानुहन्तिमेहंचिरोत्थितम् ॥

चन्द्रोदय, कान्त लोह की भस्म, शिलाजीत, शुद्ध सुवर्ण माक्षिक की भस्म, मनसिल, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, बेल गिरी, जीरा, कैथ का, गूदा और हलदी का चूर्ण सब को भागरे के रस की ३० भावना देवे, फिर इस को सहत के साथ ४ मासे सेवन करे तो प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र को दूर करे, बकायन के २४ मासे बीजों को पीस ४ तोले चावल के धोवन के जल मे मिलाय और ८ मासे घृत मिलाय एकत्र कर इस के ऊपर पीवे तो बहुत दिन की उत्पन्न प्रमेहों को दूर करे ।

मेहकेसरी.

कुमारीकेवलादेयाचेपल्लवणसंयुता ।
प्रमेहंहन्तिसकलमप्ताहात्परतोनृणाम् ॥
मृतवंगसुवर्णञ्चकान्तलोहञ्चपारदम् ।
मुक्तागुडत्वचञ्चैवसूक्ष्मैलापत्रकेशरम् ॥
समभागविचूर्ण्याथकन्यानीरेणभावयेत् ।
द्विमाषवटिकाखादेत्दुग्धान्नंप्रपिबेत्ततः ॥
प्रमेहंनाशयत्याशुकेसरीकरिणंयथा ।
शुक्रप्रवाहसमयेत्त्रिरात्रान्नात्रसंशयः ॥
चिरजातप्रवाहञ्चमधुमेहंञ्चनाशयेत् ।

घीगुवारके पट्टे में किंचिन्मात्र निमक मिलाय ७ दिन खाय तो प्रमेह दूर हो, मृतवंग, सुवर्ण भस्म, कान्तलोह, पारा, मोती, दालचीनी, छोटी इलायची, पत्रज और केशर इन सबको समान भाग ले घीगुवारके रसकी भावना देकर दो दो मासेकी गोलियां बनावे, एक गोली नित्य खाय ऊपरसे दूध भात खाय तो प्रमेह दूर हो ।

योगेश्वरोरसः

सूतकगन्धकलोहनागंचापिवराटकम् ।
ताम्रकवंगभस्मापिव्योमकञ्चसमांशिकम् ॥
सूक्ष्मैलापत्रमुस्तञ्चविडङ्गंनागकेशरम् ।
रेणुकामलकञ्चैवपिप्पलीमूलमेवच ॥
एषाञ्चद्विगुणंभागमर्दयित्वाप्रयत्नतः ।
भावनात्रदातव्याधात्रीफलरसेनच ।
मात्राचणकतुल्याचगुडिकेयप्रकीर्तिता ।
प्रमेहंबहुमूत्रञ्चअश्मरींमूत्रकृच्छ्रतम् ॥
व्रणंहन्तिमहाकुष्ठंअर्शांसिचभगन्दरम् ।
योगेश्वरोरसोनाममहादेवेनभाषितः ॥

पारा, गन्धक, लोह, सीसा, कौडी, तांबा,

और बग इनकी भस्म और अभ्रक समान लेवे, छोटी इलायची, पत्रज, नागरमोथा, वायविडंग, नागकेशर, रेणुका, आंवले, पीपलामूल, इन सब को दो-दो भाग लेवे सबका एकत्र चूर्णकर आवलेके रसकी भावना देकर चनेके बराबर गोलियां बनावे। यह गोलिया प्रमेह, बहुमूत्र, पथरी, मूलकृच्छ, व्रण, महाकुष्ठ, बवासीर और भगदर इनको यह योगेश्वर नामक रस दूर करे।

सोमरोगचिकित्सा.

तालकेश्वरोरसः

तालसूतंसमगन्धमृतलौहाभ्रवंगकम्।
मर्दयेन्मधुनाचैवरसोयंतालकेश्वर ॥
मापामात्रंभजेत्क्षौद्रैर्बहुमूत्रप्रशान्तये।
उदुम्बरफलंपक्वंचूर्णितकर्षमानतः ॥
संलेह्यंमधुनासार्द्धमनुपानसुखावहम्।

हरिताल, पारा, गन्धक, लोहभस्म, अभ्रक, और बंग इन सबको समान भाग लेकर सहतसे खरल करे, फिर १ माशेकी गोलीको सहतकेसाथ खाय तो बहुमूत्र दूरहो, इसके ऊपर पके गूलरका चूर्ण १ तोले सहतके साथ चाटे यह अनुपान है।

गगनादिलौहम्

गगनंत्रिफलालौहंकुटजकटुकत्रयम्।
पारदगन्धकञ्चैवविषटंकणसर्जिकाः॥
त्वगेलातेजपत्रञ्चवगजीरकयुग्मकम्।
एतानिसमभागानिश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥
तदर्द्धंचित्रकंचूर्णंकर्षैकमधुनालिहेत्।
अवश्यविनिहन्त्याशुमूत्रातिसारसोमकम् ॥

अभ्रक, त्रिफला, लोहभस्म, कूडाकी छाल, त्रिकुटा, पारा, गन्धक, विष, सुहागा, सज्जी, दालचीनी, तेजपात, बंगभस्म और दोनो जीरे सबको समान भाग ले सबका चूर्ण करे सबसे आधा चीतेका चूर्ण मिलावे, सबको मिलाय १ तोलेको सहतके साथ खाय तो अवश्य मूत्रातीसार और सोमरोगको दूर करे।

सोमनाथरसः

कर्षजारितलौहञ्चतद्र्द्धरसगंधकम्।
एलापत्रंनिशायुग्मजम्बुवीरणगोक्षुरम् ॥
विडंगजीरकंपाठाधात्रीदाडिमटंकणम्।
चदनगुग्गुलुर्लोध्रशालाञ्जुनरसांजनम् ॥
छागीदुग्धेनवटिकांकारयेत्द्विगुञ्जरक्तिकाम्।
निर्म्मितोनित्यनाथेनसोमनाथरसस्त्वयम् ॥
सोमरोगबहुविधप्रदरहतिदुर्ज्जयम्।
योनिशूलमेढ्रशूलसर्वजाचिरकालजम ॥
बहुमूत्र विपेणदुर्जयहन्त्यसशयः।

लोहभस्म १ तोले, पारा ६ मांशे और गधक ६ मारो, इलायची, तेजपात, हलदी, दारुहलदी, जामुन, वीरणतृण, गोखरू, वायविडंग, जीरा, पाढ, आंवले, अनारदाना, सुहागा, चन्दन, गूगल लोध, राल, कोह, रसोत, इन सबको समान ले बकरीके दूधसे दस २ रत्तीकी गोलियां बनावे यह सोमनाथरस नित्यनाथका निर्माण किया है, यह सोमरोग. अनेक प्रकारके प्रदररोग, योनिशूल, लिंगशूल, और भी सर्व प्रकारके शूल, बहु दिनो का शूल, बहुमूत्र इन सबको निसदेह दूर करे।

बृहत्सोमनाथरसः

हिंगुलात्सभवसूतपालिंधारसमर्दितम्।
रण्डाशोधितगधञ्चतेनैवकज्जलीकृतम् ॥
तद्वयोर्द्विगुणंलोहकन्यारसविमर्दितम्।
अभ्रकवंगकरोप्यखर्परमाक्षिकतथा ॥
सुवर्णञ्चसमंसर्वप्रत्येकञ्चरसार्द्धकम्।
तत्सर्वकन्यकाद्रवैर्मर्द्दयेत्भक्षयेत्ततः ॥
भेकपर्णीरसेनैवगुञ्जाद्वयवटीतत।
मधुनाभक्षयेच्चापिसोमरोगनिवृत्तये ॥
प्रमेहान्विंशतिंहन्तिबहुमूत्रञ्चसोमकम्।
मूत्रादिसारकृच्छ्रञ्चमूत्राघातसुदारुणम् ॥
बहुदोषबहुविधप्रमेहमधुसज्ञकम्।
हस्तिमेहंमधुमेहलालामेहविनाशयेत् ॥

वातिकंपैत्तिकचैवश्लैष्मिकसोमसञ्ज्ञकम् ।
नाशयेद्बहुमूत्रं चप्रमेहमविकल्पतः ॥

हींगलूका निकाला पारेको निसोथके रसमें खरलकर लेवे, फिर मूषकपर्णीके रसमें शुद्ध की हुई गन्धक लेकर कजली करे,कजलीसे दूनी लोह भस्म मिलाकर घीगुवारके रससे कजलीकर इसमे अभ्रक, वग, रूपरस, खपरिया, सोनामक्खी,और सुवर्णकी भस्म प्रत्येक पारेसे आधी २ लेवे, सबको घीगुवारके रससे खरलकर मडूकपर्णीके रससे दो २ रत्तीकी गोलिया बनावे और सहतके साथ खाय तो सोमरोग दूर हो, बीस प्रकारका प्रमेह, बहुमूत्र, सोमरोग, मूत्रातिसार, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, मधुप्रमेह, हस्तिप्रमेह, इक्षुप्रमेह, लालाप्रमेह तथा वातपित्त और कफके सोमरोगोंका नाश करे।

सोमेश्वरोरसः

शालार्जुनंलोध्रकचकदम्बागुरुचंदनम् ।
अग्निसन्थंनिशायुग्मधात्रीदाडिमगोक्षुरम् ॥
जम्बूवीरणमूलंचभागमेपांपलार्द्धकम् ।
रसगंधकधान्याब्दमेलापत्र तथाभ्रकम् ॥
लौहंरसांजनपाठाविडगंटकजीरकम् ।
प्रत्येकपलिकंभागंपलार्द्धं गुग्गुलोरपि ॥
घृतेनवटिकांकृत्वाखादेत्षोडशरक्तिकाम् ।
गहनानन्दनाथेनरसोयत्नेननिर्म्मितः ॥
सोमेश्वरोमहातेजाःसोमरोगंनिहन्त्यलम् ।
एकजद्वंद्वजचैवसन्निपातसमुद्भवम् ॥
मूत्राघातंमूत्रकृच्छ्रं कामलांचहलीमकम् ।
भगंदरोपदंशौचविविधानिपीडकाव्रणान् ॥
विस्फोटार्बुदकण्डूं चसर्वमेहविनाशयेत् ।

राल, कोह, लोध, कदब की छाल, अगर, चन्दन, २ रनी, हल्दी, दारुहल्दी, आवले,अनारदाना, गोखरू, जामुन और वीरणतृण की जड प्रत्येक २-२ तोला लेवे, पारा,गधक,धनियां, नागर मोथा, इलायची, अभ्रक, लोह, रसोत वायविडग, सुहागा और जीरा प्रत्येक चार-चार तोले लेवे,और गूगल दो तोले सब को कूट पीस घी के साथ दो २ मासे की गोलियां बनावे, यह गहनानन्द नाथ का कहा सोमेश्वर महारस सोम रोग को दूर करे, एक दोषज, द्वि दोषज, सन्निपातज, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, कामला, हलीमक, भगन्दर, उपदश और अनेक प्रकार की पीडिका, व्रण, विस्फोटक, अर्बुद,खुजली और सर्व प्रकार की प्रमेहों को दूर करे।

स्थौल्याधिकारः

त्र्यूषणाद्यं लौहम्.

त्र्यूषणंविजयाचव्यांचित्रकविडमौद्भिदम् ।
वाकुचीसैंधवंचैवसौवर्चलसमन्वितम् ॥
अयश्चूर्णेनसंयुक्तं भक्षयेन्मधुसर्पिषा ।
स्थौल्येचकर्षणश्रेष्ठंवलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥
मेहघ्नकुष्टशमनसर्वव्याधिहरंपरम् ।
नाहारेयंत्रणाकार्य्यानविहारेतथैवच ॥
त्र्यूषणाद्यमिदंलौहंरसायनवरोत्तमम् ।

सोठ, मिरच, पीपल, भांग, चव्य, चीता, काला नोन, रेहका निमक, बावची, सैंधा निमक, संचर नोन और लोह भस्म इन सब को समान भाग लेवे, सब को खरल कर इसे सहत और घी के साथ खाय तो स्थूलता दूर करे, बल, वर्ण और अग्नि को बढावे, प्रमेह, कोढ और सब प्रकारकी व्याधियो का हरण करे। इसपर आहार बिहारका परहेज नहीं। यह त्र्यूषणादि लोह रसायन है।

वडवाग्निलौहम्.

सूतभस्मसतालंचलौहंताम्रं समंसमम् ।
मर्दयेत्मूर्य्यपत्रेणचास्यवल्लंप्रयोजयेत् ॥
मधुनास्थूलरोगेचशोथेशूलेतथैवच ।
मध्वाज्यमनुपानचदेयंवापिकफोल्वणे ॥

चन्द्रोदय, हरिताल की भस्म, लोह भस्म, और ताम्र भस्म प्रत्येक बराबर लेवे, और सब को आक के पत्तों के रस में खरल कर तीन-तीन

रत्ती की गोलियां बनावे । १ गोली सहत के साथ देवे तो स्थूलता, सूजन और शूल को दूर करे, इस के ऊपर घृत सहत विषम भाग मिला कर अनुपान में देवे तथा इसको कफोल्वण में भी देना चाहिये ।

वडवाग्निरसः

शुद्ध सूतसमंगन्धंताम्रं तालसमंसमम् ॥
अर्कक्षीरैर्दिनमर्द्यं क्षौद्रैर्लेह्यंत्रिगुंजकम् ।
वडवाग्निरसोनाम्नास्थौल्यमाशुनियच्छति ॥

शुद्ध पारा, गंधक, ताम्र भस्म और हरिताल सब को बराबर ले आक के दूध से एक दिन खरल कर तीन तीन रत्ती की गोलिया बनावे, एक गोली सहत के साथ लेवे तो यह वडवाग्निरस स्थूलता रोग को शीघ्र दूर करे ।

उदररोगाधिकारः

त्रैलोक्यसुन्दरोरसः

शुद्धसूतंद्विधागन्धंताम्राभ्रं सैंधवविषम् ।
कृष्णजीरंविडंगचगुडचीसत्वंचित्रकम् ॥
उग्रगन्धायवक्षारंप्रत्येककर्षमात्रकम् ।
निर्गुंडिकाद्रवैरग्निबीजपूरद्रवैर्दिनम् ॥
मर्दयेत्शोषयेत्सोयरसस्त्रैलोक्यसुन्दरः ।
गुंजाद्वयंघृतैर्लेह्यं वातोदरकुलान्तकम् ॥
वन्हिचूर्णयवक्षारंप्रत्येकंचपलद्वयम् ।
घृतप्रस्थंविपक्तव्यंगोमूत्रैश्चचतुर्गुणैः ॥
घृतावशेषकर्त्तव्यंकर्षमात्रं पिबेदनु ॥

पारा १ तोले, गधक दो तोले, ताम्र भस्म, अभ्रक, सेंधा निमक, विष, काला जीरा, वायविडंग, गिलोयसत्व, चीते की छाल, बच और जवाखार प्रत्येक एक २ तोले लेवे सब को निर्गुंडी, चीता और बिजौरे के रस में एक २ दिन खरल कर धूप में सुखावे तो यह त्रैलोक्यसुन्दर रस बने, इसको दो रत्ती सहत के साथ चाटे तो उदर रोग दूर हो, चीते का चूर्ण और जवाखार प्रत्येक चार २ तोले ले और सेर भर घी और चौगुना गो मूत्र मिला कर औटावे जब घी शेष रहे तब उतार ले, इसे त्रैलोक्य सुन्दररस के ऊपर १ तोले पीवे ।

वैश्ववानरीवटी.

शुद्ध सूतंद्विधागंधमृताकार्यःशिलाजतु ।
रसमानप्रदातव्यंरसस्यद्विगुणंविषम् ॥
त्रिकटुश्चित्रकवीरानिर्गुण्डीमूसलीरज. ।
अजमोदाविषांशेनप्रत्येकचनियोजयेत् ॥
निम्बपचांगुलकाथैर्भावनाचैकविंशतिः ।
भृंगराजरसैःसप्तदत्वाक्षौद्रैर्विलोडयेत् ॥
भक्षयेद्बदरास्थ्याभावटिकान्तांदिवानिशि ।
श्लेष्मोदरनिहत्याशुनाम्नावैश्वानरीवटी ॥
देवदारुवन्हिमूलकल्कक्षीरेणपाययेत् ।
भोजनमेपदुग्धेनकुलत्थानांरसेनतु ॥

पारा १ तोले, गधक दो तोले, तावे की भस्म और शिलाजीत एक २ तोले, विष दो तोले, त्रिकुटा, चीता, बीरण मूल, सम्हालू, मूसली का चूर्ण और अजमोद प्रत्येक दो २ तोले ले फिर नीम और अरंड के काढे की २१ भावना देवे, पश्चात् भागरे के रस की ७ भावना दे कर सहत से खरल कर बेर की गुठली के बराबर गोलिया बनावे, एक २ गोली प्रतिदिन सायकाल और प्रातःकाल मे भक्षण करे तो यह वैश्वानर वटी कफोदर को दूर करे, देव दारु और चीते की छाल का कल्क कर दूधके साथ पीवे तथा बकरी के दूध और कुलथी के रस के साथ सेवन करे ।

जलोदराररिसः

पिप्पलीमरिचंताम्रं रजनीचूर्णसंयुतम् ।
स्नुहीक्षीरैर्दिनैर्मर्द्यं तुल्यंजैपालबीजकम् ॥
निष्कखादेद्विरेकंस्यात्सद्योहन्तिजलोदरम् ।
रेचनानाचसर्वेषांदध्यन्नंस्तम्भनेहितम् ॥
दिनान्तेचप्रदातव्यमन्नंवामुद्गयूषकम् ।

पींपल, काली मिरच, ताम्र भस्म, हल्दी का चूर्ण सब को थूहरके दूध से एक दिन खरल

करे फिर समान भाग जमाल गोटा मिला कर ४ माशे खाय तो दस्त हो कर जलोदर को दूर करे, यदि दस्त बंद कराने होवें तो दही भात का भोजन करावे, अथवा सायंकाल में मूंग का यूष देवे ।

वह्निरसः

सूतस्यगंधकस्याष्टौरजनीत्रिफलाशिलाः ।
प्रत्येकंचद्विभागस्यात्त्रिवृज्जैपालचित्रकम् ॥
प्रत्येकंचत्रिभागंचव्योपंदन्तिकजीरकम् ।
प्रत्येकसप्तभागस्यादेकीकृत्यविचूर्णयेत् ॥
जयन्तीस्नुकपयोभृंगवन्हिवातारितैलकैः ।
प्रत्येकंचक्रमाद्भाव्यसप्तवारंपृथक्पृथक् ॥
महावन्हिरसोनाम्नानिष्कमुष्णजलैःपिबेत् ।
विरेचनभवेत्तेनतक्रंभुक्तंससैंधव ॥
दिनान्तेदापयेत्पथ्यंवर्जयेच्छीतलंजलम् ॥
सर्वोदरहरःप्रोक्त श्लेष्मवातहरःपरः ।

पारा और गधक प्रत्येक आठ २ तोले हल्दी, त्रिफला, मनसिल, प्रत्येक दो २ तोले, निसोथ, जमाल गोटा और चीता प्रत्येक तीन २ तोले लेवे, सोंठ, मिरच, पीपल, दन्ती और जीरा प्रत्येक सात २ भाग ले चूर्ण कर अरनी, थूहर के दूध, भागरा, चीता, और अंडी का तेल प्रत्येक की सात २ भावना देवे। इस महावन्हि रसको गरम जल के साथ पीवे तो दस्त हो इसपर गरम जल न पीवे रात्रि को छाछ में सैंधा निमक मिला कर भात के साथ देवे, तो यह सर्व उदर रोगों को हरण करे, तथा कफ वात का हरण करे ।

त्रैलोक्यदुम्बरोरसः

द्वौभागौशिवबीजस्यगंधकस्यचतुष्टयम् ।
अभ्रवन्हिविडगानांगुडूचीसत्वनागयोः ॥
कृष्णजीरकटूनांचलवणक्षारयोरपि ।
प्रत्येकभागमादायमर्दयेत्सुरसाद्रवैः ॥
बीजपूररसैर्भूयोमर्दयित्वाविशोपयेत् ।
त्रैलोक्यदुम्बरोनामवातोदरकुलान्तकः ॥
गुञ्जाद्वयंततश्चास्यदद्यीतघृतसंयुतम् ।
भोजयेत्स्निग्धमुष्णंचपायसंचविवर्जयेत् ॥

पारा दो तोले, गन्धक ४ तोले, अभ्रक, चीता वायविडंग, गिलोयसत्व, शीशेकी भस्म, काला-जीरा, त्रिकुटा, निमक, सज्जीखार, जवाखार, प्रत्येक एक-एक भाग लेवे, सबको तुलसी और बिजौरेके रससे खरलकर गोलिया बनावे, यह त्रैलोक्यदुंबर रस बादीके उदरको दूर करे, इस-की दो रत्तीकी मात्रा घृतके साथ देवे और चिकना व गरम भोजन को देवे, परन्तु खीरका भोजन मना है ।

इच्छाभेदीरसः

शुंठीमरिचसंयुक्तंरसगन्धकटंकणम् ।
जैपालोद्विगुणःप्रोक्तःसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥
इच्छाभेदीद्विगुंजःस्यात्सितयासहदापयेत् ।
पिबेच्चचुल्लकान्यावत्तावद्वारान्विरेचयेत् ॥

पारा, गन्धक, सुहागा, सोंठ और काली मिरच इन सबको समान भाग ले और एक औ-षधिसे दूना जमालगोटा डाले, सबको एकत्र पीस इसमेंसे दो रत्ती मिश्री के साथ देवे इसके ऊपर जितने पानीके चुल्ल पीवे उतने ही दस्त हो यह इच्छाभेदीरस है ।

पिप्पल्याद्यंलौहम्.

पिप्पलीमूलचित्राभ्रत्रिकत्रयेन्दुसैंधवम् ।
सर्वचूर्णसमलौहहन्तिसर्वोदरामयम् ॥

पीपलामूल, चीतेकी छाल, अभ्रक, त्रिफला त्रिकुटा, त्रिमद, कपूर और सैंधानिमक, सबको बराबर ले और सबकी बराबर लोह मिलावे इसके सेवन करनेसे सर्व प्रकारके उदररोग दूर हों ।

उदरारिरसः

पारदशुक्तितुत्थंचजैपालपिप्पलीसमम् ।
आरग्वधफलान्मज्जानत्रौक्षीरेणमर्दयेत् ॥
माषमात्रांवटींखादेत्स्त्रीणांजलोदरंजयेत् ।
चिंचाफलरसंचानुपथ्यंदध्योदनहितम् ॥

दकोदरहरचैवतीव्रेणरेचनेनच ॥

पारा, शीशेकीभस्म, नीलाथोथा, जमालगोटा पीपल, अमलतासका गूदा, सबको बराबर लेकर थूहरके दूधसे खरलकर एक माशेकी गोली खाय तो स्त्रीका जलोदर दूरहो इसके ऊपर इमलीका पत्ता और दहीभातका भोजन करे इसके तीव्र जुल्लाब से जलोदर दूर होवे ।

वंगेश्वरोरसः

सूतभस्मवंगभस्मभागैकसम्प्रकल्पयेत ।
गन्धकमृतताम्र चप्रत्येकंचचतुःपलम् ॥
अर्कक्षीरैर्दिनैमर्द्य सर्वतद्गोलकीकृतम् ।
रुद्ध्वा वातद्ध धरेपक्त्वापुटकेनसमुद्धरेत् ॥
एषवंगेश्वरोनामपीतोगुल्मोदरजयेत् ।
घृतैर्गुञ्जाद्वयंलेह्य निष्कांश्वेतपुनर्नवां ॥
गवांमूत्रैःपिबेच्चानुरजनीम्वागवांजलैः ।

पारेकी भस्म, वगभस्म, एक २ पल लेवे, गन्धक और ताम्रभस्म प्रत्येक चार २ पल सबको आकके दूधसे एक दिन खरलकर गोला बनावे, उसको भूधरयन्त्रमें एक दिन रखके पचावे तो यह वगश्वररस सिद्ध होवे । यह गोला और उदर रोगोंको दूर करे, इसकोदो रत्ती घृतके साथ चाटे ऊपरसे विषखपरेको गोमूत्रमे पीसकर पीवे अथवा हलदी के चूर्णको गोमूत्रमे पीवे ।

प्लीहरोगचिकित्सा

रोहितकंलौहम्

रोहीतकसमायुक्तंत्रिकत्रयुतन्त्वयः ।
प्लीहानमग्रमांसचयकृतचविनाशयेत ॥

रोहेडेकी छाल, त्रिकुटा, त्रिफला, और त्रिमद सबको समान ले और सबके बराबर लोह भस्म मिलावे, इसे सेवन करेतो प्लीह, अग्रमास और यकृतरोग को दूर करे ।

लोकनाथोरसः

पारदगन्धकचैवसमभागविमर्दयेत् ।
मृताभ्रंरसतुल्यंचयत्नेनपरिमर्दयेत् ॥
रसाद्द्विगुणलौहंचलोहतुल्यचताम्रकम् ।
भस्मंवराटिकायाश्चताम्रतस्त्रिगुणंकुरु ॥
नागवल्लीदलेनैवमर्दयेद्यत्नतोभिषक् ।
पुटेगजपुटेविद्वान्स्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥
यकृत्प्लीहोदरंगुल्मश्वयथु चविनाशयेत् ॥
पिप्लींमधुसयुक्तांसगुडांवाहरीतकीम् ।
गोमूत्रं चपिबेच्चानुगुडवाजीरकान्वितम् ॥

पारा, गन्धक और अभ्रक समान भाग-लेके खरलकरे, फिर पारेसे दूनी लोहभस्म और इतनी ही ताम्रभस्म मिलावे, तथा तावेकी भस्मसे तिगुनी कौडीकी भस्म मिलावे, सबको पानके रसमें खरलकर गजपुटमे फूक देवे, जब स्वांगशीतल होजावे तब निकाल लेवे, यह यकृत, प्लीह, उदर, गोला और सूजनको दूर करे, इसके ऊपर पीपल शहत अथवा गुड मिली हरडका चूर्ण खाय उस पर गोमूत्र पीवे अथवा गुडयुक्त जीरा खाय ।

बृहल्लोकनाथोरसः

शुद्धसूतंद्विधागधखल्ले कृत्वातुकज्जलिम् ।
सूततुल्यजारिताभ्र मर्दयेत्कन्यकाम्बुना ॥
ततोद्विगुणितदद्यात्ताम्रलौहंप्रयत्नतः ।
काकमाचीरसेनैवसर्वंतत्परिमर्दयेत् ॥
सूताच्चद्विगुणगन्धवराटीसम्भवरजः ।
पिष्ट्वाजवीरनीरेणमूषायुग्मप्रकल्पयेत् ॥
तन्मध्येगोलकंक्षिप्त्वायत्नेनच्छादयेद्भिषक् ।
शरावसपुटकृत्वामृद्भस्मलवणाम्बुभिः ॥
शरावसन्धिमालिप्यचातपेशोषयेत्तत्क्षणम् ।
ततोगजपुटदत्वास्वाशीतसमुद्धरेत् ॥
पिष्ट्वातुसर्वमेकत्रस्थापयेत्भाजनेशुभे ।
खादेद्वल्लद्वयचास्यमूत्र चानुपिबेन्नरः ॥
मधुनापिप्पलीचूर्णसगुडांवाहरीतकीम ।
अजाजींवागुडेनैवचर्वयेत्तुल्ययोगतः ॥
यकृत्प्लीहरोगचश्वयथु चविनाशयेत् ।
वाताष्ठीलाचकमठींप्रत्यष्ठीलातथैवच ॥

कांस्यकोडाग्रमांसंचशूलंचैवभगंदरम्।
वन्हिमांद्यंचकासंचलोकनाथरसोत्तमः॥

पारा १ तोले, और गन्धक दो तोले, दोनो की कजली करे, फिर तावेकी भस्म एक तोले मिलाकर घीगुवारके रससे खरलकरे, फिर इसमे दूनी ताम्रभस्म और लोह की भस्म मिलावे, और और मकोयके रससे खरल कर गोला बनावे, फिर गन्धक दो तोले और कौडियोंकी भस्म दो तोले सबको जंबीरी नीबूके रससे खरल करे, दो मूषों के बीचमे गोलेको रखे फिर बन्दकर सराब संपुट में रखके मिट्टी, राख, निमक और जलसे सराव की संधियोंको बन्दकर सुखाय गजपुटमें फूंक देवे जब स्वांग शीतल, हो जावे तब निकाल ले। उस रसको पीस किसी उत्तमपात्र शीशी आदिमे रख छोडे। इसमेसे ६ रत्ती खाय ऊपरसे गोमूत्र पीवे और सहत मिला पीपलका चूर्ण वा गुड मिला हरड का चूर्ण वा बराबरका जीरा गुडमें मिला के खाय तो यकृत्, प्लीहा, उदर, सूजन, वातष्ठीला कमरकीवादी, प्रत्यष्ठीला, कास्यकोड, अग्रमास, मन्दाग्नि, शूल, भगंदर, और खांसी इन रोगो को यह लोकनाथ रस दूर करे।

ताम्रेश्वरवटी

हिंगुत्रिकटुकंचैवअपामार्गस्यपत्रकम्।
अर्कपत्रंतथास्नुहीपत्रंचसमभागिकम्॥
सैन्धवन्तत्समंग्राह्यंलौहंताम्र चतत्समम्।
प्लीहानयकृतंगुल्ममामवातंसुदारुणम्॥
अर्शांसिघोरमुदरमूर्छांपाण्डुहलीकम्।
ग्रहणीमतीसारंचयक्ष्माणशोथमेवच॥

हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, ओगाके पत्ते, आकके पत्ते, और थूहरके पत्ते इनको समान भाग लेवे और सबकी बराबर सैंधानिमक, और सैंधानिमककी बराबर लोहभस्म और तावेकी भस्म लेके सबको खरल करे यह प्लीहा, यकृत, गोला, आमवात, बवासीर, उदर, मूर्च्छा, पाण्डु, हलीमक, सग्रहणी, अतिसार, यक्ष्मा और सूजनको दूर करे।

अग्निकुमारलोहम्

तुत्थरामठटंकानिसैन्धवधान्यजीरकम्।
यमानिमरिचशुण्ठीवंगैलाचविडंगकम्॥
प्रत्येकतोलकचूर्णंलोहचूर्णन्तुतत्समम्।
रसस्यगन्धकस्यापिपलैकंकज्जलीकृतम्॥
घृतेनमधुनाखाद्यंलौहमग्निकुमारकम्।
यकृत्प्लीहोदरहरंगुल्मंचापिहलीमकम्॥
बलवर्णाग्निजननकान्तिपुष्टिविवर्द्धनम्।
श्रीमद्गहननाथेननिर्मितविश्वसम्पदे॥

नीलाथोथा, हींग, सुहागा, सैंधानिमक, धनिया, जीरा, अजवायन, काली मिरच, सोंठ, लौंग, इलायची, और वायविडंग, प्रत्येक तोले २ भर ले और सबकी बराबर लोहेकीभस्म लेवे तथा पारा और गन्धक चार २ तोले लेकर कजली करे यह अग्निकुमारस यकृत, प्लीह, उदर, गोला और हलीमक इनको दूर करे, बल, वर्ण, और अग्निको बढावे, कान्ति और पुष्टीको करे।

प्राणवल्लभोरसः

लौहंताम्रंवराटश्चतुत्थहिंगुफलत्रिवम्।
स्नुहीमूलयवक्षारजैपालटंकणत्रिवृत्॥
प्रत्येकश्चपलग्राह्यंछागीदुग्धेनपेषितम्।
चतुर्गुञ्जावटींखादेद्वारिणामधुनापिवा॥
प्राणवल्लभनामायंगहनानन्दभाषितः।
दोषरोगञ्चसंवीक्ष्ययुक्त्यावात्रुटिवर्द्धनम्॥
निहन्तिकामलापाण्डुमानाहश्लीपदार्बुदम्।
गलगण्डगण्डमालांव्रणानिचहलीमकम्॥
अपचींवातरक्तञ्चकण्डुविस्फोटकुष्ठकम्।
नातःपरतरंश्रेष्ठंकामलार्त्तिमयेष्वपि॥

लोहभस्म, ताम्रभस्म, कौडीकीभस्म, नीलाथोथा, हींग, सोंठ, मिरच, पींपल, थूहरकीजड, जवाखार, जमालगोटा, सुहागा, और निसोथ प्रत्येक चार २ तोले लेवे, सबको बकरीके दूधसे पीसके ४रत्तीकी गोली जल अथवा सहतके साथ खाय। इस प्राणवल्लभ रसको रोग और दोष का बलाबल देखके देवे अथवा एक २ त्रुटि बढावे

तो कामला, पाण्डु, अफरा, श्लीपद, अर्बुद, गलगंड, गंडमाला, हलीमक, व्रण, अपची, वातरक्त सुजली, विस्फोटक, कोढ इन सबको दूर करे, कामलारोग हरण कर्ता इससे परे कोई दूसरा योग नहीं है।

यकृदादिलौहम्

द्विकर्षलौहचूर्णस्यचाभ्रकस्यपलार्द्धकम्।
कर्षशुद्धमृतंताम्रंलिम्पाकाच्छित्वचपलम् ॥
मृगाजिनभस्मपलंसर्वमेकत्रकारयेत्।
नवगुञ्जाप्रमाणेनवटिकाकारयेद्भिषक्।
यावत्प्लीहोदरञ्चैवकामलाचहलीमकम्।
कासश्वासज्वरहन्याद्बलवर्णाग्निकारकम् ॥
यकृदरिःत्विदलौहवातगुल्मचनाशनम्।

लोहकी भस्म दो तोले, अभ्रक दो तोले, शुद्ध तांबेकी भस्म एक तोले, लिम्पाकीछाल, मृग चर्मकी भस्म ४ तोले, सबको एकत्र कर नौ-नौ रत्ती की गोलियां बनावे। यह सम्पूर्ण प्लीहोदर, कामल, हलीमक, खासी, श्वास, ज्वर, और वात गुल्मको दूर करे, तथा बलवर्ण और अग्निको बढावे। इसको यकृदरिलोह कहते हैं।

मृत्युञ्जयलौहम्

शुद्धसूतसमंगन्धंजारिताभ्र समसमम्।
गंधकात्द्विगुणलौहंमृतताम्रञ्चतुर्गुणम् ॥
द्विक्षारटकणविडवराटमथशंखकम्।
चित्रकंकुनटीतालकटुकीरामठतथा।
रोहीतकत्रिवृच्चिंचाविशालाधवमकुंठम् ॥
अपमार्गतालकंचमल्लिकाचनिशायुगम् ॥
कानकन्तुत्थकंचैवयकृन्मर्द्दरसाञ्जनम्।
एतानिसमभागानिचूर्णयित्वाविभावयेत् ॥
आर्द्रकस्वरसेनैवगुडूच्याःस्वरसेनच।
मधुनःकुडवैर्भाव्यवटिकामाषमात्रत. ॥
अनुपानंप्रदातव्यंबुद्ध्वादोषानुसारतः।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायसर्वरोगकुलान्तकम् ॥
प्लीहानज्वरमुग्रंचकासंचविषमज्वरम्।
चिरजंकुलजंचैवश्लीपदंहन्तिदारुणम् ॥
रोगानीकविनाशायधन्वन्तरिकृतंपुरा ॥
मृत्युञ्जयमिदलौहसिद्धिदशुभदनृणाम्।

शुद्धपारा, गन्धक, अभ्रक, प्रत्येक एक-एक तोले, लोहभस्म दो तोले, ताम्रभस्म चार तोले, सज्जीखार, जवाखार, कौडीकी भस्म, सुहागा, शंखभस्म, चीतेकी छाल, मनसिल, हरिताल, कुटकी, हींग, रोहेडा, निसोथ, इमली, इन्द्रायन की जड, खैरसार, अकोल, ओंगा, मूसली, चमेली हलदी, दारुहलदी, धतूरेके बीज, नीलाथोथा, सरफोका और रसौत इन सब को समान भाग ले चूर्णकर अदरख और गिलोथ के रससे खरल कर ४ पल सहतकी भावना देकर एक २ माशेकी गोलियां बनावे इसको प्रात काल देकर दोषानुसार अनुपान कल्पना करे तो सर्व रोगोका नाश करे। प्लीहा, घोरज्वर, खांसी, विषमज्वर, बहुत दिनो की तथा कुलमें परम्परासे जो चली आई रोगी श्लोपदको दूर करे, यह सपूर्ण रोग समूहके नाश करनेको धन्वतरिने कहा है। यह मृत्यु जयलोह मनुष्योको सिद्धि और शुभदाता है।

प्लीहार्णवोरसः

हिंगुलगन्धकटंकमभ्रकविषमेवच।
प्रत्येकपलिकभागचूर्णयेदतिचिक्कणम् ॥
पिप्पलीमरिचचैवप्रत्येकचपलार्द्धकम्।
मर्द्दयित्वावटींकुर्य्यात्वल्लमात्र प्रयत्नत.।
सेव्याशेफालिदलजैर्वटीमाक्षिकसयुता ॥
प्लीहानषट्प्रकारचहन्तिशीघ्र नसशय. ॥
ज्वरमन्दानलचैवकासंश्वासवमिभ्रमिम्।
प्लीहार्णवइतिख्यातोगहनानदभाषित. ॥

हींगलू, गधक, सुहागा, अभ्रक और विष प्रत्येक चार-चार तोले लेवे, सब का बारीक चूर्ण कर पीपल, काली मिरच, दो २ तोले लेवे, सब को खरल कर तीन २ रत्ती की गोलिया बनावे, इस को निर्गुडी के पत्तो के रस मे सहत मिला के सेवन करे, तो छ_प्रकार की ताप तिल्ली, ज्वर, मन्दाग्नि, खासी, श्वास, वमन और भ्रम रोग

इन सब को यह प्लीहारी रस दूर करे है।

प्लीहशार्दूलोरसः

सूतकगन्धकव्योषसमभागपृथकपृथक् ।
एभिःसमंताम्रभस्मयोजयेद्वैद्यबुद्धिमान् ॥
मनःशिलावराटचतुत्थरामठलोहकम् ।
जयन्तीरोहितचैवक्षारटकणसैंधवम् ॥
विडंचित्रंकानकचरसतुल्यपृथकपृथक् ।
भावयेत्रिदिनयावत्त्रिवृच्चित्रकणार्द्रकैः ॥
गुञ्जामात्रंवटींखादेत्सद्यः प्लीहविनाशनम् ।
मधुपिप्पलीसंयुक्तोद्विगुञ्जांवाप्रयोजयेत् ॥
प्लीहानमग्रमांसंचयद्यद्गुल्मंसुदुस्तरम् ।
आमाशयेषुसर्वेषुचोदरेशोथविद्रधी ॥
अग्निमान्द्येज्वरेचैवप्लीन्हिसर्वज्वरेषुच ।
श्रीमद्गहननाथेनप्लीहशार्दूलभाषित ॥

पारा, गधक, सोठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक दो २ तोले लेवे, सबकी बराबर ताम्र भस्म लेवे, मनसिल, कौडी की भस्म, नीला थोथा, हींग, लोह भस्म, अरनी, रोहेडा, जवाखार, सुहागा, सैंधा निमक, वायविड ग, चीते की छाल और धतूरे के बीज प्रत्येक दो-दो तोले लेवे, सब को निसोथ, चीते की छाल और अदरख के रस मे खरल कर एक-एक रत्ती की गोलिया बनावे एक वा दो गोली प्रात काल सहत और पीपल के साथ खाय तो प्लेह (तिल्ली) अग्रमास, यकृत, घोर गोले का रोग, आमाशय के रोग, उदर, सूजन, विद्रधि, मन्दाग्नि, ज्वर और सर्व प्रकार की प्लीह का नाश करे, यह गहननाथ का कहा प्लीहशार्दूल रस है।

प्लीहारिरसः

द्विकर्षलोहभस्मापिकर्षताम्र प्रदापयेत् ।
शुद्धसूतंतथागन्धकर्षमानंभिषग्वरः ॥
मृगाजिनंपलंभस्मलिम्पाकाग्रित्वच.पलम् ।
एवंभागक्रमेणैवकुर्य्यात्प्लीहारिकांवटीम् ॥
नवगु जामितंखादेच्चार्थनित्यहिपूतवान् ।
प्लीहानंयकृतंगुल्महन्त्यवश्यनसशयः ॥

लोहे की भस्म दो तोले, तांबेकी भस्म एक तोले, पारा और गधक एक २ तोले, मृग चर्म की भस्म ४ तोले, लिम्पाक की छाल ४ तोले, सब को खरल कर नौ-नौ रत्ती की गोलियां बनावे। इन के सेवन से तिल्ली, यकृत्, गोला अवश्य दूर होवें।

प्लीहारिरसः

कर्षैकंतालचूर्णस्यतत्पादांशसुवर्णकम् ।
पलार्द्धं मृतताम्रंचतत्समंशुद्धमभ्रकम् ॥
मृगाजिनस्यभस्मापिकर्षमात्रंप्रदापयेत् ।
लिम्पाकाग्रित्वचस्तावत्सर्वमेकत्रकारयेत् ॥
रसगुञ्जाप्रमाणेनवटिकांकारयेत्ततः ।
मधुनावन्हिचूर्णेनखादेन्नित्ययथाबलम् ॥
असाध्यमपिप्लीहानंहन्त्यवश्यनसंशयः ।
यकृतंपाण्डुरोगचगुल्मादिकभगंदरम् ॥

हरिताल का चूर्ण १ तोले, सुवर्ण भस्म ३ माशे, तांबे की भस्म दो तोले, अभ्रक दो तोले, मृग चर्म की भस्म एक तोले और लिम्पाक की जड को छाल सब को एकत्र कर छ २ रत्ती की गोलिया बनावे। एक गोली सहत और चीते के चूर्ण के साथ नित्य खाय तो असाध्य भी प्लीहा (तिल्ली) अवश्य दूर होवे, तथा यकृत, पाण्डु रोग, गुल्म और भगदर यह भी दूर होवे।

लोहमृत्युञ्जयोरसः

रसगन्धकलौहाभ्र कुनटीमृतताम्रकम् ।
विषमुष्टिवराटचतुर्थंशंखंरसाञ्जनम् ॥
जातीफलचकटुकीद्विक्षारकानकन्तथा ।
व्योषहिंगुसैन्धवचप्रत्येकंसूततुल्यकम् ॥
श्लक्ष्णचूर्णीकृतंसर्वमेकस्मिन्भावयेत्तत. ।
सूर्य्यावर्त्तरसेनैवबिल्वपत्ररसेनच ॥
सूर्य्यावर्त्तेनमतिमान्वटिकांकारयेत्ततः ।
प्लीहानयकृतंगुल्ममष्टीलाचविनाशयेत् ॥
अग्रमासतथाशोथतथासर्वोदराणिच ।
वातरक्तंचकमठंचान्तर्विद्रधिमेवच ॥

पारा, गन्धक, लोह भस्म, अभ्रक, मनसिल,

ताबे की भस्म, कुचला, कौड़ियोकी भस्म, नीला थोथा, शंखभस्म, रसोत, जायफल, कुटकी, सज्जीखार, जवाखार जमालगोटाके बीज, त्रिकुटा, हींग, सैंधानिमक प्रत्येक एक-एक तोला लेवे, सब का बारीक चूर्ण कर हुलहुल और बेल पत्र के रस मे खरल करे, फिर हुलहुल के रस से खरल कर गोलिया बनावे। यह तिल्ली, यकृत, गोला, अष्ठीला, अग्र मास, सूजन, सर्व प्रकार के उदर रोग, वात रक्त कमर और अतरविद्रधि, इन का नाश करे। इस रस को लोहमृत्यु जय कहते है।

महामृत्युञ्जयोरसः

रसगन्धकलौहाभ्र कुनटीतुत्थताम्रकम्।
सैन्धवञ्चवराटञ्चवाकुचीविडशंखकम् ॥
चित्रकंहिंगुकटुकीद्विक्षारंकट्फलतथा।
रसाञ्जनंजयन्तीचटंकणसमभागिकम् ॥
एतत्सर्वविचूर्ण्यार्थदिनमेकंविभावयेत्।
आर्द्रकस्वरसेनैवगुडूच्या.स्वरसेनच ॥
गुञ्जामात्रावटींकृत्वाभक्षयेन्मधुनासह।
नानारोगप्रशमनोयकृद्गुल्मोदराणिच ॥
अग्रमांसतथाप्लीहमग्निमान्द्यमरोचकम्।
एतान्सर्वान्निहन्त्याशुभास्कररितमिरयथा ॥
महामृत्युंजयोनाममहेशेनप्रकाशितः।

पारा, गन्धक, लोहभस्म, अभ्रक, मनसिल, नीला थोथा, ताम्र भस्म, सैंधा निमक, कौड़ी की भस्म, बावची, विडनिमक, शख भस्म, चित्रक, हींग, कुटकी, सज्जीखार, जवाखार, कायफल, रसोत, अरनी और सुहागा प्रत्येक समान ले सब का चूर्ण कर अदरख और गिलोय के रस की एक दिन भावना दे कर एक-एक रत्ती की गोलियां बनावे। एक गोली सहत के साथ भक्षण करे तो यकृत, गोला, अग्र मांस, प्लीह, मन्दाग्नि अरुचि इत्यादि अनेक रोगो का नाश करे यह महामृत्युञ्जय रस श्री शिवजी ने प्रकाशित किया है।

बृहद्गुडपिप्पली

विडगत्र्यूषणंहिंगुकुष्टंलवणपंचकम्।
त्रिक्षारफेनकंचव्यश्रेयसीकृष्णजीरकम् ॥
तालपुष्पोद्भवंक्षारंनाड्या कूष्माण्डकस्यच।
अपामार्गोद्भवक्षारंचित्राया श्वित्रकन्तथा ॥
एतानिसमभागानिपुराणोद्विगुणोगुडः।
गुडतुल्यप्रदातव्यचूर्णर्ञ्च वकणोद्भवं ॥
मर्दयित्वादृढेपात्रेमोदकानुपकल्पयेत्।
भक्षयेद्वर्द्धयेन्नित्यप्लीहानहन्तिदुस्तरम्।
प्रमेहंपाण्डुरोगञ्चकामलावन्हिमान्द्यकम् ॥
यकृतपञ्चगुल्मञ्चउदरसर्वरूपकम्।
जीर्णज्वरंतथाशोथकासपञ्चविधंतथा ॥
अश्विभ्यानिर्मिताह्येषासुबृहद्गुडपिप्पली।

वायविड ग, सोठ, मिरच, पीपल, हींग, कूठ पाचोनिमक, तीनोक्षार, समुद्रफेन, चव्य, हरड, कालाजीरा, तालपुष्पका, नाडीका, पेठेका, ओंगाका इमलीका और चीतेका इन सबका क्षार, ये सब समान भाग ले, सबसे दूना पुराना गुड लेवे और गुड़की बराबर पीपलोका चूर्ण लेवे, सबको खरल कर लड्डू बनालेवे, क्रमसे बढाता हुआ भक्षण करे तो प्लीहा रोग दूर हो, प्रमेह, पांडुरोग, कामला मन्दाग्नि, यकृत, पाच प्रकारका गोलेका रोग, सर्व प्रकारका उदर रोग, जीर्णज्वर, शोथरोग, पाच प्रकारकी खासी, इन सब रोगो को नष्ट करे। यह बृहद्गुड पिप्पली अश्विनीकुमारने निर्माण कीहै।

ताम्रकल्पम्

अक्षपारदगन्धञ्चकर्षद्वयमितपृथक्।
सर्वैःसममृतताम्र जम्बीराम्लेनमर्दयेत् ॥
सूर्य्यावर्त्तरसैःपश्चात्कणामोचरसेनच।
योजयेत्तीव्रघर्म्मेतुयावत्सर्वन्तुजीर्य्यति ॥
जम्बीरस्यरसैर्भूयोरसदण्डेनचालयेत्।
दृढेशिलामयेपात्रेचूर्णयेदतिशोभनम् ॥
रक्तिद्वयक्रमेणैवयोज्यंमाषद्वयावधि।
ह्रासयेच्चक्रमेणैवतथाचैवविवर्द्धयेत् ॥
जीर्णेभुंजीतशाल्यन्नक्षीरंघृतसमन्वितम् ॥
हन्त्याम्लपित्तविविधंग्रहणीविषमज्वरम् ॥

चिरज्वरंप्लीहगदंयकृद्रोगंसुदुस्तरम् ।
अग्रमांसतथाशोथमुदरञ्चसुदारुणम् ॥
कमठञ्चतथाशोथवातवृद्धिसुदारुणम् ।
धातुवृद्धिकरंवृष्यंबलवर्णकरंशुभम् ॥
सद्योवन्हिकरञ्चैवसर्वरोगहरपरम् ।
मुखशुद्धिर्विधातव्यापर्णैश्चूर्णसमन्वितैः ॥
ताम्रकल्पमिदंनाम्नासर्वरोगप्रशान्तये ।

बहेडा, पारा, गन्धक प्रत्येक एक २ तोले लेवे, ताम्रभस्म ३ तोले सबको जभीरीके रसमें खरलकर फिर हुलहुलके तथा पीपल और मोचरस इनसे धूपमे खरल कर फिर जभीरीके रससे खरलकर सुखा लेवे, और शिलपर बारीक चूर्ण करे इसमेंसे दो रत्तीसे क्रमसे बढ़ाकर दो माशे तक सेवन करे, फिर क्रमसे घटाता चला आये, इसी प्रकार कईवार घटावे-बढावे,जब औषधि पच जावे तब साठी चावलोका भात दूध और घी मिला के भोजन करे, तो आम्मपित्त,संग्रहणी,विषमज्वर बहुत दिनका ज्वर,प्लीह,यकृत, अग्रमांस, सूजन, घोरउदररोग, इन सब रोगोको दूर करे, धातुवृद्धि करे, वृष्य है, बल वर्ण करे, तत्काल अग्निको बढावे, प्रथम बीडा खाकर मुखशुद्ध करना चाहिये । यह ताम्रकल्प नाम करके विख्यात सर्व रोगोका शमन कर्त्ता है ।

वज्रक्षारम्

दारुसैन्धवगन्धञ्चभस्मीकृत्वाप्रयत्नतः ।
प्लीहानमग्रमांसञ्चयकृतञ्चविनाशयेत् ॥
सामुद्रसैंधवंकाचयवक्षारसुवर्चलम् ।
टकणंस्वर्जिकाक्षारस्तुल्यसर्वंविचूर्णयेत् ॥
अर्कक्षीरैःस्नुहीक्षीररातपेभावयेत्त्र्यहम् ।
तेनलिप्तार्कपत्रञ्चरुद्ध्वाचान्तःपुटेपचेत् ॥
तत्क्षारचूर्णयेत्पश्चात्त्र्यूषणत्रिफलारजः ।
जीरकरजनीवन्हिनवभागसमसमम् ॥
क्षारार्द्धमेवसर्वञ्चएकीकृत्यप्रयोजयेत् ।
वज्रक्षारमिदंसिद्ध स्वयप्रोक्तंपिनाकिना ॥
सर्वोदरेपुगुल्मेपुशूलदोषेपुयोजयेत् ।
अग्निमांद्येप्यजीर्णेऽपिभचयनिष्कद्वयंद्वयम् ॥
वाताधिकेजलकोष्णंघृतवापैत्तिकेहितम् ।
कफेगोमूत्रसंयुक्तमारनालंत्रिदोषजे ॥

देवदारु, सैंधानिमक, और गन्धक इनकी भस्मको सेवन करे तो प्लीहा, अग्रमांस, और यकृत् इनको दूर करे, अथवा सामुद्रनिमक, सैंधा कचिया, जवाखार, कालानिमक, सुहागा, और सज्जी इन सबको बराबर लेवे और सबको आक और थूहरके दूधकी तीन २ भावना दे धूपमे रख दे, फिर इस कल्कमें आकके पत्ते लपेट संपुटमे रखके फूंक देवे, जब भस्म होजावे तब इस भस्म मे त्रिकुटा, त्रिफला, जीरा, हलदी, और चीतेकी छाल सब नौ औषधियोको क्षारसे आधे लेकर मिला देवे, तो यह शिवका कहा वज्रक्षार सर्व प्रकार के गोला, शूलके दोष, मन्दाग्नि, और अजीर्ण इन रोगोंको ८ माशेके अनुमान नित्य खानेसे दूर करे, वाताधिक्यमे कुछ गरम जलके साथ खाय, पित्त के रोगोंमे घीके साथ और कफकी अधिकतामे गोमूत्रके साथ और सन्निपातमे काजीके साथ खाना चाहिये ।

उदयरामयकुंभकेसरी

रसगन्धकभस्मताम्रकंकटुकक्षारयुगंसटकणम् कणमूलकचव्यचित्रकलवणानितुयमानिरामठम् ॥ समभागमिदंविभावयेत्खरातपेत्व थजम्बुवारिणा । उदरामयकुम्भकेसरीसए पप्रथितोस्यामाषकः ॥ सुखार्यंनुदापयेद्भिपक्प्रसभहन्तित्रणगदंभुवि । यकृतंक्रमिमग्रमांसककमठंप्लीहजलोदराह्वय ॥ जठरानलसाद्धगुल्मकपरमसामथाम्लपित्तकम् ।

पारा, गन्धक, ताबेकी भस्म, कुटकी, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पीपलामूल,चव्य,चीता, पांचोंनिमक, अजवायन और हींग ये सब वस्तु समान भाग ले सबको कूटपीस धूपमे रखके जामुन के रसकी भावना देवे तो यह उदरामय कुंभकेसरी रस बने, इसमेसे एक माशे मद्य अथवा जलके साथ सेवन करे तो व्रणके रोग, यकृत, प्लीह, कृमिरोग, अग्रमांस, कमरके रोग, जलोदर, आम-

वातयुक्त उदरके विकार, गोला और अम्लपित्त इनको शीघ्र दूर करे।

वारिशोषणोरसः

चतुर्विंशतिभागःस्युर्गन्धाद्बंगतदर्द्धकम्।
वगभागाद्र्द्धवेदद्धं पारदं कृष्णमभ्रकम्॥
चतुर्दशविभागंस्यान्मृततद्दीयतेपुनः।
मृतलौहमष्टभागमृतताम्रंनवात्रतत्॥
मृतहेमद्वयतेषांमृतरूप्यञ्चसप्तकम्।
अतिशुद्धमतिस्थूलमृतहीरत्रयोदश॥
भागाग्राह्यामाक्षिकस्यविशुद्धस्यात्रषोडश।
अष्टादशमितग्राह्य नवकाशीशकपुनः॥
तुत्थकचपडेवात्रनवीनग्राह्यमेवच।
तालकचचतुर्भागशिलायोज्यास्त्रयोबुधैः।
शैलेयपचदातव्यसर्वमेकत्रनूतनम्॥
मृतमौक्तिकभागैकसौभग्यद्वयमेवच॥
कुट्टयित्वाविचूर्ण्याथजम्बीरस्यरसेनवै।
भावयेत्सप्तधागाढगुडिकान्तस्यकारयेत्॥
पानकद्वितयेकृत्वासुद्रयेत्पानकद्वयम्।
घटमध्येनिवेश्याथदत्वापूर्वञ्चवालुकाम्॥
उद्धंवश्चतांपुनर्दत्वावालुकांमुद्रयेन्मुखम्।
अहोरात्र दहेदग्नौस्वागशीतंसमुद्धरेत्॥
वकुलस्यचबीजेनकण्टकारीद्वयेनच।
गुडूचीत्रिफलावारीभावयेत्सप्तसप्ततः॥
वृद्धदारुरसेनापितथादेयास्तुभावनाः।
गिरिकर्ण्यारसेनापिरोहितमत्स्यपित्ततः॥
एवसिद्धोभवेत्सम्यक्रसोसौवारिशोषणः।
देवान्गुरूंसमभ्यर्च्ययतिनोगुरवस्तथा॥
रत्तिकाद्वितयंदेयसन्निपातेसमुच्छ्ये।
मरिचेनसमदेयतेनजागर्तिमानवः॥
श्लेष्मिकेचगदेदेयग्रहण्यामग्निमान्द्यके।
प्लीह्निपाण्डौप्रयोक्तव्यत्रिकटुत्रिफलाम्भसा॥
अतिवह्निकर श्रीदोबलवर्णाग्निवर्द्धन.।
धन्वन्तरिकृतंसद्योरस परमदुर्लभः॥
सर्वरोगेप्रयोक्तव्योनि सन्देहमिपग्वरैः।

गधक २४ तोले, वगभस्म १२ तोले, पारा ६ तोले, वज्राभ्रक की भस्म १४ तोले, सार ८ तोले, तांबे की भस्म ८ तोले, सुवर्ण की भस्म २ तोले, चादी की भस्म ७ तोले, हीरा की अत्यन्त शुद्ध भस्म १३ तोले, शुद्ध सुवर्ण माक्षिक की भस्म १६ तोले, कशीश १८ तोले, नीलाथोथा, ६ तोले, हरिताल ४ तोले, मनसिल ३ तोले, शिलाजीत ५ तोले, मोती की भस्म १ तोले, सुहागा दो तोले, सब नवीन ले सब को कूट कर जभीरी के रस की ७ भावना दे कर गोला बनाय उस को वालुका यंत्र मे रख एक दिन रात्रि की मन्दाग्नि देवे, स्वाग शीतल होने पर निकाल लेवे, फिर इसको मौलसिरीके बीज, दोनो कटेरी, गिलोय, त्रिफला, विधानरा, उपलसिरि इनके रस तथा काढे की सात २ भावना यथा सभव दे, फिर रोहू मछली के पित्ते की ७ भावना दे, तो यह रस सिद्ध होवे प्रथम देवता, गुरु तथा सन्यासी और माता-पितादि बड़ों का पूजन कर दो रत्ती रस घोर सन्निपात वाले को काली मिरचों के चूर्ण के साथ देवे, तो सन्निपात की मूर्च्छा दूर होवे, कफ रोग, मन्दाग्नि, सग्रहणी, प्लीह और पाण्डु रोग इनसे त्रिफलाके काढेके साथ देवे, इसे शूल रोग, उदावर्त्त और दुष्ट कुष्ठ रोग में कठूमर के काढे के साथ देवे, यह जठराग्नि को अत्यन्त प्रबल करे कान्ति करे, बल वर्ण को बढावे, यह श्री धन्वन्तरि भगवान् का कहा परम दुर्लभ वारिशोषण रस है। इस को निस्संदेह सब रोगो मे देना चाहिये।

सर्वतोभद्ररसः

सूतगधतपनगगनकान्तलौहस्यचूर्णम्।
कृत्वैकस्मिन्द्दपदिपिशितशृंगवेरस्यवारा॥
युञ्ज्याद्रोगेयकृतिगुदजेप्लीहिसर्वज्वरेपु।
शोथेपाण्डौकृमिकृतगदेसर्वतःकामलायाम्॥
कासेश्वासेचमेहेजठरजलगदेसर्वदोषप्रभूते।
ख्यातोयोगःसुरमणिकृतःसर्वरोगैकहन्ता॥

पारा, गधक, तांबा, अभ्रक और कान्तलोह इन की भस्म ले कर अदरख के रस मे एक दिन खरल कर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, इस

चिरज्वरंप्लीहगदंयकृद्रोगंसुदुस्तरम ।
अग्रमांसंतथाशोथमुदरञ्चसुदारुणम् ॥
कमठञ्चतथाशोथवातवृद्धिसुदारुणम् ।
धातुवृद्धिकरंवृष्यंबलवर्णकरंशुभम् ॥
सद्योवन्हिकरञ्चैवसर्वरोगहरंपरम् ।
मुखशुद्धिर्विधातव्यापर्णैश्चूर्णसमन्वितैः ॥
ताम्रकल्पमिदंनाम्नासर्वरोगप्रशान्तये ।

बहेडा, पारा, गन्धक प्रत्येक एक २ तोले लेवे, ताम्रभस्म ३ तोले सबको जंभीरीके रसमें खरलकर फिर हुलहुलके तथा पीपल और मोचरस इनसे धूपमें खरल कर फिर जभीरीके रससे खरलकर सुखा लेवे, और शिलपर बारीक चूर्ण करे इसमेंसे दो रत्तीसे क्रमसे बढ़ाकर दो माशे तक सेवन करे, फिर क्रमसे घटाता चला आवे, इसी प्रकार कईवार घटावे-बढ़ावे,जब औषधि पच जावे तब साठी चावलोंका भात दूध और घी मिलाके भोजन करे, तो आम्मपित्त,सग्रहणी,विषमज्वर बहुत दिनका ज्वर,प्लीह,यकृत, अग्रमास, सूजन, घोरउदररोग, इन सब रोगोंको दूर करे, धातुवृद्धि करे, वृष्य है, बल वर्ण करे, तत्काल अग्निको बढ़ावे, प्रथम बीडा खाकर मुखशुद्ध करना चाहिये। यह ताम्रकल्प नाम करके विख्यात सर्व रोगोका शमन कर्त्ता है।

वज्रक्षारम्

दारुसैन्धवगन्धञ्चभस्मीकृत्वाप्रयत्नत. ।
प्लीहानमग्रमासञ्चयकृतञ्चविनाशयेत् ॥
सामुद्रसैंधवकाचयवक्षारसुवर्चलम् ।
टकणंस्वर्जिकाक्षारस्तुल्यसर्वंविचूर्णयेत् ॥
अर्कक्षीरैःस्नुहीक्षीररातपेभावयेत्र्यहम ।
तेनलिप्तार्कपत्रञ्चरुद्ध्वाचान्तःपुटेपचेत् ॥
ततक्षारचूर्णयेत्पश्चात्त्र्यूपणात्रिफलारज ।
जीरकरजनीवन्हिनवभागसमसमम् ॥
क्षाराद्धमेवसर्वञ्चएकीकृत्यप्रयोजयेत् ।
वज्रक्षारमिदंसिद्ध स्वयप्रोक्तंपिनाकिना ॥
सर्वोदरेषुगुल्मेषुशूलदोषेपुयोजयेत् ।
अग्निमांद्येप्यजीर्णेऽपिभक्षयनिष्कद्वयंद्वयम् ॥
वाताधिकेजलकोष्णंघृतंवापैत्तिकेहितम ।
कफेगोमूत्रसंयुक्तमारनालंत्रिदोषजे ॥

देवदारु, सेंधानिमक, और गन्धक इनकी भस्मको सेवन करे तो प्लीहा, अग्रमांस, और यकृत् इनको दूर करे, अथवा सामुद्रनिमक, सेंधा कचिया, जवाखार, कालानिमक, सुहागा, और सज्जी इन सबको बराबर लेवे और सबको आक और थूहरके दूधकी तीन २ भावना दे धूपमें रख दे, फिर इस कल्कमें आकके पत्ते लपेट सपुटमें रखके फूंक देवे, जब भस्म होजावे तब इस भस्ममें त्रिकुटा, त्रिफला, जीरा, हलदी, और चीतेकी छाल सब नौ औषधियोंको खारसे आधे लेकर मिला देवे, तो यह शिवका कहा वज्रक्षार सर्व प्रकार के गोला, शूलके दोष, मन्दाग्नि, और अजीर्ण इन रोगोंको ८ माशेके अनुमान नित्य खानेसे दूर करे, वाताधिक्यमे कुछ गरम जलके साथ खाय, पित्तके रोगोंमें घीके साथ और कफकी अधिकतामें गोमूत्रके साथ और सन्निपातमें काजीके साथ खाना चाहिये।

उदयरामयकुंभकेसरी

रसगन्धकभस्मताम्रककटुकक्षारयुगंसटकणम
कणमूलकचव्यचित्रकंलवणानितुयमानिरामठम् ॥ समभागमिदविभावयेत्खरातपेत्व
थजंबुवारिणा। उदरामयकुम्भकेसरीसए
षप्रथितोस्यामापकः ॥ सुखार्थनुदापयेद्भि-
षक्प्रसभहन्तिव्रणगदभुवि । यकृतंक्रमिम-
ग्रमासककमठप्लीहजलोदराह्वय ॥ जठरा-
नलसाद्धं गुल्मकपरमसाममथाम्लपित्तकम् ।

पारा, गन्धक, तावेकी भस्म, कुटकी, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पीपलामूल,चव्य,चीता, पाचोंनिमक, अजवायन और हींग ये सब वस्तु समान भाग ले सबको कूटपीस धूपसे रखके जामुनके रसकी भावना देवे तो यह उदरामय कुंभकेसरी रस बने, इसमेसे एक माशे मद्य अथवा जलके साथ सेवन करे तो व्रणके रोग, यकृत, प्लीह. क्रमिरोग, अग्रमास, कमरके रोग, जलोदर, आम-

वातयुक्त उदरके विकार, गोला और अम्लपित्त इनको शीघ्र दूर करे।

वारिशोषणोरसः

चतुर्विंशतिभागःस्युर्गन्धाद्धं गंतदर्द्धकम्।
वंगभागाद्भवेदर्द्धं पारदंकृष्णमभ्रकम्॥
चतुर्दशविभागंस्यान्मृततद्दीयतेपुनः।
मृतलौहमष्टभागमृतताम्रंनवात्रतत्॥
मृतहेमद्वयतेपांमृतरूप्यञ्चसप्तकम्।
अतिशुद्धमतिस्थूलमृतहीरत्रयोदश॥
भागाग्राह्यामाक्षिकस्यविशुद्धस्यात्रषोडश।
अष्टादशमितग्राह्य नवकाशीशकपुनः॥
तुत्थकचपडेवात्रनवीनग्राह्यमेवच।
तालकचचतुर्भागंशिलायोज्यास्त्रयोबुधैः।
शैलेयपचदानव्यसर्वमेकत्रनूतनम्॥
मृतमौक्तिकभागैकसौभग्यद्वयमेवच॥
कुट्टयित्वाविचूर्ण्याथजम्बीररसरसेनवै।
भावयेत्सप्तधागाढगुडिकान्तस्यकारयेत्॥
पानकद्वितयेकृत्वामुद्रयेत्पानकद्वयम्।
घटमध्येनिवेश्याथदत्वापूर्वञ्चवालुकाम्॥
उर्द्धं वञ्चतांपुनर्दत्वावालुकांमुद्रयेन्मुखम्।
अहोरात्रं दहेदग्नौस्वाङ्गशीतसमुद्धरेत्॥
वकुलस्यचवीजेनकण्टकारीद्वयेनच।
गुडूचीत्रिफलावारीभावयेत्सप्तसप्ततः॥
वृद्धदारुरसेनापितथादेयास्तुभावनाः।
गिरिकर्ण्यारसेनापिरोहितमत्स्यपित्ततः॥
एवंसिद्धोभवेत्सम्यक्रसोसौवारिशोषणः।
देवान्गुरूंसमभ्यर्च्ययतिनोगुरवस्तथा॥
रक्तिकाद्वितयदेयसन्निपातेसमुच्छ्ये।
मरिचेनसमदेयतेनजागर्तिमानवः॥
श्लेष्मिकेचगदेदेयग्रहण्यामग्निमान्द्यके।
प्लीह्निपाण्डौप्रयोक्तव्यत्रिकटुत्रिफलाम्भसा॥
अतिवह्निकरःश्रीदोवलवर्णाग्निवर्द्धनः।
धन्वन्तरिकृतंसद्योरस परमदुर्लभः॥
सर्वरोगेप्रयोक्तव्योनिःसन्देहभिषग्वरैः।

गंधक २४ तोले, बंग भस्म १२ तोले, पारा ६ तोले, वज्राभ्रक की भस्म १४ तोले, सार ८ तोले, तांबे की भस्म ८ तोले, सुवर्ण की भस्म २ तोले, चांदी की भस्म ७ तोले, हीरा की अत्यन्त शुद्ध भस्म १३ तोले, शुद्ध सुवर्ण माक्षिक की भस्म १६ तोले, कशीश १८ तोले, नीलाथोथा, ६ तोले, हरिताल ४ तोले, मनसिल ३ तोले, शिलाजीत ५ तोले, मोती की भस्म १ तोले, सुहागा दो तोले, सब नवीन ले सब को कूट कर जभीरी के रस की ७ भावना दे कर गोला बनाय उस को वालुका यन्त्र मे रख एक दिन रात्रि की मन्दाग्नि देवे, स्वाग शीतल होने पर निकाल लेवे, फिर इसको मौलसिरीके बीज, दोनो कटेरी, गिलोय, त्रिफला, विधारा, उपलसिरि इनके रस तथा काढे की सात २ भावना यथा सम्भव दे, फिर रोहू मछली के पित्ते की ७ भावना दे, तो यह रस सिद्ध होवे प्रथम देवता, गुरु तथा सन्यासी और माता-पितादि बडों का पूजन कर दो रत्ती रस घोर सन्निपात वाले को काली मिरचों के चूर्ण के साथ देवे, तो सन्निपात की मूर्च्छा दूर होवे, कफ रोग, मन्दाग्नि, संग्रहणी, प्लीह और पाण्डु रोग इनमे त्रिफलाके काढेके साथ देवे, इसे शूल रोग, उदावर्त्त और दुष्ट कुष्ठ रोग मे कठूमर के काढे के साथ देवे, यह जठराग्नि को अत्यन्त प्रबल करे कान्ति करे, बल वर्ण को बढ़ावे, यह श्री धन्वन्तरि भगवान् का कहा परम दुर्लभ वारिशोषण रस है। इस को निस्सदेह सब रोगो मे देना चाहिये।

सर्वतोभद्ररसः

सूतगधतपनगगनकान्तलौहस्यचूर्णम्।
कृत्वैकस्मिन्दृषदिपिशितंशृङ्गवेरस्यवारा॥
युञ्ज्याद्रोगेयकृतिगुदजेप्लीहिसर्वज्वरेषु।
शोथेपाण्डौकृमिकृतगदेसर्वतःकामलायाम्॥
कासेश्वासेचमेहेजठरजलगदेसर्वदोषप्रभूते।
ख्यातोयोगःसुरमणिकृतःसर्वरोगैकहन्ता॥

पारा, गंधक, तांबा, अभ्रक और कान्तलोह इन की भस्म ले कर अदरख के रस मे एक दिन खरल कर एक २ रत्ती की गोलिया बनावे, इस

से यकृत (जिगर) गुदा के रोग, प्लीहा, सर्व-ज्वर, सूजन, पाण्डु, कृमि रोग, कामला, खांसी, श्वास, प्रमेह, उदर और जल के रोगों से देवे यह सुरमणिका कहा प्रसिद्धयोग सर्व रोग हरण कर्त्ता है।

अथशोथरोगचिकित्सा

त्रिकुट्वाद्यं लौहम्

त्रिकटुत्रिफलादन्तीमार्गत्रिमदशुण्ठकैः।
पुनर्नवायसैर्युक्तं शोथंहन्तिसुदुस्तरम॥
लोहशोथोदरंस्थौल्यजलोदरनिवारणम्।

सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, दंती, ओगा, त्रिमद, साठ और सब की बराबर लोह भस्म लेवे, इस के भक्षण से घोर सूजन, उदर, स्थूलता और जलोदर का नाश होवे।

कटुकाद्यं लौहम्

कटुकीत्र्यूषणंदन्तीविडंगत्रिफलातथा।
चित्रकोदेवकाष्ठंचत्रिवृद्वारणपिप्पली॥
तुल्यान्येतानिचूर्णानिद्विगुणस्यादयोरज.।
क्षीरेणपीतमेतत्तुश्रेष्ठश्वयथुनाशनम्॥

त्रिकुटा, कुटकी, दती, वायविडंग, त्रिफला, चीतेकी छाल, देवदारु, निसोथ और गजपीपल, ये सब समान भाग लेवे, और सब से दूना लोह भस्म मिलावे। इस को दूध के साथ पीवे तो सूजन दूर हो।

त्र्यूषणाद्यं लौहम्

अयोरजस्त्र्यूषणयावशूकचूर्णंचपीतत्रिफला-रसेन। शोथंनिहन्यात्सहसानरस्ययथाऽशनिर्वृक्षमुदीर्णवेग॥

लोह भस्म, सोठ, मिरच, पीपल और जवाखार सब का चूर्ण कर त्रिफला के रस के साथ पीवे तो सूजन दूर होवे।

सुवर्चलाद्यं लौहम्

सुवर्चलाव्याघ्रनखचित्रकंकटुरोहिणी।
चव्यचदेवकाष्ठंचदीप्यकंलोहमेवच॥
शोथपाण्डु तथाकासमुदराणिनिहन्तिच।

सज्जी, व्याघ्रनख, चीते की छाल, कुटकी, चव्य, देव दारु, अजवायन और लोह भस्म इन को कूट पीस कर सेवन करे तो सूजन, पाण्डु रोग, खासी और उदर रोगों को नष्ट करे।

क्षारगुडिका.

क्षारद्वयस्याल्लवणानिपञ्चअयश्चतुष्कंत्रिफलाचव्योपम। सपिप्पलीमूलविडङ्गसारमुस्ताजमोदामरदारुबिल्वम॥ कलिंगकश्चित्रकमूलपाठायष्ट्याह्वयमातिविषंपलाशम। सहिंगुकर्षन्ततिसूक्ष्मचूर्णं द्रोणंतथामूलकशुण्ठकानाम्॥ स्याद्भस्मनस्ततसलिलेनसाध्यमालोड्ययावद्घनमप्यदग्धम्। स्त्यानततःकोलसमाञ्चमात्रांकृत्वातुशुष्कांविधिनाप्रयुञ्ज्यात्॥ प्लीहोदरचित्रहलीमकार्श.पाण्डुवामयारोचकशोथशोपान्। विशूचिकागुल्मतथाश्मरींचसश्वासकासान्प्रणुदेत्सकुष्ठान्॥
सौवर्चलसैन्धवचविडमौद्भिदमेवच।
सामुद्रलवणाचात्रजलमष्टगुणभवेत्॥

सज्जीखार, जवाखार, पाचों निमक, चारों प्रकार के लोहो की भस्म, त्रिफला, त्रिकुटा, पीपलामूल, वायविडंग, नागर मोथा, अजमोद, देव दारु, बेल गिरी, इन्द्रजों, चीते की छाल, पाट, मुलहटी, अतीस, ढाक के बीज और हींग प्रत्येक एक एक तोला लेवे, फिर मूली और सोठ की भस्म करके इस मे एक द्रोण जल डाल के छान ले, इसमें से खार निकाल लेवे, उस खार के जल मे पूर्वोक्त सज्जी आदि औषधि डाल के पकावे जब गाढा हो जावे तब बेर के समान गोलियां बनावे और धूप मे सुखा कर विधि पूर्वक रोगी को देवे तो प्लीहोदर, चित्रकुष्ट, हलीमक, बवा-

मोर, पाण्डु, अरुचि, सूजन, शोथ, विशूचिका, गोला पथरी, स्नाम, खासी और कोढ इन सब को दूर करे, काला निमक, सैंधा निमक, पागा. रेह का और समुद्र का निमक, इन मे अष्ट गुण जल मिला के सेवन करे।

वंगेश्वरः

सूतभस्मवंगभस्मभागेनैव प्रकल्पयेत्।
गन्धकमृतताम्रञ्चप्रत्येकञ्चचतुर्गुणम् ॥
अर्कक्षीरैर्दिनमर्द्य सर्वतद्गोलकीकृतम्।
रुद्ध्वातुभूधरेपक्त्वापुटैकेनसमुद्धरेत्।
एषवंगेश्वरोनाम्नाप्लीहागुल्मोदरानजयेत् ॥
घृतैर्गुञ्जाद्वयंलिह्यान्निष्काश्वेतपुनर्नवाम्।
गवामूत्रैःपिवेच्चानुरजनींवागवाजलैः ॥

चन्द्रोदय और रागकी भस्म प्रत्येक दो-दो तोले, गन्धक और तानेकी भस्म प्रत्येक आठ-आठ तोले, सबको आकके दूधसे एक दिन खरलकर गोला बनावे, और भूधरयन्त्रमे रखकर फूक देवे, तो यह बंगेश्वररस प्लीहा, गोला और उदर के रोगोंको जीते । २ रत्ती बंगेश्वर रसको घृत में मिलाके खाय विषखपरेका चार मासे चूर्ण फाकके ऊपरसे गोमुत्र पीवे, अथवा चार मासे हलदीका चूर्ण खायके ऊपरसे गोमुत्र पीवे ।

अथार्बुदरोगचिकित्सा

रौद्रोरसः

शुद्धसूतसमंगन्धमर्द्य यामचतुष्ठयम्।
नागवल्लीरसैर्युक्त मेघनादपुनर्नवैः ॥
गोमूत्रपिप्पलीयुक्त मर्द्य रुद्ध्वापुटेल्लघु।
लिह्यात्तद्रौद्रेरसोरौद्रोगुञ्जामात्रोऽर्बुदजयेत ॥

शुद्धपारा और गन्धक बराबर लेके चार प्रहर पान चौलाई और सांठके रसमे खरल करे, फिर गोमूत्र और पीपलके साथ घोटकर लघुपुट देवे। इस रौद्ररसको १ रत्ती सहतके साथ सेवन करे तो अर्बुदरोग दूर होवे।

रामबाणादिकान्योगवाहिनोऽत्रप्रयोजयेत्।

इस अर्बुद रोगमे रामबाणादि योगवाही रस देने चाहिये।

श्लीपदरोगचिकित्सा

नित्यानन्दोरसः

हिंगुलसम्भवंसूतगन्धकमृतताम्रकम्।
वंगतालञ्चतुत्थचशंखकांस्यवराटकम् ॥
त्रिकुटुत्रिफलालौहंविडंगंपटुपञ्चकम्।
चविकापिप्पलीमूलहवुषाचवचातथा ॥
शठीपाठादेवदारुरेलाचवृद्धदारकम्।
एतानिसमभागानिवटिकाकुरुयत्नतः ॥
हरीतकीरसदत्वापञ्चगुञ्जामिताशुभम्।
एकैकाभक्षयेन्नित्यशीतवारिपिवेदनु ॥
श्लीपदकफवातोत्थरक्तमांसगतञ्चयत्।
मेदोगतधातुगतंहन्त्यवश्यनसंशयः ॥
श्रीमद्गहननाथेननिर्म्मितोविश्वसम्पते।
नित्यानन्दकरश्चायंरसःश्लीपदेगदे ॥

हींगलूका निकाला पारा, गन्धक, ताबेकी भस्म, वंग, हरिताल, नीलाथोथा. शंखकी भस्म. कौडीकी भस्म, सोठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, लोहभस्म, वायविडंग, पाचोनिमक, चव्य, पीपलामूल, हाऊवेर, बच, कचूर, पाढ, देवदारु, इलायची, विधायरा, इन सबको समान भाग लेवे सब को कूटपीस हरड के रससे पाच २ रत्तीकी गोलिया बनावे। एक गोली नित्य शीतल जलके साथ सेवन करे तो कफवातसे प्रकट श्लीपद रक्तमासगत श्लीपद, मेदगत, धातुगत, इन सब का नाश करे, यह गहननाथ का कहा प्रयोग है।

कणादिवटी

कणावचादारुपुनर्नवानाचूर्णसविल्वसमवृद्ध

दारकम् । समर्दचैतस्यनिहन्तिवल्लःसकाजिकःश्लीपदमुग्रवेगम् ॥

पीपल, वच, देवदारु, साठकी जड़, बेलगिरी, और विधायरा, इन सबको खरलकर तीन रत्तीकी गोली काजीके साथ लेवे तो घोर श्लीपद रोग दूर होवे ।

भगन्दररोगचिकित्सा

वारिताण्डवोरसः

शुद्धसूतद्विधागन्धकुमारीरसमर्दितम् ।
त्र्यहान्तेगोलकंकृत्वाततस्तेनप्रलेपयेत् ॥
द्वयोःसमताम्रपत्रं हण्डिकाकान्तीर्निवेशयेत् ।
तद्भाण्डभस्मनापूर्य्यचुल्ल्यांतीव्राग्निनापचेत् ।
द्वियामान्तेसमुद्धृत्यचूर्णयेत्स्वांगशीतलम ॥
जम्बीरस्यरसैःपिष्ट्वारुद्ध्वासप्तपुटेपचेत् ।
गुञ्जैकंमधुनाज्येनलेह्याद्धन्तिभगंदरम् ।
मूसलीलवणाचानुआरनालयुतंपिवेत् ॥
भुंजीतमधुराहारदिवास्वप्नञ्चमैथुनम् ।
वर्जयेच्छीतलाहारंरसेस्मिन्वारिताण्डवे ॥

शुद्धपारा ४ तोले, गन्धक ८ तोले, दोनोको घीगुवारके रससे ३ दिन घोटकर गोला बनावे उसपर कपर मिट्टीकर दोनोंके बराबर ताम्रपत्र ले उनको एक हंडियामें बिछाय उनके बीचमें गोले को रख उसमें दाबकर राख भर देवे, फिर चूल्हे पर चढ़ाय, दो प्रहरकी तीव्राग्नि देवे, पश्चात् चूल्हे से उतार स्वांगशीतल होनेपर उस गोलेको निकाल जंबीरीके रससे पीस सपुटमें रखके फूंकदेवे, इस प्रकार सात पुट देवे। फिर इसमेसे १ रत्ती सहत और घीके साथ सेवन करे तो भगदर नष्ट हो, इसके ऊपर मूसली और निमकका चूर्ण काजीमें डालकर पीवे, इस रसका सेवनकर्त्ता मिष्ट आहार करे, दिनमे सोना, मैथुन करना, और शीतल वस्तुका खाना वर्जित है, यह वारिताडवरस है।

भगंदरहरोरसः

सूतस्यद्विगुणेनशुद्धवलिनाकन्यापयोभिस्त्र्यहम् । शुद्धंताम्रमयःसमस्ततुलितंपात्रंनिधायोपरि ॥ स्वेद्ययामयुगचभस्मपिठरेनिम्बूजलैःसप्तधा । पाकतत्पुटयेद्भगन्दरहरोगुंजामितःस्यादिति ॥

पारेसे दूनी शुद्ध गन्धक लेकर घीगुवारके रस से तीन दिन खरल करे, फिर इस कजलीके बराबरके तावेके ढकनसे कजलीको ढकके दो प्रहर स्वेदन करे, फिर निकालकर नींबूके रसकी सात भावना देवे और सपुटमें रखके फूंकता जाय तो यह रससिद्ध होवे। इसमेसे १ रत्ती नित्य सेवनकरे तो भगन्दर नष्ट होवे, तथा रूपराजरस रविसुन्दर आदि रसभी देने चाहिये।

अथोपदंशचिकित्सा.

योगवाहिरसान्सर्वान्सर्वरोगोदितानपि ।
उपदंशेप्रयुञ्जीद्ध्वजमध्येशिराव्यधः ॥

जो सब रोगोंपर योगवाही रस लिखे हैं, वो सब उपदंशके रोगीको देने चाहिये तथा लिंगके बीचकी फस्त खुलवावे ।

अथकुष्ठरोगचिकित्सा.

गलत्कुष्ठारिरसः

कन्याकोटिप्रदानेनगंगायांपतृतर्पणे ।
विश्वेश्वरपुरीवासेतत्फलकुष्ठनाशने ॥
गवाकोटिप्रदानेनचाश्वमेधशतेनच ।
वृषोत्सर्गेचयत्पुण्यतत्पुण्यकुष्ठनाशने ॥
रसोवलिस्ताम्रमयःपुरोग्निशिलाजतुस्याद्द्विपतिन्दुकोग्नि । सर्वंचतुल्यंगगनकरंजबीजतथाभागचतुष्टयच ॥ संमर्द्य गाढमधुनाघृतेन

वल्लद्वयचास्यनिहन्त्यवश्यम् । कुष्ठंकिलाश मपिवातरक्तंजलोदरंवाथविवृद्धमूलम् ॥ विशीर्णकर्णांगुलनासिकोपिभवेत्प्रसादात्स्मर तुल्यमूर्त्तिः ।

करोड़ कन्या दान करे, गंगा मे पितृ का तर्पण करे, और जो काशी में वास करे इन को जो पुण्य होता है वही पुण्य वैद्य को कुष्ठ रोग दूर करने से होता है। करोड़ गो दान और सौ अश्वमेघ करने से तथा वृषोत्सर्ग कर्त्ता को जो पुण्य होता है वही फल कुष्ठ रोग दूर करने वाले को होता है।

पारा, गंधक, ताम्र भस्म, लोहभस्म, गूगल, चीता, शिलाजीत, विष, कुचला, भिलावा और सब की बराबर अभ्रक ले और चौगुने कना के बीज लेवे सब को सहत और घी गुवार से खूब खरल कर ६ रत्ती भक्षण करे तो कुष्ठ, किलास, वातरक्त, जलोदर जिस से कान-नाक गलने लगे ऐसा भी बद्ध मूल कोढ दूर होवे, और इस रस के प्रताप से मनुष्य कामदेव के तुल्य होवे।

उदयभास्कर.

गन्धकेनमृतताम्रंदशभागंसमुद्धरेत् ।
ऊषणंपंचभागस्यादमृतंचद्विभागिकम् ॥
श्लक्ष्णचूर्णीकृतंसर्वंरक्तिकैकप्रमाणतः ।
दातव्यंकुष्ठिनेसम्यगनुपानस्ययोगतः ॥
गलितेस्फुटितेचैवविशूच्यांमण्डलेतथा ।
विचर्चिकाददृपामाकुष्ठरोगप्रशान्तये ॥

गन्धक से मारा हुआ तावा १० तोले, काली मिरच ५ तोले, सींगिया विष दो तोले, सब का बारीक चूर्ण कर १ रत्ती के प्रमाण अनुपान के साथ देवे तो गलित कुष्ठ, देह का फटना, विशूचिका, मंडल कुष्ठ, विचर्चिका, दाद, खुजली, इत्यादि कुष्ठ दूर होवें।

तालकेश्वरोरसः

धात्रीटकणतालानांदशभागसमुद्धरेत् ।
धात्र्यारसैर्मर्दयित्वांशिखरीमूलवारिणा ॥
सर्वकुष्ठहरःसेव्यःसर्वदाभोजनप्रियः ।

आंवले, सुहागा और हरिताल प्रत्येक दश २ भाग ले के आवले के रस और ओंगा की जड के रस से खरल कर गोलिया बनावे। इनके सेवन से सब प्रकार के कुष्ट दूर हो और भूख बढे।

ब्रह्मरसः

भागैकंमूर्च्छितंसूतंगन्धकन्त्वग्निवागुची ।
चूर्णन्तुब्रह्मबीजानांप्रतिद्वादशभागिकम् ॥
त्रिंशद्भागंगुडस्यापिक्षौद्रेणगुडिकाकृता ।
अयब्रह्मरसोनाम्नाब्रह्महत्यादिनाशनः ॥
द्विनिष्कभक्षणाद्धन्तिप्रसुप्तिकुष्टमण्डलम् ।
पातालगरुडीमूलंजलैःपिष्ट्वापिबेदनु ॥

चन्द्रोदय १ तोले, गन्धक, चीता, बागची और ढाक के बीज प्रत्येक १२ तोले लेवे, गुड ३० तोले, सब को कूट-पीस सहत से गोलियां बनावे। यह ब्रह्म रस ब्रह्म हत्या से प्रगट कुष्ठ रोग को नष्ट करे, इस मे से ८ माशे भक्षण करे ऊपर से कडवी घीयाकी जडका रस पीवे तो शून्यता, मण्डल, कुष्ठ, इन का नाश करे।

चन्द्राननोरसः

सूतव्योमाग्नयस्तुल्यास्त्रिभागोगन्धकस्यच ।
काष्ठोदुम्बरिकाक्षीरैःसर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
माषमात्र गुडींकृत्वाकुष्ठरोगेप्रयोजयेत् ।
देहशुद्धिंपुराकृत्वासर्वकुष्ठानिनाशयेत् ॥
एषचन्द्राननोनामसाक्षात्श्रीभैरवोदितः ।

पारा, अभ्रक, चीता और लोह भस्म इन को बराबर लेवे, और इन की बराबर गन्धक ले सब को कटूमर के दूध से खरल कर एक २ माशे की गोलिया बनावे। फिर (वमन विरेचनादि से) देह शुद्धि कर के देवे तो सब प्रकार के कोढो को यह चन्द्रानन नामक गोली दूर करे। यह साक्षात् भैरव ने कही है।

कुष्ठकालानलोरसः

गन्धरसंटकणताम्रलौहभस्मीकृतमागधिका समेतम् ॥ पचांगनिम्बेनफलत्रिकेनविभा

जितराजतरोस्तथैव ॥ नियोजयेद्वल्लकयुग्म मानकुष्ठेषुसर्वेषुचरोगसंघे ॥

पारा, गन्धक, सुहागा, तांबे की भस्म लोह भस्म और पीपल ये सब समान भाग लेवे और नीम के पंचाग की, त्रिफला के काढे की और अमलतास के काढे की भावना दे कर तैयार करे। इस को ६ रत्ती सम्पूर्ण कुष्ठों मे देवे तो सर्व कुष्ठो का नाश करे।

वज्रवटी.

शुद्धसूताग्निमरिचसूताद्विगुणगंधकम् ।
काष्ठदुम्बरिकाक्षीरैर्दिनमर्द्य प्रयत्नतः ॥
वराव्योषकषायेणवटीश्चास्यसमाचरेत् ।
लिह्याद्वज्रवटीह्येपापामारोगविनाशिनी ॥

शुद्ध पारा, चीते की छाल, काली मिरच, प्रत्येक एक एक तोले और गन्धक दो तोले ले सब को कठूमर और सहत से एक दिन खरल कर त्रिफला और त्रिकुटा के काढेकी भावना देवे, पश्चात् गोलिया बनाकर सेवन करे तो यह वज्र वटी खुजली को दूर करे।

पलत्रयमृतताम्रं सूतमेकद्विगंधकम् ।
त्रिकटुत्रिफलाचूर्णप्रत्येकञ्चपलपलम् ॥
निर्गुण्ड्याश्चार्द्रकद्रावैर्वन्हिद्रावैर्विमर्दयेत् ।
दिनैकतद्विशोष्याथतुषाग्नौस्वेदयेद्दिनम् ॥
समुद्धृत्यविचूर्ण्याथवागुजीतैलमर्दितम् ।
त्रिदिनभावयेत्तेननिष्कैकभक्षयेत्सदा ॥
चन्द्रकान्तिरसोनाम्नाकुष्ठहन्तिनसशयः ।
तैलकरञ्जबीजोत्थवन्हिगन्धकसैधवम् ॥
अनुपानप्रकर्त्तव्यकल्कवावागुजीभवम् ।

तामे की भस्म १२ तोले, पारा ४ तोले, गन्धक ८ तोले, त्रिकुटा और त्रिफला के चूर्ण चार २ तोले, सब को सभालू, अदरख और चीते के रस से एक २ दिन खरल करे, फिर सपुट मे रखके तुषाग्निसे एक दिन स्वेदन करे फिर निकाल चूर्ण कर बावची के तेल की ३ दिन भावना दे कर ४ माशे भक्षण करे तो यह चन्द्र कान्ति रस निश्चय कुष्ठ रोग को शान्ति करे। इसके ऊपर बावची का तेल, चीता, गंधक और सेंधा निमक अनुपान देवे, अथवा बावची का कल्क अनुपान मे देवे।

सकोचरसः

मृतताम्राभ्रकतुल्यतयो सूतश्चतुर्गुणम् ।
शुद्धतन्मर्दयेत्खल्लेगोलकंकारयेत्ततः ॥
त्रिभिस्तुल्यशुद्धगन्धलोहपात्रे क्षणपचेत् ।
तन्मध्येगोलकंपाच्ययावज्जीर्णन्तुगन्धकम् ॥
एतन्मृद्वग्निनातावत्समुद्धृत्यविचूर्णयेत् ।
गुग्गुलुर्निम्बपञ्चागंत्रिफलाचामृताविषम् ॥
पटोलंखादिरसारव्याधिघातंसमसमम् ।
चूर्णितमधुनालेह्य निष्कसौदुम्बरापहम् ॥
रस संकोचनामायंश्रेष्ठःपरमदुर्लभः ।

तावे और अभ्रक की भस्म, समान ले कर दोनो से चौगुना शुद्ध पारा लेवे, और सब को खरल कर गोला बनावे, फिर तीनो की बराबर गन्धक को लोह पात्र मे गलाय उस मे पूर्वोक्त पारे को मन्द २ पचावे जब सम्पूर्ण गन्धक जीर्ण हो जावे तब उस को निकाल खरल करे। और गूगल, नीम का पचांग, त्रिफला, गिलोय, विष, पटोल पत्र, खैर सार और अमलतास इन को समान भाग ले कर चूर्ण करे। इस मे से ४ माशे सहत के साथ चटावे। तो उदुम्बर कुष्ठ दूर हो, इसे सकोच रस कहते हैं।

अमृतांकुरलोहम्.

हुताशमुखसशुद्ध पलमेकंरसस्यवै ।
पललौहस्यताम्रस्यपलभल्लातकस्यच ॥
अभ्रकस्यपलञ्चैकगन्धकस्यचतु पलम् ।
हरीतकीविभीतक्योश्चूर्णकर्षद्वयद्वयोः ॥
अष्टमाषाधिकतत्रधात्र्या पाणितलानिषट् ।
घृतचाष्टगुणंलौहद्वात्रिंशत्त्रिफलाजलम् ॥
एकीकृत्यपचेत्पात्रे लौहेचविधिपूर्वकम् ।
पाकमेवास्यजानीयात्शास्त्रज्ञोलौहपाकवित्
भक्षयेत्प्रातरुत्थायगुरुदेवद्विजार्चकः ।

रक्तिकादिक्रमेणैव घृतश्चामरमर्दितम् ॥
लौहेचलौहदण्डेनकुर्यादेतद्रसायनम् ।
अनुपानञ्चकुर्वीतनारिकेलजलंपयः ॥
सर्वकुष्ठहरश्रेष्ठंवलीपलितनाशनम् ।
अग्निदीप्तिकरहृद्यं कान्त्यायुर्बलवर्द्धनम् ॥
सेव्योरसोजांगललावकानांविवर्ज्यशाका-
म्लमयस्तियञ्च । शाल्योदनषष्टिकमाज्यमु
द्गंक्षौद्रगुडक्षीरमिहक्रियायाम् ॥

अग्नि द्वारा शुद्ध किया पारा, लोहभस्म, ताम्र भस्म, और अभ्र इनकी भस्म और मिलाए प्रत्येक एक २ पल लेवे, गन्धक ४ पल, हरड और बहेडा दो २ पल, आवले ६ तोले ८ माशे, इन सबसे अठगुना घी ले और ३२ गुना त्रिफलाका काढा लेवे, सबको एकत्र कर लोहेकी कढाई मे विधि पूर्वक पचावे, इसके पाकको लोहपाक ज्ञाता ठीक-ठीक परीक्षा करे, जब सिद्ध होजावे तब इसमेसे एक रत्ती क्रमसे घी और सहतके साथ लोहेके पात्रमे मिलाके भक्षण करे इसके ऊपर नारियलका जल और दूध पीना अनुपान कहा है। यह सब प्रकारके कुष्ठ तथा वली (गुजलट) पलित (सफेद) बाल इनको दूर करे, अग्निको दीप्ति करे हृदयको हितकारी, कान्ति, आयु और बलको बढावे इस रसके ऊपर जगली जीवोंके मासरस, लवापक्षी का मास तथा सर्व प्रकारके शाक, खटाई और स्त्री सेवन त्याज्य है, तथा शाली चावलोंका भात, साठी चावलोंका भात, घी, मूंग, सहत, गुड और दूध सेवन करने चाहियें।

माणिक्योरसः

पलतालपलगन्धशिलायाश्चपलार्द्धकम् ।
चपल शुद्धसीसञ्चताम्रमभ्रमयोरजः ॥
एतेषांतोलभागंचवटक्षीरेणमर्दयेत् ।
ततोदिनत्रयधर्मेनिम्बक्वाथेनभावयेत् ॥
गुडूचीबालहिन्तालत्रानरीनीलझिण्टिका ।
शोभाञ्जनमुराजाजीनिगुण्डीहयमारकम् ॥
एषांशाणमितंचूर्णमेकीकृत्यसरित्तटे ।
मृत्पात्रे काठनेकृत्वामृदम्बरयुतेदृढे ॥
एकाकीपाकविद्वैद्योनग्नःशिथिलकुन्तलः ।
पचेद्देवहितोरात्रौयत्नात्संयतमानसः ॥
तद्विजानीहिभैषज्यसर्वकुष्ठविनाशनम् ।
सर्षपमधुनालौहपात्रे तद्दण्डमर्दितम् ॥
द्विगुञ्ज सर्वकुष्ठानांनाशनंबलवर्द्धनम् ।
शीतलंसारसंतोयदुग्धवापाकशीतलम् ॥
आनीततत्क्षणादाजमनुपानसुखावहम् ।
वातरक्त शीतपित्तहिक्काञ्चदारुणंजयेत् ॥
ज्वरान्सर्वान्वातरोगान्पाण्डुं कण्डू चकामलां
श्रीमद्गहननाथेननिर्मितोबहुयत्नतः ॥

हरिताल १ पल, गन्धक १ पल, मनसिल दो तोले, पारा, शुद्धशीशा, ताम्रभस्म और अभ्रकभस्म प्रत्येक दो २ तोले ले, सबको एकत्रकर बडके दूधसे खरलकरे फिर तीन दिन धूपमे नीम के काढेकी भावना दे, फिर गिलोय, कलहीस, किवाच, नीलमिढी, सहजना, मुरा, जीरा संभालू और कनेर प्रत्येक चार २ माशे लेकर चूर्ण करे इन को नदीके किनारे नग्नहो बालोंको बखेरके मिट्टी के पात्रमे देवता हित पूर्वोक्त हरताल आदिको पचावे, प्रात काल सब सिद्ध हुई औषधियों ले उत्तम पात्रमे भर रख छोडे, यह सर्वकुष्ठ नाशक दवा है। इसको घृत अथवा सहतके साथ लोहेके मूसलेसे खरलकर दो रत्ती रोगीको दे तो सर्व प्रकारके कुष्ट दूर होवे, बलको बढावे औरइसऊपर सरोवरका शीतलजल और औटा हुआ शीतल दूध तथा तत्कालका दुहा बकरीका दूध हितकारी है। यह वातरक्त शीतपित्त, दारुण हिचकी, सर्व प्रकारके ज्वर वातरोग, पाडुरोग, खुजली, कामला, इन सबको दूर करे। यह गहननाथका कहा माणिक्यरस है।

कुष्ठकुठारोरसः

भस्मसूतसमोगन्धोमृतायस्ताम्रगुग्गुलु ।
त्रिफलाचमहानिम्बश्चित्रकश्चशिलाजतु ॥
इत्येतच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंभागषोडशः ।
चतुष्पष्टिकरञ्जस्यबीजचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥

चतुःषष्टिमृतञ्चाभ्रं मध्वाज्याभ्यां विलोडयेत् स्निग्धभाण्डे स्थितं खादेद्द्विनिष्कं सर्वकुष्ठनुत् ॥ रसः कुष्ठकुठारोऽयं गलितकुष्ठविनाशनः ।

चन्द्रोदय १ तोले, गन्धक १ तोले, लोह भस्म, ताम्रभस्म, गूगल, त्रिफला, वकायन, चीते कीछाल, शिलाजीत, प्रत्येक चन्द्रोदयका सोलहवा भाग ले; कना चौसठवा भाग ले, तथा इतना ही अभ्रक भस्म लेके सहत और घी मे मिलाकर चिकने बरतनमे रख छोडे। इसमें से ८ माशे, नित्य खाय तो यह कुष्ठकुठाररस गलितकुष्ठका नाश करे ।

रसतालेश्वरः

गुञ्जाशङ्खकरञ्जचूर्णरजनीभल्लातकाग्निःशिखा कन्यासूर्य्यपयःपुनर्नवरजोगन्धस्तथा सूतकम् गोमूत्रे पचितं विडंगमरिचैः क्षौद्रञ्च तत्तुल्यकम् हन्यादाशु विचर्चिकारुजमिदं कण्डूं तथा कैटिभम् ॥

घुंघची, शङ्खभस्म, कञ्जा, हलदी, भिलाए, कलियारी, घीगुवार, आकका दूध, सांठ, गन्धक, और पारा, इनको अठगुने गोमूत्रमें पचाकर बराबरकी वायविडंग कालीमिरच, और सहत मिलाकर लगावे तो तत्काल विचर्चिका, खुजली, और कैटभकुष्ठको दूर करे ।

कुष्ठहरितालेश्वरः

नागस्य भस्म शाणैकं तोलकं गन्धकस्य च ।
द्विनिष्कं शुद्धतालस्य समुद्धृत्य गवां जलैः ॥
विपचेत्षोडशगुणैः पात्रे ताम्रमये शनैः ।
घर्मो द्विघस्रं जम्बीरकुमारीवज्रकन्दजैः ॥
रसैर्भगस्य चाम्भोभिर्युक्तं वल्लद्वयं भजेत् ।
कुष्ठे चास्थिगते चापि शाखानासाविभुग्नके ॥
स्वरभंगे क्षतक्षीणे मण्डलेषु महत्स्वपि ।
औदुम्बरं हन्ति शिवामधुभ्यां कृच्छ्रञ्च कुष्ठं त्रिफलाजलेन ॥ गुडार्द्रकाभ्यां गजचर्म्म सिध्म विचर्चिकास्फोटविसर्पकण्डूम् । निहन्ति पाण्डुं विविधां विपर्दीं सरक्तपित्तं कटुवासिताभ्यां ॥ खादेद्द्विजीरं ह्यमृतायुतञ्च समुद्गयूषं घृतञ्च दद्यात् ॥ रोहीतकजटाक्वाथं नु मपान प्रयच्छति । चतुर्दशदिनस्यान्ते कुष्ठं शुष्यति यत्नतः क्षुद्बोधो जायते त्यर्थमत्यर्थं शुभगं वपुः ॥ वर्जयेत् सततं कुष्ठी मत्स्यमांसादिभोजनम् ।

सीसेकी भस्म ४ माशे, गन्धक १ तोले, हरिताल ८ तोले, इन सबको सोलहगुने गोमूत्रमे ताम्रपात्रमे उक्त सीसे हरितालादिकी पोटली बांध लटका देवे, नीचे अग्नि जलाकर धीरे २ पचावे, फिर इसको जंभीरी, घीगुवार, और थूहरकी जड के रसमें डाल धूपमें रख दो-दिन खरलकरे तो यह सिद्ध होवे, इसमेंसे ४ रत्ती रस भागके जल के साथ सेवन करे तो अस्थिगत कोढ, हाथ पैरों का बिगाड़ने वाला एव नाकको बैठाने वाला कुष्ठ, स्वरभग क्षतक्षीण, देहके घोर चकत्ते, औदुम्बर कुष्ठ, इन सबको हरड और सहतके साथ खानेसे दूर करे, त्रिफलाके काढेसे खाय तो मूत्रकृच्छ्र, और कुष्ठको दूर करे, गजचर्म, सिध्मरोग, विचर्चिका, विस्फोटक, विसर्प, खुजली इनको गुड और अद्रकके साथ खानेसे नष्ट करे, कुटकी और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे पाण्डुरोग, अनेक प्रकारकी विपादिका और रक्तपित्तको दूर करे. इसको दोनो जीरे, गिलोय, मूंगकायूष, इनसे घी मिलाकर सेवन करे तथा रोहेडाका क्वाथ इस पर पीवे तो १४ दिनमें कैसाही कुष्ठ क्यो नहीं शीघ्र सूख जावे, और इसके सेवनसे अत्यन्त भूख लगती है, दिव्यदेह होवे, कुष्ठ रोगीको मच्छी मासादिक और भारीवस्तु खाना मना है ।

सोमेश्वरोरसः

शुद्धसूतं मृतञ्चाभ्रं गन्धकं मर्दयेत्समम् ।
दिनं निर्गुण्डिकाद्रावै रुध्वा न्हभूधरे पचेत् ॥
उद्धृत्य वाकुचीतैलैर्वाकुच्या वा कषायतः ।
दिनैकं भावयेद्धर्मे निष्कमात्रं च भक्षयेत् ॥
वाकुचीकाकमाचीच त्रिफलाचूर्णयेत्समम् ।
मध्वाज्यैः कर्षमात्रञ्च अनुपानमिदं लिहेत् ॥
कपालविषमकुष्ठं हन्ति सोमेश्वरो रसः ।

शुद्धपारा, अभ्रककी भस्म, गन्धक, समान भाग लेकर एक दिन निगुंडीके रसमें खरलकरे, फिर भूधरयंत्रमें रख एक दिन अग्नि देवे, फिर निकाल बावचीके तेल अथवा काढ़ेकी एक दिन भावना देकर ४ मासेके अनुमान प्रतिदिन भक्षण करे। और बावची, मकोय, त्रिफला, इनके चूर्णमें १ तोला सहत और घृत मिलाके भक्षण करे। यह इसका अनुपान है, तो यह सोमेश्वररस कपाल नाम दुष्ट कुष्ठको दूर करे।

तालकेश्वरोरसः

शुद्धंसूतसमगन्धसूतात्तालचतुर्गुणम्।
कुक्कुटीपर्णसारेणवाकुच्यावाकषायकैः॥
दिनैकमर्दयेत्खल्वे त्रिभिस्तुल्यमृतायसं।
अयस्तुल्यमृतताम्रं मर्दयेद्दिनपंचकम्॥
पूर्वक्वाथद्रवैर्वाथसर्वतद्गोलकंकृतम्।
वर्षाभूचित्रपत्रैश्चमूषागर्भप्रलेपयेत्॥
तन्मध्येनिक्षिपेद्गोलंलेपःकल्पस्ततोपरि।
रुध्वान्यंभूधरेपच्यात्समुद्धृत्यविभावयेत्॥
सप्तधामलजैस्तोयैःमधुमिश्रनिरुध्यच।
पुटेकेभूधरेपच्याद्रसोऽयंतालकेश्वरः॥
चतुर्गुञ्जापर्णखण्डेभक्षयेच्चपिवेदनु।
अजाजीद्वितयत्र्यूषगिरिकर्णीगवापयः॥
मुण्डीचूर्णंतथाक्षौद्रैःसर्वकुष्ठंनियच्छति।

शुद्धपारा और गन्धक एक २ पल, हरताल ४ पल, इनको कुककुटी पर्णसार (रन्दालके पत्तों) के अर्कमें अथवा बावचीके काढ़े मे एक दिन खरलकर तीनोंकी बराबर सार मिलावे, सारकी बराबर तांबेकी भस्म, सबको पूर्वोक्त क्वाथसे पांच दिन खरलकर गोला बनावे, फिर सांठ और भोजपत्रका मूषाके अन्दर लेपकर उसमे गोला रख पूर्वोक्त लेपसे ल्हेस देवे, फिर भूधरयन्त्रमे रख एक दिनकी अग्नि देवे, पीछे चन्दनकी सात भावना देवे और सहतमे खरलकर भूधरयन्त्रमे फूंक देवे, तो यह तालकेश्वररस सिद्ध होवे। इसको ४ रत्ती पानमें रखकर खानेसे सब कोढ़ दूर होवें, इसपर जीरा, कालाजीरा त्रिकुटा, उपलसिरी, गौका दूध और गोरखमुंढी इनके चूर्णको सहतसे मिलाकर चाटे।

पिंगलेश्वरोरसः

भस्मसूतंविषंशुंठीवचावन्हिफलत्रिकम्।
ब्राह्मीबीजंविडंगानिभृंगिभल्लातगन्धकम्॥
शिखितुत्थकणातुल्यसर्वमेकत्रमर्दयेत्।
त्रिफलाक्वाथसंयुक्तं कांतपात्रे स्थितंनिशि॥
कर्षमात्रंलिहेत्प्रातःसर्वकुष्ठनिवृत्तये।
षण्मासात्पलितंहन्तिरसोऽयंपिंगलेश्वरः॥

चन्द्रोदय, शुद्धविष, सोंठ, बच, चीता, त्रिफला, ब्राह्मी, बायविडंग, भांगरा, भिलाए, गन्धक, नीलाथोथा और पीपल इनको समान भाग लेकर चूर्ण कर त्रिफलाके काढेमे डाल एक रात्रि कान्तपात्रमे रख छोडे। प्रातकाल इनमेसे १ तोला लेवे तो सर्व कुष्ठोंकी निवृत्ति होवे। छः महीने सेवन करनेसे सफेद बालका होना दूर हो, इसे पिंगलेश्वररस कहते हैं।

त्रिगन्धरसः

स्वरसैराजवृक्षस्यतालगन्धमनःशिला।
गुञ्जावाकुचिकाद्रावैर्भाव्यकंगुणितैलके॥
प्रतिद्रावैर्दिनैकन्तुभक्षयेदर्द्धनिष्ककम्।
कुष्ठमौदुम्बरंहन्तित्रिगन्धोऽयमहारसः॥
मध्वाज्यवाकुचीमूर्वाकषैकमनुलोहयेत्।

अमलतासके रसमे हरिताल, गन्धक और मनसिलको खरलकरे, फिर घूंघची और बावची के रस तथा कागनी तेलमे एक २ दिन खरलकर दो २ माशेकी गोलियां बनावे। एक गोली नित्य खाय तो औदुंबर कुष्ठको यह त्रिगन्ध महारस दूर करे, इसपर घी, सहत तथा बावची मूर्वा इनका काढ़ा पीवे।

संकोचगोलोरसः

मृतताम्राभ्रकतुल्यंतयोः सूतंचतुर्गुणम्।
शुद्धं तन्मर्दयेत्खल्वे नष्टपिष्टं सुगोलकम्॥
त्रिभिस्तुल्यंशुद्धगन्धंलोहपात्रगतंद्रुतम्।
तन्मध्येगोलकंपाच्यंयावज्जीर्यतिगंधकम्॥

ताम्रन्मृद्वग्निनायत्नात्रसशुद्धं स्यविचूर्णयेत् ।
तच्चो.समताम्रपत्रं रसेदेयमधोमुखम् ॥
सन्धिमृल्लवणेरुध्वाताम्रश्चावेणरोधयेत् ।
द्वियामंपाचयेच्चुल्ह्याचूर्णयेत्स्वांगशीतलम् ॥
अक्षक्षीरैर्दिनैर्मर्द्य मुद्रयेत्भूधरेपचेत् ।
एवपुनःपुनर्मर्द्य पचेद्द्वादशसंपुटै ॥
गुग्गुलनिंबपंचात्रिफलाचामृताविष ।
पटोलखदिरव्याधिघातग्राह्यंसमसम ॥
चूर्णितंमधुनालेह्य निष्कमौदुम्बरापहम् ।
रसःसकोचगोलोऽयंपुरानागार्जुनोदितः ॥

ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, प्रत्येक चार २ तोले शुद्धपारा १६ तोले, इनकी खरलमें कजलीकर गोला बनाय फिर तीनोकी बराबर शुद्ध गन्धकको ताम्रपात्रमे गलाकर उसमे पूर्वोक्त गोले को रख अग्निसे पचावे, जब तक गन्धक जीर्ण न हो तब तक मद २ अग्नि देता रहे, जब गन्धक जल जावे तब गोलेको निकाल खरलमें डालकर चूर्ण करे। फिर जितना चूर्ण हो उसकी बराबर ताम्रपात्र ले उसमें चूर्णको भर ढक्कनसे बन्दकर उसके मुख को मिट्टी और निमक मिला के बद कर देवे फिर चूल्हे पर चढा कर दो प्रहर की अग्नि देवे, जब स्वाग शीतल हो जावे तब बहेडे के दूध में एक दिन खरल कर मुद्रा बनाय भूधर यन्त्र मे फूक देवे, इस प्रकार बारम्बार बहेडे के दूध मे खरल कर १२ अग्नि देवे तो रस सिद्ध हो। फिर गूगल, नीम का पचाग, त्रिफला, गिलोय, विष पटोल पत्र, खैर सार और अमलतास का गूदा प्रत्येक समान ले कर चूर्ण करे, इस तोले भर चूर्ण मे सहत मिलाय इस ४ माशे चूर्ण पर खाय तो उदुम्बर कोढ का नाश करे। यह सकोच गोल रस प्रथम नागार्जुन सिद्ध ने कहा था।

कृष्णमाणिकरसः

मरिचतीक्ष्णकताम्रं समगन्धकमाक्षिकम् ।
तीक्ष्णस्याद्द्विगुणसूतभस्मीकृत्वानियोजयेत् ॥
सर्वेपादशमांशेनविषंदत्वाविचूर्णयेत् ।
दशमूलद्रवैःमर्द्यदिनैकंमर्दयेद्दृढम् ॥
मजिष्ठादिकषायेणमहाक्वाथेदिनंदिनम् ।
मूषागतनिरुध्याथवालुकायत्रगंपचेत् ॥
मृद्वग्निनादिनैकन्तुरसोऽयकृष्णमाणिकः ।
औदुम्बरमहाकुष्ठहन्तिमासैकसेवनात् ॥
देवदाल्याथपचागछायाशुष्कन्तुचूर्णयेत् ।
मध्वाज्यशर्करायुक्तंद्विनिष्कमनुपाययेत् ॥

काली मिरच, तीक्ष्ण (खेडी) लोहकी भस्म, तांबे की भस्म, गन्धक और सुवर्ण माक्षिक ये सब समान भाग लेवे और लोह भस्म से दूनी शुद्ध पारे की भस्म ले तथा सब औषधियो का दशवां भाग सिंगिया विष मिलावे, सब को दशमूल के काढे से एक दिन खरल कर फिर महा मजिष्ठादि काढे से एक दिन खरल करे। पीछे मूषामे रख वालुका यन्त्र मे एक दिन मन्दाग्नि से पचावे, तो यह कृष्णमाणिक रस सिद्ध होवे। यह औदुम्बर महा कुष्ट को एक महीने सेवन करने से दूर करे, बन्दाल के पचाग को छाया में सुखा के चूर्ण करे, उस मे सहत घी और मिश्री मिला कर ८ माशे इस रस के आरम्भ में भक्षण करे यह इस का अनुपान जानना चाहिये।

कामधेनुरसः

शुद्धसूतद्विधागन्धलोहपात्रेक्षणपचेत् ।
शीतलचूर्णयेत्खल्लेबध्वावस्त्रेचतुर्गुणे ॥
आरनालेघटांतस्थदोलायंत्रेचतुर्गुणम् ।
पाचयेच्छोषयेत्पश्चाद्दशाशेवत्सनागकम् ॥
क्षिप्त्वासवत्र्यहभाव्यतैलेवाकुचिसभवे ।
कामधेनुरितिख्यातोरसोयमण्डलापहा ॥
गुग्गुलत्रिफलागन्धसममेरण्डतैलकम् ।
द्विनिष्कमनुपानस्याद्रक्तमण्डलकुष्ठजित् ॥

शुद्ध पारा ४ तोले, शुद्ध गन्धक ८ तोले, प्रथम गन्धक को गला कर उस मे पारा मिला देवे फिर शीतल कर खरल मे डाल खूब मर्दन करे, इस कजली की चौलड़ कपडे मे पोटली बाध दोला यत्र की विधि से काजी मे पचन करे, परन्तु कजली से कांजी चौगुनी होनी चाहिये।

फिर उस कांजी को अग्नि पर ही सुखा के उस पोटली से कजली निकाल खरल में डाल के उस का अष्टमाश मिगिया मिलाय तीन दिन बावची के तेल से खरल करे, तो यह कामधेनु रस सिद्ध हो। इसको गूगल, त्रिफला, गन्धक और इनकी बराबर गन्धक ले। इस में से ८ रत्ती ले पूर्वोक्त रस के साथ सेवन करे, तो रुधिर के चकत्ते और मण्डल कुष्ठ दूर होवे।

अर्केश्वरोरसः

तालताप्यशिलासूतशुद्धसैंधवटकणम्।
समान्हिकभृंगणश्चचूर्णंतुल्यंविमिश्रयेत्॥
अयमर्केश्वरोनाम्नासुप्तमण्डलकुष्टजित्।
चतुर्गुञ्जं लिहेत्क्षौद्रमनुपानश्चपूर्ववत्॥

हरिताल, सुवर्ण माक्षिक, मनसिल, पारा, सैंधा निमक, सुहागा और पारा इन का चूर्ण समान भाग लेवे सबको मिलावे तो यह अर्केश्वर रस बने। यह सप्तकुष्ठ और मण्डल कुष्ठ को दूर करे, इसमें से ४ रत्ती सेवन करे अनुपान पूर्वोक्त जानना।

विजयेश्वरः (सूर्यप्रभारसः)

विष्णुक्रान्तादेवदालीसर्पाक्षीतहुलीमुनिः।
नीलीब्राह्मीपलासश्चयथालाभेद्रवहरेत्॥
द्वित्रीणामेवनिर्यासैःसूतकमर्दयेद्दिनम्।
सूताद्विगुणगन्धोथएकीकृत्वाक्षणपचेत्॥
लोहपात्रे द्रुतंतावद्यावच्छुल्वाभ्रकौमतौ।
प्रत्येकंसूतपादांशंकर्पूरंसविनिक्षिपेत्॥
अग्नावुत्तारयेच्चूर्णं रस.सूर्यप्रभोमहान्।
पुण्डरीकहरंनिष्कमनुपानेनपूर्ववत॥

कोयल, वन्दाल, सरफोंका, चौलाई, अगस्तिया, नीली, ब्राह्मी और ढाक, इनमें जो वस्तु मिले उस का रस लेवे, दो या तीनके रस में पारे को एक दिन खरल करे, फिर पारे से दूनी गंधक मिलाय लोहे के करछले में पचाय उस में तांबे, अभ्रक की भस्म पारे से चौथाई २ मिलावे, और भीममेनी कपूर मिलावे फिर इस को अग्नि से उतार लेवे तो यह सूर्य प्रभा रस बने। ४ माशे पूर्वोक्त अनुपान के साथ देवे तो पुंडरीक कुष्ठ को दूर करे।

विजयेश्वरः

शुद्धतालंमृतसूतंतुल्यंताभ्यांचतुर्गुणम्।
भर्ज्जिताविजयायोऽस्यासर्वंतुल्यगुडंक्षिपेत्॥
सुप्तकुष्ठहरोनिष्करसोऽयंविजयेश्वर।

शुद्ध हरिताल और चन्द्रोदयको समान लेवे, दोनों की बराबर भूनी भाग लेवे और सब की बराबर गुड मिलावे। इनमें से ४ माशे खाय तो यह विजयेश्वर रस सुप्त कुष्ठ को दूर करे।

नाराचरसः

लसुनंराजिकानीलीभानुचित्रकपल्लव।
समभल्लातकचूर्णंक्षिपेत्तैलेचतुर्गुणे॥
तैलतुल्यंगवांक्षीरैःपचेत्तैलावशेषकः।
पंचात्पचांगभक्षस्यभूशिनीपफलाशयो॥
सुवस्त्रगालितकुर्य्यात्तुल्यवामूर्च्छितरस।
घृतक्षौद्रसमायुक्तं पूर्वंतैलेनपीडितम्॥
अयनाराचकंभक्षनिष्कैकंजिह्वकान्तकृत्।

लहसन, राई, नीली और चीता इनके पत्ते लेवे, और इन में समान भाग भिलाए का चूर्ण मिलावे सब को चौगुने कडवे तेल में डाल तथा तेल से चौगुना गौ का दूध मिलाकर औटावे, जब तेल मात्र शेष रहे तब उतार लेवे, फिर पूर्वोक्त पाचो औषधियो के बराबर बहेडे का पंचाग लेवे तथा जमाल गोटे के फल लेवे सब को कूट-पीस कपरछन कर बराबर का चन्द्रोदय मिलाय घृत और सहत मिला कर पूर्वोक्त तेल से खरल करे। तो यह नाराच रस ४ माशे नित्य भक्षण करने से जिह्वककुष्ठ को दूर करे।

सूर्यावर्त्तोरसः

ताप्यगन्धंशुद्धसूतशिलाजत्वम्लवेतस।
मृतताम्राभ्रकतुल्यमध्वाज्यगुडमिश्रित॥
माषैकंजिह्वकहन्तिसूर्य्यावर्त्तोमहारसः।

सुवर्ण माक्षिक, गन्धक, शुद्ध पारा, शिलाजीत, अमलवेत, ताम्र भस्म और अभ्रक भस्म, इन सब को समान भाग लेवे, इस में बराबरका गुड, सहत और घी मिला के एक माशे खावे, तो यह सूर्य्यावर्त्त रस जिह्वक कुष्ठ रोग को दूर करता है ।

वीरचंडेश्वरोरसः

शुद्धं सूतसमंगन्धकान्तभस्मविषंतथा ।
वाकुचीत्रिफलाचूर्णनिम्बवन्हिगुडूचिका ॥
दिनंभृंगीद्रवैर्मर्द्य वाकुच्याश्चकषायकैः ।
भक्षयेल्लोहपात्रस्थंकर्षार्द्धं जिहूकःप्रणुत ॥
वीरचण्डेश्वरोनाम्नाषण्मासातपूर्वकुष्ठजित् ।

शुद्धपारा, गन्धक, कान्तलोहकी भस्म, सिंगियाविष, बावची, हड, बहेडा, आवला, नीव की छाल, चीते की छाल, गिलोय, इन सबको एक दिन भागरेके रससे और एक दिन बावचीके काढे से लोहपात्रमे खरलकर ६ माशे नित्य सेवन करे तो जिहूककुष्ठ दूर होवे, यह वीरचण्डेश्वर रस ६ महीनेमे कोढको दूर करे ।

वेतालोरसः

अभ्रकमृतलोहञ्चशुद्धसूतशिलाजतुः ।
ताप्यचांकोलबीजानित्रिफलामुसलींसमम् ॥
सव्योषचूर्णितलेह्य मधुनानिष्कमात्रकम् ।
मासैकान्नाशयेत्सिध्मावेतालोऽयमहारसः ॥

अभ्रक, सार, शुद्धपारा, शिलाजीत, सुवर्ण माक्षिक, अकोलके बीज, हरड, बहेडा, आवला, सफेदमुसलो, सोठ, मिरच, पीपल, इन सबका चूर्ण कर ४ माशे नित्य सहतके साथ सेवन करे तो एक महीनेमे विभूतिके रोग को यह वेताल नामक रस दूर करे ।

पञ्चाननोरसः

शुद्धसूतसमंगन्धत्र्यूषमुस्ताफलत्र्यहम् ।
गुडूचीचूर्णयेत्तुल्यचूर्णाच्चद्विगुणगडम् ॥
द्विगुंजांवटिकांखादेन्मासैकाद्गजचर्मनुत् ।
रस.पञ्चाननोनाम्नाअनुस्यात्क्षौद्रवाकुची॥

शुद्धपारा, गन्धक, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, हरड, बहेडा, आवला, और गिलोय इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण करे, फिर सब चूर्णसे दूना गुड मिलाय दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे । एक महीने पर्य्यन्त सेवन करे तो गजचर्म कुष्ठ दूर हो, यह पचाननरस है । इसपर बावची का चूर्ण सहत मिलाकर चाटे ।

पर्पटीरसः

पलैकंशुद्ध सूतस्यकर्षैकशुद्धगन्धकम् ।
गन्धतुल्यमृतंताम्रं सूताशमर्दयेद्विषम् ॥
सर्वतुल्यपुनर्गन्धदत्वाकिञ्चिद्विपेपयेत ।
घृताभ्यक्तेलोहपात्रे पचेद्यावद्द्रुतभवेत् ॥
रंभापत्रे पटेवाथपातयत्पर्पटींतथा ॥
माषैकचूर्णितंतावद्गजचर्मनियच्छति ।
निष्कैकवाकुचीचूर्णलेहयेदनुपानकम् ॥

शुद्धपारा ४ तोले, शुद्धगन्धक १ तोले, तावे की भस्म ४ तोले, सिंगियाविष ३ माशे सबकी बराबर फिर गन्धक डालकर खूब पीसे फिर घीपुते लोहपात्रमे उस कजलीको तायले, जब पतली हो जावे तब तत्काल केलेके पत्ते पर ढालदेवे, अथवा पट्टे पर ढालदेवे, तो पपडी जम जावेगी । उसमेंसे एक माशे नित्य सेवन करे तो गजचर्म कुष्ठ रोग दूर होवे, इसके ऊपर ४ माशे बावची के चूर्णको सहतमे मिलाकर चाटना चाहिये ।

चर्मान्तकोरसः

शुद्ध सूतद्विधागन्धमाक्षिकञ्चशिलाजतु ।
शुल्वतीक्ष्णमृतलोहतुल्यमद्यं दिनत्रयम् ॥
काकमाच्यादेवदाल्या.कार्कोट्याश्चद्रवैर्दृढम्
मुद्रयित्वापुटेचान्हत्रिरात्रंवातुषाग्निना ॥
आदायभावयेच्चान्हतैलवाकुचिसंभवम् ।
निष्कार्द्धं चर्मकुष्ठघ्नखादेच्चर्मान्तकोरसः ॥
खादिरवाकुचीवाजंमध्वाज्याभ्यांलिहेदनु ।

शुद्धपारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले, सुवर्ण माक्षिक, शिलाजीत, तीक्ष्णलोहकीभस्म, साधारण लोहको भस्म प्रत्येक चार २ तोले लेवे, फिर

इन सबको ३ दिन खरलकर काकमाची, ककोडा और वन्दाल इनके रससे एक २ दिन खरल करे, फिर संपुटमें वन्दकर तीन दिनरात्रि तुषाग्निमें रखकर अग्नि देवे, फिर इससे बावचीके तेलकी एक दिन भावना देवे, फिर २ माशेकी गोलिया बनावे । एक गोली नित्य भक्षण करे तो चर्मान्तक कुष्ठ और चर्मकुष्ठका नाश करे, इसके ऊपर खैर-सार और बावचीके बीजोका चूर्ण घी और सहत के साथ सेवन करना चाहिये, यह पथ्य है ।

चर्मभेदीरसः

शुद्ध सूतंद्विधागन्धसूतांशंमृतशुल्वकम् ।
सूतपादंविषंचूर्णपचेद्यावद्द्रुतंभवेत् ॥
लोहपात्रे घृताभ्यक्ते पातयेत्कदलीदले ।
आभावाद्द्रापुटस्निग्धेआदायभावयेत्र्यह ॥
वाकुच्योत्थेनतैलेननिष्कपादञ्चभक्षयेत् ।
त्रिफलावाकुचीवीजखदिरराजवृक्षकम् ॥
मूलचूर्णघृतक्षौद्र कर्षैकमनुपाययेत् ।
चर्मभेदीरसोनाममण्डलाच्चर्मकुष्ठनुत् ॥

शुद्धपारा ४ तोले, गन्धक ८ तोले, खेरी लोहकी भस्म ४ तोले, ताम्रभस्म ८ तोले, सिगियाविष २ तोले, बच, पीपल, आवला, वायविडंग और सफेदजीरा प्रत्येक चार २ तोले, और सोंठ ८ तोले,सबका चूर्णकर भागरेके रससे खरल करे, फिर तिलवन और गोरखमुंडी प्रत्येक रससे तीन २ दिन खरल कर संपुटमें रखके फूंकदेवें । इसमेंसे चनेके प्रमाण भक्षण करे तो यह चर्म्म-कुठार रस चर्मकुष्ठको दूर करे ।

ज्योतिष्पुंजोरसः

मृतसूताभ्रकतुल्यंमर्द्य विल्वरसैर्दिनम् ।
नीलाचाज्येरसोप्येवमयःपात्रे विमर्दयेत् ॥
कंगुणीनिम्बकर्पासैस्तैलेनापिचमर्दयेत् ।
माषंभजेत्तथालेप्यचर्मकुष्ठहरंपर ॥
ज्योतिष्पुञ्जोरसोनामसर्वकुष्ठकुलान्तकृत् ।
निम्बखदिरवांकोलराजवृक्षस्यमूलकम् ॥
कषायंपाययेच्चानुचर्मकुष्ठविनाशकृत् ।

चन्द्रोदय और अभ्रककी भस्म दोनो समान भाग लेकर बेलके रससे एक दिन खरल करे, फिर नीलके रससे घी डालकर लोहपात्रमें खरल करे, फिर कागनी, नीम, कपास, और तेल इनमें एक-एक दिन खरल करे तो यह ज्योतिःपुंजरस बन कर तयार हो । इसमेंसे एक माशे नित्य भक्षण करे, तथा इसी रसका जलमें लेप करे तो सर्व कुष्ठो का नाश करे, इसके ऊपर नीम, खैर, अकोल और अमलतासकी जड, इनका काढा पिलावे तो चर्मकुष्ठका नाश हो ।

कुष्ठनिकृन्तकोरसः

शुद्ध सूतंविषगन्धतुल्यताप्यंशिलाजतु ।
शुल्वतीक्ष्णंमृतंलोहसर्वंमर्द्यं दिनत्रयम् ॥
काकमाच्यादेवदाल्याकर्कोटय्यश्चद्रवैर्दृढम् ।
रुध्वान्हंभूधरेपाच्यात्रिदिनचतुराग्निना ॥
निष्कार्द्धं लेहयेत्क्षौद्रैः रसःकुष्ठनिकृन्तकः ।
भल्लातवाकुचीपथ्याविडंगलागलीतिलम् ॥
जीरकंबदरीमूलंतुल्यतुल्यगुडेनतु ।
भक्षयेदनुपानोऽयंहन्तिकुष्ठविचर्चिकाम् ॥

शुद्ध पारा, गन्धक, सिगिया विष, सोना मक्खी, शिलाजीत, तांबे की भस्म, खेडी लोह की भस्म और साधारण लोह की भस्म सबको एकत्र कर काक माची (मकोय) वन्दाल और ककोडा इन प्रत्येक के रस से तीन २ दिन खरल करे, फिर इस को भूधर यंत्र में रख के तीन दिन तुषाग्नि देवे, चौथे दिन निकाल कर ४ माशे भक्षण करे, और ऊपर से भिलाए, बावची, हरड वायविडंग, कलियारी, तिल, जीरा, बेर की जड प्रत्येक समान भाग ले और सब की बराबर गुड मिला कर खाय, यह अनुपान है । इस के खाने से कोढ, विचर्चिका आदि दूर हो ।

चन्द्ररुद्रोरसः

एकवीराशखपुष्पीगोजिह्वाहरिणीखुरी ।
विष्णुक्रान्ताकंटकारीजीवन्तिक्षीरसारिवा ॥

मेघनादोदेवदारुब्राह्मीबीरातुदंतिका ।
सर्पाक्षीवेतसनीलापलसकाकमाचिका ॥
मुनिपत्रद्रवैस्तेषांद्वित्राणांचार्द्रकैर्दिनम् ।
मर्दयेत्सूतकंगाढंमृतपात्रे तैर्द्रवैःपचेत् ।
करीषाग्नौदिवारात्रौस्वांगशीतलमुद्धरेत् ॥
एतत्तुल्यशुद्धगन्धमद्य वाकुचिकाद्रवैः ॥
तद्वीजोत्थैःकषायैर्वादिनान्तेवटकीकृतम् ।
चन्द्ररुद्रोरसोनाम्नानिष्कार्द्धे चर्चिकापहा ॥

एक बीरा, सखाहूली, गोभी, हरिनखुरी, कोयल, कटेरी, डोडी, चीर काकोली, सारिवा, चौलाई, देव दारु, ब्राह्मी, बीरा, दन्ती, सरफोका बेत, नीली, पलस, मकोय और अगस्तिया के पत्तो का रस तथा अदरक इनमे जो औषधि एक या दो मिलें उन के रस से पारे को खूब मर्दन करे, फिर उन के रस सहित पारे को भट्टी पर रख कर करीषाग्नि से एक दिन और रात्रि पचन करावे, जब स्वांग शीतल हो जाय तब उतारकर पारे की बराबर गन्धक मिलाय बावची के रस से एक दिन खरल करे, अथवा बावची के बीजो के काढे से खरल कर गोलिया बनावे। तो यह चन्द्ररुद्र रस ४ माशे नित्य सेवन करने से चिचर्चिका रोग जो कुष्ट का भेद है। उस को दूर करे।

कुष्टांकुशोरसः

शुद्ध सूतद्विधागंधमर्दयेद्वाकुचीद्रवैः ।
निर्गुंड्याश्चद्रवैश्चाह्नं तद्गोलंशोषयेत्ततः ॥
गोलतुल्येताम्रपत्रे हण्डिकान्तर्निरोधयेत् ।
लेपयेल्लावणैर्मृत्स्नचसराबेतानिरोधयेत् ॥
सिकतापूरयेद्भाण्डेरुध्वाचुल्यापचेल्लघु ।
पञ्चयामैस्ततस्समुद्धृत्यचूर्णं तत्त्रिफलासमम् ॥
त्रिफलांशंभृंगिचूर्णं सर्वतुल्यञ्चवाकुची ।
समतत्रविचूर्ण्याथसंस्कारश्चात्रकथ्यते ॥
वन्हिनिम्बराजवृक्षंकरवीरकरञ्जकम् ।
मूलकल्कंसमंकृत्वागोमूत्रे ष्टगुणेपचेत् ॥
पादशेषंसमुत्तार्यवस्त्रपूतंपुनःपचेत् ।
ताम्रपात्रे द्रवीभूतेपूर्वचूर्णं पचेल्लघु ॥
तत्रैवखदिरकार्थःचपेत्पालाशजंतथा ।
तुल्यैं क्वाथैःपचेत्तावद्यावत्पिण्डत्वमागतम् ॥
भक्षयनिष्कनिहन्त्याशुकृष्णवैपादिकमहत् ।
रसःकुष्टांकुशोनामसर्वकुष्ट नियच्छति ॥

पारा ४ तोले, गन्धक ८ तोले, दोनोको बावची और निर्गुंडीके रसों मे एक-एक दिन खरल करे और गोला बनाकर धूपमें सुखा लेवे, फिर गोलेके समान तांबेके पत्रके पत्रले, उनको गीशी मे रखे और बीचमे उस गोलेको रखे फिर उसके मुखको पारे से बन्दकर निमक और मिट्टीसे लेप देवे, जिससे सन्धि न रहने पावे, फिर उसको बालुका यन्त्रमे रखके चूल्हेपर चढाक नीचे अग्नि जलावे, और छ प्रहर मन्दाग्नि देवे। फिर शीतल कर गोलेको निकाल बराबरका त्रिफला चूर्ण मिलावे, और त्रिफलाका चतुर्थांश भागरेका चूर्ण मिलावे, और सब की बराबर बावची का चूर्ण मिलावे, सबका चूर्णकर चीता, नीम, अमलतास, कनेर और कजा इनकी जडका कल्क करके तथा अठगुना गोमूत्र ले सबको एकत्र करके पचावे, जब चतुर्थांश रहे तब उतार लेवे उसको कपडेसे छान लेवे, उसको तांबे के पात्र मे औटावे और पूर्वोक्त गन्धक पारेके गोले को चूर्ण कर, डाल देवे, तथा इस मे खैर सार का काढा पथा ढाक का काढ़ा, ये काढे समान भाग लेवे सब को औटावे जब गाढा हो जावे तब इस में से ४ माशे के अनुमान भक्षण करे। तो काली विपादिका तथा सम्पूर्ण कोढ के रोग इन सबको यह कुष्ठाकुश रस दूर करता है।

कुष्ठहरितालेश्वरः

हरितालंभवेद्भागंद्वादशोत्रविशुद्धमत् ।
गन्धकोपितथाग्राह्योरस सप्तोऽत्रदीयते ॥
कृष्णाभ्रकमपिश्लक्ष्णखल्लेकृत्वाविमर्दयेत ।
अकोटमूलनीरेणसेहुण्डीपयसाथवा ॥
अर्कदुग्धेनसर्पिष्यकरवीरजलेनच ।
काष्ठोदुम्बरनीरेणपेपणीयोरसोभृशम् ॥

शुद्धताम्रकोठरेचक्षेपणीयोरसेश्वरः ।
पञ्चगुञ्जाप्रमाणेनकाष्ठोदुम्बरवारिणा ॥
कुष्ठाष्टादशसंख्येषुदेयएवभिषग्वरः ।
अचिरेणैवकालेनविनाशंयान्तिनिश्चयः ॥
पथ्यसेवाविधातव्याप्रणतिःसूर्यपादयोः ।
साधकेनतथासेव्योरसोरोगौघनाशनः ॥
पिप्पलीभिःसमंदद्यात्कुष्ठरोगेरसेश्वरः ।

शुद्ध हरिताल १२ तोले, शुद्ध गन्धक १२ तोले, शुद्ध पारा ७ तोले, काली अभ्रककी भस्म ७ तोले, सब को खरल मे डाल के एकोल की जड के रस थूहर के दुध मे आक के दूधमे कनेर के जल में और कट्टूमर के रस से प्रत्येक मे पृथक् २ खरल कर तावे को डिव्वी मे रख सपुटमे रख के फूक देवे, तो यह रस सिद्ध होवे। इस मे से पाच रत्ती कठूमर के रस से खाय तो अठारह प्रकार के कुष्ठ तत्काल नष्ट होवे, इसके ऊपर रोगी को पथ्य सेवन करना चाहिये और सूर्य नारायण का आराधन करकरे। इस प्रकार सर्व रोग समूह नाशक रसका सेवन करे, इस रस को कुष्ठ रोग में पीपल के चूर्ण के साथ देना चाहिये।

राजराजेश्वरः

त्रिफलाखादिरसारसमृतात्रागुचीफलम् ।
आतपेमर्दयेत्सूतंगन्धकमृतताम्रकम् ॥
सुहस्तमर्दितसूतयावत्तत्रविलीयते ।
भृंगराजद्रवंदत्वादिनमात्र विमर्दयेत् ॥
प्रत्येकसूततूल्यस्याच्चूर्णीकृत्यविमर्दयेत्।
मध्वाज्याभ्यालोहपात्रेकर्षाभ्यांभक्षयेत्ततः ।
दद्रुकिटिभकुष्ठानिमण्डलानिविनाशयेत् ॥
द्विगुञ्जोपिनिहन्त्याशुराजराजेश्वरोरसः ।

हरड, बहेडा, आंवला, खैर सार, गिलोय, बावची, प्रत्येक एक २ तोले लेवे, फिर शुद्ध पारा, गन्धक और तावे की भस्म, इन सब को हाथों से इस प्रकार मले कि पारद दीखने से बद हो जावे, फिर इस कजली को एक दिन भागरे के रस से खरल कर पूर्वोक्त त्रिफलादि औषधियो को पारे की बराबर मिलावे और सब का चूर्ण कर सहत और घी के साथ लोह पात्र मे खरल करे। इस मे से दो रत्ती भक्षण करे तो दाद् किटिभकुष्ठ, मंडल इन को दूर करे यह राजराजेश्वर रस है।

पारिभद्ररसः

मूर्च्छितंसूतकंधात्रीफलनिम्बस्यचाहरेत् ।
तुल्यांशंखदिरक्वाथैर्दिनंमर्द्यञ्चभक्षयेत् ॥
निष्कैकंदद्रुकुष्ठघ्नःपारिभद्राह्वयोरसः ।

चन्द्रोदय, आवले, निबोली, प्रत्येक समान भाग ले सबकी बराबर खैरसारके काढेसे एक दिन खरल कर ४ माशे नित्य भक्षण करे तो दाद और कोढोको यह पारिभद्राख्यरस दूर करे।

प्रलेप

गंधकंमूलकक्षारमार्द्रकस्यरसैर्दिनम् ।
मर्दितहन्तिलेपेनसिध्मतुदिनमेकतः ॥
कृष्णधत्तूरजमूलगंधतुल्यविचूर्णयेत् ।
मर्द्यंजंबीरनीरेणलेपनसिध्मनाशनम् ॥
अपामार्गस्यपंचागंकदलीद्रवसयुतम् ।
पुटदग्धञ्चगोमूत्रैर्लेपनंदद्रुनाशनम् ॥
येचक्रमर्दस्यबीजञ्चदुग्धेपिष्ट्वाविमर्दयेत् ।
गंधर्वतैलसयुक्त मर्दनात्सर्वकुष्ठजित् ॥

गन्धक और मूलीका क्षार दोनोको समान भाग लेकर अदरकके रसमे एक दिन खरल करे, इसके लगानेसे विभूतिका रोग नष्ट होवे। काले धतूरेकी जड और गन्धक दोनो बराबर ले खरल में पीसकर जभीरीके रसमे खरलकर लेप करे तो विभूतिरोग नष्ट होवे। अथवा ओगाके पञ्चागको केलेके पानीमे खरल कर उसमें अग्निका जला निमक मिलाय गोमूत्रसे लेप करे तो दाद् नष्ट हो, अथवा पमार के बीज दूधमे पीसकर अंडी का तेल मिलाय देहमे मालिश करे तो सर्व प्रकार के कुष्ठ दूर होवें।

लंकेश्वरोरसः

भस्मसूताभ्रशुल्वानिगन्धतालशिलाजतु ।
अम्लवेतसतुल्याशंत्र्यहंदत्वाविमर्दयेत् ॥
मध्वाज्याभ्यांवटीकुर्य्याद्द्विगुञ्जाभक्षयेत्सदा
कुष्टंहन्तिगजसिंहोरसोलंकेश्वरोमहान् ॥
त्रिफलानिम्बमंजिष्ठावचापाटलमूलकम् ।
कटुकारजनीक्वाथचानुपानप्रयोजयेत ॥

पारेकी भस्म, अभ्रककी भस्म, तांबेकी भस्म गन्धक, हरताल और शिलाजीत इन सबको समान भाग लेकर अमलवेतके रसमे तीन दिन खरल करे, फिर सहत और घी से मिलाके दो-दो रत्तीकी गोलिया बनावे. एक गोली नित्य भक्षण करे तो यह लंकेश्वररस कुष्ठरूप हाथीके नाश करनेको सिंहरूप है। त्रिफला, मजीठ, वच, पाढरकी जड़, कुटकी, और हलदी इनका काढा करके इसके ऊपर पीना चाहिये ।

भूतभैरवोरसः

शुद्धंपञ्चदशात्रतालकमितशुद्धयश्चषड्गन्धकः सप्ताष्टौनवतिंतिडीयकफलान्क्वाथेन्याकाना दश ॥ सेमण्डयार्कपयोभिरेवसततसचूर्ण्य तद्भाव्यतं । रोहीतस्यजटारसेनमर्दितश्लक्ष्ण ततःखल्लितम् ॥ एकीकृत्यसमस्तमेतदपित तूटकैकमेतज्जयेत् ॥ पश्चाद्वासविशुद्धवारिस हितकिञ्चिचततत्पीययेत् । ताम्बूलंशशिखण्ड मण्डितवटीमिश्रततःस्वापयेत् ॥ शय्यायामृग लोचनापरिभृतौकर्माणिसपादयेत् । देह वीक्ष्यसुखंमुखनविरसविज्ञायसम्यक्सुधीः। छागीदुग्धमिहैतदेवमुदिततक्रञ्चततपाययेत् नित्यशांन्तिमिदकरोतिनिहितसर्वौषधेर्वर्जित । सामग्रामसमग्रमग्निमवरनीलञ्चपीतारुण म् ॥ श्वेतंस्फीतमनल्पकश्रशमातप्रायःक्रिमि व्याकुलम् । गन्धालिप्तमितस्फटीकसदृशकुष्ठञ्चचोत्साधनम् ॥ अष्टाष्टादशभूतभैरव इतिख्यातक्षितौहन्तिच । वातव्याधिनिकृतन.कफकृतान्कुष्ठानिर्विशेषानयम् ॥ हन्ती तिज्वरमुग्ररूपमर्धाकदाहाभिधानामयम् ॥ कुर्य्याद्रूपमनगरगगुणभृद्भृगास्पदंविग्रहम् ॥ एवसमासातकुरुतेसमासात्पथ्यञ्चतथ्यंसंकलकरोति । भुञ्जीतभुक्त सततंप्रदिष्टंघृतघृतम्वाविकृततदेव ॥ स्वच्छन्ददुग्धेनसुखेनजगद्घपथ्यतदेतत्प्रवदन्तिसन्तः। कुष्ठस्यदुष्टस्य निराकरोतिगात्रञ्चकुर्य्याच्छुभगंवयुक्तम् ॥

शुद्धहरिताल १५ तोले, शुद्धगन्धक ६ तोले, दोनोंको खरलकर नवीन तिंतडीकके रसकी सात आठ अथवा नौ भावना देवे तथा करेलेके रसकी दश भावना देवे, थूहरके दूधकी आकके दूधकी निरन्तर भावना देकर चूर्ण करे, तथा रोहिडेकी जड़के काढेमें खरलकरे, फिरसबको एकत्र खरलकर ४ माशे नित्य सेवन करे । ऊपरसे शुद्ध जल पीवे, तिसके ऊपर भीमसेनी कपूरयुक्त पानकी बीडी खाकर सोजावे, और शय्यापर सुन्दर स्त्री सहित रतिकर्म करे, परन्तु बलानुसार करे, यदि देखे कि मुख विरस नही हुआ तो बकरीका दूध और छाछ पीवे, नित्य शान्तवेश होकर और सर्वौषधि वर्जित होकर इस ओषधिका प्रयोगकरे, तो यह आम सहित सम्पूर्ण घोर नीले, पीले लाल सफेद और दुष्टरगके जिनमे कीडे पडे, दुर्गन्धितयुक्त, फटे हुए ऐसे अठारह प्रकारके कुष्ठोंको यह भूत-भैरवरस दूर करे । वातव्याधिको दूर करे, ज्वर और दाहको दूर करे, देहको कामदेव के समान सुन्दर करे, इस प्रकारके गुण कहे है, इसको पथ्यके साथ खाय जो पथ्य कुष्ठरोगपर कहा है वो करे । घृत और घृतके पदार्थ सेवन करे दूधके साथ यथेष्ट भोजन करे, यह रस दुष्टकुष्ठको नाश करे और देहको सुगन्धित करे ।

अर्केश्वरः

पलानीशस्यचत्वारिवलेद्वादशशतावती ।
ताम्रस्यचक्रिकादेयारसस्योर्ध्वंशरावकम् ॥
दत्वाविवृद्धभाण्डस्थंपूरयेद्भस्मनादृढम् ।
अग्निप्रज्वालयेद्यामद्वयशीतविचूर्णयेत् ॥
पुटेद्द्वादशधासूर्यदुग्धेनालोडितंपुनः ।

वरापावकभृंगानांद्रवैस्त्रीण्येवभावयेत् ॥
अयमर्केश्वरोनाम्नारक्तमण्डलकुष्ठजित् ।

पारा ४ तोले, शुद्ध गन्धक १२ तोले, दोनो को खरलकर टिकिया बनावे, इनको तावेके पत्र के बीचमें रखकर उसे सरवेमें बन्दकर वालुकायंत्र में रखे, फिर यन्त्रको भट्टीपर चढायके दो प्रहरकी तीव्र अग्नि देवे । स्वांग शीतल होनेपर टिकियाओं को निकाल चूर्णकर डाले, फिर १२ पुट आकके दूधके देवे । पश्चात् त्रिफला, चीता, भागरा इनके रसोकी तीन २ भावना देवे तो यह अर्केश्वररस सिद्ध हो । यह रुधिरके चकत्तोको दूर करे ।

महातालेश्वरोरसः

तालताप्यशिलासूतशुद्धटकणसैन्धवम् ।
सममचूर्णयेत्खल्ले सूताद्द्विगुणगधक ॥
गंधाद्द्विगुणलोहञ्चजम्वीराम्लेनमर्दयेत् ।
ततोलघुपुटेपाच्यस्वागशीतसमुद्धरेत् ॥
त्रिंशदंशंविषचात्रक्षिप्त्वासर्वंविचूर्णयेत् ।
माहिषाज्येनसंमिश्रंनिष्कद्वंभक्षयेत्सदा ॥
मध्वाज्यैर्वाकुचीचूर्णंकर्षमात्रं लिहेदनु ।
सर्वान्कुष्ठान्निहन्त्याशुमहातालेश्वरोरसः ॥

हरताल, सुवर्णमाक्षिक, मनसिल, शुद्धपारा, फुलाया हुआ सुहागा, और सेंधानिमक इन सबको समान भागले और पारेसे दूनी गन्धक लेवे, और गन्धकसे दूनी लोह भस्म, सबको खरल कर जंभीरीके रससे घोटकर लघुपुटमे रख फूक देवे, जब स्वांगशीतल होजावे तब निकाल इस रससे तीसवा भाग सिंगियाविष मिलाय सबका चूर्ण करलेवे, इसमेंसे दो माशे रस भैंसके घीमे मिला कर सेवन करे, अथवा सहत और घीके साथ भक्षण करे ऊपरसे एक तोला बावचीका चूर्ण फांके तो यह महातालेश्वर रस तत्काल सपूर्ण कुष्ठोंका नाश करे ।

विजयभैरवः

सप्तकचुकनिर्मुक्तमूर्द्धे वलग्नरसेन्द्रकम् ॥
मृत्कटाहान्तरेतत्रस्थापयेच्चसमंत्रकम् ।
सूताद्द्विगुणिततालंकूष्माण्डद्रवशोधितम् ।
दोलायन्त्रेणतैलादौसप्तधापरिशोधितम् ॥
दत्वालवैर्द्रवैर्भिंटयाःकिंचिदाप्लाव्ययुक्तितः
तयोर्द्विगुणितभस्मपलाशस्योपरिक्षिपेत् ॥
पुनर्भिण्टीद्रवेणैवसर्वमाप्लाव्ययत्नतः ।
खाखशाखरसैर्भूयःपरिप्लाव्यचपाकजित् ॥
पचेदवहितोवैद्यःसालांगारेणयत्नतः ।
चतुर्विंशतियामंतुपक्त्वाशीतलतांनयेत् ॥
अवतार्यकाचपात्रे विधायतदनन्तरम् ।
प्रयत्नेनकृतप्रायश्चितःशोधितदेहकः ॥
निशाहरीतकीयुक्तंखादेद्रक्तिचतुष्टयम् ।
रक्तिकैकक्रमेणैववर्द्धयेद्दिनसप्तकम् ॥
मधूदकपिवेच्चानुनारिकेलजलचवा ।
जिंगिनीसभवकाथमथवाक्षौद्रनागरम् ॥
अभ्यगसुरभिस्तैलैःकुर्यात्ताम्बूलचर्वणम् ।
पवनानलसूर्यांशुमत्स्यमांसदधीनिच ॥
शाकंककारपूर्वंचवर्जयेन्मतिमान्नरः ।
वातरक्तमाममिश्रमामचापिसुदारुणम् ॥
सर्वकुष्ठंचाम्लपित्तविस्फोटचमसूरिकाम् ।
विजयाख्योरसोनाम्नाहंतिदोषानसृग्दरान् ॥

सात कचुकी (काचली) रहित, डमरूयन्त्र मे ऊपर लगेहुए शुद्धपारेको मिट्टीके कढ़ावमें मन्त्र जाप पूर्वक स्थापन करे, पारेसे दूनी पेठेके रस की सुधी हरिताल ले उसको तेल, छाछ आदिमे सातवार शोधन कर लेवे, फिर पियाबासेके रससे उस हरितालको भिगो लेवे, हरितालसे दूनी ढाक की राख ले, उसको एक पात्रमे आधी भरकर बीचमे हरितालके टुकडोको रख ऊपरसे बचीहुई राखसे दबादे, और अग्निपर रखके पचावे फिर स्वाग शीतल होनेपर पियावासेके रससे भिगोकर खाक से रसमे भिगोवे, पीछे सालकी लकडीके अ गारो मे पचावे, २४ प्रहरकी अग्नि देकर उतार लेवे, स्वांगशीतल होनेपर हरतालको उस यन्त्रमेसे धीरे सेनिकालकर काचकी शीशीमे भरकर रखदे, फिर कुष्ठरोग का प्रायश्चित् करके और वमन विरेचन द्वारा शुद्धदेह करके ४ रत्ती हरिताल मिश्री और

हरडके साथ सेवन करे। फिर क्रमसे नित्य एक २ रत्ती बढावे, इस प्रकार सात दिन करे, इसके ऊपर सहत और जल मिलाकर पीवे, अथवा नारियलका जल पीवे, तथा जिंगिनी का काढा तथा सहत और सोंठ सात दिन सेवन करे, सुगंधित तेलोकी मालिश करे और बीडेका चबाना इस हरताल का सेवन करने वाला अत्यन्त पवन का खाना, अग्निमे तापना, धूपमें रहना, मछली का मास, दही और ककार पूर्वक शाक, (करेला, कोहडा, आदि) इन सबको यत्न पूर्वक त्यागदेवे तो यह वातरक्त, आममिश्रित वातरक्त, घोरआमवात, सर्व प्रकारके कुष्ठ, अम्लपित्त, विस्फोटक, मसूरिका, और रक्तप्रदर, इन सबको यह विजयाख्य रस दूर करे।

कुष्ठारिरसः

काष्ठोदुम्बरिकाचूर्णंब्रह्मदन्तीबलात्रिकम्।
प्रत्यहमधुनालीढंवातरक्तंनिहन्तिच॥
स्रवद्रक्तञ्चरन्मांसमासमात्रेणसर्वथा।
गलत्पूयपलितृकीटंत्रिटंकंसेव्यमीरितम्॥

कटूमरका चूर्ण, ब्रह्मदन्ती, बला, अतिबला, और नागबला प्रत्येक समान भाग लेकर चूर्णकर सहतके साथ चाटे तो वातरक्त दूर हो जिससे रुधिर और मास निकलते हो, राध पडगई हो, और कीडे किलाबिलाते हो ऐसा कोढ भी इस कुष्ठारीरसके सेवन करतेही २ महीनेमे दूर होवे।

षडाननगुटिका.

विशोषणटकणपारदश्चसगन्धचूर्णंचसमांशयुक्तम्। जैपालचूर्णंद्विगुणगुणान्वितम॥
समर्द्य सर्वंगुडिकाविधेया। विरेचनीसर्वविकारनाशिनिलध्वीहितादीपनपाचनीयम्॥
कुष्ठेहितातीव्रतरेहिशूलेचामाशयेचाश्मगतेविकारे। सशोधनीशीतजलेनसम्यक्सग्राहणीचोष्णजलेनयुक्ता।

कालीमिरच, सुहागा, पारा, गन्धक और जमालगोटा प्रत्येक समान भाग लेवे सब औषधियोंसे दूना गुड मिलावे, सबको कूटपीस एक जीकर गोली बनावे। यह गोली दस्तावर, सर्वविकार नाशकर्त्ता, हलकी, दीपनी, और पाचनी है, कुष्ठरोगमे हितकारी, उग्रतर शूलरोगमे हितकारी, आमाशयके रोग, पथरी, इनको दूर करे। शीतल जलके साथ दस्त करावे और इसके ऊपर गरमजल पीनेसे दस्त बन्द हो।

कुष्ठनाशनः

चिरिविल्वपत्रपथ्याशिरीषश्चविभीतकम्।
काष्ठोदुम्बरिकामूलंमूत्रेरालोडयफेणितम्॥
कर्षमात्रंपिवेद्रोगीगोस्तन्यासहटकणम्।
सप्तसप्तकपर्य्यन्तसर्वकुष्ठविनाशनम्॥

कजा, वेलपत्र, हरड, सिरसकी छाल, वहेडा कठूमरकी छाल इन सबको गोमूत्रमे मिलाकर मथडाले फिर थोडी देर बाद इसमेंसे एक तोले पीवे, तथा इसके ऊपर भुना सुहागा मिलाके मुनक्का दाख खाय, इस प्रकार ४९ दिन पर्य्यन्त सेवन करे तो यह कुष्ठमात्रको दूर करता है।

विजयानन्दः

अथचित्रस्यवक्ष्यामिनाशनोपायमुत्तमम्।
शुद्धसूतस्यभागैकद्विभागशुद्धतालकम्॥
मृत्कटाहान्तरेपूर्वस्थापयेच्चसमंत्रकम्।
द्वयोःसमपलाशस्यभस्मतस्योपरिक्षिपेत्॥
चक्रंमृत्कर्पटेलिप्त्वाशोषयेच्चखरातपे।
चतुर्विंशतियामतुपक्त्वाशीतलतांनयेत्॥
अवतार्यकाचपात्रेस्थापयेदतियत्नतः।
विधिवत्सेवितश्चाऽसौहन्तिश्वित्रंचिरन्तनम्
सर्वकुष्ठनिहन्त्याशुभास्करस्तिमिरंयथा।
रसोयश्वित्रनाशायब्रह्मणानिर्मितःपुरा॥
विजयानन्दनामायंनिगूढःक्षितिमण्डले।

अब चित्रकुष्ठके दूर करनेका उत्तम उपाय कहते हैं, शुद्धपारा ४ तोले, शुद्धहरताल ८ तोले दोनो औषधियोको मन्त्रपूर्वक मिट्टीके पात्रमे स्थापित करे, दोनोके समान ऊपरसे ढाककी राख से दबा देवे फिर पात्रके मुखपर कपरमिट्टी देकर

धूपमें सुखा लेवे, फिर चूल्हेपर चढ़ाय २४ प्रहर की अग्नि देकर शीतल करे, फिर उस हरतालको निकाल उत्तम शीशीमें भरकर रख छोडे, इसको विधिपूर्वक सेवन करे तो प्राचीन चित्रकुष्ठको दूरकरे. यह सब कुष्ठोंको दूर करे। यह विजयानन्दरस चित्रकुष्ठके दूर करनेको पहले-पहल ब्रह्मदेवने निर्माण किया है।

श्वित्रदद्रौपाटलालेपः

अश्वहारजनीहेमप्रत्यक्पुष्पीप्रदह्यच ।
चूर्णंश्वरवर्जिकाक्षारनीरदत्वाप्रपेपयेत् ॥
प्रस्थयित्वाततःस्थानमण्डलाम्रे णालिप्यति ।
पाटलानिपतन्त्यगेविस्फोटाश्चातिदारुणाः ॥
सम्भवतितिलारक्ताःकृष्णवर्णाभवन्तिते ।
मिलन्तिस्वशरीरेचदिव्यरूपोभवेन्नरः ॥

कनेर, हल्दी, धतूरा, और सफेद ओंगा इन सबका खार लेवे, और सज्जीखार सबको पानीसे पीसके जहा चित्रकुष्ठ सफेद दाग हो उस जगह खुजाके लगावे तो उस ठौरसे उसी समय घोर फोडे उत्पन्न हो जावेंगे फिर उस जगह लाल तिल हो जायगे फिर वे काले होकर देहमे मिल जावेंगे, और दिव्यरूप हो जायगा। यह पाटलालेपक होता है।

श्वित्रहरोलेपः

सैंधावरविदुग्धेनपेषयित्वाथमण्डलम ।
प्रस्थयित्वाप्रलेपोयंश्वित्रकुष्ठविनाशनः ॥

सैंधा निमकको आकके दूधमे पीसके सफेद चकत्तोंपर लेप करे। परन्तु उन चकत्तोंको प्रथम पछना दे लेवे तो यह लेप चित्रकुष्ठका नाश करे।

कुष्ठश्वित्रनाशनोलेपः

मुखेश्वेतेचसञ्जातेकुर्य्यादिमाप्रतिक्रियाम् ।
गन्धकंचित्रकाशीशंहरितालफलत्रयम ॥
मुखेलिप्येद्दिनेकेनवर्णनाशीभविष्यति ।

यदि चित्रकुष्ठके कारण प्राणीका मुख सफेद होजावे तो यह उपाय करे, गधक, चीतेकी छाल कसीस, हरिताल, और त्रिफला इन सबको जल मे पीसकर मुखपर लेप करे तो एकही दिनमे यह वर्णको पलट देवे।

गुञ्जादिलेपः

गुंजाफलाऽग्निचूर्णंचलेपनंश्वेतकुष्ठजित् । शिलापामार्गभस्मापिलिप्त्वाश्वित्रविनाशयेत् ॥

घूघची और चीतेकी छाल दोनोको पीस कर लेपकरे तो चित्रकुष्ठ दूर हो अथवा मनसिल और ओंगाका खारकर जलमें पीसके लेपकरे तो चित्रकुष्ठ दूर होवे।

रसमाणिक्यम्

तालकंवशपत्राख्यकूष्माण्डःसलिलेक्षिपेत् ।
सप्तधावात्रिधावापिदध्नाम्लेनचवापुन. ॥
शोधयित्वापुनःशुष्कचूर्णयेत्तण्डुलाकृति ।
ततःशरावकेपात्रेस्थापयेत्कुशलोभिषक् ॥
वदरीपत्रकल्केनसन्धिलेपचकारयेत् ।
अरुणाभमध.पात्रंतावज्ज्वालाप्रदीयते ॥
स्वागशीतसमुद्धृत्यमाणिक्याभोभवेद्रसः ।
तद्रक्तिद्वितयखादेत्घृतभ्रामरमर्द्दयेत् ॥
सपूज्यदेवदेवेशकष्टरोगाद्विमुच्यते ॥
स्फुटितगलितकुष्ठंवातरक्तंभगंदरम् ।
नाडीव्रणव्रणदुष्टमुपदंशविचर्चिकाम् । नासास्यसभवान्रोगान्क्षतान्हन्तिसुदारुणाम्
पुण्डरिकचर्मदलविस्फोटमण्डलतथा ।

हरितालको नरसल और पेठेके रसमे मिला के सातबार अथवा तीनवार शोधन करे अथवा दहीके पानीमे शोधन करे, फिर सुखाकर कूटे, और कूटकर चावलके वराबर छोटे छोटे टुकडे करे फिर उनको चतुर वैद्य सराव संपुटमे रखके वेरके पत्तोके कल्कसे सधियोंको लेपकर बन्दकर देवे, फिर अग्निपर चढावे,जब तक पात्र नीचेसे लाल न होवे तब तक अत्यन्त तीव्र अग्नि देवे, फिर स्वाग शीतल होने पर उसमेंसे हरितालको निकाल लेवे, तो इसका रंग माणिकके समान लाल होजायगा। इसमेसे दो रत्ती सहत और घी

के साथ खाय, प्रथम श्री परमात्माका पूजन करे, तो यह कुष्ठरोगको नाश करे। स्फुटितकुष्ठ, गलितकुष्ठ, वातरक्त, भगदर, नाडीव्रण, दुष्टघाव, उपदंश (गरमीका रोग) विचर्चिका, नाकके रोग मुखके रोग, घोरघाव, पुण्डरीककुष्ठ विस्फोटक, और मण्डलकुष्ठ इन सबको यह माणिक्यरस दूर करे।

शीतपित्तोदर्दकोष्ठाधिकार:

यमानीगुडसमिश्रसूतभस्माद्विवल्लक: ।
शीतपित्तनिहन्त्याशुकटुतैलविलेपनम् ॥
सिद्धार्थरजनीकल्कप्रपुन्नाटतिलै:सह ।
कटुतैलेनसमिश्रमेतदुद्वर्त्तनंहितम् ॥
दूर्वानिशायुतोलेप:कच्छूपामाविनाशन ।
कृमिदद्रुहरश्चैवशीतपित्तहर:पर: । कुष्ठोक्ता
श्चक्रियांकुर्य्यात्सर्वयुक्त्याचिकित्सक: ॥
शीतपित्तेनतोदर्देकुष्ठेचैवसमासत. ॥

४ रत्ती पारे की भस्म को अजमायन और गुड मे रख के खाय तो शीत पित्त, (पित्ती का रोग) दूर हो अथवा कडुए तेल की देह से मालिश करे तो पित्ती शान्त होवे, अथवा सफेद सरसों और हलदी इन दोनो के कल्क को पमार के बीज और तिल इन का कडुए तेल से मिला कर पीसे फिर इस का लेप करे तो शीत पित रोग दूर हो। अथवा दूब और हल्दी दोनो को एकत्र पास लेप करे तो खुजली आदि रोगों को, कृमि, दाद, और शीत पित्त इन को दूर करे, शीत पित्त, उदर्द और कोढ इन पर कुष्ठोक्तचिकित्सा वैद्य अपनी युक्ति से करे।

अम्लपित्तचिकित्सा

अम्लपित्तान्तकोरस:

मृतसूताभ्रलोहानांतुल्यापथ्याविमर्दयेत् ।
माषमात्रं लिहेत्क्षौद्रैरम्लपित्तप्रशान्तये ॥

चन्द्रोदय, अभ्रक की भस्म और लोह भस्म समान भाग ले सब के बराबर हरड मिला कर चूर्ण करे। इस मे से एक मासे को सहत के साथ चाटने से अम्ल पित्त का नाश होता है।

लीलाविलासोरस:

रसोवलिर्व्योमरविश्चलौहधात्र्यम्बुनीरैस्त्रिदिनंविमर्द्य । तदल्पघृष्टंमृदुमार्कवेणसमर्दयेदस्यचवल्लयुग्मम् ॥ हन्त्यम्लपित्तंमधुनावलीढलीलाविलासारसराजएष: । छर्दिंसशूलहृदयस्यदाहनिवारयेदेषनसंशयोस्ति ॥

शुद्ध पारा, गन्धक, अभ्रक, ताम्रेश्वर और सार इन सब को समान भाग ले कर आमले के रस से तीन दिन खरल करे, फिर भागरे के रस मे खरल कर चार २ रत्ती की गोलिया बनावे। इन को सहत के साथ सेवन करे तो अम्ल पित्त, वमन, शूल, हृदय का दाह, इन सब को यह लीलाविलास रस दूर करे।

पानीयभक्तवटिका.

त्रिवृतामुस्तकञ्चैवत्रिफलात्र्यूषणंतथा ।
प्रत्येकन्तुपलभागन्तदर्द्धौरसगन्धकौ ॥
लौहाभ्रकविडंगानांप्रत्येकञ्चपलद्वयम् ।
एतत्सकलमादायचूर्णयित्वाविचक्षण: ॥
त्रिफलाया: कषायेणवटिकाकारयेद्भिषक् ।
एकैकांभक्षयेत्प्रातस्तक्रंचापिपिबेदनु ॥
हन्तिशूलंपार्श्वशूलंकुक्षिवस्तिगुदेरुजम् ।
श्वासंकासंतथाकुष्ठंग्रहणीदोषनाशिनी ॥

निसोथ, नागर मोथा, त्रिफला, सोठ मिरच और पीपल प्रत्येक चार २ तोले लेवे, एव पारा और गन्धक दो २ तोले ले, लोह भस्म वायविडंग और अभ्रक प्रत्येक आठ २ तोले ले, इन सब को चूर्ण कर त्रिफला के काढे से गोलियां बनावे, एक २ गोली नित्य प्रात.काल खाय ऊपर से छाछ पीवे, तो शूल, पसवाडे का शूल, कूँख, मूत्राशय और गुदाकी पीडा, श्वास, खासी, कोढ और संग्रहणी इत्यादि दोषो को नाश करे।

क्षुधावतीवटी.

आशुभक्तोदकैःपिष्टमभ्रकतत्रसंस्थितम् ।
कनूमानास्थिसंहारखण्डकर्णरसैरथ ॥
तण्डुलीयश्चशालिश्चकालमारिषजेनच ।
वृश्चीरबृहतीभृङ्गलक्ष्मणाकेशराजकैः ॥
पेषणंभावनकुर्य्यात्पुटञ्चानेकशोभिषक् ।
यावन्निश्चन्द्रकंतत्स्यान्छुद्धिरेवविहायसः ॥
स्वर्णमाक्षिकशालिश्चध्मातनिर्वापितजले ।
त्रैफलेऽर्थावचूर्ण्यैवलौहकान्तादिकंपुनः ॥
बृहत्पत्रकरीकर्णत्रिफलावृद्धदारजैः ।
माणकन्दास्थिसहारशृङ्गवेरभवैरसैः ॥
दशमूलीमुण्डितिकातालमूलीसमुद्भवैः ।
पुटितसाधुयत्नेनशुद्धिमेवमयोव्रजेत् ॥
वशिरश्वेतबाट्टालमधुपर्णीमयूरकम् ।
तण्डुलीयचवर्षाह्व दत्वाथश्चोर्द्ध्वमेवच ॥
पाच्यंसुजीर्णमण्डूरंगोमूत्रेणादिनत्रयम् ।
अन्तर्वास्यमदग्धंचतथास्थाप्यदिनत्रयम् ॥
विचूर्णितशुद्धिरियंलौहकिट्टस्यदर्शिता ।
जयन्त्यावर्द्धमानस्यआर्द्रकस्यरसेनतु ॥
वायस्याश्चानुपूर्व्येवमर्द्दनरसशोधनम् ।
गन्धकनवनीताख्यशुद्रितंलौहभाजने ॥
त्रिधाचण्डातपेशुष्कभृङ्गराजरसाप्लुतम् ।
ततोवह्नेर्द्रवीभूतंत्वरितवस्त्रगालितम् ॥
यत्नाद्भृङ्गरसेक्षिप्तपुनःशुष्कंविशुध्यति ।
गगनाद्द्विपलचूर्णलौहस्यपलमात्रकम् ॥
लौहकिट्टपलार्द्धंचसर्वमेकत्रसंस्थितम् ।
मण्डूकपर्णीवशिरतालमूलीरसैःपुनः ॥
वरीभृङ्गकेशराजकालमारिषजैरथ ।
त्रिफलाभद्रमुस्ताभिःस्थालीपाकाच्चचूर्णितम् ॥
रसगन्धकयोःकर्षप्रत्येकग्राह्यमेकतः ।
तन्मसृणशिलाखण्डेयत्नतःकज्जलीकृतम् ॥
वचाचव्ययमानीचजीरकेशतपुष्पिका ।
व्योषमुस्तविडंगचग्रन्थिकंखरमजरी ॥
त्रिवृताचित्रकोदन्तीसूर्य्यावर्त्तःसितस्तथा ।
भृंगमाणककन्दाश्चखण्डकर्णकएवच ॥
दण्डोत्पलाकेशराजकालावकरकोपिच ।
एषांमद्ध्यपलग्राह्यवटघृष्ट सुचूर्णितम् ॥
प्रत्येकंत्रिफलायाश्चपलार्द्धपलमेवच ।
एतत्सर्वसमालोड्यलोहपात्रेतुभावयेत् ॥
आतपेदण्डसंघृष्टमार्द्रकस्यरसैस्तथा ।
तद्रसेनशिलापिष्टंगुटिकांकारयेद्भिषक् ॥
बदरास्थिनिभांशुष्कांस्विन्नगुप्तानिधापयेत् ।
तत्प्रातर्भोजनादौतुसेवितंगुटिकात्रयम् ॥
अम्लोदकानुपानचहितंमधुरवर्जितम् ।
दुग्धचनारिकेलंचवर्जनीयविशेषतः ॥
भोज्ययथेष्टमिष्टंचवारिभक्ताम्लकाञ्जिकम् ।
हन्त्यम्लपित्तंविविधशूलंचपरिणामजम् ॥
पाण्डुरोगंचगुल्मचशोथोदरगुदामयान् ।
यक्ष्माणपचकासांश्चमन्दाग्नित्वमरोचकम् ॥
प्लीहानंश्वासमानाहमामवातसुदारुणम् ।
गुटीक्षुधावतीसेयंविख्यातारोगनाशिनी ॥

चांवलोके पानी अथवा काजीसे रात्रि भर रख कर अभ्रकको पीसे फिर मानकन्द, अस्थिसहार, खडकर्ण, (रताल) चौलाई, शालिच, कालशाक, मरसा, वृश्चीर (सफेदपुनर्नवा) कटेरी, भांग, लक्ष्मणा, भांगरा, इन प्रत्येकके रसकी पृथक् २ भावना देकर सपुट को अग्निमे फूंक देवे, इस प्रकार ज्वतक अभ्रक निश्चन्द्र न होवे तवतक अनेक पुट दे। अब लोहकी शुद्धि कहते हैं। कि, सुवर्णमाक्षिक और चावलोके जलमे पीसकर कांत लोहपर लेपकरे और भट्टीमे रखके धमावे फिर आगे कहे हुए अमृतसार विधिसे त्रिफलाके काढा मे बारम्वार वुझावे, इस प्रकार निरुत्थ भस्म कर उसको भानुपाकादिसे शोधकर वनके बथुए, हस्तिकर्ण, त्रिफला, विधायरा, मानकन्द, अस्थिसंहार, और अदरक इनके रसकी तथा दशमूल, मुण्डी, इनके काढेके पुट देने से लोह शुद्ध होवे, अब मंडूर की शुद्धि कहते हैं। लालओगा, खरैटी, मूर्वा, ओगा, चौलाई और साठ इनकी जड, छाल और पत्तों को हांडीमे डालकर उनके ऊपर पुरानी मडूर को रक्खे फिर पूर्वोक्त पत्ते जडादिसे भरकर दवा देवे फिर गोमूत्र भरकर तीनदिन रक्खी रहने दे. फिर

अग्निपर चढाकर नीचे जलावे, परन्तु उसका धुआ बाहर न निकले इस प्रकार अग्नि देवे जब सब जलकर भस्म होजावे तब उतार लेवे, यह लोह कीटकी शुद्धिका प्रकार कहा। अब पारेकी शुद्धि कहते हैं। पारेकी अरनी, अड, अदरक और वायसी (काकतुंडी) इनके रसमे खरलकरे तो शुद्ध होवे, अब गन्धककी शुद्धि कहते हैं। गधक के टुकडे २ कर लोहेके करछुलेमे भांगरे के रसमे तीव्र खरल करे और धूपमे सुखा ले इस प्रकार तीन वार करे, फिर एक पात्रमे भागरेका रस भर मुखपर वारीक कपडा वाधदेवे फिर गन्धकको तायकर उस कपडेपर डालदेवे कि, गन्धक टपक कर भागरेके रसमे गिरजावे और जो कक्कर आदि मिले होगे वो उस कपडेमे रह जावेंगे। फिर उस रसमें से निकाल कर टुकडे २ कर धूपमे रखके सुखा लेवे तो गन्धक शुद्ध होवे।

इस प्रकार शुद्ध की हुई अभ्रकभस्म ८ तोले, सार ४ तोले, लोहकीटी दो तोले, सबको एकत्र कर मण्डूकपर्णी (ब्राह्मीका एक भेद है) ओगा सूसली इनके रसमे खरलकर स्थालीपाक कर, फिर शतावर, भाग, भागरा, कालशाक और सेमर का शाक इनके रसमे घोटकर स्थालीपाक कर पचावे, फिर त्रिफला, नागरमोथा, इनके रसमे खरलकर स्थालीपाक करे, फिर इसका चूर्णकर एक तोले पारे गन्धककी कजली करे जब अत्यन्त वारीक कजली होजावे तब वच, चव्य, अजवायन जीरा, कालाजीरा, सोंफ, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, वायविडंग, पीपलामूल, ओगा, निसोथ, चीतेकीछाल, दन्ती, सफेदहुलहुल भांग, मानकन्द, रतालू, सहदेई, भागरा, और कालावकर इन प्रत्येकको दो २ तोले लेवे, सबका चूर्ण कर त्रिफला ६ तोले लेवे, सबके चूर्ण को एकत्र कर पारे गन्धककी कजली मिलाके लोहपात्रमें डाल धूपमे रखके अदरकके रसके तीन पुट देवे, फिर उसी अदरकके रससे वेरकी गुठलीके समान गोलियां बनावे, उनको धूपमें सुखाके इनमेसे ३ गोली प्रातःकाल भोजनके पहले सेवन करे इनके ऊपर नींबू आदि खट्टे रसका जल पीवे। परन्तु मिठाईका खाना वर्जित है, तथा दूध गिरिका गोला ये त्याज्य है। इसके ऊपर यथेष्ट प्रिय जल भात खटाई और काजी सेवन करे, तो अम्लपित्त अनेक प्रकारके शूल, परिणामशूल, पाण्डुरोग, गोला, उदरकी सूजन, गुदाके रोग, खई, पांच प्रकारकी खांसी, मन्दाग्नि, अरुचि, प्लीहा, श्वास अफरा, दारुण आमवातके रोग, इन सबको यह क्षुधावती वटी नष्ट करे।

अविपत्तिकरं चूर्णम्

त्रिकटुत्रिफलामुस्तबीजञ्चैवविडङ्गकम्।
एलापत्रञ्चसर्वेञ्चसमभागविचूर्णयेत्॥
यावन्त्येतानिचूर्णानिलवगतत्समंभवेत्।
सर्वचूर्णद्विगुणितत्रिवृच्चूर्णञ्चदापयेत्॥
सवमेकीकृतंयावत्तावच्छर्कराऽन्वितम्।
सर्वमेकीकृतपात्रेस्निग्धभाण्डेनिधापयेत्॥
भोजनादौततोचमध्वाज्याभ्यामिदंशुभम्।
शीततोयानुपानञ्चनारिकेलोदकतथा॥
ततोयथेष्टमाहारंकुर्य्यात्क्षीररसाशनः।
अम्लपित्तनिहन्त्याशुविबद्धमलमूत्रकम्॥
अग्निमांद्यभवान्रोगान्नाशयेच्चाविकल्पतः।
बलपुष्टिकरंचैवशूलेदुर्नामनाशनः॥
प्रमेहान्विंशतिंचैवमूत्राघातांस्तथाश्मरीम्
अविपत्तिकरंचूर्णमगस्त्यमुनिभाषितम्॥

सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, नागरमोथा, वायविडंग, छोटी इलायची और पत्रज इन सबको समान भाग ले चूर्णकरे, जितना यह सब चूर्ण होवे इसके बराबर लौंगका चूर्ण लेवे और सबसे दूना निसोथका चूर्ण लेवे सबको एकत्र कर जितना तोले सब चूर्ण हो उसकी बराबर सफेद खांड मिलावे, सबको मिलाकर चिकने पात्रमें भरकर रख देवे। इसको भोजन के आदि अन्तमे सहत और घी के साथ सेवन करना चाहिये, इसके ऊपर शीतल जल, नारियलका जल

पीवे, फिर यथेष्ट भोजन करे, दूध, मासरस सेवन करे, तो यह तत्काल अम्लपित्तको दूर करे, तथा मलमूत्रकी वृद्धिको नष्ट करे तथा मन्दाग्निमे होनेवाले रोगों को दूर करे, बल और पुष्टता करे शूल, बवासीर बीस प्रकारका प्रमेह, मूत्राघात और और पथरी इन सब रोगोको यह अगस्त्य ऋषिका कहा अविपत्तिकर चूर्ण नष्ट करे।

विसर्पविस्फोटकरोगचिकित्सा

कालाग्निरुद्रोरसः

सूताभ्रकान्तलोहानांभस्मगन्धकमाक्षिकम्।
वन्यकर्कोटकद्रावैस्तुल्यंमर्द्य दिनावधि॥ व
न्यकर्कोटिकाकन्देक्षिप्त्वालिप्त्वामृदावहि
भूधराख्येपुटेपश्चाद्दिनेकतद्विपाचयेत्॥
दशमाशंविषयोज्यमाषमात्रन्तुभक्षयेत्।
रसःकालाग्निरुद्रोयदशाहेनविसर्पनुत्॥
पिप्पलीमधुसयुक्तमनुपानप्रकल्पयेत्।

पारा, अभ्रक, कान्तलोहकी भस्म, शुद्धगन्धक, सुवर्णमाक्षिक इन सबको समान भाग लेवे, सबको बनकोड के रससे एक दिन खरलकरे फिर उसको बनककोड की जड से रख कपरमिट्टी चढाय भूधर यन्त्रमें रख १ दिनकी अग्नि देवे, फिर उसमेंसे निकाल इस रसका दशांश सिंगियाविष मिलाय इसमेंसे एक माशे नित्य भक्षण करे। तो यह कालाग्निरुद्रसंज्ञक रस दश दिनमे विसर्परोगका नाश करे, इसके ऊपर पीपलका चूर्ण सहत मिला कर सेवन करे।

पित्तनाशकभैषज्ययोगवाहिरससुधी।
कुष्ठोदिष्टक्रियासर्वामपिकुर्य्याद्भिषग्वरः॥
गुडूचीनिम्बजक्वाथैःखदिरेन्द्रयवाम्बुना।
कर्पूरत्रिसुगन्धिभ्यायुक्तं सूतंद्विवल्लकम्॥
विस्फोटत्वरितहन्याद्वायुर्जलधरानिव।
गव्यसर्पिस्त्र्यहपीत्वानिर्गुण्डीस्वरसंत्र्यहम्॥
विविधस्नायुकचोग्रंहन्त्यवश्यनसंशयः।
सप्तपर्णशिफाकल्कपानाद्वालेपनात्तथा॥
मूशलीमूलपानात्तुतन्तुकाख्योविनश्यति।

इस विसर्प रोग पर सम्पूर्ण पित्तनाशक औषधि करे, तथा योगवाही रस (चन्द्रोदयादिक) देवे, तथा जो कुष्ठ पर औषधिया कही हैं वे करनी चाहिये। अथवा गिलोय और नीम की छाल के काढ़ेमे अथवा खैरसार और इन्द्रजौके काढेसे अथवा त्रिसुगन्ध और भीमसेनी कपूरके साथ ४ रत्ती पारा सेवन करे तो विस्फोटक रोग को शीघ्र दूर करे। जैसे वायु बादलोका नाश करती है, तथा तीन दिन गौका घी पीवे तथा तीन निर्गुण्डीका स्वरस पीवे तो अनेक प्रकार के स्नायुक (नहरुए) अवश्य नष्ट होवे तथा सनोनाकी छाल के कल्कको पीनेसे अथवा लगानेसे तथा मूसली की जडको पीनेसे तन्तुरोग (नहरुए) का नाश होवे।

मसूरिकाचिकित्सा

दुर्लभोरसः

अथशुद्धस्यसूतस्यमूर्च्छितस्यमृतस्यच।
द्विवल्लापिप्पलीधात्रीरुद्राक्षघृतमाक्षिक॥
पापरोगान्तकोयोगःपृथिव्यामेषदुर्लभः।

शुद्धपारा, मूर्छितपारा अथवा पारेकी भस्म, और सफेद तथा पीली गगेरन, पीपल, आवले, रुद्राक्ष तथा घी और सहत सबको मिलाकर सेवन करे तो यह योग पाप रोगान्तक है। अर्थात् शीतल रोगका नाश करे, यह योग पृथ्वीपर दुर्लभ है।

क्षुद्ररोगचिकित्सा

क्षुद्ररोगेषुमतिमाँस्तत्तदौषधयोगतः।
भस्मसूतंप्रयुञ्जीततथात्रयोगवाहिकम्॥

बुद्धिमान वैद्य क्षुद्र रोग से जिस २ रोगपर जो २ औषधि कही हैं उस २ औषधि के साथ पारे की भस्म की योजना करे। अथवा योगवाही रस देवे तो क्षुद्र रोग दूर होवे।

मुखरोगाधिकारः

चतुर्मुखोरसः

मृतसूतंमृतस्वर्णंद्वाभ्यांतुल्यामनःशिलाम्।
विमर्दयेच्चतैलेनचातसीसम्भवेनच ॥
तद्गोलंवस्त्रतोबद्ध्वालेपयेच्चसमन्ततः।
अतसीफलकल्केनदोलायन्त्रेत्र्यहपचेत् ॥
उद्धृत्यधारयेद्वक्त्रे जिह्वादन्तास्यरोगनुत्।

चन्द्रोदय, सुवर्ण की भस्म, दोनो समान भाग ले और दोनो के बराबर मनसिल ले सब को खरल में डाल के अलसी के तेल से खरल करे, फिर उस का गोला बना कर कपडे में बांध उस पोटली के ऊपर अलसी का कल्क करके लेप कर देवे, फिर उस पोटली को दोलायंत्र की विधि से तीन दिन पचा कर निकाल लेवे। इस गोली को मुख में रक्खे तो सम्पूर्ण मुख के रोग जीभ और दांतों के रोग दूर होवें।

पार्वतीरसः

पार्वतीकाशिसम्भूतोदरदोमधुपुष्पकम्।
गुडूचीशाल्मलीद्राक्षाधान्यभूनिम्बमार्कवम् ॥
तिलमुद्गपटोलञ्चकूष्माण्डंलवणद्वयम्।
यष्टिकाधान्यकभस्मचान्तर्दग्धंसमसमम् ॥
मुखरोगंनिहन्त्याशुपार्वतीरसउत्तमः।
पित्तज्वरंचिरंहन्तितिमिरञ्चतृषामपि ॥

गन्धक, पारा, हींगुल, महुयेके फूल, गिलोय, सेमर, दाख, धनिया, चिरायता, भांगरा, तिल, मूंग, पटोलपत्र, कूष्माण्ड (पेठा) सेंधा निमक, काला निमक, मुलहठी, धनिया इन सबको बराबर ले कर किसी पात्र में रख मुख बन्द कर अग्नि से फूंक देवे, तो यह पार्वती रस बन कर तैयार हो। इस के सेवन करने से मुख रोग, पित्त ज्वर, तिमिर रोग और तृषा के रोग शीघ्र दूर होवे।

मुखरोगहरी

रसगन्धौसमौताभ्यांद्विगुणंचशिलाजतु।
गोमूत्रेणविमर्द्याथसप्तधार्द्रद्रवेणच ॥
गुंजाष्टकमिदंतालुगलौष्ठदन्तरोगनुत्।
जातीनिम्बमहाराष्ट्रीरसैःसिध्यतिपाकहा ॥
कणामधुयुतहन्तिमुखरोगंसुदारुणम्।
महाराष्ट्रीश्वगन्धाभ्यांमुखचप्रतिसारयेत् ॥
धारणात्सेवनाच्चैवहन्तिसर्वान्मुखामयान्।

पारा और गन्धक दोनो बराबर ले और दोनो के बराबर शुद्ध शिलाजीत ले सब को एकत्र कर गो मूत्र से खरल करे, फिर सातपुट अदरक के रस के देवे, चमेली, नीम, जल पीपल, इन के रस से खरल करें तो यह रस सिद्ध होवे। इस को पीपल के चूर्ण और सहत के साथ सेवन करे तो दारुण मुख रोग दूर होवे, इस की ८ रत्ती की मात्रा है। यह तालू गला होठ, और दांत इन सब के रोग नष्ट करे, जल पीपल और असगंध दोनों को पीस मुख मजन करे तो सब रोग दूर हो।

पथ्यावटी.

सचास्याभयजित्सेव्योमधुनापर्पटीरस।
पथ्यावालककुष्ठंचगोमूत्रेणप्रसाधयेत् ॥
एषाचवटिकाहन्तिमुखदौर्गन्ध्यसन्ततिम्।

सहत के साथ पर्पटी रस सेवन करने से सम्पूर्ण मुखके रोग नष्ट हो, अथवा हरड, नेत्रबाला और कूठ इन को अठगुने गो मूत्र से औटा कर फिर इस काढे को छान कर औटे, जब गाढा हो जावे तब गोलिया बना लेवे। १ गोली मुख मे रक्खे तो मुख की दुर्गन्धि दूर हो।

कर्णरोगाधिकारः

कफकेतुरसः

व्योषमिज्जलबीजचशंखभस्मविषान्वितम्।
मरिचसदृशंखादेत्कफकेतुमहारसः॥

सोंठ, मिरच, पीपल, जलवेतस के बीज, शंख की भस्म और सिंगिया विष सब का चूर्ण कर काली मिरच के समान खानेसे यह कफकेतु महारस कफ के रोगो को नष्ट करता है।

भैरवोरसः

सूतगन्धंविषंचैवटंकणस्रकपर्द्दकम्।
मरिचेनसमायुक्तं आद्रतायेनभावितम्॥
वह्निमान्द्यंचामरोगश्लेष्माणग्रहणीगदम्।
सन्निपाततथाशोथंहन्तिश्रोत्रोद्भवंगदम्॥

पारा, गन्धक, विष, सुहागा, कौडीकी भस्म और काली मिरच, इन सब को समान भाग ले, खरल कर अदरक के रस की भावना दे गोलिया बनावे। यह मन्दाग्नि, आमवात, कफ के रोग, सग्रहणी, सन्निपात, सूजन और कान के रोगो को दूर करे।

योगवाहिरसाःसर्वेप्रयोक्तव्याभिषग्वरैः।
कर्णरोगेषुसर्वेषुपीनसादिषुनित्यश॥

संपूर्ण पीनसादिक नाक के रोग और कान के रोगों मे वैद्य को सपूर्ण योगवाही रस देने चाहिये तो उक्त रोग नाश होवे।

नासारोगाधिकारः

पंचामृतोरसः

शुद्धसूतसमादायगन्धभागद्वयततः।
त्रिभागटंकणचापिविषभागचतुष्टयम्॥
पंचभागस्तथादेयोमरिचस्ततप्रयत्नतः।
शृंगवेररसैःपिष्ट्वागुटिकापचरक्तिका॥
अनुपानहितयोज्यसर्वरोगप्रशान्तये।
जलदोषोद्भवेरोगेमहत्युग्रे जलोदरे॥
सन्निपातेषुरोगेषुनासाव्याधौसपोनसे।
व्रणशोथेव्रणेचैवनखदन्तविघातके॥
पचामृतरसोयोज्यःसर्वरोगप्रशान्तये।

शुद्ध पारा ४ तोले, गन्धक ८ तोले, सुहागा १२ तोले, सिंगिया विष १६ तोले, काली मिरच २० तोले, सब को अदरक के रस से पीस के पांच २ रत्ती की गोलिया बनावे। इस गोली को अनुपान के साथ देने से सब रोगो की शान्ति होवे, जल के दोष से उत्पन्न रोगो मे, घोर जलन्धर के रोग मे, सन्निपात, नाक के रोग पीनस, व्रणशोथ, घाव नाखून और दांतो के टूटने से यह पचामृत रस देवे तो सब रोग शान्त होवें।

नेत्ररोगचिकित्सा

नेत्राशनिरसः

अभ्र ताम्र तथालोहमाक्षिकवरसाजनम्।
पातनायत्रसशुद्धगन्धकनवनीतकम्॥
पलप्रमाणप्रत्येकगृह्णीयाच्चविधानवित्।
सर्वमेकीकृतचूर्णवैद्यैःकुशलकर्मभिः॥
ततस्तुभावनाकार्य्यात्रिफलाभृंगराजकैः।
तत प्रक्षेपचूर्णाचपिप्पलीमूलयष्टिका॥
एलापुनर्नवादारुपाठाभृंगशठीवचा।
नीलोत्पलचन्दनचश्लक्ष्णचूर्णचदापयेत्॥
माषमेकप्रदातव्यघृतश्रीमधुमर्दितम्।
मर्द्दनंलोहदण्डेनपात्रे लोहमयेदृढे॥
अनुपानप्रयोक्तव्यमुष्णेनवारिणातथा।
यावतोनेत्ररोगाश्चपानादेवविनाशयेत्॥
सरक्ते रक्तपित्तेचरक्ते चक्षुःस्रुतेपिच।
नक्तान्धतिमिरेकाचेनीलिकापटलार्बुदे॥
अभिष्यन्देऽधिमन्येचापिष्टे चैवचिरन्तने।
नेत्ररोगेषुसर्वेषुवातपित्तकफेषुच॥
सर्वनेत्रामयंहन्याद्वृत्रमिन्द्राशनिर्यथा।

अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, लोह भस्म, सुवर्ण माक्षिक की भस्म, रसोत, पातनयन्त्र की शोधित आमलासार गन्धक, प्रत्येक चार २ तोले लेवे, सब को एकत्र कर चूर्ण करे फिर त्रिफला और भागरे के रस को भावना दे कर आगे लिखी औषधियोको मिलावे पीपलामूल, मुलहठी, छोटी इलायची के बीज, साठ की जड, दारु हल्दी, पाढ, भागरा, कचूर, वच, नील कमल, और सफेद चन्दन, सबको कूट-पीस चूर्ण कर मिलावे। फिर इस मे से एक माशे को सहत और घी के साथ लोहे के पात्र में लोहे के मूसले से रगडकर खाय-और इस पर गरम जल पीना अनुपान है। यह सम्पूर्ण नेत्र रोगों को पीने मात्र से ही दूर करे। रुधिर और रक्त पित्त युक्त लाल नेत्र और नेत्रो से जलका गिरना, रतौंध, तिमिर, काचरोग, नीलिका, पटल, अर्बुद, अभिष्यन्द, अग्निमाद्य, प्राचीन पिष्ठ रोग तथा सम्पूर्ण वात पित्त और कफ के नेत्र रोगो को यह नेत्राग्नि रस ऐसे दूर करता है, जैसे वज्रपात वृक्ष को नष्ट करता है।

नयनामृतलौहम्.

त्रिकटुत्रिफलाशृंगीशठीरास्नामहौषधम् ।
द्राक्षानीलोत्पलंचैवकाकोलीमधुयष्टिकम् ॥
वाट्टालकेशिरालंचकण्टकारीद्वयपलम ।
लौहाभ्रयोःपलंदत्त्वाभावयेद्वक्ष्यमाणजैः ॥
त्रिफलायाश्चतोयेनभृंगराजरसेनवा ।
भावयित्वावटीकार्य्यावदरास्थिनिभाशुभा ॥
यावतोनेत्ररोगांश्चनिहन्यान्नात्रसंशयः ॥

सोठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला काकडासिगी, कचूर, रास्ना. सोठ, दाख, नील-कमल, काकोली, मुलहठी, कगई, भागरा, छोटी-कटेरी, बडीकटेरी प्रत्येक एक-एक पल लेवे, सबका चूर्ण कर त्रिफलाके काढ़ेसे भागरेके रससे भावना देकर वेरकी गुठलीके समान गोलिया बनावे। इनके सेवन करनेसे यावन्मात्र नेत्ररोग दूर होवे इसमे सन्देह नहीं है।

त्रतशुक्लहरोगुग्गुलुः

अथ रामष्टिस्त्रिफलाकणानांचूर्णानितुल्यानि-
पुरेणान्वयम् । सर्पिमधुभ्यासहभक्षितानि
शुक्लानिकाचानिनिहन्तिशीघ्रम् ॥

लोहभस्म, त्रिफला, मुलहठी और पीपल इनको समान भाग ले सबके बराबर शुद्ध गूगल मिलाय गोलिया बनावे। इनको घी और सहतके साथ भक्षण करे तो शुक्ल और कांचरोग शीघ्र दूर हो।

तिमिरहरलौहम्

त्रिफलापद्मयष्ट्याह्वयुक्तंसायंनिषेवितम् ।
लौहतिमिरकहन्तिसुधांशुस्तिमिरयथा ॥

हरड, बहेडा, आवला, कमलगट्टा और मुलहठी, सबका चूर्णकर इसमे बराबरकी लोह-भस्म मिलाके सेवन करे। तो यह तिमिरहर लोह जैसे चन्द्रमा अन्धकारको दूर करता है वैसे तिमिर-रोगका नाश करे।

शिरोरोगाधिकारः

रसचन्द्रिकावटी

त्रैलोक्यविजयाबीजबीजमुन्मत्तकस्यच ।
कण्टकारीबीजकंचइज्जलबीजमेवच ॥
बीजचवृद्धदारस्यसमौगन्धकपारदौ ।
आर्द्रकैर्वटिकाकार्य्याकलायपरिमाणतः ॥
एषातोयानुपानेनप्रातःखाद्याहिताशिना ।
चिरजसर्वरोगंचसन्निपातसुदारुणम् ॥
आमवातशिरोरोगमन्यास्तम्भगलग्रहम् ।
कामलाशोथपाण्डुत्वपीनसार्शोगुदामयान्
वटिकाचन्द्रिकानामवासुदेवेनभाषिता ॥

भागके बीज, धतूरेके बीज, कटेरीके बीज, जलकनेरके बीज, विधायरेके बीज, पारा और गन्धक इनको समान भाग लेवे, सबको कूट-पीस अदरकके रससे गोलिया बनावे। इसको प्रातःकाल

जलके साथ सेवन करे, ऊपर पथ्य भोजन करे तो मस्तकके सम्पूर्ण प्राचीन रोग, दारुण सन्निपात, आमवात, शिरोरोग, गर्दनका जिकड़ना, गलग्रह, कामला, सूजन, पाडुरोग, पीनस, बवासीर और गुदाके अन्य रोगोको यह चन्द्रिका गुटिका वासुदेव वैद्यकी कही हुई दूर करे।

शिरोवज्ररसः

पलंसूतंपलंगन्धपलंलोहंपलंरवेः।
गुग्गुलोःपलचत्वारितदर्द्धंत्रिफलारजः॥
यष्टिमधुकणाशुण्ठीगोत्तुरंकृमिनाशनम्।
तोलकंदशमूलंचप्रत्येकंपरिकल्पयेत्॥
क्वाथेनदशमूल्याश्चयथास्वंपरिभावयेत्।
घृतयोगेनकर्त्तव्यामाषैकप्रमितावटी॥
छागीदुग्धेनवासेव्यामधुनापयसाथवा।
वातिकंपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकंसान्निपातिकम्।
शिरोविनाशयत्याशुवज्र मुक्तमिवासुरम्॥
शिरोवज्ररसोनामचन्द्रनाथेनभाषित॰॥

शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, लोहभस्म, ताम्रभस्म प्रत्येक चार २ तोले, शुद्धगूगल १६ तोले, त्रिफला का चूर्ण ८ तोले, मुलहठी, पीपल, सोठ, गोखरु, वायविडंग और दशमूल, प्रत्येक एक २ तोले लेवे, फिर सबका चूर्णकर दशमूलके काढेकी भावना देकर घीके सयोगसे एक २ माशे की गोलियां बनावे। इस गोलीको बकरीके दूध वा सहत से सेवन करे तो वादीके रोग, पित्तके रोग, कफजरोग, सन्निपातजरोग और मस्तकपीडा इन सबको यह शिरोवज्ररस दूर करे, जैसे इन्द्रके हाथ का फैंका हुआ वज्र दैत्यो का नाश करे। यह चन्द्रनाथ आचार्य्यका कहा रस है।

चन्द्रकान्तरसः

मृतसूताभ्रकतीक्ष्णताम्रंगन्धसमंसमम्।
स्नुहीक्षीरैर्दिनमर्द्यंभक्षयेन्माषमात्रकम्॥
मधुनामर्दितसेव्यंलोहपात्रेदिनेदिने। सप्ताहा
त्सूर्य्यवर्त्यादीन्शिरोरोगान्विनाशयेत्॥

चन्द्रोदय, अभ्रक, सार, ताम्रेश्वर, और शुद्ध गन्धक, प्रत्येक समान भाग लेकर सबको थूहर के दूधमे एक दिन खरल करे, और एक माशे नित्य भक्षण करे। परतु इसके सहतमे मिलाकर लोहपात्रमे लोहके मूसलेसे घिसकर नित्य सेवन करे तो सात दिनमे सूर्यावर्त्तादिक मस्तक रोगको यह चन्द्रकान्तरस दूर करे।

महालक्ष्मीविलासः

लोहमभ्रविषमुस्तंफलत्रयकटुत्रयम्।
धत्तूरवृद्धदारश्चबीजमिन्द्राशनस्यच॥
गोक्षुरद्वयकश्चैवपिप्पलीमूलमेवच।
एतत्सर्वसमंग्राह्यंरसेधत्तूरकस्यच॥
भावयित्वावटीकार्य्याद्विगुञ्जाफलमानतः।
महालक्ष्मीविलासोऽयंसन्निपातनिवारकः॥

लोहभस्म, अभ्रकभस्म, सिंगियाविष, नागरमोथा, हरड, बहेडा, आवला, सोठ, मिरच, पीपल, धतूरा, विधायरा, भागरेके बीज, बडे गोखरू जिनको दक्षिणी कहते हैं। छोटे गोखरू, पीपलामूल इन सबको समान भाग ले धतूरे के रस की भावना देकर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे। यह महालक्ष्मीविलास रस सन्निपातजन्य मस्तकरोगो को दूर करे।

प्रदरचिकित्सा

प्रदरान्तकलौहम्

लौहताम्र हरितालवङ्गमभ्रवराटिका।
त्रिकटुत्रिफलाचित्रंविडगपटुपञ्चकम्॥
चविकापिप्पलीशखवचाहबुषपाकलम्।
शठीपाठादेवदारुरेलाचवृद्धदारुकम्॥
एतानिसमभागानिसचूर्ण्यवटिकाकुरु।
शर्करामधुसयुक्ताघृतेनभक्षयेत्पुन॰॥
रक्तंश्वेततथापीतनीलप्रदरदुस्तरम्।
कुक्षिशूलकटीशूलयोनिशूलञ्चसर्वगम्॥

मन्दाग्निमरुचिंपाण्डुकृच्छ्रश्वासंचकासनुत्
आयु पुष्टिकरबल्यबलवर्णप्रसाधनम् ॥

लोहभस्म, ताम्रभस्म, हरिताल, वग, अभ्रक और कोडी इनकी भस्म, सोठ, मिरच, पीपल, हरड बहेटा, आवला, चीतेकी छाल, वायविडग कालानिमक, सेधा निमक, कचिया निमक, खारी निमक, साँभरनिमक, चव्य, पीपल, शखकी नाभी वच, हाऊवेर, कूठ, कचूर, पाढ, देवदारु, इलायची और विधायरा, इन सबको समान भाग लेवे और सबको पीस गोलिया बनावे। मिश्री सहत और घीमे मिलाकर इस गोलीको खाय तो लाल सफेद, पीला, नीला ऐसा घोर प्रदर रोग दूर होवे। पसवाडे, कमर, योनि और सर्वदेहके शूल, मन्दाग्नि, अरुचि, पाडुरोग, मूत्रकृच्छ्र, श्वास, खासी, इन सबको नष्ट करे, आयुकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता और बलवर्णका वढाने वाला है।

प्रदरान्तकोरसः

शुद्धसूततथागन्धंगन्धतुल्यञ्चरूप्यकम्।
खर्परञ्चवराटञ्चशाणमानपृथक्पृथक् ॥
तृतीयतोलकञ्चैवलोहचूर्णंक्षिपेन्सुधीः।
कन्यानीरेणएकाहंमर्दयेच्चभिषग्वरः ॥
असाध्यप्रदरंहन्तिभक्षणान्नात्रसंशय।

शुद्ध पारा और गन्धक दोनो समान लेवे, गन्धक के बराबर रूपे की भस्म और खपरिया, कोडी ये चार २ माशे ले और लोह भस्म ३ तोले मिलावे, सब को घीगुवार के रस से एक दिन खरल कर गोलिया बना लेवे। यह भक्षण करने से असाध्य प्रदर रोग को भी दूर करता है इस मे सन्देह नहीं।

पुष्करलेहः

यष्टिमधुनिशाचूर्णंतोलकेनसमन्वितम्।
वंगभस्मार्कपत्रस्यरसेनालाव्यपीयते ॥
प्रात प्रात प्रतिदिनंप्रदरंहन्तिदुस्तरम्।
रसाजनशुभाम्र गीचित्रकंमधुयष्टिकम् ॥
धान्यतालीशगायत्रीद्विजीरत्रिवृताबला।
दन्तीप्यूषणञ्चापिपलार्द्धञ्चपृथक्पृथक् ॥
चतुःपलमाक्षिकस्यामलस्यचक्षिपेत्ततः।
जातीकोषलवंगचककोलंमृद्विकापिच ॥
चातुर्जातकखर्ज्जूरंकर्षमेकपृथक्पृथक्।
प्रक्षिप्यमर्दयित्वाचस्निग्धभाण्डेनिधापयेत्
एषलेहवरःश्रीदःसर्वरोगकुलान्तकः।
यत्रयत्रप्रयोज्य स्यात्तत्तदामयविनाशनः ॥
अनुपानप्रयोक्तव्यदेशकालानुसारतः।
सर्वोपद्रवसंयुक्तंप्रदरसर्वसम्भवम् ॥
द्वंद्वजचिरजञ्चैवरक्तपित्तविनाशयेत्।
कासश्वासाम्लपित्तञ्चक्षयरोगमथापिवा ॥
सर्वरोगप्रशमनोबलवर्णाग्निवर्द्धनः।
पुष्कराख्योलेहवरःसर्वत्रैवोपयुज्यते ॥

मुलहठी और हलदी एक २ तोले ले, इन मे वंग भस्म मिलाय आक के पत्तो के रस मे नित्य पिया करे, तो घोर प्रदर का रोग दूर होवे, रसौत, वंशलोचन, काकडासिंगी, चीते की छाल, मुलहठी, धनिया, तालीस पत्र, खैरसार, सफेद जीरा, काला जीरा, निसोथ, खरैटी, दती, सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक दो २ तोले लेवे, इन मे चार पल सहत मिलावे, जायफल, लौंग, ककोल, दाख, चातुर्जात, छुहारे प्रत्येक एक २ तोले ले, सब को एकत्र मर्दन कर चिकने बरतन मे भर कर रख छोडे यह परमोत्तम अवलेह कल्याण कर्त्ता सर्व रोगो को नष्ट करता है। जिस २ रोग पर इसका प्रयोग किया जाय उसी उसी रोग को नाश करता है, इस पर वैद्य अपनी बुद्धि से देश काल और अवस्था आदि का विचार कर के अनुपान की कल्पना करे तो यह सर्व उपद्रव सहित सर्व दोषजन्य प्रदर के रोगो को नष्ट करे। द्वंद्वज और प्राचीन रक्त पित्तको नष्ट करे, खासी, श्वास, अम्ल पित्त, क्षय रोग इत्यादि सर्व रोगों को नष्ट करे, बल, वर्ण, अग्नि को वढावे, यह पुष्कराख्य अवलेह सर्वत्र ही योजित किया जाता है।

धात्रीचपथ्याचरसाञ्जनंचसर्वंविचूर्णंसजलं

निपीतम् । अनन्तरक्तस्रवमुग्रवेगंनिवारयेत् सेतुरिवाम्बुवेगम् ॥ रक्तपित्तहरसर्वप्रदरेनूतनेतथा । रक्तातिसारेकथितसर्वमेतत्प्रयोजयेत् ॥

आंवले, हरड और रसौत को समान भाग लेकर सबको जलमें मिला कर पीवे तो अत्यन्त रुधिर गिरने के वेग को इस प्रकार नष्ट करे जैसे सेतु जल के वेग को निवारण करता है। सम्पूर्ण रक्त पित्त हरणकारी प्रयोग और जो रक्तातिसार में प्रयोग कहे हैं वे सब नवीन प्रदर रोग में वैद्य को देने चाहिये ।

योनिव्यापच्चिकित्सा

समस्तंवातजित्कर्म्मयोनिव्यापत्सुशस्यते ।
जालनस्वदलेपांश्चवरानीरेणकारयेत् ॥
प्रक्षालयेद्भगंनित्यपथ्यामलकवल्कलैः ।
वृद्धापिकामिनीकापिवालावत्कुरुतेरतिम् ॥

योनि के रोगो में सम्पूर्ण वात हरण कर्त्ता प्रयोग करे, तथा योनि का धोना, स्वेद लाना, और लेप इत्यादि कर्म त्रिफला के जल से करे, बुड्ढी औरत भी यदि नित्य हरड और आवलो के वल्कल के काढे से भग को धोया करे तो उस की भग अत्यन्त सिकुड कर नवीन औरत के समान तग हो जावे ।

सूतिकारोगचिकित्सा

सूतिकारोगारिरसः

रसगन्धककृष्णाभ्रं तदर्द्धं मृतताम्रकम् ।
चूर्णितमर्दयेद्यत्नाद्भेकपर्णीरसेनच ॥
छायाशुष्कावटीकार्य्याद्विगुञ्जाफलमानत.
क्षीरत्रिकटुनायुक्तसूतिकातकनाशिनी ॥
ज्वरतृष्णारुचिश्वासशोथहन्तिनसशयः ॥

पारा, गधक, कालो अभ्रक, प्रत्येक चार २ तोले ले और तांबे की भस्म दो तोले सब का चूर्ण कर मण्डूकपर्णी के रस से खरल कर दो २ रत्ती की गोलिया बनावे । और छाया में सुखा कर एक गोली को दूध और त्रिकुटा के चूर्ण के साथ सेवन करे तो प्रसूत का रोग नष्ट होवे ।

सूतिकाविनोदरसः

रसगन्धकतुत्थश्चत्र्यहजम्बीरमर्दितम् ।
त्रिभावितंत्रिकटुनादेयगुञ्जाचतुष्टयम् ॥
गर्भिण्याःशूलविष्टम्भज्वराजीर्णेषुयोजयेत् ।

पारा, गन्धक, नीला थोथा, तीनो का चूर्ण कर तीन भावना त्रिकुटा के काढे की देवे, फिर चार-चार रत्ती की गोलियां बनावे । इन को गर्भिणी के शूल, अफरा, ज्वर, अजीर्ण आदि रोगो में देनी चाहिये ।

गर्भचिंतामणिरसः

तुत्थस्थानेस्वर्णदेयचिन्तामणिरसेतथा ।

इसी उक्त सूतिकाविनोद रस में नीले थोथे की जगह सुवर्ण भस्म मिलाने से गर्भ चिन्तामणि रस कहा जाता है ।

वृहत्सूतिकाविनोदरसः

शुण्ठ्याभागोभवेदेकोद्वौभागौमरिचस्यच
पिपल्याश्चत्रयोभागाअर्द्धभागश्चव्योमकम्
जातीकोपस्यभागौद्वौद्वौभागौतुत्थकस्यच
सिन्धुवारजलेनैवमर्दयेदेकयामत
मधुनासहभोक्तव्य.सूतिकातकनाशकः ।

सोठ १ तोले, काली मिरच दो तोले, पीपल ३ तोले, अभ्रक भस्म आधा तोला, जायफल और नीला थोथा दो-दो तोले सब को निर्गुंडी के रस से एक प्रहर खरल करे, इस रस को सहत के साथ सेवन करे तो प्रसूत का रोग नष्ट हो ।

सूतिकारिरसः

टकणमूर्च्छितसूतगन्धकहेमतारकम् ।
जातीफलतथाकोपलवगैलाचधातकी ॥

वत्सकेन्द्रयवपाठाश्च गीर्विश्वाजमोदिका ।
गुडीप्रसारिणीनीरैश्चतुर्गुञ्जाप्रमाणतः ॥
भक्षयेत्तद्रसैः प्रातःसूतिकातंकशान्तये ।
जीर्णज्वरतथाशोथग्रहणीप्लीहकासनुत् ॥

सुहागा, मूर्च्छित पारा, गन्धक, सुवर्ण भस्म, चांदी की भस्म, जायफल, जावित्रि, लौंग, इलायची, धाय के फूल, कूडा की छाल, इन्द्र जौ, पाढ, काकडासिंगी, सोंठ और अजमोद इन सब को समान भाग ले, और प्रसारणीके रस से चार-चार रत्ती की गोलिया बनावे । इस गोली को प्रातःकाल गन्ध प्रसारिणी के रस से सेवन करे तो प्रसूत का रोग शान्त हो, जीर्ण ज्वर, सूजन, संग्रहणी प्लीह और खांसी इन सब रोगो को नाश करे ।

सूतिकाघ्नोरसः

रसगन्धकलोहाभ्रंजातीकोषंसुवर्चलम् ।
समांशंमर्दयेत्खल्वे छागीदुग्धेनपेषयेत् ॥
गुंजाद्वयप्रमाणेनसूतिकातंकनाशनः ।
ज्वरातीसाररोगघ्नःसूतिकातंकनाशनः ॥
सूतिकाघ्नोरसोनामब्रह्मणापरिकीर्तितः ।

पारा, गन्धक, लोह भस्म, जायफल और सचर निमक सब को समान भाग ले कर बकरी के दूधसे खरल करे फिर दो २ रत्ती की गोलियां बनावे । १ गोली नित्य सेवन करे, तो प्रसूत के रोग, ज्वर, अतिसार को नष्ट करे, यह सूतिकाघ्न रस ब्रह्म देव ने कहा है ।

सूतिकान्तकोरसः

रसाभ्रगन्धकंव्योषसुवर्णमाक्षिकंविषम् ।
सर्वमेकीकृतंचूर्णं स्याद्रक्तिचतुष्टयम् ॥
सूतिकाग्रहणीरोगवह्निमान्द्यञ्चनाशयेत् ।
अतिसारंचशमयेदपिवैद्यविवर्जितम् ॥
कासश्वासोतिसारघ्नोवाजीकरणउत्तमः ॥

पारा, गन्धक, सोंठ, मिरच, पीपल, सुवर्ण माक्षिक और सिंगियाविष सबको समान भाग ले कर चूर्ण करे, और इसमेंसे ४ रत्ती लेकर सेवन करे तो प्रसूतका रोग, संग्रहणी, मन्दाग्नि, वैद्यवर्जित अतिसार, खांसी, श्वास और अतिसारको नष्टकरे तथा वाजीकरण करे ।

गर्भचिन्तामणिरसः

जातीफलंटंकणंचव्योषंदैत्येन्द्ररक्तकम् ।
तच्चूर्णंसमभागेनमर्दितंप्रहरद्वयम् ॥
जंबीररसयोगेनवटींकुर्याद्विचक्षणः ।
गुञ्जाद्वयप्रमाणान्तुखलुवैद्यःप्रयत्नतः ॥
आर्द्रकस्यरसेनैवभक्षयेदुष्णवारिणा ।
निहन्तिसर्वरोगंचभास्करस्तिमिरंयथा ॥

जायफल, सुहागा, सोंठ, मिरच, पीपल, गन्धक, और हींगूल सबको समान भाग लेकर जबीरीके रससे दो प्रहर खरल करे और दो-दो रत्ती की गोलियां बनावे । एक गोली अदरक के रससे खाय अथवा गरमजलसे खाय तो सम्पूर्ण गर्भ-रोगोको नष्ट करे जैसे सूर्य अन्धकारको नष्ट करता है ।

गर्भचिन्तामणिरसः

रसतारंतथालोहंप्रत्येककर्षमानतः ।
कर्षत्रयंतथाचाभ्रंकर्पूरवंगताम्रकम् ॥
जातीफलंतथाकोषगोक्षुरंचशतावरी ।
बलातिबलयोर्मूलंप्रत्येकंतोलकंशुभम् ॥
वारिणावटिकाकार्याद्विगुञ्जाफलमानतः ॥
सन्निपातंनिहन्त्याशुस्त्रीणाचैवविशेषतः ॥
गर्भिण्याज्वरदाहंचप्रदरंसूतिकामयम् ॥

पारा, चांदी और लोहा प्रत्येक दो-दो तोले लेवे, अभ्रक ३ तोले, भीमसेनी कपूर, बंग, ताम्र भस्म, जायफल, जावित्री, गोखरू, शतावर, खरैटी और गंगेरनकी जड प्रत्येक तोले २ भर लेवे, सबको कूटपीस जलसे दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे, तो सन्निपात शीघ्र दूर करे, तथा स्त्रियो के रोगोकों विशेषकर दूर करे, गर्भिणीका ज्वर, दाह, प्रदर और प्रसूत का रोग दूर हो ।

बृहद्गर्भचिंतामणिरसः

सूतगन्धतथास्वर्णंलोहंरजतमाक्षिके ।
हरितालवंगभस्माप्यभ्रकंसमभागकम् ॥

भावनाखलुदातव्यारसैरेषांपृथक्पृथक् ।
ब्राह्मीवासाभृंगराजपर्पटीदशमूलकैः ॥
सप्तधाभावयेद्वैद्योगुंजमानांवटींचरेत् ।
गर्भचिन्तामणिरयंपूर्ववद्गुणकारकः ॥

पारा, गन्धक, सुवर्ण लोह, चांदी, सुवर्ण-माक्षिक, हरिताल, वग, और अभ्रक सबको समान भाग लेवे सबका चूर्ण कर आगे लिखे रसोंकी भावना पृथक्-पृथक् देवे, ब्राह्मी, अडूसा, भागरा, पापरी, दशमूल, इनके रस अथवा काढोंकी सात-सात भावना देवे, फिर एक-एक रत्तीकी गोलियां बनावे। यह गर्भचिन्तामणिरस पूर्वोक्त रसके समान गुणकर्त्ता है ।

गर्भविनोदीरसः

त्रिभागत्रिकटु देयंचतुर्भागंचहिंगुलम् ।
लौहंताम्रंसीसकंचपलमानंसमाहरेत् ॥
जातीफलकेशराजंभृंगैलामुस्तकंवरम् ।
धातकीन्द्रयवपाठाशृंगीविल्वचवालकम् ॥
कर्षमानंचसचूर्ण्यसर्वमेकत्रकारयेत् ।
बदरास्थिप्रमाणेनवटिकाकारयेद्भिषक् ॥
गन्धालिकापत्ररसैरनुपानप्रदापयेत् ।
सर्वातीसारशमन सर्वशूलनिवारणः ॥
सूतिकाहरनामायरसःपरमदुर्लभः ।

लोंग, पारा, गन्धक, जवाखार, अभ्रक, लोह तांबेकी भस्म और सीसा प्रत्येक एक २ पल लेवे, जायफल, भागरा, त्रिफला, भाग छोटी इलायची नागरमोथा, धायके फूल, इन्द्रजौ, पाढ, काकडा-सिंगी, बेलगिरि और नेत्रवाला इन सबको एक २ तोले ले कूटपीस जलसे बेरकी गुटलीकी बराबर गोलिया बनावे। एक गोली गन्धप्रसारणीके रससे देवे तो सर्व प्रकारके अतिसार सर्वप्रकारके शूल यह सूतिकाहर रस प्रसूतके रोगोंको हरण कर्त्ता परम दुर्लभ है ।

महाभ्रवटी

अभ्रकपुटिततांम्र लोहगन्धकपारदम् ।
कुनटीटकणक्षारत्रिफलाचपलपलम् ॥
गरलंचतथामाषचतुष्कंचैवचूर्णितम् ।
तत्सर्वंभावयेदेषांरसैःप्रत्येकशःपलैः ॥
ग्रीष्मसुन्दरकस्याढरूषकस्यक्रमेणतु ।
रसैस्ताम्बूलवल्ल्याश्चदलोत्थैर्भावितंपृथक् ॥
द्रवेकिंचित्स्थितेचूर्णमरिचस्यपलंक्षिपेत् ।
सर्वातीसारशमनसर्वशूलनिवारणम् ॥
सूतिकाशोथपांडुत्वंसर्वज्वरविनाशनम् ।
नाशयेत्सूतिकातकंवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ।

शतपुटी अभ्रक, ताम्रभस्म, लोहभस्म, गधक पारा, मनसिल, सुहागा, हरड, बहेडा, आवला, प्रत्येक चार-चार तोले लेवे, सिंगियाविष ४ माशे लेवे, सबका चूर्णकर आगे लिखे चार २ तोले रसोंकी भावना देवे, ग्रीष्म सुन्दर, अडूसा और पानके रसकी भावना देने के पश्चात् कुछ रस भावनाका जब बाकी रहे तब ४ तोले कालीमिरच का चूर्ण मिला देवे, फिर गोली बाध लेवे। यह महाभ्रवटी सब प्रकारके अतिसारोको शमन करे। सब प्रकारके शूलरोग, प्रसूत, सूजन, पाडुरोग, सर्वज्वरो का नाश करे। यह प्रसूत रोगोको इस प्रकार नष्ट करे जैसे वज्रपात वृक्षको ।

महाभ्रवटी.

मृतमभ्र चलोहचकुनटीताम्रकन्तथा ।
रसगन्धटकणचयवक्षारःफलत्रिकम् ॥
प्रत्येकतोलकग्राह्यमूषणपचतोलकम् ।
सर्वमेकीकृतंचूर्णप्रत्येकेनविभावयेत् ॥
ग्रीष्मसुन्दरसिंहास्यनागवल्लीरसेनच ।
चतुर्गुंजाप्रमाणेनवटिकाकारयेद्भिषक् ॥
योजयेत्सर्वथावैद्य सूतिकारोगशान्तये ।

अभ्रकभस्म, लोहभस्म, मनसिल, ताम्रा, पारा, गन्धक, सुहागा, जवाखार, हरड, बहेडा, आवला, प्रत्येक एक २ तोले और काली मिरच ५ तोले सबको एकत्रकर चूर्णकरे, फिर ग्रीष्म-सुन्दर (गोमा) अडूसा, और नागरबेल पान के रससे खरल कर चार २ माशे की गोलिया बनावे इससे वैद्य सूतिका रोगकी शान्ति करे ।

रसशार्दूलः

अभ्रं ताम्रं तथा लौहं राजपट्टं रसन्तथा ॥
गन्धकटंकमरिचं यवक्षारं समांशकम् ।
तथात्रतालकचैव त्रिफलाया अशतोलकम् ।
तोलयंचामृतचैव षड्गुञ्जाप्रमिता वटी ॥
ग्रीष्मसुन्दरकस्यापि नागवल्लीरसेनच ।
भावयेत्सप्तधा हन्ति ज्वरकासागसग्रहम् ॥
सूतिकातंकशोथादिस्त्रीरोगंचविनाशयेत् ।

अभ्रक, तांबा, लोह, कान्तलोह, पारा, गंधक सुहागा, कालीमिरच और जवाखार प्रत्येक समान भाग ले, हरिताल, हरट, बहेड़ा, आंवला प्रत्येक एक २ तोले ले और एक तोले विषका चूर्ण मिलावे, सबको कूट-पीस छः रत्तीकी गोलियां बनावे। फिर इसको ग्रीष्मसुन्दर, (गोमा) पान औरइनके रसकी सात २ भावना देकर सेवन करे तो ज्वर, खांसी, अंगोका सकोच, प्रसूतके रोग, सूजन आदिके रोग तथा स्त्रियो के यह रोगोको नष्ट करे।

महारसशार्दूलः

अभ्रकपुटितताम्रं स्वर्णंगंधचपारदम् ।
शिलाटंकयवक्षारत्रिफलाया.पलपलम् ॥
गरलस्य तथा ग्राह्यमर्द्धं तोलकसम्मितम् ।
त्वगेलापत्रकंचैवजातिकोषलवंगकम् ॥
मासीतालीशपत्रं चमाक्षिकंचरसांजनम् ।
एषां द्विकार्षिकभागं देयंचापिविचक्षणै ॥
द्रवैर्किंचिन्स्थिते चूर्णं मरिचस्य पलं क्षिपेत् ।
भावनाचप्रदातव्या पूर्वोक्तेनरसेनच ॥
निहन्तिविविधान्रोगान्ज्वरान्दाहान्वमि भ्रमिम् । तथातिसारकंचैववह्निमाद्यमरोचकम् ॥ विशेषाद्गर्भिणीरोगंनाशयेदचिरेणच ॥

अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, सुवर्ण भस्म, गंधक, पारा, मनसिल, सुहागा, जवाखार, हरड, बहेडा और आवला प्रत्येक एक-एक पल लेवे, सिंगिया विष ६ मासे, तज, इलायची, पत्रज, जायफल, लौंग, जटामासी, तालीस पत्र, सुवर्ण माक्षिक, और रसोत प्रत्येक दो २ तोले लेवे सब का चूर्ण कर ४ तोले काली मिरचो का चूर्ण मिलावे, फिर ग्रीष्म सुन्दर (गोमा) और पान के रस की भावना दे कर गोलिया बनावे यह। अनेक प्रकार के ज्वर, दाह, वमन, भ्रम, अतिसार, मन्दाग्नि, अरुचि और विशेष करके गरमी के रोगो को यह तत्काल दूर करता है।

बृहद्रसशार्दूलोरसः

रसस्यद्विगुणंगन्धशुद्धं संमर्दयेद्दिनम् ।
प्रतिलौहसूततुल्यमष्टलौहमृतंक्षिपेत् ॥
ब्राह्मीजयन्तीनिर्गुण्डीयष्टीमधुपुनर्नवा ।
नलिकागिरिकर्ण्यर्ककृष्णधूत्तूरदुरालभाः ॥
आढरूपंकाकमाचीद्रवैरेपाविमर्दयेत् ।
रोगोक्तमनुपानवाकवोष्णंवाजलंपिबेत् ॥

पारा ४ तोले और गन्धक ८ तोले, दोनों की कजली कर प्रतिलोह (सुवर्ण, चांदी, तावा, कासा, पीतल, सीसा, जस्ता और लोह) इन प्रत्येक की भस्म चार-चार तोले ले सब को एकत्र करके ब्राह्मी, अरनि, निर्गुंडी, मुलहठी, सांठ नलिका, अपराजिता, आक, काला धतूरा, जवासा अडूसा, मकोय, इन प्रत्येक के रससे खरलकरे, फिर तीन २ अथवा चार२ रत्तीकी गोलिया बनावे, इनको प्रत्येक रोगके न्यारे २ अनुपान के साथ अथवा गरम जलके साथ देवे तो सम्पूर्ण रोगो को नष्ट करे।

अष्टधातुः

सुवर्णरजतताम्रंकांस्यपित्तलमेवच ।
नागवंगंतथालौहधातवोऽष्टौप्रकीर्तिता ॥

सुवर्ण, चांदी, तांबा, कांसा, पीतल, शीशा वंग तथा लोह ये आठ धातु कहलाती हैं। इन्हीं को अष्टलोह कहते हैं।

बालरोगचिकित्सा ।

बालोरसः

पलंशुद्धस्यसूतस्यगन्धकस्यपलतथा ।
सुवर्णमाक्षिकस्यापिभागार्द्धं सम्प्रकल्पयेत् ॥
ततःकज्जलिकांकृत्वापात्रेलोहमयेदृढ ।
केशराजस्यभृंगस्यनिगुण्डयाःस्वरसेनच ॥
शुभेशिलामयेपात्रे लोहदण्डेनमर्दयेत् ।
राजिकासदृशींचैववटिकाकारयेद्भिषक् ॥
एकैकावटिकाखादेन्नागवल्लीदलद्रवैः ।
हन्तित्रिदोषसम्भूतंज्वरंचैवसुदारुणम् ॥
चिरज्वरंचकासचशूलसर्वसमुद्भवम् ।
शिशूनांरोगनाशायशिवेनपरिकीर्तितः ॥

शुद्धपारा और शुद्धगन्धक चार २ तोले, सुवर्णमाक्षिककी भस्म दो तोले लेकर सबको लोहपात्र में कजलो कर, भागरा और निगुंण्डी इनके रसको पत्थरके खरलमें लोहेके मूसलेसे घोट कर भावना देवे, फिर राईके बराबर गोलिया बनावे, एक गोली पानमें रखकर खाय तो त्रिदोष जन्य दारुणज्वर, प्राचीन ज्वर, खासी और सर्व प्रकारके शूलोकी दूर करे, यह बालकोकेरोग नाशार्थ श्रीशिवने बालरस कहा है।

बालोरसः

पलंशुद्धस्यसूतस्यगन्धकस्यचतत्समम् ।
सुवर्णमाक्षिकस्यापिचार्द्धं भागनियोजयेत् ॥
ततकज्जलिकाकृत्वापात्रे लोहमयेदृढे ।
केशराजस्यभृंगस्यनिगुण्डयाःपर्णसम्भवम्
स्वरसकाकमाच्याश्चग्रीष्मसुन्दरकस्यच ॥
सूर्य्यावर्त्तकवर्षाभूभेकपर्णीरसैस्तथा ।
श्वेतापराजितायाश्चरसदद्याद्विचक्षणः ।
देयरसार्द्धं भागेनचूर्णमरिचसम्भवम् ॥
शुभेशिलामयेपात्रे यामदण्डेनमर्दयेत् ।
शुष्कमातपसंयोगाद्गुटिकांकारयेद्भिषक् ॥
प्रमाणेसर्षपाकारबालानाचप्रयोजयेत् ।
हन्तित्रिदोषसम्भूतज्वरंचैवसुदारुणम् ॥
कासचविविधचैवसर्वरोगंनिहन्तिच ।

शुद्धपारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले, सुवर्णमाक्षिक की भस्म दो तोले, इन सबकी कजली लोहके दृढपात्रमें करे, भागरा, निगुंडी, पान, मकोय, ग्रीष्मसुन्दर, सूर्य्यावर्त्तक, साठ, मडूकपर्णी, और श्वेत उपलसिरी इनके रसोकी पृथक् भावना देकर दो तोले कालीमिरचका चूर्ण मिलावे फिर धूपमे रख पत्थरके खरलमे एक प्रहर खरल करे जब गाढा होजावे तब सरसोकी बराबर गोलिया बनावे। उनको धूपमे सुखाकर एक गोली बालकको देने से बालक का त्रिदोषज्वर, खासी और अनेक प्रकारके रोगोको दूर करे।

विषाधिकारः

विषवज्रपातोरसः

निशासटकंचसजातिकोपंतुत्थसमांशाकुरुदेवदाल्याः। रसेनपिष्टाविषवज्रपातोरसोभवेत्सर्वविषापहन्ता ॥ निष्कोऽस्यसंजीवयतिप्रयुक्तोनृमूत्रयोगेनचकालदष्टम् । जटा॥ विषेणाकुलिततथान्यैर्विषैर्वाशुतथातुरच

हलदी, सुहागा, जायफल, और नीलाथोथा सबको समभाग लेवे और सबको बन्दाल के रस से खरलकर चार-चार माशेकी गोलिया बनावे। तो यह विषवज्रपातरस मनुष्यके मूत्र वा गोमूत्र के सेवन करनेसे घोर कारियलका डसा हुआ भी अच्छा हो, जडके विष, अर्थात् कन्दादिकके विषसे जो पीडित होवे वो तथा अन्यविषोसे पोडित मनुष्य इस रसके सेवन करनेसे अच्छा होवे।

भीमरुद्रोरसः

सूतराजस्यतोलैकगन्धकस्यतथैवच ।
अभ्रात्कर्षततोदेयतोलैककान्तलोहकम् ॥
परोक्तेनौषधेनैवभावयेच्चपृथक्पृथक् ।
विशालाबृहतीब्राह्मीसौगन्धिकसुदाडिमः ॥

मर्कटयाश्चात्मगुप्तायाःस्वरसेनपृथक्पृथक् ।
एकरक्तिकमानेनवटिकांकारयेद्भिषक् ॥
वटीमेकांभक्षयित्वापिवेच्छीतजलततः ।
भीमरुद्रोरसोनामचासाध्यमपिसाधयेत् ॥
कुक्कुरस्यशृगालस्यविषहन्तिसुदुस्तरम ॥

शुद्धपारा, गन्धक, अभ्रक, कान्तलोह की भस्म प्रत्येक एक एक तोला, इनमें आगे लिखि औषधियोंकी पृथक्-पृथक् भावना देवे, इन्द्रायन कटेरी, ब्राह्मी, नीलकमल, अनार, सफेदओंगा और किवाच इनके रसकी पृथक् २ भावना देकर एक-एक रत्तीकी गोलिया बनावे। एक गोली खा कर ऊपरसे शीतल जल पीवे तो यह भीमरुद्ररस असाध्य विषरोगो को अच्छा करे, कुत्ता तथा स्यारके घोर विष को दूर करे।

रसायनाधिकारोवाजीकरणाधिकारश्च

श्रीमन्मथोरसः

स्वस्थस्यौजस्करंकिञ्चित्किञ्चिदार्त्तस्यरोगनुत्। यज्जराव्याधिविध्वंसिभेषजतद्रसायनम् ॥ रसगंधकयोर्ग्राह्यं कर्षमेकन्तुशोधितम् ।
अभ्र निश्चन्द्रकदद्यात्पलार्द्धं सुविचक्षण ॥
कर्पूरनिश्चन्द्रकदद्यार्द्धं शचकोलसम्मितम् ।
ताम्र कोलार्द्धं कतत्रनि शेषमारितक्षिपेत् ॥
लौहकर्षसुजीर्णञ्चवृद्धदारुकबीजकम् ।
विदारीशतमूलीचक्षुरबीजबलातथा ।
मर्कटयतिवलाचैवजानीकोषफलेतथा ॥
लवगविजयाबीजश्वेतसर्जयमानिका ॥
एतेषाचूर्णमादायप्रक्षिपेत्तुशाणसम्मितम् ।
गुञ्जाद्वयञ्चभोक्तव्यंकोष्णक्षीरपिवेदनु ॥
गृहेयस्यशतस्त्रीणाविद्यतेतिव्यवायिनः ।
नतस्यलिंगशैथिल्यमौषधस्यास्यसेवनात ॥
नचशुक्र क्षययातिनबलहासतांत्र जेत् ।
कामरूपोभवेद्दिव्योवृद्धःषोडशवर्षवत् ॥
रसायनवरोह्यल्योवाजीकरणउत्तमः ।
रसःश्रीमन्मथोनाममहेशेनप्रकाशितः ॥

औषधी दो प्रकारकी है एक रोगी को हितकारी, दूसरा रोगरहितको हितकारी, फिर औषधी दो प्रकारकी हैं, एक रसायन, दूसरी वाजीकरण, तहां रोगीके हितकारी रसोंको प्रथम लिख आये हैं अब स्वस्थ मनुष्योंको हितकर्त्ता रसोंको लिखते हैं।

कोई औषधि स्वस्थ मनुष्यको ओज बढानेवाली है और कोई रोग हरण करने वाली है, तहा जो औषधि वृद्धावस्था और रोगोको नष्टकरे उस औषधीको रसायन कहते हैं।

शुद्धपारा १ तोले, शुद्धगन्धक १ तोले, निश्चन्द्र अभ्रक दो तोले, भीमसेनी कपूर और शुद्ध बगकी भस्म प्रत्येक आठ २ माशे, तावेकी भस्म ४ माशे, लोहेकी भस्म एक तोले, विधायरेके बीज, विदारीकन्द, शतावर, तालमखाने, खरैटी, कौंचके बीज, गगेरन, जायफल, जावित्री, लौंग, भागके बीज, सफेदराल, और अजवायन, इन सबका चूर्ण चार २ माशे लेवे, सबको एकत्र कर इसमेंसे दो २ रत्ती की गोलिया बनाकर सेवन करे, ऊपरसे थोडा गरम दूध पीवे जिसके घरमे सौ स्त्री होवे और जो अति मैथुन करता है उसको यह रस सेवन करना चाहिये। इसके सेवनसे कभी लिंग शिथिल नहीं होता, कभी शुक्रका क्षय नहीं होता, न बलका ह्रास होता, कामरूप और बुड्ढा भी सोलह वर्षके समान हो, यह सर्वोत्तम रसायन बलकारी और वाजीकरण कारक है, यह शिवजीका कहा हुआ मन्मथनामक रस है।

महेश्वरोरसः

रसंभस्मीकृतंकोलगन्धकशोधितसमम् ।
लौहकर्षद्वयताम्रमर्द्धं कोलकसम्मितम् ॥
सुवर्णजारितंदद्याच्छाणार्द्धं सुविचक्षण ।
अभ्रकपंद्वयदद्याच्छाणार्द्धं चन्द्रचूर्णकम् ॥

श्यामाबीजवरीचैवबलामतिबलांतथा ।
एलांचशखपुष्पीचशाणमानविनिःक्षिपेत् ॥
जलेनवटिकांकृत्वागुंजामात्राप्रदापयेत् ।
सेवनादस्यकन्दर्परूपोभवतिमानवः ॥
सहस्त्रंयातिनारीणामुत्साहोजायतेऽधिकः ।
नित्यंस्त्रिसेवनाद्यस्तुक्षीणशुक्रोभवेन्नरः ॥
महाबलोमहाबुद्धिर्जायतेनात्रसंशयः ।
स्थूलानाकर्षकःश्रेष्ठःकृशानापुष्टिकारकः ॥
रसोविनाशयेद्रोगानसप्तसप्ताहभक्षणात् ।

पारेकी भस्म और शुद्धगन्धक आठ २ माशे लोहभस्म दो तोले, ताम्रभस्म ४ माशे, सुवर्णभस्म दो माशे, अभ्रकभस्म दो तोले, शुद्ध भीमसेनी कपूर ८ माशे, विधायरेके बीज, शतावर, खरेंटी, गगेरन, इलायची, शखपुष्पी, इनको चार २ माशे लेवे, सबको कूटपीस एक-एक रत्तीकी गोलिया बनावे। इनके सेवन करनेसे कामदेवके समान सुन्दर होजावे, हजार स्त्रियो मे भोग करने की शक्ति होवे, नित्य स्त्रियोंसे भोग करनेसे जिसके वीर्य्यकी हानि होजाती हैं वह महाबली, महाबुद्धिमान् होवे। यह मोटे पुरुषोंको पतले और पतलोंको मोटे करने मे श्रेष्ठ है। इस रसको ४९ दिन सेवन करनेसे सम्पूर्ण रोगोंका नाश होवे।

पूर्णचन्द्रोरसः

सूताभ्रलोहंसशिलाजतुस्याद्विडगताप्यमधुनाघृतेन । सम्मर्द्य सर्व्वखलुपूर्णचन्द्रोमापो स्यवृष्योभवतिप्रयुक्तः ॥

शुद्धपारा, अभ्रककी भस्म, लोहभस्म, शिलाजीत, वायविडंग, सुवर्णमाक्षिककी भस्म, इन सबको सहत और घी मे खरल कर एक २ माशे की गोलिया बनाकर सेवन करे तो यह पूर्णचन्द्ररस वृष्य होता है।

कार्श्यहरलोहम्.

श्वेतापुनर्नवादन्तीवाजिगन्धात्रिकत्रयैः ।
शतमूलीवलायुक्तैरेभिर्लोहप्रसाधितम् ॥
निहन्तिनिहितकार्श्यमपिभृंगरसैःसह ।
नास्त्यनेनसमंलोहंसर्वरोगान्तकंमतम् ॥
दीपनबलवर्णाग्नेर्वृष्यदचोत्तमोत्तमम् ।

सफेद पुनर्नवा, (विषखपरा) दन्ती, असगन्ध, त्रिकुटा, त्रिफला, त्रिमद, शतावर और खरेंटी इन सबको समान भाग लेवे और सबके बराबर लोहेकी भस्म मिलावे। फिर इसमेसे बलाबल विचारकर भागरेके रसके साथ देवे तो यह सर्व रोगोको नष्ट करे, दीपन करे, बल वर्ण और अग्निको बढावे, तथा उत्तमोत्तम वृष्य प्रयोग है। इस कार्श्यहरलोहके बराबर दूसरा प्रयोग नहीं है।

लक्ष्मीविलासोरसः

पलकृष्णाभ्रचूर्णस्यतदर्धौरसगन्धकौ ।
कर्पूरचतदर्द्धं चजातीकोषफलेतथा ॥
वृद्धदारुकबीजचबीजमुन्मत्तकस्यच ।
त्रैलोक्यविजयाबीजविदारीमूलमेवच ॥
नारायणीतथानागबलाचातिबलातथा ।
बीजगोक्षुरकस्यापिनैचुलबीजमेवच ॥
एतेषाकार्षिकचूर्णपर्णपत्ररसेनच ।
निष्पिष्यवटिकाकार्य्यात्रिगुञ्जाफलमानतः ॥
निहन्तिसन्निपातोत्थान्गदान्घोरान्सुदारुणम् । वातोत्थानपिपित्तोत्थाननास्त्यत्र नियम कचित् ॥ कुष्ठमष्टादशविधप्रमेहान् विंशतितथा । नाडीव्रणव्रणघोरगुदामयभगन्दरम् ॥ श्लीपदकफवातोत्थचिरजकुलसम्भवम् । गलशोथमन्त्रवृद्धिमतीसारसुदारुणम् ॥ कासपीनसयक्ष्मार्शःस्थौल्यदौर्गन्ध्यमेवच । आमवातसर्वरूपजिह्वास्तम्भगलग्रहम् ॥ अर्दितगलगण्डचवातशोणितमेवच उदरकर्णनासाक्षिमुखवैरस्यमेवच ॥ सर्वशूलशिरःशूलस्त्रीणागदनिपूदनम् । वटिका प्रातरेकैकाखादेन्नित्ययथाबलम् ॥ अनुपान मिहप्रोक्त मार्सपिष्ट पयोदधि । वारिभक्तसुरा सीधुसेवनात्कामरूपधृक् ॥ वृद्धोपितरुणस्पर्द्धीनचशुक्रस्यसक्षयः । नचलिंगस्यशैथिल्य नकेशायान्तिपक्कताम ॥ नित्यस्त्रीणाशतगच्छेन्मत्तवारणविक्रम । द्विलक्षयोजनादृष्टि

र्जायतेपौष्टिःपरः ॥ कृष्णोक्तःप्रयोगराजोयं नारदेनमहात्मना । रसोलक्ष्मीविलासोयं वासुदेवजगत्पतिः ॥ अभ्यासादस्यभागवां लक्षनारीपुवल्लभः ॥

कृष्णाभ्रककी भस्म ४ तोले, पारा, गन्धक दोनों दो तोले, भीमसेनी कपूर १ तोले, जायफल, जावित्री, विधायरेके वीज, धतूरेके वीज, भाग के वीज विदारीकन्द, शतावर, गुलसकरी, गंगेरन, गोखरू और समुद्रफल इन सब औषधियोंको समान भाग लेवे, सबको पानके रससे खरलकर, तीन २ रत्ती की गोलिया बनावे । यह गोली सन्निपातके रोग, वातके रोग, और पित्तके रोगो को दूर करे, इस रसपर किसी आहार विहारका नियम नहीं, अठारह प्रकारके कुष्ठ, बीस प्रकार के प्रमेह, नाडीव्रण घोरगुदाके रोग, भगदर, कफवातोत्थ श्लीपदका रोग, गलेकी सूजन, आतोकी वृद्धि, अतिसार खासी, पीनस, खई, बवासीर, स्थूलता देहमे दुर्गन्धिका आना, आमवातके रोग, जिह्वास्तम्भ, गलग्रह, अर्दितरोग, गलगड, वातशोणित, वात रक्त उदरोग, कान, नाक, नेत्र, मुखकी विरसता सब देहका शूल, मस्तकशूल, स्त्रियोके रोग, लक्ष्मीविलास रसकी गोली नित्य बलानुसार भक्षण करे, इसपर मास, मिष्ठान्न, दूध, दही, जल से बना भात मद्य, सीधु (मद्यकाभेद) ये सेवन करना पथ्य हैं, इसके खानेसे कामदेवके सदृश होवे, वृद्ध मनुष्य भी तरुणकी बराबरी करे, इस रसके सेवन करनेसे वीर्य कभी क्षीण नहीं होता, न कभी लिंग शिथिल होता, बाल कभी सफेद नहीं होते । मतवाले हाथीके समान सौ स्त्रियोसे गमन करे, दो लाख योजनकी दृष्टि हो । अत्यन्त पुष्टाई हो, यह प्रयोग महात्मा नारदने श्रीकृष्ण जगत्पतिके आगे कहाथा कि, जिसके अभ्यास करनेसे श्रीकृष्ण भगवान् एक लाख गोपियोंके प्रिय हुए ।

श्रीकामदेवरसः

कामदेवमथोसूतकामिनांकामदभजे । यस्यप्रसादतोवल्योरम्यश्चरमतेस्त्रियम् ॥ पारदंपलमेकंस्याद्द्विपलंशुद्धगन्धकम् । रक्तकार्पासतोयेनघृष्ट्वाकाचस्यकूप्यतः ॥ निःक्षिप्यटकणेनैव मुखंतस्यनिरोधयेत् । वालुकायन्त्रमध्यस्थकृत्यचकुरुतेदृढम् ॥ अहोरात्र पचेदग्नौशास्त्रवित्कुशलोभिषक् । शीतेचादायपात्रस्थकूपिकान्तरलाम्बतम ॥ दरदंनसमरक्तमुज्ज्वलंभस्मयद्भवेत् । भक्षयेन्मापमेकचघृतेनमधुनासह ॥ पश्चाद्दुग्धगुडचाज्यकृष्णेक्षुमपिशर्कराम् । द्राक्षाखर्जूरमधुकप्रभृतीनथभक्षयेत् ॥ त्रिफलामधुनाशान्तिर्यातिपित्तचिरोद्भवम् । निर्गुण्डिकारसेनात्रदुर्वारावातवेदना ॥ प्रशमयातिवेगेननूतनचवपुर्भवेत् । अर्द्धावर्तितदुग्धेनगृह्यतेयद्ययरस ॥ वन्ध्यापिचभवत्येवजीवद्वत्सासपुत्रिका ।

कामदेव और पारद ये दोनों कामी पुरुष को कामके देनेवाले हैं, जिनकी प्रसन्नतासे निर्बल प्राणीभी प्रबलहो रमणीय होकर स्त्रियोंसे रमण करता है उस श्रीकामदेव नामक रसको कहते हैं।

शुद्धपारा ४ तोले, शुद्धगन्धक ८ तोले, दोनो की कजलीकर नदनवनकपास के रसमे दो प्रहर खरल करके काचकी शीशीमे भर उसके मुखपर सुहागेकी मुद्रादे मुख बन्द करे, फिर उसको वालुकायन्त्रमे रख भट्टीपर चढाय शास्त्रज्ञाता कुशलवैद्य एक दिन रात्रि पचावे, फिर स्वागशीतल होनेपर उस रसको शीशीमेसे निकाले तो पारेकी हिंगलूके समान लालभस्म होजायगी, उसको १ माशे ले घी और सहतके विषम भागोमे मिलाकर खाय, फिर दूध, गुड, घी, कालीमिरच, खाड, छुहारे, महुआ आदिका सेवन करे त्रिफला और सहत करके बहुत दिनोका पित्त शमन हों, निर्गुडीके रससे दुर्निवार वातकी पीडा दूर होवे, और नवीन देह होवे, यदि इस रसको अधौटे दूध के साथ सेवन करे तो वन्ध्या स्त्री भी जीवद्वत्सा अर्थात् जीता जागता पुत्र जने ।

अनंगसुन्दरोरसः

शुद्ध सूत स संगन्धस्यहकह्लारजैर्द्रवै. ।
मर्दितंवालुकायत्रे यामंसंपुटकेपचेत् ॥
रक्तागस्त्यद्रवैर्भाव्यंदिनमेकसिताम्बुजै ।
यथेष्टं भक्षयेच्चानु रामयेत् कामिनीशतम ॥

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक चार २ तोले ले दोनोकी कजलीकर कुछ सफेद और कुछ लाल ऐसे कमलके रससे ३ दिन खरल करे, फिर वालुकायन्त्रमे भरकर एक दिन सपुटमे पचावे, फिर एक दिन लाल अगस्तियाके फुलो मे खरल करे, और एक दिन सफेद कमलोके रससे खरलकरे, फिर इसको बलाबलके अनुसार भक्षण करे तो सौ स्त्रियोसे रमण करनेकी शक्ति होवे ।

हेमसुन्दरोरसः

मृतसूतस्यपादांशहेमभस्मप्रकल्पयेत् ।
क्षीराज्यदधिसंमिश्रभापककांस्यपात्रके ॥
लेहयेन्मापषट्कन्तुजरामरणनाशनम् ।
वाकुचीचूर्णकर्षैकधात्रीफलरसप्लुतम ॥
अनुपानपिबेन्नित्यस्याद्रसोहेमसुन्दर ।

पारेकी भस्म १ तोले, सुवर्ण भस्म २ मासे, इनको छ मासे दूध, घी और दही इनसे कासे के पात्रमे एकत्र करके सेवन करे, तो वृद्धावस्था और अकाल मृत्युको नाश करे, इसके ऊपर एक तोले बावचीके चूर्णको आवलेके रसमे सान कर पीवे, यह इस हेमसुन्दर रसका अनुपान है ।

अमृतार्णवोरसः

मृतभस्मचतुर्भागंलोहभस्मतथाष्टकम् ।
अभ्रभस्मचषड्भागगन्धकस्यचपचमम ॥
भावयेत्त्रिफलाक्वाथैस्तत्सर्वभृङ्गराजद्रवै. ।
शिग्रुवह्निकटुक्वाथैर्भावयेत्सप्तधापृथक् ॥
सर्वतुल्यकणायोज्यागुडैर्म्मिश्रपुरातनैः ।
निष्कमात्र सदाखादेज्जरामृत्युनिवारणम् ॥
ब्रह्मायु स्याच्चतुर्मासेरसोयममृतार्णव. ।
कौरण्डकस्यपत्राणिगुडेनभक्षयेदनु ॥

पारेकी भस्म ४ तोले, लोह भस्म ८ तोले, अभ्रककी भस्म ६ तोले, शुद्ध आमलासार गन्धक ५ तोले सबको एकत्र चूर्णकर त्रिफलाके काढे की भावना देवे, फिर भागरे के रसकी तथा सहजने, चीते, कुटकी इनके रसोकी सात-सात भावना पृथक् ७ देवे, फिर सबके बराबर पीपलका चूर्ण डालकर पुराने गुडसे मिलावे और ४ मासेके अनुमान प्रति दिन छ महीनेतक सेवन करे तो वृद्धावस्था और अकाल मृत्युका हरण करे, ब्रह्माकी आयुको करे, इसके ऊपर पियाबासेके पत्तोका चूर्ण गुडमे मिलाकर खावे । यह अनुपान है ।

बृहत्पूर्णचंद्ररसः

द्विकर्षशुद्धसूतस्यगन्धकंचद्विकार्षिकम् ।
लौहभस्मपलचाभ्रंजारितंचपलांशकम् ॥
द्वितोलरजतचैववगभस्मद्विकार्षिकम ।
सुवर्णतोलकचैवताम्र कांस्यचजीरकम् ।
जातीफलचेन्द्रपुष्पमेलाभृङ्गंचजीरकम् ॥
कर्पूरवनितामुस्तकर्णकर्षपृथक्पृथक् ।
सर्वंखल्लतलेक्षिप्त्वाकन्यारसविमर्दितम् ॥
भावयित्वावरातोयैःकेवुकाख्यरसेनच ।
एरण्डपत्रैरावेष्ट्यधान्येरात्रिदिनोषितम् ।
उद्धृत्यमर्दयित्वातुवटिकांचणसम्मिताम् ॥
खादेत्पर्णखण्डेनसयुक्ताव्याधिनाशिनीम् ।
सर्वव्याधिविनाशायकाशीनाथेनभाषितः ॥
पूर्णचन्द्ररसोनामसर्वरोगेपुयुज्यते ।
बल्योरसायनोवृष्योवाजीकरणउत्तमः ॥
अयमष्ठोलिकाहन्तिकासश्वासमरोचकम् ।
आमशूलकटीशूलंहृच्छूलपित्तशूलकम् ॥
अग्निमान्द्यमजीर्णचग्रहणींचिरजामपि ।
आमवाताम्लपित्तचभगंदरमपिद्रुतम ॥
कामलापाण्डुरोगचप्रमेहवातशोणितम् ।
नात.परतरःश्रेष्ठोविद्यतेवाजीकर्मणि ॥
रसस्यास्यप्रसादेननरोभवतिनिर्गद ।
मेधांचलभतेवाग्मीसर्वशास्त्रसमन्वित ॥
मदनस्यसमाकान्तिमदनस्यसमबलम् ।
गीयतेमदनेनैसैमदनस्यसमवपु ॥

स्त्रीणान्तथानपत्यानादुर्बलानांचदेहिनाम्। क्षीणानामल्पशुक्राणांवृद्धानावातरेतसाम्॥ ओजस्तेजस्करश्चायस्त्रीपुकामविवर्द्धनः। अभ्यासेननिहन्तिमृत्युपलितसर्वामयध्वसनो॥ वृद्धानामदनोदयोदयकरःप्रौढागनासगमे। नित्यानन्दकरःसुखातिसुखदोभूपैःसदासेव्यते॥ दृष्टसिद्धफलोरसायनवरःश्रीपूर्णचन्द्रोरस.॥

शुद्धपारा दो तोले, शुद्धगन्धक दो तोले, लोहभस्म ४ तोले, अभ्रकभस्म ४ तोले, चादी कीभस्म दो तोले, वगभस्म तोले, सुवर्णभस्म १ तोले, तावे और कासेकीभस्म, एक २ तोले, लेवे, जायफल, लौंग, इलायची, भाग, जीरा, कपूर, फलप्रियगु और नागरमोथा प्रत्येक एक-एक तोले लेवे, सबको खरलमे डाल घीगुवारके रससे खरल करे फिर त्रिफलाके काढेकी भावना देकर सुपारी के काढेकी भावना देव, फिर गोला वनाय उसपर अडके पत्ते लपेट कर तीन दिन रात्रि धान की राशिमे गाड देवे, फिर तीन दिन वाद निकाल खरलकर पानीसे चनेके वरावर गोलिया वनावे। एक गोली नागरवेल पानके साथ खाय। यह सपूर्ण व्याधि नाशनार्थ काशीनाथ नामक आचार्य्य ने कहा है। इस पूर्णचन्द्ररसको सम्पूर्ण रोगोमे देवे यह वज्रकारी, रसायन, वृष्य, उत्तम वाजीकरण, अष्ठीलिका, खासी, श्वास, अरुचि, आमजन्य-शूल, कमरकी पीडा, हृदयशूल, पित्तजन्य शूल, मदाग्नि, अजीर्ण, पुरानी सग्रहणी, आमवात, अम्लपित्त, भगन्दर, कामला, पाडुरोग, प्रमेह, और वातरक्त इन सब रोगो को नष्ट करे। इसमे परे वाजीकरण रूप दूसरा प्रयोग नहीं है, इस रस के प्रभावसे मनुष्य रोग रहित होता है और सर्व [illegible] युक्त वृद्धिको प्राप्त होता है, कामदेवके समान कान्ति, वल, वडाई और देहको प्राप्त होता है। स्त्रियोंको तथा जिनके सन्तान नहीं ऐसे दुवल पुरुषोको तथा क्षीण और अल्पशुक्र वृद्ध और वात रक्तम् इनको ओज और तेजका करनेवाला, स्त्रियो को कामका वढाने वाला यह अभ्यासके प्रतापसे अकालमृत्यु, वृद्धावस्था और सम्पूर्ण रोगोको नष्ट करता है, वृद्धोंको स्त्री सगमे कामदेवकी वृद्धि करे नित्य आनन्दकारी, अत्यन्त सुखदाता राजाओ को सेवन योग्य तथा अनुभव किया सव रसायनोमे श्रेष्ठ यह पूर्णचन्द्रोदय रस है।

चन्द्रोदयरसः

पलमृदुस्वर्णदलंरसेन्द्रात्पलाष्टकंषोडशगन्धकस्य। शोणैसकार्पासभवप्रसूनैःसर्वविमर्द्याथकुमारिकाद्भिः॥ तत्काचकुम्भेनिहितप्रगाढंमृत्कर्पटैरतद्दिवसत्रयञ्च। पचेत्क्रमाग्नौसिकताख्ययन्त्रे ततोरजःपल्लवरागरम्यम्॥ सगृह्यचैतस्यफलञ्चसम्यक्पलञ्चकर्पूररजस्तथैव। जातीफलशोषणमिन्द्रपुष्पकस्तूरिकायाइहशाणमेकम्॥ चन्द्रोदयोऽयकथितोस्यवल्लोभुक्तौहिवल्लीदलमध्यवर्त्ती। मदोन्मदानाप्रमदाशतानागर्वाधिकत्वश्लथयत्यकुण्ठात्॥ घृतंघनीभूतमतीवदुग्धमृदूनिमासानिसमण्डकानि। माषाणिपिष्टानिभवन्तिपथ्यान्यानन्ददायीन्यपराणिचात्र॥ रतिकालेरतान्तेवासेवितोयरसेश्वरः। मानहानिंकरोत्येपप्रमदानासुनिश्चितम्॥ कृत्रिमस्थावरचैवजगमचैवयद्विषम्। नविकारायभवतिसाधकेन्द्रस्यवत्सरात्॥ यथामृत्युञ्जयोभ्यासान्मृत्युञ्जयतिदेहिनाम्। तथायसाधकेन्द्रस्यजरामरणनाशन.॥ इन्द्रपुष्पंलवगस्यात्तूकार्पासकुसुमद्रवै.। तत्रान्तरेप्रसिद्धोऽयमकरध्वजनामतः॥

सुवर्णके वर्क ४ तोले, शुद्धपारा ३२ तोले, शुद्धगन्धक ६४ तोले, तीनोको खरलमे डाल कर कजली करे फिर नादनवन (नरमाकपास) के फूलोके रसमे सवको खरल करे, फिर घीगुवारके रसमे खरल कर काचकी आतिसी शीशीमे भर ऊपरसे कपरमिट्टी चढाय धूपमे सुखाय वालुकायन्त्र मे रखकर २८ प्रहरकी क्रमसे मद, मध्य और तेज

अग्नि देवे तो इसकी क्रमसे मंद, मध्य और तेज अग्नि देवे तो इसकी नली जम जायगी। उसको शीशीसे निकाले तो इसका लालवर्ण निकले, फिर ४ तोले चन्द्रोदय, ४ तोले भीमसेनी कपूर, जायफल, समुद्रशोष और लौंग प्रत्येक चार २ तोले और कस्तूरी ३ माशे सबको एकत्रकर इसमेसे तीन रत्ती पानमें रखकर खाय तो मदोन्मत्त सौ स्त्रियोके गर्व को दूर करे, इसपर घृत और अधौटा दूध, नरम-नरम मासके पदार्थ, मैदाके पदार्थ हलके मठ, उडदकी पिट्ठीके जो उत्तम २ पदार्थ हैं सब पथ्य हैं। इस रसको मैथुन के समय वा अन्तमें सेवन करनेसे स्त्रियोंके मानकी हानि करे। कृत्रिमविष, स्थावरविष और जंगमविष ये इस रसके सेवनकर्त्ताको विकार नहीं करते जैसे मृत्युंजय मंत्रके अभ्याससे प्राणी मृत्युको जीतता है उसी प्रकार इसके अभ्याससे प्राणी जरा और मरण रहित होता है। तन्त्रान्तरमें इसी रसका मकरध्वज नाम है।

मकरध्वजः

स्वर्णस्यभागौवगश्चमौक्तिकंकातलोहकम्।
जातीकोषफलेरूप्यंकास्यकरससिंदूरम्॥
प्रवालकस्तूरीचद्रमभ्रश्चैकभागिकम्।
स्वर्णसिंदूरतोभागाश्चतुरःकल्पयेद्बुधः॥
नातःपरतरःश्रेष्ठःसर्वरोगनिषूदनः।
सर्वलोकहितार्थायशिवेनपरिकीर्त्तितः॥

सुवर्णभस्म दो तोले, वगभस्म एक तोले, मोतीकी भस्म १ तोले, कान्तलोहकीभस्म, जायफल, जावित्री, रूपेकी भस्म, कासेकी भस्म, रससिंदूर, मूगाकी भस्म प्रत्येक एक २ तोले ले, स्वर्णसेन्दूर ४ तोले ले, सबको एकत्र कर सेवन करे तो सर्व रोगमात्रका नाश करे। सम्पूर्ण लोकोके हितके वास्ते श्रीशिवजीने यह मकरध्वज रस निर्माण किया है।

वसन्ततिलकोरसः

हेम्नस्तोलकमभ्रकंद्विगुणितंलौहात्रयःपारदाः चत्वारोनियतन्तुवगयुगलञ्चैकीकृतंमर्दयेत्॥ मुक्तविद्रुमयौरसेनसमतागोक्षूरवासेक्षुणा। सर्ववन्यकरीषकेणसुदृढतप्तंपचेत्सप्तधा॥ कस्तूरीघनसारमर्दितरसःपश्चात्सुसिद्धोभवेत्। कासश्वाससपित्तवातकफजित्पाण्डुक्षया-दीन्हरेत्॥ शूलादिग्रहणीविषादिहरणमेहाश्मरीविंशतिम्। हृद्रोगापहरज्वरादिशमनंवृष्यवयोवर्द्धनम्॥ श्रेष्ठपुष्टिकरवसन्ततिलकमृत्युञ्जयेनोदितम्॥

सुवर्णकी भस्म १ तोले, अभ्रक दो तोले, लोहभस्म ३ तोले, शुद्धपारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले, वगभस्म दो तोले, सबको एकत्रकर खरल करे फिर मोती और मूंगाकी भस्म प्रत्येक चार २ तोले ले इनको गोखरू, ईख और अडूसा इनकी भावना देकर आरने उपलोकी सात २ अग्नि वालुका यन्त्रकी देवे। फिर कस्तूरी ४ तोला और भीमसेनी कपूर ४ तोलेको मिलाकर खरल करे तो यह वसन्ततिलकरस सिद्ध होवे। यह खासी, श्वास, पित्त, कफ, पाडुरोग, क्षय, शूल संग्रहणी, विषरोग, बीस प्रकारके शूल, हृदयके रोग, ज्वर, इत्यादि रोगो को हरण करे, वृष्य और आयुको बढावे। यह मृत्यु जय शिवका कहा वसन्त तिलक रस अति उत्तम पुष्टिकारी है। इसकी मात्रा दो रत्तीकी है।

वसन्तकुसुमाकरोरसः

द्विभागहाटकचन्द्रत्रयोवगाहिकान्तका।
चतुर्भागशुद्धमभ्रंप्रवालमौक्तिकंतथा।
भावयेद्गव्यदुग्धेनतथैवेक्षुरसेनच॥
वासालाक्षारसोदीच्यरम्भाकन्दप्रसूनकैः॥
शतपत्ररसेनैवमालत्याःकुकुमोदकैः।
पश्चान्मृगमदैर्भाव्यसुगन्धिरससम्भवम्॥

कुसुमाकरविख्यातोवसन्तपदपूर्वकः ।
गुञ्जाद्वयेनसमेव्यःसितामध्वाज्यसयुत. ॥
मेहघ्न कान्तिदश्चैव कामद पुष्टिदस्तथा ।
वलीपलितनाशश्चश्रुतिभ्रंशविनाशयेत ॥
पुष्टिदोवल्य आयुष्य पुत्रप्रसवकारण ।
प्रमेहान्विंशतिचवक्षयमेकादशन्तथा ॥
तथासोमरुजहन्तिसाध्यासाध्यमथापिया ।

सुवर्ण दो तोले, वगभस्म, शीशेकी भस्म, और कान्तलोहकी भस्म, प्रत्येक एक एक तोले लेवे, शुद्ध अभ्रककी भस्म, मोती और मूंगाकी भस्म प्रत्येक चार चार तोले ले सबको एकत्र चूर्णकर गौके दूध, ईखके रस, अडूसा, लाख, नेत्रवाला, केलेकाकन्द और फूल, कमल, मालती और केसर इनके रसोंकी भावना देकर फिर कस्तूरीकी तथा सुगन्धित रसोंकी भावना देवे तो वसन्त पद पूर्वक कुसुमाकर अर्थात वसन्त कुसुमाकर नामसे विख्यात रसकी दो २ रत्तीकी गोलिया बनाकर मिश्री, सहत और घीके साथ सेवन करे तो काति करे। कामनाका देनेवाला, पुष्टिकारी वलीपलित नाशक, वहरेपनका नाश करे, देहको पुष्टकरे, बल और आयुको बढ़ावे, सन्तानका देने वाला, बीस प्रकारके प्रमेह, ग्यारह प्रकारका क्षयरोग, और सोमरोग इन सब साध्य असाध्य रोगोंको नष्ट करे।

नीलकण्ठोरसः

सूतकगंधकलौहविषचित्रकपद्मकम् ।
वरागरेणुकामुस्तमथैलानागकेसरम् ॥
त्रिकत्रयचत्रिफलाशुल्बभस्मतथैवच ।
एतानिसमभागानिद्विगुणोगुडउच्यते ॥
समर्द्य वटकंकृत्वाभक्षयेच्चणकोन्मितम् ।
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे ॥
हिक्कायाग्रहणीदोषेशोथेपाण्डवामयेतथा ।
मूत्रकृच्छ्रे मूढगर्भेवातरोगेचदारुणे ॥
नीलकण्ठोरसोनामब्रह्मणानिर्म्मितःस्वयम् ।
अनुपानविशेषेणसर्वरोगहरोभवेत् ॥

पारा, गन्धक, लोहभस्म, सिंगियाविष, चीते की छाल, कमलगट्टा, [illegible], रेणुका, नागरमोथा, पीपलामूल, नागकेशर, त्रिकुटा, त्रिफला, त्रिमद त्रिसुगन्ध और ताम्बेकी भस्म इनको समान भाग लेवे सबसे दूना गुड लेवे, सबको मिलाकर चनेके बराबर गोलिया बनावे। एक गोली नित्य सेवन करे तो खासी, श्वास, क्षय, गुल्म, प्रमेह, विषमज्वर, हिचकी, संग्रहणी, सूजन, पाण्डुरोग, मूत्रकृच्छ्र, मूढगर्भ और घोर वातके रोग इन सबको यह ब्रह्मदेवका निर्माण किया हुआ नीलकण्ठरस अनेक अनुपानो के साथ नष्ट करे तथा सम्पूर्ण रोगो को नष्ट करे।

राक्षसरसः

पलद्वयन्सूतमतीवशोधितचाकोटतोयेनपुनर्विभावितम् । दिनत्रयतच्चविमर्द्यगाढसमानगन्धेनपुनर्विचूर्ण्य ॥ यन्त्राभवेदञ्जनसन्निकाशपूर्वोक्ततोयेनपुनर्विभावयेत् । नरकालच्छागस्यतुमासमध्येसंक्षिप्यसलोहितचित्रकस्य ॥
रसेनतुल्यखलुतालमूलीनिर्यासयुक्तेनविमुद्रयगाढम् । तन्मांसपिण्डेऽत्रपरेनिवेश्यमापस्यपिष्टेनलिपेत्प्रयत्नात ॥ तत्तप्ततैलेननिवेश्यचूल्यामन्दाग्निनातद्विपचेत्प्रयत्नात । पचाक्षरचात्रजपेद्विविज्ञोदैवीमिमासिद्धरमेश्वरीं च ॥ ततःसिंदूरवर्णाभवटकतसमुद्धरेत ।
अष्टोत्तरसहस्र तुजप्त्वापचाक्षरीमिमाम् ॥
ततस्तस्मात्समुद्धृत्यमुहूर्तेशोभनेदिने ।
वैद्य सतोष्यविप्रादानरक्तिकैकन्तुभक्षयेत ॥
मधुसर्पियुतसेव्यपश्चाद्भोजनमाचरेत् ।
अनुपानेपिवेत्दुग्धंरसायनमतानुगम् ॥
यथेष्टभोजनकार्य्यकषायकटुवर्जितम् ।
अनेनविधिनाकृत्वानरःस्यात्कामदेववत् ॥
योपिच्छतभजेन्नित्यसहस्र रामसोहितः ।
अकृत्यामैथुनरेतःस्फुटित्वालोचनव्रजेत् ॥
सभवेन्मन्मथाकारोनात्रकार्य्याविचारणा ।
रसराक्षसमुद्धृत्यभूपति स्यात्दनगभ ॥

शुद्ध पारा ८ तोले ले उस को अकोल के

स्वरस अथवा काढेकी भावना दे, फिर तीन दिन खरल कर ८ तोले शुद्ध आमलासार गन्धक मिला कर कजली करे, जब काजल के समान बारीक हो जावे तब फिर अकोल के रस से खरल करे, फिर तत्काल मारे हुये बकरे के मास मे इस कजली के गोले को रख लाल चीते के रस मे शतावर के गोद को खरल कर उस मांस के चारो तरफ लपेट कर उसे बद कर देवे, फिर उस को दूसरे मांस पिण्ड मे रख कर उड़द के चून को सान कर ऊपर लपेट देवे, फिर उस गोले को गरमागरम तेल मे छोड देवे और चूल्हे मे उस के नीचे मन्दाग्नि जलावे और पंचाक्षरी मन्त्र का जप करे। तथा रसेश्वरी भगवती का ध्यान करे, तो निस्सदेह इस रस का सिंदूर के समान वर्ण का गोला बन कर तैयार होगा। फिर १००८ अष्टोत्तर सहस्र पचाक्षरी मत्र का जप करके शुभ मुहूर्त और तिथि मे इस गोले को उक्त तेल मे से निकाल कर उस चून और जले मासादिक को दूर करे, और उस रस को निकाल ले। फिर वैद्य और ब्राह्मणो का पूजन कर एक या दो रत्ती सहत और गौ के घृत मे मिला कर खाय। फिर भोजन करे। ऊपर रसायन के मार्ग की विधि से दूध पीवे और यथेष्ट भोजन करे, परन्तु कषैले और चरपरे आदि पदार्थों को न खावे। इस विधि के करने से प्राणी कामदेव के समान होवे, सौ अथवा हजार स्त्री सेवन की सामर्थ्य होवे, प्राणी मैथुन न करेगा तो वीर्य फूट कर नेत्रोमे आजायगा इस कारण अवश्य मैथुन करे इस मे विचार न करना चाहिये। इस राक्षस रस को सेवन कर राजा काम देव के समान रूपवान् होवे।

विलासिनीवल्लभोरसः

समानभागेवलिशूलिबीजेतयोःसमानंकनकस्यबीजम्। धत्तूरतैलेनविमर्द्यसम्यग्विलासिनीवल्लभनामधेयः॥ सूतोभवेद्वल्लयुगप्रमाण सितायुतोमेहसमूहहारी। वीर्य्यस्यबन्ध कुरुतेनराणानिहन्तिदर्पंचसुलोचनाना॥

पारा १ तोले, गन्धक १ तोले, धतूरेके बीज दो तोले, सब का बारीक चूर्ण कर धतूरे के तेल मे खूब खरल करे तो यह विलासिनीवल्लभ नाम पारा बन कर तैयार हो। इस को ४ रत्ती ले कर मिश्री के साथ सेवन करे तो सम्पूर्ण प्रमेहो को दूर करे वीर्य्यका स्तभन करे और स्त्रियोके अभिमान को नष्ट करे।

वंगेश्वरोरसः

वंगभस्मरसंगन्धरौप्यकर्पूरमभ्रकम्।
कर्षकर्षप्रदातव्यसूताङ्घ्रिहेममौक्तिकम्॥
केशराजरसैर्भाव्यद्विगुंजाफलमात्रकम्।
प्रमेहान्विंशतिहन्तिसाध्यासाध्यानथापिवा
बल्यवृष्यपुष्टिकरपरप्रोक्तंरसायनम्॥

वग की भस्म, पारा, गन्धक, रूपे की भस्म और अभ्रक प्रत्येक एक-एक तोले लेवे, सुवर्ण की भस्म और मोती की भस्म प्रत्येक तीन-तीन माशे ले, सब को भागरे के रस मे खरल कर दो-दो रत्ती को गोलिया बनावे। यह बीस प्रकार के साध्यासाध्य प्रमेहो को दूर करे तथा बल करे, वृष्य है, पुष्टि कर्ता तथा परम रसायन है।

मदनकामदेवोरसः

तारवज्र सुवर्णश्चताम्र सूतसगन्धकम्।
लोहश्चक्रमवृद्धानिकुर्य्यादेतानिमात्रया॥
विमुद्रयपिठरीमध्योरयेत्सैंधवैभृते।
विमर्द्य कन्यकाद्रावैर्न्यसेत्काचमयेघटे॥
पिठरींमुद्रयेत्सम्यक्ततश्चुल्ल्यानिवेशयेत्।
वह्निशनै शनै कुर्य्याद्दिनैकतत्समुद्धरेत्॥
स्वागशीतश्चतच्चूर्णंभावयेदर्कदुग्धत।
अश्वगन्धाचकाकोलीवानरीमुसलीक्षुरा॥
त्रित्रिवेल्लरसैरासाशतावर्य्याश्चभावयेत्।
पद्मकन्दकसेरूणारसैरेकाचभावना॥
कस्तूरीव्योपकर्पूरककोलैलालवगकम्।
पूर्वचूर्णादष्टमाशमेतच्चूर्णं विमिश्रयेत॥
सर्वैं समाशर्कराञ्चदत्त्वाशाणोन्मितपिबेत्।
गोदुग्धद्विपलेनैवमधुराहारसेवक॥

अस्यप्रभावात्सौंदर्यबलतेजोऽभिवर्द्धते ।
तरुणीरमयेद्बह्वीर्नचहानि'प्रजायते ॥

चांदी की भस्म, सुवर्ण की भस्म, तांबे की भस्म, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लोहभस्म, प्रत्येक क्रम से अधिक भाग लेवे, सब को खरल कर घी गुवार के रस में खरल करे। और फिर एक हांडी में पिसा निमक भर बीच में शीशी को रख मुखपर्य्यन्त निमक भर दे और मुख को खरिया से बंद कर देवे, फिर उस को चूल्हे पर चढाय धीरे-धीरे एक दिन बराबर अग्नि देवे, फिर असगंध, ककोल, कौंछ, मूसली, तालमखाने इन प्रत्येक के रस की तीन-तीन बार भावना देवे फिर कमलकन्द कसेरू इन के रस की एक एक भावना देवे, पश्चात् कस्तूरी, सोंठ, मिरच, पीपल, भीमसेनी कपूर, ककोल, छोटी इलायची, लौंग, ये सब प्रथम चूर्ण से अष्टमांश लेवे, फिर सब के बराबर मिश्री मिलाकर ४ माशे, ८ तोले गौ के दूध के साथ पीवे, और इस के ऊपर मधुर आहार सेवन करे। इस के प्रभाव से सुन्दरता, बल और तेज बढे और बहुत स्त्रियों से रमण करे तथा वीर्य की कदाचित् हानि न हो।

कंदर्पसुंदरोरसः

सूतोवज्रमहिमुक्तातारहेमसिताभ्रकम् ।
रसैरससमानेतान्मर्दयेदरिमेदजैः ॥
प्रवालगन्धचूर्णं चद्विद्विकर्षैर्विमिश्रयेत् ।
प्रवालचूर्णगन्धस्यविमर्द्यमृगभृंगके ॥
क्षिप्त्वामृदुपुटेपक्त्वाभावयेद्धातकीरसैः ।
काकोलीमधुकमांसीबलात्रयविषेगुदम् ॥
द्राक्षापिप्पलिवदाकवरीपर्णीचतुष्टयम ।
परूपककसेरश्चमधुकवानरीतथा ॥
भावयित्वारसैरेषांशोषयित्वाविचूर्णयेत् ।
एलात्वक्पत्रकमांसीलवंगगैरुकेसरम ॥
मुस्तमृगमदकृष्णाजलचन्द्रश्चमिश्रयेत् ।
एतच्चूर्णं शाणमितैरसंकन्दर्पसुन्दरम् ॥
खादेच्छाणमितरात्रौसिताधात्रीविदारिका ।
एतेपात्रं चूर्णेनसर्पिष्कर्षेणसम्मितम ॥
तस्यानुद्विपलक्षीरंपिबेत्सुखितमानसः ।
रमणीरमयेद्बह्वीर्नहानिंकापिगच्छति ॥

शुद्ध पारा, हीरे की भस्म, सीसे की भस्म, मोतीकी भस्म, चांदीकी भस्म और सफेद अभ्रक की भस्म, ये प्रत्येक पारे के बराबर लेवे, इन सब को एकत्र खरल करके खैर के काढे से खरल करे, फिर मूंगा की भस्म दो तोले, गंधक की भस्म २ तोले मिला के असगंध के स्वरस से खरल करे, फिर हिरन के सींगमें भर ऊपर कपरमिट्टी कर लघु सपुट में रख कर फूंक देवे, फिर धाय के फूलों में अथवा इस के काढे की भावना दे कर काकोली, मुलहटी, जटामासी बरियारा, गुलसकरी और कगही, भसींडा, हिंगोट, दाख, पीपल, बादा, सतावर, शालपर्णी, पृष्टिपर्णी, मधुपर्णी, फालसे, कसेरू, महुआ, कौंच के बीज इन सब के रस की पृथक् पृथक् भावना दे कर धूप में सुखाता जावे। इलायची, तज, पत्रज, जटामासी, लौंग, गेरू, केशर, नागरमोथा, कस्तूरी, पीपल, नेत्र बाला और भीमसेनी कपूर, इन सब को मिला के चूर्ण करे, तो यह कन्दर्पसुन्दर रस बने। इस में से ४ माशे रात्रिमें मिश्री आवले और विदारीकंद इन के एक-एक तोले चूर्ण को एक तोले घी में मिलाय इसमें इस कन्दर्पसुन्दर रस को मिलाय के खाय ऊपर से ८ तोले दूध पीवे, और प्रसन्न चित्त रहे तो अनेक स्त्रियों से रमण करने की शक्ति हो तथा वीर्य की हानि कदाचित् न होवे।

लोहरसायनम्.

शुद्धरसेन्द्रभागैकंद्विभागशुद्धगंधकम् ।
क्षिपेत्कज्जलिकांकृत्वातत्रतीक्ष्णभवरजः ॥
क्षिप्त्वाकज्जलिकातुल्यप्रहरैकंविमर्दयेत् ।
ततकन्याद्रवैर्मध्येत्रिदिनपरिमर्दयेत् ॥
ततःसंजायतेतस्यसोष्णोधूमोद्गमःखलु ।
अथतत्पिण्डितंकृत्वाताम्रपात्रे निधापयेत् ॥
मध्येधान्यकुसूलस्यत्रिदिनधारयेद्बुधः ।
ततउद्धृत्यततस्मात्खल्लेक्षिप्त्वानिधापयेत् ॥

रसैःकुठारछिन्नायास्त्रिवेलपरिभावयेत् ।
सशोष्यघर्मेक्वाथैश्चाभावयेत्रिकटोस्त्रिशः ॥
वासामृताचित्रकाणांरसैर्भाव्यपृथक्त्रिश ।
लोहपात्रेततःक्षिप्त्वाभावयेत्रिफलाजलैः ॥
निर्गुण्डीदाडिमत्वग्भिर्विपभृंगकुरंटकैः ।
पलाशकदलीद्रावैर्बीजकस्य सृतेनवा ॥
नीलिकालम्बुषाद्रावैर्बब्बूलफलिकारसैः ।
भावयेत्त्रित्रिवेलचततोनागबलारसैः ॥
बलावरीगोक्षूरकैपातालगरुडीद्रवैः ।
त्रित्रिवेलंयथालाभंभावयेदेभिरौषधैः ॥
ततःप्रातर्लिहेत्क्षौद्रघृताभ्यांकोलमात्रकम् ।
पलमात्रंवरीक्वाथपिबेदस्यानुपानकम् ॥
मासत्रयाच्छीलितंस्याद्वलीपलितनाशनम् ।
मन्दाग्निश्वासकासौचपाण्डुतांकफमारुतौ ॥
पिप्पलीमधुसयुक्ताहन्यादेतन्नसशयः ।
वातास्त्र मूत्रशोपांश्चग्रहणीजरुजांजयेत् ॥
अण्डवृद्धिंजयेदेतच्छिन्नासत्त्वमधुप्लुतम् ।
बलवर्णकरवृष्यमायुष्यपरमंस्मृतम् ॥
जयेत्सर्वामयान्कालादिदलोहरसायनम् ।
प्रक्षिप्यौषधमेतस्मिन्प्रदद्यात्कोलमात्रकम् ॥
कूष्माण्डतिलतैलञ्चमाषान्नं राजिकातथा ।
मद्यमम्लरसचैवत्यजेल्लोहस्यसेवकः ॥

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गधक दो तोले, दोनो की कजली करके इस मे लोहे की भस्म ३ तोले, मिला कर एक प्रहर सब को खरल करे, फिर घी गुवार के रस मे तीन दिन खरल करे, इस प्रकार करते करते उस मे से धुआँ निकलने लगेगा और कजली गरम हो जावेगी। तब उस का गोला बनाय अण्डके पत्तो से लपेट किसी तावे के पात्र में रख कर धान की खत्ती मे तीन दिन पर्य्यंन्त गडा रहने देवे, फिर उसको निकाल खरल में डाल कन्दगिलोय के रसकी तीन भावना देवे, फिर धूप में सुखा कर त्रिकुटा के काढे की तीन भावना देवे, तथा अडूसा, गिलोय और चीते के रसो की तीन-तीन भावना देवे। फिर लोह पात्र में रख कर त्रिकुटाके काढे की, निर्गुण्डी, अनार के फल की छाल, भसीडा, भांगरा, पीयाबासा, ढाक, केले का कन्द, विजैसार का काढा, नीली, मुण्डी, और बबूल की फली इन प्रत्येक के काढे की तीन-तीन भावना देवे। फिर खरैंटी, कगही, शतावर, गोखरू और छिलहिटा इन प्रत्येक के रस की तीन-तीन भावना देवे, यदि सब औषधि न मिले तो जो मिले उन्ही के रसों की भावना देवे। इस को प्रातःकाल ८ रत्ती ले सहत और घी मे मिला कर चाटे, और इसके ऊपर शतावर का काढा ४ तोले पीवे। इस प्रकार तीन महीने सेवन करने से वली पलित कहिये वृद्धावस्था को दूर करे, मन्दाग्नि, श्वास, खासी, पाण्डु रोग, कफ, वादी, इन सब रोगो को पीपल और सहत के साथ खाने से दूर करे। वात रक्त, मूत्र के विकार, संग्रहणी और अण्ड वृद्धि को मुलहठी के सत और शहत के साथ खाने से नष्ट करे, बल, वर्ण करे, आयुको बढावे, वृष्य है। यह लोह रसायन सम्पूर्ण रोग मात्रो को दूर करे, इस मे जो प्रक्षेप औषधि कही है, उन को आठ-आठ माशे मिलावे।

अब इसपर पथ्य कहते हैं, पेठा, तिल, तेल, उडद के पदार्थ, राई, मद्य और खटाई के पदार्थ इत्यादिक वस्तुओं को लोह सेवन कर्त्ता मनुष्य त्याग देवे।

पारदभस्म.

शुद्धंसूतद्विधागन्धलोहपात्रेग्निसस्थिते ।
आर्द्रन्यग्रोधदण्डेनचालयेद्भस्मतानयेत् ॥
रक्तिकाद्वितयभुक्तंरेतै पुष्टिकरपरम् ।

शुद्ध पारा ४ तोले, गधक ८ तोले, दोनो को लोह के पात्रमे डाल अग्निपर रख कर अग्नि देवे, और जब कढाई अत्यन्त गरम हो जावे तब एक बड की लकडी से उस पारे और गन्धक को रगडता जाय। इस प्रकार करने से थोडी ही देर मे उस पारे और गन्धक की भस्म हो जावेगी। उस भस्म को किसी शीशी आदि में भर कर रख छोडे। इस मे से दो रत्ती भस्म को यथायोग्य

अनुपान के साथ सेवन करे तो वीर्य्य को अत्यत बढावे ।

स्तंभनकर्त्तापारदः

शुद्धं सूतमिपुप्रतोलकमितंगन्धंतथाशुद्धिमत् पंचाक्षरपरिगृह्यसयुतमुखांशुक्तिसमुद्घाट्य तां ॥ तत्कीटंपरिहृत्यशुक्तिजठरादंतःक्षिपेद्गन्धकम्। प्रोक्तस्यार्द्धमथान्तरेविनिहितंसूतं समस्ततत: ॥ सूतस्योपरिशेषगन्धकरजः संक्षिप्यतन्मध्यग । सूतंशुक्तिकयान्ययोपरिगतासंमुद्रयमृद्वस्त्रके ॥ तांशुक्तिंपरिशोष्यसूर्यकिरणारसदीयतेऽग्निस्तुपैं । धान्यानांगजसञ्ज्ञकेवरपुठेतस्स्वांगसशीतलम् ॥ संचूर्ण्यां शुकगालितकिलभवेद्गुञ्जोन्मितपुष्टिकृत्। रेतःस्तभनकृत्पयोऽनुचपिवेत्सायसितासयुतम् ॥

शुद्ध पारा ५ तोले, शुद्ध गन्धक ५ तोले ले मुरामुदी सीप के मुख को खोल उस के भीतर के कीडे को निकाल डाले, फिर उस गन्धक के आधे चूर्ण को उस मे बिछा कर उस पर पारेको रख बाकी आधे चूर्णसे दवा देवे, फिर दूसरे सीप के पलडे से बद कर कपरमिट्टी करके धूप मे सुखा लेवे, और धान्य के तुषो के गजपुट मे रख कर फूंक देवे । जब स्वाग शीतल हो जावे, तब निकाल कर उस की कपरमिट्टी को दूर करे और पारे की ढली को निकाल चूर्ण कर कपरछन कर और किसी उत्तम शीशी आदि पदार्थ मे भर कर रख छोडे । इसमेंसे एक रत्ती रस मक्खन, मिश्री, दूध आदि के अनुपान से भक्षण करे तो पुष्टता करे, और वीर्य का स्तम्भन करे, तथा सायकाल मे इस के ऊपर मिश्री मिला हुआ दूध पीवे ।

गन्धामृतरसः

भस्मसूतद्विधागन्धकन्यकाद्भिर्विमर्दयेत् ।
रुद्ध्वालघुपुटेपश्चादुद्धृत्यमधुसर्पिषा ॥
निष्कखादेज्जरामृत्यु हन्तिगन्धामृतोरसः ।
समूलभृ गराजञ्छायाशुष्कन्तुचूर्णयेत् ॥
तत्समत्रिफलाचूर्णसर्वतुल्यासिताभवेत् ।
पलैकंभक्षयेच्चानुसेवनाच्चजरापहम् ॥

चन्द्रोदय १ तोले, गन्धक दो तोले, दोनों को घी गुवार के रस से एक दिन खरल कर सराव सपुट मे बन्द कर लघुपुटमे फूंक दें, स्वांग शीतल होनेपर निकाल ले, सहत और घी के साथ ४ मासे भक्षण करे तो वृद्धावस्था और बुढापे का नाश करे । यह गन्धामृत रस है, जड युक्त भागरे को छाया मे सुखा कर चूर्ण करे, फिर उस मे बराबर का त्रिफला का चूर्ण मिलावे और सब चूर्ण के बराबर मिश्री मिला कर इस मे से चार तोले नित्य सेवन करे तो वृद्धावस्था दूर हो ।

पंचशरोरसः

रसेनयुक्शाल्मलिजेनसूतंत्रिसप्तवाराणीव लिंविमर्द्य । पृथक्त्रयंकज्जलिकांविपच्यघृते रस.पचशरोऽयमुक्तः ॥ वल्लोहिवल्लोदलसंप्रयुक्तोवीर्यातिवृद्धिकुरुतेऽस्यधूनम् । मांसान्नमद्यं गुरुपायसंचपयः ॥ पिबेन्माहिपमत्र सिद्धम् ।

सेमरके मूसलोके रसमे पारेको खरल करे, फिर गन्धक मिलाकर २१ भावना सेमर के रस की देवे, फिर इस कज्जली को घी मे परिपक्व करे तो यह पचशर नामक रस सिद्ध हो। दो रत्ती रस पानमें रख कर सेवन करे तो यह वीर्य्य की वृद्धि करे, इस पर मास, उड़द के पदार्थ, मद्य, भारी पदार्थ, पायस (खीर) और भैंस का दूध सेवन करना चाहिये ।

कामिनीमदभंजनोरसः

शुद्धं सूतंसमगन्धत्र्यहंकल्हारकद्रवैः ।
मर्दितंवालुकायत्रेयामसंपुटकेपचेत् ॥
रक्तागस्यद्रवैर्भाव्यंदिनैकन्तुसितायुतम् ।
यथेष्ट भक्षयेच्चानुकामयेत्कामिनीशतम् ॥

शुद्ध पारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले, दोनो को लाल कमल के रससे तीन दिन खरल करे,फिर

वालु का यन्त्र मे एक प्रहर पचन करावे पश्चात् उसमें से निकाल कर घृ घची के रसमे एक दिन खरल करके इसमें से बलावल विचार मिश्री के साथ इसको सेवन करे और यथेष्ट भोजन करे तो तो १०० स्त्रियों से रमण करने की शक्ति होवे।

लक्ष्मणालौहम्

लक्ष्मणाहस्तिकर्णाभ्यात्रिकत्रयसमन्वयात् ।
अश्गन्धासमायोगाल्लोहपु सवनंस्मृतम् ॥
पुत्रोत्पत्तिकरवृष्यकन्यासूतिनिवर्त्तकम् ।
कृशस्यबलंश्रेष्ठसर्वामयहरंपरम् ॥

लक्ष्मणा और लाल अरड इनमे त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिमद और असगन्ध ये सब समान भाग मिलावे सबकी बराबर लोह भस्म मिलाकर यथा योग्य मात्रासे सेवन करे तो यह पुत्रोत्पत्ति करे, वृष्य है, तथा जिसके कन्या ही-कन्या होती हो उसको दूर करे, कृशोको बल देवे और सब रोगो को हरण करे ।

कामिनीदर्पघ्नोरसः

शाल्मल्यास्त्वचमादायश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत्
शुद्धगन्धकचूर्णानितद्रसेनैवभावयेत् ॥
माषमात्रप्रयोगेणश्रृणुवक्ष्यामियेगुणा ।
मकरध्वजरूपोऽपिस्त्रीशतानन्दवर्द्धनः ॥
गतायुश्चभवेद्वलीपलितनाशन ।
तेजस्वीबलसम्पन्नोवेगेनतुरगोपम ॥
सततंभक्षयेद्यस्तुतस्यमृत्युर्नजायते ।

सेमर की छाल का बारीक चूर्ण कर समान भाग गन्धक का चूर्ण मिलाय सेमर के रस से ही खरल करे। इसको एक माशे नित्य सेवन करने से जो गुण हैं वो सुनो, कामदेव के समान दिव्यरूप हो, सौ स्त्रियो को आनन्द देवे, गतायु. पुरुष भी वली पलित के रोगो से रहित हो, तेजस्वी, बलवान्, वेग मे घोडे के समान हो, जो प्राणी निरन्तर इस रस का सेवन करता है उसकी मृत्यु कदाचित् न होवे ।

हरशशांकोरसः

गंधकामलकचूर्णधात्रीरसविभावितम् ।
सप्तधाशाल्मलीतोयै शर्करामधुयोजितम् ॥
लीढ्वाचानुपयःपानप्रत्यहकुरुतेतुयः ।
एतेनाशीतिवर्षोऽपिशतधारमतेस्त्रिया ॥

गन्धक और आमले के चूर्ण को आमले के रस की सात भावना देवे, फिर सात भावना सेमर के रस की देकर इसमें मिश्री और सहत मिला कर सेवन करे और ऊपर से दूध पीवे। इस प्रकार नित्य करे तो अस्सी वर्ष का भी मनुष्य सौ बार स्त्री से रमण करे ।

चांडालिनीयोगः

सितपुनर्नवामूलशाल्मलीरसभावितम् ।
शाल्मलीसत्त्वनिर्य्यासंदद्यात्तत्रसमंसमम् ॥
गंधकसर्वतुल्यञ्चभावयेच्छाणमात्रकम् ।
अनुपानप्रकुर्व्वीतततःक्षीरपलद्वयम् ॥
अयचडालिनीयोगेऽगम्याप्यत्रहिगम्यते ।
निषेधान्निधनयातिकरणात्कामरूपधृक्

सफेद सांठ (विषखपरे) की जड़को सेमल के रस की सात भावना देवे, फिर इसके बराबर सेमल का गोद मिला कर सबके बराबर गन्धक मिलावे,सबका चूर्ण कर ३ माशे सेवन करे इसके ऊपर ८ तोले दूध पीवे। यह चाडालिनी योग अगम्या से भी गमन करावे यदि स्त्री सग न करे तो मृत्यु होवे ।

सिद्धसूतः

मुक्ताफलशुद्धसूतसुवर्णरूप्यमेवच ।
यवक्षारश्चतत्सर्वतोलैकैकप्रकल्पयेत् ॥
रक्तोत्पलपत्रतोयैर्मर्दयेत्पत्तलीकृतम् ।
मर्दयेच्चपुनर्दत्त्वागधकतदनन्तरम् ॥
क्षिप्त्वाकाचघटीमध्येसंनिरुद्ध यत्रियामक ।
सिकताख्येपचेच्छीतेसिद्ध सूतन्तुभक्षयेत् ॥
पचरक्तिप्रमाणेनमूसलीशर्करान्वितम् ।
शुक्रवृद्धिकरोत्येषध्वजभगचनाशयेत ॥

दुर्बलवपुरस्त्यर्थबलयुक्तं करोत्यसौ ।
मुद्गगर्भघृतक्षीरचालय स्निग्धमाहिषम् ॥
पारावतस्यमांसचतित्तिरश्चसदाहितः ।

मोती, शुद्ध पारा, सुवर्ण भस्म, चादी की भस्म और जवाखार प्रत्येक एक २ तोला लेवे, सबका चूर्ण कर लाल कमल के पत्तो के रस से खरल करे, फिर बराबर की गन्धक मिलाय खरल कर काच की आतिशी शीशी मे भर बालुका यत्र मे रखकर तीन प्रहर की अग्नि देवे । जब स्वाग शीतल हो जावे तब इस सिद्ध पारदमे से ४ रत्ती ले, मूसली और मिश्री मे मिलाकर सेवन करे तो शुक्रकी वृद्धि होवे, और ध्वजभग (लिंगकी सुस्ती को नष्ट करे, दुर्बल मनुष्य का देह बलवान् हो, इसके उपर मूग, घी, दूध, साठी चावल, भैंस का दूध कबूतर और तीतर का मास खाना सर्वेव हित है ।

स्तंभनम्.

कर्पूरटंकणसूततुल्यगुनिरसमधु ।
समर्थ्यलेपयेल्लिंगंस्थित्वायामतथैवच ॥
ततःप्रक्षाल्यरमयेद्वनितानाशतसुखम् ।
वीर्यस्तभकरपुसासम्यङ्नागार्जुनोदितम् ॥

कपूर, सुहागा और पारा तीनो औषधि समान भाग लेकर पीस डाले फिर अगस्तिया के रससे और सहत मे खरल करके लिंगपर लेप करे, एक प्रहर के बाद उस लेप को धोकर स्त्रीसे रमण करे तो सौ स्त्रियो से भोग करे वीर्यका स्तभन करे । यह नागार्जुन सिद्ध का कहा प्रयोग है ।

अन्ययोगः

अहिफेनदुग्धशुद्ध रक्तिकात्रितयोन्मितम् ।
बिन्दुवेगध्रुवक्तेसितयानिशिभक्षितम् ॥

शुद्ध अफीमका दूध ३ रत्ती लेकर रात्रिके समय मिश्रीमे भक्षण करे तो वीर्यका स्तभन अवश्य हो ।

सौगतिगुटिका

पारदगन्धकचम्पककेसरलुरकुसुमकरहाटा ।
अजमोदाम्बुभिशोषीजातीपत्रञ्चजातीफलं ॥
प्रत्येकभागैकंभागद्वितयंचशुद्धमहिफेनम् ।
तेनबदरसदृशगुटिकाकार्य्यामधुनाथभक्षये
देकाम् । यामेतीतेललनासविधेस्थित्वाज
वानिकाकर्षम् ॥ तैलाद्रमुजीयादनुपानंचैत
देतस्यलिंगकठिनतरस्याद्वीर्यसंस्तंभयेद्यामं ।
एषासौगतिगुटिकासत्यसत्यंचरोधकरी ॥

पारा, गन्धक, नागकेशर, केशर, लौंग, अकरकरा अजमोद, समुद्रशोष, जावित्री, और जायफल प्रत्येक एक २ तोले लेवे और शुद्ध अफीम दो तोले लेकर सबको खरल कर बेरकी गुठली के बराबर गोलिया बनाये । एक गोली रात्रिके समय सहत से खाय फिर एक प्रहर बाद एक तोले अजवायन को तेलमे मिलाकर सेवन करे । यह इसका पथ्य है तो लिंग कठिन होवे, वीर्य्य का एक प्रहर तक स्तभन हो यह सौगतिगुटिका निश्चय वीर्य्य को रोकने वाली है ।

अन्ययोगः

करवीरजटालेपय करोतिनरोमणौ ।
वीर्य्यस्तभंसलभतेकरनाटीसुरतेष्वपि ॥

कनेर की जड को जल मे पीस सुपारी को बचा कर लिंग पर लेप करे, फिर एक घटे बाद उसको धोकर स्त्रीसे रमण करे तो करनाटी स्त्री के भी समोग करनेसे वीर्य्य स्तभनको प्राप्त होवे ।

कामदेवः

सूतोमाषमितःस्वदोषरहितस्ततुर्य्यभागोबलि
स्तन्मानस्तुभुजगफेनउदितःक्षुद्राफलस्याम्बुना ॥
एतद्गोलकमाकलय्यविपचेत्क्षुद्राफलेहेमगे ।
लावैरष्टमितैर्भवेदितिरसःश्रीकामदेवाभिध ॥
मात्रासूर्योदयेगुञ्जामेकायामचतुष्टये ।
गुञ्जाचतुष्टयंदद्यनागवल्लीदलान्वितम् ॥
दुग्धौदनसलवणरात्रौक्षीरययेच्छया ।

पारा १ मासे, गन्धक ४ मासे, अफीम ४ मासे, इन सबको कटेरी के फल के रसमें खरल कर गोलिया बनावे उसको कटेरीके फल मे रखकर पचावे फिर धतूरे के फल मे रखकर उसको ८

लावकपुट दे तो यह कामदेव रस सिद्ध हो, इसमें से एक रत्ती प्रातःकाल देवे, फिर १ रत्ती दूसरे प्रहर, इसी प्रकार चार प्रहर में ४ रत्ती मात्रा पान में रखकर देवे और दिनमें दूध-भातका भोजन करे परन्तु निमक का पदार्थ न खाय। और रात्रि को यथेष्ट दूध पीवे तो यह गुटिका अत्यंत स्तंभन करे।

महानीलकंठोरसः

पलैकंनागभस्माथभावयेत्तिमिपित्ततः ॥
तन्नागसुमृतस्वर्णंतोलैकंचापिमिश्रयेत् ॥
द्विपलभस्मसूतस्य त्रिपलमृतमभ्रकम्।
त्रिपललौहभस्माथसर्वमेकत्रकारयेत् ॥
भावयेच्चपृथक्कन्याब्राह्मीनिर्गुंडिकाशमी।
मुण्डीशतावरीछिन्नाकोकिलाक्षस्यबीजकैः ॥
मुसलीवृद्धदारोग्निद्रवैरेभिर्भिषग्वरः।
ततःसचूर्णयेत्सर्वंतुल्यमेकादशाभिधम् ॥
वराव्योषाब्दवह्न्येलाजातीफललवंगकम्।
पूजयेद्वृषपुष्पाद्यैःनीलकण्ठमहेश्वरम् ॥
द्विगुंजाभक्षयेदस्यमृत्युंजयमनुस्मरन् ॥
क्षयमेकादशविधंग्रहणीरक्तपित्तकम्।
विविधान्वातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्चपैत्तिकाम् ॥
हन्तिसर्वामयानेवकामिनीनांशतव्रजेत्।
एकाविंशतिरात्रार्द्धपारीहार्य्यंत्यजेदिह ॥
यथेष्टाहारचेष्टोहिकंदर्पसदृशोनरः।
मेधावीबलवान्प्राज्ञोबह्वाशीभीमविक्रम ॥
पुत्रार्थिनीतथानारीसैवपुत्रंप्रसूयते।
अस्यसूतस्यमाहात्म्यंवेत्तिशम्भुर्नचापरः।

मछली के पित्त में घोटा हुआ नागेश्वर ४ तोले, उसी में एक तोले सुवर्ण की भस्म मिलावे चन्द्रोदय ८ तोले, और अभ्रक १२ तोले मिलाय सबको एकत्र कर घीगुवार, ब्राह्मी, निर्गुंण्डी, छोंकरा, गोरखमुंडी, शतावर, गिलोय, तालमखाने, मूसली, विधायरा और चीता इनके रसों की पृथक्-पृथक् भावना देवे, फिर हरड, आवला सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, चीता, इलायची जायफल, और लौंग इनका चूर्ण मिला कर रस सिद्ध करे। फिर अडूसेके फल आदिसे श्रीनीलकंठ शिव का पूजन करे। तब दो रत्ती सेवन कर श्रीमृत्युंजयशिवका स्मरण करे तो ग्यारह प्रकार का क्षय रोग, सग्रहणी, रक्तपित्त, अनेक, वातके रोग और ४० पित्तके रोगो को नष्ट करे। सौ स्त्रियों के भोगने की सामर्थ्य हो। २१ रात्रि पथ्य सेवन करके फिर परिहार के त्याग देवे, फिर यथेष्टआहार और आचारो का सेवन करे, कामदेव के समान रूप होवे, बुद्धिमान् बलवान् प्राज्ञ, बहुत भोजन करने वाला, भीमसेन के समान पराक्रमी, जिसको पुत्र की इच्छा हो उसको पुत्र होवे, इस महानीलकंठरस की महिमा श्रीशिवजी जानते हैं, अन्य नहीं।

बृहच्छृंगाराभ्रकम्

पारदगंधकचैवटंकणंनागकेशरम्।
कर्पूरजातीकोपचलवंगतेजपत्रकम् ॥
एतेषांकर्षभागानिसुवर्णंतत्समंभवेत्।
शुद्धकृष्णाभ्रचूर्णंश्चचतुष्कपिचुभागिकम् ॥
तालीसघनकुष्ठचमांसीपुष्पवरागकम्।
एलाबीजंत्रिकटुकत्रिफलाकरिपिप्पली ॥
एषांकर्षद्वयञ्चैवपिप्पलीक्वाथभावितम्।
अनुपानप्रयोक्तव्यचोर्चंक्षौद्रसमायुतम् ॥
नानारोगप्रशमनविशेषात्कासरोगनुत।
वातिकंपैत्तिकञ्चैवश्लैष्मिकसान्निपातिकम् ॥
हृच्छूलपार्श्वशूलचशिरःशूलविशेषतः।
स्वरामयतथाकुष्ठश्लेष्माणवातशोणितम् ॥
बृहच्छृंगाराभ्रनामाविष्णुनापरिकीर्त्तितम्।
रक्तपित्तचकासचनाशयेन्नात्रसंशय ॥

पारा, गन्धक, सुहागा, नागकेशर, कपूर, जायफल, लौंग और तेजपात प्रत्येक एक २ तोले लेवे और सबकी बराबर इसमें सुवर्ण भस्म अथवा सुवर्ण के वर्क मिलावे, शुद्ध कृष्णाभ्रक की भस्म ४ तोले, तालीस, नागरमोथा, कूठ और जटामासी के फूल, दालचीनी, छोटी इलायचीके बीज सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आमला और गजपीपल ये प्रत्येक दो-दो तोले लेवे, सबका चूर्ण कर पीपल के काढे की भावना देवे, तो यह रस

बनकर तैयार होवे। इसको दालचीनी के चूर्ण और सहत के साथ चाटे तो अनेक रोगों को नष्ट करे। वात, पित्त, कफ और सन्निपात के रोगों को तथा हृदय के शूल, पसवाड़े के शूल, मस्तकपीड़ा स्वरभंग, कोढ, कफकी बीमारी, वातरक्त और रक्तपित्त इनको दूर करे यह विष्णु भगवान् की कही हुई बृहच्छृंगाराभ्रक है, इसमें सन्देह नहीं है।

कामाग्निसंदीपनोमोदकः

त्रपीरसोगन्धकमभ्रकञ्चद्विक्षारचित्रेलवणा निपञ्च । शठीयवानीद्वयकोटहारीतालीसपत्रान्यपरद्विकर्षम् ॥ जीरचतुर्जातलवंगजातीफलंचकर्षत्रयमेवमन्यत । सशृद्धदारु कटु व त्रयचतथाचतुःकर्षमितनिवोध ॥ धान्याकयष्टीमधुरीकसेरूक्षपापृथकपंचवरीविदारी। बरेभकर्णाभवलात्मगुप्ताबीजतथागोक्षुरबीजयुक्तम् ॥ सबीजपत्रेन्द्ररज समानसमासिताक्षौद्रयुतचतुल्यम् । कर्पकमिन्दोरथ मोदकतत्कामाग्निसंदीपनसेतदुक्तम् ॥ वृष्यास्त्वत परतरसततनदृष्टमेतनिपेव्यमनुजःप्रमदासहस्रम् । गच्छन्नलिंगशिथिलत्वमवा प्नुयाच्चनागाधिपविजयतेवलतःप्रमत्तम् ॥ कान्त्याहुताशनमपिस्वरतोमयूरान्वाहंजवेननयनेनमहाविहगम । वातानशीतिमथपित्तगदंसमग्रश्लेष्मोत्थविंशतिरुजःपरमग्निमाद्यम् ॥ दुर्नामकामलभगदरपाडुरोगमेहातिसारकृमिहृद्ग्रहणीप्रदोषान्। कासज्वरश्वसनपीनसपार्श्वशूलशूलाम्लपित्तसहितांश्चिरजान्समस्तान् ॥ हत्वागदानपिचतत्पुमपत्यकारीसर्वर्तुपथ्यमथसर्वसुखप्रदायि : वृष्यबलीपलितहारिरसायनस्याच्छ्रीमूलदेवकथितपरमप्रशस्तम् ॥

पारा, गन्धक, अभ्रक, जवाखार, सज्जीखार, चीतेकी छाल, पांचों निमक, कचूर, अजमायन, अजमोद, वायविडंग, और तालीसपत्र प्रत्येक दो २ तोला लेवे, जीरा, दालचीनी, छोटी इलायची, नागकेशर, तेजपात, लौंग और जायफल प्रत्येक चार २ तोला लेवे, त्रिवायरा सोंठ, मिरच, पीपल, ये प्रत्येक छः २ तोला लेवे, धनियां मुलहटी, सिंघाड़े कसेरू, प्रत्येक आठ २ तोला लेवे, शतावर, विदारी कन्द, हरड, बहेडा, आवला, हस्ति कर्ण, पलाश की छाल, खिरैटी, कौंच के बीज और गोखरू प्रत्येक दश २ तोला लेवे, इन सब औषधियो को कूट-पीस चूर्ण करे और सब चूर्ण के बराबर शुद्ध की हुई भांग बीजों सहित चूर्ण कर मिलावे, और सब के बराबर मिश्री मिलावे तथा अनुपान माफिक घी और सहत मिला कर दो तोले कपूर से सुगन्धित करे। इस की मात्रा छः माशे से ले कर एक तोले पर्यन्त है। इस के समान वृष्य औषधि संसार मे दूसरी नहीं देखी गई है। इस के सेवन करने से यह प्राणी १००० स्त्रियों को भोगे, लिंग कभी शिथिल न होवे, हाथी के समान बल हो, अग्नि के समान तेज होवे, मोर के समान स्वर होवे, घोड़े के समान वेग हो, गीध के समान दृष्टि हो। ८० प्रकार के पित्त रोग, बीस प्रकार के कफ रोग, मन्दाग्नि, बवासीर, कामला, भगदर, पाण्डु रोग घोर अतिसार, कृमि रोग, हृदय के रोग, संग्रहणी खांसी, ज्वर, श्वास, पीनस, पसवाडे का शूल, शूल, अम्लपित्त और बहुत दिनो के संपूर्ण रोगों को यह नष्ट करे, तथा सन्तान का दाता है। सब ऋतुओं में पथ्य है, और सदैव सुखकारी है, वृष्य है, और वलीपलित (बुढापे) का दूर कर्त्ता और रसायन है, यह श्री मूलदेव का कहा परमोत्तम प्रयोग है।

समाप्तोऽयमुत्तरखण्डस्योत्तरभागः

हमारे मित्र वैद्य सुन्दरलाल जी ने पुरनियाँ से ये अपने परीक्षित रस लिख कर भेजे हैं और लिखा है कि, इन को अपने किसी ग्रन्थमें प्रकाश करा दीजिये ये रस मेरे अनुभव किये हुए हैं उन की आज्ञानुसार हम यहाँ प्रकाशित किये देते हैं। यदि इसी प्रकार जो अन्य मित्र गण अपनी परीक्षित यानी आजमाई हुई औषधियो को संसारके

कल्याणार्थ, छपवाना चाहे वो हमारे पास भेजे। हम उन को छाप देवेंगे। और उन का नाम भी स्पष्ट अक्षरों में प्रकाशित कर देंगे। अर्थात् यह औषधि हमारे परम मित्र ने अमुक स्थान से लिखी है ऐसा उस प्रयोगके अन्तमे लिख दिया जायगा।

संखिया मारण.

संवल के जौहर की क्रिया

सखिया को एक दिन काजी से खरल कर एक दिन विष के काढे से खरल करे, पश्चात् प्रत्येक उपविष मे घोट गोला बनाय डौम यंत्र में उड़ा लेवै ऊपर के पात्र मे जो सत्त्व लगे उस को छुरी से होशियारी के साथ निकाल के शीशी में भर कर रख छोडे। इस की एक चावल मात्रा को मिश्री के साथ देवे तो चातुर्थिक ज्वर दूर होवे पथ्य, दूध और मिश्री है।

संवलमारण

सवल के जौहर की क्रिया

एक तोले सखिया की डली को रख सपुट मे एक सेर आरने उपलो की अग्नि निर्वात स्थान मे देवे। पश्चात् स्वाग शीतल होने पर निकाल लेवे। इसकी सरसों के बराबर मात्रा को मक्खन, मिश्री और मलाईके साथ देवे तो बडा गुण करे।

दूसरी विधि.

एक तोले संखिया और ६ तोले शिगरफ को एकत्र पीस सेर भर भाग की लुगदी के बीच मे रख एक हांडी मे ऊपर नीचे शोरा और बीच मे लुगदी को रख हाडी को चार घड़ी की अग्नि देवे तो भस्म होवे।

तीसरी विधि.

तिली के सेर भर खार को तीन सेर पानी में भिगोवे प्रात काल छान लेवे और खार को फैंक देवे। फिर एक पजावे की बडी ईंट मे गढ्ढा खोद कर उस मे लोहे की कटोरी जमा कर दर्ज बद कर देवे, उसमे संवल की डली रख चूल्हे पर चढाय लकडी की मदाग्नि देवे। और उस पानी की एक एक बूंद डली पर टपकाता जाय ऐसे १२ प्रहर आच देवे फिर उसको शकोरे से बद कर मिट्टी से बद कर देवे फिर आच चलाना बद कर दे और स्वाग शीतल होने पर उतार लेंवे तो वह डली फूल जायगी। मात्रा एक चांवल भर बहुत करे।

चतुर्थविधि.

शोरा दो तोले, सफेद मूसली और काली जीरी एक-एक तोले, तीनो को पीस आधे मटकने को भर बीच मे सखिया की डली को रख ऊपर से फिर उन्हीं औषधियो के चूर्ण को भर देवे, फिर मटकने का मुख बद कर पाच सेर आरने उपलो मे फू क देवे तो भस्म होवे। मात्रा १ चावल।

पंचमविधि.

दो तोले सवल को तीन दिन नींबू के रस मे खरल कर टिकिया बाध जिमीकद की गाठ में रख ऊपर कपर मिट्टी कर सेर भर आरने उपलो की अग्नि देवे। इस प्रकार तीन अग्नि देवे फिर तीन दिन माल कागनी के रस मे घोटे और जिमीकन्द में रख कर फू क देवे। इस प्रकार तीन अग्नि देने से सखिया की भस्म होवे।

शिंगरफ मारण विधि.

शिगरफ को घी गुवार के रस से खरल कर टिकिया बाँधे, फिर उड़द की दाल की पीट्टी के दो बडे घी मे सेक कर उन दो बडो के बीच में उस टिकिया को धर सधि लेप कर मुद्रा करे। फिर मीठे तेल मे आच देवे जब तेल जरि जाय तब उतार लेय। इस प्रकार २८ आच देवे तो शिगरफ सिद्ध होय। मात्रा इस की चावल भर की है।

दूसरी विधि.

शिगरफ की डली २ तोले, गुड सवा पाव,

पानी २॥ सेर में घोले। फिर ठीकरे को चूल्हे पर चढावे और गुड के पानी का चोवा बूँद २ देता जावे। ४ प्रहर, तक फिर घड़ी भर तेज आच देवे तो दूसरी पक्की भस्म होवे। इस की मात्रा १ चावल भर पान से ७ दिन खाय तो भूख बढे।

तीसरी विधि.

शिगरफ २ तोले, फिटकरी ४ तोले पीस कर एक डिबिया मे उस डली के ऊपर नीचे धरे और उस डिबिया को भागरे के रस से भर देवे। मुद्रा कर गजपुट से फूंक देवे तो सफेद रग की परमोत्तम भस्म होय। गुण अनेक करे।

चतुर्थ विधि.

तेलिया विष ४ तोले को अदरख के रस मे पीस दो टिकिया बनावे उन दोनो टिकियाओ के बीच में उस डलीको धरे सुमुद्रा कर संधि बद करे। फिर उस को एक भटा बैंगन मे रक्खे कपड मिट्टी कर सुखाय ले। फिर एक बालिस्त चौड़ा लम्बा गढ्ढा खोद उस मे छोटे-छोटे आरने उपले भर बीचमें उस बैंगनको धरकै आच देवे शीतल होने पर निकाल लेय तो सफेद भस्म होय। किसी का यह मत है कि इसी प्रकार भटा में १०० आंच देवें।

पंचमविधि.

गुजराती थूहर की भस्म ०२॥ सेर को एक हडिया मे भरे, बीच मे शुद्ध शिगरफ की डली धरे, मुद्रा करे चूल्हें पर रक्खे। ढाक की अथवा थूहर की लकडी को आच ८ प्रहर देवे तो सफेद रग की भस्म हो, स्वांग शीतल होने पर निकाले। इसी प्रकार हरिताल और संखिया भी बनाने चाहिये।

छठी विधि.

शुद्ध शिगरफ की २ तोले डली को जमीकन्द की गाँठ में गढ्ढा खोद के भर देवे और उसी के टुकडे से मुख बद कर सात दिन नींबू के रस मे भिगोवें। फिर गजपुट मे फूक देवे। मात्रा १ चावल की है।

सातवीं विधि.

शिगरफ १ तोले ले, संखल की डली =) आदपाकी मे गहा कर उस डली को धर के ऊपर से कपरोटी कर ३ अथवा ५ गजपुट मे १० सेर जंगली उपलो की आच देवे। मात्रा १ चावल भर की माखन में अथवा मलाई मे देवें तो अनेक स्त्री भोगने की इच्छा होवे, और भूख बढे।

